❀ ला यमस्सुहू इल्लल्मुतह्हरून् ❀

इस ( पवित्र पुस्तक ) को शुद्ध हृदय और पवित्र शरीर के अतिरिक्त किसी को छूने का अधिकार नहीं है।

# .क़ुर्आन मजीद

का

## हिन्दी तर्जुमा और हिन्दी तफ़सीर

जिसमें औरङ्गज़ेब बादशाह के हाथ के लिखे हुये .क़ुर्आन मजीद का फ़ोटू हर सफ़े पर है और उसके सामने शमसुल उलमा मौलाना नज़ीर अहमद मरहूम देहलवी का मशहूर व मक़बूल उरदू तर्जुमा हिन्दी हरफ़ों में है और ख़्वाजा हसन निज़ामी देहलवी का हिन्दी तर्जुमा और हिन्दी तफ़सीर आसान हिन्दी ज़बान में है।

जो मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद साहब साबिक़ पंडित केशवराम शर्मा और दूसरे कई नामवर मुसलमान विद्वान हिन्दी तर्जुमा करने वालों की इम्दाद से पांच साल के अर्से में तैयार हुआ

आख़िर के १५ पारों की दूसरी जिल्द

इब्न अरबी कारकुन हलक़ा मशायख़ देहली ने

जमादियुस्सानी सन् १३४८ हिजरी मुताबिक़ नवम्बर सन् १९२९ ईसवी में शाए की।

डा० युद्धवीरसिंह के प्रबन्ध से जे० बी० प्रेस फ़तहपुरी देहली में छपा।

# भूमिका

बाद हम्द व सलात के नाज़िरीन की ख़िदमत में अर्ज़ है कि कुर्आन मजीद की यह हिन्दी तफ़सीर और हिन्दी तर्जुमा छः साल के अरसे में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से छप कर तैयार हो गया । ज़ख़ामत बढ़ जाने की वजह से इस तफ़सीर और तर्जुमा को दो जिल्दों में शाए किया जाता है । यानी पन्द्रह पन्द्रह पारे की अलग २ दो जिल्दें कर दी गई हैं । पन्द्रह पारे की पहली जिल्द आज से एक साल पहिले दिसम्बर सन् १६२८ ईसवी में शाए हुई थी और दूसरी जिल्द अब नवम्बर सन १६२६ ईसवी में शाए की जाती है ॥

### ग़ैर अरबी ज़बानों में तर्जुमा व तफ़सीर की ज़रूरत

कुर्आन मजीद अरबी ज़बान में नाज़िल हुआ था, लेकिन जब दुनिया की उन क़ौमों ने इस्लाम क़बूल किया जिनकी ज़बान अरबी नहीं थी, तो ज़रूरत समझी गई कि दुनिया की उन सब ज़बानों में भी कुर्आन मजीद का तर्जुमा किया जाय, जो उस ज़मीन पर बोली जाती हैं, मगर बाज़ लोगों ने इससे इख़्तिलाफ़ किया और यह कहा कि किसी ज़बान की इबारत का दूसरी ज़बान में तर्जुमा करने से अस्ली मज़मून और मतलब अदा नहीं होता, इसलिये कुर्आन मजीद का तर्जुमा ग़ैर अरबी ज़बानों में करना मुनासिब नहीं है। जो लोग कुर्आन शरीफ़ पर ईमान लाएँ, उनको चाहिये कि अरबी ज़बान को सीखें, ताकि कुर्आन मजीद का मतलब अरबी ज़बान में समझ सकें ॥

यह बात तो बहुत ठीक थी, लेकिन अमल के क़ाबिल न थी । क्योंकि दुनिया की बड़ी २ क़ौमें जिनकी तादाद करोरहा तक पहुंच गई थी, सबकी सब अरबी ज़बान हासिल नहीं कर सकती थीं और इस वजह से .कुर्आन मजीद की तालीम से महरूम रही जाती थीं या कम-अज़-कम उनको अरबी-दाँ उलमा का मोहताज बनना पड़ता था और .कुर्आन मजीद का हुक्म यह था कि .कुर्आन मजीद की तालीम को तमाम दुनिया की क़ौमों में फैला देना चाहिये । इसलिये मुसल्मानों की एक बड़ी जमाअत .कुर्आन मजीद का ग़ैर अरबी ज़बानों में तर्जुमा करने की हामी हो गई और सबसे पहले फ़ारसी ज़बान में कुर्आन मजीद का तर्जुमा किया गया । क्योंकि ईरान व तुर्किस्तान व अफ़ग़ानिस्तान वग़ैरा मुल्कों की कसीरुत्तादाद अक़वाम ने इस्लाम क़बूल कर लिया था और उनके लिये .कुर्आन मजीद के फ़ारसी तर्जुमे की अशद ज़रूरत हो रही थी ॥

सुना गया है कि फ़ारसी में .कुर्आन मजीद के कई तर्जुमे किये गये थे, जिनमें हज़रत शेख़ सादी शीराज़ी का तर्जुमा फ़ारसी बोलने वाली क़ौमों ने बहुत ज़्यादा पसन्द किया था ॥

### हिन्दुस्तान में कुर्आन मजीद के तर्जुमे

हिन्दुस्तान में मुसल्मानों की सल्तनत आठ सौ बरस तक रही, मगर यहां किसी शख़्स ने हिन्दुस्तानी ज़बानों में .कुर्आन मजीद का तर्जुमा करने की जुरअत नहीं की, क्योंकि यहां भी बहुत लोग ग़ैर अरबी ज़बानों में .कुर्आनी तर्जुमे के ख़िलाफ़ थे । अलबत्ता हिन्दुस्तान के फ़ातेह मुसल्मानों में .कुर्आन मजीद का फ़ारसी तर्जुमा आम तौर से मुरव्वज था ॥

### हज़रत शाह वलीयुल्लाह का फ़ारसी तर्जुमा

मुग़ल सल्तनत के आख़री ज़माने में हज़रत मौलाना शाह वलीयुल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी ने .कुर्आन मजीद के तर्जुमे की ज़रूरत महसूस की और उन्होंने फ़ारसी ज़बान में ख़ुद एक तर्जुमा तय्यार कर दिया । हज़रत शाह साहब का तमाम हिन्दुस्तान में बहुत बड़ा असर व रसूख़ था और हिन्दुस्तान के हर सूबा व शहर में उनके शागिर्द फैले हुये थे । फिर भी तर्जुमा के मुख़ालिफ़ लोगों को इतनी जुरअत हुई कि उन्होंने हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब पर हमला किया और जब शाह साहब मसजिद फ़तहपुरी देहली से मग़रिब की नमाज़ पढ़कर बाहर आने लगे, तो अवाम ने शाह साहब को ज़दो-कोब करना चाहा और एक हंगामा बरपा हो गया । लेकिन शाह साहब के मुरीद व मोतक़िद आ गये और उन्होंने शाह साहब को अवाम की यूरिश से बचा लिया। उसके बाद शाह साहब के ख़ान्दान में हज़रत शाह अब्दुलक़ादिर साहब और हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन साहब ने उरदू ज़बान में भी .कुर्आन मजीद के तर्जुमे कर दिये और इन तर्जुमों के बाद हिन्दुस्तानी मुसल्मानों के सब फ़िरक़ों की तरफ़ से उरदू ज़बान में दस बारह तर्जुमे और तफ़सीरें शाए हो गईं और अब ग़ालिबन् हिन्दुस्तान के सात करोड़ मुसल्मानों में शायद गिनती के चन्द आदमी .कुर्आन मजीद के तर्जुमे के मुख़ालिफ़ होंगे, वर्ना अब सब तर्जुमे के हामी हो गये हैं ॥

**हिन्दी तर्जुमे की ज़रूरत** | जैसा कि मैंने ऊपर ज़िक्र किया है कि हिन्दुस्तान में सात सौ आठ सौ बरस तक मुसलमानों की हुकूमत रही, मगर किसी बादशाह ने या किसी और मुसलमान ने हिन्दुस्तान की मुरव्वजा ज़बानों में .क़ुर्आन मजीद का तर्जुमा करने की कोशिश नहीं की। अलबत्ता जलालुद्दीन अकबर शाह बादशाह के ज़माने में हिन्दुस्तान की मज़हबी किताबें फ़ारसी में तर्जुमा की गईं ॥

हिन्दुस्तान में हर सूबा की ज़बान अलाहिदा है। सूबा मदरास में तिलगू, सूबा बम्बई में गुजराती, सूबा सिन्ध में सिन्धी, जनूबी हिन्द में मरहठी और कनड़ी, बंगाल में बंगाली; बरमा में बरमी और पंजाब में गुरुमुखी व पंजाबी का रिवाज था और है, लेकिन इन सब सूबों में उरदू ज़बान बोली और समझी जाती है। मज़कूरा ज़बानों के अलावा एक और ज़बान भी हिन्दुस्तान में है, जिसका नाम हिन्दी या देव नागरी वग़ैरा है। यह ज़बान बोलने में उरदू के क़रीब है, अलबत्ता लिखने में इसका रस्म-ख़त उरदू से अलाहदा है और संस्कृत के क़रीब है ॥

यह हिन्दी ज़बान ममालिक मुत्तहदा अवध और रुहेलखंड और सूबा बिहार और सूबा सी० पी० और हिन्दुओं की अकसर देसी रियासतों में मुरव्वज है। गोया बंगाली और बरमी और गुजराती और मरहठी वग़ैरा सब हिन्दुस्तानी ज़बानों से ज़्यादा रिवाज हिन्दी यानी नागरी ज़बान का है। करोड़ों हिन्दू औरत मर्द अब भी यही ज़बान पढ़ते हैं और यही ज़बान लिखते हैं। यहां तक कि तक़रीबन् एक करोड़ मुसलमान भी जो सूबा यू० पी० और सूबा सी० पी० और सूबा बिहार के देहात में रहते हैं या हिन्दुओं की रियासतों में बतौर रिआया के आबाद हैं और उनको हिन्दू रियासतों के ख़ास हुक्म के सबब से हिन्दी ज़बान लाज़मी तौर से हासिल करनी पड़ती है, हिन्दी के सिवा और कोई ज़बान नहीं जानते ॥

इन एक करोड़ मुसलमानों के लिये मुझको ज़रूरी मालूम हुआ कि .क़ुर्आन मजीद का नागरी ज़बान में तर्जुमा शाए किया जाय, ताकि उनके अक़ाइद और ईमान की हिफ़ाज़त हो सके और वह उन लोगों के हमलों से महफ़ू.ज़ हो जाएं, जो अपनी मस्लहत के मुवाफ़िक़ .क़ुर्आन मजीद का ग़लत और उलटा सीधा तर्जुमा करके मुसलमानों में फैला रहे थे और उनको .क़ुर्आन मजीद से बरगश्ता और मुर्तद करके आर्य मज़हब में मिला रहे थे ॥

**शुद्धि की तहरीक** | हिन्दुस्तान में आज से सात बरस पहले हिन्दुओं के एक फ़िरक़े आर्य समाज ने उन मुसल्मान क़ौमों को जो हिन्दुओं से निकल कर दाइरए-इस्लाम में आई थीं मुर्तद करने यानी उनको दुबारा हिन्दू बनाने का काम शुरू किया, जिसको वह अपनी ज़बान में शुद्धि करना कहते थे। जब यह तहरीक बहुत ज़ोर शोर से फैल गई, तो मुसलमानों ने भी अन्जुमनें बनाईं और आर्य समाज के हमले से मुसल्मानों को बचाना शुरू किया और मैंने भी बतौर .ख़ुद अपने मुरीदों और दोस्तों और रफ़ीक़ों की इम्दाद से मुसलमानों को इरतिदाद से बचाने का काम जारी किया और उस वक़्त से लेकर आज तक उस काम में मसरूफ़ हूं और ख़ुदा के फ़ज़्ल से मुझे अपने काम में बहुत ज़्यादा कामयाबी हुई और लाखों आदमी इरतिदाद से बच गये और बकसरत इस्लाम में दाख़िल भी हुये ॥

इसी तबलीग़ी ख़िदमत के ज़माने में मुझको मालूम हुआ कि बाज़ आर्य समाजी लीडरों की तरफ़ से .क़ुर्आन मजीद का ग़लत हिन्दी तर्जुमा नावाक़िफ़ हिन्दी-दां मुसलमानों में तक़सीम किया जा रहा है, उस वक़्त मैंने इरादा किया कि मुसल्मानों की तरफ़ से ख़ास एहतिमाम और एहतियात के साथ एक तर्जुमा और तफ़सीर हिन्दी ज़बान में तय्यार हो, ताकि एक करोड़ हिन्दी-दां मुसल्मानों के अक़ाइद की हिफ़ाज़त भी हो सके और दूसरे करोड़ों हिन्दी जानने वाले हिन्दू मरदों और औरतों में भी .क़ुर्आन मजीद के सही मज़ामीन असली सूरत में पहुंच सकें और वह सब हिन्दू औरत मर्द उन ग़लत फ़हमियों में न पड़ें, जो .क़ुर्आन मजीद की तालीम की निस्बत दानिस्ता फैलाई जा रही हैं ॥

**नव्वाब साहब मांगरौल की ताईद** | मेरे इस इरादे की सबसे पहिले नव्वाब शेख़ जहांगीर मियां साहब वालिए-रियासत मांगरौल ने ताईद की और माली इम्दाद का वादा भी किया। फिर उसके बाद मेरे बहुत से मुरीदों और दोस्तों और तबलीग़ी रफ़ीक़ों ने मेरे इरादे की ताईद भी की और माली इम्दाद का वादा भी किया और वादे को पूरा भी कर दिया ॥

**ख़र्च का तख़मीना** | जब हिन्दी तर्जुमा और तफ़सीर का इरादा पुख़्ता हो गया, तो मैंने माहिर और वाक़िफ़-कार लोगों से ख़र्च का तख़मीना कराया, तो मालूम हुआ कि तर्जुमा कराने का ख़र्चा और फिर उस तर्जुमा को छपवाने का ख़र्चा और काग़ज़ और जिल्द-बन्दी का ख़र्चा और अरबी मतन हिन्दी तर्जुमे के साथ लगाकर शाए करने का ख़र्चा पच्चीस हज़ार रुपये के क़रीब होगा ॥

इस तख़मीने के बाद मैंने चार मुतरजिम साठ रुपया माहवार पर मुक़र्रर किये, जिनको तनख़्वाह के अलावा खाना और मकान भी दिया जाता था। यह मुतरजिम अरबी-दां मुसल्मान थे और बाज़ इनमें मोलवी भी थे। सिर्फ़ एक हिन्दू पण्डित साहब को बनारस से बुलाया गया था, ताकि वह मुसल्मान मुतरजिमों को हिन्दी ज़बान के मुहावरे और रोज़ मर्रा की बोलचाल से आगाह करते रहें। यह पंडित साहब भी दो साल तक मुतरजिमों के साथ काम करते रहे और जब दो साल में तर्जुमा तय्यार हो गया और मैंने उसको पढ़वा कर सुना, तो मुझे शुबहा हुआ कि इस तर्जुमे में हस्ब-मनशा कामयाबी नहीं हुई और ज़रूरी समझा गया कि दुबारा नये मुतरजिम मुक़र्रर करके अज़-सरे-नौ तर्जुमा कराया जाय और साथ के साथ तफ़सीर भी हिन्दी ज़बान में हो जाय, ताकि कम इल्म मुसल्मान और ग़ैर मुसलिम हिन्दी पढ़ने वाले हिन्दी तफ़सीर की मदद से क़ुर्आन मजीद के तर्जुमे को अच्छी तरह समझ सकें और क़ुर्आन मजीद के मक़सद और मतलब में कोई कमी बाक़ी न रहने पाये ॥

चुनांचे नये मुतरजिम तलाश किये गये और मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद साहब साबिक़ पंडित केशवराम शर्मा की सदारत में उन सब मुतरजिमों से दुबारा काम शुरू कराया गया। मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद साहब नव-मुसलिम हैं और इन्होंने देवबन्द के अरबी

मदरसे की पूरी तालीम पाई है और वह मदरसे देवबन्द के फ़ारिग़ शुदा मौलवी हैं। बहर-हाल दो साल का ख़र्चा रुपये का और वक़् का बेकार गया और यह तर्जुमा और तफ़सीर जो नाज़िरीन के सामने है, तक़रीबन चार साल के अरसे में दुबारा तय्यार हुई और पहिली तफ़सीर व तर्जुमा मन्सूख़ कर दिया गया॥

**एहतियात की इन्तहा** | मैंने इस हिन्दी तर्जुमा व तफ़सीर में जिस क़दर एहतियात की है, उसका अन्दाज़ा मज़्कूरा इबारत से हो सकता है कि ज़रा से शुबहे पर मैंने दो साल का काम मन्सूख़ कर दिया और फिर तीन साल तक दुबारा रुपया और वक़् ख़र्च करके इस तर्जुमा व तफ़सीर को तय्यार कराया। इस पर भी यह एहतियात की कि तमाम तर्जुमा और तफ़सीर को ख़ुद अपने सामने पढ़वा कर सुना। मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद साहब हिन्दी में पढ़ते जाते थे और मैं मुस्तनद तफ़सीरों से इस हिन्दी तर्जुमा व तफ़सीर को मिला मिला कर देखता जाता था। मैं अगर्चे हिन्दी हरूफ़ नहीं पढ़ सकता, लेकिन हिन्दी ज़बान जानता हूं। मैं रोज़ाना एक रुकूअ से लेकर पाव सीपारा तक की सेहत करता था और इस तरह तक़रीबन् बीस पारे मैंने ख़ुद पढ़वा कर सुने और उनको दुरुस्त किया और इसके बाद बक़ीया पारे मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद साहब ने मौलाना इस्मतुल्लाह साहब मुबल्लिग़ इस्लाम वग़ैरा संस्कृत-दां उलमा की इमदाद से ख़ुद दुरुस्त किये और अब मुझे पूरी तरह यक़ीन है कि इस हिन्दी तर्जुमा और तफ़सीर में बज़ाहिर कोई ख़ामी और ख़राबी बाक़ी नहीं है॥

**ख़र्च की ज़ियादती** | जैसा कि मैंने ज़िक्र किया इस तर्जुमा और तफ़सीर की तय्यारी का तख़मीनए-मसारिफ़ पच्चीस हज़ार रुपया हुआ था, मगर कुछ तो दो साल की मेहनत और ख़र्चा फ़ुज़ूल गया यानी अज़-सरे-नौ दुबारा तर्जुमा कराया गया और कुछ क़ुर्आन मजीद के अरबी मतन के बिलाक बनवाने में ख़र्च बढ़ गया, क्योंकि ग़ाज़ी औरंगज़ेब के हाथ के लिखे हुये क़ुर्आन मजीद के बिलाक तय्यार कराये गये, जिनमें सात हज़ार रुपया ख़र्च हो गया॥

मेरे पास पहिली जिल्द की तय्यारी के ज़माने तक साढ़े सत्रह हज़ार रुपया चन्दे का आया था, जो तमाम व कमाल पहली जिल्द की तय्यारी तक ख़र्च हो गया और दूसरी जिल्द की तय्यारी के लिये मेरे पास एक पैसा भी न रहा, यहां तक कि बाज़ एख़राजात का क़र्ज़ा भी हो गया। इसके लिये मैंने फिर कोशिश की, ताकि क़र्ज़ा भी अदा हो जाय और बक़ीया पन्द्रह पारे भी शाए हो जाएं। चुनांचे क़र्ज़े की अदाइगी और इब्तदाई मसारिफ़ के लिये मेरे नायब बरमा सय्यद कशफ़ी शाह निज़ामी ने मुझे मदद दी और बक़ीया ख़र्च के लिये मैंने हैदराबाद में कोशिश की कि वहां के महकमे मज़हबी की तरफ़ से इम्दाद मिल जाय और मैं बक़ीया पन्द्रह पारे छपवा कर शाए कर दूं, मगर एक साल की लगातार कोशिश और बड़े २ लोगों के बड़े २ वादों के बावजूद हैदराबाद के मज़हबी महकमे ने एक पैसा भी इस काम के लिये मुझे न दिया, तो मज्बूरन मैंने चन्द इस्लामी अन्जुमनों और अपने ख़ास २ दोस्तों को ख़तूत लिक्खे, जिनके जवाब में रियासत जींद सिगरूर के वज़ीर डाक्टर ढींगरा साहब ने दो सौ रुपये की मदद भेजी और नव्वाब सालार जंग बहादुर ने डेढ़सौ रुपये भेजे और ख़ान बहादुर नव्वाब अबूबक्र ख़ां साहब रईस दादों ज़िला अलीगढ़ ने एक सौ रुपये भेजे और नव्वाब सर मुहम्मद मुज़म्मलुल्लाह ख़ां साहब रईस भीकमपूर अलीगढ़ ने पचास रुपये भेजे और नव्वाब सर अहमद सईद ख़ाँ साहब रईस छतारी साबिक़ गवर्नर यू० पी० व हाल होम मेम्बर यू० पी० ने एक सौ रुपये भेजे और हिज़हाई निस सर आग़ा ख़ां की इस्माईलिया जमाअत के रीक्रेशन क्लब बम्बई ने दो सौ रुपये भेजे और अन्जुमन हिमायत इस्लाम लाहौर ने एक सौ रुपये भेजे और दाऊदी बोहरा जमाअत के पेशवा हिज़होली निस मौलाना ताहिर सैफ़ुद्दीन साहब ने दुबारा तीन सौ रुपये और भेजे, हालांकि वह पहिली जिल्द की तय्यारी के वक़्त एक हज़ार रुपये दे चुके थे। इनके अलावा और भी थोड़ी २ रक़में वसूल हुईं, जिनकी तादाद एक रुपया, दो रुपया से लेकर पचास रुपये तक थी और उन सबके नाम जिल्द दोम के चन्दे की फ़िहरिस्त में दर्ज हैं॥

इन सब रक़मों की मजमूई मिक़्दार दूसरी जिल्द की तय्यारी के कसीर मसारिफ़ के लिये बिलकुल ना काफ़ी थी और मैं बहुत ही फ़िक्रमन्द था कि दिसम्बर सन् १९२८ ईसवी से बरमा की मुक़र्ररा तबलीग़ी इम्दाद भी वसूल नहीं हुई और कोई उम्मीद नहीं है कि बरमा के मुसलमान इस दूसरी जिल्द की तय्यारी का बक़ीया सर्फ़ा मुहय्या कर देंगे और हैदराबाद की सल्तनत के महकमे-मज़हबी की इम्दाद का ख़याल भी मायूसी से बदल गया, तो अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे के दिल में ख़ुद बख़ुद इस कार-ख़ैर की इम्दाद का ख़याल पैदा किया और उन्होंने इस जिल्द की तैयारी का बक़ीया तमाम ख़र्चा अपने ज़िम्मे ले लिया, जिसको उन्होंने क़िस्तवार अदा किया और उन्हीं की इम्दाद से यह दूसरी जिल्द तय्यार हो गई, जो आज शाए की जा रही है। इन फ़य्याज़ और हिम्मत वाले मुसलमान का नाम अब्दुस्सत्तार साहब है और यह वज़ीर सुलतान सिगरेट कम्पनी हैदराबाद दकन में मैनेजर हैं॥

**पहली जिल्द का दीबाचा** | पहली जिल्द जब शाए हुई थी, तो उसमें एक ख़ास दीबाचा और चन्दा देने वालों की फ़िहरिस्त शाए हुई थी, मगर इस दूसरी जिल्द का दीबाचा मैंने बदल दिया और पहली जिल्द के जिस क़दर नुस्ख़े तक़सीम व इशाअत से बचे थे, उनमें भी इस नये दीबाचे को लगा दिया गया। इस दीबाचे के साथ उन तमाम चन्दा देने वालों की फ़िहरिस्त भी है, जिन्होंने पहली जिल्द के लिये शुरू से चन्दा दिया था और जिनके चन्दे की मिक़्दार पांच रुपये या उससे ज़्यादा थी और अब दूसरी जिल्द की तय्यारी के लिये जिन लोगों ने इम्दाद दी है, उनके नाम भी आख़िर में दर्ज कर दिये गये हैं। पहली जिल्द में एक रुपया, दो रुपये, तीन रुपये और चार रुपये देने वालों के नाम नहीं लिखे गये थे, लेकिन इस आख़िरी जिल्द की फ़िहरिस्त में उनके नाम भी दर्ज कर दिये हैं, जिन्होंने एक रुपया या इससे ज़्यादा चन्दा दिया है। यानी आख़िरी जिल्द के लिये चन्दा देने वालों के नाम दर्ज किये गये हैं॥

**पहली जिल्द की इशाअत** | ख़ुदा के फ़ज़्ल से पन्द्रह पारे की पहिली जिल्द बहुत कसीर मिक़्दार में शाए हो गई। जिन लोगों ने पांच रुपये या ज़्यादा चन्दा दिया था, उनको एक २ जिल्द बिला मुआवज़ा सिर्फ़ महसूल डाक लेकर भेज दी

गईं और ग़रबा को भी एक माक़ूल तादाद में यह जिल्द मुफ़्त रवाना की गई और सिर्फ़ दस जिल्दें दस रुपये हदिया पर दी गईं, बाक़ी तमाम तादाद मुफ़्त तक़सीम हुई॥

**दस रुपये फ़ी जिल्द हदिया** पहली जिल्द की इशाअत के वक़्त दस रुपये फ़ी जिल्द हदिया एक ख़ास मस्लहत से मुक़र्रर किया गया था, लेकिन सिवाय आठ दस आदमियों के और किसी से दस रुपये हदिया नहीं लिया गया, बल्कि सबको मुफ़्त तक़सीम किया गया। और अब दूसरी जिल्द की इशाअत के वक़्त हिसाब किया जा रहा है कि बहुत क़लील रक़म हदिया की मुक़र्रर की जाय, ताकि हर शख़्स इसको ले सके। मगर बिल्कुल मुफ़्त तक़सीम करना भी मुनासिब नहीं है; क्योंकि मुफ़्त की तक़सीम में अन्देशा है कि मुख़ालिफ़ीन-इस्लाम मुफ़्त ले लेकर इसको ज़ाए कर देंगे॥

**आख़री शुक्रिया** आख़िर में मुझे नव्वाब साहब मांगरौल और मैमन जमाअतों और पंजाबी मुसल्मानों और अपने सब मुरीदों और तबलीग़ी रफ़ीक़ों का शुक्रिया अदा करना है, जिन्होंने इस कार-ख़ैर में मुझको माली इमदाद दी। ख़ुसूसन् सैयद कशफ़ी शाह निज़ामी और मशरक़ी अफ़रीक़ा की निज़ामिया जमाअत और बंगाल की निज़ामिया जमाअत और अहमदाबाद के अख़बार 'दीन' की इम्दाद का ख़ास तौर से शुक्रिया अदा करना है, जिन्होंने इस काम में माली इम्दाद दी और उन तीन हिन्दू असहाब का भी शुक्रिया अदा करना है, जिन्होंने इस काम में माली इम्दाद दी। एक हिज़-हाई-निस महाराजा साहब अलवर और दूसरे महन्त रामकिशन दास साहब और तीसरे डाक्टर ढींगरा साहब वज़ीर आज़म रियासत जींद सिंगरूर॥

**सूरे बक़र की हिन्दी तफ़सीर** यह इत्तिला भी ज़रूरी है कि हिन्दी तर्जुमा की इब्तिदा के वक़्त सूरे बक़र की एक बड़े लायक़ मुसलमान आलिम से हिन्दी तफ़सीर तैयार कराई गई थी। और दोसौ रुपये माहवार उन आलिम को दो बरस तक दिये गये थे। मगर वह तफ़सीर बहुत ज़ख़ीम हो गई है और उसको इशाअत के लिए बहुत बड़े ख़र्च की ज़रूरत है। इस वास्ते वह तफ़सीर शाए नहीं की गई। अगर कोई हिम्मत वाला मुसलमान इस हिन्दी तफ़सीर सूरे बक़र को शाए कराना चाहे, तो मुझसे ख़त व किताबत कर सकता है। इस तफ़सीर में मुख़ालिफ़ीन-इस्लाम के तमाम एतराज़ात का निहायत उम्दगी के साथ रद किया गया है॥

**आख़िरी इल्तिमास** आख़िर में तमाम नाज़रीन से इल्तिमास है कि अगर उनको इस हिन्दी तर्जुमे और तफ़सीर में कोई बात क़ाबिल इस्लाह मालूम हो, तो मुझे इत्तिला दी जाए, ताकि आइन्दा इशाअत के वक़्त उसको दुरुस्त कर दिया जाय और यह भी अर्ज़ है कि अगर किसी चन्दा देने वाले का नाम दफ़तर की ग़लती से फ़िहरिस्त में दर्ज न हुआ हो, तो वह भी मुझे इत्तला दे दें, ताकि आइन्दा एडीशन में उनका नाम भी दर्ज कर दिया जाय। वस्सलाम !!

—हसन निज़ामी देहलवी।

५ नवम्बर सन् १९२९ ई०

## क़ुर्आन मजीद के हिन्दी तर्जुमे की तैयारी में इमदाद देने वालों के नाम

जिन्होंने शुरू के पन्द्रह पारे की एक जिल्द की तैयारी यानी तर्जुमा कराने और तबाअत और काग़ज़ और जिल्द बन्दी के मसारिफ़ में हिस्सा लिया। इसमें सिर्फ़ उनके नाम हैं, जिन्होंने पाँच रुपये या पांच से ज़्यादा चन्दा दिया॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| हिज़-हाई-निस महाराजा साहब बहादुर | रियासत अलवर | डाक्टर मक़बूल आलम साहब (तीन बार चन्दा दिया) | टांग डोंगी बरमा |
| मैमन जमाअत | मुक़ीम रंगून ब्रह्मा | एफ़ एफ़ मुनशी साहब | अहमदाबाद |
| हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुर्रहीम साहब वकील मरहूम | अलीगढ़ | नव्वाब दोस्त मुहम्मद ख़ां साहब (पांच दफ़ा चन्दा दिया) | हैदराबाद दकन |
| मोहतरिमा बेगम साहबा नव्वाब मुहम्मद इस्माईलख़ां साहिब (दो बार चन्दा दिया) | मेरठ | मुहम्मद अकबर शिहाबुद्दीन साहब निज़ामी | जालंधर |
| हाफ़िज़ अब्दुलकरीम साहब सौदागर | लखनऊ | नव्वाब साहब मांगरौल (चार दफ़ा चन्दा दिया) | मांगरौल काठियावाड़ |
| ज़ियाउल-उलूम मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद | | अहमद जहां अकबर जहां साहब | अहमदाबाद |
| अनवारुलहक़ साहब एम० ए० होम सेक्रेटरी | रियासत भूपाल | मुहम्मद ज़करीया साहब देहलवी | खरगपुर |
| मौलाना नेकीशाह साहब निज़ामी | भागलपुर | मुहम्मद अब्दुललतीफ़ साहब | हैदराबाद दकन |
| बाबू ग़ुलाम मुहम्मद साहिब निज़ामी | नई देहली | शेख़ फ़र्ज़न्द अली साहब वारसी | पाढ़म |
| बाबू नादिर ख़ां साहब ओवरसियर | नई देहली | मुहम्मद हुसैन साहब | पाढ़म |
| बाबू मुहम्मद दीन साहब | रनबीर सिंहपूर कश्मीर | चौधरी इलाही बख़्श साहब हेड क्लार्क | नई देहली |
| चौधरी मुहम्मद अली ख़ां साहब | रानीपूर खीरी | बाबू मुहम्मद जान साहब | नई देहली |
| सेठ मुहम्मद याकूब साहब | चोरई | मुहम्मद इमामुद्दीन ख़ां साहब | हैदराबाद दकन |
| मोहतरिमा कुबरा ख़ातून साहिबा | भंडारा | मुहम्मद आलमगीर ख़ां साहब | आगरा |
| अब्दुल-अहद साहब | बरेठ | फ़क़ीर मुहम्मद साहब | ज़िला फ़ीरोज़पुर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| मुहम्मद दीन साहब | जंडोला | लाल मियां साहब | अहमदाबाद |
| सय्यद महमूद अली साहब | नई देहली | बिरादर ख़ुर्द मुख़्लसी शाह साहब निज़ामी मरहूम | अहमदाबाद |
| मास्टर फ़ैज़ अहमद साहब | नई देहली | शेख़ उसमान साहब | सरोंचा |
| क़ादिर शाह ख़ां साहब | सिगरामगढ़ | एच-महमूद अहमद साहब | मांडला बरमा |
| जमीअत तबलीग़ मुसलिम मार्फ़त हबीब क़ासिम साहब | कानपुर | एक मुसलमान ख़ातून साहबा | देहली |
| मुहम्मद अली हुसैन साहब | हैदराबाद दकन | करनल सरदार हकीम ख़ां साहब | जम्मू |
| एक मुसल्मान साहब | राई | मुहम्मद सुलैमान साहब ( दो बार चन्दा दिया ) | नौशहरा |
| अब्दुल-हक़ साहब पान फ़रोश | रंगून | मोहतरिमा बेगम साहबा | रियासत कोरवाई |
| अब्दुलग़फ़ार साहब निज़ामी | नई देहली | अली मुहम्मद साहब | जालन्धर |
| मार्फ़त सय्यद शमशादअली साहब निज़ामी | कलकत्ता | महर अली शाह साहब | पीरकोट सिधाना |
| मुहम्मद मुसलिम साहब | कलकत्ता | महन्त रामकिशनदास साहब | पटना |
| इस्माईल शरीफ़ साहब | हसन | फ़तेह मुहम्मद साहब निज़ामी | कलकत्ता |
| रसूल बख़्श साहब | खाटी फ़ीरोज़पुर | इमामुद्दीन साहब निज़ामी | कलकत्ता |
| एक मुसल्मान ताजिर साहब | बम्बई | बाक़र अली साहब | मदन पली |
| मोहतरिमा हमशीरा सफ़ीयुल्लाह साहब | खरगपुर | अहमद जमाल साहब | देहली |
| एक मुसल्मान साहब | खरगपुर | मुहम्मद दीन साहब शादमां निज़ामी | लाहौर |
| नव्वाब मीर हुसैन अली साहब | हैदराबाद दकन | मुहम्मद सादिक़ साहब निज़ामी | सहारनपुर |
| एम० जी० मुस्तफ़ा साहब | चाटगाम | सय्यद रियाज़ुल हसन साहब | सहारनपुर |
| मियां मुहम्मद हफ़ीज़ुल्लाह साहब | लाहौर | रहीम बख़्श ब्रादर्ज़ | पटना |
| मस्तूरात मास्टर क़मरअली साहब | गोधरा | शेख़ मुहीयुद्दीन साहब | बिलासपुर |
| मुसलमानान पारा चुनार मार्फ़त इर्शाद अहमद साहब | पारा चुनार | सय्यद मुहम्मद सईद साहब | सोराम इलाहाबाद |
| मोहतरिमा बेगम साहबा मियाँ सर | | बदरुद्दीन हुसैनुद्दीन साहब बरहक़ी निज़ामी | अहमदाबाद |
| मुहम्मद शफ़ी साहब | लाहौर | मुहम्मद दीन साहब | रघुवीरसिंह पुर |
| सेठ सिद्दीक़ जमाल साहब | कलकत्ता | अब्दुर्रहमान हाजी इस्माईल साहब निज़ामी | सूरत |
| मुहम्मद सादिक़ साहब पटेल | पलोद अफ़रीक़ा | एम० ए० जलील साहब | कडारमा |
| एक शिया नव्वाब साहब ( दो बार चन्दा दिया ) | हैदराबाद दकन | हबीब अली साहब निज़ामी ( तीन बार चन्दा दिया ) | थारावाड़ी बरमा |
| मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब | हैदराबाद दकन | शेख़ अली साहब | खरगपुर |
| सय्यद मुज़फ़्फ़र अली साहब | मान्सा | ख़्वाजा रशीदुद्दीन साहब | करीम गनर |
| मुसलमानान कलकत्ता मार्फ़त अब्दुलग़फ़ूर साहब अन्सारी | कलकत्ता | मोहतरिमा मर्यम बीबी साहबा | बरमा |
| अब्दुल अज़ीज़ साहब निज़ामी ( तीन बार चन्दा दिया ) | कलकत्ता | सूफ़ी मुहम्मद शफ़ीक़ साहब ( दो बार चन्दा दिया ) | अलमोड़ा |
| डाक्टर तसद्दुक़ हुसैन साहब | मजीकाजन | सैयद अब्दुल्लाह शाह साहब | मुज़फ़्फ़राबाद |
| अब्दुल्लाह साहब बिरादर इमामुद्दीन साहब निज़ामी | कलकत्ता | रहमतुल्लाह ख़ां साहब निज़ामी | रियासत रीवां |
| अहमद ख़ाँ साहब | भावलपुर | अहलिया हाफ़िज़ मुहम्मद इस्हाक़ साहब | मेरठ |
| अलाउद्दीन अब्दुलानी साहब | अमरावती | हाफ़िज़ मुहम्मद अहमद साहब | माँडला |
| हाजी अब्दुलक़ादिर अब्दुस्सत्तार साहब मार्फ़त अख़बार दीन | अहमदाबाद | ए० हलीम ख़ां साहब | हवड़ा |
| सुलैमान ख़ां मुहम्मद ख़ाँ साहब मार्फ़त अख़बार दीन | अहमदाबाद | सय्यद ज़ाकिर अली साहब ( दो बार चन्दा दिया ) | कालोल |
| सुलैमान हाशिम साहब मार्फ़त अख़बार दीन | अहमदाबाद | डाक्टर फ़ख़रुद्दीन साहब निज़ामी | कमपाला अफ़रीक़ा |
| एक मुसल्मानसाहब मार्फ़त फ़ीरोज़ुद्दीन साहब | कपूर्थला | एक मुसलमान साहब | रियासत दतिया |
| मुहम्मद यासीन साहब निज़ामी | नगाना | सेक्रेट्री साहब तबलीग़ुल-इस्लाम कमेटी | लांकू मार्क्सअफ़रीक़ा |
| | | ख़लीलुर्रहमान साहब | बनारस |
| | | सय्यद मुहम्मद शाह अशरफ़ अली साहब | भावलपुर |
| | | अब्दुस्सत्तार साहब | भूकरोन |

| | |
|---|---|
| | पूरबन्दर रियासत |
| मुहम्मद अब्दुलकरीम साहब | |
| मलिक मुहम्मद असलम साहब निज़ामी | |
| मरहूम | कोइटा |
| अहलिया दीवान मुहम्मद ग़ौस साहब | जलालपुर पीरवाला |
| बाबू सरदार बहादुर साहब | देहली |
| सय्यद मुहम्मद साहब | हैदराबाद दकन |
| लेडी साहबा सर अली इमाम बहादुर | पटना |
| मिन जानिब मुसलमानान | बारकपुर |
| मोहतरिमा अहलिया आग़ा हैदर साहब | हैदराबाद दकन |
| देहलवी | |
| एक शत्तारी मशाइख़ साहब | हैदराबाद दकन |
| एक निज़ामी ख़ातून साहबा | सिकन्दराबाद दकन |
| मोहतरिमा कनीज़ुल इस्लाम साहबा | |
| निज़ामी | रंगून |
| मोहतरिमा बिन्त नव्वाब सर | |
| मुहम्मद मुज़म्मलुल्लाह ख़ां साहब | अलीगढ़ |
| एक मुसलमान साहब | अमरावती |
| एक शीआ मुसलमान साहब | सिकन्दराबाद दकन |
| मोहतरिमा अहलिया नव्वाब | |
| नज़ीर नवाज़ जङ्ग बहादुर | हैदराबाद दकन |
| मोहतरिमा अहलिया मौलवी शाह | |
| मुनीर आलम साहब | मुज़फ़्फ़र नगर |
| मोहतरिमा अहलिया सय्यद | |
| महमूद साहब क़ादरी | हैदराबाद दकन |
| मोहतरिमा आसिफ़ुन्निसाअ बेगम साहबा | सिकन्दराबाद दकन |
| मोहतरिमा वालदा मुहम्मद करीम | |
| साहब, बारसी निज़ामी ( दो बार ) | पटना |
| मोहतरिमा सरदार मुहम्मदी बेगम साहबा | लूसी |
| मुहम्मद सरदार ख़ां साहब | पेश गांव |
| अहमद अन्सारी साहब | हैदराबाद दकन |
| मुहम्मद रमज़ान साहब | पिशावर |
| मुहम्मद अब्दुलग़नी साहब | हैदराबाद दकन |
| सय्यद अब्दुलमन्नान साहब निज़ामी | हैदराबाद दकन |
| एक मुसलमान साहब | चुनियां |
| अब्दुर्रहीम साहब | सिकरोटी |
| मुहम्मद ख़लीलुल्लाह साहब | खिलगांव |
| बाबू मुहसिन मियां साहब | वीरगाम |
| अब्दुलग़नी उस्मान साहब | वनथली |
| एम० अब्दुल अज़ीज़ साहब निज़ामी | पिशावर |
| मुसलमानान | बांटवा काठियावाड़ |
| प्रिन्स अब्दुलख़ालिक़ साहब | रियासत मांगरौल |
| मोहतरिमा वज़ीरुन्निसाअ बेगम | |
| साहबा निज़ामी | रियासत मांगरौल |
| प्रिन्स अब्दुल अज़ीज़ साहब | रियासत मांगरौल |
| प्रिन्स मुहम्मद सादिक़ साहब | रियासत मांगरौल |
| मोहतरिमा ख़ैरुन्निसाअ | |
| बेगम साहबा | रियासत मांगरौल |
| मोहतरिमा ज़ुबैदा बेगम साहबा | रियासत मांगरौल |

| | |
|---|---|
| | रियासत मांगरौल |
| मोहतरिमा सादिक़ दुल्हन साहबा | रियासत मांगरौल |
| मोहतरिमा हमीदा बेगम साहबा | रियासत मांगरौल |
| प्रिन्स मुहम्मद नासिरुद्दीन साहब | रानावाव |
| हाजी मुहम्मद हाजी यूसुफ़ साहब | बांटवा |
| सेठ अब्दुललतीफ़ दाऊद साहब | रियासत मानावदर |
| सिकरेट्री साहब मैमन जमाअत | रियासत मानावदर |
| जमीलुद्दीन साहब ग़ौसी निज़ामी एम० ए० | बांटवा |
| एक मुसलमान साहब | रियासत सरदारगढ़ |
| दरबार हुसैन यावर ख़ां जी व मैमन जमाअत | रियासत मानावदर |
| सेठ हाजी अब्दुल्लाह इस्माइल साहब | रियासत मानावदर |
| मुसलमानान | रियासत मांगरौल |
| डाक्टर ग़ुलाम मुहम्मद साहब क़ादरी | |
| मुसलमानान बांटवा मार्फ़त सिकरेट्री | |
| साहब अन्जुमन हिमायतुल-इस्लाम | बांटवा |
| मैमन अन्जुमन | रियासत पूरबन्दर |
| मोहतरिमा सालका ख़ातून साहबा निज़ामी | हैदराबाद दकन |
| ग़ुलाम मुहम्मद साहब | मोना कलां |
| सय्यद बाक़र अली साहब | माधवपुर |
| हस्सू मियां लाल मियां साहब | अहमदाबाद |
| मोहतरिमा वालदा मेजर शहामतुल्लाह साहब | मुरार |
| मुहम्मद दीन साहब मिस्त्री | रज़मक |
| पीर मुहम्मद इब्राहीम साहब | कनानूर |
| मोहतरिमा अहमदी बेगम साहबा | तरवर |
| फ़ीरोज़ुद्दीन साहब टीचर | भारदवाल |
| नज़र मुहम्मद ख़ां साहब ठेकेदार | डेराग़ाज़ी ख़ां |
| मुहम्मद अब्दुलकरीम बाबू ख़ां | |
| साहब ठेकेदार | सिकन्दराबाद दकन |
| कपतान ख़ां साहब | वेथलीवाड़ा |
| मुहम्मद यासीन ख़ां साहब | खतिया सराय |
| एहसान के बूटी साहब | बम्बई |
| मुहम्मद अता ख़ां साहब मिन | |
| जानिब एक ख़ातून साहबा | हवड़ा |
| मुहम्मदन ऐण्ड कम्पनी | सुरय्यागंज |
| इब्राहीम हुसैन साहब | नाटाल अफ़रीक़ा |
| मौलाना ताहिर सैफ़ुद्दीन साहब पेशवा | |
| दाऊदी बोहरा जमाअत | सूरत |
| चिराग़ुद्दीन साहब | रियासत कोरवाई |
| एक मुसलमान साहब | रियासत दतिया |
| मुसलमानान मार्फ़त अख़बार दीन | अहमदाबाद |
| मोहतरिमा अहमदी बेगम साहबा | नागपुर |
| इस्माईल क़ासिम हंसया साहब | पोर्ट लोइस |
| मौलवी हमीद अहमद साहब अन्सारी | हैदराबाद दकन |
| आसिफ़ अली ख़ां साहब | बेही |
| ख़ां साहब मुहम्मद शेर मीर ख़ां साहब | सहसराम |
| मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ साहब निज़ामी | कोह मरी |
| हेडमिस्ट्रिस मुस्लिम मिडल गरल स्कूल | बन्नूं<br>चकराता |
| नूर मुहम्मद ख़ां साहब | हैदराबाद दकन |
| लफ़टण्ट हबीब अहमद साहब | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| एम. ए. सिद्दीक़ साहब | स्यालदा | मोहतरिमा अहलिया नव्वाब मीरज़ा यार जङ्ग बहादुर | हैदराबाद दकन |
| अब्दुल अज़ीज़ साहब मिन जानिब मुसलमानान | सरगोधा | मोहतरिमा सईद बानो निज़ामी | हैदराबाद दकन |
| मिसज़ सरदार अहमद साहब | गढ़शंकर | मोहतरिमा महबूब बानो निज़ामी | हैदराबाद दकन |
| मोहतरिमा आसफ़ीया बेगमसाहबा निज़ामी | मरमुण्डा | मोहतरिमा रशीदुन्निसाअ बेगम निज़ामी | हैदराबाद दकन |
| अली मुहम्मद अब्दुल करीम साहब | कोकनाडा | मोहतरिमा ख़्वाजा बानो | देहली |
| सय्यद कशफ़ी शाह साहब निज़ामी | रंगून | मोहतरिमा नूर बानो | देहली |
| रज़ीया सुलताना साहबा | कलकत्ता | मोहतरिमा अहलिया डाक्टर मुहम्मद उमर साहब | देहली |
| नूर मुहम्मद याक़ूब साहब | रंगून | क़ाज़ी मीरांबख़्श साहब | |
| सय्यद मुहम्मद अहमद साहब | गढ़ चरोली | सदर जमाअत निज़ामिया | सराय मीराम शाह |
| सेठ अब्दुर्रहीम उसमान कम्पनी | कलकत्ता | सालेह मुहम्मद अली भाई साहब | पानोली ज़िला भरोच |
| नव्वाब मुहम्मद अबुल फ़तह ख़ां साहब | सिकन्दराबाद दकन | | |

## दूसरी जिल्द के लिये चन्दा देने वाले

| | | | |
|---|---|---|---|
| सय्यद कशफ़ी शाह साहब निज़ामी | रंगून | मुहम्मद यूसुफ़ ख़ां साहब | लशकर ग्वालियर |
| सईद बानो साहबा निज़ामी | हैदराबाद दकन | फ़ज़्लुद्दीन साहब निज़ामी | रावलपिंडी |
| सालका ख़ातून साहबा निज़ामी | हैदराबाद दकन | ग़फ़ूरुन्निसाअ बेगम साहबा | रायपुर सी. पी. |
| प्रेमी साहब अख़बार दीन | अहमदाबाद | अन्जुमन हिमायत इस्लाम | लाहौर |
| एक मुसलमान साहब | देहली | ज़ाहदा ख़ातून साहबा | माधो पुरा |
| एक मुसलमान साहब | हैदराबाद दकन | इस्माईलिया ख़ोजा जमाअत | बम्बई |
| सय्यद नसीरुद्दीन साहब क़ादरी सर्कल इन्सपेक्टर | ज़िला नासिक | मौलवी हमीद अहमद साहब अन्सारी रजिस्ट्रार | हैदराबाद दकन |
| ख़ान बहादुर नव्वाब मुहम्मद अबू बक्र ख़ां साहब रईस | दादों अलीगढ़ | अहलिया तहसील दार साहब मार्फ़त रजिस्ट्रार साहब | हैदराबाद दकन |
| आनरेबिल नव्वाब सर मुहम्मद मुज़म्मलुल्लाह ख़ां साहब (रईस भीकपुर) | अलीगढ़ | अहलिया सईद अहमद साहब | हैदराबाद दकन |
| नव्वाब सर अहमद सईद ख़ां साहब रईस | छतारी | दुख़्तर मौलवी हमीद अहमद साहब | हैदराबाद दकन |
| शेख़ नवाज़ मुहम्मद साहब | रेवाड़ी | हिज़ होली निस मौलाना ताहिर सैफ़ुद्दीन साहब | बम्बई |
| चौधरी इलाही बख़्श साहब हेड क्लार्क | देहली | सादिकुल्यक़ीन वलद अब्दुललतीफ़ साहब सौदागर | हैदराबाद दकन |
| हुसैनी बेगम साहबा | बदायूं | अब्दुस्सत्तार साहब मैनेजर कारख़ाना वज़ीर सुलतान सिगरेट कम्पनी | हैदराबाद दकन |
| अब्दुर्रहमान हाजी इस्माईल साहब निज़ामी | सूरत | डाक्टर ढींगरा साहब वज़ीर आज़म | रियासत सिंगरूरजींद |
| मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब | हैदराबाद दकन | | |

**पांच रुपये फ़ी जिल्द हदिया** — पहले दस रुपये फ़ी जिल्द हदिया मुक़र्रर था। अब दोनों जिल्दें पांच रुपये फ़ी जिल्द के हिसाब से दी जायेंगी। आधा हदिया ग़ुरबा को आसानी के ख़याल से कम कर दिया गया है

**हिन्दी तर्जुमा का पारा अम** — हिन्दी तर्जुमा का पारा-अम अलाहदा भी छपवाया गया है, ताकि हिन्दी जानने वाले लड़के और लड़कियां पढ़ सकें। इसका हदिया ≡) मुक़र्रर हुआ है :— हसन निज़ामी।

# ❀ .क़ुर्आन मजीद के मुख्य २ शब्दों की व्याख्या ❀

अम्बिया—बहुवचन नबी का। नबी के माने ख़बर देने वाला। अर्थात् ख़ुदा का सन्देश लोगों को सुनाने वाला। जिस इन्सान के द्वारा ख़ुदा ने अपने आदेश भेजे हों।

सिद्दीक़ीन-सिद्दीक़ का बहुवचन है। इसके माने बहुत सच बोलने वाला। बहुत बड़ा सत्यवादी।

शुहदाअ—शहीद का बहु वचन। धर्म मार्ग में जो मारा जाय उसे शहीद कहते हैं।

सालिहीन-सालेह का बहुवचन। नेक और धर्मात्मा मनुष्य को सालेह कहते हैं।

जन्नत—जिस जगह इस दुनिया के शुभ कर्मों का बदला मिलेगा और हर तरह का सुख और आराम होगा, उसे जन्नत कहते हैं। इस को बहिश्त भी कहते है।

दोज़ख़-जिस जगह इस दुनिया के अशुभ कर्मों का दुख भोगना होगा उसे दोज़ख़ और जहन्नम कहते हैं।

फ़रिश्ता-एक जाति जो नूर अर्थात् प्रकाश से बनाई गई है। खाने पीने की उनको कुछ ज़रूरत नहीं। ख़ुदा की आज्ञा पालन के लिये हर समय तैयार रहते हैं, उनको फ़रिश्ता और मलायक कहते हैं।

क़यामत-जिस दिन यह वर्तमान संसार ख़ुदा की आज्ञा से मिट जायगा और सब लोगों के अच्छे बुरे कर्मों का हिसाब किताब होगा उसको क़यामत कहते हैं। क़यामत की जगह कहीं कहीं 'प्रलय शब्द का प्रयोग हुआ है। उससे मुराद यही क़यामत है।

मुनाफ़िक़-उन लोगों को कहा जाता है जो दिल से ख़ुदा के रसूल और इस्लाम को न मानते हों, मगर प्रगट रूप से मुसल्मानों के साथ हों। और इस तरह से इस्लाम को मिटाना चाहते हों। शुरू इस्लाम में एक समूह ऐसे लोगों का था।

मुस्लिम—ख़ुदा का आज्ञाकारी और ख़ुदा की आधीनता करने वाला। ख़ुदा को एक मानने वाला और क़ुर्आन शरीफ़ और क़ुर्आन से पहिले की तमाम आस्मानी किताबों पर विश्वास रखने वाला और ख़ुदा के सब पैग़म्बरों को मानने वाला।

काफ़िर—ख़ुदा को एक और मुहम्मद को रसूल और क़ुर्आन को ख़ुदा की किताब और तमाम पैग़म्बरों और आस्मानी किताबों के न मानने वाले को काफ़िर कहते हैं।

कुफ़्र—इस्लाम धर्म के इन्कार करने और झुठलाने को कुफ़्र कहते हैं।

आदम—सबसे पहले जिस मनुष्य को ख़ुदा ने बनाया, उसे आदम कहते हैं। इसी वजह से उनकी सन्तान को आदमी कहा जाता है।

इबलीस—एक जिन्न का नाम। पहले ख़ुदा का बड़ा भक्त था। अवज्ञा और उद्दण्डता के कारण ख़ुदा ने इसे धतकार दिया। इसका दूसरा नाम शैतान है।

तौबा—बुरा काम करने के बाद जब मनुष्य पछताता और लज्जित होता है और फिर ख़ुदा से डर कर दिल से यह दृढ़ प्रतिज्ञा करता है कि अब मैं बुरा काम न करूंगा, इसको तौबा कहते हैं।

नबी—.ख़ुदा का भेजा हुआ यानी पैग़म्बर।

बनी इस्राईल-बनी का अर्थ सन्तान है और इस्राईल याक़ूब पैग़म्बर का नाम। याक़ूब पैग़म्बर की सन्तान को बनी इस्राईल कहते हैं।

फ़िरऔन—मिस्र के बादशाह की उपाधि। हज़रत मूसा पैग़म्बर इसको समझाने के लिए गये थे। इसने हज़रत मूसा की शिक्षा पर कान न धरा। इस लिए ख़ुदा ने इसको दरिया में डुबो दिया। .क़ुर्आन के कथनानुसार इसका मृतक शरीर अब तक क़ाहिरा के अजायब घर में मौजूद है।

मूसा—एक पैग़म्बर का नाम, जिनको तौरेत पुस्तक .ख़ुदा ने प्रदान की थी।

मन व सल्वा—एक तरह का खाना जो बनी इस्राईल को बिना मेहनत और परिश्रम किये ख़ुदा देता था।

यहूदी—हज़रत मूसा और तौरेत पुस्तक के मानने वाले और हज़रत याक़ूब के बेटे यहूदा की सन्तान को यहूदी कहते हैं।

साबी—आग के पूजने वालों को साबी कहते हैं।

नसरानी—हज़रत ईसा और इन्जील पुस्तक के मानने वालों को नसरानी या ईसाई कहते हैं।

तौरात—ख़ुदा की किताब का नाम, जो हज़रत मूसा पैग़म्बर को मिली थी।

दाऊद—एक पैग़म्बर का नाम, जो फ़लस्तीन के बादशाह थे।

रसूल—ख़ुदा के जिस नबी को नई किताब लोगों की शिक्षा के लिये दी गई हो, उसे रसूल कहते हैं।

मोजिज़े—इसका एक बचन मोजिज़ा है। जो चमत्कार ख़ुदा अपने पैग़म्बर की सचाई सिद्ध करने के लिये अपने पैग़म्बर के द्वारा प्रगट करता है और सब लोग उसे देख कर चकित हो जाते हैं, उसे मोजिज़ा कहते हैं और इसके शब्दार्थ भी 'थका देने वाला' और "आजिज़ कर देने वाला" है कि जिसको देखकर लोगों को अक़लें आजिज़ हो जायं और उस नबी की सचाई में कोई सन्देह बाक़ी न रहे।

इन्जील—ईश्वरीय पुस्तक का नाम जो हज़रत ईसा पर उतरी थी।

.क़ुर्आन-ईश्वरीय पुस्तक का नाम, जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह पर उतरी।

मुश्रिकों—इसका एक बचन मुश्रिक है। .ख़ुदा का साझी ठहराने वाला मुश्रिक कहलाता है।

जिब्रील—उच्च कोटि के एक फ़रिश्ते का नाम जो मुहम्मद रसूलुल्लाह के पास .ख़ुदा का कलाम लेकर आते थे।

मीकाईल-उच्च कोटि के एक फ़रिश्ते का नाम।

सुलैमान-एक पैग़म्बर का नाम, जो फ़लस्तीन के बादशाह थे।

शयातीन-इसका एक बचन शैतान है। इबलीस शब्द में इसकी पूरी व्याख्या देखो।

नमाज़—मुसल्मानों की एक तरह की पूजा का नाम। जो पांच समय पढ़ी जाती है।

ज़कात—मुसल्मानों के एक दान का नाम, जो अमीरों से धन का चालीसवां भाग लेकर ग़रीबों पर ख़र्च किया जाता है।

इब्राहीम—एक पैग़म्बर का नाम, जिन्होंने .ख़ुदा की आज्ञानुसार ख़ाने काबा की इमारत उसकी उपासना के लिये बनाई। इनके बाद से तमाम पैग़म्बर इन्हीं की औलाद में से हुये।

इस्माईल—हज़रत इब्राहीम पैग़म्बर के बेटे का नाम, जो ख़ुदा के सच्चे भक्त और उसके पैग़म्बर थे। ख़ाने काबा की इमारत बनाने में यह भी अपने पिता हज़रत इब्राहीम के साथ थे। इन्हीं के वंश में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह अन्तिम नबी पैदा हुये।

इस्हाक़—हज़रत इब्राहीम के दूसरे बेटे का नाम। यह भी ख़ुदा के पैग़म्बर थे। इन्हीं के वंश से ईसाई और यहूदी हैं।

याक़ूब—एक पैग़म्बर का नाम। यह हज़रत इब्राहीम के पोते और हज़रत इस्हाक़ के बेटे थे।

क़िबला—जिस तरफ़ मुसलमान मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं, उसे क़िबला कहते हैं।

हज—एक तरह की इबादत का नाम, जो मक्के जाकर अदा होता है

उमरह—एक तरह का छोटा हज। यह भी मक्के में अदा होता है।

सफ़ा—मक्के की एक पहाड़ी का नाम } इन दोनों पहाड़ियां बीच हज
मरवा—मक्के की एक पहाड़ी का नाम } की एक रस्म अदा की जाती है

फ़िदया—जो धन क़ैदियों के छुड़ाने में दिया जाता है, उसे फ़िदया कहते हैं।

सुबह काज़िब—सुबह होने से पहले पूरब दिशा में आस्मान पर खड़ी खड़ी एक सफ़ेदी दिखाई देती है, उसे सुबह काज़िब कहते हैं।

सुबह सादिक़—सुबह काज़िब के बाद पूरब दिशा में एक सफ़ेदी आड़ी आड़ी फैलती हुई नज़र आती है, उसे सुबह सादिक़ कहते हैं।

एतकाफ़—एक ख़ास इबादत का नाम। जितने दिन का एतकाफ़ होता है, उतने दिन बराबर मस्जिद में रहना पड़ता है। सिर्फ़ इन्सानी ज़रूरतों के लिये बाहर निकलने की आज्ञा है, जैसे पेशाब पाख़ाना इत्यादि, अन्यथा सांसारिक काम काज के लिये बाहर निकलने की आज्ञा नहीं है।

एहराम—हज अदा करने के लिये एक ख़ास लिबास का नाम, जो सुई से सिला हुआ न हो।

क़ुरबानी—अल्लाह के नाम पर जिस जानवर की भेंट दी जाती है उसे क़ुरबानी कहते हैं। इसका करना धनवानों और बाज़ हाज़ियों पर ज़रूरी होता है।

अरफ़ात—अरब में एक जगह का नाम। हज के दिनों में तमाम हाजी यहाँ जाकर ठहरते और ख़ुदा की उपासना करते हैं। बग़ैर यहाँ पहुंचे किसी का हज नहीं होता।

मशअरिल-हराम—अरब में एक जगह का नाम। यहां पर भी हाजी लोग जाकर हज की एक रस्म अदा करते हैं।

तलाक़—विवाह विच्छेद को तलाक़ कहते हैं। स्त्री पुरुष का जब निबाह नहीं होता, तो पुरुष तलाक़ के शब्द स्त्री से कह कर विवाह सम्बन्ध तोड़ देता है। व्याख्या फ़िक़ह की किताबों में मिलेगी। इसी तरह जब स्त्री ख़ुद किसी वजह से अपने पति से विवाह विच्छेद यानी तलाक़ लेने की इच्छा करती है तो उसे ख़ुलअ कहते हैं।

इद्दत—जब मर्द औरत को तलाक़ दे देता है या मर्द मर जाता है, तो कुछ समय ऐसा नियत है, जिसमें वह स्त्री दूसरा विवाह नहीं कर सकती, उसे इद्दत कहते हैं। दूसरे शब्दों में उसे सोग के दिन कह लीजिये।

वही—जो आदेश ख़ुदा अपने नबियों को भेजता है, उसे वही कहते हैं।

हवारी—हज़रत ईसा के सबसे पहले साथियों को हवारी कहते हैं

अज़ाब—अल्लाह की तरफ़ से गुनाह और अवज्ञा के बदले जो दुख और तकलीफ़ दी जाती है, उसे अज़ाब कहते हैं।

ईमान—मुहम्मद रसूलुल्लाह की लाई हुई तमाम बातों के दिल से यक़ीन करने का नाम ईमान है।

जनाबत—स्त्री प्रसंग या वीर्य पात के बाद से लेकर स्नान करने तक की हालत का नाम जनाबत है। जब तक मनुष्य स्नान न करले, जुनबी कहलाता है। इस दशा में मनुष्य का शरीर अशुद्ध गिना जाता है।

तयम्मुम—पानी के न मिलने या उसके नुक़सान पहुंचने की हालत में मिट्टी के द्वारा पवित्र होने का नाम तयम्मुम है और मुंह हाथ पैर धोने और सिर पर भीगे हाथ फेरने का नाम वज़ू है। व्याख्या फ़िक़ह में देखो।

अस्हाबसब्त—यहूदियों के यहां सनीचर के दिन मछली का शिकार खेलना और दुनिया का व्यवहार करना मना था। इस धारा का उल्लङ्घन करने पर जिन लोगों को ख़ुदा ने सज़ा दी, उनको अस्हाब-सब्त कहते हैं।

जिहाद—ख़ुदा की बात ऊंची करने और मुसलमान जाति और इस्लाम धर्म के बचाव और ख़ुदा की राह में तन मन धन निछावर करने का नाम जिहाद है।

हिजरत—जब अपने धर्म पर क़ायम रहना बे बस हो जाय, तो स्वदेश छोड़ कर विदेश चले जाने का नाम हिजरत है।

शआइर—इसका एक वचन शिआर है। ख़ास धार्मिक चिन्ह को शिआर कहते हैं। जैसे अज़ान क़ुरबानी इत्यादि।

सूर—एक यन्त्र का नाम। जिसकी पहली आवाज़ से क़यामत में सब लोग मर जायंगे। उसके बाद दूसरी आवाज़ से सब मुर्दे ज़िन्दा हो जायंगे।

नुबूवत—पैग़म्बरी। नबी होना।

जिन्न—एक जाति का नाम, जिसको ख़ुदा ने आग से बनाया।

उम्मत—जमाअत और समूह को उम्मत कहते हैं।

आराफ़—जन्नत और दोज़ख़ के बीच एक जगह का नाम।

ग़नीमत—धार्मिक युद्ध में जो धन हाथ लगे, उसे ग़नीमत का माल कहते हैं।

लौह महफ़ूज़—ख़ुदा के यहां एक बहुत बड़ी तख़्ती है, जिसमें दुनिया में होने वाली सब चीज़ें पहले वहां लिखी जाती हैं।

मुहाजिरीन—जो मुसलमान मक्के के काफ़िरों से तंग आकर और धर्म इस्लाम पर क़ायम रहने से मज्बूर होकर मक्का छोड़कर मदीना चले गये थे।

अन्सार—मदीना के वह मुसलमान, जिन्होंने मक्का से आये हुये दुखी मुसलमानों का हर तरह साथ दिया।

हज अकबर—बड़ा हज यानी उमरे के अलावा जो पूरा हज होता है

हिदायत—सीधी राह, जो ख़ुदा तक पहुंचा दे।

इमाम—अगुवा, पेशवा, नेता और बादशाह को कहते हैं।

ख़लीफ़ा—नायब और स्थानापन्न को कहते हैं।

रिसालत—पैग़म्बरी और नबी होने को कहते हैं।

हलाल—जिसके इस्तेमाल करने की आज्ञा हो।

हराम—जिसके इस्तेमाल की मनाही की गई हो।

सवाब-नेक काम का अच्छा बदला।

अज़ाब-बुरे काम का बुरा बदला।

अर्श-तमाम आस्मानों के ऊपर एक चीज़, जो ज़मीन आस्मान सब को घेरे हुये है।

किरामन कातिबीन-दो फ़रिश्ते जो हर मनुष्य के दाईं बाईं ओर रहते हैं। दाईं ओर वाला मनुष्य की नेकियां लिखता रहता है और बाईं ओर वाला बदियाँ।

बुर्ज-राशिचक्र

रहमत-मेहरबानी करना, कृपा दया करना।

मस्जिद हराम-ख़ानए काबा।

मस्जिद अक़सा—बैतुलमक़दस।

मोमिन-ईमानदार। मुहम्मद रसूलुल्लाह की लाई हुई हर बात को मानने वाला।

क़िसास-ख़ून और ज़ख़्मों का बदला।

हिकमत-जिसमें कोई ख़राबी कभी न निकल सके। हर तरह अच्छाई ही अच्छाई हो।

क़ाब क़ौसैन-क़ुर्आन मजीद में मेराज का जहां ज़िक्र आया है, वहां एक जगह क़ाब क़ौसैन का शब्द भी है, जिसका मतलब मुहम्मद रसूलुल्लाह का ख़ुदा से नज़दीक होना है। मेराज मुहम्मद रसूलुल्लाह का एक बहुत बड़ा मोजिज़ा है। आप हज़रत जिब्रील के साथ मक्का से बैतुलमक़दस गये। फिर वहां से तमाम आस्मानों की सैर की। इस अवसर पर बड़े २ रहस्य आप पर प्रगट हुये। दोज़ख़ जन्नत इत्यादि, बहुत सी चीज़ों को देखा। ख़ुदा से बात चीत हुई। पांच वक़्त नमाज़ मेराज ही में नियत हुई। व्याख्या तफ़सीरों में देखो।

فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰىٓ اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ
ذِكْرًا ۝ فَانْطَلَقَا حَتّٰىٓ اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ
خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ
شَيْـًٔا اِمْرًا ۝ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ
صَبْرًا ۝ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا
تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ۝ فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰىٓ اِذَا
لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً
بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ۝ قَالَ اَلَمْ
اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ۝ قَالَ
اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِىْ ۚ
قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّىْ عُذْرًا ۝ فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰىٓ اِذَآ
اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ۨ اسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ
يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ

तो जब तक मैं (अज़ख़ुद) तुमसे किसी बात का तज़किरा न करूँ, तुम मुझसे उसकी बाबत कुछ पूछना ही नहीं० फिर (मूसा और ख़िज़र) दोनों (मिल कर आगे) चले। यहां तक कि (राह में एक दरिया पड़ा) जब दोनों किश्ती में सवार हो लिये, तो ख़िज़्र ने (एक तख़्ता तोड़ कर) किश्ती को फाड़ दिया। (मूसा ने) कहा-क्या आपने किश्ती को इस ग़रज़ से फाड़ा है कि किश्ती के लोगों को (दरिया में) डुबो दो—(यह तो) आपने बड़ी ही (ख़तरनाक) बात की० (ख़िज़्र ने) कहा, क्या मैंने नहीं कहा था कि तुमसे मेरे साथ हरगिज़ सब्र नहीं हो सकेगा० (मूसा ने) कहा कि आप मुझसे मेरी भूल चूक पर गिरिफ़्त न कीजिये और मेरे (इस) मामिले में मेरे साथ (इतनी) सख़्त गीरी (भी) न कीजिये० (बात रफ़्त व गुज़श्त हुई) फिर दोनों (और) आगे बढ़े। यहाँ तक कि (रस्ते में) एक लड़के से मिले, तो (ख़िज़र ने) उसको (पकड़ कर) मार डाला। (मूसा ने) कहा कि क्या आपने एक मासूम शख़्स को मार डाला (और वह भी) किसी के (ख़ून के) बदले में नहीं। (यह तो) आपने बड़ी ही बेजा हर्कत की० (ख़िज़र ने) कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मेरे साथ तुमसे हरगिज़ सब्र नहीं हो सकेगा० (मूसा ने) कहा कि इसके बाद अगर मैं आपसे कुछ भी पूछूँ, तो आप मुझको अपने साथ न रखियेगा कि आप मेरी तरफ़ से (हद्द) उज़र को पहुंच चुके० (यह हो हुआ कर और) आगे बढ़े, यहां तक कि जब एक गाँव वालों के पास पहुंचे, तो वहाँ के लोगों से खाने को माँगा और उन्होंने इनको ज़ियाफ़त का देना मंज़ूर न किया। इतने में इन्होंने गाँव में एक दीवार देखी, जो गिरा ही चाहती थी—

---

तो उस समय तक कि मैं स्वयं तुमसे किसी बात का ज़िक्र न करूँ, तुम मुझसे किसी वस्तु के सम्बन्ध में (कुछ भी) न पूछना ॥

(जब यह इक़रार हो गया) तो दोनों चले। (मार्ग में एक नदी पड़ी। नाव पर बैठे)। जब नाव में सवार हुए, तो ख़िज़र ने उसको तोड़ दिया (अर्थात् नाव का एक तख़्ता तोड़ डाला)॥

(यह देखते ही मूसा से न रहा गया)—बोल उठे (हायँ!) क्या तुमने इस (किश्ती) को तोड़ डाला, ताकि तुम किश्ती वालों को (अर्थात् उसके बैठने वालों को नदी में) डुबो दो। ख़ुदा की सौगन्ध! यह तो तुमने बहुत बड़ी (भयानक) बात की। (यह सुनते ही ख़िज़रने) कहा (क्यों!) क्या मैंने तुमसे नहीं कह दिया था, कि तुम मेरे साथ (रह कर और मेरे कामों को देख कर)' कदापि (कदापि) धैर्य न रख सकोगे। (मूसा ने) कहा (मनुष्य हूं, भूल गया था)। तुम मेरी भूल को न पकड़ो, और मेरे विषय में (अधिक) सख़्ती न बरतो ॥

(संक्षिप्त वृतान्त यह कि बात गई गुज़री हो गई)। फिर दोनों (साथ साथ) चले—यहाँ तक कि उन्हें (मार्ग में) एक लड़का मिला। तो (ख़िज़र ने) उसको (जान से) मार डाला। (यह देखना था कि मूसा फिर) बोल उठे (हायँ!) क्या तुमने एक निर्दोष (लड़के की) जान बिना किसी दूसरी जान के (बदले) लेली। (अर्थात् उसने तो किसी की जान भी नहीं ली थी। तुमने उसको व्यर्थ निरपराध मार डाला)। ख़ुदा की क़सम! यह तुमने बहुत बुरा किया ॥

(यह सुन कर ख़िज़र) बोले (हे मूसा!) क्या मैंने तुमसे नहीं कह दिया था कि तुम मेरे साथ (रह कर) कदापि संतोष न कर सकोगे। (अर्थात् मेरी अनोखी बातों को देख कर बिना मुझसे उसका कारण पूछे न रह सकोगे)॥

(मूसा ने) कहा (ख़ैर! अब तक जो हुआ, सो हुआ)। यदि मैं इसके पश्चात (तुम्हारी कोई बात देखूं और) तुमसे (उसके बारे में) कुछ पूछ गछ करूँ, तो (फिर) तुम मुझे अपने साथ न रखना। तुम मेरी ओर से (अन्तिम) उज़र को पहुंच चुके। (अर्थात् यदि फिर तुमने मुझको अपने साथ से अलग कर दिया, तो तुम दोष रहित और निरपराधी हो)॥

(जब यह वादा हो गया) तो दोनों (आगे) चले। यहाँ तक कि जब वह (चलते २ कुछ) गांव वालों के निकट पहुंचे (अर्थात् मार्ग के मध्य में कोई गाँव पड़ा) तो उसके निवासियों से उन्होंने खाना माँगा। उन मनुष्यों ने उनको दावत से साफ़ इन्कार कर दिया। इतने में उन दोनों (अर्थात् मूसा व ख़िज़र) ने उस (गांव) में एक (पुरानी)' दीवार देखी, जो (बिल्कुल) गिरने को थी—

فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا قَالَ
هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ
مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ
لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا
وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ
غَصْبًا وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ
فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَأَرَدْنَا
أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ
رُحْمًا وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي
الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا
صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا
كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي
ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا وَيَسْأَلُونَكَ ع

तो ( ख़िज़र ने ) उसको ( फिर अज़ सरे नौ ) खड़ा कर दिया। (इस पर मूसा ने ) कहा, अगर आप चाहते, तो ( इन लोगों से ) दीवार के खड़ा कर देने की मज़दूरी लेते० ( ख़िज़र ने ) कहा, बस अब मुझमें और तुममें छुट्टम छुट्टा, जिन (बातों) पर तुमसे सब्र न हो सका, मैं अभी तुमको उनकी अस्ल हक़ीक़त बताए देता हूं० कि किश्ती तो ( मल्लाही पेशा ) ग़रीबों की थी, वह ( उसको ) दरिया में ( मज़दूरी पर ) चलाते थे। तो मैंने चाहा कि उसको ऐबदार करदूं, क्योंकि उनके सामने की तरफ़ ( दरिया पार ) एक बादशाह था ( ज़ालिम ) जो हर एक ( बकार आमद ) किश्ती को ज़बरदस्ती ज़ब्त कर लिया करता था० और वह जो लड़का था, तो उसके माँ बाप दोनों ईमान वाले ( लोग ) थे। तो हमको यह अन्देशा हुआ कि ( ऐसा न हो, बड़ा होकर ) सर्कशी और कुफ़्र से उनको ईज़ा दे० लिहाज़ा हमने यह इरादा किया कि ( उसको मार दें और ) उनका पर्वरदिगार उसके बदले में उनको ( ऐसा फ़र्ज़न्द ) अता फ़र्माए ( जो ) पाक नफ़्सी और पास क़राबत में इससे बेहतर (हो)० और रही दीवार, सो शहर के दो यतीम लड़कों की थी और दीवार के नीचे उनही (लड़कों) का ख़ज़ाना (गड़ा हुआ) था, और उन ( लड़कों ) का बाप ( एक ) नेक ( आदमी ) था। पस तुम्हारे पर्वर्दिगार ने चाहा कि दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुंचें और ( दीवार के तले से ) अपना ख़ज़ाना निकाल लें ( और उनके हाल पर ) तुम्हारे पर्वर्दिगार की यह एक मेहर्बानी थी और (इन वाक़िआत में ) मैंने जो कुछ किया, अपने इख़्तियार से नहीं किया, (बल्कि ख़ुदा के हुक्म से )-यह है अस्ल हक़ीक़त, उन ( वाक़िआत ) की, जिन पर तुमसे सब्र न हो सका० और (ऐ पैग़म्बर!) लोग तुमसे—

ع ५

पस (ख़िज़र ने ) उसको ठीक कर दिया ( और उसको गिरने से बचा लिया। यह देख कर मूसा से फिर न रहा गया और तुरन्त) बोल उठे ( हे ख़िज़र ! ) यदि तुम चाहते, तो इस ( दीवार के ठीक करने ) पर ( दीवार के स्वामी से ) कुछ मंजूरी ले लेते॥

(यह बात सुनते ही ख़िज़र ने मूसा से ) कहा ( हे मूसा ! तुम्हारे बचन के अनुसार ) अब मेरे और तुम्हारे मध्य ( यहां से ) जुदाई है। (अब तुम मेरे साथ नहीं रह सकते, इस लिये ) अब मैं तुमको ( विदा करता हूं। और ) उन ( सब ) बातों की (वास्तविकता व ) अस्लियत से सूचना देता हूं, जिन पर तुम सन्तोष न कर सके ( और बे बोले न रहे ) ॥

(लो सुनो ! प्रथम मामला किश्ती के तख़्ते निकाल देने का है ) तो ( वास्तविक बात यह है कि ) किश्ती ( कुछ ) ग़रीबों की थी, जो ( उसे ) नदी में ( किराये पर ) चलाया करते थे। पस मैंने उसे ऐबदार बनाना चाहा, और ( उसका तख़्ता निकाल कर उसको ऐबदार बना दिया। क्योंकि ) उनके सन्मुख ( नदी के द्वितीय तट पर ) एक ( अत्याचारी ) बादशाह था, जो प्रत्येक ( दोष रहित ) किश्ती को ( ग़रीब मल्लाहों से ) ज़बर्दस्ती छीन लिया करता था॥

और रहा लड़का, तो ( उसकी जान लेने का कारण यह है कि ) उस लड़के के माता पिता ( नेक और ) ईमान्दार थे ( और उस पुत्र के गुण उत्तम ज्ञात नहीं होते थे )। अतः हमें सन्देह हुआ कि ( कहीं ऐसा न हो कि ) यह ( पुत्र युवा होकर ) उन्हें ( अपनी ) उद्दण्डता व अवज्ञा से दुख पहुंचाये॥

इस लिये हमने चाहा कि ( उसको तो जान से मार दें और ) उनका पालन कर्ता उसके बदले उन्हें ( एक ऐसा पुत्र ) प्रदान करे ( जो हृदय की शुद्धता और ) स्वच्छता और (अपने माता पिता के साथ) प्यार करने में उससे बहुत अच्छा ( हो )॥

और रही दीवार—तो वह उस शहर के दो अनाथ बच्चों की थी और उसके नीचे उनका कोष ( गड़ा हुआ ) था और उनका पिता ( बहुत ) भला (मनुष्य) था। अतः तुम्हारे पालन कर्त्ता ने चाहा कि ( इस कोष को नष्ट न होने दे। और यदि दीवार गिर पड़ती, तो कोष दिखाई दे जाता और दूसरे मनुष्य उसको निकाल लेते। और उस भले मनुष्य की सन्तान वञ्चित रह जाती। इस लिये उस दीवार को गिरने से बचा लिया, जिससे कि ) जब वह दोनों ( बच्चे ) अपनी युवा अवस्था को पहुंच जायं और ( उनमें पूर्ण समझ पैदा हो जावे, तो ) अपने पालन कर्ता की कृपा व मेहर्बानी से निज कोष ( दीवार के नीचे से ) निकाल लें ( और सुख पूर्वक ज़िन्दगी व्यतीत करें )। और ( हे मूसा ! ) मैंने यह ( जो कुछ भी तुम्हारे सन्मुख किया, ख़ुदा की आज्ञानुसार किया )। अपनी राय ( और अपनी मरज़ी ) से ( कुछ ) नहीं किया। यह है, वास्तविकता उन ( समस्त ) बातों की, जिन पर तुम सन्तोष न कर सके॥

ज़िल्क़र्नैन का हाल ( इम्तिहानन ) दर्याफ़्त करते हैं, तुम ( उनसे ) कहो कि मैं तुमको उसका थोड़ा सा तज़किरह पढ़ कर सुनाता हूं० ( ख़ुदा फ़र्माता है कि ) हमने उसको रूए ज़मीन पर बड़ी क़ुद्रत दी थी और हमने उसको हर तरह के साज़ व सामान दे रक्खे थे० चुनाँचे वह एक सामान के पीछे पड़ा ( यानी सफ़र मग़रिब की तय्यारी करने लगा ) ० यहाँ तक कि जब ( चलते चलते ) आफ़ताब के ग़ुरूब होने के मक़ाम पर पहुंचा, तो उसको आफ़ताब ऐसा दिखाई दिया कि ( जैसे ) वह काली काली कीचड़ के कुंड में डूबता है और देखा कि उस ( कुंड ) के क़रीब एक क़ौम ( भी आबाद ) है। हमने फ़र्माया कि ऐ ज़िल्क़र्नैन! ( तुम बादशाह हो और दोनों इख़्तियार रखते हो ) चाहो ( इन लोगों को ) अज़ाब दो या इन ( के बारे ) में हुस्न सुलूक का शेवा इख़्तियार करो० ( ज़िल्क़र्नैन ने ) कहा कि जो ( इनमें से ) सर्कशी करेगा, उसको तो हम सज़ा देंगे, फिर ( क़यामत के दिन ) वह अपने पर्वर्दिगार के हुज़ूर में लौटा कर लाया जायगा और वह ( हमारी सज़ा के अलावा ) उसको ( और ) अज़ाब सख़्त देगा० और जो ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, तो ( वैसा ही उसके ) बदले में उसको ( ख़ुदा के हां से ) भलाई मिलेगी और हम (भी) अपने कामों में उसको आसान आसान काम करने को कहेंगे० फिर वह एक ( और ) सामान के पीछे पड़ा ( यानी सफ़र मश्रिक़ की तय्यारी करने लगा ) ० यहां तक कि जब ( चलते चलते ) आफ़ताब के निकलने की जगह पहुंचा, तो उसको ऐसा मालूम हुआ कि आफ़ताब कुछ लोगों पर तुलू करता है, जिनके लिये हमने आफ़ताब के इधर कोई आड़ नहीं रक्खी० ( और वाक़े में भी ) ऐसा ही ( था)। और ज़िल्क़र्नैन के पास जो कुछ था, हमको उससे पूरी पूरी आगाही थी० फिर वह एक (और ) सामान ( सफ़र ) के पीछे पड़ा०—

عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ؕ
اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ
كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۙ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ۙ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ
مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ
حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا
الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ
حُسْنًا ۙ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ
ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۙ وَاَمَّا
مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ
وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ۙ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۙ
حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى
قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۙ كَذٰلِكَ ؕ
وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۙ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۙ

और ( हे रसूल! अब ) लोग तुमसे ( सिकन्दर) ज़ुल्क़रनैन का हाल दर्याफ़्त ( करके तुम्हारे ज्ञान भण्डार का हाल ज्ञात ) करना चाहते हैं। तो तुम ( उनसे ) कहदो कि मैं अभी तुमको उसका कुछ हाल सुनाता हूं॥

( सुनो! तुम्हारा पालन कर्ता कहता है कि वह एक हमारा बन्दा था )। हमने उसको पृथ्वी में ( बहुत ) बड़ी शक्ति प्रदान की थी और प्रत्येक प्रकार का ( आवश्यक ) सामान प्रदान किया था। अतः वह ( संसार में शहर पर शहर जीतता फिरता था। एक बार वह पश्चिम की ओर उसी ग़रज़ से ) एक रास्ते पर हो लिया ( और उस ओर बढ़ता चला गया ) ॥

यहां तक कि जब वह सूर्य अस्त होने के स्थान पर पहुंचा, तो उसने सूर्य को ( जो ) देखा ( तो ऐसा ज्ञात हुआ कि मानो वह ) एक काली कीचड़ के तालाब में डूब रहा है। और उसने उसके ( आस ) पास एक जाति को ( बसा हुआ ) पाया। हमने ( उससे ) कहा, हे ज़ुल्क़रनैन! हमने तुमको बादशाह बनाया है। और तुमको प्रत्येक प्रकार की शक्ति प्रदान की है )। तुम चाहे ( इन मनुष्यों को ) दुख पहुंचाओ और चाहे इनके साथ भलाई का बर्ताव करो॥

( ज़ुल्क़रनैन ने ) कहा कि ( सबसे प्रथम इनको तौहीद की शिक्षा दी जायगी ) परन्तु जो ( उससे फिरा हुआ होगा और अल्लाह तआला से) उद्दण्डता करेगा, तो हम ( लोग इस संसार में तो ) उसको ( क़त्ल का ) दण्ड देंगे ( और ) फिर ( मरने के पश्चात क़यामत में ) वह अपने पालन कर्ता के दरबार में लौटाया जायगा। फिर वह उसको ( बहुत ) अधिक कष्ट देगा ( और उसकी उद्दण्डता का उसको पूरा पूरा मज़ा चखायेगा ) ॥

और जो ( अल्लाह के एक होने पर) ईमान ले आयेगा और ( ईमान लाने के पश्चात) काम भी अच्छे करेगा, तो उसके लिये (ख़ुदा के यहाँ भी ) सर्वोत्तम बदला है। और हम (लोग भी ) उसके लिये सरल आज्ञायें देंगे (और उसके साथ प्रत्येक प्रकार की रिआयत करेंगे)।

फिर (जब पश्चिमी शहरों को जीत चुका, तो) वह (पूर्व की ओर) एक मार्ग पर हो लिया और उस (ओर बराबर बढ़ता चला गया) ॥

यहां तक कि जब वह सूर्य उदय होने के स्थान तक पहुंच गया, तो उसने सूर्य को ऐसे मनुष्यों पर उदय होते देखा ( अर्थात पूर्व की ओर ऐसे मनुष्यों को बसा हुआ पाया ) जिनके लिये हमने सूर्य से वरे कोई आड़ नहीं बनाई। (अर्थात उनमें हमने इतनी बुद्धि नहीं उत्पन्न की कि वह अपने रहने सहने के लिये कोई मकान बना लेते और ज़ुल्क़रनैन का हाल बिलकुल ) इसी प्रकार है। हमको ( उसकी पूर्ण कहानी और उसकी आयु की समस्त दशा ज्ञात है। यहां तक कि ) जो ( कुछ आवश्यकता की ) वस्तु उसके पास थी, उसकी ( भी हमें ) ख़बर है। ( उसको जो मनुष्य असत्य बताते हैं, वह स्वयं झूठे हैं ) ॥

फिर ( जब वह पूर्व के देशों को भी विजय कर चुका, तो फिर उत्तर की ओर ) एक मार्ग पर हो लिया ( और उधर की ओर बराबर बढ़ता चला गया ) ॥

यहां तक कि जब ( चलते चलते एक पहाड़ की घाटी के ) दो कगारों के बीच में पहुंचा, तो देखा कि कगारों के इधर एक क़ौम (आबाद) है (और वह ऐसे वहशी हैं) कि बात के समझने के पास तक नहीं फटकते० उन लोगों ने (अपनी बोली में) अर्ज़ किया कि ऐ ज़िल्क़र्नैन! (इस घाटी के उधर) याजूज और माजूज (की क़ौम है और वह लोग हमारे) मुल्क में (आकर) फ़साद करते हैं। (आप की मरज़ी हो) तो हम आपके लिये चन्दा जमा करदें, बशर्ते कि आप हमारे और उनके दर्मियान कोई रोक बनादें० (ज़िल्क़रनैन ने) कहा कि वह माल जिसमें मेरे पर्वर्दिगार ने मुझे (पूरा) इख़्तियार दे रक्खा है, काफ़ी व वाफ़ी है (चन्दे की तो ज़रूरत नहीं, मगर हां तुमको ऐसी ही मदद करनी है) तो (हाथ पांव के) ज़ोर से मेरी मदद करो। मैं तुम (लोगों) में और उन (लोगों) में एक दीवार खींच दूंगा ० (अच्छा तो कहीं से) लोहे की सिलें हमको ला दो। (चुनांचे वह सिलें लाए और ज़रूरी कारंवाई होती रही) यहां तक कि जब ज़िल्क़रनैन ने दोनों कगारों के बीच (की कुशादगी) को (पाट कर) बराबर कर दिया, तो हुक्म दिया कि (अब इसको) धौंको। यहां तक कि जब दीवार को (लाल) अङ्गारा कर दिया, तो कहा कि अब हमको तांबा ला दो कि उसको पिघला कर इस दीवार पर उंडेल दें० ग़रज़ (इस तदबीर से ऐसी ऊँची और मज़बूत दीवार तय्यार हो गई कि याजूज माजूज) न तो उसपर चढ़ सकते थे और न उसमें सूराख़ कर सकते थे० (ज़िल्क़र्नैन ने उस दीवार आहनी को देख कर) कहा कि यह मेरे रब की मेहर्बानी है। लेकिन जब मेरे पर्वर्दिगार का वादए (क़यामत) आ मौजूद होगा, तो इस (दीवार) को ढाकर बराबर कर देगा और मेरे पर्वर्दिगार का वादा सच्चा है० और (ऐ पैग़म्बर!) हम उस दिन यह हाल कर देंगे कि (दरिया की) लहरों की तरह एक में एक गड मड हो जाएँगे और सूर फूंका जायगा। पस हम तमाम लोगों को (मैदान हश्र में) जमा करेंगे०—

حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا
لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ۝ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ
اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا
وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝ قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ
فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝
اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰىٓ اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ
قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰىٓ اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ
عَلَيْهِ قِطْرًا ۝ فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا
اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ۝ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ
فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ
رَبِّيْ حَقًّا ۝ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ
بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۝ وَّعَرَضْنَا

جَهَنَّمَ

यहां तक कि जब वह (ऐसे स्थान पर, जो) दो पर्वतों के मध्य में (था) पहुंचा, तो उसने उन (पर्वतों) से वरे एक ऐसी (जंगली) जाति को (बसा हुआ) पाया, जो (उसकी) बात (अच्छी प्रकार) नहीं समझती थी॥

(तात्पर्य यह है) उन्होंने (अर्थात उस जंगली जाति के मनुष्यों ने किसी न किसी प्रकार ज़ुल्क़रनैन से) कहा, कि हे ज़ुल्क़रनैन! (इस घाटी के उस ओर) याजूज माजूज (की जाति बसी हुई है। उस जाति के मनुष्य हमारी) पृथ्वी में (आकर बड़ा) उपद्रव करते हैं। (अतः यदि तुम हमारे हाल पर कृपा करो) तो हम तुम्हारे लिये कुछ रुपया (इकट्ठा) करदें, इस शर्त पर कि तुम हमारे और उन (उपद्रवियों) के मध्य एक रोक बना दो (जिससे कि वह हमारी पृथ्वी में पैर न रख सकें और हमें दुःख न पहुंचा सकें)॥

(ज़ुल्क़रनैन ने) कहा कि वह (रुपया) जिस पर मेरे पालन कर्ता ने मुझको अधिकार दिया है, वह (तुम्हारे रुपये से) अच्छा है (और वह मेरे पास बहुत मौजूद है। अतः मुझे तुम्हारे रुपये की तो आवश्यकता नहीं है, वरन् यदि तुमको कुछ सहायता करनी है) तो (अपने हाथों की) शक्ति से मेरी सहायता करो (जिससे कि) मैं (आसानी के साथ) तुम्हारे और उनके बीच में एक मोटी दीवार बनादूँ। कहीं से लोहे के टुकड़े (भी) मुझे ला दो॥

(जब लोहे के टुकड़े और आवश्यक वस्तुएँ इकट्ठी हो गईं और दीवार बननी आरम्भ हो गई) यहाँ तक कि दोनों पर्वतों के मध्य ख़ाली जगह को (बिल्कुल) भर दिया, तो ज़ुल्क़रनैन ने (लोगों से) कहा (अग्नि) सुलगाओ (आग सुलगाई गई) यहाँ तक कि जब उस (दीवार) को (बिल्कुल) आग बना दिया, तो उसने कहा (मनुष्यो! अब) तुम! पिघला हुआ तांबा लाओ, जिसको मैं उस पर डाल दूँ॥

तात्पर्य यह है कि (वह दीवार बन कर तैयार हो गई और इतनी पक्की और ऊँची बनी कि याजूज माजूज) न तो उसके ऊपर चढ़ सकते थे और न उसमें छेद कर सकते थे॥

(ज़ुल्क़रनैन ने उस दीवार को देखा और देख कर) कहा कि यह मेरे पालन कर्त्ता की कृपा है (जो क़यामत तक स्थित रहेगी, परन्तु) जब मेरे पालन कर्त्ता का वादा (क़यामत होने का) आयेगा, तो मेरा पालन कर्त्ता उसके टुकड़े २ उड़ा देगा। और (इसमें तनिक सा भी सन्देह नहीं कि) मेरे पालन कर्त्ता का वादा (क़यामत होने का) सत्य है (अवश्य पूरा होकर रहेगा)॥

और (जिस दिन कि उस दीवार को तोड़ा जायगा) उस दिन हम उन (याजूज माजूज) को (इतनी अधिकता से) छोड़ेंगे कि वह (पानी की लहरों के समान) परस्पर एक दूसरे में घुस जायँगे। और (फिर कुछ दिनों के पश्चात प्रथम सूर फूंका जायगा, जिससे समस्त संसार का प्रबन्ध नष्ट हो जायगा। और समस्त वस्तुएँ संसार से जाती रहेंगी। फिर दूसरा) सूर फूंका जायगा (जिससे सब मुर्दे जी उठेंगे)। फिर हम उन्हें (हश्र के मैदान में) इकट्ठा करेंगे और—

जहन्नम यौमइज़िल्लिल्काफ़िरीन अर्ज़ा —

جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۝ الَّذِينَ كَانَتْ
أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَن ذِكْرِي وَكَانُوا لَا
يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۝ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا
أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا
أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۝ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم
بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ
صُنْعًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ
وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَزْنًا ۝ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا
وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ
الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا

और उसी दिन दोज़ख़ को ( भी ) काफ़िरों के सामने ला पेश करेंगे० जिनको आंखें हमारे ज़िक्र (यानी क़ुर्आन की तरफ़ ) से (ग़फ़लत के) परदे में थीं और ( हक़ की तरफ़ से उनके कानों में गरानी थी कि ) वह ( उसको ) सुन न सकते थे० क्या ( यह ) काफ़िर इस ख़याल में हैं कि हमको छोड़ कर हमारे बन्दों को ( अपना ) कारसाज़ बनाएँ (और उनसे कुछ बाज़ पुर्स न हो—नहीं ) हमने काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिये जहन्नम तय्यार कर रक्खी है० (ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों से ) कहदो कि कहो तो हम तुम्हें वह लोग बताएँ, जो आ़माल के एतबार से बड़े घाटे में हैं० ( हाँ तो यह ) वह लोग (हैं) जिनकी दुनियावी ज़िन्दगी की कोशिश ( सब ) गई गुज़री हुई और वह (अपनी ग़लत फ़हमी से ) इसी ख़याल में हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं० यही वह लोग हैं, जिन्होंने अपने पर्वर्दिगार की आयतों को और ( क़यामत के दिन ) उसके हुज़ूर में हाज़िर होने को न माना, तो इनके अमल अकारत हो गए । तो क़यामत के दिन हम इन ( के आमाल नेक ) का (रत्ती बराबर ) वज़न (भी हिसाब में ) क़ायम नहीं रक्खेंगे० यह जहन्नम इन (की उस बद किर्दारी ) का बदला है कि उन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई० अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, उनकी ज़ियाफ़त के लिये फ़िरदौस ( बरीं ) के बाग़ होंगे० जिनमें वह हमेशा ( हमेशा ) रहेंगे (और कभी ) यहाँ से उठना नहीं चाहेंगे०—

---

नर्क उस दिन उन काफ़िरों के सन्मुख कर देंगे, जिनकी आँखें हमारे चर्चे ( अर्थात क़ुर्आन के देखने व पढ़ने ) से ( अज्ञानता व मूर्खता के ) पर्दे में ( छिपी हुई ) थीं । और ( जो क़ुर्आन या किसी और सत्य बात को संसार में ) सुन भी नहीं सकते थे ॥

( यह सब कुछ सुनने के पश्चात भी ) क्या ( इन ) काफ़िरों का यह विचार है कि हमको छोड़ कर हमारे बन्दों ( और हमारी सृष्टि में से किसी ) को ( अपना पूज्य ) कारसाज़ बनायें ( और उन्हें उसका मज़ा न चखाया जाय, ऐसा कभी नहीं हो सकता )। हमने इन काफ़िरों के लिये नर्क का अतिथि शाला तय्यार कर रक्खा है । ( जब यह मर कर हमारे निकट आयेंगे, तो उन्हें वहाँ उतारा जायगा ) ॥

( हे रसूल ! इन काफ़िरों से ) कहो कि ( हे काफ़िरो ! यदि तुम चाहो, तो ) हम तुमको वह मनुष्य बतायें, जो ( निज ) कर्मों की दृष्टि से ( बिल्कुल ) हानि में हैं ( और उन्हें सिवाय इसके कि उनके कर्म कुछ लाभ पहुंचायें, अत्यन्त हानि पहुंचायेंगे । और उलटा नर्क में डलवायेंगे) ॥

(सुनो ! वह ) वह मनुष्य हैं, जिनका उद्योग सांसारिक जीवन में व्यर्थ हुआ । और वह (निज बुद्धि में ) इसी विचार में ( उन्मत्त) हैं, कि वह बहुत उत्तम काम कर रहे हैं ॥

( जो मनुष्य अज्ञानता में लिप्त हैं, वह ) यही हैं, जिन्होंने अपने पालन कर्त्ता की आयतों और ( क़यामत के दिन ) उसके दर्बार में हाज़िरी देने को सत्य न जाना । अतः ( इस कारण ) उनके कर्म अकार्थ हो गये । इस लिये क़यामत के दिन हम ऐसे मनुष्यों को ( निज दर्बार में) कुछ भी आदर न देंगे । ( और दर्बार में सबके सामने उनका अनादर करेंगे ) ॥

( और अत्यन्त अनादर के साथ उन्हें नर्क में डाल देंगे । और ) यह उनका नर्क दंड उनके कुफ़्र के बदले है । और इस कारण है कि उन्होंने हमारी आयतों और हमारे रसूलों की हँसी उड़ाई ॥

(और) निस्सन्देह ( वह मनुष्य ) जो (हम पर और हमारी आयतों पर और हमारे रसूलों पर सत्य हृदय से ) ईमान ले आये और ( ईमान लाने के पश्चात ) उन्होंने कर्म (भी) अच्छे किये, तो उनका अतिथि शाला स्वर्ग के बाग़ हैं । उनमें वह सर्वदा रहेंगे । ( न उन्हें कोई निकालेगा ) और न वह ( स्वयं वहां के सुख व चैन को छोड़ कर ) वहां से किसी और स्थान पर जाना चाहेंगे ॥

(ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अगर मेरे पर्वर्दिगार की बातों के (लिखने के) लिये समन्दर (का पानी) स्याही (की जगह) हो, तो क़ब्ल इसके कि मेरे पर्वर्दिगार की बातें तमाम हों, समन्दर निबड़ जाय, अगर्चे हम वैसा (और समन्दर उसकी) मदद को लाएं० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मैं (भी तो) तुम ही जैसा एक बशर हूं (मुझमें तुममें सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि) मेरे पास (ख़ुदा की तरफ़ से) यह वही आती है कि तुम्हारा माबूद (वही अकेला) एक माबूद है, तो जिसको अपने पर्वर्दिगार से मिलने की आर्ज़ू हो, तो चाहिये कि नेक अमल करे और किसी को अपने पर्वर्दिगार की इबादत में शरीक न करे०

## सूरत—मर्यम

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ९८ आयतें और ६ रुकूअ हैं**

(शुरू) अल्लाह के नामसे (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० काफ़, हा, या, ऐन, साद० (ऐ पैग़म्बर! यह उस) मेहर्बानी का मज़्कूर है, जो तुम्हारे पर्वर्दिगार ने अपने बन्दे ज़करीया पर की थी० कि जब उन्होंने अपने पर्वर्दिगार को दबी आवाज़ से पुकारा० (और) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मेरी हड्डियां कमज़ोर पड़ गई हैं, और सर (है कि) बुढ़ापे (की आग) से भड़क उठा है और ऐ मेरे पर्वर्दिगार! तेरी जनाब में दुआ करके मैं (कभी) महरूम नहीं रहा० और अपने (मरे) पीछे मुझको (अपने) भाई बन्दों से ख़ौफ़ है (कि कहीं मेरे बाद दीन में कुछ ख़राबी न डालें) और मेरी बीबी बांझ है। पस अपनी तरफ़ से मुझको एक जा नशीन (यानी फ़र्ज़न्द) अता फ़र्मा० जो मेरा (भी) वारिस हो और नस्ल याक़ूब का भी वारिस हो (यानी दीन को संभाले)—

حِوَلًا ۝ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّىْ
لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّىْ وَلَوْ
جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَمَنْ كَانَ
يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ
بِعِبَادَةِ　سُوْرَةُ مَرْيَمَ　رَبِّهٖٓ اَحَدًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
كٓهٰيٰعٓصٓ ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝
اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ وَهَنَ
الْعَظْمُ مِنِّىْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ
بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَاِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِىَ مِنْ
وَّرَآءِىْ وَكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا فَهَبْ لِىْ
مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَّرِثُنِىْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ

وَاجْعَلْهُ

(हे रसूल!) तुम (संसार के मनुष्यों से) कहदो कि (यदि इस सर्वदा के सुख व चैन को प्राप्त करना चाहते हो, तो चैन व मोक्ष देने वाले ख़ुदा की एकता को मानो। और उन्हें बताओ कि हे मनुष्यो!) यदि मेरे पालन कर्ता के कलमात (अर्थात गुणों के लिखने) के लिये समुद्र (का पानी) रोशनाई बन जावे, तो मेरे पालन कर्ता के कलमात समाप्त होने (और लिखने के घेरे में आने) से प्रथम समुद्र (का समस्त पानी) समाप्त हो जाय। यद्यपि हम उसके समान (और एक समुद्र उसकी) सहायता के लिये ले आवें॥

(हे रसूल!) तुम (लोगों से साफ़ २) कहदो कि मैं तो तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हूं। (बादशाहत का दावा नहीं करता। मुझमें तुममें केवल इतना अन्तर है, कि मैं ख़ुदा का रसूल भी हूं। और) मेरे पास इस (बात) की वही आती है कि (मैं तुमको बता दूं, कि हे मनुष्यो!) तुम्हारा केवल एक ही पूज्य है। अतः (तुममें से) जो मनुष्य (क़यामत के दिन) अपने पालन कर्ता से (आदर के साथ) मिलने की इच्छा रखता हो, तो उसे चाहिये कि अच्छे कर्म करे। और अपने पालन कर्ता (के साथ उस) की पूजा में किसी को सम्मिलित न करे॥

## सूरत—मर्यम

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ९८ आयतें और ६ रुकूअ हैं॥**

(हे रसूल! इस सूरत में) अपने बन्दे ज़करीया (के हाल) पर तुम्हारे पालन कर्ता के कृपा करने का बयान है। (वह तुम्हारी तरह हमारे एक नबी थे। उन पर यह कृपा उस समय हुई थी) जब कि उन्होंने अपने पालन कर्ता को (अर्द्ध रात्रि के समय) चुपके चुपके पुकारा था॥

(और) कहा था कि हे मेरे पालन कर्ता! (जब मेरी दशा यह हो गई कि) मेरी हड्डियों में दम नहीं रहा और बुढ़ापे के मारे (मेरा सारा) सिर स्वेत हो गया। और हे मेरे पालन कर्ता! (जब मैं अधिक बार यह अनुभव कर चुका कि) मैं तुझको पुकार कर (और अपनी कामना की प्रार्थना करके) कभी असफल (व नामुराद) नहीं रहा॥

और (जब कि) मुझे अपने पश्चात अपने सम्बन्धियों से (इस बात का पूरा) डर है (कि कहीं सत्य धर्म से इन्कार न करदें)। और (जब मैंने यह देख लिया कि) मेरी स्त्री बांझ है (और कोई कारण सन्तान होने का नहीं है) तो (मैं समस्त संसार से नाता तोड़ कर तुझसे प्रार्थना करता हूं कि) तू मुझको अपनी ओर से (और अपनी कुदरत से) एक ऐसा वली (अर्थात पुत्र प्रदान कर, जो मेरे पश्चात) मेरा और याक़ूब के वंश का वारिस हो—

وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۞ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۣاسْمُهٗ
يَحْيٰى ۞ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۞ قَالَ رَبِّ اَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ
بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۞ قَالَ كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ
عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۞
قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْ اٰيَةً قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ
ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۞ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ
فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۞ يٰيَحْيٰى
خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۞
وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً وَكَانَ تَقِيًّا ۞ وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ
وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۞ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ
وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۞ وَاذْكُرْ فِي
الْكِتٰبِ مَرْيَمَ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۞

और ऐ मेरे पर्वर्दिगार! उसको मक़बूल (ख़ास व आम भी) कर० (ख़ुदा ने फ़र्माया) ज़करीया! हम तुमको एक लड़के की ख़ुश ख़बरी देते हैं, जिसका नाम होगा यह्या (और इससे) पहिले हमने इस नाम का कोई (आदमी पैदा) नहीं किया० (ज़करीया ने ब तक़ाज़ाए बश्रियत) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मेरे हाँ लड़का कैसे हो सकता है? और हाल यह है कि मेरी बीबी तो बाँझ है और मैं बुढ़ापे की हद्द ग़ायत को पहुंच गया हूं० फ़र्माया ऐसा ही (होगा)–तुम्हारा पर्वर्दिगार फ़र्माता है कि तुमको इस उमर में बेटा देना हमारे लिये आसान है और (इससे) पहिले तुमही को हमने पैदा किया। हालांकि तुम कुछ भी न थे० (ज़करीया ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! (इस बात की कि मेरे बेटा होगा) मुझे कोई निशानी बता। फ़र्माया कि तुम्हारी निशानी यह है कि तुम बराबर तीन रात (दिन) लोगों से बात नहीं करोगे० फिर (ज़करीया मा'मूल के मुताबिक़ वाज़ व नसीहत के लिये) हुजरे से निकल कर अपने लोगोंके पास आए। तो इशारे से उनको समझा दिया कि सुबह व शाम (ख़ुदा की) इबादत में मसरूफ़ रहो० (ग़रज़ यह्या पैदा हुए और हमने उनको हुक्म दिया कि) ऐ यह्या! किताब (तौरात) को ख़ूब मज़बूती से लिये रहना और अभी वह लड़के ही थे कि हमने अपने फ़ज़्ल से उनको पैग़म्बरी० और रहमदिली और पाक तीनती अता फ़र्माई और (इसके अलावा) वह परहेज़गार० और अपने वालिदैन के ख़िदमत गुज़ार (भी) थे और सख़्तगीर (और) ख़ुद सर न थे० और उनको (हर हाल में ख़ुदा की) अमान. जिस दिन पैदा हुये और जिस दिन मरेंगे और जिस दिन (दुबारा) ज़िन्दा उठा खड़े किये जायँगे० और (ऐ पैग़म्बर!) क़ुर्आन में मर्यम का मज़्कूर (भी लोगों से बयान) करो कि जब वह अपने लोगों से अलग होकर पूरब रुख़ एक जगह जा बैठीं०—

---

और हे मेरे पालन कर्त्ता! तू उसको (अपना) प्रिय (बन्दा) बनाइयो॥

(यह सुन कर उनके पालन कर्त्ता ने कहा कि) हे ज़करीया! (लो, प्रसन्न हो जाओ)–हम तुमको एक लड़के का मंगल समाचार सुनाते हैं। उसका नाम यह्या है। इस नाम का कोई (पुत्र) हमने (इससे) पहिले नहीं पैदा किया॥

(ज़करीया ने) कहा, हे मेरे पालन कर्त्ता! मेरे यहां किस तरह लड़का (उत्पन्न) हो सकता है? ऐसी दशा में कि मेरी स्त्री बाँझ है और मैं बूढ़ा फूँस हूं॥

कहा, इसी प्रकार (हो जायगा) तुम्हारे पालन कर्त्ता का कहना है कि यह (बात) मेरे लिये (बिल्कुल) सरल है। और (हे ज़करीया!) मैंने तो तुमको (इससे) प्रथम उत्पन्न किया था, ऐसी दशा में कि तुम कोई वस्तु न थे॥

(ज़करीया ने) कहा (मुझे इस बात का तो पूरा २ विश्वास हो गया, परन्तु इस अच्छे वादे के पूरा होने का समय कब आयेगा? यह ज्ञात होजाने के लिये हे ख़ुदा!) तू मेरे लिये कोई चिन्ह नियत करदे। (ख़ुदा ने) कहा कि तुम्हारा चिन्ह यह है कि (जब वह समय आयेगा, तो) तुम स्वस्थ होते हुये भी तीन रात (दिन) तक बराबर मनुष्यों से बात (चीत) न कर सकोगे॥

(अतः जब ज़करीया की स्त्री गर्भवती हुई) तो (ज़करीया की ज़बान बन्द हो गई। अतः जब नियमानुसार) वह (अपनी) मेहराब से (निकल कर) अपनी जाति के पास आये, तो (ज़बान से कुछ न कह सके)। उनसे संकेत द्वारा कहा कि तुम सुबह शाम (अपने पालन कर्ता के) गुण गाते रहो॥

(तात्पर्य यह है कि यह्या पैदा हुये। और जब कुछ बड़े हो गये, तो हमने उनसे कहा) हे यह्या! (इस) किताब को (अपनी पूरी) शक्ति के साथ पकड़ो (और इसके अनुसार कर्म करो)। और हमने उनको बचपन ही में चतुरता (व बुद्धिमानी) और (उनके हृदय में मुख्य) अपनी ओर से नम्रता और पवित्रता प्रदान की थी। और वह (बचपन ही से) संयमी और अपने माता पिता के नेक (बच्चे) थे। और उद्दण्ड व अवज्ञाकारी न थे॥

और उन पर (हर दशा में ख़ुदा की) सलामती रही (और रहेगी)–जिस दिन वह उत्पन्न हुये (उस दिन भी) और जिस दिन उनकी मृत्यु हुई और जिस दिन वह (दुबारा) जीवित (करके) उठाये जायंगे (उस दिन भी)॥

और (अब) तुम (हे रसूल!) इस पुस्तक (अर्थात क़ुर्आन की इस सूरत) में (से पढ़ कर इन लोगों से) मर्यम का ज़िक्र (भी) करो। (मुख्य उनके उस समय का हाल वर्णन करो) जिस समय वह (स्नान करने की इच्छा से) अपने घर वालों से पृथक होकर एक पूर्व के कोण में चली गई थीं—

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا
فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ
مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ
لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ
وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ
قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ
وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝ فَحَمَلَتْهُ
فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ
اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا
وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ
اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝ وَهُزِّيْٓ
اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ۝
فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ

और लोगों की तरफ़ से पर्दा कर लिया, तो हमने अपनी रूह (यानी जिब्रील) को उनकी तरफ़ भेजा, तो वह अच्छे ख़ासे आदमी की शक्ल बन कर उनके रूबरू आ खड़े हुए ० वह (उनको देख कर) लगीं कहने कि अगर तुम परहेज़गार हो, तो मैं तुमको ख़ुदा का वास्ता देती हूं (कि मेरे सामने से हट जाओ) ० (जिब्रील) बोले कि मैं तो बस तुम्हारे पर्वर्दिगार का भेजा हुआ (फ़रिश्ता) हूं (और) इस लिये (आया हूं) कि तुमको (एक) पाक तीनत लड़का दूं ० वह बोलीं मेरे हां कैसे लड़का हो सकता है, हालांकि न तो (निकाह के तौर पर) मुझको किसी मर्द ने छुआ और न कभी मैं बदकार रही ० (जिब्रील ने) कहा (जैसा मैं कहता हूं) ऐसा ही (होगा) तुम्हारा पर्वर्दिगार फ़र्माता है कि तुम्हारे हां बे बाप के लड़का पैदा करना हमपर आसान है और (उसके पैदा करने से) ग़रज़ यह है कि लोगों के लिये हम उसको (अपनी क़ुद्रत की) एक निशानी क़रार दें और (दुनिया में हम उसको) अपनी रहमत (का ज़रिया बनायें) और यह बात (हमारे हां से) फ़ैसल हो चुकी है ० इस पर मर्यम को (आप से आप बेटे का) हमल रह गया और वह हमल लेकर कहीं अलग दूर के मकान में हो बैठीं ० फिर दर्द ज़ेह उनको एक खजूर के दरख़्त की जड़ में ले पहुंचा (और वज़े हमल के वक़्त उनको तक्लीफ़ हुई, तो वह) बोल उठीं, ऐ काश! मैं इससे पहिले मर चुकी होती और (दुनिया के परदे से नापैद होकर कभी की) भूली बिसरी हो गई होती ० फिर जिब्रील ने (उस चश्मे से जो) मर्यम के तले (ख़ुदा की क़ुद्रत)से (वह निकला था) उनको आवाज़ दी कि आज़ुर्दा ख़ातिर न हो (यह देखो!) तुम्हारे पर्वर्दिगार ने तुम्हारे तले एक चश्मा बहा दिया है ० और खजूर की जड़ को (पकड़ कर) अपनी तरफ़ को हिलाओ, तुम पर पक्की पक्की ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी ० फिर (मज़े से खजूरें) खाओ और (चश्मे का पानी) पियो और (बेटे को देख कर) आँखें ठंडी करो०(और अपने बच्चे को लेकर चलो) फिर (रस्ते में) तुमको कोई आदमी नज़र पड़े—

(और) फिर उन्होंने उनके (अर्थात अपने घर वालों के) सामने एक पर्दा डाल लिया था। फिर हमने उनके पास अपनी आत्मा (अर्थात जिब्रील फ़रिश्ते) को भेजा था (और) फिर वह (आत्मा) उनके सामने पूरा एक आदमी बन कर प्रगट हुई थी। (और उन्हें देखते ही) मर्यम (घबरा गईं। और उनसे) कहने लगी थीं कि मैं तुझसे (बचने के लिये ख़ुदा) रहमान (रहीम) से पनाह मांगती हूं। (हे मनुष्य!) यदि तू (ख़ुदा से) भय खाता है (तो मेरे पास से चला जा)। (जिब्रील ने) कहा (मर्यम! मुझसे न डरो)। मैं तो बस तुम्हारे पालन कर्त्ता का भेजा हुआ (फ़रिश्ता) हूं। (इस तात्पर्य से आया हूं) जिससे कि तुमको एक पवित्र पुत्र प्रदान करूँ। (उन्होंने) कहा (भला) मेरे यहां पुत्र किस प्रकार (उत्पन्न) हो सक्ता है—इस दशा में कि मुझको किसी मनुष्य ने नहीं छुआ (अर्थात अभी मेरा विवाह तक नहीं हुआ)। और (तौबा तौबा) न मैं दुराचारणी हूं॥

(जिब्रील ने) कहा—यूंही (अर्थात मामूल के विरुद्ध, केवल तुम्हारे पालन कर्त्ता की क़ुद्रत से। हे मर्यम!) तुम्हारा पालन कर्त्ता फ़र्माता है कि यह (ईसा का उत्पन्न करना) मेरे लिये बिल्कुल सहल है। और (ईसा को इस तरह अर्थात बिना बाप के हम इस तात्पर्य से उत्पन्न करेंगे) जिससे कि हम उनको (अपनी महान शक्ति की) एक निशानी बनायें। और (पैग़म्बरी प्रदान करके उनको) अपनी (दया व) कृपा (का साधन नियत करें) और (हे मर्यम!) यह एक नियत हुई बात है (अवश्य पूरी होकर रहेगी)। (तात्पर्य यह है कि जब जिब्रील की बातों पर मर्यम को विश्वास हो गया) तो (जिब्रील ने मर्यम के गरेबान में फूंक मार दी। ख़ुदा की शान! इस फूंक के प्रभाव से) उन्हें लड़के का गर्भ रह गया। (फिर जब पुत्र उत्पन्न होने का समय निकट आ गया) तो वह उस (गर्भ) को लेकर किसी दूर स्थान पर अकेली जा बैठीं। (जब पुत्र उत्पन्न होने का समय आया) तो (उनके) दर्द (होना आरम्भ हुआ। और वह) खजूर (के वृक्ष) की जड़ के पास आ गईं (और) कहने लगीं, कि क्या अच्छा होता, यदि मैं इस (बुरे दिन के आने) से पहिले ही मर जाती और (ऐसी) मलिया मेट हो जाती (कि किसीको याद किये से याद भी न आती)। (जब उनके ग़म व रंज की यहाँ तक नौबत पहुंची) तो (हमने उन्हें सन्तोष देने के लिये जिब्रील को भेजा) उन्होंने उन (की जगह) से नीचे (खड़े होकर) उन्हें पुकारा (और कहा हे मर्यम!) तुम (किसी बात का) ग़म न करो। (देखो!) तुम्हारा पालन कर्त्ता (तुम पर कैसा कृपालु है। उस) ने (इस जंगल में) तुम्हारे (बैठने की जगह से) नीचे एक सोता जारी कर दिया (है)। और (इस वृक्ष) खजूर के तने को अपनी ओर (खींचकर) हिलाओ। (तो) पकी (और) ताज़ी (ताज़ी) खजूरें तुम पर झड़ेंगी। अतः तुम (इन खजूरों को) खाओ और (इस सोते से पानी) पियो और (निज भाग्यशाली पुत्र को देख कर अपनी) आंखें ठंडी करो। अतः यदि कोई मनुष्य तुमको दिखाई दे (और वह तुमसे पुत्र के विषय में कुछ पूछ गछ करे)—

(और वह तुमसे पूछे) तो (तुम इशारे से) कह देना कि मैंने (ख़ुदाए) रह्मान के लिये रोज़े की मन्नत मान रक्खी है, तो मैं आज किसी आदमी से बात नहीं कर सकती ० फिर मर्यम लड़के को गोद में लिये अपनी क़ौम के पास लाईं। वह (देख कर) लगे कहने कि मर्यम! यह तो तूने बहुत ही नालायक़ काम किया ० ऐ हारून की बहिन! न तो तेरा बाप ही बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही बदकार थी (तो ख़िलाफ़ ख़ानदान तू यह क्या हरकत कर बैठी) ०तो मर्यम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया कि जो कुछ पूछना है, इससे पूछ लो)—वह लगे कहने हम गोद के बच्चे से कैसे बात करें ० (इस पर बच्चा) बोल उठा कि मैं अल्लाह का बन्दा हूं। उसने मुझको किताब (इन्जील) इनायत फ़र्माई और मुझको पैग़म्बर बनाया ० और कहीं भी रहूं, मुझको बा बरकत किया और मुझको हुक्म दिया कि जब तक ज़िन्दा रहूं, नमाज़ पढ़ूं और ज़कात दूं ० और (नीज़) मुझको अपनी माँ का खिदमत गुज़ार बनाया और मुझको सख़्त-गीर और बद राह नहीं किया ० और मुझ पर ख़ुदा की अमान, जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन (दुबारा) ज़िन्दा उठा खड़ा किया जाऊँगा० (ऐ पैग़म्बर!) यह है-ईसा इब्न मर्यम (की हक़ीक़त)-सच्ची सच्ची बात, जिसमें लोग झगड़ा करते हैं ० ख़ुदा को शायाँ नहीं कि वह (किसी को) बेटा बनाए। वह पाक (ज़ात) है। जब वह किसी काम का करना ठान लेता है, तो बस—

أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ
أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۝ فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ
قَالُوا يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۝ يَا أُخْتَ
هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ
أُمُّكِ بَغِيًّا ۝ فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ
مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝ قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ
آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝ وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا
أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ
مَا دُمْتُ حَيًّا ۝ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي
جَبَّارًا شَقِيًّا ۝ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ
أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝ ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ
مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝ مَا كَانَ
لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَانَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا

---

तो कह देना कि मैंने (ख़ुदा) रह्मान के लिये रोज़े की मन्नत मान रक्खी है। इस लिये मैं किसी दशा में भी आज किसी मनुष्य से बात (चीत) नहीं करूंगी। (और बच्चे की ओर संकेत करके उनको बता देना, कि तुम्हारी बातों का उत्तर यह बच्चा स्वयं देगा)। संक्षिप्त कहानी (यह कि ईसा उत्पन्न हुए। और) वह (अर्थात मर्यम) उन्हें उठाकर अपनी जाति (के मनुष्यों) में आईं। (उन्होंने जो उनकी गोद में बच्चा देखा, तो) वह (अचम्भे में रह गये। और अपनी बद गुमानी से मर्यम को बुरा भला) कहने लगे कि (हे मर्यम! ख़ुदा की शपथ, यह तो) तूने (अत्यन्त) बुरा काम किया। हे हारून की बहिन! (अर्थात् मर्यम) न तो तेरा पिता ही बुरा मनुष्य था, और न तेरी माता ही दुराचारणी थी। (तेरे समान दुराचारणी पुत्री उनके यहाँ कैसे उत्पन्न हुई!!)॥

इस पर मर्यम ने (उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। और) उस (बच्चे) की ओर संकेत कर दिया। (अर्थात् उन्हें बताया कि तुमको जो कुछ कहना है, इस बच्चे से कहो, मुझसे कुछ न कहो)। उन लोगों ने कहा (भला) हम इससे कैसे बात कर सक्ते हैं, जो (अभी) पालने में (है और दूध पीता) बच्चा है। (यह बातें समाप्त न होने पाई थीं कि इतने में) वह (बच्चा) बोल उठा (और उसने बहुत सरल भाषा में उत्तर दिया कि हे मनुष्यो! मैं कोई साधारण बच्चा नहीं हूं, जिसके विषय में तुम्हारी यह बद गुमानी ठीक हो सके। बल्कि) मैं अल्लाह का (एक मुख्य) बन्दा हूं। उसने मुझको (एक) पुस्तक (इन्जील) प्रदान की है। और मुझको अपना (बड़ा) नबी नियत किया है। और मुझको (अत्यन्त ही) बरकत वाला (मनुष्य) बनाया है। मैं जहाँ कहीं भी हूं (मुझसे मनुष्यों को लोक परलोक का लाभ पहुंचेगा)। और अल्लाह ने मुझको नमाज़ (पढ़ने) और ज़कात (देने) की-जब तक मैं जीवित रहूं, नसीहत (और ताकीद की है। और उसने मुझको अपनी माता का आज्ञाकारी (पुत्र) बनाया (है)। और मुझे (अत्याचार व) उद्दंड (और कठोर हृदय वाला और) अभागा नहीं बनाया।

और मुझ पर (प्रत्येक दशा में ख़ुदा की) सलामती रही (और रहेगी)-जिस दिन मैं उत्पन्न हुआ (उस दिन भी) और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन मैं (दुबारा) जीवित (करके) उठाया जाऊंगा (उस दिन भी)। (मनुष्यो!) यह (पालना में बातें करने वाले बच्चे) मर्यम के पुत्र ईसा हैं। (वास्तविकता केवल इतनी है कि ख़ुदा के एक मुख्य बन्दे और उसके बड़े नबी और साहब किताब इन्जील हैं। न ईसाइयों के कहने के अनुसार ख़ुदा के पुत्र हैं। और न यहूदियों के असत्य विचार के अनुसार एक साधारण और अयोग्य मनुष्य हैं। यह एक )सत्य (और बिलकुल सीधी) बात (है)। इसमें यह (यहूदी ईसाई व्यर्थ) झगड़ा कर रहे हैं। (उस शक्तिमान) ख़ुदा (की शान) के योग्य यह बात (कदापि) नहीं है, कि वह (किसी को अपना) पुत्र बनाये। लोगो! ख़ूब समझ लो कि ख़ुदा की सन्तान बताना उसकी शान को बट्टा लगाना है)। वह (सन्तान होने से बिलकुल) पाक है। (वह) जब किसी काम (के करने) का फ़ैसला कर लेता है, तो वह तो केवल—

يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ
هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِن
بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن مَّشْهَدِ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ۝ أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ
الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَأَنذِرْهُمْ
يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا
وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ ع
إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ
تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنكَ
شَيْئًا ۝ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ
فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ
الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ۝

उसको इतना ही फ़र्मा देता है कि हो! और वह हो जाता है० और कुछ शक नहीं कि अल्लाह मेरा (भी) पर्वर्दिगार है और तुम्हारा (भी) पर्वर्दिगार है, तो (लोगो!) उसी की इबादत करो। यही सीधा रस्ता है (और यही दीन ईसा लेकर आए थे)० फिर (यहूद व नसारा के) फ़िरक़े लगे आपस में इख़्तिलाफ़ करने–सो उन लोगों के हाल पर अफ़सोस है, जो कुफ़्र करते हैं कि (उन को क़यामत के) बड़े (सख़्त) दिन (ख़ुदा के हुज़ूर में) हाज़िर होना पड़ेगा० जिस दिन यह लोग हमारे हुज़ूर में हाज़िर होंगे, कैसे कुछ सुनते देखते होंगे, मगर इस वक़्त तो यह ज़ालिम (अंधे और बहिरे बने हुए) खुली गुमराही में पड़े हैं० और (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों को (उस रंज व) अफ़सोस के दिन (यानी क़यामत की मुसीबत) से डराओ, जब कि (अख़ीर फ़ैसला कर दिया जायगा और (इस वक़्त तो) यह लोग ग़फ़लत में हैं और ईमान नहीं लाते० (अंजामकार) हम ही ज़मीन के वारिस होंगे और उन लोगों के भी, जो रूए ज़मीन पर हैं और हमारी ही तरफ़ सबको लौट कर आना होगा० और (ऐ पैग़म्बर!) क़ुर्आन में इब्राहीम का मज़कूर (भी लोगों से बयान) करो कि वह (भी) बड़े ही सच्चे (बन्दे और) नबी थे० कि जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि अब्बा जान! आप क्यों इन (बुतों) की परस्तिश करते हैं, जो न (कुछ) सुनते और न (कुछ) देखते और न आपके कुछ काम आ सकते हैं० अब्बा जान! मुझको (ख़ुदा की तरफ़ से) ऐसी मालूमात हासिल हुई हैं, जो आपको हासिल नहीं हुई। तो आप मेरे पीछे हो लीजिये। मैं आपको (दीन का) सीधा रस्ता दिखा दूंगा० अब्बा जान! शैतान (के कहे में आकर बुतों) को न पूजिये, क्योंकि शैतान (ख़ुदाए) रहमान से बाग़ी है०—

उस (काम) के लिये (शब्द) कुन (अर्थात होजा!) कह देता है। अतःवह (काम) हो जाता है। (अतः ऐसे बलिष्ट क़ुद्रत वाले ख़ुदा के आगे मर्यम के बेटे मसीह को बिना पिता के उत्पन्न कर देना कुछ भी कठिन नहीं है)। (हे रसूल! तुम इन लोगों को समझाओ) और (उन्हें बताओ कि हे लोगो!) अल्लाह (के बचनों में किसी प्रकार का सन्देह न करो और विश्वास करो कि वह) मेरा भी पालन कर्ता है, और तुम्हारा भी पालन कर्ता है, तो तुम (को चाहिये कि) उसी की उपासना करो। (मोक्ष प्राप्त करने के लिये) यह (एक) सीधा (और स्वच्छ) मार्ग है। (यद्यपि ख़ुदा को एक मानना बिलकुल ठीक है, परन्तु) फिर (भी दुनिया के लोगों के) प्रायः दल (इस बात में) परस्पर मत भेद हो गये। (और ख़ुदा का एक होना किसी प्रकार उनके हृदय में न बैठा)। पस उन लोगों के लिये (अन्त में बहुत बड़ी) ख़राबी है, जो (ख़ुदा की क़ुद्रत के असंख्य चिन्ह देखने के पश्चात भी उस पर सत्य हृदय से) ईमान नहीं लाये। और (उसकी सेवा में) बड़े दिन (अर्थात् क़यामत के दिन) की हाज़री (का विश्वास करने) से (साफ़) इन्कार कर बैठे॥

जिस दिन यह हमारे सामने आयेंगे, तो कितने सुनने और कितने देखने वाले होंगे, परन्तु (यह) अत्याचारी (व अपराधी) आज (संसार में) एक स्पष्ट पथ भ्रष्टता में (पड़े हुये) हैं। (ग़फ़लत का पर्दा उनकी आँखों और कानों पर पड़ गया है)। (हे रसूल! तुम इन लोगों को समझाओ) और उस निराशा के दिन से डराओ, जिस दिन कि हर बात का (एक अन्तिम) फ़ैसला कर दिया जायगा। (पापियों को नर्क में) और (अच्छे कर्म करने वालों को स्वर्ग में प्रवेश किया जायगा।) यह वह मूर्ख हैं, कि यहाँ संसार में उन्हें किसी प्रकार का होश ही नहीं आता)। ग़फ़लत (के गढ़े) में (गिरे हुये पड़े) हैं। (और सत्य बचन पर) यह ईमान नहीं लाते॥

(परन्तु कब तक, अन्त में) हम ही (एक दिन इस) पृथ्वी के और जो लोग इस पर (बसते) हैं, उन (सब) के (अकेले) वारिस (और मालिक) होंगे। और हमारे ही पास यह (लोग मृत्यु के पश्चात्) लौट कर आयेंगे। और (हे रसूल!) तुम (इन अज्ञानों को ख़ुदा की वहदानियत का उपदेश देने के लिये) इस पुस्तक (अर्थात क़ुर्आन) में (से पढ़ कर उनके सामने) इब्राहीम की कहानी वर्णन करो। (और उन्हें बताओ कि) वह अधिक सत्य बोलने वाले (और ख़ुदा के बड़े) नबी थे॥

(विशेषतया उनके उस समय का हाल इनसे वर्णन करो) जबकि उन्होंने अपने (मूर्त्तिपूजक) पिता (आज़र) से कहा था, कि हे पिता! तुम ऐसी (बेकार व लाचार) वस्तु की उपासना क्यों करते हो, जो न (कुछ) सुने और न (कुछ) देखे और न कुछ तुम्हारे काम आये? (और कहा था कि) हे पिता! (मैं ख़ुदा का नबी हूं)। मुझे (ख़ुदा के विषय में वहीके द्वारा) को वह ज्ञान पहुंच चुका है, जो तुम तक नहीं पहुंचा। अतः (तुमको चाहिये कि) तुम मेरे कहने पर चलो। मैं तुमको सीधा मार्ग बताऊँगा। हे पिता! (देखो!! मेरी सुनो और) शैतान को न पूजो। (अर्थात् उसके कहने में आकर मूर्तिपूजा न करो)। निस्सन्देह शैतान (ख़ुदा) रहमान का अवज्ञाकारी है॥

يٰاَبَتِ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ
فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا۝ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ
اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ
مَلِيًّا۝ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ اِنَّهٗ
كَانَ بِيْ حَفِيًّا۝ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ
بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا۝ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا۝ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا
وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا۝ وَاذْكُرْ فِي
الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا
نَّبِيًّا۝ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ
نَجِيًّا۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ

अब्बा जान! मुझको इस बात से डर लगता है कि (कहीं ऐसा न हो, ख़ुदाए) रह्मान की तरफ़ से आपको कोई अज़ाब आ चिमटे और आप (आख़िरकार जहन्नम में) शैतान के साथी बनें० (इब्राहीम के बाप ने) कहा कि इब्राहीम! क्या तू मेरे माबूदों से फिरा हुआ है? अगर तू (ऐसी बातों से) बाज़ नहीं आएगा, तो ज़रूर मैं तुझको संगसार कर दूंगा और अपनी ख़ैर चाहता है, तो मेरे सामने से दूर हो० (इब्राहीम ने) कहा (अच्छा तो मेरा) सलाम है, (इस पर भी) मैं अपने पर्वर्दिगार से आपकी मग़फ़िरत की दुआ करूँगा (क्योंकि) वह मुझ पर हद दर्जे मेहर्बान है० और मैंने तुम (बुत परस्तों) को और (तुम्हारे) इन (बुतों) को, जिनको तुम ख़ुदा के सिवा (हाजत पड़े पर) पुकारा करते हो (सबको) छोड़ा, और अपने पर्वर्दिगार ही को (हाजत पड़े पर) पुकारा करूँगा। उम्मीद है कि मैं अपने पर्वर्दिगार से दुआ मांगने में बे नसीब नहीं रहूंगा० तो जब इब्राहीम ने उन (बुत परस्तों) से और उन (बुतों) से, जिनको वह ख़ुदा के सिवा पूजते थे, कनारहकशी करली, हमने उनको (बेटा) इनायत किया; इस्हाक़ और (पोता) याक़ूब—और सबको हमने मन्सब नुबूवत से (भी) सर्फ़राज़ फ़र्माया० और अपनी रह्मत में से उनको (बड़ा हिस्सा) दिया और उनके लिये आला दर्जे का ज़िक्र ख़ैर (दुनिया में) बाक़ी रक्खा० और (ऐ पैग़म्बर!) क़ुर्आन में मूसा का मज़्कूर (भी लोगों से बयान) करो कि वह (भी हमारे) ख़ास बन्दे और पैग़म्बर साहिब शरीअत थे० और हमने उनको (कोह) तूर की दाहिनी तरफ़ से आवाज़ दी और (जिस तरह) राज़ कहने के लिये (पास बुला लिया करते हैं, इसी तरह हमने) उनको (अपने) क़रीब बुलाया० और अपनी मेहर्बानी से उनके भाई हारून को पैग़म्बर बनाकर उनको एक (मददगार) इनायत किया०—

---

हे पिता! मैं डरता हूं कि (कहीं ख़ुदा) रह्मान (की आज्ञा) से (इस मूर्ति पूजा के कारण) तुमको कोई (आकाशीय) दुःख न पहुंच जाय। (और) फिर तुम शैतान के साथी बन जाओ ॥

(इब्राहीम के यह वचन सुन कर उनके) पिता ने (उनसे) कहा कि) हे इब्राहीम! क्या तू मेरे पूज्यों से फिरा हुआ है? (और मुझको उनकी पूजा से रोकता है। मैं ख़ुदा की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि यदि तू (अपनी इन बातों से) बाज़ न आया, तो मैं निश्चितरूप से तुझको पत्थरों से मार डालूंगा। और (तुझे बुरे से बुरा दण्ड दूंगा, अन्यथा) तू मुझसे कुछ दिनों के लिये दूर होजा ॥

(इब्राहीम ने अपने पिता के यह कठोर वचन सुनकर) कहा (हे पिता!) तुम पर (ख़ुदा की) सलामती हो। (तुम मुझे चाहे कुछ ही समझो, लेकिन) मैं अपने पालन कर्त्ता से तुम्हारे लिये अवश्य क्षमा चाहूंगा। निस्सन्देह वह मुझ पर अत्यन्त कृपालु है ॥

और मैं (तुम्हारी इच्छानुसार) तुमसे और उन (मूर्तियों) से, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो, अलग हुआ जाता हूं। और मैं (जीवन भर) अपने पालन कर्त्ता की उपासना करूंगा। (क्योंकि मुझे पूर्ण) आशा है कि मैं अपने पालन कर्त्ता की उपासना करने से (लोक परलोक का कल्याण प्राप्त कर लूंगा और अपनी हार्दिक कामनाओं को प्राप्त करने में) अभागा नहीं रहूंगा ॥

अतः जब इब्राहीम ने उन (असत्य पूजकों) को और उन (असत्य पूज्यों) को छोड़ दिया, जिन्हें वह अल्लाह के सिवाय पूजते थे, तो हमने उन्हें (अर्थात् इब्राहीम को) इस्हाक़ और याक़ूब (जैसे बेटे पोते) प्रदान किये। और (उनमें से) हर एक को (अपना श्रेष्ठ) नबी बनाया और हमने अपनी कृपा (व दया) में से बहुत कुछ उन्हें प्रदान किया। (अर्थात् माल भी दिया और सन्तान भी दी) और (आगे की पीढ़ियों में) उनका शुभ स्मरण छोड़ा ॥

और (हे रसूल!) तुम इस किताब (अर्थात् क़ुर्आन) में (से पढ़ कर इनके सामने) मूसा का हाल (भी) वर्णन करो। (और इन्हें बताओ कि) वह हमारे एक मुख्य (बन्दे) थे और वह (हमारे) रसूल (अर्थात् उनको तौरेत किताब मिली थी। और वह एक श्रेष्ठ) नबी थे ॥

और हमने उन्हें (मदयन के स्थान से मिस्र को जाते समय) तूर (पर्वत) की दाईं ओर से आवाज़ दी थी। और उनको (अपना) भेद जानने वाला बनाकर उनका पद ऊँचा कर दिया था। और अपनी (कृपा व) दया से (उनकी इच्छा के अनुसार) उनके भाई हारून नबी को (उनका सहायक बनाकर) उन्हें प्रदान किया था ॥

और (ऐ पैग़म्बर!) क़ुर्आन में इस्माईल का मज़कूर (भी लोगों से बयान) करो कि वह वादे के (बड़े) सच्चे थे और (हमारे) भेजे हुए पैग़म्बर थे० और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात की ताकीद करते रहते थे और अपने पर्वर्दिगार की बार्गाह में मक़बूल थे० और क़ुर्आन में इद्रीस का मज़कूर (भी लोगों से बयान) करो कि वह (भी) बड़े सच्चे (बन्दे और) पैग़म्बर थे० और हमने उनको (ज़मीन से) उठाकर बड़ी ऊँची जगह (बहिश्त) में लेजा दाख़िल किया० यह अम्बिया लोग, जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया, आदम की नस्ल हैं और उन लोगों की नस्ल हैं, जिन को हमने (तूफ़ान के वक़् किश्ती में) नूह के साथ सवार कर लिया था और इब्राहीम और याक़ूब की नस्ल हैं और उन लोगों में से हैं, जिनको हमने राह रास्त दिखाई और मुन्तख़ब फ़र्माया। जब (ख़ुदाए) रह्मान की आयतें उनको पढ़ कर सुनाई जाती थीं, (जब) सज्दे में गिर पड़ते थे और रोते जाते थे० फिर इनके बाद ऐसे ना ख़लफ़ (पैदा) हुए, जिन्होंने नमाज़ें खोईं और नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गये, सो उनको गुमराही उनके आगे आएगी० मगर जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किये, तो ऐसे लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे और उनकी ज़रा भी हक़ तलफ़ी न की जायगी० (और बहिश्त क्या है) हमेशा रहने के बाग़ (हैं) जिनका वादा ग़ैब से ख़ुदा ने अपने बन्दों के साथ कर रक्खा है (और) बेशक—

نَبِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ
الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ
بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ۝ وَاذْكُرْ
فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝
وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا
مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ
هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ
خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۝ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ
خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ
يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۝
جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ

كَانَ

और (हे रसूल!) इस किताब में (से पढ़ कर इन लोगों से) इस्माईल का (कुछ) क़िस्सा भी वर्णन करो (और उन्हें बताओ कि) वह प्रतिज्ञा के सच्चे थे। और (हमारे) एलची (और हमारे श्रेष्ठ) नबी थे। और वह अपने बाल बच्चों (अर्थात् अपनी उम्मत) को नमाज़ (पढ़ने) और ज़कात (अदा करने) की आज्ञा देते थे। और (अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण) अपने पालन कर्त्ता के द्वार में (बड़े) प्रिय (और बहुत निकट) थे॥

और (हे रसूल!) तुम इस किताब (अर्थात् क़ुर्आन) में (से पढ़ २ कर इन लोगों को) इदरीस का हाल भी सुनाओ। (और उन्हें बताओ) कि वह बड़े सच्चे नबी थे। और हमने उनका पद (बहुत) ऊँचा किया था॥

(जिन लोगों का वर्णन ऊपर हुआ है) यही (वह) लोग (हैं) कि जिन पर अल्लाह ने (अपनी बड़ी कृपा व) दया की थी। (यह सबके सब) नबी हैं। (कुछ तो) आदम की सन्तान में से हैं (जैसे इदरीस) और (कुछ) उन लोगों (के वंश) से हैं, जिन्हें हमने (तूफ़ान से बचाने के लिये) नूह के साथ नाव में बिठा लिया था (जैसे इब्राहीम)। और (कुछ) इब्राहीम व याक़ूब के वंशज हैं (जैसे मूसा व हारून, ज़करीया व यह्या व ईसा। तात्पर्य यह है कि यह सबके सब हमारे श्रेष्ठ बन्दे हैं)। और (वह लोग हैं) जिन्हें हमने ख़ुद उपदेश दिया है और (समस्त संसार में से उन्हें पैग़म्बरी के लिये) चुन लिया। (यही कारण है कि) जब उनके सामने रह्मान की (अर्थात हमारी) आयतें पढ़ी जाती थीं, तो (वह इतने अधिक प्रभावान्वित होते थे कि) रोते हुए सज्दे में गिर पड़ते थे॥

फिर इनके बाद ऐसे (ऐसे) कपूत पैदा हुए, जिन्होंने (नमाज़ के फ़र्ज़ और आवश्यक होने से इन्कार करके अपनी) नमाज़ को (बिल्कुल) बरबाद कर दिया। और अपनी इन्द्रिय वासनाओं का अनुकरण करने लगे, तो वह (बच कर कहाँ जायँगे)। अति शीघ्र (अपना) बुराई (व कुकर्मों का दंड) पावेंगे। किन्तु (हाँ, इनमें से) वह मनुष्य, जिसने (अपने कुकर्मों से) तौबा करली और ईमान ले आया और (ईमान लाने के बाद) कर्म (भी) अच्छे किये, तो यह (सब) लोग स्वर्ग में दाख़िल होंगे। और (क़ियामत के दिन) उनके साथ कुछ भी अन्याय न किया जायगा। (और वह स्वर्ग, जिसमें वह दाख़िल होंगे, वह बहुत से) सदा (हरे भरे व सजल) रहने वाले बाग़ हैं, जिन (में स्वर्ग पाने वालों को दाख़िल करने) का वादा दयालु (ख़ुदा) ने अपने बन्दों से किया है। (यद्यपि) वह (बाग़) उनको दिखाई नहीं दे रहे—

كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا
سَلَامًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ
تَقِيًّا ۝ وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ
أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ وَمَا كَانَ
رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ
تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝ وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ
لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ۝ أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ
أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝ فَوَرَبِّكَ
لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ
جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ
أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ

ع

उसका वादा पेश आकर रहेगा० बहिश्त में कोई बेहूदा बात उनके कान में नहीं पड़ेगी ( हर तरफ़ से ) सलाम ही सलाम ( की आवाज़ें चली आएंगी ) और वहां उनका खाना सुबह व शाम ( जिस वक़्त चाहेंगे ) उनको मिला करेगा० यही वह जन्नत है कि हमारे बन्दों में से जो परहेज़गार होगा, हम उसे उसका वारिस बनाएंगे० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) हम ( फ़रिश्ते ) तुम्हारे पर्वर्दिगार के हुक्म के बिदून ( दुनिया में ) आ नहीं सकते । जो कुछ हमारे आगे होने वाला है और जो कुछ हमसे पहिले हो चुका है और जो कुछ इन दोनों वक़्तों के दर्मियान में है, सब उसी के हुक्म से है और तुम्हारा पर्वर्दिगार ( किसी चीज़ से ) ग़ाफ़िल नहीं ० आसमानों और ज़मीन का पर्वर्दिगार ( है ) और ( नीज़ ) उन चीज़ों का, जो आसमान व ज़मीन के बीच में हैं । तो उसी की इबादत में लगे रहो और उसकी इबादत ( में जो तकलीफ़ें पेश आएँ, उन ) को बर्दाश्त करो । भला तुम्हारे इल्म में उस जैसा कोई और भी है० और ( जो ) आदमी ( मुन्किर क़यामत है, तअज्जुब की राह ) पूछा करता है, क्या ( वाक़े में ) जब मैं मर जाऊँगा, तो ज़रूर ( दुबारा ) ज़िन्दा करके ( ज़मीन से ) निकाला जाऊँगा० क्या ( यह ) आदमी ( उस वक़्त को ) याद नहीं करता कि हमने पहिले इसको पैदा किया था, हालाँकि यह कुछ भी न था० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमको तुम्हारे ही पर्वर्दिगार की ( यानी अपनी ) क़सम है कि हम ( तमाम ) आदमियों को और ( उनके साथ ) शैतानों को ( भी अपने हुज़ूर में ) जमा करेंगे। फिर इन ( सब ) को जहन्नम के गिर्द ला हाज़िर करेंगे ( मारे ख़ौफ़ के मुअद्दब ) दोज़ानू बैठे हुए० फिर हर गिरोह में से हम उन लोगों को अलग ( निकाल खड़ा ) करेंगे, जो ( दुनिया में ख़ुदाए ) रहमान से बहुत अकड़े अकड़े फिरते थे० फिर जो लोग जहन्नम में जाने के ज़ियादा तर सज़ावार हैं, हम उनको ख़ूब जानते हैं०—

---

( इसमें ज़रा सा भी ) सन्देह नहीं कि उसका ( दंड व पुरस्कार का ) वादा ( नेकों और बुरों दोनों को ) पेश आकर रहेगा। वह ( अर्थात स्वर्ग प्राप्त करने वाले ) उन ( बाग़ों ) में सिवाय ( शान्ति व ) कल्याण ( व बधाई की आवाज़ों ) के कोई बेहूदा बात नहीं सुनेंगे। और उनमें उन्हें उनका ( मन भाता ) भोजन सुबह शाम ( जिस समय वह चाहेंगे, तैयार ) मिलेगा। ( अतः ) यही वह स्वर्ग है कि हमारे बन्दों में से जो ( जो नेक और ) संयमी ( व परहेज़गार ) होगा, हम उसको ( उसका ) वारिस ( व मालिक ) बनावेंगे ॥

और ( हे रसूल ! ) हम ( फ़रिश्ते ) तुम्हारे पालन कर्त्ता ( की आज्ञा और उस ) के हुक्म के बिना ( जब चाहें, पृथ्वी पर ) नहीं उतर सकते। जो ( दिशा ) हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो कुछ इन ( दिशाओं ) के बीच में ( मौजूद ) है, सब उसी के अधिकार में है। और ( हे रसूल ! ) तुम्हारा पालन कर्त्ता भूलने वाला ( भी ) नहीं है ॥

( वह ) आकाशों और पृथ्वी का और जो ( जो ) वस्तुएं उनके बीच में हैं, उन ( सब ) का ( सृष्टि कर्त्ता व ) मालिक है। अतः ( हे रसूल ! ) तुम ( को चाहिये कि ) उसी की उपासना करो। और उसकी उपासना ( करने में जो जो कठिनाइयाँ उपस्थित हों, उन सब ) को ( सन्तोष व कृतज्ञता के साथ ) सहो। ( और ) भला ( उस सच्चे पूज्य से क्यों न लव लगाई जाय, जिसके समान होना तो अलग रहा, हे रसूल ! ) तुमको कोई उसका हम नाम ( भी ) मालूम है ? ( अर्थात् उसके नाम जैसा किसी का नाम भी नहीं ) ॥

और ( वह ) आदमी ( बड़ा मूर्ख है, जो आश्चर्य और हँसी से ) कहता है कि जब मैं मर जाऊँगा, तो क्या वास्तव में ( दूसरी बार ) जीवित ( करके अपनी क़ब्र से ) उठाया जाऊँगा ? ( तो हे रसूल ! ) क्या ( यह अज्ञान ) मनुष्य इस ( बात ) को याद नहीं करता कि ( इससे ) पहिले हमने इसको ऐसी दशा में पैदा किया था, कि यह कोई चीज़ न था। अतः ( हे रसूल ! ) क़सम है तुम्हारे पालन कर्त्ता ( के सम्मान व गौरव ) की, कि हम इनको और शैतानों को ( जो इन्हें उलटी उलटी शिक्षा दे रहे हैं, क़यामत के दिन अपने सामने ) जमा करेंगे ( और उनसे उनके कर्मों के सम्बन्ध में उत्तर माँगेंगे )। फिर हम उनको नर्क के चारों ओर ( इस प्रकार ) लावेंगे ( कि वह ) घुटनों पर झुके हुए ( होंगे। अर्थात अकीर्त्ति व अप्रतिष्ठा की दशा में उठावेंगे ) ॥

फिर हम ( पापियों के ) प्रत्येक दल में से उन लोगों को अलग छाँट लेंगे, जो ( दंड देने वाले व क्षमा करने वाले ) ख़ुदा के ( संसार में ) अत्यन्त अवज्ञाकारी थे। फिर हम उन लोगों को अच्छी तरह जानते हैं—

هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ۝ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ
كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ
اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ۝ وَاِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْۤا اَىُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ
نَدِيًّا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ
اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ۝ قُلْ مَنْ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ
فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا
يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ۗ فَسَيَعْلَمُوْنَ
مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ۝ وَيَزِيْدُ
اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ
خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ۝ اَفَرَءَيْتَ
الَّذِىْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ۝

اَطَّلَعَ

और ( ऐ औलाद आदम ! ) तुम में से ( कोई ऐसा बशर ) नहीं, जो जहन्नम पर से होकर न गुज़रे । यह ( एक ) वादा ( क़तई ) फ़ैसला शुदह है ( जिसका पूरा करना ) तुम्हारे पर्वर्दिगार ( ने अपने ) पर लाज़िम ( कर लिया है० ) फिर हम परहेज़गारों को बचा लेंगे और नाफ़र्मानों को उसी में घुटनों के बल ( घिसटता हुआ ) छोड़ देंगे० और जब हमारे खुले खुले अहकाम लोगों को पढ़ कर सुनाये जाते हैं, तो काफ़िर ( छेड़ के तौर पर ) मुसल्मानों से पूछने लगते हैं कि ( भला यह तो बताओ कि हमारे और तुम्हारे ) दोनों फ़रीक़ों में से मकानात किसके अच्छे और मजलिसं (किसकी) ज़्यादा शानदार हैं० हालाँकि हम इनसे पहिले बहुत सी जमाअतों को हलाक कर चुके हैं, जिनके साज़ व सामान और ( जिन की ) ज़दाद ( ज़ाहरी इनसे ) कहीं उम्दा थी ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि जो शख़्स गुमराही में पड़ा है, ( ख़ुदाए ) रह्मान उसको ढील ही देता चला जाता है । यहाँ तक कि जब उस चीज़ को ( अपनी आंखों ) देख लेंगे, जिसका इनसे वादा किया जाता है; यानी अज़ाब या क़यामत, तो उस वक़्त इनको मालूम हो जायगा कि अब किसका मकान बुरा और ( किसका ) जथा कमज़ोर है० और जो लोग राह रास्त पर हैं, अल्लाह उनको ( रोज़ बरोज़ ) ज़ियादा हिदायत देता चला जाता है और ( ऐ पैग़म्बर ! ) आमाल नेक, जिनका असर ( देर तक ) बाक़ी रहे—सवाब के एतिबार से ( भी ) बेहतर हैं और अन्जाम के एतिबार से ( भी ) बेहतर हैं० ( ऐ पैग़म्बर ! ) भला तुमने उस शख़्स ( के हाल ) पर भी नज़र की, जिसने हमारी आयतों से इन्कार किया और लगा कहने कि ( क़यामत होगी, तो वहां भी ) मुझको ज़रूर माल मिलेगा और औलाद ( भी मिलेगी ) ०—

---

जो नर्क में ( सबसे पहिले ) भेजे जाने के योग्य हैं। ( हम उन्हीं को सबसे पहिले नर्क में भेजेंगे )। और ( ऐसा तो ) तुम में से कोई ( मनुष्य ) भी नहीं है कि उसे नर्क के पास से ( अर्थात् पुल सिरात पर से ) गुज़रना न पड़े । ( लोगो ! ) यह ( एक ) निश्चित बात है, जिसको तुम्हारा पालन कर्त्ता अवश्य ( पूरा ) करेगा। ( अर्थात् कोई मनुष्य ईमानदार हो तो, और काफ़िर हो तो, उसको पुल सिरात पर से गुज़रना आवश्यक है )। फिर ( उन गुज़रने वालों में से ) हम ( नेक आदमियों और ) संयमी लोगों को तो ( नर्क में गिरने से ) बचा लेंगे और उन अत्याचारियों ( अर्थात् काफ़िरों ) को उसी में घुटनों पर झुका हुआ छोड़ देंगे । ( वहां तो इन विद्रोहियों की यह दशा होगी ) और ( यहां संसार में इनकी यह अवस्था है कि ) जब इनके सामने हमारी साफ़ साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं, तो काफ़िर लोग ( इनको बिल्कुल निःसार समझते हैं। और अपने धन व सम्पत्ति का वर्णन करते हुए ) ईमान्दारों से कहते हैं कि दोनों पक्षों ( अर्थात हम में से और तुम ) में से किसका स्थान उत्तम है ? और ( अपने ठाठ की चर्चा करते हुये कहते हैं कि बताओ ) किसकी संगत उत्तम ( और रौनक़दार ) है ॥

( हे रसूल ! यह लोग मालदारी ) और ( सम्पत्ति तथा वैभव को ईश्वर की प्रसन्नता का कारण समझते हैं। क्या इन्हें यह नहीं मालूम कि ) हमने इनसे पहिले बहुत सी ऐसी ( विद्रोह ) जातियों को मार डाला है, जो सामान और ( ज़ाहिरी ) नुमाइश में ( उनसे ) कहीं बढ़ ( चढ़ ) कर थीं। ( हे रसूल ! ) तुम ( इन लोगों से ) कहो कि जो मनुष्य पथ भ्रष्टता ( के गढ़े ) में ( होने के बावजूद धन व सम्पत्ति का मालिक ) है, तो ( वह अपने धनवान होने के कारण ख़ुदा को प्रिय नहीं है। बल्कि ) दयालु ( ख़ुदा ) उसको एक लम्बी ढील देता है, जिससे कि जब ( वह अपनी पथ भ्रष्टता की सीमा को पहुंच जावे और फिर ) उनसे जो वादा किया जा रहा है, वह उसे देखलें । ( अर्थात ) या तो ( इसी संसार में ) अज़ाब ( पालें ) और या क़यामत ( में जब कि इनसे इनके कर्मों के सम्बन्ध में उत्तर माँगा जावेगा—इन दोनों बातों में से जब कोई बात हो जावेगी, तो ) फिर इन्हें मालूम होगा कि किसका ठिकाना ख़राब ( और कष्ट प्रद ) है और किसका दल बिल्कुल निर्बल ( और किसकी संगत बिल्कुल बरबाद और बे रौनक़ ) है ॥

( इन काफ़िरों को तो अल्लाह तआला संसार के असार और क्षणिक धन वैभव देता है )। और जो लोग सीधे मार्ग पर हैं, उन लोगों की हिदायत ( और नेकी ) में ( सदैव ) अधिकता करता रहता है। और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ ( हैं। हे रसूल ! ) तुम्हारे पालन कर्त्ता के निकट ( नेकियाँ ) पुण्य की दृष्टि से भी उत्तम हैं और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छी हैं। ( हे रसूल ! ) तुमने उस ( मूर्ख मनुष्य ) को ( भी ) देखा, जो हमारी आयतों ( के मानने ) से इन्कार करता है और कहता है कि मुझको तो ( मरने के बाद क़यामत में भी ) अवश्य २ धन व सन्तान ( ख़ुदा की ओर से ) प्रदान की जावेगी ॥

اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۙ كَلَّا ؕ
سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۙ
وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ۙ وَاتَّخَذُوْا مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۙ كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ
بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۙ اَلَمْ تَرَ
اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ
اَزًّا ۙ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۚ يَوْمَ
نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ۙ وَّنَسُوْقُ
الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ۘ لَا يَمْلِكُوْنَ
الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۘ
وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ؕ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا
اِدًّا ۙ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ
الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۙ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ

ع

क्या इसको ग़ैब की ख़बर लग गई है? या इस ने (ख़ुदाए) रह्मान से अहद ले लिया है ० हरगिज़ नहीं, जो कुछ यह बकता है, हम (सब) लिखे लेते हैं और इसके हक़ में अज़ाब बढ़ाते चले जाएंगे ० और यह जो (माल और औलाद का) नाम लेता है, (आख़िरकार) हम ही उसके वारिस होंगे और यह तने तनहा हमारे हुज़ूर में हाज़िर होगा ० और मुश्रिकों ने जो ख़ुदा के सिवा (दूसरे दूसरे) माबूद (इस उम्मीद से) बना रक्खे हैं कि (क़यामत में) इनके (हामी व) मददगार हों ० हरगिज़ नहीं, यह माबूद (जिनसे उन्होंने उम्मीद लगा रक्खी है) इनकी इबादत का इन्कार करेंगे और उल्टे इनके दुशमन हो जाएंगे ० (ऐ पैग़म्बर!) क्या तुमने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि हमने शैतानों को काफ़िरों पर छोड़ रक्खा है कि वह उनको उकसाते रहते हैं ० तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम इन (काफ़िरों) पर (नुज़ूल अज़ाब की) जल्दी न करो। हम इनके लिये (रोज़ क़यामत के आने के) बस (दिन) गिन रहे हैं ० जबकि हम परहेज़गारों को (ख़ुदाए) रह्मान के (यानी अपने) हुज़ूर में मेहमानों की तरह जमा करेंगे ० और गुनहगारों को प्यासे (ऊंटों की तरह) जहन्नम की तरफ़ हांकेंगे ० (वहां लोग किसी की) सिफ़ारिश (करने) का इख़्तियार न रक्खेंगे। हाँ, जिसने (ख़ुदाए) रह्मान से वादा लिया है, (वह वादा उसका शाफ़ी होगा) ० और (बाज़ लोग) क़ायल हैं कि (ख़ुदाए) रह्मान बेटा रखता है ० (ऐ पैग़म्बर! इनसे कहो कि यह) तुम ऐसी बड़ी सख़्त बात (अपनी तरफ़ से घड़ कर) लाए ० जिस (की वजह) से (अजब नहीं) आसमान फट पड़ें और ज़मीन शक़ हो जाय और पहाड़ रेज़े २ होकर गिर पड़ें ० कि लोगों ने (ख़ुदाए) रह्मान के लिये बेटा क़रार दिया ०—

---

(भला यह तो कोई उससे पूछे कि) क्या उसको ग़ैब की ख़बर हो गई है? या उसने (इसके सम्बन्ध में) दयालु (ख़ुदा) से कोई प्रतिज्ञा लेली है? कदापि नहीं। (इन दोनों बातों में से कोई बात भी नहीं। उसकी बकवास बिल्कुल निराधार है)। जो यह कह रहा है, हम उसे (उसके कर्मों की सूची में) अभी दर्ज किये लेते हैं। और (जब अज़ाब व सवाब का समय आवेगा, तो) हम उस (के अनुचित सम्भाषण और धोखा करने के बदले उस) के लिये अज़ाब (पर अज़ाब) बढ़ाते रहेंगे। और यह जो (धन व सन्तान के सम्बन्ध में इस प्रकार) कहता है (तो अन्त में) इसके उत्तराधिकारी (और मालिक) हम ही रह जावेंगे। और यह (क़यामत के दिन) अकेला हमारे दर्बार में हाज़िर होगा। (न उस दिन इसके पास माल होगा और न इसके साथ कोई सन्तान)॥

और उन्होंने (तो) अल्लाह तआला को छोड़ कर (कुछ मन घड़न्त) पूज्य (इस अभिप्राय से) बना रक्खे हैं, जिससे कि वह इनके लिये आदर का साधन हों। (यद्यपि उनमें यह शक्ति व बल) कदापि नहीं (है)। वह (तो क़यामत के दिन) इनकी पूजा (ही करने) का इन्कार कर देंगे और (बजाय इनकी कुछ सहायता करने के उलटे) उनके विरोधी बन जावेंगे। (हे रसूल!) क्या तुमने यह नहीं देखा कि हमने (इन) काफ़िरों पर शैतान को स्थित कर रक्खा है (जिस से कि) उन्हें (दिन रात कुफ़्र व कुकर्म पर) उभारते (और नेक कामों से रोकते) रहें। अतः तुम इन पर (अज़ाब उतारने के लिये) जल्दी न करो। हमने तो (जो अवधि) इन (को अज़ाब देने) के लिये (नियत कर रक्खी है, उसके समस्त दिनों और महीनों को) गिन रक्खा है। (जब वह अवधि पूरी हो जावेगी, तो इन्हें अपने कर्मों का पूरा २ स्वाद आजावेगा)। (हे रसूल! इन लोगों से तुम उस दिन का हाल वर्णन करो) जिस दिन कि हम संयमी लोगों को दयालु (ख़ुदा) की (अर्थात अपनी) सेवा में (आदर के साथ) समूह के रूप में एकत्रित करेंगे। और (इन) अपराधियों को (पशुओं की तरह) नर्क की ओर प्यासा हांकेंगे॥

(उस दिन) लोगों को (किसी की) सिफ़ारिश का अधिकार न होगा। लेकिन (हाँ) वह (ईमानदार) मनुष्य, जिसने (अपने सुकर्मों के बदले में) दयालु (व कृपालु ख़ुदा) से (अपनी क्षमा का) वादा ले लिया है—(उसके वादे और उसके शुभ कर्मों के कारण उसको अवश्य क्षमा मिलेगी)। और कहते हैं कि अल्लाह तआला ने सन्तान बना रक्खी है। (हे रसूल! तुम इन लोगों से कहो कि ख़ुदा की महानता की शपथ!) तुम (मूर्खों) ने ऐसी बुरी बात कही है कि जिसके कारण (बिल्कुल) सम्भव है कि (सातों) आकाश टुकड़े २ हो जावें और पृथ्वी फट जावे और पहाड़ छिन्न भिन्न हो जावें (केवल) इस कारण कि उन्होंने दयालु (ख़ुदा) के लिये सन्तान बताई॥

وَلَدًا ۝ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ۝ اِنْ كُلُّ مَنْ
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ۝
لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ۝ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ
لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ۝ وَكَمْ
اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ
مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

سورة طه مكية وهي مائة وخمس وثلثون اية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
طٰهٰ ۝ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۝ اِلَّا تَذْكِرَةً
لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ
الْعُلٰى ۝ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۝ لَهٗ مَا فِي

ع

हालाँकि ( ख़ुदाए ) रहमान को शायां ही नहीं कि ( वह किसी को अपना ) बेटा बनाए ० जितनी मख़लूक़ात आसमान व ज़मीन में है, सभी तो ( क़यामत के दिन ख़ुदाए ) रहमान के आगे ( उसके ) गुलाम बन कर हाज़िर होंगे ० ख़ुदा ने इनको ( अपनी क़ुद्रत के इहाते में ) घेर रक्खा है और इन ( सब ) को गिन ( भी ) रक्खा है० और यह सब क़यामत के दिन अकेले ( अकेले ) उसके हुज़ूर में हाज़िर होंगे० जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, ( ख़ुदाए ) रहमान अन्क़रीब उनको महब्बत ( लोगों के दिलों में ) पैदा कर देगा ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमने इस ( क़ुर्आन ) को तुम्हारी ज़बान ( अरबी ) में इस ग़रज़ से आसान कर दिया है कि तुम इस ( के ज़रिये ) से ( दुनिया जहान के ) परहेज़गारों को ख़ुश ख़बरी सुनाओ और ( नीज़ ) इस ( के ज़रिये ) से ( ख़ास कर अरब के ) अक्खड़ लोगों को ( अज़ाब ख़ुदा से ) डराओ ० और इनसे पहिले हम कितनी जमाअतों को हलाक कर चुके हैं । भला अब तुम उनमें से किसी को ( कहीं भी ) देखते या उनकी भनक ( भी ) सुनते हो०

## सूरत—ताहा

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें १३५ आयतें और ८ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० ताहा० ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमने तुम पर क़ुर्आन इस लिये तो नाज़िल किया नहीं कि तुम ( इसकी वजह से इस क़दर ) मशक़्क़त उठाओ० ( हाँ, यह क़ुर्आन ) सिर्फ़ ( एक ) नसीहत है ( और वह भी ) उसीके लिये, जो ( ख़ुदा से ) डरता है ० ( यह ) उस ( ख़ुदा ) का उतारा हुआ ( है ) जिसने ज़मीन और ऊंचे ( ऊंचे ) आसमानों को पैदा किया० ( उसीका एक नाम है ) रहमान ( जो ) अर्श ( बरीं ) पर बिराज रहा है० उसीका है, जो कुछ—

السموت

यद्यपि ( इस बात को प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य ज़रा सा ध्यान देने से अच्छी तरह समझ सकता है कि अधिकार रखने वाले व ) कृपालु ( ख़ुदा के गौरव ) के योग्य यह बात ( कदापि ) नहीं है, कि वह ( किसी को अपनी ) सन्तान बनाले । ( न पृथ्वी में उसकी कोई सन्तान है, न आकाश में । बल्कि सबके सब उसके आधीन और उसके पैदा किये हुये हैं । और ) आकाशों और पृथ्वी में कोई भी ऐसा नहीं है, जो ( क़यामत के दिन हाथ बाँध कर ) ग़ुलामों की तरह दयालु ( ख़ुदा ) के सामने हाज़िर न हो । ( और ) उसने इन ( सब ) को ( अपने अधिकार की ) सीमा में ले रक्खा है । और उन ( सब ) की ( पूरी ) पूरी गिनती कर रक्खी है ॥

और क़यामत के दिन उनमें से प्रत्येक अकेला ( अकेला ) उसके दर्बार में हाज़िर होगा ( और अपने वचनों तथा कर्मों का हिसाब देगा । अतः उस दिन अल्लाह के अज़ाब से छुटकारा पाने के लिये पवित्र ख़ुदा और उसके माननीय रसूल पर ईमान लाना आवश्यक है ) । निस्सन्देह जो लोग ईमान ले आये और ( ईमान लाने के पश्चात ) उन्होंने कर्म भी अच्छे किये ( क़यामत के फल के अतिरिक्त ) अभी दयालु ( ख़ुदा कुछ दिन बाद इसी संसार ही के अन्दर लोगों के दिलों में ) उनका प्रेम उत्पन्न कर देगा ॥

अतः ( हे रसूल ! ) हमने इस ( क़ुर्आन ) को तुम्हारी भाषा में ( उतार कर तुम्हारे लिये ) इस वास्ते आसान कर दिया है कि तुम इससे संयमी मनुष्यों को ( स्वर्ग का ) मंगल समाचार सुनाओ और ( बेईमान और ) झगड़ने वाले लोगों को इससे डराओ । और ( हे रसूल ! ) हमने इनसे पहिले बहुत से ( उद्दंड ) दलों को ( उनके कुकर्मों के कारण अपना अज़ाब भेज कर ) मार डाला है ( जिनका अब कहीं चिन्ह भी बाक़ी नहीं । हे रसूल ! ) क्या तुम उनमें से किसी एक को भी ( किसी स्थान पर ) देखते हो ! या उनकी ज़रा सी आवाज़ भी ( कहीं ) सुनते हो ॥

## सूरत—ताहा

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें १३५ आयतें और ८ रुकूअ हैं ॥

( हे हमारे रसूल ! ) हमने ( यह ) क़ुर्आन तुम पर इस लिये नहीं उतारा कि तुम ( इतने ) संकट में पड़ जाओ ( कि सारा दिन ख़ुदाई आदेशों के प्रचार और लोगों को उपदेश देने और मुसलमानों को काफ़िरों के अत्याचार से बचाने में ख़र्च करने के होते हुये रातों को नमाज़ में इतनी देर खड़े हो कि तुम्हारे पैर सूज जायँ ) । ( हे रसूल ! हमारा न तो यह उद्देश्य है कि तुम सुकर्मों न बनो । और न यह कि तुम विपत्ति में फँस जाओ । बल्कि इस क़ुर्आन के उतारने से हमारा उद्देश्य ) केवल ( प्रत्येक ) उस मनुष्य के लिये ( एक ) नसीहत ( का सन्देश पहुंचाना ) है, जो इस ( बात ) से डरता है कि यह ( क़ुर्आन ) उस (ख़ुदा) का उतारा हुआ है, जिसने ( इतनी लम्बी चौड़ी ) पृथ्वी और ( इतने ) ऊंचे आसमानों को पैदा किया है ॥

( और वह ) महान दया ( और शक्ति ) वाला अर्श ( आकाशीय सिंहासन ) पर विराजमान है ॥

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ
الثَّرٰى ۝ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ
وَاَخْفٰى ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝
وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ
لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ
مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝ فَلَمَّآ
اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ۝ اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ
نَعْلَيْكَ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَاَنَا
اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ
اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝
اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا تَسْعٰى ۝ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا
يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ۝ وَمَا تِلْكَ

आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ ( आसमान व ज़मीन ) दोनों के बीच में है और जो कुछ ( कुरह ) ख़ाक के तले है ० और ( ऐ मुख़ातब ! )अगर तू पुकार कर बात करे, तो वह ( तेरे पुकारने का मोहताज नहीं, क्योंकि वह ) आहिस्ता और ( आहिस्ता से ) ज़ियादा मख़्फ़ी बात को भी जानता है ० ( वही ) अल्लाह ( है कि ) उसके सिवा कोई ( और ) माबूद नहीं । अच्छे नाम उसी के हैं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) भला तुमको मूसा की हिकायत भी पहुंची है ० कि जब उनको ( दूर से ) आग दिखाई दी, तो उन्होंने अपने घर के लोगों से कहा ( कि ज़रा ) ठहरो ! मुझको ( एक ) आग ( सी ) दिखाई दी है ( मैं वहां जाऊं; तो ) अजब नहीं उस ( आग ) से तुम्हारे लिये ( एक ) चिंगारी ले आऊं या आग ( के अलाव ) पर राह का पता मालूम करूं ० फिर जब मूसा वहाँ आए, तो उनको आवाज़ आई कि मूसा ! ० ( यह तो ) हम हैं, तुम्हारे पर्वर्दिगार, तो अपनी जूतियां उतार डालो ( क्योंकि इस वक़्त )तुम तुवा ( नाम ) के मैदान पाक में हो ० और हमने तुमको ( पैग़म्बरी के लिये ) मुन्तख़ब फ़र्माया है, तो जो कुछ ( तुमको ) इर्शाद किया जाता है, उसको कान लगा कर सुनो ० कि हम ही अल्लाह हैं । हमारे सिवा कोई माबूद नहीं, तो हमारी ही इबादत किया करो और हमारी याद के लिये नमाज़ पढ़ा करो ० ( क्योंकि ) क़यामत ( ज़रूर ) आने वाली है ( और ) हम उस ( के वक़्त ) को ( लोगों से ) पोशीदा रखने को हैं, ताकि हर शख़्स ( क़यामत के डर से नेक काम करने की कोशिश करे और क़यामत में उस ) को उसकी कोशिश का बदला मिले ० तो ऐसा न हो कि जो शख़्स क़यामत का यक़ीन नहीं रखता और अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा है, तुमको क़यामत ( के फ़िक्र ) से बाज़ रक्खे कि ( ऐसा करोगे, तो ) तुम तबाह हो जाओगे० और—

---

जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ पृथ्वी में है और जो कुछ इन ( पृथ्वी व आकाश ) के बीच में, और पृथ्वी के नीचे है ( सब ) उसी की मिलकियत ( और उसी के अधिकार में ) है । यह तो उसकी क़ुद्रत की शान थी) और उसके ज्ञान की शान यह है कि हे मनुष्यो ! ) यदि तू ( उसको सुनाने के लिये ) पुकार कर बोले, तो ( भी वह सुन लेगा और आहिस्ता बोले तब भी-क्योंकि ) वह तो सहज से कही हुई बात को भी जानता है । और ( सहज से ) अधिक सहज बात ( अर्थात जो बात कि अभी दिल ही में है, ज़बान पर आई भी नहीं—उसको ) भी ( जान लेता है )। (वही ) अल्लाह ( है कि ) उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। ( अच्छे ) अच्छे नाम (अल्लाह, रह्मान, रहीम इत्यादि जितने हैं, सब ) उसी ( असली पूज्य ) के हैं । ( वह जब बोले जाते हैं, तो उनसे तात्पर्य केवल वही अल्लाह होता है )। और ( हे रसूल ! ) भला तुम्हें ( कुछ ) मूसा की भी ख़बर है ( कि उन पर क्या बीती ? लो सुनो ! हम तुमको सुनाते हैं )॥

जब ( वह मदयन स्थान से अपनी स्त्री को साथ लेकर अपनी जन्म भूमि मिस्र में जा रहे थे , तो रास्ता भूल गये थे । इसी समय ) उन्हें आग नज़र आई, तो उन्होंने अपनी स्त्री से कहा कि तुम ( यहां कुछ देर ) ठहरो। मुझे ( सामने पहाड़ पर ) आग ( जलती हुई ) नज़र आई है। (मैं वहां जाता हूं )—सम्भव है कि उस ( आग ) में से एक चिङ्गारी ( तुम्हारे लिये भी ) ले आऊँ, या आग के पास ( जो आदमी हों, उनसे कम से कम ) मार्ग ( ही ) पूछ लूं । अतः जब वह इस ( आग) के पास आये, तो उन्हें ( उनके पालन कर्ता की ओर से ) आवाज़ दी गई –हे मूसा ! हम तुम्हारे पालन कर्त्ता हैं । अतः तुम ( अपनी ) दोनों जूतियाँ उतार लो । क्योंकि तुम ( एक ) पवित्र घाटी ( अर्थात) तुवा में ( उपस्थित ) हो ( जहाँ इस समय हम अपनी लीला व ज्योति प्रगट कर रहे हैं )॥

और ( फ़रमाया कि ) हमने तुमको ( अपना पैग़म्बर बनाने के लिये ) चुन लिया है । अतः जो कुछ ( तुमको ) हुक्म दिया जाता है, उसे ( ध्यान पूर्वक ) सुनो ( और याद रक्खो कि ) हम ही अल्लाह ( और लोक परलोक के सृष्टि कर्त्ता और स्वामी ) हैं । हमारे अतिरिक्त कोई पूज्य ( बनने के योग्य ) नहीं । अतः तुम हमारी ( ही ) पूजा करो । और हमारी याद ( हर समय ताज़ा रखने ) के लिये नमाज़ (को नियम पूर्वक ) अदा किया करो ।( और देखो !) क़यामत निश्चित रूप से आने वाली है। ( कब आवेगी, यह हम नहीं बतावेंगे )। हम उस ( समय की अवधि ) को ( प्रत्येक मनुष्य से ) छिपाना चाहते हैं । ( और क़यामत को हम इस कारण उपस्थित करेंगे ) जिससे कि हर मनुष्य अपनी ( बुरी भली ) कोशिश का बदला पाले ॥

अतः ( कहीं ) वह मनुष्य, जो क़यामत पर ईमान नहीं रखता और अपनी दुर्वासनाओं के आधीन रहता है, तुमको ( भी ) इस ( पर ईमान लाने ) से न रोक दे ( कि ) फिर तुम बरबाद हो जाओ ( और उसकी तरफ़ से बेख़बर होकर अपना परलोक बिगाड़ लो )। ( तूर पहाड़ पर अल्लाह तआला ने मूसा को यह आज्ञा दी ) और ( उनसे पूछा ) हे मूसा ! यह—

मूसा! तुम्हारे दाहिने हाथ में यह क्या (चीज़) है० अर्ज़ किया यह मेरी लाठी है। मैं इस पर सहारा लगाता हूं और इसी से अपनी बकरियों पर (दरख़्तों के) पत्ते झाड़ता हूं और इस (लाठी) में मेरे और भी अग़राज़ हैं ० फ़र्माया मूसा! इस (लाठी) को (ज़मीन में) डाल दो ० चुनाँचे मूसा ने लाठी डाल दी, तो क्या देखते हैं कि वह सांप है (और) दौड़ रहा है ० फ़र्माया इसको पकड़ लो और डरो मत। हम दम के दम में इसकी फिर वही पहिली हालत कर देंगे ० और अपने हाथ को सुकेड़ कर अपनी बग़ल में रख लो (और फिर निकालो) तो वह बिदून इसके कि किसी तरह का रोग हो, सफ़ेद (बर्राक़) निकलेगा (और यह) दूसरा मोजिज़ा (है) ० (यह दो निशानियां इस वक़्त तुमको इस लिये अता फ़र्माई हैं) कि हम (आगे चल कर) तुमको अपनी (क़ुद्रत की बड़ी) बड़ी निशानियां दिखाएं ० (अच्छा तो) फ़िर्औन पास जाओ–उसने बहुत सर उठा रक्खा है ० (मूसा ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मेरा हिया खोल दे ० और मेरे काम को मेरे लिये आसान कर ० और मेरी ज़बान (में जो लुक्नत) की गिरह (पड़ी हुई है, उसको भी) खोल दे ० ताकि लोग मेरी बात (अच्छी तरह) समझें ० और मेरे कुन्बे वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा बोझ बटाने वाला बनाकर ० उनसे मेरी ढारस बंधा ० और मेरे काम में उनको शरीक कर ० ताकि हम दोनों (एक दिल होकर) कसरत से तेरी तस्बीह (व तक़्दीस) करें ० और कसरत से तेरी यादगारी में लगे रहें ० (कि) तू हमारे हाल को खूब देख रहा है ० फ़र्माया मूसा! तुम्हारी (सब) दरख़्वास्तें मन्ज़ूर ०—

بِيَمِينِكَ يَٰمُوسَىٰ ● قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا
وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي ● وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ●
قَالَ أَلْقِهَا يَٰمُوسَىٰ ● فَأَلْقَىٰهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ●
قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا
الْأُولَىٰ ● وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ● لِنُرِيَكَ مِنْ
آيَٰتِنَا الْكُبْرَىٰ ● اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ
طَغَىٰ ● قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ● وَيَسِّرْ لِيٓ ع ١٤
أَمْرِي ● وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّن لِّسَانِي ● يَفْقَهُوا
قَوْلِي ● وَاجْعَل لِّي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ● هَٰرُونَ
أَخِي ● اشْدُدْ بِهِۦٓ أَزْرِي ● وَأَشْرِكْهُ فِيٓ أَمْرِي
كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ● وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ● إِنَّكَ
كُنتَ بِنَا بَصِيرًا ● قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَٰمُوسَىٰ

ولقد

---

तुम्हारे सीधे हाथ में क्या (चीज़) है? (मूसा के हाथ में लाठी थी) निवेदन किया, यह मेरी लाठी है (जो मेरे बहुत काम आती है)। मैं इस पर टेक लगाता हूं और इसीसे अपनी (भेड़) बकरियों पर (उनके खाने के लिये पेड़ों के) पत्ते गिराता हूं। और (इन कामों के अतिरिक्त) मेरे लिये इस में और भी बहुत से लाभ हैं। हुक्म हुआ हे मूसा! (ज़रा) इसको (ज़मीन पर तो) डाल दो। (मूसा ने अल्लाह की आज्ञा सुनी) तो उसको (तुरन्त) ज़मीन पर डाल दिया। (ज़मीन पर इसका फेंकना था कि) वह तो तुरन्त दौड़ता हुआ साँप बन गई। फ़रमाया (हे मूसा!) इसको पकड़ लो और (किसी प्रकार का) भय न करो। हम अभी इसको (पहिले जैसा किये देते हैं और) इसकी पहिली हालत पर लौटाये देते हैं। (हमने तुमको फ़िर्औन और फ़िर्औन के लोगों को पराजित करने के लिये यह एक चमत्कार प्रदान किया है)॥

(इसके सिवाय एक चमत्कार तुमको) और (देते हैं। वह यह है कि) तुम अपना (सीधा) हाथ अपनी (बाईं) बग़ल में दबा लो। (अगर तुम ऐसा करोगे, तो) वह (हाथ) बिना किसी ऐब (अर्थात कोढ़ के रोग) के सफ़ेद (और चमकदार) बन कर (और एक) दूसरा चमत्कार होकर निकलेगा। (यह चमत्कार हमने तुमको इस लिये प्रदान किये हैं) ताकि हम अपनी कुद्रत की बड़ी (बड़ी) निशानियों में से तुमको कुछ दिखायें (और तुम्हारे ईमान को पक्का करदें)। (लो अब) तुम (यह चमत्कार लेकर) फ़िर्औन की तरफ़ रवाना हो जाओ। (और उसके सुधार करने का उद्योग करो) क्योंकि वह (बड़ा) उद्दण्ड हो गया है। (मूसा ने) निवेदन किया (यह सेवा जो मेरे सिपुर्द की गई है, यह बहुत कठिन है। इस वास्ते) हे मेरे पालन कर्त्ता! तू मेरा हृदय खोल दे (अर्थात मेरे दिल में हिम्मत व साहस पैदा करदे और मेरा हौसला बढ़ादे) और मेरे (इस) काम (अर्थात प्रचार रूपी कर्तव्य पालन) को सुगम करदे। और मेरी बाणी (में जो हकले पन) की गांठ (पड़ी हुई है) तो (इसको भी) खोलदे, ताकि वह (अर्थात फ़िर्औन वाले) मेरी बात को (अच्छी तरह) समझलें और (हे मेरे पालन कर्त्ता!) तू (मेरे हाल पर इतनी कृपा और कर कि) मेरे घर के लोगों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर (और मेरा सहायक) बना कर मेरी कमर पक्की करदे और उसको मेरे काम में शरीक फ़रमादे ताकि हम (दोनों मिल कर) अधिकता से तेरी पवित्रता वर्णन करें। और अधिकता से तेरा ज़िक्र (ख़ैर) करें (और तेरे आदेश लोगों को पहुँचायें)।

(और हे मेरे पालन कर्त्ता!) तू (तो) हमारी हालत को देख (ही) रहा है। (अर्थात तू जानता है कि इस कठिन सेवा को पूर्ण करने के लिये मुझे एक सहायक की ज़रूरत है। और उस ज़रूरत के पूर्ण करने के लिये मेरा भाई बहुत मुनासिब है। (अल्लाह तआला ने) उत्तर दिया कि हे मूसा! तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करली गई॥

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ۝ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ
أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ۝ أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ
فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ
يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ
مَحَبَّةً مِّنِّي ۝ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ۝ إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ
فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ فَرَجَعْنَاكَ
إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۝ وَقَتَلْتَ
نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا فَلَبِثْتَ
سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَا مُوسَىٰ
وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۝ اذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ
بِآيَاتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ۝ اذْهَبَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا
لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۝ قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ

और हम तुम पर एक बार और भी पहसान कर चुके हैं ० जब हमने तुम्हारी मां की तरफ़ वह वही भेजी, जिसका हाल ( तुमको अब ) वही के ज़रिए से बताया जाता है ० कि मूसा को सन्दूक़ में रख कर उस ( सन्दूक़ ) को दरिया में डाल दो और दरिया सन्दूक़ को किनारे पर धकेल दे कि ( आख़िर कार ) मूसा को हमारा दुशमन और ( नीज़ ) मूसा का दुशमन (यानी फ़िर्औन) ले लेगा और ( ऐ मूसा! ) हमने तुम पर अपनी तरफ़ से महब्बत ( का पर्तव ) डाल ( कर तुम्हारी सूरत प्यारी प्यारी बना ) दी ( कि जो तुमको देखता, महब्बत करने लगता ) और ( इस से ) ग़रज़ यह थी कि तुम हमारी निगरानी में पर्वरिश पाओ ० ( यह उसी वक़्त का वाक़िआ है ) जबकि तुम्हारी बहन ( अजनबी बन कर फ़िर्औन के लोगों से ) कहती चली जा रही थी कि ( कहो तो ) मैं तुमको एक ऐसी दाया बता दूं, जो इसको ( अच्छी तरह ) पाले और ( इस तदबीर से ) हमने तुमको फिर तुम्हारी मां पास पहुंचाया, ताकि उनकी आंखें ठंडी रहें और ( तुम्हारी जुदाई का ) रन्ज न करें और ( मूसा! ) तुमने एक शख़्स ( क़िब्ती ) को मार डाला था ( और अपनी जान के डर से तुम बहुत ग़मगीन हुए ) तो हमने तुमको ( उस ) ग़म से ( भी ) नजात दी। ग़रज़ हमने तुमको ख़ूब ठोंक बजाकर आज़माया। फिर तुम कई बरस मदयन के लोगों में ( जाकर ) रहे। यहाँ तक कि ऐ मूसा! ( आख़िरकार ) तुम ( उम्र की पुख़्तगी की ) हद को पहुंच कर ( हमारे हुज़ूर में ) हाज़िर हुए ० और हमने तुमको अपने ( ख़ास काम पैग़म्बरी के ) लिये तय्यार किया है ० ( तो ) तुम और तुम्हारे भाई ( हारून-दोनों ) हमारे मोजिज़े लेकर जाओ और हमारी यादगारी में सुस्ती न करना ० दोनों फ़िर्औन पास जाओ, उसने बहुत सर उठा रक्खा है ० फिर ( उस पास जाकर ) उससे नर्मी से बात करो। शायद वह समझ जाय या ( हमारे इताब से ) डरे ० दोनों ( भाइयों ) ने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! हम इस ( बात ) से डरते हैं—

---

और एक बार और भी हम तुम पर ( एक ) पहसान कर चुके हैं, जब कि हमने ( तुम्हारे शत्रु फ़िर्औन के अत्याचार के हाथ से तुम्हारी जान बचाने के लिये तुम्हारी बाल अवस्था के समय ) तुम्हारी माता को जो कुछ कहला कर भेजना ( मुनासिब ) था, कहला भेजा था। ( अर्थात ) यह कि तुम इस ( बच्चे ) को ( एक ) सन्दूक़ में रखदो। ( और ) फिर उसको नदी में डालदो ( कि ) फिर उसको नदी ( अपने ) किनारे पर फेंक दे। ( और ) उसे हमारा और मूसा का शत्रु ( फ़िर्औन उठाकर अपने यहाँ ) ले जाय। और ( हे मूसा! फ़िर्औन तुम्हारा शत्रु होते हुये भी तुमको इस लिये हानि न पहुंचा सका कि ) हमने तुम पर अपनी महब्बत डाल दी थी। ( और तुम्हारी सूरत में ऐसी मोहनी पैदा करदी थी, कि जो तुमको देखता था, हानि पहुंचाने के बजाय तुम्हारा प्रिय बन जाता था )॥

और ( इससे हमारा अभिप्राय यह था ) ताकि ( हे मूसा! ) तुम हमारी आंखों के सामने ( अर्थात् हमारी संरक्षता में अपने शत्रु के यहां ) पाले पोपे जाओ। ( हे मूसा! तुम्हारा वह समय भी वर्णन करने योग्य है ) जबकि तुम्हारी बहिन ( उस सन्दूक़ के पीछे २) चली ( और ) फिर ( जब सन्दूक़ फ़िर्औन के महल में जा पहुंचा, और तुम उसमें से प्रगट हुये और तुमने किसी धाय का दूध मुंह में न लिया, तो तुम्हारी बहिन) फ़िर्औन ( वालों ) से कहने लगी, क्या मैं तुमको ( एक ) ऐसी स्त्री बताऊँ, जो इस ( को दूध पिलाने ) की ( पूरी पूरी ) ज़िम्मेदारी ले ले। और ( इस उपाय से ) फिर हमने तुमको तुम्हारी माता के पास लौटा दिया, ताकि उनकी आँखें ठंढी रहें और ( तुम्हारे वियोग में ) दुःखी न हों॥

और ( वह समय भी, जब कि ) तुमने एक मनुष्य को ( घूसा मार कर ) जान से मार दिया था ( और ) फिर हमने तुमको ( उसकी ) चिन्ता से मुक्त कर दिया था ( कि तुमको मिस्र से मदयन पहुंचा दिया था )। और ( मिस्र से मदयन तक पहुंचने में ) हमने तुमको बहुत सी विपत्तियों में लिप्त किया था। ( और ) फिर ( तुम्हारे समस्त कष्ट दूर करके तुमको शुऐब नबी का दामाद बना दिया था। और ) तुम मदयन वालों में कई वर्ष ठहरे थे। फिर तुम हे मूसा! ( उस ) नियत समय पर ( जो तुम्हारी पैग़म्बरी के लिये पहिले से नियत हो चुका था, यहाँ ) आ गये॥

और हमने तुमको ( ख़ास ) अपने ( काम के ) लिये चुन लिया ( अर्थात तुमको पैग़म्बरी का सम्मान प्रदान किया )। ( बस अब ) तुम और तुम्हारे भाई ( हारून दोनों मिल कर और ) हमारे चमत्कार लेकर ( फ़िर्औन वालों के पास ) जाओ और ( देखो! ) हमारी याद में ( किसी प्रकार की ) सुस्ती ( और ग़फ़लत ) न करना। दोनों ( यहाँ से सीधे ) फ़िर्औन के पास जाओ, क्योंकि वह ( बड़ा ) उद्दण्ड हो गया है। ( जब तुम वहां पहुँचो ) तो उससे ( जहाँ तक बने ) नर्मी से वार्तालाप करना। सम्भव है वह ( कुछ ) शिक्षा ग्रहण करे, वा ( हमारे अज़ाब से ) डरे। ( मूसा व हारून ) दोनों ने निवेदन किया हे हमारे पालन कर्त्ता! हमें यह डर है—

اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ● قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ
مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ● فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا
رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ● وَلَا
تُعَذِّبْهُمْ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ وَالسَّلٰمُ
عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ● اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَآ اَنَّ
الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ● قَالَ فَمَنْ
رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ● قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ
خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ● قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ●
قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ فِىْ كِتٰبٍ لَا يَضِلُّ رَبِّىْ
وَلَا يَنْسَى ● الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا
وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ● كُلُوْا
وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى

النُّهٰى

कि ( कहीं ) हम पर ज़ियादती ( न ) करे या ( और ज़ियादा सर्कशी ( न ) करने लगे ० फ़र्माया डरो मत। हम तुम्हारे साथ ( हैं और सब कुछ ) सुनते और देखते हैं ० ग़रज़ उसके पास जाओ और ( जाकर ) कहो कि हम दोनों आप के पर्वर्दिगार के भेजे हुए हैं। तो बनी इस्राइल को हमारे साथ रुख़सत कीजिये और उनको ( किसी तरह की ) ईज़ा न दीजिये। हम आप के पर्वर्दिगार के पास से मोजिज़ा लेकर आए हैं। और सलामती उसीके लिये है, जो राह रास्त की पैरवी करे० हम पर ( ख़ुदा की तरफ़ से यह ) वही नाज़िल हुई है कि अज़ाब ( इलाही ) उसी पर ( नाज़िल होगा ) जो ( ख़ुदा की आयतों को ) झुठलाए और ( उसके हुक्म से ) सर्ताबी करे० ( फ़िऔंन ने अज़राह तकब्बुर ) पूछा, मूसा ! तुम दोनों ( भाइयों ) का पर्वर्दिगार कौन है० ( मूसा ने ) कहा हमारा पर्वर्दिगार वह है, जिसने हर मख़्लूक़ को उसकी ( ख़ास तरह की ) बनावट अता फ़र्माई। फिर उसको ( उन अग़राज़ ख़ास के पूरा करने की ) राह दिखाई ( जिनके लिये वह पैदा किया गया है ) ० ( फ़िऔंन ने ) पूछा कि भला अगिले ( ज़माने के ) लोगों का क्या हाल ( होना ) है० ( मूसा ने ) कहा—इन बातों का इल्म मेरे पर्वर्दिगार के यहां किताब ( लौह महफ़ूज़ ) में ( लिक्खा हुआ मौजूद ) है। मेरा पर्वर्दिगार न भटकता है और न भूलता है० उसीने तो तुम लोगों के लिये ज़मीन का फ़र्श बनाया और तुम लोगों के ( चलने के ) लिये ज़मीन में रस्ते निकाले और आसमान से पानी बरसाया। फिर हम ही ने पानी के ज़रिये से तरह तरह की मुख़्तलिफ़ रोईदगियां ( ज़मीन से ) निकालीं ० ( ताकि उन चीज़ों को तुम भी ) खाओ और अपने चारपायों को ( भी ) चराओ। कुछ शक नहीं कि इन ( चीज़ों ) में अक़्ल वालों के लिये ( क़ुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ) निशानियां हैं०—

---

कि ( कहीं ) वह हम पर ( किसी तरह का ) अत्याचार ( न ) कर बैठे, वा ( ज़िद में आकर पहिले से भी ज़्यादा ) उद्दण्डता ( न ) करने लगे। ( अल्लाह ने ) उत्तर दिया ( हे मूसा व हारून ! ) तुम ( किसी बात का ) भय न करो। निस्सन्देह मैं तुम्हारे साथ हूं ( और सब कुछ ) सुनता और ( सब कुछ ) देखता हूं। अतः तुम दोनों ( बिल्कुल बे खटके होकर ) उसके पास जाओ। ( जब उसके पास पहुंचो ) तो ( उससे ) कहना, कि हम दोनों तेरे पालन कर्त्ता के भेजे हुये हैं ( और तुझे उसका यह सन्देश सुनाने आये हैं कि ) तू बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और उन्हें दुःख न दे। निस्सन्देह हम तेरे पालन कर्त्ता ( के हुक्म ) से चमत्कार भी तेरे पास लेकर आये हैं। और ( वास्तव में ) कल्याण उसी ( मनुष्य ) के लिये है, जो सीधे रास्ते पर चले ॥

निस्सन्देह हम पर इस ( बात ) की वही भेजी गई है कि ( ख़ुदा का ) अज़ाब उस पर ( अवतीर्ण ) हो ( कर रहे ) गा, जो ( उसकी खुली निशानियों को ) झूठा ठहराये और ( उसकी आज्ञा पालन करने से ) विमुख रहे। ( संक्षिप्त वृतान्त यह कि मूसा व हारून फ़िऔंन के पास गये और अल्लाह की आज्ञानुसार समस्त बातें उससे कहदीं )। उसने ( अकड़ कर उनसे ) दर्याफ़्त किया ( ज़रा ) हे मूसा ! ( यह तो बताओ कि ) तुम दोनों का ( वह ) पालन कर्त्ता है कौन ? ( जिसने तुमको हमारे पास भेजा है ) ॥

( मूसा ने ) कहा हमारा पालन कर्त्ता वह ( महान शक्ति शाली ) है, जिसने ( इस संसार की ) प्रत्येक वस्तु को ( पैदा किया और उसको एक उचित ) प्रकृति ज्ञान प्रदान किया। फिर ( उन बातों का उसको ) मार्ग बताया ( जिनके करने के लिये वह संसार में आई है। फिर फ़िऔंन ने ) पूछा कि ( अच्छा ) अगले ( ज़माने के ) लोगों का क्या हाल है ( अर्थात हमसे पहिले जो जातियाँ हो चुकी हैं, उनका क्या परिणाम होगा, जो तुम्हारे पालन कर्त्ता पर ईमान न रखती थीं और हमारी तरह मूर्ति पूजा किया करती थीं ? )। ( मूसा ने ) कहा उनका ज्ञान ( अर्थात उनके कुकर्मों के सब वृतान्त ) मेरे पालन कर्त्ता के यहाँ किताब ( अर्थात लौह महफ़ूज़ ) में ( लिखा हुआ ) है ( क़यामत के दिन उनके बुरे कर्मों का उनको पूरा २ बदला मिलेगा )। मेरा पालन कर्त्ता ( किसी के कर्मों को लिखने में ) न ( कभी ) ग़लती करता है और न ( किसी की नेकी वा बुराई लिखानी ) भूलता है ॥

उसी ( श्रेष्ठ व महान ख़ुदा ) ने ( संसार में ) तुम लोगों के ( रहने सहने के लिये ) ज़मीन को ( एक उत्तम ) फ़र्श बनाया और तुम्हारे ( चलने फिरने के ) लिये उसमें ( जगह २ ) रास्ते तैयार किये। और उसी ने आकाश से पानी उतारा ( अर्थात वर्षा की )। फिर उस ( पानी ) से हम ही ने तरह २ की ( और ) भिन्न २ ( रङ्गों और स्वादों की ) सब्ज़ियाँ उगाईं—( ताकि उनमें से जो तुम्हारे खाने की हैं ) उन्हें तुम खाओ और ( जो पशुओं के मतलब की हैं, उन्हें ) अपने पशुओं को खिलाओ। निस्सन्देह इन ( चीज़ों ) में समझदारों के लिये ( सृष्टि कर्त्ता और मालिक ख़ुदा की अन गिनत ) निशानियाँ ( पाई जाती ) हैं ॥

النُّهَىٰ ۝ مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا
نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ۝ وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا
كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ۝ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا
مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ۝ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ
مِثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَا
نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝ قَالَ
مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ
ضُحًى ۝ فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَىٰ ۝
قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ
كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنِ
افْتَرَىٰ ۝ فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا
النَّجْوَىٰ ۝ قَالُوا إِنْ هَٰذَانِ لَسَاحِرَانِ يُرِيدَانِ
أَنْ يُخْرِجَاكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا

(लोगो!) इसी ज़मीन से हमने तुमको पैदा किया और (मरे पीछे) इसीमें तुमको लौटाकर लाएँगे और इसीसे (क़यामत के दिन) तुमको दुबारा निकाल खड़ा करेंगे० और हमने फ़िऔन को अपनी सभी निशानियां तो दिखाईं। इस पर भी वह झुटलाता और इन्कार ही करता रहा० (और आख़िरुल अम्र यह) कहा कि मूसा! क्या तू हमारे पास इस लिये (पैग़म्बर बन कर) आया है कि अपने जादू (के ज़ोर) से हमको हमारे मुल्क से निकाल दे० (भला रह तो) हम भी ऐसा ही जादू तेरे सामने ला पेश करें तो सही। (अच्छा) तू हमारे और अपने दर्मियान एक वक़्त मुक़र्रर कर-कि न हम उसके ख़िलाफ़ करें ओर न तू (हमारा तेरा मुक़ाबिला) खुले मैदान में (हो)० (मूसा ने) कहा कि (हमारा) तुम्हारा वादा (आम) आरास्तगी के दिन और यह कि लोग दिन चढ़े जमा हों० यह सुन कर फ़िऔन (अपनी जगह) लौट गया। फिर उसने अपने हतकंडे (यानी जादू के लवाज़िम) जमा किये। फिर (वक़्त मुक़र्रर पर मुक़ाबिले के लिये सावँटा होकर) आ मौजूद हुआ० मूसा ने फ़िऔनियों (का जमाव देख कर उन) से कहा कि (क्यों) तुम्हारी शामत आई है। ख़ुदा पर (जादू की) झूटी तोहमत न लगाओ, वर्ना वह (तुम पर कोई) अज़ाब (नाज़िल करके उस) से तुमको मलिया मेट कर देगा और जिसने ख़ुदा पर झूटी तोहमत लगाई, वह तहक़ीक़ बर्बाद हो लिया० इस पर लोग अपने (इस) अम्र की बाबत लगे आपस में बहस और चुपके चुपके सरगोशियां करने० (आख़िर) सबने (बिल इत्तिफ़ाक़ यह) कहा कि हो न हो-यह दोनों भाई जादूगर हैं (और यही) चाहते हैं कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और—

---

(हे दुनिया वालो! बनस्पति की तरह) इसी (ज़मीन की मिट्टी) से हमने तुमको (भी) पैदा किया है। और इसी में (मरने के बाद) तुमको लौटा देंगे। और (जब क़यामत आयेगी, तो) हम इसी (में) से तुमको दुबारा (जीवित करके) निकालेंगे (और तुमसे तुम्हारे कर्मों का हिसाब लेंगे)। (तात्पर्य यह है कि हमने फ़िऔन को हर तरह समझाया) और अपनी (क़ुद्रत की) सब निशानियाँ उसको दिखाईं (परन्तु) फिर भी उसने (मूसा को) झुठलाया और (हमारी आज्ञा को मानने से साफ़ २) इन्कार कर दिया (और) कहने लगा-हे मूसा! क्या तुम हमारे पास इस अभिप्राय से आये हो, कि हमको अपने जादू (के ज़ोर) से हमारी ज़मीन में से निकाल दो (और हमारे राज्य पर अपना अधिकार जमा लो)॥

(यदि तुम इसी असम्भव विचार में लिप्त हो) तो (ज़रा दम लो)। हम भी ऐसा ही जादू (का तमाशा दिखाने के लिये जादूगरी की कला में निपुणता रखने वालों को दूर २ से) तुम्हारे सामने लावेंगे। अतः तुम हमसे (किसी) खुले मैदान में (मुक़ाबिला करने के लिये) एक ऐसा (पक्का) वादा करलो, कि उसके ख़िलाफ़ न हम करें न तुम। (मूसा ने) जवाब दिया कि (हमारा) तुम्हारा वादा त्यौहार के दिन (अर्थात् ईद के दिन का) है (जबकि सब लोग फ़ुरसत में होंगे)। और (शर्त) यह (है) कि लोग सुबह दिन चढ़े जमा किये जावें (और फिर हमारा तुम्हारा मुक़ाबिला हो)॥

(जब यह बात तय हो गई) तो फ़िऔन (मूसा की तरफ़ से) मुंह फेर कर चला गया। (और) फिर (उसी दिन से) उसने छल कपट (के साधन अर्थात जादू की सामग्री) एकत्रित करनी आरम्भ करदी। फिर (वादे के दिन मुक़ाबिले के मैदान में) आ गया। (मुक़ाबिले से पहिले) मूसा ने (अन्तिम चेतावनी के रूप में) उन (उद्दण्ड मनुष्यों) से कहा (हे लोगो! मुझे तुम पर (अत्यन्त) शोक है (कि तुम ख़ुदा से इतने ग़ाफ़िल हो। देखो मेरी सुनो! और इन स्पष्ट चमत्कारों को जादू बताकर) ख़ुदा पर झूठा दोष न लगाओ, अन्यथा वह (अपने सख़्त) अज़ाब से तुम्हारा सत्यानाश कर देगा और (विश्वास रक्खो कि) जिसने (अल्लाह पर) दोष लगाया (है, वह) बरबाद हुआ (है)। (लोगों ने जो मूसा की यह पाक और निर्भयता पूर्ण बात सुनी) तो (चकित रह गये। और) अपने (मुक़ाबिले के) सम्बन्ध में परस्पर झगड़ने लगे। (कुछ कहने लगे-यह किसी जादूगर की वार्तालाप नहीं हो सक्ती। यह तो कोई ख़ुदा भक्त आदमी है)। और (इस प्रकार की) बातें चुपके २ करने लगे। (अन्त में मुक़ाबिले ही के लिये तैयार हुये और) कहने लगे-यह दोनों (के दोनों) बिलकुल जादूगर (ही) हैं। अपने जादू (और छल कपट) से चाहते हैं, कि तुम (लोगों) को तुम्हारी ज़मीन (अर्थात मिस्र) से निकाल दें और=

بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ● فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ
ائْتُوا صَفًّا وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ● قَالُوا
يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ
أَلْقَىٰ ● قَالَ بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ
يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ● فَأَوْجَسَ
فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَىٰ ● قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ
أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ● وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا
صَنَعُوا إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ وَلَا يُفْلِحُ
السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ● فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا
آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ● قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ
أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ
السِّحْرَ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ
خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ

أَيُّنَا

तुम्हारे उम्दा मज़हब को मादूम करदें० तो तुम भी अपनी कोई तदबीर उठा न रक्खो और ( परे का ) परा बन कर ( इनके मुक़ाबिले में ) आओ० और जो आज वर रहा, वही बाज़ी ले गया० ( आख़िर जादूगरों ने ) कहा कि मूसा ! या तो यह हो कि तू ( अपनी लाठी मैदान में ) डाल और या यह हो कि हम पहिले डालने वाले बनें० ( मूसा ने ) कहा नहीं, तुम ही डाल चलो। ( चुनांचे उन्होंने अपने कर्तब किये ) तो बस मूसा को उनके जादू की वजह से ऐसा मालूम हुआ कि उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ ( सांप बन बन कर इधर उधर ) दौड़ रही हैं० तो मूसा अपने जी ही जी में डरे० हमने फ़र्माया ( मूसा ! ) डरो मत। कुछ शक नहीं कि तुम ही वर रहोगे० और तुम्हारे दाहिने हाथ में जो ( लाठी ) है, उसको ( मैदान में ) डाल दो कि ( इन जादूगरों ने ) जो ( ढोंडा ) बना खड़ा किया है ( एक दम से सबको ) हड़प कर जाय ( क्योंकि ) जो ढोंडा ( उन्होंने ) बना खड़ा किया है ( यह सब ) जादूगरों के कर्तब हैं। और जादूगर कहीं भी जाए, उसको फ़लाह होनी नहीं० ( ग़रज़ मूसा की लाठी ने अज़्दहा बन कर जादूगरों के सँपोलियों को हड़प कर लिया ) तो ( यह देख कर ) जादूगर सज्दे में गिर पड़े ( और ) लगे कहने कि हम हारून और मूसा के पर्वर्दिगार पर ईमान लाए० ( फ़िऔंन ने ) कहा, क्या इससे पहिले कि हम तुमको इजाज़त दें, तुम मूसा पर ईमान ले आए। हो न हो, यह तुम्हारा बड़ा ( गुरू ) है, जिसने तुमको जादू सिखाया है। तो तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर उलटे ( सीधे ) काट डालूं० और तुमको खजूरों के तनों पर सूली चढ़ाऊँ तो सही और ( अब ) तुमको ( अच्छी तरह ) मालूम हो जायगा कि—

---

तुम्हारे सर्वोत्तम मार्ग ( मूर्ति पूजा ) को ( पृथ्वी से ) मिटा दें ( और अपने राज्य की नीव डालें और अपने धर्म का प्रचार करें )। अतः ( अगर तुम समझदार हो, तो होशियार हो जाओ। और विपक्षी को पराजित करने के लिये ) सब मिल कर अपना दाँव करो। और पंक्ति बाँध कर ( दुश्मन के सामने ) आओ। और ( उसको पराजित करने के लिये अपनी पूरी शक्ति ख़र्च करदो )। आज ( मनो ) कामना वही प्राप्त करेगा, जो विजय प्राप्त करेगा। ( अतः ) वह ( मूसा के सामने आये और उनसे ) कहने लगे, हे मूसा ! या तो तुम ( पहिले अपनी लाठी ज़मीन पर ) डाल दो और ( उसका चमत्कार दिखा दो ) या पहिले डालने वाले ( और अपने हुनर दिखाने वाले ) हम बन जायँ॥

उन्होंने जवाब दिया ( नहीं–मैं पहिले अपनी लाठी नहीं डालता ) बल्कि तुम ही डालो। ( मैं चाहता हूं कि पहिले तुम्हारी ही तरफ़ से हो। यह जवाब सुन कर उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ मैदान में डाल दीं और डोठ बन्दी करदी ) उनकी ( इस ) जादूगरी से तुरन्त मूसा को यह मालूम होने लगा कि उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ ( जीवित साँपों की तरह ज़मीन पर ) दौड़ रही हैं। ( मूसा ने जादू का यह चमत्कार देखा ) तो मूसा अपने दिल ही दिल में डरे। हमने ( मूसा से कहा ( बिल्कुल ) न डरो। विजयी ( इन पर ) तुम ही हो और ( उनसे कहा कि ) तुम्हारे सीधे हाथ में जो ( लाठी ) है, उसको ( ज़मीन पर ) डाल दो, ताकि उन्होंने जो ( ढोंग ) बनाया है, वह ( लाठी साँप बन कर ) उसको निगल ले। ( और हमने उनको विश्वास दिलाया कि ) जो कुछ भी उन्होंने ( स्वाँग ) बनाया है, वह तो केवल ( एक ) जादूगर का छल है। ( वास्तव में वह कुछ भी नहीं है )। और जादूगर ( सत्य के मुक़ाबिले में ) जहाँ जाय, सफलता नहीं पाता॥

( अतः जब मूसा ने हमारी आज्ञा के अनुसार लाठी फेंकी ) तो ( वह एक भयानक साँप बन गई और उन सब बनवटी साँपों को एक दम खा गई। यह देखते ही तमाम ) जादूगर सज्दे में गिर पड़े ( और निर्भय होकर ) बोल उठे कि हम मूसा व हारून के पालन कर्त्ता पर ( सच्चे दिल से ) ईमान ले आये ( और उसकी बड़ी क़ुद्रत को मान गये )। ( यह देख कर ) फ़िऔंन ( उनसे ) कहने लगा कि तुम मुझसे पूछे बिना ही मूसा पर ईमान ले आये ? ( मालूम हुआ तुम मिले हुये हो )। निश्चित से यह ( कोई ) तुम्हारा बड़ा ( उस्ताद ) है, जिसने तुमको जादू सिखाया है। ( ठहरो ! ) मैं ( अभी ) तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पैर काटूंगा ( जिससे तुम्हारा सारा बदन बेकार हो जायगा ) और ( फिर ) तुम ( सब ) को खजूर ( दरख़्तों के ) तनों में ( लटका कर ) सूली दूंगा। और ( अभी ) तुमको मालूम हो जायगा कि—

हम ( दो फ़रीक़ों ) में किसकी मार ज़ियादा सख़्त और देर पा है० ( जादूगर ) बोले कि खुले खुले मोजिज़े जो हमारे सामने आए, उन पर और जिस ( ख़ुदा ) ने हमको पैदा किया है, उस पर तो हम तुझको किसी तरह तरजीह देने वाले हैं नहीं, तो जो तू करने वाला है, कर गुज़र। तू दुनिया की इसी ज़िन्दिगी पर हुक्म चला सकता है ( कि हमको अज़ाब दे या बहुत करे, तो जान से मर्वादे ) और बस० हम अपने पर्वर्दिगार पर ईमान ला चुके हैं, ताकि वह हमारे गुनाहों को माफ़ करे और ( ख़ास कर ) जादू ( के गुनाह ) को, जिस पर तूने हमको मजबूर किया और अल्लाह ( की देन तेरी देन से ) बेहतर और ज़ियादा देर पा है० कुछ शक नहीं कि जो शख़्स ( जुर्म कुफ़्र का ) मुजरिम होकर अपने पर्वर्दिगार के रूबरू हाज़िर होगा, उसके लिये दोज़ख़ है। जिसमें न तो वह मरेहोगा और न ज़िन्दा ही रहेगा ( यानी पड़ा सिसकेगा )० और जो बाईमान ख़ुदा के हुज़ूर में हाज़िर होगा ( और ) उसने नेक अमल ( भी ) किये होंगे, तो यही लोग हैं, जिनके बड़े दरजे होंगे० ( यानी ) रहने के बाग़, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी ( और वह ) उनमें हमेशा ( हमेशा ) रहेंगे और जो शख़्स ( लौस गुनाह व कुफ़्र से ) पाक रहे, उसका यही सिला है० और हमने मूसा की तरफ़ वही भेजी कि हमारे बन्दों ( यानी बनी इस्राईल ) को रातों रात ( मिस्र से ) निकाल ले जाओ। फिर दरिया में ( लाठी मार कर ) उनके लिए सूखी सड़क बना दो ( कि उस पर से तुम लोग बइतमीनान पार हो जाओगे )--न तो तुमको ( किसी के ) तआक़ुब का ख़ौफ़ होगा और न ( डूबने से ) डरोगे० फिर फ़िरऔन ने अपने लश्कर लेकर बनी इस्राईल का पीछा किया। फिर दरिया का जैसा कुछ(रेला) इन पर आया—

أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَى ۝ قَالُوا لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَى مَا
جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ
مَا أَنتَ قَاضٍ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝
إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَايَانَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا
عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝ إِنَّهُ مَن
يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ
فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝ وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ
الصَّالِحَاتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى ۝
جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّى ۝ وَلَقَدْ
أَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاضْرِبْ
لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا
وَلَا تَخْشَى ۝ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُم

---

हम ( दोनों विपक्षियों ) में किसकी सज़ा अधिक कठिन और देर तक बाक़ी रहने वाली है ? उन्होंने जवाब दिया कि ( ख़ुदा की क़ुद्रत के उन स्पष्ट ) प्रमाणों पर, जो हमारे सामने आये हैं ( तेरी व्यर्थ बातों को ) और उस ( सृष्टि कर्त्ता व स्वामी ) पर जिसने हमको पैदा किया है, हम तुझको कदापि श्रेष्ठता नहीं देंगे। अतः जो ( दुर्व्यवहार ) तू ( हमारे साथ ) करने वाला है, कर डाल। ( हमें उसकी कुछ पर्वाह नहीं )। तू तो इसी संसार के ( क्षणिक ) जीवन ही में कर सक्ता है ( जो कुछ भी कर सक्ता है )। ( और ) हम अपने मालिक पर ईमान लाये हैं, जिससे कि वह हमारे अपराधों को और ( विशेषतया ) जिस ( मूर्खता ) पर, अर्थात जादूगरी पर तूने हमको विवश किया था, उसको क्षमा करदे और ( तू जो हमको पुरस्कार का लालच और अपने दंड की धमकी देता है, तो सचेत होकर सुन ! कि तेरा पुरस्कार भी नष्ट होने वाला है और तेरे कष्ट भी क्षणिक हैं और ) अल्लाह ( का पुरस्कार भी तुझसे अत्यन्त ) उत्तम और ( उसका अज़ाब भी ) बहुत ज़्यादा ( देर तक ) बाक़ी रहने वाला है॥

( और इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि जो ( क़यामत के दिन ) अपने पालन कर्ता के सामने अपराधी बन कर आवेगा, तो उसके लिये निश्चित रूप से नर्क ( तैयार ) है। वह उसमें न मरेगा और न जीवेगा ( बरन सर्वदा तड़पा करेगा )। और जो ईमानदार होकर उसके दर्बार में हाज़िर होगा ( और ) उसने ( ईमान लाने के बाद ) काम ( भी ) अच्छे किये ( होंगे ) तो यही वह ( भाग्यवान ) लोग हैं, जिनके ( बड़े २ ) ऊँचे पद हैं ( और उनके सुख व आनन्द के लिये ) सदा ( हरे भरे व सजल ) रहने वाले बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी ( और ) वह सदैव उन ( ही बाग़ों ) में रहेंगे। और जो मनुष्य ( भी कुफ़्र शिर्क में लिप्त होने से संसार में ) मुक्त रहा ( ख़ुदा के यहाँ ) उसका यही ( श्रेष्ठ ) पुरस्कार है॥

और ( जब फ़िरऔन उन स्पष्ट चमत्कारों को देख कर भी अपने कुफ़्र शिर्क और अभिमान तथा विद्रोह से बाज़ नहीं आया, तो ) हमने मूसा से कहला भेजा कि ( अब ) तुम हमारे बन्दों ( अर्थात इस्राईल के वंशजों ) को ( अपने ) साथ लेकर ( मिस्र से ) रातों रात ( कहीं ) निकल जाओ। ( तुमको मार्ग में समुद्र मिलेगा ) तो तुम दरिया में उन ( लोगों ) के वास्ते ( एक ) सूखा रास्ता बना देना। ( इस प्रकार कि तुम दरिया में अपनी लाठी डाल देना। लाठी के डालते ही बीच में से दरिया फट जावेगा और तुम्हारे जाने के लिये एक सूखी सड़क तैयार हो जावेगी। फिर तुम इतने सुरक्षित होकर समुद्र को पार कर लोगे कि ) न तो तुमको ( किसी शत्रु के ) पीछा किए जाने का भय होगा और न ( डूबने का ) डर होगा। ( जब मूसा बनी इस्राईल को लेकर चले, तो यह ख़बर फ़िरऔन को पहुंची ) अतः फ़िरऔन अपनी सेना को ( साथ ) लेकर उनका पीछा करने के लिये चला--( जब मूसा ख़ुदा की आज्ञानुसार पानी में डंडा मार कर अपने साथियों को लेकर पार उतर गये, तो फ़िरऔन सेना सहित दरिया को सूखा जानकर मूसा के पीछे दरिया में घुस गया ) तो जैसे उन पर छाना था, वह अर्थात दरिया ( का पानी ) उन पर छा गया॥

مِنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا
هَدٰى ۝ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ
وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ
الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ
وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ
يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ۝ وَاِنِّيْ
لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ
اهْتَدٰى ۝ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝
قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ
لِتَرْضٰى ۝ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ
وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝ فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ
غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا
حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ

يحل

सो आया० और फ़िऔन ने अपनी क़ौम को गुमराही में डाला और सीधा रस्ता न दिखाया ( जिसका अन्जाम यह हुआ )० ऐ बनी इस्राईल! हमने तुमको तुम्हारे दुशमन ( फ़िऔन ) से नजात दी और तुमसे (कोह) तूर की दाहिनी तरफ़ का वादा किया और हमने तुम पर मन्न और सलवा उतारा० ( और फ़र्माया कि यह ) उम्दा रोज़ी जो हमने तुमको दी है, खाओ और ( हमारे हुक्म से ) इसके बारे में ( सरे मू ) तजावुज़ न करना ( कि लगो कल के लिये ज़ख़ीरह करने । ऐसा करोगे ) तो तुम पर हमारा ग़ज़ब आ नाज़िल होगा और जिस पर हमारा ग़ज़ब आ नाज़िल हुआ, तो ( समझो कि वह जहन्नम के ) गढ़े में जा गिरा० और जो शख़्स ( गुनाहों से ) तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल ( भी ) करे ( और ) फिर राह रास्त पर ( क़ायम भी ) रहे, तो हम उसके ( गुनाहों के भी ) बड़े बख़्शने वाले हैं० और ( जब मूसा तौरात लेने आगे बढ़ आये, तो हमने पूछा कि ) ऐ मूसा! तुम जल्दी करके अपनी क़ौम से कैसे आगे आ गये० अर्ज़ किया—वह भी यह मेरे पीछे ( ही पीछे चले आ रहे हैं ) और ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मैं जल्दी करके तेरी तरफ़ इस लिये ( बढ़ ) आया हूं कि तू ( मुझसे ) ख़ुश हो० फ़र्माया कि तुम्हारे पीछे हमने तुम्हारी क़ौम को ( एक और ) बला में मुब्तला कर दिया है और ( वह यह है कि ) उनको सामरी ने गुमराह किया० फिर मूसा ग़ुस्से ( और ) अफ़सोस की हालत में अपनी क़ौम की तरफ़ वापिस आए ( और आकर ) लगे कहने कि भाइयो! क्या तुमसे तुम्हारे पर्वर्दिगार ने उम्दा ( किताब यानी तौरात के देने का ) वादा नहीं किया था? तो क्या तुमको ( उस वादे की ) मुद्दत ( बड़ी ) लम्बी मालूम हुई? या तुमने ( यह ) चाहा कि—

और ( वह सबके सब वहीं डूब गये–हा शोक! ) फ़िऔन ने अपनी जाति को पथ भ्रष्ट किया और सीधा रास्ता न बताया ( जिसकी वजह से उन्हें यह बुरा दिन देखना पड़ा )। ( जब फ़िऔन और उसके साथी तबाह व बरबाद हो गये, तो हमने बनी इस्राईल से कहा ) हे इस्राईल के वंश वालो! ( देखो! ) हमने ( तुम्हारे साथ कैसे २ एहसान किये हैं कि ) तुमको तुम्हारे शत्रु ( फ़िऔन के अत्याचार ) से मुक्त किया और ( तुम्हें लौकिक व पारलौकिक लाभ पहुंचाने के लिये ) तूर ( पहाड़ ) की दाईं तरफ़ ( बुलाया और वहां तौरेत पुस्तक प्रदान करने का ) तुमसे वादा किया और ( तीह जैसे चटियल मैदान में जहां तुमको खाना पीना उलब्ध होना दुर्लभ था ) हम ( ही ) ने ( आकाश से ) तुम पर मन व सलवा उतारा ॥

( और तुमको हिदायत की कि यह ) पवित्र भोजन जो हमने तुमको प्रदान किया है-(धैर्य के साथ ) खाओ और इस ( के खाने ) में सीमा से न गुज़रो ( अर्थात उसको आगे के लिये जमा न करो । यदि तुमने ऐसा किया ) तो तुम पर हमारा क्रोध अवतीर्ण हो जावेगा और ( याद रक्खो कि ) जिस पर हमारा क्रोध अवतीर्ण हुआ, तो वह ( जीते जी अधोगति में और मरने के उपरान्त नर्क के गढ़े में ) गिर कर रहा । और जो मनुष्य ( अपने कुफ़ व शिर्क के पापों से ) बाज़ आ जाय और ( ख़ुदा व रसूल पर ) ईमान ( भी ) ले आये और ( ईमान लाने के बाद ) कर्म भी अच्छे करे ( और ) फिर ( मरते दम तक ) सीधे मार्ग पर चले, तो हम उसके लिये बहुत पुरस्कार देने वाले हैं और ( जब मूसा अपनी जाति को छोड़कर तौरेत लेने तूर पर्वत पर चले आए थे, तो हमने उनसे पूछा था कि ) हे मूसा! तुम्हें अपनी जाति से अलग होकर ( इतनी ) जल्दी ( हमारे पास ) आने की क्या पड़ी थी ॥

( तो मूसा ने ) निवेदन किया कि ( यद्यपि मैं उनसे अलग होकर आ गया, परन्तु ) वह सब मेरे पद चिन्हों पर हैं । और मैंने तेरी तरफ़ ( हाज़िर होने में ) हे मेरे पालन कर्त्ता! इस लिये जल्दी की, जिससे कि ( यह ) तेरी प्रसन्नता का कारण हो । आज्ञा हुई कि हमने तुम्हारे ( यहां आने के ) बाद तुम्हारी जाति को ( एक नये ) संकट में फँसा दिया और उनको सामरी ने बहका दिया । ( अर्थात सामरी ने सत्य के मार्ग से उन्हें भटका कर एक अपने बनाये हुये बछड़े का पुजारी बना दिया )। अतः मूसा क्रोध में भरे हुए ( और अत्यन्त ) शोक करते हुए वापिस आये ( और ) कहने लगे, हे लोगो! ( एक बनावटी बछड़े को पूजने लगे? मूर्खो! ) क्या तुमसे तुम्हारे पालन कर्त्ता ने ( तौरेत जैसी सुधार करने वाली पुस्तक देने का एक ) उत्तम वादा नहीं किया था? क्या तुमको ( वह ) वादा ( बहुत ) लम्बा ज्ञात हुआ? वा तुमने ( जान बूझ कर ) इस ( बात ) की इच्छा की कि-

يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِي
قَالُوا مَآ أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا
حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّنْ زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا
فَكَذٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ۝ فَأَخْرَجَ لَهُمْ
عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ فَقَالُوا هٰذَآ إِلٰهُكُمْ
وَإِلٰهُ مُوسٰى فَنَسِيَ ۝ أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ
إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۝
وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُونُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ إِنَّمَا
فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُونِي
وَأَطِيعُوٓا أَمْرِي ۝ قَالُوا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِينَ
حَتّٰى يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسٰى ۝ قَالَ يٰهٰرُونُ مَا مَنَعَكَ
إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوٓا ۝ أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ
أَمْرِي ۝ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا

तुम पर तुम्हारे पर्वर्दिगार का ग़ज़ब आ नाज़िल हो ? और इस वजह से तुमने उस अहद के ख़िलाफ़ किया, जो ( ख़ुदाए वाहिद की परस्तिश का ) मुझसे कर चुके थे० ( वह ) लगे कहने कि हमने अपने इख़्तियार से तुम्हारे साथ अहद शिकनी नहीं की, बल्कि ( हम को यह मामिला पेश आया कि क़िब्तियों की ) क़ौम के ज़ेवरों का बोझ ( जो मिस्र से चलते वक़्त ) हम पर लाद दिया गया था, अब ( सामरी के कहने से ) हमने उसको ( आग में ला ) डाला और इसी तरह सामरी ने भी ( अपने पास का ज़ेवर ला ) डाला० फिर ( सामरी ही ने ) लोगों के लिये ( उसका एक ) बछड़ा ( बनाकर ) निकाल खड़ा किया-( यानी बछड़े का ) बुत, जिसकी आवाज़ ( भी ) बछड़े की ( सी ) थी। इस पर ( बाज़ लोग ) लगे कहने कि यही तो तुम्हारा माबूद है और मूसा का माबूद ( भी यही था ) और वह भूल ( कर कोह तूर पर चला ) गया है० क्या इन लोगों को इतनी बात भी नहीं सूझ पड़ती थी कि ( बछड़ा ) इनकी बात का न तो उलट कर जवाब दे सकता है और न इनके किसी नुक़सान का मालिक है और न किसी नफ़े का० और हारून ने ( बछड़े की परस्तिश से ) पहिले इनसे कहा भी कि भाइयो ! यह तो इस ( बछड़े ) के ज़रिये से तुम्हारी आज़माइश की जा रही है, वर्ना तुम्हारा पर्वर्दिगार ( ख़ुदाए ) रह्मान है। तो मेरे कहे पर चलो और मेरी बात मानो० ( वह ) लगे कहने– जब तक मूसा लौट कर हमारे पास ( न ) आएँ, हम ( तो ) बराबर इसी ( बछड़े की परस्तिश ) पर जमे बैठे रहेंगे० ( मूसा ने हारून की तरफ़ ख़िताब करके ) कहा कि हारून ! जब तुमने इनको देखा था ( कि यह लोग ) गुमराह हो गये० तो तुमको क्या वजह माने हुई कि तुमने मेरी ( हिदायत की ) पैरवी न की ? क्या तुमने मेरी हुक्म उदूली की० ( वह ) बोले कि ऐ मेरे मां जाये ( भाई ! ) मेरी डाढ़ी और सर ( के बाल ) तो पकड़ो नहीं—

---

तुम्हारे पालन कर्त्ता का क्रोध तुम पर टूट पड़े। इस लिये तुमने मेरे वादे के विरुद्ध किया। ( अर्थात तुमने मुझसे जो सत्य ग्रहण करने का वादा किया था, अपने कुकर्मों के कारण तुमने उसके विरुद्ध काम किया )। वह बोले ( हे मूसा ! ) हमने अपने अधिकार से तुम्हारी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ी, बल्कि ( हम सामरी के बहकाये में आ गये। क़िस्सा यह है कि मिस्र से आते समय क़िब्तियों की ) जाति के आभूषण के गट्ठर, जो हम पर लाद दिये गये थे ( अर्थात क़िब्तियों ने जो ज़ेवर अमानत हमारे पास रखवाये थे ) हमने ( सामरी के कहने से तुम्हारे पीछे ) उनको ( पिघलाने के लिये आग में ) डाल दिया ( और ) उसी प्रकार सामरी ने ( भी अपना ज़ेवर अपने यहाँ से लाकर ) डाल दिया। फिर उसने ( हम सब ) मनुष्यों के लिये ( उसका एक ) बछड़ा अर्थात ( बछड़े जैसा ) एक ढांचा कि उसमें ( से ) बछड़े की आवाज़ ( की तरह एक आवाज़ ) भी ( निकलती ) थी-( ढाल कर ) निकाला। ( जब वह तैयार हो गया ) तो उन्होंने ( अर्थात सामरी और उसके साथियों ने ) कहा कि यह तुम्हारा पूज्य भी है और मूसा का पूज्य भी ( यही ) है। ( मूसा जो तूर पर गये हैं ) तो भूल ( कर चले ) गये ( हैं—वहाँ उन्हें जाने की आवश्यकता न थी )॥

भला उन ( मूर्खों की बुद्धि ) को ( क्या हो गया। क्या उन्हें ) यह नहीं दिखाई देता कि ( यदि यह इससे कुछ बात करते हैं, तो ) वह पलट कर ( उनकी ) बात का उत्तर ( तक भी ) नहीं देता और न उनको लाभ हानि पहुंचाने की शक्ति रखता है। और ( यद्यपि ) हारून ने पहिले ही इनसे ( बहुत ) कहा था कि भाइयो ! इस ( गव पूजा ) से तुम्हारी ( ख़ुदा भक्ति की ) परीक्षा की जा रही है। ( देखो ! तुम इसमें न फँसो ) और ( इस बात का दिल से विश्वास करो कि ) तुम्हारा पालन कर्त्ता ( और तुम्हारा पूज्य सच्चा ख़ुदा ) रह्मान है। अतः तुम मेरे कहे पर चलो और मेरा कहना मानो। ( सामरी के बहकाने सिखाने में न आओ )॥

( परन्तु ) उन्होंने ( उनकी एक न मानी और उनसे ) कहा कि ( हे हारून ! ) जब तक कि मूसा ( तूर पहाड़ से ) हमारे पास वापिस न आ जावें ( और हम उनसे सामरी की बात का झूठ सच न मालूम करलें, उस समय तक ) हम तो बराबर इसी ( गव पूजा ही करने ) पर स्थिर रहेंगे। ( अतः उन्होंने गव पूजा को अपना धार्मिक कर्त्तव्य ठहराया। यहाँ तक कि मूसा तूर पहाड़ से तौरेत लेकर आ गये और ) उन्होंने ( क्रोध में हारून के सिर और दाढ़ी के बाल पकड़ कर ) कहा कि हे हारून ! जब तूने ( यह ) देख लिया था कि यह ( लोग ) पथ भ्रष्ट हो गये, तो मेरी ताबेदारी करने ( और मेरी तरह इन लोगों को समझाने ) से तुझे किसने मना किया था ? ( हे हारून ! ) क्या तूने ( भी ) मेरी अवज्ञा की॥

( हारून ने मूसा से ) कहा, हे मेरे माँ जाये ( भाई ! ) तुम मेरी दाढ़ी और सिर ( के बाल ) न पकड़ो—

بِرَاْسِيْ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ۝ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ
يٰسَامِرِيُّ ۝ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ
فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا
وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ۝ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ
فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا
لَّنْ تُخْلَفَهٗ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ
عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي
الْيَمِّ نَسْفًا ۝ اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝ كَذٰلِكَ نَقُصُّ
عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ
مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۝ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهِ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ

मैं इस ( बात ) से डरा कि ( तुम वापिस आकर ) कहीं यह ( न ) कहने लगो कि तुमने बनी इस्राईल में फूट डाल दी और मेरी बात का पास न किया० ( अब मूसा ने सामरी से ) पूछा कि सामरी ! तेरा क्या हाल है० ( उसने ) कहा मुझे वह चीज़ दिखाई दी, जो औरों को नहीं दिखाई दी ( जिब्रील को देखा कि वह घोड़ी पर सवार चले जा रहे हैं ) तो मैंने ( जिब्रील ) फ़रिश्ते ( की घोड़ी ) के नक़्श क़दम ( की मिट्टी ) से एक मुट्ठी भर ली। फिर उसको ( ढले हुये बछड़े में ) डाल दिया ( और वह भायँ भायँ करने लगा ) और ( उस वक़्त ) मेरे दिल ने मुझको ऐसी सलाह दी० ( मूसा ने ) कहा—( चल दूर हो। इस ) ज़िन्दगी में तो तेरी यह सज़ा है कि ( ज़िन्दगी भर ) कहता पड़ा फिर कि ( देखो ! मुझे कोई ) छू न जाना ( वर्ना हम दोनों को तप आ जायगी ) और ( इसके अलावा ) तेरे लिये ( अज़ाब क़यामत का ) एक वादा और भी है, जो किसी तरह तुझ पर से टलेगा नहीं और अपने ( इस ) माबूद ( यानी बछड़े ) की तरफ़ देख, जिस ( की परस्तिश ) पर तू जमा बैठा था । इसको हम जला ( कर राख कर ) देंगे। फिर उस (राख) को दरिया में बखेर (कर बहा) देंगे० (लोगो ! ) तुम्हारा (अस्ल) माबूद बस अल्लाह है, जिसके सिवा कोई ( और ) माबूद नहीं ( और ) उसका इल्म सब चीज़ों पर हावी है० ( ऐ पैग़म्बर ! ) इसी तरह हम वाक़िआत गुज़श्ता के हालात तुमको सुनाते हैं और हमने तुमको अपने पास से क़ुर्आन अता फ़र्माया० जिन लोगों ने इससे मुंह फेरा, क़यामत के दिन वह ( आमाल बद का ) एक ( भारी ) बोझ ( अपने सर पर ) लादे होंगे० ( और ) इसी हाल में हमेशा रहेंगे और क्या ही बुरा बोझ है, जो यह लोग—

الْقِيٰمَةِ

( और बिना कारण मुझ पर इतना क्रोध न करो। जहाँ तक नर्मी और धीरज के साथ मुझसे हो सका, मैंने इनको बहुत समझाया । लेकिन इन्होंने मेरी एक न सुनी । और ) इस बात से मैं निस्सन्देह डरा कि ( यदि मैं इनको गव पूजा करने से मना करूँ ) तो कहीं तुम ( आकर ) मुझसे यह ( न ) कहो, कि तूने बनी इस्राईल ( की जाति ) में फूट डाल दी । और तूने मेरी बात का ख़याल न किया । ( यह सुन कर मूसा ने सामरी से ) कहा–हे सामरी ! ( यह तूने क्या नालायक़ी की है ? यह ) तेरी क्या दशा है ? ( और यह इस बछड़े में से आवाज़ कैसी निकलती है ? ) ॥

उसने कहा ( हे मूसा ! बात यह है कि जिस समय तुम मिस्र से निकल कर बनी इस्राईल को साथ लिये हुये दरिया को पार कर रहे थे, तो ) मैंने ( उस समय एक ) ऐसी चीज़ देखी थी, जिसे और लोगों ने नहीं देखा था । ( अर्थात मैंने जिब्रील को घोड़े पर सवार देखा था )। अतः मैंने उस ( ख़ुदा के ) फ़रिश्ते के पद–चिन्ह से एक मुट्ठी ( ख़ाक की ) उठाली थी ( और स्वयं मेरी समझ में यह आया था कि यह ख़ाक जीवन प्रदान करने वाली है ) । अतः ( जब ) उस ( ख़ाक ) को ( उस बनावटी बछड़े के मुंह में ) डाला ( तो वह बोलने लगा ) और ( उस समय ) मेरे दिल ने मेरे ( ख़ुश करने के ) लिये यही उपाय किया ( कि मैं इस बछड़े को पूजूं और सबसे पूजा कराऊँ ) ॥

( मूसा ने ) कहा–अच्छा ( अब ) तू ( मेरे सामने से ) चला जा । अतः तेरे लिये ( इस दुनिया की ) ज़िन्दिगी में यह ( सज़ा नियत करदी गई ) है कि तू ( हर एक से ) यह कहे कि ( मुझे ) न छूना । ( अर्थात जब तक तू जीवित रहे, न तू किसी को हाथ लगा और न कोई तुझको हाथ लगावे ) । और ( मरने के बाद क़यामत में ) तुझसे ( ख़ुदा के अज़ाब का ) वादा ( किया जाना ) है, जो तुझसे ( किसी के टाले ) न टल सकेगा । और अपने इस पूज्य की ओर देख; जिस ( की पूजा ) पर तू जमा ( हुआ बैठा ) था। हम इसको जला डालेंगे और इस ( की राख ) को दरिया में बखेर कर बहा देंगे। ( इसके बाद मूसा बनी इस्राईल से सम्बोधन करने लगे और उनको समझाया कि ) बस तुम्हारा पूज्य तो वह अल्लाह है, जिसके सिवाय कोई पूज्य ( बनने के योग्य है ही ) नहीं । ( और जिसके ) ज्ञान ( की सीमा ) हर चीज़ को घेरे हुये है । ( अर्थात उसे हर छोटी बड़ी चीज़ की पूरी २ ख़बर है ) ॥

( हे मुहम्मद ! जिस तरह हमने तुमको मूसा का क़िस्सा सुनाया ) इसी तरह हम तुमको और बीती हुई बातों के क़िस्से भी सुनाते ( रहते ) हैं ( ताकि लोग उन्हें सुनकर तुमको हमारा रसूल जानें ) । और हमने अपने पास से तुमको क़ुर्आन भी प्रदान किया है । जो ( लोग ) इस ( पर ध्यान करने ) से मुंह फेरेंगे, क़यामत के दिन वह ( अपने पापों का ) एक ( भारी ) बोझ ( अपनी कमर पर ) उठाये ( हुये ) होंगे ( और ) इसी ( बोझ के कष्ट ) में सदैव रहेंगे । और ( कितना ) बुरा बोझ क़यामत के दिन उनके लिये है—

الْقِيَامَةِ حِمْلًا ۝ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ
الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۝ يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ
إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۝ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ
إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا
يَوْمًا ۝ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا
رَبِّي نَسْفًا ۝ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَّا تَرَىٰ
فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ
الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ
لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ
الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ
قَوْلًا ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا
يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۝ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ
وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝ وَمَن يَعْمَلْ مِنَ

क़यामत के दिन उठाये होंगे० जिस दिन सूर फूँका जायगा और हम उस दिन गुनहगारों को ( अपने हुज़ूर में ) जमा करेंगे ( और ) उनकी आँखें ( मारे ख़ौफ़ के ) नीली ( नीली बे नूर ) होंगी० आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि दुनिया में तुम लोग ( बहुत ) ठहरे होंगे, ( तो ) बस दस दिन० जैसी जैसी बातें ( यह लोग उस दिन ) करेंगे, हम उनसे बख़ूबी वाक़िफ़ हैं कि जो इनमें ( सबसे ) ज़ियादा रूबराह होगा, वह कहेगा नहीं ( जी ! ) तुम ( दुनिया में बहुत ) ठहरे होगे ( तो ) बस एक दिन० और ( ऐ पैग़म्बर ! लोग ) तुमसे पहाड़ों की निस्बत दर्याफ़्त करते हैं ( कि क़यामत के दिन उनका क्या हाल होना है ) तो ( तुम इनसे ) कहो कि मेरा पर्वर्दिगार इनको ( धूल करके चारों तरफ़ को ) उड़ा देगा० और ज़मीन को मैदान हमवार कर छोड़ेगा० कि जिस में ( ऐ मुख़ातब ! ) तू न तो कहीं मोड़ देखेगा और न ऊँच ( नीच )० उस दिन बे इसके कि बुलाने वाले ( यानी सूर फूंकने वाले की आवाज़ ) से लोग इधर उधर को मुड़ें ( सीधे ) उसके पीछे हो लेंगे और ( मारे ख़ौफ़ के ख़ुदाए ) रह्मान के आगे ( सबकी ) आवाज़ें बैठ जाएँगी। पस ( ऐ मुख़ातब ! ) खुसर फुसर के सिवा तू कुछ और न सुनेगा० उस दिन ( किसी की ) सिफ़ारिश काम न आयेगी, मगर जिसको ( ख़ुदाए ) रह्मान इजाज़त दे और उसका बोलना पसन्द फ़र्मायें० जो कुछ लोगों के रूबरू हो रहा है और जो कुछ इनसे पहिले हो चुका है, वह सब कुछ जानता है और लोगों का इल्म उस पर हावी नहीं हो सकता० और ( क़यामत के दिन ख़ुदाए ) ज़िन्दा ( व ) पाइन्दा के रूबरू ( सबके ) मुँह झुके हुए होंगे और ( उस दिन ) जो शख़्स ( किसी तरह के ) ज़ुल्म का बोझ ( गर्दन पर ) लादेगा, उसीकी तबाही है० और जो ( दुनिया में ) नेक अमल करेगा—

---

जिस दिन सूर फूंका जायगा। और हम जिस दिन पापियों को नीली ( नीली ) आँखों ( और काले २ चेहरों ) वाला बनाकर ( अपने दर्बार में ) एकत्रित करेंगे, तो वह आपस में चुपके २ कहते होंगे कि ( क़यामत तो बड़ी जल्दी आ गई )। हम तो ( संसार में अधिक से अधिक आठ ) दस दिन रहे होंगे। जो ( जो ) बातें ( उस दिन ) यह करेंगे, हमको उन ( सब ) की पूरी ख़बर है। उनमें जो सबसे अधिक समझदार होगा, वह कहेगा कि हम तो ( संसार में ) केवल एक ही दिन रहे ( कि क़यामत आ गई ) और ( हे रसूल ! क़यामत की ख़बर सुन कर ) वह तुमसे पहाड़ों के बारे में सवाल करते हैं। ( अर्थात पूछते हैं कि क़यामत के दिन उनकी क्या दशा होगी ? )। तो तुम ( उनसे ) कहदो कि मेरा पालन कर्त्ता उन्हें ( रेज़ा २ करके चारों तरफ़ उनके टुकड़ों को ) बखेर देगा ( और उनका कहीं नाम निशान भी बाक़ी न छोड़ेगा। और ) फिर ज़मीन को ऐसा ( चटियल और ) समतल मैदान बनाकर छोड़ेगा कि ( हे मनुष्य ! ) तू उसमें न ( कहीं ) निचान ( अर्थात गढ़ा आदि ) देखेगा और न ( कहीं तुझको पहाड़ और टीले आदि की ) ऊँचाई ( नज़र अयेगी ) ॥

( और ) उस दिन ( सब ) लोग बुलाने वाले की सीधे स्वभाव ताबेदारी करेंगे। ( अर्थात इस्राफ़ील का सूर सुनते ही लोग क़ब्रों से उठ २ कर बेचूं चरा क़यामत के मैदान में चले आवेंगे ) और कृपालु ( ख़ुदा ) के आगे ( बड़े २ अभिमानी व उद्दण्ड लोगों की ) आवाज़ें नीची हो जावेंगी। अतः ( हे मनुष्य ! उस दिन ) तू सिवाय ( चलने की ) धीमी आवाज़ के ( और किसी प्रकार की आवाज़ ) न सुन सकेगा। उस दिन किसी ( मनुष्य ) की ( सिफ़ारिश कुछ भी ) फल दायक न होगी। मगर ( हां उस मनुष्य की सिफ़ारिश ) जिसको कृपालु ( ख़ुदा ) ने ( सिफ़ारिश करने की ) आज्ञा प्रदान करदी हो और वह इसका ( किसी के हक़ में कुछ ) कहना पसन्द करे। वह ( अदृष्टि का ज्ञान रखने वाला ख़ुदा ) जो कुछ लोगों के आगे है, और जो कुछ पीछे है, सबसे परिचित है। ( अर्थात उसको लोगों के अगले पिछले सब हाल मालूम हैं )। और लोग उस ( की वास्तविकता ) को ( तनिक भी ) नहीं जान सकते ॥

और ( वह दिन ऐसा होगा कि उस दिन ) उस अमर ( अजर और ) अनादि ( ख़ुदा ) के आगे ( समस्त अभिमानी ) मुंह झुके ( हुये ) होंगे। और वह मनुष्य, जो ( अपनी कमर पर ) ज़ुल्म ( व अत्याचार, कुफ़्र व शिर्क जैसे पापों का बोझ ) लाद कर लाया होगा, बिल्कुल ( शोकातुर व ) असफल रहेगा और जिसने ( ईमान लाने के बाद ) नेकियाँ भी की होंगी—

और वह ईमान भी रखता होगा, तो उसको न ( किसी तरह की ) हक़ तल्फ़ी व इन्साफ़ी का ख़ौफ़ होगा और न ( किसी तरह की ) हक़ तल्फ़ी का० और ( जैसी कि क़ुर्आन की हालत मौजूदा है ) ऐसा ही हमने इसको अरबी ज़बान का क़ुर्आन उतारा है और इसमें तरह तरह पर डरावे सुना दिये हैं, ताकि लोग परहेज़गारी इख़्तियार करें या इसके ज़रिए से इन ( के दिलों ) में ग़ौर ( और फ़िक्र ) पैदा हो० पस अल्लाह आलीशान ( और दोनों जहान का ) हक़ीक़ी बादशाह है और ( ऐ पैग़म्बर ! तुम्हारी तरफ़ जो क़ुर्आन वही किया जाता है ) वही के तमाम होने से पहिले क़ुर्आन ( के पढ़ने ) में जल्दी न किया करो और दुआ करते रहो कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मुझे और ज़ियादा इल्म नसीब कर० और हमने ( अगिले ज़माने में ) आदम से ( दरख़्त गन्दुम के न खाने का ) एक अहद ( पैमान ) लिया था । तो आदम ( उसको ) भूल गये और हमने उन ( के इरादे ) में इस्तिक़लाल न पाया० और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे सज्दा करो, तो सब ही ने सज्दा किया, मगर इब्लीस कि उसने इन्कार किया० तो हमने ( आदम से ) कहा कि आदम ! यह ( इब्लीस ) तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुशमन है। तो ऐसा न हो कि तुम दोनों को बहिश्त से निकलवा बाहर करे और तुम्हारी शामत आ जाय० ( और ) यहां ( बहिश्त में तो तुमको ऐसे मज़े हैं कि ) न तुम भूके रहते हो और न नंगे रहते हो० और नीज़ यह कि यहां न तुम प्यासे होते हो और न धूप में रहते हो० फिर शैतान ने आदम को फुस्लाया ( और उनसे ) कहा कि आदम! कहो तो तुमको हमेशगी का दरख़्त बता दूं ( कि जिसको खाकर सदा जीते रहो ) और ऐसी सल्तनत जो ( कभी ) पुरानी न हो ( यानी उसमें किसी तरह का ज़ोफ़ न आये )०—

الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَّلَا
هَضْمًا ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا
فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ
لَهُمْ ذِكْرًا ۝ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ
بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ
رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ۝ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ
قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ ४
اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى فَقُلْنَا
يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۝ اِنَّ لَكَ اَلَّا
تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ۝ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا
فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ۝ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ
يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا

يبلى

तो उसको न ( अपने पापों की संख्या ) बढ़ने का भय होगा और न ( नेकियों में ) कमी ( हो जाने ) का ( अन्देशा । अर्थात अन्याय व ना इन्साफ़ी का उसे बिलकुल भय न होगा )। और ( हे रसूल ! ) इसी प्रकार हमने इस ( किताब ) को एक अरबी क़ुर्आन बनाकर ( तुम पर ) उतारा है और अपने ( वादे ) वईद को तरह २ से इसमें वर्णन किया है, जिससे कि लोग ( वा तो उनको सुनते ही अपने कुफ़्र व शिर्क से ) बचें, वा वह ( क़ुर्आन ) उनके लिये ( एक ऐसी ) नसीहत ( का सामान ) पैदा करदे ( जो अन्त में उनको ईमान लाने की शक्ति प्रदान करे )। अतः ( अपने इस पवित्र कलाम को उतारने वाला ) अल्लाह सच्चा बादशाह है। ( उसकी आज्ञा मानना सबका कर्त्तव्य है )। और ( हे रसूल ! जिब्रील जो तुम्हारे पास हमारा कलाम अर्थात वही लेकर आते हैं, तो तुम पहिले पूरा उसको सुन लिया करो )। वही के पूरा होने से पहिले क़ुर्आन ( के मामले ) में जल्दी न किया करो। ( अर्थात उसको पूरा सुनने से पहिले पढ़ना न शुरू कर दिया करो ) और ( हमसे यह ) प्रार्थना किया करो कि हे मेरे पालन कर्त्ता ! मेरी बुद्धि को बढ़ा ॥

और हमने ( इस समय से बहुत ) पूर्व आदम से वादा ले लिया था ( और उनको समझा दिया था कि तुम गेहूं न खाना ) सो ( उन्हें अपना वादा याद नहीं रहा )। वह ( उसे ) भूल गये और हमने उनमें अनुष्ठान ( व दृढ़ता ) न पाया—( अर्थात आदम ने भूल कर गेहूं खा लिया, अवज्ञा की दृष्टि से नहीं )। और ( यह चर्चा उस समय की है ) जबकि हमने ( सब ) फ़रिश्तों से कहा था कि आदम को सजदा करो, तो सबने तो सजदा कर लिया, किन्तु इबलीस ने ( नहीं किया। उसने साफ़ ) इन्कार कर दिया

इस पर हमने आदम से कहा कि यह ( इबलीस ) तुम्हारा और तुम्हारी स्त्री का शत्रु है। ( इससे तुम बचते रहना—कहीं ऐसा न हो कि ) यह तुम दोनों ( मियां बीवी ) को स्वर्ग से बाहर निकलवा दे ( कि ) फिर तुम संकट में पड़ जाओ। इसमें तुम्हारे लिये यह ( आराम ) है कि न तुम भूखे रहते हो, और न नंगे रहते हो और न इसमें तुम प्यासे रहते हो और न धूप में तपते ( और जाड़े पाले में ठिठुरते ) हो। अतः शैतान ने उन्हें बहकाया ( और उनसे कहा कि तुम कुछ दिन में मर जाओगे। यदि तुम सदा जीवित रहना चाहो तो ) क्या मैं तुमको सर्वदा का वृक्ष और ऐसा शासन, जो कभी दुर्बल ( अर्थात कमज़ोर ) न हो, बताऊँ ॥

बَلٰى ۝ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا
وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصٰٓى
اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ۝ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ
وَهَدٰى ۝ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ
عَدُوٌّ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۝ فَمَنِ اتَّبَعَ
هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ۝ وَمَنْ اَعْرَضَ
عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا
وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ
اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا
فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ۝ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ
مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ وَلَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ۝ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا
قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ اِنَّ

चुनाँचे दोनों (मियां बीबी) ने दरख़्त (ममनू में) से (उसका फल) खा लिया। तो अपनी (अपनी) परदे की चीज़ें उन पर ज़ाहिर हो गईं और लगे बाग़ (बहिश्त) के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने और आदम ने अपने पर्वर्दिगार की ना फ़र्मानी की और (राह सवाब से) भटक गये॰ फिर (आख़िरकार) उनके पर्वर्दिगार ने उनको नवाज़ा और उनको तौबा क़बूल की और (उनको अपनी इताअत का) रस्ता दिखा दिया॰ (जब आदम ने नाफ़र्मानी की, तो ख़ुदा ने शैतान और आदम को) हुक्म दिया कि तुम दोनों बहिश्त से नीचे उतर जाओ। एक का दुशमन एक—(और ज़मीन में फलो फूलो)। फिर अगर तुम्हारे (यानी तुम्हारी नस्लों के) पास हमारी तरफ़ से हिदायत आये, तो जो हमारी हिदायत पर चलेगा, न (राह रास्त से) भटकेगा और न (आख़िरकार अबदी) हलाकत में पड़ेगा॰ और जिसने हमारी याद से रूगर्दानी की, तो उसकी ज़िन्दिगी ज़ीक़ में गुज़रेगी और क़यामत के दिन (भी) हम उसको अन्धा (करके) उठाएँगे॰ (वह) कहेगा-ऐ मेरे पर्वर्दिगार! तूने मुझको अन्धा (करके) क्यों उठाया? और मैं तो (दुनिया में अच्छा ख़ासा) देखता (भालता) था॰ (ख़ुदा) फ़र्मायेगा ऐसा ही (होना चाहिये था। दुनिया में) हमारी आयतें तेरे पास आईं, मगर तूने उनकी कुछ ख़बर न ली और इसी तरह आज तेरी (भी) ख़बर न ली जायगी॰ और जो शख़्स (हद्द एतिदाल से) बढ़ चला और अपने पर्वर्दिगार की आयतों पर ईमान न लाया, हम उस को ऐसा ही बदला दिया करते हैं और आख़िरत का अज़ाब (दुनिया के अज़ाब से) बहुत ही सख़्त और देर पा है॰ क्या लोगों को इससे हिदायत न हुई कि इनसे पहिले हमने कितनी जमाअतों को हलाक कर मारा (और अब) यह लोग उनही के रहने सहने की जगहों में चलते (फिरते) हैं--

---

(उन्होंने कहा, हाँ बताओ!) अतः (वह उनको गेहूं के वृक्ष के पास ले गया और कहा कि इसका फल खालो)। दोनों (मियाँ बीवी) ने उसमें से (कुछ) खा लिया। (जब उन्होंने इसके फल को चक्खा) तो उनकी गुप्त इन्द्रियाँ उनको नज़र आने लगीं। (और स्वर्ग के वस्त्र उनसे छिन गये) और वह (मारे शर्म के अपना शरीर ढकने के लिये) अपने ऊपर स्वर्ग (के वृक्षों) के पत्तों पर पत्ते चिपकाने लगे। और (यह फल) आदम (को इस बात का मिला कि उन्हों) ने अपने पालन कर्त्ता की अवज्ञा की। अतः वह (सच्चे मार्ग से) भटक गये (और कठिन संकट में फँस गये)॥

फिर (जब उन्होंने बहुत दिनों तक क्षमा चाही, तो) उनके पालन कर्त्ता ने उनको (फिर अपना) श्रेष्ठ तथा माननीय (बन्दा) बना लिया। फिर उन पर (अपनी कृपा व दया की) दृष्टि की। और उन्हें (सदा सदा के लिये) शिक्षा (ग्रहण करने की योग्यता) प्रदान की। (जब आदम शैतान के बहकाये में आ गये, तो अल्लाह तआला ने) आज्ञा दी कि तुम दोनों के दोनों (अर्थात् आदम व शैतान) नीचे (पृथ्वी में) उतर जाओ। (आज से) तुममें से एक का एक शत्रु (बन गया) है। अतः (हे आदम!) यदि तुम्हारे (अर्थात तुम्हारी सन्तान के) पास हमारी ओर से कोई उपदेशक (व रसूल) आये (और तुमको सीधा मार्ग बताये) तो (तुम उसका अवश्य कहना मानना)। जो मनुष्य हमारी शिक्षा पर चलेगा, तो न वह (कभी) पथ भ्रष्ट होगा और न मुसीबत में पड़ेगा॥

और जो (हमारे उपदेशों पर अमल नहीं करेगा और) हामरी याद से ग़ाफ़िल रहेगा, तो उसको (इस संसार में भी बड़ी) तङ्ग ज़िन्दगी है। और क़यामत के दिन हम उसको अन्धा (करके क़ब्र से) उठायेंगे। वह (आधीनता के साथ) प्रार्थना करेगा-हे मेरे पालन कर्त्ता! तूने मुझको अन्धा क्यों उठाया, यद्यपि (संसार में तो) मैं डिठियारा था। आज्ञा होगी (जिस प्रकार आज तू अन्धा है) उसी प्रकार (तू संसार में सत्य बात के देखने से अन्धा था)। हमारी आयतें (संसार में) तेरे पास आईं, तो तूने उन (की ओर) से ग़फ़लत बरती। (वहाँ तो तू ग़फ़लत बरतता था) और आज के दिन तुझसे ग़फ़लत बरती जायगी॥

और (याद रख!) हम इसी प्रकार (हर) उस मनुष्य को दंड देते हैं, जो (अपनी उद्दण्डता में) सीमा से बढ़ जाय और अपने पालन कर्त्ता की आयतों पर ईमान न लाये। और परलोक का अज़ाब तो बहुत ही कठिन और बहुत (देर तक) शेष रहने वाला है। (हे रसूल!) क्या इन लोगों को इस (बात) ने हिदायत नहीं दी कि इनसे पहिले हमने बहुत सी जमाअतों (जैसे आद व समूद इत्यादि) को—कि जिनके घरों में यह (आज) चलते (फिरते) हैं (उनकी उद्दण्डता के दंड में) नष्ट कर दिया। निस्सन्देह—

فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ۝
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ
طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا وَمِنْ اٰنَائِ الَّيْلِ
فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ۝ وَلَا
تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ
زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ وَرِزْقُ رَبِّكَ
خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ
عَلَيْهَا لَا نَسْئَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ
لِلتَّقْوٰى ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ اَوَلَمْ
تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝ وَلَوْ اَنَّآ
اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا
لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ

ع

اَنْ نَّذِلَّ

जो लोग अक़्ल वाले हैं, उनके लिये इसी ( एक बात ) में ( क़ुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ) निशानियां ( मौजूद ) हैं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ( कुफ़्फ़ार के किर्दार तो ऐसे हैं कि ) अगर तुम्हारे पर्वर्दिगार ने पहिले से एक बात न फ़र्माई होती और ( अख़ीर फ़ैसले की एक ) मीआद मुक़र्रर न ( ठहराई ) होती, तो ( फ़िल वक़्त ) अज़ाब का आना एक लाज़िमी बात थी ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) जैसी बातें ( यह काफ़िर ) कहते हैं, उन पर सब्र करो और आफ़ताब के निकलने से पहिले और ( नीज़ ) उसके डूबने से पहिले अपने पर्वर्दिगार की हम्द ( व सना ) के साथ ( उसकी ) तस्बीह ( व तक़्दीस ) किया करो और ( नीज़ ) रात के वक़्तों में और ( दो पहर ) दिन के लगभग ( यानी ज़ोहर के वक़्त भी ) तस्बीह ( व तक़्दीस ) किया करो, ताकि तुम ( इस इबादत का सिला पाकर ) ख़ुश हो जाओ० और (ऐ पैग़म्बर ! ) हमने जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को दुनियावी ज़िन्दिगी की रौनक़ के साज़ व सामान इस्तेमाल के लिये दे रक्खे हैं कि उनको उन ( के हाल ) में आज़माएं-तुम अपनी नज़र उन पर न दौड़ाना और तुम्हारे पर्वर्दिगार की ( दी हुई ) रोज़ी ( यानी सवाब आख़िरत इससे ) कहीं बेहतर और पाइन्दा-तर है० और अपने घर वालों पर नमाज़ की ताकीद रक्खो और ( ख़ुद भी ) उसके पाबन्द रहो। हम तुमसे कुछ रोज़ी तो तलब करते नहीं, ( बल्कि ) हम तुमको रोज़ी देते हैं और अन्जाम ( बख़ैर ) तो परहेज़गारी ही का है० और ( यहूद व नसारा ) कहते हैं कि ( यह पैग़म्बर ) अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता ? क्या अगिली किताबों की ( पेशीन गोइयों की ) गवाही इनके पास नहीं पहुंची ? ( कि वह रिसालत का काफ़ी निशान है )० और अगर हम क़ुर्आन ( के उतारने ) से पहिले किसी अज़ाब से इन को हलाक कर देते, तो कहते पर कहते कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि ज़लील और रुस्वा होने से पहिले हम तेरे हुक्म पर चलते०--

---

उन ( के उजाड़ पन ) में बुद्धिमानों के लिये ( ख़ुदा की क़ुद्रत की बहुतेरी ) निशानियाँ ( मौजूद ) हैं। और ( हे रसूल ! यह लोग जो इस समय तक अज़ाब न आने से अपने आप को सत्य पर समझे बैठे हैं ) यदि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने एक ( यह ) बात पहिले न कहदी होती ( कि इन्हें अवसर दिया जायगा ) और ( पुरस्कार व दंड का ) एक नियत समय न ( कर दिया ) होता तो ( यह लोग तो बिलकुल इस योग्य हैं कि इन पर ) आवश्यक रूप से वह ( अर्थात अल्लाह का अज़ाब कभी का ) आ गया होता ॥

अतः ( हे हमारे रसूल ! ) तुम इन लोगों की ( बुरी ) बातों पर ( जहाँ तक हो सके ) सन्तोष करो। और अपने पालन कर्त्ता की प्रशंसा के साथ पवित्रता का वर्णन करो ( अर्थात नमाज़ पढ़ा करो )। सूरज निकलने के पूर्व ( सुबह की ) और सूरज छिपने से पहिले ( ज़ुहर और अस्र की ) और रात के समय में ( मग़रिब व इशा की ) जिस से कि तुम्हें ख़ुशी ( और कर्त्तव्य पालन से आनन्द प्राप्त ) हो। ( जब समय आयेगा, तो उनको उनके कुकर्मों की पूरी २ सज़ा दी जायगी )। और हमने जो इन ( अवज्ञाकारियों ) के भिन्न २ प्रकार के लोगों को संसार की ज़िन्दगी की ( थोड़े से दिनों की ) बहार ( अर्थात धन व सम्पत्ति ) दे रक्खी है, जिससे कि हम उसमें उन्हें आज़मायें। ( हे रसूल ! ) तुम इसकी ओर दृष्टि उठाकर भी न देखना और ( अपने दिल में इसका किञ्चित भी लोभ न पैदा होने देना निस्सन्देह इस संसार में ) तुम्हारे पालन कर्त्ता ( ने पैग़म्बरी ) का ( जो ) पुरस्कार ( तुमको दे रक्खा है, वह इन कुछ दिन रहने वाले धन सम्पत्ति से अधिक ) अच्छा और बहुत ( देर तक ) शेष रहने वाला ( अर्थात अनष्ट ) है ॥

और अपनी जाति को भी नमाज़ ( के पढ़ने ) की आज्ञा देना और ( स्वयं ) तुम भी इस पर स्थिर रहना। हम तुमसे जीविका का प्रश्न नहीं करते ( अर्थात हम तुमसे यह नहीं कहते कि तुम हमारी प्राणियों में से किसी को रोटी देना )। जीविका तो तुमको ( भी और उनको भी ) हम ही देते हैं। और ( हे रसूल ! यह भली भाँति समझ लो कि ) अच्छा परिणाम संयमता ही का ( होता ) है। और ( हे रसूल ! यह यहूदी व ईसाई जो यह ) कहते हैं कि ( यदि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, तो ) यह हमारे पास ( हमारी इच्छानुसार ) अपने पालन कर्त्ता से कोई चिन्ह लेकर क्यों नहीं आते ? तो ( हे रसूल ! ) क्या पहिली पुस्तकों ( जैसे तौरेत, इन्जील इत्यादि ) का प्रमाण उनके पास नहीं पहुंचा ? ( अर्थात उन किताबों में जो तुम्हारे और क़ुर्आन के विषय में भविष्य वाणियाँ हैं, क्या वह इन्हें नहीं मालूम )। और यदि हम उनको क़ुर्आन से पहिले ( उनके दुराचार के दंड में अपने ) किसी अज़ाब से नष्ट कर डालते, तो निश्चित रूप से कहते कि ( हे पालन कर्त्ता ! ) तूने ( संसार में ) हमारे पास कोई रसूल क्यों नहीं भेजा ? कि हम तेरी आयतों ( को उस की ( ज़बान से सुनने और ) ज़लील व रुस्वा होने से पहिले ही ( अर्थात संसार ही में उनकी ) पैरवी कर लेते ॥

(ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि (अपनी अपनी जगह) सभी (अन्जाम कार का) इन्तिज़ार कर रहे हैं, सो तुम भी इन्तिज़ार करो। तो आगे चल कर तुम जान लोगे कि सीधे रस्ते वाले कौन हैं (और बर सरे ग़लत कौन हैं) और रूबराह कौन हैं (और गुमराह कौन हैं)०

أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ۝ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ
اهْتَدَىٰ ۝

سورة الأنبياء — مائة واثنا عشر

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ
مُّعْرِضُونَ ۝ مَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِم
مُّحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۝ لَاهِيَةً
قُلُوبُهُمْ ۗ وَأَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا هَلْ
هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنتُمْ
تُبْصِرُونَ ۝ قَالَ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ بَلْ قَالُوا
أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ
فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ۝ مَا آمَنَتْ

## सूरत—अम्बिया

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ११२ आयतें और ७ रुकूअ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहबान (है)० (बा वजूदे कि) लोगों का हिसाब (आमाल यानी उसका वक़्त) क़रीब आ लगा, इस पर भी वह ग़फ़लत में परे को मुंह किये हुये (चले जा रहे) हैं० उनके पास उनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से जो नया हुक्म आता है, बस उसे ऐसे (बे पर्वा होकर) सुन्ते हैं कि (उसका) हँसी खेल बनाते हैं० (और) उनके दिल (हैं कि) मुतलक़ मुतवज्जह नहीं और यह ज़ालिम चुपके चुपके सरगोशियाँ करते हैं कि यह (शख़्स यानी मुहम्मद) है ही क्या; तुम ही जैसा एक आदमी है और बस। तो क्या तुम दीदा व दानिस्ता जादू (की बातें सुनने) को आते हो० (पैग़म्बर ने इनको यह सरगोशियां मालूम करके) कहा कि (तुम लोग क्या सरगोशियां करते हो) जितनी बातें आसमान व ज़मीन में होती हैं, मेरे पर्वर्दिगार को (सब) मालूम हैं और वह (सबकी) सुन्ता और (सब कुछ) जानता है० (ज़ालिमों ने कुर्आन के जादू कहने पर बस न किया) बलिक लगे कहने कि यह तो परेशान ख़यालात का मज्मुआ है, बलिक इसने यह झूठी झूठी बातें अपने दिल से बना ली हैं, बलिक यह (शख़्स) शाइर है। (और अगर वाक़े में पैग़म्बर है) तो जिस तरह अगिले पैग़म्बर (मोजिज़ों के साथ) भेजे गये, इसी तरह यह भी कोई मोजिज़ा (जैसा हम कहें) हमारे सामने ले आये०—

---

(अतः हमने तुमको भेज कर और इस कुर्आन को तुम पर उतार करके प्रमाण समाप्त कर दिया। अब यदि तुम से यह लोग पूछें कि अज़ाब कब आयेग, तो) तुम (इनसे) कह देना कि (उस अज़ाब के दिन की) सब बाट में हैं। अतः तुम भी बाट देखो। अभी तुमको ज्ञात हो जायगा कि सीधे मार्ग (पर चलने) वाले कौन लोग हैं। और (नियत स्थान अर्थात स्वर्ग की ओर) मार्ग पाने वाले कौन हैं (आया हम हैं, या तुम हो)॥

## सूरत—अम्बिया

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ११२ आयतें और ७ रुकूअ हैं॥**

(हे रसूल!) लोगों (को क्या हो गया है कि उनके कर्मों) का हिसाब (शीघ्र होने वाला है और पुरस्कार व दंड का समय बिल्कुल) निकट आ लगा है। और वह (हैं कि) ग़फ़लत में (पड़े हुए) हैं (और ईमान लाने से) विमुखता (और नेक काम करने से ग़फ़लत) करने लगते हैं। (और) जब इनके पास कोई शिक्षा (की) नई (बात) उनके रब के पास से आती है, तो उनकी यह दशा होती है कि उसे सुन कर उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं (और अपनी भीतरी दशा की ख़बर नहीं रखते, कि) उनके दिल (कैसे) ग़ाफ़िल हैं। और यह अन्यायी लोग (रसूल को देखकर परस्पर) काना फूसी करने लगते हैं कि यह (मुहम्मद) तो तुम्हारे ही जैसे एक आदमी हैं (नबी नहीं हैं। इनकी बातों में जादू है) तो (भाइयो!) क्या तुम यह देखते हुये भी (कि इनकी बातों में जादू मिला हुआ है, इन) जादू (की बातें सुनाने वाले) के पास आते हो? (वास्तव में तुम्हारा इनके पास आना बहुत बड़ी मूर्खता है)॥

(हमारे रसूल ने इनकी काना फूसी का तात्पर्य समझ कर) कहा कि (यह तुम लोग क्या एक दूसरे के कान में चुपके २ कह रहे हो)। मेरा पालन कर्ता (अदृष्टि का ज्ञान रखने वाला है। वह) आकाशों में और पृथ्वी में जो बात भी (होती) है—जानता है। और वह (सब कुछ) सुनता (और सब कुछ) समझता है। (और उन्होंने अल्लाह के कलाम के सम्बन्ध में जादू ही नहीं कहा) बलिक (यह भी) कहा कि (यह तो एक परेशान) स्वप्न की (सी) बातें हैं। (नहीं नहीं, यह बातें तो स्वप्न की भी नहीं कही जा सकतीं, क्योंकि उनमें तो इन्सान लाचार होता है)। बलिक उन्होंने (अर्थात् मुहम्मद ने तो अपनी बातों को ख़ुदा का कलाम बता कर) ख़ुदा पर (जान बूझ कर) दोष लगाया है। बलिक (वास्तव में) यह (मुहम्मद एक) कवि हैं। (यदि यह ख़ुदा के रसूल हैं) तो इन्हें चाहिये कि जिस तरह पिछले (नबी और) रसूल (चमत्कार देकर) भेजे गये (और उन्होंने अपनी अपनी उम्मतों को उनकी इच्छानुसार चमत्कार दिखाये) थे (इसी तरह हमारी इच्छा व वचनों के अनुसार) यह भी (ख़ुदा के यहाँ से) कोई चमत्कार लायें (और हमें दिखायें)॥

قَبْلَهُم مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ
وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ
فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَمَا
جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَمَا
كَانُوا خَالِدِينَ ۝ ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنجَيْنَاهُمْ
وَمَن نَّشَاءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ۝ لَقَدْ
أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ
وَكَمْ قَصَمْنَا مِن قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنشَأْنَا
بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝ فَلَمَّا أَحَسُّوا بَأْسَنَا
إِذَا هُم مِّنْهَا يَرْكُضُونَ ۝ لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَىٰ
مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسَاكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُونَ
قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَمَا زَالَت تِّلْكَ
دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خَامِدِينَ ۝ وَمَا

जिन बस्तियों को हमने इनसे पहिले हलाक किया, वह तो (मोजिज़े देख कर भी) ईमान न लाये, तो क्या यह ईमान ले आएँगे॰ और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमसे पहिले भी आदमी ही (पैग़म्बर बना कर) भेजे (कि हमको जो कुछ फ़र्माना मन्ज़ूर होता था) उनकी तरफ़ वही कर दिया करते थे। तो (लोगो!) अगर तुमको (यह बात) मालूम नहीं, तो अह्ल-किताब से पूछ देखो॰ और हमने उनके ऐसे जुस्से नहीं बनाये थे कि खाना न खाते हों और न वह लोग (दुनिया में) हमेशा रहने वाले ही थे॰ फिर हमने (अज़ाब का) वादा उनको सच कर दिखाया (यानी वक़्त मौऊद पर अज़ाब भेजा) तो उन (पैग़म्बरों) को और जिस (जिस) को हमने चाहा (अज़ाब से) बचा लिया और जो लोग (हद्द एतिदाल से) बढ़ गये थे, हमने उनको हलाक कर मारा॰ (लोगो!) हमने तुम्हारी तरफ़ (यह कुर्आन ऐसी) किताब उतारी है, जिसमें तुम्हारा मज़कूर है। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते॰ और हमने बहुत सी बस्तियों को जहां के लोग (बड़े) सर्कश थे, तोड़ फोड़ कर बराबर कर दिया और उनके बाद दूसरे लोग उठा खड़े किये॰ तो जब उन हलाक होने वालों ने हमारे अज़ाब की आहट पाई, तो लगे उस (बस्ती) से भागने॰ (हमने कहा) भागो मत और उसी (साज़ व सामान दुनिया) की तरफ़ लौट जाओ, जिसमें तुम चैन करते थे और (नीज़) अपने मकानात की तरफ़ (वापिस जाओ, जिनमें तुम रहा करते थे) शायद (तुम्हारे ख़याल के मुताबिक़) तुम्हारी कुछ पूछ हो॰ वह लगे कहने हाय हमारी कम बख़्ती! बेशक हम ही ख़तावार थे॰ पस वह लोग बराबर यही पड़े पुकारा किये। यहाँ तक कि हमने उनको (ऐसा बर्बाद) कर दिया (कि अगर उनको उनकी ख़ुश हाली की वजह से खेत समझो, तो) कटे हुये (खेत थे और अगर उनको उनकी शरारत की वजह से आग समझो, तो) बुझे हुए (अंगारे थे)॰—

(हे रसूल! यह बकवास इनकी बहुत पुरानी है। भला इनके पूर्वजों की) वह बस्तियाँ, जिन्हें हमने इनसे पहिले नष्ट कर दिया (है) वह (अपने इच्छित चमत्कारों को देखने पर भी) ईमान नहीं लाईं, तो क्या यह ईमान ले आयेंगे? (यदि यह ईमान लाने वाले होते, तो क्या यह कुर्आन इनके लिये एक अद्भुत चमत्कार न था?) और (यह जो आदमी होने को पैग़म्बरी के विरुद्ध जानते हैं, तो क्या इन्हें यह नहीं मालूम कि) हमने तुमसे पहिले ऐसे आदमी ही (पैग़म्बर बनाकर) भेजे हैं, जिन की ओर हम वही किया करते थे। अतः (हे मुश्रिको!) यदि तुमको (यह) ख़बर न हो, तो किताब वालों (अर्थात् यहूदी ईसाई-जो तुम्हारे बड़े मित्र हैं, उन) से पूछ लो (कि पहिले नबी अदमी ही थे या नहीं)। और हमने उनके शरीरों को ऐसा नहीं बनाया था (जैसे फ़रिश्तों के जिस्म होते हैं) कि वह खाना न खाते हों (पानी न पीते हों)। और वह (अर्थात् भूत—पूर्व नबी) हमेशा रहने वाले भी न थे। (अतः वह अपने परिमित जीवन में अपने अपने कर्त्तव्य का पालन करके इस संसार से विदा हो गये)॥

(तो) फिर (हम ऐसे लोगों को लोक परलोक में दंड देते हैं। अतः) हमने (मुक्ति व कल्याण और दंड व पुरस्कार का जो वादा अगली उम्मतों और उनके पैग़म्बरों से किया था) उनके (इस) वादे को (हमने) सच कर दिखाया। अर्थात् हमने उन (पहिले पैग़म्बरों) को और (उनकी उम्मत में से जिस) जिसको चाहा (और मुक्ति के योग्य समझा) मुक्ति दे दी। और (कुफ़्र व सर्कशी में) सीमा से बढ़ जाने वालों को (अपना अज़ाब भेज कर) नष्ट कर दिया। (अतः हे अज्ञान मुश्रिको! हमारे अज़ाब से डरो)। हमने (अपनी मेहर्बानी से) तुम्हारे पास ऐसी (अमूल्य) पुस्तक भेजी है कि जिस (के अमूल्य उपदेशों पर अमल करने) में तुम्हारी (मुक्ति व कल्याण है। और जिसमें तुम्हारे लिये सरासर उपदेश ही) उपदेश है। तो क्या तुम फिर भी नहीं समझते॥

और (अपने कौतुकों से बाज़ नहीं आते। देखो!) बहुत सी ऐसी बस्तियाँ कि जिनके निवासी (तुम्हारी ही तरह) ज़ालिम (व अत्याचारी) थे, हमने उनको (बिल्कुल बरबाद व) नष्ट कर दिया। और उनके बाद हमने (उनकी जगह) और लोग पैदा कर दिये। तो जब उन बरबाद होने वालों ने हमारा अज़ाब (अर्थात् उसके उतरने को) अनुभव किया (था) तो एक दम वहाँ से भागने लगे (थे, ताकि किसी तरह अज़ाब से छुटकारा पालें)। (उस समय हमने उनसे कहा-कहाँ भागते हो) मत भागो! और अपने आनन्द भवन और मकानों की तरफ़ वापिस चले जाओ, ताकि तुम पूछे जाओ। (तो उस समय) वह (बड़ी विवशता और निराशा के साथ) लगे कहने (हाय!) हमारा अभाग्य!! निस्सन्देह हम थे (बड़े) ज़ालिम अतः उनकी पुकार बराबर यही रही। यहाँ तक कि हमने उनको (ऐसा) बना दिया (जैसे) कटा हुआ खेत होता है (या) बुझा हुआ (अंगारा)।

خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِينَ ● لَوْ أَرَدْنَا
أَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ إِنْ كُنَّا فٰعِلِينَ ●
بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا
هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ● وَلَهُ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهُ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ●
يُسَبِّحُونَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ● أَمِ
اتَّخَذُوا آلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنْشِرُونَ ●
لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا
فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ● لَا
يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ ● أَمِ اتَّخَذُوا
مِنْ دُونِهِ آلِهَةً قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ هٰذَا ذِكْرُ
مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِي بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ●

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, उसको खेल के लिये पैदा नहीं किया० अगर हमको खेल बनाना मन्ज़ूर होता, तो हम अपनी तज्वीज़ से ( खेल की तरह का कोई ) खेल बनाते ( लेकिन ) हमको ऐसा करना मन्ज़ूर ही न था० बात यह है कि हम हक़ को ( पत्थर की तरह ) बातिल ( के सर ) पर खींच मारते हैं, तो वह बातिल के सर को कुचल देता है और बातिल उसी दम मलिया मेट हो जाता है और ( लोगो ! ) तुम पर अफ़सोस है कि तुम ऐसी बातें बनाते हो० और जो ( फ़रिश्ते ) आसमानों ( में ) और ( जो लोग ) ज़मीन में हैं, उसी के ( बन्दे ) हैं और जो ( फ़रिश्ते ) उसकी सर्कार में हैं, वह न तो उसकी इबादत से सर्ताबी करते हैं और न थकते हैं० रात दिन उसकी तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगे रहते हैं ( और ) काहिली नहीं करते० क्या इन लोगों ने ऐसे माबूद बना रक्खे हैं, जिनको यह लोग ख़ुद ज़मीन ( की चीज़ों, मिट्टी पत्थर वग़ैरा ) से बना खड़ा करते हैं० अगर ज़मीन व आसमान में ख़ुदा के सिवा और माबूद होते, तो ( ज़मीन व आसमान दोनों कभी के ) बर्बाद हो गये होते। तो जैसी जैसी बातें यह लोग बनाते हैं, अल्लाह जो अर्श ( बरीं ) का मालिक है, वह तो इन ( ऐबों और नुक़्सानों ) से पाक है० जो कुछ वह करता है, उसकी बाज़ पुर्स उससे नहीं की जा सकती और ( हाँ ) लोगों से ( उनके किये की ) बाज़ पुर्स होनी है० क्या लोगों ने ख़ुदा के सिवा ( दूसरे दूसरे ) माबूद बना रक्खे हैं ? ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो कि अपनी दलील तो पेश करो। जो लोग मेरे साथ हैं, उनकी किताब ( क़ुर्आन ) और जो मुझसे पहिले हो चुके हैं, उनकी किताबें ( तौरात इन्जील वग़ैरा ) यह मौजूद हैं ( इनमें दूसरे माबूदों की सनद दिखा दो )—बात यह है कि इनमें से अक्सर तो हक़ ( बात ) को जानते ही नहीं—

---

और हमने पृथ्वी और आकाश को और जो कुछ इन दोनों के बीच में है ( केवल ) खेल ( कूद और दिल बहलाने के लिये ) नहीं बनाया ( बल्कि सोच विचार करने के लिये पैदा किया है )–यदि हमको खेल बनाना ही स्वीकार होता, तो हम अपनी तदबीर ( व युक्ति ) से इस ( दुनिया ) को ( किसी और रीति से ) बनाते। ( अर्थात ) यदि हमको ( ऐसा ) करना होता ( तो हम इसको एक शिक्षा का स्थान न बनाते ) ॥

( लोगो ! ख़ूब समझ लो कि हमने इस संसार को बिलकुल व्यर्थ नहीं बनाया ) बल्कि ( हमने यहां बुराई भलाई, और कुफ़्र व ईमान को पैदा करके लोगों के वास्ते इसे परीक्षा भवन नियत किया है )। हम सत्य ( के पत्थर ) को असत्य ( के सिर ) पर दे मारते हैं, तो वह ( अर्थात सत्य ) इस ( असत्य ) का भेजा निकाल देता है । ( और ) फिर असत्य एक दम मिट जाता है और ( हे असत्य पूजको ! ) तुम पर अफ़सोस है कि तुम ( झूठी झूठी ) बातें बनाते हो और ( इतना नहीं समझते कि ) जो ( फ़रिश्ते ) आकाशों में ( रहते ) और जो ( आदमी ) पृथ्वी में ( बस्ते ) हैं ( सब ) उसी के अधिकार में हैं और जो ( फ़रिश्ते ) उसके दरबार में ( हाज़िर रहते ) हैं, वह उसकी पूजा से मुंह नहीं मोड़ते और न ( उसकी पूजा में ) थकते हैं । ( और ) रात दिन वे थकान ( उसकी ) पवित्रता वर्णन करते ( रहते ) हैं । ( और उसके आदेशों के पालन में तनिक आलस्य और ) सुस्ती नहीं करते ॥

( यह ख़ुदा की लीला है–मगर यह मुश्रिक फिर भी उसको नहीं मानते ) बल्कि ( उसकी जगह ) इन्होंने ( कुछ ) पृथ्वी के पूज्य ( ऐसे ) बना लिये हैं कि ( जिनको यह अपने विचार में यह समझते हैं कि मानो ) वही ( हैं, जो ) पैदा करते हैं ( और उनको पुरस्कार व दंड देंगे )। यदि अल्लाह के अतिरिक्त पृथ्वी व आकाश में ( और ) पूज्य ( भी ) होते, तो यह ( पृथ्वी व आकाश कभी के ) नष्ट हो जाते । तो अर्श ( आकाशीय सिंहासन ) का स्वामी ख़ुदा इनकी ( इस ) बकवास से ( कि उसके शरीक हैं, बिल्कुल ) मुक्त ( व स्वतन्त्र ) है । ( उसे अपनी ख़ुदाई में किसी को सम्मिलित करने की आवश्यकता नहीं है ) ॥

( वह मुख़्तार कुल है, जो चाहता है, वह करता है )। जो कुछ वह करता है, उसके विषय में उससे प्रश्न ( तक भी ) नहीं किया जा सकता। और ( यह सब बन्दे हैं कि इन ) लोगों से ( उनके कर्मों के विषय में पूछा जा सकता है और ) पूछा जायगा। ( हे रसूल ! ) क्या ( वास्तव में ) इन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त ( अपने घर के बनाये हुये बुतों को भी ) पूज्य बना रक्खा है । तुम ( इनसे ) कहो कि ( यदि यह बुत ख़ुदा हैं, तो ) अपना प्रमाण उपस्थित करो । ( और ख़ुदा के एक होने का ) यह ( क़ुर्आन ) तो उन ( लोगों ) का प्रमाण है, जो मेरे साथ हैं । और जो ( तौहीद के पूजक ) मुझसे पहिले हो चुके हैं ( उनका प्रमाण तौरेत व इन्जील व ज़बूर हैं )—वास्तव में यह है कि उनमें से बहुधा मनुष्य ( अर्थात मुश्रिक व काफ़िर ) सत्य को जानते ( ही ) नहीं । ( जब कोई सत्य बात उनको सुनाई जाती है ) तो यह मुँह फेर लेते हैं ॥

तो ( जब हक़ का ज़िक्र आता है ) यह ( लोग ) मुँह फेर लेते हैं०
और ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमने तुमसे पहिले जब कभी कोई रसूल भेजा, तो
उस पर हम यही वही नाज़िल करते रहे कि हमारे सिवा कोई और
माबूद नहीं, तो ( लोगो ! ) हमारी ( ही ) इबादत करो० और ( बाज़
काफ़िर ) कहते हैं कि ( ख़ुदाए ) रहमान बेटियां रखता है ( यानी फ़रिश्ते
उसकी बेटियाँ हैं )—उसकी ज़ात ( इस तोहमत ) से पाक है ( फ़रिश्ते
ख़ुदा की बेटियां नहीं ) बल्कि ( उसके ) मुअज़्ज़ज़ बन्दे हैं० उसके
आगे बढ़ कर बात नहीं कर सकते और वह उसी के हुक्म पर
कारबन्द रहते हैं० इनका अगला पिछला ( सब ) हाल उसको
मालूम है और यह ( फ़रिश्ते किसी की ) सुफ़ारिश ( तक ) नहीं कर
सकते, मगर जिनके हक़ में ख़ुदा ( उनकी सुफ़ारिश ) पसन्द फ़र्मायें
और वह उसके जलाल से ( हर वक़्त ) डरते रहते हैं० और ( बिलफ़र्ज़ )
जो उनमें से यह दावा करे कि ख़ुदा नहीं ( बल्कि ) मैं माबूद हूं,
तो ( यह फ़रिश्ता मर्दूद बार्गाह है कि ) उसको जहन्नम की सज़ा देंगे
( और ) सर्कशों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं० क्या जो लोग
मुन्किर हैं, उन्होंने इस बात पर नज़र नहीं की—कि आसमान व
ज़मीन दोनों का एक भिंडा सा था, तो हमने ( उसको तोड़ कर )
ज़मीन व आसमान को अलग अलग किया और पानी से तमाम जान-
दार चीजें बनाईं। तो क्या इस पर भी लोग ( हम पर ) ईमान नहीं
लाते० और हमही ने ज़मीन में भारी बोझल पहाड़ ( मवाक़े मुना-
सिब पर ) रक्खे, ताकि ज़मीन लोगों को लेकर ( किसी तरफ़ को )
झुक न पड़े और हम ही ने उसमें चौड़े चौड़े रस्ते बनाये, ताकि लोग
अपनी अपनी मंज़िल मक़्सूद को जा पहुंचें०—

الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا
فَاعْبُدُوْنِ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ
بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ
وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ
مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ
اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ
كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ ع
وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ
وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝

وجعلنا

और ( यह शिक्षा अल्लाह के एक होने की तुम्हारे द्वारा इन्हें नई नहीं दी जा रही है, बल्कि ) हमने तुमसे पहिले कोई रसूल भी ऐसा नहीं भेजा कि जिसकी ओर हमने इस ( बात ) की वही न भेजी हो कि हमारे अतिरिक्त कोई पूज्य ( बनने के योग्य ) नहीं। अतः ( केवल ) हमारी पूजा करो। और ( हमारे अतिरिक्त किसी दूसरे को न पूजो, लेकिन ) यह मुश्रिक किसी तरह बाज़ न आये। ( और ) लगे कहने कि ( ख़ुदा ) रहमान ने ( फ़रिश्तों को अपनी ) सन्तान बना लिया है। ( तौबा करो ! तौबा–उसे सन्तान की क्या आवश्यकता !! )। वह ( इससे बिलकुल ) पाक है। ( मूर्खो ! फ़रिश्ते ख़ुदा को सन्तान नहीं हैं ) बल्कि इज़्ज़तदार बन्दे हैं और ( अदब करने वाले प्राणी हैं। उनके अदब की शान यह है कि ) वह उसकी ( आज्ञा से ) आगे बढ़ कर बात ( तक ) नहीं करते। ( जिस बात की आज्ञा होती है, बस वही करते हैं )। और वह उसी की आज्ञा ( और संकेतों ) पर चलते हैं ॥

ख़ुदा उनकी ( समस्त ) अगली पिछली दशा से अभिज्ञ है। और वह उस ( शख़्स ) के अतिरिक्त जिस ( की सिफ़ारिश ) को वह पसन्द करे ( किसी की ) सिफ़ारिश नहीं करते। और उस ( ख़ुदा ) के भय से ( हर समय ) डरते रहते हैं। और ( हे मुश्रिको ! यह मिट्टी और लकड़ी के पुतले तो अलग रहे ) इन ( फ़रिश्तों ) में से ( भी ) यदि कोई यह कहे कि ख़ुदा के अतिरिक्त मैं भी ( एक ) पूज्य हूं, तो ( वह भी असत्य कहने वाला होगा )। हम उसको नर्क का अज़ाब देंगे ( और ) हम ( ऐसे ) ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं ॥

( हे रसूल ! ) क्या इन काफ़िरों ( और मुश्रिकों ) को यह नज़र नहीं आता कि आकाश व पृथ्वी ( के मुंह पहिले ) बन्द थे। ( न आकाश से मेंह बरसता था और न पृथ्वी में अनाज आदि उत्पन्न होता था )। फिर हमने ( अपनी क़ुद्रत से ) उन दोनों ( के मुंह ) को खोला ( और आस्मान से मेंह बरसाया, और पृथ्वी से अन्न आदि उत्पन्न किया )। और हर उस वस्तु को जिसमें जान है, पानी से पैदा किया। क्या यह ( लोग इतने मूर्ख हैं कि हमारी क़ुद्रत के इन असंख्य चमत्कारों को देखने पर भी ) ईमान नहीं लाते। और हम ही ने पृथ्वी में ( बड़े बड़े मज़बूत ) पहाड़ बनाये, ताकि पृथ्वी लोगों को हिला न दे। और हम ही ने उन ( पर्वतों ) में चौड़ी २ घाटियाँ बनाईं, जिससे कि लोग ( अपने नियत स्थान तक पहुंचने के लिये आसानी से ) मार्ग पा लें ॥

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا وَهُمْ عَنْ
آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ
وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ فِي فَلَكٍ
يَسْبَحُونَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ
أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ
ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ
فِتْنَةً وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ
كَفَرُوا إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا
الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ
كَافِرُونَ ۝ خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ سَأُرِيكُمْ
آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا
الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ

और हम ही ने आसमान की छत बनाई ( जो सब आफ़तों से ) महफ़ूज़ है और लोग हैं कि आसमानी निशानियों की मुतलक़ पर्वा नहीं करते० और वही ( क़ादिर मुतलक़ ) है, जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद को पैदा किया, कि तमाम ( अजरामे फ़लकी अपने अपने ) मदार में पड़े तैर रहे हैं० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमने तुमसे पहिले किसी बशर के लिये हमेशगी नहीं रक्खी। पस अगर तुम मर जाओगे, तो क्या यह लोग हमेशा रहने वाले हैं० हर एक जानदार ( एक न एक दिन ) मौत ( का मज़ा ) चखने वाला है और ( लोगो ! ) हम तुमको बुरी और भली हालतों में ( रख कर ) आज़माते हैं और ( आख़िरकार ) तुम ( सब ) को हमारी तरफ़ लौट कर आना है० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) जब मुन्किर लोग तुम को देखते हैं, तो बस ( आपस में ) तुम्हारी हंसी उड़ाने लगते हैं कि क्या यही ( हज़रत ) हैं, जो तुम्हारे माबूदों को ( बुरी तरह ) याद करते हैं ? और ( इन मुन्किरों का अपना हाल यह है कि ) ख़ुद ( ख़ुदाए ) रह्मान के ज़िक्र से मुत्नफ़्फ़िर हैं ( तो हक़ीक़त में इनके हुमुक़ पर हंसना चाहिये )० इन्सान ( गोया ) जल्दी का ( पुतला ) बनाया गया है ( लोगो ! ज़रा सब्र करो ) हम अन्क़रीब तुमको अपनी ( क़ुद्रत की ) निशानियाँ दिखाये देते हैं। तो हमसे जल्दी न मचाओ० और ( मुन्किर ) कहते हैं—अगर तुम ( मुसलमान ) सच्चे हो, तो यह ( क़यामत का ) वादा कब ( पूरा ) होगा० काश ( यह ) मुन्किर उस वक़्त ( की हक़ीक़त ) को जानें। जबकि ( दोज़ख़ की आग इनको आ घेरेगी और उस ) आग को न ( सामने से ) अपने मुँह पर से रोक सकेंगे—

---

और हम ही ने ( लोगों के आराम के वास्ते ) आस्मान को ( एक ) सुरक्षित छत ( की तरह ) बना दिया । और वह हैं कि ( ज्यों ज्यों हमारी कुद्रत के चिन्ह देखते हैं ) हमारी ( उन ) निशानियों की ओर से मुंह फेरे लेते हैं। और उसी ( ख़ुदा ) ने ( सुख पाने के लिये अंधेरी ) रात को और ( जीविका प्राप्त करने के लिये प्रकाशमान ) दिन को और ( दिन के प्रकाश के लिये ) सूर्य्य को और ( रात्रि के प्रकाश के लिये ) चन्द्रमा ( और तारों ) को पैदा किया ( कि ) प्रत्येक ( अपने नियत स्थान ) आस्मान में तैर रहे हैं॥

और हमने ( इस संसार में ) किसी मनुष्य को तुमसे पहिले भी ( कभी ) अमर नहीं किया । अतः ( हे मुहम्मद ! ) यदि ( आज ) तुम्हारा देहान्त हो जाय, तो ( क्या ) वह सदैव ( इसी संसार में ) रहने वाले हैं ? ( क्या उनको मृत्यु नहीं आयेगी ? अवश्य आयेगी। उनको भी और सबको भी )। ( संसार में ) प्रत्येक प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है। और हम ( कुछ दिन ) तुमको ( इस संसार में जीवित रख कर ) बुराई भलाई के द्वारा ( तुम्हारी ) ख़ूब परीक्षा करते हैं। और ( अन्त में ) तुम ( सब ) हमारी ओर लौटा दिये जाओगे ( और अपनी नेकी बदी का फल पाओगे )। और ( हे रसूल ) यह काफ़िर जब ( कभी ) तुमको देखते हैं, तो तुम्हारा मज़ाक़ ही उड़ाते हैं । ( और अनादर के साथ कहते हैं ) कि क्या यही वह ( पैग़म्बर साहब ) हैं, जो तुम्हारे पूज्यों की ( नफ़रत व अनादर के साथ ) चर्चा करते हैं, और ( अपनी ख़बर नहीं लेते कि ) वह दयालु ( ख़ुदा ) के ज़िक्र के मुन्किर हैं ॥

मनुष्य जल्दी ( के पिण्ड ) से बनाया गया है। ( लोगो ! ) हम अभी तुमको अपनी निशानियाँ दिखाये देते हैं । अतः तुम हमसे जल्दी न करो। ( इस समझाने पर भी यह लोग नहीं मानते ) और कहते हैं कि ( मुसल्मानो ! ) यदि तुम ( अपने क़यामत के दावे में ) सच्चे हो, तो ( बताओ कि ) यह वादा कब ( पूरा ) होगा। क्या अच्छा होता यदि यह मुन्किर उस समय ( की दशा ) को समझते, जब कि ( नर्क की भड़कती हुई आग इन्हें चारों ओर से घेर लेगी। और ) यह ( उस ) आग को न अपने मुंह पर ( आने ) से रोक सकेंगे-

وَلَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ● بَلْ تَأْتِيهِم
بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا
هُمْ يُنظَرُونَ ● وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن
قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ● قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ
الرَّحْمَٰنِ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِم مُّعْرِضُونَ ● أَمْ لَهُمْ
آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ
أَنفُسِهِمْ وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ● بَلْ مَتَّعْنَا هَٰؤُلَاءِ
وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ
أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ
الْغَالِبُونَ ● قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ
الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ● وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ
نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا

ظالمين

और न ( पीछे से ) अपनी पीठ पर से और न उनको ( कहीं से ) मदद मिलेगी० ( क़यामत आयेगी, तो इनको जता बता कर थोड़ा ही आयेगी ) बल्कि वह एक दम से इन पर आ मौजूद होगी और इनको हक्का बक्का कर देगी। फिर उस वक़्त न तो उसको हटा सकेंगे और न इनको मोहलत ही मिलेगी ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुमसे पहिले भी पैग़म्बरों के साथ हँसी की जा चुकी है, तो जो लोग उनके साथ मज़ाक़ करते थे, जिस ( अज़ाब ) की हंसी उड़ाया करते थे, वह उन पर नाज़िल होकर रहा० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) पूछो कि (खुदाए ) रहमान ( के अज़ाब ) से रात ( का वक़्त हो ) या दिन ( का ) तुम्हारी कौन पास-बानी कर सकता है ? ( तो इनको खुदा से डरना चाहिये ) लेकिन ( डरना तो दूर किनार ) इनको तो अपने पर्वर्दिगार के नाम से भी गुरेज़ है० क्या हमारे सिवा इनके कोई और माबूद हैं, जो इनको ( हमारे अज़ाब से ) बचा सकते हैं। ( बचा क्या सकेंगे, मुसीबत पड़े पर ) आप अपनी मदद तो कर सकते ही नहीं और न हमारे मुक़ाबिले में कोई उनका साथ देगा० बात यह है कि हमने इन लोगों को और इनके बड़ों को ( दुनिया में ) रसाया बसाया। यहाँ तक कि ( खुश हाली में ) इन पर बहुत सी उमरें गुज़र गईं ( और यह मग़रूर हो गये ) तो क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम मुल्क को चारों तरफ़ से दबाते ( और फ़तह करते ) चले आते हैं, तो ( इस सूरत में ) यह लोग ग़ालिब हैं ( या मुसल्मान ? )० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मैं तो बस वही के मुताबिक़ तुमको ( अज़ाब खुदा से ) डराता हूं—( मगर यह लोग बहिरे हैं ) और बहिरों को डराया जाय, तो वह ( सिरे से किसी की ) पुकार ( ही ) नहीं सुन्ते ( डरें क्या ख़ाक )० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर इन को तुम्हारे पर्वर्दिगार के अज़ाब की ज़रा सी भी हवा लग जाय, तो बे इख़्तियार बोल उठें कि ऐ हमारी कम बख़्ती ! हक़ीक़त में हम ही क़ुसूरवार थे०—

---

और न अपनी पीठ पर ( आने ) से और न इनको ( इस निराशा की दशा में ) कोई सहायता करेगा । ( क़यामत आयेगी और अवश्य आयेगी ) बल्कि एक दम इन पर टूट पड़ेगी । फिर इन्हें ( बिलकुल ) भौचक्का बना देगी । और फिर यह न उसे हटा ही सकेंगे और न इन्हें ( उससे बचने के लिये कुछ थोड़ा बहुत ) अवसर दिया जायगा । ( हे रसूल ! तुम इन मूर्खों की लेश मात्र परवाह न करो । इससे पहिले भी नबी व रसूल का अनादर करने वाले हो चुके हैं )। और तुमसे पहिले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया है। तो जिन लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाया था (अन्त में) वह (अज़ाब) जिसका (वह) मज़ाक़ उड़ाते थे, उन पर ( आ गया और उन पर ) छा गया । ( हे रसूल ! ) तुम ( इन लोगों से ज़रा ) पूछो (तो) कि ( अल्लाह ) रहमान ( के अज़ाब ) से ( वह ) दिन ( के समय अवतीर्ण ) हो ( तो ) और रात ( के समय अवतीर्ण ) हो ( तो ) तुमको कौन बचा सकता है ? लेकिन यह ( इस प्रश्न का क्या उत्तर देंगे, यह तो ) अपने पालन कर्त्ता के ज़िक्र से ( भी ) मुंह फेर लेते हैं--

क्या हमारे अतिरिक्त इनके ऐसे पूज्य हैं, जो इनको ( हमारे अज़ाब में फंसने से ) बचा लें ? ( वह इन्हें तो क्या बचायेंगे, वह तो कुछ लकड़ी पत्थर आदि के टुकड़े हैं। कोई उन्हें तोड़ भी डाले, तो ) वह ( स्वयं ) अपनी सहायता नहीं कर सकते । और न वह हमारे साथी हैं ( जो हमसे सहायता लेकर उनकी सहायता कर दें )। (इस क़दर समझाने पर भी यह लोग जो ईमान नहीं लाते, तो इसका कारण यह नहीं है कि हमारे समझाने में कोई कसर है ) बल्कि ( वास्तविक बात यह है कि ) हमने इन्हें और इनके बाप ( दादा ) को ( हर प्रकार का ) लाभ पहुंचाया ( और सुख चैन में रक्खा )। यहां तक कि इन ( की इस दशा ) पर मुद्दतें गुज़र गईं । क्या इन्हें यह नहीं दिखाई देता कि हम ( इनकी ) पृथ्वी को चारों तरफ़ से घटाते चले आते ( और ईमानदार उस पर अधिकार प्राप्त करते जाते ) हैं । तो ( इस दशा में ) क्या ( ईमानदार सत्य पर हुए वा ) यह ( काफ़िर । और मुसल्मान ) ग़ालिब हैं ( वा यह असत्य पूजक और बेदीन ) ।

( हे रसूल ! ) तुम ( इन लोगों से ) कहदो कि मैं तुमको वही के अनुसार ( अल्लाह के अज़ाब से ) डराता हूं और ( तुमको सच्चा मार्ग बताता हूं । लेकिन तुमको डराना बिलकुल निष्फल है, क्योंकि ) बहिरों को यदि डराया जाय, तो वह ( किसी की ) पुकार को सुनते ही नहीं। ( यूं तो हे रसूल ! तुम चाहे इन्हें कितना ही खुदा का भय दिलाओ ) और (खुदा का मार्ग बताओ, लेकिन यह मानने वाले नहीं हैं। अलबत्ता ) यदि इन्हें तुम्हारे पालन कर्त्ता के अज़ाब की ज़रा सी हवा ( भी ) छू जाय, तो निश्चित रूप से ( जुर्म का इक़रार करने लगें और ) बोल उठें कि हाय अफ़सोस !! हम निस्सन्देह ( सत्य से अज्ञान और उद्दण्डता में ) सीमा से बाहर हो गये थे॥

ظٰلِمِيْنَ ۝ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ
فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ
مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً
وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَهٰذَا
ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝
ع
وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا
بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ
التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝ قَالُوْا وَجَدْنَآ
اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُ
كُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ
مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

और क़यामत के दिन ( लोगों के आमाल तोलने के लिये ) हम सच्ची डंडियाँ लगा देंगे, तो किसी शख़्श पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा और अगर राई के दाने के बराबर भी ( किसी का अमल ) होगा, तो हम उस को भी ( तोलने के लिये ) ला मौजूद करेंगे और हिसाब लेने को हम ( अकेले ) बस हैं० और हमने मूसा और हारून को ( हक़ व बातिल में ) फ़र्क़ करने वाली ( किताब यानी तौरात ) दी और ( राह रास्त दिखाने के लिये ) रोशनी और ( समझाने के लिये एक ) नसीहत ( नामा, मगर ) उनही परहेज़गारों के लिये० जो बे देखे अपने पर्वर्दिगार का ख़ौफ़ मानते और वह ( रोज़ ) क़यामत से भी डरते हैं० और यह ( क़ुर्आन भी ) नसीहत है, बा बरकत कि हमही ने इसको उतारा है-तो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते० और इब्राहीम को हमने शुरू ही से फ़ह्म-सलीम अता की थी और हम उन ( की सलाहियत ) से ख़ूब वाक़िफ़ थे० जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम ( के लोगों ) से कहा कि ( यह ) मूरतें जिन ( की परस्तिश ) पर तुम जमे बैठे हो, यह हैं क्या चीज़ ० वह बोले हमने अपने बड़ों को इनही की परस्तिश करते देखा है० ( इब्राहीम ने ) कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बड़े सरीह गुमराही में पड़े रहे० वह बोले क्या तू हमारे पास सच्ची बात लेकर आया है या दिल्लगी करता है० ( इब्राहीम ने ) कहा ( दिल्लगी को बात नहीं ) बल्कि आसमानों—

( अतः क़यामत के दिन इन्हें इसका मज़ा चखायेंगे )। और क़यामत के दिन हम ( हश्र के मैदान में ) न्याय की तराज़ुएं लगा देंगे। फिर ( इन्साफ़ के साथ सबके बुरे भले कर्म तोले जायंगे )। किसी पर ज़रा सा भी ज़ुल्म नहीं किया जायगा। और यदि राई के दाने के बराबर भी ( किसी की बुराई भलाई ) होगी ( तो ) उसको भी हम ( तोलने के लिये ) ले आयेंगे। और हम ( अकेले ही समस्त संसार का ) हिसाब करने वाले काफ़ी हैं। ( हे रसूल ! तुम्हारी उम्मत को सीधा मार्ग बताने के लिये हमने क़ुर्आन भेजा है )। और हमने ( तुमसे पहिले ) मूसा व हारून को ( सत्य व असत्य में ) अन्तर करने वाली और ( दिलों के अंधेरे को दूर करने वाली एक ) रोशनी और उन संयमी ( और नेक काम करने वालों ) को जो अपने पालन कर्त्ता को बिना देखे उस से डरते ( और उस पर बिना देखे ईमान लाते ) हैं और क़यामत ( की घड़ी ) से ( हर समय ) भय खाते रहते हैं, एक शिक्षा ( अर्थात तौरेत ) प्रदान की थी ॥

( अतः हे लोगो ! तुम मूसा व हारून के उम्मत वालों की तरह न बनो ) और ( अपने लोक परलोक को ख़राब न करो। बल्कि यक़ीन करो कि ) यह ( क़ुर्आन तुम्हारे लिये ) एक बरकत वाली शिक्षा है, कि जिसको हमने ( अपने विश्वास पात्र बन्दे मुहम्मद पर ) अवतीर्ण किया है। ( क्यों-हे लोगो ! ) क्या ( इस क़दर समझाने पर भी ) तुम इस ( को अल्लाह की उतारी हुई होने ) से इन्कार करोगे। और हमने ( मूसा व हारून से ) पहिले ( अपने बन्दे ) इब्राहीम को भी ( नेकी की ) शिक्षा प्रदान की थी। और हम उन ( के पद ) से विज्ञ थे। ( उनका वह समय ज़िक्र करने के योग्य है ) जब कि उन्होंने अपने बाप ( आज़र ) और अपनी जाति ( मूर्ति पूजक ) से ( सम्बोधन करके ) कहा था—लोगो ! ) यह मूर्तियां चीज़ क्या हैं, जिनकी तुम पूजा करते हो ॥

उन्होंने उत्तर दिया कि ( यह हमारे श्रेष्ठ पूज्य हैं )। हमने अपने बाप ( दादा ) को इनकी पूजा करते हुये पाया है ( और हम भी इनही की पूजा करते हैं )। ( यह सुन कर ) इब्राहीम ने कहा ( लोगो ! ) तुम और तुम्हारे बाप ( दादा ) निश्चित रूप से एक स्पष्ट पथ भ्रष्टता में ( पड़े हुये ) थे। उन्होंने पूछा कि ( हे इब्राहीम ! ) क्या वास्तव में तुम ( अपने ख़्याल में ) सत्य ( सन्देश ) लेकर हमारे पास आये हो वा तुम ( हमारे साथ ) मज़ाक़ कर रहे हो ? वह बोले ( मैं तुम्हारे साथ मज़ाक़ नहीं कर रहा ) बल्कि ( तुमको बता रहा हूं कि जिन्हें तुम पूज्य समझे हुए हो, वह तो कुछ घर के बनाये हुये और निर्जीव टुकड़े हैं )। तुम्हारा पालन कर्त्ता ( और तुम्हारा सच्चा पूज्य ) आकाशों—

और ज़मीन का पर्वर्दिगार, जिसने इनको पैदा किया (वही) तुम्हारा
भी पर्वर्दिगार है और मैं इसका गवाह हूं० और ( आहिस्ता से यह भी कहा
कि ) बख़ुदा तुम्हारे पीठ फेरे और गये पीछे मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक
चाल करूंगा० चुनाँचे ( इब्राहीम ने ) बुतों को ( तोड़ फोड़ ) टुकड़े २
कर दिया, मगर उनके बड़े ( बुत ) को इस ग़रज़ से ( रहने दिया ) कि
वह उसकी तरफ़ रुजू करें० ( जब लोगों को बुतों के तोड़े जाने का हाल
मालूम हुआ, तो ) उन्होंने कहा ( अरे! ) हमारे माबूदों के साथ यह
गुस्ताख़ी किसने की। इसमें शक नहीं कि उसने बड़ा ही ज़ुल्म किया०
( बाज़ ) बोले कि वह नौ जवान ( आदमी ) जिसको इब्राहीम के नाम से
पुकारा जाता है, उसको हमने ( बुराई के साथ ) इन ( बुतों ) का तज़किरह
करते सुना है० ( लोगों ने ) कहा, तो उसको ( सब ) आदमियों के सामने
लाओ, ताकि ( जो कुछ जवाब दे ) लोग ( उसके ) गवाह रहें० ( ग़रज़
इब्राहीम बुलाये गये और ) लोगों ने ( उनसे ) पूछा कि इब्राहीम ! क्या
हमारे माबूदों के साथ यह ( हर्कत ) तूने की है० ( इब्राहीम ने ) कहा ( नहीं )
बल्कि यह ( बुत ) जो इन ( सब ) में बड़ा है, उसने यह हर्कत की ( होगी )
और अगर यह ( बुत ) बोल सकते हों, तो इनही से पूछ देखो० इस पर
लोग अपने जी में सोचे और ( आपस में ) लगे कहने कि बिला शुबहा तुम
ही बर सरे नाहक़ हो० फिर अपने सरों के बल औंधे ( उसी गुमराही
में ) धकेल दिये गये ( और इब्राहीम से बोले, तो यह बोले कि ) तुमको
तो मालूम है कि यह ( बुत ) बोला नहीं करते० ( इब्राहीम ने ) कहा, क्या
तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीजों को पूजते हो, जो न तो तुमको कुछ
फ़ायदा ही पहुंचाएं और न तुमको ( किसी तरह का ) नुक़्सान ही
पहुंचाएं० तुफ़ है तुम पर और उन चीज़ों पर, जिनको तुम ख़ुदा के
सिवा पूजते हो—

وَالْاَرْضِ الَّذِیْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰی ذٰلِكُمْ مِّنَ
الشّٰهِدِیْنَ ۝ وَتَاللّٰهِ لَاَكِیْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ
اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِیْنَ ۝ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِیْرًا
لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَیْهِ یَرْجِعُوْنَ ۝ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا
بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًی یَّذْكُرُهُمْ
یُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِیْمُ ۝ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓی اَعْیُنِ النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ یَشْهَدُوْنَ ۝ قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا
بِاٰلِهَتِنَا یٰٓاِبْرٰهِیْمُ ۝ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِیْرُهُمْ هٰذَا
فَسْئَلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا یَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓی
اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ نُكِسُوْا
عَلٰی رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ یَنْطِقُوْنَ ۝
قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُكُمْ شَیْـًٔا
وَّلَا یَضُرُّكُمْ ۝ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

افلا

और पृथ्वी का वह मालिक है, जिसने उन्हें पैदा किया ( है ) और मैं इस बात का साक्षी हूं। ( जब उन्होंने इब्राहीम का कहना न माना ) और ( उसी प्रकार अपने घर की बनाई हुई मूर्तियों को पूजा के योग्य समझते रहे, तो इब्राहीम ने चुपके से कहा कि ) ख़ुदा की सौगन्ध ! मैं तुम्हारे चले जाने के बाद अवश्य तुम्हारे बुतों का एक उपाय करके रहूंगा। अतः जब वह लोग ईद का उत्सव मनाने के लिये शहर के बाहर चले गये ) तो उन्होंने ( कुल्हाड़े मार मार के ) इन ( की मूर्तियों ) के टुकड़े २ कर दिये, मगर उनकी बड़ी ( मूर्त्ति ) को ( नहीं तोड़ा और सब मूर्तियों को तोड फोड़ कर कुल्हाड़ी बड़ी मूर्त्ति के कन्धे पर रख दी ) जिससे कि वह ( मूर्ति पूजक जब आयें; तो ) उसी की तरफ़ ध्यान करें ( और समझें कि इसी ने इन मूर्तियों को तोड़ा है ) ॥

( जब ) वह ( अपनी ईद मनाकर पूजा की रस्म पूरी करने के लिये मूर्ति-भवन में आये, और उसकी यह दशा देखी, तो बड़े परेशान हुए। और चकित होकर ) कहने लगे-हमारे पूज्यों के साथ यह ( धृष्टता पूर्ण बर्ताव ) किसने किया। निस्सन्देह ( जिसने हमारे ख़ुदाओं को यह दुख दिया ) वह ( बहुत बड़ा ) ज़ालिम है। ( उनमें से कुछ लोगों को इब्राहीम का ख़्याल आया, तो ) उन्होंने कहा, हमने एक जवान ( आदमी ) के सम्बन्ध में सुना है ( कि वह उनको बुरे शब्दों में याद करता है, उसे इब्राहीम कहते हैं। ( बहुत सम्भव है कि यह हरकत उसी ने की हो )। (जब नमरूद के दरबार तक यह ख़बर पहुंची, तो ) दरबारियों ने कहा कि उस ( आदमी ) को ( पकड़ कर सब ) लोगों की आंखों के सामने लाओ, जिससे कि वा ( उसको पहिचानें और ) गवाही दें ( कि यही हमारी मूर्तियों का अनादर किया करता था ) ॥

( उसी समय लोग दौड़े दौड़े गये और इब्राहीम को पकड़ कर नमरूद के दरबार में पेश कर दिया )। दरबारिय ने पूछा-हे इब्राहीम ! हमारे पूज्यों के साथ यह ( अनादर का बर्ताव ) क्या तुमने किया है ? उन्होंने कहा ( एक आदमी प यह दोष! तअज्जुब है ) बल्कि यह ( काम ) तो इनकी इस बड़ी ( मूर्ति ) ने ( क्रोध में आकर ) किया है। ( और यह तो ख़ु हैं, क्या यह नहीं बोलते ? )। यदि यह बोलते ( और बात कर सकते ) हों, तो इनसे ही पूछ लो ॥

( जब इब्राहीम ने उन्हें यह उत्तर दिया ) तो वह अपने दिल में सोचने लगे। ( और जब कुछ चकित से गये ) तो ( आपस में ) कहने लगे—( भाइयो ! सच्ची बात यह है ) कि वास्तव में तुम ही ( सत्य की सीमा से पृथक और ज़ालिम ( व अन्यायी ) हो। फिर ( शैतान के बहकाये में आकर ) अपने सिरों के बल औंधे हो गये। ( और बेशर्म बन बोले, इब्राहीम ! हम इनसे क्या पूछें )। तुम जानते हो कि यह सब बात ( चीत ) नहीं करते। उन्होंने कहा फिर तुम ख़ुदा छोड़ कर क्या ऐसी ( व्यर्थ ) वस्तुओं को पूजते हो, जो न तुमको कुछ लाभ पहुंचायें और न हानि पहुंचायें। अफ़सोस तुम पर भी और ( तुम्हारे ) इन ( पूज्यों ) पर भी, जिन्हें तुम ख़ुदा को छोड़ कर पूजते हो—

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ● قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ● قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا
عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ● وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ
الْاَخْسَرِيْنَ ● وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ
بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ● وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ●
وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ
اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءَ
الزَّكٰوةِ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ● وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ
حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ
تَّعْمَلُ الْخَبٰۗىِٕثَ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ●
وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ●
وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ

तो क्या तुम ( इतनी बात भी ) नहीं समझते० ( वह आपस में ) लगे कहने कि अगर तुमको ( कुछ ) करना है, तो इब्राहीम को ( आग में ) जला दो और अपने माबूदों की मदद करो ( चुनाँचे उन लोगों ने इब्राहीम को आग में झोंक दिया )० हमने ( आग को ) हुक्म दिया कि ऐ आग ! इब्राहीम के हक़ में ठण्डक और सलामती ( की मूजिब ) बन ( कि उनको किसी तरह की ईज़ा न पहुंचे। चुनांचे ऐसा ही हुआ )० और लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई करनी चाही थी, तो हमने उनही को नाकाम किया० और इब्राहीम को और ( उनके साथ उनके भतीजे ) लूत को ( नाफ़र्मान लोगों में से ) सही व सलामत निकाल कर इस ज़मीन ( शाम ) में लेजा दाख़िल किया, जिसमें हमने लोगों के लिये ( तरह तरह को ) बरकतें रक्खी हैं० और ( ख़ुदा परस्ती के सिले में ) इब्राहीम को ( एक बेटा ) इनायत किया इस्हाक़ ( जिसके लिये उन्होंने दुआ की थी ) और ( बेटे के अलावा पोता ) याक़ूब अपनी तरफ़ से और सब ही को तो हमने नेक उठाया० और इनको ( लोगों का ) पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से ( उनको ) हिदायत करते थे और उनकी तरफ़ नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने की वही भेजी और ( सब ) हमारी ही इबादत में लगे रहते थे० और लूत को भी हमने पैग़म्बरी के इख़्तियारात दिये और इल्म ( भी दिया ) और हमने लूत को उस बस्ती से, जहां के लोग नापाक काम किया करते थे नजात दी । इसमें शक नहीं कि वह बड़े बुरे ( और ) बदकार लोग थे० और लूत को हमने अपनी मेहर्बानी ( की पनाह ) में ले लिया, क्योंकि वह नेक बन्दों में से थे० और ( ऐ पैग़म्बर ! लोगों को ) नूह ( का वाक़िआ भी याद दिलाओ ) जब उन्होंने ( हमको ) पुकारा ( और यह बहुत ) पहिले ( का वाक़िआ है ) तो हम ने उनकी सुनली और उनको—

---

( हे मूर्खो ! ) क्या तुम ( इतनी मोटी बात भी ) नहीं समझते ( कि यह बेकार और तुम्हारे हाथों के बनाये हुए लकड़ी पत्थर के टुकड़े पूज्य बनाने के योग्य नहीं हैं )। ( अपने पूज्यों के विरुद्ध इब्राहीम के या कठोर वचन और मुंह बन्द करने वाला उत्तर सुन कर आपस में कहने लगे--भाइयो ! ) यदि तुम ( कुछ ) करना चाहते तो इसको ( आग में ) जला दो और अपने पूज्यों की सहायता करो। ( अतः उन्होंने एक लम्बे चौड़े मैदान में सैकड़ों मन कड़ियाँ इकट्ठी कीं, और उनमें आग लगादी। जब वह अच्छी तरह भड़क उठी और उसकी लपटें आकाश तक पहुंचने लगीं। तो उन्होंने इब्राहीम को पकड़ कर अत्यन्त बेदर्दी के साथ गोफनी के द्वारा उसमें डाल दिया। उधर ) हमने आज्ञा दी कि हे आग ! ( ख़बरदार !! जो हमारे ) इब्राहीम पर ( तनिक भी आँच आई ) तू ( उन्हें हानि पहुंचाने के बजाय उनके लिये ) ठंडक और ( सरासर सुख तथा ) आराम ( की सामग्री ) बन जा। ( अतः वह नमरूद की आग इब्राहीम के लिये एक सुख का स्थान बन गई )। और उन्होंने ( अर्थात नमरूदियों ने जब ) उनका बुरा चाहा, तो हमने उनही को हानि उठाने वाला बना दिया ॥

और हमने उनको और लूत को ( इन लोगों के अत्याचार से ) बचाकर उस पृथ्वी में लेजाकर पहुंचाया, जिसमें हमने ( समस्त ) संसार के लिये ( बड़ी ) बरकत रक्खी है । और हमने इब्राहीम को ( केवल अपनी कृपा व दया से ) भेंट के तौर पर याक़ूब व इस्हाक़ ( जैसे बेटे पोते ) प्रदान किये और ( उन ) सबको हमने नेक ( और उच्च पद वाला नबी ) बनाया । और हमने उन्हें ( लोगों का पेशवा और ) इमाम बनाया कि वह हमारी आज्ञानुसार ( उन्हें ) सीधा मार्ग बताते थे । और हमने उनके पास नेक कामों और ( मुख्यतया ) नमाज़ अदा करने और ज़कात देने की वही भेजी थी । और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) वह हमारे ( सच्चे और ) पूजा करने वाले ( बन्दे ) थे ॥

और लूत को भी हमने ज्ञान व बुद्धि प्रदान की थी और हमने उन्हें एक ऐसी बस्ती से मोक्ष दी थी, जो ( सरासर ) बुरे कर्मों के करने वाले थे । निस्सन्देह वह ( अर्थात् उस बस्ती के निवासी अत्यन्त ) बुरे ( और ) कुकर्मों ( व दुष्ट ) लोग थे। ( हमने लूत को उनके ज़ुल्म से छुड़ाया ) और हमने उन ( के नाम ) को अपनी दया ( के पाने वालों ) में दाख़िल कर लिया ( और इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि वह ( भी बड़े ) नेक लोगों से थे । और ( हे रसूल ! ) नूह ( का क़िस्सा भी वर्णन करने के योग्य है )। जब उन्होंने ( तूफ़ान के समय हमको पुकारा और ) उस ( इब्राहीम के समय ) से ( बहुत ) पहिले ( हमको ) पुकारा, तो हमने उनकी पुकार को सुना और उन्हें—

وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ
سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ
اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ
وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ
وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ
الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝
وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ
بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ
عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا
فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ
مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ
وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ

और उनके (ख़ान्दान के) लोगों को (तूफ़ान की) बड़ी (सख़्त) मुसीबत से नजात दी० और जो लोग हमारी आयतों को झुटला-या करते थे, उनके मुक़ाबिले में हमने उनकी मदद की। बेशक यह लोग (भी बड़े) बुरे लोग थे, तो हमने इन सबको ग़र्क़ कर मारा० और (ऐ पैग़म्बर!) दाऊद और सुलैमान (का वाक़िआ भी लोगों को याद दिलाओ) जबकि वह दोनों एक खेती के बारे में, जिसमें कुछ लोगों की बकरियां (रात के वक़्त) जा पड़ी थीं, फ़ैसला करने लगे और हम उनके फ़ैसले को देख रहे थे० तो (बाप बेटों की राय में हुआ इख़्तिलाफ़ और) हमने (सही) फ़ैसला सुलैमान को समझा दिया और (यूं तो) हमने दोनों ही को फ़ैसले का सलीक़ा और इल्म दिया था और पहाड़ों को दाऊद का ताबे कर दिया था कि उनके साथ (साथ ख़ुदा की) तस्बीह (व तक़्दीस) करते और (इसी तरह) परिन्दों को (भी उनका ताबे कर दिया था) और हम (क़ादिर मुत्लक़ हैं, ऐसे २ अजायबात) किया ही करते हैं० और दाऊद को हमने तुम लोगों के एक लिबास (जङ्ग यानी ज़िरह) का बनाना भी सिखा दिया था कि तुमको तुम्हारी (एक दूसरे की) ज़द से बचाये। तो (लोगो!) तुम (हमारी इस नेअमत का भी) शुक्र करोगे (या नहीं?)० और हमने ज़ोर की हवा को (भी) सुलैमान का ताबे कर दिया था कि वह उनके हुक्म से मुल्क (शाम) की तरफ़ को चलती, जिसमें हमने (तरह तरह की) बरकतें दे रक्खी थीं और हम सब चीज़ों (के हाल) से आगाह थे० और देवों में से बाज़ तो ऐसे थे, जो सुलैमान के लिये (दरियाओं में) ग़ोते लगाते और इसके सिवा दूसरे दूसरे काम भी करते और हम ही उनको थामे हुये थे (कि वह मेहनत से बेदिल होकर कहीं को भाग कर जा नहीं सकते थे)० और (ऐ पैग़म्बर!) अय्यूब (की वह हालत याद करो) जब उन्होंने अपने पर्वर्दिगार को पुकारा–

---

और उनके (ईमानदार) साथियों को (उस) बड़ी भारी मुसीबत से छुड़ाया। और हमने उन लोगों के मुक़ाबिले में उनकी सहायता की, जो हमारी आयतों को झूठा बताते थे। निस्सन्देह यह लोग (भी बहुत) बुरे थे। अतः हमने उन सबको (तूफ़ान में) डुबो दिया। और (हे रसूल! लोगों को) दाऊद व सुलैमान (का भी वह क़िस्सा अवश्य सुनाओ) जब कि वह (एक ऐसे) खेत (के सम्बन्ध) में फ़ैसला कर रहे थे, जिसमें कि रात के समय (कुछ) लोगों की बकरियाँ (घुस कर उस खेत को) चर गई थीं। और हम उनके (इस) फ़ैसले से (अच्छी तरह) जानकार थे (जो दाऊद ने किया था)॥

अतः हमने सुलैमान को (जो उचित फ़ैसला था) वह समझा दिया (जिसमें दोनों समूह प्रसन्न हो गये)। और हमने (उन दोनों में से) प्रत्येक को हिकमत व चतुरता प्रदान की थी और (चमत्कार भी दिये थे। अतः) हमने पहाड़ों और पक्षियों को दाऊद का (ऐसा) आधीन बना दिया था कि (जब दाऊद ख़ुदा की पवित्रता वर्णन करते, तो) वह (पर्वत) और पक्षी (उनके साथ) ख़ुदा का ज़िक्र करने लगते थे। और (इन समस्त बातों के प्रदान) करने वाले हम थे॥

और हमने तुम्हारे (लाभ के) लिये ज़िरह बनाना (भी) उनको सिखाया था, जिससे कि ज़िरह तुमको तुम्हारे (शत्रु के) वार से बचाये। तो (हे दुनिया वालो!) क्या तुम (हमारी इस नेअमत के) कृतज्ञ होगे? और (इसी तरह) हमने तेज़ हवा को सुलैमान के आधीन कर दिया था, कि वह उनकी आज्ञानुसार उस पृथ्वी की ओर चलती थी, जिसे हमने बरकत वाली बना दिया है (अर्थात शाम की पृथ्वी)। और हम हर वस्तु (और हर मनुष्य के पद) से जानकार हैं। (जानते हैं कि कौन सी वस्तु किस मनुष्य को देनी चाहिये)॥

और (बाज़) बाज़ शैतान भी (उनके आधीन थे) जो उनके लिये (बड़ी २ नदियों में) ग़ोते लगाते थे और इसके अतिरिक्त और काम भी करते थे। और हम उनकी निगरानी करने वाले थे (कि उनकी आधीनता का फन्दा गले से निकाल कर कहीं वह भाग न जाँय)। और (हे रसूल!) अय्यूब (का भी वह समय वर्णन करने के योग्य है) जब कि उन्होंने (अपनी मुसीबत के समय अत्यन्त दीनता व आधीनता के साथ) अपने पालन कर्त्ता को पुकारा (और कहा) था—

انی مسنی الضر وانت ارحم الرحمین ۚ فاستجبنا
له فکشفنا ما به من ضر واتینه اهله
ومثلهم معهم رحمة من عندنا وذکری للعبدین
واسمعیل وادریس وذا الکفل کل من
الصبرین ۚ وادخلنهم فی رحمتنا انهم
من الصلحین ۚ وذا النون اذ ذهب مغاضبا
فظن ان لن نقدر علیه فنادی فی الظلمت
ان لا اله الا انت سبحنک انی کنت من
الظلمین ۚ فاستجبنا له ونجینه من الغم
وکذلک ننجی المؤمنین ۚ وزکریا اذ نادی
ربه رب لا تذرنی فردا وانت خیر الورثین
فاستجبنا له ووهبنا له یحیی واصلحنا له
زوجه انهم کانوا یسرعون فی الخیرت ویدعوننا

कि मुझको ( यह ) बीमारी लग गई है और तू सब रह्म करने वालों से ज़्यादह रह्म करने वाला है ( तो मेरे हाल पर रह्म फ़र्मा )० तो हमने उनकी ( फ़रियाद ) सुन ली और जो दुख उनको था, उसको दूर कर दिया और उनको उनके अह्ल ( व अयाल ) अता फ़र्माये, बलिक उनके साथ इतने ही और-( यह महज़ ) हमारी मेहर्बानी थी ( जो हमने उन पर की ) और इबादत करने वालों के लिये ( यह वाक़िआ क़ाबिल ) यादगार ( है, ताकि उनको इबादत की तरफ़ ज़ियादा रग़बत हो )० और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल्किफ़्ल ( के हालात याद करो, यह ) सब साबिर बन्दे ( हो गुज़रे ) हैं० और हमने इन ( सब ) को अपनी रह्मत ( के साये ) में लिया। कुछ शक नहीं कि यह लोग नेक बन्दे थे० और ज़न्नून ( यानी यूनुस ) को याद करो, जब ख़फ़ा होकर चल दिये और ( जाते वक़्त गुस्से में बतक़ाज़ाये बश्रियत ) उनको ऐसा वाहिमा गुज़रा कि हम उन पर क़ाबू नहीं पा सकेंगे, तो (आख़िर कार आजिज़ आकर ) अंधेरों के अन्दर चिल्ला उठे कि ( ऐ ख़ुदा ! ) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तू पाक (ज़ात) है। मैंने ( बड़ा) ज़ुल्म किया० तो हमने उनकी ( फ़रियाद ) सुन ली और उनको ग़म से नजात दी और हम ईमान वालों को इसी तरह बचा लिया करते हैं० और ज़करीया को ( याद करो ) जब उन्होंने ( औलाद की तरफ़ से मायूस होकर ) अपने पर्वर्दिगार को पुकारा कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मुझको अकेला ( यानी बे औलाद ) न छोड़ ! और ( यूं तो ) तू सब वारिसों से बेहतर ( वारिस ) है० तो हमने उनकी ( फ़रियाद ) सुन ली और उनको यह्या ( फ़र्ज़न्द ) इनायत किया और उनकी बीबी को उनके लिये भला चंगा कर दिया। यह लोग ( जिनका ऊपर मज़्कूर हुआ ) नेक कामों में जल्दी करते थे और हमको—

---

कि ( हे मेरे पालन कर्त्ता ! ) मुझे ( यह ) दुःख पहुंच गया है। और तू सब दयावानों से अधिक दया करने वाला है ( मेरे हाल पर भी दया कर )। अतः हमने उनकी दुआ स्वीकार करली और जो दुःख उनको ( पहुंच गया ) था, हमने उसको दूर कर दिया। और उनके बाल बच्चे ( जो उनसे बिछुड़ गये थे ) उनको दे दिये। बल्कि ( केवल ) अपनी मेह-र्बानी ( करने ) और पूजकों के लिये यादगार ( के तौर पर रहने ) के लिये उन ( बाल बच्चों ) के साथ वैसे ही ( बच्चे ) और भी प्रदान कर दिये। और ( हे रसूल ! ) इस्माईल व इद्रीस व ज़ुल्किफ़्ल का वर्णन करो ! ( और लोगों को बताओ ) कि ( वह सबके ) सब ( नेकी पर अत्यन्त ) स्थिर रहने वालों में से थे॥

और हमने उनको ( उनके संतोष व धैर्यता के द्वारा ) अपनी कृपा में ले लिया था। ( इसमें ज़रा ) सन्देह नहीं कि वह ( लोग ) नेक लोगों में से थे। और ( हे रसूल ! ) मछली वाले ( नबी अर्थात् यूनुस के भी उस समय का वर्णन करो ) जबकि वह ( अपनी विधर्मी जाति के पास से उनके ईमान स्वीकार न करने कारण ) क्रोध में भरके चले गये (और) फिर वह समझ बैठे कि ( अब ) हम उन पर कुद्रत ही नहीं रखते। ( लेकिन जब हमने उनको इस स्वाधीनता का यह दंड दिया कि नदी में गिराये गये और मछली उनको निगल गई ) तो ( मछली के पेट और रात के ) अन्धकारों में उन्होंने पुकारा ( और आधीनता के साथ कहा कि हे मेरे पालन कर्त्ता ! ) तेरे अतिरिक्त कोई पूज्य ( बनने के योग्य ) नहीं। तू ( समस्त दोषों से ) पाक है। निस्सन्देह मैं ( अपनी जान पर स्वयं ही ) ज़ुल्म करने वालों में से हूं। ( मुझे अपनी भूल का पश्चाताप है ) ॥

अतः हमने उनकी विनती स्वीकार करली। और उनको ( मछली के पेट में रहने के दुःख और पानी के अन्दर के ) ग़म से मुक्त किया। और हम इसी प्रकार ईमानदारों को ( ग़म व रंज से ) मुक्त किया करते हैं और ( हे रसूल ! ) ज़करीया ( के भी उस समय का वर्णन करो ) जबकि उन्होंने अपने पालन कर्त्ता को ( धीरे से ) आवाज़ दी थी—( और दीनता के साथ इस विषय की प्रार्थना की थी कि ) हे मेरे पालन कर्त्ता ! तू मुझको (सन्तान प्रदान कर और मुझको ) अकेला न छोड़ ( अर्थात् सन्तान रहित न रख )। और ( यूं तो एक दिन सबको मरना है )-शेष रहने वालों में सबसे अच्छा ( शेष रहने वाला ) तो तू ही एक है॥

अतः हमने उनकी दुआ को स्वीकार कर लिया और उन्हें यह्या ( जैसा नेक बेटा ) प्रदान किया। और उनके लिये उनकी बीबी ( के बाँझ पन ) को ( दूर करके उन्हें सन्तान पैदा करने के ) योग्य बना दिया। निस्सन्देह यह ( समस्त नबियों का समूह ) नेक कार्यों में ( बड़ी ) जल्दी करता था॥

( हमारे फ़ज़्ल की ) तवक़्क़ो और ( हमारे अज़ाब के ) ख़ौफ़ से पुकारते रहते और हमारे आगे आजिज़ी किया करते थे० और उन बीबी ( मर्यम ) को ( याद करो ! ) जिन्होंने अपनी नामूस की हिफ़ाज़त की, तो हमने उनमें अपनी रूह फूंक दी ( और उनको बे शौहर हमल रह गया ) और हमने उनको और उनके बेटे ( ईसा ) को दुनिया जहान के लोगों के लिये ( अपनी कुद्रत कामिला की ) निशानी क़रार दिया० ( मुसल्मानो ! मज़हब के एतिबार से ) यह लोग तुम्हारे ही गिरोह के हैं ( और तुम सबका ) एकही गिरोह ( है ) और हमही तुम्हारे पर्वर्दिगार हैं, तो हमारी ही इबादत करो० और लोगों ने आपस में ( इख़्तिलाफ़ करके ) अपने दीन को टुकड़े २ कर डाला, ( लेकिन आख़िरकार ) सब हमारी ही तरफ़ लौट कर आने वाले हैं ( उस वक़्त हम इनके इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला कर देंगे )० तो जो शख़्स नेक काम करे और वह ईमान भी रखता हो, तो उसकी कोशिश अकारत होने वाली नहीं और हम उसके आमाल नेक सब लिखते जाते हैं० और जिस बस्ती को हमने ( लोगों की नाफ़र्मानी की वजह से ) हलाक कर दिया हो, मुम्किन नहीं कि वह लोग ( क़यामत को हमारे हुज़ूर में ) लौट कर न आएं ० हाँ इतना तवक़्क़ुफ़ ज़रूर होगा कि याजूज और माजूज ( सद्दे-ज़िल्क़र्नैन की क़ैद से ) खोल दिये जायें और वह हर बुलंदी से ढलकते हुए चले आयें० और ( क़यामत का ) वादा बरहक़ नज़दीक आ पहुंचे, तो एक दम से काफ़िरों की आँखें खुली की खुली रह जाएँ ( और बोल उठें ) हाय हमारी कमबख़्ती ! हम तो इस ( दिन की तरफ़ ) से ग़फ़लत ही में रहे, बल्कि ( वाक़ई बात तो यह है कि ) हमही क़ुसूरवार थे० ( उस दिन हुक्म दिया जायगा कि अब ) तुम और जिन चीज़ों की तुम ख़ुदा के सिवा परस्तिश करते थे ( वह सब ) दोज़ख़ का ईंधन बनोगे—

رَغَبًا وَّرَهَبًا وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝ وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ
فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا
وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝ وَتَقَطَّعُوْٓا
اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۝ فَمَنْ يَّعْمَلْ
مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ
لِسَعْيِهٖ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ۝ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ
اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا
فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ
يَّنْسِلُوْنَ ۝ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ
شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يٰوَيْلَنَا
قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ
وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ

ع

और प्रेम से और भय से हमारी पूजा करते ( रहते ) थे। और यह ( सबके सब ) हमारे सामने अत्यन्त आधीन रहते थे। और ( हे रसूल ! ) वह ( अर्थात् मर्यम भी ज़िक्र के योग्य हैं ) जिन्होंने अपनी इन्द्रियों की रक्षा की ( और ) फिर हमने ( जिब्रील के द्वारा ) उनमें अपनी आत्मा फूंक दी ( और बिना किसी मनुष्य के हाथ लगाये उन्हें लड़के का गर्भ रह गया )। और हमने उनको और उनके बेटे ( मसीह ) को संसार वालों के लिये ( अपनी महान शक्ति की ) एक निशानी बना दिया। ( लोगो ! ) यह ( धर्म-इस्लाम ही ) तुम्हारा मज़हब है ( जिस पर कि पहिले नबी चलते थे— पहिले नबियों का और तुम्हारा वास्तव में ) एक ही धर्म ( है ) और ( केवल ) हम ( ही ) तुम्हारे ( और उनके स्वामी व ) मालिक हैं। अतः तुम ( को चाहिये कि केवल ) हमारी ही पूजा करो ( और शिर्क व मूर्ति पूजा को छोड़ दो ) ॥

और लोगों ने ( केवल मूर्खता व अज्ञानता से ) अपने धर्म के आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिये ( मगर कब तक ! अख़िरकार उन्हें मरना है और मर कर ) उन्हें हमारे ही पास लौट कर आना है ( उस समय हम उनसे पूछ लेंगे कि संसार में क्या करते रहे )। फिर जिस ( मनुष्य ) ने ( संसार में ) कुछ नेकियाँ ( भी ) की होंगी और वह ईमानदार भी होगा, तो उसकी कोशिश ( मरने के पश्चात् अर्थात् क़यामत के दिन कभी ) व्यर्थ नहीं जायगी ( उसका बदला उसको अवश्य दिया जायगा )। और हम तो उस ( की चेष्टा ) को ( अर्थात् उसकी नेकी बदी को उसके कर्मों की पुस्तक में बराबर ) लिखते ( रहते ) हैं। और ( तुम लोगों से कहदो कि ) हम जिन बस्तियों को नष्ट कर चुके हैं, उनके ( नष्ट हुए निवासियों के ) लिये ( किसी प्रकार ) यह सम्भव नहीं है कि वह ( क़यामत के दिन हमारे दरबार में हिसाब देने के लिये ) न आयें ॥

( और क़यामत उस समय तक न आयेगी ) जब तक कि ( उसकी निश्चित निशानियां न दीख पड़ें, जैसे ) याजूज माजूज ( सिकन्दर की बनाई हुई दीवार से ) न खोल दिये जायं। और वह ( वहां से इतनी संख्या में न निकल पड़ें कि यह ज्ञात हो कि ) हर ऊँचाई ( और हर स्थान ) से ( वही ) लुढ़कते हुए चले आ रहे हैं। और ( ख़ुदा का यह ) सत्य वादा ( अब तो बिल्कुल निकट ही आ गया। ( हे रसूल ! जब यह वादा पूरा हो जायगा और क़यामत नियत हो जायगी ) तो ( भय तथा अचम्भे के मारे ) इन मुन्किरों की आँखें फटी की फटी रह जायँगी—( और बोल उठेंगे ) हाय हमारा अभाग्य ! हम तो इस ( भयानक दिन की ओर ) ( जीवन भर ) अज्ञानता ( ही ) में ( पड़े ) रहे। ( जो इसकी सूचना देते थे, वह झूठे न थे ) बल्कि ( सरासर ) हम ही ज़ालिम ( व उद्दण्ड और सत्य के विरोधी ) थे। तुम और ( तुम्हारे वह पूज्य ) जिन्हें तुम ख़ुदा के अतिरिक्त पूजते हो, नर्क का ईंधन बनेंगे-

(और) तुम (सब) को दोज़ख़ में जाना होगा० और यह (तुम्हारे माबूद सच्चे) माबूद होते, तो दोज़ख़ में न जाते और (अब) तुम सब को इसी में हमेशा (हमेशा) रहना है० इन लोगों को दोज़ख़ में चिल्वाँस लगी होगी और वह (अपने चिल्लाने के गुल में) वहाँ (किसी दूसरे की बात भी) न सुन सकेंगे० बेशक जिन लोगों के लिये हमारी तरफ़ से (उनकी तक़्दीर में) पहिले से भलाई (लिखी जा चुकी) है, वह दोज़ख़ से दूर (ही दूर) रक्खे जायेंगे० उसकी भिनँग भी तो उनके कानों में नहीं पड़ेगी और वह अपनी मनमानी मुरादों में हमेशा (हमेशा) रहेंगे० और उनको (क़यामत का) बड़ा भारी ख़ौफ़ भी (किसी तरह) परेशान नहीं करेगा और फ़रिश्ते उनको (हाथों हाथ) लेंगे (और कहेंगे कि) यही तो वह तुम्हारा दिन है, जिसका (दुनिया में) तुमसे वादा किया जाता था० (यह वह दिन होगा) जबकि हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे; जैसे ख़तों का मक्तूब लपेट लिया जाता है (और) जिस तरह हमने अव्वल (बार मख़्लूक़ात को) पैदा किया था, उसी तरह उनको दुबारा भी (पैदा) करेंगे, (यह एक) वादा (है, जिसका पूरा करना) हमने (अपनी ज़ात) पर (लाज़िम कर लिया है और) हम उसको ज़रूर करके रहेंगे० और हम ज़बूर में (पन्द व) नसीहत के बाद यह बात लिख चुके हैं कि हमारे नेक बन्दे ज़मीन (की सल्तनत) के वारिस होंगे० जो लोग ख़ुदा की इबादत करने वाले हैं, बिला शुबहा उनके लिये इसमें (एक बशारत का) पहुंचा देना है० और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तो तुमको दुनिया जहान के लोगों के हक़ में रह्मत (बनाकर) भेजा है और बस० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मेरी तरफ़ तो इसी बात की वही आती है कि सिर्फ़ ख़ुदाए वाहिद ही तुम्हारा माबूद है—

اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ● لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا
وَرَدُوْهَا وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ● لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ
وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ● اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ
مِّنَّا الْحُسْنٰٓى اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ● لَا
يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ
خٰلِدُوْنَ ● لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ●
يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَاْنَآ
اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ وَعْدًا عَلَيْنَا اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ●
وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ
الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ● اِنَّ فِيْ هٰذَا
لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ● وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً
لِّلْعٰلَمِيْنَ ● قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

---

(और इसमें ज़रा सा भी सन्देह नहीं कि) तुम उस (नर्क) में गिर कर रहोगे। (मूर्खो! अच्छी तरह समझ लो कि) यदि यह सब (लकड़ी पत्थर के टुकड़े) पूज्य होते, तो (कभी) इसमें (अर्थात् नर्क की आग में) न दाख़िल होते और समस्त (पूजक और यह सब पूज्य) सर्वदा इसी में (पड़े हुए जलते) रहेंगे। (और दुःख के मारे) उस (नर्क) में उन (की हाय हाय) का (एक) शोर (बरपा) होगा। और वह उसमें (एक दूसरे के रोने चिल्लाने को) सुन (भी) न सकेंगे। अलबत्ता (वह भाग्यशाली मनुष्य) जिनके लिये हमारी तरफ़ से (उनके भाग्य में) पहिले से नेकी (ही नेकी लिखी जा चुकी) है, वह इस (नर्क की अग्नि) से (परे ही) परे रहेंगे। और इस (की आग) के भड़कने की आवाज़ तक भी न सुनेंगे। और वह अपनी इच्छित वस्तुओं (की मौजूदगी) में सर्वदा (सुख व चैन से) रहेंगे॥

(और) उन्हें (क़यामत की वह) बड़ी घबराहट शोकातुर न करेगी। और फ़रिश्ते उनकी अगवानी करेंगे। (और कहेंगे कि) यही वह तुम्हारा (सुख दाता) दिन है, जिसका वादा (संसार में) तुमसे किया जाता था। (क़यामत का दिन वह भयानक दिन होगा) जिस दिन हम (इन पक्के और ठोस) आकाशों को (बिलकुल नर्म और मुलायम करके) इस तरह तह कर डालेंगे, जैसे लिखे हुए काग़ज़ को लपेट लेते हैं। जिस प्रकार हमने (बिना किसी कठिनता के आकाश को) पहिले पैदा किया था, उसी तरह हम उसको (बिना किसी कठिनता के नष्ट कर देंगे और) फिर पैदा कर देंगे। (और यह क़यामत का वादा) हमारे ऊपर (एक) आवश्यक वादा है। (अर्थात्) हम अवश्य (इस वादे को पूरा) करेंगे॥

और (ईमानदारों को स्वर्ग का पुरस्कार हम आज कोई नया नहीं दे रहे, बल्कि) हम तो (लौह मौहफ़ूज़ में) लिखने के पश्चात (किताब) ज़बूर में भी इस (बात) को लिख चुके हैं, कि पृथ्वी के मालिक हमारे नेक बन्दे होंगे। (अर्थात् जो मनुष्य राज्य करने की योग्यता रखते होंगे, उन्हीं को पृथ्वी का राज्य दिया जावेगा)। निस्सन्देह इस (क़ुर्आन) में भी (एक ख़ुदा की) पूजा करने वाले लोगों के लिये (एक प्रकार का) प्रचार है। और (हे मुहम्मद!) हमने तो तुमको संसार वालों के लिये रह्मत बनाकर भेजा है। तुम (लोगों से) कहदो, मुझे तो इसी बात की वही आती है कि (मैं तुमको बताऊँ कि लोगो!) तुम्हारा पूज्य केवल एक ही पूज्य है—

فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ● فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنتُكُمْ عَلَىٰ
سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ●
إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ●
وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ
حِينٍ ● قَالَ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ●

سورة الحج مكية وهي ثمان وسبعون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ
شَيْءٌ عَظِيمٌ ● يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ
عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَىٰ وَمَا هُم بِسُكَارَىٰ وَلَٰكِنَّ
عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ● وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ

بغير

तो क्या तुम ( उसके बन्दए ) फ़र्मांबर्दार ( बनते ) हो ( या नहीं )० पस अगर ( लोग ) न मानें, तो ( इनसे ) कहदो कि मैंने तुम ( सब ) को यक्साँ तौर पर ख़बर करदी है और मैं नहीं जान्ता कि जिस ( अज़ाब ) का तुमसे वादा किया जाता है, ( उसका वक़् ) क़रीब आ लगा है या ( अभी ) दूर है० वह अल्लाह उस बात को भी जान्ता है जो पुकार कर कही जाय और उसको भी जानता है, जो तुम लोग छुपाते हो० और मैं नहीं जान्ता-शायद ( ख़ुदा को ) इस मोहलत से तुम्हारी आज़माइश ( मंज़ूर ) हो और ( यह ग़रज़ हो कि ) एक वक़् ( ख़ास ) तक ( तुमको दुनियावी ) फ़ायदे ( पहुंचते रहें )० ( पैग़म्बर ने लोगों का इसरार बेजा देख कर आख़िर ) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! ( मेरे और इन काफ़िरों के इख़्तिलाफ़ में ) हक़ हक़ फ़ैसला करदे और हम मुसल्मानों का पर्वर्दिगार (ख़ुदाए) रह्मान है, जिससे हम उन बातों के मुक़ाबिले में जो तुम लोग बनाते हो, मदद माँगते हैं०

## सूरत—हज्ज

### मक्की, यानी मक्केमें नाज़िल हुई। इसमें ७८ आयतें और १० रुकूअ हैं

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)० लोगो ! अपने पर्वर्दिगार ( के अज़ाब ) से डरो ( क्योंकि ) क़यामत का ज़लज़ला एक बड़ी ( सख़्त ) मुसीबत होगी० जिस दिन वह तुम्हारे सामने आ मौजूद होगी, हर दूध पिलाने वाली ( मारे डरके ) अपने दूध पीते ( बच्चे ) को भूल जायगी और जितनी हमल—वालियाँ हैं, सबके हमल गिर पड़ेंगे और ( मारे बद हवासी के ) लोग मतवाले दिखाई देंगे। हालांकि वह मतवाले नहीं, बल्कि ख़ुदा का अज़ाब बड़ा सख़्त है, ( जिसके डर से लोग बद हवास हो रहे हैं )० और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो बे जाने ( बूझे ) ख़ुदा ( के बारे ) में झगड़ते—

---

तो ( यह समझ लेने के पश्चात् ) तुम ( उसके ) आधीन रहने वाले ( बन्दे बनते ) हो ( वा नहीं ? )। (हे रसूल ! तुम इन लोगों को जितना समझाना चाहिये था, समझा चुके )। तो यदि यह ( अब भी तुम्हारे उपदेश पर दृढ़ रहने से ) विमुखता करें, तो तुम कहदो कि मैं तुमको ( किसी को कम या अधिक नहीं, बल्कि ) बराबरी के तौर पर ( सीधे मार्ग से ) सचेत कर चुका। और मैं नहीं जानता कि ( पुण्य व दंड का ) जो वादा तुमसे किया जा रहा है ( उसके पूरा होने का समय ) निकट है या दूर-( इसकी सूचना देना मेरा काम नहीं है। लेकिन इतना कह सक्ता हूं कि वह पूरा अवश्य होगा )। वह ( विज्ञ ख़ुदा) जो तुम प्रकट रूप से करते हो और जो तुम छिपाये हुये हो, उससे ( भली भांति ) अभिज्ञ है। ( जब उस वादे के पूरा होने का समय आयेगा, तो तुमको अपने गुप्त और प्रगट, समस्त कर्मों का पूरा पूरा बदला मिल जायगा ) और मैं ( तो ) नहीं जानता ( लेकिन बहुत ) सम्भव है कि इससे तुम्हारी परीक्षा ( ख़ुदा को मंज़ूर ) हो। और तुमको एक ( नियत ) समय तक आराम ( और ढील ) देना ( ख़ुदा चाहता ) हो। ( आख़िर जब इन काफ़िरों की बुरी बातों से हमारे रसूल घबरा गये, तो हमसे ) कहने लगे, हे मेरे पालन कर्त्ता ! ( मेरे और इन काफ़िरों के बीच ) तूही न्याय कर ! और ( उन काफ़िरों की ओर देखकर कहने लगे-लोगो ! ) हमारा पालन कर्त्ता ( ख़ुदा ) दयालु है। तुम्हारी ( इन झूठी ) बातें बनाने के मुक़ाबिले में उसी से सहायता मांगी जा सक्ती है ( और बस ) ॥

## सूरत—हज्ज

### मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ७८ आयतें और १० रुकूअ हैं ॥

हे लोगो ! अपने पालन कर्त्ता (के अज़ाब) से डरो। निस्सन्देह क़यामत ( आने वाली है। उस ) का भूकम्प बड़ी ( भारी भयंकर) वस्तु है। जिस दिन तुम उसको देखोगे, सब दूध पिलाने वालियाँ ( मारे भय के ) अपने ( दूध पीते बच्चों को ) दूध पिलाने से ग़ाफ़िल हो बैठेंगी। और सब गर्भ वाली औरतों के गर्भ क्षीण हो जायँगे। और ( हे देखने वाले ! ) तू ( उस दिन ) लोगों को नशे की ( सी ) दशा में देखेगा, यद्यपि वह नशे में नहीं होंगे। बल्कि अल्लाह का अज़ाब कठोर है—( जिसके कारण उनकी यह दशा होगी कि मानो वह नशे में हैं। लेकिन लोग फिर भी अपने कुकर्मों से बाज़ नहीं आते )। और कुछ लोग ( तो ) ऐसे ( मूर्ख ) हैं, जो अल्लाह के विषय में बेजाने ( बूझे ) झगड़ते हैं—

बِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيدٍ كُتِبَ عَلَيْهِ
أَنَّهُ مَن تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلُّهُ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ
السَّعِيرِ ● يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ
مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنٰكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن
نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ
وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ
مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا أَشُدَّكُمْ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم
مَّن يُرَدُّ إِلَىٰٓ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ
مِنۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً
فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ
وَأَنۢبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيجٍ ● ذٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ
هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

और हर शैतान सर्कश के पीछे हो लेते हैं० जिसकी निस्बत (ख़ुदा के हां से) यह (हुक्म) लिक्खा जा चुका है कि जो इसकी रिफ़ाक़त करेगा, तो यह उसको गुमराह करके दोज़ख़ के अज़ाब में पहुंचा कर रहेगा० लोगो! अगर तुमको (क़यामत के दिन फिर) जी उठने में किसी तरह का शक हो, तो हमने तुमको (शुरू में) मिट्टी से फिर नुत्फ़े से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर पूरी बनी हुई (सुडौल) और अधूरी बनी हुई (बेडौल) बोटी से पैदा किया, ताकि तुम पर (अपनी क़ुद्रत) ज़ाहिर करें—(तो मरे पीछे फिर तुम्हारा जिला उठाना क्या मुश्किल है) और (औरतों के) पेट में हम जिस (नुत्फ़े) को चाहते हैं (एक) वक़्त मुक़र्रर तक ठहराये रखते हैं। फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं। फिर (तुमको पर्वरिश करते हैं)—ताकि तुम (बड़े होकर) अपनी जवानी को पहुंचो और तुममें से कोई कोई तो (उम्र तबई से पहिले) मर जाता है और कोई कोई सबसे ज़ियादह निकम्मी उम्र (यानी बुढ़ापे की तरफ़ लौटा कर लाया जाता है) कि (सब कुछ) जाने पीछे (आख़िर में सत्तरा बहत्तरा होकर) कुछ समझे (बूझे ख़ाक) नहीं और (ऐ मुख़ातब!) तू ज़मीन को देखता है (कि) बेहिस व हर्कत (पड़ी है)। फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं, तो वह लहलहाने और उभरने लगती और हर तरह की ख़ुशनुमा रोईदगी उगाती है० यह (सब तसर्रुफ़ात) इस बात की दलील हैं कि अल्लाह बरहक़ है और (नीज़) इसकी, कि वह (क़यामत में फिर) मुर्दों को जिलायेगा और इसकी, कि वह हर चीज़ पर क़ादिर है०—

---

और (अल्लाह को छोड़ कर) हर उद्दण्ड शैतान की आधीनता करने लगते हैं। यद्यपि इसके (अर्थात् उद्दण्ड शैतान के) विषय में यह (बात निश्चित और) लिखी गई है कि जो मनुष्य उससे मित्रता रक्खेगा, तो यह (अर्थात् शैतान) उसको पथ भ्रष्ट कर देगा। और नर्क के अज़ाब का मार्ग बतायेगा। लोगो! यदि तुम दुबारा जीवित होने (के विषय) में सन्देह करते हो, तो (ज़रा अपने पैदा होने की दशा पर ध्यान दो, कि सबसे पहिले) हमने तुमको मिट्टी से पैदा किया। (अर्थात् मिट्टी से भोजन सामग्रियाँ बनाईं और उनके खाने से तुम्हारे अन्दर ख़ून पैदा हुआ और ख़ून से वीर्य्य बना)। फिर वीर्य्य से (जब वह स्त्री के गर्भ में गया, तो जमे हुए ख़ून की एक बूंद बनी)। फिर (उस जमे हुए ख़ून की) बूंद से (गोश्त का एक) लोथड़ा (बना; जो कभी) पूर्ण बना हुआ (सुडौल और कभी) अधूरा बना हुआ (बेडौल होता है। उससे तुम मनुष्य बनकर पैदा हुये)— ताकि हम तुम्हारे लिये (अपनी रचना की शक्तियों को) प्रगट करें॥

और हम जिस (गर्भ को चाहते हैं, अधूरा गिरा देते हैं और जिस) को चाहते हैं (एक) नियत समय तक (तुम्हारी माताओं के) पेटों में ठहरा रखते हैं। फिर तुमको बच्चा सा (माँ के पेट से) निकालते हैं। फिर (तुम्हारे शरीर का पालन करते हैं) जिससे कि तुम भर पूर जवानी (के समय) तक पहुंचो। और तुममें से कोई (कोई) ऐसे भी हैं, जो (छोटी अवस्था में) मृत्यु पा जाते हैं। और कोई ऐसे हैं, जिन्हें बुढ़ापे की दुर्दशा तक पहुंचाया जाता है। (अर्थात् बुड्ढा फूंस कर दिया जाता है)—जिससे कि वह (सब कुछ) समझने के पश्चात कुछ भी न समझे॥

और (हे देखने वाले!) तू पृथ्वी को सूखी देखता है। फिर जब हम उस पर (अपनी दया का) पानी बरसाते हैं, तो वह (हरी भरी बन जाती और) लहलहाने लगती है। और (अपनी पैदावार के साथ ऊपर को) उभरती और तरह २ की सुन्दर वस्तुएँ (अर्थात् तरकारियाँ) उगाती है—यह इस बात के प्रमाण हैं कि ख़ुदा बरहक़ है। और वह (ख़ुदा) मुर्दों में जान डाल सकता है। और (दुनिया की) हर वस्तु पर (हर प्रकार) अधिकार रखता है॥

और इसकी कि क़यामत ज़रूर आने वाली है। उसमें किसी
तरह का शक नहीं और इसकी कि जो लोग क़ब्रों में ( गड़े पड़े )
हैं, ( क़यामत में ) अल्लाह उनको ( फिर जिला ) उठायेगा० और लोगों
में कोई कोई ऐसा भी है, जिसको न तो किसी तरह का ( ज़ाती )
इल्म है और न ( उसके पास ) किसी तरह की हिदायत और न कोई
किताब, जो ( उसको राह हक़ ) दिखाये० ( और इस पर भी ) ऐंठा हुआ
ख़ुदा ( के बारे ) में झगड़ता है, ताकि ( लोगों को ) ख़ुदा के रस्ते
से गुमराह करे। ऐसे ( ना बकार ) को ( सज़ा ) दुनिया में ( भी )
रुस्वाई है और क़यामत के दिन ( भी ) हम उसको अज़ाब दोज़ख़
( का मज़ा ) चखायेंगे० ( और उससे कहेंगे कि ) यह ( तेरे ) उन
( आमाल बद ) का बदला है, जो तूने पहिले अपने हाथों ( ज़ाद आख़िरत
बनाकर ) भेजे थे, वर्ना ख़ुदा तो ( अपने ) बन्दों पर ज़र्रा भी ज़ुल्म
नहीं करता० और लोगों में कोई कोई ऐसा भी है, जो ख़ुदा
की इबादत ( तो ) करता है-( मगर ) उखड़ा उखड़ा कि अगर उसको
कोई फ़ायदा पहुंच गया, तो उसकी वजह से मुत्मइन हो गया और
अगर उस पर कोई मुसीबत आ पड़ी, तो जिधर से आया था उल्टा
उधर ही को लौट गया। इसने दुनिया ( भी ) खोई और आख़िरत (भी )
सरीह घाटा यही ( कहलाता ) है० ख़ुदा के सिवा उन चीज़ों को ( अपनी
हाजत रवाई के लिये ) बुलाता है, जो न उसको नुक़्सान ही पहुंचा
सकती हैं और न उसको नफ़ा ही पहुंचा सकती हैं—परले दरजे
की गुमराही यही ( कहलाती ) है० उन चीज़ों को ( अपनी हाजत
रवाई के लिये ) बुलाता है, जिनके फ़ायदे से उनका नुक़सान
ज़ियादा क़रीब है। कुछ शक नहीं कि ऐसा कारसाज़ भी बुरा
और कुछ शक नहीं कि ऐसा रफ़ीक़ भी बुरा०—

قَدِيرٌ ۝ وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ
يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ
فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ ۝
ثَانِيَ عِطْفِهِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَنُذِيقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝
ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدَاكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ
لِلْعَبِيدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْبُدُ اللَّهَ عَلَىٰ حَرْفٍ
فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ
انْقَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ
ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝ يَدْعُو مِنْ دُونِ
اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا لَا يَنْفَعُهُ ذَٰلِكَ هُوَ
الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝ يَدْعُو لَمَنْ ضَرُّهُ أَقْرَبُ
مِنْ نَفْعِهِ لَبِئْسَ الْمَوْلَىٰ وَلَبِئْسَ الْعَشِيرُ ۝

---

और इस ( बात ) का ( प्रमाण है ) कि क़यामत आने वाली है। इस ( के आने ) में ( कुछ भी ) सन्देह नहीं है। और जो ( लोग ) क़ब्रों में ( दबे हुए ) हैं ( या भविष्य में गड़ेंगे—अर्थात जो मर गये या आगे मरेंगे )—अल्लाह तआला उन ( सब ) को ( क़यामत के दिन जीवित करके ) उठावेगा ( और उनके कर्मों के सम्बन्ध में उनसे उत्तर मांगेगा )। और (उन में ) कुछ लोग ऐसे हैं, जो ( किसी तरह के ) ज्ञान और ( किसी प्रकार का ) प्रमाण और किसी ज्योतिमय पुस्तक ( के प्रमाण ) के बिना अकड़ते हुए अल्लाह तआला के बारे में झगड़ते हैं, जिससे कि दूसरों को अल्लाह तआला के रास्ते से बहकावें—ऐसे मनुष्य के लिये लोक ( व परलोक ) में अकीर्ति है और क़यामत के दिन हम उसे नर्क में जलने के अज़ाब का स्वाद चखायेंगे। (और क़यामत के दिन उससे कहा जायगा कि ) यह ( लोक परलोक की अकीर्ति ) तेरे उन कर्मों का परिणाम है, जो तूने पहिले से ( परलोक की तैयारी के लिये करके ) भेजे थे। और यह ( बात तो प्रगट ही है ) कि अल्लाह तआला ( तनिक भी अपने ) बन्दों पर अत्याचार नहीं करता॥

और ( उनमें से कोई ) कोई मनुष्य ( ऐसा है, जो ) ख़ुदा की पूजा करता है ( और कुफ़्र छोड़ कर ईमान स्वीकार करता है—परन्तु ) तट पर ( अर्थात् ऊपरी मन से और संसार का लाभ प्राप्त करने के लिये )। अतः यदि ( ईमान लाने के पश्चात ) कोई लाभ उसको पहुंच गया ( जिसका वह इच्छुक था, तब ) तो उस ( ईमान व आधीनता ) पर वह सन्तुष्ट हो जाता है ( और उस पर स्थित रहता है )। और यदि उसको ( ईमान लाने के पश्चात ) कोई दुःख पहुंच गया; तो ( फिर इस्लाम को छोड़ कर कुफ़्र की ओर ) मुंह के बल फिर जाता है ( जिसके कारण ) लोक और परलोक ( दोनों ) में हानि उठाता है। ( और ) यही ( तो ) स्पष्ट हानि है॥

( और ) यह ख़ुदा के अतिरिक्त ऐसी वस्तु को पूजने लगता है, जो ( बिल्कुल बेबस है )—न तो ( किसी प्रकार की ) इसको हानि पहुंचा सकती है और न लाभ। ( वास्तविकता यह है कि ) यही ( मूर्ति-पूजा ) परले दर्जे की गुमराही है। ( मनुष्य की अत्यन्त मूर्खता है, जो ) वह ऐसी वस्तु को पूजता है, जिस ( के पूजने ) की हानि उसके लाभ से अधिक निकट है। निस्सन्देह यह तो स्वामी ( और पूर्वज होने की हैसियत से ) भी ( बुरा ) और ( बराबर का ) मित्र ( होने पर ) भी बुरा। ( यदि इसको स्वामी व पूज्य स्वीकार किया जाय, तब भी हानि-कारक है और बराबर का माना जाय, तब भी )॥

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا
يُرِيدُ ● مَن كَانَ يَظُنُّ أَن لَّن يَنصُرَهُ اللَّهُ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى
السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ
كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ● وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ
آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يُرِيدُ ●
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ
وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ
يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ● أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ

जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, कुछ शक नहीं कि उनको ( आख़िरत में ) अल्लाह ( बहिश्त के ऐसे ) बाग़ों में ( लेजा ) दाख़िल करेगा, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी। बेशक अल्लाह जो चाहता है, कर गुज़रता है० जो शख़्स ( हालत मायूसी में ख़ुदा की निस्बत ऐसा ) गुमान ( बद ) रखता हो कि ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद करे-हीगा नहीं; तो उसको चाहिये कि ऊपर की तरफ़ को एक रस्सी ताने ( और अपने गले में फांसी लगाये और ) फिर ( ज़मीन से अपना ) क़ता ( तअल्लुक़ ) करे ( और लटक कर मर रहे )—फिर देखे कि आया उसकी ( इस ) तदबीर से ( उसकी ) वह शिकायत जिसकी वजह से नाख़ुश था, रफ़ा हुई या नहीं० और ( जैसा कि यह क़ुर्आन है )—ऐसा ही हमने इसको उतारा है ( कि इसमें ) खुली खुली दलीलें ( हैं ) और इसलिये ( उतारा है ) कि ख़ुदा जिसको चाहे ( इसके ज़रिये से ) हिदायत दे० जो लोग ईमान लाये हैं-( यानी मुसलमान ) और जो यहूदी हैं और साबी और नसारा और मजूस-( यानी आतश-परस्त ) और मुश्रिकीन-क़यामत के दिन इन ( सब ) के दर्मियान अल्लाह ( इनके इख़्तिलाफ़ात का ) फ़ैसला कर देगा ( और ) अल्लाह ( लोगों की ) सब बातों को देख रहा है० ( ऐ मुख़ातब ! ) क्या तूने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की कि जो ( मख़्लूक़ ) आसमानों में है और जो ( मख़्लूक़ ) ज़मीन में है और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चारपाये ( सबही तो ) ख़ुदा के आगे सर निगूं हैं—

---

( हाँ इसमें ) सन्देह नहीं कि अल्लाह तआला उन लोगों को, जो ईमान ले आये और जिन्होंने कर्म भी अच्छे किये—( स्वर्ग के ) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा-( जो अत्यन्त हरे भरे सुन्दर तथा स्वच्छ होंगे । और ) जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। निस्सन्देह अल्लाह तआला जो चाहता है, करता है। ( और ) जो ( इस बात का विश्वास न करे और द्वेष के कारण ) यह विचार करता हो कि अल्लाह तआला मुहम्मद ( और उन पर ईमान लाने वालों ) की लोक व परलोक में ( विजय व ) जीत नहीं करेगा, तो उसको चाहिये कि आकाश में एक रस्सी बाँध ( कर उसका फन्दा अपनी गर्दन में डाल ) ले ( और ) फिर ( उस रस्सी को ) काट दे ( और ) फिर देखे कि उसकी ( इस ) रीति ने क्या इस वस्तु को मिटा दिया, जिससे वह जलता है ( वा नहीं मिटाया ) ॥

और ( जिस प्रकार हमने कुर्आन के इस लाभ दायक भाग को उतारा है ) उसी प्रकार हमने इस ( समस्त कुर्आन ) को ( सच्ची पूजा के लिये ) स्पष्ट प्रमाणों ( से भर पूर ) करके ( अपने बन्दे मुहम्मद पर ) उतारा है । और ( इससे तात्पर्य केवल ) यह ( है ) कि अल्लाह जिसको चाहे ( इस कुर्आन के द्वारा ) हिदायत ( के मार्ग पर चलने की योग्यता ) प्रदान करे। निस्सन्देह ईमानदार लोग और यहूदी और तारों को पूजने वाले और ईसाई और अग्नि की पूजा करने वाले तथा मुश्रिक लोग-इन ( सब ) के बीच क़यामत के दिन अल्लाह तआला न्याय करेगा । ( और बताएगा कि सत्य पर कौन है और असत्य पर कौन )। निस्सन्देह अल्लाह तआला हर बात का साक्षी ( और हर एक के कार्य पर दृष्टि रखने वाला ) है। ( हे मनुष्य! ) क्या तूने नहीं देखा कि जो प्राणी आकाशों में है और जो पृथ्वी में हैं और सूरज और चांद तथा तारे और पर्वत और वृक्ष तथा जानवर और बहुत से मनुष्य ख़ुदा को सज्दा करते हैं—

وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ
وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي
رَبِّهِمْ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ
مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ۝
يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ۝ وَلَهُم
مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ۝ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن
يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا
عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا
وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ
مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ۝

ع

और बहुत से आदमी ( भी ) और ( आदमियों में ) बहुत से ( ऐसे भी ) हैं, जिन पर ( नाफ़र्मानी की वजह से ) अज़ाब ( का आना ) लाज़िम हो चुका है और जिसको ख़ुदा ज़लील करे, तो ( फिर ) कोई उसको इज़्ज़त देने वाला नहीं । ख़ुदा ही जो चाहता है, सो करता है० ( दुनिया में ) यह दो ( फ़रीक़ ) हैं, एक दूसरे के मुख़ालिफ़-( और ) आपस में अपने पर्वर्दिगार के बारे में झगड़ते हैं—( एक फ़रीक़ ख़ुदा को मान्ता है और एक नहीं मान्ता )-तो जो लोग ( ख़ुदा को ) नहीं मानते, उनके लिये आग के कपड़े क़ता कराये गये हैं ( और वह उनको दोज़ख़ में पहिनाये जायंगे और ) उनके सरों पर से खौलता हुआ पानी उँडेला जायगा० जिस ( की गर्मी ) से जो कुछ उनके पेट में है ( यानी अँतड़ियां वग़ैरा ) और खालें ( सब ) गल जायँगी० और उनके (मारने के) लिये लोहे के गुर्ज़ होंगे, (जिनसे उनकी कोबाकारी की जायगी )० ( और दोज़ख़ के अन्दर ) घुटते २ जब जब ( उनका जी घबरायेगा और ) उससे निकलना चाहेंगे, तो उसी में धकेल दिये जायेंगे, और ( उनको हुक्म दिया जायगा कि आग में ) जलने के अज़ाब ( के मज़े पड़े ) चक्खा करो० जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये उनको अल्लाह ( बहिश्त के ऐसे ) बाग़ों में ( लेजा ) दाख़िल करेगा, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी ( और ) वहां उनको सोने के कंगन पहिनाये जायंगे और ( हार वग़ैरा की सूरत में ) मोती-और वहां उनका ( मामूली ) लिबास ( भी ) रेशमी होगा० और ( यह सब आसाइशें उनको इस वास्ते मिलेंगी कि दुनिया में ) उनको उम्दा बात ( यानी कलमए तय्यिब के एतिक़ाद ) को हिदायत दी गई थी और उनको उसी ( ख़ुदा ) का रस्ता दिखाया गया था, जो सज़ावार हम्द ( व सना ) है०—

---

और मनुष्यों में बहुत से ( मूर्ख ) ऐसे हैं ( जो ख़ुदा को सज्दा नहीं करते और उसकी आज्ञा पर नहीं चलते, तो यह वह अभाग्य हैं ) जिन पर ( हमारे ) अज़ाब ( का उतरना ) आवश्यक है । और ( जो लोक परलोक में मूर्ख प्रसिद्ध होने के लिये उत्पन्न हुये हैं। और इस बात को नहीं जानते कि ) अल्लाह जिसको ज़लील करदे ( समस्त संसार में फिर ) उसको मान देने वाला कोई नहीं । निस्सन्देह अल्लाह ( सब पर अधिकार रखने वाला है )-जो चाहता है करता है ॥

यह ( ईमानदारों और असत्य पूजकों के ) दोनों समूह ( संसार के ) पालन कर्त्ता के विषय में झगड़ रहे हैं, तो ( क़यामत के दिन ) काफ़िरों के लिये आग के वस्त्र ब्योंते गये हैं । ( अर्थात् उनका सारा शरीर आग से ढक दिया जायगा और ) उनके सिरों पर से गर्म ( खौलता हुआ ) पानी बहाया जायगा—( वह पानी ऐसा खौलता हुआ होगा कि ) उससे उनके पेट में ( आँतें इत्यादि ) जो ( जो ) वस्तुएँ हैं, वह भी और ( उनकी ) त्वचा भी झुलस जायगी । और ( ऐसी दशा में ऊपर से ) उन ( के मारने ) के लिये लोहे की गदा ( नर्क के फ़रिश्तों के हाथ में ) होंगी ॥

जब वह ( नर्क की ) पीड़ा से निकलना चाहेंगे, तो फिर उनको उसी में ढकेल दिया जायगा। और ( उस समय उनसे कहा जायगा कि जाते कहां हो ! अब तुमको यहीं रहना है । यहां रहो ! और ) जलने के अज़ाब का मज़ा चक्खो ! ( हां ) अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने अच्छे काम किये, अल्लाह तआला उन्हें ( स्वर्ग के ) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें जारी हैं । उन ( बाग़ों ) में उन्हें सोने और मोती के कङ्गन पहिनाये जायंगे । और वहां उनका वस्त्र रेशमी ( कपड़ों का ) होगा ॥

और ( यह सब इस बात का बदला है कि ) उन्होंने पवित्र बात ( अर्थात् ख़ुदा के एक मानने ) का मार्ग पाया ( और इस पर दिल से विश्वास किया ) और ( ख़ुदा के ) पसन्द किये हुए मार्ग की ओर हिदायत प्राप्त की—( अर्थात् इस्लाम धर्म स्वीकार किया । और उसकी आज्ञाओं के अनुकरण करने वाले हुऐ ) ॥

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً
الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ
بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ● وَإِذْ بَوَّأْنَا
لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَن لَّا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا
وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ
السُّجُودِ ● وَأَذِّن فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ
رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ
عَمِيقٍ ● لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا
اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم
مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا
الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ● ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا
نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ● ذَٰلِكَ

٤

जो लोग कुफ़्र करते और (लोगों को) ख़ुदा के रस्ते से रोकते और मस्जिद—हराम (में जाने) से (माने आते)—जिसको हमने यक्साँ (बिला इम्तियाज़ सब) आदमियों के लिये (माबद) क़रार दिया है, वहाँ के रहने वाले हों या बाहर के-(इन रोकने वालों को) और (नीज़) उनको, जो मस्जिद—हराम में शरारत (की राह) से कुफ़्र करना चाहें, हम (आख़िरत में) अज़ाब दर्दनाक (का मज़ा) चखायेंगे० और (ऐ पैग़म्बर! वह वक़्त याद करो!) जब हमने इब्राहीम (की इबादत) के लिये ख़ानए काबा की जगह मुक़र्रर करदी (और हुक्म दिया) कि हमारे साथ किसी चीज़ को शरीक (ख़ुदाई) न करना और हमारे (इस) घर को तवाफ़ करने वालों और क़याम और रुकूअ (और) सज्दा करने वालों (यानी नमाज़ियों) के लिये साफ़ सुथरा रखना० और लोगों में हज के लिये पुकार दो कि लोग तुम्हारी तरफ़ (दौड़े चले) आएँगे—(इनमें से कुछ तो) प्यादे और कुछ हर (तरह की दुब्ली) दुब्ली सवारियों पर जो हर राह-दूर (व दराज़) से आई होंगी (सवार होंगे)० (और इस सफ़र से उनका मक़्सूद यह होगा) कि अपने फ़ायदों (यानी तिजारत) के लिये (भी वक़्त पर) आ मौजूद हों और (नीज़) ख़ुदा ने जो मवेशी-चारपाये उनको दिये हैं (उन) ख़ास दिनों में (उनकी क़ुर्बानी करते वक़्त) उन पर ख़ुदा का नाम लें, तो (लोगो!) क़ुर्बानी (के गोश्त में) से (आप भी) खाओ और मुसीबत-ज़दह मोहताज को (भी) खिलाओ० फिर (लोगों को) चाहिये कि (क़ुर्बानी के पीछे) अपना मैल कुचैल (जो एहराम के दिनों में बदन पर जम गया होगा) उतार दें और अपनी मन्नतें पूरी करें और (माबद) क़दीम (यानी) ख़ानए (काबा) का तवाफ़ (भी) करें० (एक बात तो) यह (हुई)—

---

(और) जो लोग काफ़िर हैं और अल्लाह के मार्ग (पर चलने) से और (हज के समय में) मसजिद—हराम (अर्थात् काबे) के जाने से (बाहर से आने वाले ईमानदारों को) रोकते हैं—(यद्यपि) हमने उसको (साधारण व मुख्य; हर प्रकार के) लोगों (की पूजा) के लिये बनाया है। (और) उसमें वहीं के निवासी हों तो, और बाहर के हों तो-(सब) बराबर हैं। और जो लोग मसजिद-हराम में उद्दण्डता से (कुफ़् व) पथ—भ्रष्टता (की बातें) करते हैं, हम (क़यामत के दिन) उन (सब) को दुःख दायी अज़ाब (का मज़ा) चखायेंगे ॥

और (वह समय उनको याद नहीं) जबकि हमने इब्राहीम को (जिब्रील के द्वारा) काबे (के बनाने) की जगह बतला दी थी (और आज्ञा दी थी) कि मेरे साथ किसी वस्तु को शरीक न करो। और परिक्रमा करने वालों और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने वालों और रुकूअ व सज्दा करने वालों के लिये मेरे घर को पवित्र (व स्वच्छ) रक्खो ॥

और लोगों में हज (के फ़र्ज़ होने) की घोषणा करदो कि (इस घोषणा के सुनते ही लोग) पैदल और दुबले (दुबले) ऊँटों पर, जो प्रत्येक लम्बे (चौड़े) मार्ग से आये होंगे—(या ऊटों के अतिरिक्त किसी और सवारी पर सवार होकर) तुम्हारी ओर चले आयेंगे, जिससे कि अपना लाभ प्राप्त करने के लिये (लाभ दायक स्थान पर) पहुंच जायें। और (यह यात्रा इस अभिप्राय से भी करेंगे, जिससे कि क़ुर्बानी के) नियत दिन (अर्थात् १०-११-१२ ज़िल हिज्ज) में उन जानवरों पर, जो उन्हें अल्लाह ने प्रदान किये हैं-(ज़िबह के समय) अल्लाह का नाम लें। अतः (हे मुहम्मद! तुम पर भी हज करना फ़र्ज़ है। और उसमें क़ुर्बानी इत्यादि भी, और तुम्हारी जाति पर भी। अतः तुम भी अपनी जाति के लोगों से कहदो कि हे लोगो! हज तथा उसकी आवश्यक रीति ठीक २ अदा किया करो। और) उसमें से (अर्थात् क़ुरबानी के गोश्त में से) तुम भी खाया करो और कंगाल फ़क़ीर को भी खिलाया करो ॥

फिर (क़ुरबानी के पश्चात्) उन्हें चाहिये कि अपना मैल कुचैल दूर करें। (अर्थात् स्नान करें, सिर मुंडवाएं, नाख़ून कतरवायें इत्यादि) और अपनी मन्नतों को पूरा करें। और उस पुराने घर (काबे) की परिक्रमा करें ॥

और ( इसके अलावा ) जो शख़्स ख़ुदा की ( क़रार दी हुई तमाम ) क़ाबिल-अदब चीज़ों की ताज़ीम करे, तो यह उसके पर्वर्दिगार के हां उसके हक़ में बेहतर है। और (मुसल्मानो !) उन चीज़ों के सिवा, जो तुमको ( कुर्आन से ) पढ़ कर सुनाई जाती हैं, ( यानी मुर्दार और ख़िन्ज़ीर वग़ैरह-बाक़ी ) सब चारपाये तुम्हरे लिये हलाल हैं और ( अस्ल दीन तो यह है ) कि बुतों ( की परस्तिश ) की गंदिगी से बचते रहो और ( नीज़ ) झूटी बात के कहने से बचते रहो० ( बस ) एक अल्लाह के ( हो रहो ) उसके साथ ( किसी को ) शरीक न करो और जो ( किसी को ) ख़ुदा का शरीक बनाये, तो ( उसका हाल ऐसा है कि ) जैसे वह आसमान पर से गिर पड़ा, फिर ( या तो ) उसको ( राह में से शिकारी ) परिन्दे उचक लेजाएंगे या उसको हवा किसी दूर जगह लेजाकर डाल देगी० ( एक बात ) यह ( हुई ) और ( इस के अलावा ) जो शख़्स उन चीज़ों का अदब मलहूज़ रक्खे, जो ख़ुदा से नाम ज़द की गई हैं—( जैसे मसलन, हज की क़ुर्बानी ) तो यह दिलों की परहेज़गारी में ( दाख़िल ) है० इन ( चारपायों ) में एक वक़्त ख़ास तक तुम लोगों के ( लिये ) फ़ायदे हैं, फिर ( जब तुमने उनको क़ुर्बानी के लिये नाम ज़द कर दिया, तो माबद ) क़दीम ( यानी ) ख़ानए ( काबा ) के पास ( जाकर ) उनको हलाल होना चाहिये० और हर एक उम्मत के लिये हमने क़ुर्बानी क़रार दी थी, ताकि ख़ुदा ने जो उनको मवेशी-चारपाये दे रक्खे हैं क़ुरबानी करते वक़्त ) उन पर ख़ुदा का नाम लें। सो ( लोगो ! ) तुम सबका ख़ुदा ( वही ) ख़ुदाए वाहिद है, तो उसी के फ़र्मांबर्दार बनो और ( ऐ पैग़म्बर ! ) आजिज़ी करने वाले बन्दों को ( जन्नत की ) ख़ुश ख़बरी सुना दो० ( जो ) ऐसे ( नेक हैं ) कि जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है, उनके दिल लरज़ उठते हैं और जो मुसीबत उन पर आ पड़े, उस पर सब्र करते—

وَمَنْ يُعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ
وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ
الزُّوْرِ ● حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ وَمَنْ
يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ
الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ●
ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى
الْقُلُوْبِ ● لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ● وَلِكُلِّ اُمَّةٍ
جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ
مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ● الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ

ع

---

यह (उपरोक्त कही गई आज्ञायें हज की आज्ञायें थीं। इनकी ) और (इनके अतिरिक्त और ) जो अल्लाह की आदरणीय बातें हैं, जो मनुष्य उन (सब) का आदर करेगा, तो यह उसके पालन कर्त्ता के निकट ( बहुत ) अच्छा है। ( उससे उसका परलोक सुधर जायगा )। और उन ( मना की गई वस्तुओं ) के अतिरिक्त जो तुम्हें पढ़कर सुनादी गई हैं, तुम्हारे वास्ते सब चौपाये हलाल हैं। तो तुम (को चाहिये कि हमारी बताई हुई हराम वस्तुओं को हराम समझो और हलाल को हलाल जानो )। अतः ( एक अल्लाह के ( पूजक ) होकर (और ) उसके साथ ( किसी को ) शरीक करने वाले न बन कर गन्दिगी अर्थात् मूर्त्तियों ( की पूजा से संयमी बने रहो। और झूठी बात (और कुफ़्र का शब्द ज़बान से निकालने ) से बचते रहो। और ( याद रक्खो कि जो आदमी अल्लाह के साथ ( किसी को ) शरीक करता है, तो वह ऐसा है, जैसे कोई आकाश से ( पृथ्वी पर ) गिरे। फिर ( मार्ग में या तो ) उसको कोई पक्षी झपट ले या उसको हवा किसी दूर जगह पर लेजाकर डाल दे॥

इन ( बातों ) की, और ( इनके अतिरिक्त जो जो बातें ) अल्लाह के चिन्हों ( में से हैं, उन ) की जो मनुष्य ( भी ) इज़्ज़त ( व मान ) करेगा, तो ( वह ) अवश्य ( संयमी कहलायेगा। क्योंकि ) यह ( मान करना ) हृदयों की संयमता ( के प्रमाणों ) में से ( एक प्रमाण ) है। ( लोगो सुनो ! और याद रक्खो ! ) तुम्हारे वास्ते इन जानवरों में ( जिन्हें तुमने कुरबानी के लिये नियत कर दिये हैं ) नियत समय तक लाभ है। ( अर्थात् तुम्हें इख़्तियार है—जब तक उनकी कुरबानी का समय न आये, उनका दूध पियो या सवारी प्राप्त करो, लेकिन ) फिर ( जब कुरबानी का समय आजाय, तो ) उनके हलाल होने की जगह पुराने घर ( अर्थात् काबे ) की ओर है। ( वहां इन्हें ले जाओ और अल्लाह के नाम पर कुरबान करदो )॥

और हमने समस्त ( पिछली ) उम्मतों के लिये कुरबानी को ( फ़र्ज़ ) नियत किया था—( आज कुछ तुमही को उसकी आज्ञा नहीं दी। और इससे तात्पर्य यह था ) कि वह उन जानवरों पर, जो उन्हें अल्लाह ने दिये हैं ( और उन्होंने उनमें से जिनको कुरबानी के लिये नियत कर लिया है, ज़िबह करने के समय ) अल्लाह का नाम लें। अतः ( लोगो ! अच्छी तरह सुन लो कि ) तुम्हारा पूज्य ( भी ) एक ही है। अतः तुम ( भी ) उसी के आधीन बन जाओ। और ( उसकी पूजा से मुंह न मोड़ो। हे रसूल ! ) तुम ऐसे आधीनता करने वालों को ( स्वर्ग का ) मंगल समाचार सुना दो कि ( उनके सामने ) जब अल्लाह का नाम लिया जाय, तो ( ख़ुदा के भय से ) उनके हृदय दहल जायँ। और जो अपनी मुसीबत के समय संतोष करते हैं—

وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝
وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا
خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ فَاِذَا
وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا
الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ۝ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا
وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا
لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَبَشِّرِ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝ اُذِنَ
لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّا اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ وَلَوْلَا دَفْعُ

और नमाज़ें पढ़ते और जो हमने उनको दे रक्खा है, उसमें से (राह ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं० और (मुसलमानो!) हमने तुम्हारे लिये क़ुर्बानी के ऊंटों को (भी) उन (क़ाबिल—अदब) चीज़ों में क़रार दिया है, जो ख़ुदा के साथ नाम ज़द की जाती हैं। उनमें तुम्हारे लिये (चंद दर चंद) फ़ायदे हैं। तो (इन फ़ायदों के शुक्रिये में ख़ुदा के नाम क़ुर्बानी करते वक़्त) उनको खड़ा रख कर (ज़िबह करो और ज़िबह करते वक़्त) उन पर ख़ुदा का नाम लो। फिर जब वह किसी पहलू पर गिर पड़ें (और ठण्डे होजाएँ) तो उनमें से (आप भी) खाओ और क़नाअत-पेशा और गदाई-पेशा (हर तरह के मोंहताजों) को खिलाओ। हमने यूं इन (जानवरों) को तुम्हारे बस में कर दिया है, ताकि तुम (हमारा) शुक्र करो० ख़ुदा तक न तो इनके गोश्त ही पहुंचते हैं और न इनके ख़ून, बल्कि उस तक तुम्हारी परहेज़गारी (और फ़र्मांबर्दारी) पहुंचती है। ख़ुदा ने इनको यूं तुम्हारे बस में कर दिया है, ताकि उसने जो (अहकाम-हज तालीम करके) तुमको (दीन का) रस्ता दिखा दिया है, तो (उसके) इस (एहसान) के बदले में उसकी बड़ाइयाँ करो और (ऐ पैग़म्बर! ख़ुलूस दिल से) नेक काम करने वालों को (जन्नत की) ख़ुश ख़बरी सुना दो० ख़ुदा मुसलमानों (के दुश्मनों को उन) से हटाता रहता है। बेशक अल्लाह किसी दग़ाबाज़ नाशुक्र को पसन्द नहीं करता। जिन (मुसलमानों) से (काफ़िर) लड़ते हैं-(अब) उनको (भी उन काफ़िरों से लड़ने की) इजाज़त है। इस वास्ते कि उन पर ज़ुल्म हो रहा है और कुछ शक व शुबहा नहीं कि अल्लाह उनकी मदद करने पर क़ादिर है० (यह वह मज़्लूम लोग हैं) जो (बेचारे) सिर्फ़ इतनी बात के कहने पर कि हमारा पर्वर्दिगार अल्लाह है, नाहक़ (ना रवा) अपने घरों से निकाल दिये गये और अगर—

---

और जो (हर दशा में) नमाज़ को स्थित रखते हैं और जो जीविका हमने उनको प्रदान की है, उसमें से (ख़ुदा के मार्ग में) व्यय करते हैं। और (लोगो!) हमने कुरबानी के ऊँटों (इत्यादि) को तुम्हारे लिये अल्लाह के चिन्हों (अर्थात् धर्म सम्बन्धी बातों में) से नियत किया है। उन (के ज़िबह करने) में तुम्हारे लिये (दोनों लोकों का) लाभ है। अतः तुम (कुरबानी के जानवरों में से ऊँटों को जब ज़िबह करो, तो उनको) पंक्ति बाँध कर (अर्थात् उनको खड़ा करके ज़िबह करो। और ज़िबह करने के समय) उन पर बिस्मिल्लाह (अल्लाहु अकबर) पढ़ा करो। (और) फिर जब वह (ज़िबह होकर) करवट के बल गिर पड़ें (और उनकी जान निकल जाय) तो उन (के गोश्त) में से तुम भी खाओ और न मांगने वाले और मांगने वाले को भी खिलाओ। (जिस प्रकार हमने तुम्हारे ऊपर और बड़े २ उपकार किये हैं) उसी प्रकार हमने इन (ऊँटों) को भी तुम्हारा आधीन कर दिया, जिससे कि तुम (हमारे) कृतज्ञ हो॥

(लोगो, देखो!) अल्लाह तआला तक न इन (कुरबानी के जानवरों) के गोश्त पहुंचते हैं और न उनके ख़ून, केवल तुम्हारी संयमता उस तक पहुंचती है। (अतः तुम उसकी प्रत्येक आज्ञा पर पूरा २ ध्यान दो। और सच्चे संयमी बनकर उसकी सत्य भक्ति प्राप्त करो। उसने जिस प्रकार तुम पर और बहुत से असंख्य उपकार किये हैं) उसी प्रकार उसने इन (कुरबानी के जानवरों) को तुम्हारा आधीन बना दिया है, जिससे कि तुम अल्लाह की बड़ाई करो—कि उसने तुमको (कुरबानी की) शिक्षा दी। और (सच्चा मार्ग बताया। हे रसूल!) नेक काम करने वालों को (लोक परलोक के कल्याण का) मंगल समाचार सुना दो। (और उन्हें बतादो कि) अल्लाह तआला अवश्य ईमान वालों (और नेकों) की ओर से (विधर्मियों के पहुंचाये हुए संकट को) दूर कर देगा। निस्सन्देह अल्लाह तआला किसी ख़यानत करने वाले (और) कृतघ्न को मित्र नहीं रखता॥

(हे रसूल! अब) उन (मुसलमानों) को (भी क़ाफिरों से युद्ध करने को) आज्ञा देदी गई, जिनसे (व्यर्थ की) लड़ाई की जाती है— इस कारण कि (अब तक) उन पर (निरन्तर) अत्याचार किया गया और (उन्होंने बराबर सन्तोष किया। अब समय आगया कि वह उन अत्याचारों का बदला लें। और उन्हें बराबर का जवाब दें)। निस्सन्देह अल्लाह तआला इन (सताये हुए ईमानदारों) को सहायता करने पर (पूरी २) क़ुद्रत रखता है, जिन्हें अनुचित रीत से उनके घरों से निकाला गया। (और) केवल उनके इस कहने पर कि हमारा पालन कर्त्ता (और सच्चा पूज्य) अल्लाह तआला है— (उन्हें विवश किया गया कि वह अपनी जन्म-भूमि-मक्का छोड़ कर चले जायँ)॥

اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ
وَبِيَعٌ وَصَلَوٰتٌ وَمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ
اللّٰهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ اَلَّذِينَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ
وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝
وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ
وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝ وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝
وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ
لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝
فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ
خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ
مَّشِيْدٍ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ

قُلُوْبٌ

अल्लाह लोगों को एक दूसरे ( के हाथ ) से न हटवाता
रहता, तो ( नसारा के ) सौमे और गिरजे और ( यहूदियों के )
इबादत-ख़ाने और ( मुसल्मानों की ) मस्जिदें, जिनमें कसरत से
ख़ुदा का नाम लिया जाता है, कभी के ढाये जा चुके होते और
जो अल्लाह की मदद करेगा, अल्लाह ( भी ) ज़रूर उसकी मदद करेगा।
कुछ शक व शुबहा नहीं कि अल्लाह ज़बरदस्त और ( सब पर )
ग़ालिब है० यह लोग ( यानी शुरू शुरू के मुसल्मान हैं तो मज़लूम,
लेकिन ) अगर ( हाकिम-वक़्त बनाकर ) हम ज़मीन में इनके पाँव
जमादें, तो ( अच्छे ही अच्छे काम करेंगे, यानी ) नमाज़ें पढ़ेंगे और
ज़कात देंगे और ( लोगों को ) अच्छे काम के लिये कहेंगे और
बुरे कामों से मना करेंगे और सब चीज़ों का अन्जाम—कार तो
ख़ुदा ही के इख़्तियार में है० और (ऐ पैग़म्बर !) अगर (यह काफ़िर) तुमको
झुटलायें, तो इनसे पहिले नूह ( की उम्मत ) के लोग और आद
और समूद० और इब्राहीम ( की उम्मत ) के लोग और लूत ( की
उम्मत ) के लोग० और मदयन के रहने वाले ( सब ही अपने २
पैग़म्बरों को ) झुटला चुके हैं और ( नीज़ ) मूसा झुटलाये जा
चुके हैं-तो हमने ( चन्द रोज़ ) काफ़िरों को मोहलत दी,
फिर ( आख़िरकार ) उनको धर पकड़ा। सो ( तुमने देखा कि )
हमारी ख़फ़गी कैसी ( बला की ख़फ़गी ) थी० ग़रज़ कितनी
बस्तियां हैं कि हमने उनको हलाक कर मारा और वह ना
फ़र्मान थीं। पस अब वह ( ऐसी उजड़ी पड़ी हैं कि उनकी
दीवारें ) अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं और ( कितने ) कुंवें
बेकार ( पड़े हैं ) और ( कितने पक्के ) पक्के महल ( वीरान पड़े हैं )० क्या
यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं ? ( चलते फिरते ) तो इनके ऐसे दिल
होते कि—

---

और यदि अल्लाह ( हर समय विधर्मी ) लोगों ( के अत्याचार ) की रोक ( इस प्रकार ) कुछ ( ईमानदार लोगों के द्वारा न कराता रहता, तो तकिये और गिरजाएँ और पूजा के घर और मसजिदें, जिनमें कि अधिकता के साथ अल्ला का नाम लिया जाता है ( और लिया जाता था, सबके सब इन काफ़िर अत्याचारियों के हाथों से ) गिरा दि जाते । ( और संसार में कोई पूजा करने का स्थान शेष न रहता ) । निस्सन्देह जो अल्लाह ( के धर्म ) की सहायता करेग अल्लाह उसकी सहायता करेगा । ( और जो उसके धर्म नष्ट करने की चेष्टा करेगा, अल्लाह उसको कठिन से कठिन दंड देगा ) निस्सन्देह अल्लाह तआला ( अपनी समस्त सृष्टि से अधिक ) बलवान ( और सब पर ) विजयी है ॥

यह ( ईमानदार और सताये हुए ) लोग ( वह हैं कि ) यदि हम इनको पृथ्वी में शक्ति ( व शासन ) प्रदान करें, ( सत्य को भी बढ़ावें और अपने आप भी ) नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और ( दूसरों को भी ) अच्छे कामों की आज्ञा दें और कामों से रोकें । और समस्त कार्यों का परिणाम अल्लाह ही के हाथ में है। और ( हे रसूल ! ) यदि यह ( मक्के के काफ़ि आज ) तुमको झूठा कहते हैं, तो ( यह कोई नई बात नहीं है । काफ़िरों की सर्वदा से यही रीति चली आती है। इस लि इनसे पूर्व नूह व आद व समूद तथा इब्राहीम की जातियाँ और लूत और मदयन के रहने वालों ने ( अपने २ नबियों को इ प्रकार ) झुठलाया था । और मूसा भी ( यूं ही ) झुठलाये गये थे। अतः हमने ( उन पिछले ) काफ़िरों को ( पहिले पहि अवसर दिया था । ( लेकिन जब उनका कुफ़्र व उद्दण्डता अपनी सीमा को पहुंच गई, तो ) फिर हमने उनको ( अपने अज़ में ) पकड़ लिया। फिर ( देख लो ! कि उन पर ) हमारा अज़ाब कैसा ( कठिन अवतीर्ण ) हुआ। ( यही परिणाम इन काफ़िरों भी होता नज़र आता है ) ॥

( पहिले समय की ) बहुत सी बस्तियाँ ( ऐसी ) हैं कि हमने उनको ( अपने अज़ाब से ) नष्ट कर दिया । ( केवल इस कारण कि ) वह अत्याचारी ( व उद्दण्ड ) थीं । तो ( हमने उन पर अति कठिन अज़ाब उतारा, जिसके का अब ) वह ( अर्थात् उनकी बस्तियाँ ऐसी दुर्दशा में हैं कि उनके मकानों की दीवारें ) अपनी छतों पर ढई पड़ी हैं । कितने ही कुंवें ( पानी होते हुए ) निकम्मे और ईंट चूने के ( पक्के ) महल ( उजाड़ और निर्जन पड़े हुए ) हैं । ( काफ़िरों को चाहिये कि उनकी दशा को देख कर शिक्षा प्राप्त करें ) । क्या यह पृथ्वी में बिल्कुल ही नहीं चले ( फि वास्तविकता यह है कि उन्होंने न कुछ देखा और न कुछ सुना । क्योंकि उन्होंने जो देखा और सुना, उससे शि प्राप्त नहीं की । यदि यह शिक्षा प्राप्त कर लेते ) तो ( इनके दिल ऐसे कट्टर न होते, बल्कि ) इनके ऐसे दिल होते—

उनके ज़रिये से ( अन्जामकार को ) समझते और ( इनके ) ऐसे कान ( होते ) कि उनके ज़रिए से ( नसीहत की बात ) सुन्ते। बात यह है कि कुछ आँखें अन्धी नहीं हुआ करतीं; बल्कि दिल जो सीनों में हैं, वह अंधे हो जाया करते हैं० और ( ऐ पैग़म्बर! यह लोग ) तुमसे अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं और ख़ुदा तो कभी अपना वादा ख़िलाफ़ करने का नहीं–और कुछ शक नहीं कि तुम्हारे पर्वर्दिगार के हाँ तुम लोगों की गिन्ती के मुताबिक़ हज़ार बरस के बराबर ( अख़ीर फ़ैसले का ) एक दिन ( ठहरा हुआ ) है ( यानी रोज़ क़यामत )। पस मुन्किरों पर दुनिया में अज़ाब नाज़िल न हुआ, तो क़यामत में नाज़िल होकर रहेगा० और बहुत सी बस्तियाँ हैं, जिनको हमने ( चन्द रोज़ ) मोहलत दी और वह नाफ़र्मान थीं। फिर (आख़िरकार) हमने उनको धर पकड़ा और ( सबही को ) हमारी तरफ़ लौट कर आना है० ( ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से ) कहो कि लोगो ! मैं तो तुमको खुल्लम खुल्ला ( अज़ाब ख़ुदा से ) डराने वाला हूं और बस० फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये–( इस के सिले में ) उनके लिये बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी० और जो लोग हमारी आयतों के साथ हरानी—जितानी करते रहते हैं, वही दोज़ख़ी हैं० और ( ऐ पैग़म्बर! ) हमने तुमसे पहिले कोई ऐसा रसूल नहीं भेजा और न कोई ऐसा नबी, कि उसको यह मामला पेश न आया हो कि जब उसने ( अपनी तरफ़ से किसी बात की ) तमन्ना की, शैतान ने उसकी तमन्ना में ( वस्वसा ) डाला। फिर ( आख़िरकार ) ख़ुदा ने वस्वसे–शैतानी को दूर और अपनी आयतों को मज़बूत कर दिया और अल्लाह ( सबके हाल से ) वाक़िफ़--

قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا
فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ
الَّتِي فِي الصُّدُورِ ۝ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ
وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ
كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۝ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ
أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَيَّ
الْمَصِيرُ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ
مُبِينٌ ۝ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا
فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا
أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا
إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنْسَخُ اللَّهُ
مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ

---

जिनसे यह ( अपने बुरे भले को ) समझते, या ऐसे कान होते, जिनसे ( अल्लाह के कलाम को ) सुनते ( और उस पर सच्चे दिल से ईमान ले आते। वास्तविकता यह है कि इन काफ़िरों की ) कुछ आँखें ( ही ) अन्धी नही होतीं, बल्कि छाती में जो दिल हैं, वह ( भी ) अन्धे हो जाते हैं। ( और तुमसे ख़ुदा का ) अज़ाब जल्दी आने की माँग करते हैं और ( नहीं जानते कि पुरस्कार व दंड का वादा करने वाला ) अल्लाह ( है, वह ) कभी वादे के विरुद्ध न करेगा। और ( इन्हें ज्ञात नहीं कि वह दंड कितना कठिन होगा। हे रसूल! ) तुम्हारे पालन कर्त्ता के यहाँ ( के ) एक दिन ( का दुःख ) इतना ( होता ) है, जितना कि तुम ( संसार के ) मनुष्यों के हिसाब से सहस्र वर्ष ( का दुःख होता है ) ॥

और बहुत सी ऐसी बस्तियां ( पहिले बीत चुकी ) हैं कि हमने उन्हें ( पहिले तनिक ) अवसर दिया, यद्यपि वह अत्याचारी ( व उद्दण्ड ) थीं ( और ) फिर हमने उनको ( अपने अज़ाब में ) पकड़ लिया–( तो इन काफ़िरों को चाहिये कि उन बस्तियों को देखें ) और ( शिक्षा प्राप्त करें। आख़िर उनको मरने के पश्चात् तो ) हमारी ही ओर लौटना है। (हे रसूल!) तुम ( साफ़ २ ) कहदो कि लोगो ! मैं तो बस तुमको ( तुम्हारे कुकर्मों के बुरे परिणाम से एक ) खुल्लम खुल्ला डराने वाला ( और तुम्हारा अच्छा बुरा तुमको बताने वाला ) हूं–( इसके अतिरिक्त मेरा कुछ काम नहीं ) ॥

अतः ( मेरे कहे पर ) जो लोग ईमान ले आये और ( ईमान ले आने के पश्चात् ) उन्होंने कर्म भी अच्छे किये (तो) उनके लिये ( ख़ुदा के यहां ) क्षमा और सम्मान की जीविका है। और जो लोग हमारी आयतों में ( हमारे रसूल और ईमानदारों को हराने और ) सताने के लिये ( व्यर्थ के झगड़े उत्पन्न करने की ) चेष्टा करते हैं, वह सब ( के सब ) नर्क–वासी हैं। ( हे रसूल! तुम इनकी कुछ पर्वाह न करो। सत्य की विरुद्धता ) और ( हमारी आयतों को झूठा ठहराने और उनमें असत्य बातों को सम्मिलित करने का उपाय करना इन काफ़िरों की प्राचीन आदत है )। हमने तुमसे पहिले कोई ऐसा रसूल और नबी नहीं भेजा कि उसने जब ( अपने ) उद्देश्य को प्रगट किया ( अर्थात् अल्लाह के कलाम को पढ़ा ) हो, तो शैतान ने उसके उद्देश्य में ( अर्थात् अल्लाह के कलाम में अपना शैतानी उद्देश्य ) कुछ ( न कुछ ) न मिला दिया हो ( और सत्य में असत्य को मिलाकर सत्य को ख़राब करने की कोशिश न की हो )। तो अल्लाह तआला शैतान की सम्मिलित बातों को दूर कर देता है। ( और ) फिर अपनी आयतों को ( मिथ्या सम्मिलित बातों से पवित्र करके पहिले से भी अधिक ) पक्की कर देता है। और अल्लाह ( बड़ा ) बुद्धिमान ( और ) हिक्मत वाला है ॥

حَكِيْمٌ ۝ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ۝ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا
بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ
بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ۝ اَلْمُلْكُ
يَوْمَىِٕذٍ لِّلّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ ع
وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَا
تُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ

خَيْرُ

(और) हिक्मत वाला है० (ऐसे मामिलात में मन्ज़ूर खुदा यह रहा है) कि उस (वस्वसे) को जो शैतान ने डाला है, उन लोगों की आज़माइश (का ज़रीआ) गरदाने, जिनके दिलों में (बद अक़ीदती का) मरज़ है और उनके दिल सख़्त हैं और कुछ शक नहीं कि (यह) ज़ालिम (यानी काफ़िर) तो परले दरजे की मुख़ालिफ़त में (पड़े) हैं० और (ऐ पैग़म्बर! नीज़ ऐसे मामिलात में खुदा को) यह मन्ज़ूर (रहा) है कि जिन लोगों को इल्म दिया गया है, वह जान लें कि वही बरहक़ (है और) तुम्हारे पर्वर्दिगार (की तरफ़) से (नाज़िल हुई) है और (यह समझ कर) उस पर ईमान लाएँ और उनके दिल खुदा के आगे गिड़गिड़ाने लगें और जो लोग ईमान लाये हैं, कुछ शक नहीं कि खुदा उनको सीधा रस्ता दिखाता रहता है० और जो लोग मुन्किर हैं, वह तो कुर्आन की तरफ़ से हमेशा शक ही में (पड़े) रहेंगे, यहां तक कि क़यामत यकायक उन (के सर) पर आ मौजूद हो-या यूं कहो कि एक बड़े मनहूस दिन का अज़ाब उन पर आ नाज़िल हो ० (कि) हुकूमत उस दिन खुदा (ही) की होगी। वह लोगों में (उनके बाहमी इख़्तिलाफ़ात का) फ़ैसला कर देगा। तो जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, वह आराम (व आसाइश के) बाग़ों में होंगे० और जो इन्कार करते और हमारी आयतों को झुटलाते रहे, तो यही (वह बद-नसीब) हैं, जिनको ज़िल्लत का अज़ाब होगा।० और जिन लोगों ने खुदा की राह में वतन छोड़े, फिर शहीद हो गये या (अपनी मौत से) मर गये, अल्लाह उनको (आख़िरत में) ज़रूर उम्दा रोज़ी देगा और कुछ शक व शुबहा नहीं कि खुदा ही—

---

(वह केवल इस प्रयोजन से ऐसा करता है)—जिससे कि शैतान की मिलावट को उन लोगों के लिए एक जाँ (और परीक्षा का साधन) बनाये, जिनके दिलों में रोग हैं (अर्थात् जो सन्देह और परस्पर के द्वेष के रोग में ग्रस्त है और जिनके दिल कठोर हैं ओर (जिन्होंने सत्य मार्ग को छोड़ कर असत्य की पूजा स्वीकार करली है। इसमें) सन्दे नहीं कि काफ़िर हद दर्जे के अभाग्य (के अज़ाब) में (फँसे हुए) हैं ॥

और (इन शैतानों को इस प्रयोजन से मिलावट का अवसर दिया जाता है)—जिससे कि जिन्हें विद्या दी गई (उन्हें खोटे खरे की पहिचान का अवसर मिल जाय। और) वह (सत्य को असत्य के मुक़ाबिले में देख कर अच्छी तरह जान लें कि (जो कुछ तुम कह रहे हो)—वही सत्य है। (और तुम्हारी ओर से नहीं, बलिक) तुम्हारे पालन कर्त्ता ओर से (उतरा) है। (और यह समझ कर) फिर उस पर ईमान ले आवें (और) फिर उस (के सुनने) से उ दिल नर्म हो जायँ (और उनमें सत्य ग्रहण करने को योग्यता पेदा हो जाय)। और (कुफ़ व विधर्म की सख़्ती जाती रहे निस्सन्देह अल्लाह तआला सीधे मार्ग की ओर ईमानदारों ही को चलाता है ॥

और काफ़िर लोग तो इस (कुर्आन) की तरफ़ से सदैव शक (व शुबहे ही) में रहेंगे, जब तक कि उन पर एक क़यामत (न) टूट पड़े या (इसी संसार ही में) उनके लिये कोई अशुभ-दिन (न) आजावे। उस दिन (अर्थात् क़यामत के दि सारे संसार का शासन केवल अल्लाह ही के लिये होगा। वह (उस दिन) इन (सत्य पूजकों और असत्य पूजकों) के परस् एक (न्याय युक्त) फ़ैसला फ़रमायेगा। अतः जो लोग (इस संसार में) ईमान ले आये (होंगे) और उन्होंने कर्म भी अ किये होंगे—(तो वह सब इस फ़ैसले के अनुसार) सुख (व आनन्द) के बाग़ों में रहेंगे ॥

और जो लोग कुफ़्र करते हैं और हमारी आयतों को झूठा बताते हैं, उनके लिये (ख़ुदा के यहां) एक तिरस् करने वाला अज़ाब (तैयार) है। और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में देश—त्यागन किया (और आधीनता के साथ मक्के छोड़ कर मदीने चले आये) और फिर वह (काफ़िरों के हाथों से) मारे गये, या (अपनी मौत से) मर गये, तो निश्चित से अल्लाह तआला उन्हें अच्छी जीविका देगा। निस्सन्देह अल्लाह ही (है, जो सबसे) अच्छी जीविका देने वाला है ॥

(दूसरे) रोज़ी देने वालों से बेहतर (रोज़ी देने वाला) है० वह उनको ऐसी जगह (बहिश्त में लेजा) दाख़िल करेगा, जिस से ख़ुश हो जायंगे और कुछ शक नहीं कि अल्लाह (सबके हाल से) वाक़िफ़ (और) बुर्दबार है० यह (तो अपने वक़् पर यूं ही होकर रहेगा) और जिस शख़्स ने (दुशमन को) उसी क़दर सताया-(जितना कि यह शख़्स उसके हाथों से) सताया गया था, फिर (दुश्मन की तरफ़ से) उस पर (दुबारा) ज़ियादती हुई, तो इस (मज़्लूम) की ख़ुदा ज़रूर मदद करेगा। कुछ शक व शुबहा नहीं कि ख़ुदा माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है० यह (मदद जो इस मज़्लूम को दी जायगी) इस वजह से है कि अल्लाह (अपनी मर्ज़ी से) रात को दिन में दाख़िल करता रहता है और दिन को रात में दाख़िल करता रहता है और (नीज़) इस वजह से कि अल्लाह (सबकी) सुन्ता और (सब कुछ) देखता है० (और नीज़) यह (मदद जो मज़्लूम को दी जायगी) इस सबब से है कि अल्लाह ही बरहक़ (और हक़ का हामी) है और जिन (माबूदों) को (यह मुन्किर) ख़ुदा के सिवा (अपनी हाजत बरारी के लिये) पुकारते रहते हैं, वह (सर ता सर) लग्व हैं और (नीज़) इस सबब से कि अल्लाह ही आलीशान (और सबसे) बड़ा है० (ऐ मुख़ातब!) क्या तूने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है, फिर (पानी बरसे पीछे) ज़मीन सर-सब्ज़ हो जाती है। बेशक अल्लाह (बन्दों के हाल पर) मेहर्बान (और उनकी ज़रूरतों से) आगाह है० उसी का है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और कुछ शक व शुबहा नहीं कि अल्लाह ही (की ज़ात) बेनियाज़ (और) सज़ावार हम्द (व सना) है० (ऐ मुख़ातब!) क्या तूने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि अल्लाह ने उन (तमाम) चीज़ों को जो ज़मीन में हैं, तुम लोगों के बस में कर दिया है और (ख़ास कर) किश्ती को, जो उसके हुक्म से दरिया में चलती है और (वही) आस्मान को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है, मगर—

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ
بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ
اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ
الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ
مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً اِنَّ اللّٰهَ
لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ
لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ
بِاَمْرِهٖ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا

ع

निश्चित रूप से अल्लाह तआला उनको तो एक ऐसे स्थान (अर्थात् स्वर्ग में) पहुंचा देगा, जिसे वह पसन्द करेंगे और (काफ़िरों को दहकती हुई आग का अज़ाब देगा)। निस्सन्देह अल्लाह तआला अच्छी तरह जानने वाला (और) दर गुज़र करने वाला है—(अज़ाब देने में शीघ्रता नहीं करता)। यह (बात तो समाप्त हो गई) और (दूसरी बात यह है कि) जिसने (अपने शत्रु को) उतना ही कष्ट दिया, जितना कि (उस शत्रु की ओर से) इसको कष्ट दिया गया था—(तो दोनों बराबर होगये। अब अगर) फिर इस पर (दूसरी बार) ज़ुल्म किया गया, तो अल्लाह तआला उस (ईमानदार) की सहायता करेगा। (संसार में इसको प्रतिकार की आज्ञा देगा और अगर वह बदला न ले, तो) निस्सन्देह अल्लाह तआला माफ़ करने वाला (और) अत्यन्त क्षमा (व कृपा) करने वाला है। यह इसलिये कि अल्लाह तआला (में बड़ी शक्ति है। वह) रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में। और निस्सन्देह अल्लाह तआला (पीड़ित मुसल्मानों की प्रार्थना को) सुनता (और ज़ालिम काफ़िरों की ज़्यादती को) देखता है॥

और (एक दिन आवेगा कि) यह (ईमानदार काफ़िरों पर विजय प्राप्त करेंगे)। इस कारण कि (वह शक्तिशाली अल्लाह के पूजक हैं। और यह काफ़िर असमर्थ व निर्बल मूर्तियों के पुजारी हैं। और इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि) अल्लाह तआला सत्य है और यह (काफ़िर) अल्लाह को छोड़ कर जिन (मूर्तियों) को पूजते हैं, वह बिल्कुल झूठी हैं। और अल्लाह श्रेष्ठ (और) महान है। (हे देखने वाले!) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआला आकाश से मेंह बरसाता है। (और) फिर (इस मेंह के जल से मुर्दा) पृथ्वी हरी (भरी) हो जाती है। निस्सन्देह अल्लाह तआला (अपनी सृष्टि पर) दयालु है (और उनकी आवश्यकताओं से) जानकार है॥

आकाशों में और पृथ्वी में जो कुछ भी है-(सब) उसी का है। निस्सन्देह वही ग़नी (और) पूजा करने के योग्य है। (उसके अतिरिक्त सबके सब उसके भिक्षुक और दास हैं)। (हे मनुष्य!) क्या तूने नहीं देखा कि जो कुछ पृथ्वी में है—(उसको) अल्लाह तआला ने (तुम लोगों के वास्ते बनाया है। और तुम्हारी आज्ञा के) आधीन कर दिया है। और नाव भी, जो नदी में उसी की आज्ञा से चलती है। और वही (ख़ुदा इतने बड़े) आकाश को (बिना किसी रोक के) पृथ्वी पर गिरने से रोके हुए है। मगर—

بِإِذْنِهِ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَهُوَ
الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ إِنَّ الْإِنْسَانَ
لَكَفُورٌ ۝ لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ
نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ
رَبِّكَ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٍ ۝ وَإِنْ جَادَ
لُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ اللَّهُ يَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ
ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ
وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ
سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ
نَصِيرٍ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ
فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ يَكَادُونَ يَسْطُونَ

بِالَّذِينَ

(वह हुक्म दे, तो) उसके हुक्म से (तो अभी धड़ाम से गिर पड़े)–कुछ शक व शुबहा नहीं कि अल्लाह आदमियों पर बड़ी शफ़क़त रखता (और) मेहर्बान है० और (लोगो!) वही (क़ादिर मुत्लक़) है, जिसने (अव्वल बार) तुममें जान डाली, फिर (वही) तुमको मारता है, फिर (इसी तरह क़यामत के दिन) तुमको जिलायेगा (भी)–कुछ शक व शुबहा नहीं कि इन्सान बड़ा ही नाशुक्र है० (ऐ पैग़म्बर!) हमने हर एक उम्मत के लिये (इबादत के) तरीक़े क़रार दिये कि वह उन पर चलते हैं, तो (तुम्हारे ज़माने के) इन लोगों को चाहिये कि इस तरीक़े (इस्लाम) में तुमसे किसी तरह का झगड़ा न करें और तुम अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ (लोगों को) बुलाये चले जाओ। कुछ शक व शुबहा नहीं कि तुम सीधे रस्ते पर हो० और अगर (इस पर भी यह लोग) तुम्हारे साथ झगड़ा करें, तो (इनसे) कहदो कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे ब.ख़ूबी वाक़िफ़ है० (लोगो!) जिन बातों में तुम (दुनिया में) बाहम इख़्तिलाफ़ करते रहे हो—(क़यामत के दिन) अल्लाह तुममें उन झगड़ों का .फ़ैसला कर देगा० (ऐ पैग़म्बर!) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान व ज़मीन में है, अल्लाह उससे (ब.ख़ूबी) वाक़िफ़ है? (इसमें कुछ) शक नहीं कि यह (सब बातें) किताब (लौह महफ़ूज़) में (लिखी हुई मौजूद) हैं (और इसमें भी कुछ) शक नहीं कि यह (सब कुछ) अल्लाह के लिये आसान है० और (काफ़िर) ख़ुदा के सिवा उन चीज़ों की इबादत करते हैं, जिनके लिये न तो ख़ुदा (ही) ने कोई सनद उतारी है और न इन (ही) के पास इसकी कोई अक़्ली दलील है और (क़यामत में ऐसे) बे इन्साफ़ों का कोई भी मददगार नहीं होगा० और (ऐ पैग़म्बर!) जब इनको हमारी खुली २ आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो तुम (इन) मुन्किरों के चेहरों में नाख़ुशी (के आसार) देखते हो–(यहाँ तक कि) क़रीब होता है कि—

उसकी आज्ञा से–(अर्थात् वह यदि उसको गिरने की आज्ञा दे, तो तुरन्त गिर पड़े और सब पृथ्वी के रहने वाले पिस कर रह जायं, लेकिन) अल्लाह तआला लोगों पर बहुत कृपालु (और अत्यन्त) मेहर्बान है। और वही है, जिसने तुमको जीवित किया। (जीवन देने के बाद) फिर (वही) तुमको मारता है। फिर (वही क़यामत के दिन) तुमको जीवित करेगा। निस्सन्देह मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न (और मूर्ख) है। (हे रसूल! हमने तुमको शरीअ़त देकर आज कोई नया नहीं भेजा, बल्कि) हमने हर (पहिली) उम्मत के लिये एक शरीअ़त नियत करदी थी, कि वह उस पर चलते थे। तो (तुम्हारी उम्मत के) इन (काफ़िर) लोगों को कदापि नहीं चाहिये कि वह इस विषय में तुमसे झगड़ें। और (तुम्हारा विरोध करें)–तुम (इनके झगड़े और विरोध की कदापि पर्वाह न करो। और) अपने पालन कर्त्ता की ओर (उनको) बुलाये जाओ (इसमें तनिक भी) सन्देह नहीं कि तुम सीधे मार्ग पर हो॥

और यदि (इस पर भी) यह लोग तुमसे झगड़ने लगें, तो तुम (इनसे) कहदो, कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला (जो तुम्हारा पालन कर्त्ता और स्वामी है, वह उसे) अच्छी तरह जानता है–(यहां संसार में) जिन बातों में तुम भेद (और विरोध) कर रहे हो–(याद रक्खो कि) क़यामत के दिन तुम्हारे बीच (उनका) .फ़ैसला अल्लाह तआला कर देगा। (हे मनुष्य!) क्या तू नहीं जानता कि जो कुछ अकाश में और पृथ्वी में (होता) है, अल्लाह तआला उसे (अच्छी तरह) जानता है। निस्सन्देह (तेरे) यह (समस्त कुकर्म) किताब में (अर्थात् तेरे नाम के कर्मों की सूची में लिखे हुए) (जो क़यामत के दिन तेरे सामने पेश होंगे)। और यह अल्लाह पर (बिल्कुल) सरल है॥

(इतना समझने पर भी यह काफ़िर नहीं मानते) और अल्लाह को छोड़कर उन वस्तुओं को पूजते हैं; जिन (के पूज्य होने) की (कोई) सनद (अल्लाह ने) नहीं उतारी। और न इन (ही) को इसका कुछ ज्ञान है। और कोई इन अत्याचारियों का सहायक न होगा। जब इन (लोगों) के सामने हमारी आयतें, जो (अपने अर्थ के पूरा करने में बिल्कुल) साफ़ (होती) हैं–पढ़ी जाती हैं, तो तुम इन मनुष्यों के मुखों पर, जो कुफ़्र करते हैं–(बुरे) बुरे चिन्ह देखते हो। (अर्थात् कुरआन सुन कर यह मनुष्य मुंह बना लेते हैं। और उनकी सूरत देखने से यह ज्ञात होने लगता है, कि) निकट है कि—

يالذين يتلون عليهم آياتنا قل أفأنبئكم بشر
من ذلكم النار وعدها الله الذين كفروا
وبئس المصير ● يا أيها الناس ضرب مثل
ع فاستمعوا له إن الذين تدعون من دون الله
لن يخلقوا ذبابا ولو اجتمعوا له وإن يسلبهم
الذباب شيئا لا يستنقذوه منه ضعف
الطالب والمطلوب ● ما قدروا الله حق
قدره إن الله لقوي عزيز ● الله يصطفي من
الملائكة رسلا ومن الناس إن الله سميع
بصير ● يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم و
إلى الله ترجع الأمور ● يا أيها الذين آمنوا
اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم وافعلوا
الخير لعلكم تفلحون ● وجاهدوا في الله حق

जो लोग इनको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, उन पर यह लोग हम्ला कर बैठें। ( ऐ पैग़म्बर! तुम इनसे ) कहो कि इस से भी बदतर तुम्हें ( एक और चीज़ ) बताऊं? ( लो सुनो! वह ) दोज़ख़ ( है )—जिसका वादा ख़ुदा मुन्किरों से करता है और ( वह बहुत ही ) बुरा ठिकाना है० लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, तो उसको कान लगाकर सुनो! कि ख़ुदा के सिवा जिन ( माबूदों ) को तुम पुकारते हो, एक मक्खी ( भी ) पैदा नहीं कर सक्ते, अगर्चे उसके ( पैदा करने के ) लिये ( सबके सब ) इकट्ठे ( ही क्यों न ) हो जाएँ और अगर मक्खी इनसे कुछ छीन ले जाय, तो उसको उससे छुड़ा नहीं सकते-( कैसे ) बोदे यह ( बुत ) जो ( मक्खी के ) पीछे पड़ें ( और उसको न पकड़ सकें ) और (कैसी) बोदी वह ( बेचारी मक्खी ) जिसका पीछा किया जाय ( और फिर भी हाथ न आये )० इन लोगों ने ख़ुदा की जैसी क़द्र जाननी चाहिये थी, जानी ही नहीं-( वर्ना ) अल्लाह तो बड़ा ज़बरदस्त ( सब पर ) ग़ालिब है० अल्लाह फ़रिश्तों में से ( बाज़ को अपने अहकाम ) पहुंचाने के लिये इन्तिख़ाब फ़र्मा लेता है और ( इसी तरह बाज़ को ) आदमियों में से ( भी )-क्योंकि अल्लाह ( सबकी ) सुन्ता और ( सबका हाल ) देखता है० वह इनके अगले और इनके पिछले ( सब ) हालात जानता है और सब कामों का मदार अल्लाह ही पर है० मुसलमानो! ( ख़ुदा की जनाब में ) रुकूअ करो और सज्दे करो और अपने पर्वर्दिगार की इबादत करो और नेकी करते रहो, ताकि तुम ( आख़िरकार अपनी ) मुराद को पहुंचो० और अल्लाह ( की राह ) में कोशिश करो, जैसा कि उस ( की राह ) में कोशिश करने का हक़ है-

---

यह लोग उन ( ईमानदारों ) पर, जो हमारी आयतें इनके सामने पढ़ते हैं ( मारे क्रोध के ) झपट पड़ें ( और उनका मुंह बन्द करदें। हे पैग़म्बर! तुम इनसे ) कहो! क्या मैं तुमसे इससे भी अधिक बुरी चीज़ का ( हाल ) बयान करूँ? ( हे रसूल! सुनो! वह नर्क की ) आग है, जिसका वादा अल्लाह ने इन काफ़िरों से किया है। और ( नर्क ) बहुत बुरा ठिकाना है। लोगो! ( तुम्हें समझाने के लिये तुमसे ) एक बात कही जाती है। अतः तुम उसको कान लगाकर सुनो ( और समझो )। निस्सन्देह ख़ुदा के अतिरिक्त तुम जिन ( मूर्तियों ) को पूजते हो, वह तो एक मक्खी भी नहीं पैदा कर सकीं। यद्यपि वह ( सब के सब ) इस ( छोटे से काम ) के लिये ( एक स्थान पर ) एकत्रित भी हो जायं। और ( मक्खी को पैदा करना तो अलग, यह तो स्वयं इतने विवश हैं कि ) यदि ( इनके पास कुछ मिठाई इत्यादि रक्खी हो और उसमें से ) मक्खी कुछ लेले, तो यह उस ( मक्खी ) से उस ( वस्तु ) को छुड़ा भी नहीं सक्ते॥

( वास्तव में यह है कि ) पूजा करने वाले ( मूर्ति-पूजक ) और ( उनके ) पूज्य ( मूर्तियां दोनों के दोनों ) विवश हैं। इन लोगों ने ख़ुदा का मान जैसा करना चाहिये था, न किया ( और बुतों की सेवा करके अपने परलोक को बिगाड़ लिया )। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा शक्तिवान ( और सब पर ) विजयी है। अल्लाह तआला फ़रिश्तों में से ( भी ) और मनुष्यों में से ( भी ) पैग़म्बर बनाने के लिये चुन लेता है। निस्सन्देह अल्लाह ( उनके वचनों का ) सुनने वाला ( और कर्मों का ) देखने वाला है॥

वह उनकी ( समस्त ) अगली और पिछली बातों से जानकार है। और ( उन्हें मालूम हो जायगा कि समस्त अच्छे बुरे ) कर्मों का फ़ैसला अल्लाह करेगा। हे ईमान वालो! ( तुम इनकी कहने में न आओ )। रुकूअ करो और सज्दा करो और अपने पालन कर्त्ता की पूजा करो। और नेकियां करो, जिससे कि ( लोक परलोक में ) कल्याण पाओ। और अल्लाह के मार्ग में जैसा कि जिहाद करने का हक़ है ( अर्थात् ख़ालिस ख़ुदा के लिये ) जिहाद ( अर्थात् धर्म-युद्ध ) करो—

جِهَادِهٖ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ
مِنْ حَرَجٍ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ
مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا
عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ فَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ هُوَ مَوْلٰىكُمْ
فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّثَمَانِيْ عَشَرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ
خٰشِعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ
هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰى اَزْوَاجِهِمْ
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝

उसी ने तुमको ( दुनिया के लोगों में से ) इन्तिख़ाब फ़र्माया और दीन ( के बारे ) में तुम पर किसी तरह की सख़्ती नहीं की—( तुम्हारे लिये वही ) दीन ( तज्वीज़ किया, जो ) तुम्हारे बाप इब्राहीम का ( था )-उसी ( ख़ुदा ) ने ( अगली किताबों में ) पहिले से तुम्हारा नाम मुसल्मान रक्खा-( यानी फ़र्मांबर्दार बंदे ) और इस ( क़ुर्आन ) में ( भी )-ताकि रसूल तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह हों और तुम ( दूसरे ) लोगों के मुक़ाबले में गवाह हो। तो नमाज़ें पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह ही का सहारा पकड़ो। वही तुम्हारा कारसाज़ है, तो ( क्या ही ) अच्छा कारसाज़ है और ( क्या ही ) अच्छा मददगार०

## सूरत—मोमिन

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ११८ आयतें और ६ रुकूअ हैं॥**

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)० ईमान वाले ( अपनी ) मुराद को पहुंच गये० ( और यह ) वह ( लोग हैं )—जो अपनी नमाज़ में आजिज़ी करते० और वह-जो निकम्मी बातों की तरफ़ रुख़ नहीं करते० और वह—जो ज़कात दिया करते० और वह—जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते० मगर अपनी बीबियों या अपने हाथ के माल ( यानी लौंडियों ) से कि ( इनमें ) उन पर कुछ इल्ज़ाम नहीं०—

---

उसने तुमको ( इस्लाम-धर्म प्रदान करके ) श्रेष्ठ बना दिया । और दीन ( व धर्म की आज्ञायें नियत करने ) में तुम पर किसी तरह की कठिनता नहीं रक्खी । ( और ) तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म ( तुमको प्रदान किया है। तुम उसको स्वीकार करो ) । उसीने पहिले से तुम्हारा नाम मुसल्मान ( अर्थात् आज्ञाकारी ) नियत किया और इस ( क़ुर्आन ) में भी जिससे कि ( क़यामत के दिन ) तुम पर (अर्थात् तुम्हारे मुसल्मान होने पर हमारे ) रसूल ( मुहम्मद ) गवाही दें और तुम ( बेईमान ) लोगों ( की बेईमानी ) के साक्षी बनो। ( और इस बात के साक्षी बनो कि रसूल ने उन्हें हमारी आज्ञायें पहुंचायीं लेकिन उन्होंने न माना ) ॥

अतः ( मुसल्मानो ! यदि क़यामत के दिन मुक्त होना चाहते हो, तो ) नमाज़ पढ़ो और ज़कात अदा करो और अल्लाह ( के धर्म ) की रस्सी को ( सब मिलकर मज़बूती के साथ ) पकड़ो । ( वास्तव में ) तुम्हारा मौला ( तुम्हारा रक्षक व स्वामी ) वही है। तो ( मुसल्मानो ! तुम्हारे सौभाग्य के क्या कहने ) । कितना अच्छा ( तुम्हारा ) मौला और कितना अच्छा ( तुम्हारा ) सहायक है ॥

## सूरत—मोमिन

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ११८ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥**

वास्तव में ( लोक परलोक की ) सफलता उन ( ही ) ईमान वालों ने प्राप्त की, जो अपनी नमाज़ में ख़ुशू ( अर्थात् मनोयोग ) करते हैं और जो ( प्रत्येक ) व्यर्थ बात ( के करने ) से बचते ( और घृणा करते ) हैं और ज़कात देते हैं। जो अपनी पत्नियों वा उन ( दासियों ) के अतिरिक्त, जिनके मालिक उनके हाथ हो चुके हैं ( अर्थात् जिन्हें वे ख़रीद चुके हैं-और समस्त स्त्रियों से ) अपने लज्जा-स्थानों को बचाए रखते हैं-( अर्थात् सहगमन वा तो अपनी स्त्रियों के साथ करते हैं-अथवा अपनी मोल ली हुई दासियों के साथ )-तो ( इसमें ) उन पर ( किसी प्रकार की ) बुराई ( वा किसी प्रकार का दोष ) नहीं ( आ सकता ) ॥

लेकिन जो इसके अलावा तलबगार हों, तो वही लोग हद्द ( शरअ ) से बाहर निकले हुये हैं० और वह जो अपनी अमानतों और अपने अह्द का पास मलहूज़ रखते० और वह–जो अपनी नमाज़ों के पाबन्द हैं० यही लोग ( आदम के अस्ली ) वारिस हैं० जो बहिश्त बरीं की मीरास पायेंगे ( और ) वह उसमें हमेशा ( हमेशा ) रहेंगे० और हमने इन्सान को मिट्टी के सत से बनाया० फिर हम ही ने उसको हिफ़ाज़त की जगह ( यानी औरत के रह्म में ) नुतफ़ा बना कर रक्खा० फिर हमही ने नुतफ़े का लोथड़ा बनाया, फिर हमही ने लोथड़े की बंधी बोटी बनाई, फिर हमही ने बंधी बोटी की हड्डियाँ बनाईं, फिर हमही ने हड्डियों पर गोश्त मढ़ा, फिर ( आख़िर कार ) हमही ने उसको ( गोया बिलकुल ) दूसरी ही मख़्लूक़ ( की सूरत में ) बना खड़ा किया । तो ( सुब्हानल्लाह ! )–ख़ुदा बड़ा ही बाबरकत है, जो ( सब ) बनाने वालों में बेहतर ( बनाने वाला ) है० फिर ( लोगो ! ) इसके बाद तुम ( सब ) को मरना है० फिर क़यामत के दिन तुम ( सब ) उठा खड़े किये जाओगे० और हमही ने तुम्हारे ऊपर सात आस्मान बनाये और पैदा करने ( के हुनर ) में हम कुछ अनाड़ी न थे०—

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۞
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۞
وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۞ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۞ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۞ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ
مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۞ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ
قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۞ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً
فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا
فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا
اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۞ ثُمَّ اِنَّكُمْ
بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۞ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
تُبْعَثُوْنَ ۞ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ
وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۞ وَاَنْزَلْنَا مِنَ

सो जो ( मनुष्य ) इसके अतिरिक्त ( कोई और अनुचित तरीक़ा सहगमन के लिये ) ढूंढे, तो वही ( वह लोग हैं, जो धार्मिक सीमा से ) बढ़ने वाले ( और एक बहुत बड़े पाप के भागी ) हैं ( और अपना लोक परलोक बिगाड़ते हैं ) और वह लोग–जो अपनी अमानतों ( में ख़यानत नहीं करते ) और अपनी प्रतिज्ञा का ख़्याल रखते हैं, और वह लोग जो ( अपने कर्त्तव्यों का नियम-पूर्वक पालन करते हैं, विशेषतः ) अपनी नमाज़ों की ( पूरी २ ) रक्षा करते हैं–(अर्थात् उनमें किसी प्रकार की कमी अथवा टाल मटोल नहीं करते, बरन् नियम-पूर्वक नमाज़ों को अदा करते हैं )–यही ( आदम के पश्चात् उनके ) वह ( भाग्यशाली ) वारिस हैं, जो ( अपनी नेकी तथा आधीनता के कारण उनकी बपौती अर्थात् ) फ़िरदौस ( जन्नत ) के वारिस होंगे ( और एक दो दिन के लिये नहीं, बरन् ) यह ( लोग ) सदैव इसी में रहेंगे ( और आनन्द करेंगे ) । (अतः जो मनुष्य यह स्थायी सुख, आनन्द प्राप्त करना चाहे, तो उपरोक्त गुण अपने में पैदा करे ) और ( यदि उसको हमारी किसी बात में सन्देह हो, तो उसको चाहिये कि हमारी शक्ति पर चिन्तन करे । हम वो हैं कि ) हमही ने ( प्रथम ) मनुष्य ( अर्थात आदम ) को ( एक अत्यन्त ) उत्तम मिट्टी से पैदा किया । ( और ) फिर हम ( ही ) ने उन ( की सन्तान ) को वीर्य्य ( की एक बूंद ) के द्वारा उत्पन्न किया । ( वीर्य की उस बूंद से )—जो एक स्थान ( अर्थात माता के गर्भाशय ) में स्थिर होती है ॥

( और इस प्रकार उत्पन्न किया कि जब वीर्य गर्भाशय में ठहर चुका, तो) पुनः हमने उस वीर्य को बंधा हुआ रक्त बनाया ( और जब बंधा हुआ ख़ून बन गया ) तो हमने उस बंधे हुए ख़ून को ( माँस एक ) लोथड़ा बनाया । फिर उस लोथड़े को हड्डियां बनाया ( और जब हड्डियां बन गईं ) तो हमने उन हड्डियों को मांस ( का लिबास ) पहिना दिया । ( और जब शरीर का एक ढाँचा तय्यार हो गया, तो ) फिर हम ( ही ) ने ( उसमें अपनी शक्ति तथा हिकमत से जीव डाल कर ) उसको एक और तरह का प्राणी बना दिया ( जो अपनी पहिली उत्पत्ति से बिलकुल निराला था । अर्थात पहिले हड्डियों का ख़ाली ख़ूली बेजान, बेज़बान बिलकुल जड़ पदार्थ के समान एक ढाँचा था और जीव पड़ते ही कुछ से कुछ हो गया )। अतः ( जिसकी यह शक्ति और यह शान हो, वह ) अल्लाह कितना बरकत वाला ( और ) कितना उत्तम सृष्टि कर्त्ता है ॥

( उसी के हुक्म से एक दिन ) फिर तुम ( सब ) अवश्य मर जाओगे ( और पृथ्वी से मिटा दिये जाओगे । और मृत्यु को प्राप्त हो जाने के उपरान्त ) फिर क़यामत के दिन ( उसी के हुक्म से ज़िन्दा करके ) उठाए जाओगे ( और तुमसे तुम्हारे बुरे भले कर्मों का हिसाब लिया जावेगा )। और हमही ने तुम्हारे ऊपर सात आकाशों को उत्पन्न किया । और ( इस बड़ी शक्ति के साथ २ हमारे ज्ञान की महिमा तो यह है कि ) हम ( अपने आकाशों और पृथ्वी के किसी ) प्राणी ( की आवश्यकताओं और कर्मों, वचनों तथा आचरणों ) से अनभिज्ञ नहीं हैं॥

السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنّٰهُ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّا
عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۝ فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهٖ
جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّأَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ
كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ ۝ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ
مِنْ طُوْرِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ
لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً
نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ
كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى
الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا
إِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
إِلٰهٍ غَيْرُهٗ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيْدُ
أَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ لَأَنْزَلَ مَلٰئِكَةً

और हमही ने एक अन्दाज़े के साथ आसमान से पानी बरसाया, फिर उसको ज़मीन में (जमा करके) ठहराये रक्खा और हम उस (पानी) के (उड़ा) ले जाने पर (भी) क़ादिर हैं० फिर उस (पानी) के ज़रिये से हमने तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों के बाग़ बना खड़े किये कि तुम्हारे लिये उनमें बहुत से मेवे (पैदा होते) हैं और उनमें से (बाज़ को) तुम खाते (भी) हो ० और (हमही ने ज़ैतून का वह) दरख़्त (पैदा किया) जो तूर-सैना (पहाड़) में (कसरत से) पैदा होता है (और) खाने वालों के लिये (गोया) रोग़न और सालन लिये हुये उगता है ० और (लोगो!) तुम्हारे लिये चारपायों में भी इब्रत (का मक़ाम) है कि जो (अला बला) उनके पेटों में (भरी) है, उसी में से हम तुमको (दूध) पिलाते हैं और (दूध के अलावा) चारपायों में तुम्हारे लिये (और भी) बहुत फ़ायदे हैं और उनमें से (बाज़ को) तुम खाते (भी) हो० और उन पर और किश्तियों पर चढ़े चढ़े (भी) फिरते हो ० और अलबत्ता हमने नूह को उनकी क़ौम (के लोगों) की तरफ़ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, तो उन्होंने (लोगों से) कहा कि भाइयो! अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तो क्या तुमको (उससे) डर नहीं लगता० इस पर उनकी क़ौम के सर्दार, जो मुन्किर थे—(आपस में) लगे कहने कि यह (भी) बस तुमही जैसा आदमी है (और) तुमसे बर्तर बनना चाहता है और अगर ख़ुदा को (पैग़म्बर ही भेजना) मन्ज़ूर होता, तो फ़रिश्तों को उतारता—

और हमही ने आकाशों से एक अनुमान के साथ (अर्थात आवश्यकतानुसार) पानी बरसाया (और) फिर उसको भूमि में ठहरा दिया (और दरिया बहा दिये)। और हम उसके लेजाने पर भी पूरी शक्ति रखते हैं। (अर्थात जब चाहें दरियाओं को सुखा दें और भूमि पर कहीं एक बूंद भी पानी न छोड़ें-किन्तु हम ऐसा करते नहीं)। सो हमने उस (पानी) के द्वारा तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों (आदि) के बाग़ पैदा किये, जिनमें अधिकता से फल (लगते) हैं (कि उनमें से कुछ तुम बेचते भी हो) और कुछ उनमें से तुम खाते (भी) हो। और (हमही ने ज़ैतून के) वृक्ष को भी (पैदा किया) जो तूर—सैना (नामी पर्वत) में पैदा होता है (और) खाने वालों के लिये तेल और सालन लेकर उगता है॥

और (बनस्पतियों को तरह हमारे पैदा किये हुये) पशुओं में (भी) तुम्हारे लिये (शिक्षा तथा) दीक्षा (का एक बड़ा ख़ज़ाना मौजूद) है। (तुम उनकी रचना और उनके लाभ पर एक गहरी दृष्टि डालोगे, तो तुमको उनमें भी हमारी ज़बर्दस्त और अद्वितीय शक्ति का एक आश्चर्य-जनक दृष्य दिखाई देगा। देखो!) उनके पेट में जो (दूध) है, उसे हम तुमको पिलाते हैं और (इस लाभ के अतिरिक्त) उनमें तुम्हारे लिये (और भी) बहुत से लाभ हैं--(यहाँ तक कि उनका ऊन) और (उनकी खाल तक तुम्हारे काम आने वाली है। और) उनमें से कुछ (का) तुम (माँस भी) खाते हो और उन (में से किसी २) पर (तुम बोझ भी लादते हो और उन पर) और नौकाओं पर तुम सवार भी होते हो॥

(तात्पर्य यह है कि लोगो! यदि तुमने हमारी सृष्टि तथा रचना पर ध्यान दिया, तो तुमको एक ही ख़ुदा की पूजा करने की शिक्षा हमारी सृष्टि के प्रत्येक कण से मिलेगी, जो तुम्हारे जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य है। हमने इसी उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिये अपने बड़े २ महान नबियों) और (रसूलों को भेजा। अतः) हमही ने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा था। सो (वह गये और) उन्होंने (जाकर) कहा-लोगो! (एक) अल्लाह की उपासना करो—(तुम्हारा सच्चा पूज्य वास्तव में वही है)। उसके अतिरिक्त तुम्हारे लिये कोई पूज्य है ही नहीं। तो क्या तुम (मूर्ति-पूजन करते समय उस सच्चे पूज्य से) डरते नहीं! इस पर उनकी जाति के (वह) सरदार जो काफ़िर थे-(अपनी जाति को सम्बोधन करके) कहने लगे-(भाइयो! नूह के कहने में न आना)—यह (कोई ख़ुदा का दूत नहीं है-वरन) तुम ही जैसा मनुष्य है। यह चाहता है कि (इस प्रकार नर्साहत करके) तुम पर (कुछ) बड़ाई प्राप्त करले। (भला यदि ख़ुदा को अपने बन्दों से कुछ कहना होता) और ख़ुदा (अपने बन्दों का सुधार करना) चाहता, तो वह निश्चित-रूप से (आकाश से अपने) किसी फ़रिश्ते को उतारता (और ऐसी अनोखी बात! कि इतने सारे ख़ुदाओं को छोड़ दो और केवल एक ख़ुदा को पूजो—कभी न कहला कर भेजता)॥

مَّا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ○ إِنْ هُوَ
إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ●
قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ● فَأَوْحَيْنَا
إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا
فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ فَاسْلُكْ فِيهَا
مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا
مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ وَلَا تُخَاطِبْنِي
فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ● فَإِذَا اسْتَوَيْتَ
أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ● وَقُل رَّبِّ
أَنزِلْنِي مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ خَيْرُ
الْمُنزِلِينَ ● إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ●
ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ● فَأَرْسَلْنَا

हमने तो ऐसी बात अपने अगले बाप दादों में (होती) सुनी नहीं० हो न हो-बस यह एक आदमी है, जिसको जुनून हो गया है। सो एक वक़्त (ख़ास) तक इस (के अंजाम) का इन्तिज़ार करो० नूह ने (ख़ुदा से) दुआ माँगी कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! जैसा इन्होंने मुझको झुटलाया है, तूही मेरी मदद कर० इस पर हमने नूह की तरफ़ वही भेजी कि हमारे ज़ेर—नज़र और हमारे ईमा के मुताबिक़ एक किश्ती बनाओ, फिर जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आने को हो और तन्नूर (ज़मीन से पानी) उबलने लगे, तो नाव में हर एक (जानदार) में से (नर व मादा) दो दो का जोड़ा बिठालो और (उनके साथ) अपने घर वालों को (भी)-मगर उन में से जिनकी निस्बत पहिले से (ग़र्क़ होने का) हुक्म हो चुका है—(उनको नहीं)। और जिन लोगों ने नाफ़र्मानियां की हैं, उनके बारे में हमसे कुछ अर्ज़-मारूज़ न करना—(क्योंकि) उनको (बहर हाल) डुबोना है० फिर जब तुम और तुम्हारे हमराही (सब इतमीनान से) किश्ती में बैठ लो, तो कहो कि ख़ुदा का शुक्र है, जिसने हमको (इन) ज़ालिम लोगों से नजात दी० और (ख़ुदा की जनाब में) दुआ करो कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मुझको (ज़मीन पर) बरकत का उतारना उतारियो और तू सब उताने वालों में बेहतर (उतारने वाला) है० कुछ शक नहीं कि इन (वाक़िआत) में (हमारी कुद्रत की बहुत सी) निशानियां हैं और हमको (लोगों के ईमान का) इम्तिहान लेना मंज़ूर था—(सो लिया) ० फिर उनके बाद हमने (एक) और उम्मत (समूद) निकाल खड़ी की०—

---

हमने तो अपने बुज़ुर्गों (के समय) में भी यह बात (होती) नहीं सुनी। तो बस यह (नूह) तो एक ऐसा मनुष्य है, जिसको पागलपन (हो गया) है। अतः (अभी इसको इसकी हालत पर छोड़ दो और) एक समय तक प्रतीक्षा करो-(कदाचित यह ठीक मार्ग पर आ जावे। तात्पर्य यह है कि नूह ने उनको बहुत कुछ समझाया, परन्तु वह अपने कौतुकों से किसी तरह न माने, तो) उन्होंने प्रार्थना की कि हे मेरे पालन कर्त्ता! तू (इन्हें नष्ट करदे और इनके मुक़ाबले में) मेरी सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मुझको झुठलाया (और मेरा कहा बिलकुल न माना)॥

इस पर हमने उसकी ओर (अर्थात् नूह की ओर) वही अर्थात् ख़ुदाई-सन्देश भेजा कि तुम हमारी रक्षा में और हमारी आज्ञा से एक नौका बना लो-(अति शीघ्र इन पर हमारा तूफ़ान-रूपी-अज़ाब आने वाला है)। सो जब हमारा हुक्म (अर्थात् अज़ाब) आ पहुंचे और (पृथ्वी के) तन्नूर (से पानी) उबलने लगे, तो तुम इस (नौका) में हर एक (मनुष्य तथा पशु) में से (नर मादा) दो दो का जोड़ा बिठा लेना और अपने घर के लोगों को (भी)-उनमें से उस मनुष्य के अतिरिक्त, जिस पर हमारे (अज़ाब का) हुक्म पहिले (ही) हो चुका है। और (देखो!) हमसे उन लोगों के बारे में, जिन्होंने कुफ़्र किया—(उस समय) बात भी न करना (अर्थात् उनकी सिफ़ारिश की प्रार्थना हमसे बिलकुल न करना)—वह अवश्य डुबो दिये जावेंगे। (और) जिस समय तुम और वह लोग, जो तुम्हारे साथ (हैं और तुम पर ईमान लाने वाले) हैं (नौका में अच्छी तरह) बैठ जायँ, तो तुम (कृतज्ञता-प्रकाशन के रूप से) कहना कि सब प्रशंसा उस ख़ुदा के लिये है, जिसने हमको ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिलाया। और (जब तूफ़ान की विपत्ति दूर हो जावे और तुम नौका से पृथ्वी पर उतरने लगो, तो) कहना-हे मेरे पालन कर्त्ता! मुझको (भूमि में) किसी बरकत वाले स्थान पर उतार दे और तू सब से अच्छा उतारने वाला है॥

निस्सन्देह (समझने वाले के लिये) इस (वृतान्त) में (उपदेश तथा शिक्षा के बहुत से) चिन्ह (पाये जाते) हैं। और हम (इस प्रकार की घटनाएं सुना कर लोगों को) परखते हैं (कि देखें कौन शिक्षा ग्रहण करता है और कौन नहीं करता)। फिर हमने उनके (अर्थात् नूह—जाति के पापियों को नष्ट कर देने के) उपरान्त एक दूसरे समूह (अर्थात् समूद की जाति) को उत्पन्न किया॥

और उन्हीं में से (सालेह को) रसूल (बनाकर) उनमें भेजा (और उन्होंने उनको समझाया) कि ख़ुदा की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तो क्या तुमको (उससे) डर नहीं लगता० और उनकी क़ौम के सर्दार-जो (उनकी रिसालत के) मुन्किर थे और (रोज़) आख़िरत के आने को (भी) झुठलाते थे और दुनिया की ज़िन्दगी में हमने उनको आसूदगी (भी) दी थी—(आपस में) लगे कहने कि यह (सालेह) बस तुम ही जैसा आदमी है, जो (खाना) तुम खाते हो, उसी क़िस्म का (खाना) यह भी खाता है और जो (पानी) तुम पीते हो, उसी क़िस्म का (पानी) यह भी पीता है० और अगर तुमने अपने जैसे बशर की पैरवी की, तो इस सूरत में ज़रूर तुममें (अक़्ल का) घाटा है० क्या (यह शख़्स) तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और (मर कर) तुम्हारी मिट्टी और हड्डियां रह जाएंगी, तो तुम (दुबारा ज़िन्दा करके ज़मीन से) निकाले जाओगे० (यह) बात जो तुम से कही जाती है-(बिलकुल अक़्ल से) दूर (और क़यास से) बईद है० (दुबारा पैदा होना कैसा)-यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है और बस—कि हम मरते (भी) हैं और जीते (भी) हैं और हम को (फिर जीकर) उठना नहीं० हो न हो! यह (सालेह) एक ऐसा (दिलेर) शख़्स है, जिसने ख़ुदा पर झूट बोहतान बांधा है और हम तो उस (के कहे) का यक़ीन करते नहीं० (लोगों का यह इन्कार देख कर सालेह ने) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! जैसा इन्होंने मुझे झुटलाया है, तू मेरी मदद कर० (ख़ुदा ने) फ़र्माया (ज़रा सब्र करो)-अन्क़रीब ही यह लोग (अपने किये से) ज़रूर नादिम होंगे०—

فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ
وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ
مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۝ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ
اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ
وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ۝
هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ اِنْ هِىَ اِلَّا
حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝
اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا
نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝
قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ

٤

الصَّيْحَةُ

(और) फिर हमने (उनको भी ख़ुदा के एक होने की शिक्षा देने के लिये) उन (ही) में से (अपने एक नेक बन्दे अर्थात् सालेह को अपना) रसूल (बनाकर) उनमें भेजा। (अतः उन्होंने उनसे जाकर कहा) कि (भाइयो! मूर्ति-पूजा छोड़ दो। एक) ख़ुदा की पूजा करो (और याद रक्खो कि) उसके अतिरिक्त तुम्हारा पूज्य (बनने के योग्य सारे संसार में) कोई नहीं। तो क्या तुम (यह अमूल्य उपदेश सुनने के बाद भी मूर्ति-पूजन करते हुए ख़ुदा तआला से) नहीं डरते॥

और (अपने कौतुकों से नहीं मानते। इस पर) उनकी जाति के वह सरदार बोले, जो काफ़िर थे और क़यामत के (दिन के) आने को झुठलाते थे और जिन्हें हमने (इस) सांसारिक जीवन में (बड़ा) सुख दे रक्खा था (कि भाइयो! यह सालेह जो अपने आपको ख़ुदा का दूत बताता है, यह बिलकुल झूठा है)। यह तो केवल तुमही जैसा एक मनुष्य है (इसमें और तुममें कुछ भी अन्तर नहीं। जो) चीज़ें तुम खाते हो, उन्हीं में से यह भी खाता है और जो (पानी) तुम पीते हो, उसी में से यह भी पीता है॥

(अतः तुम इसके कहने में न आ जाना) और यदि तुम (इस) अपने जैसे मनुष्य के कहने में आ गये तो (याद रक्खो!) उस समय तुम निश्चित रूप से हानि उठाने वाले होगे। क्या यह (अपने आपको ख़ुदा का रसूल बताने वाला) तुमसे यह कहता है कि जब तुम मर जाओगे और (मरने के पश्चात बिलकुल ख़ाक) मिट्टी और हड्डियां बन जाओगे, तो (फिर तुम-एक दिन ऐसा आवेगा कि ज़िन्दा किये जाओगे और अपनी २ क़ब्रों से ज़िन्दा) निकाले जाओगे। (भाइयो! हमारे विचार से तो) जो तुमसे कहा जा रहा है-(उसका प्रगट होना बुद्धि से) कोसों दूर है॥

हमारा जीवन तो बस संसार ही का है—(एक बार मरने के बाद फिर हम कभी ज़िन्दा न होंगे। इस सांसारिक कार्यालय का तो सदैव से यही नियम चला आता है कि यदि) हम (में से कुछ लोग) मर जाते हैं (तो उनकी जगह पूरी करने के लिये) और (नये लोग) हम (ही में से) पैदा हो जाते हैं। और हम (कभी मरने के बाद जी) उठने वाले नहीं। यह (सालेह) तो बस एक ऐसा मनुष्य है, जिसने अल्लाह तआला पर (स्पष्ट) झूठ बोहतान उठाया है और हम इस पर ईमान लाने वाले नहीं। (संक्षिप्त यह कि जब उन लोगों की उद्दण्डता तथा मूर्खता यहाँ तक बढ़ गई, तो सालेह ने) कहा-हे मेरे पालनहार! (इन मनुष्यों को नष्ट-भ्रष्ट करदे और इनके मुक़ाबले में) मेरी सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मुझको झूठा (असत्यवादी) बताया। (श्रेष्ठ) अल्लाह ने आज्ञा दी (कि ज़रा दम लो)-अभी (कुछ समय न बीतेगा कि) यह (पापी सबके सब अपनी करतूतों पर अत्यन्त) लज्जित हो जावेंगे॥

الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا
اٰخَرِيْنَ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ
ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً
رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا
وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ
ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۝ بِاٰيٰتِنَا
وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ
فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ۝ فَقَالُوْۤا
اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ
فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ۝ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ وَ
جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى

चुनाँचे ( हमारे वादए बर ) हक़ के मुताबिक़ उनको आवाज़ सख़्त ( के अज़ाब ) ने आ पकड़ा और हमने उनको ख़स व ख़ाशाक ( की तरह पामाल ) कर दिया। पस ज़ालिम लोगों पर ( ख़ुदा की ) लानत० फिर उनके बाद हमने और ( बहुत सी ) उम्मतें पैदा कीं० कोई उम्मत अपने वक़्त ( मुक़र्रर ) से न आगे बढ़ सकती और न ( उससे ) पीछे रह सकती है० फिर हम लगातार अपने पैग़म्बर भेजते रहे—जब जब किसी उम्मत का रसूल उनके पास आता, उसको झुटलाते, तो हम भी एक के पीछे एक को ( हलाक ) करते गये और ( नेस्त व नाबूर करके ) हमने उनके अफ़साने बना दिये। तो जो लोग ईमान नहीं लाते, उन पर ( ख़ुदा की ) लानत ० फिर हमने मूसा और उनके भाई हारून को अपनी निशानियाँ और दलील-ज़ाहिर के साथ ० फ़िरऔन और उसके दर्बारियों की तरफ़ ( पैग़म्बर बनाकर ) भेजा, तो वह ( सब ) शेख़ी में आ गये और वह थे ( भी ) सर्कश लोग० ( तो आपस में ) लगे कहने—क्या हम इन दो शख़्सों पर कि वह भी हमारे ही जैसे ( बशर ) हैं, ईमान ले आएँ, हालाँकि उनकी ( क़ौम की ) क़ौम हमारी ख़िदमत-गार है ० ग़रज़ इन लोगों ने ( मूसा और हारून ) दोनों को झुटलाया, तो ( अन्जाम यह हुआ कि ) हलाक कर दिये गये ० और हमने मूसा को किताब ( तौरात ) इस ग़रज़ से इनायत की थी कि लोग उस से हिदायत पाएँ ० और हमने मर्यम के बेटे ( ईसा ) और उनकी वालिदा ( मर्यम ) को ( अपनी कुद्रत की ) निशानी बनाया और उन दोनों को—

---

अतः उनको उचित रूप से ( एक अदृष्ट ) कड़क ने आ दबाया । अतः हमने उनको ( घास फूस की तरह बेजान और जैसे ) कूड़ा करकट ( होता है; वैसा बेकार ) कर दिया । ( सच पूछो ) तो अत्याचारियों ( अर्थात् काफ़िरों और मुश्रिकों तथा बेदीनों ) की जाति के लिये ( लोक परलोक में फटकार ही ) फटकार है। फिर उन ( नष्ट हुए लोगों ) के बाद हमने ( और ) दूसरी जातियों को पैदा किया । ( यह भी अपने २ नबियों और रसूलों को झुठलाती थीं । और असत्य पूजा में फंसी हुई थीं । सो जब उनके नष्ट होने का जो समय नियत था, वह आ गया, तो वह नष्ट-भ्रष्ट हो गईं । अगली, पिछली ) कोई जाति अपने ( विनाश के ) समय से न आगे बढ़ सकती है और न पीछे हट सकती है ॥

( और जब हमने इन जातियों को क्रमशः पैदा किया, तो ) फिर हमने ( उनकी शिक्षा के लिये ) अपने रसूलों को भी लगातार भेजा-( परन्तु ) जब कभी किसी जाति ( के मनुष्यों ) के निकट उसका रसूल आया, तो उन लोगों ने उसको झुठलाया ( और उसका कहा बिलकुल न माना )-तो हमने भी एक के पीछे एक को ( नष्ट-भ्रष्ट ) कर दिया—और उन ( के विनाश ) को ( शिक्षा-प्रद ) कहानियाँ बना दिया । सो ( ख़ुदा की ) फटकार उन लोगों पर है, जो ( ख़ुदा के रसूलों के समझाने पर भी ) ईमान नहीं लाते ( और असत्य-पूजा को सत्य पूजा से उत्तम जानते हैं और अपना लोक परलोक बिगाड़ते हैं ) ॥

फिर ( नियमानुसार ) हमने मूसा और उनके भाई हारून को ( अपना रसूल बनाकर और बहुत से ) चमत्कार तथा स्पष्ट-प्रमाण ( अर्थात लाठी का चमत्कार ) देकर फ़िरऔन और उसके दरबारियों की ओर भेजा, तो ( उन लोगों ने उन दोनों की ओर तनिक भी ध्यान न दिया और ) अकड़ने लगे । और वह लोग थे ही ( कुछ ) अभिमानी—( जब उन्होंने जाकर नसीहत की ) तो वह बोले, क्या हम अपने जैसे दो मनुष्यों पर ईमान ले आवें ( और विशेषतः ) ऐसी दशा में कि ( वह दोनों हमारे आधीन हों और ) उनकी जाति हमारी ही उपासना करती हो । सो उन लोगों ने उनको झुठलाया ( और बड़ी २ उद्दण्डताएँ कीं ) । अतः वह भी ( अपनी इस धूर्तता और कुकर्मों के कारण ) नष्ट हुये लोगों में से हो गये ॥

और हमने ( जो ) मूसा ( की जाति ) को तौरेत दी थी-( वह इस अभिप्राय से दी थी ) कि वह ( उसके द्वारा ) शिक्षा प्राप्त करें । और हम ( ही ) ने मर्यम के पुत्र ( अर्थात ईसा ) और उनकी माता ( के वृतान्त ) को ( संसार वालों के लिये अपनी शक्ति का एक बहुत बड़ा ) चिन्ह बना दिया—

رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۝ يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا
مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
عَلِيْمٌ ۝ وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا
رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ۝ فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ
كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝ فَذَرْهُمْ
فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا
نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ۝ نُسَارِعُ لَهُمْ
فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ
مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ
بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا
يُشْرِكُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ
اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ
فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ۝ وَلَا نُكَلِّفُ

ع ४

ق

एक ऊँची जगह पर जो ठहरने के क़ाबिल और शादाब भी थी—(लेजाकर) पनाह दी ० (हम तो अपने तमाम पैग़म्बरों से यही इर्शाद करते रहे हैं कि) ऐ (गिरोह) पैग़म्बरां! सुथरी चीज़ें खाओ और नेक अमल करो। तुम जैसे जैसे अमल करते हो, हम उन (सब) से वाक़िफ़ हैं ० और यह तुम्हारा (ख़ुदाई) गिरोह है (और अस्ल दीन के एतिबार से) एक ही गिरोह (है) और हम (ही) तुम सबके पर्वर्दिगार हैं, तो हम (ही) से डरते रहो ० फिर लोगों ने आपस में फ़ूट करके अपना (अपना) दीन जुदा जुदा कर लिया-(अब) जो (दीन) जिस फ़िरक़े के पास है-(वह) उसी से ख़ुश है ० तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम एक वक़्त (ख़ास) तक इन (लोगों) को इनकी ग़फ़लत में (पड़ा) रहने दो ० क्या यह लोग ऐसा ख़याल करते हैं कि हम जो माल और औलाद से इनकी इम्दाद किये चले जा रहे हैं०-(इसके यह माने हैं कि) इनको फ़ायदा पहुंचाने में हम जल्दी कर रहे हैं? (नहीं)-बल्कि यह (लोग अस्ल मतलब को) समझते नहीं (कि यह भी एक आज़माइश है) ० जो लोग अपने पर्वर्दिगार के ख़ौफ़ से तरसाँ (व हिरासाँ) रहते ० और जो अपने पर्वर्दिगार की आयतों का यक़ीन रखते० और जो अपने पर्वर्दिगार के साथ (किसी को) शरीक नहीं करते० और जितना कुछ देते बन पड़ता है-(ख़ुदा की राह में) देते और (इस पर भी) इनके दिलों को इस बात का खटका लगा रहता है कि उनको अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौट कर जाना है-(देखिये यह देना दिलाना वहाँ मक़्बूल भी होता है या नहीं) ०-यही लोग नेक कामों में जल्दी करते और उनके लिये लपकते हैं ०—

और हमने उन दोनों (मां बेटों) को एक उच्च (तथा उत्तम) भूमि पर (एक ऐसा) स्थान प्रदान किया, जो (बड़े) सुख (आनन्द) का (स्थान) था और (दरिया के किनारे पर होने के कारण अत्यन्त) हरा भरा (शोभायमान) था। (और जिस प्रकार हम अगली जातियों के सुधार के लिये नबियों और रसूलों को भेजते रहे हैं, उसी प्रकार हम अपने रसूलों को भी बराबर समझाते आये हैं कि) हे (हमारे) रसूलो! तुम (हमारी प्रदान की हुई) पवित्र वस्तुवें खाओ और (उनकी कृतज्ञता प्रकाश करने के लिये) नेक काम करो (और अपनी उम्मत को भी यही उपदेश दो)। निस्सन्देह जो कुछ तुम कर रहे हो, हम उससे भली भाँति अभिज्ञ हैं। और (याद रक्खो कि) यह (इस्लाम की मिल्लत) ही तुम्हारी मिल्लत (है—और मिल्लतों में सबसे अच्छी) एक (यही) मिल्लत है। और हम तुम्हारे पालन कर्त्ता हैं, अतः हमसे डरो॥

सो (उन रसूलों से जो कुछ कहा गया) उन्होंने (उस पर अमल किया, परन्तु उनकी अवज्ञाकारी जातियों ने उनका कहा न माना और) आपस में (तरह २ के मत-भेद करके) अपने (नबियों के धर्म के) टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये (और अपनी २ इच्छानुसार एक नवीन मत गढ़ लिया। और अब दशा यह है कि उनमें का) प्रत्येक समूह (अपने अपने बाप दादा के) इस (गढ़े हुये और असत्य-धर्म) से-जो उसके पास है-(अर्थात् जिसका वह अनुगामी है, अति प्रसन्न और) प्रफुल्लित है। अतः (हे मुहम्मद!) तुम उन (लोगों) को (उनकी मौत के) समय तक उनकी अचेतना (और अज्ञानता की नदी) में (डूबा हुआ) छोड़ दो—(मरने के पश्चात उनको सब हाल मालूम हो जावेगा)॥

(यह लोग इतने मूर्ख हैं कि अपनी सांसारिक उन्नति को अपने सत्य—पूजक होने का प्रमाण समझते हैं)—क्या यह इस विचार में हैं कि हम जो धन तथा सन्तान से इनकी सहायता करते हैं, तो (इसका कारण यह है कि) हम (इनकी) नेकियों (के लिखने) में भी जल्दी करते हैं? (अर्थात् यह इतने नेक हैं कि इनकी नेकियाँ बहुत अधिक हैं और यह धन तथा सन्तान इन्हीं की नेकियों का पुरस्कार है, यह बात कदापि नहीं है)—बरन यह (तो एक प्रकार की उन लोगों को ढील दी जा रही है—किन्तु यह मूर्ख इस बात को) समझते नहीं। (हां) अवश्य वह लोग—जो अपने पालनहारे से डरते और अपने पालन कर्त्ता की आयतों पर (सच्चे दिल से) ईमान रखते हैं और अपने पालनहारे के साथ (किसी को) साझी नहीं करते और (ख़ुदा के मार्ग में) जो कुछ वह दे सकते हैं—देते हैं और जिनके दिल (हर समय) इस (बात) से डरते (रहते) हैं कि उन्हें (एक दिन मरना है और मरने के बाद) अपने पालन कर्ता की ओर लौट कर जाना है-यह सच (यह लोग हैं, जो) नेकियों (के करने) में जल्दी करते हैं और नेकियों के लिये दौड़ते हैं॥

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ
هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ۝
حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا
هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ۝ لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا
لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ۝ مُسْتَكْبِرِيْنَ
بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ۝ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ
اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝
اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ
وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝ وَلَوِ اتَّبَعَ
الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ

और हम किसी शख़्स की ताक़त से बढ़ कर उस पर बोझ नहीं डालते और हमारे हाँ ( लोगों के आमाल का ) रजिस्टर है, जो ( हर एक का ) ठीक ( ठीक हाल ) बताता है और ( लोग इससे इतमीनान रक्खें कि किसी तरह ) उनकी हक़्-तल्फ़ी न होगी० लेकिन ( बड़ी ख़राबी की बात तो यह है कि ) इन ( लोगों ) के दिल इन ( बातों की तरफ़ ) से ग़फ़लत में हैं और ग़फ़लत के अलावा इनके ( और भी बहुत से ) आमाल ( बद ) हैं, जिनके यह मुर्तकिब होते रहते हैं ( और यह उन आमाल से बाज़ आने वाले हैं भी नहीं ० यहां तक कि जब हम इनमें से ख़ुश-हाल लोगों को ( अपने ) अज़ाब में धर पकड़ेंगे, तो यह फ़ौरन बिलबिला उठेंगे० ( उस वक़्त हम इनसे कहेंगे कि ) अब मत बिलबिलाओ । तुमको हमारे हाँ से ( किसी तरह की ) मदद मिलने वाली नहीं ० ( क़ुर्आन में से ) हमारी आयतें तुमको पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती थीं, तो तुम अकड़े अकड़े क़ुर्आन का मशग़ला बनाते हुए ० बेहूदा बकवास करते, उल्टे पाँव भागते थे० क्या इन लोगों ने ( सिरे से हमारे इस ) इर्शाद ( यानी क़ुर्आन ) में ग़ौर ही नहीं किया—या ( इनके बिदकने की यह वजह हुई कि ) इनके पास एक ( नई ) बात आई, जो इनके अगले बाप दादों के पास नहीं आई थी ० या यह लोग अपने रसूल ( की रास्त-बाज़ी ) से वाक़िफ़ न थे और ( लाइल्मी की वजह से ) यह उन ( की रिसालत ) से मुन्किर हैं ० या ( अपने रसूल की निस्बत ऐसी लग़्व बात ) कहते हैं कि इसको जुनून है—( इनमें से कोई सी बात भी नहीं )—बलिक रसूल इनके पास हक़् बात लेकर आया और इनमें से अक्सर हक़् से मुतनफ़्फ़िर हैं ० और अगर हक़् इनकी ख़्वाहिशों के मुताबिक़् हुआ करता, तो आस्मान व ज़मीन और जो कुछ इनमें है—( इन सबका इन्तिज़ाम कभी का ) दरहम व बरहम हो गया होता—

और हम किसी मनुष्य को उसकी शक्ति से अधिक दुःख नहीं देते और हमारे पास ( एक ऐसी ) पुस्तक है, जो सत्य ( बात ) बोलने वाली है—( अर्थात जो कुछ जो मनुष्य करता है, उसमें ठीक उसी प्रकार लिख दिया जाता है । क़यामत के दिन उसके द्वारा हर एक के कर्मों का बिल्कुल सही हाल ज्ञात हो जावेगा ) और लोगों पर अत्याचार नहीं किया जावेगा-बरन् ( क़यामत के दिन पूर्णतया सत्य तथा न्याय से काम लिया जावेगा । इतना समझाने के बाद भी ) इन ( काफ़िरों ) के दिल अचेतना में ( डूबे हुये ) हैं । और इसके अतिरिक्त और ( भी बहुत से ) ऐसे कर्म हैं, जिनको यह करते हैं ॥

( और यह लोग कभी अपने कुकर्मों से नहीं मानेंगे )- यहाँ तक कि जब इन ( में ) के धनवानों को ( अपने ) अज़ाब में धर पकड़ेंगे, तो ( उस समय ) वह ( सब ) अचानक चिल्ला उठेंगे । ( उस समय उनसे डांट कर कहा जायगा )—आज कुछ फ़रियाद न करो । ( आज के दिन ) निश्चित रूप से हमारी ओर से तुमको ( कुछ भी ) सहायता नहीं दी जावेगी । ( तुम्हें कुछ याद है ? कि जब दुनिया में ) हमारी आयतें तुम्हारे समक्ष पढ़ी जाती थीं, तो ( उस समय ) तुम उल्टे पैरों पीछे हट आते थे ( और ) अहङ्कार करते हुये ( और ) उसका ( अर्थात अल्लाह के कलाम का ) मज़ाक़ उड़ाते हुये ( ख़ुदा, रसूल और अल्लाह के कलाम के विषय में ) अनर्थ बकवास करते थे । ( हे रसूल ! यह लोग तुम्हें क्यों झुठला रहे हैं )—क्या उन्होंने ( अल्लाह के ) कलाम ( की उन आयतों ) में सोच विचार नहीं किया ? ( जो तुम्हारे नबी होने का समर्थन करती हैं )—अथवा ( उन्होंने मूर्खता-वश तुमको देखकर यह जाना कि तुम इस संसार में सबसे पहिले रसूल होने का दावा करते हो और ) उनके पास ( एक ) ऐसी ( नई ) चीज़ आ गई है, जो कि उनके पूर्वजों के पास नहीं आई-अथवा यह अपने रसूल ( की सचाई और ईमानदारी ) को ( चूंकि पहिले ) नहीं जानते ( थे )—इस लिये यह इन्कार कर रहे हैं ॥

वा यह ( चूंकि उन्हें दीवाना समझते हैं और ) कहते हैं कि उनको ( अर्थात रसूल को ) पागलपन ( होगया ) है ( इस कारण उनके रसूल होने के दावे को झूठा जानते हैं ? सत्य बात यह है कि इनके झूठा बताने तथा विरोध करने का कारण उपरोक्त कारणों में से एक भी नहीं है )—बरन् ( मूल—कारण यह है कि ) वह ( अर्थात हमारे रसूल ) उनके पास सत्य ( धर्म ) लेकर आये हैं और ( इन लोगों का स्वभाव असत्य-धर्म की पूजा करना है-इस कारण ) उनमें बहुत से ( ऐसे लोग हैं, जो ) सत्य ( पूजा ) को बुरा समझते हैं ( और उन्हें झुठलाते हैं ) ॥

और ( इतना नहीं समझते कि ) यदि ( यह ) सत्य ( धर्म ) भी उनकी ( मानसिक ) इच्छाओं के आधीन होता ( और मूर्ति-पूजन का खण्डन न करता ) तो ( ख़ुदा की पूजा का संसार में अस्तित्व ही न होता और ) समस्त आकाश तथा भूमि और जो कुछ उनमें है- ( सब असत्य-पूजा से ) ख़राब हो जाते—

وَمَنْ فِيهِنَّ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِ
هِمْ مُعْرِضُونَ ۝ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ
رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ۝ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ
وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ
فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝ حَتّٰى
اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا
هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ اَنْشَاَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا
تَشْكُرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ
وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ

बल्कि ( हक़ीक़तुल हाल तो यह है कि ) हमने इनको इनही के हालात लाकर सुनाये । अब यह अपने हालात ( के सुनने ) से गुरेज़ करते हैं ० या ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम इनसे ( तब्लीग़ रिसालत की ) कुछ उजरत माँगते हो, तो तुम्हारे पर्वर्दिगार की देन ( इनकी उजरतों से कहीं ) बेहतर है और ख़ुदा ( सब ) रोज़ी देने वालों से बेहतर ( रोज़ी देने वाला ) है० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम इनको सीधे रस्ते की तरफ़ बुलाते हो ० और जिन लोगों को आख़िरत का यक़ीन नहीं, वही ( सीधे ) रस्ते से हटे हुये हैं० और अगर हम इन ( के हाल ) पर रहम फ़र्मायें और जो तक्लीफ़ें इनको ( इनके कुफ़्र की वजह से ) पहुंचती रहती हैं, उनको दूर भी करदें, तो ( यह ऐसे बद—नफ़्स हैं कि ) अपनी सर्कशी पर इसरार करें ( और राह-रास्त से ) भटके भटके ( फिरें )० और हमने इनको मुब्तलाए—अज़ाब ( भी ) किया, ताहम यह लोग अपने पर्वर्दिगार के आगे न झुके और आजिज़ी करना तो इनका शेवा ही नहीं ० यहाँ तक कि जब हमने इन पर अज़ाब—सख़्त का दर्वाज़ा खोल दिया, तो उस वक़ फ़ौरन आस तोड़ बैठे० और ( लोगो ! ) वही ( ख़ुदाए मेहर्बान ) है, जिसने तुम्हारे लिये कान और आँखें और दिल पैदा किये-( मगर ) तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो ० और वही है, जिसने तुमको ज़मीन में ( हर तरफ़ ) फैला रक्खा है और ( क़यामत के दिन ) तुम ( सब ) को इकट्ठा करके उसी के हुज़ूर में लाया जाएगा ० और वही है, जो जिलाता और मारता है—

( इस लिये हमने सत्य-धर्म में इनकी मूर्ति-पूजन को बहुत बड़ा पाप ठहराया । और हमने केवल मूर्ति-पूजा की बुराई नहीं की ) वरन् हमने उनको ( एक ऐसी पुस्तक ) प्रदान की ( जो ) उनकी ( दुरुस्ती और सुधार के लिये ए ज़बर्दस्त ) नसीहत ( का सन्देश है )—तो यह अपनी ( दुरुस्ती तथा सुधार की ) शिक्षा ( ग्रहण करने ) से बचते हैं । ( रसूल ! ) क्या तुम ( इन्हें नसीहत करके उसके बदले कुछ।मंजूरी मांगते हो ? वा कुछ ) ख़र्च ( वसूल करने ) की उनसे इच्छ ( प्रगट ) करते हो—( जो यह उसके देने से घबराते हैं और तुम्हारी नसीहत नहीं मानते–यदि ऐसा है ) तो हे रसूल ! तु इनसे ख़र्च न मांगा करो ) । तुम्हारे पालन कर्त्ता का ( प्रदान किया हुआ ) ख़र्च ( इनके ख़र्च से ) बहुत श्रेष्ठ है और ( रसूल ! ) वह ( अर्थात तुम्हारा पालन कर्त्ता तो ) सर्वोत्तम अन्नदाता है-( फिर तुम्हें उनके ख़र्च की क्या पर्वाह हो सकती है )

( हे रसूल ! न तुम इनसे कुछ मंजूरी मांगते हो ) और ( न कुछ ख़र्च मांगते हो ) । निस्सन्देह तुम तो उन सीधे मार्ग की ओर बुलाते हो । और जिन्हें क़यामत ( के दिन के आने ) का यक़ीन नहीं है, वह ( सीधे ) मार्ग से फि हुये हैं । और ( उनकी दशा यह है कि जब किसी आपत्ति तथा मुसीबत में फंसते हैं, तो भी कृतघ्नता करते हैं और यदि हम उन ( की दशा ) पर ( अपनी ) अनुकम्पा करदें और जो दुःख उनको है उसको दूर करदें, तो भी ( कृतज्ञ के बदले ) अपनी उद्दण्डता पर ( सीधे मार्ग से ) भटक कर ( और ) जम जायँ । और ( बहुधा ) हमने उनको ( अपने अज़ाब में ( जैसे अकालादि की विपत्ति में ) फंसाया, तब भी यह ( लोग ) अपने पालन कर्त्ता के आगे न झुके । और आधीन तो यह ( लोग कभी ) किया ही नहीं करते । ( और यह लोग अपनी उद्दण्डता से कभी न मानेंगे )–यहां तक कि जिस समय उन पर ( अपने एक ) कठिन अज़ाब का द्वार खोल देंगे ( अर्थात उन्हें उसमें फंसा देंगे ) तो यह उसमें ( फंस कर ) एक आश्चर्य में पड़ जायँगे ॥

और ( लोगो ! सच्चे ख़ुदा पर ईमान लाओ ) । वही है, जिसने तुम्हारे लिये कान और आँखें और दि बनाए—( ताकि तुम सत्य बात को कानों से सुनकर और आँखों से देखकर दिल से उसका विश्वास करो और स दाता ख़ुदा की कृतज्ञता प्रकाशित करो, परन्तु ) तुम ( लोग ) बहुत ही कम ( उसकी ) कृतज्ञता ( प्रकाशित ) करते हो । ( अल्लाह ) वह ( सर्व शक्तिमान ) है, जिसने तुम्हें पैदा किया ( और तुम्हारी सन्तान को अधिकता से ) पृथ्वी में ( फै दिया ) और ( एक दिन वही तुम सबको नष्ट कर देगा । और मरने के पीछे ) तुम ( लोग ) उसी के दर्बार में ( हिस किताब देने के लिये ) एकत्रित किये जाओगे । और वही है, जो ( सबको ) जिलाता ( भी ) है और मारता ( भी ) है—

وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ●
بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ● قَالُوا أَإِذَا مِتْنَا
وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ● لَقَدْ
وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هٰذَا
إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ● قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ
فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ● سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ
قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ● قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ
السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ● سَيَقُولُونَ
لِلّٰهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ● قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ
كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ● سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ فَأَنّٰى تُسْحَرُونَ ●
بَلْ أَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكٰذِبُونَ ● مَا اتَّخَذَ
اللّٰهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلٰهٍ إِذًا لَذَهَبَ

और रात और दिन का रद्द व बदल भी उसीका ( काम ) है। तो क्या तुम ( लोग इतनी बात भी ) नहीं समझते ० ( इनके पास कोई जवाब माक़ूल तो है नहीं )—बल्कि जो बात अगले ( लोग ) कहते चले आये हैं, वैसी ही ( बात ) यह भी कहते हैं ० ( यानी ) कहते हैं कि क्या जब हम मर जाएँगे और ( मरे पीछे ) मिट्टी हो जाएंगे और ( सिर्फ़ ) हड्डियां ( बाक़ी रह जाएंगी )—क्या हम ( दुबारा ज़िन्द करके ) उठा खड़े किये जाएँगे ० हमसे और ( हमसे ) पहिले हमारे बड़ों से इसका वादा होता चला आया है। हो न हो—यह सिर्फ़ अगले लोगों के ढकोसले हैं ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) पूछो कि अगर तुम ( बड़े ) बूझ-बुझक्कड़ हो, तो ( भला इतनी बात तो बताओ कि ) ज़मीन और जो कुछ इसमें है—( यह तमाम कारख़ाना ) किसका है० वह फ़ौरन ( यही ) जवाब देंगे कि अल्लाह का—( इनसे ) कहो कि फिर तुम क्यों नहीं ग़ौर करते ० ( ऐ पैग़म्बर ! इनसे ) पूछो कि सात आसमानों का मालिक कौन है ? और ( नीज़ ) अर्श—आलीशान का मालिक ( कौन है ? ) ० वह फ़ौरन ( यही ) जवाब देंगे कि ( यह सब कुछ ) अल्लाह ही का है—( अब तुम इनसे ) कहो कि क्या फिर तुमको ( उससे ) डर नही लगता ? ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि अगर तुम ( बड़े ) बूझ-बुझक्कड़ हो, तो ( भला इतनी बात तो बताओ कि ) कौन ( ऐसा क़ादिर—मुतलक़ ) है, जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है और वह ( जिसको चाहता ) पनाह देता और उसके मुक़ाबले में कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता० वह फ़ौरन ( यही ) जवाब देंगे कि ( यह सब सिफ़तें तो ) अल्लाह ही की हैं—( अब इनसे ) कहो कि फिर तुम पर कैसी पुटकी पड़ जाती है ० हक़ यह है कि सच्ची बात हमने इनको पहुंचा दी है और यह बेशक झूटे हैं ० न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया और न उसके साथ कोई और ख़ुदा है—

---

और उसी ( की आज्ञा ) से दिन और रात्रि का परिवर्तन ( प्रगट होता ) है । ( लोगो ! आखिर तुमको ) क्या ( हो गया है, जो ख़ुदा की शक्ति की इतनी स्पष्ट बातें भी ) नहीं समझते। ( सत्य यह है कि यह लोग बड़े ही मूर्ख हैं—न सोचते हैं, न समझते हैं )—बरन ( ख़ुदा की शान में और उसके आदेश के बारे में ) अगले लोगों की बकवास की तरह ( जो मुंह में आता है, वैसे ही ) बक देते हैं । ( और ) कहते हैं कि क्या जब हम मर जायँगे और ( मर कर बिल्कुल ) ख़ाक ( मिट्टी ) और ( निरी गली सड़ी ) हड्डियां बन जायगे—( तो फिर भी ) क्या हम ( दुबारा ) जीवित किये जावेंगे ? हम से और हमारे बाप दादा से ( अर्थात् हमसे ) पहिले ( जो लोग थे, उनसे बराबर ) यही वादा होता आया है—( परन्तु आज तक उसे पूरा होना नसीब नहीं हुआ । हमारे निकट तो ) बस यह वही अगलों की कहानियाँ ( और बे सनद बातें ) हैं ॥

( हे रसूल ! इन मूर्खों के समझाने के लिये तुम इनसे ) कहो कि ( अच्छा बताओ तो सही कि ) भूमि और जो भूमि में है, वह किसका है ? यदि तुमको ( कुछ ) समझ है । ( प्रमाणों तथा घटनाओं से विवश होकर ) वह ( यही ) कहेंगे कि ( पृथ्वी और पृथ्वी पर जो कुछ भी है )—अल्लाह की मिल्कियत है, तो तुम ( उनसे ) कहो कि फिर तुम क्यों नहीं सोचते। ( हे रसूल ! उन पर दलील पूरी करने के लिये उनसे ) पूछो कि सातों आस्मानों और बड़े अर्श का स्वामी कौन है ? (लाचार होकर) वह यही कहेंगे कि ( आस्मान और अर्श आदि हर एक वस्तु ) अल्लाह की जागीर है—( तो ) तुम कहना कि फिर तुम ( उससे ) डरते क्यों नहीं ॥

( हे रसूल ! ) तुम ( इनसे यह भी ) पूछो कि ( दुनिया की छोटी बड़ी ) हर एक वस्तु की हुकूमत ( की बाग ) किसके ( ज़बर्दस्त ) हाथ में है ? और ( वह ) कौन है, जो ( हर एक की ) फ़रियाद सुनता है ? और ( ऐसा श्रेष्ठ तथा महान है कि ) उस पर ( किसी मनुष्य की ओर से ) इस्तग़ासा ( दायर ) नहीं किया जा सकता। यदि तुमको ( कुछ ) समझ ( बूझ ) हो—( तो बताओ ? विवश होकर ) कहेंगे कि ( यह सब बातें भी ) अल्लाह ही के अधिकार में हैं । ( तो ) तुम कहना कि फिर ( वह ) तुम पर कैसा जादू किया गया है ( कि सब बातें मानते जाते हो और फिर भी उसकी आधीनता तथा आज्ञा पालन नहीं करते और कुफ्र तथा उद्दण्डता से नहीं मानते ) ॥

( यह जादू किये हुए नहीं हैं ) बरन ( सत्य बात यह है कि ) हमने एक सत्य बात उनको बताई है और यह हैं झूठे ( तथा असत्य—पूजक, वह इनकी समझ में नहीं आई ) । ( लोगो ! अच्छी तरह सुनो !! और याद रक्खो कि ) अल्लाह ने किसी को ( अपनी ) सन्तान नहीं बनाया और न उसके साथ ( अर्थात् उसकी ईश्वरीयता में साझी ) कोई ( और ) पूज्य है—

كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ قُل رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي مَا
يُوعَدُونَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ۝ وَإِنَّا عَلَىٰ أَن نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ
لَقَادِرُونَ ۝ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۝ وَقُل رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ
مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ ۝ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ
أَن يَحْضُرُونِ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۝ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا
تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِن
وَرَائِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَإِذَا نُفِخَ
فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا

वर्ना हर एक ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ात को (अलग लिये) लिये फिरता और (आपस में लड़ते और आख़िरकार) एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता। जैसी जैसी बातें यह (लोग अल्लाह की निस्बत) बयान करते हैं, अल्लाह (की ज़ात) उनसे पाक है ० (वह) ग़ायब और हाज़िर (सब) को जानता (है) और वह लोगों के शिर्क से (बरी और) बालातर है ० (ऐ पैग़म्बर! तुम तो यह) दुआ करो कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! जिस (अज़ाब) का वादा इन (काफ़िरों) से किया जा रहा है, अगर (शायद वह अज़ाब) तू मुझको दिखाये० तो ऐ मेरे पर्वर्दिगार! (इन) ज़ालिम लोगों में (कहीं) मुझको न शामिल कर लेना ० और (ऐ पैग़म्बर!) हम इस पर (भी) क़ादिर हैं कि जिस (अज़ाब) का वादा इन (काफ़िरों) से कर रहे हैं (तुम्हारी ज़िन्दगी में इन पर नाज़िल करें और) तुमको दिखायें० (ऐ पैग़म्बर! अगर कोई तुम्हारे साथ बदी करे, तो) बदी का दफ़ीआ ऐसे बर्ताव से करो कि वह (देखने में) बहुत ही अच्छा हो (और) जो कुछ यह (लोग तुम्हारी निस्बत) कहते हैं, हम उससे ख़ूब वाक़िफ़ हैं ० और (यह भी) दुआ करो कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मैं शैतानी वस्वसों से तेरी पनाह माँगता हूं ० और ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मैं इस से (भी) तेरी पनाह मांगता हूं कि शयातीन मेरे पास आयें (और भड़काएँ-रहे कुफ़्फ़ार, तो यह मानने वाले हैं नहीं) ० यहाँ तक कि जब इनमें से किसी की मौत आ मौजूद होगी, तो दुआएँ माँगेगा कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! आप (एक बार) मुझे फिर (उल्टा) भेज दीजिये ० ताकि (दुनिया) जिसको मैं छोड़ आया हूं, उसमें (फिर जाकर) नेक अमल करूं—(हम फ़रिश्तों की तरफ़ मुख़ातिब हो कर फ़र्माएंगे कि हाशा व) कल्ला! यह एक (अनहोनी) बात बकता है (तो इसे बकने दो, कहीं ऐसी दरख़्वास्तें मंज़ूर होती पड़ी हैं!) और लोगों के (मरे) पीछे (एक आलम) बर्ज़ख़ है—(जिसमें उनको) उस दिन तक (रहना होगा, जब) कि (दुबारा ज़िन्दा करके) उठा खड़े किये जायेंगे ० फिर जब सूर फूंका जाएगा, तो उस दिन न तो लोगों में रिश्तेदारियां (बाक़ी) रहेंगी और न—

---

(यदि कोई उसका साझी होता) तो उस समय प्रत्येक पूज्य अपनी सृष्टि को (अलग) ले जाता और कोई (पूज्य) क[ो] पर बड़ाई प्राप्त (करने का उद्योग) करता (और सांसारिक प्रबन्ध एक दम छिन्न भिन्न हो जाता। चूंकि सांसारिक प्रब[न्ध] क़ायम है, इस लिये स्पष्ट विदित है कि) अल्लाह (एक है। उसका कोई साझी नहीं और वह) इन (काफ़िरों) के मिथ्[या] भाषण से (बिलकुल) पवित्र (और बरी) है (और प्रत्येक) गुप्त तथा प्रगट (वस्तु) का जानने वाला है। सो वह (मुश्रिकों) के शिर्क से (बहुत ही) उच्च (तथा श्रेष्ठ) है। (हे रसूल! तुम) कहो कि हे मेरे पालन कर्त्ता! यदि तू मुझको (अ[पने]) अज़ाब का वह) वादा, जो इनसे किया जा रहा है-दिखावे, तो हे मेरे पालन कर्त्ता! तू मुझको (इन) अत्याचारियों (अ[ौर]) उद्दण्डों) की जाति (के साथ अपने अज़ाब) में (साझी) न कीजो॥

और हम जो (अज़ाब का) वादा इन (मुश्रिकों) से कर रहे हैं, उसके दिखाने पर पूर्ण शक्ति रखते हैं। (और इनक[ी]) बुराई का बदला उस (रीति) से दो, जो (अच्छी और) उत्तम है—जो २ कुछ दुर्वचन यह (तुम्हारी शान में) [क]रहे हैं, हम उससे भली भांति अभिज्ञ हैं। और कहो-कि हे मेरे पालन कर्त्ता! मैं शैतान के वस्वसों से (बचने के लिये) तु[झसे] शरण माँगता हूं और मैं तुझसे हे मेरे पालनहारे! इस (बात) से भी शरण मांगता हूं कि वह (शैतान) मेरे पास आएँ। (और यह काफ़[िर]) तो इन ही कुकर्मों में फंसे रहेंगे)—यहां तक कि (इनको मृत्यु आ जावे)-जब इनमें से किसी को मौत आवेगी, तो वह कहेग[ा] हे मेरे पालन कर्त्ता! मुझको (फिर दुनिया में) लौटा दे, ताकि जिस (संसार) को मैं छोड़ आया हूं, उसमें (अब के जाक[र]) नेक काम करूं। (हम उस समय अपने फ़रिश्तों से कहेंगे)-यह तो केवल उसकी (कोरी) एक बात है, जिसे यह कह रहा है[।]

और (अब दुनिया में यह कुकर्मी किस प्रकार लौट कर जा सकते हैं!! अब तो) इनके लिये क़यामत के [दिन] तक बरज़ख़* है। फिर (इस दशा के बाद) जब सूर फूंका जावेगा, तो उस दिन इनमें न (रिश्ता) नाता (बाक़ी) रहेगा और [न]

*टीका—मरने के बाद क़यामत के दिन तक मुर्दे जिस दशा में रहेंगे, उसको बरज़ख़ कहते हैं:—हसन निज़ामी॥

एक दूसरे की बात पूछेंगे ० फिर जिन ( के नेक अमलों ) का पल्ला भारी निकलेगा, तो यही लोग बा-मुराद होंगे ० और जिन ( के नेक अमलों ) का पल्ला हल्का ठहरेगा, तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने तईं आप बर्बाद कर लिया कि हमेशा ( हमेशा ) दोज़ख़ में रहेंगे ० आतिश ( दोज़ख़ की लपट ) उनके मुंहों को झुलस्ती होगी और वह वहां बुरे मुंह बनाये होंगे ० ( हम उनसे पूछेंगे कि ) क्या ( दुनिया में ) हमारी आयतें तुमको पढ़ पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं ? ( ज़रूर सुनाई जाती थीं ) और तुम उनको ( सुन समझ कर ) झुटलाते थे० वह कहेंगे ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमको हमारी कमबख़्ती ने आ दबाया और हम गुमराह लोग थे ० ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम को ( किसी तरह ) इस ( दोज़ख़ ) से निकाल। फिर अगर हम दुबारा ( ऐसा कुसूर ) करें, तो हम बेशक कुसूरवार० ( ख़ुदा ) फ़र्मायेगा ( हमारे सामने से ) दूर हो ! ( और ) इसी ( जहन्नम ) में (रहो) और हमसे बात न करो ० हमारे बन्दों में एक गिरोह ऐसा भी था, जो कहा करते थे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम ईमान लाये, तू हमारे कुसूर माफ़ कर ! और हम पर रह्म फ़र्मा ! और तू ( सब ) रह्म करने वालों से बेहतर ( रह्म करने वाला ) है ० तो तुमने उनकी हँसी बनाई। यहां तक कि ( गोया ) उन्होंने तुमको हमारी याद ( भी ) भुलादी और तुम उनसे मख़ौल करते रहे ० आज हमने उनको उनके सब्र का बदला दिया कि वही—

يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝
تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝
أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا
تُكَذِّبُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا
وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۝ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ
عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا
تُكَلِّمُونِ ۝ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي
يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا
وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا
حَتَّىٰ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ۝
إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ

---

( कोई ) एक दूसरे का ( हाल ) पूछने वाला होगा। फिर ( कर्मों की तुला उपस्थित की जावेगी और कर्म तोले जावेंगे। अतः ) जिन ( के कर्मों ) का पलड़ा भारी होगा, तो यही ( वह भाग्यवान ) लोग ( होंगे, जो ) सफलता प्राप्त करेंगे। और जिन ( की नेकियों ) का पलड़ा हलका होगा, तो यह वह ( अभागे ) लोग होंगे, जिन्होंने ( कुकर्म करके ) अपनी जानों को ( अपने आप ) टोटे में डाला—यह ( लोग ) सदैव नर्क ही में रहेंगे। ( और नर्क में उनकी बहुत बुरी हालत होगी )– आग उनके मुंह को झुलस डालेगी और वह उसमें झुलसे हुये ( पड़े ) होंगे–( फिर उस समय उनसे कहा जायगा कि ) क्या ( नबियों और रसूलों के द्वारा ) हमारी आयतें तुम्हारे सन्मुख नहीं पढ़ी जाती थीं ? ( पढ़ी तो जाती थीं–परन्तु जब पढ़ी जाती थीं ) तो तुम उन्हें ( जान बूझ कर ) झुठलाते थे। ( यह उस समय अपने अपराध स्वीकार करेंगे और ) कहेंगे कि हे हमारे पालन कर्त्ता ! ( तू सत्य कहता है। निस्सन्देह उस समय ) हमारा अभाग्य हम पर प्रबल था और हम ( अपने दुर्भाग्य के कारण ) पथ-भ्रष्ट ( होना पसन्द करते ) थे ॥

हे हमारे पालन कर्त्ता ! ( अब तू हमारे ऊपर इतनी कृपा कर कि ) तू हमको इस ( अग्नि ) से निकाल दे ( और हमें दुनिया में भेज दे ! और एक बार और हमको प्रयत्न करने का अवसर दे )। अतः यदि ( अब के हम दुनिया में भेज दिये गये और वहां जाकर ) फिर हमने वही ( बुरे २ ) कर्म किये, तो ( फिर ) हम बिल्कुल अत्याचारी ( तथा उद्दण्ड ) होंगे ( और कठिन दंड के भागी होंगे। इसके उत्तर में संसार के पालनहारे की ) आज्ञा होगी—( हे दुष्टो ! अपनी करतूत की सज़ा में ) इसी ( दोज़ख़ की आग ) में पड़े ( जलते ) रहो ! और हमसे ( कुछ ) बात न करो। निस्सन्देह एक समूह हमारे बन्दों में से ऐसा भी था, जो कहा करता था—हे हमारे पालन कर्त्ता ! हम ( तुझ पर और तेरे रसूल पर सच्चे दिल से ) ईमान ले आये। अतः तू ( अपनी कृपा से ) हमें क्षमा करदे और हम पर दया कर ! और ( हमारे पापों की ओर दृष्टि न कर, क्योंकि ) तू ( सब ) दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है ॥

अतः तुमने उन ( नेक लोगों की कुछ क़द्र न की, और क़द्र तो क्या करते, तुमने उलटा उन ) की हँसी उड़ाई ( और उनको सर्वदा तुच्छ और अपमानित ही जाना )–यहां तक कि उन्होंने ( अर्थात् उनके तुच्छ समझने ने ) तुमको मेरी याद से खो दिया—( परन्तु तुम फिर भी अपनी करतूतों से न हटे )। और ( हमें ज्ञात है कि ) तुम ( बराबर ) उनसे हंसी करते थे। निस्सन्देह आज हम उनको उनके सन्तोष का पुरस्कार प्रदान करेंगे। निस्सन्देह कृतार्थ ( तथा आदरनीय लोग ) वही हैं ( और तुम अन्त में बिल्कुल तुच्छ तथा अपमानित और मुक्ति तथा सफलता से कोसों दूर रहे ) ॥

(ख़ातिर ख़्वाह अपनी) मुराद को पहुंचे॰ (फिर ख़ुदा दोज़ख़ियों से) पूछेगा कि (भला) तुम ज़मीन पर गिनती के कितने बरस रहे (होंगे?)॰ वह कहेंगे (बरस कैसे) हम (बहुत) रहे (होंगे, तो) एक दिन या एक दिन से भी कम- (ठीक वक़्त याद नहीं)-जो (दिन और महीने) गिनते रहे हों, उनसे पूछ देखिये॰ (इस पर ख़ुदा) फ़र्मायेगा कि बेशक तुम (रूए ज़मीन पर) थोड़ी ही देर रहे, (मगर ऐ) काश! तुम (यही बात जीते जी) समझे होते॰ (लोगो!) क्या तुम ऐसा ख़याल करते हो कि हमने तुमको (यूं ही) बेकार पैदा कर दिया है? और यह कि तुमको हमारी तरफ़ फिर लौट कर आना नहीं॰ तो ख़ुदा (जो) बादशाह बरहक़ (है, बे फ़ायदा काम करने से बरी और) बालातर है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं-(वही) अर्श-बुज़ुर्ग का मालिक (है)॰ और जो शख़्स ख़ुदा के सिवा किसी और माबूद को (अपनी हाजत-रवाई के लिये) बुलाता है (और) उसके पास इस (शिर्क करने) की कोई दलील (तो है) नहीं, तो बस उसके पर्वर्दिगार ही के हां उसका हिसाब होना है-(मगर मालूम रहे कि) काफ़िरों को (तो किसी तरह) फ़लाह होनी नहीं॰ और (ऐ पैग़म्बर!) तुम दुआ करो कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! (हमारे क़ुसूर) माफ़ कर! और (हमारे हाल पर) रहम फ़र्मा! और तू (सब) रहम करने वालों से बेहतर (रहम करने वाला) है॰

## सूरत—नूर

**मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें ६४ आयतें और ८ रुकूअ हैं**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)॰ (यह एक) सूरत है, जिसको हमने उतारा और यह (दस्तूरुल अमल) हमारा ही बांधा हुआ है और हमने इसमें खुले खुले अहकाम नाज़िल किये, ताकि तुम (मुसलमान उनको) याद रक्खो (और उन पर अमल करो)॰ औरत और मर्द ज़िना करें, तो उन दोनों में से हर एक को सौ दुर्रे मारो—

الْفَآئِزُوْنَ ۝ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ
قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ۝
قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝
اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا
تُرْجَعُوْنَ ۝ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ۝ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ
اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ
اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ
وَاَنْتَ خَيْرُ | سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ | الرّٰحِمِيْنَ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍ
بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ
فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَّلَا

---

(फिर संसार का पालन कर्त्ता उन लोगों से) पूछेगा कि (बताओ!) तुम कितने वर्ष भूमि में ठहरे? कहेंगे (ह ठीक समय तो ज्ञात नहीं-हाँ ऐसा जान पड़ता है कि जैसे) हम (पृथ्वी में) एक दिन रहे वा एक दिन से भी कम। अतः उन गिनती करने वालों से (अर्थात जो फ़रिश्ते अच्छे बुरे कर्मों का हिसाब रखते हैं)-पूछ ले। आज्ञा होगी (हमें सब ख़बर है)- तुम (बहुत) थोड़े (दिन) ठहरे। क्या अच्छा होता तुम (वहीं इस बात को) जान जाते (कि तुमको दुनिया में अल्प-का रहना है)-क्या तुमने यह समझ रक्खा था कि हमने तुमको (बिल्कुल) व्यर्थ पैदा किया? और तुमको (मर कर) निश्चित रूप हमारे पास लौट कर नहीं आना? तो सच्चा बादशाह अल्लाह (श्रेष्ठ तथा) उत्तम है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। (अं वह) बड़े अर्श (तक) का स्वामी है॥

और जो (ऐसे श्रेष्ठ तथा उत्तम) अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य (को साझी करता है और उस) की पूजा कर है—(यद्यपि) उसके पास इस (बात) का कोई प्रमाण नहीं, तो ऐसे (मनुष्य) का हिसाब तो उसके पालन कर्त्ता के यहां (लि हुआ मौजूद) है। निस्सन्देह (इस प्रकार के जितने मनुष्य हैं, वह सब मुश्रिक और काफ़िर हैं। और मुश्रिक तथा) काफ़िर क कृतार्थ नहीं होते। और (हे रसूल! हमसे) कहो कि, हे मेरे पालनहारे! (मैंने प्रचार सम्बन्धी कर्त्तव्य यथा-शक्ति पूर्ण कर दिया, अत तू (मुझे) क्षमा करदे! और (मुझ पर) दया कर! और तू (तो सब) दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है॥

## सूरत—नूर

**मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ६४ आयतें और ८ रुकूअ हैं॥**

(लोगो! यह वह) सूरत (है कि) हमने (अपने बन्दे मुहम्मद पर) इसको उतारा है और इस (में कुछ आज्ञाएं वर्णन की हैं उन आज्ञाओं) को (तुम पर) फ़र्ज़ किया है। और हमने उसमें (अपनी शक्ति के बहुत से) स्पष्ट-चिन्ह (भी) वर्णन किये हैं, त तुम (उनसे शिक्षा तथा) नसीहत पकड़ो-(देखो!) व्यभिचार करने वाली (स्त्री) और व्यभिचार करने वाला (पुरुष यदि समझ हों और किसी के गुलाम न हों और क्वांरे हों) तो उन दोनों में से प्रत्येक के (सौ) सौ कोड़े मारो॥

تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِيْنِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا
طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۞ اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ إِلَّا
زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ إِلَّا
زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۞
وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِأَرْبَعَةِ
شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا
لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۞
إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوْا
فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ
أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ إِلَّآ
أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ ۞
بِاللّٰهِ إِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۞ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ

और अगर अल्लाह और रोज़ आख़िरत का यक़ीन रखते हो, तो अल्लाह के हुक्म की तामील में तुमको उन ( के हाल ) पर ( किसी तरह का ) तर्स दामनगीर न हो और ( नीज़ ) उनके सज़ा देते वक़्त मुसल्मानों की एक जमाअत ( उनकी फ़ज़ीहत के लिये ) मौजूद रहे ० बदकार मर्द ( तो अपनी रग़बत से जब निकाह करेगा, ग़ालिबन ) बदकार औरत या मुश्रिका औरत ही से निकाह करेगा और बदकार औरत ( भी ग़ालिबन अपना ही जैसा ढूँडेगी और उस ) को बदकार या मुश्रिक के सिवा और कोई निकाह में नहीं लायेगा और ( दीनदार ) मुसल्मानों पर तो ऐसे तअल्लुक़ात हराम हैं० और जो लोग पाक दामन औरतों पर ( ज़िना की ) तोहमत लगाएँ और चार गवाह न ला सकें, तो उनको अस्सी दुर्रे मारो और ( आयन्दा ) कभी उनकी गवाही क़बूल न करो और यह लोग ख़ुद बदकार हैं० मगर जिन्होंने ऐसा किये पीछे तौबा की और अपनी आदत दुरुस्त करली, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और जो लोग अपनी बीबियों पर ज़िना का ऐब लगाएं और बजुज़ अपने उनका कोई गवाह न हो, ऐसे मुद्दइयों में से हर एक का सुबूत यही है कि वह चार बार ख़ुदा की क़सम खाकर बयान करे कि बिला शक व शुबहा ( अपने दावे में ) सच्चा है ०—

---

और यदि तुम अल्लाह और क़यामत के दिन पर ( सच्चे दिल से ) ईमान रखते हो, तो अल्लाह के दीन ( अर्थात् अल्लाह की आज्ञा-पालन ) में ( किसी तरह की कमी न करना । और तनिक अपने दिल को कड़ा रखना, ताकि दंड देते समय ) तुम्हें उन पर तरस न आ जाय । और ( दंड देते समय तुम ) मुसलमानों का एक ( बड़ा ) समूह ( अवश्य ) मौजूद होना चाहिये—( ताकि अपराधियों को शारीरिक तथा आत्मिक, दोनों प्रकार का कष्ट पहुंचे और वह इसके डर से आगे इस प्रकार का आचरण करने से बचे रहें । और देखने वाले इस शिक्षा-प्रद दृष्य को देख कर शिक्षा ग्रहण करें और इस अपकर्म करने का साहस न कर सकें )। व्यभिचारी ( मनुष्य निकृष्ट प्राणी है । उसका दिल इतना निकृष्ट तथा कमज़ोर हो जाता है कि वह ) केवल उसी स्त्री से विवाह करता है, जो ( उसी की तरह निकृष्ट और तुच्छ हृदय वाली और ) व्यभिचारिणी हो-( चाहे वह ईमान वाली हो ) अथवा मुश्रिक हो ॥

और व्यभिचारिणी स्त्री ( भी अपना जैसा ही व्यभिचारी मर्द ढूंढेगी और उस ) को ( उसके व्यभिचारी होने पर भी ) व्यभिचारी अथवा ( बेईमान तथा ) मुश्रिक ( मनुष्य ) के अतिरिक्त ( तो ) कोई निकाह में लावेगा ( भी ) नहीं । और ( कैसे ला सकता है ! ) ईमानदारों पर ( तो ) ऐसे ( अनुचित ) सम्बन्ध ( बिलकुल ) हराम कर दिये गये हैं । और जो लोग पवित्र ( और श्रेष्ठ ) स्त्रियों पर ( व्याभिचार का ) दोष लगावें, फिर ( उस दोष को सिद्ध करने के लिये ) चार गवाह न ला सकें, तो उन ( झूठ बोहतान उठाने वालों में से प्रत्येक ) को अस्सी ( अस्सी ) कोड़े मारो और ( यदि यह अपनी बुरी आदत न छोड़ें, तो किसी मामले में ) कभी उनकी गवाही स्वीकर न करो । और ( जान लो कि ) फ़ासिक़ ( तथा कुकर्मी लोग स्वयं ) यही हैं ( और झूठ बोल २ कर अपना परलोक बिगाड़ रहे हैं )॥

परन्तु ( हाँ ! इनमें से ) वह लोग—जिन्होंने इसके बाद तौबा करली और ( झूठ की आदत छोड़ कर अपना ) सुधार कर लिया, तो निस्सन्देह अल्लाह ( बड़ा ) क्षमा करने वाला कृपालु है-( वह उनके अपराध क्षमा कर देगा ) । और जो अपनी स्त्रियों पर ( व्यभिचार का ) दोष लगावें और उनके पास ( स्वयं ) उनके अतिरिक्त ( और ) गवाह न हों, तो उनमें से ( हर ) एक की गवाही ( का ढंग ) यह है कि ( वह ) अल्लाह की चार गवाहो दे-( अर्थात अल्लाह के नाम की चार शपथें खाकर यह कहदे ) कि वह ( व्यभिचार का दोष लगाने में ) बिलकुल सच्चा है ॥

और पांचवीं ( दफ़े ) यूं ( कहे ) कि अगर वह झूट बोलता हो, तो उस पर अल्लाह की लानत ० और ( मर्द के हलफ़ किये पीछे ) औरत ( के सर पर ) से इस तरह पर सज़ा टल सकती है कि वह चार बार ख़ुदा की क़सम खाकर बयान करदे कि यह शख़्स सर ता सर झूटा है ० और पांचवीं ( बार ) यूं ( कहे ) कि अगर यह ( शख़्स अपने दावे में ) सच्चा हो, तो मुझ पर ख़ुदा ही का ग़ज़ब ( पड़े ) ० और अगर यह बात न होती कि तुम लोगों पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसका करम है–( और वह अपने फ़ज़्ल व करम से तुमको यह क़ायदे तालीम फ़र्माता है ) और ( नीज़ ) यह कि अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला ( और मसालेह ख़ानादारी से ) वाक़िफ़ है ( तो ख़ाना दरियों में कैसे कुछ फ़सादात बर्पा न हो गये होते ) ० ( मुसल्मानो ! ) जिन लोगों ने ( उम्मुल-मोमिनीन आइशा की निस्बत ) तूफ़ान उठा खड़ा किया, तुमही में का एक गिरोह है । इस ( तूफ़ान ) को अपने हक़ में बुरा न समझो, बल्कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर हुआ कि ( सच्चे मुसल्मान और मुनाफ़िक़ पहिचान पड़े ) । तूफ़ान उठाने वालों में से जितना गुनाह जिसने समेटा–( उसकी सज़ा ) भुगतेगा और जिसने उनमें से तूफ़ान का बड़ा हिस्सा लिया ( वैसी ही ) उसको बड़ी ( सख़्त ) सज़ा होगी ० ( मुसल्मानो ! ) जब तुमने ऐसी ( नालायक़ ) बात सुनी थी, ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों ने अपने ( मुसल्मान भाई बहिनों के ) हक़ में नेक गुमान क्यों न किया और ( सुन्ते के साथ ही ) क्यों न बोल उठे कि यह सरीह बोहतान है ० ( जिन लोगों ने यह तूफ़ान उठा खड़ा किया ) अपने बयान ( के सुबूत ) पर चार गवाह क्यों न लाये । फिर जब गवाह न ला सके, तो ख़ुदा के नज़दीक ( बस ) यही झूटे हैं ० और अगर तुम ( मुसल्मानों ) पर दुनिया और आख़िरत में ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसका करम न होता—

لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَيَدْرَؤُا
عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ
بِاللّٰهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ
اللّٰهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ وَلَوْلَا
فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ
حَكِيْمٌ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ جَاءُوْ بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ٤
لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ
مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى
كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوْهُ
ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَّقَالُوْا
هٰذَا إِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝ لَوْلَا جَاءُوْ عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ
شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوْا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولٰئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ
هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ

---

और ( फिर ) पांचवीं ( बार ) यह ( कहे ) कि यदि मैं ( अपनी स्त्री पर व्यभिचार का दोष लगाने में ) झूठा हूं, तो मु पर ख़ुदा को लानत हो । और ( उस स्त्री का ) अल्लाह की क़सम खाकर चार गवाहियाँ इस ( बात ) की देना कि वह ( अर्थात उसव पति अपने दावे में ) बिलकुल झूठा है और पांचवीं ( बार ) यह ( कहना ) कि यदि वह ( अर्थात मेरा पति ) सच्चा हो, तो मुझ पर ख़ु का क्रोध ( अवतीर्ण ) हो—उस ( स्त्री पर ) से ( व्यभिचार के नियत किये हुये ) दण्ड को दूर कर देता है और यदि अल्लाह तआला ( यह ) कृपा और ( यह ) उसकी दया तुम पर न होती और ( यदि ) अल्लाह तआला ( अपने गुनहगार बन्दों की ) तौबा स्वीका करने वाला ( और हर बात की ) हिकमत जानने वाला न होता ( तो तुम कभी के नष्ट हो चुके होते ) ॥

( मुसल्मानो ! ) जिन लोगों ने ( तुम्हारी बुज़ुर्ग माता आइशा पर झूठा ) तूफ़ान उठाया, वह तुमही में का एक समूह है ( सो ) तुम उसको अपने लिये बुरा न समझो, बरन् यह तुम्हारे लिये बहुत उत्तम ( सिद्ध ) हुआ ( और ) उन ( झूठ तूफ़ उठाने वालों ) में से हर एक मनुष्य के लिये जितना उसने गुनाह समेटा ( उतना ) उसका दंड ( नियत ) है, और उनमें से जिस इतनी बड़ी बात के लिये मुंह खोला ( अर्थात् अब्दुल्लाह का बेटा उबई ) उसके लिये ( ख़ुदा के यहां बहुत ) बड़ा अज़ ( तय्यार ) है । ( मुसल्मानो ! यह मुनाफ़िक़ तो अपने छल कपट के कारण जो चाहता–सो कहता, लेकिन ) जब तुमने इ ( बेहूदी बात ) को ( एक कट्टर मुनाफ़िक़ की ज़बान से ) सुना, तो ( हे ) ईमानदार मर्दों ! और औरतो ! ( तुम ) क्यों ( इसको सच समझ लिया और ) अपने दिल में सुविचार से काम न लिया । और क्यों न ( सुनने के साथ ही बोल उठे ( कि ) यह तो स्पष्ट दोषारोपण ( और बिल्कुल साफ़ झूठ ) है ॥

( और यदि ) यह ( अपने आपको सच्चा समझते थे, तो नियमानुसार ) अपने ( इस ) दावे ( की सचाई ) के लि चार गवाह क्यों न ले आये ? सो जब यह गवाह न ला सके, तो ( इन्हें समझ लेना चाहिये कि ) यह सब अल्लाह निकट ( अर्थात अल्लाह के क़ानून के अनुसार बिल्कुल ) झूठे हैं । और ( इनकी बात कुछ भी विश्वास—योग्य नहीं । बोहतान का समर्थन करने वालो ! सुनो ! ) यदि ( तुम ईमानदार न होते और ) अल्लाह की कृपा और उसकी दया लो परलोक में तुम पर ( छाया रूप से ) न होती ( और तुमको तौबा करने की सामर्थ्य न दी जाती और तुम्हारी तौ स्वीकार न की जाती )—

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ
بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ
هَيِّنًا وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ۝ وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ
قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا سُبْحٰنَكَ
هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ۝ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا
لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ
لَكُمُ الْاٰيٰتِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ وَمَنْ يَّتَّبِعْ

तो जैसा तुमने ऐसी (नालायक़) बात का चर्चा किया था, इसमें तुम पर कोई बड़ी आफ़त नाज़िल हो गई होती ० कि तुम लगे अपनी ज़बानों से उसकी नक़्ल दर नक़्ल करने और अपने मुंह से ऐसी बात बकने, जिसकी तुमको मुत्लक़ ख़बर नहीं और तुमने उसको ऐसी हल्की (सी) बात समझा, हालांकि वह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी (सख़्त बात) है ० और जब तुमने (ऐसी नालायक़) बात सुनी थी (सुन्ते के साथ) क्यों नहीं बोल उठे कि हमको ऐसी बात मुंह से निकालनी ज़ेबा नहीं। हाशा व कल्ला! यह तो बड़ा भारी बोहतान है ० (मुसल्मानो!) ख़ुदा तुमको नसीहत करता है कि अगर ईमान रखते हो, तो फिर कभी ऐसा न करना ० और अल्लाह (अपने) अहकाम तुमसे (खोल) खोल कर बयान करता है और अल्लाह (सबके हाल से) वाक़िफ़ (और) हिक्मत वाला है ० जो लोग चाहते हैं कि मुसल्मानों में लुच्चो बातों का चर्चा हो, उनके लिये दुनिया में अज़ाब-दर्दनाक है और आख़िरत में (भी)। और (ऐसे लोगों को) अल्लाह ही जानता है और तुम नहीं जानते ० और (मुसल्मानो!) अगर यह बात न होती कि तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसका करम है और (नीज़) यह कि अल्लाह बड़ी शफ़क़त रखने वाला मेहर्बान है—(तो तुममें फ़साद—अज़ीम बर्पा हो गया होता) ० मुसल्मानो! शैतान के क़दम ब क़दम न चलो और जो—

---

तो तुमको अपनी इस करतूत (के दंड) में बड़ा (कठिन) अज़ाब पहुंच जाता, जबकि तुम इस (झूठे दावे) को (बिना सोचे समझे) अपनी अपनी ज़बान पर ला रहे थे और अपने मुंह से वह (बेहूदा) बात बक रहे थे, जिसको तुम बिल्कुल नहीं जानते। और तुम उसको (बिल्कुल) हल्का (और साधारण क़िस्सा) ख़्याल करते हो-यद्यपि वह ख़ुदा के निकट (गुनाहों में बहुत) बड़ा (गुनाह) है॥

और जब तुमने इस (खुले बोहतान) को सुना, तो क्यों (उसका विश्वास कया? और क्यों) न बोल उठे कि (हम मुसलमान हैं)। हमको ऐसी (ख़राब) बात (ज़बान से) बोलना (कदापि) उचित नहीं है। ख़ुदा की शरण! (तौबा २) यह (तो मोमिनों की माता पर) बड़ा बोहतान है। अल्लाह तुमको शिक्षा देता है कि यदि तुम (सच्चे) ईमानदार हो, तो फिर ऐसी बात कभी मुंह से न निकालना-(अन्यथा लोक तथा परलोक में अपमानित होगे और कोई तुम्हारा सहायक न होगा)। औह (याद रक्खो! कि) अल्लाह (अपनी) आयतें (और अपने आदेश) तुम्हारे (आगे केवल इसी) लिये वर्णन करता है (ताकि तुम्हारे स्वभाव का सुधार हो) और (तुमको सभ्यता की शिक्षा दे। निस्सन्देह) अल्लाह बड़ा जानने वाला (और) हिकमत वाला है॥

निस्सन्देह जो लोग ईमानदारों में (एक) बेहूदा बात फैलाना चाहते हैं, उनके लिये लोक तथा परलोक (दोनों जहान) में (अत्यन्त) दुःख-दायी दंड है। और अल्लाह जानता है तुमको (इसका) ज्ञान नहीं है। और यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर (छाया किये) न होती और (तुम ईमानदार न होते और) अल्लाह (तुम पर) करुणा- कारी (और) दयालु न होता (और तुमको तौबा करने की योग्यता न प्रदान करता और तुम्हारी तौबा स्वीकार न करता, तो तुम कभी के नष्ट हो चुके होते)। मुसलमानो! तुम (मुसलमान हो) शैतान के पद-चिन्हों पर न चलो और (किसी मुनाफ़िक़ और धर्म-शत्रु के बहकाये सिकाये में कभी न आओ। और सदैव के लिये याद रक्खो कि) जो कोई—

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى
مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىْ مَنْ
يَّشَآءُ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ● وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ
مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِى الْقُرْبٰى
وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلْيَعْفُوْا
وَلْيَصْفَحُوْا اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ● اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ
الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ● يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ
اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ●
يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ● اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ

وَالْخَبِيْثُوْنَ

शैतान के क़दम ब क़दम चलेगा, तो शैतान ( उसको ) बे हयाई और बुरे ही काम ( करने ) को कहेगा और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसका करम न होता, तो तुममें से कोई कभी भी पाक ( व साफ़ ) न होता। लेकिन अल्लाह जिसको चाहता है, पाक ( व साफ़ ) करता है और अल्लाह ( सबकी ) सुनता ( सब कुछ ) जानता है ० और तुममें से जो लोग बुज़ुर्ग ( मनिश ) और साहिब मक़दूर हैं, क़राबत वालों और मोहताजों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को ( मदद-ख़र्च ) न देने की क़सम न खा बैठें, बल्कि ( चाहिये कि उनके कुसूर ) बख़्श दें और दर गुज़र करें-( मुसल्मानो ! ) क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारे कुसूर माफ़ करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० जो लोग पाक—दामन औरतों पर ( ज़िना की ) तोहमत लगाते हैं, जो ( बेचारियाँ ऐसी बातों से महज़ ) बे ख़बर ( हैं और ) ईमान रखती हैं—( ऐसे लोग ) दुनिया और आख़िरत ( दोनों ) में मलऊन हैं और ( क़यामत के दिन ) उनको बड़ा ( सख़्त ) अज़ाब होगा ० जबकि इनके मुक़ाबले में इनकी ज़बानें और इनके हाथ और इनके पांव, इनके अमलों की गवाही देंगे ० ( और ) उस दिन अल्लाह इनको इनका पूरा पूरा वाजिब-बदला देगा और जान लेंगे कि अल्लाह ही सच्चा ( और सच को सच कर ) दिखाने वाला है ० गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लिये होती हैं—

---

शैतान के ( बताये हुये ) मार्ग पर चलता है, तो शैतान ( उसको ) निर्लज्जा और अनुचित काम ( करने ) ही की सला[h] देता है—( जिसका परिणाम बरबादी तथा अकीर्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं होता ) और यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तु[म] पर न होती, तो ( काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की तरह ) तुममें से भी कोई ( मनुष्य तौबा न कर सकता । और इस त्रुटि [के] प्रभाव से ) कभी पवित्र ( तथा स्वच्छ ) न होता, परन्तु अल्लाह जिसको चाहता है- ( पाप के मल से ) पवित्र ( तथ[ा] स्वच्छ ) कर देता है और अल्लाह ( सबकी प्रार्थना ) सुनता ( और सबकी दशा ) देखता है ॥

और ( मुसल्मानो ! ) तुममें से जो लोग आदरणीय और सामर्थवान् हैं—( वह अपने ) नातेदारों और मोहताजों और ख़ु[दा] के मार्ग में स्वदेश छोड़ने वालों को ( सहायता ) न देने की सौगन्ध न खाएँ और उन्हें चाहिये कि ( वह सन्तोष तथा धैर्य्य से का[म] लें और उनकी ख़ता को ) क्षमा करदें और माफ़ करें । ( मुसल्मानो ! ) क्या तुम इस ( बात ) को पसन्द नहीं कर[ते] कि अल्लाह तआला तुम्हें क्षमा करदे ( तथा तुम्हारे पापों को क्षमा करदे । यदि तुम इस बात को पसन्द करते हो, तो तु[म] भी इन लोगों की ख़ता को क्षमा करदो। यह तुम्हारे सम्बन्धी भी हैं ) और ( निर्धन तथा स्वदेश-त्यागन करने वाले [भी] हैं । याद रक्खो ! ) अल्लाह ( बड़ा ) क्षमा करने वाला कृपालु है । ( वह तुम्हारे इस सद्-व्यवहार तथा जातीय सहानुभू[ति] को स्वीकार करके तुम्हें क्षमा कर देगा ) ॥

निस्सन्देह जो लोग पवित्रात्मा ( और ) पर्दे वाली (सांसारिक छल कपट से) अनभिज्ञ ( और ) ईमानदार स्त्रियों पर (व्यभिचा[र] जैसे निकृष्ट पाप का) दोष लगाते हैं-(वह अत्यन्त निकृष्ट हैं) । वह लोक परलोक (दोनों जहान) में लानत को प्राप्त हुये । और उनके लिये ब[ड़ा] ( कठिन ) अज़ाब ( तय्यार ) है । ( यह अज़ाब उन्हें उस दिन दिया जावेगा )-जिस दिन कि उन ( कुकर्मियों ) की ज़बानें और उनके हा[थ] और उनके पांव उनके विरोधी बन कर उनके ( अशुभ ) कर्मों की गवाही देंगे । ( और ) जिस दिन अल्लाह तआला उनके [कर्मों] का उनको ठीक २ पूरा २ बदला देगा और उन्हें ( भली भांति ) ज्ञात हो जायगा कि अल्लाह सत्य ( है और उसकी हर आज्ञ[ा] स्पष्ट ( सत्य ) है। ( लोगो ! याद रक्खो कि ) अपवित्र स्त्रियाँ अपवित्र पुरुषों के लिये ( हुआ करती ) हैं—

और गन्दे मर्द गन्दी औरतों के लिये और पाक औरतें पाक मर्दों के लिये होती हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिये-बोहतान बांधने वाले जो बकते फिरते हैं, यह उनकी तोहमतों से ( बिल्कुल ) बरी हैं। इनके लिये ( आख़िरत में ) बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी० मुसलमानो ! अपने घरों के सिवा ( दूसरे ) घरों में घर वालों से पूछे और उनसे सलामु-अलैक कहे बिदून न जाया करो। यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है—( यह हुक्म तुमको इस ग़रज़ से दिया गया है ) कि ( जब ऐसा मौक़ा हो, तो ) तुम ( इसका ) ख़याल रक्खो ० फिर अगर तुमको मालूम हो कि घर में कोई आदमी मौजूद नहीं, तो जब तक तुम्हें ( ख़ास ) इजाज़त न हो, उनमें न जाओ और अगर ( घर में कोई हो और ) तुमसे कहा जाय कि ( इस वक़्त मौक़ा नहीं ) लौट जाओ, तो ( बे तअम्मुल ) लौट आओ—यह ( लौट आना ) तुम्हारे लिये ज़ियादा सफ़ाई की बात है और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसको जानता है० ग़ैर आबाद मकान, जिनमें तुम्हारा अस्बाब हो, उनमें ( बे इजाज़त ) चले जाने से तुम पर ( कुछ ) गुनाह नहीं और जो कुछ तुम अलानिया करते हो और जो कुछ तुम छुपा कर करते हो, अल्लाह ( सब ) जानता है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) मुसलमानों से कहो कि अपनी नज़रें नीची रक्खें और अपनी शर्म-गाहों की हिफ़ाज़त करें। इसमें उनकी ज़ियादा सफ़ाई है। ( लोग ) जो कुछ भी किया करते हैं, अल्लाह को ( सब ) ख़बर है०—

٤

وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَٰتِ وَالطَّيِّبَٰتُ لِلطَّيِّبِينَ
وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَٰتِ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا
يَقُولُونَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝
يَٰأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ
حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ذَٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا
فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ
وَإِن قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ
أَزْكَىٰ لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ لَّيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ أَن تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا
مَتَٰعٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝
قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَٰرِهِمْ وَيَحْفَظُوا
فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ

---

और अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिये ( होते ) हैं और ( इसी प्रकार ) पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरुषों के लिये ( होती ) हैं और पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के लिये ( होते ) हैं। यह लोग ( जिन पर दोष लगाया गया है )—यह ( दोष लगाने वाले उनके विषय में ) जो कुछ बकते हैं ( यह ) उससे ( बिल्कुल ) मुक्त ( तथा पवित्र ) हैं—इनके लिये ( लोक परलोक में ख़ुदा की ओर से दया तथा ) क्षमा है और उत्तम जीविका है। मुसलमानो ! अपने मकानों के अतिरिक्त दूसरों के घरों में ( कभी ) न घुसो, जब तक कि ( उनसे ) आज्ञा न मांग लो और उनके रहने वालों को अस्सलामु-अलैकुम् न करलो। यह ( बात ) तुम्हारे लिये ( बहुत ) उत्तम है। ( तुमको यह इस अभिप्राय से बताई ) ताकि ( अवसर पड़े, तो तुम इसका ) ख़्याल रक्खो ॥

अतः यदि तुम उनमें से किसी को ( उपस्थित भी ) न पाओ ( और मकान बिलकुल ख़ाली दिखाई दें, जब भी ) जब तक कि तुमको ( मकान के मालिक की ओर से ) आज्ञा न दे दी जावे, तुम उनमें न दाख़िल हो और यदि कह दिया जावे कि लौट जाओ, तो तुम लौट जाओ। यह ( लौट जाना ) तुम्हारे लिये ( व्यर्थ झगड़ा करने और बिना कारण दूसरे को कष्ट देने से कहीं ) अधिक उत्तम ( बात ) है। और अल्लाह तआला को तुम्हारे ( अच्छे बुरे सब ) कर्मों की ख़बर ( रहती ) है। ( हां ! ) उन मकानों में ( बिना आज्ञा ) दाख़िल होने में तुम पर कुछ दोष नहीं, जिनमें कोई निवास नहीं करता ( और ) जिन ( के बनाने ) में तुम्हारा ( सबका ) सुख ( अभीष्ट होता ) है—( जैसे मुसाफ़िर ख़ाने, सरायें आदि )। और ( मुसलमानो ! ) जो कुछ तुम प्रगट करते हो और जो कुछ तुम गुप्त रखते हो, अल्लाह को ( सब ) ख़बर है॥

( हे रसूल ! ) तुम मुसलमान मर्दों से कहदो कि ( यदि ) वह ( अपनी स्वभाविक दशा ठीक करनी चाहते हैं, तो किसी स्त्री को बिना आवश्यकता और मैथुन के विचार से कदापि न देखें। और अचानक यदि उस पर दृष्टि पड़ भी जाय, तो तत्काल ) अपनी आँखें नीची करलें ( और उसकी ओर दूसरी बार देखने का दिल में ख़्याल तक न आने दें )। और ( मानसिक इच्छाओं को क़ाबू में रख कर ) अपने लज्जा—स्थानों की ( पूरी तरह ) रक्षा करें ( और व्यभिचार और बुरी दृष्टि के दोष से अपने आपको पवित्र रक्खें। निस्सन्देह जीवन व्यतीत करने की ) यह ( रीति ) उनके लिये ( पराई बहू बेटियों को तकने और कुकर्मी बनने से बहुत ) अधिक ( उत्तम और ) पवित्र है। निस्सन्देह यह ( लोग ) जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह तआला उससे ( भली भांति ) अभिज्ञ है॥

और ( ऐ पैग़म्बर ! ) मुसलमान औरतों से कहो कि ( वह भी ) अपनी नज़रें नीची रक्खें और अपनी शर्म-गाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी ज़ीनत ( के मक़ामात ) को ज़ाहिर न होने दें, मगर जो उसमें से ( नाचार व नाचार ) खुला रहता है—( तो उसका ज़ाहिर होने देना मुज़ायक़े की बात नहीं ) और अपने सीनों पर दुपट्टों के बुक्कल मारे रहें और अपनी ज़ीनत (के मक़ामात) को ( किसी पर ) ज़ाहिर न होने दें, मगर अपने शौहरों पर, या अपने बाप पर, या अपने ख़ाविन्द के बाप पर, या अपने बेटों पर, या अपने शौहर के बेटों पर, या अपने भाइयों पर, या अपने भतीजों पर, या अपने भान्जों पर, या अपनी ( यानी अपने मेल जोल की ) औरतों पर, या अपने हाथ के माल ( यानी लौंडी गुलामों ) पर, या ( घर के लगे हुए ऐसे ) ख़िदमतियों पर, कि मर्द ( तो ) हैं—( मगर औरतों से कुछ ) ग़रज़ ( व मतलब ) नहीं रखते—( जैसे ख़्वाजा—सरा या बुड्ढे फूस )—या लड़कों पर, जो औरतों के परदे ( की बात ) से आगाह नहीं और ( चलने में ) अपने पांव ऐसे ज़ोर से न रक्खें कि ( लोगों को ) उनके अन्दरूनी ज़ेवर की ख़बर हो और मुसलमानो ! तुम सब अल्लाह की जनाब में तौबा करो, ताकि तुम ( आख़िरकार ) फ़लाह पाओ ० और अपनी रांडों के निकाह करदो और अपने ग़ुलामों और लौंडियों में से उनके, जो नेक-बख़्त हों—

بِمَا يَصْنَعُونَ ۞ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ
أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ
عَلٰى جُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ
أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ
أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ
أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التّٰبِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ
الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلٰى
عَوْرٰتِ النِّسَاءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ
مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوا إِلَى اللّٰهِ جَمِيعًا أَيُّهَ
الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۞ وَأَنْكِحُوا الْأَيَامٰى
مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ إِنْ

يكونوا

और ( हे रसूल ! ) मुसलमान औरतों से ( भी ) कहदो कि वह ( मर्दों के सामने न हुआ करें । और यदि धोखे से सामना हो जाय, तो उस समय वह ) अपनी आँखें बन्द करलें ( और मर्दों की ओर देखने का दिल में ख़याल तक न आने दें ) और ( मानसिक इच्छाओं को क़ाबू में रख कर ) अपने लज्जा-स्थानों की ( पूरी २ ) रक्षा करें ( और अपने आदर सम्मान को जान से अधिक प्यारा जानें ) और अपने ( बनाव ) सिंगार ( अर्थात आभूषणादि ) को ( और लिबास को, और बदन के जिस २ अंग पर आभूषण पहिने जाते हैं—उन सब अंगों को अन्य पुरुषों के सामने कभी ) न खोलें ( और इन स्थानों के अलावा पीठ और पेट इत्यादि को भी छिपाये रहें )—मगर ( हाँ ) इस ( बनाव सिंगार ) में से ( मेंहदी और व ज़ेवर और शरीर का वह भाग ) जो ( विवशता में तथा आवश्यकतानुसार ) प्रगट हो जाय—( तो इसमें कुछ हानि नहीं ) और उन्हें ( अर्थात स्त्रियों को ) चाहिये कि अपने दुपट्टे ( दुलाइयाँ, चादरें, रज़ाइयाँ इत्यादि ) अपने गरेबानों पर ( इस प्रकार डाल लिया करें ( कि उनका सिर, सोना, मुखादि सब ढक जायँ ) ॥

और अपने ( ऊपरी बनाव ) श्रृङ्गार को ( किसी पर ) प्रगट न होने दें, किन्तु अपने पतियों पर, वा अपने बाप ( दादा पर, वा अपने श्वसुर पर, वा अपने बेटों पर, वा अपने पति के बेटों पर, वा अपने भाइयों पर, वा अपने भतीजों पर, व अपने भानजों पर, वा अपनी ( मुसलमान ) औरतों पर, वा अपने मम्लूकों ( अर्थात दासी दासों ) पर, वा मर्दों में से उ ( नौकरों ) पर, जो ( स्त्रियों के योग्य और उनके ) इच्छुक नहीं हैं—( जैसे नपुंसक, वा जो बिलकुल बुड्ढे हो गये हों औ विषय वासना की शक्ति उनकी नष्ट हो गई हो ) वा उन बच्चों पर, जिन्हें स्त्रियों के गुप्त स्थानों की ख़बर न हुई ( अर्थात जो नाबालिग़ हों और स्त्रियों की ओर उनको मैथुन की इच्छा न होती हो ) और वह ( चलने फिरने में भी अपने पैर ( पृथ्वी पर संभाल कर डालें । इस प्रकार ज़ोर से पांव ) न मारें कि उनका गुप्त-श्रृङ्गार ( अर्थात ज़ेवर लोगों को मालूम हो जाय ( और छम २ की आवाज़ सुन कर लोग उनकी ओर ध्यान दें और लोगों के ख़यालात ख़राब हो जायँ ) ॥

और तुम सब ( के सब शुद्ध हृदय के साथ ) अल्लाह की ओर चित्त लगाओ, ताकि तुम ( लोक परलोक में सच्ची ) सफलता ( अ मोक्ष ) पाओ और ( मुसलमानो ! पर्दे की आज्ञा पर चलने के साथ २ इस बात का भी ख़्याल रक्खो कि तुममें से कोई मर्द बि औरत, और कोई औरत बिना मर्द के न रहने पावे । तुमसे जहाँ तक हो सके ) अपने मुजर्रदों ( अर्थात बिना जोड़े व स्त्री पुरुषों ) का निकाह ( करने में जल्दी किया ) करो और अपने ( साथ ) जो तुम्हारे ग़ुलाम और लौंडियाँ नेक हों, उन भी ( ख़्याल रक्खा करो और ) यदि—

يَكُونُوا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ
نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ
يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ
مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ
عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ
بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ اَللّٰهُ
نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ
فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ

४

अगर यह लोग मोहताज होंगे, तो अल्लाह अपने फ़ज़्ल से इनको ग़नी कर देगा और अल्लाह गुन्जाइश वाला (और सबके हाल से) वाक़िफ़ है ० और जो लोग निकाह (करने) का मक़्दूर नहीं रखते, उनको चाहिये कि ज़ब्त करें। यहां तक कि अल्लाह उनको अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे और तुम्हारे हाथ के माल (यानी गुलामों) में से जो मुकातिबत के ख़्वाहाँ हों, तो तुम उनके साथ मुकातिबत कर लिया करो, बशर्ते कि तुम उनमें बेहतरी (के आसार) पाओ और माल—ख़ुदा में से जो उसने तुमको दे रक्खा है, उनको (भी) दो और तुम्हारी लौंडियाँ जो पाक-दामन रहना चाहती हैं, उनको दुनिया की ज़िन्दगी के आरज़ी फ़ायदे की ग़रज़ से हरामकारी पर मज्बूर न करो और जो उनको मज्बूर करेगा, तो अल्लाह उनके मज्बूर किये गये पीछे बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और (मुसल्मानो!) हमने (इस कुर्आन में) तुम्हारे पास खुले खुले अहकाम भेजे हैं और जो लोग तुमसे पहिले हो गुज़रे हैं, उनके हालात और परहेज़गारों के लिये नसीहत (की बातें) ० अल्लाह (ही के नूर से) आस्मान और ज़मीन की रोशनी है। उसके नूर की मिसाल ऐसी है, जैसे एक ताक़ है (और) ताक़ में एक चिराग़ (रक्खा है और) चिराग़ एक शीशे की क़न्दील में है (और) क़न्दील (इस क़दर शफ़्फ़ाफ़ है कि)-

---

वह निर्धन हैं—(और उन्हें चिन्ता है कि व्याह करने के बाद घर बार का ख़र्च क्यों कर उठावेंगे, तो उन्हें अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिये)। अल्लाह (केवल) अपनी दया (तथा कृपा) से उन्हें धनवान बना देगा और (उनकी इस चिन्ता को दूर कर देगा, क्योंकि) अल्लाह (बड़े) विस्तार वाला है (और लोगों की आवश्यकताओं से) अभिज्ञ है। और जिनको निकाह (करने) की शक्ति नहीं है, उन्हें चाहिये कि वह ब्रह्मचारी रहें (और अपनी इन्द्रियों को वश में रक्खें)—यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपनी दया (तथा कृपा) से उनको धनाढ्य करदे (और विवाह करने की सामर्थ्य प्रदान करे) ॥

और (मुसल्मानो!) तुम्हारे गुलामों में से जो (गुलाम) मुकातब बनना चाहें—(अर्थात् कुछ देकर स्वतन्त्र होना चाहें) तो तुम उन्हें मुकातब बना लिया करो—इस अवस्था में कि तुम उन (की नीयत) में भलाई पाओ। और (यदि तुम उनकी नीयत ठीक पाओ, तो) जो माल अल्लाह तआला ने तुमको दिया है, उसमें से तुम उन्हें दो (और उनकी मदद करो)। और (देखो!) अपनी दासियों को व्यभिचार (अर्थात् पेशा कमाने) पर (अल्प-कालिक) दुनिया की (नापायदार) ज़िन्दगी का माल प्राप्त करने के लिये (कभी) विवश न करो—(यह बहुत बड़ा पाप है। और ऐसी दशा में) जबकि वह (स्वयं) बचना चाहें—(उन्हें ऐसे अनुचित कार्य पर विवश करना इन्सानियत के सरासर विरुद्ध) और (सभ्यता से बहुत दूर है। निस्सन्देह) जो कोई उन्हें (इस बेहूदा बात पर) विवश करेगा, तो (उनका कुछ न बिगड़ेगा)। अल्लाह उनके विवश किये जाने के बाद (उनको अवश्य क्षमा कर देगा। निस्सन्देह वह बड़ा) क्षमा करने वाला कृपालु है॥

(मुसल्मानो! हमने जितनी बातें तुमको बताई हैं, वह सब तुम्हारे लाभ की हैं)। और (यह केवल हमारी कृपा है कि) हमने (अपने बन्दे मुहम्मद के द्वारा तुम्हें इतनी लाभ दायक बातें बता दीं और ज्ञान बुद्धि की) खुली निशानियां, और जो लोग तुमसे पहिले बीत चुके हैं, उनके वृतान्त तुम्हारे पास भेज दिये और (संयमो) परहेज़गारों के लिये (एक) शिक्षा (की सूचना अर्थात् माननीय कुर्आन अपने बन्दे मुहम्मद पर उतार दिया। लोगो! याद रक्खो!) आकाशों तथा पृथ्वी का प्रकाशक अल्लाह है। (केवल समझाने के लिये) उसके (अद्वितीय) नूर की मिसाल (ऐसी हो सकती है) जैसे एक ताक़ है (और) उसमें एक दीपक है (और वह) दीपक शीशे (की एक क़न्दील) में (रक्खा हुआ) है—

كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ
زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا
يُضِيٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ يَهْدِى
ٱللَّهُ لِنُورِهِۦ مَن يَشَآءُ وَيَضْرِبُ ٱللَّهُ ٱلْأَمْثَٰلَ
لِلنَّاسِ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ۝ فِى بُيُوتٍ
أَذِنَ ٱللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا ٱسْمُهُۥ يُسَبِّحُ لَهُۥ
فِيهَا بِٱلْغُدُوِّ وَٱلْءَاصَالِ ۝ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ
تِجَٰرَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ ٱللَّهِ وَإِقَامِ ٱلصَّلَوٰةِ
وَإِيتَآءِ ٱلزَّكَوٰةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ
ٱلْقُلُوبُ وَٱلْأَبْصَٰرُ ۝ لِيَجْزِيَهُمُ ٱللَّهُ أَحْسَنَ
مَا عَمِلُوا۟ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِۦ وَٱللَّهُ يَرْزُقُ
مَن يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟
أَعْمَٰلُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ ٱلظَّمْـَٔانُ مَآءً

ع

गोया वह मोती की तरह चमकता हुआ एक सितारा है। (वह चिराग़) ज़ैतून के एक मुबारक दरख़्त (के तेल) से रोशन किया जाता है कि जो न पूरब के रुख़ वाक़े है और न पच्छिम के रुख़। उसका तेल (इस क़दर साफ़ है कि) अगर उसको आग न भी छुवे, ताहम मालूम होता है कि (आप से आप) जल उठेगा-(ग़रज़ कि एक नूर नहीं, बलिक) नूरुन-अला-नूर (यानी नूर पर नूर)-अल्लाह अपने नूर की तरफ़ जिसको चाहता है, राह दिखाता है और अल्लाह लोगों के (समझने के) लिये मिसालें बयान फ़र्माता है और अल्लाह हर चीज़ (के हाल) से वाक़िफ़ है ० (और हाँ! वह चिराग़ ख़ुदा के) ऐसे घरों (यानी इबादत-गाहों) में (रोशन किया जाता है) जिनकी निस्बत ख़ुदा ने हुक्म दिया है कि उनकी अज़मत की जाय और उनमें ख़ुदा का नाम लिया जाय, उन (इबादत-गाहों) में सुबह व शाम ० ऐसे लोग ख़ुदा (के नाम) की तस्बीह (व तक़्दीस) करते रहते हैं, जिनको सौदागरी और ख़रीद व फ़रोख़्त ख़ुदा के ज़िक्र और नमाज़ के पढ़ने और ज़कात के देने से ग़ाफ़िल नहीं करने पाती-(क्योंकि वह लोग) उस दिन से डरते हैं, जब (मारे ख़ौफ़ के) दिल उलट जायेंगे और आँखें फिरी (की फिरी रह जाएँगी) ० (और इसी ख़याल से यह लोग इबादत में लगे रहते हैं) कि अल्लाह उनको उनके अमलों का बेहतर से बेहतर बदला दे और उनको अपने फ़ज़्ल से कुछ और भी दे और अल्लाह जिसको चाहता है, बे हिसाब देता है ० और जो लोग मुन्किर (इस्लाम) हैं, उनके आमाल (निरे धोके की टट्टी हैं)-जैसे चटियल मैदान में चिलकता हुआ रेत, कि प्यासा उसको (दूर से) पानी ख़याल करता है—

---

(और उस क़न्दील का) शीशा (क्या है)-मानो एक चमकदार तारा है-(जो जग-मग जग-मग कर रहा है। और) वह (दीपक) ज़ैतून जैसे बरकत वाले वृक्ष (के तेल) से प्रज्वलित किया जाता है, जो न (केवल) पूर्वीय है और न (केवल) पच्छिमी है-(बरन् पूर्व य भी है और पश्चिमी भी। अर्थात् ऐसे खुले मैदान में उगता है कि सूर्य उस पर उदय भी होता है और अस्त भी, और समस्त दिन उस पर धूप पड़ती है। यही कारण है कि) उसका तेल (इतना साफ़ होता है कि) यद्यपि आग उसको स्पर्श भी न करे, तब भी यह ज्ञात होता है कि वह अभी जल उठेगा। (और जब उसमें आग भी लग जाय, तो फिर तो) प्रकाश ही प्रकाश (हो जाता) है। (संक्षिप्त यह कि) अल्लाह (के प्रकाश का उदाहरण यह है)। वह जिसको चाहता है, अपने प्रकाश से (हिदायत का) मार्ग बता देता है और (कुफ़्र के अन्धकार को दूर कर देता है। इस प्रकार के) उदाहरण पवित्र-अल्लाह (केवल) लोगों के (समझाने के) लिये (उनकी समझ के अनुसार) वर्णन कर देता है (अन्यथा उदाहरण और जिसका उदाहरण दिया जाय, उन दोनों में बड़ा अन्तर होता है)। और अल्लाह हर वस्तु (की दशा) से (अच्छी तरह) अभिज्ञ है॥

(और वह दीपक अल्लाह के) ऐसे घरों (अर्थात् पूजा-स्थानों) में (जलता है)-जिनके लिये अल्लाह ने आज्ञा दी है कि उनका आदर किया जाय और उनमें ख़ुदा के नाम की याद की जाय। उन (उपासना-भवनों) में सुबह-शाम ऐसे लोग ख़ुदा को पवित्रता वर्णन करते रहते हैं, जिनको ब्योपार और बेचना (ख़रीदना) ख़ुदा की याद (पांचों समय नियमानुसार) नमाज़ अदा करने और ज़कात देने से ग़ाफ़िल नहीं करता। (इसलिये कि) वह (पवित्रात्मा लोग क़यामत के) उ (भयानक) दिन से डरते हैं, जिसमें (भय के मारे लोगों के) दिल धड़कने लगेंगे और आँखें (पथरा जावेंगी। और इसलि वह ख़ुदा के स्मरण से अचेत नहीं होते)-ताकि (क़यामत के दिन) अल्लाह तआला उनके कर्मों से उत्तम (उनके कर्मों का उनको बदला दे और (बरन् उन कर्मों के बदले से भी) कुछ अधिक (केवल) अपनी कृपा (तथा दया) से उनको प्र करदे। और अल्लाह (में सब शक्ति है। वह) जिसको चाहता है, बे हिसाब प्रदान करता है॥

और वह लोग जो काफ़िर हैं (और कुफ़्र की पूजा-पाठ को बड़े प्रेम के साथ करते हैं और अपने विचार उसको मोक्ष तथा कल्याण का कारण समझते हैं)-उनके कर्म (वा तो उनको धोखा देने में) ऐसे हैं कि जैसे चटि मैदान में सराब (अर्थात मृग-तृष्णा) कि (जब) प्यासा (उसे दूर से देखे, तो) उसको पानी जाने (और उसकी ओर लपके,

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ
فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۙ اَوْ كَظُلُمٰتٍ
فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ
فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ
اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ
لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ۧ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ
كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ
يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ
فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ

यहां तक कि जब उसके पास आया, तो उसको कुछ भी न पाया (और प्यासा तड़प तड़प कर मर गया) और (देखा, तो) ख़ुदा को अपने पास मौजूद पाया और उसने उस (के आमाल) का हिसाब पूरा पूरा चुका दिया और अल्लाह पलक के भर में हिसाब करने वाला है ० या (उनके आमाल की मिसाल) बड़े गहरे दरिया के अन्दरूनी अंधेरों की सी (है) कि दरिया को लहर ने ढांक रक्खा है और (लहर भी एक नहीं, बल्कि) लहर के ऊपर लहर, उसके ऊपर बादल-(ग़रज़) अंधेरे हैं एक के ऊपर एक-कि (दरिया की तह में कोई आदमी) अपना हाथ निकाले, तो तवक़्क़ो नहीं कि उसको देख सके और जिसको अल्लाह ही नूर (यानी हिदायत) न दे, तो उसको (किसी तरफ़ से भी) नूर (का सहारा) नहीं ० (ऐ मुख़ातब!) क्या तूने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि जितनी मख़्लूक़ात आस्मान और ज़मीन में है-(सब) अल्लाह की तस्बीह (व तक़्दीस) करते रहते हैं और परिन्द (भी, जो) पर फैलाये (उड़ते फिरते हैं)-सबको अपनी (अपनी) नमाज़ और अपनी (अपनी) तस्बीह (का तरीक़ा) मालूम है और जो कुछ यह करते हैं, अल्लाह उससे वाक़िफ़ है ० और आस्मानों और ज़मीन की हुकूमत अल्लाह ही की है और अल्लाह ही की तरफ़ (सबको) लौट कर जाना है ० (ऐ मुख़ातब!) क्या तूने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि अल्लाह (ही) बादल को हाँकता है, फिर बादल (के टुकड़ों) को आपस में जोड़ता है, फिर उनको तह—बतह रखता है, फिर (ऐ मुख़ातब!) तू बादल के बीच में से मेंह को निकलते हुये देखता है और आस्मान में जो (ओलों के) पहाड़ (यानी जमे हुये बादल) हैं, वही उनमें से ओले बरसाता है—तो जिस पर चाहता, ओले बरसाता और जिससे चाहता है, उनको हटा देता है—

---

यहाँ तक कि जब उसके पास आये, तो उसको कुछ भी न पाये और (बजाय पानी के) अल्लाह को (अर्थात् ख़ुदा के हुक्म को) अपने पास पाए। फिर अल्लाह उसके (जीवन के) हिसाब को पूरा चुका दे (अर्थात् उसका अन्त करदे)। और अल्लाह (ऐसे मनुष्य के जीवन का) हिसाब बहुत जल्दी करने वाला है। वा (काफ़िरों के कर्म ऐसे अन्धकार में हैं)—जैसे किसी गहरे समुद्र (की तह) में (गहराई के कारण) अन्धकार (और समुद्र भी वह कि) जिस (की सतह) पर लहर पर लहर चढ़ी आती हो और (फिर) उस (लहर) पर (भी) बादल (घिरा हुआ) हो (कि जिसकी वजह से सूर्य तथा चन्द्रमा अदि का प्रकाश भी भीतर के अन्धकार को दूर नहीं कर सकता। तात्पर्य यह है कि उसमें इतने) तह पर तह, अंधेरे पर अंधेरे (छाये हुये) हैं कि (हाथ को हाथ नहीं सुझाई देता)। यदि कोई (वहां) अपना हाथ निकाले (और चाहे कि उसको देख ले)-तो असम्भव है कि उसका हाथ उसको दीख पड़े। और जिसको अल्लाह ने (ज्ञान) प्रकाश नहीं दिया, तो (फिर) उसके लिये (ज्ञान) प्रकाश (दुर्लभ है)—कहीं (से भी) नहीं (मिल सकता)॥

(हे मनुष्य!) क्या तुझे (प्रमाण तथा देखने से) यह नहीं मालूम (हुआ) कि पृथ्वी-आकाशों में (ख़ुदा के बन्दे) जितने (भी) हैं-(सभी) अल्लाह की पवित्रता वर्णन करते हैं और (यहां तक कि बे ज़बान) पक्षी (भी) जो (आकाश में) पर फैलाए हुये (उड़ते फिरते) हैं। (और एक पक्षी क्या) हर एक (वस्तु) को अपनी (शक्ति के अनुसार) उपासना और अपनी (दशानुकूल ख़ुदा की) याद (करने की रीति और क़ायदा) मालूम है। (तो क्या इस पर भी ख़ुदा के एक होने का इक़रार नहीं करते) और (अपने शिर्क से नहीं हटते। निस्सन्देह) जो कुछ यह (इस दुनिया में) कर रहे हैं, अल्लाह को (सब) ज्ञात है-(वह इनकी इस पथ-भ्रष्टता और उद्दण्डता का इनको पूर २ बदला देगा) और आकाशों और पृथ्वी की हुकूमत (सारी की सारी) अल्लाह ही की है। और (मर कर सबको) अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना (और अपनी बुराई भलाई का हिसाब देना) है॥

(हे मनुष्य!) क्या तुझको यह नहीं मालूम कि अल्लाह (ही एक) बादल को (दूसरे बादल की ओर) चलाता है (और) फिर (वही) उन (बादलों के अलग २ टुकड़ों) को (परस्पर) मिला देता है। फिर उनको पर्त-पर्त रखता है-(यहां तक कि) फिर तू बादलों के बीच में से मेंह को निकलते हुये देखता है। और आकाश में जो (ओलों के) पर्वत हैं, उनमें से वही (ख़ुदा) ओले बरसाता है। फिर उनको जिस पर चाहता है, वह गिरा देता है (और उसकी जान की वा माल की हानि कर देता है)। और जिससे चाहता है, उन्हें रोके रखता है (और उसकी जान और उसके माल की रक्षा करता है)—

عَنْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝
يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً
لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ
مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ
يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا
فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ
يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ؕ ۝ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ار

ارتابوا

बादल की बिजली की चमक है कि गोया आंखों (के नूर) को उचके लिये चली जाती है ० अल्लाह रात और दिन का रद्द व बदल करता रहता है । जो लोग सूझ रखते हैं, उनके लिये इसमें बड़ी इब्रत है ० और अल्लाह (ही) ने तमाम (चलने फिरने वाले) जान्दारों को पानी से पैदा किया है। फिर उनमें (बाज़) वह हैं, जो अपने पेट के बल चलते हैं और (बाज़) उनमें से वह हैं, जो दो पांव पर चलते हैं और (बाज़) उनमें से वह हैं, जो चार (या ज़ियादा पांव) पर चलते हैं । अल्लाह जो चाहता है, बनाता है- बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० हमही ने (यह) आयतें उतारी हैं, जो (लोगों को हमारी कुद्रतें) सुझाती हैं और अल्लाह (ही) जिस को चाहता है, सीधे रस्ते की तरफ़ हिदायत करता है ० और (दो दिले लोग) कहते हैं कि हम अल्लाह पर और (नीज़) रसूल पर ईमान ले आये और (खुदा रसूल का) हुक्म माना, फिर इसके बाद इनमें का एक फ़रीक़ (खुदा रसूल के हुक्म से) रूगर्दानी करता है और वह (सिरे से) मुसल्मान (ही) नहीं ० और जब उनको खुदा और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि उनमें (उनके बाहमी झगड़ों का) चुकौता करदे, तो बस उनमें का एक फ़रीक़ गुरेज़ करता है ० और अगर हक़ बजानिब उनके हो, तो (बे तअम्मुल) कान दबाये रसूल की तरफ़ (दौड़े) चले आते हैं ० क्या इनके दिलों में (बेईमानी का) मरज़ है ? या शक में पड़े हैं—

---

उन (बादलों) की बिजली की चमक (की यह दशा है कि उसकी ओर देखने से यह मालूम होता है कि यह आंखों (के प्रकाश) को नष्ट किये जाती है। वह (खुदा ही) रात (को दिन से और) दिन को (रात से) उलटत पुलटता (रहता) है । निस्सन्देह इन (समस्त उपरोक्त वस्तुओं) में आँखों वालों के लिये (बड़ी) शिक्षा (और खुदा की शक्ति का बहुत बड़ा चिन्ह विद्यमान) है । और अल्लाह (ही) ने समस्त जीवधारियों को पानी (अर्थात वीर्य तथा मिट्टी) से पैदा कर दिया (और उनमें अनोखी २ बातें रक्खीं) । अतः कुछ (जानवर) उनमें वह हैं, जो पेट के बल चलते हैं और कुछ उनमें वह हैं, जो दो पैरों के बल चलते हैं, और कुछ उनमें वह हैं, जो चार पैरों पर चलते हैं । (निस्सन्देह अल्लाह (बड़ा सृष्टि कर्त्ता है)-जो (बनाना) चाहता है-(सरलता—पूर्वक) बना देता है । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर (पूर्ण) शक्ति रखता है-(उसके आगे किसी वस्तु का बनाना वा बिगाड़ना कुछ कठिन नहीं)॥

हमही ने (इन) आयतों को उतारा है, जो (मनुष्यों के सामने हमारी शक्ति के चमत्कार को) प्रगट करती हैं और अल्लाह ही जिसको चाहता है (उनके द्वारा) सीधा मार्ग दिखा देता है । (कोई मनुष्य भी अपने आप और अल्ला की सहायता के बिना ज्ञान-मार्ग नहीं पा सकता) । और (कहने को तो बहुत से अज्ञान अपनी ज़बान से) कहते हैं कि हम अल्लाह और (उसके) रसूल पर ईमान ले आये और हमने (उद्दण्ता छोड़ दी और) आधीनता अङ्गीकार करली (और फिर उसके बाद इनही में का एक समूह (खुल्लम खुल्ला) फिर जाता है । और (वास्तविक दशा यह है कि) यह स (के सब आरम्भ ही से) ईमानदार नहीं हैं ॥

और जब (यह किसी का हक़ दबाए बैठे हों और) उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की अदालत में बुलाया जा ताकि उनके (और उनके विपक्षियों के) बीच (सच्चा) फ़ैसला किया जावे, तो उन्हीं (ईमान तथा आज्ञा-पालन का दा करने वालों ही) का एक समूह (होता है, जो रसूल की अदालत में हाज़िरी देने से) मुंह फेर लेता है । और य उनका कुछ हक़ (किसी की ओर कुछ निकलता) हो (और फिर फ़ैसला रसूल की अदालत में किया जाय) तो (उ समय इन्हें आने में कुछ संकोच नहीं होता । उस समय तुरन्त) रसूल की ओर (बड़े) आधीन बनकर आते हैं । (हे रसूल इन्हें क्या हो गया !!)—क्या इनके दिलों में कुछ रोग है ? वा यह (किसी बात के) धोखे में पड़े हुये हैं—

या ( इस बात से ) डरते हैं कि ( कहीं ) अल्लाह और उसका रसूल उनकी हक़-तल्फ़ी ( न ) कर बैठें—( ख़ुदा और रसूल तो क्यों बे इन्साफ़ी करने लगे थे )—बल्कि यह आप ( सबसे बढ़कर ) बे-इन्साफ़ हैं ० मुसलमानों ( की शान तो यह है कि उन ) को जब ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है कि उनमें ( उनके बाहमी झगड़ों का ) चुकौता करदें, तो बस ( दो टूक बात ) कह देते हैं कि हमने ( तलबी का हुक्म ) सुना और ( ख़ुदा रसूल का ) हुक्म माना और यही लोग ( आख़िरत में ) फ़लाह पायेंगे ० और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने और अल्लाह से डरे और उस ( की ना रज़ामन्दी ) से बचता रहे, तो ऐसे ही लोग ( आख़िर-कार अपनी ) मुराद को पहुंचेंगे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! दो दिले मुनाफ़िक़ ) अल्लाह की बड़ी पक्की ( पक्की ) क़स्में खा खा कर कहते हैं ( कि हम तो आप के ऐसे फ़र्मांबर्दार हैं ) कि अगर आप हुक्म दें, तो बिला उज़्र ( घर बार सब छोड़ कर बाहर ) निकल खड़े हों-( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि क़स्में न खाओ—( तुम्हारी ) फ़र्मांबर्दारी ( की हक़ीक़त ) मालूम है और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ( सब ) ख़बर है० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो, फिर अगर तुम ( ख़ुदा रसूल के हुक्म से ) रूगर्दानी करोगे, तो ( तब्लीग़-रिसालत की ) जो ज़िम्मेदारी रसूल पर है, उसके जवाब-देह वह हैं और ( इताअत की ) जो ज़िम्मेदारी तुम पर है, उसके जवाब-देह तुम हो और अगर रसूल के कहे पर चलोगे, तो राह-सिर जा लगोगे और रसूल के ज़िम्मे तो ( हुक्म ख़ुदा का ) साफ़ तौर पर पहुंचा देना है और बस ० तुम में से जो लोग ईमान लाये और नेक अमल ( भी ) करते हैं, उनसे ख़ुदा का वादा है कि ( एक न एक दिन ) उनको मुल्क की ख़िलाफ़त ( यानी सल्तनत ) ) ज़रूर इनायत करेगा—

تَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ
بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝
وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ
لَيَخْرُجُنَّ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ اِنَّ اللّٰهَ
خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا
الرَّسُوْلَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ
مَّا حُمِّلْتُمْ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا وَمَا عَلَى
الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى

---

वा यह ( इस ख़याल से ख़ुदा की अदालत में हाज़िर होने से ) डरते हैं कि अल्लाह उनके साथ अन्याय करेगा ? ( अल्लाह अन्याय नहीं किया करता )-वरन् अत्याचारी ( तथा अन्यायी तो ) यही सब ( लोग ) हैं। ईमानदारों का कहना-जब कि उन्हें अल्लाह और उसके रसूल के दरबार में बुलाया जाय, तो बस यही होता है-( बहुत अच्छा ! हाज़िर हुए !! )-हमने ( सरकारी आज्ञा ) सुनी और ( तन मन से ) स्वीकार किया। और ( सच पूछो तो लोक परलोक में मोक्ष तथा ) सफलता पाने वाले यही ( मुसलमान ) हैं । और जो ( मनुष्य ) अल्लाह और उसके रसूल की ( सच्चे दिल से ) आधीनता करे और ( प्रत्येक समय ) ख़ुदा ( के कोप ) से डरता रहे और ( जिस बात में ख़ुदा अप्रसन्न हो ) उससे बचता रहे, तो ( उसका जीवन दोनों लोकों में सफल रहेगा। निस्सन्देह ) यही ( वह सौभाग्यवान ) लोग ( हैं, जो अन्त में ) मनोरथ को प्राप्त होंगे॥

और ( हे रसूल ! ) यह ( मुनाफ़िक़ जो ) अल्लाह की ( बड़ी ) पक्की ( पक्की ) क़समें खाते हैं ( और कहते हैं कि हम तुम्हारे इतने आधीन हैं ) कि यदि तुम आज्ञा दो ( और तुम्हारे आज्ञा-पालन में हमको घर बार छोड़ना पड़े ) तो ( सब घर बार छोड़ कर घर से ) निकल पड़ें। ( तो ) तुम ( इनसे ) कहदो कि ( बस व्यर्थ ) क़समें न खाओ। नियमानुसार आज्ञा पालन करना चाहिये-( वह करके दिखाओ )। निस्सन्देह ( जो कुछ तुम ज़बान से कह रहे हो और ) जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह को ( सब ) ख़बर है॥

( हे रसूल ! ) तुम ( इन लोगों से ) कहो कि अल्लाह की आधीनता करो और रसूल की आधीनता करो। ( इतनी कहा सुनी के बाद ) फिर ( हे मुनाफ़िक़ो ! ) यदि तुम ( अल्लाह रसूल की आधीनता से ) मुंह फेरोगे, तो ( उसकी ज़िम्मेदारी हमारे रसूल पर कुछ नहीं। क्योंकि आदेशों के प्रचार का ) जो बोझ उन पर लाद दिया गया है, उसके ज़िम्मेदार वह हैं और ( आधीनता तथा आज्ञा-पालन का ) जो बोझ तुम पर लाद दिया गया है, उसके ज़िम्मेदार तुम हो। और यदि तुम ( हमारे ) रसूल के कहने पर चलो, तो तुम ( भी ) मार्ग पर आ जाओ ( और अपनी ज़िम्मेदारी से छुट्टी पाओ ) । और रसूल के ज़िम्मे तो ( हमारे आदेशों के ) खुलम खुल्ला प्रचार के अतिरिक्त और कुछ नहीं ( और धर्म प्रचार वह ख़ूब भली भांति कर रहे हैं ) । जो लोग तुममें से ईमान ले आये और ( ख़ुदा रसूल की आज्ञानुसार ) उन्होंने शुभ—कर्म ( भी ) किये, उनसे अल्लाह ने वादा कर रक्खा है कि वह उनको ( कभो न कभी ) इस मुल्क में अवश्य ख़लीफ़ा ( अर्थात शासक ) बना देगा—

الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ
لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ
خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا
وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ●
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا
الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ● لَا تَحْسَبَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَأْوَاهُمُ
النَّارُ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لِيَسْتَأْذِنكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ
يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ مِّن قَبْلِ
صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُم مِّنَ الظَّهِيرَةِ
وَمِن بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَّكُمْ
لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طَوَّافُونَ

ع

जैसे उन लोगों को ख़िलाफ़त इनायत की थी, जो इनसे पहिले हो गुज़रे हैं और जिस दीन को उसने इनके लिये पसन्द किया है (यानी इस्लाम) उसको इनके लिये जमा कर रहेगा और ख़ौफ़ (व ख़तर) जो इनको (लाहिक़) है, इसके बाद (अन्क़रीब ही) इनको (उसके) बदले में अम्न देगा कि (ब इतमीनान) हमारी इबादत किया करेंगे (और) किसी चीज़ को हमारा शरीक न गर्दानेंगे और जो शख़्स इन (तमाम एहसानात) के बाद नाशुक्री करे, तो ऐसे ही लोग ना फ़र्मान हैं ० और (मुसलमानो !) नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और रसूल के कहे पर चलो, ताकि तुम पर रह्म किया जाए ० (ऐ पैग़म्बर !) ऐसा ख़याल न करना-कि काफ़िर मुल्क में (कहीं को भाग कर हमें) हरा देंगे-(नहीं, यह खुद हारेंगे) और (आख़िरकार) इनका ठिकाना दोज़ख़ है और बेशक (वह बहुत ही) बुरा ठिकाना है ० मुसलमानो ! तुम्हारे हाथ के माल (यानी लौंडी गुलाम) और तुम में से जो (हद्दे) बुलूग़ को नहीं पहुंचे; तीन वक़्तों में (तुम्हारे पास आने की) तुमसे इजाज़त ले लिया करें-(एक तो) नमाज़-सुबह से पहिले और (दूसरे) जब तुम दोपहर को (सोने के लिये मामूल के मुताबिक़) कपड़े उतार दिया करते हो और (तीसरे) नमाज़-इशा के बाद—(यह) तीन वक़्त तुम्हारे परदे के वक़्त हैं। इन (औक़ात) के सिवा न (तो बे इज़्न आने देने में) तुम पर कुछ गुनाह और न (बे इज़्न चले आने में) उन पर (कुछ गुनाह, क्योंकि वह) अकसर तुम्हारे पास आते जाते रहते हैं—

عـ

जैसे उसने उन (नेक) लोगों को ख़लीफ़ा बना दिया था, जो उनसे पहिले हो चुके हैं और (इस बात का भ वादा कर रक्खा है कि) वह उनके लिये इस धर्म (अर्थात इस्लाम) को-जो उसने उनके लिये पसन्द किया है-(बहुत पक्क तथा) दृढ़ कर देगा। और उनके भय (का समय बीत जाने के) बाद (उसके) बदले में उनको अमन (चैन) दे देगा कि (फिर वह (बिलकुल निश्चिन्त होकर) हमारी उपासना किया करेंगे और हमारे साथ किसी वस्तु को (भी) शरीक न करेंगे। औ जो (मनुष्य हमारी) इस (दया तथा कृपा) के बाद भी कुफ़्र करे, तो यही (वह) लोग (हैं, जो) अवज्ञा-कारी हैं (औ अन्त में हानि उठाने वाले हैं)॥

(लोगो ! यदि तुम अपना लोक परलोक सुधारना चाहते हो, तो अपने कामों को सुधारो) और नमाज़ पढ़ो और ज़का दो और (अपने) रसूल की आज्ञा-पालन करो, ताकि तुम पर दया की जाय। (हे रसूल !) तुम यह विचार कभी न क कि काफ़िर पृथ्वी में (किसी रीति से मुझको वा तुमको) हरा देंगे-(ऐसा कभी नहीं हो सकता। यह लोग स्वयं हारेंगे और (अन्त में) उनका ठिकाना (नर्क की) अग्नि है और (वह) बहुत बुरा ठिकाना है॥

मुसलमानो ! तुम्हारे मम्लूकों (अर्थात लौंडी गुलामों) को और तुम्हारे उन (लड़कों) को, जो (अभी) बालिग़ न हुये-(तुम्हारे घर में आने के लिये) तीन वक़्तों में आज्ञा लेना ज़रूरी है; सुबह की नमाज़ से पहिले और दोपहर के सम जबकि तुम अपने कपड़े उतारते हो-और इशा की नमाज़ के बाद-यह तीन समय तुम्हारे पर्दे के हैं। (अतः इनमें आने ज वालों को समझ बूझ से काम लेना चाहिये और) इन (समयों) के बाद (उनको बिना आज्ञा आने देने में) न (तो) तुम कुछ दोष है और न (बिना आज्ञा आ जाने में) उन पर (कुछ दोष, क्योंकि काम काज के लिये) यह (घर अधिकता से आते जाते हैं—

عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ
الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ
مِنكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي
لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن
يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَن
يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ
حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ
أَن تَأْكُلُوا مِن بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ
بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ

(और) तुममें से बाज़ को (यानी लौंडी गुलामों को) बाज़ (यानी तुम्हारे) पास आने जाने की ज़रूरत लगी ही रहती है, (तो बार बार इज़्न मांगने में तुम लोगों को बड़ी तकलीफ़ होगी)—यूं अल्लाह (अपने) अहकाम तुमसे खोल खोल कर बयान करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है० और (मुसल्मानो!) जब तुम्हारे लड़के (हद्द) बुलूग़ को पहुंचें, तो जिस तरह इनसे अगले (यानी इनसे बड़ी उम्र के घरों में आने के लिये) इज़्न माँगा करते हैं-(इसी तरह) इनको भी इज़्न मांगना चाहिये। यूं अल्लाह अपने अहकाम तुमसे खोल खोल कर बयान करता है और अल्लाह जानने वाला—हिक्मत वाला है ० और बड़ी बूढ़ी औरतें जिनको निकाह की उम्मीद (बाक़ी) नहीं (रही)-अगर अपने कपड़े (चादर वग़ैरा) उतार रक्खा करें, तो इसमें उन पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि उनको (अपना) बनाव दिखाना मन्ज़ूर न हो और (अगर इसकी भी) एहतियात रक्खें, तो उनके हक़ में बेहतर है और अल्लाह (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० न (तो) अन्धे (आदमी) के लिये कुछ मुज़ायक़ा है और न लंगड़े (आदमी) के लिये कुछ मुज़ायक़ा है और न बीमार के लिये कुछ मुज़ायक़ा है और न (उमूमन) तुम मुसल्मानों के लिये (इसमें कुछ मुज़ायक़ा है) कि अपने घरों से (खाना) खाओ, या अपने बाप के घर से, या अपनी माँ के घर से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपनी बहिनों के घरों से, या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से—

---

(और इसी तरह अपनी २ आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिये) तुममें से (भी आपस में) कोई किसी के पास और कोई किसी के पास (आता जाता ही रहता है। इस लिये यदि प्रत्येक समय आज्ञा लेनी पड़े, तो इसमें कठिनाई है। मुसलमानो!) खुदा (ने जिस प्रकार अपने इस हुक्म को तुम्हारे सामने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है)—उसी प्रकार (वह अपने समस्त) आदेशों को तुम्हारे लिये साफ़ (साफ़) वर्णन करता है। और अल्लाह (तुम लोगों की आवश्यकताओं को) ख़ूब जानने वाला (और अत्यन्त) हिकमत (के साथ उनको पूरा करने) वाला है॥

और (हाँ!) जब (वह) तुम्हारे (नाबालिग़) लड़के बालिग़ हो जावें, तो जिस प्रकार उनसे पहिले (अर्थात बड़ी आयु) के लोग (युवा हो जाने के उपरान्त) आज्ञा मांगते आये हैं, उसी प्रकार उन्हें भी (युवा हो जाने के पश्चात घर में आने के लिये) आज्ञा मांगनी चाहिये। (मुसल्मानो! देखो !!) इस प्रकार अल्लाह तआला (अपने) आदेश तुम्हारे लिये खोल २ कर बयान करता है। और अल्लाह (तुम्हारी आवश्यकताओं का) जानने वाला (और बुद्धि तथा) हिकमत (से उनको पूरा करने) वाला है॥

और (देखो!) बुड्ढी स्त्रियाँ जिन्हें विवाह करने की आशा (बाक़ी) नहीं (रही)-वह (अन्य पुरुषों के सामने) यदि अपने (ऊपरी) कपड़े (अर्थात चादर व बुर्क़ा) उतार दें-इस प्रकार कि (बनाव) श्रृङ्गार का प्रगट करना (मंज़ूर) न हो, तो इसमें उन पर कोई दोष नहीं। और (यदि) वह इससे (भी) बचें, तो (यह) उनके लिये (बहुत) अच्छा है। और अल्लाह (सबकी) सुनने वाला (और सब कुछ) जानने वाला है। (मुसल्मानो!) इस बात में न (तो) अन्धे पर कुछ दोष है और न लंगड़े पर कुछ दोष है और न बीमार पर कुछ दोष है और न तुम (मुसल्मानों) पर कुछ दोष है कि (खाना) अपने घरों से खाओ, वा अपने बाप (दादा) के घर से, वा अपनी मां के घर से, वा अपने भाइयों के घर से, वा अपनी बहिनों के घर से, वा अपने चचाओं के घर से, वा अपनी फूफियों के घर से—

أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُم
مَّفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن
تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا
عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً
كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ●
إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا
كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ
يَسْتَأْذِنُوهُ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ
لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ
لَهُمُ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ● لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ
الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا قَدْ
يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا فَلْيَحْذَرِ

الَّذِينَ

या अपने मामुओं के घरों से, या अपनी खालाओं के घरों से, या उन घरों से, जिनकी कुन्जियाँ तुम्हारे इख़्तियार में हैं, या अपने दोस्तों के घरों से-( फिर इसमें भी ) तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि सब मिल कर खाओ, या अलग अलग । तो जब घरों में जाने लगो, तो अपने ( लोगों ) को सलाम कर लिया करो-( सलाम एक ) दुआए—ख़ैर ( है, जो तुम मुसल्मानों को ) ख़ुदा की तरफ़ से ( तालीम की गई है )-बरकत वाली, उम्दा—यूं अल्लाह ( अपने ) अहकाम तुमसे खोल खोल कर बयान करता है, ताकि तुम समझो ० ( सच्चे ) मुसल्मान तो बस वह हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये हैं और जब किसी ऐसी बात के लिये—जिसमें लोगों के जमा होने की ज़रूरत है, पैग़म्बर के पास होते हैं, तो जब तक पैग़म्बर से इजाज़त न लें-( मज्लिस से उठ कर ) नहीं जाते। ( ऐ पैग़म्बर ! ) जो लोग ( ऐसे मवाक़े पर ) तुम से इजाज़त ले लेते हैं, हक़ीक़त में वही लोग हैं, जो ( सच्चे दिल से ) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये हैं । तो जब यह लोग अपने किसी ( ज़रूरी ) काम के लिये तुमसे ( जाने की ) इजाज़त तलब किया करें, तो तुम इनमें से जिसको ( मुनासिब समझ कर ) चाहो-( चले जाने की ) इजाज़त दे दिया करो और ख़ुदा की जनाब में इनके लिये मग़फ़िरत की दुआ भी करो। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० ( मुसलमानो ! जब ) पैग़म्बर ( तुममें से किसी को बुलाएँ, तो उन ) के बुलाने को आपस में ( मामूली बुलाना ) न समझो, जैसा तुममें एक को एक बुलाया करता है । अल्लाह उन लोगों को ख़ूब जानता है, जो तुममें से छुप कर ( पैग़म्बर की मज्लिस—शूरा में से बे इजाज़त ) सटक जाते हैं—

---

वा अपने मामुओं के घर से, वा अपनी मौसियों के घर से, वा ( अपनी दासी ) दासों के घर से, जिनकी कुंजि तुम्हारे हाथ में हैं, वा अपने मित्रों के घरों से-( और इसमें भी ) तुम पर कुछ दोष नहीं कि सब मिल कर खाओ, वा अके अकेले। ( और मुसल्मानो ! ) जब तुम घरों में दाख़िल हुआ करो, तो अपने ( मुसल्मान मर्दों और औरतों ) पर सलाम भे करो—( क्योंकि सलाम मुसल्मानों के लिये ) अल्लाह की ओर से ( नियत किया हुआ एक सर्वोत्तम ) उपहार है ( और ) ब कत वाला ( और ) पवित्र ( शुभ-निवेदन )। अल्लाह तआला इसी प्रकार ( अपने ) आदेशों को स्पष्ट-रूप से तुम्हारे लिये वर्ण करता है, ताकि तुम ( उन्हें ) समझो ( और उन पर अमल करो ) ॥

( पक्के ) मुसल्मान तो बस वह लोग हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए हैं और जब वह किसी ऐ काम के लिये-जिसमें लोगों के इकट्ठा करने की आवश्यकता हो-रसूल के साथ होते हैं, तो ( उन्हें कैसी से कैसी आवश्यक क्यों न पड़ जाय, उस सभा से ) कभी नहीं जाते-जब तक कि उनसे आज्ञा न मांग लें । निस्सन्देह ( हे रसूल ! ) जो लो तुमसे ( ऐसे समय में ) आज्ञा मांगते हैं, वह सब ( के सब ) अल्लाह और उसके रसूल पर ( सच्चे दिल से ) ईमान ल हैं। अतः जब वह ( नेक-दिल लोग ) अपने ( किसी आवश्यक ) काम के लिये तुमसे आज्ञा माँगा करें, तो तुम उनमें से जि को चाहो, आज्ञा दे दिया करो और उन ( आज्ञाकारी मुसल्मानों ) के लिये अल्लाह से क्षमा ( की दुआ ) मांगा करो निस्सन्देह अल्लाह ( बड़ा ) क्षमा करने वाला कृपालु है—( वह उनके सब दोष क्षमा कर देगा ) ॥

( मुसल्मानो ! ) रसूल के बुलाने को अपने बीच ऐसा ( मामूली ) न समझो, जैसे तुममें से कुछ को कुछ का बुला ( होता है। और बुलाने के बाद जब आ जाओ, तो बिना आज्ञा कभी सभा से न उठो )। अल्लाह उन लोगों को ( अच्छ तरह ) जानता है, जो तुममें से चोरी-छिपे ( रसूल की सभा से उठकर बिना आज्ञा ) खिसक जाते हैं--

الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ
يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ۭ وَيَوْمَ
يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ
سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰي عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ
لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۝ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ
تَقْدِيْرًا ۝ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا
يَخْلُقُوْنَ شَيْــــًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ
لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا

तो जो लोग रसूल के हुक्म की मुख़ालिफ़त करते हैं, उनको इस ( बात ) से डरना चाहिये कि ( कहीं ) उन पर कोई आफ़त ( न ) आन पड़े या उन पर ( कोई और ) अज़ाब दर्द-नाक ( न ) नाज़िल हो ० सुनो जी ! अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है। तुम ( लोग ) जिस ( रविश ) पर ( चलते ) हो, ख़ुदा ख़ूब जानता है और जिस रोज़ ( लोग क़यामत में ) ख़ुदा की तरफ़ लौटाकर लाये जाएँगे, तो जैसे ( कुछ दुनिया में ) अमल करते रहे हैं, ख़ुदा ( उनका नेक व बद ) उनको बता देगा और अल्लाह सब कुछ जानता है ०—

## सूरत—.फ़ुर्क़ान

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ७७ आयतें और ६ रुकूअ हैं**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला मेहर्बान ( है )० ( ख़ुदा की ज़ात बड़ी ) बा-बरकत ( ज़ात ) है, जिसने अपने बन्दे ( मुहम्मद ) पर क़ुर्आन उतारा, ताकि तमाम-जहान के ( लोगों के ) लिये ( अज़ाब-ख़ुदा से ) डराने वाला हो ० वही तो है कि आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत उसी को है और वह कोई फ़र्ज़न्द भी नहीं रखता और न सल्तनत में ( कभी ) कोई उसका शरीक रहा और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया । फिर हर एक चीज़ के लिये एक ( मुनासिब ) अन्दाज़ा ठहरा दिया ० और काफ़िरों ने ख़ुदा के सिवा ( दूसरे दूसरे ) माबूद इख़्तियार कर रक्खे हैं, जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, बल्कि वह ( ख़ुद दूसरे के ) बनाये ( और पैदा किये ) हुये हैं और ख़ुद उनका अपना बुरा-भला ( भी ) उनके इख़्तियार में नहीं और न मरना—

---

अतः जो लोग रसूल की आज्ञा के विरुद्ध ( तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध काम ) करते हैं, उनको चाहिये कि इस बात से डरें कि ( अचानक ) उन पर ( कोई ) विपत्ति ( न ) टूट पड़े वा उनको कोई दुखदाई अज़ाब ( न ) पहुंच जाय । ( लोगो! ) सुनो !! ( और याद रक्खो कि ) आकाशों तथा पृथ्वी में जो कुछ है—( वह सब ) अल्लाह का है । जिस ( ढंग ) पर तुम ( कार्य कर रहे ) हो, वह उसे जानता है, और जिस दिन ( क़यामत आवेगी और ) यह ( दुनिया के सब ) लोग उसकी ओर लौटाए जायँगे ( और उसके दरबार में हाज़िर होंगे )-तो वह उन्हें उनके कर्मों ( की बुराई भलाई अच्छी तरह ) बता देगा, और ( देखो ! ) और अल्लाह ( को अपने कर्मों से अचेत न समझो । वह न केवल तुम्हारे कर्मों से, वरन ) हर वस्तु ( की दशा ) से ( पूरा २ ) अभिज्ञ है ॥

## सूरत—.फ़ुर्क़ान

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ७७ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥**

( बड़ी ) बरकत वाला है ( वह ख़ुदा )—जिसने अपने बन्दे ( और अपने रसूल मुहम्मद ) पर .फ़ुर्क़ाक़ ( अर्थात सत्य को असत्य से पृथक कर देने वाली पुस्तक ) को अवतीर्ण किया, जिससे कि वह समस्त संसार ( के लोगों ) के लिये डराने वाला हो । ( इस पवित्र पुस्तक को उतारने वाला ) वही ( श्रेष्ठ तथा महान् ख़ुदा ) है कि आकाशों और पृथ्वी का शासन जिसकी ( शक्ति तथा अधिकार में ) है और जिसने न कभी ( अपनी ) कोई सन्तान बनाई और न ( अपने ) शासन में ( किसी को अपना ) साझी बनाया । और जिसने ( दुनिया की ) प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया ( और उत्पन्न करके ) फिर सबका ( अलग २ एक ) अनुमान नियत किया ॥

और उस ( श्रेष्ठ तथा अद्वितीय ख़ुदा ) को छोड़ कर उन्होंने ( अर्थात मुश्रिकों ने ) ऐसे पूज्य बना लिये हैं, जो किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते और ( किसी और को पैदा करना तो अलग रहा )-वह ( स्वयं ही ख़ुदा की शक्ति और उसकी आज्ञा से ) पैदा किये जाते हैं । ( उनमें इतनी भी शक्ति नहीं कि वह अपने आप स्वयं बन जायँ ) और ( इतने विवश तथा लाचार हैं कि ) वह ( किसी और को तो क्या हानि-लाभ पहुंचावेंगे, विशेषतः ) अपने लिये ( भी ) हानि और लाभ की शक्ति नहीं रखते । और न मरना और न जीना, और न ( मरने के बाद क़यामत के दिन ) फिर ज़िन्दा होना उनके अधिकार में है ॥

وَلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ
هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ
فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۝ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً
وَّاَصِيْلًا ۝ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَقَالُوْا مَالِ
هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي
الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ
نَذِيْرًا ۝ اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ
يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا
رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ
الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝
تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ

और न जीना और न (मरे पीछे जी) उठना उनके इख़्तियार में है ० और काफ़िर (कुर्आन की निस्बत) कहते हैं कि यह तो निरा झूट है, जिसको इस (शख़्स-यानी पैग़म्बर) ने (अपने दिल से) घड़ लिया है और दूसरे लोगों ने इस (घड़त) में इसकी मदद की-(ऐसी बात कहने से) यह लोग (बड़े ही) ज़ुल्म और (सरतासर) झूट के मुर्तकिब हुये ० और (यह भी) कहते हैं कि (कुर्आन) अगले लोगों के ढकोसले हैं, जिसको इस (शख़्स) ने किसी से लिखवा लिया है और वही सुबह व शाम इसको पढ़ पढ़ कर सुनाये (और याद कराये) जाते हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि यह (कुर्आन तो) उस (ख़ुदा) ने उतारा है, जो आसमानों और ज़मीन की तमाम छुपी हुई बातों को जानता है। बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला मेहर्बान है (कि तुमको फ़ौरन इस बोहतान की सज़ा नहीं देता)० और (काफ़िर यह भी) कहते हैं कि यह कैसा रसूल है, जो खाना खाता और बाज़ारों में (पड़ा) फिरता है। इसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेज दिया गया कि इसके साथ होकर (वह भी लोगों को अज़ाब-ख़ुदा से डराता) ० या इस पर कोई ख़ज़ाना (यानी हुन) बरसा होता या (ज़ियादा नहीं, तो) इसके पास (एक) बाग़ (ही) होता कि उससे खाता (पीता) और (यह) ज़ालिम (मुसलमानों से) कहते हैं कि तुम तो बस ऐसे आदमी के पीछे हो लिये हो, जिस पर किसी ने जादू कर दिया है ० (ऐ पैग़म्बर !) देखो (तो सही-यह लोग) तुम्हारी निस्बत (कैसी) कैसी बातें बनाते हैं, जिन (की वजह) से (यह आप) गुमराह हो गये और (किसी तरह) राह पर नहीं आ सकते ० (ख़ुदा के हां किसी चीज़ की भी कमी नहीं)-वह ऐसा बा-बरकत है कि चाहे, तो एक (बाग़ कैसा)—उससे बेहतर (बहुतेरे) बाग़ तुम्हारे लिये (मौजूद) करदे-

---

और (यह) काफ़िर (तथा मुश्रिक इस कुर्आन के सम्बन्ध में) कहते हैं कि यह तो बिल्कुल झूठ (ही झूठ) है इसको उसने (अर्थात् मुहम्मद ने) गढ़ा है और दूसरे लोगों ने (इस काम में) उसकी सहायता की है। सो यह लो (कुर्आन के विषय में यह कुफ़्र के शब्द कह कर सरासर) अत्याचार और (बड़ा) झूठ (बोलने) के भागी बने। और (कुर्आ न के सम्बन्ध में) यह (काफ़िर लोग यह भी) कहते हैं कि (इसमें तो) अगले लोगों के क़िस्से (कहानियां लिखी हुई) जिन्हें उसने (अर्थात् मुहम्मद ने किसी से) लिखवा लिया है (और) वही (क़िस्से) सुबह-शाम (पढ़ २ कर) सुनाये जाते (ताकि उसको याद हो जायँ)॥

(हे रसूल !) तुम (इन दुष्टों से) कहो कि यह (कुर्आन) उस (अदृष्ट का ज्ञान रखने वाले ख़ुदा) ने (मुझ पर) उता है, जो (प्रत्येक गुप्त से) गुप्त बात को-जो आकाशों और पृथ्वी (के किसी भाग) में (भी उपस्थित हुई) हो-(अच्छी तरह जानता है (और तुम्हारी इस बकवास से भी वह भली भांति अभिज्ञ है)। निस्सन्देह वह (बड़ा) क्षमा करने वाला-कृपालु (जो तुम्हारी बकवास को सुनता है और कोई शीघ्र तुमको दंड नहीं देता)। और यह (मुश्रिक हमारे रसूल का अना करते हैं)-कहते हैं कि यह किस भांति का रसूल है, जो (साधारण मनुष्यों की तरह खाना) खाता है और बाज़ारों (चलता) फिरता है। (यदि ख़ुदा ने इसको अपना रसूल बनाया था, तो) इसके पास कोई सा फ़रिश्ता (आकाशों से) न भेज दिया गया कि वह भी इसके साथ (लोगों को ख़ुदा के अज़ाब से) भय दिलाता (और उसकी रिसालत का लो के समक्ष समर्थन करता)॥

वा इसके पास कोई (अदृष्ट का) ख़ज़ाना होता—वा इसके लिये एक (मुख्य) बाग़ होता—कि उस (की पैदा में) से यह खाता (पीता। तात्पर्य यह कि कोई तो विशेषता होती)। और (यह) अत्याचारी (तथा असत्य—पूजक मु ल्मानों से) कहते हैं कि तुम तो बस एक जादू किये गये मनुष्य का अनुगमन करते हो। (जिसे तुमने रसूल समझ रक्खा वह रसूल नहीं है। हे रसूल !) देखो यह (मूर्ख) तुम्हारी शान में (कैसी २ बेहूदा) बातें बना रहे हैं। अतः (यही मूर्खता है कि जिसके कारण) यह पथ-भ्रष्ट हो गये और (पथ-भ्रष्ट भी ऐसे कि कभी सीधा) मार्ग पा (ही) नहीं सक (भला ख़ुदा की शक्ति का क्या ठिकाना)—वह (तो) ऐसी बरकत (तथा शक्ति) वाला है कि यदि वह चाहे, तो (हे रसूल तुमको (काफ़िरों तथा मुश्रिकों के) इस (विचार) से भी उत्तम वस्तु प्रदान करदे—

जिनके तले नहरें पड़ी बह रही हों और ( बाग़ों के अलावा ) तुम्हारे ( रहने के ) लिये महल ( तय्यार ) करदे ० अस्ली बात यह है कि ( यह सब शरारतें इससे हैं कि ) यह लोग क़ियामत को झूट समझते हैं और जो लोग क़ियामत को झूट समझें, इनके लिये हमने दोज़ख़ तय्यार कर रक्खी है ० जब वह उनको दूर से देखेगी, तो ( देखते ही जोश मारेगी और यह दूर ही से ) उसका जोश व ख़रोश सुनेंगे ० और जब दोज़ख़ की किसी तंग जगह में मुश्कें बांध कर डाल दिये जाएंगे, तो वहाँ मौत ( ही मौत ) पुकारेंगे ० ( फ़रिश्ते उनके जलाने को कहेंगे कि ) एक मौत को न पुकारो, बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि यह (दोज़ख़) बेहतर है या हमेशा रहने का बाग़ ( बहिश्त )-जिसका वादा परहेज़गारों के साथ किया गया है कि वह उन ( की परहेज़गारी ) का सिला होगा और ( उनका ) आख़िरी ठिकाना ० जो चीज़ वह चाहेंगे, उनके लिये वहाँ मौजूद होगी ( और वह इसी हाल में ) हमेशा ( हमेशा ) रहेंगे-( ऐ पैग़म्बर ! ) यह ( एक ) वादा है-( जिसका ईफ़ा ) तुम्हारे पर्वर्दिगार ( ने अपने ऊ ) पर ( लाज़िम कर लिया है और बएतिबार वादा उससे ) तलब किया जा सकता है ० और जिस दिन ख़ुदा (तमाम) काफ़िरों को और ( उन माबूदों को ) जिनको ( यह लोग ) ख़ुदा के सिवा पूजते हैं ( अपने हुज़ूर में ) जमा करेगा, फिर ( इनके माबूदों से ) पूछेगा कि क्या मेरे इन बन्दों को तुमने गुमराह किया था ? या यह ( आप से ) आप रस्ते से भटक गये ० ( इनके माबूद ) अर्ज़ करेंगे कि तू पाक ( ज़ात ) है—( हमतो ख़ुद बन्दे थे )—

جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ
قُصُوْرًا ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۟ وَاَعْتَدْنَا
لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝ اِذَا رَاَتْهُمْ
مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا
وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝ قُلْ اَذٰلِكَ
خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ
كَانَتْ لَهُمْ جَزَاۗءً وَّمَصِيْرًا ۝ لَهُمْ فِيْهَا مَا
يَشَاۗءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ۭ كَانَ عَلٰي رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَاۗءِ
اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ

---

अर्थात् ( एक बाग़ के बदले बहुत से ) बाग़ ( तुम्हारे लिये तय्यार करदे और बाग़ भी ऐसे ) कि जिनके नीचे नहरें बहती हों और ( फिर उनमें ) तुम्हारे ( रहने के ) लिये ( अच्छे २ ) महल बना दे ( और हर प्रकार की सुख आनन्द की सामग्री तुम्हारे लिये इकट्ठा करदे, परन्तु उसकी हिकमत तथा मस्लहत इसके विरुद्ध है । इन मुश्रिकों का उद्देश्य इन शंकाओं के पेश करने से सत्य का खोज लगाना नहीं है ) बरन् ( उनकी इस बकवास का मूल कारण यह है कि ) उन्होंने क़यामत को झूठ समझ रक्खा है ( और परिणाम की चिन्ता से यह अचेत हैं ) । और हमने ( हर ) उस मनुष्य के लिये जो क़यामत को झूठ जाने, दोज़ख़ तय्यार कर रक्खी है ॥

वह ( दोज़ख़ ) जब इन ( मुश्रिकों ) को दूर से देखेगी, तो ( इतनी क्रोध तथा कोप में भर जायगी कि ) यह ( मुश्रिक दूर से ) उसका क्रोध करना और चिल्लाना सुनेंगे । और जब दोज़ख़ के किसी तंग कोने में इन ( मुश्रिकों ) को ( ज़ंजीरों से उनकी ) मुशकें कसकर डाल दिया जायगा, तो ( फिर यह ) वहाँ मौत ( ही मौत ) पुकारेंगे । ( उस समय दोज़ख़ के फ़रिश्ते इनसे कहेंगे कि ) आज ( केवल ) एक मौत को न पुकारो, बरन् बहुत सी मौतों को पुकारो—( क्योंकि यहां तुमको तरह २ से मौत आवेगी । तुम्हारे शरीर की खालें बारम्बार जलेंगी और बारम्बार पैदा होंगी, और प्रत्येक बार का यह परिवर्तन तुमको मौत का स्वाद चखावेगा । हे रसूल ! इसके समझाने के बाद अब ) तुम ( उनसे ) कहो ! ( और पूछो ) कि यह ( दोज़ख़ ) अच्छी है वा वह स्थायी जन्नत, जिसका संयमियों से वादा किया गया है ? ( और उनसे कहा गया है ) कि वह उन ( की संयमता तथा परहेज़गारी ) का नेक बदला होगा और ( उनके ) लौटने का स्थान ॥

उसमें जो कुछ वह चाहेंगे, वह ( विद्यमान ) होगा ( और यह सुख अल्प—कालिक न होगा, बरन् ) सदैव ( सदैव के लिये इसी सुख आनन्द में वह ) रहेंगे । ( हे रसूल ! ) यह ( एक ) वादा ( है, जिसका पूरा करना ) तुम्हारे पालन कर्त्ता के ज़िम्मे है ( और ) ऐसा वादा है कि ( यदि पूरा न हो, तो उसके सम्बन्ध में ख़ुदा से ) निवेदन किया जा सकता है । और ( वह दिन भी बड़ा भयानक होगा )—जिस दिन ख़ुदा इन ( सब मुश्रिकों ) को और ( उनके ) उन ( घर के बने हुये पूज्यों ) को, जिनकी यह ख़ुदा को छोड़कर पूजा करते हैं—( अपने दरबार में ) इकट्ठा करेगा ( और ) फिर ( उनके ख़ुदाओं की ओर सम्बोधन करके ) कहेगा ( और उनसे पूछेगा कि ) क्या मेरे इन सब बन्दों को तुमने बहकाया था ? अथवा यह ( स्वयं ) मार्ग से भटक गये थे ? वह ( निहायत अदब से ) अर्ज़ करेंगे ( हे ख़ुदा ! ) तू ( कुफ़् शिर्क से ) पवित्र है—

يَنۢبَغِي لَنَآ أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنۡ أَوۡلِيَآءَ وَلَٰكِن
مَّتَّعۡتَهُمۡ وَءَابَآءَهُمۡ حَتَّىٰ نَسُوا۟ ٱلذِّكۡرَ وَكَانُوا۟
قَوۡمَۢا بُورٗا ۝ فَقَدۡ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا
تَسۡتَطِيعُونَ صَرۡفٗا وَلَا نَصۡرٗاۚ وَمَن يَظۡلِم
مِّنكُمۡ نُذِقۡهُ عَذَابٗا كَبِيرٗا ۝ وَمَآ أَرۡسَلۡنَا
قَبۡلَكَ مِنَ ٱلۡمُرۡسَلِينَ إِلَّآ إِنَّهُمۡ لَيَأۡكُلُونَ
ٱلطَّعَامَ وَيَمۡشُونَ فِي ٱلۡأَسۡوَاقِۗ وَجَعَلۡنَا
بَعۡضَكُمۡ لِبَعۡضٖ فِتۡنَةً أَتَصۡبِرُونَۗ وَكَانَ
رَبُّكَ بَصِيرٗا ۝ وَقَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَرۡجُونَ لِقَآءَنَا
لَوۡلَآ أُنزِلَ عَلَيۡنَا ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ أَوۡ نَرَىٰ رَبَّنَاۗ لَقَدِ
ٱسۡتَكۡبَرُوا۟ فِيٓ أَنفُسِهِمۡ وَعَتَوۡ عُتُوّٗا كَبِيرٗا ۝ يَوۡمَ
يَرَوۡنَ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةَ لَا بُشۡرَىٰ يَوۡمَئِذٖ
لِّلۡمُجۡرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجۡرٗا مَّحۡجُورٗا ۝ وَقَدِمۡنَآ

हमको यह बात किसी तरह ज़ेबा ही न थी कि तेरे सिवा (अपने लिये दूसरे) दूसरे कारसाज़ बनाते-(तो हम इनके कारसाज़ बनने का क्योंकर दावा कर सकते थे)-बल्कि (बात यह हुई कि) तूने इनको और इनके बड़ों को आसूदगियाँ दीं, यहाँ तक कि (तेरी) याद को भुला बैठे और यह (आप ही) हलाक होने वाले लोग थे ० (इस पर हम काफ़िरों से मुख़ातिब होकर फ़र्माएँगे कि) तुम्हारे इन माबूदों ने तो तुम्हारी (सारी) बातों में तुमको झुठलाया, तो (अब) तुम न तो (हमारे अज़ाब को अपने ऊपर से) टाल सकते हो और न (किसी से) मदद ले सकते हो और (लोगो! इसी तरह) जो तुममें से (शरीक-ख़ुदा बनाकर) ज़ुल्म करेगा, हम उसको (आख़िरत में) बड़े (सख़्त) अज़ाब (का मज़ा) चखायेंगे ० और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमसे पहिले जितने रसूल भेजे, वह खाना भी खाते थे और बाज़ारों में (भी) चलते फिरते थे और हमने तुममें एक को एक के लिये आज़माइश (का ज़रिआ) क़रार दिया है। तो (मुसलमानो!) तुम (अब भी काफ़िरों की ईज़ाओं पर) सब्र करोगे(या नहीं?) और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा पर्वर्दिगार (सबके हाल को) देख रहा है० और जो लोग (आक़िबत में) हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं रखते, वह इस क़िस्म की बातें भी कहा करते हैं कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतरे-या हम अपने पर्वर्दिगार को देखें-(तो यक़ीन करें)-इन लोगों ने अपने दिल में अपनी बड़ी वक़अत लगा रक्खी है और हद्-इन्सानीयत से बहुत बढ़ गये हैं ० जिस दिन लोग फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन गुनहगारों को कोई ख़ुशी (नसीब) न होगी और (फ़रिश्तों को देख कर) कहेंगे कि दूर-दफ़ान ०—

---

हमें (जब अपने लिये) यह उचित न था कि तुझे छोड़ कर (दूसरों को) अपना ख़ुदा (और मित्र तथा) कार्य कर्त्ता बनाते—(तो यह कैसे सम्भव था कि हम दूसरों के सामने अपनी ईश्वरीयता का दावा करते। उनके गुमराह होने की वजह हमारा वा किसी और का बहकाना नहीं है)-बरन् (मूल कारण यह है कि) तूने इनको और इनके बाप (दादा) को सुख (चैन) दिया-(इस सुख चैन के कारण इनकी दशा) यहाँ तक (पहुंच गई) कि (तेरी) याद से यह अचेत हो गये और यह (कुछ) थे ही नष्ट होने वाले ॥

(फिर हम उन काफ़िरों और मुश्रिकों की ओर सम्बोधन करके कहेंगे-हे मुश्रिको!) तुम्हारे पूज्यों ने जो कुछ तुम कहते थे-(उसका खण्डन कर दिया और स्पष्ट-रूप से) तुमको झुठला दिया। अतः (हमारे अज़ाब को अब तुम) न (तो स्वयं) दूर कर सकोगे और न (अपने उन पूज्यों से किसी प्रकार की) सहायता ले सकते हो-(जिनको तुम दुनिया में पूजते थे और जिनकी सहायता पर तुमको बहुत बड़ा भरोसा था)। और तुममें से जिस (जिस) ने (कुफ़्र, शिर्क और अत्याचार (तथा उद्दण्डता) से (दुन्यिा में) काम लिया, हम उसको उसके कुफ़्र, शिर्क और अत्याचार तथा अनीति के बदले बहुत बड़ा अज़ाब चखावेंगे। और (हे रसूल!) हमने (आज तुमको कोई निराला रसूल नहीं बनाकर भेजा)। तुमसे पहिले हमने जितने रसूल भेजे हैं, सब खाते भी थे और (तुम्हारी तरह) बाज़ारों में चलते (फिरते) भी थे। और (हे मुसल्मानो!) हमने तुम (संसार वालों) में से कुछ को कुछ के लिये परीक्षा (का कारण) बनाया है-(अतः नबी तथा रसूल भी लोगों की नेक दिली तथा ईमान की परीक्षा का कारण हैं। अतः हे रसूल!) क्या (तुम) धैर्य से काम लोगे? और तुम्हारा पालन कर्त्ता (उनकी चालों को) ख़ूब देख रहा है ॥

वह लोग जो (क़यामत के दिन) हमारे दरबार में पेश होने से नहीं डरते—(अर्थात मुश्रिक—जो हमारे रसूल के सम्बन्ध में) कहते हैं कि (यदि वह वास्तव में ख़ुदा के रसूल हैं, तो उनके समर्थन के लिये ख़ुदा की ओर से) हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे जाते? वा (हमें कोई अवसर ऐसा ही क्यों नहीं दे दिया जाता कि) हम अपने पालनहारे (ही) को (अपनी आँखों से) देख लें (और उससे ही सुनलें कि उसने उन्हें अपना रसूल बनाकर भेजा है)। यह अपने दिल में अपने आपको (इतना) बड़ा समझते हैं (कि उन पर फ़रिश्ते उतरें) और (मनुष्यता की) सीमा से (इतने) अधिक बाहर हो गये हैं (कि चाहते हैं कि ख़ुदा स्वयं उनसे बात चीत करे!)। (सो हम उन्हें एक न एक दिन फ़रिते तो अवश्य दिखावेंगे, परन्तु यह मालूम रहे कि) जिस दिन यह फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन (इन) पापियों को (कुछ) ख़ुशी (प्राप्त) न होगी। और (चिल्ला चिल्ला कर) कहने लगेंगे-(हे ख़ुदा!) बचाइयो! (हे ख़ुदा!) बचाइयो ॥

إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَنْثُورًا ۝
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ
مَقِيلًا ۝ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ
الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ۝ الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ
لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۝
وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي
اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝ يَا وَيْلَتَىٰ لَيْتَنِي
لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ۝ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ
الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۗ وَكَانَ الشَّيْطَانُ
لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ۝ وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ
إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝
وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ
الْمُجْرِمِينَ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝ وَقَالَ

और (दुनिया में) जो यह लोग (कोई नेक) अमल कर गये हैं, अब हम उन (आमाल) की तरफ़ मुतवज्जह होंगे और उनको (इस तरह रायगां) कर देंगे—(जैसे) बिखरी हुई धूल ० जन्नत वालों का उस दिन (यह हाल होगा कि उनका) ठिकाना भी बेहतर से बेहतर और ख़्वाबगाह भी उम्दा से उम्दा ० और जिस दिन आसमान एक बदली पर से फट जाएगा (और वह बदली उसके अन्दर से नमूदार होगी) और (उसी बदली में से) फ़रिश्ते जूक़—जूक़ (ज़मीन पर) उतारे जाएँगे ० उस दिन हक़ीक़ी-सल्तनत (खुदाए) रहमान (ही) की होगी और वह दिन काफ़िरों पर (बड़ा) सख़्त होगा ० और जिस दिन नाफ़र्मान (आदमी मारे अफ़सोस के) अपने हाथ काटेगा (और) कहेगा ऐ काश! मैं (भी) रसूल के साथ (दीन के) रस्ते लग लेता ० हाय मेरी कमबख़्ती! काश, मैं फुलां (शख़्स) को दोस्त न बनाता ० उसने तो नसीहत के आये पीछे भी मुझे उससे बहका दिया और शैतान (का तो क़ायदा है कि वक़्त पड़े पर) इन्सान को छोड़ कर अलग हो जाता है ० और (उस वक़्त) पैग़म्बर (यानी मुहम्मद, खुदा की जनाब में) अर्ज़ करेंगे कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मेरी उम्मत ने इस क़ुर्आन को बकवास समझा ० और (ऐ पैग़म्बर! जिस तरह तुम्हारे ज़माने के काफ़िर तुम्हारे दुश्मन हैं) इसी तरह गुनहगारों को हम हर एक नबी का दुश्मन बनाते आये हैं और (लोगों की) हिदायत देने को, और (पैग़म्बरों की) मदद करने को तुम्हारा पर्वर्दिगार बस है०—

और (यह जो अपनी नेकियों के घमंड में हैं और समझते हैं कि यह हमारे काम आएंगी और इसी ख़्याल से हमारे रसूल पर ईमान नहीं लाते, तो) हमें (उस दिन) पहिले उनके वही कर्म देखने हैं, जो उन्होंने (नेक जान कर) किये हैं। (और) फिर हम (ईमान न लाने के दंड में) उन (के उन नेक कामों) को बिखरे हुये रेत की तरह (बिलकुल नष्ट तथा व्यर्थ) कर देंगे। (हां! अवश्य जो लोग ईमान लाकर) जन्नती लोगों (के समूह में दाख़िल हो गये हैं, वह) उस दिन (अपने) ठिकाने की दृष्टि से भी उत्तम होंगे और विश्राम-स्थान की दृष्टि से भी। और (यह जो फ़रिश्तों के देखने की इच्छा कर रहे हैं, उन्हें यह भी ख़बर है कि क़यामत का दिन कौन सा दिन होगा? यह वह भयानक दिन होगा)—जिस दिन कि (यह निकट वर्ती) आकाश (जो दृष्टि के सामने है)—एक सफ़ेद मेघ के कारण फट जायगा और (फिर उस मेघ के अन्दर से) अधिकता के साथ फ़रिश्ते (लोगों के कर्म-पत्र हाथों (में लिये हुये) उतरने लगेंगे॥

उस दिन सच्ची बादशाही (केवल) करुणा-निधान (ख़ुदा ही) के लिये होगी और (इन) काफ़िरों पर वह दिन (बड़ा) कठिन होगा। और (यह वह दिन होगा) जिस दिन कि (हर) ज़ालिम (शर्म के मारे) अपना हाथ काट (काट) खायगा (और) कहेगा कि क्या अच्छा होता! यदि मैं (भी) रसूल के साथ (होकर अपनी मुक्ति का कोई) मार्ग ग्रहण कर लेता (और कहेगा) क्या अच्छा होता! यदि मैं अमुक (अमुक पथ-भ्रष्ट करने वाले मनुष्य) को (अपना) मित्र न बनाता (और उसके कहे में आकर अपना परलोक न बिगाड़ता)। उसने तो मुझको (उपदेश तथा) शिक्षा (प्राप्त होने) के बाद (भी) इससे (बिल्कुल) पथ-भ्रष्ट कर दिया और (अब किसी प्रकार की सहायता नहीं करता। सत्य बात यह है कि उनका मित्र शैतान है। और) शैतान (संकट के समय) मनुष्य को छोड़ ही देता है॥

और (उस समय हमारे) रसूल (मुहम्मद हमसे) कहेंगे—हे मेरे पालन कर्त्ता! मेरी (इस दुराचारी) जाति ने (तेरे) इस क़ुर्आन को छोड़ दिया। (हे रसूल! तुम इन मक्के के काफ़िरों की शत्रुता) और (विरोध की लेश-मात्र पर्वाह न करो। जिस प्रकार आज यह तुम्हारे साथ शत्रुता कर रहे हैं)—हमने उसी प्रकार (इन) पापियों (तथा काफ़िरों) में से (एक न एक) शत्रु हर नबी के लिये (उसके समय में) पैदा किया है। (आज तुम ही कुछ इनकी शत्रुता से दुःख नहीं उठा रहे)। और तुम्हारा पालन कर्त्ता (तो तुमको) क़ाफ़ी (सीधा) मार्ग बताने वाला और (पूर्ण रीति पर तुमको) सहायता देने वाला है। (फिर तुम इनके विरोध तथा शत्रुता से क्यों डरते हो)॥

और काफ़िर कहते हैं कि इस ( पैग़म्बर ) पर क़ुर्आन सारे का सारा एक दम से क्यों नहीं नाज़िल किया गया ? ( हम कहते हैं कि जैसा वक़्तन-फ़वक़्तन उतरा है )-ऐसा ही ( उतरना चाहिये था और ऐ पैग़म्बर ! इसमें मस्लहत यह है ) कि हम ( वक़्तन-फ़वक़्तन ) इसके ज़रिये से तुम्हारे दिल को तस्कीन देते रहें और ( इसी वजह से ) हमने इसको ठहर २ कर उतारा ० और यह लोग ( एतिराज़ के तौर पर अपने ज़ोम में ) कैसी ही ( अनोखी ) बात तुम्हारे पास ( सोच कर ) लाएँ, हम क़रार-वाक़ई-जवाब और उम्दा तौज़ीह तुमको बता देते हैं ० जो लोग ( क़यामत के दिन ) अपने मुँहों के बल ( घसीट घसीट कर ) जहन्नम की तरफ़ हाँके जाएँगे, यही लोग बदतर जगह ( यानी दोज़ख़ ) में होंगे और ( सबसे ) ज़्यादा गुमराह ० और हमने मूसा को किताब ( तौरात ) इनायत की और उनके भाई हारून को (उनका) मददगार ( बनाकर ) उनके साथ कर दिया ० फिर हमने हुक्म दिया कि दोनों ( भाई ) उन लोगों के पास जाओ, जो हमारी ( क़ुद्रत की ) निशानियों को झुटलाते हैं-( चुनाँचे दोनों गये और समझाया और उन्होंने न माना )-तो हमने उन लोगों का खोजड़ा ही खो दिया ० और क़ौम-नूह ने भी जब ( हमारे ) रसूलों को झुटलाया, तो हमने उनको ग़र्क़ कर दिया और उनको लोगों के लिये निशान ( इब्रत ) बना दिया और हमने नाफ़र्मान लोगों के लिये अज़ाब-दर्दनाक तय्यार कर रक्खा है ० और ( इसी तरह ) आद और समूद और ख़न्दक़ वालों और उनके बीच बीच में और बहुत सी उम्मतों को ( हमने हलाक कर मारा ) ० और सभी को तो हमने ( और लोगों की ) मिसालें दे दे कर समझाया था-( मगर किसी ने न समझा ) और हमने सब का सत्यानास कर दिया ०—

الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً
وَّاحِدَةً كَذٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ
تَرْتِيلًا ۝ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ
وَاَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۝ اَلَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلٰى
وُجُوهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا
وَّاَضَلُّ سَبِيلًا ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ
وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُونَ وَزِيرًا ۝ فَقُلْنَا
اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا
فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيرًا ۝ وَقَوْمَ نُوحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا
الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً
وَّاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِينَ عَذَابًا اَلِيمًا ۝ وَّعَادًا وَّثَمُودَا۟
وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيرًا ۝ وَكُلًّا
ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ۝ وَلَقَدْ

४

और ( यह ) काफ़िर कहते हैं कि ( यदि यह मुहम्मद ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं, तो ) इन पर यह ( क़ुर्आन ) एक
बार सबका सब क्यों न उतारा गया ? ( सो हे मुहम्मद ! तुम उनसे कहदो कि ख़ुदा की मस्लहत इसी बात को चाह
थी कि यह क़ुर्आन जिस तरीक़े से उतरा है )-उसी प्रकार ( थोड़ा २ ही करके उतारा जाता )—जिससे कि हम ( आ
श्यकतानुसार ) इसके द्वारा तुम्हारे दिल को दृढ़ करते रहें । और हमने ( इसी लिये ) इस ( क़ुर्आन ) को शनैः शनैः उतारा

और ( हे रसूल ! ) यह ( काफ़िर ) तुम्हारे सामने कैसा ही प्रश्न क्यों न पेश करें, किन्तु हम उसका ( एक ) ठीक उ
और ( उसकी एक ) सर्वोत्तम-व्याख्या तुमको बता ही देते हैं । ( हे रसूल ! ) कैसे वह ( बुद्धिहीन ) लोग हैं, जिन्हें ( क़याम
के दिन केवल उनके मूर्खों जैसे कर्मों के कारण ) औंधे मुंह करके दोज़ख़ की ओर ले जाया जायगा ( और ) यह सब (
सब वहाँ बुरी दशा में होंगे )—बसेरे की दृष्टि से भी बुरे होंगे और मार्ग की दृष्टि से भी बुरे ॥

और ( इन काफ़िरों की यह कुफ़्र तथा उद्दण्डता की आदत बहुत पुरानी है । सो जब ) हमने मूसा को ( तौरे
पुस्तक प्रदान की थी और उनके साथ हमने उनके भाई हारून को उनका वज़ीर अर्थात मंत्री ( और सहायक ) कर दि
था ( और ) फिर हमने ( उन दोनों से ) कहा था कि ( सुधार करने के लिये ) दोनों ( मिल कर ) उन ( उद्दण्ड ) लोगों
ओर जाओ, जिन्होंने हमारी ( शक्ति की बहुत सी ) निशानियों को झुठला दिया ( है । और वह दोनों हमारी आज्ञानुसार उ
पास गये थे और उन्हें बहुतेरा समझाया बुझाया था, तो उन्होंने भी उनकी एक न सुनी थी ) तो हमने उनको ( पृ
पर से) नष्ट-भ्रष्ट कर दिया ॥

और ( इसी प्रकार ) नूह की जाति को ( भी-कि ) जब उन्होंने ( हमारे ) रसूलों को झुठलाया ( और किसी प्र
सीधे मार्ग पर न आये )—तो हमने उन्हें डुबो दिया और उन ( की बरबादी ) को ( उनके बाद के ) लोगों के लिये (
शिक्षा तथा उपदेश की ) निशानी ठहरा दी । और ( यह तो उनको संसार में दंड मिला और परलोक में ) हमने ( ऐ
अत्याचारियों के लिये एक ( और बहुत बड़ा ) दुखदायी अज़ाब तय्यार कर रक्खा है । और ( इसी प्रकार ) आद (
जाति ) तथा समूद ( की जाति ) और अस्हाब—रस ( अर्थात कुंवा वालों ) को भी, और उनके बीच बहुत सी उम्मतों
( उनकी उद्दण्डता तथा अवज्ञा के कारण हमने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया ) । और ( मालूम रहे कि नष्ट करने से पहिले ) हर
( जाति ) को ( सीधे मार्ग पर लाने के लिये ) हमने ( बड़े बड़े शिक्षा-पूर्ण ) दृष्टान्त सुनाए और ( जब किसी प्रकार
कुकर्मों से न माने, तो फिर ) हमने हर एक को (पृथ्वी पर से ) नष्ट ( भ्रष्ट ) कर दिया ॥

أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ
أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ
نُشُورًا ۝ وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا
هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۝ إِن
كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا
وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ
مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝ أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ
أَفَأَنتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ۝ أَمْ تَحْسَبُ
أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ إِنْ هُمْ إِلَّا
كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ
رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ
سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝ ثُمَّ
قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ

४

और यह ( कुफ़्फ़ार-मक्का ) ज़रूर ( क़ौम-लूत की उस ) बस्ती पर ( भी ) होकर गुज़रे हैं, जिस पर बुरा पथराव बर्साया गया था, तो क्या उन्होंने उसको न देखा होगा, मगर ( बात यह है कि ) इन लोगों को ( मरे पीछे दुबारा ) जी उठने की तवक़्क़ो ही नहीं—( तो ईमान क्यों लाएँ ) ० और ( ऐ पैग़म्बर! जब ) जब यह लोग तुमको देखते हैं, तुम्हारी हंसी ही बनाते हैं ( और छेड़ने के तौर पर कहते हैं ) कि क्या यही ( हज़रत ) हैं, जिनको अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है ० अगर हम बुतों ( की परस्तिश ) पर साबित-क़दम न रहें, तो इस शख़्स ने हमको हमारे माबूदों से मुनहरिफ़ कर ही दिया था और चंद रोज़ बाद ( क़यामत के दिन ) जब यह लोग अज़ाब को ( अपनी आंखों से ) देख लेंगे, तो जान लेंगे कि ( मुसल्मानों और काफ़िरों के दोनों फ़रीक़ों में ) कौन गुमराह था ० ( ऐ पैग़म्बर! ) क्या तुमने उस शख़्स ( के हाल ) पर भी नज़र की, जिसने अपनी ख़्वाहिश ( नफ़सानी ) को अपना ख़ुदा बना रक्खा है ? तो क्या तुम उसकी निगरानी कर सकते हो ( कि उसको गुमराह न होने दो )० या तुम ख़याल करते हो कि इन ( काफ़िरों ) में अक्सर ( बात को ) सुनते या समझते हैं। यह तो बस चौपायों की तरह के हैं, बल्कि यह ( उनसे भी ) गये गुज़रे हैं ० ( ऐ पैग़म्बर! ) क्या तुमने अपने पर्वर्दिगार ( की इस क़ुद्रत ) पर नज़र नहीं की कि उसने क्योंकर साये को फैला रक्खा है और अगर चाहता, तो उसको ( एक हालत पर ) ठहरा हुआ कर देता—( लेकिन हम उसको फैलाते रहते हैं )। फिर हमने आफ़ताब को उसका सबब ( ज़ाहिर ) ठहरा दिया है ० फिर हम उसको अपनी तरफ़ आहिस्ता आहिस्ता समेट लेते हैं ० और वही ( क़ादिर—मुतलक़ ) है, जिसने

---

और ( लूत की जाति की ) बस्ती-जिस पर कि ( पत्थरों की ) बहुत बुरी ( तरह ) वर्षा की गई थी, उस पर ( से तो ) यह ( मक्के के काफ़िर भी शाम-देश की यात्रा के समय बहुधा ) होकर गुज़रे हैं, तो क्या उन्होंने इस ( शिक्षा-पूर्ण स्थान) को नहीं देखा होगा! ( देखा तो अवश्य होगा )-बरन् ( उन्हें पिछली नष्ट हुई जातियों की बरबादी की कहानी भी मालूम होगी, परन्तु यह सीधे मार्ग पर इसलिये न आये कि ) इन्हें ( क़यामत के दिन ) दुबारा जी उठने की ( कुछ ) आशा नहीं ( और यह अन्त-काल की चिन्ता से बिलकुल अचेत हैं ) और ( यही कारण है कि ) यह जब तुमको देखते हैं, तो यह तुम्हारी हंसी ही उड़ाते हैं ( और अपमान के साथ कहते हैं कि ) क्या यही वह हैं, जिनको ख़ुदा ने ( अपना ) रसूल बनाकर भेजा है ॥

( और बड़े घमंड के साथ यह कहते हैं कि ) इसने तो हमको ( अपनी बातों के ज़ोर से ) हमारे पूज्यों से ( कभी का ) विमुख कर दिया होता-यदि हम ( बड़े साहस के साथ ) उन ( की पूजा-पाठ ) पर न जमे रहते-( क़यामत के दिन उन्हें अपनी इस उद्दण्डता का पूरा पूरा मज़ा आ जायगा )। और जिस समय यह ( हमारे ) अज़ाब को ( अपनी आँखों से ) देख लेंगे, तो इन्हें ( अच्छी तरह ) ज्ञात हो जायगा ( कि सबसे ) अधिक राह से भटका हुआ कौन था। ( हे रसूल! ) भला तुमने उस ( अपवित्र मनुष्य ) को भी देखा, जिसने अपनी ( मानसिक ) इच्छा को अपना पूज्य बना रक्खा है। तो क्या तुम उन ( को शिक्षा ग्रहण कराने ) के ज़िम्मेदार बन सकते हो, वा तुम विचार कर सकते हो कि उनमें के अधिक लोग ( तुम्हारी सत्य बात को ) सुनते वा समझते हैं ( और उनमें शिक्षा-उपदेश स्वीकार करने की कुछ भी योग्यता है। यदि तुमको उससे यह आशा हैं, तो ठीक नहीं है। इसलिये कि ) यह तो बस जानवरों की तरह हैं, बरन् यह उनसे ( भी ) अधिक राह भूले हुये हैं ॥

( हे रसूल! ) क्या तुमने अपने पालन कर्त्ता की ( शक्ति के इस चमत्कार की ) ओर कभी दृष्टि नहीं की-कि उसने छाये को क्यों कर ( इतना ) लम्बा कर दिया है। ( अर्थात् साया सूर्य उदय होने के समय कितना लम्बा हो जाता है ) और ( इस संसार रचने वाले में न केवल छाया को लम्बा करने की शक्ति है, बरन् ) यदि वह चाहे, तो उसको ( इस प्रकार घटता बढ़ता न रक्खे। और एक दशा पर उसे स्थिर और ) क़ायम करदे ( और ) फिर ( यह शक्ति हम ही में है कि ) हमने सूर्य को उसका चिन्ह बना दिया ( और उसके घटने बढ़ने को सूर्य की चाल पर निर्भर कर दिया और ) फिर हम ( इस लम्बाई के बाद जब चाहते हैं, तो ) उसको शनैः शनैः ( क्रमशः ) अपनी ओर सुकेड़ लेते हैं ( और रात के अंधेरे को उसका स्थान पन्न कर देते हैं। निस्सन्देह यदि यह काफ़िर हमारी सृष्टि के छोटे से कण पर भी ध्यान दें, तो उनको कुछ न कुछ हमारी अपार-शक्ति का ज्ञान हो जाय और सुधार की ओर झुक जायं, परन्तु यह ध्यान ही नहीं करते )॥

लَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا
وَهُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ
وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۙ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً
مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِىَّ كَثِيْرًا
وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰى
اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا
فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ
بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِىْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ
بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِىْ
خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ
وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ۝ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ

ظَهِيْرًا

तुम लोगों के लिये रात को पर्दा-पोश और नींद को ( मूजिब )
राहत बनाया और दिन को ( इस ग़रज़ से ) बनाया कि लोग चलें-फिरें०
और वही ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जो अपनी रह्मत ( यानी मेंह ) के
आगे ( आगे ) हवाओं को ( मेंह की ) ख़ुश-ख़बरी देने के
लिये भेजता है और हम ही आसमान से पानी उतारते हैं,
पाक ( साफ़ ) ० ताकि उसके ज़रिये से एक शहर ( की ज़मीन )
मुर्दा ( यानी पड़ती ) में जान डाल दें और अपनी मख़्लूक़ात यानी
बहुत से चारपायों और आदमियों को उससे सेराब करें ० और
हमही ने लोगों में ( मुख़्तलिफ़ मिक़्दार से ) पानी को तक़सीम
किया, ताकि लोग मुतनब्बह हों-लेकिन अकसर लोगों ने नाशुक्री के
सिवा ( कुछ भी एहसान ) न माना ० और अगर हम चाहते, तो
हर ( हर ) बस्ती में ( एक ) डर सुनाने वाला ( यानी पैग़म्बर ) उठा
खड़ा करते ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम काफ़िरों का कहा न मानो
( कि लगो दावत-इस्लाम में किसी तरह की कोताही करने )-और
क़ुर्आन ( के दलायल ) से इनका मुक़ाबला बड़े ज़ोर से करो ० और
वही ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जिसने दो दरियाओं को ( आपस में )
मिलाया; एक ( का पानी ) मीठा-मज़ेदार और एक ( का ) खारी
कड़ुवा और दोनों में एक रोक और अटल-आड़ बना दी ० और
वही ( क़ादिर मुतलक़ ) है, जिसने पानी ( यानी मनी ) से आदमी
को पैदा किया, फिर उसको किसी का बेटा-बेटी और किसी का
दामाद-बहू बनाया और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारा पर्वर्दिगार हर चीज़
पर क़ादिर है ० और काफ़िर ख़ुदा के सिवा ( झूटे माबूदों ) को पूजते
हैं, जो न उनको नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न उनको नुक़सान
पहुंचा सकते हैं और काफ़िर तो अपने पर्वर्दिगार ( की मुख़ालिफ़त )
पर ( हमा वक़्त ) कमर—बस्ता हैं ०—

और वही ( ख़ुदा ) है, जिसने तुम्हारे लिये रात को पर्दा नियत किया और नींद को सुख ( का कारण ) और
को ( जीविका प्राप्त करने और ) चलने फिरने के लिये बनाया । और वही ( ख़ुदा ) है, जो अपनी दया ( की वर्षा ) से प
वायु को ( वर्षा के आगमन का ) मंगल-समाचार सुनाने के लिये भेजता है । और हमने ही आकाश से ( वर्षा का ) प
जल उतारा है, जिससे कि उसके द्वारा किसी मुर्दा ( भूमि वाले ) शहर ( की मुर्दा-भूमि ) में जान डाल दें और अपनी स
में चौपायों और बहुत ( प्यासे ) लोगों को पानी पिलादें ॥

और हम ही ने उस ( पानी ) को लोगों में विभाजित किया, जिससे कि वह शिक्षा ग्रहण करें-( किन्तु )
भी बहुत से लोग ( हमारी नेअमतों की ) कृतघ्नता किये बिना नहीं रहते । और ( हे रसूल ! ) यदि हम चाहते, तो ( सं
को ) प्रत्येक बस्ती में एक ( एक ख़ुदा के अज़ाब से ) डराने वाला ( रसूल ) अवश्य पैदा करते-( परन्तु हमने च
कि यह काम अकेले तुम ही पूरा करो ) । अतः तुम ( को चाहिये कि हमारी इस कृपा की कृतज्ञता करो औ
काफ़िरों की ( बहु-संख्या और धन दौलत से भयभीत होकर हमारी आज्ञाओं के प्रचार में कमी वा किसी और
में उनकी ) आधीनता ( कभी भी ) न करो और क़ुर्आन ( के प्रमाणों ) से उनका पूर्ण-शक्ति से मुक़ाबला करो ॥

और वही ( ऐसी अपार शक्ति वाला ख़ुदा ) है ( कि ) जिसने दो ( ऐसे ) दरियाओं को ( प्रगट में बिलकुल ) मि
दिया, जिनमें एक ( का पानी ) मीठा और प्यास बुझाने वाला है और एक ( का पानी ) खारी ( और ) कड़ुवा
और ( वास्तव में ) उन दोनों के बीच में एक ( गुप्त ) पर्दा और ( आंखों को न दीखने वाली एक ) मज़बूत ओट बन
और उसी ( ख़ुदा ) ने पानी ( की एक गन्दी बूंद ) से मनुष्य को पैदा किया ( और ) फिर उसको ख़ानदान वाला ( अ
बेटा—जिससे वंश का सिलसिला चलता है ) और श्वासराल वाला ( अर्थात् बेटी ) बनाया । और ( हे रसूल ! ) तुम
पालन कर्ता ( पूर्ण ) शक्ति रखता है । और यह ( काफ़िर अन्धे हैं, जो उस सर्व-शक्तिमान ) ख़ुदा को छोड़ कर उन वस्तुओं
पूजते हैं, जो उन्हें न ( कुछ ) लाभ दे सकती हैं और न ( कुछ ) उनको हानि पहुंचा सकती हैं । और काफ़िर ( मनु
तो ( बस ) अपने पालन कर्त्ता की अवज्ञा ( ही ) पर तुला हुआ है ॥

ظَهِيرًا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝
قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ
شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى
الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ
بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ۝ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ
عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا ۝ وَإِذَا
قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ
أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝ تَبَارَكَ
الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا
سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ
اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ
أَرَادَ شُكُورًا ۝ وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ

सज्दः

ع

और ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमने तुमको सिर्फ़ इसलिये भेजा है कि ( नेकों को बहिश्त की ) ख़ुश—ख़बरी सुनाओ और ( बुरों को अज़ाब ख़ुदा से ) डराओ ० ( इन लोगों से ) कहो कि मैं तुमसे इस ( तब्लीग़—रिसालत ) पर कुछ मज़दूरी तो मांगता नहीं । हाँ ( मेरी मज़दूरी अगर है, तो बस यह है कि ) जो चाहे—अपने पर्वरदिगार तक पहुंचने का रस्ता इख़्तियार कर ले ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) उस ज़िन्दा ( ख़ुदा ) पर भरोसा रक्खो, जिसको मौत नहीं और उसकी हम्द (व सना) के साथ ( उसकी ) तस्बीह ( व तक़्दीस ) करते रहो और अपने बन्दों के गुनाहों से उस ( ख़ुदा ) का बाख़बर होना बस करता है ( वह ख़ुद इनसे समझ लेगा) ० जिसने आसमान व ज़मीन और जो कुछ आसमान व ज़मीन में है-( सबको ) छः दिन में पैदा किया, फिर आर्श (बरीं) पर जा बिराजा (वही ख़ुदाए) रह्मान ( है ) तो उस ( की शान ) को तो किसी बा ख़बर ही से पूछना ( चाहिये, यह काफ़िर बे ख़बर क्या जानें ) ० और जब काफ़िरों से कहा जाता है कि ( ख़ुदाए ) रह्मान को सज्दा करो, तो कहते हैं-रह्मान क्या चीज़ है ? क्या जिसके आगे तुम हमें ( सज्दा करने को ) कहो, उसीको सज्दा करने लगें ? और ( रह्मान का नाम सुन कर ) उनको और ज़ियादा नफ़्रत होती है ० ख़ुदा ( की ज़ात बड़ी ) बा-बरकत (ज़ात) है, जिसने आसमान में बुर्ज बनाये और ( बुरजों के अलावा ) उसमें ( आफ़ताब की जगमगाती ) मशअल और नूरानी चांद बनाया ० और वही ( क़ादिर - मुतलक़ ) है, जिसने रात और दिन को बनाया ( कि ) एक के बाद एक आते जाते रहते हैं ( और यह सब कुछ ) उन लोगों के ( समझने के ) लिये ( बनाया ) जो ( इन्तिज़ाम—आलम में ) ग़ौर करना चाहते हैं—या ( ख़ुदा के एहसानात की ) शुक्र—गुज़ारी का इरादा रखते हैं ० और (ख़ुदाए) रह्मान के (ख़ास) बन्दे तो वह हैं, जो—

---

और ( हे रसूल ! ) हमने तो तुमको बस ( नेकों को जन्नत का ) मंगल-समाचार सुनाने वाला और ( बदों को दोज़ख़ के अज़ाब से ) डराने वाला बनाकर भेजा है-( अतः तुम अपना कर्त्तव्य-पालन किये जाओ और काफ़िरों तथा कुकर्मियों की अवज्ञा तथा विरोध का कुछ शोक न करो । और उनसे ) कहो कि ( लोगो ! ) मैं ( अपने ) इस ( कर्त्तव्य-पालन ) पर तुमसे किसी प्रकार की मंजूरी तो मांगता नहीं-( जो तुम मुझको उससे रोकने का प्रयत्न करते हो )-किन्तु ( हाँ ) यह ( मैं अवश्य चाहता हूं ) कि ( तुम मेरा कहना सुनो और उस पर विचार करो और फिर तुममें से ) जो चाहे, अपने पालन कर्त्ता तक ( पहुंचने और स्थायी मुक्ति प्राप्त करने के लिये एक ठीक २ ) मार्ग बना ले । ( सो यह मंजूरी नहीं है, बरन् इसमें पूर्णतया तुम्हारा ही लाभ है ) ॥

( यह कहो ! ) और ( अपने ) उस अमर ( अजर ख़ुदा ) पर भरोसा रक्खो, जिसको ( कभी ) मृत्यु नहीं आवेगी । और उसकी ( स्तुति तथा ) प्रशंसा के साथ पवित्रता वर्णन करते रहो और ( विश्वास करो कि ) अपने बन्दों के पापों से उस ( ख़ुदा ) का सचेत होना पर्याप्त है, जिसने पृथ्वी तथा आकाशों को और जो कुछ उनके बीच में है-( उस सबको केवल ) छः दिन ( के थोड़े समय ) में बना दिया ( और ) फिर अर्श पर विराजमान हुआ । यह ( ही शक्तिशाली) करुणा-निधान ( ख़ुदा ) है, तो उसकी महिमा किसी ( बुद्धिमान और ) अभिज्ञ ( मनुष्य ) से पूछो ( कि वह क्या है । यह अन्धे काफ़िर उसको क्या जानें ) और ( उसकी शान को क्या समझें )। इनसे तो जब कहा जाता है ( कि ) करुणा-निधान ( ख़ुदा ) को सज्दा अर्थात दंडवत करो, तो ( नाक भौं चढ़ाने लगते हैं और ) कहते हैं, वह करुणा-निधान क्या वस्तु है ? क्या ( वह भी कोई पूज्य है ? वा तुम बिना कारण हमसे अपनी आधीनता कराते हो और चाहते हो कि ) जिस वस्तु के लिये तुम ( सज्दा करने को ) कहो, हम उसी को सज्दा करने लगें ? और ( करुणा-निधान ख़ुदा का नाम सुनकर बजाय इसके कि उसकी ओर झुकें ) इनको ( उससे और ) अधिक घृणा हो जाती है ॥

बड़ी बरकत वाला है, वह ( ख़ुदा )-जिसने आकाश में बुर्ज ( अर्थात राशि-चक्र ) बनाये और ( बुर्जों के अतिरिक्त) उसमें ( सूर्य का चमकता हुआ ) दीपक और ( एक ) प्रकाशमान चाँद बनाया । और उसीने रात दिन को आगे-पीछे आने वाला बनाया ( और हर ) उस मनुष्य के लिये, जो ( ख़ुदा की शक्ति में ) सोच ( विचार ) करना चाहे-वा ( जो ख़ुदा की असंख्य कृपाओं की ) कृतज्ञता प्रगट करने का इरादा रखता हो—( अपनी शक्ति का एक बहुत बड़ा चिन्ह नियत किया ) और करुणा-निधान ( तथा कृपालु ख़ुदा ) के ( नेक ) बन्दे वह हैं, जो ( लड़ाई झगड़े से बचते हैं और ईर्षा, द्वेष तथा अभिमान रहित हैं और नम्रता को अपना कर्त्तव्य समझते हैं )—पृथ्वी पर ( अत्यन्त ) धीरज ( और नम्रता ) से चलते हैं—

ज़मीन पर फ़रोतनी के साथ चलें और जब जाहिल उनसे ( जिहालत की ) बातें करने लगें, तो ( उनको ) सलाम करें ( और अलग हो जाएं ) ० और जो रातों को अपने पर्वर्दिगार के आगे सज्दे करें और ( दस्त-बस्ता ) खड़े रहें ( यानी नमाज़ पढ़ें ) ० और जो दुआयें मांगा करें कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! अज़ाब-दोज़ख़ को हमसे परे ही परे रखियो ! ( क्योंकि ) दोज़ख़ का अज़ाब ( बड़ी भारी ) मुसीबत है ० (और) थोड़ी देर ठहरना हो तो-और हमेशा रहना हो तो-( दोनों हालतों में ) बुरी जगह है ० और जो ख़र्च करने लगें, तो फ़ुज़ूल-ख़र्ची न करें और न बहुत तंगी करें, बल्कि उनका ख़र्च इफ़रात और तफ़रीत के दरमियान बीच की रास का हो ० और जो ख़ुदा के साथ ( किसी ) दूसरे माबूद को न पुकारें और नाहक़ ( नारवा ) किसी शख़्स को जान से न मारें कि उसको ख़ुदा ने हराम कर रक्खा है और न ज़िना के मुर्तकिब हों और जो ( शिर्क और गुनाह ) मज़कूरए-बाला करेगा, वह ( अपने ) गुनाह का ख़मयाज़ा भुगतेगा ० कि क़यामत के दिन उसको दोहरा अज़ाब दिया जाएगा-( शिर्क का अलग और दूसरे गुनाहों का अलग )-और ज़लील ( व ख़्वार ) उसी हाल में हमेशा रहेगा ० मगर जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक-अमल किये, तो ऐसे लोगों के गुनाहों को अल्लाह नेकियों से बदल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और जो शख़्स तौबा करे और ( उसके बाद वह ) नेक-अमल ( भी ) करे, तो वह हक़ीक़त में ख़ुदा की तरफ़ रुजू करता है ०—

عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ
قَالُوْا سَلٰمًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا
وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ
جَهَنَّمَ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ اِنَّهَا سَآءَتْ
مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا
وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ
لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ
الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ وَمَنْ
يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ
وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ
سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝
وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا

وَالَّذِيْنَ

और जब मूर्ख ( तथा अज्ञान लोग ) उनसे बात करते हैं, तो वह ( उनको कटु-वचन नहीं सुनाते, बरन् ) सल करते हैं ( और भली भाँति उनसे पीछा छुड़ा लेते हैं )। और जो ( अपनी ) रातें अपने पालन कर्त्ता के आगे सज्दा क़याम करने की दशा में व्यतीत करते हैं। और जो ( दोज़ख़ के अज़ाब से शरण मांगते हैं और गिड़-गिड़ा गि गिड़ा कर ) कहते हैं, हे हमारे पालन कर्त्ता ! दोज़ख़ के अज़ाब को हमसे दूर रखियो, क्योंकि दोज़ख़ का अज़ाब बरबादी है। ( और इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि वह ( अर्थात् दोज़ख़ एक ) बुरा स्थान और ( अत्यन्त बुरा ) ठिकाना

और जब वह व्यय करते हैं, तो न अपव्यय करते हैं और न कृपणता करते हैं और उनका व्यय इस ( अप तथा कृपणता ) के बीच ( अर्थात् ) मध्यम—श्रेणी का होता है। और जो ख़ुदा के साथ किसी दूसरे पूज्य की पूजा करते और जिस ( मनुष्य की ) जान ( लेने ) को अल्लाह ने हराम ( और नाजाइज़ ) कर दिया है, उसको बध नहीं क परन्तु हक़ पर-( अर्थात् जब धर्मानुसार उसका बध करना उचित हो ) और जो व्यभिचार नहीं करते ॥

और जो ऐसे कर्म करेगा, वह ( अपने ) पापों का फल ( अवश्य ) पावेगा। क़यामत के दिन उसको दो- अज़ाब दिया जावेगा और सर्वदा उसी ( अज़ाब ) में अपमानित होकर ( पड़ा ) रहेगा, परन्तु ( हां ) वह मनुष्य-जि ( कुकर्म करने के पश्चात अपने कुकर्मों से ) तौबा की और ( सच्चे दिल से ख़ुदा रसूल पर ) ईमान ले आया ( ईमान लाने के पश्चात ) उसने कर्म भी अच्छे किये, तो अल्लाह ( केवल अपनी कृपा से ) ऐसे लोगों के पापों को नेवि से बदल देगा और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) अल्लाह ( बड़ा ) क्षमा करने वाला ( तथा ) कृपालु है। और जो ( ईमानद मनुष्य ( अपने पापों से ) तौबा करले और ( तौबा करने के पश्चात ) कर्म भी अच्छे करे, तो निस्सन्देह वह ( अ ख़ुदा की ओर ( सच्चे दिल से ) ध्यान लगाता है ( और अपना परलोक सुधारता है ) ॥

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ
مَرُّوْا كِرَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ
رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝ وَالَّذِيْنَ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا
قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝ اُولٰٓئِكَ
يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا
تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا
وَّمُقَامًا ۝ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ فَقَدْ
كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝

سورة الشعراء مكية وهي مائتان

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
طٰسٓمّٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ
نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ

( हाँ ख़ुदा के ख़ास बन्दे वह हैं, जिनका मज़्कूर हुआ ) और (नीज़) वह जो झूटी गवाही न दें और जो ( इत्तिफ़ाक़न ) बेहूदा मशग़लों के पास होकर गुज़रें, तो वज़ादारी के साथ गुज़र जायें ० और ( नीज़ ) वह लोग कि जब उनको उनके पर्वर्दिगार की आयतें सुना सुना कर नसीहत की जाय, तो अन्धे और बहिरे होकर उन पर न गिरें—( बल्कि इरादत-मन्दाना सुनें और नसीहत पकड़ें ) ० और जो दुआएँ मांगते हैं कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमको हमारी बीबियों ( की तरफ़ ) से और हमारी औलाद ( की तरफ़ ) से आँखों की ठंडक इनायत फ़र्मा ! और हमको परहेज़गारों का पेशवा बना ० यही लोग हैं, जिनको उनके सब्र के बदले ( बहिश्त में रहने को ) बालाख़ाने मिलेंगे और वहाँ दुआ और सलाम के साथ उनका इस्तिक़बाल किया जाएगा ( सो अलग ) ० ( और यह लोग ) बहिश्त में हमेशा ( हमेशा ) रहेंगे ( बहिश्त भी ) क्या ही अच्छी जगह है-थोड़ी देर ठहरने के लिये हो तो, और हमेशा रहने के लिये हो तो ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि अगर तुम ख़ुदा को न बुलाओ, तो मेरा पर्वर्दिगार ( भी ) तुम्हारी कुछ पर्वा नहीं करता । सो तुमने उसकी आयतों को झुटलाया ( तो है )—पस अबतो उसका वबाल (तुम्हारे सर) पड़ कर रहेगा ०

## सूरत—शुअराअ

**मक्की, यानी मक्केमें नाज़िल हुई इसमें २२७ आयतें और ११ रुकूअ हैं**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान ( है )० ता-सीम्मीम् ० यह ( सूरत ) भी उसी किताब ( यानी क़ुर्आन ) की ( चन्द ) आयतें हैं, जिसका मतलब साफ़ ( और वाज़ेह ) है ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम तो कुछ ऐसे तंग-दिल हो रहे हो कि ) शायद तुम ख़ुदकुशी कर बैठो कि यह लोग ईमान ( क्यों ) नहीं लाते ० हम चाहें, तो—

---

और ( ख़ुदा के नेक बन्दे वह लोग हैं )—जो व्यर्थ बातों ( और बेहूदा खेल तमाशों ) में नहीं पड़ते और यदि ( भूले से ) वह ( उन ) व्यर्थ खेलों के पास से ( कभी ) गुज़रते हैं, तो सज्जनों ( और गम्भीर लोगों ) की तरह गुज़र जाते हैं । और वह लोग ( ख़ुदा के नेक बन्दे ) हैं कि जिस समय उनके पालन कर्त्ता की आयतों के द्वारा उनको शिक्षा दी जाती है, तो वह ( काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की तरह ) उन ( आयतों ) पर अन्धे और बहिरे बनकर नहीं गिरते—( वरन् धीरज तथा ध्यान-पूर्वक उन्हें सुनते हैं और शिक्षा ग्रहण करते हैं ) ॥

और वह लोग ( ख़ुदा के नेक बन्दे हैं ) जो ( बड़ी नम्रता तथा अधीनता के साथ अपने पालन कर्त्ता के सामने ) निवेदन करते हैं कि, हे हमारे पालन कर्त्ता ! तू ( हमको दुनिया के झगड़ों से बचा ! और ) हमें हमारी पत्नियों और हमारी सन्तान की ओर से आँखों की ठंढक ( और दिल का चैन ) प्रदान कर ! और हमें ( संयमी तथा ) परहेज़गारों का पेशवा अर्थात नेता बना । ( अर्थात हमसे जो वंश चले, वह संयमी और सत्कर्मी हो ) ॥

इन सब लोगों को ( ख़ुदा की कृपा और ) उनके ( नेकी पर ) स्थिर रहने के कारण ( जन्नत में बड़े २ ) महल मिलेंगे और वहां दुआ और सलाम के साथ उनका स्वागत किया जायगा ( और ) यह ( एक दो दिन के लिये जन्नत में नहीं जावेंगे, वरन् ) सर्वदा उसी में ( अत्यन्त सुख आनन्द के साथ ) रहेंगे । ( निस्सन्देह ) जन्नत सर्वोत्तम विश्राम-स्थान तथा निवास-स्थान है । ( हे रसूल ! ) तुम ( सब लोगों को समझा दो और स्पष्ट रूप से उनसे ) कहदो कि यदि तुम ( एक ख़ुदा की ) उपासना न करोगे, तो मेरा पालन कर्त्ता तुम्हारी ( क्षमा तथा मुक्ति की कुछ भी ) पर्वाह न करेगा । अतः ( याद रक्खो कि ) तुमने ( जो उसकी आयतों और उसके रसूलों को ) झुठलाया है, तो शीघ्र यह ( झुठलाना तुम्हारे लिये ) कष्ट-दायक होगा ॥

## सूरत—शुअराअ

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें २२७ आयतें और ११ रुकूअ हैं ॥**

( हे रसूल ! ) यह आयतें ( जो तुम पर उतारी जा रही हैं, एक ) स्पष्ट-पुस्तक ( अर्थात क़ुर्आन-शरीफ़ ) की हैं । ( यदि यह काफ़िर इस श्रेष्ठ—क़ुर्आन पर ईमान नहीं लाते, तो तुम चिन्ता क्यों करते हो । विदित होता है कि ) कदाचित इनके ईमान न लाने पर ( चिन्ता करते करते ) तुम अपनी जान खो दोगे ॥

इन ( लोगों ) पर आसमान से एक ( ज़बरदस्त ) निशानी उतारें
और इनकी गर्दनें उसके आगे झुक कर रह जाएं ० और ( लोगों का दस्तूर
है कि ) जब कभी ( खुदाए ) रहमान की तरफ़ से इनके पास कोई
नसीहत ( की ) नई ( बात ) आती है, तो उससे मुंह फेरे बिदून नहीं
रहते ० सो ( ख़ैर ! ) इन्होंने झुठलाया तो है, मगर अन्क़रीब इनको
उस ( अज़ाब ) की हक़ीक़त मालूम हो जाएगी, जिसकी हँसी उड़ाया
करते थे ० क्या इन लोगों ने ज़मीन की तरफ़ नज़र नहीं की-कि हमने
हर एक क़िस्म की उम्दा उम्दा चीज़ें किस कसरत से उसमें उगाई हैं ०
बेशक इसमें ( भी खुदा की कुद्रत की बड़ी ) निशानी है, मगर ( इस
पर भी ) इनमें से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! )
कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार अलबत्ता वही ज़बरदस्त ( और )
रहम वाला है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) एक वक़्त ( वह भी था कि )
तुम्हारे पर्वर्दिगार ने मूसा को बुलाया कि ( इन ) ज़ालिम लोगों ०
( यानी ) फ़िऔन की क़ौम के पास जावो-क्या यह लोग ( हमारे ग़ज़ब
से ) नहीं डरते ० ( मूसा ने ) अर्ज़ किया-ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मैं डरता
हूं कि ( कहीं ) मुझे झुटलाएँ ( नहीं ) ० और ( बात करने में ) मेरा
दम रुकता है और मेरी ज़बान ( अच्छी तरह ) नहीं चलती-तू
हारून को कहला भेज ( कि वह मेरा साथ दें ) ० और मेरे ज़िम्मे
क़िब्तियों का एक तावान ( भी ) है ( कि मैंने एक क़िब्ती को मार
दिया था )-तो मैं डरता हूं कि ( कहीं उसके बदले में ) मुझको
मार ( न ) डालें ० फ़र्माया ( ऐसा ) हरगिज़ नहीं ( होने पायेगा ।
अच्छा ) तो तुम दोनों ( भाई ) हमारी निशानियाँ लेकर जावो, हम
तुम्हारे साथ हैं-( और जो गुफ़्तगू तुम्हारे उनके दर्मियान होगी,
उसको ) सुनते रहेंगे ० ग़रज़ तुम दोनों फ़िऔन के पास जाओ और
( उससे ) कहो कि हम तमाम-जहान के पर्वर्दिगार के भेजे हुये हैं ०—

عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ●
وَمَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا
كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ● فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ
أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ● أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى
الْأَرْضِ كَمْ أَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ●
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ●
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ● وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ
مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ● قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ
أَلَا يَتَّقُونَ ● قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ●
وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ
إِلَىٰ هَارُونَ ● وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ●
قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ●
فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ●

ع

ع •

( उनको तो हमने स्वयं ही ढोल दे रक्खो है—अन्यथा ) यदि हम चाहें तो इन ( लोगों ) पर भी आकाश से चिन्ह ( अर्थात अज़ाब इत्यादि ) उतार दें ( कि ) फिर इन ( उद्दण्डों ) की गर्दनें भी उसके आगे झुक जायँ-( इतना मोहता और ( विवश होने पर उनकी उद्दण्डता की दशा यह है कि ) करुणा—निधान ( खुदा ) की ओर से कोई नवीन-शिक्षा ( ऐस नहीं आती, जिस ( पर चलने ) से यह मुंह न फेरते हों । सो उन्होंने ( सत्य—धर्म को ) झुठलाया । अतः ( क़यामत के दि उनको उस ( धर्म ) की ( पूरी ) वास्तविकता मालूम हो जावेगी-( जिसकी सचाई से यह इन्कार करते हैं और ) जिसका ( इस समय ) मज़ाक़ उड़ा रहे हैं । ( हे रसूल ! ) क्या ( यह काफ़िर इतने मूर्ख हैं कि अब तक ) उन्होंने पृथ्वी की ओर ( ध्यान-दृष्टि से ) कभी नहीं देखा ( कि ) हमने भांति २ की उत्तम २ वस्तुएँ कितनी अधिकता से उसमें उगाई हैं ॥

निस्सन्देह इसमें ( भी हमारे एक होने का एक बहुत बड़ा ) चिन्ह ( विद्यमान ) है । और ( इस पर भी ) इनमें के बहुत ( खुदा पर ) ईमान नहीं लाते ( और उसकी ईश्वरीयता में दूसरे को साझी करते हैं )। और तुम्हारा पालन कर्त्ता ज़ब ( और बड़ी ) कृपा वाला है ( और उसकी कृपा काफ़िर मुसलमान-सब पर होती है )। और ( इनको वह घटना भी सुनाओ जबकि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने मूसा को पुकारा ( और उनको आज्ञा दी ) कि तुम इन अत्याचारी ( तथा उद्दण्ड ) लोगों अ फ़िऔन वालों के पास ( सुधार के लिये ) जाओ ( और देखो कि ) क्या यह हमारे अज़ाब से ( बिलकुल ही ) नहीं डर ( इस पर ) मूसा ने कहा ( हे खुदा ! ) मैं इस ( बात ) से डरता हूं कि ( कहीं वह ) मुझको झूठा न कहने लगें । ( इस विचार से ) मेरा हृदय संकुचित होने लगता है । और मेरी ज़बान ( बात चीत के समय अच्छी तरह ) नहीं च तो तू ( मेरे भाई ) हारून के पास आज्ञा भेज ( कि वह मेरा सहायक तथा साथी बन जाय ) ॥

और ( हे खुदा ! ) एक ( प्रार्थना यह भी है कि मेरे हाथ से एक क़िबती मर गया था । उसके बध का ) पाप मुझ पर ( सिद्ध ) है, तो मुझे आशंका है कि ( कहीं ) वह मुझको बध न कर दें । आज्ञा हुई ( ऐसा ) कदापि ( हो सकता । हमने तुम्हारी प्रार्थनानुसार हारून को तुम्हारा सहायक बना दिया है ) । अतः तुम दोनों हमारी आज्ञा ( वहां ) जाओ । हम तुम्हारे साथ ( हैं और जो कुछ तुम्हारी उन से बात चीत होगी, उसको ) सुनते रहेंगे । अतः तुम ( भाई ) फ़िऔन के पास जाओ और ( उससे जाकर ) कहो कि हम संसार के पालनहारे के भेजे हुए ( तुम्हारे पास आये

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۝ قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا
وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ۝
وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ ٱلَّتِي فَعَلْتَ وَأَنتَ مِنَ
ٱلْكَٰفِرِينَ ۝ قَالَ فَعَلْتُهَآ إِذًا وَأَنَا۠ مِنَ
ٱلضَّآلِّينَ ۝ فَفَرَرْتُ مِنكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ
لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ۝
وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدتَّ بَنِيٓ
إِسْرَآءِيلَ ۝ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝
قَالَ رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِن
كُنتُم مُّوقِنِينَ ۝ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُۥٓ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ۝
قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝ قَالَ إِنَّ
رَسُولَكُمُ ٱلَّذِيٓ أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۝
قَالَ رَبُّ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِن

कि आप बनी इस्राईल को हमारे साथ रुख़सत कीजिये ० (चुनाँचे) मूसा और हारून ख़ुदा का हुक्म लेकर फ़िर्औन के पास गये, तो (फ़िर्औन ने) कहा (मूसा!) क्या हमने तुझको अपने हां (रख कर) बच्चा सा नहीं पाला? और (तेरी इतनी उम्र होने आई)—तू अपनी (इस) उम्र में से बरसों हमारे हां रहा ० और तूने एक हर्कत (और) भी की थी; जो की थी—(यानी ख़ून—क़िब्ती) और तू बड़ा ही नाशुक्र है ० (मूसा ने) कहा, मैं उन दिनों वह हर्कत कर बैठा और मैं ग़लती पर था ० फिर जब मुझको तुमसे डर लगा, तो मैं तुम्हारे हां से भाग गया। फिर (एक अर्से के बाद) मेरे पर्वर्दिगार ने मुझको (पैग़म्बरी के) इख़्तियारात अता फ़र्माये और पैग़म्बरों में से मुझको भी (एक पैग़म्बर) बनाया ० और यह भी कोई एहसान है, जिसकी आप मुझ पर मिन्नत रखते हैं कि आप ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रक्खा था ० फ़िर्औन ने पूछा और तमाम-जहान का पर्वर्दिगार क्या? (जिसकी तरफ़ से तुमने अपना आना बयान किया) ० (मूसा ने) कहा (वही) आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, सबका पर्वर्दिगार-अगर तुम लोग यक़ीन करो ० (फ़िर्औन ने) अपने मुसाहिबों से जो उसके इर्द-गिर्द (बैठे) थे, कहा--क्या तुम (मूसा की बातें) नहीं सुनते ० (मूसा ने) कहा, वही तुम लोगों का पर्वर्दिगार और तुम्हारे अगले बाप दादों का पर्वर्दिगार ० (फ़िर्औन ने फिर अपने मुसाहिबों से ख़िताब करके) कहा कि हो न हो-(यह) तुम्हारा रसूल, जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है-बावला है ० (मूसा ने) कहा (वही) पूरब और पच्छिम और जो कुछ उन दोनों में है, सबका मालिक—

---

(और उसकी ओर से यह सन्देश लाये हैं) कि तुम बनी इस्राईल को (अपनी क़ैद से मुक्त कर दो और) हमारे साथ (शाम-देश की ओर जहां उनका ठिकाना है) भेज दो। (संक्षिप्त यह कि मूसा फ़िर्औन के पास गये और ख़ुदा की आज्ञा उसको पहुंचाई, तो) उसने (मूसा के अपमान के लिये) कहा (कि मूसा!) क्या हमने तुमको बच्चा सा नहीं पाला और तुमने अपनी आयु के कई वर्ष हमारे यहाँ नहीं व्यतीत किये। और (तुमको कुछ याद है कि) तुमने एक काम (और) भी किया था, जो किया था (अर्थात क़िब्ती का बध) और (फिर आज तुम इस प्रकार हमारे मुंह आ रहे हो। सच यह है कि) तुम (उपकार न मानने वाले तथा) कृतघ्न हो। मूसा ने उत्तर दिया कि (निस्सन्देह) उस समय मैंने यह काम किया था और (भूल से यह) ग़लती मुझसे हो गई थी॥

(और) फिर जब मुझको तुमसे डर लगा (कि कहीं इस क़िबती के बदले तुम मुझे जान से न मार डालो) तो मैं (आत्म-रक्षा के लिये) तुम्हारे यहां से भाग गया था। फिर (कुछ समय के उपरान्त) मेरे पालनहारे ने (मुझ पर कृपा की)-मुझको हिकमत (तथा चतुरता) प्रदान की और मुझे अपने रसूलों में सम्मिलित कर दिया। और (रहा) वह (पालन-पोषण का) उपकार, जिसको तू मेरे आगे जता रहा है-(तो उसका मूल-कारण) यह है कि तूने बनी इस्राईल को (अपना) ग़ुलाम बना रक्खा था (और तू तरह २ के अत्याचार उन पर किया करता था)। फ़िर्औन (से जब मूसा की इस बात का उत्तर न बन पड़ा, तो बात बदल कर) बोला और (कहने लगा कि अच्छा यह तो बताओ! जिसको तुम) संसार का पालन कर्त्ता (कहते हो, उसकी वास्तविकता) क्या है? मूसा ने उत्तर दिया (वह) आकाशों और पृथ्वी और जो कुछ उनमें है, सबका मालिक है। यदि तुम विश्वास करो (और शिक्षा ग्रहण करना चाहो, तो यही उत्तर तुम्हारे लिये बहुत है)॥

(इस पर) फ़िर्औन (हंसी के साथ) अपने आस पास के लोगों से (अर्थात् अपने दरबारियों से) कहने लगा-(लोगो!) क्या तुम (मूसा का यह अनोखा उत्तर) नहीं सुन रहे? (मूसा ने) कहा कि (श्रेष्ठ महिमा-युक्त ख़ुदा की शान यह है कि वह) तुम्हारा भी पालने (पोसने) वाला है और तुम्हारे पहिले (पूर्वजों अर्थात्) बाप (दादा इत्यादि) का भी। (यह सुनकर) फ़िर्औन बोला-(लोगो! यह) रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिलकुल पागल है। (इसका इलाज कराओ। हम इससे पूछते कुछ हैं—यह उत्तर कुछ देता है)। मूसा ने कहा कि (वही श्रेष्ठ महिमा—युक्त ख़ुदा) पूर्व, पच्छिम और जो (जो) वस्तुयें इन (दोनों दिशाओं) के मध्य में हैं, सबका स्वामी है—

अगर तुम कुछ अक़्ल रखते हो ० (आख़िरकार फ़िरऔन ने मूसा से) कहा—अगर मेरे सिवा (किसी और को) तूने ख़ुदा माना, तो मैं तुझको क़ैदियों में (लेजा दाख़िल) करूंगा ० (मूसा ने) कहा कि क्या अगर मैं एक खुला हुआ मोजिज़ा भी आपको ला दिखाऊं, तो भी ० (फ़िरऔन ने) कहा-अगर तू सच्चा है, तो उसको ला (दिखा) ० इस पर (मूसा ने) अपनी लाठी डाल दी, तो क्या देखते हैं कि वह एक सरीह-अज़्दहा है ० और अपना हाथ बाहर निकाला, तो वह निकालने के साथ सब देखने वालों को नज़र में पड़ा चमक रहा था ० (फ़िरऔन ने अपने) दरबारियों से-जो उसके इर्द-गिर्द (बैठे) थे, कहा-इसमें शक नहीं कि यह कोई बड़ा माहिर जादूगर है ० (और) चाहता है कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करे, तो (अब) तुम लोग क्या सलाह देते हो ० (दर्बारियों ने) अर्ज़ किया (हुज़ूर!) मूसा और उसके भाई (के मामले) को (चन्द रोज़) मुल्तवी रक्खें और शहरों में (जादूगरों के) जमा करने को हर्कारे रवाना फ़र्माएं ० कि वह तमाम बड़े बड़े माहिर जादूगरों को सरकार में ला हाज़िर करें ० ग़रज़ (दिन मुक़र्रर हुआ और उस) रोज़-मुक़र्रर के वादे पर जादूगर जमा किये गये ० और लोगों में मुनादी करा दी गई कि (अब तक तो ख़ैर! तुम लोग अलग-थलग रहे हो, अब ऐसे मौक़े पर भी) तुम लोग जमा होगे या नहीं ० ताकि अगर जादूगर यानी मूसा और उसके साथी ही ग़ालिब रहे, तो शायद हम उन्हीं का दीन इख़्तियार करलें ० तो जब जादूगर (मुल्क के अतराफ़ व जवानिब से) आ हाज़िर हुये, तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि भला हमही ग़ालिब रहे, तो हमको (सरकार से) कुछ इनआम भी मिलेगा ० (फ़िरऔन ने) कहा हाँ (ज़रूर!) और (इनआम का क्या मज़कूर है)-ग़ालिब रहने की सूरत में तो तुम (बार्गाह-शाही के) मुक़र्रब क़रार दिये जावोगे ०—

كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ
لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ
مُّبِيْنٍ ۝ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝
فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَّنَزَعَ
يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ
اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ
اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝ قَالُوْۤا اَرْجِهْ
وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝ يَاْتُوْكَ
بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ۝ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ
يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۝
لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝
فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا
اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ
الْمُقَرَّبِيْنَ ۝

४

(मूर्खो!) यदि तुम (कुछ) समझ (बूझ) रखते हो (तो उसके इन गुणों को सुनो और उसके पद की उच्च[ता] को पहिचानो)। (इस पर) फ़िरऔन बोला-(मूसा! बस बहुत बातें न बनाओ। तुम्हारी भलाई इसी में है कि [मेरी] ईश्वरीयता का इक़रार करो, अन्यथा याद रक्खो) कि यदि तुमने मेरे अतिरिक्त कोई (दूसरा) पूज्य बनाया, तो मैं तुम[को] (अपने) क़ैदियों में (क़ैद) कर दूंगा (और भाँति २ के तुमको दंड दूंगा)। मूसा ने कहा, क्या यदि मैं तुम्हारे पास ([ईश्वर] की ओर से एक ऐसी) स्पष्ट-वस्तु (अर्थात मोजिज़ा) भी (अपने साथ) लेकर आया हूं (जो मेरा समर्थन करे)—[तो] भी (तुम लोग मेरी बात न मानोगे और अपनी हठ-धर्मी न छोड़ोगे?)—फ़िरऔन ने कहा (हमें तुम्हारी किसी बात [पर] विश्वास नहीं)। यदि तुम सच्चे हो, तो लाओ-(हम भी) उसे (देखें कि वह क्या वस्तु है?)। अतः मूसा ने अ[पना] सोंटा (भूमि पर) डाल दिया, तो वह (पृथ्वी पर गिरते ही) एक दम एक बड़ा भारी सर्प बन गया। और अपना [हाथ] (बग़ल में लेजाकर) निकाला, तो वह देखने वालों के लिये (इतना) चमकदार हो गया (कि उसको देख कर उ[नकी] आँखें चका-चौंध हो गईं)॥

(और) फ़िरऔन (अपने) मन्त्रियों से-जो उसके आस पास (बैठे) थे, कहने लगा-(भाइयो!) यह तो (कोई [बड़ा]) चतुर जादूगर (जान पड़ता) है। यह चाहता है कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारी (जन्म) भूमि से निकाल [दे] (और अपने आप यहां का बादशाह बन जाय)-तो (अब) तुम (इसके सम्बन्ध में) क्या राय देते हो? वह बोले कि (ह[मारा]) विचार यह है कि अभी तो आप) मूसा और उसके भाई को (इसी दशा में) छोड़ दें (और मुक़ाबले के लिये [कोई]) दिन, तारीख़ नियत करदें) और (इधर उधर के) शहरों में (कुछ) भरती करने वालों को भेज दें, जिससे कि वह आ[पके] दरबार में समस्त बड़े २ चतुर जादूगरों को ले आवें। अतः (मुक़ाबले के लिये एक दिन नियत किया गया और उ[स]) नियत दिन के वादे (के पूरा करने) के लिये (चारों ओर के बड़े २ चतुर) जादूगर इकट्ठे किये गये॥

और लोगों से कहा गया कि क्या तुम (इस अवसर पर) एकत्रित (न) होगे, जिससे कि हम (सब मिलकर [अपने]) धर्म की सच्चाई और सफलता को अपनी आँखों से देखें और अपने सहमत भाई) जादूगरों ही का अनुगमन करें-यदि (हमारी इच्छाओं के अनुसार मूसा तथा हारून पर) विजय पा जायँ। सो जब (समस्त) जादूगर (फ़िरऔन के दरबार [में]) उपस्थित हुये (और) फ़िरऔन से (नम्रता-पूर्वक) निवेदन करने लगे कि यदि हम (मूसा और हारून पर) विजय पा [जायँ] तो (सरकार से) क्या कुछ हमको पुरस्कार प्रदान होगा? फ़िरऔन बोला, हाँ (अवश्य!) और (केवल पुरस्कार ही [नहीं]) वरन्) उस समय तो तुम हमारे (मुख्य) निकटवर्ती लोगों में (दाख़िल) होगे॥

لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ۝
فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ
إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۝ فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ
تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ۝
قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝
قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُ
كُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝
لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ
وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا
إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۝ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا
خَطَايَانَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَوْحَيْنَا
إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُمْ مُتَّبَعُونَ ۝
فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝ إِنَّ

ع

मूसा ने ( जादूगरों से ) कहा–जो कुछ तुमको डालना मंज़ूर हो, ( मैदान में ) डाल चलो ० इस पर जादूगरों ने अपनी रस्सियां और अपनी लाठियाँ डाल दीं और बोले कि फ़िर्औन के एक़बाल से हमही ग़ालिब रहेंगे० इस पर मूसा ने अपना असा ( मैदान में ) डाला, तो बस वह उन ( शोबदों ) को—जो जादूगर बनाकर लाये थे, एक दम से लगा निगलने ० यह देख कर जादूगर ( ऐसे मुतअस्सिर हुए कि ) सज्दे में गिर पड़े ० ( और ) लगे कहने कि हम तमाम जहान के पर्वर्दिगार पर ० कि ( वही ) मूसा और हारून का पर्वर्दिगार है, ईमान लाये ० ( फ़िर्औन ने ) कहा—क्या इससे पहिले कि मैं तुमको इजाज़त दूं, तुम मूसा पर ईमान ले आये। हो न हो—यह (मूसा) तुम्हारा बड़ा (गुरू) है, जिसने तुमको जादू सिखाया है। सो ( ख़ैर ! ) तुमको ( इसका नतीजा ) मालूम हो जायगा। हम तुम्हारे हाथ और पांव उलटे ( सीधे ) काटें और तुम सबको सूली दें तो सही ० वह बोले-कुछ हरज ( की बात ) नहीं। हमको ( तो बहर—हाल ) अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौट कर जाना है ० ( और ) हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा पर्वर्दिगार हमारे कुसूरों को माफ़ फ़रमायेगा—इस लिये कि हम सबसे पहिले ईमान लाये० और हमने मूसा की तरफ़ वही भेजी कि हमारे बन्दों ( यानी बनी इस्राईल ) को रातों-रात ले निकलो—( क्योंकि ) तुम्हारा तआकुब किया जायगा ० इस पर फ़िर्औन ने ( लोगों की भीड़ जमा करने के लिये ) शहरों में हर्कारे दौड़ाये ०—

---

( यह साहस बढ़ाने वाला मंगल-समाचार सुनकर यह लोग मुक़ाबले के मैदान में आये )—मूसा ( भी वादे के अनुसार वहीं आ उपस्थित हुये और ) उन ( जादूगरों ) से कहने लगे—जो कुछ तुमको डालना हो, तो ( अब देर किस बात की है ? ) अतः उन्होंने ( डिठ-बन्दी करके ) अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ ( पृथ्वी पर ) डाल दीं । ( पृथ्वी पर उनका गिरना था कि लोगों को वह ज़हरीले सर्प दीखने लगे ) और जादूगर ( बड़े अभिमान के साथ ) बोले कि फ़िर्औन के प्रताप से हम ( अपने विपक्षी पर ) अवश्य विजय पावेंगे । अतः ( ख़ुदा की आज्ञानुसार ) मूसा ने भी अपना सोंटा ( पृथ्वी पर ) डाल दिया, तो वह ( पृथ्वी पर गिरते ही एक भयानक भुजंग बन गया और ) एक दम उनके बने बनाये स्वाँग को सटकने लगा । अतः ( यह देखकर समस्त ) जादूगर सज्दे में गिर पड़े ( और ) बोल उठे कि हम संसार के पालन कर्त्ता और मूसा तथा हारून के पालन कर्त्ता पर ( सच्चे दिल से ) ईमान ले आये ॥

( यह रंग देखकर ) फ़िर्औन ( के होश उड़ गये । उसे चिन्ता हुई कि कहीं मेरी समस्त प्रजा मुझसे विमुख न हो जाय । कुछ सोचकर जादूगरों से ) कहने लगा कि पहिले इससे कि मैं तुमको आज्ञा दूं, तुम मूसा ( के ख़ुदा ) पर ईमान ले आये ? ( ज्ञात होता है कि तुम सब मिले हुये हो और ) यह ( मूसा ) तुम्हारा वह बुज़ुर्ग ( गुरु ) है, जिसने तुमको जादू सिखाया है। सो ( घबराओ नहीं )-तुम्हें ( अपनी चालबाज़ी का फल ) अभी मालूम हो जायगा । ( निस्सन्देह ) मैं तुम्हारे एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पैर काटूंगा ( और ) फिर तुम सबको सूली दूंगा ( जिससे कि तुम संसार वालों के लिये शिक्षा तथा नसीहत प्राप्त करने का कारण बनो )। उन्होंने उत्तर दिया ( जो तेरे दिल में आये, कर ! हमारी इसमें ) कुछ हानि नहीं। हमें तो ( एक न एक दिन ) अपने पालन कर्त्ता के पास लौट कर जाना ( ही ) है ॥

निस्सन्देह हमें ( पूर्ण ) आशा है कि हमारा पालन कर्त्ता हमारे ( अगले पिछले ) पापों को ( अपनी कृपा से अवश्य ) क्षमा कर देगा—इस लिये कि हम ( इस सत्य-असत्य के परीक्षा-स्थान में ) सबसे पहिले ईमानदार हैं । ( तात्पर्य यह कि उधर तो फ़िर्औन बनी इस्राईल को कष्ट पहुंचाने की चिन्ता कर रहा था ) और ( इधर ) हमने मूसा को वही ( अर्थात् ईश्वरीय-सन्देश ) भेजी कि तुम हमारे ( इन अत्याचार-पीड़ित ) बन्दों को रातों-रात ( मिस्र की सीमा से बाहर ) ले जाओ ( और इस काम को बड़ी सावधानी से पूरा करो, क्योंकि फ़िर्औन की ओर से ) तुम्हारा पीछा अवश्य किया जावेगा । ( सो मूसा ने ऐसा ही किया )। अतः ( जब प्रातःकाल हुआ और ) फ़िर्औन ( को बनी इस्राईल के भाग जाने का ज्ञान हुआ, तो उस ) ने ( आस पास के ) शहरों में ( अपने ) हरकारे भेजे-( जिससे कि वह लोगों को सेना में भरती करें और नगर-निवासियों को मूसा और उनके अनुगामियों के वृतान्त से सूचित करदें ) ॥

कि बनी इस्राईल थोडी सी जमाअत हैं ० और उन्होंने हमको
सख्त नाराज़ किया है ० और ( अगर्चे ) हमारी जमाअत ( कसीर )
है—( मगर ) हमारा शेवा एहतियात है—( इसलिये तुमको मदद के लिये
बुलाते हैं ) ० ग़रज़ हमने फ़िर्औन के लोगों को बाग़ों ( से ) और
चश्मों ( से ) ० और ख़ज़ानों ( से ) और इज़्ज़त की जगह से निकाल
बाहर किया ० ऐसा ही ( हुआ और ऐसा ही होना चाहिये था ) और
( अनजामकार ) बनी इस्राईल को उन चीज़ों का वारिस बनाया ०
ग़रज़ मूसा बनी इस्राईल को रातों-रात मिस्र से लेकर निकल
गये, तो फ़िर्औन के लोगों ने दिन निकलते निकलते बनी इस्राईल
का तआक़ुब किया ० फिर जब दोनों जमाअतें ( ऐसी क़रीब हुईं कि )
एक दूसरे को देखने लगीं, तो मूसा के लोग लगे कहने कि अबतो
दुश्मन ने हमको आ लिया ० ( मूसा ने ) कहा हरगिज़ नहीं–( क्योंकि )
मेरे साथ मेरा पर्वर्दिगार है ( और ) कोई दम में वह मुझको
( मख़्लसी का ) रस्ता दिखायेगा ० फिर हमने मूसा को तरफ़ वही
भेजी कि अपनी लाठी दरिया पर दे मारो ! चुनांचे ( मूसा ने लाठी
दे मारी और ) दरिया फट ( कर टुकड़े टुकड़े हो ) गया और हर
एक टुकड़ा गोया एक बड़ा ऊंचा पहाड़ था ० और उसी मौक़े के
क़रीब हम दूसरे लोगों ( यानी फ़िर्औन वालों ) को ( भी ) लिवा लाये ०
और हमने मूसा और जो लोग उनके साथ थे, सबको बचा
लिया ० फिर दूसरों ( यानी फ़िर्औन वालों ) को ग़र्क़ कर दिया ० कुछ
शक नहीं कि इस ( वाक़ये ) में ( एक बड़ी ) इब्रत है और फ़िर्औन के
लोगों में से अक्सर ईमान लाने वाले थे भी नहीं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! )
कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार अलबत्ता वही ज़बर्दस्त
( और ) रहम वाला है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन लोगों को इब्राहीम
का हाल पढ़ कर सुनाओ ० कि जब उन्होंने अपने बाप और अपनी
क़ौम ( के लोगों ) से पूछा कि ( तुम लोग ) किस चीज़ को पूजते हो ०–

هٰٓؤُلَاۤءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ
وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ
وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝ كَذٰلِكَ ۭ
وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ ۝ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ
فَلَمَّا تَرَاۗءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ
قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝ فَاَوْحَيْنَآ
اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۭ فَانْفَلَقَ
فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝ وَاَزْلَفْنَا
ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ
اَجْمَعِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ
رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ
اِبْرٰهِيْمَ ۘ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ

قَالُوْا

---

( अतः उन्होंने जाकर कहा कि ) निस्सन्देह यह एक छोटा समूह है और ( इसमें जो लोग हैं )—उन्होंने हमको बड़े क्रो
में डाल दिया है—( इस लिये हम चाहते हैं कि हम सब मिलकर इनको योग्य दण्ड दें )। और हम तो एक शस्त्रधारी समूह हैं–( हमा
आगे इनका ज़ोर ही क्या है )। सो हमने उन ( फ़िर्औन वालों ) को ( उनके ) बाग़ों और सोतों और ( भर पूर ) कोषों और ( उनके
पवित्र-स्थानों से ( सर्वदा के लिये ) निकाल बाहर किया। यूंही ( हुआ और यूंही होना चाहिये था )। और हमने उन (
समस्त वस्तुओं ) का वारिस ( तथा स्वामी ) बनी इस्राईल को बना दिया ॥

( जब फ़िर्औन वाले मूसा का पीछा करने के लिये चले ) तो ( एक दिन ) सूर्योदय के समय उन्होंने बनी इस्राईल
जा लिया। फिर जब दोनों समूह ( इतने निकट हो गये कि ) एक दूसरे को देखने लगा, तो मूसा के साथ वाले लगे क
कि ( मूसा ! ) हम तो पकड़ लिये गये। मूसा ने ( उन्हें धीरज बंधाया और ) कहा कि ( भाइयो ! ऐसा ) कदापि नहीं (
सकता। याद रक्खो कि ) मेरे साथ मेरा पालन कर्त्ता है। वह अभी मुझे ( दरिया से पार होने का कोई ) मार्ग बता देगा।
हमने मूसा को वही भेजी कि अपना सोंटा दरिया में मारो—( उन्होंने ऐसा ही किया )। अतः ( सोंटे का दरिया में पड़ना था
दरिया का पानी ( ठौर ठौर से ) फट गया ( और कई सूखी सड़कें उसमें बन गईं। और ) हर ( सूखा ) भाग ( विस्तार
एक ) बड़े पहाड़ की तरह हो गया। और ( मूसा के साथी कुशल-पूर्वक दरिया पार होने लगे। इतने में ) हमने दूसरों ( अथ
फ़िर्औन वालों ) को भी उस स्थान के समीप कर दिया—( जहां से बनी इस्राईल गुज़र रहे थे )॥

और ( वह भी उनको देखा देखी दरिया में घुस पड़े, किन्तु परिणाम यह हुआ कि ) हमने मूसा और उनके सम
साथियों को ( तो ) मुक्ति देदी ( और ) फिर दूसरों ( अर्थात् फ़िर्औन वालों ) को डुबो दिया। निस्सन्देह इस ( घटना )
( समझने वाले के लिये बड़ी ) शिक्षा ( तथा उपदेश वर्तमान ) है और ( यह घटना इस योग्य है कि काफ़िर इसे सुनकर
मार्ग पर आ जावें, परन्तु ऐसी शिक्षा-पूर्ण घटना सुनने के पश्चात भी ) इनमें के अधिक ( लोग ) ईमान नहीं लाते।
( हे रसूल ! इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि तुम्हारा पालन कर्त्ता बड़ा ज़बरदस्त ( भी है कि फ़िर्औन जैसे उद्दण्ड को उस
सेना सहित पृथ्वी से नष्ट कर दिया और ) कृपालु ( तथा दयालु भी ) है ( कि अपने अवज्ञा-कारियों को अज़ाब देने में ज
नहीं करता )। और ( हे रसूल ! ) तुम उन्हें इब्राहीम का वृत्तान्त सुनाओ, जबकि उन्होंने अपने बाप और अपनी जाति
लोगों ) से कहा था ( और पूछा था ) कि तुम किसकी पूजा करते हो ॥

قَالُوا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ۝ قَالَ
هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۝ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ
يَضُرُّوْنَ ۝ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ
يَفْعَلُوْنَ ۝ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝
اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ۝ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ
لِّيْۤ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ
يَهْدِيْنِ ۝ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ۝ وَ
اِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝ وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ
ثُمَّ يُحْيِيْنِ ۝ وَالَّذِيْۤ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ
خَطِيْۤـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا
وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ
فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ
النَّعِيْمِ ۝ وَاغْفِرْ لِاَبِيْۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝

तो उन्होंने जवाब दिया कि हम बुतों को पूजते हैं और उन्हीं की सेवा करते रहते हैं ० ( इब्राहीम ने ) पूछा कि भला जब तुम ( इनको ) पुकारते हो, तो क्या यह तुम्हारी ( कुछ ) सुनते हैं ० या तुमको फ़ायदा या नुक़सान पहुंचा सकते हैं ० उन्होंने कहा ( यह तो नहीं )—मगर हमने अपने बड़ों को ऐसा ही करते देखा ० इस पर ( इब्राहीम ने ) कहा कि कुछ ख़बर भी है, जिन चीज़ों को तुम और तुम्हारे अगले ० बाप दादा पूजते चले आये हो ० यह तो मेरे दुशमन हैं। हां ! मेरा सच्चा दोस्त तो पर्वर्दिगार-आलम ( है ) ० जिसने मुझको पैदा किया, फिर वही ( दुनिया व दीन की मुशकिलात में ) मेरी रहनुमाई करता है ० और जो मुझको ( खाना ) खिलाता और ( जो ) मुझको ( पानी ) पिलाता है ० और जब मैं बीमार पड़ता हूं, तो वही मुझको शिफ़ा देता है ० और जो मुझको मारेगा ( और मारे पीछे ) फिर ( वही ) मुझको जिलायेगा ० और जो ( बख़्शने वाला मेहर्बान है और उससे ) मुझको तवक़्क़ो है कि रोज़-जज़ा को मेरे क़ुसूर माफ़ करेगा ० ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मुझको ( दीन की ) समझ इनायत फ़र्मा ! और मुझको अपने नेक बन्दों में लेजा शामिल कर ० और आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक्र-ख़ैर जारी रख ० और आराम-गाह-जन्नत के वारिसों में से मुझको ( भी एक वारिस ) बना ० और मेरे बाप को बख़्श ! कि वह गुमराहों में से हैं ०—

---

( और ) उन्होंने ( उत्तर में ) कहा था कि हम तो मूर्तियों को पूजते हैं ( और ) उन ही पर ( आसरा लगाये ) बैठे रहते हैं। ( यह सुनकर ) इब्राहीम ने ( उनसे ) पूछा था कि भला ( किसी संकट के समय ) जब तुम उन्हें पुकारते हो, तो वह तुम्हारी ( पुकार को ) सुन लेते हैं ? वा तुमको ( किसी प्रकार का कुछ ) लाभ वा हानि पहुंचाते हैं ? उन्होंने उत्तर दिया कि ( हम उनको इसलिये नहीं पूजते कि वह हमको कुछ लाभ वा हानि पहुंचाते हैं )—बरन् ( इसलिये पूजते हैं कि ) हमने अपने बाप ( दादा ) को इसी प्रकार ( उनकी पूजा ) करते ( हुये ) पाया है ॥

इब्राहीम ने कहा ( मूर्खो ! ) भला तुमने ( कभी ध्यान—पूवक ) उन ( निरर्थक ) वस्तुओं को देखा है, जिन्हें तुम और तुम्हारे प्राचीन पूर्वज ( सदैव से ) पूजते आये हैं ? वह तो मेरे लिये ( और एक मेरे लिये क्या-अपने प्रत्येक पुजारी के लिये खुले ) शत्रु हैं। किन्तु ( हां ) वह जगत का पालन कर्त्ता, जिसने मुझको ( और समस्त सृष्टि को ) उत्पन्न किया है-( वह मेरा सच्चा मित्र है )। अतः वही मुझे राह दिखाता है और ( वही ऐसा कृपालु है )—जो मुझे ( खाना ) खिलाता है और जो मुझे ( पानी ) पिलाता है। और जब मैं बीमार होता हूं, तो वही स्वास्थ्य प्रदान करता है ॥

और ( वही ऐसा सव—शक्तिमान है कि ) जो मुझे मृत्यु देगा ( और ) पुनः ( क़यामत के दिन ) जीवित कर देगा। और जिससे मुझे आशा है कि ( केवल अपनी दया तथा कृपा से ) क़यामत के दिन मेरी ( प्रत्येक ) त्रुटि को क्षमा कर देगा। ( मैं उसी से प्रार्थना करता हूं कि ) हे मेरे पालन कर्त्ता ! मुझे ( बुद्धि तथा ) हिकमत प्रदान कर ! और ( अपने ) नेक बन्दों में मुझे प्रवेश कर ! और ( मेरे ) बाद के आने वालों में मेरी शुभ-चर्चा प्रचलित रख ! और नेअमत वाली जन्नत के वारिसों ( अर्थात अधिकारियों ) में से मुझे भी ( एक अधिकारी ) बना। और मेरे पिता को ( धार्मिक-विश्वास की सम्पत्ति प्रदान कर ! और उसके अगले पिछले अपराधों को ) क्षमा करदे, क्योंकि वह पथ-भ्रष्टों में से है ॥

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۝ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّ
لَا بَنُونَ ۝ إِلَّا مَنْ أَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ وَأُزْلِفَتِ
الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغٰوِينَ ۝
وَقِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللّٰهِ
هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُونَ ۝ فَكُبْكِبُوا فِيهَا
هُمْ وَالْغَاوُونَ ۝ وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۝
قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ۝ تَاللّٰهِ إِنْ كُنَّا لَفِي
ضَلٰلٍ مُبِينٍ ۝ إِذْ نُسَوِّيكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ وَمَا
أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ۝ فَمَا لَنَا مِنْ شٰفِعِينَ ۝ وَلَا
صَدِيقٍ حَمِيمٍ ۝ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۖ وَمَا كَانَ
أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ ع
كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ

المنزل

और जब लोग ( दुबारा जिला कर ) उठा खड़े किये जायँगे,
मुझको उस दिन रुस्वा न कीजियो ० कि उस दिन न माल ही काम
आयेगा और न बेटे ही (काम आयेंगे) ० मगर ( हाँ ! उसी की नजात होगी )
जो पाक-दिल लेकर खुदा के हुज़ूर में हाज़िर होगा ० और जन्नत
परहेज़गारों के क़रीब लाई जाएगी ० और दोज़ख़ निकाल कर गुमराहों
के सामने करदी जाएगी ० और उनसे कहा जायगा कि खुदा के सिवा,
जिन चीज़ों को तुम पूजते थे-( अब ) वह कहाँ हैं ० क्या वह तुम्हारी
कुछ मदद कर सकते या ( तुम्हारी तरफ़ से कुछ ) इन्तिक़ाम
ले सकते हैं ० फिर वह ( मावूद ) और गुमराह लोग ( जो उनकी
परस्तिश करते थे ) ० और शैतान के लशकर सबके सब औंधे
मुंह दोज़ख़ में ढकेल दिये जायेंगे ० ( और ) गुमराह और उनके मावूद
वहां ( आपस में ) झगड़ने लगेंगे ० ( और झगड़ते वक़्त ) गुमराह लोग
( अपने मावूदों से ) कहेंगे कि बखुदा ! हमतो सरीह गुमराही में थे०
कि हम तुमको पर्वर्दिगार—आलम के बराबर समझते थे ० और हम
को तो बस ( इन दूसरे ) गुनहगारों ने गुमराह किया ० तो ( अब ) न
तो कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं ० और न कोई दिल-
सोज़ दोस्त ० पस ( ऐ ) काश ! हमको ( दुनिया में ) फिर लौट कर
जाना हो, तो हम ईमान वालों में ( शामिल होकर ) रहें ० बेशक
( इब्राहीम के ) इस ( क़िस्से ) में ( भी एक बड़ी ) इब्रत है और इब्राहीम
की उम्मत में से अक्सर ईमान लाने वाले थे भी नहीं ० और ( ऐ
पैग़म्बर ! ) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार ज़बर्दस्त ( और )
रहम वाला है ० ( इसी तरह ) नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया ०
कि उनसे उनके भाई नूह ने कहा—

और तू मुझे उस दिन अपमानित न कीजो, जिस दिन कि लोग ( क़ब्रों से जीवित करके ) उठाये जायँगे ( और ) जिस दिन कि न ( धन ) दौलत ( किसी के ) कुछ काम आवेगी और बेटे ( बेटियां )—परन्तु ( हां उस दिन ) वह मनुष्य ( बड़ा भाग्यवान रहेगा )-जिसे अल्लाह ने ( अपनी कृपा से ) ऐसा दिल ( इस संसार में ) प्रदान किया है जो ( कुफ़्र शिर्क इत्यादि पापों से बिल्कुल ) सुरक्षित है। और ( यही वह दिन होगा, जिस दिन कि ) जन्नत संयमी लोगों के निकट करदी जावेगी और दोज़ख़ पथ-भ्रष्टों के लिये प्रगट करदी जावेगी । और पथ-भ्रष्टों से कहा जायगा कि ( आज ) वह ( तुम्हारे पूज्य ) कहां हैं ? जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजा करते थे। क्या ( आज ) वह तुम्हारी सहायता कर सकते हैं या ( कुछ ) अपना ही बचाव कर सकते हैं । ( और ) फिर ( इनके ) उन ( पूज्यों ) को और ( इन ) पथ—भ्रष्टों को और शैतान की समस्त सेना को ( अर्थात उन समस्त जिन्नों और मनुष्यों को, जो शैतान के आधीन हैं )—दोज़ख़ में औंधा मुंह करके डाल दिया जायगा । ( और फिर ) वह ( पथ—भ्रष्ट लोग ) दोज़ख़ में ( परस्पर ) झगड़ते हुए ( अपने पूज्यों से ) कहेंगे कि खुदा की शपथ ! हम तो (उस समय ) एक स्पष्ट भूल पर थे-जबकि हम तुमको संसार के पालन कर्त्ता के बराबर ( ख़्याल ) करते थे ॥

और ( वास्तव में तो ) हमको ( प्राचीन ) अपराधियों के अतिरिक्त किसी ने पथ-भ्रष्ट नहीं किया-( अर्थात हमको तो हमारे अगले पूर्वजों ने ही नष्ट किया । न वह मूर्ति-पूजन करते और न हम उनकी देखा-देखी इस शिर्क के रोग में फँसते अतः ( आज ) न कोई हमारा सिफ़ारशी है और न कोई प्रिय मित्र ( कि हमारे कुछ काम आवे ) । अतः क्या अच्छा होता ( कि ) एक बार फिर ( हमको संसार में ) जाना मिल जाय, तो हम ( सच्चे ) ईमानदार हो जायँ । निस्सन्देह इस ( घटना ) में भी ( बहुत बड़ी ) शिक्षा है । और ( यह घटना भी इस योग्य है कि उससे काफ़िर तथा मुश्रिक कुफ़्र शिर्क की बुराई को अच्छी तरह समझ सकें । परन्तु ऐसे २ शिक्षा-पूर्ण वृतान्त सुनकर भी ) इन ( काफ़िरों ) में के अधिक ( लोग ) ईमान नहीं लाते और ( हे रसूल ! इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि तुम्हारा पालन कर्त्ता महान ( शक्ति वाला है कि उसने नमरूद तथा फ़िऔन जैसे उद्दण्डों को पृथ्वी पर से नष्ट कर दिया । और बड़ा ) दयालु ( तथा कृपालु भी ) है ( कि मुश्रिकों तथा काफ़िरों को कुफ़्र शिर्क में लिप्त देखता है और अज़ाब देने में जल्दी नहीं करता । काफ़िरों की तरह ) नूह की जाति ने ( भी हमारे ) रसूलों को झुठलाया ( था )—जबकि उनके ( सजातीय ) भाई नूह ने उनसे कहा था कि ( भाइयो ! तुम्हें मूर्त्ति-पूजा करते समय खुदा से डर नहीं लगता ॥

الا تتقون ۝ اني لكم رسول امين ۝ فاتقوا الله
واطيعون ۝ وما اسئلكم عليه من اجر ان
اجري الا على رب العلمين ۝ فاتقوا الله
واطيعون ۝ قالوا انؤمن لك واتبعك
الارذلون ۝ قال وما علمي بما كانوا يعملون
ان حسابهم الا على ربي لو تشعرون ۝ و
ما انا بطارد المؤمنين ۝ ان انا الا نذير
مبين ۝ قالوا لئن لم تنته ينوح لتكونن
من المرجومين ۝ قال رب ان قومي كذبون
فافتح بيني وبينهم فتحا ونجني ومن
معي من المؤمنين ۝ فانجينه ومن معه
في الفلك المشحون ۝ ثم اغرقنا بعد الباقين
ان في ذلك لاية ۖ وما كان اكثرهم مؤمنين

क्या तुम ( लोग ख़ुदा से ) नहीं डरते ० मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं ० तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ० और मैं इस ( समझाने ) पर तुमसे कुछ उज्रत तो माँगता नहीं, मेरी उज्रत तो बस पर्वर्दिगार-आलम पर है ० तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ० वह लगे कहने–क्या हम तुम्हारी बात को तस्लीम करलें और ( हम देखते हैं कि ) अदना दर्जे के लोग ( मज़दूर वग़ैरह मारे लालच के ) तुम्हारे पीछे हो लिये हैं ० ( नूह ने ) कहा कि जो (पेशा) यह लोग करते रहे हों, मुझको उसके दर्याफ़्त करने से क्या मतलब ० ( रहा लालच, तो ) इन ( के किर्दार ) का हिसाब तो बस मेरे पर्वर्दिगार का काम है ( कि वही इनकी नीयत से वाक़िफ़ है। ऐ ) काश ! तुमको ( इतनी ) समझ हो ० और मैं मुसल्मानों को (अपने यहाँ से) धक्के देने वाला हूं नहीं ० मैं तो ( लोगों को ) साफ़ तौर पर ( अज़ाब—ख़ुदा से ) डराने वाला हूं और बस ० वह बोले–नूह ! अगर तुम ( अपनी हर्कत से ) बाज़ न आओगे, तो ज़रूर संगसार कर दिये जावोगे ० ( आख़िरकार नूह ने ) दुआ की—कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरी क़ौम ने मुझको झुटलाया ० तो ( अब ) मुझमें और इन लोगों में एक क़तई—फ़ैसला करदे ( यानी इन पर अज़ाब नाज़िल कर ! ) और मुझको और ईमान वाले लोग–जो मेरे साथ हैं, उनको बचा ले ० चुनाँचे हमने नूह और उन लोगों को—जो ( खचाखच ) भरी हुई किशती में उनके साथ थे–( अज़ाब–तूफ़ान से ) बचा लिया ० फिर इसके बाद हमने बाक़ी लोगों को ग़र्क़ कर दिया ० बेशक इस ( वाक़ये ) में ( भी ) अलबत्ता ( एक ) इब्रत है और नूह की उम्मत के अक्सर लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं ०--

---

( और कहा था कि ) निस्सन्देह मैं एक अमानतदार रसूल हूं ( और ) तुम्हारे ( समझाने ही के ) लिये ( तुम्हारे पास भेजा गया हूं )। अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरे कहे पर चलो। और मैं ( अपनी ) इस ( सेवा के बदले ) पर किसी पुरस्कार का तुमसे इच्छुक नहीं हूं। मेरा पुरस्कार तो बस संसार के पालनहारे ही पर है। अतः तुम अल्लाह ( के अज़ाब ) से डरो और मेरे कहने पर चलो। ( यह सुनकर उनकी जाति के लोग ) बोले ( हे नूह ! ) क्या हम तुम पर ईमान ले आयें और ( विशेषतः ऐसी दशा में कि हम देख रहे हैं कि कुछ ) नीच लोग ( किसी सांसारिक लोभ से ) तुम्हारे आधीन हैं–( कोई प्रतिष्ठित पुरुष तुम्हारी ओर ध्यान तक नहीं देता ) ॥

नूह ने कहा ( कि इसमें सन्देह नहीं कि मेरे कहे पर चलने वाले कुछ ही लोग हैं ) और ( वह धनवान भी नहीं हैं, परन्तु ) मुझे ( इसकी ) क्या ख़बर, कि वह क्या ( काम ) करते हैं ( और मुझे इसकी क्या आवश्यकता कि मेरे आधीन बड़े लोग ही हों। मैं किसी से कुछ मंजूरी तो माँगता ही नहीं । रहा उनका लालची होना, तो ) उन ( की नीयतों की खोट और नीयतों के सच्चा होने ) का हिसाब तो बस मेरे पालन कर्त्ता ही के ज़िम्मे है। ( मुझे इससे कुछ सम्बन्ध नहीं। जैसी जिसकी नीयत होगी, वैसा उसको ख़ुदा की ओर से फल मिल जायगा। मेरी बात बिलकुल स्पष्ट और सीधी है )–क्या अच्छा होता ! यदि तुम ( उसे ) समझते। और मैं ईमानदार लोगों को ( अपने द्वार से ) धुतकारने वाला नहीं हूं–( चाहे वह सम्मानित—पुरुष हों वा अपमानित )। मैं तो बस ( कुकर्मियों को ) खुल्लम खुल्ला ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डराने वाला हूं । ( इस पर ) वह लोग बोले—नूह ! यदि तुम ( अपनी इन बातों से ) न मानोगे, तो तुम अवश्य पाषाण द्वारा मार डाले जाओगे ॥

( संक्षिप्त यह कि जब ) नूह ( उनको समझाते २ थक गये, तो उन्हों ) ने ( अत्यन्त नम्रता-पूर्वक ) कहा कि हे मेरे पालन कर्त्ता ! ( तू देख रहा है कि ) मेरी जाति ने मुझे ( किस २ तरह ) झुठलाया। सो ( अब मैं अपनी जाति से बिलकुल निराश हो गया हूं। अतः अब तू ) मेरे और उन लोगों के बीच ( एक न्याय-युक्त ) निर्णय करदे–( अर्थात् उन पर अपना अज़ाब उतार ! ) और मुझको और जो ईमानदार लोग मेरे साथ हैं, उन्हें ( उससे ) मुक्ति दे। अतः हमने ( अपना अज़ाब अर्थात् पानी का तूफ़ान भेजा और ) नूह को और जो ईमानदार लोग भरी हुई नाव में उनके साथ थे–( उस अज़ाब से ) बचा लिया । ( और ) उन ( को मुक्ति देनें ) के पश्चात् फिर हमने शेष ( बचे हुये ) लोगों को डुबो दिया। निस्सन्देह इस ( घटना ) में भी ( बुद्धिमानों के लिये बड़ी ) शिक्षा है। और ( काफ़िरों तथा मुश्रिकों के लिये अवसर है कि असत्य-पूजकों का परिणाम देख कर सीधा मार्ग ग्रहण करलें, परन्तु इस पर भी ) उनमें के बहुत से लोग ईमान नहीं लाते ॥

और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारा पर्वर्दिगार अलबत्ता वही ज़बर्दस्त ( और ) रहम वाला है ० ( इसी तरह क़ौम ) आद ने पैग़म्बरों को झुठलाया ० कि उनके भाई हूद ने उनसे कहा—क्या तुम ( ख़ुदा से ) नहीं डरते० मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं ० तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ० और मैं इस ( समझाने ) पर तुमसे कुछ उजरत तो नहीं मांगता। मेरी उजरत तो बस पर्वर्दिगार-आलम पर है ० क्या तुम हर ऊंची जगह पर बेज़रूरत यादगारें बनाते ० और ( बड़ी सनअत के ) महल तामीर करते हो। गोया तुम ( दुनिया में ) हमेशा रहोगे ० और जब ( किसी पर ) हाथ डालते हो-( तो उसको ) बड़ी सख़्ती से पकड़ते हो ० तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ० और उस ( के ग़ज़ब ) से डरो, जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से इम्दाद की, जो तुमको ( ख़ूब ) मालूम हैं ० ( यानी ) चारपायों और बेटों ० और बाग़ात और चश्मों से तुम्हारी इम्दाद की ० मुझ को ( तुम्हारी बद-किर्दारी की वजह से ) तुम्हारी निस्बत एक रोज़-सख़्त के अज़ाब का ( बड़ा ) अन्देशा है ० वह बोले तुम हमको नसीहत करो या न करो—हमको ( तो सब ) बराबर है ० यह ( अज़ाब का डरावा-जो तुम हमको देते हो )—बस अगले लोगों की एक ( मामूली ) आदत है ० और हम पर कोई आफ़त नहीं आने की ० ग़रज़ क़ौम-आद ने हूद को झुठलाया, तो हमने उनको हलाक कर मारा—

७

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ كَذَّبَتْ عَادُ ۣ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝
اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝
وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا
عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً
تَعْبَثُوْنَ ۝ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۝
وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۝
اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۝ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝
اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ قَالُوْا
سَوَاۗءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ
الْوٰعِظِيْنَ ۝ اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

और ( हे रसूल ! इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि तुम्हारा पालन कर्त्ता ( बड़ी ) ज़बर्दस्त ( शक्ति वाला है कि उस नूह की जाति के उद्दण्डों को पानी में डुबो दिया और ) दयालु ( तथा कृपालु भी ) है ( कि नूह और उन पर ईम लाने वालों का बाल भी बेका न होने दिया । और नूह की जाति की तरह ) आद ( की जाति ) ने भी ( हमारे ) रस को झुठलाया था । ( उनका भी वह समय विशेषतः वर्णन करने योग्य है ) जबकि उनके ( सजातीय ) भाई हूद ने उनसे था कि ( भाइयो ! ) क्या तुमको ( ख़ुदा के अज़ाब से ) भय नहीं लगता—( जो तुम निसंकोच होकर उसकी पूजा दूसरे को सम्मिलित करते हो । और उन्हें बताया था कि ) निस्सन्देह मैं एक अमानतदार रसूल हूं—( तुमको समझ के लिये ख़ुदा की ओर से तुम्हारे पास भेजा गया हूं )। अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो । और इस ( सेवा के बदले ) पर तुमसे किसी प्रकार के पुरस्कार का इच्छुक नहीं हूं। मेरा पुरस्कार तो बस संसार के पा कर्त्ता के ज़िम्मे है ॥

( इसके पश्चात हूद ने अपनी जाति से कहा—भाइयो ! ) भला तुम ( जो ) प्रत्येक ऊंचे स्थान ( अर्थात पर्वतों इत्या दि ) पर ( नाना प्रकार की ) स्मारकें व्यर्थ बनाते ( फिरते ) हो और ( बड़े २ मज़बूत ) महल बनाते ( रहते ) हो—( तो इससे लाभ ? एक दिन तुम भी नष्ट हो जाओगे और यह तुम्हारी कारीगरियां भी। किन्तु नहीं ) तुम कदाचित सर्वदा ( संसार ही रहोगे-( जब ही तो अपने रहने के लिये ऐसे २ बड़े दृढ़ महल बनाते हो ) । और जब ( किसी पर ) आक्रमण करते हो, बड़े कड़े होकर आक्रमण करते हो-( न विपक्षी की पीड़ा का उस समय तुमको ख़्याल आता है और न अपने परि की कुछ चिन्ता होती है ) । तो ( भाइयो ! ) अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो ( और इन अनुचित बातों को छोड़ और उस ( ख़ुदा के अज़ाब ) से डरो, जिसने तुम्हारी उन ( उन ) वस्तुओं से सहायता की है, जिनसे तुम (भली भ अभिज्ञ हो । ( देखो ! ) उसने पशुओं तथा बेटों और ( हरे भरे ) बाग़ों और ( ठंडे मीठे ) सोतों से तुम्हारी सहायता है। ( तुम्हारे इन कर्मों को देख कर ) मुझे तुम पर एक दिन कठिन अज़ाब ( के उतरने ) का ( बहुत बड़ा ) भय है ॥

( यह सुनकर ) उन्होंने कहा ( हे हूद ! ) तुम ( हमको ) चाहे नसीहत करो या न करो, हमारे लिये ( सब ) बर है। यह तो बस अगले लोगों की ( एक पुरानी ) आदत है—( उसी का अनुगमन आज तुम कर रहे हो )। और ( यह अज़ाब धमकी भी हमारे लिये व्यर्थ है । हमें विश्वास है कि ) हमें ( किसी प्रकार का ) अज़ाब नहीं होगा । सो उन्होंने हूद ( प्रत्येक बात में ) झुठलाया, अतः हमने उनको नष्ट कर दिया—

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ كَذَّبَتْ
ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ
صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ
مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ
أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا آمِنِينَ فِي جَنَّاتٍ
وَعُيُونٍ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ
وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ فَاتَّقُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُونِ وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ
الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ
مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ

ع

इस ( वाक़ये ) में ( भी ) एक (बड़ी) इब्रत है और हूद की क़ौम में अक्सर ईमान लाने वाले थे भी नहीं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारा पर्वर्दिगार अलबत्ता वही ज़बरदस्त (और ) रहम वाला है ० ( इसी तरह क़ौम ) समूद ने ( भी ) पैग़म्बरों को झुटलाया ० कि उनके भाई सालेह ने उनसे कहा—क्या तुम ( ख़ुदा से ) नहीं डरते ० मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं ० तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो ० और मैं इस ( समझाने ) पर तुमसे कुछ उजरत तो माँगता नहीं, मेरी उजरत तो बस पर्वर्दिगार-आलम पर है ० क्या जो चीज़ें यहां ( दुनिया में ) हैं ० ( यानी ) बाग़ात और चशमे ० और खेतियां और खजूरें, जिनकी गेलें ( मारे बोझ के ) टूटी पड़ती हैं, तुम इन्हीं में बे खटके ( हमेशा के लिये ) छोड़ दिये जावोगे ० और ( इसी ख़याल से ) ख़ुश हो हो कर पहाड़ों से तराश तराश कर घर बनाते हो ० तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ० और ( बन्दगी की हद से ) बढ़ जाने वालों के कहे में न आ जाना ० जो मुल्क में फ़साद डालते हैं और ( ख़राबियों की ) इस्लाह नहीं करते ० वह बोले-तुम पर तो बस किसी ने जादू कर दिया है ० तुम भी हमही जैसे आदमी हो और बस । पस अगर सच्चे हो, तो कोई मोजिज़ा ला दिखावो ०—

निस्सन्देह इस ( घटना ) में भी ( समझदार मनुष्य के लिये बड़ी ) शिक्षा ( वर्त्तमान ) है और ( इस पर भी ) इनमें के बहुत से ( लोग ) ईमान नहीं लाते। और हे रसूल! ( इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि तुम्हारा पालन कर्त्ता ( ऐसी ) ज़बर्दस्त ( शक्ति वाला भी है कि जिसको अज़ाब का अधिकारी समझता है, उस पर अज़ाब उतार देता है और दयालु तथा ) कृपालु ( भी ) है ( कि अज़ाब के योग्य होते हुए भी दंड देने में शीघ्रता नहीं करता ) ॥

( और आद की जाति की तरह ) समूद की जाति ने भी ( हमारे ) रसूलों को झुठलाया था—जबकि उनके ( सजातीय ) भाई सालेह ने ( उन्हें कुफ़ शिर्क से रोका था और ) कहा था ( कि भाइयो ! ) क्या तुम अल्लाह ( के अज़ाब ) से ( बिल्कुल ही ) नहीं डरते । ( और उन्हें बताया था कि ) निस्सन्देह मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूं । अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो—( तुम्हारा लोक परलोक का लाभ इसी में है ) । और ( देखो ! ) मैं ( अपने ) इस ( कर्तव्य-पालन ) पर तुमसे किसी प्रकार के पुरस्कार का इच्छुक नहीं हूं । मेरा पुरस्कार ( और मेरा प्रतिफल ) तो बस जगत के पालन कर्त्ता के ज़िम्मे है । ( तुम पर उसका कुछ बोझ नहीं है ) । ( भाइयो ! क्या तुमको मरना नहीं है )—क्या तुमको ( सर्वदा के लिये ) उन ही वस्तुओं में अमन ( चैन ) से रहने दिया जायगा, जो यहां ( अर्थात संसार में तुम्हारे लिये उपलब्ध ) हैं । अर्थात ( उन हरे भरे ) बाग़ों और ( उन ठंडे मीठे ) सोतों और ( उन भरे पुरे ) खेतों और ( उन फलदार ) खजूरों में कि जिन ( के वृक्षों ) का ( हर एक ) गुच्छा ( खजूरों की अधिकता से ) टूटा पड़ता है ॥

और ( उसी भुलावे में ) ख़ुशी-ख़ुशी ( ऊँचे २ ) पहाड़ों को काट कर ( बड़े २ मज़बूत ) मकान ( अपने रहने के लिये ) बनाते हो, तो ( भाइयो ! यह तुम्हारी व्यर्थ की कल्पना है । तुम इससे हट जाओ और ) अल्लाह ( के अज़ाब ) से डरो और मेरा कहना मानो-( तुम्हारा लोक परलोक का लाभ इसी में है ) । और उन सीमा से बढ़ जाने वालों का कहना ( कदापि ) न मानो, जो ( अपनी बेईमानी और असत्य पूजा का ) झगड़ा ( ख़ुदा की सारी ) पृथ्वी में फैलाते ( फिरते ) हैं और ( किसी का ) सुधार नहीं करते। वह लोग बोले-( सालेह ! तुम्हारी बहकी २ बातों से पता चलता है कि ) तुम तो बस जादू किये हुये लोगों में से हो ( कि जिनका न दिल ठिकाने, न बुद्धि ठीक। यही कारण है कि तुम नबी होने का दावा कर रहे हो-यद्यपि ) तुम तो बस हमारी तरह एक मनुष्य हो। ( अच्छा ! ) यदि ( मान लें कि ) तुम ( अपने दावे में ) सच्चे हो, तो कोई चमत्कार ( तो हमारे सामने ) लाओ ॥

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ
مَّعْلُوْمٍ ۝ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ
يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ۝
فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا
كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ۝
اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ
اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَآ اَسْـَٔـلُكُمْ
عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ۭ بَلْ
اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ۝ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ
لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ۝ قَالَ اِنِّىْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ۝

(सालेह ने) कहा–यह ऊंटनी (मोजिज़ा) है। पानी पीने की (एक दिन की) बारी इसकी और एक रोज़-मुक़र्रर के पीने की बारी तुम्हारी ० और इसको किसी तरह का गज़न्द न पहुंचाना, वर्ना एक रोज़-सख़्त का अज़ाब तुमको आ लेगा ० इस पर (भी) लोगों ने उसकी कूचें काट डालीं। फिर (बहुत ही) पशेमान हुये–(मगर उस वक़्त की पशेमानी बेसूद थी) ० आख़िरकार उनको अज़ाब ने आ लिया–इस (वाक़ये) में (भी एक बड़ी) इब्रत है और सालेह की क़ौम के अक्सर लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं ० और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा पर्वर्दिगार अल्बत्ता वही ज़बरदस्त (और) रहम वाला है ० इसी तरह क़ौम लूत ने (भी) पैग़म्बरों को झुटलाया ० कि उनके भाई लूत ने उनसे कहा–क्या तुम (ख़ुदा से) नहीं डरते ० मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं ० तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो ० और मैं इस (समझाने) पर तुमसे कुछ उजरत तो माँगता नहीं, मेरी उजरत तो बस पर्वर्दिगार–आलम पर है ० क्या तुम दुनिया के लोगों में से लड़कों पर गिरे पड़ते ० और तुम्हारे पर्वर्दिगार ने जो तुम्हारे लिये बीबियाँ पैदा कर दी हैं, उनसे कनारा-कशी करते हो। बात यह है कि तुम ऐसे लोग हो, जो हद्द (फ़ितरत) से बाहर निकल गये हो ० वह बोले–लूत! अगर तुम (अपनी इन बातों से) बाज़ न आवोगे, तो बे—तअम्मुल तुमको निकाल बाहर कर दिया जायगा ० (लूत ने) कहा–मैं तो तुम्हारे (इस) काम से (सख़्त) बेज़ार हूं ० —

सालेह ने कहा (मेरे नबी होने का प्रमाण) यह एक ऊंटनी है। (तुम्हारा कर्तव्य है कि इसका मान सम्मान कर और जिस कुवें का पानी तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के काम में आता है, उसमें से एक दिन) पानी पीने की बारी इ (ऊंटनी) की है और एक नियत दिन की पानी पीने की बारी तुम्हारी (और तुम्हारे जानवरों की। तुम इस नियम पर चलो और तकलीफ़ (पहुंचाने के इरादे से) इसे छूना भी मत कि (कहीं) तुमको एक बड़े दिन का अज़ाब आ पकड़े। त (इसके अतिरिक्त कि वह लोग सालेह की शिक्षा पर चलते)–उन्होंने उसकी (पीछे से) कूचें काट डालीं (और जब उ पर ख़ुदा का अज़ाब आता हुआ दीख पड़ा, तो) फिर (अपने हृदय में बड़े) लज्जित हुए (और खेद करने लगे, कि उस समय का पश्चाताप बिल्कुल निरर्थक सिद्ध हुआ और) अन्त में उनको (हमारे) अज़ाब ने पकड़ (ही) लिया॥

निस्सन्देह इस (घटना) में भी (आंखों वाले के लिये बड़ी) शिक्षा (तथा दीक्षा वर्त्तमान) है। और (यह घट भी इस योग्य है कि मुश्रिक तथा काफ़िर इसको सुन कर शिक्षा ग्रहण करें, परन्तु इस पर भी) इनमें के बहुत से (लोग ईमान नहीं लाते (और अपने कुफ़्र शिर्क पर अड़े रहते हैं)। और (हे रसूल! इसमें) सन्देह नहीं कि तुम्हारा पाल कर्त्ता (बड़ी) ज़बरदस्त (शक्ति वाला और बड़ा) दयालु (तथा कृपालु) है। (और आद तथा समूद की जाति की तरह लूत की जाति (की भी यही दशा थी—उस) ने भी (हमारे) रसूलों को झुठलाया था। (उस जाति के लोगों का भी व समय विशेषतः वर्णन करने योग्य है)–जबकि उनके (सजातीय) भाई लूत ने (उन्हें कुफ़्र शिर्क से रोका था और) कहा (भाइयो! तुम जो ऐसी २ बुरी बातें करते हो, तो) क्या तुम अल्लाह (के अज़ाब) से (बिल्कुल ही) नहीं डरते॥

(और उन्हें बताया था कि) निस्सन्देह मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूं–(अर्थात् ख़ुदा की आज्ञाएं तुम त ज्यों की त्यों पहुंचा देता हूं)। अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो–(तुम्हारा लोक परलोक का लाभ इसी है)। और (देखो!) मैं (अपने) इस (कर्तव्य के पालन करने) पर तुमसे किसी प्रकार के पुरस्कार का इच्छुक नहीं हूं मेरा पुरस्कार (और मेरा प्रतिफल) तो बस संसार के पालन कर्त्ता ही के ज़िम्मे है–(तुम पर उसका कुछ भार नहीं है (भाइयो! मैं तुमसे पूछता हूं कि) क्या समस्त संसार के लोगों में से तुम (ही वह अज्ञान लोग हो कि) पुरुषों से स गम करते हो और तुम्हारे पालन कर्त्ता ने जो तुम्हारे लिये स्त्रियां पैदा की हैं, उनको छोड़ देते हो। (सत्य यह है तुम लोग बड़े मूर्ख हो)–बरन् तुम (अपनी उद्दण्डता में) सीमा से (आगे) बढ़ जाने वाले लोग हो। (इस पर) वह ल बोले–लूत! यदि तुम (अपनी बातों से) न हटोगे, तो हम अवश्य तुमको (अपनी बस्ती से) निकाल देंगे। उन्होंने उ दिया कि निस्सन्देह मैं तुम्हारे इस कुकर्म से (बहुत ही) अप्रसन्न हूं—(क्योंकि इसका परिणाम तुम्हारे हक़ में बहुत बुरा है

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ۝ فَنَجَّيْنٰهُ وَأَهْلَهُ
أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغٰبِرِينَ ۝ ثُمَّ
دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا
فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۝ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ
الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَ أَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ۝
إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ
أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ۝ وَمَا أَسْئَلُكُمْ
عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ
الْعٰلَمِينَ ۝ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ
الْمُخْسِرِينَ ۝ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝ وَ
لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ

(और साथ ही ख़ुदा से दुआ की कि) ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मुझको और मेरे घर वालों को इन (नापाक) कामों (के वबाल) से, जो यह लोग कर रहे हैं, नजात दे ० चुनांचे हमने लूत को और उनके घर वालों को-सबको नजात दी ० (मगर लूत की) बूढ़ी-औरत (कि वह) पीछे रहने वालों में (मिल कर मुब्तलाए-अज़ाब हुई) ० फिर हमने बाक़ी लोगों को हलाक कर मारा ० और उन पर पथराव बरसाया। सो (क्या ही) बुरा पथराव था, जो इन लोगों पर बर्सा, जिनको (हमारे अज़ाब से) डराया गया था (और उन्होंने नहीं माना) ० बेशक इस (वाक़ये) में (भी एक बड़ी) इब्रत है और क़ौम-लूत के अक्सर लोग तो ईमान लाने वाले थे भी नहीं ० और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा पर्वर्दिगार अलबत्ता वही ज़बरदस्त (और) रहम वाला है ० (इसी तरह) बन के रहने वालों ने (भी) पैग़म्बरों को झुटलाया ० कि शुऐब ने उनसे कहा-क्या तुम (ख़ुदा से) नहीं डरते ० मैं तुम्हारा अमनतदार पैग़म्बर हूं ० तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ० और मैं इस (समझाने) पर तुमसे कुछ उजरत तो मांगता नहीं, मेरी उजरत तो बस पर्वर्दिगार-आलम पर है ० (कोई चीज़ लोगों को पैमाने से नाप कर दिया करो, तो) पैमाना भर कर दिया करो और (लोगों को) नुक़सान पहुंचाने वाले न बनो ० और (तोला करो, तो) तराज़ू (की डंडी) सीधी रख कर तोला करो ० और लोगों को उनकी चीज़ें (जो ख़रीदें)—कमी से न दिया करो और मुल्क में फ़साद न फैलाते फिरो ० और उस (ख़ुदा) से डरते रहो, जिसने तुमको-

---

(और आने वाले अज़ाब का ख़्याल करके दुआ मांगी कि) हे मेरे पालन कर्त्ता! तू मुझको और मेरे घर वालों को-जो काम यह लोग कर रहे हैं, उस (के अज़ाब) से बचाइयो। अतः हमने उन्हें और उस (अत्याचारिणी) बुढ़िया के अतिरिक्त-जो पीछे रह जाने वाले (अपराधी) लोगों में (मिल गई) थी, उनके समस्त घर वालों को मुक्ति प्रदान की थी। (और अज़ाब उतरने के पूर्व उनसे कह दिया था कि इस बस्ती को छोड़ दो। अतः जब वह इस बस्ती से निकल गये, तो) फिर हमने (समस्त) बचे हुये (पापी) लोगों को नष्ट कर दिया। और उन पर (पत्थरों का) मेंह वर्षाया। तो वह कितना बुरा मेंह था, जो उन लोगों पर वर्षाया, जिन्हें (अज़ाब के उतरने से) डराया गया था। निस्सन्देह इस (घटना) में भी (बुद्धिमान के लिये बड़ी) शिक्षा (वर्तमान) है। और (इस पर भी) उनमें के बहुत से (लोग) ईमान नहीं लाते। और (हे रसूल! इसमें कुछ) सन्देह नहीं कि तुम्हारा पालन कर्त्ता (बड़ी) ज़बर्दस्त (शक्ति वाला और बड़ा) दयालु (तथा कृपालु) है। (और समूद तथा लूत की जाति की तरह) बन के रहने वालों ने भी (हमारे) रसूलों को झुठलाया था, जबकि उनसे (हमारे रसूल) शुऐब ने कहा था कि क्या तुम अल्लाह (के अज़ाब) से नहीं डरते-(जो तुम ऐसे निडर होकर बेईमानी तथा उद्दण्डता करते हो)॥

(और उन्हें बताया था कि) निस्सन्देह मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूं। अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो और (देखो!) मैं (अपने) इस (कर्त्तव्य—पालन) पर तुमसे किसी प्रकार के पुरस्कार का इच्छुक नहीं हूं, मेरा पुरस्कार तो बस संसार के पालन कर्त्ता के ज़िम्मे है—(हां! यदि मैं तुमसे किसी पुरस्कार का इच्छुक हूं, तो वह केवल यह है कि तुम सत्य पर आ जाओ। और ऐसे शुद्ध-हृदय और नेक बन जाओ कि अपने प्रत्येक मामले में ईमानदारी और न्याय को बरतो। यहां तक कि यदि तुमको अपने लेन—देन में नापने और तोलने की भी अवश्यकता पड़े, तो) नाप और तोल पूरी २ करो और (लोगों को) हानि पहुंचाने वालों में से न बनो और (जब तोलो, तो ऐसी ठीक और) सीधी तराज़ू से तोलो-(जिसमें रत्ती भर भी पासंग न हो)। और (क्रय विक्रय के समय बेईमानी कभी भी न करो और) लोगों को उनकी वस्तुएँ कम न दो और (ख़ुदा की) पृथ्वी में झगड़ा फैलाते (और लोगों की खेती बाड़ी को उजाड़ते) न फिरो और उस (शक्ति वाले ख़ुदा) से (सर्वदा) डरते रहो, जिसने तुमको और (तुमसे) पहिले लोगों को पैदा किया॥

وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ۝ قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ
وَمَا أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِن نَّظُنُّكَ لَمِنَ
الْكَاذِبِينَ ۝ فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِن
كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ
إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ
الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ وَإِنَّهُ لَتَنزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ
مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ۝ وَإِنَّهُ
لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ۝ أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن
يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ
بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۝ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِ

مُؤْمِنِينَ

और अगली ख़ल्क़त को पैदा किया ० वह बोले तुम पर तो बस किसी ने जादू कर दिया है ० और तुम तो हमारी तरह के बस एक बशर हो और हम तुमको झूटा ही समझते हैं ० और सच्चे हो, तो हम पर आस्मान से ढेम बर्साओ ० ( शुऐब ने ) कहा, जो कुछ तुम कर रहे हो, मेरा पर्वर्दिगार उसको ख़ूब जानता है और वह तुमको ज़रूर सज़ा देकर रहेगा ० ग़रज़ उन लोगों ने शुऐब को झुटलाया, तो उनको वाक़ए-सायबान के अज़ाब ने आ लिया। इसमें शक नहीं कि वाक़ये-सायबान भी बड़े ( ही सख़्त ) दिन का अज़ाब था ० बेशक इस ( वाक़ये ) में ( भी ) अलबत्ता ( बड़ी ) इब्रत है और शुऐब की उम्मत के अक्सर लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारा पर्वर्दिगार अलबत्ता वही ज़बरदस्त ( और ) रहम वाला है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) कुछ शक नहीं कि यह ( क़ुर्आन ) पर्वर्दिगार-आलम का उतारा हुआ है ० इसको जिब्रील-अमीन ने हमारे हुक्म से सलीस-अरबी-ज़बान में तुम्हारे दिल पर इल्क़ा किया है, ताकि और पैग़म्बरों की तरह तुम ( भी लोगों को अज़ाब-ख़ुदा से ) डरावो ० और इसमें शक नहीं कि यह ( यानी इसकी पेशीन-गोई ) अगले पैग़म्बरों की किताबों में ( मौजूद ) है ० क्या लोगों के लिये यह ( इसकी सदाक़त की ) दलील नहीं है कि बनी इस्राईल के आलिम इस ( की पेशीन गोई ) से वाक़िफ़ हैं ० और अगर हम क़ुर्आन को किसी ऊपरी ज़बान वाले पर ( उसी की ज़बान में ) उतारते ० और वह उसे इन ( अहले—अरब ) को पढ़ कर सुनाता, तो यह ( लोग कभी भी ) उस पर ईमान न लाते ०—

( इस पर ) वह लोग बोले-( शुऐब ! तुम्हारी बहकी २ बातों से ज्ञात होता है कि ) तुम तो बस जादू के मारे हु हो। और ( जादू के प्रभाव ने तुम्हारी बुद्धि ख़राब कर रक्खी है। यही कारण है कि तुम नबी होने का दावा करते हो-यद्यपि तुम हमारी ही तरह ( के ) एक ( साधारण ) मनुष्य हो। ( तुम कुछ ही कहो ) और ( कितने ही बड़े बनो )—हम तो तुमको अवश झूठे ही लोगों में से समझेंगे-( वा जादू का मारा हुआ ख़याल करेंगे )। ( और ) यदि ( हम मान लें कि ) तुम ( अपने दावे में सच्चे हो, तो ( हमारे ईमान न लाने के दंड में ) हम पर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दो। शुऐब ने कहा ( अवज्ञा-कारियो घबराओ नहीं )—जो कुछ तुम कर रहे हो, मेरे पालन कर्त्ता को उसकी पूरी ख़बर है॥

सो ( जब ) शुऐब को उन्होंने ( हर प्रकार ) झुठलाया, तो ( हमने उन पर अज़ाब उतरने आज्ञा देदी और ) छाया करने वाले दिन के अज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा। निस्सन्देह यह ( अज़ाब ) बड़े ( कठिन दिन का अज़ाब था। निस्सन्देह इस ( घटना ) में भी ( समझदार मनुष्य के लिये बहुत बड़ी नसीहत तथा ) शिक्षा ( पाई जात है और ( इस पर भी ) इनमें के बहुत से ( लोग ) ईमान नहीं लाते। और ( इसमें ) सन्देह नहीं कि ( हे रसूल ! ) तुम्हा पालन कर्त्ता ( बड़ी ) ज़बर्दस्त ( शक्ति वाला भी है कि जब दंड देने पर आता है, तो बड़ी से बड़ी उद्दण्ड जाति को एक पल नष्ट-भ्रष्ट कर डालता है और ) करुणाकारी ( भी ) है ( कि वर्तमान काफ़िरों तथा मुश्रिकों को अज़ाब देने में जल्दी नहीं करता )

और ( हे रसूल ! ) यह ( मक्के के मुश्रिक चाहे इस क़ुर्आन को ख़ुदा का कलाम मानें वा न मानें, परन्तु ) सत्य है कि यह संसार के पालन कर्त्ता ( ही ) का उतारा हुआ है ( और ) रूहुल-अमीन ( अर्थात् जिब्रील ) तुम्हारे दिल ( अंकित करने के लिये हमारी आज्ञानुसार ) उसे अरबी की स्पष्ट ( और सरल ) भाषा में ( ऊंचे आकाश से ) लेकर उ है, जिससे कि ( यह तुम्हारे नबी तथा रसूल होने का समर्थन करे और अगले रसूलों की तरह ) तुम ( भी लोगों को ख़ुदा के अज़ाब से डराने वाले ( रसूल ) बन जाओ। और ( इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि यह ( क़ुर्आन ख़ुदा का कलाम है और इसका वर्ण अगलों ( अर्थात् अगले रसूलों ) की पुस्तकों में ( बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में वर्तमान ) है-(तो) क्या बनी इस्राईल के विद्वानों का इस (भ ष्य-वाणी ) से अभिज्ञ होना उन ( मक्के के काफ़िरों ) के लिये ( इस बात का प्रत्यक्ष ) प्रमाण नहीं है ? ( कि यह क़ुर्आन ख़ु का कलाम है )। और यदि हम इस ( क़ुर्आन ) को किसी अजमी ( अर्थात् अरब-देश के अतिरिक्त अन्य-देश-निवासी ) पर ( उतारते ( और ) फिर वह उनके सामने ( उनही की भाषा में ) इस ( क़ुर्आन ) को पढ़ता, तो यह लोग उस पर ( भी ) ईमान न ला

مُؤْمِنِينَ ۝ كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ
الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ
الْأَلِيمَ ۝ فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝
فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ۝ أَفَبِعَذَابِنَا
يَسْتَعْجِلُونَ ۝ أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ
ثُمَّ جَاءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ۝ مَا أَغْنَىٰ
عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا
مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ۝ ذِكْرَىٰ وَمَا
كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ۝ وَ
مَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝ إِنَّهُمْ عَنِ
السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ۝ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا
آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ۝ وَأَنذِرْ
عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ

इसी तरह ( इसरार व ) इनकार को हमने गुनहगारों के दिलों में जमा रक्खा है ० कि जब तक अज़ाब—दर्दनाक न देख लें, इस पर ईमान नहीं लायेंगे ० कि वह ( अज़ाब ) यकायक इनके सामने आ मौजूद हो और इनको ( उसके आने को मुतलक़ ) ख़बर न हो ० तो चिल्ला उट्ठें कि भला ( अब भी ) हमें कुछ मोहलत मिल सकती है ० क्या यह लोग हमारे अज़ाब के लिये जल्दी मचा रहे हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) ज़रा देखो तो सही—कि अगर हम चन्द बरस इनको ( दुनियावी ) फ़ायदे उठाने ( भी ) दें ० फिर जिस ( अज़ाब ) का इनसे वादा किया जाता है, वह इनके रूबरू आ मौजूद हो ० तो वह जो इन्होंने ( दुनियावी ) फ़ायदे उठा लिये—( अब इस हालत में ) इनके क्या काम आ सकते हैं ० और हमने किसी गांव को बे इसके हलाक नहीं किया कि आगाह करने को उनके पास डर सुनाने वाले ( पैग़म्बर ) आये ० ( और उन्होंने न माना ) और हम ज़ालिम नहीं हैं ० और इस ( कुर्आन ) को ( जैसा यह लोग ख़याल करते हैं )-शैतान लेकर नहीं उतरे ० और न यह काम उनके करने का है और न वह ( इसको ) कर सकते हैं ० ( बलिक ) वह तो ( वही—आस्मानी के ) सुनने से ( भी दूर ही ) दूर रक्खे गये हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम ख़ुदा के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारने लगना, वर्ना ( और मुश्रिकों की तरह ) तुम भी मुब्तलाए—अज़ाब हो जावोगे ० और (ख़ास कर) अपने क़रीब के रिश्तेदारों को (अज़ाब-ख़ुदा से ) डरावो ०—

---

इसी प्रकार उस ( इन्कार तथा उद्दण्डता ) को हमने इन पापियों के दिलों में बिठा दिया है ( कि अब ) यह इस ( कुर्आन ) पर ( कभी ) ईमान ( ही ) नहीं लावेंगे, जब तक ( किसी ) दुखदायी-अज़ाब को ( अपनी आँखों से ) न देख लें। सो वह ( अज़ाब ) अचानक उन पर आ जाय और उन्हें ( उसके आने की ) ख़बर ( तक ) न हो। फिर यह ( उसे देख कर बेचैन हो जायँ और ) कहने लगें कि क्या हमें ( कुछ ) ढील मिल सकती है-( ताकि हम प्रायश्चित देकर इस अज़ाब से मुक्ति प्राप्त कर सकें )-तो क्या यह लोग हमारे ( उसी ) अज़ाब के लिये शीघ्रता कर रहे हैं ( कि जिसको देख कर उनकी यह दशा होगी ? )—तो ( उसके लिये उन्हें शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि यह तो दिन प्रति दिन स्वयं उसके निकट ही होते जा रहे हैं। हे रसूल ! ) भला बताओ तो सही कि यदि हम ( अपनी कृपा से ) कुछ वर्ष उनको ( संसार का सुख तथा ) आराम (उठाने भी ) दें ( और ) फिर ( कुछ समय के बाद जब उनके कुकर्म अपनी सीमा को पहुंच जायं और ) जिस ( अज़ाब ) का उनसे वादा किया जा रहा है, वह ( अज़ाब ) उन पर आ-जाय, तो वह जो उन्होंने ( संसार का सुख ) आराम उठाया ( अज़ाब आने के पश्चात ) उनके किस काम आ सकता है ॥

और ( यह हमारी प्राचीन रीति है कि हम समस्त प्रमाण समाप्त किये बिना किसी को अज़ाब नहीं देते-जैसा कि प्राचीन-काल में भी ) कोई ऐसी बस्ती ( अज़ाब से ) हमने नष्ट नहीं की, जिस ( के रहने वालों ) को ( अज़ाब भेजने से पहिले ) डराने वाले ( नबी और रसूल ) नसीहत करने ( और उनका भला बुरा उन्हें समझाने ) के लिये ( हमारी ओर से ) न ( भेज दिये गये ) हों ( और भली भांति उनको समझाया बुझाया न गया हो ) ॥

और ( इस कुर्आन का एक २ शब्द अमानतदार जिब्रील के द्वारा ख़ुदा की ओर से उतारा गया है )। इसे शैतान लेकर नहीं उतरे और न यह ( श्रेष्ठ तथा महत्व-पूर्ण कार्य ) उनसे बन सकता है और न वह कर सकते हैं। निस्सन्देह उन्हें ( आकाश की बातें ) सुनने से बिल्कुल रोक दिया गया है। ( यदि मक्के के काफ़िर इस कुर्आन के सम्बन्ध में यह बुरे विचार करते हैं, तो बड़ी ग़लती करते हैं )। अतः ( हे मुहम्मद ! तुम उनकी बकवास की कुछ भी पर्वाह न करना और उनकी देखा-देखी ) अल्लाह के साथ किसी और पूज्य को ( अर्थात किसी मूर्ति इत्यादि को पूज्य समझ कर कदापि ) न पुकारना, अन्यथा तुम ( भी ) अज़ाब पाने वालों में से हो जाओगे। और ( अब ) तुम ( अपने प्रचार कर्तव्य को पूर्ण करो-विशेषतः ) अपने समीपी कुटुम्बियों को ( अल्लाह के अज़ाब से ) डराओ ( और उन्हें कुफ़्र शिर्क में फंसने से बचाओ ) और जो मुसलमान तुम्हारे आधीन हो गये, उनसे नम्रता ( तथा आदर ) के साथ मिलो ( चाहे वह तुम्हारे नातेदार हों अथवा न हों ) ॥

और जो मुसल्मान तुम्हारे पीछे हो लिये हैं, उनसे ब-तवाज़ो पेश आवो ० पस अगर लोग तुम्हारा कहना न मानें, तो (उनसे साफ़) कहदो कि मैं तुम्हारे अफ़आल से बरी ( युज़िम्मा ) हूं ० और ( ऐ पैग़म्बर! ख़ुदाए ) ज़बरदस्त मेहर्बान पर भरोसा रक्खो ० कि जब तुम ( नमाज़ में ) खड़े होते हो, वह तुम्हारे खड़े होने को ० और नमाज़ियों ( की जमाअत ) में तुम्हारी हरकात व सकनात को देखता है ० बेशक वही ( सबकी ) सुनता और ( सब कुछ ) जानता है ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से कहो कि ) मैं तुम्हें बताऊं, किस पर शैतान उतरा करते हैं ० ( हाँ तो ) उतरा करते हैं, हर भूटे बद-किर्दार पर ० कि शैतान सुनी-सुनाई बात ( उन पर ) इल्क़ा कर देते हैं और उनमें बहुतेरे ( तो निरे ) भूटे ही होते हैं ० और ( जैसा कि काफ़िर ख़याल करते हैं—पैग़म्बर शाइर भी नहीं, क्योंकि ) शाइर ( ख़ुद गुमराह होते हैं और गुमराही की तालीम करते हैं और ) उनकी पैरवी ( भी ) गुमराह ( ही ) करते हैं ० ऐ ( मुख़ातब ! ) क्या तूने इस बात पर नज़र नहीं की कि यह ( शाइर लोग ख़याली बातों के ) हर एक मैदान में सर-गर्दां फिरा करते हैं ० और ऐसी बातें कहा करते हैं, जो ख़ुद नहीं करते ० मगर ( हां ) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल भी किये और ( अपने अशआर में ) कसरत से ख़ुदा का ज़िक्र किया और ( किसी की हजो भी की, तो पहिले ख़ुद उन पर ज़ुल्म हो लिया है। इसके बाद उन्होंने वाजिबी ) बदला लिया-( तो ऐसी शाइरी का मुज़ायक़ा नहीं ) और जिन्होंने ( लोगों पर ) ज़ुल्म किये हैं—( मसलन नाहक़ किसी की हजो की है )--उनको ( मरने पर ) अन्क़रीब मालूम हो जाएगा कि कैसी जगह उनको लौट कर जाना है ०

## सूरत—नम्ल

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ९३ आयतें और ७ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ०–

لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ
اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ
الرَّحِيْمِ ۝ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۝ وَتَقَلُّبَكَ
فِي السّٰجِدِيْنَ ۝ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ هَلْ
اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ۝ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ
اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ۝
وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ
كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ۝ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ۝
اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ
كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ۗ وَسَيَعْلَمُ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝

سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

( और हर प्रकार समझाने बुझाने के पश्चात ) फिर ( भी ) यदि वह तुम्हारी अवज्ञा करें, तो तुम ( उनसे खुल्ल खुल्ला ) कहदो कि मैं तुम्हारे ( अशुभ ) कर्मों से ( बहुत ) घृणा करता हूं। और ( तुम उनसे कुछ भी न डरो और ) उस शि मान ( तथा ) कृपालु ( ख़ुदा ) पर भरोसा रक्खो, जो ( हर समय तुमको अपनी दृष्टि में रखता है। और ) जिस समय कि ( अपनी मीठी नींद को छोड़ कर तहज्जुद की नमाज़ के लिये ) उठते हो, उस समय भी तुमको देखता है और ( जिस समय तुम नमाज़ियों में सम्मिलित होकर रुकूअ तथा सज्दे करते हो, तो वह ) तुम्हारा ( उस समय का चलना ) फिरना भी देख ( रहता है )। निस्सन्देह वही ( सबकी प्रार्थना ) सुनता ( और सबकी दशा ) जानता है। ( और हे रसूल ! इन मुश्रिकों से क कि यह जो तुम कहते हो कि मुझ पर शैतान उतरते हैं, तो यह बिल्कुल ग़लत है। शैतान किसी नबी वा रसूल पर कभी न उतर सकते )। क्या मैं तुमको बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं ॥

( सुनो ! ) शैतान हर झूठे ( और बड़े ) पापी ( मनुष्य ) पर उतरते हैं कि ( जिसे ) वह ( कुछ ) सुनी—सुनाई ( अ कुछ कल्पित बातें ) सुनाते हैं और उन ( शैतानों ) में अधिकतर—( बरन् सब ही ) झूठे ( होते ) हैं ( और अपने जैसे झूठों ही पास उनका आना जाना रहता है )। और ( न मैं तुम्हारे ख़्याल के अनुसार कवि हूं—क्योंकि ) कवि लोग ( प्रायः अस विचारों को मानने वाले और कुछ पथ-भ्रष्ट से होते हैं )। उनका अनुगमन भी पथ-भ्रष्ट ही किया करते हैं। ( सो यदि मैं क होता, तो मेरे आज्ञाकारी पथ-भ्रष्ट होते, ऐसे नेक न होते ) ॥

( हे मनुष्य ! ) क्या तूने इस ( बात ) पर कभी विचार नहीं किया कि यह ( कवि लोग प्रायः ) हर ( ख़्याली ) जं में भटकते फिरते हैं और वह ( वह ) बातें कहते हैं, जिन्हें स्वयं किया नहीं करते। ( इस प्रकार के जितने कवि हैं, वह सब अ त्यवादी और पथ-भ्रष्ट हैं )—किन्तु ( हां ! उनमें से ) वह ( सच्चे ) लोग, जो ईमान ले आये और ( ईमान लाने के पश्चा उन्होंने कर्म भी अच्छे किये और ( अपनी कविता में ) ख़ुदा ( रसूल ) का वर्णन अधिकता से किया और ( दूसरे का अपम करने से सर्वदा बचते रहे। और यदि ) बदला लिया भी, तो अत्याचार—पीड़ित होने के पश्चात ( और किसी की बुराई कुछ कहा भी, तो उत्तर के स्वरूप—तो इसमें कुछ दोष नहीं )। और जिन्होंने ( लोगों पर ) अत्याचार किया ( और अपम करने वाली पद्य वा गद्य लिखकर किसी का अनादर किया )—तो उन्हें अभी ( अर्थात् मृत्यु के पश्चात ही ) पता चल जा कि किस स्थान पर उनको लौट कर जाना है ( और वहां अपमान; अनादर तथा अत्याचार का दण्ड क्या दिया जाता है )

## सूरत—नम्ल

मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ९३ आयतें और ७ रुकूअ हैं ॥

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ
هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ
الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ
الْاَخْسَرُوْنَ ۞ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ
لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۞ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ
اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۗ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ
بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۞ فَلَمَّا
جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِى النَّارِ وَ
مَنْ حَوْلَهَا ۗ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞
يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۙ وَاَلْقِ عَصَاكَ ۗ

ता सीन० यह ( सूरत ) कुर्आन ( यानी उस किताब की चन्द ) आयतें हैं, जो आम-फ़हम है ० ( और आम-फ़हम होने के अलावा ) ईमान वालों के लिये हिदायत और खुश-खबरी ( भी ) है ० जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और वह रोज़-आखिरत का भी यक़ीन रखते हैं ० जो लोग रोज़-आखिरत का यक़ीन नहीं रखते, हमने उनके आमाल उनको उम्दा कर दिखाये हैं, तो यह लोग भटके भटके फिरते हैं ० यही लोग हैं, जिनको बुरी तरह का अज़ाब होना है और यही लोग हैं, जो आखिरत में ( सबसे ) ज़ियादा नुक़सान में रहेंगे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुमको तो कुर्आन (खुदाए) दाना (और) बा-खबर की तरफ़ से इल्क़ा किया जाता है ० ( तो लोगों को यह वाक़िआ याद दिलावो )-जबकि मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मुझको आग ( सी ) दिखाई दी है, ज़रा ( ठहरो, तो ) मैं वहाँ से तुम्हारे पास ( रस्ते की ) कुछ खबर लाऊँ, या (हो सके, तो) एक सुलगता हुआ अङ्गारा तुम्हारे पास ले आऊं, ताकि तुम तापो ० फिर जब मूसा आग पास आये, तो उनको आवाज़ आई कि मुबारक है वह ( ज़ात )-जो ( इस नूरानी ) आग में ( जल्वा-फ़र्मा ) है और ( मुबारक हैं ) वह, जो इस ( आग ) के ईर्द-गिर्द हैं और अल्लाह रब्बुल् आलमीन् पाक (ज़ात) है ० मूसा ! यह तो हम अल्लाह हैं, ज़बर्दस्त हिक्मत वाले ० और (हाँ !) अपनी लाठी (नीचे) डालदो-

यह आयतें ( जो इस सूरत में लिखी हैं, एक पवित्र ) कुर्आन और एक स्पष्ट-पुस्तक की हैं-( जिसके विषय प्रत्येक की समझ में आने वाले और हृदय में उतर जाने वाले हैं ) और ( जो ) उन ईमानदारों के लिये शिक्षा ( सागर ) और ( पूर्ण-रूप से कृपा तथा ) मंगल-समाचार हैं, जो नमाज़ भी पढ़ते हैं और ज़कात भी देते हैं ( और नियम-पूर्वक उपासना भी करते हैं और दान भी करते हैं ) और वह परलोक पर भी विश्वास रखते हैं। निस्सन्देह ( यही वह लोग हैं, जो दोनों लोक में सौभाग्यवान रहेंगे और उसके अतिरिक्त ) वह लोग-जो परलोक ( के दिन ) पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके लिये उनके ( अशुभ ) कर्मों को सजा दिया है। तो वह ( बड़े धोखे में हैं और सत्य-मार्ग से दूर ही दूर ) भटकते फिरते हैं। इनही लोगों को ( अन्त में ) बुरा अज़ाब भुगतना है और यही लोग परलोक में ( सबसे ) अधिक टोटे में रहने वाले हैं । और ( हे रसूल ! यह लोग अपने दुर्भाग्य से चाहे इस कुर्आन को खुदा का कलाम न मानें, परन्तु इसमें कुछ ) सन्देह ही नहीं कि ( यह ) कुर्आन हिकमत वाले तथा ज्ञानवान ( खुदा ) की ओर से तुम्हें दिया जाता है ॥

( उनके सामने उस समय का वर्णन करो )--जबकि मूसा ने अपनी स्त्री से कहा था कि मुझे ( सामने वाले पर्वत पर एक ) आग ( सी भड़कती हुई ) दिखाई दी है-( कदाचित वहाँ बस्ती हो। सो तुम यहाँ ठहरो ! ) वा तो मैं वहाँ से ( मार्ग की ) कुछ ख़बर तुम्हारे पास लाऊंगा वा मैं तुम्हारे पास ( किसी लकड़ी में लगा कर ) एक आग का अंगारा लाऊंगा, जिससे कि तुम तापो। अतः जब मूसा आग के पास पहुंचे, तो ( तूर-पर्वत की ओर से ) उनको आवाज़ आई कि ( बड़ी ) बरकत वाला है ( वह खुदा ) जो उस अग्नि में ( प्रकाश का कारण ) है और ( भाग्यवान है ) वह ( खुदा का बन्दा ) जो उसके आस पास है ( अर्थात मूसा ) और अल्लाह ( जो ) संसार का पालन कर्त्ता ( है, वह स्वयं न अग्नि में है, और न आग के आस पास, बरन सीमा रहित तथा समस्त दोषों से ) पवित्र है ॥

( और आज्ञा हुई ) हे मूसा ! ( जिसे तुम आग समझ रहे हो, वह आग नहीं है, वरन यहाँ ) हम बलवान ( तथा ) ज्ञानवान ( खुदा अपनी ज्योति डाल रहे हैं। यह भड़क, यह चमक-दमक सब हमारी ज्योति की है। हम चाहते हैं कि तुमको नबी बना दें ) और ( चमत्कार प्रदान करें। अतः ) तुम अपना सोंटा ( भूमि पर ) डाल दो-( मूसा ने तुरन्त अपना सोंटा भूमि पर डाल दिया और खुदा की शक्ति से वह पृथ्वी पर गिरते ही सर्प बन गया )—

فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ
يُعَقِّبْ ط يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَىَّ
الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ
سُوْٓءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِىْ
جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ فِىْ تِسْعِ
اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ط اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ
اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ط فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَ
سُلَيْمٰنَ عِلْمًا ج وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَنَا
عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَوَرِثَ
سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ

الطَّيْرِ

तो जब (मूसा ने) देखा कि लाठी (इस तरह पर) चल रही है कि गोया वह (ज़िन्दा) सांप है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे (मुड़ कर भी तो) न देखा—(हमने फ़र्माया) मूसा! डरो नहीं, हमारे हुज़ूर में (पहुंच कर) पैग़म्बर (मुत्मइन हो जाते हैं)—डरा नहीं करते० मगर (हाँ!) जिससे कोई कुसूर सर्ज़द हो जाए, फिर (उस) कुसूर के बाद उसके बदले नेकी करने लगे, तो हम बख़्शने वाले मेहर्बान हैं० और अपना हाथ अपने गरेबान में रख लो (और फिर निकालो) तो वह भला चंगा) बेरोग सफ़ेद (बर्राक़) निकलेगा—(यह दो मोजिज़े उन) नौ मोजिज़े में (से हैं, जिनके साथ तुमको) फ़िर्औन और उसकी क़ौम की तरफ़ (भेजना है, क्योंकि) वह नाफ़र्मान लोग हैं० तो जब उनके पास हमारे मोजिज़े आये—आंखें खोल देने वाले, तो लगे कहने—यह तो सरीह जादू है० और बावजूदे कि उन के दिल उन (मोजिज़ों) का यक़ीन कर चुके थे—(मगर) उन्होंने हेकड़ी और शेख़ी के मारे उनको न माना—(तो ऐ पैग़म्बर!) देखो! मुफ़सिदों का कैसा (ख़राब) अंजाम हुआ० और हमने दाऊद और सुलेमान को (दीन व दुनिया का) इल्म इनायत किया और वह दोनों (ख़ुश होकर) लगे कहने कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने हमको अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत दी है० और सुलेमान दाऊद के जा-नशीन हुए और कहा—लोगो! हमको (ख़ुदा की तरफ़ से) परिन्दों तक की बोली सिखाई गई है—

सो सब मूसा ने देखा कि सोंटा (पृथ्वी पर इस तरह) लहरा रहा है कि मानो वह (सच मुच का) एक स[र्प] (ही) है, तो (डर के मारे) पीठ फेर कर (ऐसे) भागे (कि) फिर (उधर) न मुड़े। (आज्ञा हुई) हे मूसा! ड[रो] नहीं। निस्सन्देह पैग़म्बर हमारे दरबार में डरा नहीं करते। किन्तु (हां) वह, जिससे (किसी पर कुछ) अनीति हो जा[य] (उसे अवश्य ख़ुदा के अज़ाब से डरना चाहिये और) फिर (वह भी यदि) बुराई (और अत्याचार तथा अनीति करने के पश्चात उसके बदले कोई भलाई करले (अर्थात तौबा करले)—तो (फिर उसको भी कुछ चिन्ता करने की आवश्यकत[ा] नहीं)। निस्सन्देह हम (अपने बन्दों पर) अत्यन्त क्षमा करने वाले कृपालु हैं॥

और (हे मूसा! जिस सर्प से तुम डरते थे, वह वास्तव में सर्प नहीं था, बरन् तुम्हरा सोंटा ही था। हमा[री] आज्ञा से वह सर्प के सादृश हो गया था। सो यह एक चमत्कार है, तुम्हारी सच्चाई के समर्थन के लिये, जो हमने तु[म] को प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त एक दूसरा चमत्कार तुमको दिया जाता है और वह यह है कि) तुम अप[ना] हाथ अपने गरेबान में डालो (और बाहर निकालो)—जिससे कि वह किसी दोष (अर्थात कोढ़ इत्यादि की बीमारी) बिना (सूर्य की तरह) सफ़ेद चमकदार बन कर निकले (और देखने वालों की दृष्टियों को चकाचौंध और बुद्धियों को हैरा[न] करदे)—यह दो मोजिज़े (उन) नौ मोजिज़ों में से हैं—(जो तुम्हें दिये जायँगे)। तुम इन्हें लेकर फ़िर्औन और उस[की] जाति की ओर (सुधार करने के लिये) जाओ। निस्सन्देह वह (बड़े) अवज्ञाकारी लोग हैं॥

सो जब (मूसा हमारी आज्ञानुसार उन लोगों के पास पहुंचे और) हमारे स्पष्ट-चमत्कार उनके सन्मुख आए, [तो] कहने लगे-यह (तो) खुला जादू है। और (केवल हठ धर्मी और) अन्याय और (अभिमान तथा) अहंकार [के] कारण उन्होंने उन (चमत्कारों की सच्चाई) का इन्कार कर दिया-यद्यपि (भीतर से) उनके हृदय उन (की सच्चाई) [का] विश्वास कर चुके थे। तो (हे रसूल!) देख लो!! इन फ़सादियों का परिणाम कैसा (बुरा) हुआ। और (फ़सादियों को न[ष्ट] करने वाले भी हम ही हैं और) हम ही ने (अपने नेक बन्दों) दाऊद तथा सुलैमान को ज्ञान (की सम्पत्ति) से मा[ला] माल किया था और (हमारे इसी उपकार के बदले में उन) दोनों ने कहा था कि सब प्रशंसा उस ख़ुदा (की शान के योग्य है, जिसने हमें (अपने) ईमानदार बन्दों में से बहुतों पर (श्रेष्ठता तथा) बुज़ुर्गी दी (और धर्म-ज्ञान जै[से] अमूल्य कोष देकर हमको कृतार्थ किया)। और (जब) सुलैमान दाऊद के उत्तराधिकारी अर्थात स्थानापन्न हुये (अ[र्थात] नबी तथा बादशाह भी हो गये, तो) उन्होंने कहा—हे लोगो! हमें (ख़ुदा की कृपा और उसकी दया से बादशाहत मिली और नुबूवत भी मिली और चमत्कार के तौर पर) जानवरों की बोली (भी) सिखाई गई—

الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِن كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ
الْمُبِينُ ● وَحُشِرَ لِسُلَيْمَٰنَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَ
الْإِنسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ● حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا
عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَٰأَيُّهَا النَّمْلُ ادْ
خُلُوا مَسَٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَٰنُ
وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ● فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا
مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ
نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ
وَأَنْ أَعْمَلَ صَٰلِحًا تَرْضَىٰهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ
فِي عِبَادِكَ الصَّٰلِحِينَ ● وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ
فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ
لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَاذْبَحَنَّهُ أَوْ
لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ● فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ

और हमको हर तरह के साज़ व सामान इनायत हुये हैं। बेशक यह ( खुदा का ) सरीह फ़ज़्ल है ० और सुलैमान के (जितने) लशकर जिन्नात और आदमियों और परिन्दों के ( थे )-उनके ( मुलाहिज़े के ) लिये जमा किये गये, तो वह मिस्ल-बमिस्ल उनके रूबरू खड़े किये जाते थे ० ( ग़रज़ इस तरतीब से लश्कर एक तरफ़ को रवाना हुआ )-यहां तक कि जब चिउंटियों के ( एक ) मैदान में पहुंचे, तो एक चिउंटी ने कहा कि चिउंटियो! अपने ( अपने ) बिलों में घुस जाओ। ऐसा न हो कि सुलैमान और सुलैमान के लश्कर तुम को कुचल डालें और उनको ( इसकी ) ख़बर भी न हो ० चिउंटी की ( इस ) बात से सुलैमान हंसे और मुस्कराये और लगे कहने कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मुझको तौफ़ीक़ दे कि जैसे-जैसे एहसानात तूने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर किये हैं, तेरे उन एहसानात का शुक्र अदा करूं और ( ज़िन्दगी भर ) ऐसे नेक—अमल करता रहूं, जिनको तू पसन्द फ़र्माये ( और आख़िरकार मरे पीछे ) तू मुझ को अपने करम से अपने नेक बन्दों में ( लेजा ) दाख़िल कर ० और सुलैमान ने परिन्दों की मौजूदात ली, तो कहा—क्या बात है! कि हम हुदहुद को नहीं देखते-( क्या परिन्दों की कसरत की वजह से हमको नहीं दिखाई देता ) या-( वाक़े में ) ग़ैर-हाज़िर है ० ( अगर ग़ैर-हाज़िर है, तो ) हम उसको ज़रूर सख़्त-सजा देंगे या उसे हलाल ही कर डालेंगे, या वह हमारे हुज़ूर में ( अपनी ग़ैर-हाज़िरी की ) कोई वजह पेश करे-( जिससे ) ज़ाहिर ( हो कि वह बेकुसूर है ) ० फिर थोड़ी देर के बाद हुदहुद आ हाज़िर हुआ—

---

और ( आवश्यकता को ) हर वस्तु ( भी ) प्रदान की गई। निस्सन्देह ( खुदा की ) यह एक खुली कृपा है ( कि उसने इन नेअमतों के प्रदान करने के लिये हमें चुना )। और सुलैमान के लिये उनकी सेना जिन्नों में से ( जिन्न ) और मनुष्यों में से ( मनुष्य ) और पक्षियों में से ( पक्षी लेकर ) एकत्रित की गई थी-( अर्थात् उनकी सेना में जिन्न तथा मनुष्य और पशु पक्षी-सभी सम्मिलित थे। और जब वह अपनी सेना सहित कहीं आते जाते थे )—तो ( असंख्य होने के कारण प्रायः ऐसा होता था कि ) उन ( की सेना की अगली पंक्तियों ) को ( चलते २ ) रोक दिया जाता था ( जिससे कि पिछली पंक्तियां उनसे आ मिलें )॥

( एक बार की कथा है कि सुलैमान अपनी सेना सहित कहीं जा रहे थे )-यहां तक कि जब वह चिउँटियों के एक मैदान में आए ( अर्थात ऐसे मैदान में से उनका पर्यटन हुआ, जहाँ चिउँटियों की अधिकता थी )-तो एक चिउँटी ने ( जो और चिउँटियों की महारानी थी-अपनी प्रजा से ) कहा कि हे चिउँटियो! ( सुलैमान अपनी सेना सहित इधर आ रहे हैं )-तुम ( सबकी सब ) अपने अपने घरों में घुस जाओ, जिससे कि सुलैमान और उनकी सेना अज्ञानता की दशा में ( अपने पैरों से ) तुमको पीस न डालें। ( यह आवाज़ सुलैमान के कानों तक भी पहुंच गई )-तो वह उस ( चिउँटी ) की वार्त्तालाप से ( सूचित होकर अपने दिल में इतने खुश हुये कि ) खुशी के मारे मुस्कराने लगे और कहने लगे-हे मेरे पालन कर्त्ता! ( तूने मुझे बहुत बड़ी सम्पत्ति प्रदान की है। अतः ) तू मुझे योग्यता प्रदान कर! कि मैं तेरे उस पुरस्कार का-जो तूने मुझ पर और ( इस पुरस्कार का—जो तूने ) मेरे माता पिता पर किया है-( यथोचित ) धन्यवाद दूं और ( ऐसे ) नेक काम करूं कि जिनसे तू प्रसन्न हो जाय। और तू मुझे अपनी कृपा ( तथा दया ) से अपने नेक बन्दों में प्रवेश देदे॥

और ( एक बार की कथा है कि ) सुलैमान ने पक्षियों की ( जाँच ) पड़ताल की, तो ( हुदहुद को उनमें न पाया। तो ) कहा—क्या बात है! ( आज ) मुझे हुदहुद दिखाई नहीं देता। ( क्या पक्षियों की अधिकता के कारण वह मुझे नहीं दिखाई देता )-वा ( वास्तव में ) वह अविद्यमान ( ही ) है। ( यदि वह अविद्यमान है, तो ) हम उसको अवश्य ( एक ) कठिन दंड देंगे। ( सो जब वह आ जाय, तो हमारे सामने उसको लाना। उस समय ) वा तो हम उसको बध कर देंगे अथवा वह हमारे दरबार में ( अपनी ग़ैर-हाज़िरी का कोई ) प्रत्यक्ष-प्रमाण लेकर आएगा ( और जब वह प्रमाण सच्चा सिद्ध हो जावेगा, तो हम उसको मुक्त कर देंगे )। अतः ( हुदहुद तुरन्त आ गया )—उसने ( हाज़िर होने में ) कुछ ज़्यादा देर नहीं लगाई—

فَقَالَ اَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ
بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ۝ اِنِّیْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ
وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ۝ وَجَدْتُّهَا
وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ
السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ
الَّذِیْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝ قَالَ سَنَنْظُرُ
اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ اِذْهَبْ
بِّكِتٰبِیْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ
مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ۝ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّیْۤ اُلْقِیَ
اِلَیَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ

और लगा कहने कि मुझको एक ऐसा हाल मालूम हुआ है, जो (अब तक) हुज़ूर को मालूम नहीं हुआ और मैं हुज़ूर में (शहर) सबा की एक तहक़ीक़-ख़बर लेकर हाज़िर हुआ हूं ० मैंने एक औरत को देखा कि वह वहां के लोगों की मल्का है (और उन पर हुक्म रानी कर रही है) और हर तरह के साज़ व सामान (सल्तनत) उसको मयस्सर हैं और उसके यहाँ (एक बहुत) बड़ा तख़्त (भी) है ० मैंने मल्का और उसके लोगों को देखा कि ख़ुदा को छोड़ कर आफ़ताब को सज्दा करते हैं और शैतान ने उनके आमाल को उन्हें उम्दा कर दिखाया है और उनको राह (रास्त) से रोक दिया है, तो उनको (इतनी बात भी) नहीं सूझ पड़ती ० कि ख़ुदा ही के आगे (क्यों) न सज्दा करें, जो आस्मान व ज़मीन की छुपी हुई चीज़ों को ज़ाहिर करता है और जो काम तुम लोग छुपा कर करो, और जो अलानिया करो, सबसे वाक़िफ़ है ० अल्लाह (वह ज़ात-पाक है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं (और) वही अर्श-बरीं (के तख़्त) का मालिक है ० (सुलैमान ने) कहा (अच्छा) हम अभी देखे लेते हैं कि तू सच कहता है या झूटा है ० यह हमारी तहरीर लेकर जा! और उसको उनकी तरफ़ डाल दे, फिर उनसे अलग हट जा, फिर देखता रह! कि वह लोग क्या जवाब देते हैं ० (ग़रज़ हुदहुद ने सुलैमान का फ़र्मान मल्का को पहुंचा दिया। वह उसे देख कर) बोली कि ऐ अह्ले-दर्बार! (यह) एक फ़र्मान वाजिबुल-एहतिराम हमारी तरफ़ डाला गया है ० यह सुलैमान की तरफ़ से है और यह (यानी इसकी इबारत इस तरह पर है कि सबसे पहिले उसमें) बिस्मिल्लाहि–र्रह्मानि–र्रहीम् है ०—

الرحمن

और फिर प्रार्थना की, कि मैंने (अपनी इस अनुपस्थिति में) एक ऐसी बात मालूम की है, जिसका आपको ज्ञान न
हुआ और (वह बात यह है कि) मैं आपकी सेवा में सबा (स्थान) की एक विश्वासनीय सूचना लाया हूं। निस्सन्दे
(वहाँ) मैंने एक ऐसी स्त्री को पाया, जो उन (लोगों) की महारानी है-(जो वहाँ के रहने वाले हैं) और (संसार
पालन कर्त्ता की ओर से) उसे (आवश्यकता की) हर वस्तु (और प्रत्येक पदार्थ) प्रदान किये गये हैं। और उस
यहाँ एक बहुत बड़ा सिंहासन भी (बिछा हुआ) है—(जो बड़ा अमूल्य है और लम्बाई चौड़ाई में भी बहुत बड़ा है

मैंने उस (स्त्री) को और उसकी प्रजा को देखा कि वह (सब लोग) अल्लाह को छोड़ कर सूर्य्य की पू
करते हैं। और शैतान ने उनके (अशुभ) कर्मों को उनके लिये सँवार दिया है। अतः उनको (इस सीधी) राह (चल
से रोक दिया है। सो उन्हें यह (सत्य) मार्ग नज़र नहीं आता कि (समस्त असत्य-पूज्यों से मुंह मोड़कर केवल) उ
ख़ुदा को पूजा करें कि जो (इतना बड़ा शक्तिमान है कि) उन वस्तुओं को–जो आकाशों और पृथ्वी में गुप्त हैं; प्रगट कर
है और (इतना बड़ा विज्ञ है कि) उन बातों को भी जानता है, जिन्हें तुम छिपाते हो और उन्हें भी जिन्हें तुम प्र
करते हो॥

(और उन्हें ज्ञात नहीं कि सच्चा-पूज्य वास्तव में केवल) ख़ुदा (है। उस) बड़े अर्श के स्वामी (ख़ुदा
अतिरिक्त कोई पूज्य (पूज्य बनने के योग्य) है ही नहीं। (यह सुनकर) सुलैमान ने कहा-(अच्छा) हम अभी देखेंगे कि
सत्य कहा वा तू झूठा है। (यदि तू सच्चा है, तो) ले! यह हमारा पत्र (वहां) लेजा!! और इसे उन (की महारान
के पास डाल आ!! (और जब पत्र डाल चुके, तो) फिर (तुरन्त) उनके पास से हट जा। पुनः देख! कि वह (हमारे
का) क्या उत्तर देते हैं। (अतः हुदहुद गया और पत्र पहुंचा दिया, तो उसने तुरन्त सभासदों को बुलाया और) कह
हे मंत्रियो! मेरे पास (न मालूम किस रीति से) एक माननीय-पत्र डाल दिया गया है। (और) वह सुलैमान
ओर से (भेजा गया) है। और उसका प्रारम्भ करुणा-निधान, करुणाकारी ख़ुदा के नाम से है॥

الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ أَلَّا تَعْلُوا عَلَيَّ وَأْتُونِي
مُسْلِمِينَ ۝ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي
أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّى تَشْهَدُونِ ۝
قَالُوا نَحْنُ أُولُو قُوَّةٍ وَأُولُو بَأْسٍ شَدِيدٍ وَالْأَمْرُ
إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ۝ قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ
إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ
أَهْلِهَا أَذِلَّةً وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ وَإِنِّي
مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ
الْمُرْسَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ
بِمَالٍ فَمَا آتَانِيَ اللَّهُ خَيْرٌ مِمَّا آتَاكُمْ
بَلْ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ ارْجِعْ
إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُودٍ لَا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا
وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ۝

ع

(और बिस्मिल्लाह के बाद) यह कि हमसे सर्कशी न करो और फ़र्मांबर्दार बन कर हमारे हुज़ूर में हाज़िर हो ० (सबा की मल्का सुलैमान का फ़र्मान सुनाने के बाद) बोली कि ऐ अहले–दर्बार! हमारे (इस) मामले में हमसे अपनी राय बयान करो—(हमारा हमेशा से दस्तूर रहा है कि) तावक़्ते कि तुम हमारे हुज़ूर में मौजूद न हो, हम किसी अम्र में क़तई–हुक्म नहीं दिया करते ० (दर्बारियों ने) अर्ज़ किया कि हम (बड़े) ताक़तवर और बड़े लड़ने वाले हैं और (आइन्दा) सर्कार को इख़्तियार है; जैसा हुज़ूर हुक्म दें, उस (के नेक व बद) को (अच्छी तरह) देख लें ० (वह) बोली–बादशाह जब किसी शहर (को बज़ोर फ़तेह करके उस) में दाख़िल हुआ करते हैं, तो (उनका दस्तूर है कि) उसको ख़राब और वहां के मुअज़्ज़ज़ लोगों को ज़लील कर दिया करते हैं और (वाक़े में) ऐसा ही किया करते हैं ० और हम (एलचियों के हाथ) उनकी तरफ़ तोहफ़े (तहायफ़) भेज कर देखते हैं कि एलची क्या (जवाब) लेकर आते हैं ० फिर जब (एलचियों का सर-गिरोह) सुलैमान के हुज़ूर में (तोहफ़े–तहायफ़ लेकर) हाज़िर हुआ, तो (सुलैमान ने) कहा कि क्या तुम लोग माल से हमारी इम्दाद करनी चाहते हो? सो जो कुछ हमको ख़ुदा ने दे रक्खा है, वह उससे जो तुमको दे रक्खा है (कहीं) बेहतर है। सो कुछ तुम ही अपने तोहफ़े से ख़ुश होते होगे ० (तो ऐ सरगिरोह–एलचियां! जिन्होंने तुझको भेजा है) उन (ही) के पास (फिर) लौट जा! और (अब हम) ऐसे लश्कर लेकर उन पर चढ़ाई करेंगे, जिनका उनसे मुक़ाबला न हो सकेगा और हम उनको वहां से ज़लील व ख़्वार (करके) निकाल बाहर करें तो सही ०—

(तात्पर्य उसका) यह (है) कि तुम लोग हमारे मुक़ाबले में उद्दण्डता न करो और आधीन बनकर हमारे पास उपस्थित हो जाओ। (और फिर) कहा कि हे मन्त्रियो! हमारे (इस) मामले में तुम हमें (अब कुछ) राय दो (और बताओ कि इस पत्र का क्या उत्तर दिया जाय। यह तो तुम जानते ही हो कि) हम किसी मामले में (भी कभी कोई) अटल आज्ञा नहीं देते, जब तक कि तुम हमारे दरबार में (सलाह देने के लिये) विद्यमान न हो। उन्होंने कहा कि (आपने बिल्कुल ठीक कहा है। हमारी राय है कि सुलैमान से बराबर का मुक़ाबला किया जाय। सूर्य–नारायण की कृपा है कि) हम (पूर्ण) बलवान और बड़े रण–योद्धा हैं और (हम अपने शत्रु को पराजय करने के लिये सर्वदा तैयार हैं। आगे) आपको अधिकार है–(चाहे हमारे कहने पर चलें, और सुलैमान से युद्ध करें, अथवा आधीनता स्वीकार करलें)। सो जो कुछ आज्ञा दें (हम उस पर चलने के लिये सच्चे दिल से विद्यमान हैं, परन्तु आप आज्ञा देने से पहिले बुरे भले को अवश्य) देखलें ॥

(इस पर) महारानी ने कहा (कि इसमें) सन्देह नहीं कि (हमारी युद्ध–शक्ति का मुक़ाबला आज कोई नहीं कर सकता, परन्तु मैं युद्ध को कभी पसन्द नहीं करूंगी; क्योंकि ख़ुदा के बन्दों को इससे बड़ा दुख पहुंचता है)—बादशाह जब किसी (अपने शत्रु की) बस्ती में प्रवेश करते हैं, तो उसको विनाश कर देते हैं और उसके प्रतिष्ठित–निवासियों का अनादर करते हैं। और (यदि हमने उनसे मुक़ाबला किया, तो सम्भव है कि हम ही हार जायं, तो उस समय) यह भी (बादशाहों की प्रथानुसार) ऐसा ही करेंगे (और क्षमा कदापि न देंगे)। (इसलिये मैं युद्ध का ख़्याल तक हृदय में नहीं लाती) और (अपने दूतों के हाथ) उनके पास कुछ उपहार भेजती हूं। फिर देखती हूं कि (हमारे) दूत (वहां से इसका) क्या उत्तर लेकर आते हैं ॥

अतः जब (सबा नगर के दूतों का सरदार) सुलैमान के दरबार में हाज़िर हुआ (और भेंट उपस्थित की)–तो (इस पर) सुलैमान ने कहा—क्या तुम (लोगों ने हमें निर्धन समझ रक्खा है, जो) धन से हमारी सहायता करते हो। सो (याद रक्खो! कि) अल्लाह ने जो कुछ हमको दे रक्खा है, वह उससे बहुत उत्तम है—जो उसने तुमको दिया है। (अतः इस उपहार से हम प्रसन्न नहीं हो सकते)–बरन् अपने (इस) उपहार से (कुछ) तुम ही प्रसन्न होते होगे ॥

(हे दूतों के सरदार! यह उपहार ले और) तू उन (ही लोगों) के पास लौट जा–(जिन्होंने यह तुझे दिया था और उनको सूचित करदे कि) हम (अभी उनसे युद्ध करने के लिये आते हैं। और) ऐसी सेना चढ़ा कर लाते हैं, जिनका मुक़ाबला उनसे न हो सकेगा और (इस उद्दण्डता के दंड में) उस (बस्ती) से हम इस तरह अपमानित करके उन्हें निकाल बाहर करेंगे कि वह (बिल्कुल) विवश (और लाचार) होंगे ॥

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ
يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ○ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ
بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ
لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ○ قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ
الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ
طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا
مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۚ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۗ
وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ
فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ○ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا
عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ
لَا يَهْتَدُوْنَ ○ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا
عَرْشُكِ ۗ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ
مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ○ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ

(इतने में सुलैमान ने) कहा कि ऐ अह्ले-दरबार! कोई तुममें से ऐसा भी है कि क़ब्ल इसके कि यह लोग मुती होकर हमारे हुज़ूर में हाज़िर हों, मल्का के तख़्त को हमारे पास ला हाज़िर करे० (इस पर) जिन्नात (की क़िस्म) में से एक देव बोल उठा कि आप के दर्बार बर्ख़ास्त करने से पहिले (पहिले) मैं तख़्त को हुज़ूर में ला हाज़िर करूंगा और मैं इस (मुहिम के सर करने) की ताक़त (भी) रखता (हूं और) अमानतदार (भी) हूं ० (एक शख़्स) जिसको किताबी-इल्म था, बोला कि आपकी आंख झपकने से पहिले (पहिले) मैं तख़्त को आप के हुज़ूर में ला हाज़िर करता हूं–तो जब (सुलैमान ने) तख़्त को अपने पास मौजूद पाया, तो बोल उठे कि यह भी मेरे पर्वर्दिगार का एहसान है, ताकि मुझको आज़माये कि आया मैं (उसका) शुक्र करता हूं या नाशुक्री करता हूं और कोई (ख़ुदा का) शुक्र करता है, तो वह अपने (भले के) लिये शुक्र करता है और कोई नाशुक्री करता है, तो मेरा पर्वर्दिगार (उसके शुक्र से) बेनियाज़ (और बड़ा) सख़ी है ० (कि नाशुक्रों को भी देता है। सुलैमान ने) हुक्म दिया कि मल्का (की अक़्ल-आज़माई) के लिये उसके तख़्त की सूरत बदल दो, ताकि हम देखें कि (आख़िरकार ईमान के सीधे) रस्ते पर आती है या उन्हीं लोगों में रहती है, जो (किसी तरह) राह पर नहीं आते० फिर जब (बिल्क़ीस सुलैमान के हुज़ूर में) आ हाज़िर हुई, तो (उससे) पूछा गया कि क्या आपका तख़्त भी ऐसा ही है? वह बोली–यह तो गोया (ऐन-मैन) वही है और (फिर सुलैमान से मुख़ातिब होकर बोली कि) हमको तो इस (वाक़ये) से पहिले (आप का बर्गुज़ीदये-ख़ुदा होना) मालूम हो गया था और हम (तब ही आप को) मान गये थे०—

---

फिर सुलैमान ने (अपने) दरबारियों की ओर सम्बोधन किया और उनसे कहा, हे दरबारियो! इससे पहिले कि व लोग आधीन (तथा आज्ञा-पालक) बनकर हमारे दरबार में उपस्थित हों, तुममें कोई ऐसा भी है कि उस (स्त्री) का सिंह सन हमारे पास ले आवे? (यह सुनकर) जिन्नों को जाति में का एक देव कहने लगा–इससे पहिले कि आप अपने स्थान उठें—(अर्थात् दरबार बन्द करें) मैं आप के पास उस सिंहासन को ले आऊंगा और (इसमें) सन्देह नहीं कि मैं उस ( उठा लाने) पर शक्तिमान हूं। (अति सरलता-पूर्वक उसे उठा लाऊंगा, चाहे वह कितना ही भारी हो। और मैं) अमान दार (भी हूं, ज्यों का त्यों आपकी सेवा में उपस्थित कर दूंगा–चाहे वह कितना ही अमूल्य क्यों न हो)॥

(सुलैमान ने उत्तर दिया कि दरबार बन्द होने में देर है। हमारी इच्छा है कि वह सिंहासन अभी हमारे पास जाय। यह सुनकर) वह (मनुष्य)-जिसके पास पुस्तक का ज्ञान था, कहने लगा कि मैं उस (सिंहासन) को आपकी पल झपकने से पहिले सेवा में उपस्थित कर सकता हूं। (सो पलक मारने की देर थी कि वह सिंहासन आ गया)। अतः ज सुलैमान ने उसको अपने पास बिछा हुआ देखा, तो (अत्यन्त प्रसन्न हुए और) कहने लगे, यह (भी) मेरे पालन कर्त्ता कृपा है (कि उसने मुझे ऐसे ऐसे प्रवीण-विद्वान मित्र प्रदान कर रक्खे हैं)—जिससे कि वह मेरी परीक्षा करे (और देखे कि मैं (उसके पुरस्कारों को) कृतज्ञता करता हूं-अथवा कृतघ्नता करता हूं। और (यह सत्य है कि) जो उस (के पुरस्कार की कृतज्ञता करता है, तो वह अपने ही लाभ के लिये करता है। और जो कृतघ्नता करता है, तो (वह भी अपनी ही हानि कर है)। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता लोगों के धन्यवाद से (भी) ग़नी अर्थात् बेपर्वाह है (और कृतघ्नता से भी। और अ बन्दों पर बड़ी दया तथा) कृपा करने वाला (है कि कृतघ्नों तक को अपनी नेअमतें प्रदान करता है)॥

(और फिर राज्य के कर्म-चारियों को सम्बोधन किया और उनसे) कहा कि उस (महारानी का ज्ञान परखने) के लि उसके सिंहासन में (कुछ) परिवर्तन करदो, जिससे कि हम देखें कि वह (अपना सिंहासन पहिचान लेती है-वा इस साधार परिवर्तन से वह भ्रम में पड़ जाती है। इससे उसकी बुद्धि तथा ज्ञान-शक्ति की परीक्षा हो जावेगी कि वह सत्य धर्म की ओ राह पा सकती है वा उन (हो) लोगों में से निकलती है—(जिनकी बुद्धि में खोट है और) जो (सत्य-धर्म की ओर) राह पा सकते। (अतः ऐसा ही किया गया)। सो जब वह आई, तो (उससे) पूछा-(हे महारानी!) क्या तुम्हारा सिंहासन (भ ऐसा ही है? वह (एक दृष्टि में अपना सिंहासन पहिचान गई, परन्तु उसके परिवर्तन का विचार करके) बोली–मानो यह (बिल्कुल) वैसा ही है और (सुलैमान से कहा कि) इस (सिंहासन का चमत्कार देखने) से पहिले ही हमें ज्ञात हो गया (कि आप ख़ुदा के सच्चे नबी हैं) और हम (लोग यहां आने से पहिले ही आपके सच्चे दिल से) आधीन (हो गये) थे

تَعْبُدُ مِن دُونِ اللَّهِ إِنَّهَا كَانَتْ مِن قَوْمٍ كَافِرِينَ
قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ
لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَن سَاقَيْهَا قَالَ إِنَّهُ
صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّن قَوَارِيرَ ۝ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي
ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ
صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ
قَالَ يَا قَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ۝ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَن مَّعَكَ
قَالَ طَائِرُكُمْ عِندَ اللَّهِ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ۝
وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۝ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ

ع

और (वाक़े में) वह जो ख़ुदा के सिवा (आफ़ताब) को पूजती थी, उसी ने (अब तक) इसको (सुलैमान के पास आने से) रोके भी रक्खा, क्योंकि वह काफ़िर लोगों में से थी ० (फिर) उससे कहा गया कि आप महल में तशरीफ़ ले चलिये! तो जब उसने महल (में शीशे के फ़र्श) को देखा, तो उसको पानी समझी और (वहाँ से गुज़रने के लिये इस तरह पायँचे उठाये कि) अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं-(सुलैमान ने) कहा-यह तो (शीश) महल है, जिस (के फ़र्श) में (भी) शीशे (ही) जड़े हुये हैं-(तब उसको अपनी ग़लती और बेसामानी पर तनब्बुह हुआ और) लगी (ख़ुदा की बार्गाह में) अर्ज़ करने कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! (मैं जो इतने दिनों आफ़ताब-परस्ती करती रही, इससे) मैंने अपना ही नुक़सान किया और अब मैं सुलैमान के साथ होकर अल्लाह रब्बुल आलमीन पर ईमान लाई ० और हम ही ने क़ौम-समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा था कि (लोगो!) ख़ुदा की इबादत करो। तो सालेह के आते ही वह लोग (मोमिन और मुन्किर) दो फ़रीक़ हो गये (और) लगे आपस में झगड़ने ० (सालेह ने) कहा कि भाइयो! भलाई से पहिले बुराई के लिये क्यों जल्दी मचाते हो, अल्लाह की जनाब में (तौबा और) इस्तिग़फ़ार क्यों नहीं करते कि शायद तुम पर रहम किया जाय ० वह बोले—(सालेह!) हमने तो तुझको और उन लोगों को, जो तेरे साथ हैं—बड़ा ही मनहूस पाया। (सालेह ने) कहा तुम्हारी नहूसत (सब) ख़ुदा की तरफ़ से है (और इसमें हमको दख़ल नहीं)—बल्कि (बात यह है कि) तुम (कुछ इस तरह के ढुलमुल—यक़ीन) लोग हो (कि आसानी से शैतान के) बहकाये में आ जाते हो ० और शहर में नौ आदमी थे, जो मुल्क में फ़साद करते और (किसी तरह भी) इस्लाह के दरपै न होते ० उन्होंने (एक दूसरे से) कहा कि (आवो जी!) आपस में ख़ुदा की क़सम खाओ--

और (सत्य यह है कि सबा की महारानी बिल्क़ीस बहुत समझदार स्त्री थी, परन्तु) वह जो अल्लाह को छोड़कर (सूर्य की) पूजा करती थी-उसने उसको (सीधे मार्ग पर चलने से) रोक रक्खा था। (और इस सूर्य-पूजा का मूल-कारण यह है कि) निस्सन्देह वह काफ़िरों की जाति में से थी। फिर (सुलैमान ने अपने शीश-महल में सबा-नगर की महारानी को बुलाया और) उससे कहा गया कि इस महल के भीतर चलो। सो जब उसने उस (महल में पग धरा और उसके आंगन) को देखा, तो समझी यह जल (कुण्ड) है और (इसलिये) अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं। (अर्थात कुण्ड में प्रवेश करने के लिये अपने दोनों पायंचे चढ़ा लिये। यह देख कर) सुलैमान ने कहा (हे महारानी!) यह महल (समस्त) शीशे का बना हुआ है। (और यह आँगन भी शीशे से पटा हुआ है। हां! जलकुंड इस आंगन के नीचे है, जो शीशे में से झलक रहा है। महारानी यह सजधज तथा कला देख कर दंग रह गई और बेधड़क) बोल उठी, हे मेरे पालन कर्त्ता! मैंने अपने प्राण पर (बड़ा) अत्याचार किया-(जो इस समय तक सूर्य को पूजा) और (अब) मैं सुलैमान के साथ (होकर) संसार के पालन कर्त्ता ख़ुदा की आधीन बन गई॥

और हम ही ने समूद (की जाति) की ओर उनके (सजातीय) भाई सालेह को भेजा। (उन्होंने जाकर उनसे कहा) कि (भाइयो!) अल्लाह (ही) की पूजा करो। सो (वह लोग) एक दम दो समूह बन गये (और) परस्पर झगड़ने लगे। (एक समूह ख़ुदा की पूजा की ओर बुलाता था, तो एक समूह मूर्त्ति—पूजा का बुलावा देता था)। (और जब सालेह ने अवज्ञाकारी—समूह को समझाया कि सत्य—पूजकों से झगड़ा न करो और ख़ुदा के अज़ाब से डरो, तो कहने लगा—सालेह! यदि तुम ख़ुदा के रसूल ही हो, तो जिस अज़ाब की तुम हमको बारम्बार धमकी देते हो, वह हम पर उतार दो। इस पर) सालेह ने कहा भाइयो! तुम नेकी (की राह पर आने) से पहिले बुराई की क्यों जल्दी करते हो? (अरे मूर्खो!) तुम (अपने) ख़ुदा से क्षमा क्यों नहीं चाहते, जिससे कि तुम पर दया की जाय॥

(यह सुनकर) वह लोग कहने लगे कि (सालेह!) हमने तो तुमको और उन (ईमानदार) लोगों को, जो तुम्हारे साथ हैं—(बहुत ही) मनहूस पाया। उन्होंने कहा (हम तो मनहूस क्यों होने लगे थे)। तुम्हारी नहूसत (का मूल-कारण) तो अल्लाह के ज्ञान में है, बरन् तुम ही वह लोग हो कि (अपने कुकर्मों के कारण) अज़ाब में फंसोगे। और उस बस्ती में नौ मनुष्य (बहुत ही मूर्ख) थे। (ख़ुदा की) पृथ्वी में (व्यर्थ के झगड़े) फ़साद (ही) फैलाते फिरते थे और सुधार (कुछ भी) न करते थे। (एक बार सालेह ने तंग आकर उनसे कहा कि चौथे दिन तुम नष्ट-भ्रष्ट हो जाओगे, तो उस पर) उन्होंने एक दूसरे से कहा, ख़ुदा की शपथ खाओ—

कि हम ज़रूर सालेह को और उसके घर वालों को रात के वक़्त जा मारेंगे, फिर (हमसे पूछने की नौबत आयेगी, तो) हम उसके वारिस से कह देंगे कि सालेह के घर वालों के मारे जाने के वक़्त हमतो मौजूद (ही) न थे और हम बिल्कुल सच कहते हैं ० ग़रज़ वह एक दाव चले और हम भी एक दाव चले और (हमारे दाव की) उनको ख़बर भी न हुई ० तो (ऐ पैग़म्बर!) देखो तो! उनके दाव का कैसा (ख़राब) अन्जाम हुआ कि हमने उनको और उनकी क़ौम को-सबही को तो हलाक कर मारा ० अब यह उनके घर हैं कि उनकी नाफ़र्मानियों की वजह से (उन पर अज़ाब आया और वह घर) ख़ाली पड़े (भांय भांय कर रहे) हैं। इस (वाक़ये) में उन लोगों के लिये, जो जानते और समझते हैं, बड़ी इब्रत है ० और जो लोग ईमान लाये और ख़ुदा से डरते रहते थे, उनको हमने बचा लिया ० और (ऐ पैग़म्बर!) लूत (का वाक़िआ भी लोगों को याद दिलाओ कि) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम बेहयाई (के काम के) मुर्तकिब होते हो और (ग़ज़ब यह है कि छिपाते तक नहीं, बल्कि एक दूसरे को) देखते (भी जाते) हो ० क्या तुम औरतों को छोड़ कर शहवत-रानी (के इरादे) से लड़कों पर गिरे पड़ते हो। बात यह है कि तुम (बड़े) बे-समझ लोग हो ० तो लूत की क़ौम का इसके सिवा और कुछ जवाब न था कि वह लगे कहने कि लूत के ख़ानदान को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो—(क्योंकि) यह लोग बड़े पाक-साफ़ बनना चाहते हैं ० तो हमने लूत को और उनके ख़ानदान के लोगों को (अज़ाब से) बचा लिया, मगर उनकी बीबी—जिसकी तक़्दीर में हम लिख चुके थे कि वह (भी) पीछे रहने वालों में होगी ० और (लूत के पीछे जो लोग बाक़ी रह गये)-उन पर हमने पथराव बर्साया—

لَنُبَيِّتَنَّهُ وَاَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا
مَهْلِكَ اَهْلِهِ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ وَمَكَرُوْا مَكْرًا
وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ
وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا
ظَلَمُوْا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاَنْجَيْنَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ
لِقَوْمِهٖ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝
اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاءِ بَلْ
اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖ اِلَّا
اَنْ قَالُوْا اَخْرِجُوْا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ
يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهُ اِلَّا امْرَاَتَهُ
قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا فَسَاءَ

कि हम अवश्य उस (सालेह) को और उसके घर वालों को रात को सोते में (जान से) मार डालेंगे। फि (यदि कोई सालेह का मानने वाला वा उसका कोई मित्र अथवा बचा खुचा नातेदार हमसे पूछ-गछ करेगा, तो) हम (बिलकुल मुकर जायंगे और) उसके (इस) वली (अर्थात् उत्तराधिकारी) से (स्पष्ट) कह देंगे कि हम तो उसके घर वालों के बध-स्थान पर उपस्थित भी न थे और हम (बिल्कुल) सत्य कह रहे हैं। और उन्होंने (हमारे पैग़म्बर सालेह पर अपना दांव चलाना चाहा और हमने (उन्हें नष्ट करने का) उपाय किया और (हमारे उपाय की) उन्हें सूचना (भी) न हुई अतः (हे रसूल!) देखलो !! उनके दावों का परिणाम कैसा (बुरा) हुआ कि हमने उन (नौ के नौ उपद्रवियों) को (त पर्वत की खोह में बन्द करके मार दिया) और उनकी सारी (की सारी) जाति को (एक दैवी-कड़क से) नष्ट कर दिया॥

सो (हे अरब के रहने वालो!) यह (शाम-देश को जाते हुये जो तुमको खंडर नज़र आते हैं, यह) उन (ह लोगों) के (तो) भवन हैं, जो उनके अत्याचार (तथा उद्दण्डता) के कारण (आज इस तरह) उजाड़ पड़े हुये हैं। निस्स न्देह समझदारों के लिये इस (घटना) में (बहुत बड़ी नसीहत तथा) शिक्षा (उपस्थित) है। और (इस अज़ाब से) हम उन लोगों को मुक्ति देदी थी, जो (ख़ुदा और उसके नबी सालेह पर) ईमान ले आये थे और (संयमता तथा) परहेज़गार करते थे। और (इसी प्रकार) लूत (की भी वह घटना वर्णन करने के योग्य है)-जबकि उन्होंने अपनी जाति से कहा थ कि (लोगो!) क्या तुम (इतने निर्लज्ज हो कि एक तो पुरुष—समागम जैसी) निर्लज्जा (का काम) करते हो और (परस्पर ए दूसरे को) देखते भी जाते हो। क्या तुम लोग स्त्रियों को छोड़कर पुरुषों से (अपनी) कामग्नि बुझाते हो (और उसको बुद्धिमान समझते हो। इसका नाम बुद्धिमानी नहीं है)-बरन् तुम (बिल्कुल) अज्ञान (तथा मूर्ख) लोग हो। इस पर उनकी जाि का उत्तर इसके अतिरिक्त और कुछ न था कि उन्होंने (आपस में) कहा कि (भाइयो! लूत को और) लूत के घ वालों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो-(क्योंकि) यह लोग बड़े पवित्र (स्वच्छ तथा बुद्धिमान) बनते हैं॥

सो (जब उन लोगों की उद्दण्डता और सर्कशी अपनी सीमा को पहुंच गई, तो) हमने लूत को और उनके घर वाल को (तो अपने अज़ाब से) मुक्ति देदी, किन्तु उसकी स्त्री-जिसके भाग्य में हमने लिख दिया था कि वह (भी) पी रह जाने वालों में से होगी-(अज़ाब से न बच सकी)। (वह) और उन (की समस्त शेष जाति) पर हमने (पत्थर का) मेंह बर्षाया (और उन्हें बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया)। सो (पत्थरों की) कितनी बुरी (और दुखदायी)—

مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ
الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ءٰٓاللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝
اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ
السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَاۗىِٕقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ
مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ
هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا
وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ
وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ
اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ
اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْۗءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاۗءَ
الْاَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَمَّنْ
يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ
الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ

तो ( क्या ही ) बुरा पथराव उन लोगों पर बर्सा, जो (हमारे अज़ाब से ) डराये जा चुके थे ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) कहो कि (नाफ़र्मानों के हलाक होने पर ) ख़ुदा का शुक्र है और ( उन ) बन्दगाने-ख़ुदा को सलाम है, जिनको उसने बर्गुज़ीदा किया । भला ( क़ुद्रत और क़द्रदानी के एतिबार से ) अल्लाह बेहतर है या वह ( चीज़ें ) जिनको यह लोग शरीक ( ख़ुदाई ) ठहराते हैं ० भला आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया और आसमान से तुम लोगों के लिये ( किसने ) पानी बरसाया-( हमही ने बरसाया )-फिर पानी के ज़रिये से हम ( ही ) ने ख़ुशनुमा-बाग़ उगाये। ( लोगो! ) तुम्हारे बस की तो बात न थी कि तुम उनके दरख़्तों को उगा सको । क्या ख़ुदा के साथ ( कोई और ) माबूद ( भी ) है ? ( नहीं )-मगर यही (बे समझ) लोग हैं कि (नाहक़) कज-रवी करते हैं ० भला किसने ज़मीन को ( आदमियों और जानवरों के ) ठहरने की जगह बनाया और उसके बीच-बीच में नदी-नाले बनाये और उसके ( एक वज़्ने-ख़ास पर रखने के ) लिये अटल-पहाड़ बनाये और ( मीठे और खारी ) दो समन्दरों में हद्दे-फ़ासिल रक्खी ( कि एक दूसरे से मिल न जायें )-क्या अल्लाह के साथ ( कोई और ) माबूद ( भी ) है ? ( नहीं )-मगर इन लोगों में अक्सर ( इतनी मोटी बात भी ) नहीं जानते ० भला कौन है कि जब कोई शख़्स ( बे-क़रार होकर ) उससे फ़र्याद करे, वह उस बे—क़रार की फ़र्याद को पहुंचे ? और ( उसकी ) मुसीबत को टाल दे और ( कौन है, जो ) ज़मीन में तुम लोगों को ( अपना ) नायब बनाता है ( कि तुम उसमें मालिकाना-तसर्रुफ़ करते हो )-क्या अल्लाह के साथ ( कोई और ) माबूद ( भी ) है ? ( नहीं, मगर ) तुम लोग ग़ौर ( और फ़िक्र ) को बहुत ही कम काम में लाते हो ० भला कौन ( है, जो ) तुम लोगों को ख़ुश्की और तरी की तारीकियों में राह दिखाता है और कौन ( है, जो ) अपनी रह्मत ( यानी मेंह ) के आगे ( आगे ) हवाओं को ( बारिश की ) ख़ुश—ख़बरी देने के लिये भेजता है। क्या अल्लाह के साथ ( कोई और ) माबूद ( भी ) है—

वर्षा उन लोगों पर हुई, जो ( अज़ाब आने से पहिले उससे ) डराये जा चुके थे। ( हे मुहम्मद ! ) कहो कि ( इन समस्त उद्दण्डों के विनाश पर ) ख़ुदा को धन्यवाद है और ख़ुदा के उन ( नेक ) बन्दों पर सलाम है, जिन्हें उसने प्रिय बनाया। भला ( पूज्य बनने के लिये ) अल्लाह उत्तम है ? वा वह ( लकड़ी पत्थर की मूर्त्तियाँ )—जिन्हें यह ( मुश्रिक लोग अल्लाह का ) साझी ठहराते हैं। ( मुश्रिको! सोचो तो ) आकाश को और पृथ्वी को भला किसने उत्पन्न किया ? और आकाश से तुम्हारे लिये पानी ( किसने ) उतारा ? फिर इस ( पानी ) से हमने सुन्दर ( तथा शोभायमान ) बाग़ उगाए। तुममें यह शक्ति न थी कि इन ( बाग़ों ) के वृक्षों को उत्पन्न कर देते—क्या अल्लाह के साथ कोई ( और ) पूज्य है ( जो ऐसी शक्ति रखता हो ? कोई नहीं है, परन्तु मुश्रिक समझते नहीं )-बरन् यह ( तो ) वह लोग हैं कि ( समझ बूझ कर भी ) सीधी राह से फिरते हैं ( और टेढ़ा मार्ग ग्रहण करते हैं )॥

भला पृथ्वी को ( तुम्हारे ठहरने का ) ठिकाना किसने बना दिया ? और ( किसने ) उसके ( मध्य ) नदियाँ ( और ) नहरें ( निकालीं ) और बहा दीं ? और ( किसने ) उसके ( हिलने जुलने को रोकने के ) लिये ( उस पर ) अटल-पर्वत खड़े कर दिये ? और ( किसने ) दो नदियों ( वा दो समुद्रों ) के मध्य ( एक ) पर्दा ( स्थिर ) कर दिया ( कि वह एक दूसरे से नहीं मिल सकते । बताओ ? बताओ ? ) क्या ( कोई है )-अल्लाह के साथ कोई ( और ) पूज्य है—( जो यह सब कुछ कर रहा है ? और जिसे पूजना चाहिये, कोई नहीं है )-परन्तु उन ( मुश्रिक ) लोगों में बहुत लोग ( ऐसे मूर्ख हैं कि ऐसी स्पष्ट बातों को ) नहीं जानते । ( अरे ) कौन है, जो विवश ( तथा लाचार ) की प्रार्थना स्वीकार करता है ? और ( उसकी ) आपत्ति को दूर कर देता है, जब वह ( विवश तथा लाचार ) उससे प्रार्थना करता है ? ( क्या मूर्त्तियों में यह शक्ति है ? ) और ( कौन है, जिसने ) तुम ( लोगों ) को पृथ्वी में ( अपना ) प्रतिनिधि ( तथा ख़लीफ़ा ) बना रक्खा है । क्या अल्लाह के साथ कोई ( और ) पूज्य है ? ( कोई नहीं है, किन्तु ) तुम शिक्षा (बहुत ) कम ग्रहण करते हो॥

अच्छा कौन है ? जो स्थल के तथा जल के अन्धकारों में ( सितारों और भिन्न-भिन्न रीतियों से ) तुम्हें मार्ग दिखता है और ( घटाएँ लाने वाली ठंडी २ ) पवनों को (वर्षा का ) मंगल-समाचार सुनाने के लिये अपनी दयालुता ( की बर्षा ) के आगे आगे कौन भेजता है ? ( कहो! ) है ? अल्लाह के साथ कोई ( और ) पूज्य ? ( कदापि नहीं )—

تَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ
ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ
اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۫
بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝ وَقَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا
مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ

ع

यह लोग जैसे जैसे शिर्क करते हैं, अल्लाह (की शान) उससे बालातर है ० भला कौन है, जो मख़्लूक़ात को अव्वल बार पैदा करता है, फिर इसी तरह की मख़्लूक़ात बार बार पैदा करता रहता है और कौन (है, जो) तुम लोगों को आसमान व ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह के साथ (कोई और) माबूद (भी) है? (नहीं। ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अगर (शिर्क के दावे में) सच्चे हो, तो अपनी दलील पेश करो ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि—जितनी मख़्लूक़ात आसमानों में और ज़मीन में है, उनमें से ग़ैब (की बात) की ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता और न लोगों को यह मालूम है कि कब (क़यामत होगी और दुबारा) उठा खड़े किये जायेंगे ० बात यह है कि (या तो) आख़िरत (के बारे) में इन लोगों के इल्म का ख़ातिमा ही हो गया है (या यह)—नहीं (तो) उसके बारे में इनको शक है (या यह) नहीं (तो) यह लोग (जान बूझ कर) उससे अन्धे बने हुए हैं ० और जो लोग मुनकिर हैं, वह (तअज्जुब की राह से) कहते हैं कि क्या जब हम और हमारे बाप दादा (गल सड़ कर) मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या हम फिर (ज़मीन से) निकाले जायेंगे ० पहिले से भी हमारे और हमारे बाप दादों के साथ ऐसे वादे होते चले आये हैं। हो न हो—यह अगले लोगों के ढकोसले हैं ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मुल्क में चलो फिरो और देखो कि गुनहगारों का कैसा अनजाम हुआ ० और (ऐ पैग़म्बर! तुम) इन (लोगों के हाल) पर कुछ अफ़सोस न करो और जैसी जैसी तदबीरें (तुम्हारे ख़िलाफ़ में) कर रहे हैं, उनसे तंग-दिल न हो ० और (मुन्किर मुसल्मानों से) कहते हैं कि—

---

यह लोग जैसे २ शिर्क करते हैं, अल्लाह (की शान) उससे बहुत (ऊँची और) श्रेष्ठ है। (अल्लाह के अतिरिक्त भला कौन (है, जो जीवधारियों को) पहिली बार उत्पन्न करता है? (और एक बार मारने के पश्चात क़यामत के दिन) फिर दुबारा उत्पन्न करेगा? और आकाश से (पानी वर्षाकर) और पृथ्वी से (अन्नादि उगाकर) तुम्हें कौन जीविका देता है क्या कोई (और) पूज्य अल्लाह के साथ (इन बातों में साझी) है? ("है"-तो हे रसूल! उन "है" कहने वालों से कहो कि यदि तुम (इस दावे में) सच्चे हो, तो अपना (कोई) प्रमाण उपस्थित करो॥

(हे रसूल! उनसे) कहदो कि अल्लाह के अतिरिक्त आकाश और पृथ्वी (दोनों के बसने वालों) में कोई (भी गुप्त (बातों को) नहीं जानता और (किसी को) ज्ञान नहीं कि (कब क़यामत होगी और) कब (दुबारा जीवित करके) उठा खड़े किये जावेंगे। (और रहे मुश्रिक तथा काफ़िर, तो यह न केवल क़यामत के समय से अनभिज्ञ हैं)-बरन् क़यामत ही के (स्थिर) होने में उनका ज्ञान (उन्हें) काम नहीं देता है, बरन् वह इस (की ओर) से सन्देह में (पड़े हुए) हैं। (और यही नहीं कि उनमें केवल मुकरने वाले और सन्देह करने वाले ही हैं)-बरन् (कोई २ उनमें ऐसे भी हैं, जो इन दोनों समूहों से अधिक अनोखे हैं और वह) वह लोग (हैं, जो क़यामत के प्रत्यक्ष-प्रमाण देख कर भी उसका आना असम्भव समझते हैं और इस (की ओर) से (आँखें बन्द किये हुये और) अन्धे (बने हुए) हैं॥

और काफ़िर (हैरान हो होकर) कहते हैं कि क्या जिस समय हम और हमारे बाप (दादा मर कर और गल सड़ कर बिलकुल) मिट्टी हो जावेंगे, क्या (उस समय हमको और हमारे बाप दादा को जीवित कर दिया जावेगा? और) हम (और हमारे बाप दादा पृथ्वी में से) निकाल खड़े किये जावेंगे? (और कहते हैं कि यह सब ढकोसला बाज़ी है)—ख़ुदा की शपथ! इससे पहिले (भी) हमसे यही वादा किया गया था (कि क़यामत आने वाली है)। हमसे और हमारे बाप दादा से (यही वादे सर्वदा से होते चले आए हैं। कुछ) नहीं-यह (कुछ भी नहीं है)-हाँ! बस अगले लोगों की (दन्त) कथा हैं-(जिन्हें वर्णन किया जाया करता है। सच्चाई इनमें कुछ नहीं है। हे रसूल! इन काफ़िरों के हृदय में अल्लाह का भय नहीं रहा है। इनसे) कहो कि दुनिया में चलो फिरो, और देखो कि पापियों का परिणाम (क्या हुआ और) क्यों कर हुआ और (हे रसूल! तुम) इन (की इस बकवास) पर शोक न करो और जो विश्वास-घात (यह तुम्हारे साथ) करते हैं, उससे संकुचित न हो। और (हे रसूल! यह काफ़िर तुमसे) कहते हैं कि—

अगर तुम सच्चे हो, तो ( भला ) यह ( अज़ाब-दुनिया का ) वादा कब ( पूरा ) होगा ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि अजब नहीं, जिस ( अज़ाब ) की तुम जल्दी मचा रहे हो, उसमें से कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) इसमें शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार लोगों पर ( अपना बड़ा ) फ़ज़्ल रखता है ( कि जल्दी अज़ाब नाज़िल नहीं करता )-मगर अकसर लोग (उसका) शुक्र नहीं करते ० और इसमें ( भी ) शक नहीं कि जैसी जैसी बातें लोगों के दिलों में मख़्फ़ी हैं और जो कुछ यह अलानिया करते हैं, तुम्हारे पर्वर्दिगार को ( सब ) मालूम है ० और आस्मानों और ज़मीन में ऐसी कोई मख़्फ़ी बात नहीं, जो किताब—वाज़ेह ( यानी लौह महफ़ूज़ ) में न लिखी हो ० बेशक यह क़ुर्आन बनी इस्राईल की अकसर बातों ( की हक़ीक़त-वाक़ई ) को जिनमें इख़्तिलाफ़ करते हैं, उन पर ज़ाहिर करता है ० और बेशक यह ( क़ुर्आन ) ईमान वालों के हक़ में ( सरतापा ) हिदायत और रहमत है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार ( क़ुर्आन को नाज़िल करके ) अपने हुक्म से इनके आपस ( के झगड़ों ) का फ़ैसला फ़र्माता है और वह ज़बर्दस्त ( और सब कुछ ) जानता है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! तुम ) अल्लाह ही पर भरोसा रक्खो । कुछ शक नहीं कि तुम सरीह हक़ पर हो ० बेशक तुम मुर्दों को ( अपनी बातें ) नहीं सुना सकते और न बहिरों को ( अपनी ) आवाज़ सुना सकते हो—( ख़ासकर ) ऐसी हालत में कि वह पीठ फेर कर भाग खड़े हों ० और न तुम अन्धों को उनकी गुमराही से ( रोक कर ) राह दिखा सकते हो-

مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ عَسٰۤى
اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝
وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ
صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ
فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝
اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ
اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَهُدًى
وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ
بِحُكْمِهٖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ
اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى
وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝
وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ اِنْ

---

यदि तुम सच्चे हो, तो ( बताओ ! ) वह ( अज़ाब का ) वादा कब ( पूरा ) होगा ? ( तो ) तुम ( उनसे ) कहदो कि ( तनिक धीरज धरो )-बहुत सम्भव है कि जिस ( अज़ाब का स्वाद चखने ) की तुम ( लोग ) शीघ्रता कर रहे हो, उसमें ( से ) कुछ तुम्हारे पास ही आ गया हो । और ( अब तक जो देर हुई, तो उसका ) सत्य ( कारण ) यह है कि तुम्हारा पालन कर्त्ता लोगों पर बहुत ही कृपालु है ( और लोगों के निमित्त अत्यन्त कृपालु तथा दयालु है )—परन्तु बहुत से लोग (उपकार नहीं मानते और उसकी ) कृतज्ञता नहीं करते । और निस्सन्देह ( यह सत्य है कि ) जो कुछ इन ( काफ़िरों ) के हृदय गुप्त ( रूप से सोच—विचार किया ) करते हैं—( उसे भी ) तुम्हारा पालन कर्त्ता जानता है और जो कुछ ( वह ) खुल्लम खुल्ला करते हैं—( उसे भी ) । और ( इन काफ़िरों के गुप्त और प्रगट कुकर्म तो क्या )-आकाश और पृथ्वी के मध्य की कोई गुप्त ( से गुप्त ) वस्तु ( भी ऐसी ) नहीं-( जिसे अल्लाह न जानता हो । वह संसार वालों की दृष्टि से गुप्त हुआ करे )—किन्तु किताब—मुबीन ( अर्थात लौह-महफ़ूज़ और ख़ुदा के ज्ञान ) में ( उपस्थित ) है ॥

( और उस ज्ञान का एक प्रमाण यह है कि ) यह कुर्आन ( जो मुहम्मद पर उतर रहा है )—बनी इस्राईल के सामने प्रायः ऐसी बात को वर्णन करता है कि ( जिसका स्वयं उन्हें यथार्थ ज्ञान नहीं रहा और ) वह उसके विषय में ( एक दूसरे से ) विभेद करते ( रहते ) हैं । और सत्य यह है ( कि ) यह कुर्आन ईमान वालों के लिये अवश्य शिक्षा (का कारण) है और ( पूर्णतया ) रहमत है । ( रहे काफ़िर-तो ) तुम्हारा पालन कर्त्ता अपनी आज्ञा से उनका न्याय करेगा और वह बलवान ( तथा ) ज्ञानवान है । अतः ( हे मुहम्मद ! ) तुम अल्लाह पर भरोसा रक्खो ( और करने दो, जो कुछ यह काफ़िर कर रहे हैं ) । तुम अवश्य खुले सत्य पर हो ( विजय उनके मुक़ाबले में तुम्हें ही प्राप्त होगी ) ॥

( हे रसूल ! यह काफ़िर तो बिलकुल निर्जीव मुर्दों की तरह हैं और बिलकुल बहिरों की तरह हैं ) । तुम ( इन ) मुर्दों और बहिरों को ( अपने प्रचार की ) आवाज़ नहीं सुना सकते-( उन पर तुम्हारी चेष्टा कुछ प्रभाव नहीं कर सकती । विशेषतः ऐसी दशा में ) जबकि वह ( तुम्हारी ओर से ) पीठ फेर कर चल दें ( और तुम्हारी आवाज़ भी न सुनें ) । और ( हे रसूल ! यह लोग अन्धे भी हैं । इनके पास सत्य बात के देखने और समझने के लिये न ज्ञान है, न बुद्धि । इस लिये ) तुम (इन) अन्धों को इनकी पथ भ्रष्टता से ( हटाकर चाहो कि ) सीधे मार्ग पर ( लगा दो, तो ) नहीं लगा सकते--

تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاِذَا
وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ
الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا
يُوْقِنُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا
مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا
جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا
اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ
بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا
الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي
الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي
الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ۝
وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ

तुम तो बस उन्हीं को ( अपनी बातें ) सुना सकते हो, जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं—तो वह मान भी जाते हैं ० और जब ( ख़ुदा का ) वादा ( क़यामत ) इन लोगों पर पूरा ( होने को ) होगा, तो हम ज़मीन से उनके लिये एक जानवर निकाल खड़ा करेंगे कि वह इनसे बोल देगा कि फुलां फुलां आदमी हमारी बातों का यक़ीन नहीं रखते थे० और ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों को उस दिन की मुसीबत याद दिलाओ )–जबकि हम हर एक उम्मत में से उस गिरोह को जमा करेंगे, जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे। फिर उनकी मिसलें बनाई जायंगी ० यहाँ तक कि जब ( वह ख़ुदा के रूबरू ) हाज़िर होंगे, तो ( ख़ुदा उनसे ) पूछेगा कि बावजूदे कि तुमने हमारी आयतों को अच्छी तरह समझा भी न था--क्या तुमने उनको ( बे समझे ) झुटलाया या ( यह नहीं किया, तो और ) क्या करते रहे० और चूंकि यह लोग ( दुनिया की ज़िन्दगी में ) सर्कशी करते रहे–( उसका नतीजा यह हुआ कि ) वादा ( अज़ाब ) उन पर पूरा हुआ और यह लोग बात भी न कर सकेंगे ० क्या इन लोगों ने इस ( बात ) पर नज़र नहीं की–कि हमने रात को ( इस ग़रज़ से तारीक ) बनाया है कि उसमें आराम करें और दिन को रोशन ( कि उसमें चीज़ों को देखें भालें )–कुछ शक नहीं कि ( रोज़ व शब के ) इस ( इख़्तिलाफ़--हालत ) में उन लोगों के लिये--जो ईमान रखते हैं ( क़ुदरत ख़ुदा कि बहुत सी ) निशानियां ( मौजूद ) हैं ० और जिस दिन सूर फूंका जायगा, तो जो ( फ़रिश्ते ) आसमान में हैं और जो ( लोग ) ज़मीन में हैं, सबही तो ( उसकी आवाज़ सुन कर ) घबरा जायंगे, मगर जिसको ख़ुदा चाहे--( वह इतमीनान से रहेगा ) और सारे ( के सारे ) उसके हुज़ूर में दबे झुके हाज़िर होंगे ० और ( ऐ मुख़ातब ! ) तू पहाड़ों को देख कर ख़याल करता है कि (अपनी जगह) जमे हुये हैं (और हिल नहीं सकते)–मगर यह (क़यामत के दिन) बादल की तरह उड़े उड़े फिरेंगे–

तुम तो ( अपने धर्मोपदेश ) केवल उनही लोगों को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान ( लाने की योग्यता ) रखते हैं ( और जब हमारी आयतों को सुनते हैं )—तो वह ( उनको स्वीकार करते हैं और ) आधीन हो जाते हैं। और जब ( हमारे अज़ाब का ) वादा उन पर पूरा होने वाला होगा ( अर्थात् जब क़यामत निकट आजावेगी, तो ) हम पृथ्वी ( के भीतर ) से उनके ( दिखाने के ) लिये एक ( ऐसा ) जानवर निकालेंगे ( कि वह ) उनसे बोलेगा ( और बात चीत करेगा । और ) यह (बतायेगा ) कि ( काफ़िर ) लोग हमारी आयतों पर विश्वास न लाते थे। और ( हे रसूल ! काफ़िर मानें वा न मानें। तुम उन्हें उस दिन की याद दिलाते रहो )—जिस दिन हम ( अगली पिछली ) सब उम्मतों ( और जातियों ) में से उन ( अज्ञान तथा अन्धे बहिरे लोगों ) का ( एक बहुत बड़ा ) समूह एकत्रित करेंगे, जो हमारी आयतों को झुठलाते थे–( इस रीति से कि प्रथम एक पैग़म्बर की उम्मत के अवज्ञा-कारियों को बुलाया जावेगा )—फिर ( दूसरे पैग़म्बर के अवज्ञ-कारियों को बुलाया जायगा। अर्थात् ) टोली टोली ( करके ) यह ( सब अवज्ञाकारी ) इकट्ठे किये जावेंगे॥

यहां तक कि जब ( सब ) आजावेंगे, तो अल्लाह तआला उनसे कहेगा ( और पूछेगा ) कि क्या तुम हमारी आयतों को ( उन पर सोच विचार किये बिना और ) उन्हें ( पूरी तरह ) ज्ञान में लाए बिना ( ही ) झुठलाया करते थे ? अथवा ( यह नहीं, तो ) तुम ( और ) क्या करते रहे ? ( इसका उत्तर चुप रहने ) और ( पश्चाताप के अतिरिक्त उनके पास क्या हो सकता है। सो जब ) उनके अत्याचार ( तथा अन्याय ) के बदले उन पर ( हमारा ) अज़ाब अवतीर्ण ( होना आरम्भ ) हो जावेगा, तो वह ( कुछ ) न बोल सकेंगे। ( काफ़िरों ने हमारी नेअमतों की क़द्र न की—क्या यह अनीति नहीं है ? )। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात ( अंधेरी ) बनाई ( है )–जिससे कि ( लोग ) उसमें अराम लें और दिन को ( प्रकाशित और जीविका प्राप्त करने का मार्ग ) दिखाने वाला ( बनाया है )। निश्चय करके इसमें उन लोगों के लिये, जो ईमान ( की योग्यता ) रखते हैं ( हमारी ) निशानियां ( उपस्थित ) हैं॥

और ( काफ़िर तो उसी दिन समझेंगे )– जिस दिन सूर फूंका जायगा ( और उसकी आवाज़ से आकाश के फ़रिश्ते और पृथ्वी के मनुष्य तथा पशु पक्षी अर्थात् प्रत्येक ) जो आकाश में ( रहता ) और पृथ्वी में ( बसता ) है, डर जायगा उसके अतिरिक्त–जिसे अल्लाह ( ही भय से सुरक्षित रखना ) चाहे ( गा )। और ( उस दिन ) सब अल्लाह के सामने ( विवश तथा ) अपमानित ( होकर ) आवेंगे। और ( हे मनुष्य ! ) तू ( उस दिन ) पर्वतों को ( अनोखी दशा में ) देखेगा। तू उन्हें ( देख कर यही ) जानेगा ( कि ) जमे हुए ( हैं )—यद्यपि वह बादलों की चाल ( दौड़े ) चले जाते होंगे–

السَّحَابِ● صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِیۡۤ اَتۡقَنَ كُلَّ شَیۡءٍ ؕ اِنَّهٗ
خَبِیۡرٌۢ بِمَا تَفۡعَلُوۡنَ● مَنۡ جَآءَ بِالۡحَسَنَةِ فَلَهٗ
خَیۡرٌ مِّنۡهَا ۚ وَهُمۡ مِّنۡ فَزَعٍ یَّوۡمَئِذٍ اٰمِنُوۡنَ● وَمَنۡ
جَآءَ بِالسَّیِّئَةِ فَكُبَّتۡ وُجُوۡهُهُمۡ فِی النَّارِ ؕ
هَلۡ تُجۡزَوۡنَ اِلَّا مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ● اِنَّمَاۤ
اُمِرۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الۡبَلۡدَةِ الَّذِیۡ
حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَیۡءٍ ۫ وَّاُمِرۡتُ اَنۡ اَكُوۡنَ
مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ● وَاَنۡ اَتۡلُوَا الۡقُرۡاٰنَ ۚ فَمَنِ اهۡتَدٰی
فَاِنَّمَا یَهۡتَدِیۡ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَقُلۡ اِنَّمَاۤ
اَنَا مِنَ الۡمُنۡذِرِیۡنَ● وَقُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ سَیُرِیۡكُمۡ
اٰیٰتِهٖ فَتَعۡرِفُوۡنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعۡمَلُوۡنَ●

سورة القصص — ثمان وثمانون

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ●

(यह भी) अल्लाह की कारीगरी (है)—जिसने हर चीज़ को ख़ूब (पुख़्ता) तौर पर बनाया है। बेशक जो कुछ भी तुम (लोग) करते हो, वह उससे बा-ख़बर है० जो शख़्स अमल-नेक लेकर हाज़िर होगा, तो उसको उससे बेहतर (बदला) मिलेगा और ऐसे लोग उस दिन ख़ौफ़ (व ख़तर) से (भी) अमन में होंगे० और जो बुरे अमल लेकर आयेंगे, तो वह औंधे मुंह दोज़ख़ में ढकेल दिये जायेंगे (और उनसे सर-ज़निश के तौर पर कहा जायगा कि यह तो) तुमको उन्हीं अमलों की सज़ा दी जा रही है, जो तुम (दुनिया में) करते थे० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से कहो कि) मुझको तो बस यही हुक्म मिला है कि इस शहर (मक्का) के मालिक (हक़ीक़ी) की इबादत करूं, जिसने इसको इज़्ज़त दी है और सब कुछ उसी का है और (नीज़) मुझको यह हुक्म मिला है कि (उसके) फ़र्मांबर्दारों में रहूं० और यह कि लोगों को क़ुर्आन पढ़ पढ़ कर सुनाऊं। तो जो राह पर आ गया, तो वह अपने ही भले को राह पर आता है और जो गुमराह हुआ, तो तुम कहदो कि (जहाँ ख़ुदा ने और डराने वाले पैग़म्बर भेजे हैं)—मैं भी (उन) डराने वालों में से एक डराने वाला हूं और बस० और कहो कि ख़ुदा का शुक्र है! वह अनक़रीब तुमको अपनी निशानियाँ दिखायेगा और (उस वक़्त) तुम उनको पहिचान लोगे और जैसे जैसे (बुरे-भले) काम तुम लोग कर रहे हो—(ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा पर्वर्दिगार उनसे ग़ाफ़िल नहीं। जो जैसा करेगा, उसको वैसा बदला देगा०

## सूरत—क़सस

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ८८ आयतें और ९ रुकूअ हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ०—

(यह) अल्लाह की (एक) कारीगरी (होगी)—जिसने प्रत्येक वस्तु को (अपने २ ढंग पर) दृढ़ (तथा मज़बूत उत्पन्न) कर दिया (है। वह दम भर में प्रत्येक वस्तु को अदृढ़ तथा कमज़ोर भी कर सकता है। सो तुम इन बातों पर ध्यान करो वा न करो और अल्लाह को पूज्य मानो वा न मानो)। अल्लाह (प्रत्येक) उस बात से जो तुम करते हो (अभिज्ञ तथा) सूचित है। (और) जो कोई (उसके दरबार में) नेकी (के काम करके) लायेगा, तो उसके लिये (उसके यहाँ) उस (के नेक कामों) से (कहीं) अच्छा (फल उपस्थित) है। और (पहिली बात तो यही होगी कि) वह (अर्थात नेक काम करने वाले लोग) उस दिन (हर प्रकार की) घबराहट (और चिन्ता) से अमन (चैन) में होंगे। और जो (दुर्भाग्य लोग अपने साथ) बुराई लेकर उपस्थित होंगे, तो उनके मुंहों को औंधा करके (उन्हें दोज़ख़ की भड़कती हुई) अग्नि में झोंक दिया जावेगा (और उन्हें जताया जायगा कि) यह तुमको केवल उनही (कुकर्मों) का दंड दिया जा रहा है, जो तुम (संसार में) किया करते थे॥

(हे रसूल! तुम इन लोगों को बतादो कि) मुझे तो बस इस (बात) की आज्ञा दी गई है कि इस शहर (अर्थात मक्का) के स्वामी ही की पूजा करूं, जिसने उसको (और समस्त शहरों से अधिक) सम्मानित (और शोभायमान) बनाया है और (विश्वास करूं कि पृथ्वी तथा आकाश की) प्रत्येक वस्तु उसी के अधिकार (और उसी की आधीनता) में है। और (साथ ही) मुझको आज्ञा मिली है कि मैं आज्ञाकारियों में से रहूं और (लोगों को) क़ुर्आन पढ़ (पढ़) कर सुनाऊं। सो (क़ुर्आन सुनने के पश्चात) जो सीधे मार्ग पर आ गया, तो वह अपने आप ही (को लाभ पहुंचाने) के लिये सीधे मार्ग पर आएगा। और जो (क़ुर्आन सुनने के पश्चात भी) पथ-भ्रष्ट (ही) रहा, तो (हे रसूल!) तुम (खुल्लम खुल्ला) कहदो कि मैं तो (पथ भ्रष्टों को उनकी पथ भ्रष्टता के अशुभ परिणाम अर्थात अल्लाह के अज़ाब तथा कोप से) डराने वाला हूं और बस॥

और (हे रसूल!) तुम (इनसे) कहदो कि हर प्रकार की प्रशंसा (तथा स्तुति) अल्लाह के लिये (करनी उचित) है। वह अभी (अलपकाल बीत जाने के पश्चात) अपनी निशानियाँ (अर्थात क़यामत के चिन्ह) तुमको दिखावेगा। सो तुम (उस समय) उनको पहिचानोगे और (अपने प्राचीन-विरोध तथा उद्दण्डता पर धिक्कार करोगे। हे रसूल!) तुम्हारा पालन कर्त्ता (सब कुछ कर सकता है। तुम इन लोगों से कहदो कि हे संसार वालो! वह) तुम्हारे (शुभ अशुभ) कर्मों से अज्ञान नहीं है॥

## सूरत—क़सस

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ८८ आयतें और ८ रुकूअ हैं॥**

४

طسٓمٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ نَتْلُوْا عَلَيْكَ
مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا
يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ
وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ
وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ
فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَ
هُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ
مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ
فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ
وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ
لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۭ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ

وجنود

तासीम्मीम् ० यह ( सूरत भी ) किताब ( यानी क़ुर्आन ) की (चन्द) आयतें हैं, जिसके मतालिब वाज़ेह ( और आम-फ़हम ) हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) हम उन लोगों के ( फ़ायदे के ) लिये, जो यक़ीन करते हैं—मूसा और फ़िर्औन के बाज़ वाक़ई—हालात तुमको सुनाते हैं ० कि फ़िर्औन मुल्क ( मिस्र ) में ( बहुत ) बढ़ चढ़ रहा था और उसने वहां के लोगों के अलग अलग गिरोह क़रार दिये थे। उनमें से एक गिरोह ( यानी बनी इस्राईल ) को ( इस क़दर ) कमज़ोर समझ रक्खा था कि उनके बेटों को ज़िबह करवा देता और उनको औरतों ( यानी बेटियों को ) ज़िन्दा रखता। इसमें शक नहीं कि वह ( भी ) फ़सादियों में से ( एक ही फ़सादी ) था ० और हमारा इरादा यह था कि जो लोग ( उसके ) मुल्क में कमज़ोर समझे गये थे, उन पर एहसान करें और उन (ही) को सर्दार बनायें और उन (ही) को ( सल्तनत का ) वारिस ठहरायें ० और उन (ही) को मुल्क में जमायें और फ़िर्औन और हामान और उनके लश्कर को ( बनी इस्राईल की तरफ़ से ) जिस बात का ख़तरा था, वह उनही ( बनी इस्राईल के हाथ ) से उनके आगे लायें ० और हमने ( उसकी यह तदबीर की कि मूसा पैदा हुये और हमने ) मूसा की वालिदा की तरफ़ वही भेजी कि इनको दूध पिलावो। फिर जब इनको निस्बत तुमको (किसी तरह का) ख़ौफ़ हो, तो इनको दरिया में डाल देना और ( कुछ ) ख़ौफ़ न करना और न रंज करना—( क्योंकि ) हम उनको फिर तुम्हारे पास पहुंचा देंगे और ( आख़िरकार ) उनको पैग़म्बरों में से ( एक पैग़म्बर ) बनायेंगे ० ( चुनांचे मूसा की वालिदा ने उनको दरिया में डाल दिया )—तो फ़िर्औन के लोगों ने उन्हें ( बहते को ) उठा लिया कि ( आख़िरकार यही मूसा ) उनके दुश्मन और ( उनकी ) परेशानी ( के बाइस ) हों। कुछ शक नहीं कि फ़िर्औन और हामान—

---

यह ( विषय और यह ) आयतें-( जो हम तुम पर उतार रहे हैं ) एक स्पष्ट—पुस्तक ( अर्थात उस पवित्र क़ुर्आ[n] की हैं- ( जिसके आदेश इतने सरल तथा स्पष्ट हैं कि प्रत्येक सर्व—साधारण यदि उनके समझने की चेष्टा करे, तो अप[नी] बुद्धि के अनुसार सहज में उन्हें समझ सकता है । हे रसूल !) हम उन लोगों ( को शिक्षा देने और उनकी धर्म सम्बन[्धी] शक्तियों को बढ़ाने ) के लिये, जो ईमानदार हैं-तुमसे ( अत्यन्त ) सचाई के साथ मूसा और फ़िर्औन का कुछ वृतान्त वर्णन करते हैं

( कथा यह है कि ) फ़िर्औन ( मिस्र का बादशाह था । वह मिस्र की ) भूमि में ( धन दौलत तथा मान सम्मान और अहंकार [की] दृष्टि से बहुत बढ़ चढ़ गया था और बड़ा ) अभिमानी हो गया था और ( अपनी प्रजा पर तरह २ के अत्याचार किया करता था ) उसने अपनी प्रजा के कई दल बनाये थे । उनमें से एक दल ( अर्थात बनी इस्राईल ) को उसने अति—निर्बल समझ रक्खा था ( उनको भांति २ के कष्ट पहुंचाता था । यहाँ तक कि ) वह उनके ( जीते जागते ) बेटों को बध करा देता ( था ) [और] उनकी स्त्रियों ( अर्थात बेटियों ) को जीवित रखता ( था और उनसे सेवा टहल कराता था ) । सत्य यह है कि वह ( बड़े ) फ़सादियों में से था । ( फ़िर्औन तो बनी इस्राईल को नष्ट करना चाहता था ) और हम चाहते थे कि ( [मिस्र] की ) भूमि पर जो लोग दुर्बल समझे गये थे ( अर्थात बनी इस्राईल ) उन पर उपकार करें और उन्हें ( लोगों का ) इ[माम] (अर्थात नेता ) बनायें । और उन्हीं को ( फ़िर्औन के विनाश के पश्चात उसके राज्य का ) उत्तराधिकारी ठह[रायें] और ( मिस्र की ) भूमि में उन्हीं ( के पगों ) को ( भली भांति ) जमा दें । और फ़िर्औन तथा हामान ( अर्थात बादशाह और मंत्री ) [और] उनकी सेना को बनी इस्राईल ( की ओर ) से जिन ( जिन हानियों ) की सम्भावना थी, वह ( सब उन्हें ) दिखलावें । ( [जब] मूसा ने जन्म लिया ) और हमने मूसा की माता से कहला भेजा कि ( जब तक ) तुम इन्हें ( फ़िर्औन के जल्लादों से ) छिपा सको, उस समय तक तुम इनको बराबर ) दूध पिलाये जाओ । फिर जब उन ( की जान ) का भय हो, तो तुम [इन]को ( एक सन्दूक़ में रख कर ) दरिया में डाल आना और ( हर तरह धीरज रखना )—न ( डूबने का ) भय करना औ[र न] ( उनके वियोग का ) शोक करना । हम उन्हें तुम्हारे ही पास लौटा देंगे । और इन्हें ( अपना ) रसूल बनावेंगे ॥

( सो जब तक वह उन्हें गुप्त रख सकीं, रक्खा । जब भय प्रतीत हुआ ) तो ( वह उन्हें सन्दूक़ में रख कर नील नदी में डाल [आईं] सन्दूक़ बहते बहते ऐसी जगह किनारे पर आ लगा जहां से वह ) फ़िर्औन के लोगों ( को दीख पड़ा । उन्हों ) ने उस ( सन्दूक़ ) को [उठा] लिया, जिससे कि वह (अर्थात मूसा) उनके लिये (एक बड़ा) शत्रु और शोक (का कारण) होजाय। निस्सन्देह फ़िर्औन तथा हामान—

وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ۝ وَقَالَتِ امْرَأَتُ
فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّي وَلَكَ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ
أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝
وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَارِغًا إِن كَادَتْ لَتُبْدِي
بِهِ لَوْلَا أَن رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ فَبَصُرَتْ بِهِ عَن جُنُبٍ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ
مِن قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ
يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ۝ فَرَدَدْنَاهُ
إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ
وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝
وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا
وَعِلْمًا وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ وَدَخَلَ

और उनके सिपाहियों ने ( अपने हक़ में बड़ी ) ग़लती की ० और फ़िऔन की औरत ( अपने शौहर से ) बोली कि यह मेरी और तुम्हारी ( दोनों की ) आंखों की ठण्डक है--( तो तुम लोग ) इसको मारो नहीं। अजब नहीं कि हमको ( कोई ) फ़ायदा पहुंचाये या इसको अपना बेटा ही बना लें और उन लोगों को अन्जाम की ख़बर न थी ० और ( उधर ) मूसा की वालिदा का दिल बेक़रार हो गया ( और ) अगर हम उनके दिल को मज़बूत न किये रहें, तो उनसे कुछ दूर न था कि मूसा ( के हाल ) को ( सब पर ) ज़ाहिर करदें—( मगर हमने उनकी ढारस बंधाये रक्खी )—ताकि हमारे वादे का यक़ीन किये बैठी रहें ० और ( सन्दूक़ को दरिया में डालते वक़्त मूसा की वालिदा ने ) मूसा की बहिन से कहा कि इसके पीछे पीछे चली जा ! तो वह उनको ( दूर ही ) दूर से देखती रही और फ़िऔन के लोगों को ( इसकी ) मुतलक़ ख़बर न हुई ० और ( यहाँ ) हमने मूसा पर पहिले ही से ( अन्नाओं के ) दूध बन्द कर रक्खे थे ( कि वह किसी की छाती मुंह में लेते ही न थे )–इस पर ( मूसा की बहिन ने फ़िऔन के लोगों से ) कहा कि कहो तो मैं तुमको एक घराने का पता बताऊं कि वह तुम्हारे लिये इस ( बच्चे ) की पर्वरिश करेंगे और वह इसकी ख़ैर–ख़्वाहाना पर्दाख़्त भी करेंगे ० ग़रज़ हमने मूसा को फिर उनकी वालिदा के पास पहुंचा दिया, ताकि ( फ़र्ज़न्द को देख कर ) उनकी आंखें ठंडी हों और ( किसी तरह ) आज़ुर्दा-ख़ातिर न रहें और ताकि यह भी जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है--मगर ( अफ़सोस ! कि ) अक्सर लोग ( इसका ) यक़ीन नहीं करते ० और जब मूसा अपनी जवानी को पहुंचे और पूरे ( तवाना ) हुये, हमने उनको फ़ह्म--सलीम और दानिश अता फ़रमाई और नेकोकारों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं ०—

---

और उनके सैनिकों ने ( उस समय उस सन्दूक़ के उठाने में बड़ी भारी ) ग़लती की थी। और ( जब वह सन्दूक़ खोला गया और उसमें से मूसा निकले, तो ) फ़िऔन की स्त्री ( आसिया ) ने ( फ़िऔन से ) कहा यह ( बच्चा तो बड़ा प्यारा है। यह तो ) मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है। इसे बध न कर–सम्भव है कि यह ( बड़ा होकर ) हमको ( कुछ ) लाभ पहुंचावे, वा ( यह होनहार निकले, तो ) हम इसको ( लेपालक और अपना ) लड़का बनालें। ( दोनों पति पत्नी परस्पर यह वार्त्तालाप कर रहे थे ) और उन्हें ( इसकी ) ख़बर न थी ( कि उनके विनाश का कारण यही लड़का होगा ) और ( उधर ) मूसा की माता का हृदय ( पुत्र के वियोग से ) व्याकुय हो गया ( और ) यदि हम उनके दिल को दृढ़ न कर देते, तो उनसे कुछ दूर न था कि मूसा की बात ( सबको ) बता देतीं–( किन्तु हमने उनके हृदय को दृढ़ कर दिया )–जिससे कि वह ( मूसा के मिलाने का जो वचन हमने उनसे किया था, उसका ) विश्वास किये ( चिन्ता रहित बैठी ) रहें ( और व्याकुल न हों ) ॥

और ( जिस समय मूसा की माता ने मूसा को सन्दूक़ में रख कर नदी में डाला, उस समय ) उन्होंने मूसा की बहिन से कहा कि तू इसके पीछे २ चली जा ! तो वह दूर ( ही दूर ) से उन ( के सन्दूक़ ) को देखती ( हुई उसके साथ चली ) गई। और उन्हें ( अर्थात् फ़िऔन के लोगों को यह ) ख़बर ( भी ) नहीं हुई ( कि कोई इसके पीछे २ लगा आ रहा है )। और ( जब फ़िऔन ने मूसा को सन्दूक़ से निकाला और उनके पालन–पोषण का प्रबन्ध करना प्रारम्भ कर दिया, तो धायों को दूध पिलाने के लिये बुलाया। मूसा ने उनमें से किसी का दूध न पिया, क्योंकि ) हमने मूसा पर पहिले ही से ( सब ) धायों का दूध हराम कर दिया था। ( मूसा की बहिन जो उनके सन्दूक़ के साथ चली गई थी, उसने जब यह दशा देखी ) तो ( उचित समझ कर उन लोगों से ) कहा—क्या मैं तुमको ऐसे कुटुम्ब का पता बताऊं, जो इस ( बच्चे ) को तुम्हारे लिये पाले और इसका ( सच्चा ) शुभ–चिन्तक हो ॥

( अतः मूसा की माता ही मूसा को दूध पिलाने पर नियत हो गईं और ) संक्षिप्त यह कि हमने ( वादे के अनुसार ) मूसा को उनकी माता के पास वापिस पहुंचा दिया, जिससे कि ( पुत्र को देख कर ) उनकी आंखें ठंडी हों और वह शोकातुर न रहें और इस ( बात ) को जान लें कि अलाह का वादा सच्चा ( होता ) है ( और पूरा होकर रहता है )–किन्तु ( ऐसी ऐसी घटनाएं सुनने के उपरान्त भी ) बहुत से लोग ( इस तरह के हैं, जो हमारे वादों को सच्चा ) नहीं जानते। और (आगे का हाल सुनो !) जब ( मूसा पल बढ़ कर ) अपनी जवानी ( की आयु ) को पहुंचे और पूरे ( बलवान ) हो गये–( तो ) हमने उन्हें हिकमत तथा चतुराई प्रदान की। और हम शुभ–कर्म करने वालों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं ॥

ٱلْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينِ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ
فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِن شِيعَتِهِۦ وَهَٰذَا
مِنْ عَدُوِّهِۦ ۖ فَٱسْتَغَٰثَهُ ٱلَّذِى مِن شِيعَتِهِۦ عَلَى
ٱلَّذِى مِنْ عَدُوِّهِۦ فَوَكَزَهُۥ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ
عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ ٱلشَّيْطَٰنِ ۖ إِنَّهُۥ عَدُوٌّ
مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّى ظَلَمْتُ نَفْسِى
فَٱغْفِرْ لِى فَغَفَرَ لَهُۥٓ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ۝
قَالَ رَبِّ بِمَآ أَنْعَمْتَ عَلَىَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا
لِّلْمُجْرِمِينَ ۝ فَأَصْبَحَ فِى ٱلْمَدِينَةِ خَآئِفًا يَتَرَقَّبُ
فَإِذَا ٱلَّذِى ٱسْتَنصَرَهُۥ بِٱلْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُۥ ۚ
قَالَ لَهُۥ مُوسَىٰٓ إِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِينٌ ۝ فَلَمَّآ
أَنْ أَرَادَ أَن يَبْطِشَ بِٱلَّذِى هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا
قَالَ يَٰمُوسَىٰٓ أَتُرِيدُ أَن تَقْتُلَنِى كَمَا قَتَلْتَ

और ( इत्तिफ़ाक़ से एक दिन ) मूसा ऐसे वक़्त शहर में आए कि लोग ( दोपहर को ) बे-ख़बर ( घरों में पड़े सोते ) थे। तो क्या देखते हैं कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। एक तो उनकी क़ौम ( यानी बनी इस्राईल में ) का है और एक उनके दुश्मनों ( यानी फ़िर्औनियों ) में का--तो जो मूसा की क़ौम का था, उसने उस शख़्स के मुक़ाबले में, जो उनके दुश्मनों में का था, मूसा से मदद माँगी, तो मूसा ने उस ( दुश्मन ) को मुक्का मारा और ( वहीं ) उसका काम तमाम कर दिया। ( फिर ) लगे कहने कि यह तो ( मुझसे ) एक शैतानी-हर्कत ( सर्ज़द ) हुई। कुछ शक नहीं कि शैतान ( आदमी का ) दुश्मन ( और उसको ) खुल्लम-खुल्ला गुमराह करने वाला है ० ( और मूसा ने उस वक़्त ) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! ( यह तो ) मैंने अपने ऊपर ( बड़ा ही ) ज़ुल्म किया। तू मेरा गुनाह माफ़ फ़र्मा ! चुनांचे ख़ुदा ने उनका गुनाह बख़्श दिया ( और ) वह बड़ा बख़्शने वाला मेहर्बान है ० ( फिर मूसा ने ) कहा कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! जैसा तूने मुझ पर ( यह ) एहसान किया है, मैं भी आइन्दा कभी शरीर आदमियों का मददगार नहीं बनूंगा ० ग़रज़ ( रात ख़ैरियत से गुज़री, अगले दिन ) सुबह को डरते डरते शहर में गये कि देखें ( क्या होता है )--इतने में क्या देखते हैं कि वही शख़्स, जिसने कल इनसे मदद माँगी थी--( आज फिर ) उनको पुकार रहा है--( उस का पुकारना सुनकर ) मूसा ने उससे कहा कि इसमें शक नहीं कि तू तो सरीह बद--राह ( आदमी ) है–( आये दिन लोगों से लड़ा करता है ) • फिर जब मूसा ने उस ( क़िब्ती ) को, जो इनका और उस फ़र्याद करने वाले दोनों का दुश्मन था–पकड़ना चाहा, तो ( इस्राईली को शुबहा हुआ कि मुझको पकड़ना चाहते हैं और वह ) चिल्ला उठा कि मूसा ! जिस तरह तूने कल एक शख़्स को मार डाला, क्या ( इसी तरह आज ) मुझको भी मार डालना चाहता है—

( एक दिन मूसा कहीं बाहर से आए ) और नगर में ऐसे समय प्रवेश किया कि नगर के ( अधिकतर ) निवासी अचेत ( पड़े सो रहे ) थे। नगर में ( घुसकर मूसा ने ) देखा कि दो मनुष्य ( एक दूसरे से ) लड़ रहे हैं ( और उनमें ) एक उनकी जाति ( अर्थात बनी इस्राईल में ) का ( है ) और दूसरा उनके शत्रुओं ( अर्थात फ़िर्औन वालों में ) का। ( बनी इस्राईल ने कोई अपराध किया था और फ़िर्औन का आदमी उसे पकड़ करके ले जाना चाहता था। मूसा को देख कर ) उसने, जो उनकी जाति का था–उस आदमी के विरुद्ध जो उनकी शत्रु-जाति का ( मनुष्य ) था, फ़रियाद की ( और सहायता माँगी )। अतः मूसा ने ( अपने सजातीय भाई की सहायता की और ) उस ( फ़िर्औन वाले ) के मुक्का मारा और ( ऐसा सख़्त मुक्का मारा कि ) उसका जीवन ( ही ) समाप्त कर दिया। ( मूसा यह काम करने को तो कर गये, किन्तु पुनः ) कहने लगे कि यह काम तो ( मुझसे ) शैतानी हो गया। बात यह है कि शैतान ( मनुष्य का बड़ा ) शत्रु है ( और मनुष्य को ) खुल्लम खुल्ला पथ-भ्रष्ट करने वाला है॥

( और मूसा ने अल्लाह तआला से प्रार्थना की और ) कहा कि हे मेरे पालन कर्त्ता ! अवश्य मैंने अपने प्राण पर अत्याचार किया है। ( अर्थात मैं इक़रार करता हूं कि तेरे दिये हुए अंग और बल का प्रयोग मैंने उचित नहीं किया )। सो ( अबके तू ) मुझे ( मेरा अपराध ) क्षमा करदे। अतः ( अल्लाह ने ) उन्हें क्षमा कर दिया ( और उनकी प्रार्थना सुनली )। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला ( तथा ) कृपालु है। ( क्षमा पाने के पश्चात मूसा ने प्रतिज्ञा की और ) कहा कि हे मेरे पालन कर्त्ता ! जैसी तूने मुझ पर ( दया तथा ) कृपा की ( और मेरा अपराध क्षमा किया है )–मैं भी ( प्रतिज्ञा करता हूं कि ) आगे कभी अपराधियों का सहायक न बनूंगा। सो प्रातःकाल डरते डरते और टोह लेते ( कि मेरे काम की शहर में क्या चर्चा है ) शहर में चले कि अकस्मात वही मनुष्य जिसने एक दिन पहिले इनसे सहायता माँगी थी ( दीख पड़ा। और देखते क्या हैं कि आज वह फिर किसी से झगड़ रहा है और ) इन्हें ( सहायता के लिये ) पुकार रहा है। मूसा ने उसे उत्तर दिया कि इसमें सन्देह नहीं कि तू है बिलकुल ( कुस्वभाव तथा ) पथ-भ्रष्ट ( नित्य प्रति किसी न किसी से लड़ता है )।

( तिस पर भी दिखावे के लिये उसकी सहायता को बढ़े, किन्तु ) जब उस मनुष्य को कि उन ( का और उनके सजातीय भाई का अर्थात ) दोनों का शत्रु था–( उन्होंने ) पकड़ने का इरादा किया–( तो उनके सजातीय भाई ने यह समझा कि मुझ पर अप्रसन्न हो रहे हैं, इस लिये मुझे पकड़ना चाहते हैं और वह ) बोला हे मूसा ! जिस प्रकार कल एक मनुष्य को मार चुके हो ( आज ) क्या मुझे मारने का इरादा है ?

(मालूम होता है कि) बस तू यह चाहता है कि मुल्क में (ज़ोर व) ज़ुल्म करता फिरे और भला आदमी बन कर नहीं रहना चाहता ० और शहर के परले सिरे से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया (और) उसने ख़बर दी कि मूसा ! बड़े बड़े आदमी तुम्हारे बारे में मश्वरे कर रहे हैं, ताकि तुमको क़त्ल करदें। तो तुम (शहर से) निकल जावो, मैं तुम्हारे भले की कहता हूं ० चुनांचे (मूसा) शहर से निकल भागे (और) डरते जाते थे कि देखें (क्या होता है और मूसा ने शहर से निकलते वक़्त) दुआ (भी) की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मुझको (इन) ज़ालिम लोगों से नजात दे ० और जब मदयन की तरफ़ रुख़ किया (और वहां का रस्ता मालूम न था) तो (आप ही आप) कहा कि मुझको अपने पर्वर्दिगार से उम्मीद है कि वह मुझ को सीधा रस्ता दिखायेगा ० और जब शहर मदयन के कुंवें पर (जो शहर के बाहर था) पहुंचे, तो देखा कि कुंवें पर लोगों की एक भीड़ (लगी) है (और वह अपने जानवरों को) पानी पिला रहे हैं और (यह भी) देखा कि उनसे अलग को दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं। (मूसा ने उनसे) पूछा कि तुम्हारा क्या मतलब है। वह बोलीं जब तक (दूसरे) चर्वाहे (अपने जानवरों को पानी पिला कर) हटा न ले जाएं, हम (अपनी बकरियों को पानी) पिला नहीं सकते और हमारे वालिद बहुत बूढ़े हैं ० यह सुनकर (मूसा ने) उनके लिये (पानी खींच कर उनकी बकरियों को) पिला दिया, फिर (वहां से) हट कर (एक जगह) साये में जा बैठे और (चूंकि भूखे थे) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! तू (अपने ख़्वाने-करम से इस वक़्त) जो (नेअमत भी) मुझको भेज दे, मैं उसका (सख़्त) हाजत-मन्द हूं ०—

نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۖ إِن تُرِيدُ إِلَّا أَن تَكُونَ جَبَّارًا
فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَن تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ●
وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَا مُوسَىٰ
إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ
إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ● فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا
يَتَرَقَّبُ ۖ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ●
وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ رَبِّي
أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ● وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ
مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ
وَوَجَدَ مِن دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۖ قَالَ
مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرِّعَاءُ ۖ
وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ● فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ
إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ

(यह तो) तुम (कुछ अच्छा) इरादा नहीं कर रहे, परन्तु (कदाचित) यह (विचार) हो कि संसार में उद्दण्ड और (बलवान सिद्ध) हो (जाओ)। और तुम्हारा इरादा यह नहीं है कि मेल (मिलाप) कराने वाले बनो। (बनी इस्राईल की ज़बान से यह शब्द निकले थे कि बध की घटना प्रसिद्ध हो गई और फ़िऔन तक ख़बर पहुंची) और एक मनुष्य शहर के किनारे (अर्थात् फ़िऔन के महलों की ओर) से दौड़ता हुआ (मूसा के पास) आया (और उसने) कहा कि हे मूसा ! यह सर्दार तुम्हारे विषय में सलाह कर रहे हैं कि तुम्हें मार डालें। अतः (तुम इस शहर से) निकलो (और यहां से भागो, अन्यथा कुशल नहीं है)। विश्वास करो ! मैं तुम्हारे शुभ-चिन्तकों में से हूं–(तुम्हारी भलाई की बात कह रहा हूं)॥

अतः (मूसा) उस शहर से निकले–डरते (और) कान खड़े करते (कि कोई पीछे आ तो नहीं रहा और) बोले कि हे मेरे पालनहारे ! मुझे (छिपा ! और बचा !! और) अत्याचारी लोगों (के हाथ) से मुक्ति दिला। (आख़िर मैं किधर जाऊं और किधर न जाऊं ?) और जब (मूसा ने) मदयन की ओर मुंह किया (तो) कहा, आशा है कि मेरा पालन कर्त्ता मुझे सीधा (और सत्य) मार्ग दिखावेगा (और मदयन पहुंचा देगा। सो अल्लाह ने ऐसा ही किया) और (मूसा मदयन का मार्ग न जानते हुये भी मदयन जा पहुंचे)। जब वह मदयन के पानी (अर्थात कुंवें) पर आये (जो शहर के बाहर था) तो उस पर (उन्होंने भिन्न २) मनुष्यों का एक समूह देखा—(जो अपने पशुओं को) पानी पिला रहे थे। और (यह भी) देखा (कि) उन (पानी पिलाने वालों) से (कुछ) निकट दो स्त्रियां अपनी बकरियों को रोके (खड़ी) हैं। (मूसा ने उनसे) पूछा तुम्हारा क्या हाल है ? (तुम अपनी बकरियों को पानी क्यों नहीं पिलाती ?) उन दोनों ने उत्तर दिया जब तक (यह सब) चर्वाहे (अपने २ पशुओं को पानी पिलाकर) हटा न ले जायँ, हम (अपनी बकरियों को) पानी नहीं पिला सकते। (और इसका कारण यह है कि हम स्त्री हैं और निर्बल हैं) और हमारे पिता (जो हमारे अकेले संरक्षक हैं)–बहुत बूढ़े हैं॥

(मूसा ने यह बात सुनी) तो (उन्हें इन स्त्रियों पर दया आ गई और उनके लिये) पानी (खींच लिया और) उन (की बकरियों) को पिला दिया। फिर (वहाँ से) हटकर (एक) छाया (के स्थान) में जा बैठे और (चूंकि बहुत भूखे थे, ख़ुदा से) प्रार्थना करने लगे कि हे मेरे पालन कर्त्ता ! (इस समय) जो वस्तु भी तू मुझको भेज दे, मैं उसका (बड़ा) इच्छुक हूं॥

इतने में उन दो औरतों में से एक ( को देखते हैं कि ) उनकी तरफ़
शर्माती चली आ रही है। उसने ( आकर मूसा से ) कहा कि मेरे वालिद
तुमको बुला रहे हैं कि वह जो तुमने हमारी ख़ातिर ( हमारी
बकरियों को पानी ) पिला दिया था, तुमको उसकी मज़दूरी दें। तो
जब मूसा उन ( बुज़ुर्ग ) के पास पहुंचे और उनसे ( अपना )
हाल बयान किया, तो ( उन्होंने ) कहा कि ( अब किसी तरह का )
अन्देशा न करो। तुम ज़ालिम लोगों से बच आये ० फिर उन दो
( औरतों ) में से एक ने ( अपने बाप से ) कहा कि अब्बा जान ! इन
को नौकर रख लीजिये, क्योंकि बेहतर से बेहतर आदमी जो आप
नौकर रखना चाहें, मज़बूत ( और ) अमानतदार होना चाहिये ( और
इस शख़्स में ज़ाहिरा दोनों सिफ़तें पाई जाती हैं ) ० ( इस पर उन
बुज़ुर्ग ने मूसा से ) कहा कि मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो बेटियों
में से एक को इस ( महर ) पर तुम्हारे निकाह में दूं कि तुम आठ
बरस मेरी नौकरी करो और अगर तुम दस ( बरस ) पूरे करदो,
तो तुम्हारा एहसान है। और मुझको तुम पर ( ज़ियादा मेहनत )
मशक़्क़त डालनी मन्ज़ूर नहीं ( और ) तुम मुझको इन्शाअल्लाह
( ख़ुश-मामला ) भला आदमी पाओगे ० ( मूसा ने ) कहा ( बस तो )
यह बात मेरे और आप के दरमियान ( पक्की ) हो चुकी—( मुझको
इख़्तियार है ) दोनों मुद्दतों में से जौनसी ( मुद्दत चाहूं ) पूरी करदूं।
मुझ पर किसी तरह का जब्र नहीं और ( यह ) जो मेरे और आप
के दरमियान में क़ौल व क़रार हुआ है, अल्लाह इसका गवाह है ०
फिर जब मूसा ने ( अपनी ) मुद्दत ( मुलाज़िमत ) पूरी की और अपनी
बीबी को लेकर रवाना हुये, तो ( कोहे ) तूर की तरफ़ से इनको
एक आग ( सी ) दिखाई दी—

خَيْرٍ فَقِيْرٌ فَجَاۗءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَاۗءٍ
قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ
لَنَا فَلَمَّا جَاۗءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ
لَا تَخَفْ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالَتْ
اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ اِنَّ خَيْرَ مَنِ
اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ۝ قَالَ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ
اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓي اَنْ
تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ
عِنْدِكَ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ سَتَجِدُنِيْٓ
اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ
وَبَيْنَكَ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ
عَلَيَّ وَاللّٰهُ عَلٰي مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝ فَلَمَّا قَضٰى ٤
مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖٓ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ

الطُّور

( इतने में देखते क्या हैं कि ) उन दोनों ( स्त्रियों ) में से ( जिन्हें उन्होंने पानी पिलाया था ) एक लज्जा करती
उनके पास चली आती है ( और वह आते हो ) बोलो कि मेरे पिता ने तुम्हें बुलाया है, जिससे कि तुमने जो हमारे लिये पा
( खींचा और हमारो बकरियों को ) पिलाया, उसका तुम्हें बदला दें। सो ( मूसा खड़े हो गये और ) जब उनके ( पिता के
पास पहुंचे और ( बात चीत करते समय ) उनसे ( अपना समस्त ) वृतान्त वर्णन किया, तो ( उन बुज़ुर्ग ने मूसा को धी
बंधाया और ) कहा कि ( अब किसी प्रकार की ) चिन्ता न करो। तुम अत्याचारियों से बच आये। उन दोनों ( स्त्रियों ) में
एक ( स्त्री ) ने ( अपने पिता × से ) कहा, हे हमारे पिता ! इनको ( अर्थात् मूसा को तो तुम ) नौकर रख लो। क्योंकि सर्वो
मनुष्य जिसे तुम नौकर रक्खो-( और अपने काम काज के लिये पसन्द करो, तुम्हारी राय में भी वही हो सकता है, जो ) ब
वान ( भी हो और ) अमानतदार ( भी ) हो ( और इन साहब में यह दोनों गुण वर्तमान हैं )॥

( शुऐब ने मूसा से ) कहा कि मेरा यह इरादा है कि मैं अपनी ( इन ) दो बेटियों में से, जो यह ( सामने उपस्थि
हैं, एक को तुमसे ब्याह दूँ-इस ( शर्त ) पर कि तुम मेरी आठ साल नौकरी करो-( अर्थात् आठ वर्ष की सेवा इसका महर
और यदि ( आठ के बदले ) दस वर्ष पूरे करदो, तो वह तुम्हारी ओर से ( एक उपकार ) होगा। और ( विश्वास रक्खो ! )
आन्तरिक-विचार यह नहीं है कि तुम पर ( किसी कठिन ) परिश्रम ( का बोझ ) डालूं। यदि अल्लाह ने चाहा, तो मुझे
नेक आदमी पाओगे। ( मूसा ने ) कहा ( स्वीकार है )। यह मेरे और तुम्हारे मध्य ( प्रतिज्ञा ) है। मैं दोनों समयों में से
मा ( समय चाहूं ) पूरा करूं। उसके पश्चात मुझ पर ( किसी नई शर्त की ) विशेषता नहीं ( होगी ) और जो कुछ हम (
समय ) कह रहे हैं, अल्लाह उसका वकील अर्थात् कार्य-कर्त्ता है। ( हमने अपना मामला उसी के सिपुर्द किया ) ॥

अतः ( मूसा शुऐब के कुटुम्ब में रहने सहने लगे और ) जब मूसा ने ( नियत ) समय समाप्त कर लिया
( शुऐब से आज्ञा लेकर ) अपनी स्त्री को ( अपने घर ) ले चले-( तो चलते २ मार्ग भूल गये और इधर उनकी स्त्री को
जनने का दर्द आरम्भ हो गया और आग की आवश्यकता हुई। आग की चिन्ता में थे कि उजाड़ जंगल में कहां से पैदा
जो अचानक ) तूर ( पर्वत ) की ओर से अग्नि ( चमकती ) दृष्टि पड़ी—

× टीका—यह हज़रत शुऐब और उनकी बेटियों का ज़िक्र है:—हसन निज़ामी ॥

الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ
نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ
النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ● فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ
مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ
مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ
الْعٰلَمِيْنَ ● وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهَا
تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۚ
يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۚ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ●
اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ
غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ
فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ۚ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ● قَالَ رَبِّ اِنِّيْ
قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ● وَاَخِيْ

(मूसा ने) अपने घर के लोगों से कहा कि तुम लोग (इसी जगह) ठहरो। मुझको एक आग (सी) दिखाई दी है (और मैं वहां जाता हूं)-शायद वहाँ से तुम्हारे पास (रस्ते की) कुछ ख़बर (ले आऊं) या (हो सके, तो) आग की एक चिङ्गारी लेता आऊं, ताकि तुम लोग तापो ० फिर जब मूसा आग पास पहुंचे, तो (उस) मुबारक जगह में मैदान के दाहिने किनारे (एक) दरख़्त (था, उसमें) से उनको आवाज़ आई कि मूसा! (यह तो) हम अल्लाह हैं, सारे जहान के पर्वर्दिगार ० और (साथ ही) यह (भी आवाज़ आई) कि तुम अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो, तो जब (मूसा ने) लाठी को (डाला और उसको इस तरह) चलते हुए देखा कि गोया वह (ज़िन्दा) सांप है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे को (मुड़ कर भी) न देखा। हमने (फ़र्माया) मूसा! आगे आवो और (किसी बात का) ख़ौफ़ न करो। तुम (हर तरह से) अमन में हो ० अपना हाथ अपने गरेबान के अन्दर रक्खो (और फिर निकालो, तो वह) बग़ैर किसी रोग के (भला चङ्गा) सफ़ेद निकलेगा और रफ़े-ख़ौफ़ के लिये अपने बाज़ू अपनी तरफ़ सुकेड़ लो। ग़रज़ (असा और यदे-बैज़ा) यह दोनों मोजिज़े अतीयए-रब्बानी हैं-(जो तुम्हारी मार्फ़त) फ़िर्औन और उसके दर्बारियों की तरफ़ (भेजे जाते हैं)-क्योंकि वह (बड़े) नाफ़र्मान लोग हैं ० (मूसा ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मैंने उनमें से एक आदमी (क़िब्ती) का ख़ून कर दिया है, तो मुझे अन्देशा है कि (कहीं) मुझको (उसके एवज़ में पकड़ कर) मार (न) डालें ० और मेरे (बड़े) भाई—

---

(मूसा ने) अपनी स्त्री से कहा, तुम (यहीं) ठहरो। मैंने (इधर पर्वत पर) आग (चमकती) देखी है। (मैं वहाँ जाता हूं)- कदाचित वहां से तुम्हारे पास (मार्ग की भी कुछ ख़ैर) ख़बर ला सकूं वा आग का अंगारा (तो) तुम्हारे तापने को (ले ही आऊँगा)। अतः (मूसा उस आग की ओर चल दिये और) जब उसके निकट पहुंचे, तो उनको उस बरकत वाले स्थान में मैदान की दाईं ओर से (एक) वृक्ष (में) से यह आवाज़ आई कि हे मूसा! मैं अल्लाह हूं; समस्त संसार का पालने वाला। और यह (आवाज़ आई) कि अपना सोंटा (पृथ्वी पर) डाल दो। सो (सोंटा को पृथ्वी पर डालने के पश्चात) जब (उन्होंने) उसको देखा कि वह सर्प की तरह (हिलता, डोलता और) लहराता है, तो (वह) पीठ फेर कर चले और पीछे मुड़कर (भी) न देखा। (तब हमने फिर पुकारा कि) हे मूसा! (इधर) आओ! (और) आगे (बढ़ो!) और डरो मत। तुम (हर तरह) अमन में हो (तुम्हें अपने सोंटे के परिवर्तन से कुछ हानि नहीं पहुंचेगी)॥

(मूसा वापिस लौटे, तो हमने उन्हें दूसरी आज्ञा यह दी कि) अपना हाथ अपने गरेबान के भीतर करलो (और फिर निकालो!) वह बिना किसी रोग के अत्यन्त प्रकाशमान होकर निकलेगा। (अर्थात कोढ़ वालों का सा सफ़ेद नहीं)। और (सोंटे के परिवर्तन की तरह इससे भी) डर (लगे, तो उसके दूर करने) के लिये अपना (वह) हाथ (फिर) अपने (गरेबान और) बग़ल से मिला लेना-(हाथ पहिली दशा पर आ जायगा)। बस यह (सोंटा और हाथ का चमकना) दोनों तुम्हारे पालन कर्त्ता (की ओर) से (तुम्हें) चमत्कार (के रूप में दिये जाते) हैं-फ़िर्औन और फ़िर्औन के सर्दारों की ओर (पहुंचाने के लिये)-क्योंकि वह (बड़े) कुकर्मी (और अवज्ञाकारी) हैं। (मूसा ने) कहा, हे मेरे पालन कर्त्ता! मैंने इनमें का एक मनुष्य मार डाला है। इस लिये मुझे यह भय है कि (कहीं वह मुझसे बदला न लें और) मुझ को मार न डालें॥

हारून उनकी ज़बान मुझसे ज़ियादा साफ़ है। तू उनको ( मेरा ) मददगार बनाकर मेरे साथ भेज! कि वह मेरी तस्दीक़ करें-(क्योंकि) मुझको अन्देशा है कि ( फ़िर्औन के लोग ) मुझको झुटलायेंगे ( तो उनको क़ायल-माक़ूल करने के लिये गोयाई की ज़रूरत है ) ० फ़र्माया ( अच्छा! ) हम तुम्हारे भाई को तुम्हारा क़ूवते-बाज़ू बनायेंगे और तुम दोनों को ऐसा ग़लबा देंगे कि फ़िर्औन के लोग तुम तक पहुंच भी न सकेंगे—( तो बे-तअम्मुल ) हमारे मोजिज़े लेकर जावो ( कि ) तुम दोनों और जो तुम दोनों की पैरवी करे ( सब ) ग़ालिब रहोगे ० तो जब मूसा हमारे खुले हुये मोजिज़े लेकर उनके पास आये, वह लगे कहने कि यह ( मोजिज़े तो एक क़िस्म का ) जादू हैं ( और इनको ) नाहक़ ( ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब किया जाता है ) और हमने तो अपने अगले बाप दादों में ऐसी बातें सुनी नहीं ० और मूसा ने कहा कि जो शख़्स ख़ुदा की तरफ़ से ( दीन ) हक़ लेकर आया है और आख़िरकार जिसका अन्जाम बख़ैर होना है, मेरे पर्वर्दिगार को ( उसका हाल ) ख़ूब मालूम है। यह बात तह-क़ीक़ है कि जो लोग बरसरे-नाहक़ हैं, उनको ( कभी ) फ़लाह होनी नहीं ० और फ़िर्औन ने कहा ऐ अह्ले-दर्बार! मुझको तो अपने सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा मालूम नहीं ( और मूसा एक ख़ुदा का निशान देता है और अपने वज़ीर की तरफ़ ख़िताब करके कहा कि ) ऐ हामान! अच्छा तू हमारे लिये मिट्टी ( की ईंटों ) को आग लगा! ( यानी पज़ावे पकवा ) और ( उनसे ) हमारे लिये एक ( पक्का ) महल चुनवा, ताकि हम ( उस पर चढ़ कर ) मूसा के ख़ुदा को झांकें और हम तो ( इस दावे में ) मूसा को झूटा ही समझते हैं ० और फ़िर्औन और उसके लश्करों ने नाहक़ ( नारवा ) मुल्क में बहुत सर उठाया—

هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً
يُّصَدِّقُنِيْٓ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝ قَالَ سَنَشُدُّ
عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا
فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا بِاٰيٰتِنَآ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا
الْغٰلِبُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا
مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ
اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ
جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ
فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا
لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ

ع ١٠

( इससे मेरा यह तात्पर्य नहीं हैं कि मैं तेरे आज्ञा पालन से इन्कार करता हूं ) और ( पैग़म्बर बनना नहीं चाहता वरन् मेरी इच्छा है कि मेरे भाई को भी इसी प्रकार के काम पर नियत किया जाय )। मेरे भाई ( जिनका नाम ) हारून ( है ) उनकी ज़बान मुझसे अधिक चलती है। अतः उनको मेरे साथ ( मेरा ) सहायक बनाकर भेज, जिससे कि वह मुझे माने ( क्योंकि ) मुझको आशंका है कि ( फ़िर्औन तथा उसके साथी ) मुझे झुठलाएँगे ( उस समय उनकी सहायता की आवश्यकता होगी )। ( ख़ुदा की ) आज्ञा हुई ( तुम्हारी यह इच्छा भी स्वीकार है )। हम अवश्य तुम्हारे भाई को साथ करके तुम्हारी भुजाओं को दृढ़ करेंगे। और ( यही नहीं, तुम्हें धैर्य रखना चाहिये )–हम तुम दोनों को ( इतना ) प्रबल करेंगे कि ( विरोधी ) लोग तुम तक पहुंच ( भी ) न सकेंगे। ( सो अब ) तुम हमारे चमत्कार लेकर ( चले जाओ और विश्वास रक्खो कि ) तुम दोनों और जो तुम दोनों का अनुगमन करे ( सब ) विजयी रहोगे ॥

सो जब मूसा हमारे ( यह ) खुले खुले मोजिज़े लेकर उन ( लोगों अर्थात फ़िर्औन और उसके सर्दारों ) के पास आये ( तो ) उन्होंने ( वही मूसा के विचार और आशा के अनुसार ) कह दिया कि यह ( चमत्कार कुछ ) नहीं है, वरन् ( वास्तव में एक प्रकार का ) कल्पित स्वाँग है और हमने अपने पहिले पूर्वजों में ऐसी बातें ( कभी ) नहीं सुनीं । मूसा ने उत्तर दिया कि मेरा पालन कर्त्ता ( ही ) उस मनुष्य को ख़ूब जानता है, जो शिक्षा-मार्ग उसके पास से लेकर आया है और जिसका परिणाम अन्त में अच्छा होने वाला है। ( याद रक्खो! ) अत्याचारी ( और असत्य पर चलने वाले ) लोग कभी सफलता नहीं प्राप्त होंगे ॥

( मूसा की बातें सुन २ कर ) फ़िर्औन बोला ( कि ) हे ( मेरे दर्बार के ) सर्दारो! मुझे ( तो ) अपने सिवा तुम्हारा कोई पूज्य मालूम नहीं होता। अतः ( हे मेरे मन्त्री ) हामान! ( तू ) मेरे लिये मिट्टी ( की ईंटें बनवा कर उन ) को आग लगा ( अर्थात भट्ठा फुंकवा ) और ( उन पक्की हुई ईंटों से ) मेरे लिये एक ( बहुत ऊंचा ) महल तैयार कर, जिससे कि ( मूसा का जो यह दावा है कि अमुक ख़ुदा है और अमुक ख़ुदा नहीं है–तो उस महल पर ) चढ़ कर मैं मूसा के ख़ुदा को झांकूं और मैं ( तो इस दावे में कि मेरे अतिरिक्त कोई और ख़ुदा भी है ) मूसा को झूठा ही समझता हूं। और फ़िर्औन ने और उसकी सेना ने ( इस असार ) संसार में व्यर्थ घमंड किया—

بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ●
فَأَخَذْنٰهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الظّٰلِمِينَ ● وَجَعَلْنٰهُمْ أَئِمَّةً يَدْعُونَ
إِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُونَ ● وَ
أَتْبَعْنٰهُمْ فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ
هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ● وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ
مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولٰى
بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ● وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ
إِذْ قَضَيْنَا إِلَى مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ
الشّٰهِدِينَ ● وَلٰكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ
عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ
تَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيٰتِنَا وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ● وَمَا

ع

और उन्होंने ऐसा समझा कि वह ( मरे पीछे ) हमारी तरफ़ लौटाकर नहीं लाये जायेंगे ० तो हमने फ़िरऔन और उसके लश्करों को धर पकड़ा और उनको समन्दर में फेंक मारा। तो ( ऐ पैग़म्बर !) देखो ( तो सही ) ज़ालिमों का कैसा ( बुरा ) अन्जाम हुआ ० और हम ने उनको सर्दार ( तो ) किया था—( मगर ऐसे बुरे सर्दार ) कि ( जब तक दुनिया में रहे, लोगों को ) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते रहे और क़यामत के दिन ( सर्दारी कैसी ) उनको ( किसी तरफ़ से ) मदद ( तक तो ) मिलने ( ही ) की नहीं ० और हमने इस दुनिया में उनके पीछे फिटकार लगा दी और क़यामत के दिन तो उनका बुरा हाल होना ही है ० और अगली उम्मतों के हलाक किये पीछे हमने मूसा को ( ऐसी उम्दा ) किताब ( यानी तौरात ) इनायत की, जिससे लोगों की आँखें खुलती थीं और ( उनके लिये ) हिदायत और रहमत थी ( और ) इस ग़रज़ से ( दी गई थी ) कि लोग नसीहत पकड़ें ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) जिस वक़्त हमने मूसा को ( रिसालत के ) इख़्तिया-रात दिये, तो तुम ( तूर के ) मग़रिबी—जानिब ( जहां मूसा को रिसालत मिली थी, मौजूद ) न थे और न तुम ( इस वाक़ये के ) चश्म-दीद देखने वालों में थे ० मगर ( बात यह है कि ) हमने बहुत सी उम्मतें निकाल खड़ी कीं और उन पर बहुत से क़र्न गुज़र गये और न तुम मदयन के लोगों में रहे कि तुम उनको हमारी आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते थे ( और यूं तुमको उस वक़्त के हालात मालूम करने का मौक़ा मिला हो )—बल्कि हमको ( तुम्हें पैग़म्बर बनाकर ) भेजना ( मंज़ूर ) था ०—

---

और उन्होंने यही ख़्याल किया कि इन्हें ( अब ) हमारे पास लौट कर नहीं आना। सो हमने फ़िरऔन को और उसकी सेना को पकड़ लिया और उन ( सब ) को दरिया ( के बीच ) में फेंक दिया ( और डुबो दिया )। अतः (हे मुहम्मद !) देखो इन अत्याचारियों का आख़िर क्या परिणाम हुआ। ( आज तुम जिनके विनाश का वृतान्त सुन रहे हो, यह वह लोग हैं कि जिनको संसार में बहुत बड़ा सत्कार प्रदान किया गया था ) और ( जिन्हें ) हमने ( लोगों का ) सर्दार बनाया ( था, परन्तु उन्होंने उस उपकार का यह बदला दिया ) कि ( सदा हमारे प्राणियों को असत्य पूजा और ) दोज़ख़ ( ही ) की ओर बुलाते रहे। ( यही कारण है कि दुनिया में यह लोग नष्ट-भ्रष्ट हुये ) और क़यामत के दिन ( भी उन्हें किसी प्रकार की ) सहायता न मिलेगी ॥

और ( क़यामत के दिन तो जो होना है, वह होगा ही )—इस संसार में ( भी ) हमने उनके पीछे धिक्कार ( और फटकार ) लगा दी है ( कि जो उनके वृतान्त सुनता और पढ़ता है, उन पर धिक्कार करता है ) और क़यामत के दिन ( तो ) उनकी ( बड़ी ) दुर्दशा होनी है। और ( हे मुहम्मद ! तुम्हारी उम्मत और धार्मिक-नीति को जो मूसा की उम्मत और मूसा की धार्मिक नीति का स्थान मिल रहा है, यह कुछ अनोखी बात नहीं है )—मूसा को ( भी ) हमने अगली उम्मतों के नष्ट ( भ्रष्ट) किये पीछे ( ही तौरेत ) पुस्तक दी थी। ( अर्थात जब अगली उम्मतों ने अपनी धार्मिक नीति में परिवर्तन कर डाला, तब उस धर्मशास्त्र को नया रूप देने की आवश्यकता प्रतीत हुई और मूसा को नवीन-धर्मशास्त्र दिया गया। उसी प्रकार अब तुम्हें नवीन-धर्मशास्त्र दिया जा रहा है। और मूसा की पुस्तक का विरोधी कौन है ! वह तो ऐसी पुस्तक थी ) जो लोगों की आँखें खोलती ( और बुद्धि तीव्र करती ) थी और ( वह लोगों के लिये एक ) शिक्षा तथा रहमत थी। और इसीलिये ( दी गई थी ) कि लोग ( उससे ) शिक्षा ग्रहण करें ॥

और ( हे मुहम्मद ! तुम मूसा और मूसा की पुस्तक के विषय में क्या २ बातें वर्णन करते रहते हो। यद्यपि उस समय ) जब कि हमने मूसा को आज्ञाएं दी थीं; तुम ( तूर-पर्वत की ) पश्चिमी सीमा पर ( उपस्थित ) न थे और तुम ( इस घटना के ) देखने वालों में नहीं हो, परन्तु ( हमने तुम्हें समस्त बातें बता दीं और ) हमने ( मूसा के पश्चात ) बहुत सी जातियां उत्पन्न कीं और उन पर ( एक ) बड़ा समय व्यतीत हो गया और तुम मदयन ( शहर ) के रहने वालों के साथ ( भी ) नहीं रहे कि ( वहां तुमने मूसा का मिस्र से भाग कर आना और शुऐब की बेटी से ब्याह इत्यादि करना सुन लिया और अब ) हमारी आयतें पढ़ पढ़ कर उन लोगों को सुना रहे हो। ( काफ़िर इन बातों पर विचार नहीं करते )—परन्तु ( सत्य यही है कि ) हम ( ही तुम ) पैग़म्बर ( को ) भेजने वाले हैं ( और हम ही ने यह सब सन्देश भेजे हैं ) ॥

كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ● وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ
مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا
لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ● فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا
قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى اَوَلَمْ
يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ قَالُوْا سِحْرٰنِ
تَظٰهَرَا وَقَالُوْا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ● قُلْ فَاْتُوْا
بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ● فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ
فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ
اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي

الربع

और न उस वक़् कि हमने ( मूसा को ) बुलाया था, तुम
तूर के ( किसी ) तरफ़ मौजूद थे ( कि तुमने वह वाक़िआत चश्म-
दीद देखे हों )–बल्कि ( यह ) तुम्हारे पर्वर्दिगार की ( एक ) मेहर्बानी
है, ताकि तुम उन लोगों को डराओ, जिनके पास तुमसे पहले
कोई डराने वाला नहीं आया । अजब नहीं ( तुम्हारे डराने से ) यह
लोग नसीहत पकड़ें ० और ( हमने यह क़ुर्आन सिर्फ़ इत्मामें–हुज्जत के
लिये उतारा है कि ) मबादा इनके अपने ही करतूतों के बदले में
इन पर कोई मुसीबत आ नाज़िल हो, तो ( उस वक़् ) कहने लगें
ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! तूने हमारे पास कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा ?
( अगर पैग़म्बर भेजता ) तो हम तेरे हुक्मों की पैरवी करते और ईमान
वालों में होते ० फिर जब हमारी तरफ़ से ( दीन ) हक़ इनके पास
पहुंचा, तो लगे कहने कि जैसे ( मोजिज़े ) मूसा को मिले थे, ऐसे ही
इस ( पैग़म्बर ) को क्यों नहीं मिले ? क्या जो ( मोजिज़े ) पहिले
मूसा को मिले थे, लोग उनके मुन्किर नहीं हुये ? काफ़िरों की कहन
तो यह है कि ( मूसा और यह पैग़म्बर ) दोनों जादू ( गर ) हैं, एक
दूसरे के मददगार और ( नीज़ खुले ख़ज़ाने ) कहते हैं कि हम ( इन
दोनों में से ) किसी को भी नहीं मानते ( और न इनकी किताबों को ) ०
( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि अगर ( क़ुर्आन और तौरात
दोनों किताबें झूटी हैं और ) तुम ( अपने दावे में ) सच्चे हो, तो
ख़ुदा के हां से कोई ( और ) किताब ले आओ, जो इन दोनों से
हिदायत में बेहतर हो, मैं उसकी पैरवी करने को ( मौजूद ) हूं ० तो
अगर यह लोग तुम्हारे कहने के मुताबिक़ न कर दिखाएं, तो जान लो कि
( हक़ की नहीं, बल्कि ) सिर्फ़ अपनी ( नफ़सानी ) ख़्वाहिशों की पैरवी करते
हैं और उससे बढ़ कर गुमराह कौन ? कि ख़ुदा की तरफ़ से तो उनके पास
हिदायत है ( वै ) नहीं–( और वह ) अपनी ( नफ़सानी ) ख़्वाहिश की पैरवी
करे । बेशक अल्लाह ख़ुद—सर लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ०—

और उस समय ( भी जब ) कि हमने ( मूसा को ) पुकारा था, तुम तूर ( पर्वत ) के ( आस ) पास ( इधर उधर कहीं ) उपस्थित न थे । परन्तु तुम्हारे पालन कर्त्ता की कृपा ( और दया ) है ( कि उसने तुम्हें इस घटना से भी सचेत क[र] दिया )–जिससे कि ( उसे सुना सुना कर ) तुम उन लोगों को ( अपने पैग़म्बर होने का विश्वास दिलाओ और क़याम[त] के अज़ाब से ) डराओ कि उनके पास तुमसे पहिले ( कोई ) डराने वाला नहीं आया । कदाचित ( तुम्हारे डराने से ) य[ह] लोग शिक्षा ग्रहण करें । और ( आज लोग पैग़म्बर के मानने में संकोच कर रहे हैं और पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा–प्रद बातों [से] बेपर्वाही करते हैं । कदाचित हम भी बेपर्वाही ही कर लेते )–यदि यह बात न होती कि उनके अपने ( अशुभ ) कर्मों [के] कारण उन पर कोई आपत्ति आवे ( गी ) तो कहने लगें ( गे ) कि हे हमारे पालन कर्त्ता ! तूने हमारे पास किसी पैग़म्ब[र] को क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुगमन करते और मोमिनों ( और मुसल्मानों ) में ( सम्मिलित ) हो जाते ।

( काफ़िरों के स्वभाव और विचार अनोखे हैं )–जब हमारी ओर से सत्य ( धर्म अर्थात इस्लाम ) उनके पा[स] आया, तो कहने लगे इस ( पैग़म्बर ) को ऐसे ( चमत्कार ) क्यों नहीं दिये गये, जैसे मूसा को दिये गये थे ? ( हम पूछ[ते] हैं कि ) पहिले जो ( चमत्कार ) मूसा को मिले थे, क्या ( इन काफ़िरों ने ) उनका इन्कार नहीं किया ? ( उनके साथ [भी] यही मामला किया गया था । और आज भी जब उन्हें ज्ञात होता है कि मूसा की शिक्षा वास्तव में वह न थी, [जो] उन्होंने मान रक्खी है–वरन् यही थी जो मुहम्मद की शिक्षा है, तो निसंकोच ) कहते हैं, दोनों जादू ( गर ) हैं । ए[क] दूसरे का सहायक है । और कहते हैं कि हम दोनों में से किसी को भी नहीं मानते ॥

( हे मुहम्मद ! यह क़ुर्आन को भी नहीं मानते और जिस पुस्तक को तुम उसके समर्थन में पेश करते हो, उ[से] भी नहीं मानते—तो तुम उनसे ) कहो कि फिर तुम ( ही ) एक किताब अल्लाह के यहां से ले आओ कि जो इन दोनों ( तीनों किताबों ) [से] अधिक मार्ग दिखाने वाली हो । यदि तुम सच्चे हो ( गे, तो अवश्य कोई ऐसी पुस्तक ले आओगे । तुमको मेरी लाई हुई किताब अ[ौर] बनाई हुई किताबों से ज़िद है, परन्तु ) मैं उस ( तुम्हारी लाई हुई किताब ) का अनुगमन करूं ( गा ) । फिर यदि तुम्हारे इस कहने [को] ( हृदय से ) यह ( लोग ) पूरा न कर सकें ( और अवश्य नहीं कर सकेंगे )–तो जान लो कि इसके अतिरिक्त ( [कोई] बात ) नहीं है कि वह ( केवल ) अपनी ( मानसिक ) इच्छाओं का अनुगमन करते हैं । और उस मनुष्य से अधिक पथ–भ्र[ष्ट] कौन हो सकता है कि अपनी इच्छाओं का अनुगामी हो—बिना इसके कि अल्लाह की ओर से कोई प्रमाण ( उसके पास ) हो । ( और ) अल्लाह तआला ऐसे अत्याचारी लोगों को ( धर्म ) मार्ग नहीं दिखाया करता ॥

(और तौरात और कुर्आन दोनों किताबें हमारी उतारी हुई हैं) और हम बराबर लोगों पर (अपने) अहकाम भेजते रहे हैं, ताकि वह नसीहत पकड़ें ० जिन लोगों को कुर्आन से पहिले हमने किताब इनायत की (और वह समझदार और हक़-पसन्द भी हैं)–वह तो इस कुर्आन पर ईमान ले आते हैं ० और जब उनको कुर्आन सुनाया जाता है, तो बोल उठते हैं कि हमको तो इसका यक़ीन आ गया। कुछ शक नहीं कि यह बरहक़ है (और) हमारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (नाज़िल हुआ है)–हक़ीक़त में हम तो इस (के उतरने) से पहिले (भी इसको) मानते थे ० यही लोग हैं, जिनको इनके सब्र के बदले दोहरा अज्र दिया जायगा (कि उधर तौरात पर ईमान लाये, इधर कुर्आन पर) और (मुतहम्मिल ऐसे हैं कि) नेकी से बदी का दफ़ीआ करते हैं और हमने जो इनको दिया है, उसमें से (राहे–ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं ० और जब (किसी से) लग़्व बात सुनते हैं, तो उससे किनाराकश हो जाते हैं और (ऐसे लोगों से) कह देते हैं कि हमारे अमल हमको और तुम्हारे अमल तुमको–(हम तो) तुम्हें (दूर ही से) सलाम (करते हैं)–हम जाहिलों के लागू नहीं ० (ऐ पैग़म्बर! अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़) तुम जिसको चाहो हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है, हिदायत देता है और वही राह पर आने वालों (के हाल) से ख़ूब वाक़िफ़ है ० और (ऐ पैग़म्बर! बाज़ अहले–मक्का तुमसे) कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ दीन हक़ की पैरवी करें, तो हम अपनी जगह से उचक लिये जायं, (लेकिन) क्या हमने इनको हरम (मक्का) में जहां (हर तरह का) अमन (व इतमीनान) है, जगह नहीं दी कि—

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ● وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ● اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ● وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ
قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ
قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ● اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ
مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ● وَاِذَا
سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِى
الْجٰهِلِيْنَ ● اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ اَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِيْنَ ● وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ
نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا

और हमने तो उन (मक्का वालों) के (लाभ के) लिये (अपने) कलाम (अर्थात् कुर्आन) को (भेजा और) लगातार भेजा, जिससे कि यह (उसे सुनकर) नसीहत (तथा शिक्षा) पकड़ें। (हां! अवश्य) जिन लोगों को हमने (अपने) इस (कलाम अर्थात् कुर्आन के उतरने) से पहिले (तौरेत वा इन्जील) पुस्तक प्रदान की थी, वह (हमारे) इस (कलाम अर्थात् कुर्आन की सत्यता) पर (सच्चे दिल से) विश्वास रखते हैं। और जब उनके सामने कुर्आन का पाठ किया जाता है, तो (स्पष्ट) कह देते हैं कि हम तो इस पर ईमान रखते हैं। निस्सन्देह यह सत्य (पुस्तक) है (और अवश्य) हमारे पालन कर्त्ता की ओर से (उतारा गया है। इसमें कुछ) सन्देह नहीं कि हम तो इस (के उतरने) से पहिले ही इस (के ईश्वरवाणी होने) को सत्य मानते थे–(क्योंकि हमने तौरेत तथा इन्जील में इसके अवतीर्ण होने की भविष्य वाणी अपनी आंखों से देखी है)॥

इनही लोगों को (कि जिनके विचार भी ठीक हैं और—और कर्म भी ठीक) इनके धैर्य (तथा आधीनता करने) के कारण उनका बदला दोगुणा दिया जायगा। (उनके धार्मिक विश्वास की दशा यह है कि यह जिस प्रकार तौरेत तथा इन्जील को आकाशीय पुस्तक समझते थे, उसी प्रकार कुर्आन उतरने के पश्चात कुर्आन को उन्होंने ख़ुदा का कलाम समझा) और (कर्मों की दशा) यह (है कि) भलाई से बुराई को दूर करते हैं (अर्थात बुराई का बदला भलाई से देते हैं)। और जो कुछ हमने उनको प्रदान किया है, उसमें से यह (आवश्यकतानुसार ज़कात तथा दान-पुण्य की रीति पर अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते हैं (और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करते हैं)। और जब (किसी की ज़बान से कोई) व्यर्थ बुरी बात सुनते हैं, तो उससे (उलझते नहीं, बरन) अलग हो जाते हैं और (जब वह बुरी बात बोलने वाले ही चिपटे चले जाते हैं, तो उनसे एक दोटूक बात) कह देते हैं कि (भाइयो!) हमारे कर्म हमारे लिये हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिये। हम तुम्हें सलाम करें–(हमको क्षमा करो!)। हम (तुम जैसे) अज्ञानों के मुंह नहीं लगते॥

(हे मुहम्मद! तुम भी प्रचार सम्बन्धी कर्तव्य पालन करने के पश्चात इनके अधिक मुंह न लगा करो। इसलिये कि) तुम (ख़ुदा की इच्छा के बिना) जिसको चाहो राह पर नहीं ला सकते, बरन् अल्लाह जिसको चाहता है–(सत्य) मार्ग पर ले आता है और (सत्य) मार्ग पर आ जाने वालों को (कुछ) वही ख़ूब जानता है। (काफ़िर लोग) कहते हैं (कि हे मुहम्मद!) यदि हम तुम्हारे साथ होकर (तुम्हारे) आदेश पर चलने लगें, तो अपनी (जन्म) भूमि से (बिलकुल) रफ़ू-चक्कर कर दिये जायं। (अर्थात हमारे भाई-बन्धु हमको घर से निकाल बाहर करें)। क्या हमने उनको (रहने के लिये आदरणीय) हरम (अर्थात काबे) में जगह नहीं दी, जहां (हर प्रकार का) सुख (मिलता) है—

يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ
بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَن
مِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ
فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا
مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝ وَمَا
أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا
وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝
أَفَمَن وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَن
مَّتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ
شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ

हर क़िस्म के फल यहाँ खिंचे चले आते हैं—( घर बैठे इन का ) रिज़्क़ ( इनको ) हमारे हां से ( पहुंचता है ) व-लेकिन इनमें अक्सर ( इस नेअमत की क़द्र ) नहीं जानते ० और हमने बहुत सी बस्तियां हलाक कर मारीं, जो अपनी ( इफ़राते ) मआश ( की हालत ) में ( खा पी कर ) अफर गई थीं। तो ( अब ) यह उन ( ही लोगों ) के घर हैं, जो उनके ( हलाक हुये ) पीछे आबाद ( ही ) नहीं हुये, मगर शाज़ व नादिर और ( आख़िरकार उनके माल व मता के ) हमही वारिस हुये ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) जब तक तुम्हारा पर्वर्दिगार किसी क़स्बे में पैग़म्बर न भेज ले और वह उनको हमारी आयतें पढ़ कर न सुना दे, उस ( की शाने-इन्साफ़ ) से बईद है कि ( बे इत्मामे-हुज्जत ) बस्तियों को हलाक कर दिया करे और हम बस्तियों को तबही हलाक करते हैं, जबकि वहां के लोग नाफ़र्मानी इख़्तियार कर लेते हैं ० और ( लोगो ! ) जो कुछ भी तुमको दिया गया है ( वह ) दुनिया की ज़िन्दगी के ( चन्द रोज़ा ) फ़ायदे हैं और यहीं की ( ज़ेब व ) ज़ीनत और जो ( अज्र व सवाब ) अल्लाह के हां है, वह ( इससे ) कहीं बेहतर और बाक़ी रहने वाला है। क्या तुम लोग ( इतनी बात भी ) नहीं समझते ० भला वह शख़्स, जिससे हमने ( बहिश्त का ) पसन्दीदा वादा कर रक्खा है और वह आख़िरत में उसको मिलने वाली है, क्या ( आराम व आसाइश के एतिबार से ) उस जैसा हो सकता है, जिसको हमने दुनिया की ज़िन्दगी के ( चन्द रोज़ा ) फ़ायदे पहुंचाये। फिर क़यामत के दिन वह उन लोगों में होगा, जो ( जवाब-दिही के लिये ख़ुदा के रूबरू ) हाज़िर किये जायेंगे ० और जिस दिन ख़ुदा काफ़िरों को बुलाकर पूछेगा कि जिन लोगों को तुम ( हमारे शरीक ) समझते थे-( वह ) हमारे शरीक कहाँ हैं ? ( चुनाँचे वह शरीक भी हाज़िर किये जाएँगे ) ०—

( और ) जिसमें हर प्रकार के फल ( फूल ) खाने के निमित्त हमारे पास से चले आते हैं। ( यदि यह समझदार होते, तो समझते कि जब कुफ़्र शिर्क की दशा में ख़ुदा की हम पर इतनी बड़ी कृपा है, तो क्या जब हम उस सच्चे दिल से ईमान ले आवेंगे, तो वह हमारी ख़बर न लेगा ? ख़ुदा तो इनकी ख़बर अवश्य लेगा )–किन्तु यह ( कृतघ्न ) हैं कि उसकी कृपाओं को ) समझते नहीं। और हमने बहुत सी ऐसी बस्तियों को नष्ट ( भ्रष्ट ) कर डाला कि जिनके रहने वाले अपने ( उत्तम ) रहन सहन पर ( बहुत ) गर्व करते ( और अपनी सेना की अधिकता पर बहुत फूले हुए ) थे। सो यह ( उजाड़ ख... जिन्हें तुम शाम-देश के मार्ग में आते जाते देखते हो )– उन ( ही ) के मकान हैं, जो उनके पश्चात कभी आबाद ( ही ) नहीं... किन्तु ( हां ! इतना अवश्य हुआ कि कोई अतिथि उधर आ निकला, तो वहां कुछ देर विश्राम कर लिया वा बहुत से ... रात व्यतीत करली और बस। परन्तु ऐसा संयोग भी ) बहुत कम ( होता है ) और ( अन्त में उन बस्तियों और बस्ती वालों के ... दौलत तथा भूमि के ) हम ही उत्तराधिकारी अर्थात मालिक रहे॥

और ( हे रसूल ! ) तुम्हारा पालन कर्त्ता बस्तियों को नष्ट नहीं किया करता, जब तक कि उनमें की किसी बस्ती में ( अपना ) कोई रसूल न भेज ले कि जो हमारी आयतें उन्हें पढ़ पढ़ कर सुनाए और ( हमारा यह नियम है कि ) हम बस्तियों को नष्ट नहीं किया करते, किन्तु उस समय–जबकि वहां के रहने वाले ( हमारे रसूल को झुठलावें और बड़े ) अत्याचारी ( तथा अन्यायी हो गये ) हों। और ( लोगो ! ) जो वस्तु तुमको ( दुनिया में ) दी गई है, वह तो ( केवल ) संसर के ( असार ) जीवन का सुख ( चैन ) और ( केवल ) दुनिया ( ही तक ) का ठाट ( बाट ) है। और ( याद रक्खो ! कि ) जो ( पाप पुण्य तुम्हारा ) अल्लाह के ( उपस्थित ) है, वह ( संसार की प्रत्येक वस्तु से बहुत ) उत्तम और चिरकाल तक रहने वाला ( और आनन्द दायक ) है। ( लोगो ! ) क्या तुम ( इतना भी ) नहीं समझते॥

भला वह मनुष्य जिससे हमने अच्छा वादा कर रक्खा है और वह ( वादा इतना सच्चा है कि उ... फल अर्थात जन्नत ) उसको ( अवश्य ) मिलेगा—( क्या वह ) ऐसा ही है, जैसा वह मनुष्य, जिसको हमने स... के ( असार ) जीवन का ( कुछ ) सामान दे दिया ? ( और वह उस सामान को लेकर ख़ुदा का भजन भूल ग... और ) फिर ( मरने के पश्चात ) क़यामत के दिन वह उन ( अपराधियों ) में से हुआ, जो ( उत्तर देने के नि... ख़ुदा के दरबार में ) हाज़िर किये जावेंगे। और ( वह दिन बड़ा भयानक होगा )–जिस दिन अल्लाह उन ( समस्त अपराधि... को बुलावेगा और पूछेगा कि हमारे वह साझी कहाँ हैं ? जिन्हें तुम ( हमारा शरीक ) समझते थे॥

حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۤءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا
اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ مَا كَانُوْٓا
اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ● وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ
لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ● وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ
فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ● فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ
الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ● فَاَمَّا
مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ
مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ● وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ
مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ● وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ
وَمَا يُعْلِنُوْنَ ● وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ
الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ

तो यह ( शुरका ) जो फ़र्मूदए-खुदा के मुस्तवजिब ठहरेंगे, बोल उठेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! ( बेशक ) यह वही लोग हैं, जिनको हमने बहकाया-( मगर ) जिस तरह हम खुद ( बिला जब्र व इकराह ) बहके थे, इसी तरह हमने इनको भी ( बिला जब्र व इकराह ) बहकाया। हम तेरे हुज़ूर में ( इनकी गुमराही की जवाब-दिही से ) दस्त-बर्दारी करते हैं। यह लोग हमको नहीं पूजते थे ० और ( फिर मुश्रिकीन से ) कहा जायगा कि अपने ( उन ) शरीकों को ( जिन्हें तुम शरीके-खुदाई समझते थे, अपनी मदद के लिये ) बुलावो। चुनांचे यह लोग इनको बुलायेंगे, तो वह इनको जवाब तक भी न देंगे और ( मुश्रिकीन अपनी आंखों ) अज़ाब को देख लेंगे। ऐ काश! यह लोग (दुनिया में) राहे-रास्त पर होते ( तो इस रोज़-बद को न पहुंचते ) ० और जिस दिन खुदा काफ़िरों को बुलाकर पूछेगा कि पैग़म्बरों ( ने तुमको समझाया, तो उन ) को तुमने क्या जवाब दिया ० तो उस दिन उनको कोई बात न सूझ पड़ेगी और वह आपस में पूछ गछ भी न कर सकेंगे ० तो जिसने ( दुनिया में ) तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल ( भी ) किये, तो उम्मीद है कि ( आख़िरत में ) ऐसा शख़्स फ़लाह पाने वालों में हो ० और ( ऐ पैग़म्बर! ) तुम्हारा पर्वर्दिगार जैसे लोग चाहता है, पैदा करता है और ( उनमें से जिसको चाहता है )-मुन्तख़ब कर लेता है। इन्तिख़ाब लोगों के इख़्तियार में नहीं। यह लोग जैसे जैसे शिर्क करते हैं, अल्लाह ( की ज़ात ) उससे पाक और ( उसकी शान उससे बहुत ) बुलन्द है ० और ( ऐ पैग़म्बर! ) जो ( ख़यालात ) यह लोग अपने दिलों में छिपाते और जो ज़ाहिर करते हैं, तुम्हारा पर्वर्दिगार उनको ( ख़ूब ) जानता है ० और वही अल्लाह है कि उसके सिवा कोई ( और ) माबूद नहीं। दुनिया और आख़िरत ( दोनों ) में उसी की तारीफ़ है और उसी की हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुम लोगों को लौट कर जाना है ०—

( और फिर ) वह ( शैतान, मनुष्य वा मूर्त्ति ) जिन पर ( हमारे अज़ाब का ) वादा पूर्ण हो जावेगा ( और जिन्हें दुनिया में हमारा शरीक माना जाता था, खुले दरबार हाज़िर होंगे और ) कहेंगे कि हे हमारे पालन कर्त्ता! ( इसमें सन्देह नहीं कि ) यह वही लोग हैं, जिनको हमने बहकाया ( किन्तु हमने उन पर किसी प्रकार का ज़ोर कभी नहीं किया। इन्हें पूर्ण अधिकार था कि हमारे बहकाये में न आते )। हमने ( तो ) उनको ऐसा ( ही ) बहकाया था, जैसे हम आप ( बिना किसी के दबाव डाले सीधे मार्ग से ) बहक गये थे। ( हम ) खुदा के दरबार में ( हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हैं कि ) हम ( इनके कुफ्र शिर्क के पाप से ) घृणा करते हैं। और यह लोग ( चूंकि ) विशेषतः हमारी पूजा नहीं किया करते थे ( बरन अपनी इच्छानुसार चलते थे, इसलिये यह स्वयं ही अपने पापों का ज़िम्मेवार हैं ) ॥

और ( फिर इन मुश्रिकों से ) कहा जायगा, बुलाओ! ( अपनी सहायता के लिये ) अपने "शरीकों" को, तो वह उन्हें पुकारेंगे ( परन्तु ) वह ( अपनी लाचारी के कारण ) उनकी पुकार को न सुनेंगे और ( उनकी किसी प्रकार की सहायता न कर सकेंगे। उस समय ) उन्हें ( दोज़ख़ का ) अज़ाब सामने दृष्टि पड़ेगा। ( और वह कहेंगे ) क्या अच्छा होता! यदि हम सीधे मार्ग पर होते (जिससे कि इस अज़ाब से सुरक्षित रहते )। और ( वह दिन बड़ा भयानक होगा )-जिस दिन अल्लाह उन्हें बुलावेगा और पूछेगा ( कि कहो! संसार में ) तुमने ( हमारे ) रसूलों को क्या उत्तर दिया था? ( जब वह हमारा सन्देश तुम्हारे पास लेकर आये थे )-तो उस दिन इन्हें कोई बात न सूझेगी और ( खुदा के भय से ) यह आपस में ( एक दूसरे से कुछ ) पूछ-गछ ( और बात-चीत ) न कर सकेंगे। और जिस मनुष्य ने ( दुनिया में पापों से ) तौबा की और ( सच्चे दिल से अल्लाह रसूल पर ) ईमान ले आया और ( ईमान लाने के बाद ) उसने कर्म भी अच्छे किये, तो ( खुदा की ओर से पूर्ण ) आशा है कि वह मुक्ति पाने वालों में से हो ॥

और ( हे रसूल! ) तुम्हारा पालन कर्त्ता जिसको चाहता है, उत्पन्न कर देता है और जिसको चाहता है ( अपना रसूल बनाने के लिये ) छाँट लेता है। ( जिस प्रकार लोगों का उसकी सृष्टि में किसी प्रकार का साझा नहीं है, उसी प्रकार ) उनको ( इस ) चुनाव का अधिकार ( भी ) नहीं है। ( निस्सन्देह ) अल्लाह उनके शिर्क से पवित्र और ( सर्व श्रेष्ठ तथा ) उच्च है। और ( हे रसूल! ) निस्सन्देह जो ( छल-कपट ) यह लोग अपने दिलों में छिपाते हैं और जिसको यह प्रगट करते हैं, तुम्हारा पालन कर्त्ता उस ( सब ) से ( भली भाँति ) अभिज्ञ है। और ( अकेला ) अल्लाह ही ( पूजने योग्य ) है। उसके अतिरिक्त कोई ( और ) पूज्य नहीं। लोक परलोक में ( केवल ) उसी की प्रशंसा ( तथा स्तुति की जा सकती ) है और उसी का शासन ( स्थिर ) है। और तुम लोगों को ( मर कर ) उसी के दरबार में लौट कर जाना है ॥

تُرْجَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ
سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ
بِضِيَاءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ
عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ
غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَفَلَا
تُبْصِرُونَ ۝ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ
وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ
فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ
وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا
بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ ٤
قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا

( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि भला देखो तो सही कि अगर अल्लाह रोज़ क़यामत तक हमेशा तुम पर रात किये रहे, तो अल्लाह के सिवा कोई और ख़ुदा है; जो तुम्हारे लिये ( दिन का ) नूर ले आये ? क्या तुम ( ऐसी माकूल बात भी ) नहीं सुनते ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि भला देखो तो सही ! अगर अल्लाह रोज़ क़यामत तक हमेशा तुम पर दिन किये रहे, तो अल्लाह के सिवा कोई और ख़ुदा है, जो तुम्हारे लिये रात को ला मौजूद करे ? कि तुम उसमें आराम पाओ । क्या तुम लोग ( ख़ुदा की ऐसी सरीह नेअमत को भी ) नहीं देखते ० और ( उसी ने ) अपनी रह्मत से तुम्हारे लिये रात और दिन को बनाया है, ताकि तुम रात में आराम करो और ताकि ( दिन में ) उसके फ़ज़्ल ( यानी अपनी रोज़ी ) की जुस्तजू में लगे रहो और ताकि तुम ( उसका ) शुक्र करो ० और जिस दिन ( ख़ुदा ) मुश्रिकों को बुलाकर पूछेगा कि जिनको तुम ( हमारा शरीक ) समझते थे—( अब ) वह हमारे शरीक कहां हैं ? ( चुनांचे वह शरीक हाज़िर किये जाएँगे ) ० और हर एक उम्मत में से हम एक गवाह ( यानी पैग़म्बर ) को अलग कर लेंगे ( और वह काफ़िरों के ख़िलाफ़ गवाही देंगे )–फिर हम ( उम्मत के लोगों से ) कहेंगे कि अपनी ( बराअत की ) दलील पेश करो । उस वक़्त उन लोगों को मालूम हो जाएगा कि हक़ बजानिब ख़ुदा है और यह ( दुनिया में ) जैसी ( जैसी झूटी ) बातें दिल से बनाया करते थे–( उस दिन सब ) इनसे गई गुज़री हो जायेंगी ० ( शिर्क—कि वह भी एक क़िस्म की नाशुक्री है, उसके मुनासिब एक हिकायत यह है कि ) क़ारून मूसा की क़ौम ( यानी बनी इस्राईल ) में से था । फिर वह उन पर ज़ुल्म करने लगा और हमने उसको इतने ख़ज़ाने दे रक्खे थे कि—

(हे रसूल !) तुम ( इन मुश्रिकों को समझाओ और इनसे ) कहो कि ज़रा बतलाओ तो सही ! कि यदि अल्लाह क़याम के दिन तक तुम पर बराबर रात ( ही रात ) रक्खे, तो अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य है, जो तुम्हारे सामने ( दिन का उजाला ले आये ( और रात्रि का अन्धकार दूर कर दे ? कोई नहीं दूर कर सकता । उसके मुक़ाबले का पृथ्वी आकाशों में कोई नहीं लोगो !) क्या तुम ( ख़ुदा की अद्वैता और उसकी असाधारण शक्ति के इतने प्रत्यक्ष प्रमाण भी सच्चे दिल से ) नहीं सुनते ॥

( और इनसे ) कहो कि भला मुझे बतलाओ तो कि यदि अल्लाह क़यामत के दिन तक तुम पर बराबर दिन ( ही दिन स्थित ) रक्खे, तो अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य है, जो तुम्हारे लिये रात को–जिसमें कि तुम ( सुख ) चैन प्राप्त कर हो, ले आये ? ( कोई नहीं ला सकता । उसके मुक़ाबले का पृथ्वी आकाश में कोई नहीं । अन्धो ! तुमको क्या हो गया !! )- क्या तुम ( शक्तिशाली अल्लाह का इतना अद्भुत चमत्कार भी ) दीख नहीं पड़ता । और ( तुम नहीं देखते ! कि उसने ) अपनी कृपा से तुम्हा लिये ( न केवल रात ही रात बनाई और न केवल दिन ही दिन, वरन् ) रात और दिन ( दोनों ) बनाए, ताकि तुम रात ( सुख ) चैन प्राप्त करो और ( प्रातःकाल उठने के पश्चात ) उसकी कृपा ( तथा दया अर्थात् जीविका ) की चिन्ता करो और ( अल्ला तथा उसके बन्दों का हक़ अदा करके सच्चे पूज्य की ) कृतज्ञता करो ॥

और ( उस दिन की सफलता प्राप्त करने के लिये अत्यन्त उद्योग कर सको )–जिस दिन कि अल्लाह इन ( मुश्रिकों को बुलावेगा और ( इनसे ) पूछेगा कि हमारे वह साझी कहाँ हैं, जिन्हें तुम समझते थे ( कि यह हमारी ख़ुदाई में सम्मिलित हैं ? ) और प्रत्येक उम्मत में से ( उसके पापी लोगों पर अपराध सिद्ध करने के लिये ) हम एक गवाह अलग कर लेंगे ( और स गवाह पैग़म्बर होंगे ) । इस प्रकार अपराध निश्चित करने के उपरान्त फिर हम उन ( कुकर्मियों ) से कहेंगे ( अब ) लाओ (ना अपना ( सत्य पूजा का ) प्रमाण । फिर उन्हें पता चलेगा कि सत्य अल्लाह की ओर है और (उस दिन ) उनकी वह ( समस्त बातें, जिन्हें यह ( संसार में ) गढ़ा करते थे–व्यर्थ हो जावेंगी । निस्सन्देह क़ारून ( एक धनवान मनुष्य था और ) मूसा के वंश था ( और दौलत की अधिकता और धनाभिलाषी लोगों की ख़ुशामद तथा चापलोसी ने उसको अत्यन्त अभिमानी बना दि था ) । अतः वह ( अपने धन के गर्व में आकर मूसा और ) उनके ( ईमानदार साथियों के ) विरुद्ध अकड़ने लगा । और हम उसको ( धन के ) कोष ( भी ) इतने दिये थे—

اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِی الْقُوَّةِ اِذْ
قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ
الْفَرِحِیْنَ ● وَابْتَغِ فِیْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ
وَلَا تَنْسَ نَصِیْبَكَ مِنَ الدُّنْیَا وَاَحْسِنْ كَمَآ
اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَیْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِی الْاَرْضِ
اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْمُفْسِدِیْنَ ● قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِیْتُهٗ
عَلٰی عِلْمٍ عِنْدِیْ اَوَلَمْ یَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ
مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ
قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا وَلَا یُسْئَلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ
الْمُجْرِمُوْنَ ● فَخَرَجَ عَلٰی قَوْمِهٖ فِیْ زِیْنَتِهٖ قَالَ
الَّذِیْنَ یُرِیْدُوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا یٰلَیْتَ لَنَا
مِثْلَ مَآ اُوْتِیَ قَارُوْنُ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ ●
وَقَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَیْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ

कई ज़ोरावर मर्द उसकी कुंजियाँ बमुश्किल उठाते । एक बार उसकी क़ौम (के लोगों) ने उससे कहा कि इतरा मत-(क्योंकि) अल्लाह इतराने वालों को पसन्द नहीं करता ० और (यह) जो (साज़ व सामान दुनिया) तुझको खुदा ने दे रक्खा है, उसमें (से कुछ) आख़िरत के घर का (भी) फ़िक्र करता रह! और दुनिया से जो तेरा हिस्सा है, उसको फ़रामोश न कर और जिस तरह से अल्लाह ने तेरे साथ एहसान किया है, तू भी (औरों के साथ) एहसान कर! और मुल्क में फ़साद का ख़्वाहां न हो, क्योंकि अल्लाह मुफ़्सिदों को पसन्द नहीं करता ० (क़ारून) बोला यह (माल और दौलत) तो मुझको अपनी लियाक़त से हासिल हुई है, क्या (क़ारून ने) यह ख़याल न किया कि इससे पहिले खुदा (पिछली) उम्मतों में से ऐसे ऐसे लोगों को हलाक कर चुका है, जो (नौकरों चाकरों का) इससे कहीं ज़ियादा बल बूता रखते थे और उनके पास जमा (पूंजी) भी (इससे) बहुत ज़ियादा थी और गुनहगारों से (सज़ा-दिही के लिये क़ायल-माक़ूल करने के तौर पर) उनके गुनाह की बाबत नहीं पूछा जाया करता ० ग़रज़ (एक दिन) क़ारून अपने तुज़ुक से अपनी क़ौम (के लोगों) पर निकला । तो जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी के तालिब थे—(उसको देखकर) लगे कहने कि जैसा कुछ (साज़ व सामान) क़ारून को मिला है, ऐ काश! हमारे पास भी होता । इसमें शक नहीं कि क़ारून बड़ा साहबे-नसीब है ० और जिन लोगों को (खुदा के हां से) इल्म की दौलत दी गई थी-(इन लोगों से) बोले कि तुम्हारा जाय नास—

कि उनकी कुंजियाँ एक बलवान समूह (बड़ी) कठिनता से उठाता था । (उसका वह समय विशेषतः वर्णन करने योग्य है)—जबकि उसकी जाति ने उससे कहा कि (क़ारून! देख !! तू अपनी धनवानता पर इतना न) इतरा। निस्सन्देह अल्लाह इतराने वालों (और अकड़ने वालों) को प्रिय नहीं रखता । और (उसे बताया कि) अल्लाह ने तुझे जितना (धन दौलत) दे रक्खा है, तू उसमें (से मूसा के कथनानुसार दान पुण्य भी कर! और) परलोक की भी (कुछ) चिन्ता कर! और अपना सांसारिक भाग भी न भूल (अर्थात् आवश्यकतानुसार खा भी, पहिन भी) । और जिस प्रकार अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है, उसी प्रकार तू भी (उसके बन्दों पर) उपकार कर और (खुदा की) पृथ्वी में (बुराई का बीज न डाल और व्यर्थ का झगड़ा) फ़साद (फैलाने) की चेष्टा न कर। निस्सन्देह अल्लाह फ़सादियों को प्रिय नहीं रखता ॥

क़ारून ने उत्तर दिया कि (अल्लाह ने मेरे ऊपर कौन सा उपकार किया है?)-यह (धन दौलत) जो कुछ मुझे मिला, मेरे ज्ञान (और बुद्धिमानी) से (मिला। भला हे रसूल!) क्या इसको यह नहीं ज्ञात हुआ कि अल्लाह ने इससे पहिले ऐसी कितनी उद्दण्ड (और अभिमानी) बस्तियों को नष्ट (भ्रष्ट) कर डाला, जो बल (व शक्ति) की दृष्टि से भी इससे कहीं बढ़कर थीं और (अपने) जथे की दृष्टि से भी कहीं बढ़ चढ़ कर। और (क़यामत के दिन जब ऐसे) अपराधियों (को दंड दिया जावेगा, तो उन) से उनके कुकर्मों के विषय में पूछा (तक) नहीं जायगा ॥

(क़ारून के पास इतना धन था कि देखने वालों के मुंहों में पानी भर आता था) । अतः (एक बार जबकि) वह (नियमानुसार) अपने (विशेष) ठाठ (बाट) में अपनी जाति के (लोगों के) सामने निकला, तो जो लोग संसार के (असार) जीवन (का ठाठ बाट) चाहते थे (उसको देखकर बड़ी उत्कंठा के साथ) कहने लगे, क्या अच्छा होता! यदि हमको भी (खुदा की ओर से) ऐसा ही ठाठ बाट दिया जाता, जैसा कि क़ारून को दिया गया है । (इसमें कुछ) सन्देह नहीं कि यह (क़ारून) बड़ा ही भाग्यशाली (पुरुष) है । और वह लोग जिन्हें (धर्म की) समझ दी गई थी (यह सुनकर) बोले (भाइयो! तुम्हारी साहस होनता पर बड़ा) अफ़सोस (आता) है । (क्या तुमको नहीं मालूम कि यह संसार और उसकी समस्त तड़क भड़क मिटने के लिये है । समझदार हो, तो समझो । नाशवान वस्तु पर दिल न लगाओ और याद रक्खो कि) अल्लाह का (दिया हुआ) सवाब अर्थात शुभ कर्म का प्रतिफल (इस संसार और इसकी समस्त वस्तुओं से बहुत) उत्तम है—

خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا
الصّٰبِرُوْنَ ● فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ
فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ● وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا
مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ
لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيْكَاَنَّهٗ
لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ● تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ
نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ
وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ● مَنْ جَآءَ
بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ
فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ● اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ

जो शख़्स ईमान लाया और उसने नेक अमल (भी) किये, उस के लिये सवाबे-ख़ुदा ( क़ारून के माल व दौलत से कहीं ) बेहतर है, मगर सब्र करने वालों के सिवा वह सवाब ( हर एक को ) नहीं मिला करता ० फिर हमने क़ारून और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया और ख़ुदा के सिवा कोई जमाअत उसकी मदद को न ( खड़ी ) हुई और न ( आप किसी तदबीर से ) अपने तईं बचा सका ० और जो लोग कल ( शाम ) उसकी जगह ( होने ) की तमन्ना करते थे, वह (आज) सुबह को लगे कहने—अरे ग़ज़ब ! यह तो अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ कर देता है और ( जिसकी रोज़ी चाहता है ) नपी-तुली कर देता है । अगर ख़ुदा हम पर ( अपना ) करम न करता, तो ( क़ारून की तरह ) हमको भी धंसा देता। अरे ग़ज़ब ! बात तो यह है कि नाशुक्रों को ( कभी ) फ़लाह होनी नहीं ० ( दुनिया की नेअमतें तो हर कस व नाकस को मिल जाती हैं, मगर ) यह आख़िरत का घर है, जिस ( की नेअमतों ) को हमने उन लोगों के लिये ( ख़ास ) कर रक्खा है, जो दुनिया में किसी तरह की शेख़ी नहीं करनी चाहते और न फ़साद ( के ख़्वाहां हैं ) और अन्जाम ( बख़ैर तो ) परहेज़गारों ( ही ) का है ० जो शख़्स ( क़यामत के दिन ) अमल नेक लेकर हाज़िर होगा, उसको उससे बेहतर ( बदला मिलेगा ) और जो बुरे अमल लेकर हाज़िर होगा, तो जिन लोगों ने बुरे अमल किये हैं, उनको बस वैसा ही बदला मिलेगा; जैसा ( दुनिया में ) करते रहे हैं ० ( ऐ पैग़म्बर ! वह ख़ुदा ) जिसने ( अहकाम ) क़ुर्आन ( की तामील ) को तुम पर फ़र्ज़ किया है—

( परन्तु केवल ) उस मनुष्य के लिये, जो ( अल्लाह, रसूल पर सच्चे दिल से ) ईमान ले आये और (ईमान लाने के पश्चात् काम भी अच्छे करे और वह ( सवाब ) धैर्यवानों ( सुकर्मियों और धीरज धरने वालों ) के अतिरिक्त किसी को नहीं दिया जाता। ( स जब क़ारून की उद्दण्डता अपनी सीमा को पहुंच गई ) तो हमने उसको और उसके घर ( बार ) को ( धन दौलत सहित ) पृथ्वी धंसा दिया, तो ( इसके होते हुये कि उस समय वह धनाढ्य तथा बड़े जथे वाला था )—परन्तु अल्लाह के अतिरिक्त एक सम् भी ऐसा न निकला, जो उसकी सहायता करता और न वह स्वयं ही ( अपने धन दौलत की सहायता से ) अपना ( कुछ ) बचा कर सका ॥

और ( जब क़ारून अपने किये को पहुंच गया ) तो वह लोग—जिन्होंने कल अभिलाषा की थी कि वह उस जैसे बन जायं— कहने लगे कि ( पूर्ण अधिकारी ) ख़ुदा ( है। प्रेम किया जाय, तो उसी से। उसी में यह शक्ति भी है कि वह ) अपने बन्दों में से जिस लिये चाहे, जीविका बढ़ा दे और ( जिसके लिये चाहे ) तंग करदे। ( ख़ुदा की कृपा है कि हम माया जाल में नहीं फंसे अन्यथा ) यदि हम पर अल्लाह की कृपा न होती, तो अल्लाह हमें भी ( इसी प्रकार धन देकर पृथ्वी में ) धंसा देता। अफ़सोस ! कृत ( लोग ) कभी कृतार्थ नहीं होते। ( सांसारिक राज्य तथा धन दौलत चाहे जिसे मिल जाय, परन्तु ) यह अन्तिम ठिकाना उस ( आराम तथा सुख चैन ) को हमने उन ( ही ) लोगों के लिये निश्चित कर रक्खा है, जो ( ख़ुदा की ) भूमि में अकड़ना औ ( झगड़ा ) फ़साद फैलाना नहीं चाहते। और ( यह बात बिल्कुल विश्वासनीय है कि ) परलोक ( की अच्छाई केवल संयमी तथा परहेज़गारों का अधिकार है ॥

( क़यामत के दिन ) जो कोई नेकी ( अपने साथ ) लावेगा, तो उसको उससे अच्छा पुरस्कार मिलेगा और जो बुराई ( अप साथ ) लावेगा, तो कुकर्मी लोगों को जैसा वह ( पहिले संसार में ) करते रहे, वैसा ही बदला दिया जायगा। ( उनके साथ कि प्रकार का अत्याचार न होगा )। निस्सन्देह ( हे रसूल ! तुम इन काफ़िरों की बकवास और दुर्व्यवहार से शोकित न हो )-जिस ( ख़ुद ने क़ुर्आन ( का प्रचार ) तुम्हारे ऊपर नियत किया है, वह तुमको वहीं ( आदर सत्कार के साथ फिर ) पहुंचा देगा, जहाँ से त आये हो ( अर्थात पवित्र नगर मक्का ) ॥

لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُلْ رَّبِّيٓ أَعْلَمُ مَن جَآءَ بِالْهُدَىٰ
وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ۝ وَمَا كُنتَ تَرْجُوٓا
أَن يُلْقَىٰٓ إِلَيْكَ الْكِتَٰبُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ
فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَٰفِرِينَ ۝ وَلَا يَصُدُّنَّكَ
عَنْ ءَايَٰتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ
إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا
تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ
هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَسِتُّونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝
الٓمٓ ۝ أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوٓا أَن يَقُولُوٓا ءَامَنَّا
وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَٰذِبِينَ ۝

( वह ) ज़रूर तुमको ( अस्ल ) ठिकाने से लगा देगा। ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मेरे पर्वर्दिगार को खूब मालूम है कि कौन ( उसकी तरफ़ से ) दीन-हक़ लेकर आया है और कौन सरीह गुमराही में ( पड़ा ) है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुमको तो ( हरगिज़ ) तवक्क़ो न थी कि ( ख़ुदा की तरफ़ से ) तुम पर किताब नाज़िल की जाएगी, मगर तुम्हारे पर्वर्दिगार की ( तुम पर बड़ी ) मेहर्बानी ( हुई कि कुर्आन नाज़िल फ़र्माया )। तो तुम ( बेलाग-लपेट सुनावो और ) हरगिज़ काफ़िरों की तरफ़दारी न करना ० और ऐसा न हो कि जब अह-काम-इलाही तुम पर नाज़िल हो चुकें, उसके बाद यह लोग तुमको उन ( की तामील ) से रोकें ( और तुम रुक जाओ, बल्कि सब्र और इस्तिक़लाल के साथ अपना फ़र्ज़-रिसालत अदा किये जाओ ) और अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ ( लोगों को ) बुलाये चले जावो और ( ख़बरदार ! ) मुश्रिकीन में हरगिज़ ( शामिल ) न होना ० और न कभी अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को पुकारना—( क्योंकि ) उसके सिवा और कोई माबूद नहीं। उसकी ज़ात के सिवा सब चीजें फ़ना होने वाली हैं। उसी की हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुम ( सब ) को लौट कर जाना है ०

## सूरत—अन्कबूत

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ६९ आयतें और ७ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० अलिफ़्-लाम्-मीम ० क्या लोगों ने यह समझ रक्खा है कि ( ज़बान से ) इतना कहने पर छूट जायेंगे कि हम ईमान ले आये ? और उनको आज़माया न जाएगा ० और हमने ( तो ) उन लोगों को (भी) आज़माया था, जो इनसे पहिले ( हो गुज़रे ) हैं। तो ख़ुदा उन लोगों को ज़रूर मालूम करके रहेगा, जो ( इज़हार-ईमान में ) सच्चे हैं और झूटों को भी ज़रूर मालूम करके रहेगा ०—

---

( सो तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो और उनसे ) कहदो कि मेरा पालन कर्त्ता ( अपने ) उस ( रसूल ) को भी भली भाँति जानता है, जो ( अपने साथ ) हिदायत अर्थात् धर्म-ज्ञान लाया है, और उन्हें भी, जो स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में ( पड़े भटक रहे ) हैं। और ( हे रसूल ! देखो !! नबी बनने से पहिले ) तुमको तो इस ( बात ) की ( कुछ भी ) आशा न थी कि तुम्हारी ओर ( कोई खुदा की ) पुस्तक भेजी जायगी, किन्तु तुम्हारे पालन कर्त्ता की तुम पर ( इतनी ) कृपा है ( कि उसने कुर्आन जैसी अद्वितीय पुस्तक तुम पर उतारी। सो तुम बिल्कुल बे खटके होकर लोगों को उसकी शिक्षा दो और ) काफ़िरों के पोषक तथा सहायक न बनो ॥

और ( देखो ! ) ऐसा कदापि न होने पावे कि आयतें ( तथा खुदा की आज्ञाएं ) जब तुम पर उतारी जायँ, तो यह ( मुश्रिक ) तुमको ( बहका सिखा कर अथवा डरा धमका कर ) उन ( पर चलने ) से रोक दें। ( अतः तुम इनके धोखे में न आना ) और ( सर्वदा ) अपने पालन कर्त्ता ( ही ) की पूजा करना और मुश्रिकों में से न हो जाना। और अल्लाह के साथ ( कभी ) किसी दूसरे पूज्य की पूजा न करना। उसके अतिरिक्त ( तो ) कोई पूज्य ( पूज्य कहलाने का अधिकारी ही ) नहीं। उस ( सच्चे पूज्य और अमर अजर खुदा ) के अतिरिक्त ( संसार की ) प्रत्येक वस्तु मिट जावेगी। ( लोक परलोक में ) उसी का राज्य है और ( सब लोगों को मर कर ) उसी की ओर लौट कर जाना है ॥

## सूरत—अन्कबूत

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ६९ आयतें और ७ रुकूअ हैं ॥**

( हे रसूल ! ) क्या ( इन ) लोगों ने ( सत्य का अनुगमन करने को साधारण काम ) समझ रक्खा है ? ( क्या यह इस विचार में हैं ) कि ( केवल ) इतना कहने पर कि हम ईमान ले आये ( खुदा के अज़ाब से ) छूट जावेंगे ? और ( ज़बान से ईमान का इक़रार करने के पश्चात कष्टों तथा दुखों के द्वारा ) उन ( के ईमान के पक्के तथा कच्चे होने ) की परीक्षा न की जावेगी ? ( अवश्य की जावेगी )। और इनसे पहिले ( अगली उम्मतों में ) जो ( ईमानदार हो चुके ) हैं ( जैसे बनी इस्राईल )—हमने उन ( के ईमान ) को ( भी ) परखा था ( और फ़िर्औन जैसे असत्य पूजकों ने उन पर भी तरह २ के अत्याचार किये थे )। अतः अल्लाह ( उन्हें भी अर्थात् वर्तमान ईमानदारों को भी तरह २ से परखेगा और ) जिन लोगों ने ( ईमान का दावा करने में ) सचाई से काम लिया है, उन्हें भी मालूम करके रहेगा और जिन्होंने झूठ बोला है, उन्हें भी मालूम कर लेगा ॥

क्या जो लोग बुरे अमल करते हैं, उन्होंने समझ रक्खा है कि हमारे क़ाबू से बाहर हो जायंगे ? ( ऐसा समझते हैं, तो ) यह लोग क्या ही बुरी तज्वीज़ें करते हैं ० जिसको ( आख़िरत में ) अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो, तो ( उसके लिये तय्यारी करले, क्योंकि ) ख़ुदा का ( ठहराया हुआ ) वक़्त ज़रूर आने वाला है और वह ( सबकी ) सुनता ( और सब कुछ ) जानता है ० और जो ( ख़ुदा के लिये ) मेहनत उठाता है, तो वह अपने ही ( भले के ) लिये मेहनत उठाता है-( वर्ना ) ख़ुदा तो दुनिया—जहान के सब लोगों से बे-नियाज़ है ० और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, हम ज़रूर उनके गुनाह उनसे दूर कर देंगे और ( दुनिया मे ) जो ( यह लोग नेक ) अमल करते रहे हैं, इनको इनका बेहतर से बेहतर बदला देंगे ० और हमने इन्सान को अपने मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया और ( यह भी समझा दिया कि ) अगर मां बाप तेरे दरपै हों कि तू किसी को हमारा शरीक ठहराए, जिस ( के शरीक-ख़ुदा होने ) की तेरे पास कोई माक़ूल दलील है ही नहीं, तो ( इस बात में ) उनका कहा न मानना। तुम ( सब ) को हमारी तरफ़ लौट कर आना है। फिर. जो ( कुछ भी ) तुम लोग ( दुनिया में ) करते रहे—( उस वक़्त उसका बुरा भला ) हम तुमको बता देंगे और जो लोग ईमान लायें और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये-( क़यामत में ) हम ज़रूर उन को नेक बन्दों में ( लेजा ) दाख़िल करेंगे ० और कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो ( मुंह से तो ) कह देते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाये, फिर जब उनको ( राहे ) ख़ुदा में ( किसी तरह की ) तकलीफ़ पहुंच जाती है, तो लोगों की ईज़ा-दिही को अज़ाब-ख़ुदा की तरह ( एक नाक़ाबिल-बरदाश्त मुसीबत ) बना लेते हैं और ( ऐ पैग़म्बर! ) अगर तुम्हारे पर्वर्दिगार की मदद आ पहुंचे ( और मुसलमानों की फ़तेह हो ) तो वही लोग (मुसल्मानों से) कहने लगते हैं कि हमभी तो तुम्हारे ही साथ थे—

أم حسب الذين يعملون السيئات أن يسبقونا
ساء ما يحكمون ۝ من كان يرجو لقاء الله فإن
أجل الله لآت وهو السميع العليم ۝ ومن جاهد
فإنما يجاهد لنفسه إن الله لغني عن العلمين
والذين آمنوا وعملوا الصلحت لنكفرن عنهم
سيئاتهم ولنجزينهم أحسن الذي كانوا يعملون
ووصينا الإنسان بوالديه حسنا وإن
جاهداك لتشرك بي ما ليس لك به علم
فلا تطعهما إلي مرجعكم فأنبئكم بما كنتم
تعملون ۝ والذين آمنوا وعملوا الصلحت لندخلنهم
في الصلحين ۝ ومن الناس من يقول آمنا بالله
فإذا أوذي في الله جعل فتنة الناس كعذاب
الله ولئن جاء نصر من ربك ليقولن إنا كنا

---

(अतः जो लोग इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे, अन्त में वही सफल होंगे)। भला वह लोग जो कुकर्मी (और बेईमान) हैं, यह समझे बैठे हैं कि वह हमसे आगे बढ़ जाएंगे ? जो निर्णय यह (लोग) कर रहे हैं, वह बहुत बुरा (और सचाई से कोसों दूर) है। ( अतः ) जिस (ईमानदार) मनुष्य को अल्लाह के दर्शन की इच्छा ( और ख़ुदा के निर्णय पर भरोसा ) है, तो अल्लाह ( के दर्शन तथा न्याय ) का ( वह निश्चित) समय (एक न एक दिन) अवश्य आने वाला है। और अल्लाह ( हर वह बात) सुनता (है, जो ज़बान से निकलती है और हर वह दशा तथा ख़्याल) जानता है (जिसको छिपाया जाता है)। और जो कोई (अल्लाह के मार्ग में दुख, कष्ट और श्रम) परिश्रम सहन करता है, तो केवल अपने ही (को लाभ पहुंचाने) के लिये (करता है। अल्लाह को उससे कुछ लाभ नहीं पहुंचता)। अल्लाह तो समस्त संसार से बेपर्वाह है। और जो लोग ईमान ले आए और ( ईमान लाने के पश्चात ) उन्होंने कर्म भी अच्छे किये, तो हम ( क़यामत के दिन ) उनके ( अगले पिछले सब ) पापों को उन ( के कर्म-पत्र में ) से मिटा देंगे और जो (शुभ) कर्म वह (संसार में किया) करते थे, उसका पुरस्कार हम उन्हें उस ( शुभ कर्म ) से (बहुत ) अच्छा प्रदान करेंगे॥

और हमने मनुष्य को ( सर्वदा अच्छी बात ही की शिक्षा की । हमहीने उसको ) अपने माता पिता के साथ भलाई करने की आज्ञा दी और ( साथ ही यह भी बता दिया कि ) यदि वह (मुश्रिक हों और ) तुम पर ( व्यर्थ का ) दबाव डालें ( और ईमान लाने से रोकें, और कहें ) कि तुम हमारे साथ किसी ऐसी वस्तु को साझी ठहराओ, जिस ( के साझी होने ) का तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है, तो तुम ( इस दशा में कदापि ) उनकी आधीनता न करना—( अन्यथा नष्ट हो जाओगे । याद रक्खो! मरने के पश्चात ) तुमको हमारी ही ओर लौट कर आना है । ( यदि तुम मुश्रिक बनकर आए ) तो हम तुमको तुम्हारे कुकर्मों का हाल ( भली भांति ) बता देंगे । और वह लोग जो ( अल्लाह रसूल पर सच्चे दिल से ) ईमान ले आये और ( ईमान लाने के पश्चात ) उन्होंने कर्म भी अच्छे किये, तो हम उन्हें अवश्य अपने नेक बन्दों ( के समूह ) में दाख़िल करेंगे ॥

और कुछ ( वह ) लोग हैं, जो ( ज़बान से तो ) कहते हैं कि हम अल्लाह ( रसूल ) पर ईमान ले आये, परन्तु अल्लाह के मार्ग में जब उनको ( विरोधियों की ओर से कोई ) कष्ट पहुंचता है, तो लोगों के कष्ट को अल्लाह के अज़ाब के बराबर ठहराते हैं और ( लोगों से डर कर ईमान छोड़ बैठते और मुनाफ़िक़ हो जाते हैं। और हे रसूल! ) यदि तुम्हारे पालन कर्ता की ओर से ( सहायता तथा ) मदद तुम्हारे पास आ जाय ( अर्थात किसी युद्ध में तुमको विजय प्राप्त हो और ग़नीमत का माल तुम्हारे हाथ लगे ) तो ( उस समय बड़े ज़ोर के साथ ) कहते हैं कि ( भाई मुसलमानो! ) हम तो तुम्हारे ही साथ थे—( हमें न भूलना । इस माल में हमारा भी भाग लगाना ) ॥

भला जो कुछ दुनिया जहान के लोगों के दिलों में है, क्या खुदा उससे बखूबी वाक़िफ़ नहीं ० और जो लोग ईमान लाये हैं, अल्लाह उन को ज़रूर मालूम करके रहेगा और मुनाफ़िक़ों को भी जरूर मालूम करके रहेगा ० और काफ़िर मुसल्मानों से कहते हैं कि हमारे ( मज़हबी ) तरीक़ पर चलो और ( क़यामत को ) तुम्हारे गुनाह हम उठा लेंगे—हालांकि यह लोग ज़रा भी तो उनके गुनाह उठाने वाले नहीं। कुछ शक नहीं कि यह लोग झूटे हैं ० मगर हाँ ( क़यामत के दिन ) अपने ( गुनाहों के ) बोझ ( भी ) उठायेंगे और अपने बोझों के साथ और बोझ भी ( यानी लोगों को बहकाने भटकाने के बोझ ) और जैसी जैसी इफ़्तिरा-पर्दाज़ियां यह लोग करते रहे हैं, क़यामत के दिन इनसे ज़रूर उनको बाज़पुर्स होनी है ० और हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ ( पैग़म्बर बनाकर ) भेजा, तो वह पचास बरस कम हज़ार बरस उन ( लोगों ) में रहे, फिर (आख़िरकार ) उन ( की क़ौम ) को तूफ़ान ने आ लिया और वह ( बदस्तूर ) नाफ़र्मानियां कर रहे थे ० तो हमने नूह को और जो ( नूह के साथ ) किश्ती में थे, उनको (अज़ाबे—तूफ़ान से) नजात दी और हमने इस (वाक़ये) को तमाम जहान के लिये इब्रत बना दिया ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) इब्राहीम ( के हालात इन लोगों से बयान करो ! ) जब उन्होंने अपनी क़ौम ( के लोगों ) से कहा कि खुदा की इबादत करो और उससे डरो। अगर तुम अक़्ल रखते हो, तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है ० ( मगर ) तुम तो खुदा के सिवा बस बुतों की परस्तिश करते हो—

مَعَكُمْ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ● وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ● وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطَايَاكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطَايَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ● وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَعَ أَثْقَالِهِمْ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ● وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ● فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ● وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ● إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ

---

क्या ( इन लोगों ने ) अल्लाह ( को भी अपने जैसा अज्ञान समझ रक्खा है ? क्या अल्लाह समस्त ) संसार (के लोगों) के दिलों का हाल अच्छी तरह नहीं जानता ? ( अवश्य जानता है । क्या उसे धोखे बाज़ों की धोखे बाज़ी ) और ( बदमाशों के चरित्र की ख़बर नहीं ? निस्सन्देह ) अल्लाह उन लोगों को भी जानता है, जो ( सच्चे ) ईमानदार हैं और उन्हें भी जानता है, जो ( कट्टर ) मुनाफ़िक़ हैं ( और उसके यहाँ मुनाफ़िक़ों का बहुत बुरा दर्जा होगा )। और ( यह ) काफ़िर ( जो ) ईमानदारों से कहते हैं कि तुम हमारे मार्ग पर चलो-( हमारा मार्ग बिल्कुल सीधा है ) और ( यदि तुमको विश्वास न आता हो और तुम उस पर चलना पाप समझते हो, तो ) तुम्हारे ( ऐसे २ समस्त ) पापों का भार हम उठालेंगे-( तो यह भी वास्तव में मुसल्मानों को धोखा देते हैं। उनकी ) दशा ( तो ) यह है कि यह उनके ( इस प्रकार के ) पापों का ( समस्त भार तो अलग रहा ) थोड़ा सा भार भी नहीं उठा सकते। निस्सन्देह यह बिलकुल झूठे हैं ॥

और ( क़यामत के दिन इनका परिणाम बहुत बुरा होगा )-यह ( एक तो ) अपने बोझ उठावेंगे ( और उसका दंड भुगतेंगे ) और ( दूसरे ) अपने बोझों के साथ ( यह हमारे ईमानदार बन्दों के बहकाने का ) बोझ ( भी उठावेंगे )। और क़यामत के दिन उनके ( कुकर्मों तथा धोखों और ) असत्य—दोषारोपण के सम्बन्ध में ( ख़ूब ) अच्छी तरह पूछ गछ की जावेगी। और ( हे रसूल ! यह काफ़िर सर्वदा के उद्दण्ड हैं। हम हर समय में अपने किसी न किसी दूत को उनके समझाने बुझाने के लिये भेजते रहे हैं। सो ) हम ही ने नूह को उनकी ( अवज्ञाकारी तथा उद्दण्ड ) जाति की ओर ( सुधार के लिये ) भेजा था और वह उनमें साढ़े नौ सौ वर्ष ( प्रचार तथा सुधार करते ) रहे—( परन्तु उनको राह पर न आना था—न आये )। अन्त में ( हमारे ) तूफ़ान ( के अज़ाब ) ने उन्हें ( ठीक ) उस दशा में कि वह अवज्ञा ( तथा उद्दण्डता ) कर रहे थे—आ पकड़ा ॥

सो हमने नूह और ( उनके कहने पर चलने वाले ) नाव वालों को तो ( इस तूफ़ान के अज़ाब से ) मुक्ति दे दी और उन ( सब पापियों तथा उद्दण्डों ) को ( ऐसा दंड दिया कि ) संसार ( वालों ) के लिये शिक्षा ( का चिन्ह ) बना दिया। और ( नूह की तरह हमने अपने पैग़म्बर ) इब्राहीम ( को भी सुधार ही के लिये भेजा था । उनका वह समय वर्णन करने योग्य है )—जबकि उन्होंने अपनी ( मूर्त्ति—पूजक ) जाति से कहा था कि ( भाइयो ! मूर्त्ति पूजा छोड़ो और ) अल्लाह की पूजा करो और उसी से डरो। यदि तुम समझदार हो, तो ( समझो कि पूजा का ) यह ( नियम ) तुम्हारे लिये ( मूर्त्ति पूजा से कई गुणा ) उत्तम है। तुम तो ( केवल अपनी मूर्खता से ) खुदा को छोड़कर मूर्त्तियों को पूजते हो—

أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا
عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ● وَإِنْ تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ●
أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ● قُلْ سِيرُوا
فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ
ثُمَّ اللَّهُ يُنْشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ● يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ
يَشَاءُ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ● وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي
الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ● وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ٤

और झूटी झूटी बातें ( दिल से ) बनाते हो। ख़ुदा के सिवा जिन ( माबूदों ) की तुम परस्तिश करते हो, तुम्हें रोज़ी देने का तो ( ज़रा सा भी) इख़्तियार नहीं रखते, तो रोज़ी (भी) ख़ुदा ही से माँगो ! और उसी की इबादत करो और उसी ( की नेअमतों ) का शुक्र बजा लावो--(क्योंकि) तुमको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है ० और अगर [तुम] (मुझको) झूटा समझो, तो तुमसे पहिले भी उम्मतें अपने पैग़म्बरों को झुठला चुकी हैं और रसूल के ज़िम्मे तो ( हुक्मे--ख़ुदा का ) साफ़ तौर पर पहुंचा देना है और बस ० क्या लोगों ने (इस बात पर) नज़र नहीं की--कि ख़ुदा किस तरह मख़्लूक़ात को अव्वल बार पैदा करके फिर उसी तरह की मख़्लूक़ात बार बार पैदा करता रहता है। यह अल्लाह के नज़दीक एक सहल सी बात है० (और हमने इब्राहीम से यह भी इर्शाद किया कि इन लोगों को) समझावो ! कि तुम मुल्क में चलो फिरो और देखो कि ख़ुदा ने किस तरह पर अव्वल बार ( मख़्लूक़ को ) पैदा किया। फिर ( इसी तरह वही ) अल्लाह ( लोगों को क़यामत के दिन ) आख़िरी उठाना ( भी ) उठायेगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० जिसे चाहे, अज़ाब दे और जिस पर चाहे, रहम करे और तुम ( सब ) उसी की तरफ़ लौटाकर लाये जावोगे ० और तुम न तो ज़मीन में ( छिप कर ख़ुदा को ) हरा सकते हो और न आस्मान में ( उड़ कर )। और ख़ुदा के सिवा न तो कोई तुम्हारा कारसाज़ है और न कोई मददगार ० और जो लोग ख़ुदा की आयतों को और ( क़यामत के दिन ) उसके हुज़ूर में हाज़िर होने को नहीं मानते—

और ( अपने दिल से ) झूठी बातें गढ़ते हो ( और कहते हो कि यह मूर्ति सच्चे पूज्य हैं )। निस्सन्देह अल्लाह के अति रिक्त तुम जिन ( मूर्तियों ) को पूजते हो, वह तुमको जीविका देने की शक्ति नहीं रखतीं-( वह तो बिलकुल विवश हैं )। सो तु अल्लाह ही से जीविका भी मांगो और उसीकी पूजा भी करो और उसी ( की कृपाओं ) की कृतज्ञता प्रगट करो। तुमको ( म कर ) उसीकी ओर लौट कर जाना है। ( देखो ! यदि तुम मेरा कहा मान लो, तो तुम्हारे हक़ में बहुत उत्तम है ) और यदि तु ( मुझको ) झूठा बताओ, तो ( तुम जानो। उसका दंड भुगतोगे )। तुमसे पहिले भी ( बहुत सी ) जातियों ने ( अपने पैग़म्बर को ) झुठलाया ( और उनका परिणाम बुरा हुआ ) और ( ख़ुदा के ) पैग़म्बर पर तो केवल ( ख़ुदा की आज्ञा का उसके बन्दे तक ) खुलम खुल्ला पहुंचाना है और बस॥

( और तुममें से वह लोग जो क़यामत के दिन से इन्कार करते हैं )—क्या उन्होंने कभी नहीं देखा कि अल्लाह ( अपनी सृष्टि को किस प्रकार पैदा करता है ? ( सो जिस प्रकार पैदा करता है, उसी प्रकार एक दिन उसको मार भी डाले और ) फिर वही दुबारा भी उसे पैदा कर दिखावेगा। निस्सन्देह अल्लाह पर यह सरल है। ( यही बात, हे मुहम्मद ! तुम भी अपन उम्मत के इन्कारियों से ) कहो कि ( ज़रा ) ख़ुदा की पृथ्वी में चलो फिरो ( और ईश्वर की लीला देखो और विचार करो ) कि किस प्रकार अल्लाह ने प्रारम्भ में ( अर्थात् प्राकृति के बिना ) सृष्टि को उत्पन्न कर दिया। पुनः ( आसानी के साथ तुम्हा समझ में यह भी आ जायगा कि वही एक दिन सबको नष्ट करके ) दुबारा भी पैदा कर देगा। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु प ( पूर्ण ) शक्ति रखता है॥

वह ( पूर्ण अधिकारी है )—जिसको चाहता है, अज़ाब देता है और जिस पर चाहता है, कृपा करता है। और ( लोगो मरने के बाद ) तुम्हें उसीकी ओर लौट कर जाना ( और अपने भले बुरे का हिसाब देना ) है। और ( इन्कारियो ! तुम उसके आ बिल्कुल लाचार तथा विवश हो। किसी प्रकार उसके अज़ाब से बच नहीं सकते )—न तुम पृथ्वी ( के किसी कोने ) में ( घुस कर उसको हरा सकते हो, न आकाश में ( उड़ कर )। और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा मित्र तथा सहायक ( पृथ्वी आकाश में ) क नहीं। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को ( अल्लाह की उतारी हुई न जाना ) और ( क़यामत के आने और क़यामत के दिन अल्लाह के दरबार में हाज़िरी देने ( और हिसाब किताब पेश करने ) को ( सत्य ) न माना—

وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا
أَن قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَقَالَ
إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم
بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ ۝ فَآمَنَ لَهُ لُوطٌ وَقَالَ
إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي
ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ
فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَ
لُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ

यही लोग हमारी रह्मत से ना उम्मीद हो बैठे हैं और यही हैं, जिन को ( आख़िरत में ) अज़ाब दर्दनाक ( होना ) है ० पस इब्राहीम की क़ौम के पास ( उनकी बातों का ) इसके सिवा ( और कोई ) जवाब ही न था कि ( आपस में ) लगे कहने कि इसको मार डालो या इसको जला दो। चुनांचे ( उनको आग में फेंक दिया, मगर ) ख़ुदा ने उनको आग से नजात दी। बेशक इस ( वाक़ये ) में ( भी ) उन लोगों के लिये, जो ईमान रखते हैं, ( कुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ही ) निशानियां हैं ० और इब्राहीम ने अपनी क़ौम के लोगों से यह भी कहा ( था ) कि तुम जो ख़ुदा के सिवा बुतों को मानते हो (तो) सिर्फ़ ज़िन्दगीए—दुनिया की बाहमी दोस्ती महब्बत के लिहाज़ से ( मानते हो ) -फिर क़यामत के दिन तो ( तुम्हारा यह हाल होना है कि ) तुममें से एक को एक मुकरेगा और एक को एक लानत करेगा और दोज़ख़ तुम सबका ( आख़िरी ) ठिकाना होगा और (इन बुतों में से) कोई भी तुम्हारे मददगार नहीं होंगे ० इस पर ( सिर्फ़ ) लूत इब्राहीम पर ईमान लाये और ( इब्राहीम ने ) कहा कि मैं तो देस छोड़ कर अपने पर्व-दिगार की तरफ़ ( जहां कहीं उसकी मन्ज़ूर हो ) निकल जाऊंगा। बेशक वह ज़बरदस्त ( और ) हिक्मत वाला है ० और हमने इब्राहीम को (बेटा) इस्हाक़ और ( पोता ) याक़ूब इनायत फ़र्माया और उनको नस्ल में पैग़म्बरी और ( नुज़ूले) किताब को ( जारी ) रक्खा और हमने इब्राहीम को दुनिया में ( भी ) उनका अज्र दे दिया और आख़िरत में ( भी ) वह बिला शुबहा ( हमारे ) नेक बन्दों में होंगे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों को ) लूत ( का हाल भी सुनादो ! कि ) जब उन्होंने अपनी क़ौम ( के लोगों ) से कहा कि तुम ( ऐसी ) बेहयाई का काम करते हो—

( वास्तव में ) यही ( वह लोग हैं, जो ) हमारी कृपा से ( बिल्कुल ) निराश ( कर दिये गये ) हैं और यही लोग हैं, जिनके लिये ( हमारे यहां ) एक दुखदायी अज़ाब ( तय्यार ) है। ( हां ! तो जब इब्राहीम की बातों ने उनको बिल्कुल निरुत्तर कर दिया )—तो उनकी जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि ( परस्पर एक दूसरे से कहने लगे कि इब्राहीम बध करने योग्य है )—इन्हें बध कर डालो वा इन्हें जला ( कर राख कर ) दो। ( अतः कई मील के अन्दर उन्होंने लकड़ियां इकट्ठी कीं और उनमें आग लगाई और गोफनी के द्वारा उन्हें आग के इतने बड़े अलाव में फेंक दिया )। अतः अल्लाह ( में बड़ी शक्ति है। उस ) ने उस आग (के कष्ट ) से उन्हें ( बिल्कुल ) बचा लिया-( बरन् उस आग को उनके लिये फुलवारी बना दिया )। निस्सन्देह इस ( वृतान्त ) में ईमानदार लोगों के लिये ( उपदेश तथा शिक्षा के बहुत से ) चिन्ह ( पाये जाते ) हैं। और ( इब्राहीम ने यह भी ) कहा ( था कि लोगो ! ) तुमने जो अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों को ( अपना पूज्य ) बना लिया है, तो ( केवल ) साँसारिक जीवन में ( अपने बाप दादा के अन्ध-अनुकरण और ) परस्पर के प्रेम ( और आ-पस के मेल जोल ) के कारण-( अन्यथा तुम्हारे पास इस मूर्ति पूजा की सचाई का कोई प्रमाण नहीं है। सो तुम अपने जीवन में तो इस अन्ध-अनुकरण की रीति को जिस तरह चाहे, निबाह लो )-फिर क़यामत के दिन तो ( तुममें बड़ी शत्रुता होगी )-तुममें से कोई कोई किसी किसी (की बात) का इन्कार करेगा और (परस्पर) एक दूसरे पर लानत भेजेगा और (अन्त में) तुम सबका ठिकाना आग होगा। और ( जब तुमको आग में डाला जावेगा, तो ) तुम्हारा कोई (मित्र तथा) सहायक न निकलेगा (जो तुमको हमारे अज़ाब से बचा ले )॥

सो ( इतना समझाने पर केवल ) लूत इब्राहीम पर ईमान लाये-( उनके अतिरिक्त पूरी बस्ती में एक आदमी भी ईमान न लाया ) और इब्राहीम ( उनकी ओर से बिल्कुल निराश हो गये और ) कहने लगे ( लूत ! ) मैं तो ( इस भूमि को ) छोड़ कर अपने पालन कर्त्ता की ( नियत की हुई भूमि की ) ओर चला जाता हूं। निस्सन्देह वह ज़बर्दस्त हिकमत वाला है ( हर प्रकार मेरी सहायता करेगा । अतः हमने उन्हें उत्तम स्थान दिया ) और ( हर तरह उनकी सहायता की और ) हम (ही) ने उन्हें इस्हाक़ ( जैसा बेटा ) और याक़ूब (जैसा पोता भी) प्रदान किया और हम ( ही ) ने उनकी सन्तान में पैग़म्बरी और ( अपनी ) पुस्तक ( के उतारने के सिलसिले ) को ( जारी ) कर दिया और हमने उन ( की सेवा ) का बदला संसार में भी ( उत्तम से उत्तम ) दिया और निस्सन्देह वह परलोक में भी ( हमारे ) नेक ( और सच्चे ) बन्दों में से होंगे। और ( इसी प्रकार ) लूत ( पैग़म्बर का वह समय भी विशेषतः वर्णन करने योग्य है )-जबकि उन्होंने अपनी ( दुराचारी ) जाति से कहा था ( भाइयो ! तुमको क्या हो गया ? ) क्या तुम ऐसी निर्लज्जता की बात करते हो कि—

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعٰلَمِينَ ۝ أَئِنَّكُمْ
لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۝ وَتَأْتُونَ
فِي نَادِيكُمُ الْمُنْكَرَ ۖ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ
إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ
الْمُفْسِدِينَ ۝ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرٰهِيمَ
بِالْبُشْرٰى قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ
إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظٰلِمِينَ ۝ قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ
قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ
إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝ وَلَمَّا أَنْ
جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ
ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا مُنَجُّوكَ
وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝

٤

जो तुमसे पहिले दुनिया जहान के लोगों में से किसी ने नहीं किया० क्या तुम (औरतों को छोड़ कर) लड़कों पर गिरते और (मुसाफ़िरों की) राह मारते और अपनी मज्लिसों में नाशायस्ता हर्कतों के मुर्तकिब होते हो। तो लूत को क़ौम के पास इसके सिवा (कुछ) जवाब ही न था कि लगे कहने कि अगर तू सच्चा है, तो हम पर अज़ाब-ख़ुदा ला नाज़िल कर ० (इस पर लूत ने ख़ुदा से) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! (इन) मुफ़्सिद लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद कर ० और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास (बुढ़ापे में बेटे के पैदा होने की) ख़ुश-ख़बरी लेकर आये, तो उन्होंने (इब्राहीम से) कहा कि हम (अन्क़रीब लूत की) इस बस्ती के रहने वालों को हलाक करने वाले हैं-(क्योंकि) इस (बस्ती) के लोग (बड़े ही) शरीर हैं ० (इस पर इब्राहीम ने) कहा कि उस (बस्ती) में तो लूत (भी) हैं। वह बोले कि जो लोग उस (बस्ती) में हैं, हम सब (के हाल) से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं। लूत को और उनके (सब) घर वालों को (बस्ती में से निकाल लेजाकर) हम ज़रूर बचा लेंगे, मगर (एक) लूत की बीवी-कि वह (अलबत्ता) पीछे रहने वालों में होगी० और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये, तो (लूत) उन (के आने) से नाख़ुश (से) हुये और उनकी वजह से (अपने) दिल में बहुत भिंचे और फ़रिश्तों ने कहा, आप (किसी तरह का) ख़ौफ़ न करें और न आज़ुर्दा-ख़ातिर हों। हम (अज़ाब के फ़रिश्ते हैं, मगर) आपको और आपके अह्ल (व अयाल) को बचा लेंगे, मगर आप की बीवी-कि वह तो पीछे रहने वालों में होगी ०—

ثلث

---

जिस (आज तक) तुमसे पहिले संसार में किसी ने नहीं किया। क्या तुम मनुष्यों से कामाग्नि बुझाते हो और (ख़ुदा बन्दों के माल पर) डाका डालते हो? और (भरी) सभा में (अनुचित और) बेहूदा काम करते हो? (क्या तुम्हें ख़ुदा के अज़ाब भय नहीं आता?)। इस पर लूत को जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त और कुछ न था कि लगे कहने-यदि तुम सच्चे हो, तो (हम आगे बहुत बातें न बनाओ)। ख़ुदा का अज़ाब ला उतारो। (सक्षेप घटना यह है कि लूत अपनी जाति से बिल्कुल तंग आ गये औ ख़ुदा से) प्रार्थना करने लगे कि हे मेरे पालन कर्त्ता! इन फ़सादियों के मुक़ाबले में तू मेरी सहायता कर। (अतः उनकी प्रार्थन स्वीकृत हो गई) और जब हमारे भेजे हुये (फ़रिश्ते बुढ़ापे में) इब्राहीम को (पुत्र का) मंगल समाचार सुनाने आये, तो उन्होंने (आक उनसे) कहा, हम (फ़रिश्ते हैं। तुमको सुपुत्र का मंगल समाचार सुनाने आये हैं और) इस (मोतफ़िका) बस्ती के रहने वालों (अल्लाह के अज़ाब से) नष्ट करना चाहते हैं। निस्सन्देह इस (बस्ती) के रहने वाले (बड़े बेहूदा और बड़े) अत्याचारी (तथा अन्याय हो गये) हैं॥

(इब्राहीम ने) कहा, उस (बस्ती) में तो (मेरा भानजा) लूत (भी रहता) है (और वह उस बस्ती के और निवासियों तरह असभ्य नहीं है)। फ़रिश्ते बोले-जो मनुष्य (भी) उसमें रहता है, हम उसको अच्छी तरह जानते हैं। (निस्सन्देह लूत उ लोगों की तरह नहीं है)। हम उन्हें और उनके (समस्त) घर बार को (इस अज़ाब से) बचा लेंगे (और उनसे कह देंगे तुम सब रातों-रात इस बस्ती से बाहर चले जाओ)-परन्तु (हां!) उनकी स्त्री (उनके साथ न जा सकेगी। उसके तो भाग्य ही में है) कि वह (अवज्ञा-कारियों का साथ देगी और उस बस्ती में) शेष रह जाने वालों (और अज़ाब पाने वालों) में से होगी॥

और जब हमारे फ़रिश्ते (इब्राहीम के पास से होकर) लूत के पास आये, तो वह उन्हें देखकर (समझे कि यह मुसाफ़ि हैं। मेरे यहां ठहरने आये हैं, तो अपनी जाति की कष्ट-दायक आदत का विचार करके कुछ) चिन्तित और उदास (से) हो गये (फ़रिश्ते भी उनकी चिन्ता का कारण समझ गये) और उन्होंने (उनके ढाढ़स तथा धैर्य के लिये उनसे) कहा (लूत!) न ड और न चिन्ता करो। निस्सन्देह हम (ख़ुदा के फ़रिश्ते हैं)। तुमको और तुम्हारे घर वालों को (इन लोगों के अत्याचार से) छुड़ (के लिये) आये हैं, किन्तु (हां!) तुम्हारी स्त्री (तुम्हारा साथ न देगी और अपने दुर्भाग्य के कारण) शेष रह जाने वालों (अ अज़ाब पाने वालों) में से होगी॥

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا
مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَلَقَدْ
تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَ
إِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا
اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ
الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝ وَ
عَادًا وَثَمُودَ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَسَاكِنِهِمْ
وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ
السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝ وَقَارُونَ
وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ
بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا
سَابِقِينَ ۝ فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ فَمِنْهُمْ مَنْ

इस बस्ती के लोग जैसी जैसी बदकारियाँ करते रहे हैं, उसकी सज़ा में हम इन पर एक आस्मानी आफ़त नाज़िल करने वाले हैं। ( चुनांचे फ़रिश्तों ने उन बस्तियों को उलट दिया ) ० और हमने उन लोगों के लिये, जो अक़्ल रखते हैं. उस ( उल्टी हुई बस्ती ) को ( एक ) सरीह इब्रत बना छोड़ा ० और ( हमने ) मदयन ( के रहने वालों ) की तरफ़ उनके भाई शुऐब को ( पैग़म्बर बनाकर भेजा )-तो उन्होंने ( उनसे जाकर ) कहा कि भाइयो ! ख़ुदा की इबादत करो और रोज़ आख़िरत का ख़तर ( मलहूज़ ) रक्खो और मुल्क में फ़साद फैलाते न फिरो ० तो उन्होंने शुऐब को झुटलाया। पस भूंचाल ने उनको आ लिया और अपने घरों में बैठे ( के बैठे ) रह गये ० और ( हमने क़ौम ) आद और समूद को ( भी हलाक किया ) और ( ऐ अह्ले-मक्का ! मुल्क शाम को आते जाते ) तुमको उनके ( उजड़े हुये ) घर ( भी ) दिखाई देते हैं और शैतान ने उन्हें उनके अमलों को अच्छा कर दिखाया था और ( इसी बदबीर से ) उनको राह ( रास्त के इख़्तियार करने ) से रोका भी था और ( वह शामते-आमाल से शैतान के बहकाये में आ गये, वर्ना यूं तो ) वह ( बड़ी ) सूझ बूझ के लोग थे ० और ( हमने ) क़ारून और फ़िर्औन और ( फ़िर्औन के वज़ीर ) हामान को भी ( हलाक किया ) और ( बावजूदे कि ) मूसा उनके पास खुले खुले मोजिज़े ( भी ) लेकर आये, ताहम वह मुल्क में अकड़े ( अकड़े ) फिरे और ( कहीं हमसे ) भाग कर न जा सके ० तो हमने सबको उनके गुनाह ( की सज़ा ) में धर पकड़ा। चुनाँचे उनमें से बाज़ तो वह थे—

---

हम इस ( बस्ती ) के रहने वालों पर उनके कुकर्मों के कारण आकाश से ( ख़ुदा का ) अज़ाब ( पत्थरों की वर्षा के रूप में ) उतारने वाले हैं। ( सो उन पर पत्थरों का मेघ वर्षाया गया ) और ( उस समस्त बस्ती को तथा उसके समस्त पापी निवासियों को ) हमने ( नष्ट भ्रष्ट कर दिया और किसी वस्तु को न छोड़ा-किन्तु हाँ ) उस ( बस्ती ) के कुछ खुले चिन्ह समझदार लोगों के लिये शेष छोड़ दिये ( जिससे कि वह उन्हें देखें और शिक्षा ग्रहण करें )। और ( इब्राहीम तथा लूत की तरह ) मदयन ( के रहने वालों ) की ओर उनके ( सजातीय ) भाई शुऐब को हमने ( अपना नबी बनाकर ) भेजा था। सो उन्होंने ( जाकर उनसे ) कहा-भाइयो ! ( मूर्ति पूजा छोड़ दो और ) अल्लाह की पूजा करो और क़यामत के ( भयानक ) दिन से डरो और ( ख़ुदा की ) पृथ्वी में ( झगड़ा ) फ़साद फैलाते न फिरो। ( इस असत्य पूजा तथा उद्दण्डता का फल अच्छा नहीं होगा )। इस पर उन्होंने ( भी लूत की जाति की तरह ) शुऐब को झूठा बताया ( और उनकी किसी बात को सत्य न जाना )। अन्त में ( रात के समय ) उन्हें भूचाल ( के अज़ाब ) ने आ दबाया और वह ( अपने ) अपने घरों में प्रातःकाल औंधे मुंह पड़े हुये मिले॥

और ( हे रसूल ! यही हाल ) आद तथा समूद ( की जाति का था। तुम उनके विनाश की कहानी याद करो ) और ( उनकी बरबादी का हाल तो ) उनके ( उन ) उजाड़ खंडरों ( के देखने ) से ही तुमको ज्ञात हो गया होगा-( जो शाम-देश की ओर आते जाते तुम को दीख पड़ते हैं ) और ( उनके नष्ट होने का मूल कारण भी यही था कि वह ) शैतान ( के बहकाए में आ गए थे। उस ) ने उनके ( अशुभ ) कर्मों को उनके लिये सँवार दिया था ( और बुराई को भलाई कर दिखाया था ) और ( सीधे ) मार्ग ( पर चलने ) से उन्हें रोक दिया था—यद्यपि वह ( अपनी भलाई बुराई भली भांति ) समझते थे ( और समझने की योग्यता रखते थे )। और ( उद्दण्डता तथा अवज्ञा की यही दशा ) क़ारून और फ़िर्औन तथा हामान ( की थी ) और ( हे रसूल ! तुम्हें ज्ञात है कि हमारी आज्ञानुसार ) उन ( लोगों ) के पास मूसा ( हमारे दिये हुये कई ) मोजिज़े लेकर आये थे। फिर भी यह पृथ्वी ( जैसी नीची भूमि ) में ( रहते हुये बराबर ) मुकरते ( हो ) रहे और ( उन्होंने उनका कहा न माना, परन्तु हमारे हाथ से निकल कर कहीं ) न भाग सके। और ( एक यह क्या-हमारे अधिकार से तो कोई उद्दण्ड जाति भी बाहर न जा सकी )। हमने प्रत्येक को उसके कुकर्मों के कारण ( अपने अज़ाब में ) पकड़ लिया। सो उनमें से एक ( तो ) वह ( जाति ) है कि—

أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُم مَّنْ أَخَذَتْهُ
الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُم مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۚ وَ
مِنْهُم مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ مَثَلُ
الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ
الْعَنكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ
لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ۝ خَلَقَ
اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ اتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ
الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ

जिन पर हमने पथराव बर्साया-( जैसे क़ौम आद ) और बाज़ उनमें से वह थे, जिनको बड़े ज़ोर की आवाज़ ने आ दबाया-( जैसे समूद ) और उनमें से बाज़ वह थे, जिनको हमने ज़मीन में धँसाया-( जैसे क़ारून ) और बाज़ उनमें से वह थे, जिनको डिबो दिया-( जैसे फ़िऔन और हामान ) और खुदा तो इन पर क्यों ज़ुल्म करने लगा था, मगर ( यही लोग खुदा की नाफ़र्मानी करके ) आप अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते थे ० जिन लोगों ने खुदा के सिवा दूसरे ( दूसरे ) कारसाज़ बना रक्खे हैं, उनकी मिसाल मकड़ी की सी है-कि उसने ( भी अपने ज़ोम में एक ) घर बनाया और कुछ शक नहीं कि घरों में बोदे से बोदा मकड़ी का घर-ऐ काश! यह लोग ( इतनी बात ) समझते ० ( जिन ) जिन चीज़ों को खुदा के सिवा ( यह लोग ) पुकारते हैं, कुछ शक नहीं कि खुदा उन ( सबकी हक़ीक़त ) से वाक़िफ़ है और वह ज़बरदस्त ( और ) हिक्मत वाला है ० और हम यह ( चन्द ) मिसालें लोगों के ( समझाने के ) लिये बयान फ़र्माते हैं और समझदार ही इनको समझते हैं ० खुदा ने आस्मान व ज़मीन को ( किसी ग़रज़ व ) मस्लहत से पैदा किया है। ईमान लाने वालों के लिये तो इसी में ( कुद्रत खुदा की बड़ी ) निशानी ( मौजूद ) है ० ( ऐ पैग़म्बर! यह ) किताब, जो तुम्हारी तरफ़ वही की गई है, इसकी तिलावत करते और नमाज़ पढ़ते रहो। कुछ शक नहीं कि नमाज़—

उस पर हमने पत्थर वर्षाए-( जैसे लूत की जाति ) और उनमें से एक वह ( जाति ) है कि जिसको एक ( भयानक ) कड़क ने आ दबाया—( जैसे समूद की जाति ) और उन ( ही ) में से कुछ वह लोग हैं, जिन्हें हमने पृथ्वी में धँसा दिया—( जैसे क़ारून तथा उसके साथी ) और उनमें से ( ही ) कुछ वह हैं, जिन्हें हमने डुबो दिया—( जैसे फ़िऔन तथा हामान इत्यादि ) और अल्लाह का यह नियम ( कदापि ) नहीं है कि वह उन पर ( वा किसी पर कुछ ) अत्याचार ( तथा अनीति ) करे, बरन् वह ( अवज्ञा और उद्दण्डता में सीमा से बढ़ कर ) आपही अपने प्राणों पर अत्याचार किया करते थे। ( यह अज़ाब भी उन्हीं के कुकर्मों का दंड था )। जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर ( उद्दण्डता करनी प्रारम्भ करदी और मूर्तियों को अपना पूज्य तथा ) कार्य कर्त्ता बना लिया, वह ( सिद्धान्त बिल्कुल ) मकड़ी की तरह है कि उसने ( जाला क्या तन लिया-मानो अपनी समझ में बड़ा दृढ़ ) मकान बना लिया और सत्य यह है कि ( मनुष्यों के मकान और पशु पक्षियों के भट्ट और बन तो अलग रहे, कमज़ोर से कमज़ोर जानवरों में भी ) सबसे अधिक निर्बल घर मकड़ी का है। क्या अच्छा होता! यदि यह ( मूर्ख इस उदाहरण को समझें और फिर अपनी अज्ञानता तथा बुद्धि की ख़राबी को ) जानें ( और सीधे मार्ग पर आ जायँ ) ॥

निस्सन्देह यह लोग अल्लाह को छोड़ कर जिन वस्तुओं को पूजते हैं, अल्लाह उन ( की वास्तविक दशा ) से ( भली-भांति ) अभिज्ञ है और वह ( बड़ी ) ज़बर्दस्त ( शक्ति वाला है; जब चाहेगा—इन पुजारियों को और इनके असत्य पूज्यों को आग में झोंक देगा और बड़ी ) हिक्मत वाला है—( उसने किसी मस्लहत से इनको अवसर दे रक्खा है )। और ( इस प्रकार की शिक्षा दायक बातें और ) यह उदाहरण लोगों ( की समझ ठीक करने ) के लिये हम वर्णन ( किया ) करते हैं और उन ( की बारीकी ) को जानने वाले ही जानते हैं ( और उन्हें सुनकर बुद्धिमान ही कुछ शिक्षा ग्रहण करते हैं। मूर्खों को उनसे कुछ लाभ नहीं पहुंचता ) ॥

( इन उदाहरणों को सुनकर हर समझदार समझ सकता है कि सच्चा पूज्य तथा एक सृष्टि कर्त्ता ) अल्लाह ( ही है। उसी ने आकाशों और पृथ्वी को ( अपनी शक्ति तथा ) हिक्मत से बना दिया—( इन कामों में कोई उसका साझी तथा सहायक नहीं ) निस्सन्देह इस ( पृथ्वी तथा आकाश के पैदा करने ) में ईमान्दारों ( तथा सज्जनों ) के लिये ( नसीहत तथा शिक्षा का बहुत बड़ा चिन्ह ( वर्तमान ) है। ( हे मुहम्मद! हमारी पवित्र ) पुस्तक ( अर्थात् क़ुर्आन ) जो तुम पर वही की गई है, उसको तुम ( सब के सामने ) पढ़ो और ( उसमें लिखे हुये आदेशों पर चलो। विशेषतः ) नमाज़ ( जो सर्वोत्तम पूजा है, उसे नियम पूर्वक ) अदा करो निस्सन्देह नमाज़ ( यदि श्रद्धा, नियम और एकाग्र-चित्त के साथ पढ़ी जावे, तो नमाज़ी को समस्त ) अनुचित कर्मों तथा निर्लज्जता ( की बातों ) से मना करती है—( क्योंकि नमाज़ अल्लाह के स्मरण करने का एक उत्तम साधन है )—

الفحشاء والمنكر ولذكر الله اكبر والله
يعلم ما تصنعون ● ولا تجادلوا اهل
الكتب الا بالتي هي احسن الا الذين ظلموا
منهم وقولوا امنا بالذي انزل الينا وانزل
اليكم والهنا والهكم واحد ونحن له مسلمون
وكذلك انزلنا اليك الكتب فالذين اتينهم
الكتب يؤمنون به ومن هؤلاء من يؤمن به
وما يجحد بايتنا الا الكفرون ● وما كنت
تتلوا من قبله من كتب ولا تخطه
بيمينك اذا لارتاب المبطلون ● بل هو
ايت بينت في صدور الذين اوتوا العلم
وما يجحد بايتنا الا الظلمون ● وقالوا لولا
انزل عليه ايت من ربه قل انما الايت

बेहयाई ( के कामों ) और ना शायस्ता हर्कतों से रोकती (रहती) है और यादे-ख़ुदा अलबत्ता ( बड़ी ) चीज़ है और जो कुछ ( भी ) तुम लोग करते हो, अल्लाह जानता है ० और ( मुसलमानो ! ) अह्ले—किताब के साथ झगड़ा न किया करो, मगर ऐसी तरह पर कि वह निहायत ही उम्दा (और शायस्ता) हो, हां जो लोग उनमें से ज़ियादती करें—(तो उनको तुरकी-बतुरकी जवाब देने का मुज़ायक़ा नहीं ) और ( इन लोगों से ) कहो कि जो ( किताब ) हम पर नाज़िल हुई और ( जो कित।बें ) तुम पर नाज़िल हुईं, हमतो सभी को मानते हैं और हमारा ख़ुदा और तुम्हारा ख़ुदा एक ही है और हम उसीके फ़र्मांबर्दार हैं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! जिस तरह हमने अगले पैग़म्बरों पर किताबें उतारी थीं )—इसी तरह हमने तुम पर ( यह ) किताब उतारी। तो जिनको हमने ( तुमसे पहिले ) किताब दी है ( यानी अह्ले-किताब, उनमें से जो हक़ पसंद हैं, वह तो बेतअम्मुल ) इस (क़ुर्आन) पर ईमान ले आते हैं और इन ( मुश्रिकीन-अरब ) में से भी (बाज़) ऐसे (समझदार) हैं कि वह भी (सोच समझ कर) इस पर ईमान ले आते हैं और ( जो निरे ) हट धर्म ( हैं )—वही हमारी आयतों को नहीं मानते ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) क़ुर्आन से पहिले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते ( पढ़ाते ) थे और न तुमको अपने हाथ से लिखना ही आता था कि ऐसा होता, तो यह बेदीन ख़्वाही न ख़्वाही शुबहा करते ० मगर जिन लोगों को अक़्ल दी गई है, उनके अक़ीदे में तो यह ( क़ुर्आन ऐसी खुली ) खुली आयतें हैं ( कि कोई मुन्सिफ़-मिज़ाज उनसे इनकार नहीं कर सकता ) और जो बेइन्साफ़ हैं, वही हमारी आयतों को नहीं मानते ० और ( बाज़ लोग तुम्हारी निस्बत ) कहते हैं कि इस ( शख़्स ) पर इस के पर्वर्दिगार ( की तरफ़ ) से मोजिज़े क्यों नहीं उतरे ? ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मोजिज़े तो—

---

और अल्लाह का स्मरण ( मनुष्य के हृदय को वासनाओं से मुक्त रखता है और मनुष्य की इन्द्रियों को दमन करने और आत्मा को उन्नति देने तथा बलिष्ट बनाने के लिये) बड़ी (उत्तम औषधि) है। (अतः नमाज़ को नियम पूर्वक पढ़ा करो ) और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ( पूरी ) ख़बर है। और तुम किताब वालों ( अर्थात ईसाई तथा यहूदी लोगों ) से वाद ( विवाद ) न किया करो–सिवाय उस रीति के, जो ( परिणाम की दृष्टि से ) उत्तम हो। मगर ( हाँ ) उनमें से जो लोग (तुम्हारे साथ ) अत्याचार करें—( तुम भी उनके साथ अत्याचार कर सकते हो। जैसे को तैसा जवाब देने में कुछ पाप नहीं ) और (जो तुम्हारे साथ सभ्यता से पेश आवें, उनसे) कहो कि जो ( किताब ) हम पर उतरी ( है ) और जो ( किताबें हमसे पहिले ) तुम पर उतारी गई ( हैं )—हम (तो उन ) सब पर ईमान रखते हैं। और हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य ( भी ) एक ( ही ) है और हम तो ( सभी ) उसी ( एक अल्लाह ) के आधीन ( बन्दे ) हैं। (मूर्त्ति पूजक न तुम हो न हम )॥

( हे रसूल ! तुम उन्हें समझाओ और उनसे कहो कि जिस प्रकार अगले नबियों ) और ( रसूलों पर उनके समयानुकूल तौरैत, इन्जीलादि किताबें उतरी थीं )—उसी प्रकार ( वर्त्तमान काल में ) तुम पर हमने इस किताब ( अर्थात क़ुर्आन ) को उतारा है। सो (कुछ वह लोग ) जिन्हें हमने ( अपनी ) किताब प्रदान की है, वह इस ( हिकमत को ख़ूब समझते हैं और क़ुर्आन को अल्लाह की ओर से उतरने ) का विश्वास रखते हैं और उन सब ( मुश्रिकों तथा काफ़िरों ) में से भी कोई ( कोई ऐसे समझदार हैं, जो ) इस ( की सचाई ) को ( सच्चे दिल से ) मानते हैं और ( सच पूछो तो हठ धर्म और कट्टर ) काफ़िरों के अतिरिक्त ( इसके ईश्वरवाणी होने का ) कोई भी इन्कारी नहीं है। और न तो तुम इस ( क़ुर्आन के उतरने ) से पहिले कोई सी किताब पढ़ा करते थे और न तुम ( कुछ ) अपने हाथ से लिखा ही करते थे। ( यदि तुम लिखना पढ़ना जानते होते )—तो अवश्य यह झूठे सन्देह करने ( हुये अच्छे लगते )—बरन यह ( सच्चे ख़ुदा के कुछ ) स्पष्ट चिन्ह हैं, जो उन लोगों के हृदयों में ( सुरक्षित ) हैं, जिन्हें ( ख़ुदा की ओर से धर्म ) ज्ञान प्रदान किया गया है। और ( यह सत्य है कि हठ धर्मी और ) अन्यायियों के अतिरिक्त हमारी ( इन स्पष्ट ) आयतों का कोई इन्कार नहीं करता। और ( यह उन लोगों का सरासर अन्याय है, जो इस पवित्र कलाम को सुनने के उपरान्त भी रसूल को झूठा बताते हैं और आक्षेप की रीति पर ) कहते हैं कि ( प्राचीन नबियों–मूसा, ईसा आदि पर जैसे चमत्कार उतरे, वैसे ) चमत्कार इन पर ( अर्थात मुहम्मद पर ) इनके पालन कर्त्ता की ओर से क्यों नहीं उतारे गये ? ( हे रसूल ! ) तुम ( इनकी हठधर्मी की कुछ परवाह न करो और इनसे ) कहदो कि चमत्कार तो—

عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ
اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ
كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ
وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝
وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَلَوْلَآ اَجَلٌ
مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ۗ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً
وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ
وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَوْمَ يَغْشٰهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ
وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰعِبَادِيَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ۝

ع

यٰعِبَادِيَ

ख़ुदा ही के पास ( यानी उसीके इख़्तियार में हैं) और मैं तो साफ़ तौर पैर डर सुनाने वाला हूं और बस ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या इन लोगों के लिये (यह मोजिज़ा ) काफ़ी नहीं ? कि हमने तुम पर कुर्आन उतारा, जो इनको पढ़ कर सुनाया जाता है। जो लोग ईमान लाने वाले हैं, उनके लिये तो इसमें (ख़ुदा की बड़ी) मेहर्बानी और ( मेहर्बानी के अलावा ) नसीहत है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह गवाह बस है ( कि ) वह आसमानों और ज़मीन की ( सब ) चीज़ों को जानता है और जो लोग झूटे (माबूदों) पर ईमान लाते और अल्लाह से फिरे हुये हैं, वही तो (क़यामत के दिन बड़े) घाटे में रहेंगे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! यह लोग ) तुमसे अज़ाब ( आख़िरत ) के लिये जल्दी मचा रहे हैं और अगर ( ख़ुदा के नज़दीक अज़ाब का ) एक वक़्त मुक़र्रर न होता, तो इन पर ( कभी का ) अज़ाब आ चुका होता और वह ( एक न एक दिन ) दफ़अतन इन पर आकर रहेगा और इनको ख़बर भी न होगी ० ( ऐ पैग़म्बर ! यह लोग) तुमसे अज़ाब ( आख़िरत ) के लिये जल्दी मचा रहे हैं और कुछ शक नहीं कि दोज़ख़ काफ़िरों का इहाता किये हुये है – ( कोई उससे नहीं बचेगा) ० जबकि अज़ाब इनके ( सर के ) ऊपर से और इनके पैरों के तले से इनको ढांके होगा और ( ख़ुदा इनसे ) फ़र्मायेगा कि जैसे जैसे अमल तुम ( दुनिया में ) करते रहे हो—(अब उनका मज़ा ) चक्खो ० हमारे बन्दो ! जो ईमान लाये हो, हमारी ज़मीन फ़राख़ है, तो ( जहां रह कर तुमसे बन पड़े ) हमारी ही इबादत करो ०—

अल्लाह के अधिकार में हैं–( वह जिसे चाहे, जो चमत्कार प्रदान करदे ) और मैं तो खुल्लम खुल्ला ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डरा वाला हूं और बस। ( हे रसूल ! ) क्या इन ( की शिक्षा तथा उपदेश ) के लिये यह ( चमत्कार ) यथेष्ट नहीं है ? कि हमने तुम पर इ ( अमूल्य ) पुस्तक को उतारा, जिसका इनके सामने पाठ किया जाता है। निस्सन्देह ( यह पुस्तक ) ईमानदार (और न्याय-प्रिय ) लोग के लिये ( एक पथ प्रदर्शक है, जो सीधा मार्ग बताती है ) । इसमें रहमत ( तथा अनुकम्पा ) भी है और शिक्षा भी। ( यदि इतन समझाने बुझाने के बाद भो यह लोग सोधे मार्ग पर न आयें, तो ) तुम ( इनसे ) कहदो कि ( लोगो ! ) अल्लाह मेरे तुम्हारे बीच गवा ( है और न्याय करने के लिये वह बिलकुल ) पर्याप्त है। जो कुछ आकाशों और और पृथ्वी में ( होता रहता) है, उससे वह ( भली भाँति अभिज्ञ है और ( वह यह भी जानता है कि ) जो लोग असत्य ( पूजा ) पर विश्वास रखते हैं और अल्लाह ( के एक होने तथा स शक्तिमान होने ) का इन्कार करते हैं—यही ( वह ) लोग ( हैं, जो लोक परलोक में ) हानि उठाने वाले हैं ॥

और ( हे रसूल ! ) यह ( लोग जो ) तुमसे अज़ाब ( के उतरने ) की जल्दी कर रहे हैं और ( उस पर तुम्हारी सचाई निर्भर करते हैं, तो यह उनकी अज्ञानता है । अज़ाब का तो एक विशेष काल नियत है ) । यदि समय नियत न होता ( और अज़ाब उतरने पर रसूल की सचाई निर्भर होती, या उनके कुकर्मों के सीमा से पार हो जाने पर अज़ाब का आना निर्भर होता )—तो ( अ तक तो कभी का ) अज़ाब उन पर आ चुका होता और ( अब क्या यह उससे छूट जायँगे ? जब नियत समय आवेगा, तो ) व अकस्मात उन पर उतरेगा और उन्हें ( यह भो ) न मालूम होगा ( कि वह कब आया और किस प्रकार आया ) ॥

( हे रसूल ! ) यह ( लोग ) तुमसे अज़ाब ( उतारने ) की ( बहुत ) जल्दी मचा रहे हैं और ( इन्हें नहीं मालूम कि एक दिन दोज़ख़ ( की आग इन ) काफ़िरों पर छाजावेगी ( और वह दिन निकट है कि ) जिस दिन ( अल्लाह का ) अज़ाब उनके ( सिर के ऊपर से और पैरों के नीचे से ( अर्थात चारों ओर से ) उन्हें घेर लेगा ( और उन्हें दम मारने का अवसर न मिलेगा ) और ( उ समय) ख़ुदा कहेगा कि अपने (अशुभ) कर्मों का स्वाद चक्खो। हे मेरे ईमानदार बन्दो ! ( यदि यह काफ़िर तुमको मक्का नगर में चैन नहीं रहने देते और तुम्हारी उपासना तथा आराधना में बाधा डालते हैं, तो ) निस्सन्देह हमारी पृथ्वी ( बहुत ) विस्तृत है–( तुम स्थान छोड़कर कहीं और चले जाओ और ) केवल हमारी ही पूजा में लगे रहो ॥

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم
مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا
وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَكَأَيِّن مِّن
دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ
خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝ اللَّهُ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ
إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن
نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ
مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ

हर जानदार ( एक न एक दिन ) मौत ( का मज़ा ) चखने वाला है। फिर ( तुम सब लोग ) हमारी तरफ़ लौटाकर लाये जाओगे ० और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक-अमल ( भी ) किये, उनको हम बहिश्त के बालाख़ानों में जगह देंगे, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी ( और वह ) उनमें हमेशा ( हमेशा ) रहेंगे—( नेक ) अमल करने वाले ० जिन्होंने (दुनिया में) सब्र किया और अपने पर्वर्दिगार पर भरोसा रखते रहे, उनका ( भी क्या ही ) अच्छा अज्र है ० और कितने जानवर हैं, जो अपनी रोज़ी ( अपने ऊपर लादे ) लादे नहीं फिरते। अल्लाह ही उनको रोज़ी पहुंचाता है और तुम लोगों को ( भी )–और वह ( सबकी ) सुनता ( और सब कुछ ) जानता है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर तुम इन ( लोगों ) से पूछो कि ( भला ) किसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और चांद और सूरज को ( अपने ) बस में कर रक्खा है, तो ज़रूर ( यही ) जवाब देंगे कि अल्लाह ने–फिर ( बाईहमा यह लोग ) किधर बहके चले जा रहे हैं ० अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ कर देता है और जिसकी चाहता है, नपी-तुली कर देता है। बेशक अल्लाह ही हर चीज़ ( के हाल ) से वाक़िफ़ है ० और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम इन ( लोगों ) से पूछो कि कौन आसमान से पानी बर्साता, फिर उस पानी के ज़रिए से ज़मीन को उसके मरे ( यानी पड़ती पड़े ) पीछे जिला उठाता है, तो ज़रूर ( यही ) जवाब देंगे कि अल्लाह—( ऐ पैग़म्बर ! तुम ) कहो अल्हम्दुलिल्लाह, लेकिन इनमें के अकसर—

( याद रक्खो ! तुममें से ) प्रत्येक प्राणी ( एक न एक दिन ) मृत्यु का स्वाद चखने वाला है ( और मृत्यु के पश्चात ) फिर तुम्हें हमारे ही पास लौट कर आना ( और हमें अपने बुरे भले का हिसाब देना ) है। ( अतः जो अवज्ञाकारी ) और ( कुकर्मी हैं, हमारे यहाँ उनका बहुत बुरा स्थान होगा—किन्तु हां ! ) जो लोग ( इस दुनिया में सच्चे दिल से ) ईमान ले आये और ( ईमान लाने के बाद ) उन्होंने शुभ कर्म भी किये ( वह उच्च—पद प्राप्त करेंगे )। उन ( भाग्यवानों ) को तो हम ( उनके रहने के लिये ) जन्नत के ऊँचे ( ऊँचे ) महलों में जगह देंगे—( जहां हर प्रकार का आनन्द मंगल होगा और ) जिनके नीचे ( भांति २ की स्वच्छ ) नहरें बहती होंगी ( और यह सदैव ) सदैव उन ( सुन्दर महलों ) में ( सुख—आनन्द से ) रहेंगे ॥

( वाह ! वाह !! ) उन ( ईमानदारों तथा शुभ ) कर्म करने वालों का ( ख़ुदा के यहां ) क्या ही अच्छा प्रतिफल है, जिन्होंने ( काफ़िरों के हाथों तरह २ के दुख उठाये। अपने ख़ुदा के मार्ग में भूखे प्यासे रहे। स्वदेश त्याग कर विदेश गये, परन्तु धीरज न छोड़ा, सदैव ) सन्तोष से काम लिया और ( हर दशा में ) अपने पालनहारे पर ही भरोसा करते रहे। और ( हे रसूल ! वह मुसलमान—जो जीविका बन्द हो जाने के भय से स्वदेश त्यागन नहीं करते और काफ़िरों में रहना पसन्द करते हैं, उनसे कहदो कि जीविका से निराश न हों। देखो ! ) बहुत से जानवर ऐसे हैं, जो (कल के लिये) अपना भोजन उठा (कर) नहीं रखते ( और फिर भी वह कभी भूखे नहीं रहते। याद रक्खो ! अन्न देना ) अल्लाह ( का काम है )। उन्हें भी ( वही ) जीविका देता है और तुमको भी ( वही )—और वह (सबकी) सुनता ( और सब कुछ ) जानता है। और ( हे रसूल ! सिद्धान्त-रूप से यह काफ़िर भी अल्लाह के अन्नदाता होने का इन्कार नहीं कर सकते। सो ) यदि तुम उनसे पूछो कि आकाशों और पृथ्वी को किसने पैदा किया ? और सूर्य तथा चन्द्रमा को किसने ( अपने ) आधीन बना रक्खा है, तो अवश्य ( यही ) कहेंगे कि अल्लाह ने—फिर किस कारण से ( उसको एक मानने और उसके अन्नदाता होने से ) विमुख ( तथा इन्कारी ) होते हो ॥

( ख़ैर ! यह काफ़िर चाहे समझें वा न समझें, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि हर एक का अन्नदाता ) अल्लाह ( ही है। वह ) अपने बन्दों में से जिसको जीविका चाहता है, बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है, घटा देता है। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु ( की दशा भली भाँति ) जानता है। और ( हे रसूल ! ) यदि तुम उन ( काफ़िरों ) से पूछो कि आकाश से जल कौन वर्षाता है ? ( और ) फिर उस ( पानी ) से पृथ्वी को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ( कौन ) ज़िन्दा करता ( और उसमें से भिन्न २ प्रकार का अन्न कौन उगाता ) है, तो अवश्य ( यही ) कहेंगे कि अल्लाह। ( हे रसूल ! ) तुम कहो अल्हम्दुलिल्लाह ! ( इतना तो इक़रार किया )—परन्तु ( हे रसूल ! ) इनमें से बहुत से ( ऐसे हैं, जो ) समझते ( बूझते कुछ भी) नहीं ॥

لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا اِلَّا
لَهْوٌ وَّلَعِبٌ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ
لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ
دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۝ فَلَمَّا نَجّٰهُمْ
اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ۝ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ
اٰتَيْنٰهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا
اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ
حَوْلِهِمْ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ
يَكْفُرُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ
مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا
لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً

अक़्ल से काम नहीं लेते ० और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस (जी का) बहलावा और खेल है और दार-आख़िरत (की ज़िन्दगी) वही (अस्ल) ज़िन्दगी है-(ऐ) काश! यह लोग (इतनी बात) समझते ० फिर जब (लोग) किश्ती में सवार होते हैं, तो बड़े ख़ुलूस से ख़ुदा की बन्दिगी का इज़हार करके उसी को पुकारते हैं, फिर जब (ख़ुदा) उनको (दरिया से) नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ पहुंचा देता है, तो नजात पाते ही वह शिर्क करने लगते हैं ० ताकि जो (नेअमतें) हमने उनको अता फ़रमाई हैं, उनकी नाशुक्री करें और ताकि (चन्द रोज़ दुनिया में और) रस बस लें। तो (ग़ौर!) आगे चल कर (क़यामत में अपनी नाशुक्री का अन्जाम) मालूम कर लेंगे ० क्या कुफ़्फ़ार-मक्का ने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि हमने हरम (मक्का) को अम्न की जगह बना रक्खा है और लोग (हैं कि) इनके आस पास से पकड़े चले जा रहे हैं। तो क्या यह लोग झूटे (माबूदों) पर ईमान लाते और अल्लाह की नेअमतों की नाशुक्री करते हैं ० और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन? जो ख़ुदा पर झूट बोहतान बांधे या जब हक़ बात उसको पहुंचे, वह उसको झुटलाये-क्या (ऐसे) मुन्किरों का (आख़िरी) ठिकाना जहन्नम में नहीं है ० और जिन लोगों ने हमारे दीन (के काम) में कोशिशें कीं, हम (भी) उनको ज़रूर अपने रस्ते दिखायेंगे और कुछ शक नहीं कि अल्लाह उन (लोगों) का साथी है, जो (ख़ुलूस दिल से) नेक अमल करते हैं ०

## सूरत—रूम

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ६० आयतें और ६ रुकूअ हैं॥

الٓمّٓ ۝

और (इसका कारण यह है कि इन्होंने अपना मुख्य प्रयोजन दुनिया ही को समझ लिया है, उसीमें मग्न रहते हैं–यद्यपि) सांस रिक जीवन तो (अल्प कालिक) खेल क्रीड़ा के अतिरिक्त कुछ नहीं और निस्सन्देह (बुद्धिमानों के निकट तो) पारलौकिक घर ही जी (और जीवन का सार) है। क्या अच्छा होता! यदि यह (लोग भी इस बात को) समझ लेते (और अपना परलोक न बिगाड़ते (इन लोगों की तो कुछ अनोखी दशा है। जब किसी संकट में फंस जाते हैं, तो इन्हें ख़ुदा याद आता है और जब उससे छुटकारा पा जाते तो (फिर उसी कुफ़्र शिर्क में लिप्त हो जाते हैं और ख़ुदा को भूल जाते हैं, जैसे) जब (कभी) यह नौका में सवार होते हैं (और संय वश वह नौका डूबने लगती है) तो (उस समय) यह (सहायता के लिये) अल्लाह को पुकारते हैं (और) इस तरह (पुकारते हैं) (मानो यह) केवल उसी के मानने वाले हैं, परन्तु जब वह (अर्थात अल्लाह) उन्हें मुक्ति प्रदान कर देता है (और जल से निकाल क स्थल की ओर (ले आता है) तो तुरन्त शिर्क करने लगते हैं–जिससे कि जो कुछ हमने उनको दिया है, उसका इन्कार करें और जि कि (हमारी आधीनता के बन्धन से मुक्त होकर दुनिया के ख़ूब) मज़े उड़ाएँ—(परन्तु मरने के बाद) फिर इन्हें (अपने अच्छे बुरे कर्मों भली भांति) ख़बर हो जावेगी॥

(और इन्हीं मक्का के मुश्रिकों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो धर्म-मार्ग पर आने के लिये व्यर्थ बहाने करते हैं और कहते हैं यदि हम राह पर आ जायँ, तो हमारे साथी हमें तरह २ के दुखों में फंसा देंगे, तो) क्या उन्हें दीख नहीं पड़ा कि हमने (उनके निव स्थान) हरम (अर्थात मक्का) को अमन (चैन) की जगह बना रक्खा है और (इसके विपरीत) उनके (देश के) आस पास स्थानों) से लोग (हर तरह) उचक लिये जाते (और तरह २ के अत्याचार उन पर होते) हैं। क्या (हमारे इतने बड़े उपकार के हुये भी) यह लोग असत्य (पूज्यों की असत्य बातों) पर तो विश्वास रखते हैं और अल्लाह की नेअमत (अर्थात मुहम्मद की सत्य बातें मानने) से इन्कार करते हैं। और उस मनुष्य से ज़्यादा अत्याचारी कौन है, जो अल्लाह पर (झूट) बोहतान बाँधे, अथवा सत्य को झुठ (अर्थात) जब उसके पास (ख़ुदा का रसूल और उसकी किताब) आवे (तो वह उसको झूठा बतावे)। क्या दोज़ख़ में (ऐसे मुि तथा) काफ़िरों का ठिकाना नहीं है? (है) और (अवश्य है, किन्तु) वह (ईमानदार) लोग–जिन्होंने हमारे मार्ग में (साहस पू उद्योग किया, उन्हें हम (सफलता का) मार्ग दिखावेंगे। और (इसमें कुछ) सन्देह नहीं कि अल्लाह ऐसे सुकर्मियों के साथ रहता

## सूरत—रूम

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ६० आयतें और ६ रुकूअ हैं॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓ ● غُلِبَتِ الرُّوْمُ ● فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ● فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ
لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ
يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ● بِنَصْرِ اللّٰهِ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ● وَعْدَ اللّٰهِ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ
وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ●
يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ
الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ● اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى وَاِنَّ
كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ●
اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० अलिफ़् लाम् मीम ० क़रीब के मुल्क ( यानी फ़ारिस ) में रूमी ( जो नसारा हैं–अह्ले–फ़ारिस से, जो आतिश–परस्त हैं )–मग़्लूब हो गये हैं, लेकिन यह लोग अपने मग़्लूब हुये पीछे अन्क़रीब चन्द साल में (फिर अह्ले–फ़ारिस पर ) ग़ालिब आजाएँगे ० ( इससे ) पहिले भी ( फ़तेह व शिकस्त का ) इख़्तियार अल्लाह ही को था और ( इस वाक़ए के ) बाद भी ( उसी को इख़्तियार है ) और उस दिन ( जबकि रूमी ग़ालिब होंगे )–मुसलमान अल्लाह की मदद से ख़ुश हो जाएँगे ० वह जिसकी चाहता है, मदद करता है और वह ज़बरदस्त ( और ) रह्म वाला है ० ( यह ) अल्लाह का वादा (है) और अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया करता—लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते ० ( यह लोग बस ) ज़िन्दगीए—दुनिया के ज़ाहिर ( हाल ) को समझते हैं और आख़िरत से तो यह लोग बिल्कुल ही बे-ख़बर हैं ० क्या इन लोगों ने अपने दिल में ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को और उन चीज़ों को—जो इन दोनों के दर्मियान में हैं, किसी मस्लहत ही से और ( एक ) वक़्त मुक़र्रर के लिये पैदा किया है और बहुतेरे आदमी ( तो क़यामत के दिन ) अपने पर्वर्दिगार से मिलने को ( सिरे से ) मानते ही नहीं ० क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं ? ( चलते फिरते ) तो देखते कि—

( अरब ) प्रदेश की सीमा पर ( फ़ारस के अग्नि-पूजकों और रूम के ईसाइयों में जो लड़ाई हुई, उसमें फ़ारस वाले विजयी हुये और ) रूम वाले पराजित हुये और ( फ़ारस वालों के अग्नि पूजक होने के कारण उनकी विजय पर मक्के के मूर्ति-पूजकों को बहुत .ख़ुशी हुई। यद्यपि उन्हें यह मालूम नहीं कि फ़ारसियों की यह विजय और उनकी यह .ख़ुशी थोड़े दिन की है और ) वह ( रूम वाले ) अपने पराजित हो जाने के बाद शीघ्र ( अपनी दशा सुधार लेंगे और ) कुछ साल में ( अर्थात् अधिक से अधिक नौ साल में इन अग्नि-पूजकों पर ) विजय पा लेंगे-( फ़ारस निवासियों के वैभव को देख कर यह समझ लेना कि यह सदैव के लिये रूमियों पर विजयी हो गये, बड़ी मूर्खता है। हार जीत का ) अधिकार ( रूमियों की पराजय से ) पहिले भी अल्लाह ही को था—( वह चाहता, तो रूमियों को विजयी कर देता ) और ( उसके ) बाद में भी ( अल्लाह ही को अधिकार है। अतः वह अपनी आज्ञा से कुछ काल में रूमियों को अवश्य विजय देगा ) और ( न केवल रूमियों को विजयी कर देगा, वरन् ) उस दिन ईमानदार भी ( काफ़िरों के मुक़ाबले में विजय पावेंगे और ) अल्लाह की सहायता ( के पहुंचने और उस दोहरी सफलता प्राप्त करने ) से ( वह बहुत ) ख़ुश होंगे । ( निस्सन्देह ) ख़ुदा जिसकी चाहता है, सहायता करता है । ( निस्सन्देह ) वही ( ख़ुदा ) प्रबल तथा कृपालु है ॥

( मुसलमानो ! जो ) वादा ( तुमसे ) अल्लाह ने किया है—( वह अवश्य पूरा होगा )। अल्लाह ( कभी ) वादे के विरुद्ध नहीं करता, परन्तु बहुत से ( मूर्ख ) लोग ( अर्थात् मुश्रिक तथा काफ़िर उसके वादे के पक्का होने और उसके अधिकार तथा शक्ति को तो ) समझते नहीं—( अपनी मूर्खता से ऊपरी बातों पर दृष्टि रखते हैं। यही कारण है कि ) वह सांसारिक जीवन के प्रगट ( कामों ) को ( तो ) समझते हैं-( खाने कमाने के लिये हाथ पैर मारते हैं ) और ( अपनी मूर्खता के कारण ) वह परलोक ( के कार्यों ) से अचेत हैं। ( परलोक की कमाई करना नहीं जानते। न उन्हें कभी यह ख़याल आता है कि दुनिया धोखे की माया है और हमें अल्लाह के दरबार में जाना है ) ॥

क्या यह ( इतना भी ) अपने दिल में नहीं सोचते कि अल्लाह तआला ने ( इतने बड़े ऊंचे ) आकाशों को और ( इतनी चौड़ी चकली ) पृथ्वी को और जो इन ( आकाशों तथा पृथ्वी ) के बीच में है, किसी मस्लहत ही से ( पैदा किया है, व्यर्थ पैदा नहीं किया और वह मस्लहत यही है कि मनुष्य संसार की वस्तुओं को देख कर अपने जन्म-दाता को पहिचाने ) और ( उनके परिवर्तनों को देख कर समझ जावे कि हमने उन्हें ) एक नियत समय ( तक ) के लिये पैदा किया है और ( यह समझ कर परलोक की चिन्ता करे। इतना समझाने बुझाने पर भी ) बहुत से लोग ( क़यामत के दिन ) अपने पालन कर्त्ता के दरबार में हाज़िर होने ( और हिसाब देने ) का विश्वास नहीं करते क्या उन्होंने पृथ्वी में ( चल फिर कर ख़ुदा की शक्ति की ) सैर नहीं की, जिससे कि देखते कि—

جو लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उनका कैसा ( बुरा ) अन्जाम हुआ। वह लोग इनसे कूवत में भी कहीं बढ़ कर थे और उन्होंने ज़मीनें भी जोतीं और ज़मीन को जिस क़दर इन लोगों ने आबाद किया है, इस से बहुत ज़ियादा उन लोगों ने आबाद किया था और उन पास ( भी ) उनके पैग़म्बर मोजिज़े ले लेकर आये थे—( मगर उन्होंने न माना और अपने किये की सज़ा पाई )—तो खुदा ( तो ऐसा बेइन्साफ़ ) न था कि उन पर ज़ुल्म करे, मगर वह लोग ( कुफ़्र व शिर्क करके ) आप ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते थे ० फिर जिन लोगों ने बुरा किया, उनका अन्जाम भी बुरा ही हुआ । क्योंकि उन्होंने खुदा की आयतों को झुटलाया और उनकी हँसी उड़ाया किये ० अल्लाह ही मख़्लूक़ को अव्वल बार पैदा करता है, फिर वही ( इसी तरह की ) मख़्लूक़ बार बार पैदा करता रहता है, फिर तुम ( सब लोग ) उसी की तरफ़ लौटाकर लाये जाओगे ० और जिस दिन क़यामत बर्पा होगी, गुनहगार नाउम्मीद होकर रह जाएंगे ० और ( जिनको यह लोग शरीक खुदाई बनाते हैं ) इनके ( उन ) शरीकों में से कोई इनका सुफ़ारशी न होगा और ( उस वक़्त यह लोग भी ) अपने शरीकों से फिर बैठेंगे ० और जिस दिन क़यामत बर्पा होगी, उस दिन ( मोमिन और काफ़िर एक दूसरे से ) जुदा हो जाएँगे ० फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, वह तो बाग़ ( बहिश्त ) में होंगे ( और ) उनकी ख़ातिर-दारियां हो रही होंगी ० और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और रोज़—आख़िरत के पेश आने को झुटलाते रहे—

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا
عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا
كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۝ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا السُّوأَىٰ
أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ۝
اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ
وَلَمْ يَكُن لَّهُم مِّن شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا
بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ
يَوْمَئِذٍ يَتَفَرَّقُونَ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ۝ وَأَمَّا
الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ

ع

فاولئك

जो लोग इनसे पहिले हो चुके हैं, उनका ( इसी हठधर्मी और कुफ़्र, शिर्क के कारण ) कैसा ( बुरा ) परिणाम हुआ। ( इन्हें आद तथा समूद जाति के उद्दण्डों का हाल नहीं मालूम कि वह किस तरह नष्ट हुये—यद्यपि ) वह बल में भी इनसे ( कह ज़्यादा थे और भूमि को भी उन्होंने ( इनसे कहीं ज़्यादा ) बोया जोता था और ( भाँति २ के उच्च भवन तथा दुर्गादि बनाक उन्होंने पृथ्वी को आबाद भी उससे ( कहीं ) ज्यादा किया था, जितना इन्होंने पृथ्वी को बसाया है और ( उनके विनाश कारण यही है कि ) उनके पास उनके रसूल चमत्कार लेकर आये ( और उन्हें तरह २ से अपने रसूल होने और खुदा के एक का विश्वास दिलाया, परन्तु उन्होंने उनकी एक बात भी न मानी )॥

अतः ( इस बात से सचेत होकर उनकी बरबादी के सम्बन्ध में यह कहना कि अल्लाह ने उन पर अत्याचार किया, ना समझी और मूर्खता है )। अल्लाह ( का यह नियम ) नहीं है कि उन पर ( वा किसी पर ) अत्याचार करे, बरन् वह ( अ कुकर्मों के कारण ) आप ही अपने प्राणों पर अत्याचार किया करते थे। फिर जिन लोगों ने ( अपना सारा जीवन ) बुराई ( में व्यत किया—( वह यदि खुदा के अज़ाब से नष्ट हो गये, तो खुदा पर क्या दोष। यहां तो जो हुआ, सो हुआ। क़यामत में भी ) उनका परि ( बहुत ही ) बुरा है, इसलिये कि उन्होंने ( अल्लाह की ) आयतों को झुठलाया और ( सर्वदा उनकी हंसी ही उड़ाते रहे । समझ मनुष्य यदि सोच विचार करे, तो इसको समझ सकता है कि ) अल्लाह ( एक है। दोनों लोकों का पैदा करने वाला वही है। वही चाहता है, तो अपनी ) सृष्टि को पहिले पहल भी पैदाकर दिखाता है (और जब चाहेगा, उसे नष्ट करके) फिर दुबारा पैदा कर दिखावे फिर तुम ( सब के सब ) उसके दरबार में ले जाए जाओगे ( और जो कुछ तुम यहां करते रहे, उसका हिसाब किताब दोगे )॥

और जिस दिन क़यामत स्थिर होगी ( और मुश्रिकों से पूछा जावेगा कि तुम खुदा की खुदाई में दूसरों को क्यों शरीक थे ) तो ( यह कुफ़्र शिर्क करने वाले ) पापी ( कुछ भी न बोल सकेंगे। बिल्कुल ) चुप ( और निरुत्तर ) हो ( कर रह ) जावेंगे। ( उनका वह समय बड़ी विवशता का होगा, जबकि उनका अपराधी होना सिद्ध हो जावेगा ) और उन ( को खुदा के अज़ाब से बच के लिये उनके ( अपने बनाए ) शरीकों में से ( सबके सब तो अलग रहे—दो चार ) सिफ़ारशी भी न निकलेंगे और यह अपने श ( की लाचारी को जानकर उन ) से फिर जावेंगे। और जिस दिन क़यामत स्थिर होगी, उस दिन ( बुरे भले ) सब अलग २ होजा सो जो लोग ( अल्लाह रसूल पर सच्चे दिल से ) ईमान ले आए और ( ईमान लाने के बाद ) उन्होंने शुभ कर्म भी किये, तो वह ( स्वर्ग के ) बाग़ में प्रसन्न ( तथा प्रफुल्लित ) होंगे और वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया और ( सदैव ) हमारी आयतों को और पर ( के दिन ) में मिलने को झुठलाया—

فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝ فَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا
وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝ وَمِنْ
اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ
تَنْتَشِرُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ
اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ
بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ

तो यही लोग अज़ाब में पकड़े हुये होंगे ० पस जिस वक़्त तुम लोगों को शाम हो और जिस वक़्त तुमको सुबह हो, अल्लाह की तस्बीह ( व तक़्दीस ) करो ० और आसमान व ज़मीन में वही अल्लाह तारीफ़ के लायक़ है और ( नीज़ ) तीसरे पहर और जब तुम लोगों को दोपहर हो-( अल्लाह की तस्बीह व तक़्दीस करो ) ० ( वही ) ज़िन्दे को मुर्दे से निकालता है और वही मुर्दे को ज़िन्दे से निकालता है और ( वही ) ज़मीन को उसके मरे ( यानी पड़ती पड़े ) पीछे ज़िन्दा ( व शादाब ) करता है और इसी तरह तुम ( लोग भी मरे पीछे ज़मीन से ) निकाले जाओगे ० और उसी की ( कुद्रत की ) निशानियों में से ( एक यह भी ) है कि उसने तुम (लोगों) को मिट्टी से पैदा किया। फिर अब तुम इन्सान हो कि ( रूये ज़मीन पर हर तरफ़ ) फैले हुये हो ० और उसीकी ( कुद्रत की ) निशानियों में से ( एक यह भी ) है कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स की बीबियाँ पैदा कीं, ताकि तुमको उनकी तरफ़ ( रग़बत करने से ) राहत मिले और तुम ( मियाँ बीबी ) में प्यार और इख़लास पैदा किया। जो लोग सोच समझ को काम में लाते हैं, उनके लिये इन ( बातों ) में ( कुद्रत-खुदा की बहुतेरी ही ) निशानियाँ हैं ० और आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारी रंगतों का मुख़्तलिफ़ होना-(यह भी) उसकी ( कुद्रत की ) निशानियों में से है। कुछ शक नहीं कि समझने वालों के लिये ( इन बातों में खुदा की कुद्रत की बहुतेरी ही ) निशानियाँ हैं ०—

---

वह सब ( दोज़ख़ ही के ) अज़ाब में पड़े रहेंगे। अतः ( मनुष्यो ! यदि तुम उससे मुक्ति प्राप्त करना चाहते हो, तो उसका सबसे उत्तम उपाय यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य सबको छोड़ कर ) खुदा की ( प्रशंसा तथा स्तुति में लगे रहो और ) सुबह-शाम + ( उसकी ) पवित्रता वर्णन करो ( अर्थात नमाज़ पढ़ा करो ) ॥

+ टीका—यहां सायंकाल का अभिप्राय मग़रिब और इशा की नमाज़ों का समय है:—हसन निज़ामी ॥

और आकाशों और पृथ्वी में ( जितनी भी वस्तुयें हैं, उनमें से प्रत्येक वस्तु ) उसी की प्रशंसा ( कर रही ) है और ( देखो ! ) तीसरे पहर के समय ( अर्थात अस्र की नमाज़ के समय ) और दोपहर के समय( अर्थात ज़ुहर की नमाज़ के समय भी सर्व शक्तिमान खुदा के बहुत से चमत्कार प्रगट होते हैं। अतः तुम इन समयों को ) भी ( उसकी पवित्रता वर्णन करने और पूजा उपासना किये बिना न छोड़ो । देखो ! यह उसी सच्चे पूज्य की महिमा है कि ) वह निर्जीव ( वस्तु ) से सजीव को निकालता है--( जैसे अंडे से मुर्ग़ी इत्यादि ) और सजीव से निर्जीव को निकालता है--( जैसे मुर्ग़ी इत्यादि से अंडा ) और पृथ्वी को उसके मुर्दा ( अर्थात सूखी ) हो जाने के बाद ज़िन्दा (अर्थात हरी भरी ) कर देता है । और इसी प्रकार ( उसमें यह भी शक्ति है कि वह निर्जीव को सजीव करदे और सजीव को निर्जीव करदे। अतः वह एक दिन तुम सबको मृत्यु दे देगा । फिर ) तुम ( उसी की आज्ञा से क़यामत के दिन अपनी २ क़ब्रों से जीवित करके ) निकाले जाओगे ॥

और उसी ( की शक्ति ) के चिन्हों में से ( एक ) यह ( चिन्ह भी ) है कि उसने तुमको ( अर्थात तुम्हारे पुतले को ) मिट्टी से बनाया ( और ) फिर ( कुछ समय न बीतने पाया कि ) तुम ( उसकी आज्ञा से ) तुरन्त मनुष्य हो ( कर ठौर २ भूमि पर ) तितर-बितर हो गये। और उसी ( की शक्ति ) के चिन्हों में से ( एक ) यह ( चिन्ह भी ) है कि उसने तुम्हारे लिये तुम ही में से जोड़े पैदा किये (अर्थात स्त्रियां बनाईं )-जिससे कि तुम उनसे सुख ( आनन्द ) प्राप्त करो और तुममें परस्पर प्रेम तथा स्नेह ( स्थिर ) कर दिया—( जिससे कि तुम्हारी उनकी अच्छी तरह गुज़र बसर हो)। निस्सन्देह इसमें सोचने (समझने) वालों के लिये (उपदेश तथा शिक्षा के बड़े २) चिन्ह (पाए जाते ) हैं। और उसी ( की शक्ति ) के चिन्हों में से ( इतने बड़े ऊँचे ) आकाशों और ( इतनी चौड़ी चकली ) पृथ्वी का पैदा करना और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे रंगों का ( परस्पर ) विभिन्न होना भी है। निस्सन्देह इन ( वस्तुओं ) में भी बुद्धिमानों के लिये ( उपदेश तथा शिक्षा के बहुत से ) चिन्ह ( उपस्थित ) हैं। और उसी ( की शक्ति ) के चिन्हों में से—

और तुम्हारा रात ( का सोना ) और दिन का सोना और उसके फ़ज़्ल ( यानी अपनी मआश ) के लिये तुम्हारा तग व दौ करना (यह भी) उसकी ( कुद्रत की ) निशानियों में से है। जो लोग ( गोश-दिल से ) सुनते हैं, उनके लिये इन ( बातों ) में ( कुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ही ) निशानियाँ हैं ० और उसीकी ( कुद्रत की ) निशानियों में से ( एक यह भी ) है कि वह तुमको डरने और उम्मीद करने के लिये बिज्लियां दिखाता और आसमान से पानी बर्साता और उस ( पानी ) के ज़रिए से ज़मीन को उस के मरे ( यानी पड़ती पड़े ) पीछे जिला उठाता है। जो लोग अक़्ल रखते हैं, उनके लिये इन ( बातों ) में ( कुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ही ) निशानियां हैं ० और उसीकी ( कुद्रत की ) निशानियों में से ( एक यह भी ) है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं ( और तुम एक वक़्त ख़ास तक ज़िन्दगी करके ज़मीन में गाड़े जाते हो)-फिर (क़यामत के दिन) जब वह तुमको एक आवाज़ देकर ज़मीन में से बुलायेगा, तो बस ( आवाज़ के सुनते ही ) तुम ( सबके सब ) निकल पड़ोगे ० और जो ( फ़रिश्ते ) आसमानों ( में हैं ) और ( जो लोग ) ज़मीन में हैं—( सब ) उसीके हैं ( और ) सब उसीके ( हुक्म के ) ताबे हैं ० और वही ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जो मख़्लूक़ात को अव्वल बार पैदा करता है, फिर (इसी तरह क़यामत के दिन) उनको दुबारा पैदा करेगा और यह उसके लिये बहुत ही आसान है और आसमानों और ज़मीन में उसीकी शान ( सबसे ) बालातर है और वह ज़बरदस्त ( और ) हिक्मत वाला है ० वह तुम्हारे (समझने के) लिये तुमही में की एक मिसाल बयान फ़र्माता है—कि जिन ( गुलामों) के तुम मालिक हो ,इनमें से उस ( रोज़ी ) में – जो हमने तुमको दे रक्खी है, कोई ( भी ) तुम्हारे शरीक हैं ? कि तुम ( और वह ) उस ( रोज़ी ) में बराबर का हक़ रखते –

مَنَامُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُم مِّن فَضْلِهِ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝ وَمِنْ
آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ
السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ
أَن تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِذَا
دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنتُمْ تَخْرُجُونَ ۝
وَلَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ
وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ
أَهْوَنُ عَلَيْهِ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ ضَرَبَ لَكُم
مَّثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ هَل لَّكُم مِّن مَّا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُم مِّن شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْنَاكُمْ فَأَنتُمْ فِيهِ

तुम्हारा रात और दिन का सोना ( और आराम पाना ) और उसकी कृपा ( अर्थात जीविका ) का ढूंढना भी है। निस्स न्देह ( ध्यान पूर्वक ) सुनने वालों के लिये इन ( बातों ) में भी ( उपदेश तथा शिक्षा के बहुत से ) चिन्ह ( उपस्थित ) हैं। औ उसी ( की शक्ति ) के चिन्हों में से ( यह बात भी ) है कि वह तुमको बिजली ( चमकती हुई ) दिखाता है, जिस ( के चमकने ) ( तुमको ) डर भी लगता है और ( वर्षा की ) आशा भी होती है और आकाश से मेघ वर्षाता है ( और ) फिर उस ( के पानी ) पृथ्वी को उसके मुर्दा ( अर्थात् सूखो ) हो जाने के बाद ज़िन्दा ( अर्थात हरी भरी ) कर देता है। निस्सन्देह इन ( वस्तुओं ) भी बुद्धिमानों के लिये ( उपदेश तथा शिक्षा के असंख्य ) चिन्ह ( उपस्थित ) हैं ॥

( और ) उसी ( की शक्ति ) के चिन्हों में से ( एक चिन्ह ) यह ( भी ) है कि पृथ्वी और आकाश उसकी आज्ञा से स्थि हैं ( और वही एक दिन उन्हें नष्ट कर देगा और जो लोग उनमें बसते हैं, उन्हें भी। और ) फिर जब वह ( क़यामत के दिन ) तुम पृथ्वी ( के नीचे ) से बुलावेगा, तो तुम तुरन्त ( अपनी क़ब्रें छोड़ कर ज़िन्दा ) निकल आओगे। और आकाशों और पृथ्वी में कुछ भी है, उसीका है ( और आकाश तथा पृथ्वी वाले ) सब उसी के आधीन ( तथा आज्ञाकारी ) हैं—( जिससे चाहे, जो क ले। किसी को इन्कार का साहस नहीं हो सकता )। और वही ( ऐसा शक्तिशाली ) है कि ( जब चाहता है ) सृष्टि को पहिले प पैदा कर दिखाता है ( और जब चाहेगा सबको एक दम मिटा करके ) फिर दुबारा उसको पैदा कर देगा और ( जब वह पहिले प पैदा कर सकता है-जबकि किसी वस्तु का अस्तित्व भी न था, तो ) यह ( दुबारा पैदा करना तो ) उसके लिये बहुत ही सरल और आकाशों ( के फ़रिश्तों ) और पृथ्वी ( के मनुष्यों ) में ( सबसे श्रेष्ठ, सबसे ) बड़ी महिमा उसी की है। ( न उसके समान है ) और ( न साझी )-वही है ( सब पर ) बलवान ( और सबसे बड़ा यत्न उपाय तथा ) हिकमत वाला ॥

( उसकी ख़ुदाई में किसी को शरीक ठहराना अत्यन्त ना समझी और मूर्खता की बात है। मूर्खो ! देखो !! ) वह तुम ( समझाने के ) लिये एक उदाहरण वर्णन करता है, जो तुम ही में का है। जो ( लौंडी गुलाम ) तुम्हारे आधीन हैं—क्या उ से इस धन ( दौलत ) में-जो हमने तुमको दिया है, तुम्हारा कोई हिस्सेदार ( बन सकता ) है ? कि तुम ( और वह ) उ बराबर ( के हक़दार ) हो ( जाओ )—

سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ كَذٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ بَلِ اتَّبَعَ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ
يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا فِطْرَتَ اللّٰهِ
الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ
ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ مِنَ
الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا كُلُّ حِزْبٍ
بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ
ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ
اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ

( और ) तुम उनकी ( वैसी ही ) पर्वा करते हो; जैसी कि तुम अपनी पर्वा करते हो। जो लोग अक़्ल रखते हैं, उनके लिये हम ( अपनी ) आयतों को इसी तरह खोल खोल कर बयान करते हैं ० मगर जो लोग ( शरीक-खुदा बनाकर ) ज़ुल्म कर रहे हैं, वह तो बे जाने बूझे अपनी ( नफ़सानी ) ख़्वाहिशों पर चलते हैं। तो जिसको खुद गुमराह करे, उसको कौन राह-रास्त पर ला सकता है और ( खुदा के मुक़ाबले में ) ऐसे लोगों का कोई मददगार नहीं ० तो ( ऐ पैग़म्बर! ) तुम तो एक ( खुदा ) के होकर ( उस के ) दीन की तरफ़ अपना रुख़ किये रहो—( यह ) खुदा की ( बनाई हुई ) सरिश्त है, जिस पर खुदा ने लोगों को पैदा किया है। खुदा की ( बनाई हुई ) बनावट में रद्द व बदल नहीं हो सकता। यही दीन ( का ) सीधा (रस्ता) है, मगर अक्सर लोग नहीं समझते ० ( लोगो! ) उसी (एक खुदा) की तरफ़ रुजू हो (कर दीन-इस्लाम पर जमे रहो) और उसी (एक खुदा) का डर मानो और नमाज़ पढ़ते रहो और शिर्क करने वालों में से न हो जाना ० जिन्होंने अपने ( अस्ली पैदाइशी ) दीन में तफ़रक़ा डाला और ( खुदा के सिवा दूसरे दूसरे माबूद बनाकर ) फ़िरक़े ( फ़िरक़ ) हो गये। जो ( दीन ) जिस फ़िरक़े के पास है, वह उसी में मगन है ० और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो वह अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ रुजू हो कर उसीको पुकारने लगते हैं। फिर जब वह उनको अपनी रह्मत ( की लज़्ज़त ) चखा देता है, तो बस उनमें से कुछ लोग ( झूटे माबूदों को ) अपने पर्वर्दिगार का शरीक बना चलते हैं ०—

---

जैसे अपनों से डरते हो, ऐसे ही उनसे भी डरो। ( लोगो ! जिस तरह हमने तुम्हारे सुधार के लिये यह उदाहरण वर्णन किया, ठीक ) उसी तरह हम समझदार लोगों के लिये ( अपनी शक्ति के बहुत से ) चिन्ह ( ख़ूब खोल ) खोल कर वर्णन करते हैं। ( परन्तु इनमें समझदार बहुत कम हैं )—वरन् ( कोई २ ) वह ( काफ़िर तथा मुश्रिक ) लोग जो अत्याचार ( और अनीति ही) करते रहे, उन्होंने ( तो न केवल हमारे आदेशों को सोच विचार के अयोग्य समझा, वरन् ) अपनी ( मानसिक ) इच्छाओं की बे ( सोचे ) समझे आधीनता ( और ग़ुलामी) की। सो ( हे रसूल ! मन मौजी लोगों के आचरणों से तुम शोकित न होना। क्योंकि उनके अत्यन्त उद्दण्ड तथा कुकर्मी हो जाने के कारण अल्लाह ने उन्हें पथ-भ्रष्ट कर दिया है और ) जिन्हें अल्लाह पथ-भ्रष्ट करदे ( भला ) उन्हें कौन मार्ग पर लाये। और ( क़यामत के दिन ) इनका कोई सहायक न होगा ॥

अतः ( हे रसूल ! ) तुम ( इनकी कुछ पर्वाह न करो और ) एक ( अल्लाह ) के ( पूजक ) होकर ( उसके ) धर्म अर्थात उस ख़ुदा की फ़ितरत की ओर ध्यान दो, जिस पर अल्लाह ने ( सब ) लोगों को पैदा किया है ( और जिसके आदेश मनुष्य की उत्पत्ति के इतने मुनासिब हैं कि कोई मनुष्य ठंडे दिल से सोच विचार करने के बाद उस ) ख़ुदा की फ़ितरत (अर्थात उसके धर्म के विरुद्ध वा उस) में ( किसी प्रकार का ) परिवर्तन नहीं ( कर सकता )–परन्तु बहुत से लोग ( इस बात को ) समझते नहीं। ( हे रसूल ! अपने अनुगामियों से कहो कि ) तुम भी उसी ( सत्य-धर्म ) की ओर अवहित हो जाओ और ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डरो और ( पांचों समय की ) नमाज़ ( प्रेम पूर्वक ) अदा करो और ( उन काफ़िरों तथा ) मुश्रिकों में से न बनो कि जिन्होंने अपने ( सत्य ) धर्म के टुकड़े टुकड़े कर दिये और समूह २ हो गये—(कोई अग्नि पूजक बन गया, तो कोई मूर्ति पूजक। अब ) जो (असत्य धर्म ) जिनके पास है, वह उसी में मग्न हैं।

और जब ( इन ) लोगों को ( कोई ) कष्ट पहुंचता है, तो अपने ( सच्चे ) पालन कर्त्ता को उसकी ओर ( पूर्ण रूप से ) ध्यान देकर पुकारने लगते हैं। फिर जब वह अपनी ( दया तथा) कृपा का स्वाद चखा देता ( और उस कष्ट को दूर कर देता ) है, तो एक दम उन ही में का कोई ( न कोई ) समूह ( पहिले की तरह) अपने पालनहारे के साथ ( असत्य पूज्यों को ) शरीक करने लगता है—

يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ
تَعْلَمُونَ ۝ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ
بِمَا كَانُوا بِهٖ يُشْرِكُونَ ۝ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ
رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا
قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا
اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ فَاٰتِ
ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ
ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا فِيْٓ
اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ وَمَآ اٰتَيْتُمْ
مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُضْعِفُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ

ताकि जो ( नेअमतें ) हमने उनको दी हैं, उनकी नाशुक्री करें। तो ( लोगो! दुनिया के चन्द रोज़ा ) फ़ायदे उठालो, आगे चल कर तो तुम ( अपने किये की हक़ीक़त ) मालूम कर ही लोगे ० क्या हमने इन लोगों पर कोई सनद उतारी है कि जैसे यह लोग ख़ुदा के साथ शिर्क कर रहे हैं, वह ( सनद इनको शिर्क करना ) बता रही है ० और जब लोगों को हम ( अपनी ) रहमत ( का ज़ायक़ा ) चखा देते हैं, तो वह उस से ख़ुश होते हैं और अगर उन ( के आमाल बद ) के बदले में, जो पहिले अपने हाथों कर चुके हैं, उन पर ( किसी क़िस्म का ) वबाल आजाए, तो बस वह आस तोड़ बैठते हैं ० क्या लोगों ने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की कि अल्लाह ( ही ) जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ कर देता है और ( जिसकी चाहता है ) नपी-तुली कर देता है। जो लोग ईमान रखते हैं, उनके लिये इसमें ( भी कुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ही ) निशानियां हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर! ) रिश्तेदार को उसका हक़ देते रहो और मोहताज और मुसाफ़िर को ( उनका हक़ )—जो लोग ख़ुदा की रज़ामन्दी के तालिब हैं, यह उनके हक़ में बेहतर है। और यही लोग ( आख़िरत में ) फ़लाह पाने वाले हैं ० और ( यह ) जो तुम लोग सूद देते हो, ताकि लोगों के माल में बढ़ोतरी हो, तो वह ( सूद ) ख़ुदा के हां ( फूलता ) फलता नहीं ( यानी उसमें बरकत नहीं होती ) और ( वह ) जो तुम ( महज़ ) ख़ुदा की रज़ा-जोई के इरादे से ज़कात देते हो—तो जो लोग ऐसा करते हैं, वही ( अपने दिये को ख़ुदा के हां ) बढ़ा रहें हैं ० ( लोगो! ) अल्लाह ही वह ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जिस ने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रोज़ी दी, फिर—

---

जिससे कि जो कुछ ( सुख चैन ) हमने उसको प्रदान किया है, वह उसका अनादर करे। अतः ( हे कृतघ्नो! संसार के असार जीवन में जितने चाहे ) मज़े उड़ा लो! ( मरने के बाद तो ) फिर तुम्हें ज्ञात ( हो ) हो जायगा ( कि असत्य पूजा और धर्म परित्याग तथा कृतघ्नता का क्या दंड मिलता है। भला इन मुश्रिकों से कोई पूछे कि ) क्या हमने उन पर कोई प्रमाण उतारा है? कि जो उन्हें उस वस्तु ( के पूज्य होने ) को बताता है, जिसे यह ( ख़ुदा के साथ ) साझी ठहराते हैं। और जब हम ( इन ) लोगों को ( अपनी कृपा तथा ) दया का स्वाद चखाते ( और इन्हें किसी ओर से कुछ सुख आनन्द पहुंचाते) हैं, तो यह उससे ( इतने ) प्रसन्न होते हैं ( कि कृतज्ञता के बदले इतराने और अकड़ने लगते हैं ) और यदि उन ( अशुभ ) कर्मों के कारण—जिन्हें यह पहिले कर चुके हैं, कोई इन्हें बुराई ( वा दुख तकलीफ़ ) पहुंच जाती है, तो एक दम ( हमारी कृपा से ) निराश हो जाते हैं। ( सो ) क्या इन्हें नज़र नहीं आता कि अल्लाह जिसकी चाहता है, जीविका बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है, घटा देता है ( और लोगों के धैर्य, सन्तोष की परीक्षा करता है )। निस्सन्देह ( अन्न देने के ) इस ( नियम ) में ईमानदार लोगों के लिये ( ख़ुदा के ) चिन्ह ( उपस्थित ) हैं। अतः ( हे मनुष्य! निर्धन ) नातेदार को उसका हक़ दे! और फ़क़ीर और यात्री को ( उसका हक़ )। यह ( बहुत ) उत्तम ( नियम ) है, उन लोगों के लिये, जो अल्लाह की प्रसन्नता के अभिलाषी हैं और यही वह लोग हैं, जो (लोक परलोक में) मनोरथ को प्राप्त होते हैं॥

और ( लोगो! शादी ब्याह आदि के अवसर पर ) जो कुछ तुम भेंट रूप से ( और न्यौता की रीति पर लोगों को ) देते हो जिससे कि ( जब तुम्हारे यहां इस प्रकार का कोई उत्सव हो, तो जिन्हें तुम देते हो उन ) लोगों के धन ( से तुम्हारे धन ) बढ़ती हो ( अर्थात तुम दो रुपये दो ) तो ( तुम्हें चार मिलें )-यह ( जाइज़ तो है, परन्तु यह देना ) अल्लाह के यहां ( तुम्हा पुरस्कार में कुछ ) बढ़ती नहीं कराता। और ( वह ) जो तुम ( केवल ) अल्लाह की प्रसन्नता के अभिलाषी होकर ज़कात देते हो, ( उसका फल तुमको अवश्य मिलेगा। लोगो! ) यही ( लोग ख़ुदा के यहां ) दो गुणा ( प्रतिफल ) पाने वाले हैं। (लोगो!) अल्लाह तुमको पैदा किया। पुनः तुमको जीविका प्रदान की। पुनः ( जब तुम्हारे जीवन के दिन समाप्त हो जावेंगे, तो )—

يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ هَلْ مِن شُرَكَائِكُم مَّن
يَفْعَلُ مِن ذَٰلِكُم مِّن شَيْءٍ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُم
بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝
قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلُ كَانَ أَكْثَرُهُم
مُّشْرِكِينَ ۝ فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ
مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ
يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ۝ مَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ
كُفْرُهُ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِأَنفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ ۝
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِن فَضْلِهِ
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَن يُرْسِلَ

४

(वही) तुमको मारता है, फिर (वही) तुमको जिलायेगा। भला तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीकों में कोई है, जो इन (कामों) में से कुछ भी कर सके। यह लोग जैसे जैसे शिर्क करते हैं, ख़ुदा (की ज़ात) उससे पाक और बालातर है ० खुद लोगों ही के करतूतों से (क्या) ख़ुश्की (में) और (क्या) तरी में— (यानी हर जगह, हर तरह की) ख़राबियाँ ज़ाहिर हो चुकी हैं (और इसका ज़रूरी नतीजा यह है) कि (लोग जैसे जैसे अमल कर रहे हैं, ख़ुदा) उनको उनके बाज़ आमाल का मज़ा चखाये, ताकि वह (ऐसी हरकात से) बाज़ आएँ ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि रूए-ज़मीन पर चलो फिरो और देखो कि जो लोग (तुमसे) पहिले हो गुज़रे हैं, उनका कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ। उनमें के अक्सर मुश्रिक ही थे ० तो (ऐ पैग़म्बर!) इससे पहिले कि ख़ुदा की तरफ़ से वह (रोज़-क़यामत) आ मौजूद हो, जो (किसी के टाले) नहीं टल सकता—दीन (के) सीधे (रस्ते) पर (इस्तिक़लाल के साथ) अपना रुख़ किये रहो। उस दिन (मोमिन और काफ़िर एक दूसरे से) जुदा हो जाएँगे ० जो कुफ़्र करता है, तो उसी पर उसके कुफ़्र का वबाल पड़ेगा और जो नेक अमल करता है, तो (यह लोग) अपने ही लिये (आख़िरत का) सामान कर रहे हैं ० ताकि जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, उनको (क़यामत के दिन) अल्लाह अपने फ़ज़्ल (व करम) से (उनके किये का) एवज़ दे। कुछ शक नहीं कि अल्लाह काफ़िरों को पसन्द नहीं करता ० और उसकी (क़ुद्रत की) निशानियों में से (एक यह) है कि वह हवाओं को (इस ग़रज़ से) भेजता है कि—

तुमको मृत्यु देगा। पुनः (जब क़यामत होगी, तो) तुमको (दुबारा) जीवन प्रदान करेगा। (बोलो! बोलो!!) क्या तुम्हारे (अपने बनाये हुए) शरीकों में कोई है, जो (ऐसी महान शक्ति रखता हो? और) इन (कामों) में से एक काम भी कर (के दिखा) दे? (याद रक्खो!) वह (महान ख़ुदा तो) इनके शिर्क (के दोष) से (बिलकुल) पवित्र तथा उच्च (और महिमा वाला) है। (वास्तव में यह उन्हीं असत्य-पूजक तथा विषयी) लोगों के पापों (की नहूसत है, जिस) के कारण (आज) जल और स्थल में (अर्थात संसार भर में) बरबादी छाई हुई है-(यह) इस लिये (है) कि अल्लाह उन (सब लोगों) को उनके कर्मों का स्वाद चखाये, जिससे कि यह (अपने कर्मों से) रुक जायँ (और अपना लोक परलोक न बिगड़ें। हे रसूल!) तुम (भी इन लोगों को समझाओ और इनसे) कहो कि (तनिक घर से निकलो और ख़ुदा की भूमि में) चलो फिरो, जिससे कि जो लोग (तुमसे) पहिले (हो चुके) हैं, उन (के निर्जन खंडरों को देख कर उन) का परिणाम देखो (और शिक्षा ग्रहण करो। देखो!) इन (नष्ट हुये लोगों) में अधिकतर मुश्रिक (तथा काफ़िर ही) थे-(जब उन्हें कुफ़्र शिर्क ने लाभ नहीं पहुंचाया, तो तुम क्या फल पा सकते हो)॥

अतः (हे मनुष्य! देख! कुफ़्र शिर्क के गढ़े से शीघ्र निकल आ और) उस (भयंकर) दिन (के आने) से पहिले (जिसका आना निश्चित है और) जो अल्लाह की आज्ञा से (किसी के टाले) नहीं टल सकता, अपना ध्यान (सच्चे और) सीधे धर्म (अर्थात इस्लाम) की ओर करले। (उस दिन तेरे कर्मों के अतिरिक्त कोई और तेरे काम न आवेगा और) उस दिन (मोमिन और काफ़िर सब एक दूसरे से) पृथक हो जावेंगे। (और) जिन्होंने (दुनिया में रह कर) कुफ़्र किया, तो (क़यामत के दिन) उनके कुफ़्र का बोझ उन्हीं (की जान) पर पड़ेगा और जिन्होंने शुभ कर्म किये (और कुफ़्र शिर्क से बचे रहे) तो (यह लोग विशेषतः) अपने ही प्राणों (को आराम पहुंचाने) के लिये (जन्नत में सुख के) बिछौने बिछा रहे हैं। (इन्हें इस बात की पूर्ण आशा है) कि अल्लाह तआला अपनी (दया तथा) कृपा से उन लोगों को, जो (उस पर और उसके रसूल पर) ईमान ले आये और (ईमान लाकर) उन्होंने शुभ कर्म भी किये (अवश्य एक उत्तम) फल प्रदान करेगा। निस्सन्देह अल्लाह काफ़िरों को प्रिय नहीं रखता। (अतः हे काफ़िरो! अपना परलोक सुधारने का उद्योग करो) और (सर्व शक्तिमान ख़ुदा की शक्ति तथा उसकी महानता का सच्चे दिल से इक़रार करो। देखो!) उस (की महान शक्ति) के चिन्हों में से एक (चिन्ह) यह (भी) है कि वह (मेघ वर्षाने से पहिले ठंडी २) हवाओं को भेजता है—

الرِّيحَ مُبَشِّرٰتٍ وَلِيُذِيقَكُم مِّن رَّحْمَتِهٖ
وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا
مِن قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوهُم
بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ اَجْرَمُوا وَ
كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِي
يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ
كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى
الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ فَاِذَآ اَصَابَ
بِهٖ مَن يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ
وَاِن كَانُوا مِن قَبْلِ اَن يُّنَزَّلَ عَلَيْهِم مِّن
قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِينَ ۝ فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ
كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا اِنَّ ذٰلِكَ

( लोगों को बारिश की ) खुश-ख़बरी पहुंचायें और ताकि ( हवाओं की तहरीक से पानी बरसे और ) अल्लाह तुम लोगों को अपनी रहमत ( की लज़्ज़त ) चखाये और ताकि उसके हुक्म से ( दरियाओं में ) किश्तियाँ चलें और ताकि तुम ( बहरी तिजारत के ज़रिये से ) उसका फ़ज़्ल (यानी अपनी मआश ) तलाश करो और ताकि तुम ( उसका ) एहसान मानो ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमने तुमसे पहिले ( और ) पैग़म्बर ( भी ) उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजे, तो वह ( पैग़म्बर ) मोजिज़े ( ले ) लेकर उनके पास आये ( मगर उन्होंने झुटलाया )—तो जो लोग ( झुटलाने के ) जुर्म के मुर्तकिब हुये, उनसे हमने ( झुटलाने का ) बदला ( भी ) लिया और ईमान वालों को मदद देना हम पर लाज़िम था (और हमने दी) ० अल्लाह ( ही ) वह ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जो हवाओं को भेजता है। तो वह ( हवाएँ ) बादलों को (उनकी जगह से) उभारती हैं। फिर ( ख़ुदा ) जिस तरह चाहता है—( कभी ) बादल को ( सारे ) आसमान में फैलाता और ( कभी ) उसको टुकड़े ( टुकड़े ) कर देता है। तो ( ऐ मुख़ातब ! ) तू देखता है कि बादल के बीच में से मेंह निकला चला आता है। फिर जब ख़ुदा अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है, उस ( मेंह ) को बर्सा देता है, तो बस वह लोग ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं ० बावजूदेकि बाराने( रहमत ) के नाज़िल होने से पहिले यह लोग ( बारिश की तरफ़ से ) शुरू ही से नाउम्मीद थे ० तो ( ऐ मुख़ातब ! बाराने ) रहमत-इलाही ( के नतीजे ) की तरफ़ नज़र कर ! कि ( ख़ुदा ) ज़मीन को उसके मरे (यानी पड़ती पड़े) पीछे क्योंकर जिला उठाता है। कुछ शक नहीं कि यही (ख़ुदा तो क़यामत के दिन)–

---

जो ( तुम्हें वर्षा का ) मंगल समाचार सुनाती ( और तुम्हारे दिलों को आनन्द पहुंचाती ) हैं और ( तुमको मालूम हो जाता है कि यह हवायें अल्लाह की कृपा की भविष्य-सूचनाएं हैं। अर्थात इस लिये चल रही हैं )–जिससे कि ख़ुदा तुमको अपनी कृपा ( अर्थात वर्षा ) का स्वाद चखा दे और जिससे कि हवाओं की अनुकूलता और उसकी आज्ञा से नौकाएं ( दरियाओं में ) चलें और जिससे कि तुम ( जल सम्बन्धी अर्थात सामुद्रिक व्यौपार करके ) उसकी कृपा ( अर्थात अपनी जीविका ) ढूंढो और जिससे कि तुम ( उसकी इन अन-गिन्त कृपाओं को देख कर सदैव उसके ) कृतज्ञ रहो ॥

और ( कभी भूले से भी असत्य पूजा का नाम न लो। हे रसूल ! जिस तरह इन लोगों के सुधार के लिये हमने तुमको भेजा है, उसी प्रकार ) हमने तुमसे पहिले ( भी बहुत से नबी और ) रसूल उनकी जातियों की ओर भेजे ( थे, जिससे कि वह उन्हें हमारा मार्ग बतावें और हमारे अज़ाब से डरावें ) । सो वह ( हमारे दिये हुए ) चमत्कार लेकर उनके पास आए ( परन्तु उन्होंने उनको झुठलाया )–तो हमने ( भी ) उन लोगों से जो कुकर्मी थे–( अच्छी तरह ) बदला लिया और ( अपने ईमानदार बन्दों को उनके ) ज़ुल्म तथा अत्याचार से छुड़ाया। निस्सन्देह ) ईमानदारों की सहायता करना हमारा काम है। ( हां ! तो वह लाभ दायक ठंडी व हवाएं ( जिनका अभी वर्णन कर कर रहे थे, उन्हें ) अल्लाह ही चलाता है, तो वह ( चलती हैं और ) मेघ को ( आकाश की ओर ) उभारती हैं। फिर ( बहुत दूर तक वा थोड़ी सी दूर तक ) जैसा भी ख़ुदा चाहता है, वह उस ( मेघ ) को ( कभी संगठित दशा में ) आकाश ( के वायु-मण्डल ) में फैला देता है और ( कभी रुई के गालों की तरह ) उसके टुकड़े ( टुकड़े करके आकाश पर तितर बितर ) कर देता है। फिर ( कभी ज़ोर की और कभी धीमी वर्षा करता है। हे मनुष्य ! ) तू देखता है कि मेघ इस ( घटा ) के बीच में से निकला चला आ रहा है। अतः ( उस समय ) जब ( कि ) वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है–मेघ वर्षा देता है, तो ( वह ) लोग अचानक प्रसन्न ( तथा प्रफुल्लित ) हो जाते हैं ॥

यद्यपि वह इससे पहिले कि उन पर वर्षा की जावे–( बिल्कुल उदास और ख़ुदा की कृपा से ) निराश ( हुये बैठे ) अतः ( हे मनुष्य ! ज़रा ) अल्लाह की कृपा ( अर्थात वर्षा ) के ( परिणाम और ) प्रभाव को तो देख ! कि वह पृथ्वी को उसके ( और उस पर बसने वालों को उनके उदास ) हो जाने के बाद किस प्रकार जीवित कर देता है ( और किस प्रकार प्रसन्न व आनन्दित कर देता है )। निस्सन्देह यही—

يُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ●
وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا
مِن بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ● فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ
الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا
مُدْبِرِينَ ● وَمَا أَنتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ
إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ●
اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ
مِن بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ
قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ
الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ● وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ
الْمُجْرِمُونَ ● مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذَٰلِكَ
كَانُوا يُؤْفَكُونَ ● وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ

मुरदों का ( भी ) जिलाने वाला है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ० और अगर हम ( ऐसी ) हवा चला दें ( कि वह रतूबत खुश्क करदे ) और यह लोग खेती को पीला ( पड़ा हुआ ) देखें, तो खेती के पीले पड़े पीछे ज़रूर ( हमारी पहिली नेअमतों की ) नाशुक्री करने लगें ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम न तो मुरदों को सुना सकते हो और न बहिरों ही को ( अपनी ) आवाज़ सुना सकते हो-( ख़ास कर ) उस वक़्त कि बहिरे पीठ फेर कर ( तुमसे दूर ) भागें ० और न अन्धों को तुम उल्टे रस्ते से सीधे रस्ते पर ला सकते हो। तुमतो बस उनही लोगों को सुना (समझा) सकते हो, जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं। तो यह लोग ( तुम्हारा कहना) मान ( भी ) लेते हैं ० अल्लाह (ही) वह (क़ादिर-मुतलक़) है, जिसने तुम लोगों को कमज़ोर हालत से ( जो मां के पेट में होती है ) बना खड़ा किया। फिर ( तिफ़्ली की ) कमज़ोरी के बाद (जवानी की) तवानाई दी। फिर तवानाई के बाद कमज़ोरी और पीरी ( की हालत ) करदी। ( वह ) जो चाहता है, पैदा करता है और वही ( इन्सान की सब हालतों से ) वाक़िफ़ ( और ) क़ुद्रत वाला है ० और जिस दिन क़यामत बर्पा होगी, गुनहगार लोग क़स्में खाएँगे कि ( दुनिया में ) एक घड़ी से ज़ियादा नहीं ठहरे। इसी तरह यह लोग ( दुनिया में भी ) बहके रहे ० और जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया है, वह ( उनको ) जवाब देंगे कि ( नहीं ) तुम तो ( जैसा कि ) किताबुल्लाह में ( है )-रोज़ क़यामत तक ठहरे—

( ख़ुदा तो ) है ( क़यामत के दिन ) मुर्दों का जिलाने वाला और हर बात पर ( पूरी २) शक्ति रखने वाला ( कि चाहे जिसको जीवित करदे और चाहे जिसको मृत्यु देदे )। और ( इन मुश्रिकों को यह दशा है कि ) यदि हम परीक्षा की रीति पर ( ऐसी सूखी ) वायु चला दें कि ( जिससे ) यह ( लोग अपनी हरी भरी ) खेती को पीली देखें ( अर्थात इनकी हरी भरी खेती बिलकुल सूख जावे ) तो यह उसके ( सूख जाने के ) बाद तौबा और क्षमा-याचना और आधीनता और विनय करने के बदले हमारे अगले पिछले समस्त उपकारों को अपने दिल से भुला दें और उनकी कृतघ्नता करने लगें। सो ( हे रसूल ! ) तुम न ( इन जैसे ) मुर्दों को ( अपने उपदेशों की ) आवाज़ सुना सकते हो और न ( इन जैसे ) बहिरों को-( विशेषतः ऐसी दशा में ) जबकि ( तुम इनके पास जाओ, तो ) यह पीठ फेर कर चल दें और न तुम ( इन जैसे ) अन्धों को उनकी पथ-भ्रष्टता से ( हटा कर ) सीधी राह पर लगा सकते हो। तो तुम ( अपना उपदेश ) बस उनही को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों का ( सच्चे दिल से ) विश्वास करते हैं ( और एक बार यदि वह हमारे कलाम का कोई अंश सुन लेते हैं ) तो वह ( सदैव के लिये उसके ) आधीन हो जाते हैं॥

( अतः तुम सबके सामने खुल्लम खुल्ला कहो कि लोगो ! तुम्हारा सृष्टि कर्त्ता, पालन कर्त्ता तथा स्वामी तुम्हारे घर की बनी हुई मूर्तियाँ नहीं हैं, बरन् समस्त संसार का पैदा करने वाला ) अल्लाह ( है। उसी ) ने तुमको निर्बलता से पैदा किया ( अर्थात जब तुम माता के उदर से बाहर निकले, तो अत्यन्त निर्बल थे और बाल्यावस्था भर निर्बल ही रहे, परन्तु जब तुम्हारा बचपन गुज़र गया, तो तुम युवा हो गये और ) फिर उस ( संसार के रचयिता ) ने निर्बलता के बाद तुमको बल ( और शक्ति ) दी ( और ) फिर ( उस) बल (शक्ति) के ( समय के ) पश्चात उसने ( तुमको फिर ) निर्बलता और बुढ़ापा दिया। अल्लाह जो कुछ चाहता है, पैदा कर देता है और वही (सब से अधिक ) बुद्धिमान् ( और सबसे अधिक ) बलवान है॥

और अपराधी ( लोग जो क़यामत के इस समय तक न आने पर हँसते हैं )-जिस दिन क़यामत स्थिर होगी ( तो यह ) शपथें खा खाकर कहेंगे कि ( क़यामत तो बहुत जल्दी आ गई )। हम तो ( मरने के पश्चात ) घड़ी भर के अतिरिक्त ( अपनी २ क़ब्रों में ) नहीं ठहरे। ( जिस प्रकार यह लोग क़यामत के दिन झूठ बोलेंगे ) उसी प्रकार यह ( दुनिया में भी ) झूठ बोलते थे। और ( उनकी इस मूर्खता की बात चीत को सुन कर ) वह लोग—जिन्हें ( धार्मिक ) ज्ञान भी ( दिया गया है ) और ईमान भी प्रदान किया गया है—( उनसे ) कहेंगे कि तुम तो जो ( अवधि ) अल्लाह की पुस्तक में लिखी हुई है, उसके अनुसार (ही) क़यामत के दिन ( के आने ) तक ( अपनी अपनी क़ब्रों में ) ठहरे—

فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ
وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ
فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ
بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ
سُوْرَةُ لُقْمٰنَ — لَا يُوْقِنُوْنَ ۝ — مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
الٓمّٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ هُدًى وَّرَحْمَةً
لِّلْمُحْسِنِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى
هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

وقف النبي

और ( आज ) यह रोज़ क़यामत ही है, मगर तुमको ( इसका ) यक़ीन ( हो ) न था ० तो उस दिन न तो नाफ़र्मानों को उनकी उज्र-ख़्वाही ( कुछ ) फ़ायदा बख़्शेगी और न उनको ( ख़ुदा के ) राज़ी कर लेने का मौक़ा दिया जाएगा ० और हमने लोगों के ( समझने के ) लिये इस कुर्आन में हर तरह की मिसालें बयान करदी हैं और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर तुम इन ( लोगों ) को कोई सा मोजिज़ा भी ला दिखाओ, तो जो मुन्किर हैं, वह तो बस यही कहेंगे कि तुम ( मुसल्मान ) निरे फ़रेबिये हो ० जो लोग समझ नहीं रखते, उनके दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम सब्र किये ( बैठे ) रहो । बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है और ऐसा न हो कि जो लोग ( तुम्हारे कहने का ) यक़ीन नहीं करते ( भर्रे देकर ) तुमको छछोरा बना दें०

## सूरत—लुक़मान

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ३४ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान ( है ) ० अलिफ़् लाम् मीम् ० यह ( उसी ) किताब ( यानी कुर्आन ) की आयतें हैं, जिसमें हिक्मत ( व दानिश) की बातें हैं ० नेकोकार जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और वह आख़िरत का भी यक़ीन रखते हैं, उनके लिये ( यह आयतें मूजिब ) हिदायत और रह्मत हैं ० यही लोग अपने पर्वर्दिगार के सीधे रस्ते पर हैं और यही लोग ( आख़िरकार ) फ़लाह पाने वाले हैं०—

अतः यह क़यामत का दिन ( अपने नियत समय ही पर आया ) है, परन्तु तुम (इसका अपने समय पर आना ठीक) नहीं समझते ( जब यह उत्तर उनके कानों में पहुंचेगा ) तो ( क्षमा याचना करने लगेंगे, परन्तु ) उस दिन न इन अत्याचारियों को उनकी माज़िर कुछ लाभ पहुंचावेगी ( और न पश्चाताप ) और न उनको अल्लाह के प्रसन्न करने का अवसर मिलेगा । और ( इन्हें इनके किये पूरा २ दंड दिया जावेगा, इस लिये कि ) हमने तो ( इन ) लोगों के ( समझाने और इन्हें राह पर लाने के ) लिये (पवित्र तथा महा कुर्आन में अनेक प्रकार के ( उत्तम २ ) उदाहरण वर्णन कर दिये और यदि तुम कोई चमत्कार इनके पास ले आओ, तब भी यह काफ़ि लोग ( तुमको सच्चा मानने वाले नहीं )-यही कहेंगे कि तुम ( जितने भी सत्य पूजा का दावा करने वाले हो, सबके सब ) झूठे ( अ जादूगर ) हो । ( सत्य बात यह है कि ) जो लोग ( इतना समझाने बुझाने के बाद भी ) नहीं समझते ( और किसी प्रकार भी सच्ची ब को मानने के लिये तय्यार नहीं होते )-अल्लाह उन ( लोगों ) के दिलों पर उसी प्रकार मुहर लगा दिया करता है ( और फिर वह क धर्म-मार्ग पर नहीं आते ) । अतः ( हे रसूल ! यह लोग चाहे तुम्हारा कितना ही विरोध करें ) तुम ( धैर्य तथा ) सन्तोष से ( ही ) क लो ( और विश्वास करो कि तुम्हारी उन्नति के सम्बन्ध में जो ) अल्लाह का वादा ( है, वह बिल्कुल ) सत्य है और ( अवश्य पू होकर रहेगा । देखो कहीं ) यह लोग जो ( तुम्हारे रसूल होने का ) विश्वास नहीं करते-( अपने कुकर्मों के कारण ) तुमको असन्तो न बना दें ॥

## सूरत—लुक़मान

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ३४ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं ॥**

यह आयतें ( जिनमें ज्ञान व बुद्धि के अनगिन्त ख़ज़ाने वर्तमान हैं, सर्वज्ञ तथा ) हिकमत वाले ( ख़ुदा ) की ( श्रेष्ठ ) पुस् ( कुर्आन ) की हैं ( और ) उन ( सत्य-पूजकों और ) नेक काम करने वालों के लिये जो ( ख़ुदा के आदेशों के अनुसार अपना जी व्यतीत करने और पाँचों समय की ) नमाज़ पढ़ने और ( नियत ) ज़कात देते और परलोक ( के दिन के उपस्थित होने ) का ( हृदय विश्वास करते हैं-( साक्षात ) शिक्षा और कृपा हैं ॥

( सो ) यही लोग ( शिक्षा से लाभ उठाने और ) अपने ( रचने वाले तथा ) स्वामी के ( बताए हुये ठीक और ) सीधे मार्ग हैं और यही ( वह भाग्यवान हैं, जो परलोक में भी मुक्ति तथा ) सफलता पाने वाले हैं (और दुनिया में भी) ॥

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِى لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ
عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ
اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ
فِىٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيمٍ ۝ اِنَّ الَّذِينَ
اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيمِ ۝ خٰلِدِينَ
فِيهَا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا وَّهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِى
الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا
مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْبَتْنَا
فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ
فَاَرُونِى مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهٖ بَلِ الظّٰلِمُونَ
فِى ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ

और लोगों में कोई ( कोई ) ऐसा भी ( नालायक़ ) है, जो वाहियात ( ख़ुराफ़ात ) क़िस्से ( कहानियां ) मोल ले लेता है, ताकि ( लोगों को सुनाकर ) बे समझे बूझे राह-ख़ुदा से भटकाये और आयात-इलाही की हंसी उड़ाये। यही हैं, जिनको ( क़यामत के दिन ) ज़िल्लत की सज़ा होनी है ० और जब ( इनमें से ) किसी को हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो अकड़ता हुआ मुंह फेर कर चल देता है। जैसे उसने हमारी आयतों को सुना ही नहीं। गोया उसके दोनों कानों में टेंट हैं। तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) ऐसे शख़्स को अज़ाब-दर्दनाक की ख़ुश-ख़बरी सुनादो ० बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, उनके (रहने के) लिये ( बड़े ) मज़े के बाग़ ( बहिश्त तय्यार ) हैं ० कि ( वह ) उनमें हमेशा ( हमेशा ) रहेंगे-( यह ) ख़ुदा का पक्का वादा ( है ) और वह ज़बरदस्त ( और ) हिक्मत वाला है-( अपना वादा पूरा करके रहेगा ) ० उसीने आसमानों को (जैसा) कि तुम ( लोग ) उनको देखते हो, बग़ैर सितूनों के बना खड़ा किया है और ( उसी ने ) ज़मीन में ( भारी बोझल पहाड़ों के ) लङ्गर डाले कि ( कहीं ) तुम्हें ( किसी तरफ़ को ) लेकर झुक न पड़े और उसमें हर क़िस्म के जानदार फैला दिये और हम ( ही ) ने आसमान से पानी बर्साया। फिर ( उस पानी के ज़रिए से) ज़मीन में हर क़िस्म की उम्दा चीज़ें उगाईं ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से कहो कि ) यह तो ख़ुदा की ( पैदा की हुई) पैदाइश है। तो अब तुम लोग मुझे दिखाओ कि ख़ुदा के सिवा जो ( मावूद तुम लोगों ने बना रक्खे ) हैं, उन्होंने क्या कुछ पैदा किया है ? बात ( यह ) है कि यह ज़ालिम खुली गुमराही में ( पड़े ) हैं ० और हमने लुक़मान को दानाई इनायत फ़रमाई—

और लोगों में से एक आध ( मनुष्य—यथा हारिस-बिन-नस्र ) ऐसा ( भी ) है, जो ( व्यर्थ ) क़िस्से ( कहानियाँ ) ख़रीदता है ( और लोगों को ला लाकर सुनाता है )—जिससे कि ( उन्हें केवल अपनी ) नासमझी ( और मूर्खता ) के कारण अल्लाह के मार्ग से रोक दे ( और ख़ुदा का कलाम न सुनने दे ) और उसकी हंसी उड़ाए। ( निस्सन्देह ) इन्हीं लोगों के लिये ( क़यामत के दिन धिक्कार तथा ) अपमान करने वाला अज़ाब है। और ( उस दुष्ट मनुष्य को अल्लाह के कलाम से इतनी घृणा है कि ) जब हमारी आयतें उसके समक्ष पढ़ी जाती हैं, तो अकड़ कर ( उसकी ओर से ) पीठ फेर लेता है ( और ऐसा अनजान बन जाता है कि ) मानो उसने उन ( आयतों ) को सुना ही नहीं ( और ) जैसे ( वह बिल्कुल बहिरा है और ) उसके दोनों कानों में टेंटियाँ ( अड़ो हुई ) हैं। अतः ( मुहम्मद ! ) तुम उसको ( हमारे ) दुखदायी अज़ाब का मंगल समाचार सुना दो॥

निस्सन्देह ( ऐसे अशुद्ध-हृदय लोगों का हमारे यहाँ बहुत बुरा स्थान होगा और ) वह लोग जो ईमान ले आये और ( ईमान लाकर ) उन्होंने शुभ कर्म भी किये ( तो ) उनके लिये ( हमारे यहां ) जन्नत नईम है—( मरने के बाद ) वह सदैव उसी में ( सुख पूर्वक ) रहेंगे। ( श्रेष्ठ तथा महान) ख़ुदा ने ( जन्नत प्रदान करने का उनसे बिलकुल ) सच्चा वादा किया है और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) ख़ुदा ही ( सबसे अधिक ) बलवान (और सबसे अधिक ) बुद्धिमान है। ( देखो !) उसने (इतने ऊंचे ) आकाशों को बिना स्तम्भ पैदा कर दिया कि जिन्हें तुम ( हर समय अपने स्थान पर ज्यों का त्यों स्थिर ) देखते ( रहते ) हो और पृथ्वी में ( इतने बड़े २ ) अटल पर्वतों को ( मेख़ की तरह ) गाड दिया, जिससे कि वह तुमको हिला ( डोला ) न दे ( और अपनी दशा पर बराबर स्थिर रहे ) और ( फिर ) उसमें भांति २ के जानवरों को ( पैदा किया और ठौर २ उन्हें ) फैलाया। और हम ही ने आकाश से ( पृथ्वी पर ) पानी बर्षाया ( और ) फिर उसमें भाँति भाँति ( के वृक्षों और तरह २ ) की उत्तम ( उत्तम ) घास ( पात ) को उगाया॥

( अतः हे रसूल ! तुम मुश्रिकों से कहदो कि ) यह ( जितनी वस्तुएँ भी वर्णन की गई हैं, उनमें से ) तो ( प्रत्येक वस्तु ) ख़ुदा ( ही ) की पैदा की हुई है। ( यदि तुम उसकी ख़ुदाई में औरों को भी शरीक बताते हो ) तो ( लाओ ) मुझे दिखाओ कि उसके अतिरिक्त जो ( पूज्य ) हैं, उन्होंने ( अब तक किस ) किस वस्तु को पैदा किया ? ( हे रसूल ! वह किसी वस्तु को पैदा करने की शक्ति नहीं रखते )—वरन ( किसी और वस्तु को तो क्या पैदा करेंगे, स्वयं अपने आप भी पैदा नहीं हो सकते। निस्सन्देह यह ) अत्याचारी ( काफ़िर और मुश्रिक एक बड़ी ग़लती और एक ) स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में ( पड़े ) हैं—( जिसका इन्हें पूरा २ दंड मिलेगा )। और हमही ने ( अपने बन्दे ) लुक़मान को ( असाधारण बुद्धि तथा ) हिकमत प्रदान की—

(और इर्शाद किया) कि अल्लाह का शुक्र करते रहो ! और जो शुक्र करता है, तो अपने ही (भले के) लिये शुक्र करता है और जो नाशुक्री करता है, तो अल्लाह (बन्दों के शुक्र से) बेनियाज़ (और हर हाल में) सज़ावार हम्द (व सना) है ० और एक वक़्त (वह भी था कि) लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते वक़्त उससे कहा कि बेटा ! (किसी को) खुदा का शरीक न ठहराना ! इसमें शक नहीं कि शिर्क बड़े ही जुल्म की बात है ० और हमने इन्सान को उसके मां बाप के हक़ में ताकीद की (कि हर हाल में उनका अदब मलहूज़ रक्खे) कि उसकी मां ने झटके पर झटके उठाकर उसको पेट में रक्खा और (पेट में रखने के अलावा कहीं) दो बरस में (जाकर) उसका दूध छूटता है–(इसी लिहाज़ से हमने इन्सान को हुक्म दिया) कि हमारा (भी) शुक्र गुज़ार रह ! और अपने वालिदैन का (भी। आख़िरकार) हमारी ही तरफ़ (तुम सबको) लौट कर आना है–(उस वक़्त जैसा कर जाओगे, वैसा पाओगे) ० और (ऐ मुख़ातब !) अगर तेरे मां बाप तुझको (इस बात पर) मजबूर करें कि तू हमारे साथ (किसी को) शरीक (खुदाई) बना, जिसकी तेरे पास कोई दलील है ही नहीं, तो (इसमें) उनका कहा न मानना—(मगर) हां, दुनिया में (सआदत-मन्दाना) उनकी रिफ़ाक़त कर ! और उन लोगों के तरीक़ पर चल, जो (हर एक बात में) हमारी तरफ़ रुजू (और हमारा हुक्म बजा) लाते हैं। फिर (आख़िरकार) तुम (सब) को हमारी तरफ़ लौट कर आना है, तो (जैसे) जैसे अमल तुम लोग करते रहे—(उस वक़्त उन का बुरा भला) हम तुमको बता देंगे ० बेटा ! अगर राई के दाने की क़द्र भी कोई अमल हो और (फिर फ़र्ज़ करो कि) वह किसी पत्थर के अन्दर (रक्खा हो) या आसमानों में (हो) या ज़मीन में हो, तो उसको (भी क़यामत के दिन अमलों का हिसाब लेते वक़्त) खुदा ला हाज़िर करेगा। कुछ शक नहीं कि अल्लाह बड़ा बारीक-बीं (और) बा-ख़बर है ० बेटा ! नमाज़ पढ़ा कर—

أَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۞ وَإِذْ قَالَ
لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ
بِاللّٰهِ ۭ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۞ وَوَصَّيْنَا
الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ أُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى
وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ أَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ۭ
إِلَيَّ الْمَصِيْرُ ۞ وَإِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰى أَنْ تُشْرِكَ
بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا
فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۡ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ۚ
ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞
يٰبُنَيَّ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ
فِيْ صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمٰوٰتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ
بِهَا اللّٰهُ ۭ إِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۞ يٰبُنَيَّ أَقِمِ الصَّلٰوةَ

(और उनको जगत-विख्यात किया और उसे बताया) कि तू अल्लाह को (बहुत २) धन्यवाद दे! (कि उसने तुझको बुद्धिमानी के आभूषण से सुसज्जित किया) और (समझाया कि) जो कोई भी (खुदा के उपकारों की) कृतज्ञता करता है, तो वह अपने हो (को लाभ पहुंचाने) के लिये करता है और जो कृतघ्नता करता है, तो (वह भी अपनी ही हानि करता है)। अल्लाह (तो) बेपर्वाह (और निःस्वार्थ है–न उसको किसी के धन्यवाद की आवश्यकता है और न कृतघ्नता की पर्वाह। वह तो हर दशा में स्तुति) प्रशंसा के योग्य है-(किसी की कृतघ्नता से उसकी शान में कुछ भी कमी नहीं आती। तो लुक़मान ने हमारी आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन किया) और (ख़ूब मनोयोग दिखाया। लोगो! उसका वह समय विशेषतः वर्णन करने योग्य है)–जबकि उसने अपने पुत्र को उपदेश देते हुये (एक खुदा को पूजा की शिक्षा दी और) कहा–प्यारे बेटे! (अपने सच्चे पूज्य, अपने जन्म-दाता तथा अपने स्वामी) अल्लाह के साथ (कभी किसी को) शरीक न ठहराना, क्योंकि शरीक ठहराना बड़ा अन्याय (तथा महा पाप) है ॥

और हमने (हर) मनुष्य को उसके माता पिता के बारे में आज्ञा दी (कि वह उनके हक़ को पहिचाने और जहां तक उससे बन पड़े उनके साथ सद् व्यवहार करता रहे) कि (उसके पिता ने उसकी शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध किया और) उसकी माता ने (उसको पेट में रक्खा और) कमज़ोरी पर कमज़ोरी होते हुये भी (महीनों) उसका बोझ उठाया और (जन्म लेने के बाद भी) दो वर्ष में उसका दूध छुटता है। (हे मनुष्य! हम उसको तेरी मामता कुछ ऐसी लगा देते हैं) कि (वह इन सब कष्टों को प्रसन्नता पूर्वक सहन कर लेती है। अतः) तू हमारा भी कृतज्ञ हो और अपने माता पिता का भी (और तू अपने को अमर न ख़्याल कर, क्योंकि) तुझे (एक न एक दिन अवश्य) हमारी ओर लौट कर आना है। और (देख!) यदि तेरे माता पिता तुझे हमारे साथ (किसी को) शरीक ठहराने पर विवश करें, जिस (के शरीक होने) का तेरे पास (कोई) प्रमाण नहीं है, तो (ऐसी ग़लत बात में) तू उनकी आज्ञा पालन (कदापि) न कीजो और (हाँ) संसार (के लेन देन) में अच्छी तरह उनका साथ दीजो और (धर्म के मामले में तो बस) उसी का कहना मानियो, जो (पूर्ण रूप से) हमारी ओर ध्यान लगावे (और हमारी आज्ञा पर चलता हो—क्योंकि तुम लोगों को एक दिन) हमारी ओर लौट कर आना है। अतः (उस समय) हम तुमको जो जो कुछ तुम (संसार में) किया करते थे (अच्छी तरह) बता देंगे ॥

(ध्यान दो! हमारे नेक बन्दे लुक़मान ने अपने बेटों को क्या समझाया। वह कहता है) प्यारे बेटे! बुराई-भलाई यदि राई के दाने के बराबर भी हो, तो (भी) वह (ख़ुदा से छिपी नहीं रह सकती। यहां तक कि यदि वह) किसी पत्थर के भीतर वा आकाशों में या पृथ्वी में (गुप्त) है (तब भी) अल्लाह तआला (हिसाब किताब के समय वहां से भी) उसको (तेरे सामने) लाकर रख देगा। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा सूक्ष्म-दर्शी (और बहुत) ख़बर रखने वाला है। (अतः) प्रिय पुत्र! नमाज़ पढ़! (और अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की पूजा न कर)—

وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلَى
مَا أَصَابَكَ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ وَلَا
تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ
مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ وَاقْصِدْ
فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ إِنَّ أَنْكَرَ
الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ
سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَلَا هُدًى وَلَا كِتٰبٍ مُنِيرٍ ۝ وَإِذَا قِيلَ
لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا
وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوهُمْ
إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝ وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ

ع

और (लोगों को) अच्छे कामों ( के करने ) की नसीहत किया कर! और बुरे कामों से मना किया कर ! और तुझ पर जैसी पड़े, झेल ! बेशक यह (बड़ी) हिम्मत के काम हैं ० और लोगों से बेरुख़ी न कर ! और ज़मीन पर इतरा कर न चल ! ( क्योंकि ) अल्लाह किसी इतराने वाले शेख़ी-ख़ोरे को पसन्द नहीं करता ० और अपनी रफ़्तार में मियाना-रवी (इख़्तियार) कर ! और ( किसी से बात करे, तो ) हौले से बोल ! (क्योंकि) आवाज़ों में बुरी से बुरी ( आवाज़ ) गधों की आवाज़ है ० क्या तुम ( लोगों ) ने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की, कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सबको अल्लाह ने एक ( एतिबार से ) तुम्हारा मुतीए-फ़र्मान कर रक्खा है और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी ( सब तरह की ) नेअमतें पूरी की हैं और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं, जो खुदा के बारे में झगड़ते हैं; न (तो उनको कुछ ज़ाती) इल्म है और न (ख़ुदा की तरफ़ की ) हिदायत और न (उनके पास कोई) किताब ( है )-जो (उनको सीधा रस्ता) दिखाये ० और जब इन ( लोगों ) से कहा जाता है कि ( क़ुर्आन ) जो ख़ुदा ने उतारा है--उस पर चलो, तो जवाब देते हैं कि नहीं--हम तो उसी (तरीक़) पर चलेंगे, जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया । भला अगर शैतान इनके बड़ों को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता रहा हो-(तो भी उनही के तरीक़े की पैरवी करेंगे ? ) ० और जो शख़्स ख़ुदा के आगे अपना सरे—( तस्लीम ) ख़म करे—

( ख़ुद भी नेकी कर ! ) और ( औरों को भी ) नेकी करने का कह ! ( ख़ुद भी बुराई से बच ! ) और (औरों को भी) बुराई से बचा ! और ( इस मार्ग में ) जो आपत्ति तुझ पर आवे, उसे (धैर्य तथा सन्तोष के साथ ) सहन कर। निस्सन्देह यह काम (बड़े) साहस के हैं। और ( देख बेटा ! ) लोगों से मुंह मोड़ कर न चला कर ! और भूमि पर इतरा कर ( और अकड़ कर ) न चला कर । निस्सन्देह अल्लाह किसी अभिमानी वा डींगें मारने वाले को प्रिय नहीं रखता–( अर्थात अपनी कृपा तथा दया का अधिकारी नहीं समझता )। और (हर दशा में ) बीच की चाल चल ! और (सदैव) अपनी आवाज़ को नर्म ( और हलका ) रख! (मनुष्य को पशुओं के समान बिना कारण भौंकना और चिङ्घाड़ें मारना उचित नहीं )। निस्सन्देह सबसे बुरी आवाज़ गधों की ( होती ) है ॥

( ख़ुदा के अवज्ञाकारी बन्दो ! ) क्या तुमको ( संसार की किसी वस्तु में भी उसकी शक्ति की लीला ) दृष्टि-गोचर नहीं होती ( जिससे कि तुम्हें उसके सर्व शक्तिमान होने, उसके एक होने का विश्वास हो । मूर्ख लोगो ! कभी तुम इस बात पर भी ध्यान नहीं देते ) कि पृथ्वी तथा आकाशों में जो कुछ भी है, अल्लाह ने सबको तुम्हारा आधीन बना रक्खा है और अपनी हर प्रकार की नेअमतों को तुम पर उतारा है और ( आश्चर्य है कि इस पर भी ) कुछ लोग अल्लाह ( के एक और पालन कर्त्ता होने ) के सम्बन्ध में बिना किसी ज्ञान और किसी ( सत्य ) प्रमाण और किसी प्रकाशवान पुस्तक ( की सनद ) के झगड़ा करते हैं ( और अपना जन्मदाता तथा स्वामी उसको नहीं समझते ) ॥

और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने जो ( क़ुर्आन ) तुम पर उतारा है, तुम उसका अनुगमन करो – तो कहते हैं ( हम तुम्हारे बहकाये में कभी ) नहीं ( आवेंगे )। हम उसी ( मार्ग ) पर चलेंगे, जिस पर हमने अपने बाप ( दादा ) को ( चलता हुआ ) पाया है। भला ( इन मूर्खों से कोई पूछे कि ) यदि ( उनके बाप दादा को ) शैतान ने ( सदैव पथ-भ्रष्टता में डाले रक्खा हो और जब कभी बुलाया हो, तो ) दोज़ख़ के अज़ाब ही की ओर बुलाया हो—( तो भी यह उन्हीं के मार्ग पर चलेंगे ? और अपना हानि लाभ अपनी आंखों से न देखेंगे ? निस्सन्देह ऐसे अन्ध अनुकरण करने वालों ) और ( अदूरदर्शियों का ठिकाना तो दोज़ख़ ही है । निस्सन्देह वह मनुष्य) जो (ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य की पूजा करना छोड़ दे और ईमान और ) सचाई के साथ अल्लाह की ओर ध्यान दे—

और वह नेकोकार ( भी ) हो, तो बस उसने मज़बूत रस्सी थाम ली और आख़िकार तमाम मामलात ख़ुदा ही के हुज़ूर में पेश होने वाले हैं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) जो शख़्स कुफ़्र करता है, तो उसके कुफ़्र की वजह से तुमको आज़ुर्दा-ख़ातिर न होना चाहिये। इन ( सब ) को हमारी तरफ़ लौट कर आना है, तो जो कुछ ( दुनिया में ) यह करते रहे—( उस वक़्त इनका बुरा भला ) हम इनको बता देंगे। अल्लाह तो ( लोगों के ) दिली-ख़यालात ( तक ) से वाक़िफ़ है ० हम इनको थोड़े ( दिन दुनियावी ) फ़ायदे पहुंचाते रहेंगे। फिर इनको अज़ाब--सख़्त की तरफ़ खींच बुलाएँगे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर तुम इन लोगों से पूछो कि आसमानों को और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो ज़रूर यही जवाब देंगे कि ख़ुदा ने—( इस पर तुम इनसे ) कहो कि अल्हम्दु-लिल्लाह ! ( कि तुम इतनी बात तो समझते हो )—मगर इनमें से अक्सर तो ( इतना भी ) नहीं जानते ० अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। बेशक अल्लाह बे नियाज़ ( और हर हाल में ) सज़ावार हम्द ( व सना ) है ० और ज़मीन में जितने दरख़्त हैं, अगर ( उन सब के) क़लम हों और समन्दर ( की स्याही-और वह भी इस तरह पर ) कि उसके ( हो चुके ) पीछे ( वैसे ही ) सात समन्दर ( और ) उसकी मदद करें—( ग़रज़ इन तमाम क़लमों और इन सारी स्याहियों से ख़ुदा की बातें लिखी जाएँ, तो भी ) ख़ुदा की बातें तमाम न हों। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त ( और ) हिकमत वाला है ० ( लोगो ! ) तुम सबका पैदा करना और ( मरे पीछे ) तुम्हारा उठा खड़ा करना, बस ऐसा ही है; जैसा एक शख़्स का ( पैदा करना और जिला उठाना )। बेशक अल्लाह ( सबकी ) सुनता ( और सब कुछ ) देखता है ० ( ऐ मुख़ा-तब ! ) क्या तूने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की—कि अल्लाह ( ही ) रात ( के एक जुज़ ) को दिन में दाख़िल कर देता है—( तो दिन बड़ा होता है और रात छोटी )—

وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى
وَإِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا
يَحْزُنْكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا
عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ نُمَتِّعُهُمْ
قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلٰى عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَ
لَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝
لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ
أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ ۝
مَا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝
مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ ۚ إِنَّ اللّٰهَ
سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ

और ( ईमानदार तथा सच्चा होने के साथ २ ) सुकर्मी भी हो, तो ( बस ) उसने ( इस्लाम धर्म के ) दृढ़ कड़े को ( अपने हाथों में ) पकड़ लिया—( अब उसका बेड़ा अवश्य पार हो जायगा ) और अन्त तो ( सब ) कामों का ख़ुदा ही के हाथ में है-( वह अवश्य उस पर कृपा करेगा )। और ( हे रसूल ! ) जिन लोगों ने ( ख़ुदा के मानने और सत्य धर्म को ग्रहण करने से ) इन्कार किया, तो तुम उनके इन्कार से शोकित न हो। उन्हें ( एक न एक दिन मरना है और मर कर ) हमारे ही पास लौटना है। फिर हम उन्हें उनकी करतूतों की ( भली भांति ) ख़बर कर देंगे—( हमसे कोई बात उनकी छिपी नहीं रह सकती )। निस्सन्देह अल्लाह ( लोगों के ) दिलों ( तक ) की बात ( भी ) अच्छी तरह जानता है ॥

( हे रसूल ! तुम उन्हें समझाओ कि वर्तमान सुख आनन्द पर इतना घमंड न करें। बस उनके जीवन के ) कुछ दिन ( और बाक़ी हैं कि जिनमें ) हम उन्हें आराम दे रहे हैं—( इसके बाद तो ) फिर हम उनको ज़बर्दस्ती एक कठिन ( दुखदायी ) अज़ाब की ओर (खींच कर ) ले जावेंगे ( और उनके कुकर्मों का मज़ा चखावेंगे । आश्चर्य जनक ) और ( अचम्भे में डालने वाली बात यह है कि ) यदि तुम उन ( मक्का के काफ़िरों ) से पूछोगे कि आकाशों और पृथ्वी को किसने पैदा किया, तो अवश्य (जवाब में यही) कहेंगे कि अल्लाह ने-( अतः ) तुम ( उस समय ) कहना ! ख़ुदा का ( बहुत २ ) शुक्र ( कि जो बात उनके विचार में असत्य थी, उसका उन्होंने इक़रार किया परन्तु इनमें बहुत से ऐसे हैं, जो ( इतनी स्पष्ट बात को भी ) नहीं समझते ( कि जो सृष्टि का रचयिता है, वही सृष्टि का पूज्य है और ) भूमि तथा आकाशों में जो वस्तु भी है, अल्लाह ही को ( उत्पन्न की हुई ) है। निस्सन्देह अल्लाह ( पूर्ण अधिकारी है। उसके आगे सब विवश हैं। वह ) बेपर्वाह ( और हर दशा में पूजने योग्य और स्तुति ) प्रशंसा के योग्य है ॥

और ( उसके ज्ञान और हिकमत की शान यह है कि ) समस्त पृथ्वी में जितने वृक्ष हैं, यदि ( उन सबकी ) क़लमें ( बनी हुई ) हों और समुद्र ( का पानी ) स्याही ( हो और ) उस ( समुद्र ) के ( समाप्त हो जाने के ) पश्चात (उस जैसे ) सात समुद्र ( और ) उसकी सहायता करें ( और फिर उन क़लमों और दावातों से उसके ज्ञान तथा हिकमत के शब्द लिखे जावें, तो भी यह लेखन-कला के सब साधन समाप्त हो जावें, परन्तु ) अल्लाह ( के ज्ञान तथा हिकमत ) की बातें समाप्त न हों। निस्सन्देह अल्लाह ( सब पर ) बलवान ( और सबसे अधिक ज्ञान तथा ) हिकमत वाला है। ( उसकी महान शक्ति के आगे लोगो ! ) तुम सब (संसार वालों ) का पैदा करना और तुमको ( मारना और क़यामत के दिन ज़िन्दा करके ) उठाना-ऐसा ( ही सरल ) है, जैसे एक प्राणी का ( पैदा करना, मारना और फिर ज़िन्दा करके उठाना )। निस्सन्देह अल्लाह ( मित्र, शत्रु और काफ़िर, मोमिन सबकी ) सुनता ( और सबको ) देखता है। ( हे मनुष्य ! ) क्या तू यह नहीं देखा कि अल्लाह तआला ( कभी ) रात को दिन में प्रवेश देता है—

وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ
اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ
لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ
صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ
دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۝ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ
اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ
اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا
رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ
وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا اِنَّ وَعْدَ
اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ

ع

और ( वही ) दिन ( के एक जुज़ ) को रात में दाख़िल करता है-( तो रात बड़ी होती है और दिन छोटा ) और ( उसी ने ) सूरज और चांद को ( अपना, या एक एतिबार से तुम लोगों का ) मुती कर रक्खा है कि हर एक ( क़यामत के ) वक़्त मुक़र्रर तक ( इसी तरह ) चलता रहेगा और ( ऐ मुख़ातब ! क्या तूने ) इस बात पर ( भी नज़र नहीं की ) कि जो कुछ ( भी तुम लोग ) कर रहे हो, अल्लाह को उसकी ( सब ) ख़बर है ० यह ( सब तसर्रुफ़ात ) इस बात की दलील हैं कि अल्लाह ही ( क़ादिर ) बरहक़ है और इसकी-कि जिन ( माबूदों ) को ( लोग ) उसके सिवा पुकारते हैं-( सब ) बेअस्ल हैं और इसकी-कि अल्लाह ही ( सब पर ) बाला ( और ) बड़ी शान वाला है ० ( ऐ मुख़ातब ! ) क्या तूने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की कि अल्लाह ही के फ़ज़्ल से किश्ती दरिया में चलती है ( और उसने पानी और लकड़ी में यह ख़ासियतें इसलिये रक्खी हैं ) कि अपनी ( कुद्रत की ) बाज़ निशानियाँ तुम लोगों को दिखाये। कुछ शक नहीं कि किश्ती के चलने में (भी) हर एक सब्र करने वाले शुक्र-गुज़ार ( बन्दे ) के लिये ( कुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ही ) निशानियां हैं ० और जब ( दरिया की ) मौजें ( बुलन्द होकर ) सवारान-किश्ती पर सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो वह ख़ुलूस दिल से अल्लाह ही की बन्दिगी का इज़हार करके उसी को पुकारने लगते हैं। फिर जब ख़ुदा उनको नजात देकर ख़ुश्की पर पहुंचा देता है, तो उनमें से बाज़ तो हद्द-एतिदाल पर क़ायम रहते ( यानी ख़ुदा को याद रखते ) हैं ( और बहुत से ख़ुदा को भुला देते हैं ) और हमारी ( कुद्रत की ) निशानियों से तो वही लोग इन्कार रखते हैं, जो बद-अहद और नाशुक्र हैं ० लोगो ! अपने पर्वर्दिगार का ख़ौफ़ रक्खो और उस दिन से डरो कि न कोई बाप अपने बेटे के काम आये और न कोई बेटा कुछ अपने बाप के काम आ सके । ख़ुदा का वादा ( रोज़ क़यामत ) बरहक़ है। तो ( लोगो ! ) दुनिया की ज़िन्दगी के धोके में न आ जाना—

और ( कभी ) दिन को रात में प्रवेश देता है ( अर्थात कभी दिन को रात से बड़ा कर देता है और कभी रात को दिन से बढ़ा देता है ) और ( न यह देखा कि ) उसने सूर्य तथा चाँद को ( ऐसा ) अपने आधीन कर रक्खा है ( कि ) प्रत्येक ( बराबर अपने ) नियत समय तक चलता रहता है। और ( हे मनुष्यो ! न तुमने ) वह ( देखा ) कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ( पूरी ) पूरी ख़बर है। ( और न तुम्हें यह ख़बर कि दुनिया के ) यह ( सब प्रबन्ध ) इस बात का प्रमाण हैं कि अल्लाह ही सच्चा पूज्य है और इस (बात) का, कि मुश्रिक लोग अल्लाह के अतिरिक्त जिन ( पूज्यों ) को पूजते हैं – (वह सब) असत्य हैं और इस बात का, कि अल्लाह ही ( सबसे ) बड़ा ( और सबसे ) श्रेष्ठ है। ( हे मनुष्य ! ) क्या तूने यह नहीं देखा कि नौका दरिया में चलती है ( और ) अल्लाह की कृपा से ( डूबती नहीं और अल्लाह उसको चलाने के लिये पवनों को चलाता है-केवल इस अभिप्राय से ) कि वह तुम ( सांसारिक मनुष्यों ) को अपनी (पूर्ण शक्ति के ) कुछ चिन्ह दिखाए। निस्सन्देह इसमें ( ख़ुदा की शक्ति तथा हिकमत के बड़े २ ) चिन्ह हर उस मनुष्य के लिये ( विद्यमान ) हैं, जो (सत्य को मानने वाला और सच्चा ईमानदार ) सन्तोषी तथा कृतज्ञ है॥

और ( उन धोखेबाज़ों तथा छली कपटी लोगों की तरह नहीं है कि ) जब ( वह नौका में बैठे हुये हों और पानी की कोई ) लहर साइबानों की तरह उन ( के सिर ) पर छा जाय (और उन्हें अपनी जानों के लाले पड़ जायँ) तो ( उस समय तो सहायता के लिये ) अल्लाह को केवल उसीके आधीन ( तथा भक्त ) होकर पुकारने लगें—परन्तु जब वह उनको ( दरिया से ) बचाकर स्थल की ओर ले आए, तो कुछ तो सीधे मार्ग पर आ जायँ और ( शेष सबके सब उसी कुफ़्र, शिर्क के भक्त बन जायँ। सत्य बात तो यह है कि ) प्रतिज्ञा-भंग लोगों ( तथा ) कृतघ्नता करने वालों के अतिरिक्त कोई भी हमारी ( शक्ति तथा हिकमत के ) चिन्हों का इन्कार नहीं कर सकता (और हमारी आधीनता तथा आज्ञा पालन से विमुख नहीं हो सकता )॥

लोगो ! ( कृतघ्नता न करो ) अपने ( जन्म दाता तथा ) स्वामी ( ख़ुदा ) से डरो ! और उस ( भयङ्कर ) दिन से काँपो, जिस दिन कि ( अपनी २ पड़ी होगी। कोई किसीका सहायक न होगा और किसी में इतनी शक्ति न होगी कि किसी की सहायता कर सके )—न पिता अपने पुत्र से ( ख़ुदा के अज़ाब को ) दूर रख सकेगा और न पुत्र अपने पिता से ( अज़ाब को ) कुछ भी हटा सकेगा। (याद रक्खो ! ) अल्लाह का वादा ( अर्थात क़यामत का आना ) सत्य है। ( कहीं ) तुमको दुनिया का ( क्षणिक ) जीवन भुलावे में न रक्खे और परलोक न बिगाड़ दे ) और अल्लाह ( की याद ) से धोखा देने वाला ( शैतान ) तुमको अचेत न करदे॥

بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ
يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا
تَدْرِىْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا تَدْرِىْ
نَفْسٌۢ بِاَىِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

سُوْرَةُ الٓمّٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِىَ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
الٓمّٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ
مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِىْ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝

और न ख़ुदा ( के बारे ) में ( उस ) फ़रेबिये ( शैतान ) का धोका खाना ० बेशक अल्लाह ही है, जिसको क़यामत ( के आने ) का इल्म है और वही ( एक वक़्त मुक़र्रर पर, जिसको उसके सिवा कोई नहीं जानता ) मेंह बर्साता और ( नर व मादा ) जो कुछ ( माओं के ) पेट में है-( वही ) उसको ( भी ) जानता है और कोई शख़्स नहीं जानता कि ( वह खुद ) कल क्या करेगा और कोई शख़्स नहीं जानता कि किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्लाह ही ( सब बातों का ) जानने वाला ( और ) बा-ख़बर है ०

## सूरत—सज्दह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ३० आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० अलिफ़ लाम् मीम् ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) इसमें कुछ ( भी ) शक नहीं कि कुर्आन ( जो तुम पर नाज़िल होता है ) पर्वर्दिगार-आलम की तरफ़ से नाज़िल होता है ० ( यह लोग ) कहते हैं कि इस ( किताब ) को इस ( शख़्स यानी तुम ) ने ( अपने दिल से ) बना लिया है। ( सो ऐ पैग़म्बर ! इनका यह कहना सरासर ग़लत है )-बल्कि यह सच्ची ( किताब है और ) तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से ( नाज़िल हुई ) है-ताकि तुम उन लोगों को, जिनके पास तुमसे पहिले कोई डराने वाला नहीं पहुंचा—( अज़ाब ख़ुदा से ) डराओ। अजब नहीं कि यह लोग राह पर आजाएँ ० अल्लाह ही वह ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जिसने छे दिन में आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों को पैदा किया, जो आसमान व ज़मीन के बीच में हैं। फिर अर्श ( वरीं ) पर जा बिराजा। उसके सिवा तुम लोगों का न कोई कारसाज़ है, और न कोई सुफ़ारिशी। क्या तुम ( लोग इतनी बात भी ) नहीं सोचते०—

( देखो ! कहीं क़यामत के इस समय तक न आने और उसके आने के समय का ज्ञान न होने से उसका इन्कार न कर बैठन ज्ञान बुद्धि का ख़ज़ाना तो अल्लाह के यहां है )। निस्सन्देह अल्लाह ही को क़यामत के आने की भी ख़बर है और वही ( यह भी ) जान है कि ( माता के ) पेट में जो ( बच्चा ) है—( वह लड़का है, वा लड़की ) और ( मनुष्यों में से तो ) किसी मनुष्य को ( यह भी नहीं मालूम कि वह कल क्या ( काम ) करेगा-( कहां जायगा, किससे मिलेगा ) और न किसी को यह ख़बर है कि ( जब वह मरेगा, तो किस भूमि में मरेगा ( और ) अल्लाह ( प्रत्येक प्रगट वस्तु से भी ) अभिज्ञ ( है और प्रत्येक गुप्त वस्तु की भी ) ख़बर रखने वाला है।

## सूरत—सज्दह

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ३० आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥**

( हे मुहम्मद ! ) इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ( यह अद्वितीय ) पुस्तक ( जो तुम लोगों को पढ़ २ कर सुनाते हो, उसी ज्ञा वान और दोनों ) लोकों के ( रचयिता तथा ) स्वामी ( ख़ुदा ) की ओर से उतारी गई है। क्या ( काफ़िरों को इसके अल्लाह की ओ से उतारे जाने का विश्वास नहीं होता ? और क्या ) वह ( तुम्हारी ओर संकेत कर करके यह ) कहते हैं कि इसने ( अपने आप इस ( किताब ) को गढ़ लिया है। ( निस्सन्देह यह उनकी अज्ञानता तथा मूर्खता की बात है )—बरन् ( इनका इस प्रकार कहना मा ख़ुदा और उसके रसूल पर व्यर्थ असत्य दोषारोपण करना है। इसके विषय की उत्तमता तथा सरलता पुकार २ कर कह रही है कि यह ( किताब एक ) सच्ची ( किताब ) है ( और ) तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से ( उतरी है और इस अभिप्राय से उतरी है )—जिस कि तुम ( हे मुहम्मद ! उसको पढ़ २ कर सुनाओ और ) उस जाति ( के मनुष्यों ) को ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डराओ, जिनके प कोई डराने वाला तुमसे पहिले नहीं आया ( और ) जिससे कि वह हिदायत ( अर्थात धर्म-मार्ग ) पावें ॥

( और यह बात अच्छी तरह समझ लें कि ) अल्लाह ही वह ( असीम शक्ति रखने वाला ) है कि उसने पृथ्वी तथा आ शों को और जो कुछ उनके बीच में है-( केवल ) छः दिन ( के अल्प काल ) में पैदा कर दिया ( और ) फिर ( अपने आदेश प्र लित करने के लिये उद्य ) अर्श पर विराजमान हुआ। ( लोगो ! ) उस ( दोनों लोकों के रचयिता ) के अतिरिक्त ( लोक परल में ) न कोई तुम्हारा मित्र है, न कोई सिफ़ारशी है। क्या तुम ( इतना समझाने बुझाने के बाद भी ) शिक्षा ग्रहण नहीं करते ॥

يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ
إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا
تَعُدُّونَ ۝ ذَٰلِكَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ
خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ۝
ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ۝
ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَا
تَشْكُرُونَ ۝ وَقَالُوا أَإِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ
أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ
كَافِرُونَ ۝ قُلْ يَتَوَفَّاكُمْ مَلَكُ الْمَوْتِ
الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَوْ
تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُو رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

४

आसमान से ( लेकर ) ज़मीन तक ( वही हर एक ) अम्र का इन्तिज़ाम करता है। फिर तुम लोगों की ( दुनियावी ) गिन्ती के ( मुताबिक़ ) हज़ार बरस की मुद्दत का एक दिन होगा—उस दिन तमाम इन्तिज़ाम ( का नतीजा ) उसके हुज़ूर ( आली ) में गुज़रेगा ० यही ( तो ख़ुदा ) है, छुपी और खुली ( सब ) बातों का जानने वाला-ज़बरदस्त-मेहर्बान ० उसने जो चीज़ बनाई, ख़ूब ही बनाई और इन्सान की पैदाइश को मिट्टी से शुरू किया ० फिर ( मिट्टी के ) निचोड़ ( यानी मनी ) से-जो एक हक़ीर पानी है, उसकी नस्ल चलाई ० फिर उस (के पुतले) को दुरुस्त किया और उसमें अपनी ( तरफ़ से ) रूह फूंकी और तुम लोगों के ( सुनने के ) लिये कान और ( देखने के लिये ) आंखें और ( समझने के लिये ) दिल बनाये—( इस पर भी तुम उसका ) बहुत ही थोड़ा एहसान मानते हो ० और (मुन्किरीन-क़यामत) कहते हैं कि जब हम मिट्टी में रल-मिल जाएंगे, तो क्या हम ( फिर ) नये जनम में आएँगे ? ( यह लोग दुबारा पैदा होने को नहीं ) बल्कि ( अस्ल में ) अपने पर्वदिगार के हुज़ूर में हाज़िर होने को नहीं मानते ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो कि मल्कुल्मौत जो तुम पर तईनात है—( वही ) तुम्हारी रूहों को क़ब्ज़ करता है। फिर (तुम सब ) अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौटाकर लाये जाते हो ० और ( ऐ पैग़म्बर !) काश !! तुम मुज्रिमों को देखो कि ( क़यामत में हिसाब-आमाल के वक़्त ) अपने पर्वर्दिगार के रूबरू सर झुकाये खड़े हैं—

---

आकाश से ( लेकर ) पृथ्वी तक का प्रबन्ध ( रात दिन ) वही करता (रहता) है ( और न केवल इस संसार के चौबीस घन्टे वाले रात दिन का वह प्रबन्ध करता है, बरन् जब तक यह संसार वर्तमान है, उसका प्रबन्ध कर रहा है। जब यह नष्ट होकर अविद्यमान हो जावेगा, तो ) फिर ( क़यामत के ) उस ( बड़े ) दिन में ( भी )—जिसका माप तुम्हारे हिसाब से सहस्र वर्ष का है ( पूर्ण ) प्रबन्ध उसीके सिपुर्द होगा ॥

( बस समझ लो ! ) यही वह ( ख़ुदा युक्तिवान तथा प्रबन्ध करने वाला है कि जो प्रत्येक ) गुप्त तथा प्रगट ( काम ) से अभिज्ञ ( है और सब पर ) बलवान ( तथा ) कृपालु है ( और ) जिसने ( संसार की ) प्रत्येक वस्तु को उत्तम रूप से पैदा किया और मनुष्य की उत्पत्ति का प्रारम्भ मिट्टी से किया ( और ) फिर ( एक ) निचुड़े हुए तुच्छ पानी से उसकी सन्तान को बनाया। ( इस प्रकार कि वीर्य से पुतला बना ) फिर उस ( पुतले ) को उसने सुडौल किया और उसमें अपनी रूह अर्थात् आतमा फूंकी और ( हे आदम की सन्तान ! ) तुम्हारे ( सुनने के ) लिये कान और ( देखने के लिये ) आँखें और ( समझने के लिये ) दिल ( और बोलने के लिये ज़बान और काम काज के लिये हाथ पैर ) बनाये। ( निस्सन्देह इन नेअमतों पर तुम्हें अतिशय धन्यवाद करना चाहिये, परन्तु ) तुम बहुत कम धन्यवाद करते हो और ( तुममें जो मुश्रिक और काफ़िर हैं, वह हमारा कोई उपकार तो क्या मानते और कृतज्ञ तो क्या होते)—वह (सिरे से मर के जी उठने पर ही विश्वास नहीं रखते)—कहते हैं कि क्या जब हम ( मर कर ) पृथ्वी में रल जायँगे (और बिलकुल ख़ाक मिट्टी हो जायँगे) तो क्या हम ( फिर कोई ) नया जन्म लेंगे ? ( और न केवल दुबारा पैदा होने में सन्देह करते हैं )—बरन् वह ( क़यामत के दिन ) अपने पालन कर्त्ता के दरबार में पेश होने ( और हिसाब किताब देने और पुरस्कार तथा दंड पाने ही ) के इन्कारी हैं ॥

( मुहम्मद ! ) तुम ( उनसे ) कहो ( मूर्खो ! सांसारिक जीवन पर इतना न फूलो। साँसारिक जीवन क्षणिक है )। मृत्यु का फ़रिश्ता जो तुम ( लोगों की जानें निकालने ) पर नियत है-( जिसने तुम्हारे बाप दादा की जानें निकाली हैं, वह अपने नियमानुसार जब ) तुम्हारी जानें निकालेगा ( और ) फिर तुम अपने पालन कर्त्ता की ओर लेजाये जाओगे ( और हिसाब किताब दोगे, तो उस समय तुमको व्यर्थ आक्षेपों का पूरा पूरा पता चल जायगा )। और (हे पैग़म्बर !) यदि तुम (उस समय इनको) देख पाओ ( तो वह दृष्य तुमको आश्चर्य जनक प्रतीत हो )-जबकि ( इन ) इन्कार करने वाले ( लोगों का हिसाब किताब हो रहा होगा और यह लज्जा के कारण ) अपने पालन कर्त्ता के सन्मुख सिर झुकाये ( खड़े ) होंगे—

رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا
إِنَّا مُوقِنُونَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ
هُدَاهَا وَلَٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ
جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ فَذُوقُوا
بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَ
ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا
سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝
تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ
خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ فَلَا
تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ
كَانَ فَاسِقًا لَا يَسْتَوُونَ ۝ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا

سجدة

(और अर्ज़ कर रहे हैं कि) ऐ हमारे पर्वर्दिगार! (अब) हमारी आँखें और हमारे कान खुले। तो हमको (एक बार) फिर (दुनिया में) भेज! कि हम नेक अमल करें (और अब) हमको (आक़िबत का पूरा पूरा) यक़ीन है० (ख़ुदा फ़र्मायेगा)—हम चाहते, तो (दुनिया ही में) हर शख़्स को (ऐसी) सूझ इनायत करते (कि वह सीधे रस्ते पर आ जाता)—मगर हमारी (वह) बात (जो हम रोज़-अज़ल में फ़र्मा चुके थे, पूरी होनी ही थी और) पूरी होकर रही—कि जिन्नात और आदमी (इन ही) सबसे हम दोज़ख़ का भर कर रहेंगे ० तो (गुनहगारो!) जैसे तुम अपने इस दिन के पेश आने को भूले रहे—(आज उसका) मज़ा चक्खो! कि हमने (भी) तुमको (दीदा व दानिस्ता) भुला दिया और जैसे जैसे तुम अमल करते रहे, उसके बदले में हमेशा के अज़ाब के मज़े चक्खो ० हमारी आयतों पर तो बस वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वह (आयतें) याद दिलाई जाती हैं, सज्दे में गिर पड़ते और अपने पर्वर्दिगार की हम्द (व सना) के साथ तस्बीह (व तक़्दीस) करने लगते हैं और वह (किसी तरह का) तकब्बुर नहीं करते ० (रात के वक़्त) उनके पहलू बिस्तरों से आशना नहीं होते (और अज़ाब के) ख़ौफ़ और (रहमत की) उम्मीद से अपने पर्वर्दिगार से दुआएँ माँगते और जो कुछ (भी) हमने उनको दे रक्खा है, उसमें से (राह-ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं ० तो कोई शख़्स भी नहीं जानता कि लोगों के (नेक) अमलों के बदले में कैसी कैसी आँखों की ठंडक उनके लिये पर्दए-ग़ैब में मौजूद है ० तो क्या ईमान लाने वाला उसके बराबर होजाएगा, जो नाफ़र्मानी करता है? (दोनों फ़रीक़ हरगिज़) बराबर नहीं हो सकते ० तो जो लोग ईमान लाये—

---

(और अत्यन्त आधीनता से कहेंगे कि) हे पालन कर्त्ता! हमने (तेरे आदेशों को सच्चा) मान लिया और सुन लिया। अब हम को फिर दुनिया में भेज दे, जिससे कि हम नेक काम करें-(क्योंकि जो कुछ तेरे पैग़म्बर ने कहा था, वह बिलकुल सत्य है)। हमको अब विश्वास आ गया-(परन्तु उस दिन उनकी यह प्रार्थना किंचित न सुनी जावेगी) और (जवाब में अल्लाह तआला कहेगा कि) यदि हम चाहते (और हमारा कोई प्रयोजन होता) तो (संसार ही में) हर प्राणी को वह वस्तु प्रदान कर देते (अर्थात ऐसी समझ बूझ प्रदान करते) कि जिससे वह (ईमान और नेकी ही का) मार्ग पाता (और उसे इतना अधिकार हो न दिया जाता कि वह कुफ़ तथा उद्दण्डता और बदी की ओर चित्त लगाता और आज के दिन फिर दुबारा दुनिया हो में जाने की इच्छा करता)-परन्तु (हमारा तो कोई ऐसा प्रयोजन न था। बस आज) हमारी (वह) बात पूरी होकर रही (जो हमने दुष्ट शैतान के सामने कही थी। अर्थात यह कि) हम समस्त (पापी) जिन्नों तथा मनुष्यों से दोज़ख़ को भर देंगे। तो (अब तुम जाते किधर हो? हमारे अज़ाब का) स्वाद चक्खो, इस लिये कि तुमने (दुनिया में) अपनी इस दिन की हाज़िरी को (अपने दिल से बिलकुल) भुला दिया था (और तुमने कोई सामान आज के लिये नहीं किया था। अतः जिस प्रकार तुम भूले, उसी प्रकार) हम भी तुमको (अज़ाब में डाल कर) भूल गये। (अब जलो!) और अपनी करतूतों के कारण सदैव के अज़ाब का स्वाद चक्खो ॥

(और यदि मानलो कि हम इन्हें दुबारा भी दुनिया में भेज दें, तो क्या यह वहाँ जाकर ईमान ले आवेंगे? कदापि नहीं। यह तो फिर भी उसी कुफ़ शिर्क में फँस जावेंगे)-हमारी आयतों पर (ईमान लाने वालों की सूरतें ऐसी नहीं होतीं। उन पर) तो बस वही ईमान लाते हैं कि (जो उनके सत्य विषयों को समझते हैं और) जब उनसे उनका वर्णन किया जाता है, तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं और (रात दिन) अपने पालन कर्त्ता की प्रशंसा के साथ (साथ उसकी) पवित्रता वर्णन करते (रहते) हैं (अर्थात अल्लाह पवित्र है) और (जब उन्हें किसी बात की आज्ञा दी जाती है, तो) वह अहंकार नहीं करते-(बरन् तन मन से उसका पालन करते हैं)॥

(और रात रात भर अल्लाह की याद में) उनकी करवटें (अपने) बिछौनों से दूर रहती हैं (और दोज़ख़ के) भय से और (अल्लाह की कृपा की) आशा से अपने पालन कर्त्ता को पुकारते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है (हमारे मार्ग में निसंकोच होकर) व्यय करते हैं—तो (हमारे यहां भी उनका जो पद है, उसको) किसी को ख़बर नहीं (और कोई नहीं जानता) कि कितनी आंखों की ठंडक (कलेजे की तरावट हमारे यहाँ उनको प्राप्त होगी। अर्थात) उनके लिये उनके (शुभ) कर्मों के बदले (जो आनन्द, सुख का सामान उपलब्ध है, वह बिलकुल) गुप्त है-(न किसी ने देखा, न सुना और न किसी के ख़्याल में आया)। क्या (किसी बुद्धिमान के निकट) ईमानदार मनुष्य उस मनुष्य के बराबर (हो सकता) है, जो अवज्ञाकारी (तथा कुकर्मी) है? (कदापि नहीं। ईमानदार और बेईमान, सुकर्मी और कुकर्मी) कभी बराबर नहीं हो सकते। (निस्सन्देह) जो लोग कि (सच्चे दिल से अल्लाह रसूल पर) ईमान ले आये—

और उन्होंने नेक अमल (भी ) किये, उनके लिये रहने को बाग़ होंगे, ( यह ) मेहमानदारी उनके ( नेक ) अमलों का बदला ( है )—जो ( दुनिया में ) करते रहे ० और जो लोग नाफ़र्मानी करते रहे, उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा। जब जब उससे निकलना चाहेंगे, उसी में लौटा दिये जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि जिस अज़ाब ( दोज़ख़ ) को तुम झुट-लाते रहे, अब उसी के मज़े चक्खो ० और ( क़यामत के ) बड़े अज़ाब से पहिले हम इन ( कुफ़्फ़ार-मक्का ) को ( एक ऐसे ) अज़ाब का मज़ा भी ज़रूर चखायेंगे, जो ( इसी दुनिया में इन पर ) अन्क़रीब ( नाज़िल ) होगा—ताकि यह लोग ( हमारी तरफ़ ) रुजू करें ० और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन ? कि उसको उसके पर्वर्दिगार की आयतों ( के ज़रिये ) से नसीहत की जाय और वह उनसे मुंह फेर ले। हम बेशक गुनहगारों से बदला लेकर रहेंगे ० और हमने मूसा को भी किताब (आसमानी यानी तौरात ) दी थी, तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम भी ( ख़ुदा की तरफ़ से ) किताब ( आसमानी यानी क़ुर्आन ) के मिलने से शक में न रहो और हमने उस ( तौरात ) को बनी इस्राईल के लिये रहनुमा क़रार दिया था ० और हमने बनी इस्राईल में से ( दीन के ) पेशवा बनाये थे, जो हमारे हुक्म से ( लोगों को ) हिदायत किया करते थे ( और यह मन्सब-इमामत उनको उस वक़्त मिला )–जबकि वह ( काफ़िरों की ईज़ाओं पर ) सब्र किये ( बैठे ) रहे और ( इसके अलावा ) हमारी आयतों का यक़ीन भी रखते थे ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) कुछ शक नहीं कि—

ع ٢

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى نُزُلًا
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا
فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا
مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا
عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝
وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى
دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ
عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ
مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝
وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا
صَبَرُوْا ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ

और ( ईमान लाकर ) उन्होंने शुभ कर्म भी किये, तो ( .ख़ुदा के यहाँ ) उनके ( शुभ ) कर्मों के बदले जन्नतुलमावा ( तय्यार ) है और जो लोग कुकर्मी ( तथा बेईमान ) हैं, तो उनका ठिकाना आग है ( और वह सदैव उसी में जलते भुनते रहेंगे )। जब कभी वह उससे निकलने का इरादा करेंगे-( तो उन्हें निकलने न दिया जायगा और यदि कुछ थोड़ा बहुत अपने स्थान से हट जावेंगे )–तो उन्हें फिर वहीं लौटा दिया जायगा। और उनसे कहा जावेगा ( भागते किधर हो। अब ) चक्खो ना ! वह दोज़ख़ का अज़ाब, जिसको तुम ( दुनिया में ) झुठलाया करते थे ॥

और ( यह परलोक का ) बड़ा अज़ाब ( तो अपने समय ही पर होगा। इस समय तो उस ) के अतिरिक्त हम इन्हें ( दुनिया में अपना ) कुछ अज़ाब ( अकाल के रूप में वा खुली पराजय के रूप में ) अवश्य चखावेंगे, जिससे कि यह ( अपनी अनुचित बातों से ) रुक जावें। और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है, जिसके सामने उसके पालन कर्त्ता की आयतें वर्णन की जावें ( और ) फिर वह उनसे मुंह फेर ले । निस्सन्देह हम पापियों से ( उनकी अवज्ञा का अवश्य ) बदला लेंगे। और हमने ( तुम्हें पैग़म्बर बनाने से पहिले ) मूसा को भी ( अपना पैग़म्बर बनाया था और उन्हें भी तौरैत ) पुस्तक प्रदान की थी। अतः तुम कुर्आन के मिलने से ( किसी चिन्ता और ) सन्देह में न पड़ जाना ( और उसके प्रचार में कमी न करने लगना। निस्सन्देह ) हमने ( जिस प्रकार ) इस ( तौरैत ) को बनी इस्राईल के लिये धर्म-मार्ग ( का साधन ) बनाया था–( उसी प्रकार पवित्र कुर्आन को हम समस्त संसार के लिये शिक्षा का द्वार बनावेंगे ) ॥

और ( जिस प्रकार ) उन ( बनी इस्राईल ) में से–जबकि उन्होंने ( बड़ी से बड़ी आपत्ति आने पर ) धैर्य ( तथा सन्तोष ) से काम लिया, हमने ( बहुतों को ) अगुवा बना दिया था कि जो हमारी आज्ञानुसार ( लोगों को सीधे मार्ग पर चलने की ) शिक्षा देते थे ( इसी प्रकार हम तुम्हारे सखाओं का पद भी बढ़ावेंगे और उन्हें भी सरदारी तथा अगुवाई, राज्य और शासन-सब कुछ प्रदान करेंगे ) और बनी इस्राईल हमारे चिन्हों ( के सत्य होने ) का ( सच्चे दिल से ) विश्वास करते थे ( और उनकी उन्नति तथा वैभव का मूल कारण यही था ) ॥

هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ
قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اَوَلَمْ
يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ
فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ
وَاَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى
هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ يَوْمَ
الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ۝ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ
مُّنْتَظِرُوْنَ ۝

سورة الاحزاب ... ثلث وسبعون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ

बनी इस्राईल जिन जिन बातों में इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं, तुम्हारा पर्वर्दिगार क़यामत के दिन उनमें उन ( इख़्तिलाफ़ात ) का फ़ैसला कर देगा ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या ( तुम्हारे वक़्त के ) लोगों को इससे हिदायत न हुई कि हमने इनसे पहिले कितनी उम्मतें हलाक कर मारीं ( और ) यह लोग उनही के घरों में चलते फिरते हैं। इसमें शक नहीं कि इस इन्क़िलाब में ( लोगों के लिये बड़ी ) इब्रतें हैं, तो क्या ( यह लोग ) सुनते (समझते) नहीं ० और क्या उन्होंने इस (बात) पर नज़र नहीं की-कि हम उफ़तादा ज़मीन की तरफ़ पानी ( के बादलों ) को हाँक देते हैं । फिर पानी के ज़रिए से खेती को निकालते हैं, जिसमें से इनके चौपाये भी खाते हैं और यह आप भी – तो क्या ( यह लोग इस नमूनए—कुद्रत को ) नहीं देखते ० और ( काफ़िर ) कहते हैं कि ( मुसलमानो ! ) अगर तुम सच्चे हो, तो ( क़यामत का ) यह ( अख़ीर ) फ़ैसला ( जिससे तुम हमको डराते हो ) कब होगा ? ( हम देखेंगे, तो ईमान लायेंगे ) ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इनको ) जवाब दो कि जो लोग ( दुनिया में ) कुफ़्र करते रहे, फ़ैसले के दिन उनका ईमान लाना उनके कुछ भी काम न आयेगा और न उनको मोहलत ही मिलेगी ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इनकी ( बातों की कुछ ) पर्वा न करो और देखो तो सही ( क्या होता है – आख़िर ) यह ( भी तो ) देख ( ही ) रहे हैं ०

## सूरत—अहज़ाब

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई । इसमें ७३ आयतें और ९रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० ऐ पैग़म्बर ! ख़ुदा ( ही ) से डरते रहो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों ( से डर कर उन ) के कहने में न आजाना—

( हे रसूल ! यहां तो शिर्क-पूजक लोग जितना जी चाहे अपने आपको सत्य पर समझ लें, किन्तु ) क़यामत के दिन ( उनकी कुछ न चलेगी । वहां ) तुम्हारा पालन कर्त्ता इन ( ईमानदारों और मुश्रिकों ) के बीच जिन ( जिन ) बातों में ( भी ) यह ( परस्पर ) विभेद करते हैं-( सबका अच्छी तरह ) निर्णय कर देगा । ( आख़िर इन मक्का के काफ़िरों के अन्धेपन का कारण क्या है ? ) क्या उनको ( इस बात से भी कुछ ) शिक्षा नहीं होती कि उनसे पहिले जो जातियां ( जैसे आद, समूद इत्यादि ) हो चुकी हैं, उनमें से हमने बहुतों को ( केवल उनकी उद्दण्डता तथा अवज्ञा के कारण ) नष्ट ( भ्रष्ट ) कर दिया-( यद्यपि ) यह उनके ( निर्जन ) खंडरों में ( सर्वदा ) आते जाते ( भी ) रहते हैं। निस्सन्देह इस ( प्रकार की घटना ) में ( नष्ट हुई जातियों के बाद आने वाली जातियों के लिये शिक्षा तथा उपदेश के असंख्य ) चिन्ह ( पाए जाते ) हैं-( अतः उनको चाहिये कि यह उन पहिली जातियों के नष्ट होने के वृतान्त सुनें और शिक्षा ग्रहण करें ) । क्या यह ( इन शिक्षा प्रद घटनाओं को ) सुनते ( भी ) नहीं ॥

( अच्छा यदि यह लोग नष्ट-भ्रष्ट होने की घटनाओं से शिक्षा ग्रहण नहीं करते, तो आबादी और पैदाइश ही से नसीहत पकड़ें । आख़िर ) क्या इन्हें यह भी ( कभी ) नहीं दिखाई दिया कि हम बन्जर भूमि की ओर पानी ( के बादलों ) को हांकते ( और अपनी कृपा का पानी उस पर वर्षाते ) हैं ( और ) फिर उस ( पानी ) से खेती उगाते हैं, जिस ( की पैदावार में ) से इनके पशु और यह स्वयं खाते ( पीते ) हैं । क्या (वास्तव में) इन्हें (हमारी शक्ति का इतना स्पष्ट चमत्कार भी) दिखाई नहीं देता ? (आश्चर्य है ! कि इन शिक्षा तथा उपदेश की बातों से काफ़िर इस्लाम की ओर झुकने के बदले और विद्रोह की ओर झुकते जाते हैं ) और ( मुसलमानों से हंस २ कर ) कहते हैं— यदि तुम सच्चे हो ( तो बताओ ) यह निर्णय ( जिससे तुम हमें डराते हो ) कब होगा । ( मुहम्मद ! ) तुम (इनसे) कहदो कि निर्णय का दिन ( हँसी मज़ाक़ उड़ाने के योग्य नहीं है । वह) वह ( दिन ) है कि ( जिस दिन बड़े २ कट्टर मुश्रिक और ) काफ़िर ( भी ईमान ले आवेंगे, परन्तु उन ) का ईमान उन्हें ( कुछ भी ) लाभ न पहुंचावेगा और ( लाभ तो अलग रहा )—उन्हें ( ख़ुदा के अज़ाब से दम लेने का भी ) अवसर न दिया जावेगा । तो ( अब ) तुम उन ( की शिक्षा ) का ख़्याल छोड़ दो और (निर्णय की घड़ी की ) प्रतीक्षा करो—( जैसी कि यह ( तुम्हें हानि पहुंचाने और तुम पर अधिकार प्राप्त करने की ) प्रतीक्षा करते हैं ॥

## सूरत—अहज़ाब

मदनी, अर्थात मदीने में उतरी । इसमें ७३ आयतें और ८ रुकूअ हैं ॥

हे पैग़म्बर ! तुम ( अपने ) अल्लाह से डरते रहो ( और अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहो ) और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों ( की धमकियों में न आओ और उन ) का कहना (कदापि) न मानो—

وَالْمُنٰفِقِيْنَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ
وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
وَكِيْلًا ۝ مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ
فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـئِيْ
تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ
اَبْنَآءَكُمْ ۚ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝
اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ
تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۚ
وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ
وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

बेशक अल्लाह ( सबके हाल से ) वाक़िफ़ ( और ) हिकमत वाला है० और तुम्हारे पर्वर्दिगार ( की तरफ़ ) से जो कुछ तुम पर वही किया जाता है, उसी पर चले जाओ। कुछ शक नहीं तुम लोग जैसे जैसे अमल करते हो, अल्लाह को उसकी सब ख़बर है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अल्लाह पर भरोसा रक्खो ! और अल्लाह कारसाज़ बस है ० अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रक्खे और न तुम लोगों की बीबियों को, जिनसे तुम ज़िहार कर लेते हो, तुम्हारी माँ बनाया और न तुम्हारे लेपालकों को तुम्हारे बेटे बनाया। यह तुम्हारे अपने मुंह की कहन है और अल्लाह तो हक़ बात फ़र्माता और वही (लोगों को सीधा) रस्ता दिखाता है० लेपालकों को उनके ( हक़ीक़ी ) बापों के नाम से बुलाया करो। यही बात अल्लाह के नज़दीक ज़ियादा-तर क़रीन-इन्साफ़ है। पस अगर तुमको उनके बाप मालूम न हों, तो तुम्हारे दीनी भाई और ( नीज़ ) तुम्हारे ( दीनी ) दोस्त हैं-( तो उनही के मुनासिब-हाल लफ़्ज़ों से उनको बुलाया करो ) और तुमसे इसमें भूल चूक हो जाय, तो इसमें तुम पर कुछ गुनाह नहीं, मगर हाँ दिल से इरादा करके ऐसा करो-( तो अलबत्ता गुनाह की बात है ) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० पैग़म्बर मुसल्मानों पर ख़ुद उनकी जानों से भी ज़ियादा हक़ रखते हैं ( और वह मुसल्मानों के बाप की जगह हैं )—

निस्सन्देह अल्लाह बड़ा ज्ञानवान ( और ) बड़ी हिकमत वाला है-( जो जो उपाय यह तुमको हानि पहुंचाने के लिये कर रहे हैं, वह सब उसके ज्ञान में हैं—बरन् वह उनसे तुमको भी सूचित कर देगा ) और ( उन्हें कभी सफल न होने देगा। अतः) तुम (तो) जो आज्ञा तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से तुम्हारे पास भेजी जाती है, उसीका पालन करते रहो ( और उनकी धोखेबाज़ी तथा विरोध की किंचित परवाह न करो और उनसे कहदो कि ) जो ( कुकर्म ) तुम कर रहे हो, अल्लाह को उनकी पूरी (पूरी) ख़बर है। (जब समय आवेगा, तो वह तुमको उनका पूरा २ दंड देगा ) ॥

और ( हे रसूल ! यदि भूमण्डल के सब काफ़िर मिलकर भी तुम्हारा विरोध करें, तब भी तुम न घबराना। बस ) तुम ( तो अपने ) अल्लाह पर भरोसा रक्खो और ( विश्वास रक्खो कि ) अल्लाह यथेष्ट कार्य कर्त्ता है-( वह तुम्हारे सब काम बना देगा । हे रसूल ! इनको समझाओ कि ) अल्लाह ने किसी मनुष्य की छाती में न दो हृदय बनाये हैं और न तुम्हारी उन पत्नियों को-जिनसे तुम ज़िहार ( अर्थात स्त्री को माता आदि कह देना ) कर लेते हो, तुम्हारी माताएँ बनाया है और न तुम्हारे गोद लिये बेटों को तुम्हारे ( सगे ) बेटे ( की श्रेणी में ) किया है । यह ( इस प्रकार की जितनी ) बातें ( हैं, केवल ) तुम्हारे मुंह की कहन हैं-( इनमें सत्य कुछ भी नहीं ) और अल्लाह ( जो कुछ कहता है, बिल्कुल ) सत्य कहता है और वह ( सदैव ) सीधा मार्ग बताता है। ( इस लिये तुमको चाहिये कि अपनी व्यर्थ और असत्य बातों को छोड़ दो और सच्चे दिल से अल्लाह के आधीन बन जाओ ) ॥

( और सदैव अपने ) मुंह बोले बेटों को उनके पिताओं के नाम से पुकारो। अल्लाह के निकट यही न्याय ( की बात ) है। हाँ, यदि तुम उनके पिताओं को न जानते हो ( अर्थात तुमको उनका नाम निशान मालूम न हो ) तो ( लाचारी है। परन्तु उस समय भी वह किसी प्रकार तुम्हारी सगी सन्तान के समान नहीं हो सकते, बरन् वह ) तुम्हारे धर्म—भाई और तुम्हारे मित्र हैं । ( लेपालक के सम्बन्ध में यही आदेश है, जो वर्णन किया गया है। तुमको इस पर चलना आवश्यक है ) और ( यदि भूले से बिना किसी इरादे के तुमसे कुछ ग़लती हो जावे; तो ) जो ग़लती तुमसे ( इस प्रकार की ) हो जावे, तो तुम पर उसमें कुछ दोष नहीं है-परन्तु ( हाँ ! ) जो ( ग़लती करने का ) तुम्हारा दिल इरादा करे-(अर्थात जो पाप कि तुम अपने इरादे और जान बूझ कर करो, उसमें तुम पर दोष है और उसका उत्तर देना पड़ेगा ) और ( यदि इसके पश्चात तुम तौबा और क्षमा-याचना करलो, तो क्षमा की आशा है-क्योंकि ) अल्लाह तआला ( बड़ा ) क्षमा करने वाला ( और ) कृपालु है । ( और अपने बन्दों पर इतना कृपालु है कि जैसे उसने धर्म-मार्ग बताने के लिये भूत-काल में नबियों को भेजा, उसी प्रकार वर्तमान-काल में मुहम्मद भी उसी की आज्ञानुसार आये हैं। यह अल्लाह के अन्तिम ) नबी ( हैं। अपनी उम्मत के ) ईमानदारों के साथ ( स्वयं ) उनके प्राणों से भी अधिक सम्बन्ध रखते हैं ( और पद की दृष्टि से भी उनके बाप दादा से बढ़कर हैं और कृपा तथा दया में भी ) ॥

और पैग़म्बर की बीबियाँ ( अदब व ताज़ीम में ) उनकी मांएँ हैं
और रिश्तेदार किताबुल्लाह की रू से ( तमाम ) मुसल्मानों और मुहाजिरों
से बढ़कर एक के हक़दार एक हैं–मगर यह कि तुम अपने दोस्तों के
साथ सुलूक करना चाहो–(तो वह बात दूसरी है)–यही हुक्म किताब (लौह-
महफ़ूज़ ) में लिखा हुआ है ० और (ऐ पैग़म्बर ! उस वक़्त को याद करो )
जब हमने ( तमाम ) पैग़म्बरों से ( तब्लीग़-रिसालत का ) अहद लिया
और ( ख़ास कर ) तुमसे और नूह और इब्राहीम और मूसा और मर्यम
के बेटे ईसा से, और उनसे अहद ( भी ) लिया ( तो ) पक्का ० कि आख़िर-
कार ( क़यामत के दिन ख़ुदा ) सच्चों ( यानी पैग़म्बरों ) से उनके सच
( यानी तब्लीग़-रिसालत ) का हाल दर्याफ़्त करे और उसने ( मानने
वालों के लिये अज्र और ) न मानने वालों के लिये अज़ाब-दर्दनाक तय्यार
कर रक्खा है ० मुसल्मानो ! ख़ुदा के उस एहसान को याद करो, जो उसने
तुम पर किया था–जबकि तुम पर लशकर ( के लशकर ) आ चढ़े, तो
हमने उन पर आँधी भेजी और ( आँधी के अलावा फ़रिश्तों की ) फ़ौज,
जो तुमको दिखाई नहीं देती थी और ( उस वक़्त जङ्ग की ) जो (तदबीरें)
तुम लोग कर रहे थे, अल्लाह ( उनको भी ) देख रहा था ० जिस वक़्त
कि ( दुश्मन ) तुम पर तुम्हारे ऊपर की तरफ़ से भी उतरे और तुम्हारे
नीचे की तरफ़ से भी ( पिले ) और ( मारे ख़ौफ़ के तुम्हारी ) आँखें फिरी
( की फिरी ) रह गई थीं और कलेजे मुंहों को आ गये थे और—

وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ
أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ
إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا كَانَ ذَٰلِكَ
فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ
النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ
وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ
مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝ لِيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ
وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَكَانَ
اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ إِذْ جَاءُوكُمْ
مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ
الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ

بِاللَّهِ

---

और उनकी पत्नियाँ ( भी सबकी सब बड़ी पवित्र हैं और आदर सम्मान में ) उन ( के अनुगामियों ) की माताएँ–( बरन् उन से भी बढ़ कर ) हैं और अल्लाह की किताब में ( अर्थात शरीअत के अनुसार ) मोमिनों और मुहाजिरों के मुक़ाबले में ( जो प्रिय-जन तथा ) नातेदार ( हैं, वह आपस में ) एक दूसरे से अधिक सम्बन्ध ( और बपौती का अधिकार ) रखते हैं। ( अर्थात नातेदारों तथा सम्बन्धियों की उपस्थिति में अन्य लोगों को विरासत लेने का अधिकार नहीं है )—परन्तु ( हां ! ) यह ( जाइज़ है ) कि तुम अपने मित्रों ( में से किसी ) के साथ सद्व्यवहार करो ( और मृत्यु के समय अपने धन में से कुछ देने के लिये वसीयत करदो )। यही ( आज्ञा थी, जो सृष्टि से पहिले ) लौह-महफ़ूज़ में लिख दी गई थी ॥

( वह समय भी याद रखने योग्य है )—जबकि हमने ( अपने सब ) पैग़म्बरों से उन ( के धार्मिक-कर्तव्य के पालन करने अर्थात ख़ुदा के सन्देशों के प्रचार) की प्रतिज्ञा ली और (विशेषतः) तुमसे और नूह व इब्राहीम व मूसा व मर्यम के पुत्र ईसा से और हमने (अपने) इन ( नेक और श्रेष्ठ बन्दों ) से ( शपथ ली और अत्यन्त दृढ़ प्रतिज्ञा कराई कि ( क़यामत के दिन ) अल्लाह तआला (इन) सच्चों (अर्थात पैग़म्बरों) से उनके सत्य (अर्थात धर्म-प्रचार के कर्तव्य-पालन) के सम्बन्ध में पूछ-गछ करे और (जब वह बतावेंगे कि हमने अपना कर्तव्य पूर्णरूप से पालन किया, तो इन्कारियों से कुछ जवाब न बन पड़ेगा। निस्सन्देह ) इन्कारियों के लिये ( एक ) दुखदायी अज़ाब उसने तय्यार कर रक्खा है ॥

ईमान वालो ! याद करो अल्लाह के उस उपकार को जो ( ख़न्दक़ के युद्ध के अवसर पर ) उसने तुम पर किया था ( अर्थात ) जब ( बनी क़ुरैज़ा, बनी नुज़ैर, बनी ग़ितफ़ान आदि अरब के समस्त समूहों की ) सेनाएं ( परस्पर संगठित और एक होकर ) तुम पर चढ़ आई थीं ( और तुम अपनी लाचारी और उनके परस्पर संगठन तथा एकता और अस्त्र-शस्त्र की अधिकता को देखकर चिन्तित हो गये थे ) तो हमने ( उनके जमे हुए पैरों को उखाड़ने के लिए ) उन पर आँधी भेजी और ( तुम्हारी सहायता के लिये फ़रिश्तों की ) सेना ( भेजी )–जो तुमको दिखाई न देते थे और ( शत्रुओं को भगाने के लिये ) जो ( उपाय और प्रबन्ध ) तुम कर रहे थे, अल्लाह ( उनको भी ) देख रहा था। (ईमान वालो ! तुमको अपना वह आपत्तिकाल भूलना न चाहिये)—जब शत्रु तुम्हारे ऊपर की ओर से (अर्थात् मदीने के पूर्वी भाग से, जो ऊंचान पर स्थिर है) और नीचे की ओर से (अर्थात पश्चिमी भाग से, जो ढलान पर स्थिर है—धावा करने के अभिप्राय से ) तुम पर चढ़ आये थे और ( भय और शङ्का के मारे तुम्हारी ) आंखें फटी की फटी रह गई थीं और ( तुम्हारी ) घिग्घी बंध गई थी और तुम ( बिल्कुल निराश और आशा-भङ्ग होकर ) अल्लाह के साथ भांति भांति के ( बुरे ) विचार करने लगे थे ॥

खुदा की निस्बत तुम ( लोग तरह तरह के ) गुमान करने लगे थे ० इस मौक़े पर मुसल्मानों ( के इस्तिक़लाल ) की आज़माइश की गई और खूब ही झड़-झड़ाये गये ० और जब मुनाफ़िक़ और वह लोग-जिनके दिलों में ( शक के ) रोग थे ( बे इख़्तियार ) बोल उठे कि खुदा और उस के रसूल ने जो हमसे वादा किया था, बस निरा धोका ( ही धोका ) था ० और जब उनमें से एक गिरोह कहने लगा कि मदीने के लोगो ! तुमसे ( इस जगह दुश्मन के मुक़ाबले में ) नहीं ठहरा जायगा, तो ( बेह-तर है कि ) लौट चलो ! और उनमें से कुछ लोग लगे पैग़म्बर से ( घर लौट जाने की ) इजाज़त मांगने ( और ) कहने कि हमारे घर ग़ैर-महफ़ूज़ हैं—हालांकि वह ग़ैर-महफ़ूज़ नहीं-( बल्कि ) उनका इरादा तो सिर्फ़ भागने ही का है ० और अगर ( ऐसे ही लश्कर ) मदीने के अतराफ़ ( व जवानिब ) से इन पर आ घुसें और इनसे फ़साद ( बर्पा करने ) को कहा जाय, तो ( यह बेतअम्मुल ) फ़साद बर्पा करदें और अपने घरों में कुछ यूंही सा तवक्कुफ़ करें ( तो करें ) ० हालांकि ( यही लोग इससे ) पहिले खुदा से अहद कर चुके थे कि ( हम दुश्मन के मुक़ाबले में ) पीठ न फेरेंगे और ( इन लोगों ने जो ) खुदा के ( साथ ) अहद (किया था, उस) की ( तो इनसे ) बाज़-पुर्स होकर रहेगी ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो, अगर तुम मौत या क़त्ल ( के ख़ौफ़ ) से भागते हो, तो (यह) भागना तुमको हरगिज़ ( कुछ भी ) फ़ायदा नहीं देगा और अगर भाग कर बच भी गये, तो बस—

بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ
وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ
رَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ
مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا
وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ
اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ
يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ
اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا
تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا
اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ۭ وَكَانَ
عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ۝ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ
اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا

( निस्सन्देह ) इस अवसर पर ईमानदारों की ( अति कठिन ) परीक्षा ली गई और वह खूब अच्छी तरह कंपकंपाए गये और ( उनकी धैर्य-शक्ति की पूरी २ परीक्षा की गई। विशेषतः उस समय ) जबकि मुनाफ़िक़ और ( वह अशुद्ध-विचार तथा कच्चे ईमान वाले लोग ) जिनके दिलों में ( कुफ़्र तथा कपट का ) रोग ( विद्यमान ) था—कहने लगे कि जो वादा अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने ( मुसल्मानों को काफ़िरों पर विजय दिलाने का ) किया था, वह ( केवल धोखा ही ) धोखा था-( उसमें सत्य कुछ भी न था )। और ( उस समय भी ) जबकि उनही में का एक दल ( तो ) कहने लगा कि हे यसरब ( अर्थात मदीना ) वालो ! ( शत्रुओं ने चारों ओर से हम को घेर लिया। अब तो चारों ओर मृत्यु ही मृत्यु दिखाई देती है )—यहाँ तुम्हारे रहने का ठिकाना नहीं है। अतः ( अच्छाई इसी में है कि अपने २ घरों को ) लौट चलो और एक दल उनमें का ( अनेक प्रकार के बहाने बनाने लगा और युद्ध-क्षेत्र से लौट जाने की ) पैग़म्बर से आज्ञा मांगने लगा ( और ) कहने लगा, हमारे घर सुरक्षित नहीं हैं। ( यदि हम घर को न गये, तो सन्देह है कि कहीं चोर घरों में न घुस आवें वा हमारे शत्रु अवसर पाकर हमारे घरों को न लूट लें )-यद्यपि वह असुरक्षित नहीं थे ( और इन बहानों से ) भाग जाने के अतिरिक्त उनका कोई (और ) प्रयोजन नहीं था ॥

( मुसल्मानों का साथ देने और उनके साथ होकर काफ़िरों से लड़ने में तो उनकी यह दशा है) और यदि मदीने के चारों ओर से ( इन काफ़िरों की कोई ) सेना इन पर टूट पड़े और इनसे (इस्लाम से फिर जाने और मुसल्मानों के साथ ) फ़साद ( और विद्रोह करने) की इच्छा करे, तो यह ( उनकी ) इस (इच्छा ) को ( तुरन्त ) मान लें और उस ( के स्वीकार करने ) में बहुत ही कम देर करें ( अर्थात बस सुनने की देर है ) ॥

यद्यपि यह ( वह लोग हैं, जो ) इस ( युद्ध ) से पहिले अल्लाह से ( इस बात की पक्की ) प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि ( यदि काफ़िरों से मुक़ाबले का अवसर आजाय, तो ) यह पीठ न दिखावेंगे—( मुसल्मानों का साथ देंगे, किन्तु आज मालूम हो गया कि उनका उद्देश्य धोखेबाज़ी के सिवा ) और ( कुछ न था। तो यह खूब समझ लें कि अल्लाह से धोखेबाज़ी करना हंसी खेल नहीं है )। अल्लाह के अहद की ( एक न एक दिन अवश्य ) पूछ गछ होनी है। ( हे रसूल ! ) तुम ( इन लोगों से ) कहो कि यदि तुम ( अपनी ) मौत ( मरने ) वा ( दूसरे के हाथों ) बध ( हो जाने के भय ) से भागते हो, तो ( यह ) भागना तुमको कदापि लाभ न पहुंचावेगा-( जिस तरह तुम्हारे भाग्य में मृत्यु लिखी है, आकर रहेगी ) और ( यदि तुम्हारा जीवन अभी कुछ शेष है, तो ) इस दशा में—

تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم
مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً
وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ۝ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ
وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُونَ
الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ فَإِذَا جَاءَ
الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ
كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَإِذَا ذَهَبَ
الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى
الْخَيْرِ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ
وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ يَحْسَبُونَ
الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا وَإِن يَأْتِ الْأَحْزَابُ
يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ

यही ना कि ( दुनिया में ) चन्द रोज़ ( और ) रस बस लोगे ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे साथ बुराई (करनी) चाहे, तो कौन ऐसा ( सूर्मा ) है, जो तुमको उस ( की पकड़ ) से बचा सके, या तुम पर ( अपना ) फ़ज़्ल करना चाहे—( तो कौन उसको रोक सकता है ? ) और ख़ुदा के सिवा न तो ( किसी को ) अपना हिमायती ही पायेंगे और न ( किसीको अपना ) मददगार ( ही पायेंगे ) ० (मुसल्मानो !) ख़ुदा तुममें से उन ( मुनाफ़िक़ों ) को ख़ूब जानता है, जो ( दूसरों को लड़ाई में शरीक होने से ) रोकते और अपने भाई बन्दों से कहते हैं कि ( लड़ाई से अलग होकर ) हमारे पास चले आओ और ( वह ख़ुद भी अज़-बस कि ) तुम्हारे साथ बख़ीली रखते हैं—जङ्ग में हाज़िर नहीं होते, मगर (ख़ुदा सा उतारने को ) थोड़ी देर ( के लिये ) ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) जब ( कोई ) ख़ौफ़ ( का मौक़ा ) पेश आता है, तो इनको देखते हो कि ( मायूसाना ) तुमको देखते हैं। उनकी आंखें ( हैं कि चारों तरफ़ ) घूमी चली जाती हैं; जैसे किसी पर ( सकरात ) मौत की बेहोशी ( तारी ) हो, फिर जब ख़ौफ़ दूर होजाता ( और मुसल्मानों की फ़तेह हो जाती ) है, तो माल ( ग़नीमत ) पर गिरे पड़ते ( और ) दिल-ख़राश बातें कर करके तुम पर ताने मारते हैं। यह लोग ( शुरू से ) ईमान लाये ही नहीं, तो अल्लाह ने उनके अमल ( जो कुछ भी किये थे ) अकारत कर दिये और अल्लाह के नज़दीक यह ( एक ) आसान ( सी बात ) है ० ( बावजूदे कि मुहासरा करने वाले लश्कर मुहासरा उठाकर चल भी दिये हैं, मगर यह अभी तक यही ) ख़याल कर रहे हैं कि ( यह ) लश्कर अभी नहीं गये और अगर ( दुश्मनों के ) लश्कर ( फिर ) आ मौजूद हों, तो यह लोग इसीकी आरज़ू करें कि ( ऐ ) काश ! देहात में ( किसी तरफ़ को ) निकल जाएँ ( और दूर बैठे ) तुम्हारे हालात दर्याफ़्त करते रहें—

---

केवल कुछ दिन लाभ पाओगे—( अन्त में तुमको मरना और अपने किये का फल भोगना है। हे रसूल ! ) तुम ( इनसे ) कहो कि यदि वह तुमको बुराई पहुंचाना चाहे ( अर्थात् मृत्यु दे ) वा वह तुम पर कृपा करना चाहे ( अर्थात जिलाए )—तो कौन ऐसा ( योद्धा ) है, जो अल्लाह ( की पकड़ ) से तुमको छुड़ा ले ? और ( कौन ऐसा सूर्मा है, जो अल्लाह की आज्ञा के विरुद्ध तुमको जान से मार डाले। निस्सन्देह ) यह ( लोग कहीं चले जायँ )—अल्लाह के अतिरिक्त न कोई अपने लिये मित्र पावेंगे और न कोई सहायक ॥

( ईमान वालो ! ) अल्लाह तुममें के उनको ख़ूब जानता है, जो ( लोगों को तुम्हारा साथ देने और अल्लाह की राह में लड़ने से ) रोकते और अपने ( स्वदेशी ) भाइयों से भी कहते हैं कि ( व्यर्थ अपनी जान क्यों गँवाते हो। युद्ध-क्षेत्र छोड़ कर ) हमारे पास आ जाओ और स्वयं भी बस कभी ( कभी दुनिया को दिखाने के लिये ) युद्ध ( क्षेत्र ) में ( चले ) आते हैं ( और तुम्हारी सहायता करना और तुम्हारा साथ देना उनका तात्पर्य नहीं होता, बरन् ) तुमसे ( वह जान से भी ) बचते हैं ( और माल से भी । हे रसूल ! उनकी कायरता और लालच इत्यादि की यह दशा है कि ) जब ( कोई ) डर ( अर्थात युद्ध का अवसर सामने ) आता है, तो तुम उन्हें देखते हो कि ( डर के मारे उनकी दशा क्या होती है। इस तरह ) तुमको देखते हैं कि (जैसे) उनकी आँखें ढकर ढकर कर रही हैं। मानो उन पर मृत्यु की मूर्च्छा छा गई है ( और ) जब ( वह ) डर जाता रहता है ( अर्थात युद्ध समाप्त हो जाता है और ग़नीमत का माल तुम्हारे हाथ लगता है, तो अपनी ) तीव्र ज़बानों के ( तुम्हारे दिलों पर ) तीर चलाते ( हैं और ग़नीमत के ) माल पर गिरे पड़ते हैं। ( निस्सन्देह ) यही ( वह मक्कार लोग हैं, जो पहिले दिन ही से ) ईमान नहीं लाये थे ( और मुसल्मानों को धोखा दे रहे थे )। अतः अल्लाह ( चूंकि उनकी नीयतों का हाल अच्छी तरह जानता है, इसलिये उस ) ने उनके ( दिखावे के ) कर्मों को ( बिल्कुल ) अकार्थ कर दिया और अल्लाह पर यह ( इस तरह उनको प्रतिफल से वंचित कर देना कुछ कठिन नहीं, बिल्कुल ) सरल है—( यह उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते ) ॥

( हे रसूल ! काफ़िरों के साथ उनका इतना प्रेम बढ़ा हुआ है कि उनकी पराजय का इन्हें किसी प्रकार विश्वास ही नहीं आता )। यह ( अब तक यही ) समझ रहे हैं कि ( तुम्हारे शत्रुओं के ) समूह ( इधर उधर कहीं मौजूद हैं, भाग ) नहीं गये और ( उनके अशुद्ध चित्त और कायरता तथा छल कपट की यह दशा है कि ) यदि वह समूह ( फिर तुम्हारे मुक़ाबले पर ) आ जायं, तो यह लोग यही इच्छा करें कि क्या अच्छा होता ! यदि हम ( किसी उपाय से युद्ध-क्षेत्र से टल जायँ और ) जंगल में निकल कर गँवारों में मिल जायँ ( और वहीं से ) तुम्हारी बातों की टोह लगाते रहें—

عَنْ اَنْبَآئِكُمْ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا
قَلِيْلًا ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ
اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ
الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝ وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ
قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَ
رَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ۝ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ
مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا
تَبْدِيْلًا ۝ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ
وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ
عَلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَرَدَّ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا
وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا

और अगर (किसी मजबूरी से) इनको तुममें रहना पड़े, तो (दुश्मनों से ) न लड़ें, मगर ( छुट्टा सा उतारने को ) थोड़ी देर ( के लिये ) ० ( मुसल्मानो ! ) तुम्हारे लिये ( यानी ) उन लोगों के लिये, जो अल्लाह और रोज़-आख़िरत ( के अज़ाब ) से डरते और कसरत से याद-इलाही किया करते थे—( पैरवी करने को ) रसूलुल्लाह का एक उम्दा नमूना मौजूद था ० और जब सच्चे मुसल्मानों ने ( दुश्मनों के ) गिरोहों को देखा, तो बोल उठे कि यह तो वही ( मौक़ा ) है, जो ख़ुदा और उसके रसूल ने हमें पहिले से बता रक्खा था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच फ़र्माया था और उस ( मौक़े के पेश आने ) से लोगों का ईमान और शेवए-फ़र्मांबर्दारी और भी ज़ियादा हो गया ० (इनही) मुसल्मानों में कुछ लोग तो ऐसे हैं कि ख़ुदा के साथ-जो उन्होंने ( जांनिसारी का ) अहद किया था, उसमें सच्चे उतरे। सो ( बाज़ तो ) इनमें से ऐसे थे, जो अपनी मन्नत पूरी कर गये ( यानी शहीद हुये ) और बाज़ इनमें से ऐसे हैं, जो ( शहादत के ) मुन्तज़िर हैं और उन्होंने ( अपनी बात में ) ज़रा सा भी तो रद्द व बदल नहीं किया ० (अलग़रज़ यह लड़ाई इसलिये पेश आई ) कि ख़ुदा सच्चे मुसल्मानों को उनके सच का एवज़ दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे सज़ा दे या ( चाहे ) उन ( को तौबा की तौफ़ीक़ दे और वह तौबा करें और ख़ुदा उन ) की तौबा क़बूल करले। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और ख़ुदा ने ( अपनी क़ुद्रत से ) काफ़िरों को ( मदीने से ) हटा दिया ( और वह ) अपने ग़ुस्से में ( भरे हुये हट गये और ) उनको ( इस मुहिम से ) कुछ भी फ़ायदा न पहुंचा और ख़ुदा ने (अपनी मदद से) मुसल्मानों को लड़ने की नौबत न आने दी और अल्लाह ज़बरदस्त (और ) ग़ालिब है ०—

और यदि ( कोई यत्न न चले और इन्हें ) तुम ही में रहना पड़े, तो बस थोड़ी देर युद्ध करलें। (मुसलमानो !) तुम्हारे लिये अर्थात ( धर्म के कच्चे और मुनाफ़िक़ लोगों के लिये नहीं, वरन ) उन (ईमानदारों ) के लिये, जो अल्लाह ( के दर्शन करने ) की और अन्त के दिन ( के फल ) की आशा रखते और अधिकता से अल्लाह का स्मरण करते हैं-( स्वयं ) रसूलुल्लाह का उस्वए-हसना ( अर्थात नेक नमूना ) मौजूद है। ( सो इस ख़न्दक़ के युद्ध के समय पर भी वह अपने रसूल के अनुयायी रहे ) और जब उन ( श्रेष्ठ) ईमान वालों ने ( अपने शत्रुओं के टिड्डी दल ) सेनाओं को देखा, तो ( उन्होंने तनिक संकोच न किया और बड़ी प्रसन्नता के साथ ) कहने लगे कि यह तो ( हमारी ) वही ( परीक्षा ) है, जिस ( के होने की सूचना ख़ुदा रसूल ने हमें पहिले से दे दी थी और जिसमें सफलता और विजय प्रदान करने ) का अल्लाह ने और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) अल्लाह ने और उसके रसूल ने ( जो कुछ कहा था, बिल्कुल ) सच कहा था और ( इसके बदले कि उनके धैर्य में कोई त्रुटि आती, वा मुनाफ़िक़ों की तरह वह भागने की कोशिश करते )–इस ( अवसर के उपस्थिय होने ) से उनकी ( वीरता, हार्दिक-विश्वास ) और ईमानदारी तथा आधीनता में ( और ) अधिकता हो गई ॥

( अतः ) वह लोग उन्हीं ईमानदारों में से हैं, जिन्होंने ख़ुदा रसूल से ( आज्ञापालन और प्राण निछावर करने का ) जो वादा किया था, उसको ( अक्षर २ ) सच कर दिखाया ( और ) इन ( ही ) में से वह ( भाग्यवान ) लोग भी हैं, जिन्होंने अपना काम पूरा कर दिखाया ( अर्थात ख़ुदा के मार्ग में अपने प्राण निछावर कर दिये ) और उन ( ही ) मे से वह ( भी ) हैं, जो ( ईश्वर के निमित्त प्राण देने के लिये सर्वदा ) बाट जोहते रहते हैं और उन्होंने ( ऐसे कठिन अवसर पर अपने आज्ञा-पालन के सिद्धान्त और सच्चे प्रेम को ) तनिक भी नहीं बदला। ( संक्षेप यह है कि यह परीक्षा का समय था। इसमें सच्चे ईमानदार पूरे उतरे और कच्चे ईमानदारों का कच्चापन और मुनाफ़िक़ों का निफ़ाक़ पूर्ण रूप से प्रगट हो गया। इस परीक्षा से तात्पर्य यह था ) कि अल्लाह सच्चों को उनकी सचाई का ( उत्तम ) फल प्रदान करे और मुनाफ़िक़ों को ( उनके विद्रोह के कारण ) यदि वह (उन पर क्रोध करना ) चाहे, तो अज़ाब में डाल दे-अथवा ( अपनी कृपा से उन्हें तौबा करने की शक्ति प्रदान करे और ) उनकी तौबा को स्वीकार करे। ( इसमें ) सन्देह नहीं कि अल्लाह ( बड़ा ) क्षमा करने वाला ( और ) कृपालु है ॥

और अल्लाह ( ही की शक्ति तथा कृपा का चमत्कार है कि उस ) ने काफ़िरों को उनके क्रोध सहित ( असफल ) फेर दिया। ( इस चढ़ाई से ) उनको कुछ भी लाभ न पहुंचा और अल्लाह ने मुसलमानों की लड़ाई अपने ज़िम्मे लेली और (फ़रिश्तों की सेना और आँधी से उन्हें मार भगाया। उसके लिये उन्हें भगा देना कुछ बड़ी बात नहीं है, क्योंकि ) अल्लाह ( सबसे अधिक ) बलवान ( और सब पर ) प्रबल है ॥

عَزِيزًا ۝ وَأَنزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُم مِّنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ مِن صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي
قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ
فَرِيقًا ۝ وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطَئُوهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ
إِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ
أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝ وَ
إِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ
فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۝
يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ مَن يَأْتِ مِنكُنَّ بِفَاحِشَةٍ
مُّبَيِّنَةٍ يُضَاعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ وَمَن يَقْنُتْ مِنكُنَّ لِلَّهِ وَ

और अह्ले किताब में से जो लोग (यानी यहूदी) मुश्रिकीन के मददगार हुये थे, ख़ुदा उनको उनकी गढ़ियों से नीचे उतार लाया और उनके दिलों में (तुम मुसलमानों की ऐसी) धाक बिठा दी (कि) तुम (बेधड़क) लगे बाज़ को क़त्ल करने और बाज़ को क़ैद करने ० और उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का और (नीज़) उस ज़मीन (ख़ैबर) का, जिसमें तुमने क़दम तक नहीं रक्खा था, तुम (ही) को मालिक कर दिया और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० ऐ पैग़म्बर! अपनी बीबियों से कहदो कि अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसके साज़ व सामान की तलबगार हो, तो आओ-मैं तुम्हें (कुछ) दे दिला कर ख़ुश अस्लूबी से रुख़सत करदूं ० और अगर तुम ख़ुदा और उसके रसूल और आक़िबत के घर की ख़्वाहां हो, तो तुममें से जो नेकोकार हैं, उनके लिये ख़ुदा ने बड़े (बड़े) अज्र तय्यार कर रक्खे हैं ० पैग़म्बर की बीबियो! तुममें से जो कोई किसी खुली हुई ना शायस्ता हर्कत की मुर्तकिब होगी, उसको दोहरी सज़ा दी जाएगी और अल्लाह के नज़्दीक यह (एक) सहल (सी बात) है ० और जो तुममें से अल्लाह और उसके रसूल की फ़र्मांबर्दारी—

(और उनके भगा देने के पश्चात) किताब वालों में से जिन लोगों ने उनकी सहायता की थी (अर्थात बनूक़ुरैज़ा)—अल्ला तआला ने उन्हें उनके (बड़े २) क़िलों से (जिनमें वह सुरक्षित और निश्चिन्त थे) नीचे उतार दिया और उनके दिलों में (ऐसा भय पैदा कर दिया (कि वह विवश हो गये। अब यह दशा है कि) उनमें से एक दल को तुम बध करते हो और एक दल को क़ैद कर हो-(अब भी वह कुछ नहीं कर सकते) और उनको भूमि और उनके घरों और उनके मालों का और ऐसी भूमि का, जहां अभी तक तु गये नहीं, तुमको मालिक बना दिया और (तुमको यह सफलता प्रदान करना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि) ख़ुदा हर वस्तु प शक्ति रखता है ॥

हे पैग़म्बर! (बड़े आश्चर्य की बात है कि यह ग़नीमत का माल—जो तुम्हारे हाथ इन लड़ाइयों में लगा है, तुम्हारी पत्नियां उसकी इच्छा करती हैं—तो तुम) अपनी पत्नियों से कह दो! यदि तुम (ख़ुदा के पैग़म्बर की पत्नी होकर असार तथा क्षणिक) सांसारि जीवन तथा बनाव की इच्छुक हो, तो आओ-मैं तुम्हें (तुम्हारी इच्छानुकूल सांसारिक माल तथा) धन दूं और तुम्हें कुशल-पूर्वक (अप यहां से) विदा करदूं (अर्थात छोड़ दूं) ॥

और यदि तुम ख़ुदा को और उसके रसूल को और परलोक (के पुरस्कार तथा प्रतिफल) को चाहती हो, तो (तुम सांसारि धन दौलत की इच्छा न करो। कष्टों को हंसी ख़ुशी से सहन करो)। निस्सन्देह अल्लाह तआला ने तुममें से नेकी करने वाली स्त्रियों लिये (क़यामत में) बहुत बड़ा फल रक्खा है ॥

हे पैग़म्बर की पत्नियो! (याद रक्खो!!) तुममें से जो (स्त्री) कोई (ऐसी) स्पष्ट ग़लती करेगी, तो उसे दोगुणा दण्ड मिले (इसलिये कि तुम ख़ुदा के पैग़म्बर से सम्बन्ध रखती हो) और (यह दुगना दण्ड देना) अल्लाह तआला के लिये (बहुत) सरल है। औ जो (स्त्री) तुममें से अल्लाह और उसके रसूल की आधीनता करेगी —

رَسُولِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ
وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ● يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ
لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا
تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهٖ
مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ● وَقَرْنَ فِي
بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ
الْأُولٰى وَأَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِينَ الزَّكٰوةَ
وَأَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ ؕ إِنَّمَا يُرِيدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ
عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ●
وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ
وَالْحِكْمَةِ ؕ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ● إِنَّ
الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
وَالْقٰنِتِينَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِينَ وَالصّٰدِقٰتِ

और नेक अमल करेगी, उसको हम उसका अज्र ( भी ) दोहरा देंगे और हमने ( आख़िरत में ) उसके लिये इज़्ज़त की रोज़ी ( भी ) तय्यार कर रक्खी है ० पैग़म्बर की बीबियो ! तुम कुछ आम औरतों की तरह तो हो नहीं-( पस ) अगर तुमको परहेज़गारी मंज़ूर है, तो दबी ज़बान से (किसी के साथ ) बात न किया करो ( कि ऐसा करोगी )—तो जिसके दिल में ( किसी तरह का ) खोट है, वह ( खुदा जाने ) तुमसे ( किस तरह की ) तवक़्क़ुआत पैदा कर लेगा और बात ( भी ) करो ( तो बेलाग लपेट )-जैसा कि पाक साफ़ लोगों का दस्तूर है ० और अपने घरों में जमी (बैठी) रहो ! और अगले ज़माने-जाहिलीयत के(से) बनाव सिंगार दिखाती न फिरो और नमाज़ पढ़ो ! और ज़कात दो ! और अल्लाह और उसके रसूल की फ़र्मां-बर्दारी करो ! ( ऐ पैग़म्बर के ) घर वालो ! खुदा को तो बस यही मन्ज़ूर है कि तुमसे ( हर तरह की ) गन्दिगी को दूर करे और तुमको ऐसा पाक साफ़ बनाये; जैसा पाक साफ़ बनाने का हक़ है ० और तुम्हारे घरों में जो खुदा की आयतें और दानाई की बातें पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती हैं, उनको याद रक्खो-( क्योंकि ) अल्लाह ( सबका ) राज़-दां (और सब के हाल से ) वाक़िफ़ है ० बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें और फ़र्मांबर्दार मर्द और फ़र्मांबर्दार औरतें और रास्तगो मर्द और रास्तगो औरतें—

४

और ( अल्लाह रसूल को प्रसन्न करने के लिये शुद्ध-हृदय और सच्चाई के साथ इस संसार में ) शुभ-कर्म करेगी, तो हम (क़यामत के दिन ) उसको उस ( के हृदय की शुद्धता और सच्ची आधीनता) का ( अन्य स्त्रियों की अपेक्षा ) दोगुणा फल प्रदान करेंगे। और ( इस दोगुने फल के अतिरिक्त) हमने इन (धर्म चारिणी स्त्रियों) के लिये (विशेष रूप से एक) अच्छा भोजन तय्यार कर रक्खा है—(जो स्वर्ग में इनके अरिक्त किसी और को न प्राप्त होगा ) ॥

हे नबी की स्त्रियो ! ( देखो ! ) तुम ( बहुत कुछ सम्मान वाली हो। तुम कदापि) साधारण स्त्रियों की तरह नहीं हो—(अतः )यदि तुम अल्लाह ( के कोप) से भय खाती हो (और तुम्हें अपने आदर सत्कार का ख़याल है, तो अपने स्वभाव और कर्मों को श्रेष्ठ बनाओ—ताकि तुम्हारा सम्मान स्थिर रहे और अन्य स्त्रियां तुम्हारे धर्माचरण का अनुकरण करें। जैसे यदि किसी अन्य पुरुष से बात चीत करने की आवश्यकता आन पड़े ) तो ( इस तरह बात करो, जिस तरह कोई बड़ी बूढ़ी माता अपनी सन्तान से वार्तालाप करती है )–नम्रता से बात न करो कि ( ऐसा करने से न मालूम ) वह ( अभागा ) मनुष्य-जिसके हृदय में ( विषय वासना का ) रोग है ( किस प्रकार की) आशा बाँध ले और ( अपना हो या कोई और—बात जब करो, तो अच्छी तरह सोच समझ कर ) सीधी बात करो-( देखो! कहीं ऐसा न हो कि कोई अनुचित बात तुम्हारे मुख से निकल जाय और तुम्हारी समझ बूझ पर आक्षेप किया जाय ) ॥

और ( अपने ) अपने घरों में रहो और पिछले मूर्खता-काल की स्त्रियों की तरह (सब लोगों को अपना) बनाव (श्रृङ्गार) दिखाती न फिरो। और ( पांचों समय की ) नमाज़ ( सर्वदा नियमानुसार ) पढ़ो ! और ज़कात ( जो तुम पर फ़र्ज़ की गई है, नियमानुसार) अदा करो ! और ( केवल नमाज़ रोज़ा ही में नहीं, बरन् ) अल्लाह और उसके रसूल की ( हर एक बात में ) आधीनता करो । हे ( रसूल के) घर वालो ! अल्लाह तो बस यह चाहता है कि तुमसे ( किसी न किसी तरह पापों की ) अशुद्धता को दूर करदे और तुमको बिलकुल पवित्र ( और स्वच्छ ) बना दे। ( अतः तुमको चाहिये कि अल्लाह के कृतज्ञ बन जाओ ) और तुम्हारे घरों में जो अल्लाह की आयतें और ( ज्ञान व ) बुद्धि की बातें पढ़ी जाती हैं ।उन्हें याद रक्खो ( और पूर्ण रूप से उनका पालन करो। कभी चोरी छिपे भी उनके विरुद्ध न करो )। निस्सन्देह अल्लाह ( प्रत्येक ) गुप्त बात का ( भी ) जानने वाला ( है। और प्रगट बात से भी ) अभिज्ञ है। ( इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि ( विशेषतया रसूल के घर वालों के लिये भी और साधारण रूप से जितने ) मुसलमान ( और सुकर्मी ) पुरुष और मुसलमान ( तथा सुकर्मिणी) स्त्रियां और ईमानदार ( तथा सत्य विचार वाले ) पुरुष और ईमानदार ( व सत्य विचार वाली ) स्त्रियां और आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिनी स्त्रियां और सच्चे ( अर्थात धर्मात्मा ) पुरुष और सच्ची ( भक्ति वाली ) स्त्रियां—

وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ
وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ
وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ
وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ
لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ
وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا
اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝ وَاِذْ
تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ
عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَ
تُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ
وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا
وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और ख़ाकसारी करने वाले मर्द और ख़ाकसारी करने वाली औरतें और ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वली औरतें और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और कसरत से ख़ुदा को याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें—इन ( सब ) के लिये अल्लाह ने ( इनके किये का सिला; यानी ) गुनाहों की माफ़ी तय्यार कर रक्खी है और ( माफ़ी के अलावा बड़े ) बड़े अज्र ० और किसी मुसल्मान मर्द और किसी मुसल्मान औरत को शायाँ नहीं कि जब अल्लाह और उस का रसूल ( उनके बारे में ) कोई बात ठहरा दें, तो ( अपनी राय को दख़्ल दें और ) उस बात में उनका ( अपना ) इख़्तियार ( बाक़ी ) रहे और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़र्मानी करेगा, तो वह सरीह गुमराही में पड़ चुका ० और ( ऐ पैग़म्बर ! उस बात को याद करो कि ) जब तुम उस शख़्स को समझाते थे—(यानी ज़ैद-बिन-हारिसा को)–जिस पर अल्लाह ने ( अपना ) एहसान किया ( कि उसको इस्लाम की तौफ़ीक़ दी ) और तुम भी उस पर एहसान करते रहे–कि अपनी बीबी ( ज़ैनब ) को अपनी ज़ौजियत में रहने दे ! और अल्लाह से डर ! ( और उस को छोड़ नहीं ) और तुम उस ( बात ) को अपने दिल में छिपाते थे, जिस को ( आख़िरकार ) अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और तुम ( इस मामले में ) लोगों से डरते थे और ख़ुदा इसका ज़ियादा हक़दार है कि तुम उस से डरो। फिर जब ज़ैद उस ( औरत ) से बे-तअल्लुक़ी कर चुका ( यानी तलाक़ देदी और इद्दत की मुद्दत पूरी हो गई )–तो हमने तुम्हारे साथ उस ( औरत ) का निकाह कर दिया, ताकि—

---

और ( हर दशा में ) सन्तोष ( व सहन-शक्ति ) से काम लेने वाले और सन्तोष ( व सहन-शक्ति ) से काम लेने वालियाँ और आधीनता करने वाले और आधीनता करने वालियां और दान ( पुण्य ) करने वाले और दान ( पुण्य ) करने वालियां और व्रत रखने वाले और व्रत रखने वालियाँ और ( व्यभिचार से ) अपने आपको सुरक्षित रखने वाले और सुरक्षित रखने वालियां और अधिकता से अल्लाह का स्मरण करने वाले और स्मरण करने वालियां ( हैं )—इन ( सब ) के लिये ( भी ) अल्लाह तआला ने ( इनके अगले पिछले पापों का ) क्षमा ( पत्र ) और ( इनके सत्कर्मों का ) बड़ा फल ( अपने यहां ) तय्यार कर रक्खा है ॥

( अतः मुसल्मानों को चाहिये कि ऐसे भाग्यशाली लोगों की आधीनता करें ) और ( यह बात अच्छी तरह दिल में बिठालें कि ) जब अल्लाह, रसूल ( उनके ) किसी काम का फ़ैसला करदें, तो न ईमानदार पुरुषों को यह उचित है और न ईमानदार स्त्रियों को कि ( वह इस बात की इच्छा करें कि ) उन्हें अपने काम का ( फिर भी कुछ ) अधिकार ( शेष ) रहे। और ( वह इस अधिकार के कारण अल्लाह रसूल की आज्ञा के विरुद्ध करें। मुसल्मानो ! याद रक्खो ! ) जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा, तो वह एक स्पष्ट गुमराही में फंस जायगा ( और अपना लोक परलोक बिगाड़ लेगा ) ॥

और ( हे मुहम्मद ! ) जबकि तुम ( समझाने के लिये ) उस मनुष्य से—( अर्थात ज़ैद-बिन-हारिसा से ) जिस पर अल्लाह ने ( इतनी बड़ी ) कृपा की ( कि उसको इस्लाम-धर्म प्रदान किया ) और जिस पर तुमने ( यह ) उपकार किया ( कि उसको पराधीन से स्वाधीन किया )—कह रहे थे कि अपनी पत्नी को अपने पास रहने दे—( तलाक़ न दे ! ) और अल्लाह से डर ! ( और उसकी ओर से विमुख न हो ! ) और ( तलाक़ हो जाने की दशा में ) तुम अपने जी में वह बात छिपाए हुए थे-( जो सामयिक दशा और दूर-दर्शिता के पूर्णतया अनुकूल थी और ) जिसको कि ( किसी न किसी दिन ) अल्लाह प्रगट ( ही ) करने वाला था ( अर्थात तुम्हारा विचार था कि यदि ज़ैद ज़ैनब को तलाक़ दे देगा ) और ( इद्दत का समय सम्पूर्ण हो जायगा, तो तुम ज़ैनब से विवाह कर लोगे-परन्तु ) तुम ( अपने इस सुविचार के प्रगट करने में ) लोगों ( के ताने कटाक्ष ) से भय खा रहे थे—यद्यपि ( तुम अच्छी तरह जानते हो कि पृथ्वी व आकाशों में ) अल्लाह ( ही सबसे ) अधिक इस योग्य है कि तुम उससे भय खाओ। संक्षिप्त यह कि जब ज़ैद ने ( अपना ) सम्बन्ध उससे ( अर्थात अपनी पत्नी ज़ैनब से ) विच्छेद कर लिया, तो हमने उसको ( अपनी आज्ञा से ) तुम्हारे निकाह में दे दिया, जिससे कि ( तुम्हारा सुविचार संसार में प्रगट हो जाय और आगे को सर्वदा के लिये ) मुसल्मानों पर—

حَرَجٌ فِىٓ أَزْوَاجِ أَدْعِيَآئِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ
وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ ٱللَّهِ مَفْعُولًا ۝ مَا كَانَ عَلَى
ٱلنَّبِىِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ ٱللَّهُ لَهُۥ ۖ سُنَّةَ ٱللَّهِ
فِى ٱلَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ ٱللَّهِ
قَدَرًا مَّقْدُورًا ۝ ٱلَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَٰلَٰتِ
ٱللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُۥ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا ٱللَّهَ ۗ
وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ حَسِيبًا ۝ مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ
أَبَآ أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ
وَخَاتَمَ ٱلنَّبِيِّۦنَ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمًا
يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱذْكُرُوا ٱللَّهَ ذِكْرًا
كَثِيرًا ۝ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ هُوَ
ٱلَّذِى يُصَلِّى عَلَيْكُمْ وَمَلَٰٓئِكَتُهُۥ لِيُخْرِجَكُم
مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ ۚ وَكَانَ بِٱلْمُؤْمِنِينَ

( आम ) मुसलमानों के लेपालक जब अपनी बीबियों से बे तअल्लुक़ हो जाएँ, तो मुसलमानों के लिये उन ( औरतों से निकाह कर लेने ) में ( किसी तरह की ) तंगी न रहे और खुदा का हुक्म तो होकर ही रहता है ० अल्लाह ने पैग़म्बर के लिये जो बात ठहरा दी हो, उस ( के करने ) में पैग़म्बर के लिये कुछ मुज़ायक़ा ( की बात ) नहीं । जो ( पैग़म्बर ) पहिले हो चुके हैं, उनमें ( भी यही ) आदत-इलाही ( रही ) है ( कि उन पर खुदा ने निकाह के बारे में तंगी नहीं की ) और खुदा के ( जितने ) काम ( हैं, एक अम्र ) तक़्दीरी ( हैं, जो रोज़-अज़ल से ) ठहरे हुये हैं ० वह अगले पैग़म्बर इस सिफ़त के थे कि खुदा के पैग़ाम ( लोगों को ) पहुंचाते और ख़ौफ़ खुदा रखते थे और खुदा के सिवा किसी से नहीं डरते थे—( तो ऐ पैग़म्बर ! तुम क्यों डरो ) और हिसाब ( आमाल ) के लिये अल्लाह बस है-( वह सबसे समझ लेगा ) ० ( लोगो ! ) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं-( तो ज़ैद के क्यों हों )—वह तो अल्लाह के रसूल हैं और ( ख़तों की मुहर की तरह सब ) पैग़म्बरों के आख़िर में हैं । और अल्लाह तमाम चीज़ों ( के हाल ) से वाक़िफ़ है ० मुसल्मानो ! कसरत से अल्लाह को याद किया करो ० और सुबह व शाम उसकी तस्बीह ( व तक़्दीस ) करते रहो ० वही है, जो तुम पर दरूद भेजता है और उसके फ़रिश्ते ( भी )-ताकि खुदा तुमको ( कुफ़्र की ) तारीकियों से निकाल कर ( ईमान की ) रोशनी में ले जाये ० और खुदा ईमानवालों ( के हाल ) पर मेहर्बान है ०—

---

अपने लेपालकों की स्त्रियों ( से विवाह कर लेने ) में-जबकि लेपालक उनसे ( अपना ) सम्बन्ध विच्छेद करलें ( अर्थात अपनी पत्नियों को तलाक़ देदें, कोई दोष और ) कुछ कठिनता न हो । और ( इसमें तनिक सन्देह नहीं कि ज़ैनब का तुमसे ब्याहा जाना खुदा की आज्ञा से था और ) अल्लाह की आज्ञा पूर्ण होकर ही रहती है ( चाहे विरोधी उसका कितना ही विरोध करें । इतना समझाने बुझाने के बाद भी यदि अज्ञान लोग हमारे नबी पर ताने और कटाक्ष करें, तो यह उनकी मूर्खता है । निस्सन्देह ) उस ( काम के करने ) में ( हमारे) पैग़म्बर पर कोई दोष नहीं, जिसे अल्लाह ने उनके लिये आवश्यक कर दिया । (निस्सन्देह) अल्लाह का ( यह ) नियम ( आज कोई नवीन नियम प्रचलित नहीं हुआ ) उन ( पैग़म्बरों ) में (भी प्रचलित) था-जो ( हे रसूल ! तुमसे ) पहिले हो चुके । और अल्लाह का ( तो कोई नियम और कोई ) आदेश ( भी नवीन नहीं है । हर नियम और हर आदेश आदि सृष्टि का ) निश्चित किया हुआ है ॥

( और हे रसूल ! ) वह ( प्राचीन पैग़म्बर ) भी ( जिनमें तुमसे पहिले यह प्रथा प्रचलित थी-तुम जैसे ही महात्मा और तुम्हारी ही भाँति ) खुदा के सन्देशों को ( बन्दों तक ) पहुंचाते थे और ( हर दशा में अपने ) खुदा से भय खाते थे और खुदा के अतिरिक्त किसी से भी नहीं डरते थे—( तो हे पैग़म्बर ! तुम भी इस मामले में किसी के ताने-कटाक्ष से भय न खाओ । संसार के लोगों में कोई भी तुम्हारे कर्मों और हिसाब किताब का संरक्षक और उत्तर-दाता नहीं है । स्मरण रक्खो! हिसाब किताब तो केवल अल्लाह के अधिकार में है) और अल्लाह ( अपने समस्त बन्दों का ) हिसाब ( किताब ) करने के लिये ( अकेला ) पर्याप्त है । ( हे अज्ञानो ! हे खुदा के पैग़म्बर पर आक्षेप करने वालो सुनो ! ज़ैद-बिन-हारिसा हो या कोई और मनुष्य ) मुहम्मद तुम लोगों में से किसी के ( भी ) पिता नहीं हैं, वरन् ( वह तो ) खुदा के पैग़म्बर हैं और ( केवल पैग़म्बर ही नहीं, वरन् ) अन्तिम नबी ( और समस्त संसार के लिये कृपा ) हैं—( उनका हर काम खुदा की इच्छानुसार और हर बात खुदा की वही के अनुसार होती है । अतः तुम्हारा उनके किसी काम पर आक्षेप करना-मानो सर्व शक्तिमान अल्लाह पर आक्षेप करना ) और ( अपना लोक परलोक बिगाड़ना है । मूर्खो ! स्मरण रक्खो ! ) अल्लाह हर वस्तु से भली भांति अभिज्ञ है—( उसे अपने पैग़म्बर की हर बात का पूरा पूरा ज्ञान है । यदि ज़ैनब का उनसे ब्याहा जाना उसकी इच्छा के विरुद्ध होता, तो न ज़ैद ज़ैनब को तलाक़ देता और न ज़ैनब उसके पश्चात पैग़म्बर से ब्याही जातीं ) ॥

(अतः) हे ईमानवालो ! (इन व्यर्थ बातों को छोड़ो और अपने) अल्लाह का .खूब स्मरण करो ! और प्रातःकाल तथा सायङ्काल उसकी पवित्रता वर्णन करो । वही है ( दयालु और कृपालु खुदा ) जो तुम पर ( अपनी ) अनुकम्पा अवतीर्ण करता है और उसके फ़रिश्ते भी (तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं) कि खुदा तुमको ( कुफ़्र के) अन्धकारों से निकाल कर (ईमान के) प्रकाश में ले आये ( और नेकी की योग्यता और बहुत बड़ा पुरस्कार प्रदान करे । निस्सन्देह ) अल्लाह ईमान वालों ( सुकर्मियों की दशा ) पर ( अति ) कृपालु है ॥

رَحِيمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَٰمٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ
أَجْرًا كَرِيمًا ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ
شَٰهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى ٱللَّهِ بِإِذْنِهِۦ
وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۝ وَبَشِّرِ ٱلْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم
مِّنَ ٱللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۝ وَلَا تُطِعِ ٱلْكَٰفِرِينَ
وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَدَعْ أَذَىٰهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ
بِٱللَّهِ وَكِيلًا ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نَكَحْتُمُ
ٱلْمُؤْمِنَٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ
فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۖ
فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝ يَٰٓأَيُّهَا
ٱلنَّبِىُّ إِنَّآ أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَٰجَكَ ٱلَّٰتِىٓ ءَاتَيْتَ
أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّآ أَفَآءَ ٱللَّهُ
عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّٰتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ

ع

जिस दिन यह लोग ख़ुदा से मिलेंगे-( उसका ) सलाम इनकी सलामी होगी ० और ख़ुदा ने इनके लिये ( अपने हाँ बड़ी ) इज़्ज़त का अज्र तय्यार कर रक्खा है ० ऐ पैग़म्बर ! हमने तुमको गवाही देने वाला और ( नेकों को ख़ुशनूदिए-ख़ुदा की ) ख़ुशख़बरी देने वाला और ( बदों को उसके ग़ज़ब से डराने वाला० और अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ़ ( लोगों को ) बुलाने वाला और ( हिदायत का ) रोशन—चिराग़ बनाकर भेजा है ० और ईमान वालों को इस ( बात ) की ख़ुशख़बरी सुना दो ! कि उन पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानो और उनकी ईज़ा-दिही की ( कुछ ) पर्वाह न करो ! और ख़ुदा पर भरोसा रक्खो ! और ख़ुदा कारसाज़ बस है० मुसल्मानो ! जब तुम मुसल्मान औरतों को ( अपने ) निकाह में लावो, फिर उनको हाथ लगाने से पहिले तलाक़ दे दो, तो इद्दत ( में बिठाने ) का तुमको उन पर कोई ( हक़ ) नहीं कि लगो इद्दत की ( उनसे ) गिनती पूरी कराने, तो ( ऐसी सूरत में ) उनको कुछ दे दिलाकर ख़ुश-अस्लूबी के साथ रुख़सत करदो ० ऐ पैग़म्बर ! हमने तुम्हारे लिये तुम्हारी बीबियाँ हलाल करदी हैं, जिनके तुमने महर दिये हैं और तुम्हारे हाथ का माल ( यानी लौंडियां ) जो ख़ुदा ने तुमको ( दुशमनों की लड़ाइयों में बतौर ग़नीमत ) दिलवा दी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूपियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामू की बेटियां –

( उसके ) यह ( सौभाग्यवान बन्दे ) जिस दिन उसके सामने उपस्थित होंगे-( तो ) उनका बधावा सलाम होगा ( अर्थात् क़यामत के दिन जब ईमान वाले धर्मात्मा लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे, तो वह ख़ुदा के सन्मुख सलाम का बधावा उपस्थित करेंगे ) और अल्लाह ने बड़ा फल ( अर्थात् सुख व आनन्द का सामान स्वर्ग में ) उनके लिये तय्यार कर रक्खा है। हे पैग़म्बर ! ( यह पद उनको केवल तुम्हारी आधीनता के कारण प्राप्त होगा। निस्सन्देह ) हमने तुमको ( तुम्हारे अनुगामियों के समझाने बुझाने के लिये ) गवाह और ( स्वर्ग का ) मंगल समाचार सुनाने वाला और ( नर्क के कष्ट से ) डराने वाला बनाकर ( संसार में ) भेजा है ॥

और (भूले भटकों को) अल्लाह की आज्ञा से अल्लाह की ओर बुलाने वाला (उपदेशक) और ( कुफ़्र के अन्धकारों को दूर करने के लिये एक ) प्रकाशवान-दीपक (और सत्य मार्ग दिखाने वाली ज्योति बनाकर भेजा है)। और ( आज्ञा कारियों और) ईमान वालों को इस बात का मंगल-समाचार सुनादो ! कि अल्लाह ( के यहां उनकी सच्ची भक्ति और सच्ची आज्ञा पालन स्वीकृत हुई और थोड़े दिन के बाद अर्थात क़यामत के दिन अल्लाह ) की ( बहुत ) बड़ी कृपा उन पर ( होने वाली ) है। और तुम ( इन कुफ़्र तथा द्वेष के गढ़े में गिरने वाले ) काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के कहे में न आओ और उनके ( विरोध और ) कष्ट पहुंचाने को छोड़ो ( अर्थात् परवाह न करो ) और ( अपने ) अल्लाह पर ( पूरा ) भरोसा रक्खो। और ( निश्चय करो कि हर ) काम ( का ) बनाने ( और बिगाड़ने ) वाला अल्लाह ( है, और वह इनको इनके इरादे में असफल करने के लिये ) पर्याप्त है ॥

हे ईमान वालो ! जब तुम ईमान वाली स्त्रियों से विवाह करलो ( और ) फिर ( किसी कारण ) उन्हें हाथ लगाने से पहिले ( ही ) तलाक़ देदो, तो तुम्हारे लिये उन्हें ( फिर ) इद्दत ( में बैठने की ) कुछ ( आवश्यकता ) नहीं-( इस दशा में कहीं तुम ऐसा न कर बैठना ) कि ( यदि तलाक़ हो जाने के उपरान्त वह किसी अन्य-पुरुष से विवाह करना चाहें, तो ) तुम ( उन पर अपना अधिकार जताओ और उनसे इद्दत के दिनों की ) गिनती गिनवाने लगो-( ऐसी दशा में अल्लाह की आज्ञा ) तो ( केवल यह है कि ) तुम उन्हें कुछ लाभ पहुंचाओ ( अर्थात् आधा महर देकर सम्मान ) और सद्व्यवहार के साथ ( अपने घर से ) विदा करदो ( और फिर उनसे कुछ सम्बन्ध न रक्खो। निस्सन्देह सहगमन से पहिले यदि किसी स्त्री को तलाक़ देदी जाय, तो उस पर इद्दत आवश्यक नहीं और तुम पर आवश्यक है कि निश्चित महर में से आधा उसको देदो। और) हे नबी ! हमने तुम्हारे लिये उन स्त्रियों को भी हलाल कर दिया है, जिनके तुम महर अदा कर चुके हो और ( उनके अतिरिक्त ) उन ( दासियों ) को भी-जिनके तुम मालिक हो ( और ) जिन्हें कि अल्लाह ने ग़नीमत ( के माल अर्थात धर्म-युद्ध द्वारा प्राप्त हुआ माल ) में तुमको प्रदान किया है और तुम्हारे चचा की वह पुत्रियां और तुम्हारी फूफी की वह पुत्रियाँ और तुम्हारे मामूं की वह पुत्रियां—

وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِىْ هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَاَةً
مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِىِّ اِنْ اَرَادَ
النَّبِىُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِىْٓ
اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا
يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
تُرْجِىْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِىْٓ اِلَيْكَ مَنْ
تَشَآءُ ۗ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكَ ۗ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا
يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مَا فِىْ قُلُوْبِكُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ
النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ
اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ

और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां, जो तुम्हारे साथ हिजरत करके आई हैं और कोई सी मुसल्मान औरत अगर (मुफ़्त) अपने तईं पैग़म्बर को दे दे (यानी बे-महर निकाह में आना चाहे) बशर्ते कि पैग़म्बर (भी) उसको निकाह में लेना चाहें—(यह बात) ख़ास तुम्हारे ही लिये है-आम के लिए नहीं। हमने जो आम मुसल्मानों पर उनकी बीबियों और उनके हाथ के माल (यानी लौंडियों) का हक़ (महर) ठहरा दिया है, हमको मालूम है-(वह उनको देना होगा। और तुम्हारे साथ यह ख़ास रिआयत) इसलिये (की गई है) कि (बीबियों के बारे में) तुम पर (किसी तरह की) तङ्गी न रहे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० (फिर दूसरी रिआयत यह कि है) अपनी बीबियों में से जिसको चाहो (और जितने दिन चाहो, अपने से) अलग रक्खो और जिसको चाहो (और जब तक चाहो) अपने पास रक्खो और जिनको तुमने (एक वक़्त ख़ास तक) अलग कर दिया था, उनमें से किसी को फिर (अपने पास) बुलवा लो, तो (इसमें भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं। (यह इख़्तियार तुम को) इसलिये (दिया गया है) कि ग़ालिबन तुम्हारी बीबियों की आंखें ठंडी रहेंगी और अज़ुर्दा-ख़ातिर न होंगी और जो (कुछ भी) तुम उनको दे दोगे, उसे लेकर सबकी सब राज़ी रहेंगी और जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है, अल्लाह उसको जानता है और अल्लाह जानने वाला तहम्मुल वाला है ० (ऐ पैग़म्बर! इस वक़्त के) बाद से (दूसरी) औरतें तुमको दुरुस्त नहीं और न यह (दुरुस्त है) कि इनको बदल कर दूसरी बीबियां करलो—गो उनका हुस्न (सूरत) तुमको (कितना ही) अच्छा (क्यों न) लगे, मगर अपने हाथ के माल (यानी लौंडियों का मुज़ायक़ा नहीं)—

---

और तुम्हारी मौसी की वह पुत्रियां, जिन्होंने तुम्हारे साथ स्वदेश त्यागन किया है और कोई ईमान वाली स्त्री यदि (बिना महर ख़ुदा के) पैग़म्बर के लिये अपने आप को (स्वयं) सौंप दे (अर्थात विवाह करने की इच्छा प्रगट करे, तो वह भी उनके लिये हलाल है) इस दशा में कि पैग़म्बर भी उससे विवाह करना चाहें-(परन्तु हे पैग़म्बर! यह बिना महर के विवाह का हो जाना यह बात) केवल तुम्हारे ही लिये है, अन्य मुसल्मानों के लिये नहीं है-(अन्य मुसल्मानों पर तो) उनकी स्त्रियों और उनकी दासियों (के हलाल होने के बारे) में जो (उनका हक़) हमने आवश्यक कर दिया है, हमें उसको (सब) ख़बर है। (हे नबी! इन उपरोक्त स्त्रियों के जाइज़ होने की सूचना हमने इसलिये करदी)-जिससे कि (सब लोग उससे सूचित हो जायँ और उनके बारे में अपनी नादानी और मूर्खता के कारण) तुम पर (ताने, कटाक्ष न करें और तुमको) कुछ कठिनता (और किसी प्रकार का कष्ट) न हो। और (यदि अज्ञानता के कारण किसी के दिल में तुम्हारे विषय में कोई शंका पैदा हो जाय और ज्ञान होजाने के पश्चात् वह दूर हो जाय, तो) अल्लाह (अति) क्षमा करने वाला कृपालु है-(वह उसकी इस भूल को अवश्य क्षमा करेगा)॥

(हे नबी!) इन (स्त्रियों) में से (हर एक पर तुम्हारा पूर्ण अधिकार है)-जिसको चाहो तुम दूर रक्खो (अर्थात उसकी बारी उस को न दो) और जिसको चाहो (और जब तक चाहो) अपने पास जगह दो (अर्थात् बारी दो) और जिनको तुम पृथक कर चुके थे (अर्थात जिनकी ओसरी कुछ समय के लिये तुमने बन्द करदी थी) उनमें से भी तुम जिसको चाहो (प्रसन्नता से ओसरी दे दो—इसमें भी) तुम पर कुछ दोष नहीं॥

(यह सब रिआयतें तुम्हारे ही लिये हैं। तुम्हारी) इस (विशेषता) से (जब तुम्हारी स्त्रियां सूचित होंगी, तो) आशा है कि (तुम्हारी ओर से उनके दिल में यदि कोई बात होगी भी, तो निकल जायगी और तुमसे) उनकी आंखें ठंडी रहेंगी और (ओसरी का ख़्याल करके) क्लेशित न होंगी और जो कुछ भी तुम उन्हें (दे) दोगे, वह सबकी सब उसी से प्रसन्न हो जायंगी। (लोगो! नबी की स्त्रियों के विषय में जो आज्ञायें आवश्यक थीं, हमने वर्णन करदीं। अब तुमको किसी प्रकार के कुविचार) और (कटाक्ष का कुछ अधिकार नहीं। स्मरण रक्खो!) जो कुछ तुम्हारे दिलों में (ख़याल पैदा होता) है, अल्लाह उसको (भी) जानता है। और (जो कुछ तुम करते हो, उससे भी अभिज्ञ है। निस्सन्देह) अल्लाह विज्ञ (भी है और) सहनशील (भी) है-(वह तुम्हारे पापों को देखता है, परन्तु दण्ड देने में शीघ्रता नहीं करता-किन्तु हे नबी! यह ध्यान रहे कि) इन (विद्यमान नौ स्त्रियों) के पश्चात तुम्हारे लिये (और) स्त्रियां जाइज़ नहीं है और न यह (जाइज़ है) कि (और) स्त्रियों से इन्हें बदल लो (अर्थात इन्हें छोड़ दो और इनके बदले औरों से विवाह करलो)-चाहे तुमको उनकी सुन्दरता कितनी ही भली लगे, परन्तु (हां! इन स्त्रियों के अतिरिक्त) जिन (दासियों) के तुम मालिक हो गये हो (वह तुम्हारे लिये हलाल और जाइज़ हैं)—

يمينك وكان الله على كل شيء رقيبا ●
يا أيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبي إلا
أن يؤذن لكم إلى طعام غير ناظرين إناه ولكن
إذا دعيتم فادخلوا فإذا طعمتم فانتشروا
ولا مستأنسين لحديث إن ذلكم كان
يؤذي النبي فيستحيي منكم والله لا يستحيي
من الحق وإذا سألتموهن متاعا فاسألوهن
من وراء حجاب ذلكم أطهر لقلوبكم وقلوبهن
وما كان لكم أن تؤذوا رسول الله ولا أن
تنكحوا أزواجه من بعده أبدا إن ذلكم
كان عند الله عظيما ● إن تبدوا شيئا أو تخفوه
فإن الله كان بكل شيء عليما ● لا جناح
عليهن في آبائهن ولا أبنائهن ولا إخوانهن

ع

और अल्लाह हर चीज़ का निगरान (हाल) है ० मुसल्मानो ,पैग़म्बर के घरों में न जाया करो, मगर यह कि तुमको खाने के लिये (आने की) इजाज़त दी जाय-(तो इस सूरत में ऐसा वक़् ताक कर जावो) कि तुमको खाने के तय्यार होने का इन्तिज़ार न करना पड़े-मगर जब तुमको बुलाया जाए, तो ऐन वक़्त पर जावो और जब खा चुको, तो आप आपको चल दो और बातों में न लग जावो, इससे पैग़म्बर को ईज़ा होती थी और वह तुम्हारा लिहाज़ करते थे और अल्लाह तो हक़ (बात के कहने) में किसी का कुछ लिहाज़ करता नहीं। और जब पैग़म्बर की बीबियों से तुम्हें कोई चीज़ माँगनी हो, तो परदे के बाहर (खड़े रह कर) उनसे माँगो। इससे तुम्हारे दिल उनकी तरफ़ से खूब पाक (साफ़) रहेंगे और इसी तरह उनके दिल (भी) और तुमको (किसी तरह) शायां नहीं कि रसूले-खुदा को ईज़ा दो और न यह (बात शायां है) कि उनके बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो। खुदा के नज़दीक यह बड़ी (बेजा) बात है ० तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसको छिपावो, अल्लाह (को) तो (दोनों बातें बराबर हैं, क्योंकि वह) सब चीज़ों से वाक़िफ़ है ० पैग़म्बर की बीबियों पर अपने बापों (के सामने होने) में कुछ गुनाह नहीं और न अपने बेटों के और न अपने भाइयों के—

(निस्सन्देह) अल्लाह (के प्रत्येक आदेश में कोई न कोई हिकमत है। वह) हर वस्तु का (पूरा पूरा) निगहबान है। हे ईमान वालो! पैग़म्बर के घरों में न जाया करो, परन्तु जिस समय तुमको भोजन के लिये निमन्त्रण दिया जाय (तो ठीक ऐसे समय पर जाया करो) कि (भोजन तय्यार हो गया हो। और वहां पहुंच कर) तुमको भोजन तय्यार होने की प्रतीक्षा न करनी पड़े (और यह भी याद रक्खो कि किसी के यहाँ बिन बुलाये जाना अच्छा नहीं होता)—परन्तु जब तुम्हें बुलाया जाय (तो जाओ और पर्दा हो चुके और तुम्हें भीतर आने की आज्ञा मिल जाय) तो (घर के भीतर) प्रवेश करो (और भोजन करो) फिर भोजन कर चुको, तो (वहां से) चले जाओ और (वहां बैठे) बैठे इधर उधर की बातें न बनाओ। निस्सन्देह तुम्हारा यह चलन पैग़म्बर को (बहुत) कष्ट देता है-किन्तु तुमसे (घर से चले जाने को कहने में) उन्हें लज्जा आती है और अल्लाह (तो) सत्य (बात कहने) में (किसी से) लज्जा नहीं करता ॥

और (मुसल्मानो!) जब पैग़म्बर की स्त्रियों से तुम कोई आवश्यकीय वस्तु मांगो, तो (घर के भीतर न चले जाओ)-पर्दे के पीछे से मांगो। (निस्सन्देह) यह (पर्दे की प्रथा) तुम्हारे और उनके दिलों को बहुत पवित्र करने वाली (और स्वभाव के सुधार के लिये बहुत अच्छा उपाय) है। और (देखो!) यह बात तुमको (कदापि) उचित नहीं कि तुम (अपनी किसी बात से) अल्लाह के रसूल को कष्ट पहुंचाओ और न यह (बात उचित है) कि तुम उनकी स्त्रियों से उनके पश्चात कभी विवाह करो। निस्सन्देह अल्लाह के निकट यह महा पाप है ॥

(और मुसल्मानो! इस भूल में न रहना कि तुम्हारी कोई बात अल्लाह से गुप्त रह सकती है)—यदि तुम किसी वस्तु को प्रगट करो तो—(और) गुप्त रक्खो तो—(अल्लाह के आगे सब बराबर है)। निस्सन्देह अल्लाह तआला हर (खुली ढकी) वस्तु को जानता है। (जिस पर्दे की अभी आज्ञा हुई है, उसकी व्याख्या यह है कि) स्त्रियों पर अपने पिताओं (के सामने होने) में कोई दोष नहीं है और न अपने पुत्रों (के सम्मुख होने) में, और न अपने भाइयों (के सम्मुख होने) में—

وَلَآ أَبْنَآءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا
نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ وَاتَّقِينَ
اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا إِنَّ اللّٰهَ
وَمَلَآئِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَآأَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا إِنَّ الَّذِينَ
يُؤْذُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا وَالَّذِينَ
يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا
فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا يَآأَيُّهَا النَّبِيُّ
قُل لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِينَ
يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَابِيبِهِنَّ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ
أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا
رَّحِيمًا لَّئِن لَّمْ يَنتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي

और न अपने भतीजों के और न अपने भान्जों के और न अपनी (क़िस्म की) औरतों के और न हाथ के माल (यानी लौंडियों के सामने होने में उन पर कुछ गुनाह है) और (ऐ पैग़म्बर की बीबियो! ग़ैरों के सामने होने में) अल्लाह से डरती रहो। बेशक अल्लाह हर चीज़ का शाहिद-हाल है ० अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर पर दरूद भेजते रहते हैं-(तो) मुसल्मानो! (तुम भी) पैग़म्बर पर दरूद और सलाम भेजते रहो ० जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को (किसी तरह की) ईज़ा देते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत (दोनों) में ख़ुदा की फिटकार है और ख़ुदा ने उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब तय्यार कर रक्खा है ० और जो लोग मुसल्मान मरदों और मुसल्मान औरतों को बे इसके कि उन्होंने क़ुसूर किया हो-(नाहक़ की तोहमत लगाकर) ईज़ा देते हैं, तो (वह झूट) तूफ़ान और सरीह गुनाह का बोझ (अपनी गर्दन पर) लेते हैं ० ऐ पैग़म्बर! अपनी बीबियों और अपनी बेटियों और मुसल्मानों की औरतों से कहदो! कि अपनी चादरों के घूंगट निकाल लिया करें। इससे ग़ालिबन यह (अलग) पहिचान पड़ेंगी (कि नेक-बख़्त हैं) और कोई छेड़ेगा नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० मुनाफ़िक़ और वह लोग जिनकी नीयतें बद हैं—

---

और न अपने भतीजों (के सन्मुख होने) में, और न अपने भान्जों (के सन्मुख होने) में, और न अपनी (जैसी) स्त्रियों (के सन्मुख होने) में, और न अपनी दासियों (के सन्मुख होने) में। (स्त्रियो! यदि तुम सच्ची मुसलमान हो, तो ख़ुदा की इस आज्ञा पर चलो) और अल्लाह से डरो (और कभी भूले से भी बेपर्दा होने का विचार न करो)। निस्सन्देह अल्लाह हर (खुली ढकी) वस्तु से (भली भाँति) अभिज्ञ है। (याद रक्खो! क़यामत के भयंकर दिन में मोक्ष प्राप्त करने के लिये हर मनुष्य के लिये चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री-आवश्यक है कि वह अपने ख़ुदा को पहिचाने और उसकी आज्ञा पालन करे। और उसके नबी से प्रेम करे)। निस्सन्देह अल्लाह (भी) अपने नबी से प्रेम रखता है और उसके फ़रिश्ते भी और अल्लाह (भी) नबी पर (दुरूद सलाम भेजता है) और उसके फ़रिश्ते भी दुरूद (सलाम) भेजते हैं। मुसलमानो! तुम भी उन पर अधिकता से दुरूद सलाम भेजो॥

(निस्सन्देह) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट पहुंचाते (और उनकी आज्ञा के विरुद्ध करते) हैं, तो अल्लाह तआला लोक परलोक (दोनों) में उन पर लानत करता है। और उसने उनके लिये (अपने यहां एक) अपमानित करने वाला अज़ाब तय्यार कर रक्खा है। और जो लोग ईमान वाले पुरुषों और स्त्रियों को बिना कुछ (बुराई) किए (अर्थात व्यर्थ) कष्ट पहुंचाते (और उन्हें असत्य-पूजक बताने) हैं, तो (वास्तव में) उन्होंने (उन पर बहुत बड़ा) दोष (लगाया) और (एक) स्पष्ट पाप का बोझ (अपने सिर पर) उठाया॥

हे पैग़म्बर! (तुमसे जहां तक बन पड़े इनकी बुराई से बचो और मुसलमानों को भी बचाओ। और) अपनी स्त्रियों से और अपनी पुत्रियों से और (अन्य) ईमान वाली स्त्रियों से कहो! कि अपनी चादरें (घूंघट की रीति पर अपने सिर से कुछ नीचे) डाल लिया करें-(जिससे कि उनका मुंह और शरीर ढक जाय)। इससे आशा है कि (सभ्य और पर्दा वाली स्त्रियां) तुरन्त पहिचान ली जायं × (और) फिर उन्हें कोई न सताये (और यदि ग़लती से आज्ञा विरुद्ध हो जाय, तो) अल्लाह (अति) क्षमा करने वाला करुणाकारी है—(वह इस भूल चूक और बिना इरादे की ग़लती को क्षमा कर देगा। हे पैग़म्बर!) यदि (यह अभागे) मुनाफ़िक़ (अपनी धूर्तता न छोड़ेंगे) और वह लोग—

× टीका—दासियां घरों के बाहर आतीं, तो लोग उनसे हंसी करते। इस कारण स्वतन्त्र स्त्रियों को आज्ञा दी गई कि वह घूंघट निकाल लिया करें, जिससे कि स्वतन्त्र और दासी स्त्रियों में पहिचान हो जाय:—हसन निज़ामी॥

قلوبهم مرض والمرجفون في المدينة لنغرينك
بهم ثم لا يجاورونك فيها إلا قليلا ۝ ملعونين
أينما ثقفوا أخذوا وقتلوا تقتيلا ۝ سنة
الله في الذين خلوا من قبل ولن تجد لسنة
الله تبديلا ۝ يسئلك الناس عن الساعة
قل إنما علمها عند الله وما يدريك لعل
الساعة تكون قريبا ۝ إن الله لعن الكافرين
وأعد لهم سعيرا ۝ خالدين فيها أبدا لا يجدون
وليا ولا نصيرا ۝ يوم تقلب وجوههم
في النار يقولون يا ليتنا أطعنا الله وأطعنا
الرسولا ۝ وقالوا ربنا إنا أطعنا سادتنا و
كبراءنا فأضلونا السبيلا ۝ ربنا آتهم
ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا ۝

और जो लोग मदीने में ( भूटी भूटी ) अफ़वाहें फैलाया करते हैं, अगर ( अपनी हरकात से ) बाज़ न आयेंगे, तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) हम तुम ( ही ) को ( एक न एक दिन ) उन पर उकसा देंगे। फिर ( यह लोग ) मदीने में तो तुम्हारे पड़ोस में ठहरने पायेंगे नहीं, मगर चन्द रोज़ (आरज़ी तौर पर ) ० ( फिर ) इनका यह हाल होगा कि ( हर तरफ़ से ) फिटकारे हुये जहां मिले पकड़ा और मार के टुकड़े उड़ा दिये ० जो लोग पहिले हो गुज़रे हैं, उनमें ( भी ) खुदा का ( यही ) दस्तूर रहा है और ऐ पैग़म्बर ! तुम खुदा के दस्तूर में हरगिज़ ( किसी तरह का ) रद्द व बदल न पावोगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) लोग तुमसे क़यामत का हाल दर्याफ़्त करते हैं, तुम ( इनसे ) कहो कि क़यामत की ख़बर तो बस अल्लाह ही के पास है और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या जानो, शायद क़यामत क़रीब ही आ लगी हो ० बेशक अल्लाह ने काफ़िरों को फिटकार दिया है और उनके लिये दहकती हुई आग तय्यार कर रक्खी है ० उसमें सदा को ( और हमेशा ) हमेशा रहेंगे ( और ) न ( किसी को अपना ) हिमायती ( ही ) पायेंगे और न मददगार ० ( यह वह दिन होगा )-जबकि इनके मुंह (सीख़ के कबाब की तरह दोज़ख़ की) आग में उलट पुलट किए जाएँगे और ( अफ़सोस के तौर पर ) कहेंगे कि ऐ काश ! हमने ( दुनिया में ) अल्लाह का कहा माना होता और ( ऐ काश ! ) हमने रसूल का कहा माना होता ० और ( यह भी ) कहेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमने अपने सर्दारों और अपने बड़ों का कहना माना और उन्हों ( ही ) ने हम को गुमराह ( भी ) किया ० तो ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! उनको दोहरा अज़ाब दे और उन पर बड़ी ( से बड़ी ) लानत कर ०—

---

जिनके दिलों में ( कुविचार का ) रोग है ( अपनी अज्ञानता का इलाज न करेंगे ) और ( इस्लाम और मुसल्मानों के सम्बन्ध में ) नगर में अशुभ समाचार फैलाने वाले ( अपनी असभ्यता-पूर्ण बातें ) न छोड़ेंगे, तो हम तुम्हें उन पर विजय ( और शासन-अधिकार ) दिला देंगे। फिर ( यह नगर में अधिक दिन नहीं रह सकते )-बहुत ही थोड़े दिन तुम्हारे साथ वहां रहेंगे ( वहां से जल्दी भाग जायंगे ) ( परन्तु यह ) लानत के मारे ( संसार में कहीं भी चैन न पावेंगे )-जिस स्थान पर पाए जायंगे, पकड़े जायंगे और मार मार कर ( इनके ) टुकड़े कर दिये जायंगे ॥

और ( यह बर्ताव कुछ इनही दुराचारियों और मुनाफ़िक़ों के साथ निर्दिष्ट नहीं है, बरन ) जो लोग ( इनसे ) पहिले हो चुके हैं उनके साथ भी ख़ुदा का यही बर्ताव था। और ( हे रसूल ! ) ख़ुदा के ( नियत किये हुये ) नियम में तो तुम किसी समय भी ( कोई ) परिवर्तन न पाओगे। ( हे पैग़म्बर ! यह अवगुणी ) लोग तुमसे क़यामत के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं ( और तुम्हारी परीक्षा करनी चाहते हैं-तो ) तुम कहदो ! क़यामत का ज्ञान ख़ुदा के अतिरिक्त किसी को नहीं है। और तुम्हें क्या मालूम ( कि क़यामत कब आयेगी अति ) सम्भव है कि क़यामत ( बहुत ) समीप ही आ लगी हो ॥

निस्सन्देह अल्लाह तआला ने काफ़िरों पर लानत की है। और उनके लिये नर्क (को भड़कती हुई अग्नि ) तय्यार कर रक्खी है ( वह) उसमें सर्वदा २ ( पड़े जलते ) रहेंगे। ( और इस दशा में ) वह किसी को न ( अपना ) मित्र पाएंगे और न सहायक। ( और ) जिस दिन उनके मुंह नर्क ( कुण्ड की अग्नि ) में उलटे पुलटे जाएंगे-( तो उन्हें अपनी उद्दण्डता अच्छी तरह मालूम हो जायगी। और निराशा के साथ) कहेंगे-हा शोक ! हम अल्लाह और रसूल की आज्ञा पालन करते ( और इस दुख सहने के बदले स्वर्ग में जाते ) और कहेंगे-हे पालन कर्त्ता ! हमने अपने नेताओं और अपने पूर्वजों की आधीनता की, तो ( वह तो पथ-भ्रष्ट थे ही )-हमें भी मार्ग से भटका दिया। (अतः) हे हमारे पालनहारे ! उन्हें ( हमसे) दोगुणा अज़ाब दे। और उन पर बहुत ( ज़्यादा ) लानत कर ॥

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا
مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَ
جِيْهًا ○ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا
سَدِيْدًا ○ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوْبَكُمْ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا
عَظِيْمًا ○ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا
وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ اِنَّهٗ كَانَ
ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ○ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ
الْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ
اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

سورة السبا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मुसल्मानो ! उन लोगों जैसे न बनो, जिन्होंने मूसा को ( नाहक़, नारवा मुत्तहम करके ) ईज़ा दी, तो अल्लाह ने उनकी तोहमतों से मूसा की बराअत ( साबित ) की और अल्लाह के नज़्दीक ( मूसा बड़े ) आबरू-दार ( पैग़म्बर ) थे ० मुसल्मानो ! अल्लाह से डरते रहो और बात (भी) कहो-( तो राह की और ) सीधी ( सच्ची ) ० ( ऐसा करोगे ) तो (ख़ुदा) तुमको आमाल-सालेह की तौफ़ीक़ देगा और तुम्हारे गुनाह (भी) बख़्श देगा और जिसने अल्लाह और उसके रसूल का कहा माना, तो उसने बड़ी कामयाबी हासिल की ० हमने ज़िम्मेदारी को ( जो इन्सान पर है ) आस्मानों ( पर ) और ज़मीन और पहाड़ों पर पेश किया ( और यह बोझ उन पर लादना चाहा)-तो उन्होंने (ब-ज़बाने-हाल) उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गये और आदमी ने ( गोया इरादतन बे-तअम्मुल ) उसको उठा लिया । इसमें शक नहीं कि वह ( अपने हक़ में ) बड़ा ही ज़ालिम ( था और ज़ालिम होने के अलावा ) बड़ा ही नादान ( भी ) था ० ( और उठाया, तो उसका ज़रूरी अन्जाम यह होना ही था ) कि अल्लाह मुनाफ़िक़ मरदों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मरदों और मुश्रिक औरतों को (उनके किये की) सज़ा दे और मुसल्मान मरदों और मुसल्मान औरतों पर ( अपनी ) मेहर करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ०

## सूरत—सबा

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ५४ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ०

---

ईमानवालो ! ( इनके अशुभ परिणाम को देखो और शिक्षा ग्रहण करो । देखो कहीं ) उन लोगों के समान न बन जाना, जिन्होंने ( हमारे पैग़म्बर ) मूसा को ( निज-भ्रात हारून का बधिक और उनके शरीर को अवगुणी ख़्याल किया । और नाना प्रकार के दोष लगाकर उन्हें ) कष्ट पहुंचाया ( और सच पूछो ) तो ( उन्होंने अपनी उद्दण्डता से मूसा का तो कुछ नहीं बिगाड़ा, परन्तु अपना परलोक बिगाड़ लिया )-मूसा को तो अल्लाह ने उन ( बातों ) से, जो वह ( उनके विषय में ) कहते थे-( बिल्कुल ) पवित्र ( और निर्दोष ) कर दिया। और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) मूसा अल्लाह के समीप माननीय थे ( और यह उन्हें कलंकित करने वाले मान-रहित ) ॥

( अतः ) हे ईमान वालो ! ख़ुदा से भय खाओ। और पक्की बात कहो-( कच्ची बात कभी मुंह से न निकालो )-जिससे कि अल्लाह तआला तुम्हारे कर्मों का सुधार करदे—( तुम्हारी स्वाभाविक दशा को श्रेष्ठ करदे ) और तुम्हारे पापों को क्षमा करदे। और ( स्मरण रक्खो ! लोक परलोक में अल्लाह रसूल की आधीनता के अतिरिक्त कोई वस्तु काम आने वाली नहीं। निस्सन्देह ) जिसने अल्लाह की और उसके रसूल की आधीनता की, वह बहुत बड़ी सफलता को प्राप्त हुआ। हमने ( एक ) अमानत (अर्थात धरोहर) को आकाशों के और पृथ्वी के और पर्वतों के सन्मुख उपस्थित किया, तो सभों ने उसके उठाने से अस्वीकार कर दिया। और उस (के भार) से डर गये और मनुष्य ने उसको ( अपने शिर पर ) उठा लिया । निस्सन्देह मनुष्य ( अपने विषय में ) बड़ा ही अत्याचारी ( और ) भोला भाला है ॥

( मनुष्य न समझा कि उसका अन्तिम फल यही है ) कि अल्लाह तआला ( क़यामत के दिन ) मुनाफ़िक़ मर्दों और स्त्रियों को ( जिनके बाहर कुछ है और भीतर कुछ है ) और मुश्रिक स्त्रियों और पुरुषों को ( जो निडर होकर ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं की पूजा करते हैं और अमानत में ख़ियानत करने के कारण ) अज़ाब ( ग्रस्त ) करे। और ईमान वाले पुरुषों और स्त्रियों पर ( कृपा दृष्टि और क्षमा के साथ ) ध्यान दे। और ( इसमें तनिक सन्देह नहीं कि ) अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है ( वह क़यामत के दिन ईमान वालों और अमानत में ख़यानत न करने वालों पर अवश्य कृपा दृष्टि रक्खेगा )॥

## सूरत—सबा

मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ५४ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥

( दुनिया में भी ) तमाम तारीफ़ उसी अल्लाह ही को ( सज़ावार ) है कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है—( सब ) उसी का है और आख़िरत में ( भी ) उसी की तारीफ़ है और वही हिक्मत वाला ( और ) बा-ख़बर है ० जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता-( मसलन बीज ) और जो कुछ उससे निकलता है—( मसलन नबातात ) और जो कुछ आस्मान से उतर्ता-( मसलन पानी ) और जो कुछ उसमें चढ़ कर जाता है-( मसलन बुख़ारात ) वह ( सब कुछ ) जानता है और वही मेहर्बान ( और ) बख़्शने वाला है ० और मुन्किर कहते हैं कि हमको तो क़यामत ( पेश ) आनी नहीं-( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो हाँ हां मुझको अपने ( उसी ) पर्वर्दिगार की क़सम है, जो आलिमुल-ग़ैब है (और) ज़र्रा भर ( चीज़ भी ) आस्मानों और ज़मीन में उससे पोशीदा नहीं और ज़र्रे से छोटी और ज़र्रे से बड़ी जितनी चीजें हैं, सब ( उसके हाँ ) किताब-वाज़ेह ( यानी लौह-महफ़ूज़ ) में ( साफ़ साफ़ लिक्खी हुई मौजूद) हैं ० (ग़रज़ मुझको अपने पर्वर्दिगार की क़सम है कि ) क़यामत तो ज़रूर तुमको पेश आकर रहेगी, ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये-( ख़ुदा ) उनको ( उनके किये का ) बदला दे। यही वह लोग हैं, जिनके लिये ( आख़िरत में गुनाहों की ) मग़फ़िरत और ( बहिश्त में ) इज़्ज़त की रोज़ी है ० और जो लोग हमारी आयतों (के तोड़) में मुख़ासिमाना कोशिश करते रहे, यही हैं-जिनको (क़यामत में) अज़ाब-दर्दनाक की सज़ा ( होनी ) है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) जिन लोगों को ( कुतुबे-आस्मानी का ) इल्म दिया गया है ( और वह मुन्सिफ़-मिज़ाज भी हैं, वह तो ) इस ( कुर्आन ) को-जो तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है-( ऐसा ही ) समझते हैं कि यह बरहक़ है—

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى لَهُۥ مَا فِى ٱلسَّمٰوٰتِ وَمَا فِى
ٱلْأَرْضِ وَلَهُ ٱلْحَمْدُ فِى ٱلْاٰخِرَةِ وَهُوَ ٱلْحَكِيمُ
ٱلْخَبِيرُ ○ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ
مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا
وَهُوَ ٱلرَّحِيمُ ٱلْغَفُورُ ○ وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا
لَا تَأْتِينَا ٱلسَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّى لَتَأْتِيَنَّكُمْ عٰلِمِ
ٱلْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِى ٱلسَّمٰوٰتِ
وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ وَلَآ أَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرُ
إِلَّا فِى كِتٰبٍ مُّبِينٍ ○ لِّيَجْزِىَ ٱلَّذِينَ اٰمَنُوا
وَعَمِلُوا ٱلصّٰلِحٰتِ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ○ وَٱلَّذِينَ سَعَوْ فِىٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِينَ أُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ أَلِيمٌ ○ وَيَرَى ٱلَّذِينَ أُوتُوا
ٱلْعِلْمَ ٱلَّذِىٓ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ ٱلْحَقَّ

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ( ही ) के लिये ( उचित ) है-( उस अल्लाह के लिये ) कि जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है (सब) उसी का ( उत्पन्न किया हुआ ) है । ( और जिस प्रकार वह संसार में प्रशंसनीय तथा बखान करने योग्य है, उसी प्रकार ) परलोक में ( भी सर्व ) प्रशंसा ( तथा स्तुति ) उसी के योग्य है। और वह ( बड़ी ) हिकमत वाला ( है। उसका कोई कार्य हिकमत से ख़ाली नहीं। हर बात से ) अभिज्ञ है। ( कोई बात उससे छिपी नहीं। ख़ज़ाने, कोष, वर्षा और नाना प्रकार के बीजों में से ) जो कुछ पृथ्वी के भीतर जाता है, और ( रत्न, स्वर्ण, लोहा, बनस्पति आदि में से ) जो कुछ पृथ्वी में से बाहर निकलता है, और ( जीविका, ख़ुदा की कृपा, फ़रिश्ते, वृष्टि आदि में से ) जो कुछ आकाश से उतरता है, और ( कर्म, कार्य, जीवात्माएँ, प्रार्थनाएँ, और पृथ्वी की वाष्पादि में से ) जो कुछ आकाश पर चढ़ता है, वह ( सब अल्लाह ) जानता है। और वही क्षमा करने वाला कृपालु है। ( यदि वह कृपा तथा वृष्टि न करे, तो कृषि का अभाव हो जाय और संसार छिन्न भिन्न हो जाय )॥

( किन्तु हे पैग़म्बर ! शोक ) और ( आश्चर्य की बात है कि फिर भी यह ) काफ़िर ( उसकी ईश्वरीयता को नहीं मानते और मूर्ति पूजन किये जाते हैं। और तुमसे ) कहते हैं कि हमारे पास क़यामत नहीं आवेगी। तुम ( इनसे ) कहदो ! (तुम्हारा विचार सत्य) नहीं। मैं अपने पालनहारे अदृष्ट-ज्ञानी की सौगन्ध खाता हूं ( और तुम्हें बताता हूं कि तुम्हारा विचार बिलकुल असत्य है )। क़यामत (की घड़ी) तुम्हारे पास अवश्य २ आवेगी। ( मेरा पालन कर्त्ता अदृष्ट का ज्ञानी है कि ) उस ( की दृष्टि ) से एक परिमाणु के तुल्य ( वस्तु ) भी गुप्त नहीं- न आकाशों में और न पृथ्वी में। और न कोई पदार्थ परिमाणु से छोटा ( पृथ्वी तथा आकाश में ऐसा ) है और न बड़ा ( कि ) जो वर्णन करने वाली पुस्तक ( अर्थात लौह-महफ़ूज़ ) में ( लिखा ) नहीं। ( उसके यहां संसार के समस्त पदार्थ अंकित हैं )॥

( और किसी व्यक्ति का कोई कर्म ऐसा नहीं, जो उसके यहां लिखा न हो )-इससे अभिप्राय यह है कि जो लोग ईमान लाए और ( जिन्होंने ) शुभ कर्म किये, ख़ुदा उन्हें पुरस्कार प्रदान करे। ( निस्सन्देह ) ऐसे ही लोगों के लिये ( तो परलोक में ) क्षमा और ( जन्नत में ) सम्मान की जीविका है। और जिन लोगों ने हमारी आयतों ( के सम्बन्ध ) में ( हमसे मुक़ाबला करने का इरादा किया और अपने विचार में हमें ) हराने का उद्योग किया ( तो क़यामत में ) उनके लिये ( जो आपत्ति है, उसका अन्त नहीं। उनके लिये ) बड़ा दुखदायी अज़ाब ( तय्यार ) है-( जो उन्हें किसी समय चैन न लेने देगा )। और ( हे रसूल ! ) जिन्हें ( आकाशीय पुस्तकों का ) ज्ञान दिया गया है ( और जो सत्य-पूजक और न्यायी हैं )-वह ( भली भांति ) जानते हैं कि ( क़यामत अवश्य आवेगी और क़यामत न मानने वालों की क़यामत के दिन अधम दशा होगी और यह क़ुर्आन ) जो तुम्हारे पालनहारे की ओर से तुम्हारे पास उतारा गया है, वह सत्य है—

وَيَهْدِىٓ إِلَىٰ صِرَاطِ ٱلْعَزِيزِ ٱلْحَمِيدِ ۝ وَقَالَ
ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ
إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِى خَلْقٍ جَدِيدٍ
أَفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا أَم بِهِۦ جِنَّةٌۢ ۗ بَلِ ٱلَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْءَاخِرَةِ فِى ٱلْعَذَابِ وَٱلضَّلَٰلِ
ٱلْبَعِيدِ ۝ أَفَلَمْ يَرَوْا۟ إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُم
مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۚ إِن نَّشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ
ٱلْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ ۚ
إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝ وَلَقَدْ
ءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَٰجِبَالُ أَوِّبِى مَعَهُۥ
وَٱلطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ ٱلْحَدِيدَ ۝ أَنِ ٱعْمَلْ سَٰبِغَٰتٍ
وَقَدِّرْ فِى ٱلسَّرْدِ ۖ وَٱعْمَلُوا۟ صَٰلِحًا ۖ إِنِّى بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ۝ وَلِسُلَيْمَٰنَ ٱلرِّيحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا

और उस ( ख़ुदा ) का रास्ता दिखाता है, जो ग़ालिब (और) सज़ावार-हम्द ( व सना ) है ० और जो लोग मुन्किर हैं, वह ( एक दूसरे से तुम्हारी हँसी उड़ाने के लिये ) कहते हैं कि कहो तो हम तुमको ऐसा आदमी बतायें, जो तुमको ( इस अजीब बात की ) ख़बर देगा कि जब तुम ( मरे पीछे ) सर्तापा रेज़ा-रेज़ा हो जावोगे, तो ( एक बार ) ज़रूर तुमको नये जनम में आना होगा ० मालूम नहीं ! इस शख़्स ने ख़ुदा पर झूट (बोहतान) बाँधा है, या इसको किसी तरह का जुनून है। ( सो न तो बोहतान बाँधा है, न जुनून है )—बल्कि जो लोग आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते-( कमबख़्ती की ) मुसीबत और परले दर्जे की गुमराही में (मुब्तला) हैं ० तो क्या इन लोगों ने आस्मान और ज़मीन की तरफ़ जो ( इनको ) इनके आगे और इनके पीछे ( यानी सब तरफ़ से घेरे हुये ) हैं, नज़र नहीं की, कि हम चाहें, तो इनको ज़मीन में धंसा दें या इन पर आस्मान के टुकड़े गिरादें। हर एक बन्दा जो ( ख़ुदा की तरफ़ ) रुजू रखता है, उस के लिये तो इसमें ( बड़ी ) इब्रत है ० और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से ( कई क़िस्म की ) बर्तरी दी थी-( चुनांचे हमने पहाड़ों को हुक्म दिया कि) पहाड़ो ! तस्बीह व तिलावत में दाऊद के साथ उनके जवाबी बनो और ऐसा ही हुक्म परिन्दों को भी दिया और ( इसके अलावा ) दाऊद के लिये हमने लोहे को ( भी ) मुलायम कर दिया था ० कि ( इसकी अच्छी पूरी ) पूरी ज़िरहें बनावो और ( कड़ियों के ) जोड़ने में अन्दाज़ए ( मुनासिब ) का ख़याल रक्खो और ( दाऊद के ख़ान्दान के लोगो ! इन नेअ्मतों के शुक्रिए में ) नेक अमल करो ( और ) जो कुछ ( भी ) तुम कर रहे हो, हम देख रहे हैं ० और ( इसी तरह ) हवा को सुलैमान का ताबे कर दिया था कि उसकी सुबह की मन्ज़िल एक महीने भर की (राह) होती और ( इसी तरह ) उसकी शाम की मन्ज़िल महीने भर की ( राह होती )—

और (अपार ) गुण वाले ( और ) बलवान ( शक्तिशाली ) अल्लाह की ओर मार्ग दिखाता है । और ( हे रसूल ! ) जो बेईमान ( तथा अज्ञान ) हैं, वह ( तुम्हारा और तुम्हारी सब बातों की हँसी उड़ाते हैं। और परस्पर एक दूसरे से ) कहते हैं कि ( भाइयो ! ) क्या हम तुम्हें एक ऐसा मनुष्य दिखायें, जो तुमको यह सूचना दे कि जब ( मरने के बाद तुम्हारा शरीर गल सड़ कर छिन्न भिन्न हो जायगा और ) तुम बिल्कुल टुकड़े २ हो जाओगे, तो तुम ( दुबारा ) नया जन्म पाओगे ( और अपने किये का फल भोगोगे। न मालूम ) इस मनुष्य ने ख़ुदा पर झूठा दोष लगाया है-अथवा इसे उन्माद हो गया है । ( इनसे कहदो ! पैग़म्बर न ख़ुदा पर झूठ दोष लगाता है और न वह उन्मत्त होता है )-बरन ( सत्यवादी होता है। स्मरण रक्खो ! ) जो लोग ( ख़ुदा तथा ) परलोक को नहीं मानते, वह ( परिणाम की दृष्टि से बड़ी आपत्ति और ) अज़ाब में और बहुत बड़ी पथ-भ्रष्टता में ( पड़े हुये ) हैं ॥

( हे रसूल ! इनके अन्धपन का कारण क्या है )। क्या यह ( इतने बड़े ) आकाश और ( इतनी चौड़ी चकली ) पृथ्वी की ओर भी नहीं देखते, जो इनके आगे ( से ) और इनके पीछे ( से और ऊपर से और नीचे से इन्हें घेरे हुये ) है ( और वह हमारे आधीन है। निस्सन्देह ) यदि हम चाहें, तो इन्हें पृथ्वी में धंसा दें-अथवा इन पर आकाश ( ही ) का ( कोई ) टुकड़ा गिरा दें-( जिससे यह बिल्कुल नष्ट हो जायं, परन्तु हम अभियुक्त के पकड़ने तथा दण्ड देने में कभी शीघ्रता नहीं करते )। निस्सन्देह ( प्रत्येक ज्ञानी और सत्य की ओर ) अवहित होने वाले बन्दे ( की शिक्षा ) के लिये ( तो इन आकाशों तथा ) इस ( पृथ्वी ) में ( बड़े बड़े ) चिन्ह ( मौजूद ) हैं। और दाऊद को हमही ने ( पैग़म्बरी और ) बड़प्पन ( तथा गौरव ) प्रदान किया ( और हमने पर्वतों से कहा था कि ) हे पर्वतो ! दाऊद के साथ तुम भी ( हमारी ) पवित्रता वर्णन किया करो और (हमने) पक्षियों को (भी यही आज्ञा दी थी) ॥

और उनके लिये लोहे ( जैसी कड़ी धात ) को हम ( ही ) ने ( बिल्कुल ) नर्म बना दिया था ( और उनको ज़िरह बनाने की कला में निपुण कर दिया था। और उनसे कहा था ) कि तुम ( ख़ूब चकली ) चौड़ी ज़िरहें बनाओ। और ( ज़िरह की कड़ियों के ) जोड़ने में ( विशेष ) अनुमान कर लो और ( जब वह तय्यार हो जायं, तो उनको बेच कर लाभ प्राप्त करो । और इसके धन्यवाद-स्वरूप ) शुभ कर्म करो । निस्सन्देह ( प्रकट तथा गुप्त ) जो कुछ ( भी ) तुम करते हो, हमें ( हे दाऊद ! और दाऊद के घर वालो ! ) वह ( सब ) दिखाई दे रहा है। और ( हमही ने उनके बेटे ) सुलैमान के लिये हवा को आधीन कर दिया था ( कि जब वह सिंहासन पर विराजमान हो जाते और हवा उन्हें उड़ाए २ लिये फिरती-उनके ) उस ( हवा पर उड़ने वाले सिंहासन ) के प्रातःकाल का पर्यटन भी एक मास भर का होता था और सायंकाल का परिभ्रमण भी एक मास भर का ( अर्थात हज़रत सुलैमान का सिंहासन प्रति दिन चार मास के मार्ग का पर्यटन करता था)—

شَهْرٌ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ
بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا
نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ
مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ
وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا وَ
قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ۝ فَلَمَّا قَضَيْنَا
عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ
الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ
الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي
الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ۝ لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ
اٰيَةٌ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ
رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ
غَفُوْرٌ ۝ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ

وَبَدَّلْنٰهُمْ

और हमने उनके लिये तांबे (को पिघला कर उस) का (एक) चश्मा बहा दिया था और जिन्नात (को सुलैमान के बस में कर दिया था और उन) में से ऐसे भी थे, जो उनके पर्वर्दिगार के हुक्म से उन के हाथ तले (तरह तरह के) काम करते थे और (हमने यह भी फ़र्मा दिया था कि) इनमें से जो कोई हमारे हुक्म से इनहिराफ़ करेगा, हम उसको (आख़िरत में) अज़ाब-दोज़ख़ (का मज़ा) चखायेंगे ० (तो) सुलैमान को जो कुछ (बनवाना) मंज़ूर होता-(यह जिन्नात) उनके लिये बना ते-(जैसे मस्जिद-बैतुल्मक़्दस की बड़ी) ऊंची शानदार इमारतें और (ढली हुई) मूरतें और (ऐसे बड़े बड़े) लगन; जैसे हौज़ और (बड़ी भारी भारी) देगें, जो एक ही जगह जमी रहें (और हमने दाऊद की नस्ल को हुक्म दिया कि) ऐ नस्ल दाऊद! (इन नेअमतों के बदले में) हमारा शुक्र करते रहो और हमारे बन्दों में (बहुत ही) थोड़े (बन्दे) शुक्र-गुज़ार (होते) हैं ० फिर जब हमने सुलैमान पर मौत का हुक्म जारी किया, तो जिन्नात को (किसी चीज़ ने) उनके मरने का पता न बताया, मगर घुन के कीड़े ने कि वह सुलैमान के असा को खाता था-(यानी) जब (असा, जिसके सहारे से सुलैमान मरे पीछे खड़े थे-खोखला हो गया और सुलैमान) गिर पड़े, तब जिन्नात ने जाना कि अगर (हम) ग़ैब जानते होते, तो (इस) ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते ० सबा (के लोगों) के लिये उनके (अपने ही) घरों में (क़ुद्रत-ख़ुदा की) अलबत्ता एक (बड़ी) निशानी (मौजूद) थी—(सर-ज़मीन क्या थी कि बीच में से गुज़र जाने वाले के लिये) दाहिने हाथ और बायें हाथ दो बाग़ थे—(हमने इन लोगों को हुक्म दिया कि) अपने पर्वर्दिगार की (दी हुई) रोज़ी खाओ और उसका शुक्र करो! (दुनिया में रहने को ऐसा) उम्दा शहर और (आख़िरत में गुनाह) बख़्शने वाला पर्वर्दिगार ० इस पर (भी) उन्होंने (हमारे हुक्म की) कुछ पर्वा न की, तो हमने (भी बन्ध तोड़ कर) उन पर बड़े ज़ोर का सैलाब भेज दिया (और उसने तमाम इलाक़े का नास मार दिया)-

और हमही ने उनके लिये पिघले हुए तांबे का एक स्रोत बहा दिया था-(जिससे कि उनके नौकर बिना किसी औज़ार के बरतन वग़ैरा बना लें) और (हमही ने जिन्नों को उनके आधीन कर दिया था। यही कारण है कि) जिन्नों में से बहुत से अपने पालनहारे की आज्ञानुसार उनके आगे (सेवक बने खड़े रहते थे। और हर प्रकार का) काम (काज) करते थे। और (हमने उन्हें सूचित कर दिया था कि) उनमें से जो हमारी अवज्ञा करेगा, हम उसको (अवश्य २) नर्क के अज़ाब का स्वाद चखावेंगे। (अतः उनकी सेवकाई की यह दशा थी कि) जो (सुलैमान) चाहते, वह उनके लिए (तत्काल तय्यार) कर देते—(जैसे) ऊंचे २ भवन और (फ़रिश्तों आदि की) तसवीरें और (बड़े २) कुण्डों के समान लगन और एक स्थान पर धरी रहने वाली देगें (जो बहु-बोझल होने के कारण आरोपित—स्थान से किंचित मात्र न हट सकें। संक्षिप्त यह कि यह सब पदार्थ हमही ने दाऊद के वंशजों को प्रदान किये थे। और उनसे कह दिया था कि) हे दाऊद के वंशजो! (हमारी) कृतज्ञता करो (तुम पर हमने बहुत बड़ी कृपा की है)। और (ध्यान करो!) हमारे कृतज्ञ बन्दे बहुत थोड़े हैं-(अतः तुम इन कृतघ्नों का अनुकरण कदापि न करना)॥

फिर जब हमने उन पर मृत्यु (आने) की आज्ञा जारी करदी (और सुलैमान का देहान्त हो गया)-तथापि जिन्नों को उनकी मृत्यु की सूचना किसी ने नहीं दी (और वह अपने २ काम में लगे रहे और समझते रहे कि सुलैमान अभी ज़िन्दा हैं)—परन्तु (फिर दीमक ने उनको बता दिया, जो उनके सोंटे को खा रही थी। अर्थात जब वह (सोंटा दीमक खा गई, तो चूंकि सुलैमान उसकी टेक लगाये खड़े थे, उसके टूट जाने के कारण एक ओर को) गिर पड़े-तो जिन्नों को ज्ञात हुआ (कि सुलैमान का देहान्त हो गया। और उन्होंने इसका अनुभव किया) कि यदि वह अदृष्ट-ज्ञानी होते (जैसी कि वह कल्पना किया करते थे,-तो पतित करने वाली (इस बेगार की) आपत्ति में इतने दिन तक (कभी) न रहते॥

(लोगो! तुमने दाऊद तथा सुलैमान जैसे कृतज्ञ-भक्तों की कथा तो सुन ली। अब सबा नगर के निवासियों की भी कथा सुनो! वह बड़े ही कृतघ्न थे, यद्यपि) सबा वालों के लिये उनके नगर (ही) में (ख़ुदा की शक्ति के चमत्कार तथा शिक्षा और उपदेश के) चिन्ह (मौजूद) थे। (और उसके) दाईं-बाईं (सबा नामक नगर में) दो (ओर) बाग़ थे-(जो अति शोभायमान थे और उनमें नाना प्रकार के फल फूल लगे रहते थे। हमने उन्हें आज्ञा दी थी कि इन बाग़ों में से) तुम अपने पालनकर्त्ता की (दी हुई) जीविका खाओ। और उसकी कृतज्ञता प्रकाश करो। (देखो! संसार-जीवन व्यतीत करने के लिये उसने) एक उत्तम नगर (तुमको प्रदान किया है) और (अन्त में तुमको स्वर्गवासी करेगा। निस्सन्देह तुम्हारा) पालनहारा (अति) क्षमा करनेहारा (तथा करुणाकारी) है। (यदि तुम उसकी आज्ञापालन करोगे, तो वह अवश्य तुम पर कृपा करेगा)-परन्तु उन्होंने (हमारी) एक न सुनी। अतः हमने भी उन पर एक बड़ी भारी बहिया भेज दी

और ( सैलाब के आये पीछे ) हमने उनके दो बाग़ों के बदले में दो बाग़ ( तो ) दिये-(मगर) ऐसे कि उनके फल बद-मज़ा थे और उनमें ( कुछ ) झाऊ था और क़द्र-क़लील बेरी ० यह हमने उनको उनकी नाशुक्री का बदला दिया और हम नाशुक्रों ही को ( ऐसे ) बदले दिया करते हैं ० और हमने अह्ले-सबा ( की बस्तियों ) और ( मुल्क-शाम के ) उन देहात के दर्मियान, जिन (की पैदावार) में हमने बरकत दे रक्खी थी और बहुत से गाँव (आबाद) कर रक्खे थे, जो (पास पास) दिखाई देते थे और उन (गांव) में (मुसाफ़िरों के) चलने की एक हद बांध दी थी कि बे-खटके उनमें रातों और दिनों चलो ( फिरो ) ० तो वह लगे कहने ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! (ऐसे पास-पास के देहात में चलने से सफ़र का मज़ा नहीं आता, तो ) हमारी मन्ज़िलों को दूर-दूर करदे ! ग़रज़ इन लोगों ने (नेअमत की नाक़द्री करके ) अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया। फिर ( तो ) हमने (भी उनको ऐसा मिटाया कि) उनके अफ़्साने बना दिये और हमने उनकी धज्जियां बिखेर दीं। जितने ( बन्दे ) सब्र ( व ) शुक्र करने वाले हैं, उनके लिये ( सबा के ) इस ( वाक़ये ) में ( बड़ी बड़ी ) इब्रतें हैं ० और शैतान ने (जो) इन ( लोगों ) के बारे में अपनी राय ( लगाई थी कि वह मेरा साथ देंगे )—हक़ीक़त में ( उसने वह अपनी राय ) सच कर दिखाई कि यह लोग उसी के पीछे हो लिये, मगर ईमान वालों का एक गिरोह ( कि वह उसके बहकाने में न आया ) ० और शैतान का उन पर कुछ ज़ोर तो था ही नहीं, मगर (हमने उसका एक हीला बना दिया था और) मक़्सूद-अस्ली यह था कि जो लोग आख़िरत का यक़ीन रखते हैं, हम उनको उन लोगों से (अलग) मालूम कर लें, जो उसकी तरफ़ से शक में हैं। और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारा पर्वर्दिगार हर ( एक ) चीज़ का निगरान ( हाल ) है ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि—

وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ
وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ۝ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ
بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ۝ وَ
جَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا
قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا
فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ۝ فَقَالُوْا رَبَّنَا
بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ
اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَلَقَدْ صَدَّقَ
عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا
لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ
شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝ قُلِ ادْعُوا

ع

और ( उनके बाग़ों तथा खेती क्यारी आदि सर्वस्व को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। और ) उन ( मनोहर बाग़ों ) के बदले दो ऐसे बाग़ दिये कि उनके फल ( बिल्कुल ) कुस्वाद थे। और ( उनमें ) कुछ झाऊ ( के वृक्ष ) थे और कुछ बेरी ( के । निस्सन्देह ) यह दंड हमने उनको ( केवल ) उनकी कृतघ्नता ( तथा उद्दण्डता ) के कारण दिया था। ( और ) कृतघ्नों ( तथा उद्दण्डों ) को हम ऐसा ही दंड दिया करते हैं। और ( जब इन कृतघ्नों अर्थात सबा—निवासियों ने अपने पापों की क्षमा चाही और प्रतिज्ञा की कि अब कभी कृतघ्नता तथा अवज्ञा न करेंगे, तो ) हमने ( इन झूठों की दशा पर तरह २ के उपकार किये और ) उनके ( नगर ) और उन ग्रामों के मध्य ( जहां यह प्रायः आया जाया करते थे और ) जिनमें हमने बरकत कर रक्खी थी ( अर्थात शाम-देश जो बड़े २ नबियों की जन्म-भूमि था ) बहुत से ग्राम ( पास पास ) बसा दिये, जो ( सड़क पर से यात्री को स्पष्ट ) दीख पड़ते थे। और हमने उनमें ( ठौर ठौर ) पड़ाव नियत कर दिये-( जिससे कि यात्री आराम पावें। और हमने उनसे कह रक्खा था) कि तुम (बिल्कुल) निर्भय होकर आओ जाओ ! (चाहे) रातों-रात और (चाहे) दिन को ॥

( परन्तु उन्होंने हमारी शक्ति का यह चमत्कार देख कर अपने ईमान तथा मनतव्य को दृढ़ न किया। और हमारी कृतघ्नता की ओर ) कहने लगे–हे हमारे पालनहारे ! ( हमें इन ग्रामों के इतना पास २ होने के कारण यात्रा में कुछ आनन्द नहीं प्राप्त होता। अतः ) तू हमारी यात्रा में दूरी ( तथा अन्तर ) करदे ! ( अर्थात इन निकट-वर्ती ग्रामों को उजाड़ कर एक निर्जन वन करदे, जिससे कि यात्रा सुगमता पूर्वक न हो सके। और हमको अपनी आन बान दिखाने का अवसर मिले )। और ( निर्धन हमारी तरह आराम न पा सकें। निस्सन्देह इस कुविचार को प्रगट करके ) उन्होंने अपने प्राणों पर ( बहु ) अत्याचार किया। अतः ( जब वह उद्दण्डता तथा कृतघ्नता में सीमा पार हो गये, तो ) हमने उनको ( ऐसा नष्ट भ्रष्ट कर दिया कि उनके विनाश को शिक्षा—रूपी ) कथायें बना दिया। और उनको ( बिल्कुल ) छिन्न-भिन्न कर दिया। निस्सन्देह इस ( घटना ) में प्रत्येक सन्तोषवान ( तथा ) कृतज्ञ ( मुसलमान ) के लिये ( ख़ुदा की शक्ति के असीम ) चिन्ह ( पाये जाते ) हैं ॥

और ( इसमें ) सन्देह नहीं कि ( अभागे ) शैतान ने अपने ( इस ) विचार का समर्थन कर दिया-( जिसको उसने ख़ुदा के समक्ष प्रगट किया था। अर्थात यह कि आदम की सन्तान के बहुत से समूहों को वह बहका कर नर्कवासी कर देगा )। अतः इन्होंने ( अर्थात सबा के निवासियों ने ) उसकी आधीनता स्वीकार की ( और उसके बहकाने सिखाने में आकर नर्कवासी हो गये )-किन्तु ईमान वालों का समूह ( उसके जाल में न फँसा, इसलिये मोक्ष को प्राप्त हुआ )। और इस ( इब्लीस ) को जो इन (अवज्ञा—कारियों) पर अधिकार है, तो केवल इस कारण कि हम उन लोगों को जो ( ख़ुदा से भय खाते और ) परलोक पर विश्वास रखते हैं, उन लोगों से अलग मालूम करलें ( जिनके दिलों में किंचित-मात्र भी ख़ुदा का भय नहीं है। और ) जो परलोक की ओर से भ्रम में ( पड़े ) हैं। और ( हे रसूल ! ) तुम्हारा पालनहारा हर वस्तु का ( पूरा २ ) रक्षक है ॥

ख़ुदा के सिवा जिन ( फ़रिश्तों ) को तुम ( एक तरह पर ख़ुदाई में कुछ दख़ील ) समझते हो, उनको बुलावो ! ( और तहक़ीक़ करो, तो तुम को मालूम हो जायगा कि वह ) न तो आस्मानों ही में ज़र्रा भर इख़्तियार रखते हैं और न ज़मीन में और न आस्मान और ज़मीन ( के बनाने ) में इन का कुछ साझा और न इनमें से कोई ख़ुदा का मददगार ० और ख़ुदा के हां ( इनमें किसी की ) सिफ़ारिश ( भी किसी के कुछ ) काम नहीं आती। मगर ( हाँ ) उसके ( काम आयेगी )-जिसकी निस्बत ( ख़ुदा सिफ़ारिश की ) इजाज़त दे-( इन फ़रिश्तों का तो यह हाल है कि जब कोई हुक्म ख़ुदा के हां से नाज़िल होता है, तो मारे हैबत के घबरा उठते हैं )-यहाँ तक कि जब घबराहट उनके दिलों से दूर हो जाती है—( तो एक दूसरे से ) पूछते हैं कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने क्या हुक्म दिया ? ( इस पर जो ज़ियादा मुक़र्रब हैं ) कहते हैं कि जो ( हुक्म देना ) चाहिये था—(वही दिया) और वह आलीशान ( और सबसे ) बड़ा है ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) पूछो कि भला तुमको आस्मान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है ? (यह तो इस का क्या जवाब देंगे, तुमही इनसे ) कहो कि अल्लाह ! और हम ( हों,) या तुम ( हो, एक न एक फ़रीक़ तो ) ज़रूर राह-रास्त पर है और ( दूसरा ) खुली हुई गुमराही में ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि न तो हमारे गुनाहों की तुमसे बाज़पुर्स होनी है और न तुम्हारे अमलों की हमसे बाज़-पुर्स होनी है ० (और इनसे यह भी) कहदो ! कि हमारा पर्वर्दिगार (क़यामत के दिन ) हम ( दोनों फ़रीक़ों ) को ( एक जगह ) जमा करेगा। फिर हममें ( तुममें ) इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर देगा और वह बड़ा (ठीक) फ़ैसला करने वाला (और सबके हाल से) वाक़िफ़ है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो, जिनको तुम शरीक (ख़ुदाई) बनाकर ख़ुदा के साथ मिलाते हो-(ज़रा एक नज़र) इन्हें मुझे (भी तो) दिखाओ। बस-बस ( कोई उसका शरीक नहीं )-बल्कि वही (एक) अल्लाह ज़बर्दस्त (और) हिक्मत वाला है ० और (ऐ पैग़म्बर ! ) हमने तो तुमको तमाम ( दुनिया के) लोगों की तरफ़ ( पैग़म्बर बनाकर) भेजा है कि ( उनको ईमान लाने पर हमारी ख़ुशनूदी की ) ख़ुश-ख़बरी सुनादो और कुफ़्र करने पर हमारे अज़ाब से डरा दो—

الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ
وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن
ظَهِيرٍ ۝ وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا
لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا
مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝
قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ
وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۝
قُل لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ
أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۝ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا

نذيرا

( हे रसूल ! ) तुम (अपनी उम्मत के ) इन ( उद्दण्ड तथा शैतान-पूजकों ) से कहो कि तुम लोग जिन (असत्य-पूज्यों) को (ख़ुदा साझी ) ख़्याल करते हो, उन्हें पुकार कर तो देखो ( जिससे कि उनकी विवशता तुम पर भली भांति प्रगट हो जाय। और तुम्हें पता जाय कि ) वह परिमाणु बराबर भी शक्ति नहीं रखते, न आकाशों ( की किसी बात ) में और न पृथ्वी ( की किसी वस्तु ) में और न पृ तथा आकाशों ( की रचना ) में इनका कुछ साझा है। और न ( पृथ्वी आकाश के अतिरिक्त संसार की किसी और वस्तु के बनाने बिगा में ) उनमें से कोई अल्लाह का सहायक है। और ख़ुदा के दरबार में ( किसी की ) सिफ़ारिश ( किसी को ) लाभ न पहुंचावेगी, सिव उसके जिसके लिये ( सिफ़ारिश करने वाले को सिफ़ारिश की ) अल्लाह आज्ञा दे दे । ( और असत्य पूजकों के लिये किसी को कदापि सिफ़ारिश की आज्ञा नहीं देगा ) ॥

( फ़रिश्तों को ख़ुदा जब कोई आज्ञा देता है, तो घबरा जाते हैं )—यहां तक जब ( कुछ ) घबराहट उनके दिलों से दूर हो है ( तो जो फ़रिश्ते निकट वर्ती हैं-उनसे सब ) पूछते हैं कि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने क्या कहा ? वह ( उन्हें उस आज्ञा की सूचना और ) कहते हैं कि ( उस ) सत्य ( बात के विषय में ) कहा और ( इसमें तनिक सन्देह नहीं कि ) अल्लाह उच्च पद वाला ( और ) श्रे है। ( हे रसूल ! इन लोगों का मुंह बन्द करने के लिये ) तुम ( इनसे ) पूछो कि आकाश से ( वर्षा कौन करता है ? ) और पृथ्वी से ( कौन उगाता है ? और ) कौन ( है, जो ) तुमको जीविका प्रदान करता है ? ( यह तो इसका क्या उत्तर देंगे ) तुम ( ही इनसे ) कहो ( अन्न दाता केवल ) अल्लाह है और हम वा तुम ( अर्थात हम तुम दोनों में से एक समूह के लोग अवश्य ) सीधे मार्ग पर हैं और ( समूह के लोग निश्चित रूप से ) स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में हैं ॥

( हे रसूल ! ) तुम ( इन अज्ञानों से ज़्यादा बात न करो और ) कहदो कि ( ख़ुदा के यहां ) तुमसे हमारे पापों के सम्ब में (कुछ) पूछ गछ न होगी । और हमसे तुम्हारे कर्मों के सम्बन्ध में ( कोई ) प्रश्न न किया जावेगा। (और इन्हें यह भी) बता दो कि ( दिन शीघ्र आने वाला है, जिसमें कि ) हमारा पालन कर्त्ता हम ( दोनों समूहों ) को ( एक मैदान में ) एकत्रित करेगा ( और फिर ) ह ( तुम्हारे ) बीच सचाई के साथ ( तथा न्याय पूर्वक ) फ़ैसला कर देगा । और वह बड़ा निर्णयकारी ( और ) बड़ा ज्ञानी है। ( हे रसूल तुम ( इनसे ) कहो ! जिनको तुम ( ख़ुदा का ) साझी ठहरा कर ( पदवी तथा शक्ति में ) ख़ुदा के साथ सम्मिलित करते हो ( तनिक ) हमको ( भी तो ) दिखाओ ( कि उनमें कौन सी विशेषता पाई जाती है । ख़ुदा से डरो ! यह घर की बनी हुई मूर्तियां ) कदापि ( उ साझी) नहीं (हो सकतीं)-वरन् (अकेला) अल्लाह ही (है, जो) बलवान् ( और ) हिकमत वाला है ( न उसका कोई साझी है और न सहाय और ( हे रसूल ! ) हम ( ही ) ने तुमको ( समस्त संसार के) लोगों के लिये ( स्वर्ग का ) मंगल—समाचार सुनाने वाला—

وَنَذِيرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ
مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ
لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً
وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ
يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ۨالْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ
الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ
اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا
لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى
بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَقَالَ
الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ

मगर अक्सर लोग नहीं समझते ० और (जो लोग मुन्किर हैं, मुसल्मानों से ) कहते हैं कि (भला) अगर तुम सच्चे हो, तो यह (क़यामत का) वादा कब ( पूरा ) होगा ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो कि तुम्हारे साथ जिस दिन का वादा है, तुम न उससे एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे ० और कुफ़्फ़ार ( मक्का ) कहते हैं कि हमतो इस कुर्आन को कभी भी न मानें और न इससे पहिली ( किताबों ) को (मानें) और (ऐ पैग़म्बर ! ) काश ! तुम देखो जब (क़यामत के दिन यह) ज़ालिम अपने पर्वर्दिगार के हुज़ूर में (जवाब-दिही के लिये) ठहराये जाएँगे ( और ) एक की बात एक रद कर रहा होगा कि कमज़ोर ( यानी अदना दर्जे के लोग ) बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते, तो हम ज़रूर ईमान ले आये होते ० (इस पर ) बड़े लोग कमज़ोरों से कहेंगे कि जब तुम्हारे पास ( ख़ुदा की तरफ़ से ) हिदायत आई, तो क्या उसके आये पीछे हमने तुमको ( ज़बरदस्ती ) उस (पर अमल करने) से रोका ? ( ऐसी बात तो हुई नहीं )—बल्कि तुम ( ख़ुद ) ख़तावार थे ० और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे ( कि ज़बरदस्ती तो नहीं ) – मगर (हां ! तुम्हारी) रात-दिन की तदबीरों ने ( रोका ) कि बराबर हमसे ख़ुदा को न मानने और उसके साथ शरीक ठहराने को कहते रहे—

---

और ( नर्क के दुख से ) डराने वाला बनाकर भेजा है—परन्तु बहुत से ( अज्ञान ) लोग नहीं समझते। और ( तुम जो क़यामत के दिन की सूचना देते हो, तो उस पर आक्षेप करते हैं और ) कहते हैं कि यदि तुम ( ईमान वाले अपने वचन में ) सच्चे हो, तो (बताओ !) यह वचन कब ( पूरा ) होगा। ( उत्तर-स्वरूप ) तुम कहदो ! कि तुम्हारे लिये जिस दिन का वादा है-( वह कोई साधारण दिन नहीं है ) न तुम घड़ी भर उससे पीछे हट सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे। ( अर्थात यदि तुम चाहो कि वह दिन अपने निश्चित समय से कुछ पहिले आजाय अथवा कुछ बाद में आये, तो यह असम्भव है—बरन् वह अपने नियत समय पर आवेगा। हे रसूल ! तुम इस ज़िद) और (हठधर्मी को देख रहे हो ! कि यह) काफ़िर लोग ( इतना समझाने बुझाने के बाद क्या कह रहे हैं—यह ) कहते हैं कि हम न तो इस कुर्आन पर ईमान लायेंगे ( जो मुहम्मद पर उतरा है ) और न उस ( आकाशीय पुस्तक ) पर जो इससे पहिले ( पूर्वकालिक नबियों पर ख़ुदा की ओर से उतारी गई ) है ( अर्थात तौरेत, इन्जील, ज़बूर पर ) ॥

( हे रसूल ! तुमने संसार में इनकी यह उद्दण्डता भी देख ली ) और ( क़यामत के दिन ) तुम ( इनका वह विवशता का समय भी) देखोगे, जिस समय कि यह अत्याचारी ( लोग ) अपने पालन कर्त्ता के दर्बार में खड़े किये जायंगे ( और ख़ुदा के अज़ाब का भयंकर दृश्य इनके समक्ष होगा। और यह अपने आपको दोष रहित सिद्ध करने के लिए परस्पर ) एक दूसरे से वादानुवाद कर रहे होंगे ( और इनमें के ) नीच ( पदवी के ) लोग ऊंच ( पदवी के ) लोगों से कह रहे होंगे कि यदि तुम न होते, तो हम ( कदापि पथ-भ्रष्ट न होते और ) निश्चित रूप से ( सच्चे ) ईमान वाले होते ॥

( इस पर ) ऊंच ( श्रेणी के बेईमान ) लोग नीच ( श्रेणी के बेईमान ) लोगों ( को उत्तर देंगे और उन ) से कहेंगे-क्या जब तुम्हारे पास शिक्षा ( देनेहारी पुस्तक ) आ गई थी, तो फिर हमने तुमको ( उस पर विश्वास करने और ) सीधे मार्ग (पर चलने ) से ( ज़बर्दस्ती) रोक दिया था ? ( नहीं, ऐसा कभी नहीं हुआ। हमने कभी तुम्हें विवश नहीं किया )—बरन तुम ( कुछ ) थे ही पापी ( अर्थात तुम्हारा ही अन्तःकरण अशुद्ध था )। और ( इस पर ) नीच ( श्रेणी के ) लोग ऊंच ( श्रेणी के ) लोगों से कहेंगे ( कि हम तुमसे यह नहीं कहते कि तुमने हमको सत्य मार्ग पर चलने से विवश कर दिया )-बरन ( यह कहते हैं कि तुम्हारी ) रात दिन की धोखेबाज़ी ने ( और असत्य शिक्षा ने ) हमको इस दशा पर पहुंचाया। ( हे दुष्टो ! अपने उस समय को भूल गये )—जबकि तुम हमको ( नाना प्रकार से समझाते और ) सलाह देते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें—

और जब यह लोग अज़ाब को ( अपनी आंखों से ) देख लेंगे, तो इज़हार-नदामत करेंगे और जो लोग ( दुनिया में ) कुफ़्र करते रहे, हम उनकी गर्दनों में तौक़ डलवा देंगे। जैसे जैसे अमल यह लोग करते रहे, उनही का तो बदला इन लोगों को मिल रहा है ० और हमने किसी बस्ती में कोई ( रसूल अज़ाब-ख़ुदा से ) डराने वाला नहीं भेजा, मगर वहां के आसूदा लोगों ने ( अदबदा कर पैग़म्बरों से ) कहा कि जो ( अहकाम ) देकर तुमको भेजा गया है, हम तो उनको मानते नहीं ० और ( इसी तरह यह कुफ़्फ़ार-मक्का भी मुसल्मानों से ) कहते हैं कि हम माल और औलाद ( तुमसे ) ज़ियादा रखते हैं और ( आख़िरत में भी ) हमको अज़ाब नहीं होगा ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मेरा पर्वर्दिगार जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ कर देता है और ( जिसकी चाहता है ) नपी--तुली कर देता है, मगर अक्सर लोग ( तक़सीम-रिज़्क़ की मस्लहतों से ) वाक़िफ़ नहीं ० और ( लोगो ! ) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ( हमारे हाँ कुछ ) ऐसी ( वक़्अत ) नहीं ( रखते ) कि तुमको हमारा मुक़र्रब बना दें, मगर जो ईमान लाया और उसने नेक अमल ( भी ) किये ( आख़िरत में ) ऐसे लोगों के लिये उनके अमल का दोहरा एवज़ा है और वह बहिश्त के बालाख़ानों में इत्मीनान से ( बैठे ) होंगे ० और जो लोग मुख़ासिमाना हमारी आयतों के तोड़ के पीछे पड़े रहते हैं, वह अज़ाब में रक्खे जाएँगे ०

وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا
رَأَوُا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ
الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ● وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ
إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ●
وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا
نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ● قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ● وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُم ع
بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا
عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ● وَالَّذِينَ
يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ

और ( घर के बने हुए पूज्यों को ) उसका साझी ( और समान ) ठहरावें। और (उनकी यह वार्त्तालाप केवल हमारे दिखाने के लिये और अपने आपको निर्दोष सिद्ध करने के अभिप्राय से होगी । अतः ) जब ( निश्चित ) अज़ाब को ( अपनी आँखों से ) देखेंगे, ( यह अपनी उस ) शर्मिन्दगी को छिपावेंगे-( जो इनमें इसके झूठ समझने के कारण होगी ) । और हम ( छोटे बड़े सब ) काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ (हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ा) डाल देंगे ( और इस तरह विवश करके नर्क-कुण्ड की अग्नि में झोंक देंगे। निस्सन्देह जैसा यह ( संसार में ) कर रहे हैं, वैसा यह ( क़यामत में ) भुगतेंगे ( और किसी तरह भी ख़ुदा के अज़ाब से न बच सकेंगे ) ॥

और (हे रसूल ! यह लोग जो आकाशीय पुस्तकों को नहीं मानते हैं, तो इनकी यह बहुत पुरानी आदत है। तुम इसकी कुछ चिन्ता न करना ! ) हमने ( तुमसे पहिले ) किसी बस्ती में भी कोई ( अज़ाब से ) डराने वाला ( ऐसा ) नहीं भेजा ( जिसको झूठा न कहा गया हो )-बरन ( जहां भेजा ) वहां के धनाढ्य लोगों ने ( इन आधुनिक काफ़िरों की तरह उसको झूठा ही कहा और ) यही कहा कि जो आदेश देकर तुमको ( हमारे पास ) भेजा गया है ( हम उनको सत्य नहीं मानते )-हम उनका अस्वीकार करते हैं। और ( जब हमारे पैग़म्बर ने उन को ख़ुदा के अज़ाब से डराया, तो ) वह कहने लगे कि आर्थिक-दृष्टि से भी हम ( हर तरह ) बढ़ चढ़ कर हैं और सन्तान की दृष्टि से भी। और ( शारीरिक बल, पराक्रम की दृष्टि से भी। आज हमें पृथ्वी आकाश में कोई भी ऐसा दीख ) नहीं (पड़ता कि जिसकी आज्ञा से हम अज़ाब पाने वाले ( अर्थात अज़ाब पाने के अधिकारी ठहरें । बस यही अशुद्ध विचार तुम्हारी उम्मत के काफ़िरों के मास्तिष्कों में भरे हुये हैं। तो हे रसूल ! ) तुम ( उनसे ) कहदो कि ( धन दौलत तथा सन्तान और जीविका पर इतना न इतराओ। इस प्रकार जितने पदार्थ हैं सबका स्वामी तथा प्रभु) मेरा पालन कर्त्ता (है। वह) जिसके लिये चाहता है, जीविका (तथा धन दौलत और सन्तानादि) बढ़ा देता है और (जिसके लिये चाहता है) कम कर देता है—परन्तु बहुत से (अज्ञान) लोग (उसकी शक्ति तथा महानता से) अभिज्ञ नहीं।

( सांसारिक माया पर इतराने वालो ! सुनो !! ) और (याद रक्खो !) न तुम्हारी सम्पत्ति कोई ऐसी वस्तु है और न सन्तान, जो तुमको हमारा निकटवर्ती बनादे ( और परलोक में कुछ काम आये )-परन्तु ( हां ! हमारे यहां सुकर्मों की पूछ होगी। अतः ) जो लोग ( अल्लाह रसूल पर सच्चे दिल से ) ईमान ले आये और ( ईमान लाने के बाद ) उन्होंने शुभ कर्म भी किये, तो यही ( वह सौभाग्यवान लोग ) हैं कि उनके लिये उनके शुभ कर्मों का दोगुना फल ( तय्यार ) है। और वह ( परलोक में जन्नत के दिव्य ) भवनों में निशङ्क (और सुख चैन ) के साथ रहेंगे। और जो लोग ( धन दौलत और सन्तान की अधिकता पर फूले नहीं समाते और हमारे रसूल को असत्यवादी कहते हैं और उन्हें ) हराने ( और दोष-युक्त करने ) के लिये हमारी आयतों के विषय में ( विपक्षियों की तरह ) उद्योग करते हैं—(अर्थात हमारी आयतों पर भांति २ के आक्षेप करते और उन्हें असत्य समझते हैं)-वह (सबके) सब (हमारे यहाँ नीचता के) अज़ाब में डाले जायंगे।

( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मेरा पर्वर्दिगार अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ कर देता है और जिसकी चाहता है, नपी-तुली कर देता है और तुम लोग कुछ भी (राह-ख़ुदा में) ख़र्च करो, वह उसका एवज़ देगा और वह सब रोज़ी देने वालों से बेहतर ( रोज़ी देने वाला ) है ० और ( लोगो ! उस दिन को पेश नज़र रक्खो ) जबकि ख़ुदा सब लोगों को जमा ( करेगा और जमा ) किये पीछे फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या यह (आदम-ज़ाद) तुम्हारी ही परस्तिश किया करते थे ? (और तुम इससे रज़ामन्द थे ?) ० वह अर्ज़ करेंगे कि ( ख़ुदाया ! ) तू पाक है। हमको तुझसे सरोकार है, न इनसे। ( हमारी नहीं )—बल्कि ( यह लोग हक़ीक़त में ) शयातीन की परस्तिश करते थे ( कि उनके बहकाये में आ गये और ) इनमें अक्सर उन्हीं के मोतक़िद थे ० तो (इस पर ख़ुदा फ़र्मायेगा कि ) आज तुममें से न तो कोई किसी को नफ़ा ही पहुंचाने पर क़ादिर है और न नुक़सान पहुंचाने पर, और हम सर्कश लोगों से कहेंगे कि अज़ाब-दोज़ख़ जिसको तुम झुटलाया करते थे ( अब उसका मज़ा ) चक्खो ० और जब इन (कुफ़्फ़ार) को हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो ( एक दूसरे से ) कहते हैं कि यह (शख़्स, जो पैग़म्बरी का दावा करता है )—बस ( हमही जैसा ) आदमी है ( और ) उसका मुद्दआ यह है कि जिन ( माबूदों ) की तुम्हारे बाप (दादा) परस्तिश करते थे, तुमको उनकी ( परस्तिश ) से रोक दे और ( कुर्आन की निस्बत ) कहते हैं कि यह तो बस निरा झूट है ( और इसका अपना ) बनाया हुआ—

تُحْضَرُونَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنفَقْتُم
مِّن شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ
أَهَؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝ قَالُوا
سُبْحَانَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم بَلْ كَانُوا
يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ۝
فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَلَا
ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ
النَّارِ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ وَإِذَا تُتْلَى
عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ
يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ وَ
قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرًى وَقَالَ الَّذِينَ

---

( और उनका धन दौलत उनके कुछ काम न आयेगा। हे रसूल ! ) तुम ( उनसे ) कहदो ( कि माया का लोभ, उस पर इतराना, ऐंठना और उसको जोड़ २ कर रखना वृथा है )। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता अपने बन्दों में से जिसके लिये चाहता है (अपनी) जीविका बढ़ा देता है ( और उसको धनाढय बना देता है ) और जिसके लिये चाहता है, कम कर देता है (और उसकी सम्पत्ति को घटा देता है )। और ( निस्सन्देह हे लोगो ! ) जो कुछ भी तुम ( अल्लाह के मार्ग में ) व्यय करते हो, तो अल्लाह ( लोक परलोक दोनों स्थानों में तुमको ) उसका फल प्रदान करता है। और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) वह सर्वोत्तम अन्नदाता है॥

और ( वही इस योग्य है कि उसकी पूजा की जाय। निस्सन्देह जो लोग उसको छोड़कर फ़रिश्तों को अथवा मूर्तियों को पूजते हैं, अपने लिये कांटे बोते हैं। वह दिन निकट आने वाला है )-जिस दिन कि अल्लाह इन सब ( मुश्रिकों ) को ( अपने सामने ) इकट्ठा करेगा ( और ) फिर फ़रिश्तों से पूछेगा-क्या यही (वह मूर्ख) लोग हैं, जो ( दुनिया में ) तुमको पूजते थे ? (और अपना सिफ़ारिशी ख़्याल करते थे ? फ़रिश्ते थर्रा उठेंगे और ) कहेंगे—तू पाक है। तूही हमारा कार्य-कर्त्ता है न कि यह लोग-( हमारा इनसे कुछ सम्बन्ध नहीं )। बरन यह लोग ( तो ) शैतानों को पूजते थे ( और ) इनमें के अधिक लोग उनही पर विश्वास रखते थे। फिर ( ख़ुदा इन काफ़िरों को ओर ध्यान देगा और कहेगा अज्ञानो ! देखो यह वही क़यामत का दिन है, जिसको तुम नहीं मानते थे )-आज तुम परस्पर न एक दूसरे को लाभ पहुंचाने की शक्ति रखते हो और न हानि पहुंचाने की। और हम ( इन ) अत्याचारियों ( मुश्रिकों ) से कहेंगे-चक्खो ! ( नर्क की दहकती हुई ) अग्नि का अज़ाब ( चक्खो। यह वही नर्क का अज़ाब है )-जिसको तुम झुठलाते थे॥

और ( हे रसूल ! यह इसी योग्य हैं कि इन्हें दहकती हुई अग्नि में झोंक दिया जाय। भला इनको उद्दण्डता का क्या ठिकाना )-जब इनके सामने हमारी आयतें, जो ( अपनी सुन्दरता तथा विषय की विशेषता में अद्वितीय और उपदेश-मय विषयों को दृष्टि से अति ) स्पष्ट ( और प्रकाश-युक्त ) हैं, पढ़ी जाती हैं ( अर्थात जब तुम इनको ख़ुदा का कलाम पढ़कर सुनाते हो) तो ( परस्पर ) कहते हैं ( भाइयो ! इस के बहकाये में न आना )-यह वह मनुष्य है, जो तुमको उन पूज्यों की पूजा से रोकना चाहता है, जिन्हें तुम्हारे बाप ( दादा प्राचीन काल से) पूजते ( आये ) हैं। और कहते हैं-यह ( कुर्आन ) तो बस ( पूर्णतया ) कल्पित झूठ है॥

और जो लोग मुन्किर हैं, जब उनके पास हक़ बात आई, तो वह उसकी निस्बत कहने लगे कि यह तो बस सरीह जादू है ० और (ऐ पैग़म्बर ! बावजूदे कि) हमने इनको (आस्मानी) किताबें नहीं दीं कि उनको पढ़ते (पढ़ाते) हों और न तुमसे पहिले इनकी तरफ़ कोई डराने वाला भेजा–(इसपर भी उन्होंने कुर्आन और पैग़म्बर की क़द्र न की ) ० और इनसे अगले लोगों ने भी पैग़म्बरों को झुटलाया था और जो कुछ हमने उन लोगों को दे रक्खा था, यह लोग ( तो अभी उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे । ग़रज़ अगले लोगों ने हमारे पैग़म्बरों को झुटलाया ) और पैग़म्बरों का झुटलाना हमको नागवार गुज़रा—तो ( ऐ पैग़म्बर ! तुमने देख लिया होगा कि ) हमारी नाखुशी ( उनके हक़ में ) कैसी ( ज़बून ) हुई ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो कि मैं नसीहत के तौर पर तुमसे सिर्फ़ एक बात कहता हूं कि खुदा के लिये दो दो ( मिल कर) और अकेले २ खड़े हो जावो, फिर सोचो ( तो तुमको मालूम हो जायगा) कि तुम्हारे रफ़ीक़ ( यानी मुझ ) को किसी तरह का ( भी ) जुनून नहीं है, बल्कि ( तुम पर एक) अज़ाब-सख़्त (नाज़िल होने वाला है और उस) के आगे आगे यह तुमको डराता है और बस ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मैंने तुमसे ( तब्लीग़-रिसालत पर ) कुछ मज़दूरी तलब की हो, तो वह तुमही को ( मुबारक रहे )–मेरी मज़दूरी तो बस अल्लाह पर है और वह हर चीज़ का शाहिद (हाल) है ०( ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से ) कहो कि मेरा पर्वर्दिगार ( ग़लत बात के मिटाने को) हक़ (के हरबे) चला रहा है ( और वह ) ग़ैब की बातों को खूब जानता है ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि ( दीन ) हक़ आ पहुंचा और ( दीन ) ग़लत से न तो अभी कुछ ( कुशूदे-कार ) होता है और न आइन्दा होगा ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि अगर मैं बरसरे ग़लत हूं, तो मेरी ग़लती (का वबाल) मेरे ही ऊपर है और अगर राह-रास्त पर हूं, तो ( यह) इस ( कुर्आन ) की बरकत से ( है )–जो मेरा पर्वर्दिगार मेरी तरफ़ वही के ज़रिये से नाज़िल फ़र्माता है। बेशक वह हर एक को ( फ़रियाद ) सुनने वाला ( और हर एक फ़रियाद करने वाले से ) नज़दीक है ०—

كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ
وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا
إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَمَا بَلَغُوا مِعْشَارَ مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ
أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا مَا
بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ
يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ
فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ
الْغُيُوبِ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ
وَمَا يُعِيدُ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي
وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ

قريب

और जब सत्य (कुर्आन) इनके पास आ गया, तो कहने लगे–यह तो एक स्पष्ट जादू है । ( हे पैग़म्बर ! न मालूम यह लोग किस कार कुर्आन को असत्य पुस्तक बताते हैं ) और ( तुमको रसूल नहीं मानते )–न तो हमने इन ( काफ़िरों ) को ( कुर्आन से पहिले अपनी ) को पुस्तक दी कि जिसको यह पढ़ते ( पढ़ाते ) हों ( और उसमें कुर्आन को असत्य पुस्तक कहा गया हो ) और न तुमसे पहिले इनके पास को डराने वाला ( अर्थात पैग़म्बर) ही भेजा (कि जिसके उपदेशों का अनुकरण करके तुम्हारे विरोधी बने हों)। और (यही आदत उन काफ़ि की थी) जो इनसे पहिले हो चुके हैं। (अर्थात इसी प्रकार) उन्होंने भी ( अल्लाह रसूल के आदेश को ) झुठलाया था। और जो कुछ ( ध दौलत मान प्रतिष्ठा आदि ) हमने उनको प्रदान किया था ( वह इतना था कि ) यह ( इस समय के काफ़िर लोग अब तक ) उसके दस अंश को (भी) नहीं पहुंचे–( परन्तु हमारे आगे उनकी भी कुछ न चली। और जब ) उन्होंने हमारे रसूलों को झुठलाया, तो (देखो) हमा अप्रसन्नता ( उनके हक़ में ) कैसी ( हानि कारक ) हुई ॥

( हे रसूल ! ) तुम ( इन लोगों से ) कहो! मैं तुमको केवल एक उपदेश देता हूं–( वह ) यह (है) कि तुम अल्लाह के लिये खड़े जाओ ! दो दो और एक एक ( अर्थात चाहे मिल जुल कर अथवा पृथक २ ठंडे दिल से विचार करो) कि (सत्य) तुम्हारे साथी ( की अ है। अर्थात मेरी ओर, और उस) को कुछ उन्माद नहीं है–( वरन ) वह तो ( तुम्हारा सच्चा हितैषी है। और ) तुमको (एक) अति क अज़ाब ( के आने ) से पहिले (ही) उससे सूचित कर देने वाला और डराने वाला है। ( हे पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मैंने जो कि बदले की अभिलाषा तुमसे ( कभी ) की हो, तो उसे तुम ही ( अपने पास) रहने दो। मेरा बदला तो केवल अल्लाह ही पर है और अल्ल हर वस्तु से अभिज्ञ है ॥

( हे पैग़म्बर ! ) तुम ( इन असत्य-पूजकों से ) कहदो कि मेरा पालनहारा ( अवश्य एक न एक दिन सत्य को असत्य पर वि दिलावेगा। वह क्रमशः ) सत्य को बढ़ा रहा है। ( वह ) अदृष्ट का खूब जानने वाला है ( हे पैग़म्बर ! तुम इन दुराचारियों से ) कहदो (अब) सत्य (धर्म) आ गया और असत्य (का नाश हुआ, जो) न तो पहिले पहल किसी वस्तु को उत्पन्न कर सका है और न दुबारा (क़्या के दिन) उत्पन्न कर सकेगा। (हे पैग़म्बर !) तुम (इनसे स्पष्ट) कहदो कि यदि मैं (मान लो कि) पथ-भ्रष्ट हूं, तो (यह मेरे अन्तःकरण की अ ज्ञता है ) और यदि मैं सीधे मार्ग पर हूं ( जैसा कि स्पष्ट है ) तो यह (केवल) उस ( पवित्र ) कुर्आन के कारण है, जो मेरा पालनहारा ओर भेजता है। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता ( मुझ पर अति कृपालु है। जो कुछ यह कह रहे हैं ) वह सब सुन रहा है ( और इनसे दूर नहीं है। वह इनकी परछाईं से भी अधिक ) निकट है। ( वह जब चाहेगा, इन्हें उनके असत्य-भाषण का पूर्ण दण्ड दे देगा ) ॥

قريب ● ولو ترى اذ فزعوا فلا فوت واخذوا
من مكان قريب ● وقالوا امنا به وانى
لهم التناوش من مكان بعيد ● وقد
كفروا به من قبل ويقذفون بالغيب
من مكان بعيد ● وحيل بينهم وبين ما
يشتهون ● كما فعل باشياعهم
من قبل انهم كانوا فى شك مريب ●

سورة الفاطر مكية وهي خمس واربعون آية

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله فاطر السموت والارض جاعل
الملئكة رسلا اولى اجنحة مثنى وثلث
وربع يزيد فى الخلق ما يشاء ان الله على
كل شىء قدير ● ما يفتح الله للناس من رحمة

( और ऐ पैग़म्बर ! ) काश ! ( वह हालत ) तुम्हारे पेश नज़र हो, जबकि यह लोग ( क़यामत में ) घबराये घबराये फिरेंगे और (किसी तरफ़ को ) भाग कर न जा सकेंगे और पासके पास से पकड़ लिये जायेंगे ० और ( बे इख़्तियार ) बोल उठेंगे कि (अब )हम रसूल पर ईमान लाये और ( इतने ) पल्ले पर से ( ईमान ) कैसे इनके हाथ आ सकता है ० और ( इनका हाल यह है कि ) पहिले उससे इन्कार करते और वे देखे भाले दूर ही से ( अटकल के ) तुक्के चलाते रहे ० और ( अब ) इनमें और इनके तवक़ुआत में एक रोक करदी जाएगी कि ऐसा ही (सुलूक) उन लोगों के साथ किया गया, जो इनके हम-जिन्स थे ( और ) इनसे पहिले ( कुफ़्र कर चुके थे )—वह भी इनही की ( तरह ) शक-दर-शक में ( पड़े ) थे ०

## सूरत—फ़ातिर

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ४५ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को ( सज़ावार ) है, जिसने (महज़ अदम से) आस्मान और ज़मीन बना निकाले ( और ) उसी ने फ़रिश्तों को ( अपना ) क़ासिद बनाया, जिनके दो दो और तीन तीन और चार चार पर हैं ( अपनी मख़्लूक़ात की ) बनावट में जो चीज़ चाहता है, ज़ियादा कर देता है । बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० अल्लाह ( अपनी ) रहमत ( का लङ्गर ) जो लोगों के लिये खोले—

---

( हे पैग़म्बर ! तुमने इनके यह असत्य कथन ) और ( इनकी अकड़ तो देख ही ली )–यदि तुम ( इनकी वह दशा भी ) देखो जबकि ( क़यामत होगी और नर्क की दहकती हुई अग्नि इनके सन्मुख होगी और यह उससे ) घबराएंगे ( और चारों ओर भागे भागे फिरेंगे ) और ( कहीं ) भाग न सकेंगे और ( जब कुछ भागने का इरादा करेंगे, तो एक क़दम भी अपने निवासस्थान से न बढ़ने पाएंगे कि ) निकट ही से ( अर्थात तत्काल ) पकड़ लिये जावेंगे । और ( जब समझ लेंगे कि किसी प्रकार ख़ुदा के अज़ाब से छुटकारा न मिलेगा, तो पुकार उठेंगे और ) कहने लगेंगे कि हम ( सच्चे दिल से ख़ुदा ) रसूल पर ईमान ले आए और ( इतना न समझेंगे कि भला इतने ) दूर के स्थान से ( अर्थात परलोक में सफलता तक ) उनकी पहुंच कैसे हो सकती है । और ( विशेषतया ऐसी दशा में जबकि यह अच्छी तरह विदित है कि ) यह इस ( आपत्ति का समय आने ) से पहिले ( अर्थात संसार में हमारे ) रसूल के न मानने वाले और ( उन पर ) बिन देखे दूर ही से तीर चलाते थे ( अर्थात बिना सोचे समझे उनके विषय में जो मुंह में आता था, बक देते थे ) ॥

( निस्सन्देह क़यामत के दिन ऐसे दुष्ट लोग कदापि हमारे अज़ाब से छुटकारा न पा सकेंगे ) और ( उस दिन ) उनमें और उन की अभिलाषाओं में ( एक ) आड़ करदी जावेगी ( अर्थात उनकी वह समस्त अभिलाषाएं जो कुफ़्र शिर्क करते समय उनके मस्तिष्क में बसी रहती थीं, सब नष्ट भ्रष्ट हो जावेंगी और इनके साथ भी वैसा ही दुर्व्यवहार किया जावेगा ) जैसा कि उन लोगों के साथ किया जायगा, जो इनके ( ही ) सदृश थे ( अर्थात ) इन ( के समय ) से ( कुछ ) पहिले ( इन ही की तरह कुफ़्र शिर्क में फँस चुके थे । और ) वह ( भी इन्हीं की तरह धूर्त और ख़ुदा रसूल के न मानने वाले और तुम्हारी पैग़म्बरी के विषय में ) भ्रम-पूर्ण सन्देह में ( पड़े ) थे ॥

## सूरत—फ़ातिर

### मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें ४५ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥

( निस्सन्देह ) समस्त प्रशंसायें उस ख़ुदा के लिये हैं, जो आकाशों की और पृथ्वी की रचना करने वाला और ऐसे २ फ़रिश्तों को ( अपना ) दूत बनाने वाला है, जो दो दो और तीन तीन और चार चार पंख वाले हैं । वह ( जिस वस्तु को चाहता है, उत्पन्न करता है और जिस वस्तु की ) रचना में जो कुछ चाहता है, बढ़ा देता है । निस्सन्देह अल्लाह हर वस्तु पर ( पूर्ण ) शक्ति रखता है–( उस की शक्ति सीमा से संसार की कोई वस्तु बाहर नहीं । उसके कामों में रोक टोक करने का किसी को अधिकार नहीं । निस्सन्देह यदि संसार के ) लोगों के लिये अल्लाह ( अपनी ) करुणा ( का कोई द्वार ) खोल दे—

तो कोई उसका बन्द करने वाला नहीं और बन्द करले, तो उसके (बन्द किये) पीछे कोई उसका जारी करने वाला नहीं और वह ज़बर्दस्त (और) हिकमत वाला है ० लोगो! अल्लाह के एहसान जो तुम पर हैं, उनको याद करो। भला अल्लाह के सिवा कोई (और भी) पैदा करने वाला है? जो आस्मान व ज़मीन से तुमको रोज़ी दे—(तो) उसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम (लोग) किधर बहके चले जा रहे हो ० और (ऐ पैग़म्बर!) अगर (यह लोग) तुमको झुठलायें, तो तुमसे पहिले भी पैग़म्बर झुठलाये जा चुके हैं और (आख़िरकार) सारी बातें अल्लाह ही के हुज़ूर में पेश की जायेंगी ० लोगो! अल्लाह का वादा (क़यामत) बरहक़ है—तो ऐसा न हो कि दुनिया की ज़िन्दगी तुमको धोके में डाले रहे और ऐसा न हो कि (शैतान) दग़ाबाज़ ख़ुदा के बारे में तुमको धोका दे (कि नाफ़र्मानियां करो और मग़फ़िरत के उम्मीदवार रहो) ० कुछ शक नहीं कि शैतान तुम्हारा (जानी) दुश्मन है, तो (तुम भी) उसको (अपना) दुश्मन ही समझे रहो। वह तो अपने लोगों को (अपनी तरफ़) सिर्फ़ इस ग़रज़ से बुलाता है कि वह लोग (आख़िरकार) दोज़ख़ियों में (जा शामिल) हों ० जो लोग मुन्किर हैं, उनको सख़्त सज़ा होनी है और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक-अमल (भी) किये, उनके लिये (गुनाहों की) बख़्शिश और (नेक अमलों का) बड़ा अज्र है ० तो क्या वह शख़्स जिसको उसका अमल-बद (इग़वाए-शैतानी की वजह से) अच्छा कर दिखाया गया और वह (ख़्वाहिश-नफ़्सानी की पैरवी करके) उसको अच्छा समझता है—(कहीं ईमानदार नेकोकार के बराबर हो सकता है?) बात यह है कि अल्लाह—

فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ
مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ
اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ
يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ
فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ
كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝ إِنَّ
الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ
إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝
الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝
أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ

तो कोई उसे बन्द करने वाला नहीं। और बन्द करले, तो (फिर) उसके (बन्द करने के) बाद कोई खोलने वाला नहीं—(जैसे वृष्टि का होना-यदि उसकी इच्छा न हो, तो चाहे समस्त संसार के निवासी उद्योग करते २ मर जायँ, परन्तु वर्षा की एक बूंद भी पृथ्वी पर न आये। और यदि उसकी इच्छा हो, तो जल थल एक करदे) और (कोई रोक टोक न कर सके। निस्सन्देह) वह (बड़ा) बलवान (और) हिकमत वाला (तथा युक्तिवान) है। (अतः) हे मनुष्यो! अल्लाह ने जो तुम पर उपकार किये हैं (और जो २ पदार्थ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किये हैं, हर अवसर पर) उनका वर्णन (और उनको कृतज्ञता प्रकाश) करो क्या अल्लाह के अतिरिक्त (कोई और तुम्हारा अन्नदाता और) सृष्टि कर्त्ता है? जो आकाश से (वृष्टि करता है) और पृथ्वी से (खेती उगाता है और) तुमको जीविका प्रदान करता है। (निस्सन्देह यदि तुम समस्त संसार ढूंढ फिरोगे, तब भी तुमको) उसके अतिरिक्त कोई (ऐसा करुणा-निधान प्रभु और ऐसा अन्नदाता) पूज्य (बनने के योग्य) नहीं (मिलेगा)। फिर तुम (सीधा मार्ग छोड़कर) क्यों उलटे (फिरे) जा रहे हो॥

और (हे पैग़म्बर! इतना समझाने बुझाने के बाद भी) यदि यह लोग तुमको झुठलायें, तो (तुम इसकी चिन्ता न करना। यह आज कोई नई बात नहीं है)—तुमसे पहिले (भी बहुत से) पैग़म्बरों को झुठलाया गया है और (तुमको इनके दुराचार से शोकित न होना चाहिये, क्योंकि इनके तो) सब काम अल्लाह (ही) तक पहुंचते हैं। (अर्थात अन्त में इनको ख़ुदा ही से पाला पड़ेगा, वह इनकी समस्त करतूतों का हाल पूछ लेगा)। हे मनुष्यो! (तुम्हारा परिणाम ख़ुदा ही के अधिकार में है। क़यामत अवश्य होगी, उसका वादा ख़ुदा ने तुम से किया है और) ख़ुदा का (हर) वादा (बिलकुल) सच्चा (हुआ करता) है। (देखो!) कहीं सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाल दे। और धोखा देने वाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह की ओर से धोखे में न डाल दे॥

निस्सन्देह शैतान तुम्हारा (बहुत बड़ा) शत्रु है। अतः तुम भी उसे शत्रु (ही) समझो। वह तो अपने समूह को (अपनी ओर केवल) इसी लिये बुलाता है कि वह (अर्थात उसकी ओर ध्यान देने वाले समूह के सब मनुष्य) नर्कवासी बन जावें। (निस्सन्देह) जिन लोगों ने कुफ़्र किया (और शैतान के बहकाने में आकर अल्लाह रसूल को झुठलाया, क़यामत में) उनके लिये (अति) कठिन अज़ाब (तय्यार) है और जो लोग ईमान ले आये और (ईमान लाने के पश्चात उन्होंने) शुभ कर्म (भी) किये (तो) उनके लिये (उनके पापों की) क्षमा और (उनकी नेकियों के बदले बहुत) बड़ा पुरस्कार (अर्थात विशेष स्वर्ग तय्यार) है। तो क्या (अपने परिणाम की दृष्टि से) वह मनुष्य जिसके लिये (अर्थात जिसकी दृष्टि में) उसके कुकर्म सजा दिये गये और (शैतान के बहकाये सिखाये में आजाने के कारण) वह उसको भले लगते हैं (अर्थात अपने कुकर्मों को सुकर्म ख़्याल करता है, कहीं उस ईमान वाले के बराबर हो सक्ता है, जिसके लिये परलोक में जन्नत तय्यार है? कदापि नहीं)। वास्तव में यह है कि (परिणाम की भलाई बुराई सब ख़ुदा ही के अधिकार में है)। ख़ुदा—

يُضِلُّ مَنْ يَّشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَّشَاءُ ۖ فَلَا
تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ
بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ الَّذِيْ أَرْسَلَ الرِّيٰحَ
فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ إِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا
بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ۚ
إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ
الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ وَمَكْرُ أُولٰٓئِكَ هُوَ
يَبُوْرُ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثٰى
وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهٖ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ
وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ إِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۚ إِنَّ ذٰلِكَ

जिसको चाहता है, गुमराह करता है और जिसको चाहता है, सीधा रास्ता दिखाता है। तो (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों (के हाल) पर अफ़सोस करके (कहीं) तुम्हारी जान ना जाती रहे—(तुम सब्र किये बैठे रहो, क्योंकि) जैसे जैसे अमल यह लोग कर रहे हैं, अल्लाह उन (सब) से वाक़िफ़ है (वक़्त पर इनसे समझ लेगा) ० और अल्लाह (ही) वह (क़ादिर-मुतलक़) है, जो हवाएँ चलाता है, फिर हवाएँ बादल को उभारती हैं, फिर बादल को हम ऐसे शहर की तरफ़ हाँक देते हैं, जो (ख़ुशकी की वजह से) मुर्दा (यानी पड़ती पड़ा) है, फिर हम मेंह के ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा कर देते हैं। इसी तरह (लोगों को भी क़यामत में जी) उठना होगा ० जो इज़्ज़त का ख़्वाहां हो, तो (उसको चाहिये कि ख़ुदा की फ़र्मांबर्दारी करे, क्योंकि) इज़्ज़त सारी ख़ुदा की (देन) है—(अच्छी) अच्छी बातें उसी (की जनाब) तक पहुंचती हैं और (वही) नेक अमल (करने वालों के दर्जों) को बुलन्द करता है और (ऐ पैग़म्बर!) जो लोग (तुम्हारी ईज़ा-दिही के लिये बुरी) बुरी तदबीरें करते रहते हैं, उनको सख़्त सज़ा होनी है और उनकी (सब) तदबीरें वही (आख़िरकार) मलिया मेट हो जाएँगी ० और (लोगो!) अल्लाह ही ने तुमको पहिले मिट्टी से पैदा किया, फिर नुतफ़े से (मर्द औरत बनाकर) तुमको जोड़े जोड़े बनाया और न किसी औरत को पेट रहता है और न (वह बच्चा) जन्ती है, मगर (यह सब) ख़ुदा ही के इल्म (और इजाज़त) से (होता है) और न किसी शख़्स की उम्र ज़ियादा और न किसी की उम्र कम की जाती है, मगर (यह सब) किताब (लौह-महफ़ूज़) में (लिखा हुआ मौजूद) है (और) कुछ शक नहीं कि यह (सब)—

---

जिसको चाहता है (दुनिया में) पथ-भ्रष्ट कर (के अज़ाब का अधिकारी बना) देता है और जिसको चाहता है, सीधा मार्ग दिखा देता है (और उसका ठिकाना जन्नत में कर देता है)। तो (हे पैग़म्बर! तुम इन पथ-भ्रष्टों की पथ-भ्रष्टता का किंचित ख़्याल न करो। देखो कहीं ऐसा न हो कि) इन लोगों (की दशा) पर शोक करते २ तुम्हारी जान जोखिम में पड़ जाय। (निस्सन्देह यह) जो कुछ करते हैं, अल्लाह को (सब) ज्ञात है। और (यदि वह चाहे तो अभी इनके कुकर्मों की पूछ गछ करे, परन्तु यह उसकी मस्लहत के विरुद्ध है। निस्सन्देह) अल्लाह ऐसा (शक्तिमान) है, जो (वृष्टि करने से पहिले) हवायें चलाता है (और) फिर वह (हवायें) मेघों को उठाती हैं (और एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती हैं)। फिर उस (मेघ) को हम (ऐसे) मृतक नगर की ओर ले जाते हैं—(जिसकी भूमि वर्षा के अभाव के कारण सूखी पड़ी हो)। फिर हम उस (मेघ के पानी से) भूमि को उसके मुर्दा (और घास रहित होजाने) के पश्चात ज़िन्दा (और हरी भरी) करते हैं। (बस क़यामत समझाने के लिये केवल एक यही उदाहरण यथेष्ट है-बिलकुल) इसी तरह (मनुष्य का दुबारा) क़ब्रों से निकलना होगा॥

(अतः) जो मनुष्य (उस भयंकर दिन में और इस संसार में) सम्मान (तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने) का अभिलाषी है, तो (उसे मुहम्मद रसूलुल्लाह का अनुकरण और सर्व शक्तिमान ख़ुदा की आज्ञा पालन करना चाहिये—क्योंकि) हर प्रकार का सम्मान अल्लाह तआला ही के अधिकार में है। (मनुष्य की जितनी श्रेष्ठ और) पवित्र बातें (हैं; जैसे अल्लाह का स्मरणादि) उसी (के द्वार) तक पहुंचती हैं। (और स्वीकृत होकर अल्लाह की प्रसन्नता का कारण बनती हैं)। और वही (अपनी कृपा से) शुभ कर्मों (के पदों) को ऊँचा करता (और उनके पुरस्कार को बढ़ाता) है। और (हे पैग़म्बर!) जो लोग (तुम मुसलमानों के साथ) छल कपट कर रहे हैं, उनके लिये (लोक परलोक में) अति कठिन अज़ाब (तय्यार) है। और उनका छल (कपट अति शीघ्र) छिन्न भिन्न हो जायगा। (वह कभी तुम्हारे मुक़ाबले में कृतार्थ नहीं हो सकते)॥

और अल्लाह (जब सत्य को असत्य पर विजय दिलाना चाहेगा, तो क्षण भर में दिला देगा। उसकी शक्ति अपार है। उसी) ने (पहिले पहल) तुमको (अर्थात तुम्हारे पिता आदम को) मिट्टी से बनाया। फिर (आदम की सन्तान को) वीर्य्य से (उत्पन्न किया)। फिर तुमको जोड़ा २ (अर्थात तुममें से किसी को स्त्री और किसी को पुरुष) बनाया। उसके ज्ञान के बिना न कोई स्त्री गर्भवती होती है और न वह (बच्चा) जनती है। और (बिना उसकी आज्ञा के) न कोई बड़ी आयु वाला आयु पाता है और न किसी की आयु कम होती है। (कोई जाने वा न जाने, माने वा न माने)—परन्तु (यह जो कुछ हो रहा है, आदि सृष्टि से) लौह-महफ़ूज़ में (लिखा हुआ) है। निस्सन्देह यह—

عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۞ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ
فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۖ وَمِنْ
كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ
حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ
لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۞
يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ
مُّسَمًّى ۗ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ وَالَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ۞
اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا
مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۗ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ
بِشِرْكِكُمْ ۗ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ۞ يٰاَيُّهَا النَّاسُ
اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۞

अल्लाह के नज़्दीक ( एक ) सहल ( सी बात ) है ० और ( समन्दर ) दो ( क़िस्म के होते हैं और वह दोनों ) समन्दर एक तरह के नहीं हैं—एक ( ऐसा है कि ) उसका पानी मीठा ख़ुश-ज़ायक़ा ख़ुश-गवार है और एक ( ऐसा है कि उसका पानी ) खारी कड़वा है और ( बावजूद इस इख़्तिलाफ़ के ) तुम ( लोग ) दोनों ( क़िस्म के दरियाओं में ) से ( मछलियां शिकार करके उनका तर व ) ताज़ा गोश्त खाते और ज़ेवर (यानी मोती) निकालते; जिनको पहिनते हो और ( ऐ मुख़ातब ! ) तू देखता है कि किश्तियां दरिया में ( पानी को, मीठा हो या खारी ) फ़ाड़ती चली जा रही हैं, ताकि तुम ( लोग ) ख़ुदा का फ़ज़्ल ( यानी तिजारत के फ़ायदे ) ढूंडो और ताकि तुम ( उसका ) एहसान मानो ० वह रात (के एक जुज़ ) को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन ( के एक जुज़ ) को रात में दाख़िल कर देता है और उसी ने सूरज और चांद को ( अपना ) मुती ( फ़र्मान ) कर रक्खा है कि दोनों ( इसी तरह अपने ) बँधे हुये वक़्तों में पड़े चल रहे हैं। ( लोगो ! ) यही अल्लाह तो तुम्हारा पर्वर्दिगार है, उसीकी सल्तनत है और उसके सिवा जिन ( माबूदों ) को तुम पुकारते हो, ज़रा सा भी तो इख़्तियार नहीं रखते ० तुम उनको ( कितना ही ) बुलावो ( अव्वल ) तो वह तुम्हारे बुलाने को सुनेंगे नहीं और ( बिलफ़र्ज़ ) सुनें भी, तो तुम्हारी फ़रियाद-रसी न कर सकें और (तुम जो उनको शरीक-ख़ुदाई बना रहे हो ) क़यामत के दिन ( यही ) तुम्हारे शिर्क से मुकर बैठेंगे और ( ऐ मुख़ातब ! ख़ुदा जो हर चीज़ की हक़ीक़त से ) वाक़िफ़ ( है, इन शरीकों की बे-हक़ीक़ती उस ) जैसा तो तुमको कोई बताने का नहीं ० लोगो ! तुम ( हमा-वक़्त ) ख़ुदा के मोहताज हो और अल्लाह ( जो है, तो ) वही बेनियाज़ ( है और सारी ) ख़ूबियाँ रखता है ०—

ثلث

٤

---

( सब कुछ संसार निवासियों के लिये कठिन, वरन् असम्भव और ) अल्लाह के लिये (अति) सरल है। ( हे मनुष्यो ! तुमने स्थल में हमारी शक्ति के चमत्कार देखे, अब कुछ जल की ओर भी ध्यान दो। देखो! प्रत्येक स्थान का जल एक ही दृष्टि-गोचर होता है, परन्तु क्या ईश्वर की लीला है कि अपने स्वाद ) और ( रङ्ग की दृष्टि से ) दो दरिया ( यदि बराबर बहते हुये भी मिलेंगे, तथापि ) समान नहीं ( होंगे )। एक ( दरिया ) बहुत मीठा ( अर्थात ) उसका जल ( प्यास हरने वाला और अत्यन्त ) स्वादिष्ट ( होता ) है और एक ( का जल कहीं ) खारी ( कहीं ) कड़ुवा ( माहुर )। और ( जल का रंग तथा स्वाद पृथक पृथक होते हुये भी ) तुम ( लोग ) प्रत्येक ( दरिया ) से ( मछलियों का शिकार करते हो और उनका ताज़ा ) ताज़ा माँस खाते हो और ( उनमें से ) आभूषण ( बनाने के लिये मोती ) निकालते हो, जिसको ( तुम प्रसन्नता-पूर्वक ) पहिनते हो ॥

और ( देखने वाले ) तू देखता है कि जहाज़ दरिया में ( जल को ) चीरते हुये जाते हैं-( चाहे वह दरिया मीठे पानी का हो वा कड़ुवे तथा खारी पानी का। और यह सब इसलिये है ) जिससे कि ( तुम बिक्री का माल एक ओर का दूसरी ओर लेजाकर ) ख़ुदा का फ़ज़्ल ( अर्थात कृपा प्राप्त करो और अपनी जीविका ) ढूंढो। और ( इसलिये है ) जिससे कि तुम ( जीविका आदि प्राप्त करने के उपरान्त उसकी) कृतज्ञता प्रकाश करो। (निस्सन्देह उसकी शक्ति अपार है। जिस प्रकार उसका जल पर अधिकार है, उसी प्रकार स्थल पर भी और उसी प्रकार संसार की हर वस्तु पर )। वही रात्रि को दिन में प्रवेश कर देता है और दिन को रात्रि में प्रवेश कर देता है। और उसी ने सूर्य्य तथा चन्द्रमा को ( अपने ) आधीन बना रक्खा है कि ( इनमें से ) प्रत्येक नियत समय तक फिरता रहता है ( और संसार को प्रकाश युक्त बना देता है। हे संसार के निवासियो ! ) यही तुम्हारा अल्लाह है। ( यही ) तुम्हारा पालनहारा है। उसी के लिये ( समस्त संसार की ) बादशाही है। और उसके अतिरिक्त जिसको तुम पूजते हो, वह ( संसार की रचना करने वाले तथा पूज्य तो क्या हो सके हैं )—खजूर की गुठली ( के ऊपर ) की झिल्ली ( तक ) के भी मालिक नहीं ॥

( इन असत्य पूज्यों की विवशता की यह दशा है कि ) यदि तुम उनको ( किसी प्रयोजन से ) पुकारो, तो तुम्हारी पुकार न सुनें। और यदि ( मान लो कि ) सुन भी लें ( तो ) तुम्हें उत्तर न दे सकें ( और तुम्हारी कामना पूर्ण न कर सकें। यह दशा तो इनकी दुनिया में है ) और ( तुम जो इनको ख़ुदा का साझी समझे बैठे हो, तो )क़यामत में यह तुम्हारे ( इस ) शिर्क से ( साफ़ ) मुकर जायँगे ( और कहेंगे कि हमने इनसे अपनी पूजा पाठ के लिये कुछ नहीं कहा था। इन्होंने जो कुछ किया, अपनी इच्छा से किया )। और ( हे पैग़म्बर ! क़यामत की जो दशा हम तुमसे वर्णन करते हैं, वह बिल्कुल सत्य है। और हर वस्तु की ) ख़बर रखने वाले ( ख़ुदा ) की तरह ( क़यामत की दशा की ) तुम्हें कोई सूचना नहीं दे सका। हे मनुष्यो ! तुम ( सबके सब अपनी हर एक बात और अपने हर काम में ) अल्लाह ( की सहायता ) के मोहताज हो। और अल्लाह ( तुम सबसे) बे पर्वाह है ( और वह हर दशा में ) प्रशंसनीय (तथा माननीय ) है ॥

إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ
أُخْرَىٰ ۚ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا
يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا
تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ
وَالْبَصِيرُ ۝ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ۝ وَلَا
الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ
وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۖ وَمَا
أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ۝ إِنْ أَنتَ إِلَّا
نَذِيرٌ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ
وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝ وَإِن

वह चाहे तो तुम ( सब ) को ( ज़मीन के परदे परसे उठा ) ले जाए और नई ख़ल्क़त ला बसाये ० और यह ( बात ) अल्लाह पर ( कुछ भी ) दुश्वार नहीं ० और ( क़यामत के दिन ) कोई शख़्स किसी दूसरे का बार ( गुनाह ) अपने ऊपर नहीं लेगा और अगर किसी पर ( गुनाहों का बड़ा ) भारी बोझ हो और वह अपना बोझ बटाने के लिये ( किसी को ) बुलाये, तो उसका ज़रा सा भी बोझ नहीं बटाया जायगा। अगर्चे वह ( जिसको इसने बुलाया है, उसका ) रिश्तेदार ( ही क्यों न ) हो। ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम तो बस उनही लोगों को डरा सकते हो, जो बे देखे अपने पर्वर्दिगार से डरते और नमाज़ पढ़ते हैं और जो शख़्स सुधरता है, तो अपने ही ( फ़ायदे के ) लिये सुधरता है और ( आख़िरकार सबको ) अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है ० और अन्धा और आंखों वाला बराबर नहीं (हो सकता) ० और न तारीकी और रोशनी ० और न छावँ और धूप ० ओर न ज़िन्दे और मुर्दे बराबर हो सकते । अल्लाह जिसको चाहता है, बात के सुनने ( मानने ) की तौफ़ीक़ देता है और ( ऐ पैग़म्बर ! ) जो लोग क़ब्रों में ( मदफून ) हैं, तुम उनको ( अपनी बातें ) सुना नहीं सकते ( और इन काफ़िरों को भी मुर्दे ही समझो ) ० तुम तो ( अज़ाब-ख़ुदा से ) डराने वाले हो और बस-( लोगों को इख़्तियार है कि सुनें या न सुनें ) ० फ़िल्वाक़े हमही ने तुमको ( ख़ुशनूदीए-ख़ुदा की ) ख़ुश-ख़बरी सुनाने वाला और ( अज़ाब-ख़ुदा से ) डराने वाला ( बनाकर ) भेजा है और कोई उम्मत ऐसी नहीं ( हुई ) कि उसमें कोई डराने वाला न गुज़रा हो ०—

---

यदि वह चाहे ( तो ) तुम्हें ( संसार से उठा ) ले जाय ( और तुम्हारी अवज्ञा के कारण तुम्हें नष्ट भ्रष्ट करदे ) और ( तुम्हारे बदले इस संसार में ) कोई नये प्राणी ला बसावे—( जो आज्ञाकारी हों। तुम्हारी तरह अवज्ञाकारी न हों )। और यह ( तुमको नष्ट करके तुम्हारे स्थान पर दूसरों को बसाना ) ख़ुदा के लिये कुछ कठिन ( काम ) नहीं है ( अति सरल है—परन्तु वह ऐसा नहीं करता; धीरज से काम लेता है )। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे ( के पापों ) का बोझ ( कदापि ) न उठावेगा। और यदि कोई भारी बोझ वाला अपने ( पापों का ) बोझ उठाने के लिये ( किसी दूसरे को ) पुकारे ( गा ) तो कोई उस ( के बोझ ) में से कुछ भी न उठावे ( गा )—यद्यपि (वह) नातेदार ( ही क्यों न ) हो ॥

( हे पैग़म्बर ! यह मुश्रिक लोग जो तुम्हारी किसी बात का विश्वास नहीं करते, तो अपने लिए कुछ अच्छा नहीं करते—किन्तु तुम इनकी कुछ पर्वाह न करो ) तुम तो केवल उन ही लोगों को ( ख़ुदा के अज़ाब तथा क़यामत आने के दिन से ) डराते हो, जो बिन देखे अपने पालन कर्त्ता से भय खाते ( और शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता रखते हैं ) और ( ख़ुदा की आज्ञा मानते हैं। जैसे ) नमाज़ ( तथा रोज़ा आदि को ) अदा करते रहते हैं। और जो कोई सुधरेगा, वह अपने ही लिये सुधरेगा ( और जो कोई पथ-भ्रष्ट होगा, तो उसकी पथ-भ्रष्टता का दण्ड उसी को भोगना पड़ेगा )। और ( अन्त में ) सबको अल्लाह ( ही ) की ओर लौट कर जाना है। और ( यह तो हर मन्द-बुद्धि वाला भी समझ सकता है कि ) अन्धा और डिठियारा बराबर नहीं ( हो सकते ) और न अन्धकार और प्रकाश, और न साया और धूप ( बराबर हो सकते हैं ) ॥

और न ज़िन्दे और मुर्दे ( परस्पर ) बराबर हैं। ( बस इसी तरह ईमान वाले और बेईमान बराबर नहीं हो सकते। और न कोई अज्ञान सदाचारी विद्वान के तुल्य है। निस्सन्देह यह प्रभाव युक्त दिव्य उदाहरण ) अल्लाह जिसको ( सुनाना ) चाहता है, सुनाता है। ( और हे पैग़म्बर ! तुम तो उन ही लोगों को उपदेश दे सकते हो, जिनकी हृदयरूपी कृषि इस्लाम की वर्षा से हरी भरी होती है)। और जो( अपनी अज्ञानता तथा पथ-भ्रष्टता के कारण मुर्दे की तरह ) क़ब्रों में ( पड़े हुये ) हैं, उनको नहीं सुना सकते-( क्योंकि वह इस योग्य नहीं हैं। और ) तुम तो केवल ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डराने वाले ( और आने वाले अज़ाब की सूचना देने वाले ) हो। ( अब कोई डरे या न डरे। तुमको इसकी चिन्ता कदापि न करनी चाहिये । हे पैग़म्बर ! ) निस्सन्देह हमने तुमको सत्य धर्म देकर ( लोगों के पास स्वर्ग का ) मंगल समाचार सुनाने वाला और ( नर्क से ) डराने वाला ( बनाकर ) भेजा है। और (तुमको हमने कोई आज नया नहीं भेजा, बरन ) कोई जाति ( भी अब तक ) ऐसी नहीं ( हुई ) जिसमें कोई डराने वाला न आया हो ॥

يكذبوك فقد كذب الذين من قبلهم
جاءتهم رسلهم بالبينت وبالزبر وبالكتب
المنير ثم اخذت الذين كفروا فكيف
كان نكير الم تر ان الله انزل من السماء ماء
فاخرجنا به ثمرت مختلفا الوانها ومن
الجبال جدد بيض وحمر مختلف الوانها
وغرابيب سود ومن الناس والدواب
والانعام مختلف الوانه كذلك انما
يخشى الله من عباده العلمؤا ان الله عزيز
غفور ان الذين يتلون كتب الله واقاموا
الصلوة وانفقوا مما رزقنهم سرا وعلانية
يرجون تجارة لن تبور ليوفيهم اجورهم
ويزيدهم من فضله انه غفور شكور و

الذى

और अगर ( यह कुफ़्फ़ार ) तुमको झुटलायें, तो जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, वह भी ( अपने वक़्त में अपने पैग़म्बरों को ) झुटला चुके हैं-( बावजूदे कि ) उनके पैग़म्बर उनके पास मोजिज़े और सहीफ़े और ऐसी किताबें लेकर आये, जिनमें नूर ( हिदायत ) था-( मगर इस पर भी झुटलाया किये ) ० फिर ( तो ) हमने ( भी ) मुन्किरों को धर पकड़ा-तो ( ऐ पैग़म्बर ! तुमने देख लिया होगा कि ) हमारी नाख़ुशी (उनके हक़ में) कैसी ( ज़बून ) हुई ० ( ऐ मुख़ातब ! ) क्या तूने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की कि अल्लाह ही ने आसमान से पानी उतारा, फिर उस ( पानी ) के ज़रिये से हमने मुख़्तलिफ़ रङ्गतों के फल निकाले और ( इसी तरह ) पहाड़ों में मुख़्तलिफ़ रङ्गतों के कुछ तबक़े हैं-( बाज़ ) सफ़ेद और ( बाज़ लाल ) और ( बाज़ ) काले-स्याह ० और इसी तरह आर्दामयों और जामवरों और चारपायों की रङ्गतें भी कई कई तरह की हैं। ख़ुदा से तो उसके वही बन्दे डरते हैं, जो ( ख़ुदा के आसार-कुद्रत का ) इल्म रखते हैं। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त (और ) बख़्शने वाला है ० जो लोग किताबु-ल्लाह की तिलावत करते और नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रक्खा है, उसमें से छुपाकर और खुले तौर पर ( राह-ख़ुदा में ) ख़र्च करते हैं—बेशक यह ऐसे ब्योपार की आस लगाये बैठे हैं, जिसमें कभी घाटा हो ही नहीं सकता ० क्योंकि ख़ुदा उनको उनके अज्र पूरे पूरे भर देगा और अपने फ़ज़्ल से उनको ज़ियादा भी देगा—( क्योंकि ) वह ( बड़ा ) बख़्शने वाला और ( बड़ा ) क़द्रदान है ०—

और ( हे पैग़म्बर ! ) यदि यह तुमको झुठलायें, तो ( यह भी कोई नई बात नहीं है )। जो लोग इनसे पहिले थे, वह भी ( अपने समय के पैग़म्बरों को इसी प्रकार ) झुठला चुके हैं—( यद्यपि तुम्हारी तरह ) उनके पास ( भी ) उनके पैग़म्बर प्रकाशवान् चिन्ह ( अर्थात् मोजिज़े ) और सहीफ़े अर्थात छोटी पुस्तकें तथा प्रकाशयुक्त पुस्तकें ( अपने ) साथ लेकर आये थे । फिर ( जब वह अपनी उद्दण्डता में सीमा पर हो गये, तो ) हमने उन ( सब ) लोगों को-जिन्होंने कुफ़्र किया ( अपने अज़ाब में ) पकड़ लिया—( जैसा कि उस समय के काफ़िर लोग भी जानते हैं कि उन पर ) हमारा अज़ाब कैसा ( कष्ट-दायक ) हुआ। ( अतः हे मनुष्य ! अपनी समझ बूझ ठीक कर ! और संसार की प्रत्येक वस्तु से शिक्षा प्राप्त कर ! )। क्या तुझे नहीं दोखता कि ( तेरे ) ख़ुदा ने आकाश से ( अपनी कृपा का ) जल ( पृथ्वी पर ) अवतीर्ण किया। ( और ) फिर हमने उससे ( अर्थात उस जल के द्वारा ) रङ्ग-बिरङ्गे फल ( फूल ) उगाये और ( हम ही ने ) पर्वतों ( को खूंटे की तरह भूमि पर गाड़ दिया है कि जिन ) के भाग अनेक रंगों के ( होते ) हैं ( अर्थात किसी स्थान पर उनके पाषाण ) श्वेत ( रंग के होते हैं ) और ( किसी स्थान पर ) लाल ( रंग के ) और (किसी स्थान पर ) बहुत ही काले (रंगत के )॥

और ( जिस प्रकार पर्वतों के पाषाण और फल फूल रंग बिरंगे होते हैं )—इसी प्रकार मनुष्यों तथा पशुओं में भी बहुत से ऐसे ( मनुष्य और पशु ख़ुदा के उत्पन्न किये हुए ) हैं, कि जिनके रंग पृथक पृथक होते हैं ( एक की रंगत दूसरे के समान नहीं होती—परन्तु इतने ) ख़ुदा के बन्दों में ख़ुदा से तो केवल वही लोग डरते ( और उसकी शक्ति, महानता तथा श्रेष्ठता को वही जानते ) हैं, जो ( सच्चे सदाचारी और निपुण ) विद्वान हैं। ( उनके अतिरिक्त सबके सब ख़ुदा की ओर से अन्धे और काम क्रोध मद लोभ में फंस कर कुफ़्र शिर्क की पूजा करते हैं )। निस्सन्देह अल्लाह ( इन दुराचारियों को दण्ड देने के लिये बहु ) शक्तिमान ( और ऐसे सदाचारियों तथा विद्वानों पर कृपा करने के लिये अति ) क्षमा करने वाला ( तथा कृपालु ) है॥

निस्सन्देह जो ( ऐसे सदाचारी तथा विद्वान हैं और ) अल्लाह की पुस्तक ( अर्थात क़ुर्आन ) का पाठ करते ( और उसके आदेशों को जानने बूझने और उनका पालन करने ) हैं और ( पांचों समय की ) नमाज़ को ( सर्वदा नियमानुसार सहर्ष ) अदा करते हैं और जो जोविका ( तथा धन दौलत ) हमने उनको दिया है, उसमें से ( हमारी आज्ञानुसार हमारे मार्ग में ) व्यय करते हैं—प्रगट (रूप से) भी और गुप्त ( रूप से ) भी, वह ( ऐसे उत्तम ) व्यौपार ( से लाभ प्राप्त करने ) की आशा रखते हैं, जो कभी नष्ट न होगा। ( अर्थात जिसमें अनन्त लाभ होंगे। और उसके अधिकारी हैं ) कि अल्लाह उनको उन ( के कामों ) का पूरा पूरा बदला प्रदान करे । और अपनी कृपा से उन्हें ( उनके बदले से कुछ ) अधिक ( भी ) देवे । निस्सन्देह वह बहु क्षमा ( तथा कृपा ) करने वाला ( और सदाचारियों के कर्मों की ) क़द्र करने वाला है॥

الَّذِيٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّ
قًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيرٌۢ بَصِيرٌ ۝
ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ
عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۚ
وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِإِذْنِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا
يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۚ
وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيٓ
أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝
الَّذِيٓ أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهٖ لَا يَمَسُّنَا
فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا
وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي

(ऐ पैग़म्बर ! यह ) किताब जो हमने वही के ज़रिये से तुम पर नाज़िल की है, यह ( बिल्कुल ) ठीक है ( और ) जो ( किताबें ) इससे पहिले की हैं-( यह ) उनकी तस्दीक़ भी करती है। बेशक अल्लाह अपने बन्दों ( के हाल ) से ख़बरदार ( और उनके आमाल को ) देख रहा है • फिर हमने अपने बन्दों में से उन लोगों को (इस) किताब का वारिस ठहराया, जिनको हमने ( अह समझ कर उसकी ख़िदमत के लिये ) मुन्तख़ब फ़र्माया ( यानी मुसलमानों को ) फिर उनमें से ( बाज़ तो इस पर अमल न करके ) अपनी जानों पर सितम कर रहे हैं और ( बाज़ ) उनमें से बीच की चाल चले जाते हैं और ( बाज़ ) उनमें से ( ऐसे भी हैं, जो ) खुदा के हुक्म से नेकियों में ( औरों से ) आगे बढ़े हुए हैं—यही तो ( खुदा का ) बड़ा फ़ज़्ल है ० ( और उसका सिला है ) हमेशा रहने के (बहिश्त के) बाग़ कि यह लोग ( रहने के लिये ) उनमें दाख़िल होंगे ( और ) वहां उनको सोने के कङ्गन और मोती पहिनाये जाएँगे और वहां उनका ( मामूली ) लिबास भी रेशमी होगा ० और (यह लोग नेअमतें पाकर ) कहेंगे कि खुदा का शुक्र है, जिसने ( हर तरह का रंज व ) ग़म हमसे दूर कर दिया। बेशक हमारा पर्वर्दिगार बड़ा बख़्शने वाला (और ऐसा) बड़ा क़द्रदान है ० कि उसने हमको अपने फ़ज़्ल से ठहरने के ( लिये ऐसे ऐसे उम्दा ) घर में ला उतारा कि यहां हमको न तो ( किसी तरह की ) तकलीफ़ पहुंचती है और न यहां हमको ( किसी तरह की ) तकान लाहिक़ ( हाल ) होती है ० और जो लोग मुन्किर हैं, उनके लिये दोज़ख़ की आग ( तय्यार ) है-न तो उनको क़ज़ा आती है कि मर रहें और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाता है। हम हर एक नाशुक्र को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं ०—

---

और ( हे रसूल ! ) जो पुस्तक हमने तुम्हारे पास ( वही-द्वारा ) भेजी है, वह बिलकुल सच्ची ( पुस्तक ) है। ( और ) जो ( आकाशीय पुस्तकें ) उससे पहिले ( आ चुकी ) हैं, उनका समर्थन कर रही है। निस्सन्देह अल्लाह अपने ( बुरे भले सब ) बन्दों से अभिज्ञ है। ( और उनको दशा को खूब ) देख रहा है। ( चूंकि हमें अपने बन्दों की दशा का पूर्ण ज्ञान है, इसलिये हमने इस पुस्तक अर्थात क़ुर्आन को अपने मुख्य बन्दे मुहम्मद पर उतारा। और ) पुनः हमने अपने बन्दों में से उन (सौभाग्य-वान ) लोगों को यह पुस्तक प्रदान की, जिनको हमने ( योग्य समझ कर इसकी आज्ञा पालन करने के लिये ) चुन लिया ( अर्थात ईमान वाले लोगों को )-परन्तु ( उनमें से सब लोगों ने इसकी आज्ञाओं का पालन नहीं किया, बरन् ) कुछ तो उनमें से ( उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध करते और ) अपने ऊपर अत्याचार करते हैं और कुछ उनमें से बीच की चाल चलने वाले हैं। (और उसके आज्ञाकारी भी हैं और अवज्ञाकारी भी )। और कतिपय ऐसे भी हैं, जो अल्लाह को आज्ञा ( और उसकी कृपा ) से शुभ कर्मों ( के करने ) में ( अपने साथियों से) आगे ( आगे ) हैं ॥

( और ) यह ( उनकी दशा पर खुदा की बहुत ) बड़ी कृपा है ( कि उसने ऐसी उत्तम पुस्तक उनको प्रदान की और पुनः उसकी आज्ञा पालन की योग्यता प्रदान की। इस सदाचार के बदले खुदा के यहां उनके लिये ) जन्नत के ( हरे भरे ) बाग़ हैं, जिनमें वह (सर्वदा सर्वदा आनन्द भोगने के लिये ) प्रवेश करेंगे। उन ( बाग़ों ) में उनको स्वर्ण के कंगन और मोती पहिनाये जायँगे और उनके वस्त्र वहाँ रेशमी होंगे। और ( रंज दुख उनके पास भी होकर न फटकेगा। वह हर्षित तथा प्रफुल्लित होंगे और उसी हर्ष की दशा में ) कहेंगे ( उस ) ख़ुदा को ( बहु ) धन्यवाद, जिसने ( सर्वदा के लिये ) हमसे रंज ( दुख ) को दूर कर दिया। निश्चय रूप से हमारा पालन-हारा ( अपने नेक बन्दों को ) बहु क्षमा करने वाला (और उनका नेकी का ऐसा ) मान करने वाला है कि उसने हमको ( ऐसे दिव्य ) भवन में अपनी कृपा से उतारा, जहाँ हमको न( किसी प्रकार का कभी) कोई दुख पहुंचेगा और जहाँ न कुछ थकन हमारे पास आकर फटकेगी॥

और ( वह लोग ) जो काफ़िर हैं ( और क़ुर्आन को नहीं मानते और अल्लाह के पुरस्कारों की कृतघ्नता करते हैं ) उनके लिये नर्क की ( दहकती हुई ) अग्नि ( तय्यार ) है-( क़यामत के दिन वह उसमें झोंके जायँगे। पुनः ) न तो उनको मृत्यु आएगी कि मर जाएँ ( और कष्ट से मुक्ति पा जाएं ) और न उन पर नर्क का अज़ाब ही कुछ हलका किया जायगा। ( निस्सन्देह ) हम हर ( कृतघ्न ) काफ़िर को ऐसा ही ( कठिन ) दंड देते हैं ॥

كُلَّ كَفُوْرٍ ۝ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا رَبَّنَا
أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ
أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ
وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۝ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ
نَّصِيْرٍ ۝ إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ٤
إِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ
خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ
وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا
وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۝
قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ أَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْأَرْضِ
أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا
فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ بَلْ إِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ

بعضهم

और यह लोग दोज़ख़ में ( पड़े ) चिल्लाते होंगे कि ऐ हमारे पर्वदिगार ! हमको ( यहां से ) निकाल (कर फिर दुनिया में ले चल !) कि हम जैसे अमल करते रहे थे, वैसे नहीं—( बल्कि ) नेक अमल करेंगे। ( हम उन को जवाब देंगे कि ) क्या हमने तुमको इतनी उमरें नहीं दी थीं कि जिस को सोचना ( मंज़ूर ) होता, वह इतनी उम्र में ( अच्छी ख़ासी तरह ) सोच समझ लेता और ( इसके अलावा ) तुम्हारे पास ( हमारे अज़ाब से ) डराने वाला ( रसूल भी ) पहुंचा, तो अब ( अपने किये के ) मज़े चक्खो ! कि नाफ़र्मान लोगों का ( यहां ) कोई मददगार नहीं ० बेशक अल्लाह आस्मानों ( की ) और ज़मीन की पोशीदा बातों का जानने वाला है। बेशक वह ( लोगों के ) दिली ख़यालात ( तक ) से ( भी ) वाक़िफ़ है ० वही ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जिसने तुम ( लोगों ) को ज़मीन में ( अगलों का ) जा-नशीन बनाया। फिर ( इस पर भी ) जो कुफ़्र करता है, उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर ( पड़ेगा ) और जो लोग कुफ़्र करते हैं, उनके कुफ़्र की वजह से ख़ुदा के हां ( उनसे ) ना-रज़ामन्दी ही बढ़ती चली जाती है और कुफ़्र की वजह से काफ़िरों का घाटा ही होता चला जा रहा है ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि तुम्हें अपने ( इन ) शरीकों ( के हाल ) की ( भी कुछ ) ख़बर है ? जिनको तुम ख़ुदा के सिवा ( पड़े ) बुलाया करते हो। ( ज़रा एक नज़र ) मुझको ( भी तो ) दिखावो, उन्होंने कौन सी ज़मीन बनाई है ? या आस्मानों ( के बनाने ) में उनका ( कुछ ) साझा है ? या हमने इन ( मुश्रिकों ) को कोई किताब दी है कि यह उसकी सनद रखते हैं ? (इनमें से कोई सी बात भी नहीं)—बल्कि (यह) ज़ालिम—

और ( क़यामत के दिन ) यह ( दण्ड भोगने वाले ) उस ( अग्नि ) में ( पड़े २ ) चिल्लायेंगे (और कहेंगे) हे पालन कर्त्ता ! हमको ( इस दुख से ) निकाल ! (और पुनः हमको कुछ अवसर दे !) जिससे कि हम शुभ-कर्म करें ( और पुरस्कार के अधिकारी बनें)—न वैसे (कर्म) जैसे हम (मृत्यु-लोक में) करते थे-(जिनका कि ऐसा कठिन दण्ड हम भोग रहे हैं, परन्तु हम इनकी एक बात भी न सुनेंगे और कहेंगे) क्या हमने तुमको ( इतनी यथेष्ट ) आयु ( संसार में ) नहीं दी थी कि ( तुम में से ) जिसको ( अपने हित-अनहित के विषय में ) सोचना ( समझना ) होता, वह उसमें सोच ( समझ ) लेता और तुम्हारे पास तुमको ( इस अज़ाब से ) डराने वाला ( अर्थात रसूल ) भी आया था। ( उस समय तुम्हारी बुद्धि पर क्यों पर्दे पड़ गये थे ?) अतः ( उस अन्धेपन का) स्वाद चक्खो। (और स्मरण रक्खो ! आज तुम जैसे) अत्याचारियों का कोई ( भी ) सहायक नहीं ( हो सकता। और किसी प्रकार की रिआयत तुम्हारे साथ नहीं की जा सकती )॥

निस्सन्देह अल्लाह आकाशों तथा पृथ्वी के गुप्त भेदों से ( भली भांति ) अभिज्ञ है । निस्सन्देह वह ( लोगों के ) हृदयों की बात ( और उनकी गुप्त-भावनाओं को भली भांति ) जानता है। वही ऐसा ( सर्व शक्तिमान ) है, जिसने तुमको पृथ्वी पर बसाया ( और तुम्हारे हित-अनहित से तुमको सूचित किया )। अतः ( अब ) जो कोई भी कुफ़्र करेगा; तो उसका भार उसी ( के सिर ) पर पड़ेगा। और काफ़िरों का कुफ़्र उनके पालन कर्त्ता के यहाँ ( भी ) केवल ( ख़ुदा की ) अप्रसन्नता ( तथा कोप ) ही को बढ़ाएगा ( और किंचित लाभ न पहुंचाएगा )। और काफ़िरों का कुफ़्र ( संसार में भी ) केवल हानि ही ( हानि ) बढ़ाएगा-( उससे किसी प्रकार का भी लाभ न होगा॥ )

(हे मुहम्मद !) तुम ( इन क़ाफ़िरों से) कहो कि (मूर्खों ! इन मूर्तियों में ऐसी कौन सी विशेषता तुमको दिखाई देती है, जिसके कारण तुम इन पर मोहित हो और इन्हें ख़ुदा के समान पूज्य ठहराते हो। तनिक ) मुझे बताओ ( तो कि ) इन्होंने पृथ्वी का कौनसा भाग रचा है ? अथवा आकाशों ( की रचना ) में इनका ( ख़ुदा के साथ ) क्या साझा है ? ( और यदि इस बात पर कोई प्रमाण इनके पास नहीं है, तो हे पैग़म्बर ! ) क्या हमने इनको कोई ( ऐसी ) पुस्तक दी है कि ( जिसमें इनके दावे का समर्थन और उसके प्रमाण वर्णन किये गये हैं। और यह ) उसके किसी प्रमाण ( से इतने निश्चिन्त हैं कि स्वयं भी अपनी बात ) पर दृढ़ हैं। ( और अन्य लोगों के समक्ष भी उसको वर्णन करके अपने दावे को सिद्ध कर सकते हैं। वास्तव में इनका दावा किसी प्रमाण से सिद्ध नहीं होता )—वरन यह अत्याचारी ( तथा दुराचारी ) केवल ( कल्पित बातें करते हैं। और परस्पर ) एक दूसरे से निरे छल ( कपट की बातों ) का वादा करते हैं । ( और कहते हैं कि संसार में तो यह मूर्तियां कष्ट निवारण करती हैं और परलोक में हमारा पक्षपात करेंगी ) ॥

بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ۝ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن زَالَتَا
إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّن بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ
حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ
لَئِن جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى
الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝
اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا
يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنظُرُونَ
إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ
تَبْدِيلًا ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ۝ أَوَلَمْ
يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ

जो एक दूसरे से वादे करते हैं, बस ( निरी ) धोके ( की टट्टियाँ ) हैं ० बेशक अल्लाह आस्मानों ( को ) और ( नीज़ ) ज़मीन को थामे हुये है कि ( कहीं अपनी जगह से ) टल न जायँ ( और बिल्फ़र्ज़ ) टल जायँ, तो फिर उसके सिवा कोई ( भी ऐसा ) नहीं, जो उनको थाम सके। बेशक अल्लाह ( बड़ा ) तहम्मुल वाला ( और बन्दों के गुनाहों का ) बख़्शने वाला है ० और (यह मुन्किर तो) अल्लाह की बड़ी बड़ी पक्की क़समें खाया करते थे कि इनके पास ( खुदा की तरफ़ से ) कोई डराने वाला आयेगा, तो ( कोई सी उम्मत भी हो )—वह ज़रूर हर एक उम्मत से ज़ियादा रूबराह होंगे। फिर जब डराने वाला इनके पास आ पहुंचा, तो ( उसके आने से ) इनकी नफ़्रत को ( उल्टी ) तरक़्क़ी हुई ० कि लगे मुल्क में सर्कशी और बुरी ( बुरी ) तदबीरें करने और बुरी तदबीर (उलटी) बुरी तदबीर करने वाले ही पर पड़ती है। तो हो न हो ! (यह लोग) उसी बर्ताव के मुन्तज़िर हैं, जो अगले लोगों के साथ होता रहा है। तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम खुदा के क़ाइदे को हरगिज़ बदलता हुआ न पावोगे और न खुदा के क़ाइदे को हरगिज़ टलता हुआ पावोगे ० क्या ( यह लोग ) मुल्क में चले फिरे नहीं और नहीं देखा कि जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उनका कैसा ( ख़राब ) अन्जाम हुआ—हालांकि बल-बूते में ( वह लोग ) इनसे कहीं बढ़ कर थे और अल्लाह ( कुछ गया गुज़रा ) नहीं है कि आसमान व ज़मीन में उसको कोई चीज़ ( भी ) आजिज़ कर सके—

---

निस्सन्देह अल्लाह ( ही ) ने ( इन ) आकाशों और ( इस ) पृथ्वी को थाम रक्खा है कि ( कहीं इन दुराचारियों के दुराचार तथा कुकर्मों को देखकर ) वह अपने स्थान से टल न जायँ। और ( सत्य बात यह है कि ) यदि ( कहीं ) वह अपने स्थान से टल जायं, तो खुदा के अतिरिक्त ( किसी में भी इतनी शक्ति ) नहीं कि उनको रोक ले ( और उन्हें गिरने न दे )। निस्सन्देह अल्लाह बहु-सहन-शीलता करने वाला ( तथा ) क्षमा करने वाला है ( कि पापियों को पाप करते देखता है, परन्तु अज़ाब नहीं भेजता )॥

( परन्तु यह मक्के के काफ़िर किसी प्रकार उसकी महानता, श्रेष्ठता) और ( शक्ति तथा सत्ता को नहीं मानते–यद्यपि हे रसूल ! तुम्हारे नबी होकर आने से पहिले ) इन्होंने बड़ी पक्की सौगन्ध खाई थी ( और कहा था ) कि यदि कोई डराने वाला ( अर्थात पैग़म्बर ) इनके पास आएगा, तो यह ( उस समय संसार की समस्त विद्यमान ) जातियों ( अर्थात यहूदी ईसाई आदि ) में से हर एक से अधिक मार्ग पर आने वाले ( अर्थात ईमान लाने वाले और आज्ञाकारी ) होंगे—परन्तु जब वह डराने वाले ( पैग़म्बर अर्थात तुम ) आगए, तो ( समस्त ) भू-मण्डल में अपने आपको ( सबसे ) बड़ा ( सम्मान वाला ) समझने के कारण ( सत्य की ओर से इनकी ) घृणा ही में अधिकता हुई। और ( इनके सुकर्मी बनने के बजाय इनके ) छल ( कपट ) ही में ( और विशेषता हो गई—किन्तु इन्हें यह ज्ञात नहीं कि इस घृणा ) और ( छल कपट से खुदा की वा उसके रसूल की वा मुसलमानों की किंचित हानि नहीं, बरन ) छल ( कपट ) का भार छलियों ही ( के शिर ) पर पड़ता है॥

अतः यह ( भी ) केवल उसी व्यवहार की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो पूर्व ( समय के ) लोगों ( और इन्हीं के समान कट्टर काफ़िरों ) के साथ होता रहा है। (अर्थात अज़ाब उतारना तथा कुकर्मियों को दण्ड देना)–तो (वह तो एक न एक दिन उनके साथ होना ही है। हे रसूल !) तुम अल्लाह के व्यवहार में ( किंचित मात्र भी ) परिवर्तन न पाओगे। ( जिस प्रकार उसने पूर्व-कालिक अभियुक्तों को दण्ड दिया था, उसी प्रकार इनको भी देगा )। और (हे रसूल !) तुम खुदा के व्यवहार को बदलता हुआ कदापि न पाओगे ( कि अपराधियों के बदले निरपराधियों को दण्ड दे दिया जावे )। क्या यह लोग ( खुदा की ) पृथ्वी में ( कहीं ) चले फिरे नहीं, जो इन्हें दीख पड़ता कि उन लोगों का कैसा ( बुरा ) परिणाम हुआ, जो इनसे पहिले हो चुके ( और जीवन भर इन्हीं की तरह कुफ़्र शिर्क में तल्लीन रहे )—यद्यपि शक्ति ( तथा बल पराक्रम) में भी वह इनसे बहुत बढ़े हुए थे। और अल्लाह ( शंका रहित है। वह मनुष्यों तथा मूर्तियों की तरह दुर्बल और अपाहिज) नहीं है, कि पृथ्वी और आकाशों में कोई वस्तु उसको विवश कर सके—

वेशक ( वह सबके हाल से ) वाक़िफ़ ( और ) बड़ी क़ुदरत वाला है ० और अगर ख़ुदा लोगों को उनकी बद आमालियों की पादाश में पकड़ता, तो रूये-ज़मीन पर किसी जानदार को ( बाक़ी ) न छोड़ता, मगर वह एक वक़्त मुक़र्रर ( यानी क़यामत ) तक लोगों को मोहलत देता है, फिर जब उनका ( वह ) वक़्त आ पहुंचेगा, तो अल्लाह अपने बन्दों ( के हाल ) को देख रहा है-( जैसा जिसका अमल होगा, वैसा उसको बदला देगा) ०

## सूरत—यासीन

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ८३ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है)० यासीन ० क़ुर्आन की क़सम, जिसमें (सर्तासर) दानाई की बातें हैं ० कि ( ऐ मुहम्मद ! ) कुछ शक नहीं कि मिनजुम्ला ( और ) पैग़म्बरों के तुम भी ( पैग़म्बर ) हो ० ( और दीन के ) सीधे रस्ते पर (हो) ० ( यह क़ुर्आन ख़ुदाए ) ज़बर्दस्त ( और ) मेहर्बान ने उतारा है ० ताकि तुम ऐसे लोगों को ( अज़ाब-ख़ुदा से ) डरावो, जिनके बाप ( दादा तुमसे पहिले किसी पैग़म्बर की मार्फ़त अज़ाब-ख़ुदा से ) नहीं डराये गये और ( यही सबब है कि) वह (दीन से) ग़ाफ़िल हैं ० इनमें से अक्सर पर तो फ़र्मूदए (ख़ुदा) पूरा हो चुका है, तो यह ( किसी तरह ) मानने वाले नहीं ० हमने इनकी गर्दनों में ( भारी भारी ) तौक़ डाल दिये हैं और वह ठोड़ियों तक ( फंसे हुये ) हैं। तो इनके सर ( ऐसे ) उलल कर रह गये हैं ( कि इनको रस्ता दिखाई ही नहीं देता ) ० और हमने एक दीवार ( तो ) इनके आगे बनाई और एक दीवार इनके पीछे-

وَلَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝ وَلَوْ
يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ
ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ
مُّسَمًّى فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ
بَصِيرًا ۝

سُورَةُ يٰسٓ — ثَلٰثٌ وَّثَمَانُوْنَ آيَة

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝
يس ۝ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝
عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ تَنزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝
لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۝
لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا
فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُم مُّقْمَحُونَ ۝ وَجَعَلْنَا
مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا

فَأَغْشَيْنَٰهُمْ

---

निस्सन्देह वह ( सबकी दशा से ) भली भांति अभिज्ञ ( और सब पर बलवान और ) शक्तिवान है-( वह दुराचारियों को ज चाहेगा, अपने अज़ाब में पकड़ लेगा। उसके आगे किसी को दम मारने का साहस नहीं )। और यदि अल्लाह ( इन) लोगों को उनके कुकर्म के कारण ( अपने अज़ाब में ) पकड़ता, तो ( अब तक तो सब ही को नष्ट-भ्रष्ट कर चुका होता और ) भूतल पर ( इनमें से ) किसी जीव धारी को भी ( शेष ) न छोड़ता-किन्तु ( उसने आज तक इन्हें अज़ाब देना ही न चाहा ) । वह ( तो ) इन्हें एक नियत-काल तक ढील रहा है। अतः जब उनका ( वह नियत ) समय आ जायगा, तो अल्लाह अपने ( सब ) बन्दों को देख रहा है ( कि जैसे जैसे कर्म वह कर र हैं-वह उन्हें उनके कर्मानुसार ही दण्ड तथा पुरस्कार देगा ) ॥

## सूरत—यासीन

### मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ८३ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥

( हम ) हिकमत वाले क़ुर्आन की सौगन्ध ( खाकर कहते हैं कि हे मुहम्मद ! ) तुम ( हमारे ) रसूलों में से ( एक रसूल ) ह ( और ख़ुदा के बताए हुए ) सीधे मार्ग पर ( हो । और यह क़ुर्आन ) बलवान ( तथा ) कृपालु ( ख़ुदा ) ने ( तुम पर इस हेतु उतारा है, जिससे कि तुम उन लोगों को ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डराओ-( जो इस्माईल की सन्तान हैं और ) जिनके पूर्वज ( इस्माईल पश्चात अल्लाह के अज़ाब से ) नहीं डराये गये। ( अर्थात उनकी ओर इस्माईल से लेकर तुम्हारे समय तक कोई पैग़म्बर नहीं आया ) अतः ये (ही कारण है कि सत्य मार्ग से ) अचेत ( और भटके हुए ) हैं ॥

इनमें से बहुत लोगों पर ( ख़ुदा की ) बात सत्य सिद्ध हुई ( अर्थात सर्वदा के लिये नर्क-कुण्ड के अधिकारी ठहरे )-तो ( रसूल ! तुम इनसे आशा रहित हो जाओ)। यह (कभी मार्ग पर आने वाले तथा तुम पर) ईमान लाने वाले नहीं। निस्सन्देह हमने इनकी गर्दन में ( पथ-भ्रष्टता के ) तौक़ ( अर्थात कुण्डल ) डाल दिये हैं। अतः वह उनकी ठोड़ियों तक फँसे हुये हैं ( अर्थात उनकी गर्दन तथा ठोड़ दोनों जकड़ी हुई हैं )-जिससे ( उनकी गर्दन तो अकड़ गई और ) सिर ऊपर उठ गये ( और ज्ञान इन्द्रियाँ ज्ञान रहित हो गईं। अब उन किसी सत्य बात के सोच विचार की शक्ति नहीं रही )। और हमने एक दीवार उनके आगे ( खड़ी ) करदी है और एक दीवार उनके पीछे

और ऊपर से इनको दिया ढांक, तो यह देख हो नहीं सकते ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) इनके लिये यकसां है कि तुम इनको ( अज़ाब-ख़ुदा से ) डरावो या न डरावो-यह तो ईमान लाने वाले हैं नहीं ० तुम तो बस उसीको डरा सकते हो, जो समझाये पर चले और बे देखे ( ख़ुदाए ) रहमान से डरे। तो उसको ( गुनाहों की ) माफ़ी और ( आमाल नेक के बदले में ) इज़्ज़त के अज्र की ख़ुशख़बरी सुनादो ० बेशक हमही मुरदों को जिलायेंगे और जो ( अमल ज़ाद-आख़िरत बनाकर लोग अपने आगे ) आगे भेजते हैं और ( जो ) आसार उनके ( मरे पीछे दुनिया में बाक़ी रह जाते हैं ) हम ( सबको ) लिख रहे हैं और हमने तो सबही चीज़ों को किताब-वाज़ेह ( यानी लौह-महफ़ूज़ ) में क़लम-बन्द कर रक्खा है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन ( लोगों ) से मिसाल के तौर पर एक गांव वालों का हाल बयान करो कि जब उनके पास पैग़म्बर आये ० बईं-तौर कि ( पहिले तो ) हमने उन की तरफ़ ( दो पैग़म्बर ) भेजे, तो उन्होंने उन दोनों को झुटलाया । इस पर हमने तीसरे ( पैग़म्बर ) से ( उनकी और ) मदद की, तो इन तीनों ने ( मिलकर उनसे ) कहा कि हम तुम्हारे पास ( ख़ुदा के ) भेजे हुये ( आये ) हैं ० वह लगे कहने कि तुमतो बस हमारी ही तरह के आदमी हो और ( ख़ुदाए ) रहमान ने तो कोई चीज़ ( अज़-क़िस्म-किताब वग़ैरा कभी ) उतारी नहीं-तुमतो निरा झूट बोलते हो ० ( पैग़म्बरों ने ) कहा-हमारा पर्वर्दिगार अलीम है कि हम बेशक ( उसी के ) भेजे हुये तुम्हारे पास आये हैं ० और हमारा काम तो ( हुक्म-ख़ुदा का साफ़ ) साफ़ पहुंचा देना है और बस ०—

۴

فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ
ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ
بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝
إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا
وَآثَارَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ
مُّبِينٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ
إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ
اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا
إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ۝ قَالُوا مَا أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُنَا وَمَا أَنزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ
إِلَّا تَكْذِبُونَ ۝ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ
لَمُرْسَلُونَ ۝ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝

---

( और ) पुनः ( छत पाट कर ऊपर से ) हमने उन्हें ढांक दिया है। अतः ये नहीं देख सकते ( अर्थात हठधर्मी तथा उद्दण्डता के कारण इनकी बुद्धि बिलकुल नष्ट हो चुकी है। अतः अब ये सत्य-असत्य की लेशमात्र विवेचना नहीं कर सकते )। और ( अब ) इनके लिये ( दोनों बातें ) समान हैं, चाहे तुम इनको ( नर्क के अज़ाब से ) डराओ-चा इन्हें न डराओ-ये ( कदापि ) ईमान नहीं लावेंगे। तुम तो केवल उसी ( व्यक्ति ) को ( ख़ुदा के अज़ाब से) डरा सकते हो, जो ( क़ुर्आन की ) शिक्षानुसार कर्म करे और अनदेखे ( अपने ) करुणा-निधान ( करुणाकारी ख़ुदा ) से डरे। अतः ( हे रसूल ! ) तुम उस ( व्यक्ति ) को क्षमा तथा श्रेष्ठ फल का मंगल-समाचार सुना दो ॥

निस्सन्देह ( जीवन-मरण, सुख-दुख सब हमारे अधिकार में है। लोगों को हमही ने प्रथम बार उत्पन्न किया था और क़यामत के दिन भी ) हमही ( सब ) मृतक लोगों को जीवित करेंगे और ( उनके कर्मानुसार उन्हें पुरस्कार तथा दण्ड देंगे। निस्सन्देह ) हम वह कर्म भी ( बराबर ) लिखते जा रहे हैं, जिन्हें लोग ( जीवन भर में अपने हाथों करते और अपने हितार्थ ) आगे ( आगे ) भेजते हैं और उनके ( वह शुभ-अशुभ ) चिन्ह भी-( जिन्हें वह मरने के बाद छोड़ जाते हैं ) । और हमने हर वस्तु ( की पूर्ण व्याख्या प्रकाश-मय पुस्तक अर्थात ) लौह-महफ़ूज़ में ( उसके उपस्थित होने से पहिले ही ) लिख रक्खी है। ( हे रसूल ! जो लोग तुम्हें झुठलाते ) और ( ख़ुदा का अस्वीकार करते हैं ) तुम ( उनसे ) उनके ( समझाने बुझाने के ) लिये ( कुछ ) ग्राम-वासियों की कथा उदाहरण-स्वरूप वर्णन करो (अर्थात उनके उस समय की कथा उन्हें सुनाओ ) जिस समय उनके पास ( हमारे ) पैग़म्बर आये ॥

( और उन्हें बताओ कि ) जब हमने उनके पास ( अपने ) दो ( पैग़म्बरों ) को भेजा, तो उन्होंने दोनों को झुठला दिया ( और एक की भी बात न सुनी और ) पुनः ( जब वह दोनों आशा-भंग होने लगे, तो ) हमने ( एक और को अर्थात ) तीसरे ( पैग़म्बर को उनके पास भेजा। और उस ) से ( उन दोनों को ) शक्ति दी ( और ) पुनः ( उन ) तीनों ने ( जाकर ) कहा हम तुम्हारे पास ख़ुदा के भेजे हुये ( आये ) हैं। ( इस पर ) वह बोले ( हमको कैसे प्रतीत हो कि तुम ख़ुदा के भेजे हुए हो )। तुम तो हमारे ही जैसे मनुष्य हो। और ( हमें यह भी ज्ञात है कि ) करुणामय ( ख़ुदा ) ने ( कभी ) कोई वस्तु ( आकाश से ) नहीं उतारी ( न कोई पुस्तक, न कोई आज्ञा, न कोई पैग़म्बर )। तुम तो केवल निरा झूठ बोलते हो । उन्होंने कहा हमारा पालन कर्त्ता ( ख़ूब ) जानता है कि हम तुम्हारे पास ( अपने आप आए हैं, अथवा उसके ) भेजे हुए (आए ) हैं। और हमारा कर्तव्य तो केवल ( ख़ुदा के आदेशों का ) खुल्लम-खुला ( तुम तक ) पहुंचा देना है। ( यदि तुम उन्हें नहीं मानते और उनका पालन नहीं करते, तो तुम जानो। इसमें तुम्हारी ही हानि है, दूसरे की नहीं ) ॥

قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ
وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ● قَالُوا طَائِرُكُم
مَّعَكُمْ أَئِن ذُكِّرْتُم بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ●
وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ
يَا قَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ● اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلُكُمْ
أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ ● وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي
فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ● أَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِ
آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي
شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ ● إِنِّي إِذًا لَّفِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ● إِنِّي آمَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ●
قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ●
بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ● وَمَا
أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِن بَعْدِهِ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَاءِ

वह लगे कहने कि हमने तो तुमको (बड़ा ही) मनहूस पाया (कि तुम्हारे आते ही मुब्तलाए-क़हत वग़ैरा हो गये)—अगर तुम (अपने वाज़ व नसीहत से) बाज़ न आओगे, तो हम तुमको ज़रूर सङ्गसार कर देंगे और ज़रूर तुमको हमसे (बड़ी) सख़्त तकलीफ़ पहुंचेगी ० (पैग़म्बरों ने) कहा कि (यह तो) तुम्हारी (ही) शामत (आमाल है—कहीं भी रहो) तुम्हारे साथ है। क्या (इससे कि) तुमको समझाया गया—(तुम लगे उलटा हमको नाहक़ उलाहना देने ? नहीं)–बल्कि तुम (ख़ुद इस क़िस्म के) लोग हो, जो (हद्द-उबूदियत से) बढ़ गये हो ० और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया (और आकर) लगा कहने कि भाइयो! (इन) पैग़म्बरों के कहे पर चलो ० (ज़रूर) ऐसे लोगों के कहे पर चलो, जो तुमसे (कुछ) मुआविज़ा (भी) तलब नहीं करते और ख़ुद राह–रास्त पर भी हैं ० और मुझे क्या (जुनून) है कि जिसने मुझको पैदा किया है, उसी की इबादत न करूं—हालांकि (तुम सब मरे पीछे) उसीकी तरफ़ लौटा कर लाये जाओगे ० क्या उसके सिवा दूसरों को माबूद मान लूं? अगर (ख़ुदाए) रहमान मुझको कोई तकलीफ़ पहुंचानी चाहे, तो उनकी सुफ़ारिश मेरे कुछ भी काम न आये और न यह मुझको (उस मुसीबत से) छुड़ा सकें ० (अगर) ऐसा करूं, तो (बस) मैं सरीह गुमराही में जा पड़ा ० मैं तो तुम्हारे पर्वर्दिगार पर ईमान लाया हूं। सो मेरी (नसीहत) सुनो! और पल्ले बांधो ० (ताहम लोगों पर कुछ असर न हुआ, बल्कि उसको शहीद कर डाला—तो ख़ुदा की तरफ़ से उसको) इर्शाद हुआ कि जन्नत में जा दाख़िल हो! (और वह अब भी क़ौम की ख़ैरख़्वाही की फ़िक्र में था कि) लगा अर्ज़ करने कि यह जो मेरे पर्वर्दिगार ने मुझको बख़्श दिया और अपने नवाज़े हुओं में मुझको (ला शामिल) किया ० (ऐ) काश! मेरी क़ौम (के लोगों) को यह हाल मालूम हो ० और (मेरी तरह वह भी ईमान लायें और ख़ुदा से डरें। सो) हमने उसके (मरे पीछे) उसकी क़ौम (के लोगों) पर आसमान से (फ़रिश्तों का) कोई लश्कर न उतारा (कि लोगों को ईमान लाने पर मजबूर करें)—

(यह सुनकर) वह कहने लगे हमने तुमको (इतना) मनहूस (अर्थात अशुभ) पाया (कि जब से तुम आये हो, हमारी बस्ती से आनन्द मंगल जाता रहा। नगर भर में अकाल पड़ गया। अतः अपने उपदेशों को अपने ही पास रक्खो। हमारे दिलों में लेशमात्र तुम्हारा आदर सम्मान नहीं। स्मरण रक्खो!) यदि तुम (अपने उपदेश) न छोड़ोगे, तो हम तुमको निश्चयरूप से पाषाण-द्वारा मार डालेंगे। और विश्वास करो हमारे हाथों तुमको (अति) कठोर कष्ट पहुंचेगा। (हमारे) पैग़म्बरों ने उत्तर दिया (हम मनहूस क्यों होने लगे)–तुम्हारी नहूसत अर्थात अशुभता तो तुम्हारे (जीवन के) साथ (लगी हुई) है (कि कुफ़्र शिर्क की अपवित्रता में लिप्त हो। मूर्खो!) क्या (यह फल तुम हमको इस बात का दे रहे हो कि) तुमको सत्य उपदेश दिया गया? (ख़ूब समझ लो कि हम कदापि अशुभ नहीं हैं)–वरन तुम (अशुभ) हो (और उद्दण्डता तथा पथ-भ्रष्टता में) सीमा पार हो गये हो और (इसी अवसर पर उनकी) बस्ती के दूर किनारे से एक (ज्ञानवान) पुरुष दौड़ता हुआ आया (और) उसने कहा भाइयो! (कैसा अनर्थ कर रहे हो! तुम ख़ुदा के रसूलों को झुठलाते हो और उनको अशुभ बताते हो। स्मरण रक्खो! यदि तुमको अपना लोक परलोक सुधारना है, तो ख़ुदा के आदेशों की) आधीनता करो (और) उन रसूलों का कहा मानो, जो (तुमको निस्वार्थ सीधा मार्ग बताते हैं और) तुमसे किसी (बदले तथा) पुरस्कार के इच्छुक नहीं और स्वयं भी (ख़ुदा के बताये हुये) सीधे मार्ग पर हैं॥

और (मैं तो किसी प्रकार तुम जैसा न हूंगा)–मुझे क्या हुआ है कि मैं उस (सच्चे पूज्य) की पूजा न करूं, जिसने मुझे उत्पन्न किया है। और (हे मनुष्यो! तुम भी उसीकी उपासना करो, क्योंकि) तुम सबको उसीकी ओर लौट कर जाना है। (हे अज्ञानो!) क्या (तुम्हारे समान) मैं (भी) उस (पवित्र तथा महान श्रेष्ठ ख़ुदा) को छोड़ कर ऐसे पूज्यों को ग्रहण करलूं कि यदि करुणा-निधान (ख़ुदा) मुझे कुछ हानि पहुंचानी चाहे, तो न उनकी सिफ़ारिश कुछ काम आये और न यह मुझे (उसकी पकड़ से) छुड़ा सकें। यदि मैं ऐसा करूं (कि ऐसे शक्तिशाली बलवान ख़ुदा को छोड़कर इन निर्बल घर के बने हुए पूज्यों को ग्रहण करलूं) तो यह स्पष्ट पथ-भ्रष्टता होगी। मैं तुम्हारे पालनहारे पर ईमान लाया हूं। अतः मेरी सुनो! (और तुम भी ईमान लाओ)॥

(जब काफ़िरों ने एक न सुनी और कहने वाले को पत्थरों से शहीद कर दिया, तो अदृष्ट से) कहा गया कि जन्नत में आजा! (यह मंगल-समाचार सुनकर) उसने कहा कि क्या अच्छा होता!! कि मेरी जाति को ज्ञान होता कि किस बात पर मेरे पालनहारे ने मुझे क्षमा कर दिया और मुझे यह उच्चपद प्रदान किया। और हमने उस (हबीब बढ़ई) की जाति पर उसके उपरान्त आकाश से कोई सेना नहीं उतारी—

وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ● إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ ● يَا حَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ
مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ
أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ
أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ● وَإِنْ كُلٌّ لَمَّا جَمِيعٌ
لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ● وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ
أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ
وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ
وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ● لِيَأْكُلُوا
مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ
سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا
تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ
وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ

**और हमको ( लशकर के ) उतारने की ज़रूरत भी न थी ० वह तो बस एक आवाज़ सख़्त थी ( कि करदी गई ) और वह उसी दम ( आग की तरह ) बुझकर रह गया ० बन्दों ( के हाल ) पर ( भी बड़ा ही ) अफ़सोस है। कभी इनके पास कोई रसूल नहीं आया, जिसकी इन्होंने हंसी न उड़ाई हो ० क्या इन लोगों ने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की कि इन से पहिले हमने कितनी उम्मतों को हलाक कर मारा ( और जिनको हलाक कर मारा, फिर) वह इनकी तरफ़ लौटकर नहीं आते ० हाँ ! जितने हैं, सब हमारे हुज़ूर में हाज़िर रक्खे गये हैं ० और इन (लोगों ) के ( समझने के ) लिये हमारी ( क़ुद्रत की ) एक निशानी मरी हुई ( यानी पड़ती पड़ी हुई ) ज़मीन है कि हमने उसको ( पानी बर्साकर ) जिला उठाया और उस से अनाज निकाला कि उसी में से ( यह लोग भी अपनी क़िसमत का ) खाते हैं० और ज़मीन में हमने खजूरों के और अंगूरों के बाग़ लगाये और उनमें ( पानी के ) चशमें बहाये ० ताकि बाग़ के फलों में से ( यह लोग अपनी २ क़िस्मत का ) खाएँ और ( मालूम है कि ) यह (फल) इनके हाथों के बनाये हुए नहीं, तो क्या ( यह लोग इस नेअमत का ) शुक्र नहीं करते ० पाक है, वह ( ज़ात )–जिसने ज़मीन की रोईदगी की क़िस्म में से और ( ख़ुद ) इनकी अपनी ( यानी इन्सान की ) क़िस्म में से और उन ( मख़्लूक़ात ) की क़िस्म में से–जिनको यह नहीं जानते, हर तरह की चीज़ें पैदा की हैं ० और इनके ( समझने के ) लिये ( हमारी कुद्रत की ) एक निशानी रात है कि हम उसमें से दिन को खींचकर निकाल लेते हैं, तो बस यह लोग—**

---

और न हम उतारने वाले थे। ( इन काफ़िरों के लिये जो बिल्कुल तुच्छ प्राणी थे–आकाशीय सेना की क्या आवश्यकता थी। उनके लिये तो ) एक घोर नाद का बुलन्द होना था, कि वह राख होकर रह गये। बन्दों पर कितना अफ़सोस है ! उनके पास जो पैग़म्बर आया, उसकी उन्होंने हंसी उड़ाई। ( यह क्योंकर हंसी मज़ाक़ का साहस करते हैं )–क्या उन्होंने देखा नहीं कि उनसे पहिले हम कितनी जातियों को ( उनकी अवज्ञाओं तथा उद्दण्डताओं के कारण ) नष्ट कर चुके हैं। अब उनमें से कोई उनके पास ( दुनिया में ) लौटकर आने वाला नहीं। हां, यह सबके सब हमारे सन्मुख अवश्य लाये जायंगे ॥

( यह लोग इस बात पर आश्चर्य न करें कि मृत्यु के पश्चात यह लोग हमारे सन्मुख दुबारा ज़िन्दा होकर आवेंगे )। इन (लोगों की शिक्षा ) के लिये मृतक-भूमि एक बड़ा चिन्ह है। हमने उसे ज़िन्दा किया और उसके भीतर से अन्न उगाया, जिसे यह लोग खाते हैं। और ( अन्न ही नहीं ) हमने ( इसी मृतक ) भूमि से खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये और ( पानी के ) सोते बहा दिये, जिससे कि यह उनके फल ( और मेवे ) खायें। और ( यह सब कुछ हमारी ही शक्ति से हुआ है )। उनके हाथों का किया हुआ नहीं है। क्या यह ( ऐसे २ ख़ुदा के उपकारों और बिना-श्रम आनन्द पर भी ) कृतज्ञ नहीं ॥

अल्लाह पवित्र है ( वह कैसा शक्तिशाली तथा माननीय है कि ) उसने पृथ्वी की प्रत्येक उगने वा[illegible]स्तु का और इन लोगों में से प्रत्येक का और उस सृष्टि का, जिनको यह नहीं जानते–जोड़ा उत्पन्न किया। और उनके लिये (हमारी अ[illegible]-सत्ता का ) एक चिन्ह रात्रि है। रात्रि में से हम दिन को खींच लेते हैं। और यह ( देखने के देखते ) अंधेरे में रह जाते हैं ॥

مُظْلِمُوْنَ ● وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ
تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ● وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ
مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ● لَا
الشَّمْسُ يَنْبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا
الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ●
وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ
الْمَشْحُوْنِ ● وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ●
وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ
يُنْقَذُوْنَ ● اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ●
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا
خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ● وَمَا تَاْتِيْهِمْ
مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا
مُعْرِضِيْنَ ● وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ

अंधेरे में रह जाते हैं ० और आफ़ताब ( है कि ) अपने एक ठिकाने की तरफ़ को चला जा रहा है। यह अन्दाज़ा खुदा का बांधा हुआ है, जो ज़बरदस्त ( और हर चीज़ से ) आगाह है ० और चांद ( है कि ) उसके लिये हमने मन्ज़िलें ठहरा दीं। यहां तक कि ( आख़िर माह में घटते घटते ) फिर ( ऐसा टेढ़ा और पतला ) रह जाता है, जैसे ( खजूर की ) पुरानी टहनी ० न तो आफ़ताब ही से बन पड़ता है कि चाँद को जा ले और न रात ही दिन से पहिले आ सकती है और ( क्या चांद और क्या सूरज ) सब ( अपने अपने ) मदार ( यानी घेरे ) में ( पड़े ) तैर रहे हैं ० और इन ( लोगों ) के ( समझने के ) लिये ( हमारी कुद्रत की ) एक निशानी यह है कि हम इन ( आदमियों ) की नस्ल को भरी हुई किश्तियों में उठाये फिरते हैं ० और किश्ती की तरह की हमने इनके लिये और चीज़ें ( अज़-क़िस्म डोंगी वग़ैरा भी ) पैदा की हैं, जिन पर ( यह दरियाओं में ) सवार होते हैं ० और हम चाहें, तो इनको डुबो दें । फिर न तो कोई इनका फ़रियाद-रस हो और न यह ( किसी तरह डूबने की मुसीबत से ) छुड़ाये जा सकें ० मगर ( यह ) हमारी मेहर्बानी ( है ) और एक वक़्त ( ख़ास ) तक ( इनको दुनियावी ) फ़ायदे ( पहुंचाने मंज़ूर हैं ) ० और जब इनसे कहा जाता है कि जो ( आफ़तें तुमको ) तुम्हारे आगे और तुम्हारे पीछे ( से घेरे हुये ) हैं, उनसे डरते रहो, ताकि तुम पर रह्म किया जाय—( तो वह इसकी मुतलक़ पर्वा नहीं करते ) ० और इनके पर्वर्दिगार की निशानियों में से कोई सी निशानी भी इनके पास आये, तो यह उससे मुंह मोड़े बिदून नहीं रहते ० और जब इनसे कहा जाता है कि खुदा ने जो तुमको रिज़्क़ दे रक्खा है, उसमें से ( कुछ उसके रस्ते में गुरबा पर भी ) ख़र्च करते रहा करो—

और ( हमारी अपूर्व शक्ति का एक चिन्ह ) सूर्य है, जो अपने नियत मार्ग पर चलता रहता है। यह बलवान विज्ञ खुदा की ठहर हुई और परिमाण की हुई बातें हैं और ( एक चिन्ह ) चन्द्रमा है, जिसके लिये हमने स्थान नियत कर दिये हैं। यहां तक कि ( यह उ स्थानों पर चलते चलते ) खजूर की एक सूखी हुई टहनी के समान हो जाता है। ( फिर इन सब का एक अनोखा प्रबन्ध देखो ! कि ) न सूर की मजाल है कि वह चन्द्रमा को जा पकड़े। और न रात्रि दिन से आगे बढ़ती है। और यह सब ( तारागण ) अपने २ आकाश में (मछ की तरह ) तैर रहे हैं। और उनके लिये ( हमारी शक्ति का ) एक चिन्ह यह है कि हमने ( बड़ी २ लहरों वाले दरियाओं में ) उनको सन्त से भर कर नावें चलाईं ( और जल को उनका आधीन बना दिया ) ॥

और उनके लिये नाव के समान और भी सवारियां बनाईं ( हमारी शक्ति का ज्ञान इस प्रकार हो सकता है कि ) यदि हम उन ( जब नौका दरिया में चल रही हो ) डुबोना चाहें, तो उनकी कोई सहायता नहीं कर सकता और इसके अतिरिक्त उनके छुटकारे कोई उपाय नहीं कि हम ही उन पर कृपालु हों। और उन्हें एक नियत समय तक ( संसार से ) लाभ ( उठाने ) का अवसर दें ॥

( इन चिन्हों तथा गत-जातियों के नष्ट-भ्रष्ट होने की दशा का ज्ञान होते हुये भी ) जब उनसे कहा जाता है कि उस ( अज़ा से डरो, जो तुम्हारे सन्मुख है ( अर्थात जो पहिली जातियों पर हो चुका है ) और जो तुम्हारे पीछे है ( अर्थात क़यामत के दिन तुम होने वाला है ) कदाचित इस भय के कारण से तुम पर दया की जाय ( तो वह ध्यान नहीं देते ) और उनके पालन कर्त्ता के चिन्हों में जो चिन्ह उनके सन्मुख आता है, उससे ( जान बूझकर ) मुंह फेर लेते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ( तआला ) ने तु जो कुछ दे रक्खा है, उसमें से कुछ ( उसके मार्ग में ) दो—

तो काफ़िर मुसल्मानों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलायें, जिनको खुदा चाहे, तो ( तुम मुसल्मानों के अक़ीदे के मुवाफ़िक़ ) आप ( बहुतेरा कुछ ) खिला सकता है–( फिर अब तुम जो खुदा की मरज़ी के खिलाफ़ इनकी सुफ़ारिश करते हो, तो ) बस तुम सरीह गुमराही में ( पड़े ) हो ० और ( मुन्किर मुसल्मानों से ) कहते हैं—अगर तुम सच्चे हो, तो यह ( क़यामत का ) वादा कब ( पूरा ) होगा ० ( बस ) यह इसीके मुन्तज़िर हैं कि यह लोग आपस में ( एक दूसरे से मामूली तौर पर ) लड़-झगड़ रहे हों और एक ज़ोर की आवाज़ ( सूर ) इनको ( एक दम से ) आन पकड़े ० फिर न तो वसीयत ही कर सकेंगे और न अपने बाल-बच्चों में लौट कर जा सकेंगे ० और ( फिर दुबारा ) सूर फूंका जायगा, तो एक दम से ( सबके सब ) क़ब्रों से ( निकल निकल ) अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ चल खड़े होंगे ० ( और हैरान होकर एक दूसरे से ) पूछेंगे कि हाय हमारी कमबख़्ती ! ( हम तो पड़े सोते थे )—किसने हमको हमारी ख़्वाब-गाह से ( जगा ) उठाया ? ( फ़रिश्ते जवाब देंगे कि ) यही तो वह ( क़यामत ) है, जिसका वादा ( खुदाए ) रह्मान ने कर रक्खा था और पैग़म्बर सच कहते थे ० ( अलग़रज़ ) क़यामत बस एक ज़ोर की आवाज़ ( सूर ) होगी, तो एक दम से सब लोग हमारे हुज़ूर में ला हाज़िर किये जाएँगे ० फिर उस दिन किसी शख़्स पर ज़रासा भी ज़ुल्म न होगा और तुम लोगों को उसीका बदला दिया जायगा, जो ( दुनिया में ) करते रहे ० बेशक जन्नती लोग उस दिन मज़े से ( अपने ) जी बहला रहे होंगे ० वह और उनकी बीवियां—

४

للهِ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ
يَشَاءُ اللهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ●
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ●
مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ
يَخِصِّمُونَ ● فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا
إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ● وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم
مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ● قَالُوا
يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا هَٰذَا مَا وَعَدَ
الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ● إِن كَانَتْ
إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا
مُحْضَرُونَ ● فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا
وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ● إِنَّ أَصْحَابَ
الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ● هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ

---

( तो ) काफ़िर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि ( लो और सुनो ! ) हम उन लोगों को खिलावें–जिनको खुदा चाहता, तो ( वह स्वयं भी ) खिला सकता था। ( हे मुसलमानो ! ) तुम स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में पड़े हो ( कि अल्लाह को तो सबका अन्नदाता समझते हो और पुनः हमसे कहते हो कि दरिद्रों को खिलाओ ) और ( जब उनको इन बातों पर अज़ाब से डराया जाता है, तो ) कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो, तो यह वादा कब पूरा होगा। ( हम तो उस वादे की प्रतीक्षा कर रहे हैं ) ॥

यह लोग जिस (बात) की बाट देख रहे हैं, वह केवल एक घोर-नाद है, जो उनको आ लेगा और इस दशा में कि यह लोग ( अचेतना की दशा में किसी सांसारिक विषय पर परस्पर ) झगड़ रहे होंगे। ( ऐसी जल्दी से अज़ाब इन लोगों पर आजावेगा कि ) पुनः न उनको वसीयत ( करने अर्थात शिक्षा-पत्र लिखने ) का अवसर मिलेगा और ( न इतना अवकाश होगा ) कि अपने घरों को लौट सकें। इसके पश्चात जब सूर फूंका जावेगा, तो लोग सहसा क़ब्रों से अपने पालनहारे की ओर दौड़ पड़ेंगे ( और ) कहेंगे–हा शोक ! हमको हमारे निद्रा-स्थानों से किसने उठा दिया ? ( अदृष्ट से आवाज़ आवेगी कि ) यह है वह दिन, जिसका करुणा-निधान ( खुदा ) ने वादा किया था और पैग़म्बरों ने सत्य सत्य कहा था ॥

( सारांश यह है कि ) एक घोर-नाद होते ही एक दम सबके सब हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जायँगे । इसके उपरान्त (हिसाब आरम्भ होगा और ) किसी पर कुछ अत्याचार नहीं किया जायगा । और ( हे मनुष्यो ! ) तुमने जो कर्म किये हैं, उन्हीं का बदला दिया जायगा आज वैकुण्ठ-वासी किसी न किसी काम में हर्षित होंगे। वह और उनकी पत्नियाँ—

فِي ظِلَٰلٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ● لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ
وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ ● سَلَٰمٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ
وَامْتَٰزُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ● أَلَمْ أَعْهَدْ
إِلَيْكُمْ يَٰبَنِي آدَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطَٰنَ
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ● وَأَنِ اعْبُدُونِي هَٰذَا صِرَٰطٌ
مُّسْتَقِيمٌ ● وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ
تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ● هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنتُمْ
تُوعَدُونَ ● اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ●
الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَٰهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ
وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ● وَلَوْ نَشَاءُ
لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَٰطَ فَأَنَّىٰ
يُبْصِرُونَ ● وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَٰهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ
فَمَا اسْتَطَٰعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ● ع ● وَمَن ٤

نُعَمِّرْهُ

सायों में तख्तों पर तकिये लगाये ( बैठे ) होंगे ० बहिश्त में उनके लिये मेवे ( मौजूद ) होंगे और जो तलब करेंगे, उनके लिये ( हाज़िर ) ० पर्वर्दिगार, मेहर्बान अपनी तरफ़ से सलाम कहला भेजेगा ० और (हम गुनहगारों को हुक्म देंगे कि) गुनहगारो ! आज (इन जन्नतियों से) अलग रहो ० ऐ औलाद आदम ! क्या हमने तुम पर ताकीद नहीं करदी थी कि शैतान की परस्तिश न करना कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है ० और यह कि हमारी ही इबादत करना कि यही ( दीन का ) सीधा रस्ता है ० और ( बाईं-हमा ) उसने तुममें से अक्सर लोगों को गुमराह कर दिया, क्या तुम अक़्ल नहीं रखते थे ० ( तो अब ) यह जहन्नम है, जिसका तुमसे वादा किया जाता था ० अब अपने कुफ़्र ( व इन्कार ) के बदले इसमें दाखिल हो ० आज हम इनके मुंहों पर मुहरें लगा देंगे ( और यह बात नहीं करने पायेंगे ) और जैसे करतूत यह लोग कर रहे थे, इनके हाथ हमको बता देंगे और इनके पांव ( भी ) गवाही देंगे ० और हम चाहें, तो इनकी आंखों पर झाड़ू फेर दें ( और ) फिर यह रस्ते की तरफ़ दौड़ें, तो कहाँ से देख पायें ० और अगर हम चाहें, तो यह जहाँ हैं-वहीं इनको मस्ख कर ( के मसलन पत्थर या अपाहिज बना ) दें । फिर न तो इनसे ( आगे ) ही जाते बन पड़े और न लौटते ही बन पड़े ०—

(जन्नत की) छाहों में सिंहासनों पर तकिया लगाये विराजमान होंगे। जन्नत में उनके लिये भिन्न भिन्न प्रकार के मेवे होंगे और जो कुछ चाहेंगे, वह उनको उपलब्ध होगा। करुणाकारी पालनहारे की ओर से उनको सलाम कहा जायगा। और पापियों से कहा जायगा कि हे पापियो ! आज तुम ( निरपराधियों से ) पृथक हो जाओ–( क्योंकि उनसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। और उनसे अल्लाह तआला कहेगा कि ) हे मनुष्यो ! बताओ तो सही, क्या मैंने तुमसे प्रतिज्ञा नहीं कराली थी कि शैतान की उपासना न करो। वह तुम्हारा खुला शत्रु है। और मेरी उपासना करो। यही सीधा मार्ग है ॥

और ( शैतान ) तुममें से बहु प्राणियों को भटका चुका है। बताओ तो सही–क्या तुम ( इन बातों से ) अबोध थे ? अच्छा तो यह दोज़ख है–जिसका तुमसे ( पहिले से ) वादा किया जा चुका है, आज तुम अपनी अवज्ञा के कारण इसमें प्रवेश करो। ( सुनो ! ) आज हम उनके मुंह पर तो मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे वार्तालाप करेंगे और उनके पाँव उनके किये हुये कामों की साक्षी देंगे ॥

( हमारी शक्ति से यह बाहर न समझो। हमको तो यह शक्ति है कि ) यदि हम चाहते, तो ( दुनिया ही में ) उनके नेत्रों को चौपट कर देते। यह ( इच्छानुसार ) मार्ग पर चलना चाहते, तो इनको क्यों कर सूझ पड़ता। और यदि हम चाहते, तो इनको जहां होते वहीं इनकी आकृतियाँ बिगाड़ देते, जिसका परिणाम यह होता कि न यह आगे बढ़ सकते–न पीछे हट सकते। ( इसे कठिन न जानो और हमारी शक्ति के दृष्टान्त देखो कि ) जिसको—

और हम जिसको उम्र ज़ियादा करते हैं, बनावट में उसको उलटा घटाने चले जाते हैं। क्या यह लोग ( इतनी बात भी ) नहीं समझते ० और हम ने इन ( पैग़म्बर मुहम्मद ) को शाइरी नहीं सिखाई और शाइरी इन ( की शान ) के लायक़ भी नहीं। यह ( .क़ुर्आन ) तो बस ( निरी ) नसीहत है और पढ़ने के लायक़ ( और ) आम-फ़ह्म है ० ( और इसके नाज़िल करने से मक़्सूद यह है ) कि जो ज़िन्दा ( दिल ) हों, उनको ( अज़ाब-.ख़ुदा से ) डराये और मुन्किरों पर हुज्जत ( इलाही ) क़ायम हो ० क्या इन लोगों ने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की कि हमने इनके लिये चारपाये पैदा किये कि वह भी हमारे ( ही ) हाथ के बनाये हुये हैं और ( अब ) यह उनके मालिक ( बने बैठे ) हैं ० और हमने उन ( चारपायों ) को इनके बस में कर दिया है, तो उनमें से ( बाज़ ) इनकी सवारियां हैं, और उनमें से ( बाज़ को ) खाते हैं ० और उन ( चारपायों ) में इनके लिये ( और भी बहुतेरे ) फ़ायदे हैं और ( ख़ासकर ) पीने की चीज़ ( यानी दूध )—तो क्या ( यह लोग इन नेअमतों का ) शुक्र नहीं करते ० और लोगों ने .ख़ुदा के सिवा ( दूसरे दूसरे ) माबूद ( भी ) इस तवक़्क़ो से बना रक्खे हैं कि इनको ( उनसे ) मदद मिले ० सो वह इनकी मदद ( तो कुछ भी ) नहीं कर सकते, बल्कि यह ( बुत उल्टे ) बुत-परस्तों के (तरफ़दार यानी बाग़ियों का) लशकर क़रार पाकर (क़यामत के दिन जवाब-दिही में ) पकड़े होंगे ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन ( लोगों ) की बातें तुम्हारी आज़ुर्दगी का मूजिब न हों, क्योंकि ( यह लोग ) जो कुछ छुपाकर करते हैं और जो ज़ाहिर-.ज़ुहूर करते हैं, हम ( सब कुछ ) जानते हैं ( और जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा ) ० क्या आदमी को मालूम नहीं कि हमने उसको नुतफ़े से पैदा किया, बाईहमा वह ( हमारा ) खुल्लम खुल्ला ( मुक़ाबिल बनकर ) लगा झगड़ने ०—

نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۖ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۝ وَ
مَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنبَغِي لَهُ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا
ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ۝ لِّيُنذِرَ مَن كَانَ حَيًّا
وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا
أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ
لَهَا مَالِكُونَ ۝ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ
وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ
وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ وَاتَّخَذُوا
مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ۝ لَا
يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ
فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ
وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ
مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝ وَضَرَبَ

---

हम दीर्घायु देते हैं, तो उसकी स्वाभाविक दशाओं को उलटा कर देते हैं। ( उसकी इन्द्रियाँ निर्बल और शक्तिहीन हो जाती हैं। और वह उन्नति के विरुद्ध अउन्नति की ओर झुक पड़ता है )। क्या यह बात इन लोगों की बुद्धि में नहीं आती। ( यह लोग .क़ुर्आन की आयतों को सुनकर ख़ुदा के रसूल को कवि कहते हैं, यद्यपि ) न हमने उन्हें शेर अर्थात कवित्त कहना सिखाया और न कविता उनके योग्य थी। ( जो कुछ उन्होंने लोगों को सुनाया है )-यह एक प्रकार की शिक्षा और खुली हुई पुस्तक है ॥

जिसका अभिप्राय यह है कि उन लोगों को डराया जाय, जिनमें जीवन ( अर्थात इस्लाम-धर्म ग्रहण करने की योग्यता ) विद्यमान है और काफ़िरों पर ( अज़ाब होने का ) प्रमाण सिद्ध होजाय। क्या यह ( कृतघ्न ) नहीं देखते कि हमने अपनी शक्ति से उनके पशु उत्पन्न किये और अब वह उनके मालिक ( बने बैठे ) हैं। और उन पशुओं को हमने उनका आधीन बना दिया। अतः कुछ सवारी का काम देते हैं और कुछ खाने में आते हैं ॥

उन पशुओं में उनके लिये अनेक प्रकार के लाभ और खाने पीने की सामग्री है, तो क्या ( यह लोग इन उपकारों के भी ) कृतज्ञ नहीं। और उन्होंने .ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य पूज्य इस आशा पर ग्रहण कर लिये हैं कि उन्हें कुछ सहायता मिलेगी—( यद्यपि यह कल्पित पूज्य ) उनकी सहायता की शक्ति नहीं रखते—( बरन अपने उठाने बिठाने में भी स्वयं इन्हीं के आधीन हैं ) । और ( इसी कारण से ) यह लोग चौकीदारों की तरह उनके पास रहते हैं। सो तुमको ( हे पैग़म्बर ! ) इनकी बातें शोकित न करें। हम इनके प्रगट तथा गुप्त ( भेदों ) से ( ख़ूब ) अभिज्ञ हैं। ( इन मूर्खों का अनोखा ढंग है )—क्या मनुष्य ने देखा नहीं कि हमने उसे वीर्य्य की एक बूंद से उत्पन्न किया। (उत्पन्न होकर) अब वह खुल्लम-खुल्ला विरोध पर तुला हुआ है ॥

لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ
رَمِيْمٌ ۝ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ
بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُ ۝ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ
تُوْقِدُوْنَ ۝ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ
بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ
شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ فَسُبْحٰنَ
الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

سورة والصافات مكية مائة واثنتان وثمانون

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝ فَالتّٰلِيٰتِ
ذِكْرًا ۝ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और लगा हमारी निस्बत बातें बनाने और अपनी असालत को भूल गया। कहता ( क्या ) है कि कौन (ऐसी कुद्रत रखता) है कि (आदमी की) हड्डियाँ गल (कर ख़ाक हो) गई हों और वह उनको जिला खड़ा करे ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इस गुस्ताख़ से ) कहो कि जिसने हड्डियों को अव्वल बार पैदा किया था, वही इनको ( दुबारा भी ) जिला ( उठा ) येगा और वह सब ( तरह का ) पैदा करना जानता है ० वही ( क़ादिर-मुतलक़ ) तो है कि ( बाज़ ) हरे दरख़्तों ( के आपस में रगड़ने ) से तुम लोगों के लिये आग पैदा करता है। फिर तुम उससे ( और आग ) सुलगा लेते हो ० क्या जिस ( ख़ुदा ) ने आसमान व ज़मीन पैदा किये, वह इस ( बात ) पर क़ादिर नहीं कि ( क़यामत में ) इन जैसे ( आदमियों को दुबारा ) पैदा करे ? हां ( ज़रूर क़ादिर है ) और वह ( तो ) बड़ा पैदा करने वाला (और) माहिर है ० उसकी तो यह शान है कि जब वह किसी चीज़का इरादा करता है, तो बस वह उससे ( इतना ही ) फ़र्मा देता है कि हो ! और वह हो जाती है ० पस पाक है वह ( ज़ात ) जिसके हाथ में हर चीज़ का कामिल इख़्तियार है और (मरे पीछे) तुम (सब) उसीकी तरफ़ लौटाकर लाये जाओगे ०

## सूरत—साफ़्फ़ात

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १८२ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहमवाला मेहर्बान ( है ) ० ( ग़ाज़ियों के उन ) लश्करों की क़सम, जो ( दुश्मनों से लड़ने के लिये ) सफ़-बस्ता खड़े होते हैं ० फिर (अपने घोड़ों को ज़ोर से ) डांटते (और दुश्मनों पर हम्ला करते ) हैं ० फिर ( लड़ाई से फ़ारिग़ होकर ) ज़िक्र ( इलाही यानी कुर्आन ) की तिलावत करते हैं ० ( ग़रज़ हमको उन चीज़ों की क़सम है कि) बिला शुबहा तुम सबका माबूद एक (ख़ुदा) है ० आसमानों और ज़मीन और जो चीज़ें आसमान व ज़मीन में हैं, सबका पर्वर्दिगार—

---

अपनी पैदाइश ( का हाल ) भूल गया और हमारे सम्बन्ध में बातें बनाता है। कहता है * हड्डियों को कौन ( दुबारा ) जीवन प्रदान कर सकता है ? जब कि वह गल ( सड़ कर रेत खेत हो ) गई हों। ( हे पैग़म्बर ! ) कहदो कि (इस हड्डी को) वही ( आदि जन्मदाता दुबारा ) जीवन देगा, जिसने उसे प्रथम बार उत्पन्न किया है। और वह पैदाइश के प्रत्येक ढंग से अभिज्ञ है ( अर्थात जिस प्रकार चाहे उत्पन्न कर सकता है ) ॥

*टीका—उबई-बिन-ख़लफ़ एक गली हुई हड्डी हाथ में लिये हुये रसूलुल्लाह के पास आया और हड्डी को चुटकी से मलकर कहने लगा कि इसे कौन जीवन प्रदान कर सकता है ? रसूलुल्लाह ने कहा संसार का पालन कर्त्ता जीवित कर सकता है, जिसने प्रथम इसे और तुझे उत्पन्न किया है:—हसन निज़ामी ॥

( वह ) ऐसा ( सर्व शक्तिमान ) है कि तुम्हारे लिये उसने हरे वृक्ष से अग्नि उत्पन्न की है। अतः तुम उससे ( ईंधन आदि ) सुलगाते हो। ( वह बलवान ख़ुदा ) जिसने आकाश तथा पृथ्वी की रचना की—क्या इस बात की शक्ति नहीं रखता कि उन जैसे ( और ) उत्पन्न कर सके ? ( निस्सन्देह वह इसकी भी शक्ति रखता है ) और वह सृष्टि कर्त्ता ( और भेदों का ) जानने वाला है ॥

उसका तो यह नियम है कि जब किसी पदार्थ को ( उत्पन्न करना ) चाहता है, तो उससे कहता है कि हो जा ! अतः वह होजाता है। उसका क्या कहना, जिसके अधिकार में प्रत्येक वस्तु का शासन है और जिसकी ओर तुम सब लोग ( अन्त में ) लौटकर जाओगे ॥

## सूरत—साफ़्फ़ात

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें १८२ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥**

उन फ़रिश्तों की शपथ, जो पंक्ति बांधे रहते हैं। पुनः उन फ़रिश्तों की सौगन्ध, जो ( शैतानों ) को ( दूर ) करते रहते हैं। पुनः उन फ़रिश्तों की शपथ, जो ख़ुदा के स्मरण में लगे रहते हैं कि तुम्हारा पूज्य निश्चितरूप से एक है। आकाशों तथा भूमि और उनके बीच की प्राणियों का पालनहारा है—

وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا
بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ
مَّارِدٍ ۝ لَّا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ
مِن كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝
إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ
ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ خَلَقْنَا ۚ
إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّن طِينٍ لَّازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ
وَيَسْخَرُونَ ۝ وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ
وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا
إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا
وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝ أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ
قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ
وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا

और ( नीज़ ) उन मक़ामात का पर्वर्दिगार, जहां जहां से ( सूरज मुख़्तलिफ़ वक़्तों में ) तुलू करता है ० हमही ने वरले आसमान को ( एक ) ज़ीनत ( यानी ) सितारों से आरास्ता किया ० और हर शैतान सर्कश से महफ़ूज़ कर रक्खा है ० कि वह ऊपर के लोगों (यानी फ़रिश्तों की बातों) की तरफ़ कान भी लगाने नहीं पाते और खदेरने के लिये हर तरफ़से ( उन पर शिहाब ) फेंके जाते हैं ० और ( यह ) उनके लिये लाज़िमी अज़ाब है ० ( ग़रज़ शयातीन फ़रिश्तों की बातें सुनने नहीं पाते )—मगर ( हाँ ! शाज़ व नादिर ) कोई ( किसी बात को ) झपाके से उचक ले जाता है, तो शिहाब का दहकता हुआ अंगारा उसके पीछे लगा होता है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन (मुन्किरीन-क़यामत) से पूछो कि क्या इनका पैदा करना ज़ियादा मुश्किल है, या (मज़कूरए बाला चीज़ों का)—जिनको हमने बनाया है। इन बनी-आदम को तो हमने ( इसी मामूली ) लेसदार मिट्टी से पैदा किया है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) बात यह है कि तुमतो ( इनके इन्कार-क़यामत से ) तअज्जुब करते हो और यह ( तुम्हारी बातों पर ) हँसते हैं ० और जब इनको समझाया जाता है, तो ( इसरार बेजा करते और ) नहीं समझते ० और जब कोई निशानी ( यानी मोजिज़ा ) देखते हैं—( तो उस की ) हँसी उड़ाते हैं ० और कहते हैं कि यह तो बस सरीह जादू है ० क्या ( वाक़े में ) जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां होकर रह गये, क्या हम ( क़यामत में दुबारा ) उठा खड़े किये जाएँगे ० और क्या हमारे अगले बाप ( दादा ) भी ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि हां ! ( ज़रूर उठा खड़े किये जाओगे ) और तुम ( उस वक़्त बिल्कुल आजिज़ व ) ना-तवान होगे ० क़यामत तो बस एक ललकार है । इधर ललकार हुई और उधर सब ( के सब ज़िन्दा होकर ) लगे देखने ० और जो ( क़यामत के मुन्किर हैं , वह उस वक़्त ) बोल उठेंगे कि हाय हमारी कमबख़्ती ! यह तो ( वही )—

---

और पूर्व पच्छिम का पालनहारा है। (हमारी अपूर्व शक्ति देखो कि ) हमने संसार के आकाश को तारा-गणों से सजाकर शोभायमान किया । और रक्षा भी की है हर उद्दण्ड शैतान से। अतः ( शैतान ) ऊपर की ओर कान भी नहीं लगा सकते और भगाने के लिये हर ओर से उन पर अग्नि की वर्षा की जाती है । और यह उनके लिये आवश्यक अज़ाब है। हां यदि किसी को कुछ सुन-गुन मिल जाती है, तो एक दहकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है। ( हे पैग़म्बर ! ) तुम इनसे पूछो तो सही—कि इनकी रचना कठिन है वा उन वस्तुओं की जिनको हमने उत्पन्न किया ( अर्थात आकाश भूमि तथा तारागण )। हमने इन मनुष्यों को तो ( इसी साधारण ) लेसदार मिट्टी से उत्पन्न किया है ॥

( हे पैग़म्बर ! ) तुम तो ( इनकी बातों पर ) आश्चर्य करते हो और यह लोग ( तुम्हारी बातों की ) हंसी उड़ाते हैं। और जब उन्हें समझाया जाता है, तो समझते नहीं। और जब कोई चिन्ह ( अर्थात मोजिज़ा ) देखते हैं, तो हंसी उड़ाते हैं। और कहते हैं कि यह तो खुला हुआ जादू है। जब हम मर कर धूलि हो जायंगे और ( हमारी ) हड्डियां रह जायंगी, तो क्या हम उठाये जायंगे ? ( अर्थात दुबारा जीवित किये जायंगे ) और क्या हमारे बाप दादा भी ॥

( इनसे ) कहो कि हां ! ( अवश्य उठाये जाओगे ) और तुम ( उस समय ) पतित ( तथा दुर्बल ) होगे। यह ( उठाना अथवा क़यामत ) तो एक ललकार है, जिसके साथ ही सबके नेत्र खुल जायंगे। और ( ज़िन्दा होकर क़यामत का न मानने वाले ) कहेंगे हाय हमारा अभाग्य ! यह तो—

ع ٤

يوم الدين ● هذا يوم الفصل الذي كنتم به
تكذبون ● احشروا الذين ظلموا وازواجهم
وما كانوا يعبدون ● من دون الله فاهدوهم
الى صراط الجحيم ● وقفوهم انهم مسئولون ●
ما لكم لا تناصرون ● بل هم اليوم مستسلمون
واقبل بعضهم على بعض يتساءلون ● قالوا انكم
كنتم تاتوننا عن اليمين ● قالوا بل لم تكونوا
مؤمنين ● وما كان لنا عليكم من سلطن بل
كنتم قوما طاغين ● فحق علينا قول ربنا انا
لذائقون ● فاغوينكم انا كنا غاوين ● فانهم
يومئذ في العذاب مشتركون ● انا كذلك
نفعل بالمجرمين ● انهم كانوا اذا قيل لهم
لا اله الا الله يستكبرون ● ويقولون ائنا

لتاركوا

जज़ा-सज़ा का दिन ( मालूम होता) है ० ( हम फ़र्मायेंगे हां!) यही वह फ़ैसले का दिन है, जिसको तुम झुटलाया करते थे ० ( और हम फ़रिश्तों को हुक्म देंगे कि ) जो लोग ( दुनिया में ) नाफ़र्मानियां करते रहे हैं, उनको और उनके साथियों को और ख़ुदा के सिवा, जिन ( माबूदों ) को पूजते रहे हैं ० उनको ( सबको एक जगह ) इकट्ठा करो ( और ) फिर उनको दोज़ख़ के रस्ते ले चलो ० और ( हां ज़रा ) इनको ठहराओ। इनसे ( कुछ ) पूछना है ० कि ( अब ) तुम्हें क्या हो गया कि एक दूसरे की मदद नहीं करते ० (यह कुछ भी जवाब नहीं देंगे )-बल्कि यह ( तो कुछ ) उस दिन नीची गर्दन किये ( हुये खड़े ) होंगे ० और एक की तरफ़ एक मुतवज्जह ( और मुख़ातिब ) होकर पूछा-पाछी करेगा ० एक फ़रीक़ (दूसरे फ़रीक़ से) कहेगा कि तुम हम पर पिल-पिल कर आते ( और बहकाते ) थे ० वह कहेंगे ( कि नहीं )-बल्कि तुम (आप) ईमान नहीं लाये० और तुम पर हमारा कुछ ज़ोर तो था ही नहीं, बल्कि तुम ( ख़ुद ) सर्कश लोग थे ० पस हमारे पर्वर्दिगार का वादए ( अज़ाब ) हमारे ( सबके ) हक़ में पूरा हुआ—तो हम ( सबही ) को अज़ाब के मज़े चखने होंगे ० हम ( आप ) बहके हुए थे, सो हमने तुमको भी बहका दिया—( मगर बज़ोर नहीं ) ० अलग़रज़ उस दिन यह ( सब लोग ) शरीक-अज़ाब होंगे ० गुनहगारों के साथ हम ऐसा ही ( दर्ताव ) किया करते हैं ० यह ऐसे ( सर्कश ) थे कि जब इनसे कहा जाता था कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, तो यह अकड़ बैठते थे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! तुम्हारे ज़माने के मुन्किर ) कहते हैं कि भला ( कहीं ) हम—

---

वही बदले वाला दिन ( ज्ञात होता) है। ( ख़ुदा की ओर से घोषणा होगी ) हां ! यह वही निर्णय का दिन है, जिसे तुम झुठलाते थे। ( पुनः ख़ुदा फ़रिश्तों को आज्ञा देगा कि ) उन लोगों को जिन्होंने ( दुनिया में अवज्ञा तथा ) उद्दण्डता की है और उनके साथियों को और उन पूज्यों को जिनकी यह लोग ख़ुदा को छोड़कर पूजा करते थे—( एक स्थान पर ) एकत्रित करो। पुनः ( आज्ञा होगी कि ) इनको दोज़ख़ के मार्ग पर ले चलो ॥

( पुनः आज्ञा होगी कि ) इनको ( पुल-सिरात अथवा दोज़ख़ के किनारे ) ठहराओ-( क्योंकि) इनसे पूछ-गछ की जावेगी। ( अतः उनसे कहा जावेगा ) तुम लोगों को ( आज ) क्या हो गया है ? एक दूसरे की ( कुछ ) सहायता नहीं करते ? ( यह लोग कुछ उत्तर न देंगे ) वरन सिर झुकाये ( खड़े ) रहेंगे और एक दूसरे की ओर मुंह करके परस्पर सवाल-जवाब करेंगे। ( एक समूह दूसरे समूह से ) कहेगा कि तु[illegible]प ही थे कि आ आकर हमारे सिर हुआ करते थे। ( दूसरा समूह ) उत्तर देगा ( कि यह बात नहीं )-वरन तुम स्वयं ही ईमान नहीं लाये। ह[illegible]मारा तुम पर कुछ अधिकार न था, वरन तुम स्वयं ही उद्दण्ड लोग थे ॥

( ज[illegible] कुछ भी हुआ ! ) अब तो हमारे हक़ में पालनहारे का वादा पूर्ण हो चुका। और हम सबको ( अज़ाब का ) स्वाद चखना है। हम स्वयं पथ-[illegible]ष्ट थे। हमने तुम्हें भी पथ-भ्रष्ट किया। ( जिस प्रकार ) यह लोग ( दुनिया के कामों में परस्पर साझी थे, उसी प्रकार ) क़यामत के दिन ( [illegible]ी ) अज़ाब में साझी होंगे। हम पापियों के साथ ऐसा ही करते हैं। यह लोग ऐसे थे कि जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के अतिरिक्[illegible] कोई पूज्य नहीं, तो उद्दण्डता करते थे। और ( हे पैग़म्बर ! आपके समय में काफ़िर लोग ) कहते हैं कि क्या हम—

अपने माबूदों को एक बावले शाइर की ख़ातिर छोड़ देते हैं। ( सो पैग़म्बर न बावले हैं, न शाइर ) ० बल्कि ( ख़ुदा के हां से दीन ) हक़ लेकर आये हैं और ( अगले ) पैग़म्बरों की तस्दीक़ करते हैं ० तुम ( इनको नहीं मानोगे, तो ) ज़रूर अज़ाब-दर्दनाक ( के मज़े ) चक्खोगे ० और जैसे जैसे अमल करते रहे हो, उनही का बदला पाओगे ० मगर अल्लाह के ख़ास बन्दे ० यह ऐसे ( ख़ुश-नसीब ) होंगे कि ( ख़ुदा के ख़्वान-करम से ) उनकी रोज़ी मुक़र्रर होगी ० ( और रोज़ी भी ऐसी वैसी नहीं, बल्कि ) मेवे और वह आराम ( व आसाइश ) के बाग़ों में बड़ी इज़्ज़त से ० तख़्तों पर आमने-सामने ( बैठे ) होंगे ० इनमें साफ़ ( व ) सफ़ेद शराब के जाम का दौर चल रहा होगा ० ( और ) पीने वालों को ( वह शराब बड़ा ) मज़ा देगी ० न तो उसमें ख़ुमार होगा और न उससे उनकी अक़्लें ज़ायल होंगी ० और इनके पास नीची निगाह वाली बड़ी (बड़ी) आंखों की (हूरें) होंगी ० ( उनकी गोरी गोरी रंगतों में हल्की हल्की ज़र्दी ऐसी झलकती होगी ) कि गोया वह (शुतर मुर्ग़ के) अंडे हैं, जो (एहतियात से) पर्दों में रक्खे हुये हैं ० फिर यह ( जन्नती ) एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह ( और मुख़ातिब ) होकर आपस में पूछा पाछी करेंगे ० इनमें से एक कहने वाला कहेगा कि ( दुनिया में ) एक मेरा साथी था ० ( और वह मुझसे तअज्जुब की राह ) पूछा करता था कि क्या तू ( भी ) उन लोगों में है, जो ( क़यामत के ) क़ाइल हैं ० क्या ( वाक़े में ) जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डियां होकर रह जायेंगे ( क्या हक़ीक़त में हम दुबारा उठा खड़े किये जायेंगे ? और ) हमकों ( अपने किये का ) बदला मिलना है ० (फिर वह अपने दूसरे साथियों से) कहेगा ( कि मैं तो अपने उस रफ़ीक़ को देखना चाहता हूं )—क्या तुम ( भी उसको ) झांकना चाहते हो ०—

لَتَارِكُوٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ● بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ
وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ● اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ
الْاَلِيْمِ ● وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ●
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ● اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ
مَّعْلُوْمٌ ● فَوَاكِهُ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ● فِيْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ● عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ● يُطَافُ
عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ● بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ●
لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ● وَعِنْدَهُمْ
قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ● كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ●
فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ● قَالَ
قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ● يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ
لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ● ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ
عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ● قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ●

---

एक कवि और एक पागल के निमित्त अपने पूज्यों को तज दें। ( यद्यपि ख़ुदा के रसूल ऐसे नहीं हैं )—वरन् ( ख़ुदा की ओर से ) सत्य-धर्म लेकर आये हैं और ( पिछले ) पैग़म्बरों को सच्चा बताते हैं। ( देखो ! हे उपेक्षा करने वालो ! यदि तुम ईमान न लाओगे, तो ) तुमको दुखदायी अज़ाब सहन करना पड़ेगा। और तुम ( संसार में ) जो कुछ करते रहे हो ( क़यामत में ) उसीका बदला पाओगे। हाँ ! अल्लाह के मुख्य बन्दे इससे पृथक हैं। उनके लिये (बंधी हुई जीविका और) जाने हुये भोजन होंगे अर्थात मेवे। और वह अति सत्कार-पूर्वक आनन्दकारी बाग़ों में रहेंगे। सिंहासनों पर आमने-सामने बैठा करेंगे॥

स्वच्छ मदिरा के प्याले घुमाये जावेंगे—( ऐसी मदिरा जिसका ) रंग श्वेत होगा। ( और ) पीने वालों के लिये ( बहु ) स्वादिष्ट होगी। न उसमें नशा होगा और न वह उससे ( बुद्धिहीन होकर ) बकेंगे। और उनके निकट नीची दृष्टि रखने हारी सुन्दर नयन वाली ( हूरें ) होंगी—( ऐसी गोरी गोरी ) मानो वह ( शुतर मुर्ग़ के ) अंडे हैं—( परों में ) छिपाये हुये ( धूलि तथा गर्द से सुरक्षित ) उनमें से एक दूसरे की ओर ध्यान देकर सवाल-जबाब करेंगे ( अर्थात परस्पर वार्तालाप करेंगे )॥

उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि ( संसार में ) मेरा एक साथी था। वह मुझसे कहा करता था कि क्या तू भी उन लोगों में है, जो ( क़यामत को ) सच समझते हैं। क्या जब हम मर जायंगे और मिट्टी और हड्डियों ( का एक ढेर ) रह जायँगे, तो हमको ( दुबारा पुनः जीवित किया जावेगा ? और हमारे कर्मों का ) बदला दिया जावेगा ? ( यह जन्नती अन्य जन्नतियों से ) कहेगा—आओ ना ! उस (दोज़ख में) झाँकें ( और देखें कि किस दशा में है )॥

फَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ قَالَ تَاللَّهِ إِن
كِدْتَ لَتُرْدِينِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ
مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا
الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ۝
أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ۝ إِنَّا
جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ ۝ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ
فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۝ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ۝
فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝
ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ۝ ثُمَّ إِنَّ
مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ۝ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ
ضَالِّينَ ۝ فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ۝ وَلَقَدْ ضَلَّ
قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم

مُنذِرِينَ

यह कह कर वह ( ऊपर से दोज़ख़ को ) झाँकेगा, तो ( अपने ) उस ( रफ़ीक़ ) को देखेगा ( कि ) दोज़ख़ के बीचों-बीच ( पड़ा है ) ० ( वह उसको उस हाल में देख कर ) बोल उठेगा कि ख़ुदा की क़सम ! तू तो मुझे तबाह ही करने को था ० और अगर मेरे पर्वरदिगार का फ़ज़्ल ( मेरे शामिल-हाल ) न होता, तो ( आज ) मैं ( भी ) उनही लोगों में होता, जो गिरफ़्तार ( अज़ाब ) हैं ० क्या हम ( जन्नतियों का यह हाल ) नहीं कि पहिली बार मरना था ( सो मर चुके )-अब आगे को हमें मरना नहीं और न हम मुब्तलाए-अज़ाब हैं० बेशक यह बड़ी कामयाबी ( की बात ) है ० और चाहिये कि ऐसी ही ( कामयाबी हासिल करने ) के लिये अमल करने वाले अमल करें ० भला ( ख़ुदा को तरफ़ से बन्दोंकी ) यह ज़ियाफ़त बेहतर है या थूहर का दरख़्त० कि हमने उसको (इन) ज़ालिमों (के ईमान) की आज़माइश क़रार दिया है ० वह एक दरख़्त है, जो दोज़ख़ की जड़ में ( से ) उगता है ० उसके फल ( ऐसे बदनुमा हैं ) जैसे साँपके फन० तो यह ( दोज़ख़ी ) उसीमें से खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे० फिर उसके ऊपर से इनको खौलता हुआ पानी (पीप वग़ैरह से) मिला-मिला (कर पीने को ) दिया जायगा ० फिर ( यह कुछ खा पीकर ) इनको जहन्नम की तरफ़ लौटना होगा ० (ऐ पैग़म्बर !) उन्हों (ने यानी कुफ़्फ़ार मक्का) ने अपने बाप दादों को गुमराह पाया० पस यह बे तहाशा उनही के पीछे पीछे लपके चले जा रहे हैं० और इनसे पहिले अगले ( लोगों में भी ) अक्सर गुमराह हो चुके हैं ० और उनमें भी हमने डर सुनाने वाले ( पैग़म्बर ) भेजे थे ०—

---

यह कहकर वह झाँकेगा, तो अपने साथी को दोज़ख़ के बीच में पावेगा। ( यह देखकर ) कहेगा कि तू तो मुझे भी ले डूबा और यदि मुझ पर ख़ुदा की दया तथा कृपा न होती, तो ( आज ) मैं भी दोज़ख़ी लोगों में होता। अच्छा तो पहिली मृत्यु के अतिरि (जो संसार में हो चुकी, अब ) हमको मरना नहीं और न हम पर अज़ाब होना है ॥

वास्तव में यह ( बहुत ) बड़ी सफलता है। और इसी प्रकार की सफलता ( प्राप्त करने ) के लिये कर्म करने वालों कर्म करना चाहिये। क्या ( ख़ुदा की ओर से ) यह अतिथि-सत्कार उत्तम है या थूहर का वृक्ष ? हमने उसे ( अर्थात थूहर के वृक्ष को उद्दण्ड लोगों की परीक्षा ठहराया है। वह एक वृक्ष है, जो दोज़ख़ की तह से उगता है। उसके फल ( ऐसे कुरूप हैं ) मानो सर्पों के फन सो उनको उसी ( के फलों ) को खाना है और इसी से पेट भरना है ॥

पुनः इसके ऊपर उन्हें ( रक्त-पीप ) मिला हुआ गर्म पानी मिलना है। पुनः ( यह खा पीकर ) दोज़ख़ ही की ओर उन लौटना है। ( बात यह है कि ) उन लोगों ने अपने बाप दादा को पथ-भ्रष्ट पाया। अतः यह भी उन्हीं के पद-चिन्हों पर चल रहे इनसे पहिले अगले लोगों ( अर्थात् नूह, आद और समूद की जाति ) में भी बहुजन पथ-भ्रष्ट हो चुके हैं और हमने उनमें भी ( अज़ाब से ) डराने वाले ( पैग़म्बर ) भेजे—

مُنذِرِينَ ۝ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ
إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ
فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ۝ وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيمِ ۝ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۝
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ
نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝
وَإِنَّ مِن شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ جَاءَ رَبَّهُ
بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا
تَعْبُدُونَ ۝ أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ۝
فَمَا ظَنُّكُم بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي
النُّجُومِ ۝ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝
فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝ مَا لَكُمْ

٤

तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) देखो उन लोगों का कैसा ( ख़राब ) अन्जाम हुआ, जो ( पहिले से ) डराये जा चुके थे (और उन्होंने नहीं माना था) ० हां ! ( उनमें से जो ) अल्लाह के ख़ालिस बन्दे ( थे, वह अज़ाब से महफ़ूज़ रहे ) ० और नूह ने भी हमको ( मदद के लिये ) पुकारा था, तो ( हमने उनकी फ़रियाद सुन ली और ) हम ( कैसे ) अच्छे फ़रियाद-रस हैं ० कि नूह और उनके घर वालों को सख़्त मुसीबत से बचा लिया ० और उन की नस्ल को ऐसा ( बा-बरकत ) किया कि वही ( क़यामत तक ) बाक़ी रहेंगे ० और ( उनके बाद ) आने वाली उम्मतों में उनका ज़िक्र-ख़ैर बाक़ी रक्खा ० कि सारे जहान में ( हर तरफ़ से यही आवाज़ है कि ) नूह पर सलाम ० नेक लोगों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं ० कुछ शक नहीं कि नूह हमारे ईमानदार बन्दों में से हैं ० फिर औरों को हमने ग़र्क़ कर दिया ० और नूह ही के तरीक़ पर चलने वालों में से एक इब्राहीम भी थे ० जबकि साफ़-दिल से अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ रुजू हुए ० ( और ) जब कि उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम ( के लोगों ) से कहा कि यह ( बुत ) क्या चीज़ हैं, जिनकी तुम परस्तिश करते हो ० क्या झूट-मूट ख़ुदा के सिवा ( दूसरे ) माबूदों के पीछे पड़े हो ० तो तुमने ( अल्लाह )-रब्बुल-आलमीन को क्या समझ रक्खा है ० फिर ( जिस तरह नजूमी ज़ाइचा देखता है, इसी तरह पर इब्राहीम ने ) सितारों (की रफ़्तार) में नज़र करके यह हीला किया कि मैं बीमार ( होने को ) हूं ० तो वह लोग इनको छोड़ कर चले गये ० उनका जाना था कि इब्राहीम चुपके से उनके बुतों में जा-घुसे और ( उनसे हँसी के तौर पर ) कहा ( कि इतने चढ़ावे तुम्हारे सामने रक्खे हैं )-तुम ( इनको ) खाते नहीं ० तुम्हारा क्या हाल है कि—

---

सो (हे पैग़म्बर ! ) देखो उन लोगों का जिनको डराया गया था, परिणाम क्या हुआ। हाँ ! जो ख़ुदा के मुख्य बन्दे थे, वह (अज़ाब से ) बचे रहे। ( और जाति की उद्दण्डता से विवश होकर ) नूह ने हमको पुकारा ( हमने उनकी प्रार्थना सुनी )-जिससे प्रगट है कि हम बहुत अच्छे उत्तर-दाता हैं। और हमने नूह को और उनके सम्बन्धियों को बड़े कठिन दुख से बचा लिया। और हमने ( यह ) किया कि उन्हीं की सन्तान शेष रही और उनके पश्चात आने वालों में यह स्मृति छोड़ी कि प्रत्येक जग में नूह पर सलाम ( भेजा जा रहा ) है। हम सदाचारियों को इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं। निस्सन्देह नूह हमारे ईमान वाले बन्दों में हैं। ( संक्षिप्त यह कि हमने नूह और उनके कुटुम्ब वालों को तो बचा लिया ) और दूसरों को ( जल की बाढ़ में ) डुबो दिया ॥

और नूह ही के मार्ग पर चलने वाले इब्राहीम भी थे, जब वह अपने पालनहारे की ओर शुद्ध-हृदय के साथ आकर्षित हुये। जब उन्होंने अपने पिता और अपनी जाति से कहा कि तुमने किसको पूज्य ठहराया है। क्या झूठ-मूठ ख़ुदा के अतिरिक्त दूसरे पूज्यों का इरादा है ? ( यदि ऐसा है ) तो समस्त जगों के पालनहारे के विषय में तुम्हारा क्या विचार है ॥

इतना कह कर इब्राहीम ने ( ज्योतिषी लोगों की तरह ) तारों की ओर दृष्टि की और कहा कि मैं रोगी होने वाला हूं। यह सुन कर लोग उन्हें छोड़ कर चल दिये। अकेले हुये, तो इब्राहीम चुपके २ उनकी मूर्तियों के समीप पहुंचे। ( उनसे सम्बोधन करके ) कहा-तुम कुछ खाते पीते नहीं ( जब मूर्तियों ने कुछ उत्तर न दिया, तो कहा ) तुम्हें क्या हुआ कि—

لَا تَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ۝ فَاَقْبَلُوْا
اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ۝ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ
خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ
فِي الْجَحِيْمِ ۝ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ
الْاَسْفَلِيْنَ ۝ وَقَالَ اِنِّيْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝
رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ۝
فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى
فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى قَالَ
يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ۝
وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۝ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا
اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ
الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ۝ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ۝

وتركنا

तुम ( तो ) बोलते (तक भी) नहीं ० फिर तो ( इब्राहीम ) बड़े ज़ोर से उनके मारने पर पिले ० ( और तोड़-फोड़ उनके टुकड़े टुकड़े कर दिये। लोगों को ख़बर हुई ) तो इब्राहीम पास दौड़े आये ० ( इब्राहीम ने ) कहा क्या तुम ऐसी ( बे-हक़ीक़त ) चीज़ों को पूजते हो, जिनको तुम ( आप ) तराशते हो ० हालांकि तुमको और जिन चीज़ों को तुम बनाते हो (सबको) अल्लाह ही ने पैदा किया है ० ( यह सुनकर वह लोग आपस में ) लगे कहने कि इब्राहीम के लिये ( भट्टी की तरह की ) एक इमारत बनाओ (और उसमें आग दहकाओ ) और उसको दहकती हुई आग में डाल दो ० ग़रज़ लोगों ने इब्राहीम के साथ एक दाव करना चाहा, मगर हमने ( इब्राहीम के मुक़ाबले में ) उनही को मग़लूब किया ० और ( जब इब्राहीम को बादशाह बुत-परस्त की ख़ातिर से बाप ने घर से निकाल दिया, तो इब्राहीम ने ) कहा कि मैं तो अपने पर्वर्दिगार की (राह में किसी) तरफ़ (को) चला जाता हूं। वह मुझे ( किसी अच्छे ही ) ठिकाने लगा देगा ० और ( इब्राहीम ने यह भी दुआ मांगी कि ) ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मुझको नेक रूहों में से ( एक नेक रूह बतौर-फ़र्ज़न्द) अता फ़र्मा ० तो हमने उनको एक बड़े बुर्दबार लड़के ( इस्माईल के पैदा होने ) की ख़ुश-ख़बरी दी ० फिर जब लड़का ( जवान हुआ और ) इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा, तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा ! मैं ख़्वाब में ( क्या ) देखता हूं कि ( जैसे ) मैं तुमको ज़िबह कर रहा हूं। पस तुम ( भी तो अपनी जगह ) सोचो कि तुम्हारी क्या राय है ? ( बेटे ने) कहा अब्बा जान ! आपको जो हुक्म हुआ है ( बे तअम्मुल ) उसकी तामील कीजिये ! इन्शाअल्लाह आप मुझको भी साबिर ( ही ) पायेंगे ० फिर जब दोनों ( बाप बेटे ) तामील-हुक्म पर आमादा हुये और बाप ने ( हलाल करने के लिये ) बेटे को माथे के बल पछाड़ा, तो (हमको उनकी फ़र्मांबर्दारी निहायत ही पसन्द आई)० और हमने इब्राहीम से पुकार कर कहा कि इब्राहीम ! ० तुमने (अपने) ख़्वाब को ख़ूब सच कर दिखाया। ( अब हम तुमको बड़े बड़े मरातिब देंगे और ) नेक बन्दों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं ० बेशक यह खुली हुई आज़माइश थी ० और हमने बड़ी क़ुर्बानी को इस्माईल का फ़िदया दिया ०—

तुम बात भी नहीं करते। पुनः बल-पूर्वक (ख़ूब) उनको मारना (अर्थात तोड़ना) आरम्भ किया। (लोगों को ख़बर हुई) तो उनकी ओर दौड़ पड़े। इब्राहीम ने कहा-क्या तुम उन वस्तुओं को पूजते हो, जिनको आप ही बनाते हो ? यद्यपि अल्लाह (पूजनीय है, क्योंकि वही) तुम्हारा और तुम्हारी बनाई हुई वस्तुओं का सृष्टि कर्त्ता है। ( यह बातें सुनकर ) लोगों ने कहा इसके निमित्त एक घर बनाओ-( उसमें ख़ूब अग्नि प्रचण्ड करो और ) पुनः इसको दहकती हुई अग्नि में फेंक दो। इस प्रकार उन्होंने इब्राहीम के साथ बुराई का इरादा किया, किन्तु हमने उन्हीं को नीचा दिखाया॥

( जब इब्राहीम अग्नि से सुरक्षि रहे और नमरूद की आज्ञा हुई कि उन्हें घर से बाहर निकाल दिया जाय, तो उन्होंने ) कहा-मैं अपने पालनहारे की ओर लव लगाता हूं। वही मुझे राह दिखावेगा। ( सारांश यह कि इब्राहीम शाम-देश को चले गये। राह में हाजरा से निकाह हुआ। निकाह के पश्चात उन्होंने प्रार्थना की कि ) हे पालनहारे ! मुझे शुभ सन्तान प्रदान कर। अतः ( यह प्रार्थना हमने अंगीकार की और ) उनको एक सहनशील पुत्र ( के उत्पन्न होने ) का मंगल-समाचार सुनाया। जब यह पुत्र इस योग्य हुआ कि इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा-( तो एक दिन इब्राहीम ने उससे ) कहा कि हे पुत्र ! मैं स्वप्न में ( क्या ) देखता हूं कि तुमको बध कर रहा हूं। अतः तुम भी विचार करो कि तुम्हारी बुद्धि में क्या आता है॥

( पिता का स्वप्न सुनकर पुत्र ने ) कहा-हे पिता ! आप को जो आज्ञा दी गई है, उसको पूरा करो। यदि अल्लाह ने चाहा, तो आप मुझको सन्तोषी पावेंगे। सो जब दोनों ने ख़ुदा की आज्ञा मान ली और इब्राहीम ने पुत्र को माथे के बल पछाड़ा-( तो हम उनके इस आज्ञा पालन से बहुत प्रसन्न हुये ) और हमने पुकारा कि हे इब्राहीम ! तुमने ( अपना ) स्वप्न अच्छी तहर सच कर दिखाया। ( हम तुमको इसका बड़ा पुरस्कार देंगे और ) नेक बन्दों को हम इसी प्रकार पुरस्कार देते हैं। वास्तव में यह एक प्रत्यक्ष परीक्षा थी। ( इसके बदले में हमने इस्माईल के फ़िदिये अर्थात बदले में एक बड़ी क़ुर्बानी अर्थात भेंट दी—

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ
كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰى اِسْحٰقَ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ
مُبِيْنٌ ۝ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝
وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝
وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمَا
الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ۝ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝
سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا

ع

और (इब्राहीम के बाद) आने वाली उम्मतों में उनका ज़िक्र-ख़ैर बाक़ी रक्खा ० कि (सारे जहान में यही आवाज़ हो रही है कि) इब्राहीम पर सलाम ० हम नेक बन्दों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं ० इसमें शक नहीं कि इब्राहीम (भी) हमारे ईमानदार बन्दों में हैं ० और हमने इब्राहीम को (एक दूसरे फ़ज़न्द) इस्हाक़ (के पैदा होने) की (भी) ख़ुश-ख़बरी दी थी (और कह दिया था कि यह भी) पैग़म्बर (और हमारे) नेक बन्दों में से (होंगे) ० और हमने इब्राहीम पर और (नीज़) इस्हाक़ पर (अपनी) बरकतें नाज़िल फ़रमाईं और इन दोनों की नस्ल में (बाज़) नेकोकार हैं और (बाज़ नाफ़र्मानियाँ करके) अपनी जानों पर सरीह ज़ुल्म कर रहे हैं ० और हमने मूसा और हारून पर (भी बहुत से) एहसानात किये ० और (आख़िरकार) दोनों (भाइयों) को और उनकी क़ौम को बड़ी मुसीबत (यानी फ़िर्औन के मज़ालिम) से नजात दी ० और (फ़िर्औन के मुक़ाबले में) उनकी मदद की, तो (आख़िरकार) यही लोग वर रहे ० और दोनों (भाइयों) को किताब (तौरात) दी-(जिस में हर तरह के अहकाम साफ़) साफ़ (लिखे हुये हैं) ० और दोनों को (दीन का) सीधा रस्ता दिखाया ० और (उनके बाद) आने वाली उम्मतों में उनका ज़िक्र-ख़ैर बाक़ी रक्खा ० कि (सारे जहान में यही आवाज़ आ रही है कि) मूसा और हारून पर सलाम ० बेशक हम नेक बन्दों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं ० इसमें शक नहीं कि वह दोनों हमारे ईमान वाले बन्दों में हैं ० और तहक़ीक़ इल्यास (भी) अलबत्ता पैग़म्बरों में से हैं ० जब उन्होंने अपनी क़ौम (के लोगों) से कहा—

---

और आने वाली सन्तान में उनका स्मरण छोड़ा कि इब्राहीम पर सलाम (भेजा जा रहा है)। हम नेक बन्दों को इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं। निस्सन्देह इब्राहीम (भी) हमारे ईमान वाले बन्दों में हैं और (इसके उपरान्त) हमने (इब्राहीम को दूसरे पुत्र) इस्हाक़ का मंगल-समाचार सुनाया कि नबी और नेक बन्दों में होंगे। और हमने इब्राहीम पर और इस्हाक़ पर अपनी बरकतें उतारीं। (अब.) इन दोनों के वंश में नेक (तथा आज्ञाकारी) भी हैं और (अवज्ञाकारी भी) हैं, जो अपने ऊपर खुला हुआ अत्याचार कर रहे हैं। और हमने मूसा और हारून पर भी (बहुत से) उपकार किये हैं॥

और उनको और उनकी जाति को कठिन दुख (अर्थात फ़िर्औन के अत्याचारों) से मुक्ति दी और उनकी सहायता की, जिसका परिणाम यह हुआ कि (फ़िर्औन के मुक़ाबले में) वही विजयी हुये। हमने उन्हें (तौरेत) पुस्तक प्रदान की, जो हर प्रकार के आदेश खोल २ कर वर्णन करती है। हमने उन्हें सीधा मार्ग दिखाया और हमने आने वाली सन्तान में उनका यह स्मरण छोड़ा कि मूसा और हारून पर सलाम (भेजा जा रहा) है। हम इसी प्रकार नेक बन्दों को प्रतिफल देते हैं। निस्सन्देह यह दोनों भी हमारे ईमान वाले बन्दों में हैं। और इल्यास भी अवश्य पैग़म्बरों में से हैं। जब उन्होंने अपनी जाति से कहा—

تَتَّقُوْنَ ۝ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ
الْخٰلِقِيْنَ ۝ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰٓى
اِلْ يَاسِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ
مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝
اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عَجُوْزًا فِي
الْغٰبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ
عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ۝ وَبِالَّيْلِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝
وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ
الْمَشْحُوْنِ ۝ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۝
فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝ فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ
مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۝ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝

ع

فَنَبَذْنٰهُ

क्या तुम ( लोग ख़ुदा से ) नहीं डरते ० क्या तुम बाल ( बुत ) को पूजते और अल्लाह को छोड़ बैठे हो, जो सबसे बेहतर पैदा करने वाला ० ( और ) तुम्हारा ( भी ) पर्वर्दिगार ( है ) और तुम्हारे अगले बाप दादों का ( भी ) पर्वर्दिगार है ० तो लोगों ने इल्यास को झुठलाया, सो यह लोग ( क़यामत में ) ज़रूर गिरफ़्तार ( अज़ाब ) होंगे ० मगर ( हाँ ) अल्लाह के ख़ालिस बन्दे ( कि न उन्होंने झुठलाया और न उनको अज़ाब हो ) ० और ( इल्यास के बाद ) आने वाली उम्मतों में हमने उनका ज़िक्र–ख़ैर बाक़ी रक्खा ० कि ( सारे जहान में यही आवाज़ आरही है कि ) इल्यासीन ( यानी इल्यास ) पर सलाम ० बेशक हम नेक बन्दों को इसी तरह बदला दिया करते हैं ० इसमें शक नहीं कि इल्यास हमारे ईमान वाले बन्दों में से हैं ० और कुछ शक नहीं कि अलबत्ता लूत ( भी ) पैग़म्बरों में से हैं ० कि हमने लूत को और उनके तमाम ख़ान्दान को ( अज़ाब से ) बचा लिया ० मगर ( उनकी ) एक बूढ़ी ( बीबी कि वह ) पीछे रह जाने वालों में ( रह गई थी ) ० फिर (इनके निकले पीछे ) हमने औरों को हलाक कर मारा ० और (ऐ अह्ल–मक्का !) तुम तो (मुल्क–शाम को तिजारत के लिये आते–जाते कभी ) सुबह को० और ( कभी ) रात को उन लोगों ( की बस्तियों ) पर ( से होकर ) गुज़रा ही करते हो, तो क्या तुम लोग अक़्ल से ( इतना भी ) काम नहीं लेते ( कि उनको देखकर इब्रत पकड़ो ) ० और बेशक यूनुस ( भी ) अलबत्ता पैग़म्बरों में से हैं ० कि जब भागकर भरी हुई किश्ती के पास पहुंचे ० और ( वहां अह्ल–किश्ती के साथ ) क़ुरा डाला—( चूंकि क़ुरे में उनका नाम निकला ) इसलिये ( दरिया में ) फेंक दिये गये ० फिर ( दरिया में गिरे पीछे ) उनको मछली ने निगल लिया और वह ( उस वक़्त अपने तईं बहुत ही ) मलामत करते थे ० तो अगर यूनुस ( उस वक़्त ख़ुदा की ) तस्बीह (व तक़्दीस ) करने वालों में से न होते ० तो उस दिन तक जबकि लोग उठा खड़े किये जाएंगे ( यानी क़यामत तक ) मछली ही के पेट में रहते–( लेकिन उन्होंने तस्बीह व तक़्दीस की ) ०—

---

क्या तुम ( लोगों ) को ( ख़ुदा का ) भय नहीं ? क्या तुम बअ्ल ( नामक मूर्ति ) को पुकारते हो और अल्लाह को छोड़ बैठे हो, जो सर्वोत्तम सृष्टि कर्ता है और तुम्हारा और तुम्हारे पूर्वज पिता—प्रपिता का पालनहारा है। ( यह सत्य उपदेश सुनकर जाति ने ) उनको झुठलाया, जिसका परिणाम यह है कि ( यह लोग क़यामत में ) अवश्य पकड़े जावेंगे—परन्तु अल्लाह के मुख्य बन्दे इससे पृथक हैं। और हमने आने वाली सन्तान में इल्यास का ( भी ) यह स्मरण छोड़ा कि इलयास पर सलाम ( भेजा जा रहा है )। हम नेक बन्दों को इस प्रकार प्रतिफल देते हैं। निस्सन्देह इलयास भी हमारे ईमानवाले बन्दों में हैं। और लूत ( भी ) अवश्य पैग़म्बरों में से हैं॥

( वह समय स्मरण करना चाहिये ) जब हमने उनको और उनके कुटुम्ब को ( अज़ाब से ) बचा लिया–( उनकी ) एक बूढ़ी ( पत्नी ) के अतिरिक्त, जो पीछे रहने वालों में ( रह गई ) थी। पुनः हमने और सबको नष्ट कर दिया। और तुम तो ( शाम–देश की यात्रा में ) उन (की बस्तियों ) पर अंधेरे–उजाले गुज़रते ही रहते हो, तो क्या तुम्हें ( इतनी ) समझ नहीं ( कि उनसे शिक्षा प्राप्त करो )॥

और यूनुस भी अवश्य पैग़म्बरों में से हैं। ( वह समय स्मरण करना चाहिये ) जब वह भागकर भरी हुई नाव के पास पहुंचे ( नाव वालों के साथ ) कुरा * डाला ( और कुरे में उनका नाम निकला )–तो दरिया में फेंक दिये गये। ( दरिया में गिरे ) तो उनको मछली ने निगल लिया और वह अपने आपको धिक्कार कर रहे थे। सो यदि यूनुस ( उस समय ख़ुदा की ) पवित्रता का वर्णन न करते तो क़यामत पर्यन्त मछली के पेट में रहते॥

* टीका—यूनुस नौका में बैठे, तो दरिया में तूफ़ान आ गया। नाव वालों ने कहा—हममें से एक मनुष्य की भेंट दी जाय तो सब बच जायंगे। इसलिये उन्होंने सब यात्रियों के नाम की चिट्ठियां डालीं। और दरिया में डालने की चिट्ठी यूनुस के नाम निकली।—हसन निज़ामी॥

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ۝ وَاَنْۢبَتْنَا
عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ۝ وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى
مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ۝ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ
اِلٰى حِيْنٍ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ
الْبَنُوْنَ ۝ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ
شٰهِدُوْنَ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۝
وَلَدَ اللّٰهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ
عَلَى الْبَنِيْنَ ۝ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝
اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝
فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۗ وَلَقَدْ
عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝ سُبْحٰنَ
اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝

तो हमने उनको ( मछली के पेट से निकाल कर ) खुले मैदान में डाल दिया और वह ( थोड़ी ही देर मछली के पेट में रहने से बहुत ही ) निढाल ( हो गये ) थे० और ( फिर ) हमने उन पर ( कद्दू का ) एक बेलदार दरख़्त भी उगा दिया ० और उनको (अच्छा-बिच्छा करके) लाख आदमी की तरफ़ ( पैग़म्बर बनाकर ) भेजा, बल्कि ( एक हिसाब से वह लाख से भी ) ज़ियादा थे ० तो वह लोग ( उन पर ) ईमान लाये, तो हमने उनको एक वक़्त ( ख़ास ) तक ( दुनिया में अम्न चैन से ) रसने बसने दिया ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन ( कुफ़्फ़ार-मक्का ) से पूछो कि क्या ख़ुदा के लिये बेटियां और इनके लिये बेटे ० या हमने ( वाक़े में ) फ़रिश्तों को औरत-ज़ात बनाया और यह देख रहे थे ० सुनो जी ! यह तो अपने दिल से बना बना कर कहते हैं० कि ख़ुदा साहिब-औलाद है और कुछ शक नहीं कि यह लोग ज़रूर झूटे हैं ० क्या ( ख़ुदा ने ) बेटों पर ( बेटियों को तरजीह देकर ) बेटियाँ ( अपने लिये ) पसन्द कीं ० तुम ( लोगों ) को क्या ( हो गया ) है ? कैसे ( बेहूदा ) हुक्म लगाते हो ० क्या तुम सोच को काम में नहीं लाते ० या तुम्हारे पास कोई खुली हुई (किताबी) सनद है ० सच्चे हो, तो अपनी किताब ला पेश करो ० और इन लोगों ने ख़ुदा में और जिन्नात में नाता ठहराया है, हालांकि जिन्नात को अच्छी तरह मालूम है कि वह ( भी दूसरे बन्दों की तरह महकूम हैं और उनमें जो बद-किर्दार हैं, अज़ाब में ) ज़रूर हाज़िर रक्खे जाएंगे ० ( ख़ुदा की निस्बत) जैसी जैसी ( लग्व ) बातें ( यह लोग ) बनाते हैं, ख़ुदा (की ज़ात) उनसे पाक है ० मगर ( हां ! ) अल्लाह के ख़ालिस बन्दे ( कि न ख़ुदा के बारे में लग्व अक़ीदे रखते हैं और न उनको अज़ाब होगा ) ०—

---

सो हमने उनको ( मछली के पेट से निकाल कर ) सूखी भूमि पर डाल दिया और उनकी दशा यह थी कि ( मछली के पेट में रहने से ) दुर्बल हो गये थे। और हमने उनके निमित्त ( कद्दू का ) एक बेलदार वृक्ष भी उगाया और हमने उनको एक लाख, बरन इससे भी अधिक ( मनुष्यों ) की ओर ( पैग़म्बर बनाकर ) भेजा। सो वह लोग उनपर ईमान लाये। अतः हमने उन्हें एक नियत समय तक ( संसार से ) लाभ उठाने का अवसर दिया। ( इन बातों से शिक्षा ग्रहण नहीं करते और ) मक्का के काफ़िर ख़ुदा के निमित्त पुत्रियां ठहराते हैं। सो ( हे पैग़म्बर ! ) इनसे पूछो कि आपके पालनहारे के निमित्त तो पुत्रियां हैं और उनके निमित्त पुत्र हैं ( और यह भी पूछिये ) कि हमने फ़रिश्तों को स्त्री पैदा किया, तो क्या यह देख रहे थे॥

ख़ूब जान लो कि यह अपने दिल से बात बनाकर कहते हैं कि ख़ुदा सन्तान वाला है। यह जो कुछ कहते हैं, पूर्णतया झूठ तथा मिथ्या है। क्या ख़ुदा ने ( अपने लिये ) पुत्रियों को पुत्रों से अच्छा समझा ? ( उन लोगों से कहिये कि ) तुम लोगों को क्या हो गया है। कैसा ( बुरा ) न्याय करते हो। ( अर्थात ग़लत बातें कहते हो )। क्या तुम (कुछ भी) सोच विचार नहीं करते॥

क्या तुम्हारे पास कोई ( पुस्तकीय ) प्रत्यक्ष प्रमाण है ? सो यदि ( ऐसा है और तुम ) सच्चे हो, तो अपनी पुस्तक लाओ ( पेश करो ! )। उन लोगों ने ख़ुदा और जिन्नात के बीच नाता जोड़ा। यद्यपि जिन्नात का स्वयं यह विचार है कि ( उनमें जो दुराचारी हैं ) वह ( अज़ाब में ) पकड़े जावेंगे। जो (अटकल पच्चू) यह बातें कहते हैं, उनसे ख़ुदा पवित्र है—परन्तु जो ख़ुदा के मुख्य बन्दे हैं—( वह उनकी तरह मिथ्यावादी नहीं हैं )॥

सो ( ऐ कुफ़्फ़ार-मक्का ! ) तुम और ( जिन्नात ) जिनकी तुम परस्तिश करते हो ० ख़ुदा से ज़िद बांध कर ( तो किसी को ) बहका नहीं सकते ० मगर उसीको जो ( बहुक्मे-तक़्दीर ) जहन्नम में जाने वाला है—( यह तो जिन्नात की कैफ़ियत है ) ० और ( रहे फ़रिश्ते, उनका तो यह मक़ूला है कि ) हममें से हर एक का दर्जा मुक़र्रर है ० और हम तो ( हमावक़्त ख़ुदा की बन्दगी में ) सफ़-बस्ता ( हाज़िर ) हैं ० और हम तो ( हमावक़्त उसकी ) तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगे रहते हैं ० और यह ( कुफ़्फ़ार-मक्का नुज़ूले-क़ुर्आन से पहिले ) कहा ही करते थे ० कि अगले लोगों की कोई किताब ( इलाही ) हमारे पास होती ० तो हम भी ख़ुदा के बर्गुज़ीदा बन्दे होते ० सो ( अब यह किताब-इलाही इनके पास आई और ) इन्होंने इसको न माना, तो ( ख़ैर ! ) आगे चल कर ( अपने इन्कार का अन्जाम ) मालुम कर लेंगे ० और अपने ( ख़ास ) बन्दों ( यानी ) पैग़म्बरों के हक़ में हमारा पहिले ( ही ) इर्शाद हो चुका है ० कि (हमारे हां से) बेशक उनही की मदद होनी है ० और बेशक हमारा लश्कर—( इस्लाम ) ज़रूर ग़ालिब आकर रहेगा ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) चन्द रोज़ इन मुन्किरों से ( कुछ ) तअर्रुज़ न करो ० और इनको देखते रहो। आगे चल कर ( यह ख़ुदही अपना नतीजा ) देख लेंगे ० तो क्या ( यह लोग ) हमारे अज़ाब के लिये जल्दी मचा रहे हैं ० सो जब ( वह अज़ाब ) इनके ( घरों के ) आंगनों में आ नाज़िल होगा, तो जिन लोगों को पहिले से डराया जा चुका था (और उन्होंने न माना ) उनकी ( यह ) सुबह ( बड़ी ही ) मनहूस ( सुबह ) हुई ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) चन्द रोज़ इनसे तअर्रुज़ न करो ० और देखते रहो, आगे चल कर यह भी अपना नतीजा देख लेंगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जैसी जैसी बातें ( यह लोग ख़ुदा के बारे में ) बनाते हैं, उनसे तुम्हारा पर्वर्दिगार पाक है ( कि वह ) इज़्ज़त वाला ( है ) ०—

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ۝ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ
إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ
مَّعْلُومٌ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ
الْمُسَبِّحُونَ ۝ وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ۝ لَوْ أَنَّ
عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ
الْمُخْلَصِينَ ۝ فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝
وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۝
إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ۝ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ
الْغَالِبُونَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ وَأَبْصِرْهُمْ
فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝
فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ
وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ
يُبْصِرُونَ ۝ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا

يصفون

( हे पैग़म्बर ! उनसे कह दीजिये कि चाहे जो कुछ कहो, किन्तु ) तुम और तुम्हारे समस्त पूज्य उन लोगों के अतिरिक्त ज दोज़ख़ में जानेवाले हैं, किसी को ख़ुदा से विमुख नहीं कर सकते। ( उनका तो यह विचार है ) और ( फ़रिश्ते यह कहते हैं कि ) हममें प्रत्येक के लिए एक पद नियत है। और हम ( ख़ुदा की भक्ति के निमित्त निरन्तर ) पंक्ति बांधे रहते हैं । और हम ( सर्वदा ) उसक पवित्रता वर्णन करते रहते ( और उसके गुन गाया करते ) हैं ॥

और यह लोग ( हे पैग़म्बर ! तुम्हारे आने से पहिले ) कहते थे कि यदि हमारे पास ( भी ) कोई पुस्तक अगले लोगों की होती, त अवश्य हम भी ( उसके उपदेशों को ग्रहण करके ) ख़ुदा के मुख्य बन्दे बन जाते। ( परन्तु जब उनके पास पुस्तक आई ) तो उन्होंने उसे माना। सो शीघ्र ( इस अस्वीकार का परिणाम ) उनको ज्ञात हो जावेगा। और हमारे ( मुख्य ) बन्दों ( अर्थात ) पैग़म्बरों ( के विषय में पहिले ही से हमारी आज्ञा हो चुकी है कि ( हमारी ओर से ) उनको अवश्य सहायता दी जावेगी। और निस्सन्देह हमारी सेना ही विजय होनी है। सो ( हे पैग़म्बर ! ) कुछ समय के लिये आप इनको ( अपनी दशा पर ) छोड़ दीजिये और इनको देखते रहिये यह भी शी ( अपना परिणाम ) देख लेंगे ॥

क्या यह लोग हमारे अज़ाब के लिये जल्दी कर रहे हैं ? ( जल्दी तो कर रहे हैं, किन्तु ) जब उनके ( घरों के ) आंगन अज़ाब उतरा, तो उन लोगों की सुबह जिनको डराया गया ( और वह न डरे ) बड़ी बुरी सुबह होगी। सो आप तो कुछ समय लिये उन्हें ( उनकी दशा पर ) छोड़ दीजिये और उनको देखते रहिये यह भी ( अपना परिणाम ) शीघ्र देख लेंगे। यह लोग जो ब बनाते हैं, उनसे आपका पालनहारा जो बड़े मान वाला है—( उच्च और श्रेष्ठ तथा ) पवित्र है ॥

يَصِفُوْنَ ۝ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
سورة ص مكية　رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝　ثمان وثمانون
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ۝ بَلِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ۝ كَمْ اَهْلَكْنَا
مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ
حِيْنَ مَنَاصٍ ۝ وَعَجِبُوْا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ
مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝
اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ
عُجَابٌ ۝ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا
وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝
مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ اِنْ هٰذَآ
اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا

और पैग़म्बरों पर ( दरूद और ) सलाम ० और सब तारीफ़ें अल्लाह को सज़ावार हैं, जो सारे जहान का पर्वर्दिगार है ०

## सूरत—साद

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ८८ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)० साद ० कुर्आन की क़सम, जिसमें नसीहत ( ही नसीहत ) है ( कि यह कुर्आन हमारा नाज़िल किया हुआ है ) ० लेकिन जो लोग मुन्किर हैं, ( नाहक़ की ) हेकड़ी और मुख़ालिफ़त में ( पड़े ) हैं ० हमने इनसे पहिले कितनी उम्मतें हलाक कर मारीं, तो ( नुज़ूल—अज़ाब के वक़्त ) चिल्ला उठे और ( उस वक़्त चिल्लाने से क्या होता था )—मख़लसी की मोहलत ही ( बाक़ी ) न थी ० और इन लोगों ने ( इस बात से भी ) तअज्जुब किया कि इन ( ही ) में का ( एक शख़्स अज़ाब—ख़ुदा से ) डराने वाला (ख़ुदा की तरफ़ से ) इनके पास आया और ( यह ) मुन्किर लगे कहने कि यह जादूगर भूटा लपाटिया है ० क्या इसने ( सब ) माबूदों का ( खोजड़ा खोकर ) एक ही माबूद रक्खा ? कि यह तो बड़ी ही अजीब बात है ० और इनमें के चन्द रूदार लोग यह कह कर ( मज्लिस—वाज़ से ) चल खड़े हुये कि चलो जी ! ( इसकी न सुनो ) और अपने माबूदों पर जमे रहो। यह बात ( जो यह शख़्स समझाता है )—बेशक इसमें ( इसकी ) कुछ ( ज़ाती ) ग़रज़ है ० हमने तो यह ( नई ) बात ( अपने ) पिछले मज़-हब में (कभी) सुनी नहीं। हो न हो—यह ( इसकी अपनी ) घड़त है ० क्या हममें से इसी पर कलाम—इलाही नाज़िल हुआ है—

---

( अल्लाह के) पैग़म्बरों पर ( दरूद ) सलाम (हो)। और सर्व प्रशंसा अल्लाह ही के निमित्त हैं, जो समस्त जगों का पालनहारा है ॥

## सूरत—साद

### मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ८८ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥

कुर्आन की शपथ! जो शिक्षा—पूर्ण है—(ऐसा नहीं है, जैसा यह समझ रहे हैं)—वरन् ( यह ) काफ़िर लोग ( स्वयं) ईर्षा और ( सत्य के ) विरोध में (पड़े हैं। यह सोचते नहीं कि ) हमने इन ( मक्के के काफ़िरों ) से पहिले कितनी जातियों को नष्ट ( भ्रष्ट ) कर दिया। ( जब उन पर अज़ाब उतरने लगा ) तो चिल्ला उठे—परन्तु ( अब क्या होता था!! ) छुटकारे का समय निकल चुका था। इन ( मक्के के काफ़िरों ) को आश्चर्य है कि उन्हीं में का एक ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डरानेवाला उनके पास आया। सो ( उन ) काफ़िरों ने ( अद्भुत चमत्कार देखकर ) कहा कि यह मनुष्य जादूगर है और ( नबी होने का दावा सुनकर कहा कि यह मनुष्य ) असत्य—वादी है। क्या इसने समस्त पूज्यों का एक ही पूज्य नियत किया है ? यह तो बड़े आश्चर्य की बात है ॥

( ख़ुदा की अद्वैता का उपदेश सुनकर ) उनमें के कुछ सर्दार ( अपने मानने वालों से यह कहते हुये ) चल दिये कि ( यहां से ) चलो ! अपने पूज्यों पर स्थिर रहो। इस बात में ( जो यह मनुष्य समझा रहा है )—अवश्य उसका कोई अपना स्वार्थ है। हमने ( अपने ) पिछले धर्म में ऐसी बातें कभी नहीं सुनीं। यह तो इसी की मन घड़न्त है। क्या हममें से इसी पर ईश्वरवाणी अवतीर्ण की गई है—

बात यह है कि इनको ( सिरे से ) हमारे कलाम ( ही ) में शक है ( कि यह .कुर्आन हमारा कलाम है भी या नहीं)–बल्कि (अस्ल बात यह है कि ) उन्होंने अभी हमारे अज़ाब के मज़े नहीं चक्खे–( वर्ना इनकी अक़्ल ठिकाने से आ गई होती ) ० या ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारे पर्वर्दिगार ज़बर-दस्त ( और ) फ़य्याज़ की रह्मत के ख़ज़ाने इनही के पास हैं ० या आसमानों और ज़मीन और वह चीज़ें, जो आसमान व ज़मीन में हैं, उन (सब) का इख़्तियार इनही को है ? ( अगर है ) तो इनको चाहिए कि सीढ़ियां लगाकर ( आसमान पर ) चढ़ें ( और .ख़ुदा से लड़ें ) ० (पस ऐ पैग़म्बर ! यह लोगों की) एक भीड़ है ( कि ) यहां ( तुम्हारी मुख़ालिफ़त पर आमादा है, जहां और मुख़ालिफ़ान–.ख़ुदा के ) गिरोहों (को शिकस्त हुई है, उनही के शुमूल ) में इनको भी शिकस्त होगी ० इनसे पहिले नूह की क़ौम और आद और मेख़ों वाला फ़िर्औन ० और समूद और लूत की क़ौम और बन के लोग ( यानी शुऐब की क़ौम–यह सब ) पैग़म्बरों को झुटला चुके हैं। यही वह गिरोह हैं–( जिन्होंने .ख़ुदा के मुक़ाबले में शिकस्त खाई ) ० ( कि इन ) सब ही ने तो पैग़म्बरों को झुटलाया, तो हमारा अज़ाब आ नाज़िल हुआ ० और यह ( कुफ़्फ़ार–मक्का भी ) बस एक ज़ोर की आवाज़ ( यानी सूर के अव्वल बार फूंके जाने) के मुन्तज़िर हैं, जो ( शुरू हुये पीछे जब तक सबको फ़ना न कर लेगी ) बीच में दम न लेगी ० और ( हंसी के तौर पर ) कहते हैं कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! ( जो कुछ ) हमारी क़िस्मत का (लिक्खा है, वह) रोज़–हिसाब (यानी क़यामत) से पहिले हमको (कहीं) जल्दी से दे चुक ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जैसी जैसी बातें यह लोग करते हैं, उन पर सब्र करो ! और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो ! कि ( बावजूदे कि हर तरह की ) .क़ूवत रखते थे–( मगर इस पर भी ) वह (हमावक़्त ख़ुदा की तरफ़ ) रुजू रहते थे ० हमने ( एक तौर पर ) पहाड़ों को ( भी उन का ) ताबे (फ़र्मान) कर रक्खा था (कि )—

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّن ذِكْرِي ● بَل لَّمَّا يَذُوقُوا
عَذَابِ ● أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ
الْوَهَّابِ ● أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ● جُندٌ
مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ● كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ●
وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْئَيْكَةِ أُولَٰئِكَ
الْأَحْزَابُ ● إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَحَقَّ عِقَابِ ● وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً
وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ● وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل
لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ● اصْبِرْ عَلَىٰ مَا
يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ
إِنَّهُ أَوَّابٌ ● إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ

بِالْعَشِيِّ

( हे पैग़म्बर ! ) बात यह है कि उनको हमारी वाणी ही में शंका है, बरन् सत्य बात यह है कि अभी उन्होंने हमारे अज़ाब का स्वाद नहीं चक्खा । ( यह लोग जो इस बात से अप्रसन्न हैं कि हे पैग़म्बर ! केवल आपको हमने पैग़म्बर बनाकर क्यों भेजा और इनमें से किसी को क्यों नहीं नियत किया गया, तो ऐसी स्वाधीनता की बातें यह क्यों करते हैं )। क्या आपके पालनहारे की–जो ( सब पर ) बलवान है ( और ) बहुत बड़ा दाता है, करुणा के कोष इन्हीं के पास हैं ? वा आकाश तथा पृथ्वी का और उस सृष्टि का जो आकाश तथा भूमि के बीच में है, राज्य उन्हीं का है ? ( यदि ऐसा है ) तो उनको चाहिये कि सीढ़ियाँ लगाकर आकाश पर चढ़ जावें ( और अपने अधिकार छिनने के सम्बन्ध में वार्तालाप करें । हे पैग़म्बर ! ) इस स्थान पर उन लोगों की ( यह ) भीड़ उन समूहों में से है, जिनकी पराजय हो चुकी है । ( अर्थात सत्य–धर्म के मुक़ाबले में जो उद्दण्ड समूह पराजय को प्राप्त हो चुके हैं, उनही में इनकी गणना भी कर लीजिये क्योंकि यह भी कुछ दिन पश्चात बद्र के धर्म–युद्ध में हारने वाले हैं )॥

इनसे पहिले नूह की जाति और आद और खूंटों ×वाला फ़िर्औन और समूद और लूत की जाति और अस्हाब–ऐका ( बन वाले अर्थात शुऐब की जाति ) झुठला चुके हैं ( और नबियों का अस्वीकार कर चुके हैं )। यह लोग बड़े २ जथे वाले थे ( और जिन्होंने ख़ुदा के मुक़ाबले में नीचा देखा )। सभी ने तो पैग़म्बरों को झुठलाया और अन्त में ( उन पर ) अज़ाब अवतीर्ण हुआ ॥

×टीका—खूंटों वाला इस हेतु प्रसिद्ध हुआ कि बड़ी तड़क–भड़क वाला था, वा इस हेतु कि चक्रधारी राजा था अथवा इस हेतु कि खूंटों से ईमान वालों को कष्ट पहुंचाता थाः—हसन निज़ामी ॥

यह लोग ( अर्थात मक्के के काफ़िर ) केवल एक घोर–नाद की बाट जोह रहे हैं, जो ( इनके रोके से ) रुकने की नहीं और यह लोग कहते हैं कि हे हमारे पालन कर्त्ता ! ( जो कुछ ) हमारे भाग्य में लिखा है, उसे हिसाब के दिन से पहिले ही जल्दी से पूरा करदे । आप उनकी बातों पर सन्तोष करें और हमारे बन्दे दाऊद का स्मरण करें, जो बड़ी शक्ति वाले थे ( और ) वह सर्वदा ख़ुदा की ओर ध्यान रखते थे । हमने पर्वतों को ( उनके ) वश में कर दिया था । उनके साथ सुबह–शाम ख़ुदा के गुन गाया करते थे—

بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ۝ وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهُ
أَوَّابٌ ۝ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ
الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ۝ وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ
الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝ إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ
دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ
بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝
إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ
نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي
فِي الْخِطَابِ ۝ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي
بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُودُ أَنَّمَا

सुबह व शाम उनके साथ (साथ ख़ुदा की) तस्बीह (व तक़्दीस) करते ० और (इसी तरह) परिन्दों को भी (उनका ताबे कर रक्खा था) कि (वह भी तस्बीह व तक़्दीस सुनकर उनके पास) सिमट आते (और) सब उनके जवाबी बनते ० और हमने उनकी सल्तनत को (बहुत) मज़बूत कर दिया था और उनको अक़्ल (इन्तिज़ाम) दी थी और बहस के फ़ैसला करने का सलीक़ा ० और (ऐ पैग़म्बर!) भला (उन) दावेदारों की (भी) ख़बर तुम तक पहुंची है कि जब वह हुजरे (इबादत) की दीवार फांद कर दाऊद के पास आये, तो वह उन (के बे-वक़्त और ख़िलाफ़-आदत आने) से डर गये। उन्होंने अर्ज़ किया कि आप डरें नहीं, हम दोनों में एक झगड़ा है कि हममें से एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है। तो आप हममें मुन्सिफ़ाना फ़ैसला कर दीजिये! और इन्साफ़ से न गुज़रिये और हमको सीधे रस्ते लगा दीजिये ० (रूदाद यह है) कि यह (भी) मेरा बड़ा भाई है (और) इसके (हाँ) निन्नानवे दुम्बियां हैं और मेरे (हां सिर्फ़) एक ही दुम्बी है। अब यह कहता है कि अपनी दुम्बी भी मुझे दे डाल और बातचीत में मुझको दबा लेता है ० (दाऊद ने) कहा कि यह जो तेरी दुम्बी माँग कर अपनी दुम्बियों में मिलाना चाहता है, तो यह तुझ पर ज़ुल्म करता है और अक्सर शुरका एक दूसरे पर ज़ियादती करते रहते हैं, मगर (हाँ!) जो लोग ईमान रखते और नेक अमल (भी) करते हैं—(वह ज़ियादती नहीं किया करते) और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं और (अब) दाऊद को ख़याल आया कि हमने उनको सिर्फ़—

---

और पक्षी (उनके पास ख़ुदा की पवित्रता वर्णन करने के समय) एकत्रित हो जाते थे (और) सबके सब उनके उत्तर देनेवाले बनते थे (अर्थात उनके साथ पक्षी भी ख़ुदा के गुण गाने लगते थे)। हमने उनके शासन को दृढ़ किया और उनको बुद्धि तथा वार्तालाप में न्याय-शक्ति प्रदान की थी। और क्या आपको (हे पैग़म्बर!) उन विरोधियों की ख़बर पहुंची है कि जब वह दीवार पर चढ़कर उपासना-भवन में उतर आये (और) जब दाऊद के पास पहुंचे, तो वह (उनके इस प्रकार आने से) भयभीत हुये। उन्होंने कहा-आप भय न करें। हम दो विरोधी हैं। एक ने दूसरे पर कुछ अनीति की है। सो आप न्याय-युक्त हमारा निर्णय कर दीजिये! और अन्याय न कीजिये! और हमको सीधा मार्ग बता दीजिये ॥

(एक ने दूसरे की ओर संकेत करके कहा) यह मेरा भ्रात है। इसके पास निन्नानवे दुम्बियां हैं और मेरे पास एक दुम्बी है। अब यह कहता है कि अपनी दुम्बी भी मुझे सौंप दे और वार्तालाप में मुझे दबाता है ॥

दाऊद ने कहा कि यह मनुष्य तेरी दुम्बी माँग कर अपनी दुम्बियों में मिलाना चाहता है, तो यह तुझ पर अनीति करता है। और बहुत से साझी हैं कि एक दूसरे पर अनीति करते हैं। हाँ! वह लोग ऐसा नहीं करते, जो ईमान वाले हैं और उनके कर्म भी अच्छे हैं। और ऐसे लोग बहुत ही थोड़े हैं। और (इस घटना के उपरान्त वास्तविक दशा पर सोच विचार किया, तो) दाऊद को विदित हुआ कि हो न हो—

एक धक्का दिया है—तो उन्होंने अपने पर्वर्दिगार के आगे ( तौबा व ) इस्तिग़फ़ार की और सज्दे में गिर पड़े ० और ( ख़ुदा की तरफ़) रुजू हुये, तो हमने उनकी वह ( ख़ता ) माफ़ करदी और हमारे हां उनका तक़र्रुब और ( उनकी ) अच्छी मन्ज़िलत है ० ( हमने दाऊद से यह भी फ़र्माया कि ) ऐ दाऊद ! हमने तुमको मुल्क में बादशाह बनाया है, तो लोगों ( के मामलात ) में इन्साफ़ के साथ फ़ैसले किया करो ! और अपनी ( नफ़्सानी ) ख़्वाहिश पर न चलना ! (ऐसा करोगे ) तो (ख़्वाहिश–नफ़्सानी की पैरवी ) तुमको ख़ुदा के रस्ते से भटका देगी ( और ) जो लोग ख़ुदा के रस्ते से भटकते हैं, उनको ( बड़ी ) सख़्त–सज़ा होनी है। इसलिये कि वह रोज़–हिसाब ( यानी क़यामत ) को भूले रहे ० और हमने आस्मान व ज़मीन को और जो चीज़ें आस्मान व ज़मीन में हैं, उनको बेकार नहीं पैदा किया। यह उन लोगों का ख़याल है, जो काफ़िर हैं और दोज़ख़ ( के एतिबार ) से काफ़िरों के हाल पर ( बड़ा ही ) अफ़्सोस है ० क्या जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये–उनको हम उनही जैसा करके रक्खेंगे, जो मुल्क में फ़साद फैलाते फिरते हैं, या हम परहेज़गारों को बदकारों की तरह करके रक्खेंगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! यह क़ुर्आन बड़ी ) बरकत वाली किताब है, जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों में ग़ौर करें और ताकि जो अक़्ल रखते हैं–( इसके मतालिब से ) नसीहत पकड़ें ० और हमने दाऊद को सुलैमान (बेटा ) इनायत फ़र्माया—

فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩
فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ
مَاٰبٍ ۝ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ
فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى
فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ۝ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ
اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝ كِتٰبٌ
اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ
اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ

ع

---

यह हमने उनकी परीक्षा की है। सो वह अपने पालनहारे के आगे क्षमा–याचना करने लगे और मस्तक नवाकर ( उसकी ओर ) आकर्षित हुए। सो हमने उनको यह बात ( जिसके निमित्त उन्होंने क्षमा मांगी थी ) क्षमा करदी। और उनके निमित्त हमारे यहां बड़ा पद और अच्छा ठिकाना है। ( हमने दाऊद से यह भी कहा कि ) हे दाऊद ! हमने तुमको दुनिया में बादशाह बनाया है। सो लोगों के झगड़ों का न्याय-पूर्वक निर्णय किया करो। और अपनी इन्द्रियों की इच्छा पर न चलना–( यदि ऐसा करोगे ) तो यह (इन्द्रियों की इच्छाओं पर चलना ) तुमको ख़ुदा के मार्ग से भटका देगा ॥

जो लोग ख़ुदा के मार्ग से भटकते हैं, उन पर अति कठिन अज़ाब होता है। इस कारण कि वह हिसाब के दिन को भूल गये। ( दाऊद के वृत्तान्त से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये ) और साथ ही देखना चाहिये कि हमने आकाश तथा भूमि को और उन पदार्थों को जो उनके बीच हैं, व्यर्थ नहीं उत्पन्न किया। यह उन लोगों का ख़्याल है, जो काफ़िर हैं। और काफ़िरों के लिये दोज़ख़ की बड़ी ख़राबी है। ( और कैसे न हो ! ) क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाये और जिन्होंने शुभ-कर्म किये–उनके समान करदें, जो संसार में झगड़ा फैलाने वाले हैं, अथवा हम संयमियों को कुकर्मियों जैसा बना दें ॥

यह पुस्तक जिसको हमने आप पर उतारा है–( बड़ी) बरकत वाली है। (और इसको इस हेतु उतारा है ) कि इसकी आयतों पर सोच विचार करें और बुद्धिमान शिक्षा ग्रहण करें। और ( शिक्षा ग्रहण करने के लिये यह घटना क्या कम है कि ) हमने दाऊद को सुलैमान ( जैसा सुपुत्र ) प्रदान किया—

نِعْمَ الْعَبْدُ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ
بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ
حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ حَتّٰى تَوَارَتْ
بِالْحِجَابِ ۝ رُدُّوْهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا
بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ
وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝
قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ
لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝
فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَاۗءً حَيْثُ
اَصَابَ ۝ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّاۗءٍ وَّغَوَّاصٍ ۝
وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝ هٰذَا
عَطَاۗؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝
وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ وَاذْكُرْ

( सुलैमान भी क्या ही ) अच्छे बन्दे थे कि वह ( बात बात में ख़ुदा की तरफ़ ) रुजू ( करते ) थे ० कि एक बार शाम के वक़्त ख़ासे के असील घोड़े उनके रूबरू पेश किये गये ० ( तो वह उनके देखने में ऐसे मशग़ल हुये कि नमाज़-अस्र क़ज़ा हो गई, फिर ख़याल आया ) तो लगे कहने कि मैंने अपने पर्वर्दिगार की याद से ( ग़ाफ़िल होकर ) माल की महब्बत को तरजीह दी। यहां तक कि आफ़ताब (मग़्रिब के) परदे में छुप गया० ( अच्छा तो ) इन ( घोड़ों ) को मेरे पास लौटा लावो ! और अब ( मारे गुस्से के ) लगे ( तलवार से घोड़ों की ) पेंडलियों और गर्दनों का सफ़ाया करने ० और हमने सुलैमान को ( एक और तरह पर भी ) आज़माया और उनके तख़्त पर एक धड़ ला डाला । फिर ( सुलैमान ने ख़ुदा की जनाब में ) रुजू किया० (और) दुआ मांगी कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरा क़ुसूर माफ़ फ़र्मा ! और मुझको ऐसी सल्तनत इनायत कर कि मेरे पीछे किसीको सज़ावार न हो। बेशक तू बड़ा फ़य्याज़ है ० तो हमने हवा को उनका ताबे कर दिया कि जहां पहुंचना चाहते, उनके हुक्म के मुताबिक़ ( उसी तरफ़ को ) नर्मी से चलती ० और ( इसी तरह ) जितने देव मेमार और ग़ोतेख़ोर थे, सबको ( उनका ताबे कर दिया ) ० ( और इनके अलावा ) दूसरे देवों को ( भी उनका ताबे कर रक्खा था )-जो ज़न्जीरों में बँधे रहते थे ० ( हमने सुलैमान से कहा कि ) यह है हमारी बे-हिसाब देन। अब तुम ( चाहो, लोगों को दो और उन पर ) एहसान करो या ( तमाम साज़ व सामान ) अपने ही पास रक्खे रहो० और बेशक सुलमान को हमारे हां तक़र्रुब है और अच्छी मन्ज़िलत ०और (ऐ पैग़म्बर !)-

---

सुलैमान क्या ही अच्छे बन्दे थे। सर्वदा ( अपने पालनहारे की ओर ) आकर्षित रहते थे। ( उनकी यह घटना विचारनीय है कि) जब ( एक दिन ) सायंकाल ख़ासे के असील घोड़े लाये गये ( और उनकी देख भाल में नमाज़ का समय व्यतीत हो गया ) तो उन्होंने कहा कि मैं धन के प्रेम में ख़ुदा के स्मरण से ऐसा अचेत हो गया कि सूर्य अस्त हो गया। ( यह कहकर आज्ञा दी कि ) अच्छा इन घोड़ों को मेरे पास फिर लाओ। ( घोड़े लाये गये ) तो ( तलवार के ) हाथ से ( उनकी ) पिंडलियों और गर्दनों को सूतने लगे । और हमने ( एक बार और ) सुलैमान की परीक्षा ली और उनके सिंहासन पर एक धड़ ( अर्थात पुत्र का मृतक-शरीर ) डाल दिया। ( इस घटना से प्रभावान्वित होकर ) वह ( हमारी ओर ) अवहित हुये॥

(और) प्रार्थना की कि हे पालनहारे ! मुझको क्षमा करदे ! और मुझको ऐसा राज्य प्रदान कर कि मेरे पश्चात किसी के लिये योग्य न हो। निस्सन्देह तू बड़ा दाता है। सो हमने पवन को उनके वश में कर दिया। वह जहां जाना चाहते थे, उनकी आज्ञानुसार उसी ओर धीरे २ चलती थी। और जितने राज और डुबकी लगाने वाले जिन थे, सबको ( उनका ) आधीन बना दिया । और ( इनके अतिरिक्त ) दूसरे जिन्नों को भी, जो ज़ंजीरों में बंधे रहते थे॥

( यह पद, सम्मान, गौरव तथा तड़क-भड़क प्रदान करके हमने सुलैमान से कहा कि ) यह है हमारा बे-हिसाब दान। अब ( चा दूसरों को भी ) दो ( चाहे अपने पास ) रक्खो-( तुमसे इसकी कुछ पूछ गछ न होगी )। और हमारे यहां सुलैमान का बड़ा पद और अच्छ ठिकाना है-( क्योंकि वह हमारे सच्चे भक्त थे )॥

हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो ! कि उन्होंने एक वक़् अपने पर्वर्दिगार से फ़रियाद की कि मुझको शैतान ने ईज़ा और तक्लीफ़ पहुंचा रक्खी है ० ( हमको उनके हाल पर रह्म आया और फ़र्माया कि ) अपने पांव से ( ज़मीन को ) ठुकरा दो ! ( चुनांचे ठुकराया, तो एक चश्मा निकला। तो हमने अय्यूब से फ़र्माया कि ) तुम्हारे नहाने और पीने के लिये यह ठंडा पानी ह ज़र है ० और हमने उनको उनके ( अह्ल व अयाल ) और उनके साथ उतने ही और इनायत फ़र्माये—(यह हमने उनके साथ) अपनी तरफ़ से मेहर्बानी ( की ) और ( मक़्सूद यह भी था कि ) जो अक़्ल रखते हैं, उनके लिये ( यह वाक़आ ) यादगार ( रहे ) ० और ( हमने अय्यूब से फ़र्माया कि ) सींकों का मुट्ठा अपने हाथ में लो और ( अपनी बीवी को ) उससे मार लो और ( अपनी ) क़सम न तोड़ो । बेशक हमने अय्यूब को ( बड़ा ही ) साबिर पाया–( वह भी क्या ही ) अच्छे बन्दे थे कि वह ( बात बात में ख़ुदा की तरफ़ ) रुजू ( करते ) थे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमारे बन्दों: इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब को ( भी ) याद करो ! ( वह ) हाथों और आंखों वाले थे ० और हमने उनको एक ख़ास बात ( यानी ) याद–आख़िरत के लिये मुन्तख़ब फ़र्माया था ० और बेशक वह ( सब ) हमारे हाँ बर्गुज़ीदा ( और ) नेक बन्दों में हैं ० और इस्माईल और अल्यसअ और ज़ुल्किफ़्ल को ( भी ) याद करो ! और ( यह ) सब ( भी ) नेक बन्दों में हैं ० यह ( हालात मज़्कूरा बजाय ख़ुद लोगों के लिये ) नसीहत है और बेशक परहेज़गारों के लिये ( आख़िरत में ) अच्छा ठिकाना है ० ( यानी ) हमेशा रहने के ( बहिश्त के ) बाग़, जिनके दर्वाज़े उनके लिये ( पहिले से ) खुले होंगे ०—

عَبْدَنَا اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ
بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هٰذَا
مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ اَهْلَهٗ
وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي
الْاَلْبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ
بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا نِعْمَ الْعَبْدُ
اِنَّهٗ اَوَّابٌ ۝ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَا اِبْرٰهِيْمَ
وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ
اِنَّا اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝ وَاِنَّهُمْ
عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝ وَاذْكُرْ
اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ
الْاَخْيَارِ ۝ هٰذَا ذِكْرٌ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ
مَاٰبٍ ۝ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝

مُتَّكِـِٕيْنَ

और ( हे पैग़म्बर ! ) हमारे बन्दे अय्यूब का स्मरण कीजिये, जब उन्होंने अपने पालनहारे से प्रार्थना की कि मुझको शैतान ने दुख और कष्ट पहुंचाया है। ( हमने अय्यूब की प्रार्थना सुनकर आज्ञा दी कि पृथ्वी पर ) पाँव मारो ! ( पांव मारते ही ) एक सोता निकल आया। ( और हमने बताया कि ) यह स्नान करने का ठंडा पानी है और पीने का। और हमने उनको कुटुम्ब, परिवार तथा उनके साथ ( सख्या में ) उतने ही और अपनी कृपा से प्रदान किये। और इस हेतु कि ( यह घटना ) बुद्धिमानों के लिये स्मारक बनी रहे ॥

और ( हमने अय्यूब से कहा कि ) अपने हाथ में सींकों का एक मुट्ठा लो । उससे ( अपनी पत्नी को ) मारो ! और (।अपनी ) सौगन्ध को झूठा न होने दो। निस्सन्देह हमने अय्यूब को धैर्य्यवान पाया। वह क्या ही अच्छे बन्दे थे ( सर्वदा अपने पालनहारे की ओर ) अवहित रहते थे और ( हे पैग़म्बर ! ) हमारे बन्दों; इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब का स्मरण कीजिये, जो हाथों वाले और नेत्रों वाले थे—( अतः जो कहते थे, वह करते थे और सांसारिक जीवन में परलोक पर दृष्टि रखते थे ) ॥

और हमने उनको एक मुख्य बात ( अर्थात ) परलोक के स्मरणार्थ चुन लिया और निस्सन्देह वह हमारे चुने हुये नेक बन्दों में हैं। और इस्माईल और अल्यसअ और ज़ुल्किफ़्ल का स्मरण कीजिये–यह सब नेक बन्दों में हैं। यह ( बातें ) एक प्रकार की शिक्षा है और संयमी लोगों के निमित्त ( जो इन पर चलें, परलोक में ) अच्छा ठिकाना है–( अर्थात ) सर्वदा रहने के लिये जन्नत के बाग़ हैं, जिनके द्वार उनके लिये ( पहिले से ) खुले होंगे—

مُتَّكِـِٔينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ
وَشَرَابٍ ۝ وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ۝
هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ إِنَّ
هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ۝ هَٰذَا ۚ وَإِنَّ
لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا
فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ
وَغَسَّاقٌ ۝ وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ۝
هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ
صَالُو النَّارِ ۝ قَالُوا بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ
قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ قَالُوا رَبَّنَا
مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا
فِي النَّارِ ۝ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا
نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ۝ أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا

(और वह) उनमें (जाकर) तकिये लगाकर बैठेंगे। वहां (खुद्दाम-बहिश्त से) बहुत से मेवे और शराब मँगवायेंगे (और मज़े से खाएँ पियेंगे) ० और इनके पास नीची नज़र वाली बीबियां होंगी (और उस पर लुत्फ़ यह कि उनकी हम-उम्र भी होंगी) ० (मुसलमानो!) यह हैं वह (नैअमतें)–जिनका तुमसे रोज़-हिसाब (यानी क़यामत) के लिये वादा किया जाता है ० बेशक यह हमारी (दी हुई) रोज़ी है, जो कभी निबड़ने ही में नहीं आयेगी ० (परहेज़गारों का अन्जाम) यह है और (रहे सर्कश, तो) सर्कशों का बुरा ठिकाना है ० दोज़ख़ कि उसमें इनको जाना पड़ेगा और वह (क्या ही) बुरी जगह है ० यह खौलता हुआ पानी और पीप ० और इसी तरह की और अनवाअ (व अक़साम की चीजें दोज़ख़ियों के खाने पीने के लिये मौजूद) हैं, तो इन (चीज़ों के) मज़े पड़े चक्खा करें ० (फिर जब दोज़ख़ियों के पेशवा दोज़ख़ में जाने लगेंगे, तो उनसे कहा जायगा कि तुम्हारे पैरवों की) यह (एक) जमाअत (और भी है, जिसको) तुम्हारे साथ (दोज़ख़ में) ठुसना है। उनका (भी) काला मुंह! यह (भी) दोज़ख़ ही के जाने वाले हैं ० (यह सुनकर पैरव पेशवाओं के सिर हो जाएँगे और उनसे ख़िताब करके) कहेंगे कि (हमारा नहीं)—बलिक तुम्हारा काला मुंह! (क्योंकि) तुम ही तो यह (बला) हमारे आगे लाये तो (यह जहन्नम क्या ही) बुरी जगह है ० (जिसमें तुमने हमको ला फँसाया। यह कह कर पैरव) दुआ करेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! जो यह (बला) हमारे आगे लाया, उसको (हमसे) बढ़कर दोज़ख़ में दोहरी सज़ा दे ० और (दोज़ख़ी आपस में यह भी) कहेंगे कि जिन लोगों को हम बुरे लोगों में गिना करते थे, क्या बात है कि हम उनको (यहाँ दोज़ख़ में) नहीं देखते ० क्या हमने उनकी (नाहक़) हँसी बनाई (और वह इस क़ाबिल न थे। चुनांचे दोज़ख़ में कहीं दिखाई नहीं देते)—

---

उन बाग़ों में तकिया लगाकर बैठेंगे और बहुत से मेवे और पीने की वस्तुवें मंगावेंगे (और खायें-पियेंगे)। और उनके पास नीची दृष्टिवाली, समान आयु वाली (स्त्रियाँ) होंगी। (हे मुसलमानो!) यह वह (सुख) हैं, जिनका तुमसे हिसाब वाले दिन के लिये वादा किया जाता है। यह है हमारी (दी हुई) जीविका, जिसमें (कभी) किसी प्रकार की कमी नहीं (हो सकती। संयमियों की तो) यह (दशा) है–(अब रहे अवज्ञाकारी और) उद्दण्ड–(सो उन) के लिये बुरा ठिकाना है। अर्थात दोज़ख़, जिसमें उन्हें प्रवेश करना है और (वह) कैसा बुरा स्थान है॥

(उनके लिये पुकार कर कहा जायगा कि) यह है खौलता हुआ पानी और पीप, और ऐसी ही दूसरी भांति २ की (स्वाद-रहित) वस्तुवें। अतः यह लोग उन्हें चक्खें। (काफ़िरों के नेताओं के पश्चात जब उनके मानने वाले दोज़ख़ में प्रवेश करेंगे, तो उन नेताओं से कहा जावेगा कि) लो! यह एक समूह और (तुम्हारे चेलों का) तुम्हारे साथ (अज़ाब के अंशभागी होने के लिये दोज़ख़ में) घुस रहा है। (आने वालों को देखकर वह पुकारेंगे) इनको आनन्द प्राप्त न हो। यह भी दोज़ख़ में प्रवेश कर रहे हैं॥

(आधीनता करने वाले अपने नेताओं से कहेंगे हमको नहीं)–बरन तुमको आनन्द न प्राप्त हो। यह आपत्ति तो तुमने हमारे लिये पहिले से उपस्थित कर रक्खी थी–(हा शोक!) क्या ही बुरा स्थान है। (परस्पर यह वार्त्तालाप करके एक दूसरे को श्राप देंगे और) कहेंगे, हे पालनहारे! यह (आपत्ति) जो (मनुष्य) हमारे सन्मुख लाया है, उसपर हमारी अपेक्षा दोज़ख़ में दोगुणा अज़ाब कर! और (यह दोज़ख़ी एक दूसरे से) कहेंगे क्या बात है! वह लोग (यहाँ) हमको दिखाई नहीं देते, जिनकी गणना हम बुरे लोगों में किया करते थे। क्या हमने उनकी (व्यर्थ) हँसी उड़ाई थी–(अन्यथा वह इस योग्य न थे और इसी कारण यहाँ दुर्जनों में विद्यमान नहीं)—

या ( दोज़ख़ में हैं और हमारी ) नज़रें उन पर नहीं जमतीं ० दोज़ख़ियों का आपस में झगड़ना, यह ( एक ) हक़ ( बात ) है ( और होकर रहेगी ) ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मैं ( तो तुमको ) सिर्फ़ ( अज़ाब-ख़ुदा से ) डराने वाला हूं ( और बस ) और एक ख़ुदा के सिवा कि ( वह सब पर ) ग़ालिब है ० ( और ) कोई माबूद नहीं–( वही ) आस्मानों और ज़मीन और ( उन चीज़ों का मालिक है )–जो आस्मान व ज़मीन के दरमियान में हैं ( और वह ) ज़बरदस्त ( और ) बड़ा बख़्शने वाला है ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि ( दुनिया के वाक़आत में से ) कुर्आन (का नाज़िल होना भी एक बहुत ) बड़ा वाक़आ है० (मगर) तुम लोग इसकी ( कुछ ) पर्वा नहीं करते ० आलम—बाला के रहने वाले ( यानी फ़रिश्ते ) जब लगे आपस में बहसने, तो मुझको उनकी (बहस की) कुछ भी तो ख़बर न थी ० ( और यह बातें मुझको वही के ज़रिये से मालूम हुई और ) वही ( जो ) मेरे पास आती है–( तो ) सिर्फ़ इस ग़रज़ से ( आती है ) कि मैं ( तुमको ) साफ़ तौर पर डर सुना दूं ० ( ऐ पैग़म्बर ! फ़रिश्तों की वह बाहमी-बहस यह थी ) कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने फ़रिश्तों से फ़र्माया कि मैं मिट्टी से एक इन्सान बनाने वाला हूं ० तो जब मैं उसको पूरा कर लूं और अपनी रूह उसमें फूंक दूं, तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर पड़ना ० चुनांचे सबही फ़रिश्तों ने सज्दा किया ० मगर ( एक ) इब्लीस ने–कि शेख़ी में आ गया और नाफ़र्मान बन बैठा ० ( ख़ुदा ने इब्लीस से ) पूछा कि ऐ इब्लीस ! जिस चीज़ को हमने अपने हाथों बनाया, उसको सज्दा करने से तुझे कौन चीज़ माने हुई ? क्या तू शेख़ी में आ गया ? या तू ( फ़िलवाक़े ) बड़े लोगों में से है ०—

أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ۝ إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ
تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۝ قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ
إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ قُلْ هُوَ
نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝ أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝ مَا كَانَ
لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝
إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ إِذْ
قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن
طِينٍ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي
فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ
أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ
مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ
لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ

४

الْعَالِينَ

वा ( विद्यमान हैं और ) हमारी दृष्टि चूक गई है ( कि जिसके कारण कहीं दीख नहीं पड़ते )। यह दोज़ख़ियों का परस्पर झगड़ना सत्य ( बात ) है ( और ऐसा अवश्य होगा । आप हे पैग़म्बर ! इन काफ़िरों से ) कहिये कि मैं तो केवल ( ख़ुदा के अज़ाब से ) भय दिलाने वाला हूं। ( सो तुम भय खाओ और मूर्तियों की पूजा त्याग दो ) और ( ईमान लाओ कि ) अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, जो एक है और बलवान है। आकाश तथा भूमि और उनके बीच की सृष्टि का पालनहारा है। उसे हर प्रकार का बल है और बड़ा क्षमा करने वाला है ॥

( उनसे ) कहिये कि ( मेरा नबी होना, कुर्आन का उतरना और क़यामत का होना ) एक बड़ी ( भारी ) घटना है–( परन्तु ) तुम्हें उसकी कुछ पर्वाह नहीं ( और विमुखता करते हो । मेरी सच्चाई के लिये इस बात पर विचार करो कि ) मुझे स्वर्ग-लोक का कुछ ज्ञान न था, जब वहाँ (आदम की उत्पत्ति के विषय में) बहस तथा वार्तालाप हो रही थी। (मुझे तो जो कुछ ज्ञान हुआ है, वही के द्वारा हुआ है और ) मुझ पर वही केवल इस कारण उतारी जाती है कि मैं तुम्हें प्रत्यक्ष-रूप से ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डराऊँ ॥

( वह तर्क-वितर्क ) जब ( हुआ ) कि ( हे पैग़म्बर !) आपके पालनहारे ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक मनुष्य बनाने वाला हूं। सो जब मैं उसे बना चुकूं और उसमें अपनी आत्मा फूंक दूं, तो उसके समक्ष सजदे में गिर पड़ो। अतः समस्त फ़रिश्तों ने दंडवत की, किन्तु इब्लीस ( ने नहीं की )–उसे अहङ्कार हुआ और ( अहङ्कार के कारण से ) अवज्ञा की। ( अल्लाह ने ) कहा कि हे इब्लीस ! जिसे हमने अपने हाथों से बनाया, उसे दंडवत करने से किस बात ने ( तुझे ) रोका ? तुझे ( बड़ा ) अहङ्कार है, अथवा तू ( वास्तव में ) बड़े पद वाला है ॥

الْعَالِينَ ۝ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ
وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ
يَوْمِ الدِّينِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ
يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ۝ إِلَىٰ
يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۝ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ
أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝
قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ۝ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ
مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ قُلْ مَا
أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ۝
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَلَتَعْلَمُنَّ
نَبَأَهُ بَعْدَ | سورة زمر خمس و سبعون آية | حِينٍ ۝
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

( वह ) बोला ( उसको क्योंकर सज्दा करूं )–मैं उससे कहीं बेहतर हूं। मुझको तूने आग से बनाया और उसको तूने मिट्टी से बनाया ० फ़र्माया तू यहां से निकल ( बाहर हो ! ) कि तू ( हमारी बार्गाह से ) रांदा गया ० और रोज़–जज़ा तक तुझ पर हमारी फिटकार (पड़ी बर्सा करेगी)० ( वह ) बोला तो ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मुझको उस दिन तक की मोहलत दे, जबकि ( सब लोग दुबारा ) उठा खड़े किये जाएंगे ० फ़र्माया ( हां ! ) तुझ को उस दिन तक की मोहलत है ० जिसका वक़्त ( हम ही को ) मालूम है ० ( वह ) बोला तो ( मुझे भी ) तेरी ( ही ) इज़्ज़त की क़सम है कि इन ( बनी-आदम ) में जो तेरे ख़ालिस बन्दे हैं, उनको छोड़ कर इन सब को गुमराह करके रहूं तो सही ० फ़र्माया तो ( हम भी ) हक़ बात ( कहे देते हैं ) और हम हक़ ही कहा करते हैं ० कि हम भी तुझसे और जो लोग तेरी पैरवी करें, उनसे सबसे जहन्नम को भर देंगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो कि मैं इस ( तब्लीग़–रिसालत ) पर तुमसे कुछ मुआविज़ा तो मांगता नहीं और न मुझको तकल्लुफ़ करना आता है ० यह ( क़ुर्आन जो मैं तुमको सुनाता हूं ) दुनिया–जहान के लोगों के लिये नसीहत है और बस ० और कुछ दिनों पीछे तुम ( लोगों ) को इसकी हक़ीक़त मालूम हो जाएगी ०

## सूरत–ज़ुमर

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ७५ आयते और ८ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहरबान ( है )०

( इब्लीस ने ) उत्तर दिया कि मैं इस ( आदम ) से उत्तम हूं–( क्योंकि ) तूने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया है और इसे मिट्टी से बनाया है। (ख़ुदा इस अवज्ञा तथा उद्दण्डता से अप्रसन्न हुआ और इब्लीस को) आज्ञा दी—बस तू आकाशों से निकल जा ! और (आज से) तू ( हमारे यहां से ) फटकारा हुआ है और क़यामत के दिन तक तुझ पर मेरी लानत रहेगी। ( इब्लीस ने ) कहा—हे पालन कर्त्ता ! ( यदि ऐसा है )तो मुझे क़यामत तक का अवसर दे ( और मुझे ज़िन्दा रहने दे ) ॥

( अल्लाह ने ) कहा कि जा ! तुझे अवसर दिया—उस दिन तक—जिसका समय ( हमें ) ज्ञात है। (इब्लीस ने) कहा (यदि अवसर मिल गया) तो तेरे मान की शपथ ! तेरे मुख्य बन्दों के अतिरिक्त सबको पथ-भ्रष्ट करके रहूंगा। ( अल्लाह ने ) कहा-बस सत्य बात यह है और मैं सत्य बात ( ही ) कहता हूं कि मैं भी तुझसे और उनसे ( जो आदम की सन्तान में ) तेरे पीछे चलेंगे, दोज़ख़ को भर दूंगा। (हे पैग़म्बर ! ) आप ( इन काफ़िरों से ) कह दीजिये कि मैं ( सत्य–धर्म के प्रचार पर ) तुमसे कुछ बदला नहीं मांगता और न मैं बनावट करने वालों में हूं। यह (क़ुर्आन ) तो सर्व-जगों के लिये ( एक ) शिक्षा ( की पुस्तक) है। और कुछ दिनों के पश्चात तुम स्वयं जान लोगे॥

## सूरत–ज़ुमर

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ७५ आयतें और ८ रुकूअ हैं ॥

تَنْزِيلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ● إِنَّا أَنْزَلْنَا
إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا
لَهُ الدِّينَ ● أَلَا لِلّٰهِ الدِّينُ الْخَالِصُ وَالَّذِينَ
اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ
إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللّٰهِ زُلْفَى إِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ
فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ● إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ● لَوْ أَرَادَ اللّٰهُ أَنْ
يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ
سُبْحٰنَهُ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ● خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ
وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ
الْغَفَّارُ ● خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ

منها

( यह ) फ़र्मान-तहरीरी पेशगाह–ख़ुदावन्दी से सादिर होता है, जो ज़बरदस्त ( और ) हिकमत वाला है ० ( ऐ पैग़म्बर ! यह ) किताब हक़ी़क़त में हमहीं ने तुम पर उतारी है। तो ख़ालिस ख़ुदा ही की फ़र्मांबर्दारी मद्दे-नज़र रख कर उसीकी इबादत किये जावो ० सुनो जी ! ख़ालिस फ़र्मांबर्दारी ख़ुदा ही के लिये है और जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा ( दूसरे दूसरे ) हिमायती बना रक्खे हैं ( और कहते हैं कि ) हमतो इनकी परस्तिश सिर्फ़ इसलिये करते हैं कि ख़ुदा से हमको नज़दीक करदें—तो जिन जिन बातों में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, ख़ुदा ( क़यामत के दिन ) उनमें उन ( बातों ) का फ़ैसला कर देगा। बेशक जो शख़्स झूटा ( और ) नाशुक्र हो, ख़ुदा उसको ( नेक ) हिदायत नहीं दिया करता ० अगर ख़ुदा किसी को अपनी फ़र्ज़न्दी में लेना चाहता, तो अपनी मख़्लूक़ात में से जिस को चाहता, पसन्द करता—( लेकिन ) उसकी ज़ात ( ज़न व फ़र्ज़न्द के बखेड़े से ) पाक है। वह अकेला ख़ुदा है, बड़ा ज़बर्दस्त ० उसीने ( किसी ) मस्लहत से आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया। ( वही ) रात को दिन पर लपेटता है और वही दिन को रात पर लपेटता है और उसीने सूरज और चांद को मुती कर रक्खा है ( कि यह ) सब ( एक ) वक़्त मुक़र्रर तक ( उसी तरह ) चले जाएँगे। सुनो जी ! वही ( ख़ुदा ) ज़बरदस्त ( और ) बड़ा बख़्शने वाला है ० उसीने तुम लोगों को ( आदम के ) तने-वाहिद से पैदा किया। फिर—

इस पुस्तक का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो बलवन्त तथा बुद्धिमान है। ( हे पैग़म्बर ! ) हम ही ने यह पुस्तक सच्चाई के साथ आप पर उतारी है। सो आप निरे अल्लाह ही की भक्ति में लग कर अल्लाह ही की उपासना किये जाइये। हाँ ! सच्ची पूजा अल्लाह ही के योग्य है। और जिन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों को अपना मित्र (तथा सहायक ) बना रक्खा है ( और कहते हैं कि ) हम उनकी उपासना केवल इसलिये करते हैं कि यह हमको अल्लाह से बहु निकट करदें–( तो ) अल्लाह उनके ( और मुसलमानों के ) परस्पर विरोध का निर्णय ( क़यामत में ) कर देगा ॥

अल्लाह तआला ऐसे मनुष्य को राह नहीं दिखाता, जो झूठा और कृतघ्न हो। ( और वह कैसा झूठा तथा कृतघ्न है, जो ख़ुदा को सन्तान वाला ठहराता है )। यदि अल्लाह ( किसी को ) पुत्र बनाना चाहता, तो अपनी सृष्टि में से जिसे चाहता ( अपने निमित्त ) चुन लेता—( परन्तु ) वह ( इन बातों से ) पवित्र है। वह ख़ुदा अकेला और बलवान है ॥

उसने ( अपनी ) बुद्धि से आकाश तथा पृथ्वी को उत्पन्न किया। ( उसकी शक्ति का यह चमत्कार है कि ) वह रात्रि को दिन पर लपेटता है और दिन को रात्रि पर लपेटता है। ( अर्थात रात्रि के बाद दिन, दिन के बाद रात्रि होती रहती है )। और उसने सूर्य्य तथा चन्द्रमा को आधीन कर रक्खा है। यह सब एक नियत समय पर्यन्त चलते रहते हैं। ख़ूब जान लो कि वह बलवन्त है और बड़ी क्षमा करने वाला है। उसने तुमको एक प्राण ( अर्थात आदम ) से उत्पन्न किया। उसीसे उसका जोड़ा बनाया—

منها زوجها وانزل لكم من الانعام ثمنية
ازواج يخلقكم في بطون امهتكم خلقا
من بعد خلق في ظلمت ثلث ذلكم الله
ربكم له الملك لا اله الا هو فانى تصرفون
ان تكفروا فان الله غني عنكم ولا
يرضى لعباده الكفر وان تشكروا يرضه
لكم ولا تزر وازرة وزر اخرى ثم الى ربكم
مرجعكم فينبئكم بما كنتم تعملون
انه عليم بذات الصدور واذا مس
الانسان ضر دعا ربه منيبا اليه ثم
اذا خوله نعمة منه نسي ما كان يدعوا
اليه من قبل وجعل لله اندادا ليضل
عن سبيله قل تمتع بكفرك قليلا انك من

उसीसे उसका जोड़ा बनाया और तुम्हारे लिये आठ क़िस्म के चारपाये ( अपनी .क़ुद्रत से ) उतारे। वही तुमको तुम्हारी माओं के पेट में (ब–तदरीज) एक तरह के बाद दूसरी तरह तीन अँधेरों में बनाता है। यही अल्लाह तो तुम्हारा पर्वर्दिगार है। उसीकी हुकूमत है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर (इस पर भी तुम लोग) किधर को फिरे चले जा रहे हो ० अगर तुम ( .ख़ुदा की ) नाशुक्री करो, तो अल्लाह तुमसे बेनियाज़ ( मुतलक़ ) है और अपने बन्दों के लिये नाशुक्री को पसन्द नहीं करता और अगर तुम ( उसका ) शुक्र करो, तो वह तुम्हारी इस अदा को पसन्द करता है और ( क़यामत के दिन ) कोई किसी ( के गुनाहों ) का बोझ ( अपनी गर्दन पर ) नहीं उठायेगा। फिर तुम ( सब ) को अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौटकर जाना है। तो जैसे जैसे अमल तुम लोग ( दुनिया में ) करते रहे हो–( एक एक करके ) वह तुमको बता देगा। वह ( तो लोगों के) दिली-ख़याला‌त ( तक ) से वाक़िफ़ है ० और जब आदमी को कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ रुजू होकर उसको पुकारता है। फिर जब ( .ख़ुदा ) अपनी तरफ़ से उसको कोई नेअमत अता फ़र्मा देता है, तो जिस ( मतलब ) के लिये उसने पहिले ( .ख़ुदा को ) पुकारा था, उसको भुला देता और .ख़ुदा के शरीक बना चलता है, ताकि (अपना बुरा नमूना दिखाकर दूसरों को भी ) .ख़ुदा की राह से गुमराह करे। ( ऐ पैग़म्बर ! ऐसे शख़्स से ) कहदो कि चन्द रोज़ अपने कुफ़्र ( की हालत ) में रस बस ले–( आख़िर तो ) तू—

---

और तुम्हारे लिये आठ नर–मादा चौपाए उत्पन्न किये। ( अर्थात ऊंट, गाय, भेड़, बकरी–जिससे कि वह तुम्हारे जीवन तथा आनन्द मंगल का कारण हों )। वह (ऐसा अपूर्व सृष्टि कर्त्ता है कि ) तुमको तुम्हारी माताओं के उदर में एक दशा के पश्चात दूसरी दशा पर तीन अँधेरों (अर्थात माता के शरीर के भीतर उदर और झिल्ली ) के भीतर उत्पन्न करता है। यह है अल्लाह तुम्हारा पालन कर्त्ता, उसीका ( दोनों लोकों में ) राज्य है ( और ) उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। सो (उससे मुंह मोड़ कर ) कहाँ जाते हो॥

यदि तुम कृतघ्नता करोगे, तो (स्मरण रक्खो ! कि ) अल्लाह तुमसे बेपर्वाह है। और वह अपने बन्दों की कृतघ्नता से प्रसन्न नहीं होता। और यदि तुम कृतज्ञता प्रकाश करोगे, तो वह उसे तुम्हारे लिये पसन्द करता है। और ( यह न समझो कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के पापों के बोझ को उठा सकता है, नहीं )–कोई किसी का बोझ नहीं उठा सकता। पुनः तुम ( सब) को अपने पालनहारे की ओर लौटकर जाना है। ( उस समय ) वह तुमको बतावेगा, जो कुछ तुम ( दुनिया में ) करते रहे हो। निस्सन्देह वह अन्तःकरण की (छिपी हुई) बातों से अभिज्ञ है॥

और ( तुम्हारी यह दशा है कि ) जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुंचता है, तो अपने पालनहारे की ओर अवहित होकर पुकारता है। पुनः जब खुदा उस पर अपनी कृपा तथा दया करता है, तो अपना पहिला गिड़गिड़ाना भूल जाता है और अल्लाह के लिये साझी ठहराने लगता है, जिसका परिणाम यह होता है कि अल्लाह की राह से (दूसरों को) भटका देता है। ( हे पैग़म्बर ! ऐसे मनुष्य से ) कह दीजिये कि कुछ दिन अपने कुफ़्र से लाभ उठाले–(अन्त में) तेरी गणना दोज़ख़ियों में है॥

دوزخیوں میں ہو ہی گا

اَصْحٰبِ النَّارِ ۝ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا
وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ قُلْ
هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا
يَعْلَمُوْنَ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝
قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ لِلَّذِيْنَ
اَحْسَنُوْا فِىْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَاَرْضُ
اللّٰهِ وَاسِعَةٌ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ قُلْ اِنِّىْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ
اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ
اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّىْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ
رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ
مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِىْ ۝ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

٤

दोज़ख़ियों में हो ही गा ० भला जो शख़्स रात के औक़ात (तनहाई) में (ख़ुदा की) बन्दिगी में लगा है-(कभी उसकी जनाब में) सज्दा करता और (कभी उसके हुज़ूर में दस्त-बस्ता) खड़ा होता, आख़िरत से डरता और अपने पर्वर्दिगार के फ़ज़्ल का उम्मीदवार है—कहीं ऐसा शख़्स बन्दए-नाफ़र्मान के बराबर हो सकता है? (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि कहीं जानने वाले और न जानने वाले भी बराबर हुये हैं? (मगर इन बातों से) वही लोग नसीहत पकड़ते हैं, जो अक़्ल रखते हैं ० (ऐ पैग़म्बर! हमारी तरफ़ से मुसल्मानों को) समझा दो कि ऐ हमारे बन्दो! जो ईमान ला चुके हो, अपने पर्वर्दिगार से (यानी हमसे) डरते रहो। जो लोग इस दुनिया में नेकी करते हैं, उनके लिये (आख़िरत में) भलाई है और ख़ुदा की ज़मीन (बड़ी) फ़राख़ है। वह तो सब्र ही के बन्दे हैं, जिनको (क़यामत में) उनका अज्र बे-हिसाब भर दिया जाएगा ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मुझको (तो ख़ुदा के हां से यही) हुक्म मिला है कि मैं ख़ालिस ख़ुदा ही की फ़र्मांबर्दारी मद्दे-नज़र रख कर उसी की इबादत किया करूं ० और (नीज़) मुझको यह हुक्म मिला है कि मैं सबसे पहिला मुसल्मान बनूं ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अगर मैं अपने पर्वर्दिगार की नाफ़र्मानी करूं, तो (इस सूरत में) मुझे बड़े (सख़्त) दिन (यानी रोज़-क़यामत) के अज़ाब से (बहुत ही) डर लगता है ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मैं तो ख़ुदा ही की फ़र्मांबर्दारी मद्दे-नज़र रख कर, उसीकी इबादत करता हूं ० (रहे तुम)-सो उसके सिवा जिसको चाहो, पूजो! (तुमही को इसका ख़मयाज़ा भुगतना पड़ेगा। ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहदो कि फ़िल-हक़ीक़त घाटे में वह लोग हैं, जो क़यामत के दिन अपना—

---

भला ऐसा मनुष्य कि वह रात्रि के समय कभी भूमि पर माथा टेक कर और कभी खड़े होकर (ख़ुदा की) पूजा करता है, आख़िरत से डरता है और अपने पालनहारे की कृपा की आशा रखता है-(उन लोगों के समान हो सकता है, जो कृतघ्न तथा मुश्रिक, द्वैतवादी हैं। हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कहिये कि कहीं जानने वाले और न जानने वाले भी समान हुये हैं? (इन बातों से) वही लोग शिक्षा ग्रहण करते हैं, जो बुद्धिमान हैं॥

(आप हमारी ओर से मुसल्मानों से) कहिये कि हे हमारे बन्दो! जो ईमान ला चुके हो, अपने पालनहारे से डरते रहो। (और स्मरण रक्खो! कि) जिन लोगों ने इस लोक में नेकी की है, उनके लिये (परलोक में) भलाई है और (उनके लिये) अल्लाह (की बनाई हुई जन्नत) की विस्तृत भूमि है। (उन्होंने दुनिया के दुखों पर सन्तोष किया है और) सन्तोषियों को (क़यामत में) बे-हिसाब फल दिया जावेगा॥

(हे पैग़म्बर! काफ़िरों से) कहिये कि मुझे इस बात की आज्ञा दी गई है कि ख़ुदा की उपासना केवल ख़ुदा ही के निमित्त करूं और मुझे आज्ञा हुई है कि मैं सबसे पहिला मुसल्मान बनूं। (और यह भी) कहिये कि यदि मैं अपने पालन कर्त्ता की अवज्ञा करूं, तो मुझे बड़े दिन (अर्थात क़यामत के दिन) का भय है। (और) कहिये कि मैं ख़ुदा की पूजा केवल ख़ुदा ही के लिये करता हूं-(तुम ऐसा नहीं करते)-तो ख़ुदा के अतिरिक्त जिसको चाहो; उसकी उपासना करो! (और उसका फल भोगो)। आप (इनसे) कहिये कि वास्तव में हानि उठाने वाले वह लोग हैं—

وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ أَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ
الْمُبِيْنُ ۝ لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِنَ النَّارِ
وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ
عِبَادَهٗ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ۝ وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا
الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْۤا اِلَى اللّٰهِ
لَهُمُ الْبُشْرٰى فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ
الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝
اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ اَفَاَنْتَ
تُنْقِذُ مَنْ فِى النَّارِ ۝ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ
لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِىْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَعْدَ اللّٰهِ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ
الْمِيْعَادَ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

और अपने अह्ल व अयाल का नुक़्सान कर लेंगे। सुनो जी! यही तो सरीह घाटा है ० उनके ऊपर से आग ही का उनका ओढ़ना होगा और उन के नीचे (आग ही का) बिछौना। यही (तो वह अज़ाब है) जिससे ख़ुदा अपने बन्दों को डराता है, तो ऐ हमारे बन्दो! हमारा ही डर मानो ० और जो लोग बुत-परस्ती से बचते रहे और ख़ुदा की तरफ़ रुजू हुये, उनके लिये (जन्नत की) ख़ुश-ख़बरी है। तो (ऐ पैग़म्बर!) हमारे उन बन्दों को ख़ुश-ख़बरी सुना दो ० जो (हमारे) कलाम को कान लगाकर सुनते और उसकी अच्छी-अच्छी बातों पर चलते हैं। यही तो वह लोग हैं, जिन को ख़ुदा ने (नेक) हिदायत दी है और यही तो अक़्ल (सलीम भी) रखते हैं ० (ऐ पैग़म्बर!) भला जो शख़्स वईद-अज़ाब का मुस्तहिक़ हो लिया, क्या तुम (उस) दोज़ख़ी को (दोज़ख़ से) निकाल सकोगे ० लेकिन जो लोग अपने पर्वर्दिगार से डरते रहे, उनके रहने के लिये (बहिश्त में) बाला-ख़ाने (और) बाला-ख़ानों के ऊपर (और) बालाख़ाने बने हुये (मौजूद) हैं, जिनके नीचे नहरें (पड़ी) बह रही होंगी। (यह उनसे) ख़ुदा का वादा (है और) ख़ुदा वादा-ख़िलाफ़ी नहीं किया करता ० (ऐ मुख़ातब!) क्या तूने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा—

---

जो क़यामत के दिन अपनी और अपने सम्बन्धियों की हानि करेंगे-जाने रहो कि वह खुला हुआ (और सबसे बड़ा) टोटा है। (वहां) उन (काफ़िरों) को ऊपर से (भी) अग्नि घेरे होगी और नीचे से (भी) अग्नि घेरे होगी। यह हैं वह (सचमुच डरने की) बातें, जिनसे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है। अतः हे हमारे बन्दो! (हमारे अज़ाब से) डरो॥

और जो लोग मूर्ति-पूजन से बचे रहे और अल्लाह की ओर ध्यान दिया, उनके लिये (पारलौकिक कल्याण का) मंगल समाचार है। सो (हे पैग़म्बर!) मेरे इन बन्दों को मंगल-समाचार सुना दो, जो ईश्वर—वाणी को (ध्यान-पूर्वक) सुनते हैं और उसकी अच्छी २ बातों पर चलते हैं। यही वह लोग हैं, जिनको ख़ुदा ने (अपने धर्म का) मार्ग बताया है और यही वह लोग हैं, जो बुद्धिमान हैं॥

क्या वह मनुष्य, जिस पर अज़ाब की आज्ञा हो चुकी-(अज़ाब से बच सकता है?! और) क्या आप उस मनुष्य को जो दोज़ख़ में (जा चुका) है, निकाल लावेंगे? (यह तो उन अवज्ञाकारियों तथा न मानने वालों की दशा है)-परन्तु जो लोग अपने पालनहारे से भय खाते हैं, उनके लिये (जन्नत में) अटारियां बनाई गई हैं (और) उन अटारियों पर और अटारियां हैं। उनके नीचे नहरें बह रही हैं। यह अल्लाह की प्रतिज्ञा है और अल्लाह प्रतिज्ञा भङ्ग नहीं करता। क्या तूने (हे सम्बोधित!) देखा नहीं कि अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा—

फिर ज़मीन में उसके चश्मे बहाये, फिर वही उस ( पानी ) के ज़रिये से रंग-बिरङ्ग की खेती निकालता है, फिर वह ज़ोरों पर आती है, फिर ( पके पीछे ) तू उसको देखता है कि ज़र्द पड़ गई है, फिर खुदा उसको चूरा-चूरा कर डालता है। बेशक (खेती की) इस ( इब्तिदा व इन्तिहा ) में अक़्ल-मन्दों के लिये ( बड़ी ) इब्रत है ० क्या वह शख़्स जिसका बहरा खुदा ने (क़बूल) इस्लाम के लिये खोल दिया है और वह अपने पर्वर्दिगार की ( मशअल-हिदायत आगे रखता और उसीकी ) रोशनी पर ( चलता ) है-( इसके बराबर हो सकता है, जो कुफ़्र की तारीकियों में पड़ा है ? ) तो अफ़सोस है उन लोगों पर, जिनके दिल याद-खुदा से ( ग़ाफ़िल होकर ) सख़्त ( हो गये ) हैं। यही लोग तो सरीह गुमराही में हैं ० अल्लाह ने बहुत ही अच्छा कलाम (यानी यह) किताब उतारी-(जिसकी बातें एक दूसरे से) मिलती-जुलती ( हैं और वही बातें समझाने के लिये ) बार बार दोहराई गई हैं। ( इस किताब की तासीर यह है कि ) जो लोग अपने पर्वर्दिगार से डरते हैं, इस ( के सुनने ) से उनके बदन कांप उठते हैं। फिर उनके जिस्म और दिल नर्म होकर याद-इलाही की तरफ़ ( राग़िब ) होते हैं। यह ( क़ुर्आन ) हिदायत-इलाही है। जिसको चाहता है, इसके ज़रिये से ( दीन का सीधा ) रस्ता दिखा देता है और जिसको खुदा गुमराह करे, तो फिर कोई भी उसको हिदायत देने वाला नहीं ० तो क्या जो शख़्स क़यामत के दिन अपने मुंह को बद-तरीन-सज़ा ( यानी दोज़ख़ की आग ) की सिपर बनाता है-( वह उस जैसा हो सकता है, जो मज़े से बहिश्त में बैठा है ) और नाफ़र्मानों से कहा जायगा कि ( दुनिया में ) जैसा कुछ करते रहे हो, ( अब उसके मज़े ) चक्खो ० जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उन्होंने भी ( पैग़म्बरों को ) झुटलाया—

فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا
مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا
ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى
لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝ اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ
لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ
قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝
اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا
مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ
رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ
ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ
يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝ اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ
سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ
ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ

قَبْلِهِمْ

---

पुनः उससे भूमि पर सोते बहाये। पुनः वही इस ( पानी ) के द्वारा भिन्न २ रङ्ग की खेती उगाता है। कुछ दिनों में यह खेती ज़ोर पकड़ती है ( और पक जाने पर ) तू देखता है कि पीली हो गई। पुनः उसे चूरा २ कर देता है। निस्सन्देह इन ( बातों ) में बुद्धिमानों के लिये सोचने समझने ( और शिक्षा ग्रहण करने ) का अवसर है। अच्छा तो वह मनुष्य जिसका अन्तःकरण अल्लाह ने इस्लाम ( ग्रहण करने ) के लिये खोल दिया है और इसलिये ( उसका हृदय ) अपने पालन कर्त्ता की ज्योति से प्रकाश-मय हो रहा है—( कलुषित हृदय वालों के समान हो सकता है ? )। दुर्दशा है-उन लोगों की, जिनके हृदय खुदा स्मरण करने से कठोर हो रहे हैं। यही लोग हैं, जो प्रत्यक्ष पथ-भ्रष्टता में हैं॥

अल्लाह ने सर्वोत्तम-कलाम अर्थात कुर्आन उतारा है, जिसकी बातें एक दूसरे से मिलती जुलती हैं। और (समझाने बुझाने के लिये) बार २ दोहराई गई हैं। जो लोग अपने पालनहारे से भय खाते हैं, वह उस ( की आयतों के भय ) से काँपने लगते हैं। और उनके शरीर तथा हृदय नर्म होकर खुदा के स्मरण की ओर झुक जाते हैं। यह अल्लाह का राह दिखाना है। इसके द्वारा जिसे चाहता है, सीधा मार्ग दिखाता है। और जिसे खुदा पथ-भ्रष्ट करे, पुनः उसको राह दिखाने वाला कोई नहीं॥

क्या वह मनुष्य जो क़यामत के दिन अपने मुंह को बुरे अज़ाब की रोक बनाता है-(उनके समान हो सकता है, जो उस अज़ाब से सुरक्षित हैं ? क़यामत में ) उद्दण्ड लोगों से कहा जावेगा कि ( दुनिया में ) तुम जो कुछ करते रहे हो-( आज ) उसका स्वाद चक्खो। इन ( मक्का के काफ़िरों ) से पहिले ( भी ) लोगों ने ( पैग़म्बरों को ) झुठलाया—

قَبْلِهِمْ فَأَتٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ●
فَأَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ● وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ●
قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ●
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ
مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ
يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ● اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ●
ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ●
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ
بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى

तो उनको अज़ाब ने ऐसी तरफ़ से आ लिया कि उन्हें इसकी ख़बर भी न थी ० तो उनको ( इसी ) दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह ने ( ज़िल्लत और) रुस्वाई का मज़ा चखा दिया और आख़िरत का अज़ाब तो ( इससे ) कहीं बढ़कर है-काश ! यह लोग ( इतनी बात ) जानते ० और हमने लोगों के ( समझाने के ) लिये इस कुर्आन में सभी तरह की मिसालें बयान की हैं, ताकि यह लोग नसीहत पकड़ें ० ( यह ) कुर्आन ( साफ़ और सलीस ) अरबी ( ज़बान में है)। इसमें किसी तरह की पेचीदगी नहीं, ताकि (अव्वल) यह ( अह्ले-अरब अपनी ज़बान-मादरी होने की वजह से इसको बख़ूबी समझें और समझ कर ख़ुदा से ) डरें ० (अब) अल्लाह एक मिसाल बयान फ़र्माता है कि एक शख़्स ( गुलाम ) है, उसमें कई समझी हैं-( जो ) आपस में बड़ी कश-मकश रखते ( हैं ) और एक शख़्स ( वह भी गुलाम है, मगर ) समूचा एक आदमी का-क्या इन दोनों ( गुलामों ) की हालत यक्सां हो सकती है ? ( यह लोग इसको सुनकर कहेंगे कि नहीं हो सकती। ऐ पैग़म्बर ! यह जवाब पाकर कहो !) अल्हम्दु-लिल्लाह ! मगर ( अफ़सोस है कि ) इनमें से अक्सर ( इतनी बात भी ) नहीं समझते ० ( ऐ पैग़म्बर !) कुछ शक नहीं कि तुमको भी मरना है और कुछ शक नहीं कि इनको भी मरना है ० फिर क़यामत के दिन तुम ( दोनों फ़रीक़ ) अपने पर्वर्दिगार के रूबरू ( अपने अपने ) झगड़े (पेश ) करोगे-( उस वक़्त हक़ व बातिल खुल जाएगा ) ० तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन, जो ख़ुदा पर झूट बोले और (नीज़ उससे कि ) सच्ची बात उसको पहुंचे और वह उसको झुटलाये। क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ०—

---

सो उन पर इस प्रकार अज़ाब अवतीर्ण हुआ कि उन्हें ख़बर भी न थी। अतः अल्लाह ने उनको ( सांसारिक जीवन ही में ) बदनामी का स्वाद चखाया और परलोक का अज़ाब तो बहुत बड़ा है। हा शोक ! इन लोगों को ( इस बात का ) बोध होता। और हमने इस क़ुर्आन में लोगों के लिये हर प्रकार के उदाहरण वर्णन किये हैं, जिससे कि वह शिक्षा ग्रहण करें। यह क़ुर्आन ( सर्वोत्तम ) अरबी-भाषा में है, जिसमें किसी प्रकार का टेढ़ापन नहीं है, जिससे कि लोग (सुगमता-पूर्वक उसके अर्थ समझ लें और ख़ुदा से ) भय खायँ ॥

( अब ) अल्लाह एक उदाहरण वर्णन करता है कि एक मनुष्य ( गुलाम ) है—( जिसमें ) कुछ साझी हैं, जो परस्पर विरोध रखते हैं, और एक मनुष्य ( गुलाम ) है, जिसका स्वामी एक ही है ( और वह साझियों के विरोध से निश्चिन्त है )-तो क्या यह दोनों दृष्टान्त में समान हैं ? ( इसका उत्तर काफ़िरों की ओर से यही होगा कि नहीं। अतः इस उत्तर पर हे पैग़म्बर ! कहिये कि ) अलहम्दु-लिल्लाह ! परन्तु ( शोक !) इनमें बहुत से ( इतना भी ) नहीं समझते (]कि एक ख़ुदा के मानने वाले और बहुत से ख़ुदाओं के मानने वाले में क्या अन्तर होता है। हे पैग़म्बर ! ) कुछ सन्देह नहीं कि आपको भी मरना है और यह ( सब भी ) मरने वाले हैं। पुनः क़यामत के दिन तुम सब अपने पालनहारे के समक्ष अपने २ झगड़े उपस्थित करोगे ( और वहां उन झगड़ों का निर्णय होगा ) ॥

( यह लोग ख़ुदा पर झूठ बोलते हैं )-तो उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जो ख़ुदा पर झूठ बोले और सत्य बात ( अर्थात् ख़ुदा के कलाम ) को-जब उसके पास पहुंचे, तो झुठलावे। क्या काफ़िरों के लिये ( जो ईश्वर-वाणी को झुठलाते हैं )-दोज़ख़ में ठिकाना नहीं है ॥

لِلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ
بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ۝ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ
عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ
بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اَلَيْسَ اللّٰهُ
بِكَافٍ عَبْدَهٗ وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝
وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ اَلَيْسَ اللّٰهُ
بِعَزِيْزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ
مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ
بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ

और जो सच्ची बात लेकर आया और (नीज़ वह जिसने) उस को सच जाना, यही लोग तो परहेज़गार हैं ० जो चाहेंगे, उनके पर्वर्दिगार के हां उनके लिये (मौजूद) होगा। नेकी करने वालों का यही बदला है ० ताकि ख़ुदा उनके आमाल-बद (का बोझ) उन (पर) से उतार दे और उनको उनके नेक कामों के एवज़ में उनका अज्र अता फ़र्मायें ० क्या ख़ुदा अपने बन्दे (मुहम्मद की हिफ़ाज़त) के लिये काफ़ी नहीं? और (ऐ पैग़म्बर! यह लोग) तुमको ख़ुदा के सिवा (दूसरे दूसरे माबूदों) से डराते हैं और जिसको ख़ुदा गुमराह करे, तो उसको कोई (भी) हिदायत देने वाला नहीं ० और जिसको ख़ुदा हिदायत दे, तो कोई (भी) उस को गुमराह करने वाला नहीं। क्या ख़ुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला नहीं है ० और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम इन (लोगों) से पूछो कि आस्मानों को और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो ज़रूर (यही) कहेंगे कि ख़ुदा ने-(अब तुम इन लोगों से) कहो कि भला देखो तो सही! ख़ुदा के सिवा जिन (माबूदों) को तुम पुकारते हो, अगर ख़ुदा मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचानी चाहे, क्या यह (माबूद) उसकी (भेजी हुई) तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं? या ख़ुदा मुझ पर (अपना) फ़ज़्ल करना चाहे, क्या यह (माबूद) उसके फ़ज़्ल को रोक सकते हैं? (ऐ पैग़म्बर! तुम) कहो कि मुझे तो ख़ुदा बस करता है—

(यह ख़ुदा से भय नहीं खाते। ख़ुदा से) भय खाने वाला वह है, जो सत्य बात लेकर आया (और ख़ुदा से भय खाने वाला) वह है, जो उसे सत्य समझता है। ऐसे लोग जो कुछ चाहेंगे, अपने पालनहारे के पास (विद्यमान) पावेंगे (और) नेकी करने वालों को यही फल मिलता है। (ख़ुदा की करुणा का) प्रयोजन यह है कि उन लोगों के कुकर्मों को दूर करदे और शुभ कर्मों का पुरस्कार प्रदान करे॥

क्या अल्लाह अपने बन्दे (मुहम्मद) के लिये पर्याप्त नहीं हैं। और यह लोग (हे पैग़म्बर!) आपको उन (असत्य) पूज्यों का भय दिलाते हैं-(जो उन्होंने) ख़ुदा के अतिरिक्त (ग्रहण कर रक्खे हैं। यह लोग आदि-सृष्टि के पथ-भ्रष्ट हैं)। और जो आदि-सृष्टि का पथ-भ्रष्ट है, उसको कोई राह नहीं दिखा सकता और (इसी प्रकार) जिसको अल्लाह ने राह दिखाई है, उसको कोई भटका नहीं सकता। (इन लोगों के अस्वीकार तथा विरोध से आप उदास न हों!) क्या अल्लाह बलवान और हर प्रकार का बदला लेने वाला नहीं॥

और यदि आप उनसे पूछें कि पृथ्वी और आकाशों का रचनेवाला कौन है? तो अवश्य (उत्तर में) यह अल्लाह (ही) का नाम लेंगे। आप उनसे पूछिये कि क्या तुमने सोच विचार किया है कि अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिन पूज्यों की पूजा करते हो, यदि अल्लाह मुझे कष्ट पहुंचाने का इरादा करे, तो वह उस कष्ट को दूर कर सकते हैं! या मुझ पर कृपा करनी चाहे, तो उसकी कृपा को रोक सकते हैं! (इनसे) कह दीजिये कि मुझे तो मेरा अल्लाह ही पर्याप्त है—

عليه يتوكل المتوكلون ۝ قل يقوم اعملوا
على مكانتكم إني عامل فسوف تعلمون ۝
من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب
مقيم ۝ إنا أنزلنا عليك الكتب للناس
بالحق فمن اهتدى فلنفسه ومن ضل فإنما
يضل عليها وما أنت عليهم بوكيل ۝
الله يتوفى الأنفس حين موتها والتي لم
تمت في منامها فيمسك التي قضى عليها
الموت ويرسل الأخرى إلى أجل مسمى
إن في ذلك لآيت لقوم يتفكرون ۝
أم اتخذوا من دون الله شفعاء قل أولو
كانوا لا يملكون شيئا ولا يعقلون ۝
قل لله الشفعة جميعا له ملك السموت

( और ) भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रक्खा करते हैं ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से) कहो कि भाइयो ! तुम अपनी जगह अमल किये जावो, मैं ( अपनी जगह ) अमल कर रहा हूं। फिर आगे चलकर तुमको मालूम हो जायगा ० कि किस पर ऐसी आफ़त आती है, जो उसको ( दुनिया में ) रुस्वा कर देगी और ( आख़िरत में ) उस पर दाइमी-अज़ाब नाज़िल होगा-( सो अलग ) ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) बेशक ( यह ) किताब हम ने लोगों के ( फ़ायदे के ) लिये तुम पर उतारी है ( और ) इसमें ( दीन ) हक़ ( की तालीम ) है। तो जो रूबराह हुआ, वह ख़ास अपने ( भले के ) लिये ( रूबराह हुआ ) और जो भटका, तो उसके भटकने का वबाल ( भी ) उसी पर ( पड़ेगा ) और तुम उनके कुछ हवालदार तो हो नहीं ० लोगों के मरते वक़्त अल्लाह उनकी रूहों को ( अपने पास ) बुला लेता है और जो लोग मरे नहीं-( उनकी रूहें भी ) उनके सोते वक़्त ( ख़ुदा के हां बुला ली जाती हैं )-तो जिनकी निस्बत ( ख़ुदा ) मौत का हुक्म सादिर फ़र्मा चुका है, उनको ( तो अपने हां ) रोके रखता है और बाक़ी ( सोने वालों ) को एक वक़्त मुक़र्रर तक ( फिर दुनिया में ) भेज देता है। जो लोग ( ग़ौर व ) फ़िक्र को काम में लाना चाहते हैं, कुछ शक नहीं कि उनके लिये इसमें ( क़ुद्रत-ख़ुदा की बहुतेरी ही ) निशानियां हैं ० क्या इन लोगों ने ख़ुदा के सिवा ( दूसरे दूसरे ) सिफ़ारशी ठहरा रक्खे हैं। ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो, अगर्चे ( तुम्हारे यह सिफ़ारशी ) कुछ भी इख़्तियार न रखते हों और न ( कुछ ) अक़्ल ( व शऊर ) रखते हों-( क्या इस सूरत में भी तुम उनको अपना सिफ़ारशी ही माने जावोगे ? ) ० ( और इन लोगों से ) कहो कि सिफ़ारिश तो सारी ख़ुदा ही के इख़्तियार में है। आस्मानों और ज़मीन में उसीकी हुकूमत है—

और भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रखते हैं। कहिये ! कि हे मेरी जाति ( के लोगो ! ) तुम अपने स्थान पर कम किये जाओ और मैं ( अपने स्थान पर ) कर्म करता हूं। शीघ्र तुम्हें ज्ञात हो जायगा कि किस पर ऐसा अज़ाब आता है, जो उसे ( इस लोक में ) पतित करदे और किस पर ( इस लोक में ) सर्वदा रहने वाला अज़ाब होता है। हमने आप पर लोगों ( की शिक्षा ) के लिये सत्यता के साथ यह पुस्तक उतारी है। सो जिसने शिक्षा ग्रहण की, उसने अपने भले के लिये की और जो पथ-भ्रष्ट हुआ, उसे पथ—भ्रष्टता का प्रतिफल स्वयं ही भोगना है। और आप इन लोगों के रक्षक नहीं हैं ॥

( शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये यह बात कुछ कम नहीं कि ) अल्लाह लोगों को मृत्यु के समय उनकी आत्माओं को ( जीव लोक में ) उठा लेता है। और जो नहीं मरे ( उनकी आत्माओं को ) सोते समय ( उठा लेता है )। सो जिनकी मौत को आज्ञा हो चुकी है, उनको रोक लेता है और दूसरी आत्माओं को ( जो सोने वालों को हैं, उनके जागने के समय ) एक नियत समय के लिये ( वापिस ) भेज देता है। इन बातों में उन लोगों के लिये, जो सोच विचार करते हैं-( ख़ुदा के ) निश्चित रूप से चिन्ह हैं॥

क्या उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों को सिफ़ारशी ठहराया है ? (उनसे) पूछिये कि तुम्हारे सिफ़ारशियों के अधिकार में कुछ न हो और वह बिलकुल अज्ञान हों-(तो भी उन्हींको सिफ़ारशी ठहराओगे ?)। कहिये ! कि सिफ़ारिश का अधिकार तो केवल अल्लाह को है। अल्लाह ही का आकाश तथा पृथ्वी में राज्य है—

وَالْأَرْضِ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ● وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ
وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا
هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ● قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ
بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ●
وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ
مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا
يَحْتَسِبُونَ ● وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا
وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ● فَإِذَا
مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً
مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ

फिर तुम ( लोग ) उसीकी तरफ़ को लौटाकर लाए जावोगे ० और जब अकेले ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है, तो जो लोग आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते, उनके दिल भिंचने लगते हैं और जब ख़ुदा के सिवा ( दूसरे दूसरे माबूदों ) का ज़िक्र किया जाता है, तो बस यह लोग ख़ुश हो जाते हैं ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम ) कहो कि बारे-ख़ुदाया ! आस्मानों के और ज़मीन के पैदा करने वाले ! छुपे और खुले के जानने वाले ! जिन बातों में ( यह ) तेरे बन्दे आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, तू ही इनके झगड़ों को चुकायेगा ० और अगर इन नाफ़र्मानों के पास ( रूए ) ज़मीन की सारी काइनात हो और उसके साथ उतनी ही और (भी) हो, तो क़यामत के दिन अज़ाब-सख़्त के एवज़ में ( बे-तअम्मुल) उसको दे निकलें और (उस वक़्त ) इन ( लोगों ) को ख़ुदा की तरफ़ से ऐसा ( मामला ) पेश आयेगा, जिस का इनको ( वहम व ) गुमान भी न था ० और जैसे जैसे अमल ( यह लोग ) करते रहे हैं, उनकी ख़राबियां इनपर ज़ाहिर हो जाएंगी और जिस ( अज़ाब ) की हंसी उड़ाते रहे हैं, वह इनपर आ नाज़िल होगा ० तो इन्सान ( की आदत है कि उस ) को जब कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो हमको पुकारता है। फिर जब हम उसको अपनी तरफ़ से कोई नेअमत अता फ़र्माते हैं, तो कहने लगता है कि यह तो मुझको बस ( मेरी ) लियाक़त की वजह से मिली है—( इन्सान का ऐसा समझना ग़लत है )—बल्कि यह ( नेअमत ) आज़माइश है—

---

और अन्त में उसीकी ओर तुम लौटाये जाओगे। जब एक ख़ुदा का नाम लिया जाता है, तो उन लोगों के दिल घृणा करते हैं, जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। और जब ख़ुदा के अतिरिक्त दूसरे पूज्यों का वर्णन किया जाता है, तो ( सुनते ही ) यह लोग प्रसन्न हो जाते हैं। आप दुआ कीजिये कि हे अल्लाह ! आकाश और भूमि की रचना करनेवाले ! गुप्त प्रगट के जाननेवाले ! तूही उन बातों का निर्णय करेगा, जिनके सम्बन्ध में तेरे बन्दे परस्पर मत भेद कर रहे हैं ॥

और यदि इन अत्याचारियों के पास भूमण्डल के समस्त प्राणी और उसके साथ उतने ही और हों, तो यह निश्चित रूप से क़यामत के दिन अज़ाब की सख़्ती से बचने के लिये दे डालें और उनको ख़ुदा की ओर से वह बातें पहुंचेंगी, जिनका उन्हें ध्यान भी न था। और उन पर उनके कर्मों की बुराइयां प्रगट हो जावेंगी। और जिस ( अज़ाब ) का उपहास करते थे, वह उन्हें आ घेरेगा ॥

( मनुष्य का स्वभाव है कि ) जब किसी विपत्ति में फँस जाता है, तो हमें पुकारता है। पुनः जब हम ( उस विपत्ति को दूर कर देते हैं और ) उसे अपनी ओर से कोई नेअमत प्रदान करते हैं ( तो ) कहता है कि यह नेअमत तो मुझको ( मेरी योग्यता तथा युक्ति ) से मिली है। ( ऐसा नहीं है )-वरन यह ( नेअमत का दिया जाना ) एक प्रकार की परीक्षा है—

وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۞ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۞ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا
وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ
سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۞ أَوَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۞
قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ
جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۞ وَأَنِيبُوا
إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونَ ۞ وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ
مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ

मगर अक्सर लोग (इस बात से) वाक़िफ़ नहीं ० जो लोग इन से पहिले हो गुज़रे हैं-( वह भी ) ऐसी ही ( बातें ) बका करते थे। तो जो कुछ वह करते रहे-( कुछ भी ) उनके काम न आया ० और उनके आमाल ( बद ) के बुरे नतीजे उनको पहुंचे ( पर पहुंचे ) और इन ( कुफ़्फ़ार-मक्का ) में से, जो लोग नाफ़र्मानियाँ करते हैं, उनको ( भी ) उनके अमाल के बुरे नतीजे अन्क़रीब पहुंचने वाले हैं और यह ( लोग ख़ुदा को तो ) हरा सकते नहीं ० क्या इनको ( इतनी बात ) मालूम नहीं कि अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ करता है और ( जिसकी चाहता है ) नपी-तुली कर देता है। कुछ शक नहीं कि इस ( बात ) में ईमानवालों के लिये ( तो कुद्रत-ख़ुदा की बहुतेरी ) निशानियाँ ( मौजूद ) हैं ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहदो कि ऐ हमारे बन्दो ! जिन्होंने ( गुनाह करके ) अपने ऊपर ज़ियादतियां की हैं, अल्लाह की रह्मत से नाउम्मीद न रहो, क्योंकि अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ़ फ़र्माता है। (और) वह बेशक ( बड़ा ) बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ रुजू हो जाओ ! और उसकी फ़र्मांबर्दारी करो ! ( मगर ) इससे पहिले कि तुम पर अज़ाब आ नाज़िल हो और उस वक़्त तुमको ( किसी तरफ़ से ) मदद भी न पहुंच सके ० और तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से जो अच्छी अच्छी ( नसीहत की ) बातें तुम पर नाज़िल हुई हैं, उन पर चलो-( मगर ) इससे पहिले कि—

---

परन्तु बहुत से लोग जानते नहीं। जो लोग इनसे पहिले हो चुके हैं, वह भी ( ऐसी ही ) बातें बनाया करते थे, परन्तु उनके कर्म कुछ उनके काम न आये। सो उनको उनके कुकर्मों ( का दण्ड ) मिला और उन ( मक्का के काफ़िरों ) में से जिन लोगों ने अत्याचार किया है-( उनको भी ) शीघ्र अपने कुकर्मों ( का दण्ड ) मिलने वाला है। और यह लोग ( ख़ुदा को ) विवश नहीं कर सकते। क्या इनको ज्ञान नहीं कि अल्लाह जिसकी जीविका को चाहता है, बढ़ा देता है। और ( जिसकी जीविका को चाहता है ) नपी-तुली कर देता है। इन बातों में ईमान वाले लोगों के लिये ( ख़ुदा की पहिचान के ) चिन्ह ( विद्यमान ) हैं॥

( हे पैग़म्बर ! आप उन लोगों को, जिन्हें उनके पापों के बोझ ने आशा-रहित कर रक्खा है, मेरा आदेश पहुंचा दीजिये ! और ) कहिये कि हे मेरे ऐसे बन्दो जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया है, ख़ुदा की अनुकम्पा से निराश न हो। अल्लाह समस्त पापों को क्षमा कर देता है और वह बड़ा क्षमा करनेवाला और करुणाकारी है। और तुम अपने पालन कर्त्ता की ओर ध्यान दो और उसकी आज्ञा पालन करो, इससे प्रथम कि तुम पर अज़ाब उतरे और पुनः तुम्हारी सहायता न की जावे॥

और इससे प्रथम कि अचेतना की दशा में अकस्मात तुम पर अज़ाब आजावे, इस (पुस्तक) की अच्छी २ बातों का अनुकरण कर लो॥

العذاب بغتة وانتم لا تشعرون ۝ ان
تقول نفس يحسرتى على ما فرطت في
جنب الله وان كنت لمن السخرين ۝ او
تقول لو ان الله هدىني لكنت من المتقين
او تقول حين ترى العذاب لو ان لي كرة
فاكون من المحسنين ۝ بلى قد جاءتك
ءايتي فكذبت بها واستكبرت وكنت
من الكفرين ۝ ويوم القيمة ترى الذين
كذبوا على الله وجوههم مسودة اليس
في جهنم مثوى للمتكبرين ۝ وينجي الله
الذين اتقوا بمفازتهم لا يمسهم السوء ولا
هم يحزنون ۝ الله خالق كل شيء وهو
على كل شيء وكيل ۝ له مقاليد السموت

यकायक तुम पर अज़ाब आ नाज़िल हो और तुमको ( उसके आने की ) ख़बर (भी) न हो ० ( कहीं ऐसा न हो ) कि ( आख़िरकार तुममें से ) कोई कहने लगे कि ऐ अफ़सोस! मेरी उस कोताही पर, जो मैंने पास-ख़ुदा ( मलहूज़ रखने ) में की और मैं तो ( इन बातों पर ) हँसता ही रहा ० या लगे कहने कि अगर ख़ुदा मुझको नेक हिदायत देता, तो मैं ( भी ) परहेज़गारों में से होता ० या जब अज़ाब ( सामने आ मौजूद हो, उस ) को देख कर लगे कहने कि ( ऐ ) काश! मुझको ( दुनिया में ) फिर लौट जाना ( नसीब ) हो, तो मैं ( भी नेक बनकर ) नेकों ( के ज़ुमरे ) में रहूं ० ( उस वक़्त ख़ुदा उससे फ़र्मायेगा, हां! ) हां हमारे अहकाम तुझको पहुंचे और तूने उनको झुठलाया और अकड़ बैठा और मुन्किरों में से (एक मुन्किर तू भी) था ( अब तेरे साथ कुछ रिआयत नहीं हो सकती ) ० और ( ऐ पैग़म्बर! तुम ) क़यामत के दिन देखोगे कि जिन लोगों ने ख़ुदा पर झूट बोला है, उनके मुंह काले होंगे। क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ० और जो लोग परहेज़गारी करते रहे हैं, उनको ख़ुदा कामयाबी के साथ नजात देगा कि उनको ( किसी तरह की भी ) ईज़ा नहीं पहुंचेगी और न वह ( किसी तौर पर ) आज़ुर्दा-ख़ातिर होंगे ० अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का ख़बरगीरां है ० आस्मानों और ज़मीन ( के ख़ज़ानों ) की कुन्जियां उसीकी हैं—

---

( ऐसा न हो कि ) कोई आगे चलकर कहे कि उन त्रुटियों पर शोक है, जो मैंने ख़ुदा के विषय में कीं और मैं तो हँसता ही रहा। अथवा ( कोई ) कहे कि यदि अल्लाह मुझे शिक्षा देता, तो मैं ( भी ) संयमियों में होता, वा कोई अज़ाब को देखकर कहे कि यदि एक बार और मुझे अवकाश मिल जाय, तो मैं नेकों में हो जाऊँ। ( क़यामत के दिन यह बहाने एक न चलेंगे और ख़ुदा की ओर से सम्बोधन होगा कि ऐसा नहीं है )–वरन तेरे पास मेरी आयतें आईं, तो उनको तूने झुठलाया। अपने आपको बड़ा समझा और अस्वीकार करने वालों में सम्मिलित रहा॥

और क़यामत के दिन आप देखेंगे कि उन लोगों के मुख काले होंगे, जिन्होंने ख़ुदा पर झूठ बोला है ( और अहङ्कार किया है )। क्या अहङ्कार करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है? ( अवश्य है )। और अल्लाह संयमियों को सफलता-पूर्वक ( दोज़ख़ के अज़ाब से ) मुक्ति देगा। न उनको दुख पहुंचेगा और न वह शोकित होंगे। अल्लाह ही हर वस्तु का उत्पन्न करने वाला है। और अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है। उसीके पास आकाश तथा भूमि की कुंजियां हैं—

ع

وَالْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ
تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ
اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ
مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ
الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ
جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ
مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝
وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ
فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝
وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ

और जो लोग ख़ुदा की आयतों को नहीं मानते-( आख़िरकार ) वही घाटे में रहेंगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि ऐ नादानो ! क्या तुम मुझे ( यह ) सलाह देते हो कि ख़ुदा के सिवा ( किसी दूसरे ) की इबादत करूं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! बिला-शुबहा ) तुम्हारी तरफ़ और उन ( पैग़म्बरों ) की तरफ़ जो तुमसे पहिले हो गुज़रे हैं -( एक एक की तरफ़ ) वही भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया, तो ज़रूर तुम्हारे ( सारे ) अमल ज़ब्त हो जाएँगे और ज़रूर तुम घाटे में आ जावोगे-( तो काफ़िरों का कहना न मानो ) ० बलिक अल्लाह ही की इबादत करो और ( उसके ) शुक्र-गुज़ार बन्दों ( के ज़ुमरे ) में रहो ० और इन लोगों ने तो ख़ुदा की जैसी क़द्र करनी चाहिये थी, उसकी (कुछ भी) क़द्र न की—हालाँकि ( वह ऐसी अज़मत और क़ुद्रत रखता है कि ) क़यामत के दिन (यह) सारी ज़मीन उसकी एक मुट्ठी ( में ) होगी और आसमान (मक्तूब की तरह) लिपटे हुये उसके दाहिने हाथ में । लोग जैसे जैसे शिर्क करते हैं, ख़ुदा की ज़ात ) उससे पाक और ( उसकी शान उससे बहुत ) बुलन्द है ० और (अव्वल बार) सूर फूंका जायगा, तो जो (मख़्लूक़ात) आसमानों में है और जो ज़मीन में है, उन ( सब ) पर ( मर्ग की ) बेहोशी तारी हो जायगी, मगर जिसको ख़ुदा चाहे। फिर दुबारा सूर फूंका जायगा, तो अब सबके सब एक दम से ( क़ब्रों से निकल कर ) खड़े हो जाएँगे (और चारों तरफ़) देखने लगेंगे ० और ज़मीन अपने पर्वर्दिगार के नूर से चमक उठेगी और ( लोगों के नामए-आमाल की ) किताब ( लाकर सामने ) रखदी जाएगी—

और जो लोग ( इसके होते हुये भी ) अल्लाह की आयतों को नहीं मानते—( अन्त में ) वही घाटे में रहेंगे । आप उनसे कहिये कि अच्छा तो क्या हे मूर्खो ! तुम मुझे आज्ञा देते हो कि मैं ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और की पूजा करूं । और ( आप किस प्रकार उनका कहा कर सकते हैं, जबकि ) आप पर और उन ( नबियों ) पर जो आप से पहिले ( भेजे गये ) हैं—यह वही आ चुकी है कि यदि आपने ( किसी को ख़ुदा का ) साझी ठहराया, तो आपके कर्म अवश्य निष्फल हो जावेंगे। और आप भी ( उन ही ) घाटा उठाने वालों में ( सम्मिलित ) हो जावेंगे। अतः ( आप उनका कहा न मानें )—बरन अल्लाह ही की उपासना करें और कृतज्ञ लोगों में सम्मिलित हों ॥

और उन लोगों ने जैसा चाहिये था, अल्लाह का मान न किया-यद्यपि ( वह ऐसी बड़ाई तथा शक्ति वाला है कि ) क़यामत के दिन यह समस्त भूमि उसकी मुट्ठी में होगी और यह सब आकाश लिपटे हुये उसके दाहिने हाथ में होंगे। वह पवित्र है और ( यह मुश्रिक लोग ) जिनको उसका साझी ठहराते हैं, उनसे ( बहुत ) ऊँचा है ॥

और जब ( प्रथम बार ) सूर फूंका जावेगा, तो जो प्राणी आकाश तथा भूमि में हैं, वह मूर्च्छित हो जावेंगे, किन्तु जिसे ख़ुदा चाहे। पुनः जब दुबारा सूर फूंका जावेगा, तो सहसा लोग उठ खड़े होंगे ( और चारों ओर ) देखने लगेंगे। और पृथ्वी अपने पालनहारे के प्रकाश से चमक उठेगा और ( लोगों का ) कर्म-पत्र ( उनके सन्मुख ) रक्खा जावेगा—

وَجِايْءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ
مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَسِيْقَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا
جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ
اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ
رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى
وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ ۝ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ
اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا
وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ
طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ

ع

الذي

और पैग़म्बर और गवाह ला हाज़िर किये जाएँगे और लोगों में इन्साफ़ के साथ (उनके इख़्तिलाफ़ात का) फ़ैसला कर दिया जायगा और उनपर ( किसी तरह का ) ज़ुल्म न होगा ० और जिसने जैसे अमल किये हैं, सब को पूरे पूरे भर दिये जाएँगे और ( लोग ) जो कुछ भी कर रहे हैं, ख़ुदा उससे ख़ूब वाक़िफ़ है ० और जो लोग कुफ़्र करते रहे हैं, जहन्नम की तरफ़ टोलियां बना बनाकर हांके जाएँगे। यहां तक कि जब जहन्नम के पास पहुंचेंगे, तो ( उनके लिये ) उसके दर्वाज़े खोल दिये जाएँगे और दोज़ख़ के मुवक्किल उनसे कहेंगे कि क्या तुम ( ही ) में के रसूल तुम्हारे पास नहीं आये कि वह तुम्हारे पर्वर्दिगार की आयतें तुमको पढ़ पढ़ कर सुनाते और तुम्हारे इस रोज़ ( बद ) के पेश आने से तुमको डराते? यह जवाब देंगे कि हां! ( रसूल तो आये और उन्होंने डराया भी )—मगर ( हमने उनकी एक न सुनी और ) अज़ाब का वादा ( हम ) काफ़िरों के हक़ में पूरा होकर रहा ० फिर ( इनसे ) कहा जायगा कि जहन्नम के दर्वाज़ों में दाख़िल हो! (और हमेशा) हमेशा इस (जहन्नम) में रहो। ग़रज़ (ख़ुदा से) अकड़ने वालों का ( भी क्या ही ) बुरा ठिकाना है ० और जो लोग ( दुनिया में ) अपने पर्वर्दिगार से डरते रहे, इनको ( भी ) टोलियां बना बनाकर बहिश्त की तरफ़ ले जाएँगे। यहाँ तक कि जब (यह लोग) बहिश्त के पास पहुंचेंगे और उसके दर्वाज़े ( तो इनके लिये पहिले ही से ) खुले होंगे—( ताकि इनको खुलने का इन्तिज़ार न करना पड़े। तो इनकी बड़ी आव-भगत होगी ) और बहिश्त के मुवक्किल इनसे सलामु-अलैक करके कहेंगे कि तुम( बड़े ) मज़े में रहे! तो बहिश्त में हमेशा ( हमेशा ) के लिये दाख़िल हो ० और (यह लोग) कहेंगे, ख़ुदा का शुक्र है—

---

और नबियों तथा गवाहों को लाया जावेगा। और सचाई के साथ उनके बीच निर्णय किया जावेगा और किंचित-मात्र अन्याय न होगा। और प्रत्येक जीवधारी को उसके कर्मों का पूरा २ बदला दिया जावेगा। और अल्लाह उनके कर्मों से भली भाँति अभिज्ञ है और जो लोग कुफ़्र करते रहे हैं, उनको दोज़ख़ की ओर टोली २ करके हांका जावेगा। यहां तक कि जब वह दोज़ख़ के पास पहुंचेंगे, तो उसके द्वार खोल दिये जावेंगे। और उनसे दोज़ख़ के द्वारपाल कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आये? ( स्वयं तुम्हारी ही जाति के ) जो तुमको तुम्हारे पालनहारे की आयतें पढ़ कर सुनाते और तुम्हें इस दिन के मिलने से भय दिलाते॥

( यह उत्तर देंगे और कहेंगे कि ) हां! ( यह सब कुछ हुआ )—परन्तु ( हम कुफ़्र पर स्थिर रहे और उनकी बात को न माना और ) अज़ाब का वादा काफ़िरों पर पूरा होकर रहा। ( संक्षिप्त यह कि उनसे ) कहा जायगा कि दोज़ख़ के द्वारों में प्रवेश करो। और सर्वदा दोज़ख़ में ( पड़े ) रहो। ( यह ) अहङ्कारियों का स्थान ( है और ) कैसा बुरा ( स्थान ) है। और जो लोग ( संसार में ) अपने पालनहारे से भय खाते रहे, उनको ( भी ) जन्नत की ओर टोली टोली करके ले चलेंगे। यहां तक कि जब वह जन्नत के पास पहुंचेंगे; तो उसके द्वार पहिले से खुले होंगे। और जन्नत के द्वारपाल उनसे सलाम और स्वागत के उपरान्त कहेंगे कि बस अब आप सर्वदा के लिये जन्नत में प्रवेश करें॥

और ( यह लोग जन्नत में जाकर ) कहेंगे कि ख़ुदा को धन्यवाद है—

الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ
نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ أَجْرُ
الْعَامِلِينَ ۝ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ
حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

سورة المؤمن مكية وهى خمس وثمانون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
حم ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝
غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ
ذِي الطَّوْلِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝
مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا
فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ

जिसने अपना वादा हमको सच कर दिखाया और हमको ( बहिश्त की सर ) ज़मीन का मालिक बनाया कि हम बहिश्त में जहां चाहें, रहें–तो ( नेक ) अमल करने वालों का ( क्या हो ) अच्छा अज्र है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! उस दिन तुम ) फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्दा–गिर्द हलक़ा बाँधे ( खड़े हैं और ) अपने पर्वर्दिगार की तारीफ़ के साथ ( उसकी ) तस्बीह ( व तक़्दीस ) कर रहे हैं और लोगों के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायगा ओर ( सब कुछ हो–हुवा–कर आख़िरकार हर तरफ़ से यही ) सदा ( बुलन्द ) होगी कि सब तारीफ़ें ख़ुदा को सज़ावार हैं, जो तमाम जहान का पर्वर्दिगार है ०

## सूरत–मोमिन

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ८५ आयतें और ९ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)० हा–मीम् ० ( यह ) फ़र्मान–तहरीरी पेशगाह–ख़ुदावन्दी से सादिर होता है, जो ज़बरदस्त ( और हर चीज़ से ) वाक़िफ़ है ० गुनाहों का बख़्शने वाला और तौबा का क़बूल करने वाला ( बुरों को ) सख़्त–सज़ा ( देने ) वाला ( नेकों के हाल पर ) बड़ा फ़ज़्ल करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसीकी तरफ़ ( सबको ) लौट कर जाना है ० ख़ुदा की आयतों में सिर्फ़ वही लोग झगड़े निकालते हैं, जो मुन्किर हैं। तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन लोगों का ( तिजारत वग़ैरह के लिये ) शहरों में इधर उधर चलना फिरना तुमको धोके में न डाले (कि इनको तो कुफ़्र से कुछ भी नुक़्सान न पहुंचा) ० इनसे पहिले नूह की क़ौम ने और उनके बाद ( और ) उम्मतों ने ( भी अपने पैग़म्बरों को ) झुठलाया—

---

जिसने हमको अपना वादा सच कर दिखाया। और हमको जन्नत की भूमि का स्वामी बना दिया कि जहां हम चाहें, रहें। सो (शुभ) कर्म करने वालों के लिये कैसा अच्छा फल है। और आप ( उस दिन हे पैग़म्बर ! ) देखेंगे कि फ़रिश्ते अर्श के चारों ओर पंक्ति बाँधे हुये अपने पालनहारे की प्रशंसा के साथ पवित्रता वर्णन कर रहे हैं। और लोगों के बीच सचाई ( तथा न्याय ) के साथ निर्णय कर दिया जावगा और ( चारों ओर से ) घोर शब्दों में कहा जावेगा कि सब प्रशंसायें अल्लाह ही के योग्य हैं, जो सर्व जगों का पालन कर्त्ता है ॥

## सूरत–मोमिन

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ८५ आयतें और ८ रुकूअ हैं ॥

इस किताब (क़ुर्आन) का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो बलवन्त है–( हर बात से ) अभिज्ञ है, पाप का क्षमा करनेवाला और तौबा (पश्चाताप) का स्वीकार करनेवाला है। ( अवज्ञाकारियों को ) घोर-दण्ड (देने) वाला (आज्ञाकारियों को) पुरस्कार (से प्रफुल्लित करने ) वाला है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और उसीकी ओर (सबको) लौट कर जाना है ॥

( यह महिमा अल्लाह की है। अतः) अल्लाह की आयतों के सम्बन्ध में वही लोग झगड़ा करते हैं, जो काफ़िर हैं। सो आपको उनका शहरों में ( अमन चैन से ) आना जाना ( व्यापार विषयक कामों से पर्यटन तथा यात्रा करना ) धोखा न दे। ( और आप यह ख़्याल न करें कि कुफ़्र से उनको कुछ हानि नहीं पहुंची )। उनसे पहिले नूह की जाति ने और उसके पश्चात दूसरे समूहों ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया –

وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَادَلُوا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝
الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ
لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا
فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ
عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي
وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ
وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ
السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ
وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ع

يُنَادَوْنَ

और हर उम्मत ने अपने रसूल के गिरफ़्तार करने का इरादा किया और (झूटी) झूटी बातों से (सनद पकड़ कर पैग़म्बरों से) झगड़े, ताकि अपनी कट-हुज्जती से हक़ को (जगह से) लड़-खड़ा दें—तो (आख़िरकार) हमने उनको धर पकड़ा—तो (देखा!) हमने उनको कैसी सज़ा दी ० और इसी तरह (इन) काफ़िरों पर (भी) तुम्हारे पर्वर्दिगार का फ़र्मूदा सादिक़ आ चुका है कि यह दोज़ख़ी हैं ० जो (फ़रिश्ते) अर्श को उठाये हुये हैं और जो अर्श के गिर्दा-गिर्द (तैनात) हैं—(हमा-वक़्त) अपने पर्वर्दिगार की तारीफ़ के साथ (उसकी) तस्बीह (व तक़्दीस) करते रहते और उस पर ईमान रखते और ईमान वालों के लिये मग़फ़िरत (की दुआयें) मांगा करते हैं कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! तेरी रहमत और तेरा इल्म सब चीज़ों पर हावी है। तो जो लोग (तेरी जनाब में) तौबा करते और तेरे (दीन के) रस्ते पर चलते हैं, उनको बख़्श दे! और (नीज़) उनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ० और ऐ हमारे पर्वर्दिगार! उनको (बहिश्त के) हमेशा के रहने के बाग़ों में भी लेजा दाख़िल कर, जिनका तूने उनसे वादा फ़र्माया है और उनके बाप दादों और उनकी बीबियों और उनकी औलाद में से जो जो नेक हों, उनको (भी)—बेशक तूही ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है ० और (हां!) उनको (क़यामत के दिन हर तरह की) ख़राबियों से महफ़ूज़ रख! और जिसको तू उस दिन ख़राबियों से महफ़ूज़ रक्खेगा, तो उस पर तूने (अपना बड़ा ही) फ़ज़्ल किया और यही (तो बहुत) बड़ी कामयाबी है ० जो लोग (दीन हक़ से) मुन्किर हैं—

---

और हर जाति (में उन लोगों) ने (जो ईमान नहीं लाये) अपने पैग़म्बर को पकड़ने का इरादा किया। और मिथ्या झगड़े उठाये, जिससे कि इस प्रकार सत्य को डिगा देवें। (जब यहां तक उनकी उद्दण्डता पहुंची)—तो हमने उनको पकड़ लिया। सो (देखो कि उनको हमने) कैसा दण्ड दिया। (यह तो दुनिया में उनकी दुर्दशा हुई और) इसी प्रकार (परलोक के विषय में भी) काफ़िरों पर आपके पालनहारे की आज्ञा हो चुकी है कि वह दोज़ख़ी हैं॥

जो (फ़रिश्ते) अर्श को उठाये हुये हैं और जो (फ़रिश्ते) अर्श के चारों ओर हैं, वह अपने पालन कर्त्ता की प्रशंसा के साथ पवित्रता वर्णन करने में (लगे हुये) हैं और उस पर ईमान रखते हैं। और ईमान वालों के लिये (इन शब्दों में) क्षमा की प्रार्थना करते हैं (कि हे हमारे पालन कर्त्ता!) कृपा और ज्ञान की दृष्टि से तूने प्रत्येक वस्तु को घेर लिया है। अतः उन लोगों को क्षमा करदे, जिन्होंने (कुफ़्र तथा शिर्क से) तौबा करली और तेरे मार्ग पर चलते हैं। और उनको दोज़ख़ के अज़ाब से सुरक्षित रख। हे पालनहारे! उनको उद्यान के बाग़ों में प्रवेश कर, जिनका तूने उनसे वादा किया है। और उनके बाप, दादा और स्त्रियों तथा सन्तान में से जो नेक हों (उनको भी प्रवेश कर)। निस्सन्देह तू बलवन्त और बुद्धिवाला है। और उनको बुराइयों से बचा! और जिसको तूने क़यामत में बुराइयों से बचा लिया, सो उस पर तेरी (अत्यन्त) कृपा है। और यह बहुत बड़ी सफलता है॥

(यह तो ईमानवालों की दशा है और) काफ़िरों को (क़यामत के दिन)—

يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ
إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ●
قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ
فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِنْ
سَبِيلٍ ● ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهُ
كَفَرْتُمْ وَإِنْ يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ
الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ● هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ
وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ
إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ● فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ● رَفِيعُ
الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ
التَّلَاقِ ● يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ ● لَا يَخْفَىٰ عَلَى

( क़यामत के दिन ) उनसे बआवाज़-बुलन्द कह दिया जायगा कि जैसे तुम ( आज ) अपनी जान से बेज़ार हो, इससे बढ़कर खुदा ( तुमसे ) बेज़ार था, जबकि तुम ईमान की तरफ़ बुलाये जाते थे और नहीं मानते थे ० ( वह लोग ) अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! तू हमको दो बार मुर्दा और दो बार ज़िन्दा रख चुका, तो ( अब ) हम अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं। फिर ( अब यहां से ) निकलने की ( भी) कोई सूरत है ० ( खुदा फ़र्मायेगा नहीं और ) यह इसलिये कि (दुनिया में) जब अकेले खुदा को पुकारा जाता था, तो तुम ( उसको ) नहीं मानते थे और अगर उसके साथ शरीक ठहराये जाते थे, तो तुम यक़ीन कर लेते थे । तो ( आज ) अल्लाह ही की हुकूमत है, जो आलीशान ( और सबसे ) बड़ा है ० ( लोगो ! ) वही तो है, जो तुमको अपनी ( कुद्रत की ) निशानियां दिखाता और आस्मान से तुम्हारे लिये रोज़ी उतारता है और ( ऐसी बातों को ) वही सोचता है, जो ( खुदा की तरफ़ ) रुजू करता है ० तो ( मुसलमानो ! ) ख़ालिस खुदा ही की फ़र्मांबर्दारी मद्दे-नज़र रख कर उसीको पुकारो, अगर्चे काफ़िरों को बुरा ( ही क्यों न )लगे ० ( खुदा ) बड़ा आली-मर्तबा ( और ) अर्श ( बरीं ) का मालिक (है)। अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है, अपने इख़्तियार से वही भेजता है, ताकि वह ( पैग़म्बर लोगों को ) रोज़-क़यामत (की मुसीबतों) से डराये ० जबकि ( सब ) लोग ( खुदा के ) सामने आ मौजूद होंगे (और) उनकी कोई बात खुदा से पोशीदा न होगी—

---

पुकारा जावेगा कि ( जिस प्रकार ) तुम आज अपनी जान से अप्रसन्न हो, इससे बढ़कर खुदा तुमसे अप्रसन्न था, जब (दुनिया में) तुमको ईमान का बुलावा दिया जाता था और तुम ( उस बुलावे से ) अस्वीकार करते थे। ( काफ़िर लोग ) कहेंगे—हे हमारे पालनहारे ! तूने हमें दो बार × मृत्यु दी ( अर्थात अभाव में रक्खा ) और दुबारा जीवन प्रदान किया ( अर्थात भाव-युक्त किया )। अतः हम ( जो तेरी शक्ति और मृत्यु के पश्चात जीवित करने का अस्वीकार करते थे, अपनी भूल से परिचित हो गये )। अतः हम अपने पापों का इक़रार करते हैं, तो क्या ( यहां से ) निकलने की कोई राह है ॥

× टीका—पहिले अभाव में थे। पुनः भावयुक्त हुये। पुनः मृत्यु हुई। पुनः दुबारा जीवित किये गये। इसी प्रकार दो बार मृत्यु और दो बार जीवन हुआ:—हसन निज़ामी ॥

( खुदा की ओर से कहा जावेगा कि नहीं और ) यह इसलिये है कि ( दुनिया में ) जब अल्लाह को एक ( कह कर ) पुकारा जाता था, तो तुम अस्वीकार ( तथा खण्डन ) करते थे। और यदि उसके साथ शिर्क किया जाता था, तो तुम इक़रार ( तथा समर्थन ) करते थे। (लो ! आज) तो शासन अल्लाह का है, जो बड़ा तथा श्रेष्ठ है। वही (तो) है, जो तुम्हें अपनी (शक्ति के) चिन्ह दिखाता है और तुम्हारे लिये आकाश से जीविका उतारता है—( किन्तु इन बातों से तो ) केवल वह लोग शिक्षा ग्रहण करते हैं, जो .खुदा की ओर अवहित होते हैं। अतः ( हे मुसलमानो ! विचार तथा ) उपासना को निरी अल्लाह के लिये करके उसे पुकारो, यद्यपि काफ़िर इसका बुरा मानें—( उनके बुरा मानने की कुछ पर्वाह न करो )। अल्लाह (की महानता तथा श्रेष्ठता ) के पद ( बहुत ) ऊंचे हैं। ( वह ) अर्श का स्वामी है। ( मुख्य ) अपनी आज्ञा से अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है, वही भेजता है, जिससे कि वह ( पैग़म्बर लोगों को ) क़यामत के दिन से डराये । (अर्थात ) उस दिन ( से डराये, जिस दिन ) वह ( स्पष्ट-रूप से .खुदा के सन्मुख ) उपस्थित होंगे और उनकी कोई बात .खुदा से गुप्त न होगी ॥

اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ
الْقَهَّارِ • اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ
لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ • وَاَنْذِرْهُمْ
يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ
كٰظِمِيْنَ • مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ • وَّلَا
شَفِيْعٍ يُّطَاعُ • يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا
تُخْفِي الصُّدُوْرُ • وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ وَالَّذِيْنَ
يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ اِنَّ اللّٰهَ
هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ • اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ع
فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ • ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

( ख़ुदा की तरफ़ से निदा होगी कि ) आज किसकी हुकूमत है ? ( तो सब मारे हैबत के ख़ामोश रहेंगे और ख़ुद बारगाह-ख़ुदावन्दी से निदा होगी कि हुकूमत ) अकेले अल्लाह ही की है, जो बड़ा ज़बरदस्त है० आज हर शख़्स को उसके किये का बदला दिया जायगा ( और ) आज ( किसी पर ) मुत्लक़ ज़ुल्म न होगा। बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन लोगों को उस रोज़ ( क़यामत की मुसीबतों ) से डरावो, जो ( सर पर ) चला आ रहा है, जबकि (मारे ग़म के ) घुट-घुट कर ( लोगों के ) कलेजे मुंह को आ जाएँगे-( उस रोज़) नाफ़र्मानों का न तो कोई दिल-सोज़ दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारशी, जिसकी बात मानी जाय ० ख़ुदा आँखों की चोरी को जानता है और उन ( भेदों ) को ( भी )-जो (लोगों के ) सीनों में पोशीदा हैं ० और अल्लाह ठीक ( ठीक ) हुक्म देता है और उसके सिवा जिन ( माबूदों ) को यह लोग पुकारते हैं, वह तो ( ठीक-बे-ठीक ) किसी तरह का हुक्म भी नहीं दे सकते। बेशक अल्लाह ही सुनने वाला देखने वाला है ० और क्या इन लोगों ने मुल्क में चल फिर कर नहीं देखा कि जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उनका कैसा अन्जाम हुआ। वह ( लोग क्या ) बल-बूते के एतिबार से और ( क्या उन ) निशानों के एतिबार से—( जो रूए ) ज़मीन पर ( छोड़ गये ) इनसे कहीं बढ़ चढ़ कर थे-( मगर चूंकि काफ़िर और मुफ़्सिद थे ) तो ख़ुदा ने उनको उनके गुनाहों की सज़ा में धर पकड़ा और उनको ख़ुदा ( के ग़ज़ब ) से कोई भी बचाने वाला न हुआ ० ( और ) यह इस सबब से हुआ कि—

---

( उस दिन अदृष्ट से नाद होगा कि ) आज किसका राज्य है ? ( सब लोग भय के कारण चुप-चाप सिर लटकाये खड़े होंगे। और खुदा ही की ओर से पुनः उत्तर दिया जावेगा कि ) एक खुदा बलवान का ( शासन है )। आज हर प्राणी को उसके कर्मों का प्रतिफल दिया जावेगा। आज ( किसी पर कुछ ) अन्याय न होगा। निस्सन्देह अल्लाह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है ॥

और ( हे पैग़म्बर ! आप ) उनको शीघ्र आने वाली ( क़यामत ) के दिन से भय दिलाइये, जिस समय शोक से घुट कर कलेजा मुंह को आजावेगा। ( उस रोज़ ) उद्दण्ड लोगों का न कोई मित्र होगा न सिफ़ारशी, जिसकी बात मानी जाय । ( इन काफ़िरों को स्मरण रखना चाहिये कि अल्लाह ) नेत्रों की चोरी और हृदयों के गुप्त भेदों से ( भी ) अभिज्ञ है। और अल्लाह सच्चाई के साथ निर्णय करता है। और यह लोग अल्लाह के अतिरिक्त जिन ( पूज्यों ) को पुकारते हैं, वह किसी बात का भी निर्णय नहीं कर सकते । ( उनमें न श्रवण-शक्ति है और न देखने की। हाँ ! ) अल्लाह निस्सन्देह ( सब कुछ ) सुनने वाला ( और सब कुछ ) देखने वाला है ॥

क्या उन्होंने दुनिया में चल फिर कर नहीं देखा कि जो लोग उनसे पहिले हो चुके हैं, उनका परिणाम क्या हुआ। वह लोग उनसे शक्ति में ( भी ) बढ़कर थे और उनके ( जो ) चिन्ह दुनिया में ( शेष रह गये हैं, वह भी ) उनसे अधिक सुदृढ़ हैं—( परन्तु जब उन्होंने उद्दण्डता ग्रहण की ) तो अल्लाह ने उनके पापों के कारण उनकी पकड़ की। और अल्लाह ( की पकड़ ) से बचाने वाला कोई न था। यह इसलिये हुआ कि—

كانت تاتيهم رسلهم بالبينت فكفروا فاخذ
هم الله انه قوي شديد العقاب ۝ ولقد
ارسلنا موسى بايتنا وسلطن مبين ۝
الى فرعون وهامن وقارون فقالوا سحر
كذاب ۝ فلما جاءهم بالحق من عندنا قالوا
اقتلوا ابناء الذين امنوا معه واستحيوا نساءهم
وما كيد الكفرين الا في ضلل ۝ وقال
فرعون ذروني اقتل موسى وليدع ربه
اني اخاف ان يبدل دينكم او ان يظهر
في الارض الفساد ۝ وقال موسى اني عذت
بربي وربكم من كل متكبر لا يؤمن بيوم
الحساب ۝ وقال رجل مؤمن من ال فرعون
يكتم ايمانه اتقتلون رجلا ان يقول ربي

उनके पैग़म्बर मोजिज़े ले लेकर उनके पास आते रहे, इस पर (भी) उन्होंने न माना—तो अल्लाह ने उनको धर पकड़ा। बेशक वह (बड़ा) ज़ोरावर (और बड़ी) सख़्त सज़ा देने वाला है ० और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ (यानी मोजिज़े) और खुली खुली दलीलें देकर ० फ़िर्औन और हामान और क़ारून की तरफ़ भेजा–तो वह (लोग मूसा की निस्बत) कहने लगे कि (यह) जादूगर (और) झूटा-लपाटिया है ० ग़रज़ कि जब मूसा हमारी तरफ़ से (दीन) हक़ लेकर उन लोगों के पास आये, तो उन्होंने (अपने मातहतों को) हुक्म दिया कि जो लोग मूसा के साथ (ख़ुदा पर) ईमान ले आये हैं, उनके बेटों को तो क़त्ल कर डालो और उनमें से (जो) औरत-ज़ात (हों, उन) को ज़िन्दा रहने दो और काफ़िरों की तदबीरें तो (आख़िरकार सब) ग़लत ही हो जाती हैं० और फ़िर्औन ने (अपने दर्बारियों से) कहा कि मुझे मूसा को क़त्ल करने दो और वह अपने पर्वर्दिगार को (अपनी मदद के लिये) बुलाये। मुझको अन्देशा है कि (कहीं ऐसा न हो कि) तुम्हारे दीन को उलट-पुलट कर डाले, या मुल्क में फ़साद निकाल खड़ा करे ० और मूसा ने कहा–मैं तो अपने पर्वर्दिगार और तुम्हारे पर्वर्दिगार (यानी ख़ुदाए-वाहिद) की पनाह ले चुका हूं (और वह मुझको) हर एक मग़रूर (के शर) से (महफ़ूज़ रक्खेगा) जो रोज़-हिसाब (यानी क़यामत) को नहीं मानता ० और फ़िर्औन के लोगों में से एक मर्द ईमानदार था (और) अपने ईमान को छिपाता था-वह (यह माजरा सुनकर) बोला कि क्या तुम (सिर्फ़ इतनी बात पर) एक शख़्स के क़त्ल के दरपै हो कि वह ख़ुदा ही को अपना पर्वर्दिगार बताता है—

---

(जब) उन लोगों के पास (ख़ुदा के) प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर पैग़म्बर आये-जो उनके लिये भेजे गये थे, तो उन्होंने (उनके मानने से) अस्वीकार किया। अतः अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। निस्सन्देह वह (बड़ा) बलवान् और घोर-दण्ड देने वाला है। और (इसी प्रकार) हमने मूसा को अपने चिन्ह तथा प्रत्यक्ष-प्रमाण देकर फ़िर्औन व हामान व क़ारून की ओर भेजा, तो उन लोगों ने कहा कि (यह) जादूगर और असत्यवादी है। सो जब वह हमारी ओर से सत्य (धर्म) लेकर उन लोगों के पास आये, तो उन्होंने (परस्पर सलाह करके) कहा कि जो लोग मूसा के साथ ईमान लाये हैं, उनके पुत्रों को तो बध करदो और स्त्रियों को जीवित छोड़ दो। (उन लोगों ने यह चाल चली, किन्तु) काफ़िरों की चाल (कभी) सफल नहीं होती॥

और फ़िर्औन ने (अपने मंत्रियों से) कहा कि तुम मुझे मूसा को बध करने दो। और वह (यदि किसी पालनहारे का भक्त है, तो) अपने पालनहारे को (सहायता के निमित्त) बुलाये। मुझे डर है कि वह तुम लोगों का धर्म न बदल दे–वा देश में उपद्रव न फैला दे। और मूसा ने (यह सलाह सुनी, तो) कहा हर अहङ्कारी (को बुराई) से–जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता, ख़ुदा की शरण ले चुका हूं, जो मेरा और तुम्हारा (सबका) पालन कर्त्ता है॥

(फ़िर्औन का बध करने का इरादा जान करके) एक मनुष्य ने जो ईमान वाला था (और) फ़िर्औन (ही) के कुटुम्ब में से था (और) उसने अपना ईमान गुप्त रक्खा था–कहा कि क्या तुम लोग इस बात पर एक मनुष्य को बध करना चाहते हो, कि वह अल्लाह को अपना पालन कर्त्ता कहता है—

اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ وَاِنْ يَّكُ
كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا
يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ
الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْ
بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا
مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ وَقَالَ
الَّذِيْ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ
يَوْمِ الْاَحْزَابِ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ
وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ
ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
التَّنَادِ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
مِنْ عَاصِمٍ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ وَلَقَدْ

हालांकि वह तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास मोजिज़े लेकर भी आया है और अगर (बिलफ़र्ज़ यह शख़्स) झूटा भी हो, तो उसके झूट का वबाल उसी पर (पड़ेगा) और अगर सच्चा हुआ, तो जिस जिस (अज़ाब) का तुमसे वादा करता है, उनमें से कोई न कोई (तो) तुम पर (ज़रूर) आ नाज़िल होगा। बेशक जो शख़्स हद से बढ़ा हुआ (और) झूटा हो, ख़ुदा उसको (नेक) हिदायत नहीं दिया करता० भाइयो! आज तो तुम्हारी हुकूमत है (और) मुल्क में तुम्हारा ही बोल बाला है, लेकिन (ख़ुदा-नख़्वास्ता) अगर अज़ाब-ख़ुदा हमारे सामने आ मौजूद हुआ, तो फिर कौन है, जो हमारी मदद को खड़ा हो जायगा? फ़िर्औन ने कहा-मैं तो तुमको वही बात समझाता हूं, जो आप समझा हूं और वही राह दिखाता हूं, जो सीधी है० और वह शख़्स, जो (दर-पर्दा) ईमान ला चुका था-(लोगों से) लगा कहने कि भाइयो! मुझको तुम्हारी निस्बत (और) उम्मतों जैसे रोज़ (बद) का अन्देशा है ० (यानी कहीं तुम्हारा भी वैसा ही हाल न हो)-जैसा नूह की क़ौम और आद और समूद और उन लोगों का हाल (हुआ था) जो उनके बाद हुये और अल्लाह तो बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं करना चाहता ० और भाइयों! मुझको तुम्हारी निस्बत क़यामत के दिन का अन्देशा है ० जबकि तुम पीठ देकर भाग खड़े होगे-(उस दिन) तुमको (अज़ाब) ख़ुदा से कोई (भी) बचाने वाला न होगा और जिसको ख़ुदा गुमराह करे, तो उसका कोई भी हिदायत देने वाला नहीं ०—

और तुम्हारे पास अपने पालनहारे की ओर से मोजिज़े (चमत्कार) लेकर आया है। यदि (मान लो कि) वह झूठा है, तो उसक झूठ उसी पर पड़ेगा—(तुम्हारी कुछ हानि नहीं)। और यदि वह सच्चा है, तो जिन बातों की वह भविष्य-वाणी करता है, उनमें से कुछ तो अवश्य तुम्हें पहुंचेंगी। निस्सन्देह अल्लाह उसको राह नहीं दिखाता, जो (मर्यादा की) सीमा से बढ़ जाने वाला तथा असत्यवाद हो। (उसने यह भी कहा कि) हे लोगो! आज तुम्हारा ही शासन है। तुम भूमण्डल पर बलवान हो। अतः (जब हमही सबसे ब हैं, तो) हमारी सहायता कौन करेगा? यदि ख़ुदा का अज़ाब हम पर उतरा॥

फ़िर्औन ने (सभासदों की ओर सम्बोधन करके) कहा कि मैं तुमको वही सम्मति देता हूं, जो अपने विचार में उचि समझता हूं। और मैं तुमको वही बात बताता हूं, जिसमें पूर्ण भलाई है (अर्थात मूसा का बध)। और ईमान वाले मनुष्य ने कहा हे मनुष्यो! मुझे तुम्हारे विषय में अन्य जातियों की तरह अशुभ-दिन की आशंका है (और डर है कि तुम्हारी भी ऐसी ही दुर्दशा न ह जैसी दुर्दशा) नूह और आद और समूद की जाति की और उनके पश्चात आने वाले (काफ़िरों और न मानने वालों) की हो चुकी है और (यह उनके कर्मों का दंड था, अन्यथा) अल्लाह अपने बन्दों पर अन्याय नहीं करना चाहता॥

और हे लोगो! (इस सांसारिक अज़ाब के साथ ही) मुझे तुम्हारे सम्बन्ध में क़यामत के दिन (के अज़ाब) की आशं है, जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागने फिरोगे—(परन्तु) तुमको अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला कोई न होगा। और अल्ल जिसे पथ-भ्रष्ट करदे, उसे मार्ग बताने वाला कोई नहीं॥

جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ
شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُمْ بِهٖ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ
لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا كَذٰلِكَ
يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ۝ الَّذِيْنَ
يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ
كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ
جَبَّارٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا
لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ
فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا
وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ
عَنِ السَّبِيْلِ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۝
وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ

और ( इससे ) पहिले यूसुफ़ खुले-खुले अहकाम लेकर तुम्हारे पास आ चुके हैं, तो जो ( अहकाम ) वह तुम्हारे पास लेकर आये थे, तुम उनमें शक ही करते रहे। यहां तक कि जब उनका इन्तिक़ाल हो गया, तो तुम ( उनके मरे पीछे ) लगे कहने कि ( इसका झगड़ा तो ख़ुदा ने चुका दिया और अब ) इसके बाद ( भी ) अल्लाह कोई रसूल नहीं भेजेगा ० जो लोग ( हद्दे-एतिदाल से ) बढ़े हुये ( और ) शक में पड़े होते हैं, इसी तरह अल्लाह उनको गुमराह कर दिया करता है ० कि कोई सनद तो उनके पास आई नहीं होती और वह ख़ुदा की आयतों में झगड़े निकाल खड़े किया करते हैं। अल्लाह के नज़्दीक और ईमान वालों के नज़्दीक ( उनकी ) यह (हर्कत) बहुत ही ना पसन्द है। जितने मग़रूर ( और ) सर्कश हैं, अल्लाह उनके दिलों पर इसी तरह मुहर लगा दिया करता है ० और फ़िर्औन ने ( अपने वज़ीर हामान से ) कहा कि ऐ हामान! हमारे लिये एक महल बनवा, ताकि जो आस्मानों ( पर चढ़ने ) के रस्ते हैं, हम ( उन ) रस्तों पर जा (पहुंचें) फिर हम मूसा के ख़ुदा तक ( आसानी से ) पहुंच जाएँगे और हम तो मूसा को ( इस बयान में ) झूटा ही समझते हैं और इसी तरह फ़िर्औन की बद-किर्दारियाँ उसको भली कर दिखाई गई थीं और उसको राह ( रास्त ) से रोक दिया गया था और फ़िर्औन की तदबीरें ( तो ) बस ग़ारत-ग़ोल (होने वाली ही) थीं ० और वह शख़्स जो ( दर-पर्दा ) ईमान लाया था, लगा कहने कि भाइयो! मेरे कहे पर चलो। मैं तुमको (दीन का) सीधा रस्ता दिखा दूंगा ०—

---

और ( अपनी पुरानी कथाओं पर विचार करो कि ) इससे पहिले यूसुफ़ तुम्हारे पास मोजिज़े ( चमत्कार ) लेकर आये, परन्तु तुम सर्वदा उनके लाये हुये मोजिज़ों पर सन्देह ही करते रहे। यहाँ तक कि जब उनका देहान्त हो गया, तो तुमने कहा कि अब इनके पश्चात अल्लाह कोई पैग़म्बर नहीं भेजेगा ( और हमारा पीछा छुट गया। जैसी तुम्हारी दशा है ) अल्लाह उसी प्रकार उन लोगों को पथ-भ्रष्ट कर देता है, जो ( अपनी ) सीमा से बढ़ने वाले और ( ख़ुदा के आदेशों में ) सन्देह करने वाले हैं। जो अल्लाह की आयतों में बिना किसी प्रमाण के झगड़े निकालते हैं। ( यह बुद्धि-विरुद्ध वार्त्तालाप ) अल्लाह को और ईमानवालों को बहुत अप्रसन्न करने वाली है। ( तुम यह बातें इसलिये करते हो कि तुम्हारे हृदयों पर मुहर लगी हुई है। और ) अल्लाह इसी प्रकार उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है, जो अहंकारी तथा उद्दण्ड हैं॥

और फ़िर्औन ने ( अपने मन्त्री हामान से ) कहा कि हे हामान! मेरे लिये एक ( आकाश तक ऊँचा ) भवन बनवा, जिससे कि मैं मार्गों तक ( अर्थात ) आकाशों की ( ओर जाने वाले ) मार्गों तक पहुंच जाऊं ( और ) फिर मूसा के ख़ुदा को ( उस भवन से ) झांकूं और मैं तो उसे झूठा समझता हूं॥

इसी प्रकार ( दुर्भाग्य ने ) फ़िर्औन को उसके कर्मों की बुराई को अच्छा बनाकर दिखाया और उसे ( सीधे ) मार्ग से रोक दिया। और फ़िर्औन के उपायों को तो नष्ट ( भ्रष्ट ) होना ही था। और ( उस ) ईमान वाले मनुष्य ने कहा कि हे मनुष्यो! मेरी बात मानो। मैं तुमको सीधा मार्ग दिखाऊंगा—

الرَّشَادِ ۝ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ
وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِیَ دَارُ الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً
فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ
ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ
الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَيٰقَوْمِ
مَا لِیْۤ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَى النَّارِ ۝
تَدْعُوْنَنِیْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ
لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ۚ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۝ لَا
جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِی
الدُّنْيَا وَلَا فِی الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ
الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَاۤ
اَقُوْلُ لَكُمْ ۚ وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ
بِالْعِبَادِ ۝ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ

भाइयो ! यह दुनिया की ज़िन्दगी (तो) बस ( चन्द-रोज़ा ) फ़ायदे है और आख़िरत ( जो है, तो ) वही हमेशा रहने का घर है ० जो बुरे काम करता है, तो उसको वैसा ही बदला मिलेगा और जो नेक काम करता है, मर्द हो या औरत, मगर हो ईमानदार, तो यह लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे ( और ) वहां उनको बे-हिसाब रोज़ी मिलेगी ० और भाइयो ! मेरा भी अजीब माजरा है कि मैं तुमको नजात की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हो ० ( यानी ) तुम मुझको इसी लिये बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूं और उसके साथ उस चीज़ को शरीक करूं, जिस (के शरीक-ख़ुदाई होने) की मेरे पास कोई भी दलील नहीं और मैं तुमको उस ( ख़ुदा ) की तरफ़ बुलाता हूं, जो ज़बरदस्त (और गुनाहों का ) बख़्शने वाला है ० ( पस ) कुछ शक नहीं कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुझको बुलाते हो, वह न तो दुनिया ही में पुकारे जाने के क़ाबिल है और न आख़िरत में। और कुछ शक नहीं कि हम ( सब ) को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है और कुछ शक नहीं कि जो लोग (बन्दगी की) हद से बढ़े हुये हैं, वही दोज़ख़ी हैं ० सो आगे चल कर ( तुम मेरी बात को ) जो मैं तुमसे कहता हूं, याद करोगे और मैं तो अपना मामला ख़ुदा ( ही ) के सुपुर्द करता हूं। बेशक अल्लाह ( अपने ) बन्दों का निगरान-हाल है ० चुनांचे उस ( ईमानदार ) को तो अल्लाह ने फ़िऔंनियों की तदबीरों के शर से बचा लिया—

---

हे मनुष्यो ! ( देखो ! ) यह सांसारिक जीवन एक (साधारण) लाभ (की वस्तु) है और परलोक है ( तो ) वह सर्वदा रहने का घर है। ( देखो ! ) जिसने कुकर्म किये हैं, उसको उन्हीं का प्रतिफल मिलेगा। और जिन लोगों ने मनुष्य तथा स्त्री में से शुभ-कर्म किये और वह ईमान वाले भी हैं, तो यही लोग हैं-जो जन्नत में प्रवेश करेंगे। और वहां उनको बे-हिसाब जीविका मिलेगी ॥

और हे मनुष्यो ! यह क्या बात है कि मैं तुमको मुक्ति की ओर बुलाता हूं और तुम मुझे दोज़ख़ की ओर बुलाते हो । अर्थात तुम मुझसे यह चाहते हो कि मैं अल्लाह का अस्वीकार करदूं और उन वस्तुओं को उसका साझी ठहराऊँ, जिनके विषय में मुझे कुछ ज्ञान नहीं यद्यपि मैं तुम्हें उस ख़ुदा की ओर बुलाता हूं, जो बड़ा बलवान ( और पापों का ) क्षमा करने वाला है ॥

निस्सन्देह तुम मुझे जिस वस्तु ( अर्थात जिस पूज्य ) की ओर बुलाते हो, वह न तो दुनिया ही में पुकारे जाने के योग्य है और न परलोक में। और निस्सन्देह हम ( सब ) को अल्लाह की ओर लौटकर जाना है। और निश्चित रूप से जो लोग ( भक्ति की ) सीमा से बढ़ने वाले हैं, वह दोज़ख़ी हैं। अतः जो कुछ मैं तुमसे कहता हूं, शीघ्र उसको याद करोगे। और मैं तो अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूं। निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दों का रक्षक है । अतः अल्लाह ने उस ( ईमान वाले मनुष्य ) को फ़िऔंन वालों के छलों को बुराई से बचा लिया—

بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ
عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۣ
اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝ وَاِذْ
يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ
مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ
الْعِبَادِ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ
ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝
قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ قَالُوْا
بَلٰى ۭ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰۗؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ
ضَلٰلٍ ۝ اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝ يَوْمَ

और फ़िऔंनियों ( ही ) को ( उलटी ) बुरी सज़ा मिली ० ( यानी दोज़ख़ की ) आग कि सुबह व शाम उनको उसके सामने ला खड़ा किया जाता है और जिस दिन क़यामत बर्पा होगी-( उस दिन हम हुक्म देंगे कि) फ़िऔंनियों को सख़्त से सख़्त अज़ाब में ( लेजा ) दाख़िल करो ० और एक वक़्त ( होगा कि दोज़ख़ी ) एक दूसरे से दोज़ख़ में झगड़ेंगे, तो अदना दर्जे के लोग बड़े लोगों से कहेंगे कि हमतो तुम्हारे ताबे थे—तो ( अब ) तुम थोड़ीसी आग भी हम पर से हटा सकते हो ० बड़े लोग कहेंगे कि ( अब तो ) हम ( तुम ) सब इसी ( आग ) में ( पड़े ) हैं। अल्लाह ( को अपने ) बन्दों के बारे में ( जो कुछ ) हुक्म ( देना था, सो ) दे चुका ० और जो लोग दोज़ख़ में होंगे, वह दोज़ख़ के मुवक्किलों से दरख़्वास्त करेंगे कि ( तुम ही ) अपने पर्वर्दिगार से अर्ज़ करो कि ( भला ) किसी दिन ( तो ) हम ( पर ) से अज़ाब हलका कर दिया करे ० वह जवाब देंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल मोजिज़े ( ले ) लेकर नहीं आते रहे ? वह कहेंगे हां ! ( आते तो रहे। तब दोज़ख़ के मुवक्किल ) कहेंगे कि फिर तो तुम ( आपही ) अर्ज़-मारूज़ करलो ! और (उस दिन) काफ़िरों का अर्ज़-मारूज़ करना महज़ रायगाँ होगा ० हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की मदद करते हैं और उस दिन ( भी मदद करेंगे ) जबकि गवाह ( यानी पैग़म्बर और फ़रिश्ते मुन्किरों के मुक़ाबले में गवाही देने ) खड़े होंगे ० जिस दिन—

---

और फ़िऔंन वालों ही को बुरे अज़ाब ने आ घेरा। अर्थात ( दोज़ख़ की ) अग्नि कि सुबह-शाम उसके समक्ष खड़े किये जाते हैं। और जिस दिन क़यामत आवेगी ( उस दिन हम आज्ञा देंगे कि ) फ़िऔंन वालों को कठिन से कठिन अज़ाब में प्रवेश करो-(अर्थात दोज़ख़ के सबसे निकृष्ट स्थान में रक्खो ) । और जब ( यह दोज़ख़ी ) दोज़ख़ में परस्पर झगड़ेंगे, तो दुर्बल उन लोगों से जिनको अपनी शक्ति पर घमंड था- कहेंगे कि हम तो तुम्हारे अनुगामी थे। अतः क्या तुम हमसे थोड़ी सी अग्नि हटा सकते हो ? ( इसके उत्तर में ) अहङ्कारी कहेंगे कि हम ( तुम ) सब ( आज ) दोज़ख़ में हैं। अल्लाह ( को ) अपने बन्दों के सम्बन्ध में ( जो ) निर्णय ( करना था, वह ) कर चुका ॥

और दोज़ख़ी दोज़ख़ के द्वारपालों से कहेंगे कि अपने पालनहारे से प्रार्थना करो कि किसी दिन तो हम पर अज़ाब में कमी की जाय। वह उत्तर देंगे- क्या तुम्हारे पास तुम्हारी शिक्षा के लिये पैग़म्बर ( ख़ुदा के ) आदेश लेकर नहीं आये थे ? ( दोज़ख़ी ) कहेंगे—हाँ (आये तो थे। यह सुनकर द्वारपाल ) कहेंगे अच्छा तो फिर ( आप ही ) कह-सुन लो। और ( उस दिन ) काफ़िरों का कहना-सुनना बिल्कुल व्यर्थ होगा ॥

निस्सन्देह हम अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की सांसारिक जीवन में सहायता करते हैं। और ( उस दिन भी सहायता करेंगे) जिस दिन गवाह ( अर्थात फ़रिश्ते गवाही देने ) खड़े होंगे। जिस दिन कि—

لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ
سُوْٓءُ الدَّارِ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا
بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ الْكِتٰبَ ۝ هُدًى وَّذِكْرٰى
لِاُولِی الْاَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِیِّ
وَالْاِبْكَارِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِیْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ
بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ اِنْ فِیْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ
مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْبَصِيْرُ ۝ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ
مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا يَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِیْٓءُ قَلِيْلًا
مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ

فِيْهَا

नाफ़र्मानों को उनकी माज़रत ( कुछ भी ) नफ़ा न देगी और उन पर ( खुदा की ) फिटकार होगी और उनको ( बहुत ही ) बुरा घर ( रहने को ) मिलेगा ० और हमही ने मूसा को हिदायत ( नामा यानी तौरात ) दी और बनी इस्राईल को ( उस ) किताब का वारिस बनाया ० ( जिसमें ) अक़्ल-मन्दों के लिये हिदायत और नसीहत है ० (तो ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों की ईज़ा-दिही पर ) सब्र करो। बेशक खुदा का वादा बरहक़ है और ( खुदा से ) अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते रहो और सुबह व शाम अपने पर्वर्दिगार की तारीफ़ के साथ ( उसकी ) तस्बीह ( व तक़्दीस ) करते रहो ० जिन लोगों के पास ( खुदा की तरफ़ से ) कोई सनद तो आई नहीं और ( नाहक़ ना-रवा) खुदा की आयतों में झगड़े निकालते हैं, उनके दिलों में तो बस बड़ाई ( की एक ऐसी बेजा हविस समाई ) है कि वह ( अपनी ) इस ( मुराद ) को कभी पहुंचने वाले नहीं—तो ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों की शरारतों से ) खुदा की पनाह मांगते रहो। बेशक वह ( सबकी ) सुनता ( और सब कुछ ) देखता है ० आसमानों को और ज़मीन को पैदा करना आदमियों के ( दुबारा ) पैदा करने के मुक़ाबले में अलबत्ता बड़ा ( काम ) है, मगर अक्सर लोग ( इतनी बात भी ) नहीं समझते ० और अन्धा और आंखों वाला बराबर नहीं ( हो सकता ) और ( इसी तरह ) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये—( वह ) और बदकार (बराबर नहीं हो सकते, मगर) तुम लोग ( बहुत ही ) कम ग़ौर करते हो ० क़यामत तो ज़रूर आनी है ; उसमें किसी तरह का शक नहीं—

---

उद्दण्ड लोगों को उनके पश्चाताप की प्रार्थना ( कुछ ) लाभ न देगी और उनपर ( खुदा की ) लानत होगी। और उनके लिये ( तो ) परलोक की (बड़ी) ख़राबियाँ हैं। और हमने मूसा को हिदायत (अर्थात पुस्तक) प्रदान की। और इस्राईल के वंशजों को उस पुस्तक का जो बुद्धिमानों के लिये हिदायत तथा शिक्षा ( से परिपूर्ण ) है, उत्तराधिकारी बनाया-( परन्तु इसके होते हुये भी वह कुफ़्र, शिर्क में लिप्त हुये ) ॥

सो आप ( हे पैग़म्बर ! इन काफ़िरों के कर्मों तथा वचनों पर ) सन्तोष कीजिये। निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। और अपनी ग़लती के लिये क्षमा मांगिये। और अपने पालनहारे की सुबह-शाम प्रशंसा के साथ पवित्रता वर्णन करते रहिये। जो लोग अल्लाह की आयतों में बिना किसी प्रमाण के झगड़े निकालते हैं-( उसका कारण ) इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि उनके दिलों में बड़ाई ( की अभिलाषा समा गई ) है, जो उनको प्राप्त नहीं हो सकती। अतः आप ( उनकी बुराई से ) अल्लाह की शरण माँगते रहिये। निस्सन्देह वह ( सब कुछ ) सुनने वाला ( और सब कुछ ) देखने वाला है ॥

( इन काफ़िरों को अपने दुबारा पैदा किये जाने पर आश्चर्य है—यद्यपि ) आकाश तथा भूमि का पैदा करना लोगों के ( दुबारा ) पैदा करने से (बहुत) बड़ा काम है-परन्तु बहुत से लोग ( इतना भी) नहीं जानते। और ( किस प्रकार जान सकते हैं, जबकि ) अन्धा और डिठियारा समान नहीं। और ( इसी प्रकार ) ईमान वाले तथा सुकर्मी और कुकर्मी ( समान नहीं हो सकते, किन्तु ) तुम लोग बहुत कम सोच-विचार करते हो। ( इसी सोच विचार न करने का परिणाम है कि ) अवश्य क़यामत आने वाली है। उस ( के आने ) में किसी प्रकार का सन्देह नहीं—

فِيهَا وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَقَالَ رَبُّكُمُ
ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ
عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝
اللّٰهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللّٰهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ
وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝ ذٰلِكُمُ
اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ
فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ ۝ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا
بِآيَاتِ اللّٰهِ يَجْحَدُونَ ۝ اللّٰهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ
الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ
فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَتَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝
هُوَ الْحَيُّ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ

٤

मगर अक्सर लोग ( उसका ) यक़ीन नहीं करते ० और ( लोगो ! ) तुम्हारा पर्वर्दिगार फ़र्माता है कि हमसे दुआयें मांगते रहो, हम तुम्हारी ( दुआ ) क़बूल करेंगे। जो लोग (मारे गुरूर के) हमारी इबादत से सर्ताबी करते हैं, अन्क़रीब ( मरे पीछे ज़लील व ) ख़्वार होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे ० ( लोगो ! ) अल्लाह वह ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई, ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन ( बनाया ) ताकि ( अपनी रोशनी में तुमको सब चीज़ें ) दिखाये। बेशक अल्लाह तो लोगों पर ( बड़ा ही ) मेहर्बान है, लेकिन अक्सर लोग ( उसका ) शुक्र नहीं करते ० ( लोगो ! ) यही अल्लाह तो तुम्हारा पर्वर्दिगार है। कुल चीज़ों का पैदा करने वाला। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो ० जो लोग ख़ुदा की आयतों का इन्कार रखते हैं, वह इसी तरह बहकते रहते हैं ० अल्लाह वह ( क़ादिर-मुतलक़) है, जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया, और उसीने तुम्हारी सूरतें बनाईं और सूरतें ( भी ) बनाईं-(तो) अच्छी, और उम्दा-उम्दा चीज़ें तुम्हें ( खाने को ) दीं। यही अल्लाह तो तुम्हारा पर्वर्दिगार है, सो अल्लाह ( की ज़ात बड़ी ) बा-बरकत है (कि वह) तमाम जहान का पालनेवाला (है) ० वही (हमेशा) ज़िन्दा है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। तो ख़ालिस उसीकी फ़र्माबर्दारी मद्दे-नज़र रखकर उसी की इबादत करो—

परन्तु बहुत से लोग ( इसका ) विश्वास नहीं करते। और ( आप उनसे कहिये कि ) तुम्हारे पालन कर्त्ता ने कह दिया है कि तुम मुझसे प्रार्थना करते रहो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूंगा। हां ! जो लोग अहंकार करके मेरी उपासना से मुंह मोड़ते हैं, वह शीघ्र अपमानित होकर दोज़ख़ में प्रवेश करेंगे-( अतः उसकी उपासना से मुंह न मोड़ो । और देखो ! कि ) अल्लाह ( ऐसा सर्व शक्तिमान ) है, जिसने तुम्हारे लिये रात्रि बनाई—जिससे कि तुम उस ( की अंधेरियों ) में विश्राम करो। और दिन ( उत्पन्न किया, जिससे कि उसके ) प्रकाश ( में तुमको प्रत्येक वस्तु ) दिखाई दे। निस्सन्देह लोगों पर अल्लाह की बड़ी कृपा तथा अनुकम्पा है—परन्तु बहुत से ( लोग उसकी ) कृतज्ञता नहीं प्रकाश करते ॥

यही अल्लाह तुम्हारा पालन कर्त्ता है। हर पदार्थ का उत्पन्न करने वाला है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। सो ( उसे छोड़कर ) तुम कहां भटके जा रहे हो। जो लोग अल्लाह की आयतों को नहीं मानते, वह इसी प्रकार भटकते रहते हैं। अल्लाह वह ( सर्व शक्तिमान ) है, जिसने तुम्हारे लिये पृथ्वी को ठहरने का स्थान और आकाश को छत ( की तरह ) बनाया। उसीने तुम्हारी सूरतें बनाईं और सूरतों को रूप दिया। और उत्तम २ पदार्थ तुम्हें खाने को दिये ॥

यही अल्लाह तुम्हारा पालन कर्त्ता है। अल्लाह ( बड़ी ) बरकत वाला है। वह सर्व जगों का पालनहारा है। वह अमर है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। अतः तुम उसकी उपासना केवल उसी के लिये करो—

لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ
اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا
جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ
ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ
طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا
شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا
اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ
يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ
كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ
فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۣ فَسَوْفَ
يَعْلَمُوْنَ ۝ اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ

يُسْحَبُوْنَ

सब तारीफ़ें ख़ुदा ही को (सज़ावार) हैं, जो सारे जहान का पालने वाला है ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि जब मेरे पास मेरे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (साफ़ और वाज़ेह) दलीलें आ चुकी हैं, तो मुझ को उन (माबूदों) की परस्तिश की मनाही है, जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो और मुझको हुक्म हुआ है कि (अल्लाह) रब्बुल्‌-आलमीन का फ़र्मांबर्दार होकर रहूं ० (लोगो!) वह (ख़ुद ही तो) है, जिसने तुमको (अव्वल बार) मिट्टी से पैदा किया, फिर नुतफ़े से, फिर लोथड़े से, फिर तुमको बच्चा सा (मां के पेट से) निकालता है। फिर (तुमको ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंचो। फिर (तुमको और ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम बूढ़े हो जावो और तुममें से कोई (इन वक़्तों से) पहिले (भी) मर जाता है और (जिनको जवानी या बुढ़ापे तक ज़िन्दा रक्खा जाता है, तो) इस ग़रज़ से (ज़िन्दा रक्खा जाता है) कि तुम (लोग मौत के) वक़्त मुक़र्रर तक पहुंचो और मक़्सूद (असली) यह है कि (इन आसार-क़ुद्रत को) समझो० वही है, जो जिलाता और मारता है। फिर जब वह किसी काम का करना ठान लेता है, तो बस उसे कह देता है कि हो! और वह हो जाता है० (ऐ पैग़म्बर!) क्या तुमने इन लोगों (के हाल) पर नज़र नहीं की, जो ख़ुदा की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं। किधर को बहके चले जा रहे हैं ० (यह) वह लोग (हैं)–जो (इस) किताब (यानी क़ुर्आन) को झुटलाते हैं और उन (किताबों और सहीफ़ों) को (भी झुटलाते हैं)—जो हमने अपने (दूसरे) पैग़म्बरों की मार्फ़त भेजे हैं। सो आख़िरकार इनको (इस झुटलाने का नतीजा) मालूम हो जायगा ० जबकि तौक़ इनकी गर्दनों में होंगे और (तौक़ों के अलावा) ज़न्जीरें—

---

समस्त प्रशंसायें अल्लाह को योग्य हैं, जो सर्व जगों का पालनहारा है। (हे पैग़म्बर! आप इन मुश्रिकों से) कहिये कि मुझे उन (बनावटी पूज्यों) की पूजा से रोका गया है, जिनको तुम ख़ुदा के अतिरिक्त पूजते हो। (मैं ऐसा किस प्रकार कर सकता हूं)—जबकि मेरे पालन कर्त्ता की ओर से प्रत्यक्ष-प्रमाण आ चुके हैं। और मुझे आज्ञा दी गई है कि मैं उसके समक्ष सिर झुकाऊँ, जो सर्व जगों का पालनहारा है॥

वह ऐसा (सृष्टि कर्त्ता बलवान) है, जिसने तुमको मिट्टी से, पुनः वीर्य्य से, पुनः बँधे हुये रक्त से उत्पन्न किया। पुनः वह तुमको बालक की आकृति में माता के उदर से निकालता है। पुनः तुमको (जीवन प्रदान करता है)—जिससे कि तुम युवावस्था को पहुंचो। और उसके अनन्तर (भी जीवित रखता है)—जिससे कि तुम वृद्ध हो जाओ। और तुममें से ऐसे भी हैं, जिनको युवावस्था और वृद्धावस्था तक पहुंचने से पहिले ही उठा लिया जाता है। और (ऐसे भी हैं, जो युवावस्था तथा वृद्धावस्था पर्यन्त पहुंचते हैं)—जिससे कि वह एक नियत समय पर्यन्त पहुंच जायँ। और (मुख्य प्रयोजन यह है) कि तुम (इन ख़ुदा के भेदों को) समझो। वह ऐसा (शक्तिशाली तथा बलवन्त) है कि जीवित करता है और मृत्यु देता है। अतः जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है, तो इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि उससे कह देता है कि हो जा! और वह हो जाता है॥

क्या आप ने उन लोगों को नहीं देखा, जो (इन ख़ुदा के स्पष्ट चिन्हों के देखते हुये भी) अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं—(इन्हें ज्ञान नहीं कि) वह कहां भटके जा रहे हैं। यह वह लोग हैं, जो इस पुस्तक (अर्थात् क़ुर्आन) को और उन आदेशों को जो हमने अपने पैग़म्बरों के द्वारा भेजे—झुठलाते हैं। सो शीघ्र यह जान लेंगे (कि इसका परिणाम क्या हुआ)—जिस समय उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और ज़न्जीरें (भी)—

يُسْحَبُونَ ۝ فِي الْحَمِيمِ ۝ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝
ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۝ مِنْ
دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا
مِنْ قَبْلُ شَيْئًا كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ۝
ذَٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ۝ ادْخُلُوا أَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝
فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ
الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَنْ
قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ
وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ

( पानी पिलाने के लिये ) घसीटते हुये इनको भुलस्ते पानी में ले जाएँगे। फिर आग में झोंके जाएँगे ० फिर इनसे पूछा जायगा कि खुदा के सिवा तुम जिन ( माबूदों ) को शरीक ( खुदाई ) ठहराते थे—( अब ) वह कहां हैं ० वह कहेंगे ( अब तो वह ) हमसे खोए गये ( कि कहीं नज़र नहीं आते )—बल्कि ( अस्ल बात तो यह है कि ) हम तो ( इससे ) पहिले ( खुदा के सिवा ) किसी (और) चीज़ की परस्तिश करते ही न थे। अल्लाह काफ़िरों को इसी तरह बद-हवास कर देगा ० ( कि उनको जवाब का कोई रस्ता न सूझ पड़ेगा और उनसे कहा जायगा कि ) यह तुम्हारी उन बातों की सज़ा है कि तुम ( रूए ) ज़मीन पर नाहक़ की खुशियां मनाया करते थे और ( नीज़ ) उसकी सज़ा है कि तुम इतराया करते थे ० ( तो अब ) जहन्नम के दर्वाज़ों ( से दोज़ख ) में दाखिल हो ( और ) हमेशा ( हमेशा को ) इसी में रहो। ग़रज़ तकब्बुर करने वालों का ( भी क्या ही ) बुरा ठिकाना है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) सब्र से बैठे रहो। बेशक खुदा का वादा बरहक़ है। तो ( अज़ाब के जैसे ) जैसे वादे हम इन लोगों से करते हैं—( उनमें से ) कुछ तुमको दिखायें या ( उन वादों के वाक़े होने से पहिले ) तुमको (दुनिया से) उठा लें—(बहर-कैफ़) इनको तो हमारी तरफ़ लौटकर आना ही है ० और हमने तुमसे पहिले ( भी कितने ) रसूल भेजे ( सो ) उनमें (बाज़) ऐसे हैं, जिनके हालात हमने तुमको सुनाए और उनमें से ( बाज़ ) ऐसे हैं, जिनके हालात हमने तुमको नहीं सुनाये और किसी रसूल की मजाल न थी कि बे-इज़्न-खुदा कोई मोजिज़ा ला दिखाये। फिर जब हुक्म-खुदा ( यानी अज़ाब ) मौजूद हुआ, तो इन्साफ़ के साथ ( उम्मतों और पैग़म्बरों में ) फ़ैसला कर दिया गया और जो लोग बर-सरे ग़लत थे, उस वक़्त (वही ) घाटे में रहे ०—

---

उनको घसीटते हुये खौलते पानी में ले जावेंगे। पुनः वह अग्नि में झोंक दिये जावेंगे। पुनः उनसे कहा जायगा कि वह ( पूज्य ) कहाँ हैं, जिनको तुम ( खुदा होने में ) अल्लाह के अतिरिक्त साझी ठहराते थे। (उत्तर में ) कहेंगे कि वह हमसे खोये गये, बरन ( सत्य बात यह है कि ) हम ( खुदा के अतिरिक्त ) किसी और वस्तु की उपासना करते हो न थे। अल्लाह इसी प्रकार काफ़िरों को पथ-भ्रष्ट कर देता है (कि उनसे किसी बात का ठीक उत्तर देते नहीं बन पड़ता ) ॥

( उनसे कहा जायगा कि ) यह ( अज़ाब ) इस कारण है कि तुम संसार में व्यर्थ प्रसन्न होते फिरते थे। और इस कारण है कि तुम इतराते थे ( और अहङ्कार करते थे। अब ) तुम सर्वदा रहने के लिये दोज़ख के द्वारों में प्रवेश करो। ( और दोज़ख ) अहङ्कारियों के लिये क्या ही बुरा स्थान है। अतः आप सन्तोष कीजिये। निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। हमने उन लोगों के सम्बन्ध में जिस ( अज़ाब ) का वादा किया है, उसमें से कुछ आपको ( इसी संसार में ) दिखा दें, अथवा ( अज़ाब आने से पहिले ) हम आपको उठालें। सो इन ( सब ) को हमारे पास ही लौट कर आना है ॥

और हमने आप से पहिले ( दुनिया में ) पैग़म्बर भेजे हैं। उनमें कुछ ऐसे हैं, जिनका वृतान्त हमने आप से वर्णन किया है और कुछ ऐसे हैं, जिनका वृतान्त हमने आप से वर्णन नहीं किया है। और ( उनमें से ) किसी पैग़म्बर को यह शक्ति न थी कि खुदा की आज्ञा के बिना कोई मोजिज़ा ( अपने आप ) उपस्थित करदे। अतः जब अल्लाह का आदेश ( अर्थात अज़ाब ) आया, तो सचाई के साथ (काफ़िरों और पैग़म्बरों में ) निर्णय कर दिया गया। और उस समय घाटे में वही रहे, जो झूठे थे ॥

(लोगो!) अल्लाह ऐसा (क़ादिर-मुत्लक़) है, जिसने तुम्हारे वास्ते चौपाये बनाये हैं, ताकि उन (में बाज़) से सवारी लो और (बाज़) उन (में) से (ऐसे हैं कि तुम उनका गोश्त) खाते हो ० और तुम्हारे लिये चारपायों में (और भी चन्द दर चन्द) फ़ायदे हैं और (चारपायों के बनाने से एक) ग़रज़ यह (भी है) कि तुम उन पर (चढ़कर) अपने दिली-मक़्सद को पहुंचो और चारपायों और (नीज़) किश्तियों पर तुम (लोग लदे) लदे फिरते हो ० और (ख़ुदा) तुमको अपनी (क़ुद्रत की बेशुमार) निशानियां दिखाता है—तो ख़ुदा की (क़ुद्रत की) कौन कौन सी निशानियों से इन्कार करोगे ० क्या यह लोग मुल्क में नहीं चले फिरे और (उन्होंने इस बात पर) नज़र नहीं की कि जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उनका कैसा अन्जाम हुआ। वह इनसे (शुमार में) कहीं ज़ियादा थे और (क्या) बल-बूते के एतिबार से और (क्या उन) आसार के एतिबार से, जो (वह लोग रूए) ज़मीन पर (छोड़ गये) हैं—(इनसे) कहीं बढ़ चढ़ कर थे—तो उनकी (दुनिया की) कमाई उनके कुछ भी काम न आई ० और जब उनके रसूल उनके पास खुली हुई दलीलें लेकर आये, तो यह लोग अपनी लियाक़त-इल्मी पर बड़े नाज़ां हुये और जिस (अज़ाब) की हँसी उड़ाते थे, वह इनही पर उलट पड़ा ० फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब (आता) देखा, तो लगे कहने कि (अब) हम ख़ुदाए-वाहिद पर ईमान लाये और जिन चीज़ों को हम शरीक (ख़ुदाई) ठहराते थे—(अब) हम उनको नहीं मानते, मगर जब उन्होंने हमारे अज़ाब को (आते) देख लिया, तो (उस वक़्त उनका) ईमान लाना उनको कुछ भी फ़ायदे-मन्द न हुआ—

الْمُبْطِلُونَ۝ اللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ
لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا
مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِىْ صُدُوْرِكُمْ
وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ۝ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ
فَاَىَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى
الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ
قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ
وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ۝ فَلَمَّا
رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا
بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ۝ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ

(इन न मानने वालों को उपदेश दीजिये और उनसे कहिये कि) अल्लाह (ऐसा करुणाकारी) है कि उसने तुम्हारे लिये पशु उत्पन्न किये, जिससे कि उनमें से कुछ को तुम सवारी के काम में लाओ। और कुछ उनमें से ऐसे हैं, जिनका मांस तुम खाते हो। और उ के बीच तुम्हारे लिये और भी लाभ हैं और (यह प्रयोजन भी है) कि तुम उन पर चढ़ कर अपनी मनेच्छाओं (पर्यटन, यात्रा) को प्रा करो। और तुम इन पशुओं पर और नावों पर चढ़े फिरते ही हो ॥

और अल्लाह तुमको (यह) अपने चिन्ह दिखाता है। अतः तुम अल्लाह के किस किस चिन्ह का अस्वीकार करोगे। अच्छा तं क्या उन लोगों को (अर्थात अल्लाह के चिन्हों के न मानने वालों को) दुनिया में चलने फिरने का अवसर नहीं पड़ा (और यदि पड़ा तो उन्होंने इस बात पर दृष्टि नहीं की कि उन लोगों का परिणाम क्या हुआ, जो उनसे पहिले थे। वह संख्या में उनसे बहुत अधिक और शक्ति की दृष्टि से और उन चिन्हों की दृष्टि से, जो भूमण्डल पर छोड़ गये-उनसे कहीं बढ़ चढ़ कर थे। यह सब कुछ था, परन् (समय पर) उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई ॥

अतः जब उनके पास पैग़म्बर (जो उनकी शिक्षा के लिये भेजे गये थे) प्रत्यक्ष-प्रमाण लेकर आये, तो अपने (अल्प) ज्ञान प उनको बहुत घमंड हुआ और (अन्त में) उस (अज़ाब) ने उनको घेर लिया, जिसकी वह हंसी उड़ाते थे। सो जब उन्होंने हमारा अज़ा देख लिया (तो) पुकारे कि हम एक ख़ुदा पर ईमान ले आये। और जिन (पूज्यों) को हम (ख़ुदा का) साझी ठहराते थे, उनका ह अस्वीकार करते हैं-परन्तु जब उन्होंने हमारे अज़ाब को देख लिया, तो उनका ईमान लाना उनके लिये कुछ लाभ-दायक न हुआ—

لما راوا باسنا سنت الله التي قد خلت في
عباده وخسر هنالك الكفرون ۝

سورة فصلت مكية وهي اربع وخمسون اية

بسم الله الرحمن الرحيم
حم ۝ تنزيل من الرحمن الرحيم ۝ كتب
فصلت ايته قرانا عربيا لقوم يعلمون ۝
بشيرا ونذيرا فاعرض اكثرهم فهم
لا يسمعون ۝ وقالوا قلوبنا في اكنة
مما تدعونا اليه وفي اذاننا وقر ومن
بيننا وبينك حجاب فاعمل اننا عملون ۝
قل انما انا بشر مثلكم يوحى الي انما الهكم
اله واحد فاستقيموا اليه واستغفروه
وويل للمشركين ۝ الذين لا يؤتون

( यह ) दस्तूर-इलाही ( है )—जो ( सदा से ) उसके बन्दों में जारी रहा है और ( जो लोग ) मुन्किर ( थे ) नुज़ूल-अज़ाब के वक़् ( वही ) घाटे में रहे ०

## सूरत– हामीम सज्दह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५४ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)० हा-मीम् ० (यह फ़र्मान खुदाए) रह्मान ( व ) रहीम ( के हुज़ूर ) से सादिर होता है ० यह कुर्आन किताब है, जिसकी बातें ज़बान-अरबी में समझदार लोगों के लिये तफ़सील के साथ बयान करदी गई हैं ० ( मानने वालों को ख़ुश-नूदिये खुदा की) खुश-ख़बरी सुनाता और (मुन्किरों को अज़ाब-खुदा से ) डराता है। इस पर ( भी ) इनमें से अक्सरों ने मुंह मोड़ लिया और वह ( इसको ) सुनते ही नहीं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! यह लोग यह भी ) कहते हैं कि जिस बात की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो, हमारे दिल तो उससे परदों में हैं ( कि तुम्हारी बात दिल को नहीं लगती ) और हमारे कानों में ( एक तरह की ) गरानी है ( कि तुम जो कहते हो, सुनाई नहीं देता ) और हममें और तुममें ( एक तरह का ) पर्दा ( हाइल ) है ( कि तुम हम पर किसी तरह का असर नहीं डाल सकते ) तो ( इससे बेहतर है कि ) तुम ( अपने तौर पर ) अमल किये जावो, हम ( अपने तौर पर ) अमल कर रहे हैं ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो कि मैं ( भी ) तुम ही जैसा बशर हूं-( मगर ) मुझ पर वही आती है कि तुम्हारा माबूद बस ( वही ) एक माबूद है। पस सीधे उसी की तरफ़ ( मुंह किये ) चले जावो और उससे ( अपने गुनाहों की ) माफ़ी मांगो और शिर्क करने वालों पर अफ़सोस ० जो ज़कात नहीं देते—

---

यह ख़ुदा का व्यवहार है, जो ( सर्वदा से ) उसके बन्दों में ( प्रचलित ) है। और इस स्थान पर ( अज़ाब के समय ) काफ़िर ही घाटे में रहे ॥

## सूरत–हामीम सज्दह

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ५४ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥

करुणा-निधान कृपालु (ख़ुदा) की ओर से उतारी हुई यह एक पुस्तक है, जिसकी आयतें स्पष्ट-रूप से वर्णन की गई हैं। (अर्थात) अरबी ( भाषा में ) कुर्आन है-( जो लाभ-प्रद है )। बुद्धिमानों को मंगल-समाचार सुनाने वाला है और ( अज़ाब से ) डराने वाला है। ( इसके होते हुये भी काफ़िरों में से ) बहु-जनों ने मुंह मोड़ा। अतः वह सुनते ( भी ) नहीं ॥

और कहते हैं कि जिस वस्तु की ओर तुम हमें बुलाते हो, उसकी ओर से हमारे हृदयों पर पर्दे पड़े हैं। ( अर्थात तुम्हारी बातें हमारे दिलों में नहीं समातीं )। और हमारे कानों में एक प्रकार का बोझ है-( जिसके कारण कुछ सुनाई नहीं देता )। और हमारे तुम्हारे बीच में एक आड़ ( विद्यमान ) है-( जिसके कारण हम तुम सहमत नहीं हो सकते )। सो ( बहुत अच्छा ! ) तुम ( अपनी रीति पर ) कर्म किये जाओ, हम ( अपनी रीति पर ) कर्म करने वाले हैं ॥

( हे पैग़म्बर ! आप उनसे ) कहिये कि ( मेरे तुम्हारे बीच आड़ होने का कोई कारण नहीं )। मैं ( भी ) तुमही जैसा एक मनुष्य हूं। ( हां ! ) मुझ पर वही उतरती है कि तुम्हारा पूज्य वही एक पूज्य है। सो (तुम उस पर ईमान लाओ और) उसीकी ओर मुंह कर लो। और उससे ( अपने पापों की ) क्षमा चाहो। और उन मुश्रिकों के लिये बड़ी ख़राबी है, जो ज़कात नहीं देते—

الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝
قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ
فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۭ ذٰلِكَ رَبُّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ
فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ
اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۭ سَوَاۗءً لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝ ثُمَّ اسْتَوٰٓى
اِلَى السَّمَاۗءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ
ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۭ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَاۗىِٕعِيْنَ ۝
فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى
فِيْ كُلِّ سَمَاۗءٍ اَمْرَهَا ۭ وَزَيَّنَّا السَّمَاۗءَ الدُّنْيَا
بِمَصَابِيْحَ ڰ وَحِفْظًا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝
فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ

और वह आख़िरत के भी मुन्किर हैं ० अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, उनके लिये ( आख़िरत में ) बड़ा अज्र है, जो ( कभी ) मौक़ूफ़ होने वाला नहीं ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो, क्या तुम उस ( क़ादिर-मुतलक़ की ख़ुदाई ) से इन्कार करते हो, जिसने दो दिन में ज़मीन को पैदा किया और तुम ( दूसरों को ) उसका हमसर बनाते हो। यही ( ख़ुदा तो ) सारे जहान का पर्वर्दिगार है ० और उसीने ज़मीन में उसके ऊपर से ( भारी बोझल ) पहाड़ गाड़ दिये और उसमें ( हर तरह की ) बरकत दी और उसीमें उसकी पैदावार का अन्दाज़ा भी ठहरा दिया ( और यह सब कुछ ) चार दिन में—( सब ) माँगने वालों के लिये बराबर ० फिर आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और वह ( उस वक़्त तक ) कुहर ( की तरह का ) था । तो उस ( कुहर ) को और ज़मीन को हुक्म दिया कि तुम दोनों आवो, ख़ुशी से आओ तो और ज़बरदस्ती आओ, तो ( और जो हुक्म हम देते हैं, उस पर कारबन्द रहो ! ) दोनों ने अर्ज़ किया कि हम ख़ुशी से ( हुक्म बजालाने को ) हाज़िर हैं ० इसके बाद दो दिन में उस ( कुहर के तबक़ात ) के सात आसमान बनाये और हर एक आसमान में ( जो इन्तिज़ाम ख़ुदा को करना मन्ज़ूर था, वह ) इन्तिज़ाम ( कार-कुनान क़ज़ा व क़द्र को ) बता दिया और वरले आसमान को हमने ( सितारों की ) क़न्दीलों से सजाया और ( सजाने के अलावा ) हिफ़ाज़त के लिये भी यह (अन्दाज़े) उस (ख़ुदा) के बांधे हुये हैं, जो ज़बरदस्त (और) दाना है० पस अगर ( इतने समझाने पर भी कुफ़्फ़ार-मक्का ) सर्ताबी करें, तो ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इनसे ) कहदो कि जैसी कड़क आद और समूद पर हुई थी, उसी तरह की कड़क से मैं तुमको भी डराता हूं ०—

---

और वह परलोक का ( भी ) अस्वीकार करते हैं। ( हां ! ) जो लोग ईमान वाले और सुकर्मी हैं, उनके लिये ( परलोक में ) ऐसा फल है, जिसका ( कभी ) अन्त न होगा। ( उनसे ) कहिये कि क्या तुम उस ( सृष्टि कर्ता ) का अस्वीकार करते हो, जिसने पृथ्वी को दो दिन में उत्पन्न किया। और क्या तुम ( दूसरों को ) उसकी समानता का ठहराते हो। वही तो सर्व जगों का पालनहारा है ॥

और ( वह ऐसा सर्व शक्तिमान है कि ) उसने पृथ्वी के ऊपर पर्वत उत्पन्न किये और उसको ( हर प्रकार की ) बरकत दी और उसकी पैदावार का अनुमान नियत किया। ( यह सब कुछ ) चार दिन में ( हुआ, जो गिनती में ) पूरे ( चार दिन ) हैं, पूछने वालों के लिये। पुनः उसने आकाश की ओर ध्यान दिया। और वह (उस समय) धुवां (के समान) था। सो उससे और पृथ्वी से कहा कि तुम दोनों आओ ! चाहे प्रसन्नता से, चाहे अप्रसन्नता से ( और हमारी आज्ञा पालन करो )। दोनों ने निवेदन किया कि हम प्रसन्नता-पूर्वक विद्यमान हैं। सो उस धुवें ( की तहों ) से दो दिन में सात आकाश बनाये। और प्रत्येक आकाश में ( कर्म-चारियों को ) उस ( के नियत प्रबन्धों ) का काम बता दिया ॥

और हमने दुनिया के आकाश को दीपकों ( अर्थात तारागणों ) से शोभित किया। और ( उसकी ) रक्षा की ( कि न शैतान उस तक जा सकते हैं और न नष्ट-भ्रष्ट होने का उसे आशंका है )। यह अन्दाज़ा है, प्रतिष्ठा वाले ज्ञानवान (ख़ुदा) का। सो ( हे पैग़म्बर ! ) यदि यह लोग ( ख़ुदा के ऐसे स्पष्ट चिन्हों को देखकर भी ) मुंह मोड़ें, तो ( उनसे ) कहिये कि मैं तुमको ऐसे आकाशीय अज़ाब से डराता हूं, जैसा आकाशीय अज़ाब—

कि उनके पास ( भी ) उनके आगे से और उनके पीछे से ( यानी कसरत से ) पैग़म्बर आये ( और पैग़म्बरों ने उनको समझाया ) कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो। वह लगे कहने, अगर हमारे पर्वदिगार को ( पैग़म्बरों का भेजना ) मंज़ूर होता, तो ( आस्मान से ) फ़रिश्ते उतारता। ग़रज़ जो ( दीन ) देकर तुम लोग भेजे गये हो, हमतो उसको मानते नहीं ० सो ( वह जो ) आद ( के लोग थे ) लगे नाहक़ ( ना-रवा ) मुल्क में तकब्बुर करने और बोले कि बल-बूते में हमसे बढ़कर और कौन ? क्या उनको इतना न सूझा कि जिस अल्लाह ने उनको पैदा किया, वह बल-बूते में उनसे कहीं बढ़ चढ़ कर है। ग़रज़ वह लोग हमारी आयतों से इन्कार ही करते रहे ० तो हमने ( भी उनकी ) नहूसत के दिनों में उन पर बड़े ज़ोर की आंधी चलाई, ताकि दुनिया की ज़िन्दगी में उनको ज़िल्लत (व ख़्वारी) के अज़ाब का मज़ा चखायें और आख़िरत का अज़ाब ( उनको दुनिया के अज़ाब से कहीं ) ज़ियादा रुस्वा करने वाला होगा और ( उस वक़्त ) उनको (किसी तरफ़ से) मदद (भी) नहीं मिलेगी ० और रहे समूद, तो हमने उनको ( सीधा ) रस्ता दिखा दिया था, मगर उन्होंने सीधा रस्ता छोड़ कर गुमराही इख़्तियार की। अन्जाम यह हुआ कि उन की बद-किर्दारियों की वजह से उनको ज़िल्लत के अज़ाब की कड़क ने आ लिया ० और जो लोग ईमान लाये—

عَادٍ وَثَمُودَ ۝ إِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّا اللّٰهَ ۖ
قَالُوا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَإِنَّا بِمَآ
أُرْسِلْتُمْ بِهِ كٰفِرُونَ ۝ فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ
مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ
هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا بِآيٰتِنَا يَجْحَدُونَ ۝
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِيٓ أَيَّامٍ نَحِسَاتٍ
لِنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزٰى ۖ وَهُمْ لَا يُنْصَرُونَ ۝
وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى
الْهُدٰى فَأَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا

आद व समूद पर उतर चुका है। जब उनके पास आगे पीछे से ( क्रमशः ) पैग़म्बर आये ( और उन्होंने समझाया कि ) अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना न करो । ( तो उन लोगों ने ) कहा कि यदि हमारा पालनहारा चाहता, तो ( तुम्हारे बदले ) फ़रिश्ते उतारता । अतः तुम जिन आदेशों के साथ भेजे गये हो, उनको हम नहीं मानते ॥

अच्छा अब आद का वृतान्त सुनो ! कि संसार में उन्होंने वृथा अभिमान किया और उनका कथन था कि बल-शक्ति में हमसे बढ़-कर कौन है। क्या उन्होंने देखा नहीं कि वह अल्लाह, जिसने ( अपनी पूर्ण शक्ति से ) उनको उत्पन्न किया, वह उनसे शक्ति में बढ़कर है। और ( इस वृथा घमंड तथा अभिमान के अतिरिक्त ) वह हमारी आयतों ( तथा आज्ञाओं ) का अस्वीकार करते थे। सो हमने भी मनहूस ( अर्थात अशुभ ) दिनों में उन पर प्रचण्ड वायु चलाई, जिससे कि हम उनको सांसारिक जीवन ही में अनादर तथा अपमान के अज़ाब का स्वाद चखा दें। और परलोक का अज़ाब तो अपमान तथा अनादर में ( सांसारिक अज़ाब से ) बहुत बढ़ चढ़ कर होगा। और ( उससे बचने के लिये ) उनको किसी प्रकार की सहायता न मिलेगी ॥

अब रहे समूद, तो हमने उनको राह दिखाई—परन्तु उन्होंने सीधा मार्ग छोड़ कर पथ-भ्रष्टता को ग्रहण किया। सो उनको उनके ( अशुभ ) कर्मों के कारण अपमानित करने वाले अज़ाब की कड़क ने आ लिया। हां, हमने उन लोगों को ( अज़ाब से ) बचा लिया, जो ईमान वाले तथा संयमी थे ॥

وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى
النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا
شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ
شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ
كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ
سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِنْ
ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ۝
وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ
فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ
مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ۝
وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ

और ( हमसे ) डरते थे, उनको हमने ( इस मुसीबत से ) बचा लिया ० और जिस दिन दुश्मनाने-ख़ुदा ( यानी काफ़िर ) दोज़ख़ की तरफ़ हाँके जायेंगे, फिर वह ( और दोज़ख़ियों के जमा होने के इन्तिज़ार में ) रोके जायेंगे ० यहाँ तक कि (जब सब) दोज़ख़ पर आ जमा होंगे, तो जैसे जैसे अमल यह लोग करते रहे हैं, उनके कान और उनकी आंखें और उनके ( गोश्त ) पोस्त उनके मुक़ाबले में ( उन अमलों की ) गवाही देंगे ० और यह लोग अपने ( गोश्त ) पोस्त से पूछेंगे कि ( भला ) तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी होगी ? वह जवाब देंगे कि जिस ( ख़ुदा ) ने हर चीज़ को गोया किया है, उसीने हमको भी ( अपनी क़ुदरत से ) गोया किया और उसीने तुमको अव्वल बार पैदा किया था और अब तुम लोग उसी की तरफ़ लौटाकर लाये जा रहे हो ० और ( गुनाह करते वक़्त ) तुम पर्दा-दारी ( भी ) करते थे—( तो ) इस ख़याल से नहीं कि ( कल को ) तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारे ( गोश्त ) पोस्त तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देने को खड़े होजाएंगे, बल्कि तुमको तो यह ख़याल था कि तुम्हारे बहुत से अमलों से ख़ुदा ( भी ) वाक़िफ़ नहीं ० और ( यह ) बदगुमानी जो तुमने अपने पर्वर्दिगार के हक़ में की, तुम्हारी इसी बदगुमानी ने तो ( आज ) तुमको तबाह किया और तुम घाटे में आ गये ० तो अगर यह लोग सब्र कर ( के ख़ामोश हो ) रहें, तो भी इनका ठिकाना दोज़ख़ है और अगर माफ़ी चाहें, तो इनको माफ़ी भी नहीं दी जाएगी ० और हमने इन ( कुफ़्फ़ार ) के साथ ( बुरे ) हम-नशीन तैनात कर दिये थे, तो उन्होंने इनके अगले और पिछले तमाम हालात इनकी नज़र में अच्छे कर दिखाये—

---

और जिस दिन इन ख़ुदा के शत्रुओं को एकत्रित करके दोज़ख़ की ओर ले चलेंगे, तो उनको ठहरा लिया जावेगा-( जिससे कि और दोज़ख़ी भी आजायं )—यहाँ तक कि जब ( एकत्रित होकर ) दोज़ख़ के पास पहुंचेंगे, तो उनके कान और उनके नेत्र और उनका चर्म ( तथा मांस ) उनके ( सांसारिक ) कर्मों की साक्षी देगा ॥

और ( यह लोग ) अपने ( माँस तथा ) चर्म से पूछेंगे कि तुमने ( हमारे विरुद्ध ) क्यों साक्षी दी ? वह उत्तर देंगे कि जिस ख़ुदा ने हर वस्तु को बोलने की शक्ति दी, उसीने हमको भी बोलने की शक्ति दी। और उसीने तुमको ( प्रथम बार) उत्पन्न किया था और उसीकी ओर ( अब ) तुम लौटकर आये हो। और ( उनसे कहा जायगा कि ) तुम (दुनिया में अपने पापों को इतना तो ) छिपा न सकते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारे नेत्र और तुम्हारा ( मांस तथा ) चर्म ( तुम्हारे विरुद्ध ) साक्षी न दें, परन्तु तुमने यह विचार कर लिया कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से कर्मों को नहीं जानता। और यह तुम्हारा अपने पालनहारे के सम्बन्ध में कुविचार था। और इसी कुविचार ने ( आज ) तुम्हारा नाश किया और तुम घाटे में आ गये ॥

अब यदि यह लोग सन्तोष करें, तो दोज़ख़ ही उनका स्थान है। और यदि क्षमा चाहें, तो उनको क्षमा नहीं किया जावेगा। और हमने उन लोगों के लिए ऐसे मित्र ( संसार में ) नियत कर दिये थे, जिन्होंने उनके अगले पिछले कर्मों को उनकी दृष्टि में भले कर दिखाये—

وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ
مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنَّهُمْ كَانُوا
خَاسِرِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا
لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ
فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا دَارُ
الْخُلْدِ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝ وَقَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا
مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا
لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا
اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ
أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ

ع

और इनसे पहिले जिन्नात की और आदमियों की ( और ) बहुत सी ( नाफ़र्मान ) उम्मतें हो गुज़री थीं। उनके शुमूल में ( अज़ाब का ) वादा इनके हक़ में भी पूरा होकर रहा । बेशक यह लोग ( शुरू से ) अपने नुक़सान के दरपै थे ० और जो लोग मुन्किर हैं, वह (एक दूसरे से) कहा करते हैं कि इस कुर्आन को सुनो ही मत और ( सुनाने लगें, तो ) इस ( के बीच बीच ) में गुल मचा दिया करो। शायद ( इस तदबीर से ) तुम ( मुसल्मानों से ) बाज़ी ले जावो ० तो जो लोग ( दीन-इस्लाम से ) मुन्किर हैं, हम उनको ज़रूर अज़ाब-सख़्त ( का मज़ा ) चखा कर रहेंगे और ज़रूर उनके ( इन ) बदतरीन-आमाल का बदला देंगे ० यह दोज़ख़ ( ही ) दुश्मनाने-ख़ुदा ( यानी काफ़िरों ) का बदला है कि वह जो हमारी आयतों से इन्कार किया करते थे, उसकी सज़ा में उनको हमेशा के लिये दोज़ख़ में घर मिला ० और जो लोग मुन्किर हैं ( क़यामत में ) कहेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! शैतान और आदमी, जिन्होंने हमको गुमराह किया था-( एक नज़र ) उनको हमें ( भी ) तो दिखा ! कि हम उनको अपने पैरों के तले ( मसल ) डालें, ताकि वह बहुत ही ज़लील हों ० बेशक जिन लोगों ने इक़रार किया कि अल्लाह ही हमारा पर्वर्दिगार है, फिर इसी (अक़ीदे पर) जमे रहे-( मरते वक़्त ) उन पर ( रह्मत के ) फ़रिश्ते नाज़िल होंगे ( और उनसे कहेंगे ) कि ( आइन्दा के लिये ) न तो ( किसी तरह का ) अन्देशा करो और न ( गुज़श्ता के लिये किसी तरह का ) रन्ज और बहिश्त, जिसका तुमसे वादा किया जाता था, अब उसकी ख़ुशियां मनावो ०—

---

और ( अन्त में ) उन पर ( अल्लाह के ) अज़ाब का वादा उन जातियों के साथ में पूरा होकर रहा, जो जिन्नों और मनुष्यों में उनसे पहिले हो चुकी हैं। निस्सन्देह यह लोग ( पहिले ही से ) हानि उठाने पर तुले हुये थे। और जो लोग न मानने वाले हैं, वह ( एक दूसरे से ) कहते हैं कि इस कुर्आन को सुनो ही नहीं। और ( यदि सुनावें, तो ) बीच में बक २ करने लगो। कदाचित तुम ( इस यत्न से मुसल्मानों पर ) जीत पाजाओ ॥

सो हम उन लोगों को जिन्होंने ( सत्य-धर्म का ) अस्वीकार किया, घोर अज़ाब का स्वाद चखावेंगे। और उनके कुकर्मों का प्रतिफल अवश्य देंगे। यह है प्रतिफल ख़ुदा के शत्रुओं का ( अर्थात ) दोज़ख़। उनके लिये दोज़ख़ सर्वदा रहने का घर है। यह इस बात का बदला है कि यह लोग हमारी आयतों को नहीं मानते थे। और काफ़िर लोग (क़यामत में ) कहेंगे कि हे हमारे पालनहारे ! हमें जिन शैतानों और जिन मनुष्यों ने ( संसार में ) पथ-भ्रष्ट किया था, उनको हमें दिखा दे । हम उनको अपने पैरों के नीचे ( मसल ) डालें, जिसके कारण वह अपमानित हो जावें ॥

जिन लोगों का वचन है कि हमारा पालन कर्ता अल्लाह है और वह ( अपने इस वचन पर ) स्थिर हैं, उन पर ( मृत्यु के समय ) फ़रिश्ते ( यह मंगल-समाचार लेकर ) उतरते हैं कि तुम ( आगे के लिये किसी बात का ) भय न करो और न (गुज़रे हुये के लिये ) उदास हो। और ( अब ) उस जन्नत का मंगल-समाचार सुनो—

الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ● نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي
الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي
أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ● نُزُلًا مِّنْ
غَفُورٍ رَّحِيمٍ ● وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا
إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ●
وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ
بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ
عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ● وَمَا يُلَقَّاهَا
إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ
عَظِيمٍ ● وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ● وَمِنْ
آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا
لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي

خَلَقَهُنَّ

ع

दुनिया की ज़िन्दगी में भी हम ( बहुक्म-ख़ुदा ) तुम्हारे ( हामी व ) मददगार थे और आख़िरत में भी ( होंगे ) और जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा, तुम्हारे लिये बहिश्त में मौजूद होगी और जो चीज़ तुम तलब करोगे, वहां हाज़िर ० (यह) बख़्शने वाले मेहरबान (यानी ख़ुदा) की तरफ़ से ( तुम्हारी ) ज़ियाफ़त है ० और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है, जो ( लोगों को ) ख़ुदा की तरफ़ बुलाये और नेकोकार भी हो और ( लोगों से ) कहे कि मैं ( भी ) ख़ुदा के फ़र्मांबर्दार बन्दों में हूं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती। बुराई का दफ़ीआ ऐसे बर्ताव से करो कि वह ( देखने वालों की नज़र में ) बहुत ही अच्छा हो-( अगर ऐसा करोगे ) तो ( तुम देख लोगे कि ) तुममें और किसी शख़्स में अदावत थी-तो अब एक दम से गोया वह ( तुम्हारा ) दिल-सोज़ दोस्त है ० और हुस्न-मदारात ( की तौफ़ीक़ ) उनही लोगों को दी जाती है, जो सब्र करते हैं और यह उनही लोगों को दी जाती है, जिनके बड़े नसीब हैं ० और अगर तुमको किसी तरह का शैतानी-वस्वसा गुदगुदाये, तो ख़ुदा से पनाह मांग लिया करो कि वही ( सबकी ) सुनता और ( सब कुछ ) जानता है ० और ( जहां और बहुत सी निशानियाँ हैं )-ख़ुदा की ( कुद्रत की ) निशानियों में से रात और दिन और सूरज और चाँद भी हैं। ( तो लोगो ! ) न ( तो ) सूरज को सज्दा करना और न चाँद को, और अगर तुमको ख़ुदा की इबादत करनी है, तो अल्लाह ही को सज्दा करना; जिसने—

---

जिसका तुमसे वादा किया जाता था। हम सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे मित्र तथा सहायक थे और परलोक में भी ( होंगे )। और तुम्हारे निमित्त जन्नत में वह वस्तुयें (विद्यमान) होंगी, जिनको तुम्हारा जी चाहे। और वहाँ तुम जो कुछ मांगोगे, वह तुमको मिलेगा। यह कृपालु करुणाकारी ख़ुदा की ओर से ( तुम्हारा ) भोजन है। और ( उन काफ़िरों तथा मुश्रिकों को सोच विचार करना चाहिये कि ) उससे उत्तम किसकी बात हो सकती है, जो अल्लाह की ओर बुलावे और शुभ कर्म करे। और ( लोगों से कहे ) कि मैं ( भी ख़ुदा के ) आज्ञाकारियों में हूं ॥

और ( सत्य बात यह है कि ) नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती। (हे पैग़म्बर !) आप बुराई को अच्छे बर्ताव से दूर कीजिये तत्काल उसका परिणाम यह होगा कि वह मनुष्य कि आपके और उसके बीच शत्रुता है ( ऐसा बन जायगा )—मानो वह आपका बड़ा प्रेमी-मित्र है। और इस ( सद्-व्यवहार ) की योग्यता उन्हीं को होती है, जो सन्तोषी ( और सहनशील ) हैं। और यह ( शुभ-स्वभाव ) उन्हीं को प्रदान किया जाता है, जो बड़े भाग्यवान हैं। और ( ऐसे समय ) यदि शैतान की ओर से आपको कुछ बहकाया जाय, तो अल्लाह की शरण लिया कीजिये। निस्सन्देह वह ( सब कुछ ) सुनता ( और सब कुछ ) जानता है ॥

और ( इन न मानने वालों को शिक्षा ग्रहण करना चाहिये कि ) अल्लाह के चिन्हों में रात्रि और दिन और सूर्य्य और चन्द्रमा हैं ( परन्तु तुम लोग ) न सूर्य्य को सज्दा करो और न चन्द्रमा को—वरन् उस अल्लाह को सज्दा करो—

خَلَقَهُنَّ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا
فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ
خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ
وَرَبَتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا
لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا أَفَمَنْ يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ
أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ
إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ
لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ
خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝ مَا يُقَالُ
لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ

इन चीज़ों को पैदा किया है ० पस ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर (यह लोग इस पर भी ) ग़ुरूर करें, तो ( ख़ुदा के हां इबादत करने वालों की कमी नहीं )-जो ( फ़रिश्ते ) तुम्हारे पर्वर्दिगार की बार्गाह में हैं, वह रात दिन उसको तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगे रहते हैं और वह ( कभी भी ) नहीं उकताते ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) उसकी ( क़ुद्रत की ) निशानियों में से एक यह है कि तुम ज़मीन को देखते हो कि ( सुनसान ) बेहिस ( व हर्कत) पड़ी है। फिर जब हम उस पर पानी बर्सा देते हैं, तो बस लहलहाने लगती और उभर चलती है। जिसने इस ( ज़मीन ) को जिलाया, वही ( ख़ुदा तो क़यामत में ) मुर्दों का भी जिलाने वाला है। कुछ शक नहीं कि वह हर चीज़ पर क़ादिर है ० जो लोग हमारी आयतों में कजी पैदा करते हैं, हम पर ( उनका हाल ) मख़्फ़ी नहीं है । भला जो शख़्स ( आख़िरकार ) दोज़ख़ में डाला जाय, वह बेहतर-या वह शख़्स, जो क़यामत के दिन आये (और) उसको ( किसी बात का ) खटका न हो ? ( लोगो ! ) जो चाहो सो करो, जो कुछ भी तुम करते हो, ख़ुदा उसको देख रहा है० जिन लोगों के पास ( क़ुर्आन जैसी ) नसीहत आई और उन्होंने उसको न माना ( वह भी अपना अन्जाम-कार देख लेंगे) और यह ( क़ुर्आन ) तो बड़े पाये की किताब है ० कि झूट न तो इसके आगे ( ही की तरफ़ ) से इसके पास फटकने पाता है और न इसके पीछे ( की तरफ़) से-(क्योंकि) हिकमत वाले सज़ावार-हम्द (व सना यानी ख़ुदा ) की उतारी हुई है० ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुमसे ( भी ) वही बात कही जाती है, जो तुमसे पहिले ( और ) पैग़म्बरों से कही जा चुकी है। बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार—

---

जिसने इन ( सब ) को उत्पन्न किया है; यदि तुमको उसीकी उपासना करनी है। इस बात पर यदि यह ( लोग ) अभिमान करें, तो (उपासकों की कमी नहीं )। तुम्हारे पालनहारे के निकट जो फ़रिश्ते हैं, वह रात दिन उसकी पवित्रता वर्णन करने में ( लगे ) रहते हैं। और वह ( इससे ) कभी नहीं उकताते ॥

और उसके चिन्हों में से ( एक चिन्ह यह ) है कि तुम पृथ्वी को देखते हो ( कैसी ) सुन्सान (पड़ी है )। सो जब हम उस पर पानी की वर्षा करते हैं, तो वह हरी भरी हो जाती है और उभरती है। निस्सन्देह ( वह सर्व शक्तिमान ) पृथ्वी का जीवन प्रदान करता है। वह निर्जीव लोगों को भी ( क़यामत में ) सजीव कर सकता है। इसमें तनिक सन्देह नहीं कि वह हर बात पर शक्ति रखता है। जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ापन पैदा करते हैं, उनकी दशा हमसे गुप्त नहीं। अच्छा तो वह मनुष्य जो दोज़ख़ में डाला जावे, उत्तम है वा वह मनुष्य, जो क़यामत के दिन बे-धड़क ( अमन चैन के साथ ) आवे। ( ख़ैर ! ) जो चाहो कर्म करो। निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारे कर्मों को देख रहा है ॥

यह लोग जिन्होंने ( पवित्र ) क़ुर्आन को जब उनके पास आया, न माना ( शुद्ध-बुद्धि नहीं रखते )-अन्यथा यह तो एक ऐसी पुस्तक है, जो ( हर प्रकार ) आदर सत्कार वाली है। उसमें ( कहीं ) आगे वा पीछे असत्य बात नहीं आती। बुद्धिमान प्रशंसनीय ( ख़ुदा ) की उतारी हुई है। ( हे पैग़म्बर ! ) आपसे ( भी ) वही बात कही जाती है, जो आप से पहिले पैग़म्बरों से कही जा चुकी है । निस्सन्देह आप का पालनहारा—

لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ○ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ
قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ءَاَعْجَمِيٌّ
وَّعَرَبِيٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ
وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ
عَلَيْهِمْ عَمًى اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ
بَعِيْدٍ ○ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ
فِيْهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ
لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ○
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا
وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ○ اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ
السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا
وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ وَيَوْمَ
يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ مَا مِنَّا

( गुनाहों का ) माफ़ करने वाला भी है और उसकी सज़ा भी दर्दनाक है० और अगर हम इसको अरबी के सिवा दूसरी ज़बान का क़ुर्आन बनाते, तो (यह कुफ़्फ़ार-मक्का) ज़रूर कहते कि इसकी आयतें (हमारी ही ज़बान में हमको ) अच्छी तरह खोलकर क्यों न समझाई गईं। क्या ( तअज्जुब की बात है, क़ुर्आन को ज़बान ) अजमी ( यानी ऊपरी ) और ( हमारी ) अरबी-( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि जो लोग ईमान रखते हैं, उनके लिये तो यह ( क़ुर्आन सर्तापा ) हिदायत और ( अमराज़—रूहानी यानी शिर्क व बद-अख़्लाक़ी की ) शिफ़ा है और जो ईमान नहीं रखते, उनके कानों ( के हक़ ) में गरानी और वह उन ( की आँखों ) के हक़ में नाबीनाई है। यह लोग ( क़ुर्आन की तरफ़ से ऐसी बे पर्वाई जाहिर करते हैं कि गोया ) बड़ी दूर की जगह से पुकारे जाते हैं ( कि इनको कुछ सुनाई नहीं देता ) ० और हमही ने मूसा को ( भी ) किताब ( यानी तौरात ) दी थी, तो उसमें ( भी बड़े बड़े ) इख़्तिलाफ़ हुये और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर तुम्हारे पर्वर्दिगार ( की तरफ़ ) से ( क़यामत ही में फ़ैसला करने का हुक्म ) पहिले से सादिर न हो चुका होता, तो इनमें ( इनके इख़्तिलाफ़ात का ) फ़ैसला ( कभी का ) कर दिया गया होता और ( ऐसा ही ) यह लोग क़ुर्आन की निस्बत ( भी ) शक-दर-शक में पड़े हैं० (ऐ पैग़म्बर !) जो नेक अमल करता है, तो ख़ास अपने (भले के) लिये और जो बुरा करता है, तो (उसका वबाल) उसी पर (पड़ेगा) और तुम्हारा पर्वर्दिगार तो बन्दों पर मुतलक़ ज़ुल्म नहीं करता ० उसीकी तरफ़ क़यामत के इल्म का हवाला दिया जा सकता है-(यानी वही जानता है कि कब होगी) और न फल ही अपने गाभों से निकलें और न किसी मादा को पेट रहे और न वह जने-( मगर यह सब कुछ) उसी ( ख़ुदा ) के इल्म ( व इरादे ) से ( हुआ करता है ) और जब (क़यामत के दिन ) ख़ुदा लोगों को पुकारेगा ( और पूछेगा ) कि ( जिनको तुम हमारा शरीक ठहराते थे, वह ) हमारे शरीक ( अब ) कहाँ हैं ? वह जवाब देंगे कि हम तो आपसे अर्ज़ किये देते हैं कि हममें से कोई ( उन शरीकों से ) वाक़िफ़ नहीं ०—

क्षमा करने वाला और ( साथ ही ) दुख-दायी-दण्ड देने वाला ( भी ) है। और यदि हम क़ुर्आन को अरबी-भाषा के अतिरिक्त किसी और भाषा में उतारते, तो (यह अरब के काफ़िर) अवश्य कहते कि इसकी आयतें खोल खोल कर (हमारी भाषा में) क्यों नहीं वर्णन की गईं ? (यह) क्या ! ( कि पुस्तक तो दूसरी भाषा की अर्थात ) अजमी और (हम) अरबी। ( हे रसूल ! ) कहिये कि यह ( क़ुर्आन ) उन लोगों के लिये जो ईमान वाले हैं—( पूर्णतया ) शिक्षा तथा आरोग्यता है। और जो ईमान वाले नहीं हैं, उनके कानों में एक प्रकार का बोझ है ( जिसके कारण वह सत्य बात नहीं सुन सकते ) और क़ुर्आन उनके विषय में अन्धपन ( हो गया ) है। यह लोग ( अपने कानों के बोझल होने के कारण से मानो ऐसे ) हैं कि उनको किसी दूर के स्थान से पुकारा जा रहा है। और (विभेद तथा झगड़ा करना तो काफ़िरों का स्वभाव है। अतः ) हमने मूसा को ( तौरेत ) पुस्तक प्रदान की, तो उसमें भी विभेद किया गया। और यदि आपके पालनहारे की ओर से यह बात पहिले से निश्चित न हो चुकी होती ( कि क़यामत में निर्णय किया जावेगा ) तो निश्चित-रूप से ( दुनिया ही में ) उन ( विभेद करने वालों ) का निर्णय कर दिया जाता। और यह लोग उसके विषय में ऐसे सन्देह में हैं, जिसने उनको चिन्ता में डाल रक्खा है। ( संक्षिप्त यह कि ) जो शुभ कर्म करता है, तो अपने लिये ( करता है ) और जो अशुभ कर्म करता है, तो ( उसका ) प्रतिफल उसी को भोगना पड़ेगा। और आपका पालनहारा बन्दों पर ( किंचित-मात्र ) अत्याचार नहीं करता। ( जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा ) ॥

( यह काफ़िर लोग क़यामत के परिज्ञान के विषय में बारम्बार प्रश्न करते हैं)। क़यामत के ज्ञान के विषय में (तो उसी एक अल्लाह का नाम लिया जा सकता है। और ) उसी ( एक ) का हवाला दिया जा सकता है। (अल्लाह को अभिज्ञता तथा परिज्ञान की यह दशा है कि) उसके ज्ञान के बिना कोई फल अपने गाभे के भीतर से नहीं निकलता। और कोई मादा न गर्भवती होती है और न जनती है। ( सार यह कि दुनिया का कोई काम भी उसके ज्ञान और इरादे से बाहर नहीं। सच बात यह है कि ऐसे ही सर्वज्ञ ख़ुदा पर प्रत्येक प्राणी को ईमान लाना चाहिये )। और (डरना चाहिये उस दिन से) जिस दिन वह लोगों को पुकारेगा (और पूछेगा) कि (जिनको तुम हमारा साझी ठहराते थे, वह अब ) कहाँ हैं ? ( इसके उत्तर में मुश्रिक लोग ) कहेंगे कि हम तेरे समक्ष यही निवेदन करते हैं कि हममें से कोई ( भी आज उन साझियों का मानने वाला, बरन् उनसे ) अभिज्ञ नहीं ॥

مِّن شَهِيدٍ ۝ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ
مِن قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ۝ لَا يَسْأَمُ
الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ
فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن
بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ
السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي
عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا
عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَإِذَا أَنْعَمْنَا
عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ
الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ
عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ
فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝ سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ
وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ أَوَلَمْ يَكْفِ

और जिन माबूदों को पहिले यह लोग बुलाया करते थे, अब इन (के पास) से (ऐसे) खोये जाएँगे (कि कहीं पता नहीं लगेगा) और यह लोग समझ लेंगे कि (अब) इनके लिये कहीं जाए-गुरेज़ नहीं ० आदमी बेहतरी की दुआ (मांगने) से (कभी) नहीं उकताता और अगर उसको तकलीफ़ पहुंचती है, तो दिल-शिकस्ता (और) बिल्कुल नाउम्मीद हो जाता है ० और अगर उसको कोई तकलीफ़ पहुंच जाती है और तकलीफ़ के बाद हम उसको अपनी मेहरबानी (की लज़्ज़त) चखा देते हैं, तो कहने लगता है कि यह तो मेरा हो लिया और मैं नहीं समझता कि (कभी) क़यामत बर्पा हो और अगर मुझको अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौटकर जाना हुआ (भी) तो उसके हां (भी) मेरे लिये अच्छा ही (अच्छा) है। तो जो लोग (क़यामत के) मुन्किर हैं, जैसे जैसे अमल यह लोग करते रहे हैं, (क़यामत के दिन हम उनका बुरा भला) उनको ज़रूर बता देंगे और उन को अज़ाब-सख़्त (का मज़ा) चखायेंगे (सो अलग) ० और जब हम आदमी पर (अपना फ़ज़्ल व) करम करते हैं, तो (वह हमारी तरफ़ से) मुंह फेर लेता है और (हमसे) कनारा-कश हो जाता है और जब उसको तकलीफ़ पहुंचती है, तो (लम्बी) चौड़ी दुआयें करने लगता है ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि भला देखो तो सही! कि अगर (यह क़ुर्आन) ख़ुदा के हां से (आया) हो और इस पर भी तुम इससे इन्कार रक्खो, तो जो (ऐसी) परले दर्जे की मुख़ालिफ़त में पड़ा हो, उससे बढ़कर गुमराह (और) कौन (हो सकता है) ० (सो) अन्क़रीब हम इन लोगों को अपनी (क़ुद्रत की) निशानियां (दुनिया के) अतराफ़ में (भी) दिखायेंगे और इनके अपने दर्मियान में (भी)-यहां तक कि इन पर ज़ाहिर हो जायगा कि यह (क़ुर्आन) बरहक़ है कि इसकी पेशीन-गोइयां पूरी होती चली जा रही हैं। (ऐ पैग़म्बर!) क्या (तुम्हारी तसल्ली को) यह बात काफ़ी नहीं कि—

---

और यह लोग पहिले (अर्थात संसार में) जिनको (पूज्य समझ कर) पुकारते थे, वह (आज) उनसे (बिल्कुल) खोये जायँगे और (उनके पास आकर भी नहीं फटकेंगे। भला क़यामत में बनाई हुई मूर्तियों को कौन पूछ सकता है। पुनः जब यह लोग उन पूज्यों को नहीं पावेंगे, जिनको सर्वदा अपना मोक्ष-दाता समझते रहे थे, तो) समझ लेंगे कि (अब) उनके लिये (छुटकारे तथा) बचाव का कोई स्थान नहीं है-(जहां वह भाग कर बच सकें)। मनुष्य (क़यामत के दिन से निर्भय और अपने परिणाम से अनभिज्ञ है। उस) का मन (अपनी) भलाई (अर्थात धन दौलत तथा आरोग्यता) की प्रार्थना से नहीं भरता। और जब उसे बुराई (अर्थात दरिद्रता तथा बीमारी) आ घेरती है, तो आशा तोड़ निराश हो जाता है॥

और यदि उसे (कोई) विपत्ति पहुंच जाती है (और) उस (विपत्ति को दूर करने) के उपरान्त हम (उस पर अपनी कृपा तथा दया करते हैं और) अपनी कृपा (का स्वाद उसे) चखाते हैं, तो कहता है कि यही मेरे लिये होना चाहिये था—(मैं इसीका अधिकारी था)। और मैं नहीं समझता कि क़यामत (कभी) होगी। और यदि (मान लो कि) मुझे अपने पालनहारे की ओर लौटकर जाना (ही) पड़ा, तो उसके यहां भी मेरे लिये भलाई हो भलाई (और चैन ही चैन) है। (दुख से मेरा पाला नहीं पड़ सकता। ख़ैर!) उन लोगों को (जो क़यामत को झुठलाते हैं और) जिन्होंने कुफ़्र ग्रहण किया है, उनके कर्मों (की अच्छाई बुराई) हम (क़यामत के दिन भली भांति) जतायेंगे और कठिन अज़ाब (का पूर्ण स्वाद) चखावेंगे। मनुष्य (को भी दशा आश्चर्य्य-जनक है कि उस) पर जब हम अपनी दया तथा कृपा करते हैं, तो (हमारी ओर से) मुंह फेर लेता है और अनजान बन जाता है-(मानो हमसे कोई प्रयोजन ही नहीं रहा)—परन्तु जब उसे बुराई आ घेरती है (और आपत्ति पहुंचती है) तो (लम्बी) चौड़ी प्रार्थनायें करने लगता है॥

(हे रसूल!) इन (काफ़िरों) से पूछो कि तुमने (कभी) इस बात पर (भी) विचार किया कि यदि (यह क़ुर्आन) ख़ुदा की ओर से आया हो और उस पर भी तुम इसे न मानो, तो जो मनुष्य विरोध की अन्तिम श्रेणी में हो (और दूर २ फिरे) उससे बढ़कर पथ-भ्रष्ट कौन हो सकता है (और उसका परिणाम क्या होना चाहिये)। हम शीघ्र (इन मुकरने वालों और पथ-भ्रष्टों को) अपने चिन्ह दुनिया के कोने २ में दिखा देंगे और (स्वयं) उनमें (अर्थात उनके घटों में भी)। यहां तक कि उन पर प्रगट हो जायगा कि क़ुर्आन सत्य है (और उसकी हर बात और हर भविष्य-वाणी सच्ची है)। क्या आपके पालन कर्त्ता (के अन्नदाता और ख़ुदा होने) के लिये यह पर्याप्त नहीं कि वह प्रत्येक वस्तु (की अवस्था) का जानने वाला है॥

رَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ
فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
[illegible] مَكِّيَّة مُّحِيطٌ ۝ سُورَةُ الشُّورَىٰ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
حم ۝ عسق ۝ كَذَٰلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ
مِن قَبْلِكَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝ تَكَادُ
السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِن فَوْقِهِنَّ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ
يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَن فِي
الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَالَّذِينَ
اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ
وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ

४

तुम्हारा पर्वर्दिगार हर चीज़ का शाहिद (हाल) है ० सुनो जी ! यह (लोग तो) अपने पर्वर्दिगार के हुज़ूर में हाज़िर होने की तरफ़ से ही शक में (पड़े) हैं। सुनो जी ! ख़ुदा (का इल्म और उसकी कुद्रत) हर चीज़ पर हावी है ०

## सूरत–शूरा

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५३ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)० हा-मीम्-ऐन्-सीन-क़ाफ़् ० (ऐ पैग़म्बर ! जिस तरह यह सूरत तुम पर नाज़िल की जाती है) इसी तरह अल्लाह जो ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है, तुम्हारी तरफ़ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ़--जो तुमसे पहिले हो चुके हैं, वही भेजता रहा है ० उसीका है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वही (सबसे) बड़ा (और) आलीशान है ० (कुछ) बईद नहीं कि आस्मान (मारे उसकी हैबत के) अपने ऊपर की तरफ़ से फट पड़ें और फ़रिश्ते (हैं कि) अपने पर्वर्दिगार की तारीफ़ के साथ उसकी तस्बीह (व तक़्दीस) में लगे हैं और जो लोग ज़मीन में (रहते) हैं, उन (के गुनाहों) की माफ़ी मांगा करते हैं। अच्छी तरह कान खोल कर सुन लो ! कि अल्लाह ही (गुनाहों का) माफ़ करने वाला (और) मेहर्बान है ० और जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (दूसरे दूसरे) कारसाज़ ठहरा रक्खे हैं, अल्लाह उनका हाल देख रहा है और (ऐ पैग़म्बर !) तुम उन पर कुछ तईनात तो हो नहीं ० और इसी तरह अरबी (ज़बान का) क़ुर्आन हमने तुम्हारी तरफ़ वही के ज़रिये से नाज़िल किया है, ताकि तुम मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस पास (बसते) हैं, उनको (अज़ाब-ख़ुदा से) डरावो—

---

सुनो ! (सच बात यह है कि) यह लोग (सिरे से) अपने पालनहारे के सन्मुख जाने ही के विषय में सन्देह में (पड़े हुए) हैं। (परन्तु यह भी) सुन रक्खो (कि) अल्लाह हर वस्तु को घेरे हुये है–(उससे भागने की कोई राह नहीं) ॥

## सूरत–शूरा

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ५३ आयतें और ५ रुकूअ हैं ॥

इसी प्रकार (जिस प्रकार यह सूरत उतारी जा रही है)–अल्लाह बड़ा बलवान और बुद्धिमान है। आप की ओर और उन (पैग़म्बरों) की ओर, जो आप से पहिले हो चुके हैं, वही भेजता रहा है। जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है–(सब) उसी का है। और वही सबसे बड़ा (और) महानता वाला है ॥

(उसकी बड़ाई तथा महानता की यह दशा है कि) निकट है कि आकाश (उससे भय खाकर) ऊपर से फट पड़ें और फ़रिश्ते अपने पालन कर्त्ता की प्रशंसा (तथा स्तुति) के साथ पवित्रता वर्णन करने में लगे रहें। और भूमण्डल (पर बसने) वालों के लिये क्षमा (की दुआ) माँगते हैं। स्मरण रक्खो कि अल्लाह ही (पापों को) क्षमा करनेवाला (और) करुणाकारी है–(उसके अतिरिक्त किसी में यह शक्ति नहीं) और (इसके होते हुए) जिन लोगों ने उस (पवित्र ख़ुदा) के अतिरिक्त (अन्य २) सहायक ठहरा लिये हैं, अल्लाह (स्वयं) उन (की दशा) का रक्षक है। और (उन्हें करने दो, जो कुछ वह कर रहे हैं। हे रसूल !) तुम उनके ज़िम्मेवार नहीं ॥

(हाँ ! तो) इसी प्रकार (जिस प्रकार यह सूरत उतारी जा रही है) हमने वही के द्वारा तुम पर अरबी-भाषा का (समस्त) क़ुर्आन उतारा है, जिससे कि तुम उम्मुल्क़ुरा (अर्थात मक्का के निवासियों) को–और उन लोगों को–जो उसके आस पास (अरब-देश और समस्त संसार में बसते) हैं (ख़ुदा के भय से) डराओ—

وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ
فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ
يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمُونَ
مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمِ اتَّخَذُوا
مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ
يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ
ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝
فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ
أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۖ يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ ۚ
لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝
لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَبْسُطُ الرِّزْقَ

और (नीज़) रोज़-क़यामत (की मुसीबत) से डरावो, जिस (के आने) में ज़रा भी शक नहीं। (उस दिन) कुछ लोग जन्नत में होंगे और कुछ दोज़ख़ में ० और ख़ुदा चाहता, तो (मज़हब के एतिबार से सब) लोगों का एकही फ़िर्क़ा बना देता—लेकिन वह जिसको चाहता है, अपनी रहमत में ले लेता है और (रहे) नाफ़र्मान (तो) उनका (उस दिन) न कोई हामी होगा और न कोई मददगार ० क्या इन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (दूसरे दूसरे) कारसाज़ बना रक्खे हैं। सो अल्लाह ही कारसाज़ है और वही (क़यामत में) मुरदों को जिलायेगा और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ० और जिन जिन बातों में तुम लोग आपस में इख़्तिलाफ़ रखते हो, उसका फ़ैसला ख़ुदा ही के हवाले है। (लोगो!) यही अल्लाह तो मेरा पर्वर्दिगार है। मैं उसी पर भरोसा रखता और (हर बात में) उसी की तरफ़ रुजू करता हूं ० (वही) आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (है)। उसीने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स के जोड़े बनाये (यानी बीबियां) और (तुम्हारे जोड़ों के अलावा) चारपायों के जोड़े—(इस तरह) तुम को रूए—ज़मीन पर फैलाता रहता है। कोई चीज़ (भी) उस जैसी नहीं और वह (सबकी) सुनता (सब कुछ) देखता है ० आस्मानों और ज़मीन (के ख़ज़ानों) की कुन्जियां उसी पास हैं। जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ कर देता है—

और उस दिन का भय दिलाओ, जिसमें (समस्त सृष्टि) एकत्रित होगी। और जिस (के आने) में कोई सन्देह (तथा शंका) नहीं है। एक समूह (उस दिन) जन्नत में होगा और एक समूह दोज़ख़ में होगा। और अल्लाह चाहता, तो (अवश्य) सबको एक ही समूह बना देता—परन्तु वह जिसे चाहता है, अपनी कृपा (की छाया) में ले लेता है। और जो (लोग इस अद्वितीय नेअमत से वंचित हैं और अपनी अवज्ञा के कारण) अपनी हानि आप करने वाले हैं, उनका (उस दिन) न कोई मित्र होगा, न सहायक॥

क्या उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य अन्य) कार्य-कर्त्ता नियत कर रक्खे हैं-(यह उनकी बड़ी भूल है)। कार्य कर्त्ता तो (केवल) अल्लाह ही है। और वही (क़यामत के दिन) मृतक लोगों को जीवन प्रदान करेगा और (संसार में भी निर्बल मुसलमानों को सबल करेगा)। वह हर वस्तु पर शक्ति रखता है। और जिन २ बातों में तुम (काफ़िर लोग) मुसलमानों के साथ विभेद करते हो, उसका निर्णय अल्लाह के सिपुर्द है-(वही निर्णय करेगा। और हे रसूल! तुम तो स्पष्ट कहदो कि) यही अल्लाह मेरा पालन कर्त्ता है। मैंने उसी पर भरोसा किया है। और (हर बात में) उसीकी ओर अवहित होता हूं॥

(आश्चर्य है! तुम उसे नहीं समझते)। वह आकाशों और पृथ्वी का सृजनहारा है। उसने तुम्हीं में से तुम्हारे निमित्त जोड़े (अर्थात स्त्रियां) उत्पन्न कीं। और पशुओं में से पशुओं के जोड़े बनाये। (और इस प्रकार जोड़े बनाकर और उत्पत्ति में उन्नति देकर) तुमको भूमण्डल पर फैलाता (रहता) है। उसके समान (तथा सदृश) कोई वस्तु नहीं। और वह (सब कुछ) सुनता (और सब कुछ) देखता है। (बनावटी पूज्यों की तरह बहिरा और अन्धा नहीं है)। आकाश तथा पृथ्वी (के ख़ज़ानों) की कुंजियां उसीके पास हैं। जिसकी जीविका चाहता है, बढ़ा देता है—

لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ شَرَعَ
لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا
إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ
أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى
الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ يَجْتَبِي
إِلَيْهِ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ
وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ
بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن
رَّبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ
أُورِثُوا الْكِتَابَ مِن بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ
فَلِذَٰلِكَ فَادْعُ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ
أَهْوَاءَهُمْ وَقُلْ آمَنتُ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِن كِتَابٍ
وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَا

और ( जिसकी चाहता है ) नपी-तुली कर देता है। बेशक वह हर चीज़ ( के हाल ) से वाक़िफ़ है ० ( लोगो ! ) उसने तुम्हारे लिये दीन का वही रस्ता ठहराया है, जिस ( पर चलने ) का उसने नूह को हुक्म दिया था और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारी तरफ़ ( भी ) हमने उसी रस्ते की वही की है और उसीका हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को ( भी ) हुक्म दिया था कि ( इसी ) दीन को क़ायम रखना और इसमें तफ़रक़ा न डालना। ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम जिस ( दीन ) की तरफ़ मुश्रिकीन को बुलाते हो, वह उन पर ( बहुत ही ) शाक़ गुज़रता है। अल्लाह जिसको चाहता है, इन्तिख़ाब करके अपनी तरफ़ खींच बुलाता है और जो ( उसकी तरफ़ ) रुजू लाते हैं, उनही को अपने तक ( पहुंचने का ) रस्ता दिखा देता है ० और ( अह्ल-किताब जो ) जुदा-जुदा फ़िरक़े ( हुये, तो ) समझ आये पीछे अपनी बाहमी ज़िद से हुये और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से एक वक़्त मुक़र्रर तक का वादा पहिले से न हुआ होता ( कि लोगों को क़यामत तक की मोहलत है )-तो इनमें ( इनके इख़्तिलाफ़ात का ) फ़ैसला ( कभी का ) कर दिया गया होता और जो लोग अगलों के बाद किताब ( इलाही ) के वारिस हुये-( यानी तुम्हारे ज़माने के यहूद व नसारा ) वह दीन-असली की तरफ़ से शक-दर-शक में ( पड़े ) हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम तो ( लोगों को ) उसी (अस्ल-दीन) की तरफ़ बुलाते रहो और ( ख़ुद भी ) जैसा तुमसे फ़र्मा दिया गया है ( उस पर ) क़ायम रहो और इन ( यहूद व नसारा ) की ख़्वाहिशों पर न चलो और ( इनसे साफ़ ) कहदो ( कि किताब की क़िस्म में ) से जो कुछ ख़ुदा ने उतारा है, मेरा तो सब पर ईमान है और मुझको ( ख़ुदा के हां से ) हुक्म मिला है कि तुम्हारे दरमियान ( तुम्हारे इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला ) इन्साफ़ (के साथ) करूं। ( वही ) अल्लाह ( तो ) हमारा पर्वर्दिगार है और वही तुम्हारा पर्वर्दिगार ( है )—

और ( जिसकी जीविका चाहता है ) नपी-तुली कर देता है। निस्सन्देह वह सर्वज्ञ है ( और जो कुछ करता है, अन्धाधुन्ध नहीं करता। जीविका का घटाना बढ़ाना भी मस्लहत से बाहर नहीं होता। लोगो ! ) अल्लाह ने तुम्हारे लिये ( कोई नई बात नियत नहीं की, वरन् ) धर्म का वही मार्ग निकाला है, जिस ( पर चलने ) की नूह को आज्ञा दी थी। और ( हे रसूल ! ) हमने तुम्हारे पास भी उसी ( मार्ग पर चलने ) की वही भेजी है और उन्हीं बातों की हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को आज्ञा दी थी। (अर्थात) इस धर्म को स्थिर रखना और उसमें फूट न डालना ( कि पूजनीय तथा उपासनीय केवल अल्लाह है। हे रसूल ! ) तुम जिस ( धर्म ) की ओर इन मुश्रिकों को बुला रहे हो, वह उन पर कठिन गुज़र रहा है। ( उनके कुफ़्र का कारण यही है-किन्तु ) अल्लाह जिसे चाहता है, छांटकर अपनी ओर खींच लेता है। और जो ( उसकी ओर) अवहित होता है, उसे ( अपना ) मार्ग दिखा देता है॥

और ( यह ईसाई यहूदी ) सबोध होने पर विभिन्न हो गये ( और जान बूझ कर उन्होंने विभेद किया—यह सब ) परस्पर के दुराग्रह के कारण से ( हुआ )। और यदि आप के पालनहारे ने पहिले से यह निश्चित न कर दिया होता कि निर्णय एक नियत समय पर होगा, तो उनके बीच ( कब का ) निर्णय हो चुका होता। और जो लोग ( अगले ) लोगों के पश्चात ( ख़ुदा की ) पुस्तक के उत्तराधिकारी हुये ( अर्थात हे रसूल ! तुम्हारे समय के यहूदी ईसाई, तो ) वह सत्य-धर्म के विषय में सन्देह-पूर्ण आशंका में ( पड़े ) हैं। ( न स्वयं मुसलमान होते हैं और न मुश्रिकों को मुसलमान होने देते हैं )॥

सो तुम ( उनकी कुछ पर्वाह न करो और लोगों को ) उसी सत्य-धर्म की ओर बुलाते रहो। और जैसी कि तुमको आज्ञा दी गई है, उस पर स्थिर रहो। और उन ( मुश्रिकों ) की दुर्वासनाओं पर न चलो। और ( उनसे खुल्लम खुल्ला ) कहदो कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा है अर्थात "पुस्तक"—मैं उस पर ईमान रखता हूं। और मुझे इसकी आज्ञा दी गई है कि तुम लोगों के बीच न्याय करूं ( और तुम्हारे परस्पर के विरोधों का निर्णय सचाई तथा न्याय के साथ करूं )। अल्लाह ( जिसने यह पुस्तक उतारी और मुझे तुम्हारे सुधार के लिये नियत किया ) हमारा और तुम्हारा ( सबका ) पालन कर्त्ता है। ( और ) हमारे निमित्त—

اعمالنا ولكم اعمالكم لا حجة بيننا وبينكم
الله يجمع بيننا واليه المصير ۝ والذين
يحاجون في الله من بعد ما استجيب له
حجتهم داحضة عند ربهم وعليهم
غضب ولهم عذاب شديد ۝ الله الذى
انزل الكتب بالحق والميزان وما
يدريك لعل الساعة قريب ۝ يستعجل
بها الذين لا يؤمنون بها والذين امنوا
مشفقون منها ويعلمون انها الحق الا
ان الذين يمارون في الساعة لفي ضلل
بعيد ۝ الله لطيف بعباده يرزق من يشاء
وهو القوى العزيز ۝ من كان يريد حرث
الاخرة نزد له في حرثه ومن كان يريد حرث

ع

हमारा किया हमको और तुम्हारा किया तुमको। हममें और तुम में कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह ही ( क़यामत के दिन ) हमको ( और तुमको एक जगह ) जमा करेगा और उसीकी तरफ़ ( सबको ) लौट कर जाना है० और जब ( बहुत से लोग इस्लाम लाकर ) ख़ुदा को मान चुके, तो जो लोग इसके बाद अल्लाह के बारे में हुज्जतें निकाल खड़ी करें, तो उनके पर्वर्दिगार के नज़्दीक उनकी हुज्जत फुस्फुसी और उन पर ( ख़ुदा का ) ग़ज़ब है और उनको सख़्त अज़ाब होना है ० अल्लाह ही तो है, जिसने ( पैग़म्बरों की मार्फ़त ) किताबें उतारीं ( और वह सब ) बरहक़ ( हैं ) और ( वह बजाय ख़ुद ) तराज़ू ( हैं, जिनसे भारी और हलका यानी हक़ व बातिल तोला जाता है ) और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या जान सकते हो—शायद क़यामत क़रीब ( ही आ लगी ) हो ० जिनको क़यामत का यक़ीन नहीं, वह तो उसके लिये जल्दी मचा रहे हैं और जो ईमान वाले हैं, वह उससे डर रहे हैं और जानते हैं कि क़यामत (का आना) बरहक़ है। सुनो जी ! जो लोग क़यामत ( के बारे ) में झगड़ते हैं, बेशक वह पहले दर्जे की गुमराही में हैं ० अल्लाह अपने बन्दों के ज़रा—ज़रा हाल से वाक़िफ़ है। जिसको ( जितनी रोज़ी ) चाहता है, देता है और वह बड़ा ज़ोरावर ( और ) ज़बरदस्त है ० जो कोई आख़िरत की खेती का तालिब हो, हम उसकी खेती में उसके लिये बरकत देंगे और जो दुनिया की खेती का तालिब हो—

---

हमारे कर्म हैं और तुम्हारे निमित्त तुम्हारे कर्म। ( प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों का उत्तरदाता है। और हर एक को उसी के कर्मानुसार प्रतिफल मिलेगा। अतः ) हमारे तुम्हारे बीच कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह हमको और तुमको ( क़यामत में एक स्थान पर ) एकत्रित करेगा। और उसीकी ओर ( हमें और तुम्हें ) लौटकर जाना है। ( और अपना २ हिसाब किताब देना है )। और जो लोग अल्लाह के विषय में ( तथा इस्लाम-धर्म के विषय में ) इसके उपरान्त कि वह ( बहुत से लोगों में ) मान लिया गया—( विरोध करते हैं और ) झगड़ते हैं, उनका वादानुवाद ( तथा तर्क वितर्क ) उनके पालनहारे के समीप पूर्णतया असत्य ( तथा वृथा ) है। और उन पर ख़ुदा का कोप ( उतरने वाला ) है और उन्हें कठिन अज़ाब होना है॥

( इन तर्क-वितर्क करने वाले लोगों को सोचना चाहिये कि ) अल्लाह ही है, जिसने सचाई के साथ इस पुस्तक ( अर्थात .क़ुर्आन ) को उतारा। और (.क़ुर्आन के आदेशों से सत्य असत्य बातों का अनुमान तथा अनुभव होता है, इस हेतु मानो ) तराज़ू को उतारा-( जिस से कि लोग इसके द्वारा अपने कर्मों का अनुमान तथा अनुभव करें और क़यामत से भय खायं ) और आपको ( हे रसूल ! ) क्या ख़बर है, सम्भव है कि क़यामत निकट ही ( होने वाली) हो। जो लोग क़यामत को नहीं मानते, वह उसकी जल्दी कर रहे हैं। और जो लोग ईमान रखते हैं, वह उससे भय खा रहे हैं और जानते हैं कि क़यामत ( का आना ) सत्य है॥

स्मरण रखिये ! कि जो लोग क़यामत के विषय में झगड़ते हैं, वह बड़ी पथ-भ्रष्टता में पड़े हैं। अल्लाह अपने बन्दों पर अति कृपालु है। ( और ) जिसको जितनी जीविका चाहता है, प्रदान करता है। और वह बलवान तथा बलिष्ट है। ( हे रसूल ! ) जो कोई परलोक की खेती का इरादा करता है ( अर्थात सांसारिक जीवन में शुभ कर्म करके परलोक में पुरस्कार की अभिलाषा रखता है )—तो हम उसकी खेती में बरकत देंगे ( और पारलौकिक पुरस्कार से उसे सुसम्पन्न करेंगे )। और जो ( केवल ) दुनिया की खेती का इच्छुक है—

الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝
أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ
بِهِ اللَّهُ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ
وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظَّالِمِينَ
مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتِ
الْجَنَّاتِ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ
هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ
عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ قُلْ لَا
أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى
وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
فَإِنْ يَشَإِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَى قَلْبِكَ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ

وَيُحِقُّ

तो हम बक़द्र-मुनासिब उसको दुनिया देंगे-( मगर ) फिर आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं ० क्या इन लोगों ( ने ख़ुदा ) के शरीक ( बना रक्खे ) हैं ( और ) उन्होंने इनके लिये दीन का रस्ता ठहरा दिया है, जिसका ख़ुदा ने हुक्म नहीं दिया और ( ख़ुदा की तरफ़ से क़यामत का ) क़तई वादा न हुआ होता, तो इनमें ( इनके इख़्तिलाफ़ात का ) फ़ैसला ( कभी का ) कर दिया गया होता और जो नाफ़र्मान हैं, उनको आख़िरत में ज़रूर अज़ाब-दर्दनाक होना है ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम उस दिन इन ) नाफ़र्मानों को देखोगे कि इन्होंने जैसे जैसे अमल ( दुनिया में ) किये हैं, उन ( के वबाल ) से डर रहे होंगे और वह ( चार व नाचार ) इन पर पड़ कर रहेगा और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, वह बाग़हाए-बहिश्त के सब्ज़ा-ज़ारों में होंगे। जो कुछ उनको दरकार होगा, उनके पर्वर्दिगार के हाँ उनके लिये (मौजूद) होगा। यही तो (ख़ुदा का) बड़ा फ़ज़्ल है ० ( और ) यही ( तो ) वह ( नेअमत ) है, जिसकी ख़ुश-ख़बरी ख़ुदा अपने उन बन्दों को देता है, जो ईमान लाये ( और ईमान के अलावा ) उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मैं तुम से इस ( तब्लीग़-रिसालत ) पर कोई मज़दूरी तो मांगता नहीं, मगर रिश्ते-नाते की महब्बत ( तो क़ायम रक्खो ) और जो शख़्स नेकी करेगा, उसके लिये हम उस ( की नेकी ) में और ज़ियादा ख़ूबी पैदा कर देंगे-(क्योंकि) अल्लाह ( गुनाहों का ) बख़्शने वाला-क़द्रदान है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या ( यह लोग तुम्हारी निस्बत ) कहते हैं कि इस शख़्स ने (क़ुर्आन के बारे में) ख़ुदा पर झूट ( बोहतान ) बांधा है। सो ( इस सूरत में ) ख़ुदा ( तो इस बात पर क़ादिर है कि ) अगर चाहे, तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे ( और तुम ऐसे कलाम के बनाने का इरादा ही न कर सको )-मगर अल्लाह अपने कलाम से झूट को मिटाता—

---

तो हम उसको ( उसकी योग्यतानुकूल ) दुनिया की खेती में से देंगे—( किन्तु ) पुनः परलोक में उसका कुछ अंश न होगा। क्या उनके पास ( ऐसे ख़ुदा के ) साझी हैं, जिन्होंने उनके निमित्त वह धर्म नियत कर दिया है, जो अल्लाह की ओर से नहीं है-( इसी कारण से यह लोग सत्य-धर्म में बाधा डालते हैं और बातें बनाते हैं)। और यदि (ख़ुदा की ओर से निर्णय के लिये) क़यामत का दिन नियत न होता तो उनके भेद-भाव का निर्णय ( दुनिया ही में ) कर दिया जाता। ( यह लोग उद्दण्ड तथा अत्याचारी हैं )। और जो अत्याचारी हैं, उनके लिये (क़यामत में) दुख-दायी अज़ाब है। उस दिन आप अत्याचारियों को देखेंगे कि अपने कर्मों ( के दण्ड की आपत्ति ) से डर रहे होंगे और वह ( आपत्ति ) उन पर पड़ कर रहेगी ॥

( उनके अतिरिक्त ) जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्होंने शुभ कर्म ( भी ) किये हैं, वह जन्नत के बाग़ों में होंगे। वह जो कुछ चाहेंगे, अपने पालनहारे के पास ( विद्यमान) पावेंगे। और (इसे साधारण बात न समझो, बरन्) ख़ुदा की बहुत बड़ी कृपा (तथा पुरस्कार) है। यही वह ( सुख आनन्द ) हैं ( जन्नत के )-जिनका अल्लाह अपने ईमान वाले और शुभ कर्म करने वाले बन्दों को मंगल-समाचार सुनाता है। ( हे रसूल ! तुम इन लोगों से ) कहो कि मैं तुमसे ( सत्य-धर्म की शिक्षा पर ) कुछ मँज़ूरी नहीं माँगता-( मैं तो तुमसे तुम्हारे भले की बातें कहता हूं। देखो ! ) तुम नातेदारों में प्रेम स्थिर रक्खो ॥

( नातेदारों में प्रेम स्थिर रखना बड़ी नेकी है ) और जो मनुष्य कोई नेकी करेगा, उसकी नेकी में हम और गुण बढ़ा देंगे। (स्मरण रक्खो ! और विश्वास करो कि ) निस्सन्देह अल्लाह ( पापों को ) क्षमा करने वाला ( और नेकियों का ) मान करने वाला है। ( हे रसूल तुम्हारे विषय में ) क्या यह लोग कहते हैं कि तुमने अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधा है—तो ( ऐसी दशा में तो ) अल्लाह ( इस पर शक्ति रखता है कि ) यदि चाहे, तो तुम्हारे हृदय पर मुहर लगादे। ( और तुम अपनी ओर से कोई वाक्य बनाने और ख़ुदा की ओर लगाने की इच्छा भी न कर सको ) और अल्लाह ( कभी असत्य को विजय नहीं देता, बरन् ) अपनी आज्ञाओं ( तथा वाक्यों ) से असत्य को मिटाता—

وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ
وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا
عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۙ وَيَسْتَجِيْبُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ
فَضْلِهٖ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ
وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ
وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ
خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ
بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۭ وَهُوَ الْوَلِيُّ
الْحَمِيْدُ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَاۗبَّةٍ ۭ وَهُوَ عَلٰي جَمْعِهِمْ اِذَا
يَشَاۗءُ قَدِيْرٌ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا
كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ وَمَآ اَنْتُمْ

और हक़ की जमाता ( और ) वह ( लोगों के ) दिली—ख़यालात ( तक ) से ( भी ) वाक़िफ़ है ० और वही तो है, जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़र्माता है और ( उनकी ) ख़तावों से दरगुज़र करता है और जैसे जैसे अमल तुम लोग करते हो, उनसे वाक़िफ़ है ० और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, उनकी ( दुआयें ) क़बूल करता और अपने फ़ज़्ल से उनको ( इस्तिहक़ाक़ से ) बढ़कर ( सवाब ) देता है और जो लोग मुन्किर हैं, उनके लिये सख़्त-अज़ाब है ० और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिये ( उनकी ) रोज़ी फ़राख़ करदे, तो वह ज़रूर मुल्क में सर्कशी करने लगें—मगर वह बक़द्र-मुनासिब ( हर एक की ) जितनी ( रोज़ी ) चाहता है, उतारता है-( क्योंकि ) वह अपने बन्दों ( की ज़रूरतों ) से ख़बरदार ( और उनके हाल का ) निगरां है ० और वही तो है कि लोगों ( को बारिश की तरफ़ से नाउम्मीदी हो जाती है, तो वह उन ) के नाउम्मीद हुये पीछे मेंह बर्साता और अपनी रह्मत को आम कर देता है और वह ( सबका ) कारसाज़ ( और ) सज़ावार—हम्द ( व सना ) है ० और उसीकी ( क़ुद्रत की ) निशानियों में से आस्मानों ( का ) और ज़मीन का पैदा करना है और (नीज़) उन जानदारों का, जो उसने आस्मानों और ज़मीन में फैला रक्खे हैं और वह जब चाहेगा-( यानी क़यामत के दिन ) उनके जमा कर लेने पर ( भी ) क़ादिर है ० और ( लोगो ! ) तुम पर जो मुसीबत पड़ती है, तो तुम्हारे अपने ही करतूत से, और ख़ुदा ( तुम्हारे ) बहुत ( से क़ुसूरों ) से दरगुज़र करता है ० वर्ना तुम—

---

और सत्य को जमाता है ( और स्थिर करता है )। निस्सन्देह वह हृदय के ( भीतर छिपे हुये ) भेदों से अभिज्ञ है। और वह ऐसा ( क्षमा करने वाला-करुणाकारो ) है कि अपने बन्दों की तौबा स्वीकार कर लेता है और बुराइयों को क्षमा कर देता है। और तुम ( हे ख़ुदा के बन्दो ! ) जो कुछ करते हो, उससे अभिज्ञ है। और जो लोग ईमान वाले तथा सुकर्मी हैं, उनकी प्रार्थनायें स्वीकार करता है। और अपनी कृपा ( तथा दया ) से उन्हें ( उनकी प्रार्थनाओं से ) अधिक प्रदान करता है। और जो लोग ( ईमान वाले तथा सुकर्मी नहीं, बरन उद्दण्ड तथा ) काफ़िर हैं, उनके लिये कठिन अज़ाब है। (और वह ख़ुदा के इन पुरस्कारों से वंचित हैं ) ॥

और यदि अल्लाह अपने समस्त बन्दों के निमित्त ( बिना अन्तर और बिना भेद के ) जीविका बढ़ा दे, तो वह दुनिया में ( बड़ी ही ) उद्दण्डता करने लगें ( और सीमा से हट जायँ )—परन्तु वह ( उनके निमित्त ) अनुमान के अनुकूल जितनी जीविका चाहता है, उतारता है। निस्सन्देह वह अपने बन्दों ( की आवश्यकताओं ) से भली भाँति अभिज्ञ ( है और उनकी दशा का ) देखने वाला है ॥

वही तो है कि ( जब वर्षा की कुछ आशा नहीं रहती ) लोगों के ( बिलकुल ) निराश हो जाने के पश्चात मेघ वर्षा देता है और अपनी अनुकम्पा को आम कर देता है। वह ( बड़ा ) कार्य-कर्त्ता तथा स्तुति प्रशंसा के योग्य है। उसका एक चिन्ह आकाशों तथा पृथ्वी का, और उन जीवधारियों का, जो इन दोनों के बीच उसने फैला रक्खे हैं—उत्पन्न करना है। और वह जब चाहेगा ( अर्थात क़यामत के दिन ) इन ( सब ) के एकत्रित कर लेने पर भी पूर्ण शक्ति रखता है। और ( हे मनुष्यो ! ) तुम पर जो आपत्ति आती है, वह अपने हाथों ( और अपने कर्मों के कारण ) आती है। अल्लाह तो ( तुम्हारी ) बहुत सी ( भूलों तथा ख़ताओं ) को क्षमा कर देता है—

بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن
وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ
كَالْأَعْلَامِ ۝ إِن يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ
رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا
وَيَعْفُ عَن كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ
فِي آيَاتِنَا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ۝ فَمَا أُوتِيتُم مِّن
شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِندَ اللَّهِ
خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ
وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ
وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ۝ وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا
لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ
وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ

(कुप) ज़मीन पर (किसी तरफ़ भाग कर ख़ुदा को) हरा तो सकते हो नहीं और ख़ुदा के सिवा न कोई तुम्हारा कारसाज़ है और न कोई (हामी व) मददगार ० और उसीकी (कुद्रत की) निशानियों में से (बादबानी) जहाज़ हैं, जो समन्दर में पहाड़ों की तरह (ऊँचे ऊँचे दिखाई देते) हैं ० ख़ुदा चाहे, तो हवा को ठहरा दे—तो जहाज़ (भी) समन्दर की सतह पर खड़े के खड़े रह जाएँ। जितने (बन्दे) सब्र (व) शुक्र करने वाले हैं, उनके लिये जहाज़ों के हर तरफ़ को दौड़े दौड़े फिरने में (भी कुद्रत—ख़ुदा की बहुतेरी) निशानियां हैं ० या (चाहे तो ज़ोर की हवा चला दे और) अह्ल-जहाज़ को बद-किर्दारियों के बदले में जहाज़ों को (तूफ़ान से) तबाह करदे-(तो बाज़ ग़र्क़ हों) और बहुतेरों (के कुसूर) से दरगुज़र करे (कि वह बावजूद जहाज़ की तबाही के किसी तरह बच-बचा जाएँ) ० और जो लोग हमारी (कुद्रत की) निशानियों में कट-हुज्जतियां किया करते हैं-(जहाज़ की तबाही के वक्त) जान लें कि (अब) उनको कहीं भी जाए-गुरेज़ नहीं ० तो (लोगो!) जो कुछ भी तुमको दिया गया-(वह) दुनिया की ज़िन्दगी का (चन्द-रोज़ा) साज़ व सामान है और जो (अज्र) ख़ुदा के हां है (वह उससे) कहीं बेहतर और पायदार है—(मगर) उन (ही) लोगों के लिये, जो ईमान लाये और (ईमान के अलावा) अपने पर्वर्दिगार पर (भी) भरोसा रखते हैं ० और जो बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाई की से बातों से कनारा-कश रहते हैं और जब उनको गुस्सा आजाता है, तो (लोगों की ख़तावों से) दरगुज़र करते हैं ० और जो अपने पर्वर्दिगार का हुक्म मानते और नमाज़ पढ़ते हैं और उनके (जितने) काम (हैं) आपस के मश्वरे (से होते) हैं और हमने जो उनको दे रक्खा है, उसमें से (राह-ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं ० और जो ऐसे (ग़ैरत-मन्द) हैं कि जब उन पर (किसी तरफ़ से) बेजा ज़ियादती होती है—

---

और (यह उसकी कृपा तथा दया है कि क्षमा कर देता है, अन्यथा) तुम दुनिया में उसे विवश नहीं कर सकते। और (तुम अपने विचारों को शुद्ध करो और स्मरण रक्खो कि) अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई (सच्चा) मित्र तथा सहायक नहीं है। और उस (सर्व शक्तिमान का) एक चिन्ह वह जहाज़ हैं, जो समुद्र में ऊँचे पर्वतों की तरह (दीख पड़ते) हैं। (यह जहाज़ वायु के द्वारा चलते हैं)। यदि वह चाहे, तो वायु को रोक दे और यह जहाज़ समुद्र के तल पर खड़े के खड़े रह जायं। (पवन के चलाने और ठहराने और उसके द्वारा जहाज़ों के चलने और रुकने)-इन (सब) बातों में सन्तोष (तथा ध्यान-पूर्वक सोच विचार) करने वाले और (सीधा मार्ग पाने पर) धन्यवाद देने वाले बन्दों के लिये (ख़ुदा की शक्ति के) चिन्ह विद्यमान हैं॥

(और अल्लाह में यह भी शक्ति है कि) वह चाहे, तो इन (जहाज़ वालों) के कुकर्मों के कारण से जहाज़ों को (प्रचण्ड-वायु के द्वारा) नष्ट करदे और (बहु-जन-संख्या जहाज़ के छिन्न भिन्न हो जाने से नष्ट हो जाय और) बहुतों को (अपनी दया तथा कृपा से) क्षमा करदे और (जहाज़ डूबने के समय) वह लोग-जो हमारे चिन्हों के विषय में लड़ते झगड़ते हैं, जान लें कि (अब) उनके लिये (इस सर्व-नाशक आपत्ति से) बचने का कोई स्थान नहीं है। सो (हे ख़ुदा के अज़ाब से अचेत और दुनिया की ओर झुकने वाले लोगो!) तुमको जो कुछ (भी) दिया गया है, वह सांसारिक जीवन (के कुछ दिन) का लाभ है। और अल्लाह के पास जो (फल तथा पुरस्कार) है, वह इससे बहुत उत्तम तथा शेष रहने वाला है—(परन्तु) यह उन लोगों के निमित्त है, जो ईमान वाले हैं और अपने पालनहारे पर भरोसा रखते हैं॥

और जो ऐसे (संयमी) हैं कि बड़े पापों तथा निर्लज्जता की बातों से (विशेषकर) बचते रहते हैं। और (उन्हें) जब (किसी पर) क्रोध आ जाता है, तो (ख़ुदा से भय खाकर) क्षमा कर देते हैं। और जो ऐसे हैं कि अपने पालन कर्त्ता की (प्रत्येक) आज्ञा मानते हैं। और नियमानुसार नमाज़ पढ़ते हैं। और उनके (जितने) कार्य (होते हैं, वह) परस्पर के परामर्श से होते हैं। और जो जीविका हमने उन्हें प्रदान की है, उसमें से (वह ख़ुदा के मार्ग में भी) व्यय करते हैं। और जो ऐसे हैं कि (अपनी ओर से किसी को दुख नहीं पहुंचाते। हां!) जब उन पर—

तो वह ( वाजिबी ) बदला ले लेते हैं ० और बुराई का बदला है, वैसी ही बुराई। इस पर (भी) जो माफ़ करदे और सुलह करले, तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है। बेशक वह ज़ुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता ० और हां! किसी पर ज़ुल्म हुआ हो और वह उसके बाद बदला ले, तो यह लोग ( माज़ूर हैं )—इन पर कोई इल्ज़ाम नहीं ० इल्ज़ाम ( तो ) उनही पर है, जो लोगों पर ज़ुल्म करते और नाहक़ ( ना-रवा ) मुल्क में (लोगों पर) ज़ियादती करते हैं। यही लोग हैं, जिनको अज़ाब-दर्दनाक होना है ० और अलबत्ता जो शख़्स सब्र करे और (दूसरे की ख़ता) बख़्श दे, तो बेशक यह बड़ी हिम्मत के काम हैं ० और जिसको ख़ुदा गुमराह करे, तो फिर उसका कोई ( यार व ) मददगार नहीं और ( ऐ पैग़म्बर ! क़यामत के दिन तुम ) ज़ालिमों को देखोगे कि जब अज़ाब को ( अपनी आंखों ) देख लेंगे ( तो हसरत से ) कहेंगे कि भला ( दुनिया में ) फिर लौट चलने की भी कोई सबील है ० और तुम इन लोगों को देखोगे कि दोज़ख़ के रूबरू लाये जाएँगे (और) मारे ज़िल्लत के झुके हुये ( और ) कनखियों से देखते (जाते) होंगे और (उस वक़्) ईमान वाले कहेंगे कि हक़ीक़त में (बड़े) बद-नसीब तो वह हैं, जिन्होंने ( ख़ुद गुमराह होने से आज ) क़यामत के दिन अपने आप को ( भी ) तबाह किया—

الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۝ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ
مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللّٰهِ ۚ إِنَّهُ
لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِينَ ۝ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ
فَأُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيلٍ ۝ إِنَّمَا السَّبِيلُ
عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ
عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ وَمَنْ يُضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ
وَلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهِ ۗ وَتَرَى الظّٰلِمِينَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيلٍ
وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خٰشِعِينَ مِنَ
الذُّلِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ
اٰمَنُوٓا إِنَّ الْخٰسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا أَنْفُسَهُمْ

ع ४

---

वृथा अत्याचार होता है, तो उसका बदला लेते हैं। और बुराई का बदला उसी प्रकार की बुराई है-( अर्थात बदले का परिमाण बढ़ना न चाहिये )। और जो मनुष्य (बदला न ले और) क्षमा करदे और सन्धि करले, तो उसका पुरस्कार अल्लाह के ज़िम्मे है। निस्सन्देह ( वह ऐसे लोगों को पुरस्कार देता है और ) अत्याचारियों को प्रिय नहीं रखता। और जिस मनुष्य पर अत्याचार हुआ हो और उसके पश्चात वह ( अत्याचार का ) बदला ले, तो उस पर कोई दोष नहीं। दोष तो उन पर है, जो लोगों पर ( व्यर्थ ) अत्याचार ( तथा अन्याय ) करते हैं। और ( विना कारण तथा ) नाहक़ दुनिया में उद्दण्डता करते हैं। यही लोग हैं, जिनके लिये दुखदायी अज़ाब है ॥

और जिस मनुष्य ने सन्तोष किया और ( दूसरे के अत्याचार को ) क्षमा कर दिया-( तो ) यह बड़े साहस (और बड़े हौसिले ) का काम है। ( ऐसा साहस उन्हीं नेक बन्दों में होता है, जिनको ख़ुदा की ओर से योग्यता तथा शिक्षा प्रदान होती है। जो लोग पथ-भ्रष्टता तथा गुमराही में लिप्त होते हैं, उनमें यह बात नहीं पाई जाती)। और जिसे अल्लाह पथ-भ्रष्टता में डाल दे, तो पुनः उसका कोई मित्र ( तथा सहायक ) नहीं ॥

और आप इन अत्याचारियों को देखेंगे कि वह ( क़यामत के दिन ) अज़ाब को देख कर कहेंगे कि क्या (संसार में दुबारा) लौट जाने की भी कोई राह है। और आप उनको देखेंगे कि वह दोज़ख़ के समक्ष इस दशा में लाये जायँगे कि अनादर के कारण से(सहमे २ और) झुके २ होंगे। ( भय के मारे आँख न उठा सकेंगे और देखेंगे भी, तो ) छिपी दृष्टि से देखेंगे। और ईमान वाले ( यह दृश्य देखकर ) कहेंगे कि बड़े दुर्भाग्य हैं—वह लोग, जिन्होंने ( ख़ुदा की अवज्ञा करके आज ) क़यामत के दिन अपनी भी हानि की—

وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ
عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ
يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ۝ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ
يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا
فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا
الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ
يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ
ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ

قدیر

और ( अपना बुरा नमूना दिखाने और बहकाने से) अपने घर वालों को ( भी )। सुनो जी ! ज़ुल्म करने वाले ज़रूर हमेशा के अज़ाब में रहेंगे ० और ख़ुदा के सिवा उनके कोई हिमायती न होंगे कि उनकी मदद करें और जिसको ख़ुदा गुमराह करे, तो उसके लिये ( नजात का ) कोई रस्ता ही नहीं ० ( लोगो ! ) उस रोज़ ( क़यामत ) के आने से पहिले-जो ख़ुदा की तरफ़ से टलने वाला नहीं, अपने पर्वर्दिगार का कहा मानो कि उस दिन न तो तुमको कहीं पनाह होगी और न तुमसे गुनाहों का इन्कार ही करते बन पड़ेगा ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर (इतने समझाने पर भी यह लोग) रू-गर्दानी करते रहें, तो हमने तुमको इन पर कुछ दारोग़ा बनाकर तो भेजा नहीं। तुम्हारे ज़िम्मे तो (हुक्म-इलाही का) पहुंचा देना है और बस। और जब हम आदमी को अपनी रह्मत ( की लज़्ज़त ) चखाते हैं, तो वह उससे ख़ुश हो जाता है और अगर लोगों को उनके अपने ही करतूत के बदले में कोई मुसीबत पहुंच जाती है, तो ( ख़ुदा की शिकायत करने लगते हैं और ) इन्सान बड़ा ही एहसान-फ़रामोश है ० आस्मानों और ज़मीन को सल्तनत अल्लाह ही की है। जो चाहता है, पैदा करता है। जिसको चाहता है-(निरी) बेटियाँ इनायत करता है और जिसको चाहता है-(निरे) बेटे इनायत करता है ० या बेटे और बेटियाँ ( मिलाकर ) उनको दोनों क़िस्म की औलाद देता है और जिसको चाहता है, ऐसा ( बेनाम व निशान ) कर देता है कि उसके औलाद ही नहीं होती ( और ) वह ( औलाद की मस्लहत से ) वाक़िफ़—

---

और अपने बाल बच्चों की भी-( क्योंकि उन्होंने भी उनका अनुगमन किया और सीधे मार्ग से वंचित रहे )। हां ! ( उन्होंने बड़ी उद्दण्डता की और ) निस्सन्देह उद्दण्ड ( लोग क़यामत के दिन ) सर्वदा के अज़ाब में लिप्त किये जायँगे। और ( वहां ) ख़ुदा के अतिरिक्त कोई उनका मित्र तथा सहायक न होगा, जो उनकी सहायता करे ( और उस अज़ाब से बचावे। यह उनको पथ-भ्रष्टता का प्रतिफल होगा )। और जिसको ख़ुदा ने पथ-भ्रष्टता तथा गुमराही में डाल दिया, उस ( पथ-भ्रष्ट ) के निमित्त ( मुक्ति का ) कोई मार्ग नहीं॥

( अतः हे मनुष्यो ! क़यामत के अज़ाब से डरो और ) उस दिन ( के आने ) से पहिले अपने पालनहारे के आज्ञाकारी ( बन्दे ) बन जाओ, जो ख़ुदा की ओर से ( होगा और किसी के टाले ) टलने वाला नहीं। उस दिन न तुमको कोई आश्रय प्राप्त होगा और न तुम से ( अपने पापों का ) इन्कार ही बन पड़ेगा। सो यदि यह लोग ( इन उपदेशों पर भी ) मुंह फेर लें, तो ( हे रसूल ! आप इसका कुछ सोच न करें, क्योंकि ) हमने आपको ( कुछ ) उनका रखवाला बनाकर तो भेजा नहीं है ( कि आप पर उनकी विमुखता का प्रभाव पड़े )। आपका कर्त्तव्य तो केवल इतना है कि आप उनको ( हमारे आदेश ) पहुंचा दें ( और बस )॥

और ( मनुष्य की भी अनोखी दशा है )। जब हम मनुष्य ( पर कृपा तथा दया करते हैं और उस ) को अपनी रह्मत चखाते हैं तो प्रसन्न हो जाता है। और जब उसे अपने ही किये हुये कामों से कोई बुराई आ घेरती है, तो यही मनुष्य (जो प्रसन्न हो रहा था)-अत्यन्त कृतघ्न ( और उपकार न मानने वाला सिद्ध ) होता है। ( इन उपकार न मानने वालों और मूर्खों को ज्ञात होना चाहिये कि ) आकाशों और पृथ्वी का राज्य अल्लाह ही का है। वह ( सर्व शक्तिमान ) जो चाहता है, उत्पन्न करता है। और जिसे चाहता है, पुत्रियाँ प्रदान करता है और जिसे चाहता है, पुत्र प्रदान करता है-या पुत्र और पुत्रियां मिलाकर ( दोनों प्रकार की सन्तान ) प्रदान करता है। और जिसे चाहता है, बाँझ कर देता है ( कि उसके सन्तान ही नहीं होती )। निस्सन्देह वह सर्वज्ञ ( तथा सर्व ) शक्तिमान है॥

( और मर्द व ज़न बनाने पर ) क़ादिर है ० और किसी आदमी की ताब नहीं कि खुदा उससे ( दू-बदू होकर ) कलाम करे, मगर इलहाम ( के ज़रिये ) से, या परदे के पीछे से, या किसी फ़रिश्ते को उसके पास भेज देता है और वह खुदा के हुक्म से जो उसको मंज़ूर होता है ( पैग़ाम-खुदा ) पहुंचा देता है। बेशक खुदा आलीशान ( और ) हिकमत वाला है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) इसी तरह हमने अपने हुक्म से ( दीन की ) जान ( यानी यह किताब ) तुम्हारी तरफ़ वही के ज़रिये से भेजी है। तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या चीज़ है और न (यह जानते थे कि) ईमान ( किसको कहते हैं )-मगर हमने कुर्आन को एक नूर बना दिया है कि अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं, उसके ज़रिये से (दीन का ) रस्ता दिखा देते हैं और ( ऐ पैग़म्बर ! ) इसमें शक नहीं कि तुम (तो लोगों को) सीधा ही रस्ता दिखाते हो ० (यानी) उस खुदा का रस्ता कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है-( सब ) उसीका है। सुनो जी ! खुदा ही सब कामों का मर्जए-( अख़ीर ) है ०

## सूरत-ज़ुखरुफ़

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ८९ आयतें और ७ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० हा-मीम् ० ( इस ) किताब ( यानी कुर्आन ) की क़सम है, जिसके मतालिब साफ़ और वज़ेह हैं ० कि हमने इसको (साफ़ और सलीस) अरबी (ज़बान का ) कुर्आन बनाया है, ताकि तुम अह्ले-अरब इसको ब-आसानी समझो ( और तुम्हारे ज़रिये से दूसरे लोग ) ० और यह (कुर्आन) हमारे हाँ अस्ल-किताब ( यानी लौह-महफ़ूज़ ) में—

قَدِيرٌ ۝ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللّٰهُ إِلَّا وَحْيًا
أَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ
بِإِذْنِهِ مَا يَشَآءُ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ
أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِي
مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ
نُورًا نَّهْدِي بِهِ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا وَإِنَّكَ
لَتَهْدِيٓ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ
الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
أَلَآ إِلَى اللّٰهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ۝

سورة الزخرف مكية وهي تسع وثمانون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا
عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّهُ فِيٓ أُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا

---

और ( हे रसूल ! आपसे काफ़िर जो यह कहते हैं कि खुदा तुम्हारे सन्मुख होकर वार्त्तालाप क्यों नहीं करता और मूसा की तरह तुमसे सम्भाषण क्यों नहीं करता ? उनसे कहिये कि ) किसी मनुष्य में यह शक्ति नहीं कि अल्लाह उससे ( सन्मुख होकर) सम्भाषण करे। अल्लाह के सम्भाषण की केवल यह रीति है कि वह वही-द्वारा ( सम्भाषण करता है )-अथवा पट की ओट से (जिससे कि पटों के कारण से दुर्बल मनुष्य की बुद्धि स्थिर रहे ) वा (फ़रिश्ता को) दूत बनाकर भेजता है और वह (फ़रिश्ता) उसकी आज्ञा से जो कुछ वह (अल्लाह) चाहता है, सन्देश पहुंचाता है। निस्सन्देह वह उच्च पद वाला है ( और ) वह बड़ा हिकमत वाला है ॥

और इसी प्रकार हमने अपने आदेशों को रूह ( अर्थात कुर्आन ) को आप पर वही-द्वारा उतारा। आप जानते ( भी ) न थे कि पुस्तक क्या है और ईमान क्या है—परन्तु हमने इस (कुर्आन) को एक ज्योति बना दिया है। उसके द्वारा अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं, सीधा मार्ग दिखाते हैं। और ( हे रसूल ! आप इस कुर्आन के अनुसार लोगों को उपदेश देते हैं और ) आप निस्सन्देह सीधा मार्ग दिखाते हैं। ( अर्थात ) उस अल्लाह का मार्ग कि आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ है, उसी का है। ( और ) सचेत रहना चाहिये कि अल्लाह ही की ओर समस्त कार्य लौटने वाले हैं—( क्योंकि वही सबका आधार है ) ॥

## सूरत-ज़ुखरुफ़

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ८८ आयतें और ७ रुकूअ हैं ॥

इस आसान पुस्तक की शपथ है ! (अर्थात हम कुर्आन ही को साक्षी में देते हैं) कि हमने उसे (अत्यन्त स्पष्ट तथा सरल) अरबी भाषा का कुर्आन बनाया है, जिससे कि ( हे अरब-निवासियो ! तुम सुगमता-पूर्वक उसके अर्थ ) समझो ( और दूसरों को समझाओ )। और निस्सन्देह यह ( कुर्आन ) हमारे पास मुख्य-पुस्तक ( अर्थात लौह-महफ़ज़ ) में ( लिखा हुआ विद्यामान ) है—

لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝ أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن
كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِن نَّبِيٍّ
فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُم
بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم
مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ
الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا
وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝
وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا
بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝ وَالَّذِي
خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ
وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝ لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ
ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ

( लिखा हुआ मौजूद है और ) बड़े पाये की ( और ) हिकमत (व दानाई ) की ( किताब क़रार दी गई ) है ० तो क्या इस वजह से कि तुम लोग हद्द ( उबूदियत ) से बाहर हो गये हो—हम ( तुम्हारी इस्लाह से ) बे-तअल्लुक़ होकर नसीहत करना छोड़ देंगे ० और अगले लोगों में हमने बहुत से पैग़म्बर भेजे ० और ( उनका भी यही हाल था कि ) जो पैग़म्बर उनके पास आता, अदबदाकर उसकी हँसी ही उड़ाते ० फिर ( आख़िरकार ) हमने उनको कि वह इन ( कुफ़्फ़ार-मक्का ) से कहीं ज़ोरावर थे, हलाक कर मारा और ( दुनिया में उन ) अगले लोगों के अफ़साने चल पड़े ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर तुम इन लोगों से पूछो कि ( भला ) आसमानों ( को ) और ज़मीन को किसने पैदा किया है ? तो वह इनके पैदा करने को ( उसी ख़ुदाए ) ज़बरदस्त दाना ( व बीना ) की तरफ़ मन्सूब करेंगे ० जिसने ज़मीन को तुम लोगों के लिये फ़र्श बनाया है और तुम्हारे ( चलने के ) लिये उसमें रस्ते निकाले हैं, ताकि तुम ( अपनी मन्ज़िल-मक़्सूद को ) पहुंचो ० और जिसने एक अन्दाज़े के साथ आसमान से पानी बर्साया। फिर हमही ने उस ( पानी के ज़रिये ) से मरे हुये ( यानी पड़ती पड़े हुये ) शहर को जिला उठाया। इसी तरह तुम लोग भी ( क़यामत के दिन क़ब्रों से ) निकाले जावोगे ० और जिसने हर क़िस्म की चीज़ें पैदा की हैं और तुम्हारे लिये किश्तियां और चौपाये बनाये हैं, जिन पर तुम सवार होते हो ० कि तुम उनकी पीठ पर ( अच्छी तरह इतमीनान से ) बैठ जाओ । फिर जब ( इतमीनान से ) उन पर बैठ जाओ, तो अपने पर्वर्दिगार का एहसान याद करो—

---

और ( यह ) बड़े पद की हिकमत से परिपूर्ण (पुस्तक) है। देखो तो सही (हे मक्का के काफ़िरो !) क्या हम इस कारण से कि तुम ( कुफ़ शिर्क में ) सीमा पार हो गये हो, तुमको भुला दें और ( तुम्हें ) शिक्षा देना छोड़ दें ? ( ऐसा कभी नहीं हो सकता )। और पहिले लोगों में ( भी ) हमने बहुत से पैग़म्बर भेजे ( थे ) और ( उनकी दशा भी यही थी कि ) जो पैग़म्बर आया, उसके साथ उन्होंने उपहास किया ( और उसे झूठा समझा )। सो उनको जो ( इन मक्का के काफ़िरों से ) शक्ति तथा बल में बहुत बढ़े चढ़े थे, हमने नष्ट कर दिया। और उन अगले लोगों का उदाहरण ( क़ुर्आन में अनेक स्थान पर ) गुज़र चुका है। ( और उनकी कथा जगत-विख्यात हो चुकी है ) ॥

और ( हे रसूल ! ) यदि आप उन ( काफ़िरों ) से पूछें कि आकाश तथा पृथ्वी का उत्पन्न करने वाला कौन है, तो ( अवश्य ) कहेंगे कि उनको बलवन्त ( तथा ) विज्ञ ख़ुदा ने उत्पन्न किया है। ( वही सर्व शक्तिमान ) जिसने पृथ्वी को तुम्हारे निमित्त बिछौना बना दिया और उसमें ( चलने फिरने और देश-देशान्तर में पर्यटन करने के निमित्त ) मार्ग बनाये, जिससे कि तुम ( अपने लक्ष्य-स्थान की ओर ) मार्ग पा सको ( और भटकते न फिरो। अल्लाह के अतिरिक्त वह काफ़िर किसी और को आकाश तथा पृथ्वी का रचनेवाला नहीं सिद्ध कर सकते ) ॥

( अल्लाह ) ऐसा ( अद्वितीय रचनाकार ) है कि उसने एक परिमाण के साथ ( अर्थात आवश्यकतानुकूल ) आकाश से पानी उतारा। ( हां ! ) हमने ( आकाश से जल वर्षाया और ) उससे मुर्दा बस्ती को जीवित किया। ( अर्थात सूखी भूमि को सींच कर हरियाली तथा खेतियां उगाईं। भूमि भी मुर्दा से ज़िन्दा हुई और उसके निवासी जो भूखों मर रहे थे, उनमें जीव पड़ने लगा। जिस प्रकार यह मुर्दा पृथ्वी दुबारा जीवित हुई ) इसी प्रकार तुम भी ( क़यामत में जीवित करके क़ब्रों से ) निकाले जाओगे। वह ( अद्वितीय सृष्टि कर्ता ) ऐसा है कि उसने सब प्रकार की वस्तुयें उत्पन्न कीं और तुम्हारे निमित्त नौकाएं और पशु बनाये, जिन पर तुम सवार होते हो। ( और उनको ऐसा बनाया ) कि तुम उनकी पीठ पर ( चैन से ) बैठ सको। और जब तुम ( इस प्रकार आनन्द तथा सत्कार-पूर्वक ) सवार हो, तो अपने पालन कर्त्ता के उपकार तथा कृपा का स्मरण करो—

عليه وتقولوا سبحن الذي سخر لنا هذا
وما كنا له مقرنين ۝ وانا الى ربنا لمنقلبون
وجعلوا له من عباده جزءا ان الانسان
لكفور مبين ۝ ام اتخذ مما يخلق بنت
واصفكم بالبنين ۝ واذا بشر احدهم
بما ضرب للرحمن مثلا ظل وجهه
مسودا وهو كظيم ۝ اومن ينشؤا
في الحلية وهو في الخصام غير مبين ۝
وجعلوا الملئكة الذين هم عبد
الرحمن اناثا اشهدوا خلقهم ستكتب
شهادتهم ويسئلون ۝ وقالوا لو شاء الرحمن
ما عبدنهم ما لهم بذلك من علم ان هم
الا يخرصون ۝ ام اتينهم كتبا من قبله

और ( उसका ) शुक्र अदा करो कि पाक है, वह ( ज़ात )--जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया है और हम ( तो ऐसे ताक़तवर ) न थे कि इनको ( अपने ) क़ाबू में कर लेते ० और बेशक हमको अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौट कर जाना है ० और लोगों ने खुदा के बन्दों में से (फ़रिश्तों को ) उसका लख़्त ( जिगर यानी औलाद ) क़रार दे रक्खा है। कुछ शक नहीं कि इन्सान खुल्लम खुल्ला बड़ा ही नाशुक्र है ० क्या खुदा ने अपनी मख़्लूक़ात में से ( आप तो ) बेटियाँ लीं और तुम ( लोगों ) को बेटे देकर नवाज़ा ० और ( हाल यह है कि ) जब इन लोगों में से किसी को उस चीज़ के होने की खुश-ख़बरी दीजाए ( यानी बेटी की )-जिसकी तोहमत यह ( खुदाए ) रह्मान पर रखता है—तो ( मारे गुस्से के ) अन्दर ही अन्दर ताव खाकर उसका मुंह काला पड़ जाये ० क्या ( बेटी-ज़ात ) जो ज़ेवरों में नश्व-नुमा पाये और ( कोई झगड़ा आ पड़े, तो ) झगड़ते वक़्त ( अच्छी तरह ) इज़हार ( मतलब ) न कर सके—(वह खुदा की शान के ज़ेबा है ) ० और इन लोगों ने फ़रिश्तों को, कि वह (भी और मख़्लूक़ात की तरह खुदाए) रह्मान के बन्दे हैं, औरत-ज़ात क़रार दे रक्खा है। क्या जिस वक़्त खुदा ने फ़रिश्तों को पैदा किया, यह लोग मौजूद थे ? ( या यूंही बाद-हवाई बातें बनाते हैं ! )। इनका ( यह ) मक़ूला क़लम-बन्द किया जा रहा है और ( क़यामत में इसकी ) इनसे बाज़-पुर्स होगी ० और कहते हैं कि ( खुदाए ) रह्मान चाहता, तो हम उनकी परस्तिश न करते। इनको मामले-तक़्दीर की कुछ ख़बर तो है नहीं—निरी अटकलें दौड़ा रहे हैं ० या इनको हमने इसके पहिले से कोई किताब दे रक्खी है—

---

और ( सहसा ) बोल उठो कि पवित्र है, वह अल्लाह-जिसने इस सवारी को हमारे वश में कर दिया, अन्यथा हम ऐसे शक्तिशाली न थे कि इसे आधीन कर लेते। और (इन उपकारों से कुछ दिन लाभ उठाकर) निस्सन्देह हम अपने पालनहारे की ओर लौटकर जाने वाले हैं-परन्तु ( अपने मुख से ऐसा कहने और मन में कृतज्ञ होने के स्थान पर ) काफ़िरों ने अल्लाह का एक अंश उसके बन्दों में से नियत किया ( अर्थात फ़रिश्तों को उसकी पुत्रियाँ ठहराया )। सत्य यह है कि मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न ( तथा उपकार न मानने वाला ) है॥

( इन मूर्खों से पूछिये तो सही )—क्या अल्लाह ने अपनी सृष्टि में से पुत्रियाँ लीं और तुमको पुत्र प्रदान करके गौरवान्वित किया। और जिस समय उनमें से किसी को उसकी ( उत्पत्ति की ) सूचना दी जाती है, जिसका उसने करुणा-निधान ( खुदा ) के निमित्त दृष्टान्त दिया है ( अर्थात पुत्री का )-तो उसका मुंह काला (प्रकाश रहित ) हो जाता है और उसका हृदय शोक-ग्रस्त हो जाता है। क्या पुत्रियाँ जो आभूषणों में पाली गईं और ( कोई झगड़ा हो जाय, तो ) वह खुल कर ( उत्साह-पूर्वक अपना उद्देश भी ) न वर्णन कर सकें—( खुदा के योग्य हैं ? )॥

और उन्होंने फ़रिश्तों को जो करुणा-निधान ( खुदा ) के बन्दे हैं, स्त्रियाँ ठहराया है—( तो ) क्या उनकी उत्पत्ति के समय यह विद्यमान थे ? ( अच्छा ! तो ) उनकी साक्षी लिखी जावेगी और (क़यामत में ) उनसे पूछ गछ होगी—( जिससे कि उनको मनघड़न्त बातों का प्रतिफल ज्ञात हो )। और यह लोग ( धूर्तता से ) कहते हैं कि यदि करुणा-निधान ( खुदा ) चाहता, तो हम उन ( फ़रिश्तों ) की उपासना न करते—( हम तो खुदा की प्रसन्नता के निमित्त उनको उपासना करते हैं और इस हेतु हमसे कुछ पूछ गछ न होगी। यह लोग ऐसी बातें बनाते हैं )—यद्यपि उनको इस बात का कुछ भी ज्ञान नहीं है और केवल अटकल से काम ले रहे हैं। ( यह निरी अटकल नहीं है, तो ) क्या हमने इससे पहिले उनको कोई पुस्तक दी है—

فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ۝ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ
اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝
وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ
مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا
عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ۝ قٰلَ اَوَلَوْ
جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ
قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ ५
مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ
سَيَهْدِيْنِ ۝ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً ۢ بَاقِيَةً فِيْ
عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ
وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝

कि यह उसकी दलील पकड़ते हैं ० ( नहीं )—बल्कि ( यह तो यूं ) कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादों को एक तरीक़े पर पाया और उनही के क़दम ब क़दम हम भी ठीक रस्ते पर चले जा रहे हैं ० और (ऐ पैग़म्बर !) इसी तरह हमने तुमसे पहिले जब कभी किसी गांव में कोई ( पैग़म्बर ) डर सुनाने वाला भेजा, वहां के आसूदा लोगों ने यही कहा कि हमने अपने बाप दादों को एक तरीक़े पर पाया और उनही के क़दम ब क़दम हम ( भी उनकी ) पैरवी कर रहे हैं ० ( इस पर उनके पैग़म्बर ने उनसे ) कहा कि जिस ( तरीक़े ) पर तुमने अपने बाप-दादों को पाया, अगर मैं उससे कहीं सीधा रस्ता ( यानी दीन-हक़ ) लेकर तुम्हारे पास आया हूं, तो भी ( तुम उसी पुराने ढर्रे पर चले जावोगे ? ) वह बोले ( कुछ भी हो )-जो ( दीन ) तुमको देकर भेजा गया है, हमतो उसको मानने वाले हैं नहीं ० आख़िरकार हमने उनसे ( उनकी सर्कशी का ) बदला लिया—तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) देखो कि ( पैग़म्बरों के ) झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ ० और एक वक़्त ( वह भी था कि ) इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम ( के लोगों ) से कहा कि जिन ( बुतों ) की तुम परस्तिश करते हो, मुझको तो उनसे कुछ सरोकार नहीं ० मगर ( हाँ ! मुझको उस ख़ुदा से सरोकार है )-जिस ने मुझको पैदा किया। सो वही मुझको राह-रास्त ( भी ) दिखाएगा ० और उन्होंने इस ( अक़ीदे-तौहीद ) को (वसीयत वग़ैरह से) ऐसा ( मुस्तहकम ) किया कि वह बात ( मुद्दतों ) उनकी नस्ल में बाक़ी चली आई। ( इससे उनकी ) ग़रज़ यह थी कि लोग ( ख़ुदाए-वाहिद की तरफ़ ) रुजू रहें ० मगर ( अहले-अरब बावजूदे कि उनही की नस्ल हैं ) हमने इनको और इनके बाप-दादों को ( दुनिया में ) रसाया बसाया-( तो यह दीन-इब्राहीम से ग़ाफ़िल हो गये और लगे शिर्क करने )—यहां तक कि अब इनके पास ( दीन ) हक़ आ मौजद हुआ और ( नोज़ यह ) पैग़म्बर ( मुहम्मद ) जो ( वहीए-तौहीद ) साफ़ तौर पर ( इनको ) समझाते हैं ०—

जिससे वह ( अपनी बात का ) समर्थन करते हैं ? ( और उसके प्रमाणों से अपना उद्देश्य सिद्ध करते हैं ? यह कुछ नहीं )—बरन् उनका तो कथन है कि हमने अपने पिता-प्रपिता को इसी राह पर पाया। और हम तो उन्हीं के पद चिन्हों पर राह चलने वाले हैं। और (जिस प्रकार यह लोग कहते हैं ) उसी प्रकार आप से पहिले ( भी ) हमने जिस बस्ती में ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डराने वाला कोई ( पैग़म्बर ) भेजा, तो उस ( बस्ती ) के धनाढ्य ( तथा अहंकारी ) लोगों ने यही कहा कि हमने अपने पिता-प्रपिता को इसी राह पर पाया । और हम उन्हीं के पद-चिन्हों पर चलने वाले हैं ॥

४ ( हमारे भेजे हुये पैग़म्बर ने उनके यह शब्द सुनकर ) कहा कि तुमने अपने पिता-प्रपिता को जिस राह पर पाया है, यदि उससे अधिक सीधा ( और उत्तम धर्म ) लेकर मैं तुम्हारे पास आया हूं-( तब तो तुम मानोगे ? )। उन्होंने ( हठ-धर्मी से इसका ) उत्तर दिया कि तुम जो ( आदेश ) देकर भेजे गये हो, हम उनको नहीं मानते। अतः हमने ( इस अवज्ञा तथा उद्दण्डता का ) उनसे बदला लिया। सो देख लो कि ( नबियों के ) झुठलाने वालों का परिणाम क्या हुआ । और ( इन झुठलाने वालों के परिणाम पर सोच विचार करते हुये आप हे रसूल ! वह समय स्मरण कीजिये ) जब इब्राहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति ( के लोगों ) से कहा कि जिन ( पूज्यों ) की तुम लोग पूजा करते हो, उनसे मैं अप्रसन्न हूं ( और उनसे मेरा कुछ सम्बन्ध नहीं ) । मेरा सम्बन्ध तो केवल उस ( अद्वितीय सृष्टि कर्त्ता ) से है, जिसने मुझे उत्पन्न किया। और वही मुझे सीधा मार्ग दिखाने वाला है ॥

और इब्राहीम ने इस ( सिद्धान्त ) को अपनी सन्तान में ( वसीयत के रूप में ) एक शेष रहने वाली बात नियत किया। ( अर्थात आगे आने वाली सन्तान में भी यह वसीयत होती रही कि केवल एक ख़ुदा ही से अपना सम्बन्ध रखना चाहिये । और ) उस ( से इब्राहीम ) का प्रयोजन यह था कि आगे आने वाली सन्तान ( ख़ुदा की ओर ) ध्यान दे—परन्तु ( इसके होते हुये कि ) हमने उन ( अरब निवासियों ) को ( जो इब्राहीम की सन्तान में हैं ) और उनके पिता-प्रपिता को दुनिया में हर प्रकार का लाभ उठाने का अवसर दिया—( यह एक ख़ुदा को छोड़ बहुतों को मानने लगे और मुश्रिक हो गये )। यहाँ तक कि उनके पास सत्य ( क़ुर्आन ) और ( ख़ुदा की आज्ञाओं को ) वर्णन करने वाला रसूल आया—

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ
عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ۝ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ
رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ
دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا وَرَحْمَتُ
رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝ وَلَوْلَا اَنْ
يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ
يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ
وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ۝ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا
وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ۝ وَزُخْرُفًا وَاِنْ كُلُّ
ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةُ
عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ

५

और जब इनके पास (दीन) हक़ आया, तो लगे कहने कि यह तो जादू है और हम इसको नहीं मानते ० और (यह भी) कहते हैं कि (इन) दो बस्तियों (यानी मक्के और ताइफ़) से किसी बड़े आदमी पर यह क़ुर्आन क्यों न नाज़िल किया गया ? (ऐ पैग़म्बर !) क्या यह लोग तुम्हारे पर्वर्दिगार की रह्मत (यानी पैग़म्बरी) के तक़सीम करने वाले हैं । सो इस (दुनिया की) ज़िन्दगी में तो इनकी रोज़ी इनमें हम तक़्सीम करते हैं और हमने (दुनियावी) दर्जों के एतिबार से इनमें एक को एक पर तरजीह दी है, ताकि इनमें एक को एक (अपना) महकूम बनाये रहे और जो (माल व मता यह लोग) समेटते फिरते हैं, तुम्हारे पर्वर्दिगार की रह्मत (यानी पैग़म्बरी तो) उससे कहीं बेहतर है—(तो वह बदर्जे-औला हमारे हाथ में रहनी चाहिये) ० और अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीक़े के हो जाएँगे, तो (साज़ व सामान-दुनिया हमारे हां इस क़द्र हक़ीर है कि) जो लोग मुन्किर (ख़ुदाए) रह्मान हैं, उनके लिये उनके घरों की छतें हम चांदी की करा देते और (छतों के अलावा चाँदी के) ज़ीने कि उन पर चढ़ते (उतरते) ० और (चांदी ही के) उनके घरों के दर्वाज़े (कर देते) और (चांदी ही के) तख़्त कि उनपर (मज़े से) तकिये लगा लगा कर बैठते ० और (चांदी ही नहीं, बल्कि) सोने के (भी) और (फिर भी) यह तमाम (साज़ व सामान) इस (दुनिया की) ज़िन्दगी के (चन्द-रोज़ा) फ़ायदे हैं (और ऐ पैग़म्बर ! मफ़ादे) आख़िरत तुम्हारे पर्वर्दिगार के हाँ परहेज़गारों (ही) के लिये है ० और जो शख़्स (ख़ुदाए) रह्मान की याद से इग़माज़ किया करता है—

---

और जब उनके पास सत्य (क़ुर्आन) आया, तो कहने लगे कि यह जादू है और हम इसको नहीं मानते । और यह भी कहते हैं कि यह क़ुर्आन (मक्का और ताइफ़) दो बस्तियों (में) से किसी बड़े आदमी पर क्यों न उतारा गया। क्या यह (लोग हे रसूल !) आपके पालनहारे की रह्मत बाँटते हैं-(यद्यपि) इस सांसारिक जीवन में उनकी जीविका हम बांटते हैं । और हमने (उनमें से) एक को दूसरे पर (पद में) ऊँचाई प्रदान की है, जिससे कि एक दूसरे को आधीन बनाये। (जब यह लोग अपनी जीविका और शासक होने तथा आधीनता पर कुछ अधिकार नहीं रखते, तो) आपके पालनहारे की कृपा (तो बड़ी वस्तु है और) जो (धन दौलत) यह लोग जोड़ते हैं, उससे (बहुत) उत्तम है ॥

और यदि यह (सन्देह) न होता कि लोग एक ही मत पर हो जावेंगे (और धन दौलत को ख़ुदा की कृपा तथा अनुकम्पा और प्रसन्नता का कारण समझने लगेंगे) तो हम उन काफ़िरों के लिये, जो करुणा-निधान (ख़ुदा) का अस्वीकार करने वाले हैं-(यह करते कि) उनके घरों की छतों को चांदी का बना देते। और (चांदी ही की) सीढ़ियां होतीं, जिन पर यह चढ़ते (उतरते)। और इनके घरों में (चांदी के) द्वार होते और (चांदी के) सिंहासन होते, जिन पर तकिया लगाकर बैठते और (यही वस्तुवें) सोने की (भी बना देते) ॥

यह सब कुछ (अल्प-कालिक) सांसारिक जीवन का लाभ है । और परलोक (का लाभ तथा सामान सर्वदा रहने वाला है। और वह) आप के पालनहारे के यहां संयमियों के निमित्त है । और जो मनुष्य करुणा-निधान (ख़ुदा) के स्मरण से आंख चुराता है—

ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ۝
وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ
اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ
بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ۝
وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ
مُشْتَرِكُوْنَ ۝ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي
الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَاِمَّا
نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۝ اَوْ نُرِيَنَّكَ
الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ۝
فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ
وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ۝ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً

يُعْبَدُوْنَ

हम उस पर एक शैतान तईनात कर दिया करते हैं और वह उसके साथ रहता है ० और बावजूदे कि शयातीन गुनहगारों को राह ( ख़ुदा ) से रोकते रहते हैं, ताहम गुनहगार ( अपने तईं ) ख़याल करते हैं कि वह राह-रास्त पर हैं० यहां तक कि जब गुनहगार ( क़यामत के दिन ) हमारे हुज़ूर में हाज़िर होगा, तो ( वह अपने साथी शैतान को देखकर ) कहेगा कि ऐ काश ! मुझमें और तुझमें पूरब और पच्छिम का फ़ासला रहा होता—तो ( शैतान भी आदमी का क्या ही ) बुरा साथी है ० और ( गुनहगारो ! ) जबकि तुमने ( दुनिया में ) ना-फ़र्मानियां की हैं, तो आज यह बात ( भी ) तुम्हारे कुछ बकार-आमद न होगी कि तुम ( और शयातीन ) एक साथ अज़ाब में हो ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या तुम बहिरों को सुना सकते हो या अन्धों को और उनको, जो सरीह गुमराही में ( पड़े ) हैं, राह-रास्त पर ला सकते हो ० तो अगर हम तुमको दुनिया से उठा भी लें, तो भी हमको इन ( काफ़िरों ) से तो ज़रूर बदला लेना है ० या ( तुम को ज़िन्दा रक्खें और ) इनके साथ जो ( अज़ाब का ) वादा है-( इन पर नाज़िल करके ) तुमको ला दिखायें, तो ( इसमें भी कुछ तअज्जुब की बात नहीं, क्योंकि ) हमको इन पर ( हर तरह की ) कुद्रत हासिल है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! कुर्आन ) जो तुम्हारी तरफ़ वही किया गया है, उसको ख़ूब मज़बूत पकड़े रहो। इसमें शक नहीं कि तुम सीधे रस्ते पर हो० और इसमें भी शक नहीं कि यह ( कुर्आन ) ज़रूर तुम्हारे और तुम्हारी क़ौम के हक़ में नसीहत है और आगे चलकर तुम ( सब ) से ( इसकी बाबत ) बाज़-पुर्स होनी है ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुमसे पहिले जो हमने अपने रसूल भेजे, उनसे पूछ देखो—क्या हमने ( ख़ुदाए ) रहमान के सिवा ( दूसरे दूसरे ) माबूद ठहरा दिये थे कि—

(उसके अज़ाब से भय नहीं खाता और उसकी दया तथा कृपा की आशा नहीं रखता)-उस पर हम एक शैतान नियत कर देते हैं अतः यह ( शैतान हर समय ) उसके साथ रहता है और यह ( शैतान ) उस ( पथ-भ्रष्ट ) को ( ख़ुदा के ) मार्ग से रोकते हैं—परन् ( इस दशा में भी ) वह समझता है कि मैं ( सीधे ) मार्ग पर हूं। ( यह पापी इसी मूर्खता में पड़ा रहेगा )-यहां तक कि जब ( क़यामत में हमारे पास आवेगा ( और वास्तविकता प्रगट होगी )-तो ( अपने मित्र शैतान से ) कहेगा कि क्या अच्छा होता ! कि मेरे तेरे बीच पू पच्छिम का अन्तर होता। सो ( तू ) क्या ही बुरा साथी ( सिद्ध हुआ ) है॥

और ( उनसे कहा जायगा कि ) जिस समय तुम ( दुनिया में ) अवज्ञा कर चुके हो—( तो ) आज तुमको इस बात से ( भी कुछ लाभ न होगा कि तुम ( शैतानों के साथ ) अज़ाब में साझी हो। ( अर्थात यदि एक ही आपत्ति में कुछ लोग साझी हों, तो एक दूस को देखकर शान्त होता है और अपने हृदय में विचार करता है कि मैं ही अकेला आपत्ति में नहीं हूं, तो यह शान्ति भी क़यामत में इ पापियों को प्राप्त न होगी। हे रसूल ! आप मक्का के काफ़िरों के ईमान लाने के अतिशय अभिलाषी हैं )—तो क्या आप बहिरों को सुन सकते हैं ? और अन्धों को ( दिखा सकते हैं ? ) और उन लोगों को, जो खुली पथ-भ्रष्टता तथा गुमराही में ( पड़े ) हैं-( सीधे ) मार्ग प ला सकते हैं ? अतः यदि हम आपको ( संसार से ) उठा लें, तो भी हमको उन ( काफ़िरों ) से बदला लेना है, वा ( तुमको जीवित रक्स और ) इनसे ( अज़ाब का ) जो वादा हमने किया है, उसे पूरा कर दिखायें, तो ( यह भी कुछ कठिन नहीं )। हम इन पर ( हर प्रकार की शक्ति रखते हैं। ( और इन पथ-भ्रष्टों पर तो हर दशा में अज़ाब होना है। चाहे आपके जीवन में हो, अथवा आपके देहान्त के उपरान्त)

अतः आप ( तो हे रसूल ! इस कुर्आन की शिक्षा ) पर जो वही-द्वारा आप पर उतारा गया है, स्थिर रहिये। निस्सन्देह आ सीधे मार्ग पर हैं। और यह ( कुर्आन ) आपके निमित्त और आपकी जाति के निमित्त शिक्षा है। और शीघ्र आप सबसे ( उसकी आ पालन के विषय में ) पूछ गछ होगी। और आप ( हे रसूल ! ) हमारे उन पैग़म्बरों से जिनको हमने आपसे पहिले भेजा है, पूछ देखिये क्या हमने करुणा-निधान ( ख़ुदा ) के अतिरिक्त पूज्य नियत कर दिये हैं—

يعبدون ۝ ولقد ارسلنا موسى بايتنا
الى فرعون وملائه فقال انى رسول رب
العلمين ۝ فلما جاءهم بايتنا اذا هم منها
يضحكون ۝ وما نريهم من اية الا هى اكبر
من اختها واخذنهم بالعذاب لعلهم
يرجعون ۝ وقالوا يايه الساحر ادع لنا
ربك بما عهد عندك اننا لمهتدون ۝
فلما كشفنا عنهم العذاب اذا هم ينكثون ۝
ونادى فرعون فى قومه قال يقوم اليس
لى ملك مصر وهذه الانهر تجرى من
تحتى افلا تبصرون ۝ ام انا خير من هذا
الذى هو مهين ۝ ولا يكاد يبين ۝
فلولا القى عليه اسورة من ذهب او جاء

ع

كشفنا

उनकी परस्तिश की जाए ० और हमही ने मूसा को (भी) अपने मोजिज़े देकर फ़िर्औन और उसके दर्बारियों की तरफ़ भेजा था—तो (मूसा ने उन लोगों से) कहा कि मैं पर्वर्दिगार-आलम का भेजा हुआ हूं ० तो जब (मूसा) हमारे मोजिज़ लेकर उन पास आये, तो बस वह लगे मोजिज़ों की हँसी उड़ाने ० और हम जो मोजिज़ा उनको दिखाते थे, वह दूसरे मोजिज़ से (जो उनको दिखाया जा चुका था) बढ़कर ही होता था और हमने उनको मुब्ताए-अज़ाब (भी) किया कि (अब भी) यह लोग बाज़ आयें ० और इन लोगों ने (अज़ाब आये पर मूसा से) कहा कि ऐ जादूगर! तेरे पर्वर्दिगार ने जो तुझसे (तेरी दुआ क़बूल करने का) वादा कर रक्खा है, उसके आसरे पर हमारे लिये उससे दुआ कर! (तेरी दुआ से अज़ाब टल गया, तो) हम ज़रूर राह पर आजाएँगे ० फिर जब हमने उन (लोगों) पर से अज़ाब को रफ़े (दफ़े) कर दिया, तो बस वह लगे (अपना) अहद तोड़ने ० और फ़िर्औन ने अपने लोगों में इस बात की मुनादी करादी कि लोगो! क्या मुल्क मिस्र हमारा नहीं? और (तुम देखही रहे हो कि) यह नहरें हमारे (ऐवान-शाही के) तले (पड़ी) बह रही हैं; तो क्या तुमको (यह बातें) नहीं सूझतीं ० तो हम इस (मूसा) से जो एक ज़लील (आदमी) है और उससे बात भी अच्छी तरह नहीं करते बन पड़ती-(बदर्जहा) बेहतर हैं ० (और अगर मूसा हमसे बेहतर होता) तो उसके लिये सोने के कङ्गन (खुदा के हां से) क्यों नहीं उतरे—

---

जिनकी पूजा की जाय? (कदापि नहीं। यह सब काफ़िरों की मन-घड़न्त है)। और (गत—नबियों की घटनाओं पर ध्यान दीजिये)। हमने मूसा को अपने चिन्ह देकर फ़िर्औन तथा उसके सर्दारों की ओर भेजा। अतः मूसा ने (उनसे) कहा कि मैं सर्व जगों के पालनहारे का दूत हूं। सो जब मूसा हमारे चिन्ह लेकर उन लोगों के पास आये, तो क्या हुआ! कि उन्होंने (उन चिन्हों तथा मोजिज़ों) की हंसी उड़ाई। यद्यपि हम उनको जो मोजिज़ा दिखाते थे, वह (पहिले मोजिज़े से जिसे वह देख चुकते थे)—बढ़कर होता था। और (उनकी यह उद्दण्डता देखकर) हमने उनको अज़ाब में डाल दिया कि कदाचित (अब अपने दुराचार से) फिर जायँ॥

और (जब यह लोग अज़ाब में पड़े, तो मूसा से) कहने लगे कि हे जादूगर! तू अपने पालन कर्त्ता से हमारे निमित्त प्रार्थना कर! इस (आशा पर) कि उसने तुझसे (तेरी प्रार्थना स्वीकार करने का) प्रण किया है—(यदि यह अज़ाब हमसे दूर हो गया, तो) निस्सन्देह हम (तेरे बताये हुये) मार्ग पर चलेंगे। पुनः जब हमने उन पर से अज़ाब हटा लिया, तो तत्क्षण (अज़ाब हटाते ही) वह (अपनी) प्रतिज्ञा से फिर गये (अर्थात उन्होंने प्रतिज्ञा भंग करदी)॥

और फ़िर्औन ने अपनी जाति में घोषणा कराई (और) कहा कि हे जाति! क्या मिस्र-देश मेरा नहीं है? और (क्या) यह नहरें, जो मेरे (महलों के) नीचे बहती हैं (मेरी नहीं हैं?)। सो क्या (यह सब कुछ) तुम्हें दिखाई नहीं देता? (सोचो! कि क्या मूसा मुझसे उत्तम है?) वा मैं उससे उत्तम हूं, जो तुच्छ है और जिसको (हकले-पन के कारण) वार्तालाप करनी भी नहीं आती। (यदि मूसा मुझसे उत्तम होता) तो उसके निमित्त (खुदा की ओर से) सोने के कंगन उतारे जाते—

مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ
فَاَطَاعُوْهُ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ فَلَمَّآ
اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝
فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ۝ وَلَمَّا ضُرِبَ
ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝
وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا
جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ
اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝
وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي
الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا
تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝
وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝
وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ

ع

بِالْحِكْمَةِ

या फ़रिश्ते जमा होकर उसके साथ आये होते ० ग़रज़ ( ऐसी बातें बनाकर ) फ़िर्औन ने अपने लोगों को फुसला लिया और वह उसके कहे में आ गये। इसमें शक नहीं ( कि ) वह कुछ थे ही नाफ़र्मान लोग ० फिर जब इन लोगों ने ( अपनी ना-फ़र्मानियों से ) हमको गुस्सा दिलाया, तो हमने इनसे बदला लिया और इन सबको डुबो दिया ० और इनको गया गुज़रा कर दिया और आने वाली नस्लों के लिये ( इनको ) ज़र्बुल-मसल बना दिया ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) जब मर्यम के बेटे ( मसीह ) की मिसाल बयान की गई, तो बस तुम्हारी क़ौम के लोग उस ( को सुनकर एक दम ) से खिलखिला पड़े ० और लगे कहने कि ( इस सूरत में ) हमारे माबूद अच्छे ( रहे ) या ईसा ? इन लोगों ने ईसा की मिसाल, जो तुम्हारे सामने ( बीच में ) ला डाली, तो सिर्फ़ कट-हुज्जती के तौर पर ( ला डाली )-बात यह है कि यह लोग हैं ( ही कुछ ) झगड़ालू ० तो ईसा ( भी ) बस हमारे एक बन्दे थे कि हमने ( उनको ख़िदमत-पैग़म्बरी से सर्फ़राज़ फ़र्माकर ) उनपर एहसान किया था और बनी इस्राईल के लिये उनको ( अपनी क़ुद्रत का ) एक नमूना बनाया था और हम चाहते, तो तुम ( लोगों ) में फ़रिश्ते ( पैदा ) कर देते कि वह ज़मीन में तुम्हारी जगह आबाद होते ० और अलबत्ता ईसा ( भी ) क़यामत की एक दलील हैं—तो ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से कहदोकि ) तुम लोग क़यामत ( के आने ) में शक न करो और मेरे कहे पर चलो। यही सीधा रस्ता है ० और ऐसा न हो कि तुमको शैतान ( इस रस्ते से ) रोके कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है ० और जब ईसा मोजिज़े लेकर आये, तो उन्होंने ( लोगों से ) कहा कि मैं तुम्हारे पास दानाई की बातें लेकर आया हूं—

---

और फ़रिश्ते पंक्ति बांधकर उसके साथ आते। अतः ( इस प्रकार बातें बनाकर ) उसने अपनी जाति को फुसला लिया और वह उसके कहने में आ गई। सत्य यह है कि ( अपनी ही ओर से ) यह लोग अवज्ञाकारी ( तथा दुष्ट ) थे-( किसी के समझाने बुझाने का इतना प्रभाव न था )। अतः जब उन लोगों ने हमको ( अपनी अवज्ञाओं के कारण से ) क्रोधित किया, तो हमने उनसे बदला लिया। अर्थात उन सबको ( दरिया में ) डुबो दिया। और इस प्रकार उनको ( काफ़िरों का ) नेता और आने वाले लोगों के लिये दृष्टान्त नियत किया॥

और जब मर्यम के पुत्र ( ईसा ) का उदाहरण वर्णन किया गया, तो आपकी जाति के लोग खिलखिला ( कर हंस ) पड़े और कहने लगे कि ( ऐसी दशा में ) हमारे पूज्य उत्तम हैं वा ईसा ? उनका यह कथन विरोध के कारण से है—( ईसा के सम्बन्ध में जान बूझ कर झगड़ा करते हैं )। बात यह है कि यह लोग ( कुछ हैं ही ) झगड़ालू। ईसा तो ( हमारे ) एक ( नेक ) बन्दे थे, जिनपर ( पैग़म्बरी देकर ) हमने अपना उपकार किया था। और इस्राईल की सन्तान के लिये उन्हें ( अपनी शक्ति का ) एक दृष्टान्त बनाया था॥

और ( जिस प्रकार हमने ईसा को पिता के बिना उत्पन्न करके अपनी असीम शक्ति प्रगट की, उसी प्रकार हम इस पर शक्ति रखते हैं कि ) यदि हम चाहते, तो तुममें फ़रिश्ते उत्पन्न कर देते, जो पृथ्वी पर तुम्हारे स्थानापन्न होते। और ( हे रसूल ! उनसे कहिये कि ) वह ( ईसा भी ) क़यामत का एक चिन्ह हैं। अतः ( सत्य बात में ) तुम सन्देह ( तथा शंका ) न करो और मेरे अनुगामी हो जाओ। यही सीधा मार्ग है। और ( ऐसा न हो कि ) तुम्हें शैतान ( इस सीधे मार्ग से ) रोक रक्खे। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है। और ( शैतान ने ईसा के समय में भी लोगों को सीधे मार्ग से रोका था। अतः ) जब ईसा मोजिज़े ( तथा ख़ुदा के आदेश ) लेकर आये ( और जाति को सम्बोधित करके उन्होंने ) कहा कि मैं तुम लोगों के लिये हिकमत लेकर आया हूं—

और ( मेरे आने का ) एक मक़्सद यह (भी) है कि बाज़ बातें जिन में तुम लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हो, तुमको समझा दूं—तो ( लोगो ! ) अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो ० बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पर्वर्दिगार है, तो उसीकी इबादत करो—यही ( दीन का ) सीधा रस्ता है ० तो उनही में से ( बहुत से ) लोग ( उनसे ) इख़्तिलाफ़ करने लगे। तो जो लोग सर्ताबी करते हैं, रोज़–क़यामत के अज़ाब–दर्दनाक के एतिबार से उन ( के हाल ) पर सख़्त अफ़सोस है० क्या यह लोग क़यामत ही के मुन्तज़िर हैं कि यकायक इन पर आजाय और इनको ख़बर भी न हो ० जो लोग ( आपस में ) दोस्तियां रखते हैं, उस दिन एक दूसरे के दुश्मन हो जाएँगे, मगर परहेज़गार ० ( हम उनसे कह देंगे कि ) हमारे बन्दो ! आज तुमको न ( तो किसी तरह का ) ख़ौफ़ है और न तुम ( किसी तरह पर ) आज़ुर्दा–ख़ातिर होगे ० ( यह वह लोग हैं ) जो ( दुनिया में ) हमारी आयतों पर ईमान लाये और ( हमारे ) फ़र्माबर्दार रहे ० ( हम उनसे फ़र्मा देंगे कि ) तुम और तुम्हारी बीबियां इज़्ज़त ( व इकराम ) के साथ जन्नत में जा–दाख़िल हो ० उन पर सोने की रकाबियों और प्यालों का दौर चलेगा और जिस चीज़ को ( उनका ) जी चाहे और ( जो उनकी ) नज़र में भली मालूम हो, बहिश्त में ( उनके लिये मौजूद ) होगी और ( उनको मुज़्दा सुना दिया जायगा कि ) तुम—

ع

بالحكمة ولابين لكم بعض الذى تختلفون
فيه فاتقوا الله واطيعون ● ان الله هو ربى
وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم ●
فاختلف الاحزاب من بينهم فويل للذين
ظلموا من عذاب يوم اليم ● هل ينظرون
الا الساعة ان تاتيهم بغتة وهم
لا يشعرون ● الاخلاء يومئذ بعضهم
لبعض عدو الا المتقين ● يعباد لاخوف
عليكم اليوم ولا انتم تحزنون ● الذين
امنوا بايتنا وكانوا مسلمين ● ادخلوا
الجنة انتم وازواجكم تحبرون ● يطاف
عليهم بصحاف من ذهب واكواب وفيها
ما تشتهيه الانفس وتلذ الاعين وانتم

---

और ( इसलिये आया हूं ) कि जिन बातों में तुम्हारा विभेद है, उन्हें ( खोल २ कर स्पष्ट–रूप से ) वर्णन कर दूं । अतः तुमको चाहिये कि अल्लाह से डरो और मेरे कहने पर चलो । निस्सन्देह अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पालनहारा है । अतः उसकी पूजा करो ( और ) यही सीधा मार्ग है। ( ईसा का यह उपदेश सुना ) तो उनमें से ( बहुत से ) समूह विभेद करने लगे। अतः जिन लोगों ने ( भक्ति-सीमा से बाहर पाँव रक्खा और ख़ुदा की अवज्ञा करके ) अत्याचार किया, उनके लिये क़यामत के दिन के दुख–दायक अज़ाब की ( बड़ी ) ख़राबी है ॥

यह लोग ( अपने कुकर्मों के कारण से ) क़यामत ही की बाट जोहते हैं कि अकस्मात उन पर आ पड़े और उन्हें ज्ञात भी न हो। ( क़यामत का दिन ऐसा कठिन होगा कि ) उस दिन मित्र एक दूसरे के शत्रु हो जावेंगे। ( हाँ ! ) संयमियों की यह दशा न होगी। ( अल्लाह उनसे कहेगा कि ) हे मेरे बन्दो ! आज तुमको न ( किसी प्रकार का ) भय है और न तुम शोकातुर होगे। यह वह लोग हैं, जो ( संसार में ) हमारी आज्ञाओं को मानते थे और ( हमारे ) आधीन थे ॥

( उनसे कहा जायगा कि ) तुम और तुम्हारी स्त्रियां सहर्ष ( सत्कार-पूर्वक ) जन्नत में प्रवेश करो। ( जन्नत में ) उन ( की सभा ) में सोने की रकाबियों और प्यालों का चक्र चलेगा। और जन्नत में वह पदार्थ होंगे, जिनको जी चाहेगा और जिनसे आंखें स्वाद लेंगी। और ( उनसे कहा जावेगा कि ) तुमको यहां सर्वदा रहना है ॥

فِيهَا خٰلِدُونَ ۝ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيٓ أُورِثْتُمُوهَا
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ
مِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ
جَهَنَّمَ خٰلِدُونَ ۝ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ
مُبْلِسُونَ ۝ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوا
هُمُ الظّٰلِمِينَ ۝ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا
رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مّٰكِثُونَ ۝ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ
وَلٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُونَ ۝ أَمْ أَبْرَمُوٓا
أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ۝ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ
سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ۚ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ
قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا أَوَّلُ الْعٰبِدِينَ ۝
سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ
عَمَّا يَصِفُونَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى

يلقوا

हमेशा ( हमेशा ) यहीं रहोगे ० और यह जन्नत की मीरास जो तुमको मिली है, तो उन ( नेक आमाल ) के एवज़ में ( मिली है ) जो तुम ( दुनिया में ) करते रहे हो ० यहां तुम्हारे लिये कसरत से मेवे ( मौजूद ) हैं, जिनमें से खा रहे हो ० अलबत्ता गुनहगार हमेशा अज़ाब-जहन्नम में रहेंगे ० जो ( कभी ) उन पर से नाग़ा न होगा और वह उसी ( अज़ाब ) में ना-उम्मीद ( और दिल-शिकस्ता ) रहेंगे ० और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि ( हमारी जनाब में गुस्ताख़ियां करके उलटे ) यही ज़ुल्म करते रहे ० और ( दोज़ख़ी दारोग़ए-जहन्नम को ) आवाज़ देंगे कि ऐ मालिक ! ( तुम ही कोई ऐसी तदबीर करो कि कहीं ) तुम्हारा पर्वर्दिगार हमारा काम तमाम कर चुके । वह जवाब देगा कि तुमको इसी हाल में रहना है ० ( ऐ कुफ़्फ़ार-मक्का ! ) हमने तुम्हारे पास ( दीन ) हक़ भेजा है–लेकिन तुममें अक्सर ( का हाल यह है कि वह ) हक़ ( बात ) से चिड़ते हैं ० क्या इन लोगों ने कोई ( और ) बात ठान रक्खी है, तो ( समझ रक्खें कि ) हमने भी ठान रक्खी है ० या ( यह लोग यह ) ख़याल करते हैं कि हम इनके चुपके चुपके की बातों और इनकी सरगोशियों को नहीं सुनते ? ( ज़रूर सुनते हैं ) और ( सुनने के अलावा ) हमारे फ़रिश्ते इनके पास ( तईनात हैं कि वह उनकी सब बातें ) लिखते जा रहे हैं ० ( ऐ पैग़म्बर ! इनसे ) कहो कि अगर ( बिलफ़र्ज़ ख़ुदाए) रहमान के ( कोई ) औलाद हो, तो सबसे पहिले ( उसकी ) इबादत करने को मैं (हाज़िर) हूं ० जैसी जैसी बातें ( यह लोग ख़ुदा के बारे में ) बनाते हैं, उनसे आस्मानों ( का ) और ज़मीन का मालिक, अर्श ( बरीं ) का मालिक पाक है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन लोगों को पड़े बकने और खेल करने दो—यहां तक कि—

और ( उनसे कहा जावेगा कि ) यही है वह जन्नत–जिसके तुम अपने ( शुभ ) कर्मों के कारण से वारिस ( तथा स्वामी ) बनाये गये हो। यहाँ तुम्हारे लिये अधिकता से मेवे ( उपस्थित ) हैं, जिनमें से तुम खा ( पी ) रहे हो। ( यह संयमियों की दशा होगी। उनके अतिरिक्त ) पापी सर्वदा के लिये दोज़ख़ के अज़ाब में पड़े होंगे। ( उस अज़ाब में ) उनके लिये ( कभी ) कमी न की जावेगी । और वह उसी में निराश पड़े रहेंगे ॥

हमने उन पर अन्याय नहीं किया, बरन् उन्होंने ( अपने ऊपर) आपही अन्याय किया । और यह (दोज़ख़ी दोज़ख़ के द्वारपाल को) पुकारेंगे कि हे स्वामी ! ( तुम ही कोई ऐसा उपाय करो कि ) तुम्हारा पालनहारा हमको मृत्यु दे दे ( और मृत्यु के कारण से हमें इस कष्ट से मुक्ति प्राप्त हो जाय । इसके उत्तर में ) वह कहेगा कि ( मृत्यु कैसी ! ) तुम्हें तो सर्वदा इसी दशा में रहना है । ( हे मक्का के काफ़िरो ! ) हमने तुम्हारे पास सत्य ( धर्म ) भेजा, परन्तु तुममें से बहुतेरे उस सत्य ( धर्म ) से अप्रसन्न ( तथा घृणा करने वाले ) हैं। ( इस उद्दण्डता का कारण क्या है ! ) क्या उन्होंने कोई ( और ) बात ठान रक्खी है ! ( और कोई प्रबन्ध कर रक्खा है ? ) तो ( उनको समझ लेना चाहिये कि उनके किये कुछ न होगा )। बात ठानने वाले ( और उसको पूर्ण करने वाले ) तो हम हैं ॥

क्या उन लोगों का विचार है कि हम उनके भेद और उनकी कानाफूसी को नहीं सुनते? अवश्य सुनते हैं और ( सुनने के अतिरिक्त हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते सब कुछ ) लिखते जाते हैं। ( यह लोग ख़ुदा को सन्तान रखने वाला ठहराते हैं। अतः हे रसूल ! उनसे ) कहिये कि करुणा-निधान ( ख़ुदा ) के सन्तान होती, तो मैं ( उनका ) सबसे पहिला उपासक होता—( परन्तु वह ) आकाश तथा पृथ्वी और अर्श का स्वामी ( उन बातों से ) जो यह लोग वर्णन करते हैं, पवित्र ( तथा मुक्त ) है। आप तो ( हे रसूल ! ) इनको इसी तर्क, वितर्क और खेल ( कूद की बातों ) में छोड़ दीजिये। यहाँ तक—

يَلْقَوْا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي
فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ
الْعَلِيمُ ۝ وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ۝ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ
لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝ وَقِيلِهِ
يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَاصْفَحْ
عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

سُورَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
حم ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي

जिस रोज़ का इनसे वादा किया जाता है ( यानी रोज़-क़यामत ) इनके सामने आ मौजूद हो ( उस वक़्त इन पर सारी हक़ीक़त खुल जाएगी) ० और वही ( मबूद-बरहक़ ) है कि आस्मान में ( भी ) उसीकी बन्दगी है, और ज़मीन में ( भी ) उसीकी बन्दगी है । और वह हिक्मत वाला (और सब चीज़ों का) जानने वाला है ० और बड़ी बा-बरकत है वह ज़ात, कि अस्मानों का और ज़मीन का और जो कुछ ज़मीन व आसमान में है, सबका वही मालिक है और क़यामत की ख़बर ( भी ) उसीको है और तुम ( सब मरे पीछे ) उसीकी तरफ़ को लौटाकर लाये जाओगे ० और ख़ुदा के सिवा जिन ( माबूदों ) को यह लोग पुकारते हैं, वह तो सिफ़ारिश (तक ) का ( भी ) इख़्तियार नहीं रखते। हां ! जो लोग समझ बूझ कर हक़ (बात यानी कलमए-तौहीद) के क़ाइल हैं-(अलबत्ता उनकी सिफ़ारिश फ़रिश्ते वग़ैरह करेंगे ) ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर तुम इन ( कुफ़्फ़ार-मक्का ) से पूछो कि इनको ( यानी तुमको ) किसने पैदा किया है, तो ( चार व नाचार ) यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर ( इतना समझने पर ) किधर को बहके चले जा रहे हैं० ( हमको ) रसूल के या रब ! ( या रब ! ) कहने की क़सम है कि यह बेशक ऐसे ( ज़िद्दी ) लोग हैं कि ( कभी ) ईमान लाने वाले नहीं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! इस वक़्त तो ) तुम इनसे दरगुज़र करो और कहो ( कि मेरा तो तुमको ) सलाम ( है ) ० फिर आगे चल कर ( क़यामत में ) मालूम कर लेंगे ०

## सूरत—दुख़ान

मक्की,यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ५९ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान ( है ) ० हा-मीम् ० ( यह ) किताब जो ( अहकाम-इलाही साफ़ और वाज़ेह तौर पर ) बता रही है ( यानी क़ुर्आन ) इसी की क़सम है ० कि हमने—

---

जिस दिन का उनसे वादा किया जाता है, वह दिन ( अर्थात क़यामत का दिन ) आ जाय । ( उस दिन उन पर सत्य प्रगट हो जायगा ) और ( अल्लाह उन बातों से पवित्र है, जो यह लोग वर्णन करते हैं )। वही सच्चा पूज्य है कि आकाश में उसकी आराधना की जाती है और पृथ्वी में ( भी ) उसकी उपासना की जाती है। और वह ज्ञानवान तथा बुद्धिमान है । और वह बड़ी बरकत वाला है। आकाशों और पृथ्वी का और जो कुछ इन दोनों के बीच में है, उसका ( सबका ) राज्य उसीका है और उसी को क़यामत का ज्ञान है और उसीकी ओर तुम ( सब ) को लौट कर जाना है ॥

और अल्लाह के अतिरिक्त जिनको यह लोग ( पूज्य कह कर ) पुकारते हैं, उनको तो ( अल्लाह के यहाँ ) शफ़ाअत का ( भी ) अधिकार नहीं—परन्तु हाँ ! वह ( लोग शफ़ाअत कर सकेंगे ) जिन्होंने सत्य की साक्षी दी ( और समर्थन किया ) और वह ज्ञान ( तथा बोध ) रखते हैं। और ( आप हे रसूल ! ) यदि उनसे पूछें कि उन्हें किसने उत्पन्न किया, तो उनको कहना पड़ेगा कि अल्लाह ने। अतः यह ( इसके होते हुये ) कहां बहके जा रहे हैं। और हमको ( हे रसूल ! ) आपके या रब ! ( हे पालनहारे !) कहने की शपथ ! कि यह लोग ( ऐसे उद्दण्ड हैं कि ) कभी ईमान नहीं लावेंगे। अतः ( हे रसूल ! अब तो ) आप उनसे मुंह फेर लें ! ( और क्षमा करदें ) और कहें कि ( तुमको ) सलाम है। इसके पश्चात आगे चलकर ( क़यामत में ) उनको ( अपनी ग़लती तथा भूल चूक का स्वयं ) ज्ञान हो जायगा ॥

## सूरत–दुख़ान

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ५८ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥**

इस पुस्तक ( क़ुर्आन ) की शपथ ! जो ( ख़ुदा के आदेशों को व्याख्या-सहित ) वर्णन करती है कि हमने उसे (पहिले-पहल ) एक बरकत वाली रात्रि ( अर्थात शब-बरात वा शबे-क़द्र ) में अवतीर्ण किया—

لَيۡلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنۡذِرِيۡنَ ۝ فِيۡهَا يُفۡرَقُ
كُلُّ اَمۡرٍ حَكِيۡمٍ ۝ اَمۡرًا مِّنۡ عِنۡدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرۡسِلِيۡنَ ۝
رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ۝ رَبِّ
السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۘ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِيۡنَ ۝
لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ؕ رَبُّكُمۡ وَرَبُّ
اٰبَآئِكُمُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝ بَلۡ هُمۡ فِىۡ شَكٍّ يَّلۡعَبُوۡنَ ۝
فَارۡتَقِبۡ يَوۡمَ تَاۡتِى السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيۡنٍ ۝
يَّغۡشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝ رَبَّنَا اكۡشِفۡ
عَنَّا الۡعَذَابَ اِنَّا مُؤۡمِنُوۡنَ ۝ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكۡرٰى
وَقَدۡ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ۝ ثُمَّ تَوَلَّوۡا عَنۡهُ
وَقَالُوۡا مُعَلَّمٌ مَّجۡنُوۡنٌ ۝ اِنَّا كَاشِفُوا الۡعَذَابِ
قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ عَآئِدُوۡنَ ۝ يَوۡمَ نَبۡطِشُ الۡبَطۡشَةَ
الۡكُبۡرٰى ۚ اِنَّا مُنۡتَقِمُوۡنَ ۝ وَلَقَدۡ فَتَنَّا قَبۡلَهُمۡ

ع

( शबे-क़द्र की ) मुबारक रात में इसको ( पहिले-पहल ) उतारा ० ( क्योंकि ) हमें ( लोगों को अपने अज़ाब से ) डराना मन्ज़ूर था ० (दुनिया के ) सारे इन्तिज़ाम जो हिक्मत ( और मस्लहत ) पर मब्नी हैं, उसी रात तस्फ़िया पाते हैं ० ( अज़ाँ-जुम्ला क़ुर्आन भी था, जो ) हमारे ख़ास हुक्म से ( नाज़िल होना शुरू हुआ )-क्योंकि हमको ( पैग़म्बर का ) भेजना मन्ज़ूर था ० ( और ऐ पैग़म्बर ! यह ) तुम्हारे पर्वर्दिगार का फ़ज़्ल ( था, जो उसने अपने बन्दों पर किया—क्योंकि ) वह ( सबकी ) सुनता ( और सब कुछ ) जानता है ० आस्मानों का और ज़मीन का और जो कुछ आस्मान व ज़मीन में है-(वही) उन ( सब ) का मालिक ( है ) । अगर तुम लोगों में ( सही बात के ) यक़ीन कर लेने की सलाहियत है—( तो इसको भी तस्लीम करोगे ) ० उसके सिवा कोई माबूद नहीं-(वही) जिलाता और (वही) मारता है-(वही) तुम्हारा (भी) पर्वर्दिगार है और (वही) तुम्हारे अगले बाप-दादों का ( भी ) पर्वर्दिगार है ० मगर यह लोग तो शक में पड़े हुये ( इन बातों को ) खेल ( समझ ) रहे हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) उस दिन का इन्तिज़ार करो कि ( सबके देखते ) आस्मान से एक धुवां ज़ाहिर हो ० ( और वह ) सब लोगों पर छा जाय—यह है अज़ाब—दर्दनाक ० ( जिसको देखकर यह मुन्किर भी दुआयें माँगने लगेंगे कि ) ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम पर से इस आफ़त को टाल ! कि ( अब ) हम ( तुझ पर ) ईमान लाये हैं ० ( लेकिन इस धुयें से ) इनको क्या नसीहत होगी और ( इनका हाल तो यह है कि ) इनके पास पैग़म्बर आया ( और ) उसने हिन्दी की चिन्दी करके ( इनको ) समझाया ० इस पर ( भी ) यह लोग उससे बिदकते रहे और यही कहा किये कि ( यह तो किसी का ) सिखाया ( पढ़ाया और ) बावला है ० ( लोगो ! हुज्जत तमाम करने के लिये ) हम ( तुम पर से इस ) अज़ाब को चन्द रोज़ के लिये हटा देंगे, मगर तुम फिर ( वही कुफ़्र ) करोगे ० और हम ( इन लोगों से पूरा बदला तो उस दिन लेंगे ) जिस दिन बड़ी ( सख़्त ) पकड़ पकड़ेंगे—( क्योंकि जहां ) हम ( रहा करते हैं ) बदला ( भी ) लिया करते हैं ० और इनसे पहिले हम फ़िर्औन की क़ौम को ( भी ) आज़मा चुके हैं—

---

( क्योंकि ) हमें ( लोगों को परलोक के अज़ाब से ) डराना था । ( यह वह रात्रि है कि ) उसमें सर्व कार्य्य जिनमें हिकमत ( तथा मस्लहत पाई जाती ) है ( अर्थात प्राणियों को जीविका तथा मृत्यु आदि ) निर्णय किये जाते हैं । ( और यह सब ) हमारी आज्ञा से ( होता ) है । ( इसी समय में ) हमें ( रसूल को ) भेजना था । ( सो आप हे रसूल ! ) अपने पालनहारे की अनुकम्पा बनाकर ( भेजे गये ) । निस्सन्देह वह ( अर्थात आपका पालनहारा सब कुछ ) सुनने वाला ( और सब कुछ ) जानने वाला है । ( वह ) आकाशों तथा पृथ्वी का और जो कुछ इन दोनों के बीच में है, उसका ( सबका ) पालनहारा है । ( इसका विश्वास करो )—यदि तुममें ( सत्य बातों के ) विश्वास करने की योग्यता है ॥

उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं । वही जीवित करता है और वही मृत्यु देता है । वह तुम्हारा ( भी ) पालन कर्त्ता है और तुम्हारे अगले पिता-प्रपिता का ( भी ) पालनहारा है—किन्तु यह लोग तो सन्देह में ( पड़े हुये ) हैं ( और इन बातों को ) खेल ( तमाशा समझ ) रहे हैं । अतः ( आप उनके विषय में ) उस दिन की प्रतीक्षा कीजिये, जिस दिन आकाश से एक प्रत्यक्ष धुवां प्रगट हो ( और ) वह ( सब ) लोगों पर छा जाय । यह एक ( अलग ) दुख दायक अज़ाब है ॥

( इससे भयभीत होकर काफ़िर लोग पुकारेंगे कि ) हे हमारे पालनहारे ! यह अज़ाब हम पर से हटा ले । हम ( अब तुझ पर ) ईमान ले आवेंगे-( परन्तु उस धुवें से ) उनको क्या शिक्षा ( तथा समझ बूझ ) प्राप्त होगी—( जबकि ) उनके पास ( ख़ुदा की आज्ञाओं को ) वर्णन करने वाला पैग़म्बर आया ( तो उसकी बात उन्होंने न सुनी ) । पुनः उन्होंने उससे मुंह फेर लिया और कहने लगे कि ( यह तो ) सिखाया ( पढ़ाया ) हुआ ( तथा ) दीवाना है । ( क़ाफ़िरो ! ) हम ( तुम्हें ढील देने के निमित्त ) कुछ दिन के लिये अज़ाब उठा लेंगे-( किन्तु ) तुम पुनः वही ( कुफ़्र ) करोगे । ( और हम उन लोगों से पूरा बदला तो उस दिन लेंगे )-जिस दिन हमारी पकड बहुत कठिन होगी । ( अर्थात क़यामत में । जिस प्रकार हम दया करते हैं, उसी प्रकार ) हम बदला ( भी ) लेते हैं । और उन ( मक्का के क़ाफ़िरों ) से पहिले हम फ़िर्औन की जाति की परीक्षा कर चुके हैं—

قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ۝ اَنْ اَدُّوْا
اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ وَّاَنْ لَّا
تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْۤ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝
وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ۝ وَاِنْ
لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ
هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ۝ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ
لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ
اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ
جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝
وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ
وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ
السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ۝
وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ

और उनके पास बड़े दर्जे के रसूल ( मूसा ) आये ० ( और उन्होंने आकर फ़िर्औन के लोगों से कहा ) कि ( इन ) अल्लाह के बन्दों ( यानी बनी इस्राईल ) को मेरे हवाले करो। मैं ( खुदा का ) भेजा हुआ तुम्हारे पास आया हूं ( और वहिए-खुदा का ) अमानतदार हूं ० और यह ( भी कहा ) कि खुदा से सर्कशी न करो। मैं ( अपने पैग़म्बर होने की ) एक साफ़ दलील तुम्हारे सामने पेश करता हूं ० और इससे कि तुम मुझको सङ्गसार करो, मैं अपने पर्वर्दिगार और तुम्हारे पर्वर्दिगार ( यानी खुदाए-वाहिद ) की पनाह माँगता हूं-( वही मुझको बचा लेगा ) ० और अगर तुमको मेरी बात का यक़ीन नहीं, तो मेरे हाल से कुछ तअर्रुज़ न करो ० ( मगर इस पर भी वह मूसा से छेड़-छाड़ लगाये रहे ) तब मूसा ने अपने पर्वर्दिगार से दुआ की कि यह ( बड़े ) शरीर लोग हैं। मुझको इनसे नजात दे ० ( तो हमने मूसा को हुक्म दिया कि ) मेरे बन्दों ( यानी बनी इस्राईल ) को रातों-रात लेकर निकल जावो ( और समझे रहना कि फ़िर्औन की तरफ़ से ) तुम लोगों का तआकुब किया जायगा ० और दरिया को ( अपनी जगह ) ठहरा हुआ छोड़ ( कर पार हो ) जाना कि ( उसमें ) फ़िर्औनियों का सारा लश्कर ग़र्क़ कर दिया जायगा ० यह लोग कितने ही बाग़ और ( कितनी ही ) नहरें ० और ( कितनी ही ) खेतियाँ और ( कितने ही उम्दा ) उम्दा मकानात और ( कितने ही ) आराम ( व आसाइश ) के सामान छोड़ मरे, जिनमें मज़े उड़ाया करते थे ० ( वाक़े में ) ऐसा ही ( हुआ ) और हमने दूसरे लोगों को इस ( तमाम साज़ व सामान ) का वारिस बना दिया ० तो इन लोगों पर आस्मान और ज़मीन ( किसी ) को ( भी तो ) रिक़्क़त न आई और न उनको ( तौबा और नदामत की ) मोहलत ( ही ) मिली ० और हमही ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत के अज़ाब ( यानी ) फ़िर्औन ( के पन्जए-ग़ज़ब ) से नजात दी—

---

और उनके पास एक प्रतिष्ठित पैग़म्बर ( अर्थात मूसा ) आये ( और उनसे कहा ) कि इन खुदा के बन्दों ( अर्थात इस्राईल की सन्तान ) को मुझे सौंप दो। मैं ( खुदा का ) रसूल ( और वही का ) अमानतदार हूं। और ( देखो ! ) अल्लाह के साथ विरोध न करो। मैं तुम्हारे पास ( अपने पैग़म्बर होने के ) ज्योतिमय-प्रमाण लेकर आया हूं-( अतः उन पर विचार करो )। और ( मूसा का उपदेश सुनकर जब फ़िर्औन की जाति ने उनको कष्ट पहुंचाने की चेष्टा की, तो उन्होंने कहा कि ) मैं अपने पालनहारे की जो तुम्हारा भी पालनहारा है, इस बात से शरण माँगता हूं कि तुम मुझे पत्थर से मार डालो और यदि मुझ पर ईमान न लाओ, तो मुझसे अलग हो जाओ ( और मुझ से कोई सम्बन्ध न रक्खो—परन्तु उन लोगों ने मूसा का कहना न माना और लगातार उद्दण्डता करते रहे )। अतः मूसा ने अपने पालन कर्त्ता से प्रार्थना की कि यह ( बड़े ) पापी ( तथा दुष्ट ) लोग हैं—( मुझे इनसे मुक्ति प्रदान कर ) ॥

अतः ( हमने मूसा को आज्ञा दी कि इन ) हमारे बन्दों ( अर्थात इस्राईल की सन्तान ) को रात्रि के समय लेकर निकल जाओ ( और स्मरण रखना कि फ़िर्औन की ओर से ) तुम्हारा पीछा किया जावेगा और दरिया को ठहरा हुआ ( सूखा ) छोड़ ( कर पार हो जा) ना ( फ़िर्औन की सेना दरिया को निर्जल और ठहरा हुआ देखकर तुम्हारे पीछे बढ़ेगी और ) समस्त सेना डुबो दी जावेगी ॥

( सो ऐसा ही हुआ और ) यह लोग कितने ही बाग़ और कितनी ही नहरें और कितनी ही खेतियाँ और कितने हो दिव्य-भवन और सुख ( चैन ) की सामग्री छोड़ गये, जिनमें भोग विलास करते थे। ( हाँ ! ) ऐसा ही ( हुआ ) और हमने उनके स्थान पर दूसरों को ( इस समस्त सामग्री का ) वारिस ( तथा स्वामी ) बना दिया। अतः न उन लोगों पर आस्मान रोया और न पृथ्वी और न उनको ( तौबा के लिये ) अवसर दिया गया। और ( इस प्रकार ) हमने इस्राईल की सन्तान को अपमान के अज़ाब—

इसमें शक नहीं कि वह ( बड़ा ) सर्कश ( और ) हद्द ( उबूदियत ) से बाहर हो गया था ० और बनी इस्राईल को हमने ( देख ) समझ कर दुनिया के लोगों पर फ़ज़ीलत दी ० और उनको ( मन व सल्वा वग़ैरह के इस कसरत से ) मोजिज़े दिये, जिनमें (उनके ईमान की) सरीह आज़माइश थी ० यह (कुफ़्फ़ार-मक्का तो मुसल्मानों से) कहते ही हैं ० कि यह हमारा पहिली ही दफ़े का मरना है और बस । ( फिर हमेशा के लिये ख़ातिमा है ) और हम ( दुबारा ) नहीं उठाये जाएँगे ० पस अगर तुम ( मुसल्मान अपने दावए-क़यामत में ) सच्चे हो, तो हमारे बाप—दादों को ( जिलाकर हमारे सामने ) ला मौजूद करो ० भला ( यह लोग बल-बूते में ) बढ़कर हैं या ( शाह-यमन) तुब्बा की क़ौम ( के लोग ) और ( और लोग ) जो इनसे पहिले हो गुज़रे हैं कि हमने उन ( सब ) को हलाक कर मारा। (इस लिये कि ) वह नाफ़र्मान थे ० और हमने आसमानों ( को ) और ज़मीन को और जो चीज़ें आस्मान व ज़मीन में हैं, उनको खेल बनाने के लिये पैदा नहीं किया ० हमने तो आस्मान व ज़मीन को ( एक ग़रज़ और ) मस्लहत से पैदा किया है, मगर अक्सर लोग नहीं समझते ० बेशक फ़ैसले ( यानी क़यामत ) का दिन इन सब ( के दुबारा ज़िन्दा होने ) का वक़्त मुक़र्रर है ० कि उस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आयेगा और न लोगों को ( किसी तरफ़ से ) मदद पहुंचेगी ० मगर जिस पर ख़ुदा रहम करे-(तो उसका बेड़ा पार है)। बेशक वह ज़बरदस्त (और) रहम वाला है ० कुछ शक नहीं कि ( आख़िरत में ) थूहर का दरख़्त ० ( बड़े ) मुज्रिमों ( यानी काफ़िरों ) का खाना होगा ०—

الْمُهِيْنِ ۝ مِنْ فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ
الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ
بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۝ اِنْ هِيَ
اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۝ فَاْتُوْا
بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ
قَوْمُ تُبَّعٍ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ اَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّهُمْ
كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا
وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ۝

كالمهل

( अर्थात ) फ़िऔंन ( के अत्याचार ) से मुक्ति दी । इसमें ( कुछ ) सन्देह नहीं कि वह ( बड़ा ) उद्दण्ड था ( और ) सीमा से बाहर हो गया था। और हमने यह जानकर ( कि मूसा और उनके ईमान वाले संगती सज्जन तथा योग्य हैं ) इस्राईल की सन्तान को समस्त जगों पर श्रेष्ठता दी और उनको ( दरिया का सूख जाना और मन, सलवा का उतरना आदि बहुत से ) ऐसे मोजिज़े प्रदान किये जिनमें ( उनके ईमान की ) खुली हुई परीक्षा थी ॥

यह लोग ( अर्थात मक्का वाले काफ़िर लोग गत—जातियों की कथाओं से शिक्षा ग्रहण नहीं करते और ) कहते हैं कि बस हां मरना ही मरना है। और यह बात नहीं कि हम ( मरने के उपरान्त ) पुनः उठाये जावेंगे। और यदि तुम सच्चे हो, तो हमारे पिता-प्रपित को ( जो मर चुके हैं ) उठाकर लाओ। ( हे पैग़म्बर! इनसे पूछिये कि ) क्या तुम ( सम्पदा तथा बल शक्ति में ) बढ़े हुए हो वा तुब्ब (यमन-देश के राजा की उपाधि ) की जाति और वह लोग, जो तुमसे पहिले हो चुके हैं ( बढ़े हुये थे। उनकी उद्दण्डता का परिणाम अन्त में यह हुआ कि ) हमने उनको नष्ट ( भ्रष्ट ) कर डाला । ( और ) इसमें ( कुछ ) सन्देह नहीं कि वह ( बड़े ) पापी ( तथा दुष्ट ) थे । ( अत यही परिणाम तुम्हारी उद्दण्डता का होना है ) ॥

और हमने आस्मानों और पृथ्वी को और जो कुछ उनके बीच में है, उसको खेल की रीति पर ( व्यर्थ ) उत्पन्न नहीं किया हमने तो आस्मान तथा भूमि को सचाई के साथ उत्पन्न किया है—परन्तु अधिक लोग ( यह बात ) नहीं जानते ( और इसलिये मृत्यु पश्चात जीवित उठाये जाने से इन्कार करते हैं ) । निस्सन्देह निर्णय ( अर्थात क़यामत ) का दिन इन सबके ( हिसाब के ) लिये निय है। उस दिन कोई मित्र किसी मित्र के काम न आवेगा। और न लोगों को ( किसी ओर से ) सहायता पहुंचेगी—किन्तु हां! जि पर ख़ुदा दया करे-( उसके लिये सब कुछ है )। निस्सन्देह वह बलवान है ( और ) दयालु है । ( उस दिन जब हिसाब हो चुकेगा औ काफ़िर दोज़ख़ में डाले जावेंगे, तो ) थूहर का वृक्ष अवज्ञाकारी ( काफ़िरों ) का खाना होगा—

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ
فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ
رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝
يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۝
كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝ يَدْعُونَ
فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝ لَا يَذُوقُونَ
فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَاهُمْ
عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ۝ فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُرْتَقِبُونَ ۝

سورة الجاثية مكية وهي سبع وثلثون آية

जैसे पिघला हुआ तांबा (और) वह पेट में ऐसा खौलेगा ० जैसे भुलस्ता हुआ पानी खौलता है ० ( इसके अलावा हम फ़रिश्तों को हुक्म देंगे कि ) इसको पकड़ो और घसीटते हुये जहन्नम के बीचों—बीच तक ले जावो ० फिर (इसको यह) सज़ा दो कि इसके सर पर भुलस्ता हुआ पानी डालो० ( फिर हम दोज़ख़ी की मुसीबत बढ़ाने को उससे कहेंगे कि ले ! इस अज़ाब के मज़े ) चख ! ( क्योंकि हमारे हां ) तेरी बड़ी क़द्र व मन्ज़िलत है० यही तो वह ( दोज़ख़ ) है, जिसकी निस्बत तुम लोग शुबहा किया करते थे ० (रहे) परहेज़गार ( सो वह तो ) अमन की जगह ( यानी ) बाग़ों और चश्मों में होंगे ० ( नीज़ ) रेशम की महीन और दबीज़ पोशाकें पहिने हुये ( एक दूसरे के ) आमने सामने बैठे ( बिराज रहे ) होंगे ० ऐसा ही होगा और ( इसके अलावा ) बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों से हमने उनके जोड़े लगा दिये होंगे ० वहां इत्मीनान से हर तरह के मेवे मँगा ( मँगा कर खा ) रहे होंगे ० पहिली (दफ़े की) मौत के सिवा-(जो दुनिया में चख चुके) वहाँ उनको मौत ( की तलख़ी ) चखनी ही नहीं पड़ेगी और ख़ुदा उनको दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रक्खेगा ० ( और ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारे पर्वर्दिगार का फ़ज़्ल ( उनके शामिल-हाल होगा कि यह कुछ नेअमतें उन को मिलेंगी )-यही बड़ी कामयाबी है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमने इस ( क़ुर्आन ) को तुम्हारी बोली में इस ग़रज़ से आसान कर दिया है कि यह ( लहे-अरब इसके मज़ामीन को समझ कर ) नसीहत पकड़ें ० ( मगर सरे-दस्त ) तो ( तुम भी नतीजे का ) इन्तिज़ार करो। यह भी इन्तिज़ार कर रहे हैं ०

## सूरत—जासियह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ३७ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं ॥

---

( जो ) पिघले हुये ताँबे की तरह ( होगा और ) पेट में ऐसा खौलेगा, जैसे गर्म किया हुआ पानी खौलता है। अतः ( आज्ञा होगी कि ) इस ( काफ़िर ) को पकड़ो और घसीटकर दोज़ख़ के बीच में ले जाओ। पुनः ( आज्ञा होगी कि ) इस पर यह अज़ाब करो कि उसके सिर पर खौलता हुआ पानी डालो। ( और अज़ाब करने वाले फ़रिश्ते उससे उपहास की रीति पर ) कहेंगे कि ( ले ! इसे ) चख। तेरी तो ( आज यहां ) बड़ी आव-भगत ( हो रही ) है। ( और उन काफ़िरों से कहा जावेगा कि ) यही है वह ( दोज़ख़ तथा अज़ाब )-जिसमें तुम सन्देह करते थे ॥

( इनके अतिरिक्त ) संयमी लोग अमन ( चैन ) के स्थान पर ( अर्थात् ) बाग़ों तथा सोतों में ( चैन की वंशी बजाते ) होंगे। ( वहां वह ) महीन और मोटे ( रेशमी ) वस्त्र पहिनेंगे ( और ) आमने सामने बैठेंगे। हाँ ! ऐसा ही होगा। और हम बड़े २ नेत्रों वाली हूरों को उनसे ब्याह देंगे। ( वहां वह ) शान्ति से हर प्रकार के मेवे मँगावेंगे। ( और ) वहां उनको मृत्यु ( का स्वाद ) चखना नहीं पड़ेगा, केवल उस प्रथम मृत्यु के ( जो संसार में हो चुकी है )। और ( अल्लाह ) उनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचावेगा। ( और हे रसूल ! उन पर ) आपके पालन कर्त्ता की दया तथा कृपा होगी। ( और ) यही बड़ी सफलता है ॥

अतः ( हे रसूल ! इसीलिये ) हमने क़ुर्आन को आपकी भाषा में ( उतारा और ) सरल कर दिया, जिससे कि यह लोग शिक्षा ग्रहण करें ( और ख़ुदा के आज्ञाकारी बनकर जन्नत की इन नेअमतों के अधिकारी बनें। और यदि यह ऐसे सरल तथा स्पष्ट क़ुर्आन से शिक्षित नहीं होते ) तो आप ( उनकी अवज्ञा तथा उद्दण्डता के परिणाम की ) प्रतीक्षा कीजिये ( और ) यह ( भी ) प्रतीक्षा कर रहे हैं ॥

## सूरत—जासियह

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ३७ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)० हा-मीम् ० (यह) फ़र्मान-तहरीरी पेशगाह-खुदावन्दी से सादिर होता है, जो ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है ० बेशक ईमान वालों के लिये आस्मानों (में) और ज़मीन में (कुद्रत-खुदा की बहुतेरी ही) निशानियां हैं ० और (लोगो!) तुम्हारे पैदा करने में और (नीज़) जानवरों में, जिनको (वह रूप-ज़मीन पर) फैलाता रहता है-(कुद्रत-खुदा की बहुतेरी ही) निशानियां हैं० (मगर) उन (ही) लोगों के लिये, जो यक़ीन लाने की सलाहियत रखते हैं ० और (नीज़) रात और दिन की आमद व शुद में और (सरमाए) रिज़्क़ (यानी पानी) में जिसको खुदा आस्मान से उतारता, फिर उसके ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे (यानी पड़ती पड़े) पीछे ज़िन्दा कर देता है और हवाओं के रद्दो-बदल में (कुद्रत-खुदा की बहुतेरी) निशानियां हैं-(मगर) उन (ही) लोगों के लिये, जो अक़्ल रखते हैं ० (ऐ पैग़म्बर!) हक़ीक़त में यह खुदा की (यानी हमारी ही) आयतें हैं, जो हम तुमको पढ़ पढ़कर सुनाते हैं—तो (अब) अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौन सी बात होगी, जिसे सुनकर (यह लोग) ईमान लायेंगे ० हर एक भूटे बदकार का खोजड़ा जाय ० कि (जब) खुदा की आयतें उसके रूबरू पढ़ी जाती हैं (और वह) उनको सुनता (भी) है, फिर (भी) मारे गुरूर के (कुफ़्र पर इस तरह अड़ा रहता है) कि गोया उसने इन (आयतों) को सुना ही नहीं—तो (ऐ पैग़म्बर!) ऐसे (नालायक़) को अज़ाब-दर्दनाक की खुश-ख़बरी सुना दो ० और (कुफ़्र पर अड़ने के अलावा) जब वह हमारी आयतों की कुछ भी ख़बर पाता है, तो उनकी हँसी बनाता है। ऐसे ही लोगों—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝
اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ
يُّوْقِنُوْنَ ۝ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا
بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ
اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَ
اٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝
يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا
كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَاِذَا
عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ

४

---

इस पुस्तक का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो बलवान (तथा) हिकमत वाल है। (उसकी हिकमत के) चिन्ह आकाशों और पृथ्वी में ईमान वालों के निमित्त (विद्यमान) हैं। और (स्वयं) तुम्हारी उत्पत्ति (तथा रचना) में और उन पशुओं में, जिनको (वह भू-मण्डल पर) फैलाता रहता है। (उसके) चिन्ह उन लोगों के लिये (विद्यमान) हैं, जिनमें (ईमान तथा) विश्वास की योग्यता है। और रात्रि और दिवस के परिवर्तन में और उस जीविका (अर्थात जल) में, जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा और उसके द्वारा पृथ्वी को मुर्दा (तथा सूखी) हो जाने के उपरान्त जीवित (तथा हरी भरी) किया। और पवनों के बदलने में (कि कभी पूर्व दिशा की वायु चलती है और कभी पच्छिम दिशा की-उसकी हिकमत तथा शक्ति के) चिन्ह उन लोगों के लिये हैं, जो बुद्धिमान हैं॥

यह अल्लाह के चिन्ह हैं-(हे रसूल!) जिनको हम आप से सचाई के साथ वर्णन करते हैं। अतः अल्लाह और उसके चिन्हों के पश्चात और कौन सी बात होगी, जिस पर यह लोग ईमान लावेंगे॥

प्रत्येक झूठे (असत्यवादी तथा) पापी के लिये ख़राबी है, जो अल्लाह की आयतें-जिनको उसके सन्मुख पढ़ा जाता है, सुनता है और फिर भी अभिमान में आकर (कुफ़ पर) हठ करता है कि मानो उसने उन (आयतों) को नहीं सुना (और अल्लाह का सन्देश उस तक नहीं पहुंचा)। अतः आप (हे रसूल!) उस (अभिमानी) को दुखदाई अज़ाब का मंगल-समाचार सुना दीजिये। और (इसके अतिरिक्त) जब उसे हमारी किसी आयत का ज्ञान हो जाता है, तो उसकी हंसी उड़ाता है। यह वह लोग हैं—

لهم عذاب مهين ۝ من ورائهم جهنم ولا
يغني عنهم ما كسبوا شيئا ولا ما اتخذوا من
دون الله اولياء ولهم عذاب عظيم ۝
هذا هدى والذين كفروا بايت ربهم
لهم عذاب من رجز اليم ۝ الله الذي سخر
لكم البحر لتجري الفلك فيه بامره ولتبتغوا
من فضله ولعلكم تشكرون ۝ وسخر
لكم ما في السموت وما في الارض جميعا
منه ان في ذلك لايت لقوم يتفكرون ۝
قل للذين امنوا يغفروا للذين لا يرجون
ايام الله ليجزي قوما بما كانوا يكسبون ۝
من عمل صالحا فلنفسه ومن اساء فعليها
ثم الى ربكم ترجعون ۝ ولقد اتينا بني اسراءيل

के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है ० कि आगे (चल कर) इनके (लिये) जहन्नम है और (दुनिया में) जो कुछ अमल कर गये, न तो वही इनके कुछ काम आयेंगे और न (इनके माबूद) जिनको इन्होंने ख़ुदा के सिवा (अपना) कारसाज़ बना रक्खा था और इनको बड़ा अज़ाब होना है ० यह (क़ुर्आन सर्तापा) हिदायत है और जो लोग अपने पर्वर्दिगार की आयतों के मुन्किर हैं, उनको बड़े (सख़्त) अज़ाब की दर्दनाक—सज़ा होनी है ० (लोगो!) अल्लाह वह (क़ादिर-मुतलक़) है, जिसने समन्दर को तुम्हारे बस में कर दिया है—ताकि ख़ुदा के हुक्म से उसमें जहाज़ चलें और ताकि तुम लोग उसके फ़ज़्ल (यानी मआश) को तलाश करो और ताकि तुम (उसका) शुक्र करो ० और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, उसी ने अपने (करम) से इन सबको तुम्हारे काम में लगा रक्खा है। बेशक इन (बातों) में (क़ुद्रत-ख़ुदा की) बहुतेरी ही निशानियाँ हैं—(मगर) उन (ही) लोगों के लिये, जो (ग़ौर व) फ़िक्र को काम में लाते हैं ० (ऐ पैग़म्बर!) मुसलमानों से कहो कि जो लोग ख़ुदा के कार-नामों से नहीं डरते, उनसे दर-गुज़र करें (और ख़ुदा पर छोड़े रहें)-ताकि अल्लाह (इन) लोगों को इनके किये का बदला दे ० जो नेक अमल करता है, तो ख़ास अपने (भले के) लिये और जो बुरा करता है, तो (उसका वबाल) उसी पर। फिर (आख़िरकार) तुम सबको अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौटकर जाना है ० और अलबत्ता हमने बनी इस्राईल को—

---

जिनके लिये अपमानित करने वाला अज़ाब (तय्यार) है और दोज़ख़ उनके सन्मुख आ रही है। और (जब वह उस अपमानित करने वाले अज़ाब को भोगेंगे, तो) न उनकी (सांसारिक) कमाई कुछ काम आवेगी और न वह पूज्य, जिनको उन्होंने ख़ुदा के अतिरिक्त अपना मित्र (तथा सहायक) बना रक्खा है। और उन पर बड़ा अज़ाब होगा। (जो लोग अल्लाह की आयतों को नहीं मानते, उनको जानना चाहिये कि) यह (क़ुर्आन) पूर्ण शिक्षा है। और जिन लोगों ने अपने पालन कर्त्ता की आयतों (तथा आज्ञाओं) को न माना, उनके लिये अत्यन्त दुखदाई अज़ाब है ॥

(हे मनुष्यो! तुम अल्लाह तथा उसकी आयतों का किस प्रकार अस्वीकार करते हो!) अल्लाह तो ऐसा (सर्व शक्तिमान है) कि उसने समुद्र को तुम्हारे आधीन कर दिया, जिससे कि ख़ुदा की आज्ञा से उसमें जहाज़ चलें और जिससे कि तुम (जहाज़ों में बैठकर) उसकी कृपा तथा अनुकम्पा को (जीविका के रूप में) ढूंढो। और जिससे कि तुम (निश्चिन्त होकर उसके) कृतज्ञ बनो। और (वह ऐसा सर्व शक्तिमान है कि) उसने जो कुछ आकाशों में और जो कुछ पृथ्वी में है, अपनी ओर से सब कुछ तुम्हारे वश में कर दिया। निस्सन्देह इन (ख़ुदा के उपकारों) में (सोच विचार तथा) चिन्तन करने वालों के निमित्त (बड़े २) चिन्ह (विद्यमान) हैं ॥

(परन्तु जब उनमें सोच विचार की योग्यता नहीं और दण्ड तथा पुरस्कार का विश्वास नहीं करते, तो हे रसूल! आप) मुसलमानों से कह दीजिये कि उन लोगों को क्षमा करदें, जो अल्लाह के मामलात की आशा नहीं रखते, जिससे कि अल्लाह उन लोगों को उनके किये का बदला दे। जो मनुष्य शुभ कर्म करता है, तो अपने (लाभ के) लिये और जो बुराई करता है, तो (उसका दण्ड) उसीको भोगना है। पुनः (अन्त में) तुम (सबको) अपने पालन कर्त्ता की ओर लौटकर जाना है। और (उन लोगों में शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता हो, तो ख़ुदा के उपकारों के साथ गत-जातियों के वृतान्त पर सोच विचार करें और) देखें कि हमने इस्राईल की सन्तान को—

الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۚ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ
مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَ
هُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۗ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۞ ثُمَّ
جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا
تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا
عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ۞ هٰذَا بَصَآئِرُ
لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۞ اَمْ حَسِبَ
الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۗ
سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۞ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ع

بِالْحَقِّ

किताब ( तौरात ) और हुकूमत और पैग़म्बरी इनायत फ़रमाई और (मन, सल्वा जैसी) उम्दा उम्दा चीज़ें उन्हें खाने को दीं और दुनिया जहान के लोगों पर उनको फ़ौक़ियत दी ० और दीन के खुले खुले अहकाम उनको ( बता ) दिये। सो इन लोगों ने जो एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ किया, तो आगाही हुये पीछे आपस की ज़िद से ( किया और ऐ पैग़म्बर!) जिन ( बातों ) में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, क़यामत के दिन तुम्हारा पर्वर्दिगार इनमें उन ( बातों ) का फ़ैसला कर देगा ० फिर (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमको दीन की ( एक ) शरीअत ( यानी इस्लाम ) से लगा दिया है, ( तो तुम ) उसी ( ढर्रे ) पर चले जावो और उन लोगों की ख़्वाहिशों पर न चलो, जिनको ( इन बातों का ) इल्म नहीं ० अल्लाह के मुक़ाबले में यह लोग तुम्हारे कुछ भी काम नहीं आ सकते और नाफ़र्मान लोग एक के साथी एक, और परहेज़गारों का साथी अल्लाह ० ( क़ुर्आन ) लोगों के लिये (अक़्ल व) दानिश की बातों का मज्मुआ है और जो लोग (इसका) यक़ीन रखते हैं, उनके लिये ( सर्तापा ) हिदायत और रह्मत है ० जो लोग बद किर्दारियों के मुर्तकिब होते रहते हैं, क्या उन्होंने यह ख़याल कर रक्खा है कि हम उनको उनही लोगों जैसा कर देंगे, जो ईमान लाये और ( ईमान के अलावा ) उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये कि इन (सब) का मरना और इन ( सब ) का जीना एक ही तरह का हो। यह ( लोग क्या ही ) बुरे हुक्म लगाया करते हैं ० और अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को ( किसी ग़रज़ और ) मस्लहत से पैदा किया है—

( तौरेत और इन्जील ) पुस्तक और हिकमत तथा पैग़म्बरी प्रदान की। और उन्हें ( मन, सलवा और माइदा जैसी ) पवित्र वस्तुवें खिलाईं और उनको सर्व जगों पर श्रेष्ठता दी । और हमने उनको धर्म के खुले हुये प्रमाण प्रदान किये। अतः ( इससे प्रगट है कि ) उन्होंने ज्ञान हो जाने पर केवल परस्पर के हठ से ( धार्मिक-सिद्धान्तों तथा रसूलुल्लाह के विषय में ) विभेद किया। ( उन्होंने विभेद किया है, तो हे रसूल! ) आपका पालनहारा क़यामत के दिन उनके विभेद का निर्णय करेगा॥

पुनः ( मूसा और ईसा के उपरान्त ) हमने आपको धर्म के एक मार्ग पर स्थिर किया। अतः आप उस मार्ग पर स्थिर रहिये और उन लोगों की इच्छाओं पर न चलिये, जो ( धर्म के विषय में कुछ ) नहीं जानते। ( यदि इन लोगों की आधीनता करने से अल्लाह क्रोधित हो, तो ) अल्लाह के मुक़ाबले में यह आपके कुछ भी काम नहीं आ सकते । और यह अवज्ञाकारी लोग एक दूसरे के मित्र हैं ( अर्थात कुछ अवज्ञाकारी कुछ अवज्ञाकारियों के मित्र हैं )। और अल्लाह संयमियों का मित्र है॥

यह ( क़ुर्आन और यह बातें, जो उसमें वर्णन की जाती हैं )—लोगों के लिये समझ बूझ ( की बातें ) हैं। और ( यह क़ुर्आन ) उन लोगों के लिये, जिनमें ( ईमान तथा ) विश्वास की योग्यता है, पूर्णतया शिक्षा तथा कृपा है। जिन लोगों ने बुराइयाँ कीं, उनका यह विचार है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे, जो ईमान वाले तथा सुकर्मी हैं कि उन ( सब ) का मरना और जीना समान हो-( यह कैसे हो सकता है !! )। यह लोग क्या ही बुरा निर्णय करते हैं। और अल्लाह ने आकाशों और पृथ्वी को हिकमत (तथा मस्लहत) के साथ उत्पन्न किया-

بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ
هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى
سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ
فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝
وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ
وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ
بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝ وَاِذَا
تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ
قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلِ
اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ

४

और मक़्सूद यह है कि हर शख़्स को उसके किये का बदला दिया जाय ( चुनांचे क़यामत में ऐसा ही होगा ) और लोगों पर ( किसी तरह का ) ज़ुल्म नहीं किया जायगा ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) भला तुमने उस शख़्स ( के हाल ) पर भी नज़र की, जिसने अपनी ख़्वाहिश (नफ़्सानी) को अपना माबूद बना रक्खा है और इल्म होते-साते अल्लाह ने उसको गुमराह कर दिया है और उसके कानों पर और उसके दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आंखों पर पर्दा डाल दिया है—तो ख़ुदा के ( गुमराह किये ) पीछे उसको कौन हिदायत दे ( सकता है ? ) क्या तुम लोग ग़ौर ( व फ़िक्र ) को काम में नहीं लाते ० और कहते हैं-हमारी तो यही दुनिया की ज़िन्दगी है और बस, कि (यहीं) मरते हैं और (यहीं) जीते हैं और ज़माना ही हमको (एक वक़्त ख़ास तक ज़िन्दा रख कर) मार देता है और इनको इसकी कुछ तहक़ीक़ तो है नहीं। यह तो निरे अटकल के तुक्के चलाते हैं ० और जब इनको हमारी खुली खुली आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं, तो बस यही कट—हुज्जतियाँ किया करते हैं कि ( मुसल्मानों से ) कहते हैं कि अगर तुम ( अपने दावए क़यामत में) सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादों को (जिला उठाकर हमारे सामने) ला मौजूद करो ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से ) कहो कि अल्लाह ही तुमको ज़िन्दा रखता है। फिर ( वही ) तुमको मारता (भी) है। फिर (इसी तरह ) क़यामत के दिन जिस (के होने) में कुछ भी शुबहा नहीं, वह तुमको ( दुबारा जिलाकर हिसाब के लिये एक जगह ) इकट्ठा ( भी ) करेगा, मगर अक्सर लोग नहीं समझते ० और आस्मानों ( की ) और ज़मीन की सल्तनत अल्लाह ही की है और जिस दिन क़यामत बर्पा होगी—

---

( तो उससे उद्देश यही है कि लोक परलोक का एक प्रबन्ध नियत हो जाय ) और हर मनुष्य को उसके किये का फल मिले। और ( जब फल दिया जायगा, तो सच्चाई तथा न्याय के साथ दिया जायगा )-किसी पर ( कुछ ) अन्याय न होगा। क्या ( आपने हे रसूल ! ) उस मनुष्य की दशा पर भी विचार किया, जिसने अपनी दुर्वासना को अपना पूज्य बना लिया। ( अर्थात् जिसकी चाही, उसकी पूजा में लग गया। कभी इस पत्थर को पूजा, कभी उस पत्थर को पूजा )। और अल्लाह ने ज्ञान होते हुये उसे पथ-भ्रष्ट कर दिया। उसके कानों पर और हृदय पर मुहर लगा दी और उसके नेत्रों पर पट डाल दिया। अतः अल्लाह के उपरान्त उसे राह पर लाने वाला कौन है ? ( इनसे कहिये कि ) क्या तुम लोग ( इन बातों पर ) सोच विचार नहीं करते ॥

( वास्तविकता तथा यथार्थ पर तो यह लोग सोच विचार नहीं करते ) और कहते हैं कि हमारा जीवन ( केवल ) दुनिया ही का ( जीवन ) है। (दुनिया ही में ) हम मर जाते हैं और ( दुनिया ही में) हम जीवित रहते हैं। हमें तो समय ही (एक नियत काल तक जीवित रखकर ) नष्ट कर देता है। और ( सत्य बात यह है कि ) उन्हें इन बातों का कुछ ज्ञान नहीं है। केवल अटकल से बातें बनाते हैं। और जब उन ( काफ़िरों ) के सन्मुख हमारी खुली हुई (स्पष्ट) आयतें पढ़ी जाती-हैं ( जिनमें क़यामत के दिन क़ब्रों से उठाये जाने का वर्णन होता है) तो उनका (सबसे बड़ा) प्रमाण यह होता है कि कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो, तो हमारे (मरे हुए) बाप-दादा को (क़ब्रों से) उठा लाओ॥

(हे रसूल ! आप उनसे स्पष्ट) कह दीजिये कि अल्लाह ही तुमको जीवन प्रदान करता है और अल्लाह ही तुमको मृत्यु देता है। (और इसके पश्चात ) पुनः वही तुमको क़यामत के दिन ( एक स्थान पर ) एकत्रित करेगा। उस ( क़यामत के ) दिन में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है—परन्तु बहुतेरे लोगों को इसका ज्ञान नहीं ( कि क़यामत अवश्य होगी )। और आकाशों तथा पृथ्वी का राज्य अल्लाह ही का है। ( अतः उस सर्व शक्तिमान बलवान से डरो और उसकी आज्ञा पालन से मुंह न मोड़ो )। और ( स्मरण रक्खो ! ) कि जिस दिन क़यामत स्थिर होगी—

السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ۝ وَتَرَىٰ
كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ إِلَىٰ
كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ هَٰذَا
كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ
ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ
كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ
وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُجْرِمِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ
اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ
مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا
وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ۝ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ
مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

उस दिन ( क़यामत के ) झुठलाने वाले बड़े ही घाटे में आ जाएँगे ( इस वास्ते कि उन्होंने क़यामत के लिये कुछ भी तय्यारी नहीं की ) ० और ( ऐ पैग़म्बर ! तुम देखोगे कि हर एक उम्मत मुन्तज़िर-फ़ैसला मुअद्दब और ) दो-ज़ानू बैठी होगी । हर एक उम्मत अपने नामए ( आमाल ) के ( देखने के ) लिये बुलाई जाएगी ( और उनसे कह दिया जायगा कि दुनिया में ) तुम लोग जैसे जैसे अमल करते रहे हो, आज तुमको उनका एवज़ दिया जायगा ० यह हमारी किताब ( जिसमें तुम्हारे आमाल लिखे हुये हैं ) तुम्हारे मुक़ाबले में हक़-हक़ बोल रही है ( और ) जैसे जैसे तुम अमल करते थे, हम उनको लिखवाते जाते थे ० तो जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, उनको उनका पर्वर्दिगार अपनी रह्मत में ले लेगा—यही सरीह कामयाबी है ० और जो लोग कुफ़्र करते रहे, ( हम उनसे कहेंगे )—क्या तुमको हमारी आयतें पढ़ पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं ? ( ज़रूर सुनाई जाती थीं )—मगर तुमने गुरूर किया और तुम कुछ थे ही नाफ़र्मान लोग ० और जब ( तुमसे ) कहा जाता था कि ख़ुदा का वादा बरहक़ है और क़यामत ( के आने ) में कुछ भी शुबहा नहीं, तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते-क़यामत क्या चीज़ है । हां ! कुछ यूंही सा वाहिमा तो हमको भी गुज़र्ता है, मगर ( जिसको ) यक़ीन ( कहते हैं, वह तो ) हमको ( है ) नहीं ० और जैसे जैसे अमल यह लोग करते रहे ( हैं, अब ) उनकी बुराइयां उन पर ज़ाहिर हो जाएँगी और जिस ( अज़ाब ) की हँसी उड़ाते रहे हैं—( अब ) वह इन पर आ नाज़िल होगा ०—

---

उस दिन ( क़यामत के ) झुठलाने वाले घाटे में रहेंगे-( क्योंकि उन्होंने क़यामत पर विश्वास न होने के कारण उसके लिये कुछ तय्यारी नहीं की ) । और ( उस दिन हे रसूल ! ) आप हर जाति को ( भय के कारण ) घुटनों के बल ( गिरा हुआ ) देखेंगे । प्रत्येक जाति अपने कर्म-पत्र की ओर बुलाई जावेगी । ( और उनसे कहा जावेगा कि ) तुम संसार में जो कर्म करते रहे हो, आज उनका प्रतिफल दिया जावेगा ॥

यह है हमारी पुस्तक-( जिसमें तुम्हारे कर्म लिखे हैं और ) तुम्हारा ठीक २ हाल बता रही है । तुम संसार में जो कर्म करते थे, उसे हम लिखवाते जाते थे । अतः ( अब ) जो लोग ईमान वाले और सुकर्मी हैं, उन्हें उनका पालन कर्त्ता अपनी कृपा में ले लेगा ( और ) यह खुली हुई सफलता है । और जो लोग कुफ़् करते रहे ( उनसे पूछा जायगा कि बताओ ! ) क्या हमारी आयतें तुम्हारे समक्ष नहीं पढ़ी जाती थीं ? ( अवश्य पढ़ी जाती थीं )—परन्तु तुम अकड़ते थे और ( सत्य बात यह है कि ) तुम थे ही अवज्ञाकारी ( तथा उद्दण्ड ) । और जब ( तुमसे ) कहा जाता था कि निस्सन्देह अल्लाह का वादा सत्य है और क़यामत में किसी प्रकार का सन्देह नहीं, तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या वस्तु है । हां ! एक प्रकार का गुमान सा हम भी करते हैं, परन्तु हमको ( उसका ) विश्वास नहीं ॥

( अन्त में ) उनके कर्मों की बुराइयां प्रगट होने लगेंगी और जिस ( अज़ाब ) का ( संसार में ) उपहास करते थे, वह उनको आ घेरेगा—

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ
يَوْمِكُمْ هَٰذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن
نَّاصِرِينَ ۝ ذَٰلِكُم بِأَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا
وَغَرَّتْكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ
مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝ فَلِلَّهِ الْحَمْدُ
رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ
وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
حم ۝ تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ
مَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا
بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا
مُعْرِضُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ

और ( इनसे ) कह दिया जायगा कि जिस तरह तुमने अपने इस दिन के आने को भुलाये रक्खा, आज हम भी तुमको ( दीदा व दानिस्ता ) भुला देंगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं ० यह उसकी सज़ा है कि तुमने ख़ुदा की आयतों की हँसी बनाई और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुमको धोके में डाले रक्खा। ग़रज़ आज न तो यह लोग दोज़ख़ से निकाले जाएँगे और न इनको मौक़ा दिया जायगा कि (तौबा व इस्तिग़फ़ार करके ख़ुदा को) रज़ामन्द करलें ० पस अल्लाह ही की तारीफ़ है-(जो ) आस्मानों का मालिक ( है ) और ज़मीन का मालिक (है और ) दुनिया जहान का मालिक ( है ) ० और आस्मानों ( में ) और ज़मीन में उसी की बड़ाई है और वही ज़बरदस्त ( और ) हिक्मत वाला है ०

## सूरत–अहक़ाफ़

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ३५ आयतें और ४ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० हा-मीम् ० ( यह ) फ़र्मान-तहरीरी पेशगाह-ख़ुदावन्दी से सादिर होता है, जो ग़ालिब ( और ) हिक्मत वाला है ० हमने आस्मानों ( को ) और ज़मीन को और जो चीज़ें आस्मान व ज़मीन में हैं, उनको किसी मस्लहत ही से और एक वक़्त ख़ास तक के लिये पैदा किया है और काफ़िरों को जिस ( चीज़ ) से डराया जाता है ( जैसे क़यामत वग़ैरह, वह तो ) उसकी पर्वा (ही) नहीं करते ० ( ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से ) कहो कि भला देखो तो सही! कि ख़ुदा के सिवा जिन ( माबूदों ) को तुम पुकारते हो—

---

और उनसे कहा जायगा कि जिस प्रकार अपने इस दिन के मिलने को भुला रक्खा था, उसी प्रकार आज हम तुमको भूल जायँगे। दोज़ख़ तुम्हारा ठिकाना है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं। यह ( सब कुछ) इस कारण है कि तुमने ख़ुदा की आज्ञाओं का उपहास किया और तुम ( अल्प-कालिक ) सांसारिक जीवन के धोखे में आ गये। अतः (इन दोज़ख़ी लोगों के निमित्त अन्त पर विचार न करने का यह दण्ड है कि ) आज न दोज़ख़ से निकाले जावेंगे और न उनको इसका अवसर दिया जावेगा कि ( तौबा तथा क्षमा-द्वारा ख़ुदा को ) प्रसन्न करलें ॥

अतः ( उस अज़ाब से डरो और सच्चे दिल से कहो कि ) हर प्रकार की प्रशंसा ( तथा स्तुति ) अल्लाह ही के योग्य है, जो आकाशों का स्वामी तथा पृथ्वी का स्वामी और सर्व जगों का पालन कर्त्ता है। आकाशों में तथा पृथ्वी में उसी की महानता ( तथा श्रेष्ठता ) है। और वह बलवन्त तथा हिकमत वाला है ॥

## सूरत–अहक़ाफ़

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें ३५ आयतें और ४ रुकूअ हैं ॥**

इस पुस्तक का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो बलवान (तथा) हिकमत वाला है। ( हाँ ! हम बलवन्त तथा बुद्धिमान हैं ) हमने आकाशों तथा पृथ्वी को और उन दोनों के मध्य जो कुछ है, उसको ( सोच समझ कर ) सचाई के साथ और एक नियत समय तक के लिये उत्पन्न किया। ( ईमान वाले हमारे इन चिन्हों से शिक्षा ग्रहण करके हमारी अनुकम्पा के अभिलाषी होते हैं और हमारे अज़ाब से डरते हैं ) और जो लोग काफ़िर हैं, वह उस वस्तु से-जिससे उन्हें डराया जाता है, विमुखता (और बे-पर्वाही) करते हैं। (हे रसूल! तुम इन काफ़िर तथा मुश्रिक लोगों से ) कहो कि ख़ुदा को छोड़ कर जिन ( कल्पित पूज्यों) को तुम ( लोग ) पुकारते हो, उनके विषय में यदि तुमने देखा हो—

( एक नज़र ) मुझको तो दिखावो कि उन्होंने कौन सो ज़मीन पैदा की है ? या आस्मानों ( के बनाने) में उनका साझा है। अगर तुम ( अपने दावे में) सच्चे हो, तो इससे पहिले को कोई किताब या इल्मी-रवायत मेरे सामने पेश करो ० और उससे बढ़कर गुमराह कौन, जो खुदा के सिवा ऐसे ( माबूदों ) को पुकारे, जो रोज़-क़यामत तक उसको जवाब ( तक ) न दे सकें और ( जवाब देना तो दर-किनार ) उनको ( तो ) इनको दुआ ( तक ) को ( भी ) ख़बर नहीं ० और जब (क़यामत के दिन) लोग (हिसाब के लिये ) जमा किये जाएँगे, तो यह ( माबूद उलटे ) इनके दुश्मन हो जाएँगे और इनको परस्तिश से इन्कार करेंगे-( सो अलग ) ० और जब हमारी खुली खुली आयतें ( इन लोगों ) को पढ़ कर सुनाई जाती हैं-( तो ) जो लोग मुन्किर हैं-( कुर्आन बर ) हक़ के आये पीछे उसकी निस्बत कहते हैं कि यह तो सरीह जादू है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या ( यह लोग कुर्आन की निस्बत ) कहते हैं कि इसको इस ( शख़्स यानी तुम) ने अपने दिल से बना लिया है ? (तुम इनसे) कहो ! कि अगर मैंने इस को अपने दिल से बनाया होगा, तो तुम खुदा के मुक़ाबले में मेरे कुछ भी काम नहीं आ सकते। जैसी जैसो बातें तुम लोग बनाते हो, वही उनको खूब जानता है ( और वही ) मेरे और तुम्हारे दरमियान शाहिद बस है और वही बख़्शने वाला मेहर्बान है ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मैं पैग़म्बरों में कोई अनोखा (पैग़म्बर ) तो हूं नहीं और मैं नहीं जानता कि—

أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ
فِي السَّمٰوٰتِ ائْتُونِي بِكِتٰبٍ مِنْ قَبْلِ هٰذَا
أَوْ أَثٰرَةٍ مِنْ عِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝ وَمَنْ
أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَنْ لَا
يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَائِهِمْ غٰفِلُونَ ۝ وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ
أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِينَ ۝ وَإِذَا
تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ
افْتَرٰىهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ
اللّٰهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ كَفٰى بِهِ
شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝
قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا

يفعل

तो मुझे भी दिखाओ कि उन्होंने कौन सी पृथ्वी उत्पन्न की है ? वा आकाशों ( की रचना तथा प्रबन्ध ) में उनका किस प्रकार का साझा है। यदि तुम अपने दावे में सच्चे हो, तो इससे पहिले की कोई पुस्तक अथवा कोई ज्ञान-युक्त कहावत मेरे सन्मुख उपस्थित करो: अन्यथा उनसे बढ़कर पथ-भ्रष्ट कौन है, जो अल्लाह को छोड़ कर ऐसे ( पूज्यों ) को पुकारते हैं, जो क़यामत पर्यन्त उनकी बात का उत्तर न दे सकें और उन्हें उनके पुकारने की ख़बर भी न हो। और ( सत्य बात यह है कि ) जब ( क़यामत में ) लोग ( हिसाब के लिए ) एकत्रित किये जावेंगे, तो यह ( मूर्त्तियां ) उनकी शत्रु हो जावेंगी और उनकी उपासना का अस्वीकार करेंगी ( और कहेंगी कि हमारा इनके शिर्क तथा उपासना से कोई सम्बन्ध नहीं। इन्होंनें अपनी ही इच्छा से ऐसा किया था ) ॥

और जब उनके सन्मुख हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती हैं, तो यह काफ़िर ( लोग उन ) सत्य ( आयतों ) के विषय में उनके आये पीछे कहते हैं कि यह खुला हुआ जादू है। क्या ( हे रसूल ! ) यह लोग कहते हैं कि इसे उस मनुष्य ने ( अर्थात तुमने ) अपने दिल से बना लिया है। तुम ( उनसे ) कहो कि यदि मैंने इसे ( अर्थात कुर्आन को ) अपने दिल से बना लिया है, तो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम कुछ भी मेरे काम नहीं आ सकते। ( अर्थात यदि मैंने बना लिया है, तो उसका दण्ड मैं ही भोगूंगा। तुमको उससे कुछ सम्बन्ध नहीं हो सकता ) ॥

वह ( सर्वज्ञ खुदा ) भली भांति जानता है, जो कुछ तुम उसके ( अर्थात कुर्आन के ) विषय में कहते हो। और वह मेरे और तुम्हारे बीच पर्याप्त गवाह है। और वह ( बड़ा ) क्षमा करने वाला कृपालु है। ( हे रसूल ! ) तुम कहो कि मैं कोई नवीन ( तथा अनोखा ) पैग़म्बर नहीं हूं। और मैं नहीं जानता कि—

يفعل بي ولا بكم ان اتبع الا ما يوحى الي
وما انا الا نذير مبين ● قل ارءيتم ان كان
من عند الله وكفرتم به وشهد شاهد
من بني اسراءيل على مثله فامن واستكبرتم
ان الله لا يهدي القوم الظلمين ● وقال
الذين كفروا للذين امنوا لو كان خيرا
ما سبقونا اليه واذ لم يهتدوا به فسيقولون
هذا افك قديم ● ومن قبله كتب موسى
اماما ورحمة وهذا كتب مصدق
لسانا عربيا لينذر الذين ظلموا وبشرى
للمحسنين ● ان الذين قالوا ربنا الله ثم
استقاموا فلا خوف عليهم ولا هم
يحزنون ● اولئك اصحب الجنة خلدين

ع

(आइन्दा) मेरे साथ क्या किया जायगा और न (यह जानता हूं कि) तुम्हारे साथ (क्या किया जाएगा)—मेरी तरफ़ जो वही नाज़िल होती है, मैं तो सिर्फ़ उसी पर चलता हूं और मैं साफ़ तौर पर डर सुना देने वाला हूं और बस ०. (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि भला देखो तो सही, अगर यह (कुर्आन) ख़ुदा की तरफ़ से हो और तुम इससे इन्कार कर बैठे और बनी इस्राईल में से एक गवाह ने इसी तरह की एक (किताब के नाज़िल होने) की गवाही (भी) दी और वह ईमान (भी) ले आया और तुम अकड़े ही रहे—(तो इस सूरत में तुम्हारा क्या अंजाम होना है)। बेशक अल्लाह नाफ़र्मान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० और मुन्किर मुसलमानों की निस्बत कहते हैं कि अगर (दीन-इस्लाम) बेहतर होता, तो (यह अवामुन्नास) हमसे पहिले उसकी तरफ़ न दौड़ पड़ते और जब कुर्आन के ज़रिये से इनको हिदायत न हुई, तो अब (इस के सिवा और क्या) कहेंगे कि यह (तो एक) क़दीमी झूट है ० हालाँकि कुर्आन से पहिले मूसा की किताब (यानी तौरात नाज़िल हो चुकी) है (कि वह बजाय ख़ुद दीन की) पेशवा और (ख़ुदा की) रहमत (है) और यह (कुर्आन भी उसी तरह की) किताब (इलाही) है। (तौरात की) तस्दीक़ करती (और) अरबी-ज़बान में (है)—ताकि जो लोग (बड़े) सर्कश हैं, उनको (अज़ाब-ख़ुदा से) डराये और जो लोग नेकोकार हैं, उनको (ख़ुशनूदिए-ख़ुदा की) ख़ुश-ख़बरी (दे) ० बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा पर्वर्दिगार अल्लाह है, फिर (आख़िर तक इसी अक़ीदे पर) जमे रहे, तो (आख़िरत में) न तो उन पर (किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह) आज़ुर्दा-ख़ातिर रहेंगे ० यही तो हैं, अह्ले-जन्नत कि उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे—

---

मेरे साथ (आगे चल कर) क्या किया जावेगा। और न मैं यह जानता हूं कि तुम्हारे साथ क्या किया जावेगा। मैं तो केवल उस वही का अनुगामी हूं, जो मुझ पर उतारी जाती है। और मैं तो (तुमको ख़ुदा के अज़ाब से) प्रगट-रूप से डराने वाला हूं। (हे रसूल!) तुम (उनसे) कहो कि क्या तुमने (इस बात पर) विचार किया? कि यदि यह (कुर्आन वास्तव में) अल्लाह ही की ओर से हुआ और तुमने उसका अस्वीकार किया—यद्यपि इस्राईल की सन्तान में से एक गवाह ने इसी प्रकार की एक (पुस्तक उतरने) की गवाही भी दी और वह ईमान (भी) ले आया और तुम अहङ्कार (से अस्वीकार) पर स्थिर रहे—(तो तुम्हारा परिणाम क्या होगा? स्मरण रक्खो!) कि अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता॥

और काफ़िर ईमान वालों से कहते हैं कि यदि (इस्लाम-धर्म तथा कुर्आन) कोई अच्छी वस्तु होता, तो (जो निर्धन ईमान लाये हैं, यह) उसकी ओर हमसे आगे न निकल जाते—(बरन् उनसे पहिले हम ईमान लाते)। और (बात यह है कि) जब उन लोगों को धर्म-मार्ग न मिला, तो (अब यही) कहेंगे कि यह (तो) एक प्राचीन झूठ है। यद्यपि (कुर्आन से पहिले) मूसा की पुस्तक (अर्थात तौरेत अवतीर्ण हो चुकी है, जो स्वयं धर्म की) अगुवा तथा (ख़ुदा की) अनुकम्पा है। और यह पुस्तक (अर्थात कुर्आन उसका) समर्थन करती है। अरबी भाषा में (उतारी गई) है, जिससे कि उद्दण्ड लोगों को (ख़ुदा के अज़ाब से) डराइये और सुकर्मियों को (ख़ुदा की प्रसन्नता का) मंगल-समाचार सुनाइये॥

हाँ! वह (सुकर्मी लोग) जिन्होंने कहा कि हमारा पालन कर्त्ता अल्लाह है। पुनः (अन्त तक इसी विचार पर) स्थिर रहे, तो न उनको किसी प्रकार का भय होगा और न वह (कभी) शोकित होंगे। यही तो हैं, जन्नती लोग, कि उसमें सर्वदा रहेंगे—

فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ
بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا
وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ
شَهْرًا حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً
قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي
تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ
فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا
يُوعَدُونَ ۝ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا
أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ
قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ

( यह ) उनके अमलों का बदला ( है ) जो ( दुनिया में) करते रहे० और हमने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ नेक सलूक करने की ताकीद की है कि मुश्किल से उसकी माँ ने उसको पेट में रक्खा और मुश्किल ही से उसको जना और उसका पेट में रहना और उसके दूध का छूटना ( कम से कम कहीं ) तीस महीने ( में जाकर तमाम होता ) है। यहां तक कि जब ( आदमी ) अपनी पूरी क़ूवत को पहुंचता है; यानी चालीस बरस ( की उम्र ) को पहुंचता है, तो ( ख़ुदा से ) दुआ करता है कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मुझको इस ( बात ) की तौफ़ीक़ दे ! कि तूने जो मुझ पर और मेरे मां बाप पर एहसानात किये हैं, तेरे उन एहसानात का शुक्रिया अदा करता रहूं और इस ( बात ) की ( भी तौफ़ीक़ दे ) कि मैं ऐसे नेक अमल करूँ, जिनसे तू राज़ी हो और मेरी औलाद में नेक-बख़्ती पैदा कर !( कि ) मेरे लिये ( मूजिब-राहत हो ) मैं ( अपनी तमाम हाजतों में ) तेरी तरफ़ रुजू लाता हूं और मैं तेरे फ़र्मांबर्दार बन्दों में हूं ० यही लोग हैं कि ( और ) जन्नतियों ( के शुमूल ) में हम उनके नेक अमलों को क़बूल फ़र्मायेंगे और इनकी ख़ताओं से दर गुज़र करेंगे। वादा सच्चा, जो ( दुनिया में ) इनसे किया जाता था—( यह उसकी तामील है ) ० और जिसने अपने माँ बाप से कहा कि तुम पर तुफ़ है। क्या तुम मुझे वादे देते हो ! कि ( मरे पीछे ) मैं ( दुबारा ज़िन्दा करके क़ब्र से ) निकाला जाऊंगा ? हालांकि मुझसे पहिले ( कितनी ) उम्मतें गुज़र गईं ( और किसी को मर कर जीते न देखा ! ) और ( मां बाप का यह हाल है कि ) वह ख़ुदा की दुहाई देते हैं (और बेटे से कहते हैं) कि तेरा जाय नास ! ईमान ला ! बेशक अल्लाह का वादए ( क़यामत ) बरहक़ है—

---

यह उनके ( शुभ ) कर्मों का फल है। और ( शुभ कर्मों में एक यह भी है कि माता पिता के साथ सद्-व्यवहार किया जाय। अतः ) हमने मनुष्य को आज्ञा दी है कि अपने माता पिता के साथ सद-व्यवहार करे । उसकी माता ने उसे विपत्ति उठाकर ओदर में रक्खा और कष्ट सहन करके जना। और उसका ओदर में रहना और उसके दूध का छूटना ( कहीं ) तीस मास में व्यतीत होता है। यहां तक कि जब (इस प्रकार पालन पोषण होकर मनुष्य) अपनी युवा-अवस्था को पहुंचता है अर्थात चालीस वर्ष का हो जाता है, तो ( प्रार्थना करते हुए ) कहता है कि हे पालनहारे ! मुझे ( इस बात की ) शक्ति प्रदान कर ! कि तूने मुझ पर और मेरे माता पिता पर जो २ उपकार किये हैं, उनका धन्यवाद देता रहूं और ऐसे शुभ कर्म करूँ, जिनसे तू प्रसन्न हो। और मेरी सन्तान को ( भी ) मेरे लिये नेक ( तथा सुकर्मी ) बनादे। मैं तेरी ओर अवहित होता हूं और मैं ( तेरे ) आज्ञाकारियों में हूं ॥

यह वह लोग हैं, जिनके शुभ कर्म हम अंगीकार करेंगे और उनकी बुराइयों को क्षमा कर देंगे । ( यह भी ) जन्नती लोगों में हैं। उस सत्य प्रतिज्ञा के कारण, जो ( दुनिया में ) उनसे की जाती थी ॥

और जिसने अपने माता पिता से कहा कि तुम पर फिटकार ! क्या तुम मुझे डराते हो कि ( मैं मृत्यु के पश्चात जीवित करके क़ब्र से ) निकाला जाऊंगा-यद्यपि मुझसे पहिले ( बहुत सी ) जातियां हो चुकी हैं ( और उनमें से कोई भी मृत्यु के पश्चात ज़िन्दा नहीं हुआ। पुत्र की वार्त्तालाप सुनकर माता पिता ) अल्लाह से विनती करते हैं ( और पुत्र से कहते हैं ) कि तेरा बुरा हो । ईमान ले आ ! निस्सन्देह अल्लाह का वादा—

तो ( यह उनको ) जवाब देता है कि यह तो निरे अगलों के ढकासले हैं ० यही वह लोग हैं कि जिन्नात की और आदमियों की दूसरी उम्मतें, जो इनसे पहिले हो गुज़री हैं, उन ( के शुमूल ) में यह भी वादए-अज़ाब के मुस्तहिक़ ठहरे। बेशक यह लोग ( अपनी बद-किर्दारियों की वजह से ) बर्बाद होने वाले ही थे-( सो हुये ) ० और ( आख़िरत में ) अपने अपने अमल के मुताबिक़ सबके ( अच्छे या बुरे ) दर्जे होंगे और ( यह ) इसलिये कि ख़ुदा उन लोगों को उनके आमाल का पूरा पूरा बदला दे और उन पर ( किसी तरह का ) ज़ुल्म न हो ० और ( क़यामत के दिन ) जब काफ़िर दोज़ख़ के सामने लाये जाएँगे-( तो उनसे कहा जायगा कि ) तुम अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में अपने ( हिस्से के ) मज़े उड़ा चुके और उनसे ( ख़ातिर-ख़्वाह ) फ़ायदा ( भी ) उठा चुके हो, तो आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जायगी-( यह ) उसका बदला (है) कि तुम नाहक़ ( ना-रवा ) ज़मीन में अकड़ा करते थे और (यह) उसका बदला (है) कि तुम नाफ़र्मानियां किया करते थे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों को क़ौम ) आद के भाई हूद ( पैग़म्बर ) को याद दिलायो। जब उन्होंने अपनी क़ौम को ( सर-ज़मीन ) अहक़ाफ़ में ( अज़ाब-ख़ुदा से ) डराया और ( हाल यह था कि ) उनके आगे से और उनके पीछे से ( यानी कसरत से और ) डराने वाले भी आ चुके थे ( और हूद ने अपनी क़ौम से कहा ) कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो। मुझको तुम्हारी निस्बत ( एक ) बड़े ( सख़्त ) दिन के अज़ाब का ख़तरा है ०—

حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ
قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ
إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ● وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا
عَمِلُوا وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ
أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا
وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ
الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ● وَاذْكُرْ أَخَا
عَادٍ إِذْ أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ
النُّذُرُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا
إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ

ع

---

सत्य है। इस पर वह कहता है कि यह कुछ भी नहीं-केवल अगले लोगों की कहानियाँ हैं। यह वह लोग हैं कि मनुष्यों तथा जिन्नों की जो जातियाँ इनसे पहिले हो चुकी हैं ( और उन्होंने उद्दण्डता की है ) उन ( के सम्मेल ) में इन पर ( अज़ाब की ) आज्ञा हो चुकी है। निस्सन्देह यह लोग ( अपने कुकर्मों के कारण ) हानि उठाने वाले ही थे। ( अतः उन्होंने हानि उठाई )॥

और ( परलोक में ) सबके लिये ( शुभ अशुभ ) कर्मों के अनुकूल पद होंगे। और यह इस लिये कि ( अल्लाह ) उनके कर्मों का पूरा २ प्रतिफल दे और उन पर ( किसी प्रकार का ) अत्याचार न होगा। और ( क़यामत के दिन ) जब काफ़िर दोज़ख़ के सन्मुख लाये जावेंगे ( तो उनसे कहा जावेगा कि ) तुम अपनी स्वादिष्ट वस्तुयें अपने सांसारिक जीवन में व्यय कर चुके और उनसे लाभ उठा चुके। अब आज तुम पर अधमता का अज़ाब होगा और इस कारण कि तुम संसार में व्यर्थ अहङ्कार करते थे और इस हेतु कि तुम अवज्ञा करते थे॥

और ( हे पैग़म्बर ! आप ) आद के भाई ( हूद पैग़म्बर ) का स्मरण कीजिये ( और इन लोगों को स्मरण कराइये ) जब उन्होंने अपनी जाति को अहक़ाफ़ × ( की भूमि ) में ( ख़ुदा के अज़ाब से ) डराया-इस दशा में कि उनके आगे पीछे ( बहुत से ) डराने वाले ( पैग़म्बर भी ) आ चुके थे ( और उपदेश दिया कि ) अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना न करो। ( यदि तुमने ऐसा न किया, तो ) मुझे तुम्हारे विषय में बड़े दिन ( अर्थात क़यामत के दिन ) के अज़ाब का भय है॥

× टीका—अहक़ाफ़ आद जाति की बस्ती का नाम। आद जाति की रेतीली बस्ती का नाम, जहाँ रेत के लम्बे २ लहरियादार तूदे थेः—हसन निज़ामी॥

قَالُوٓا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ ءَالِهَتِنَا فَأْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ●
قَالَ إِنَّمَا ٱلْعِلْمُ عِندَ ٱللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّآ أُرْسِلْتُ
بِهِۦ وَلَٰكِنِّىٓ أَرَىٰكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ● فَلَمَّا رَأَوْهُ
عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ
مُّمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا ٱسْتَعْجَلْتُم بِهِۦ ۖ رِيحٌ فِيهَا
عَذَابٌ أَلِيمٌ ● تُدَمِّرُ كُلَّ شَىْءٍۭ بِأَمْرِ رَبِّهَا
فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰٓ إِلَّا مَسَٰكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ
نَجْزِى ٱلْقَوْمَ ٱلْمُجْرِمِينَ ● وَلَقَدْ مَكَّنَّٰهُمْ فِيمَآ
إِن مَّكَّنَّٰكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَٰرًا
وَأَفْـِٔدَةً فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ أَبْصَٰرُهُمْ
وَلَآ أَفْـِٔدَتُهُم مِّن شَىْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ
بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ●

وलقد

वह लगे कहने कि क्या तू इस ग़रज़ से हमारी तरफ़ (पैग़म्बर बनकर) आया है कि हमको हमारे माबूदों से बर्गश्ता करदे। पस अगर (अपने दावे में) सच्चा है, तो जिस (अज़ाब) का वादा तू हम (लोगों) से करता है, उसको हम पर ला (नाज़िल कर!) ० (हूद ने) कहा (इसकी) ख़बर तो अल्लाह ही को है और मुझको तो जो (पैग़ाम) देकर भेजा गया है, वह तुमको पहुंचाये देता हूं—मगर मैं तुमको देखता हूं कि तुम लोग जिहालत करते हो ० फिर (उन लोगों ने) जब उस अज़ाब को देखा कि एक अब्र है, जो उनके मैदानों की तरफ़ को उमड़ा चला आ रहा है–तो लगे कहने कि यह तो एक अब्र है (और) हम पर बरसता हुआ (मालूम होता है। नहीं! नहीं! अब्र नहीं है)–बल्कि यह वही (अज़ाब–ख़ुदा) है, जिसके लिये तुम जल्दी मचा रहे थे–(यानी बड़े ज़ोर की) आंधी है, जिसमें अज़ाब दर्दनाक है ० कि यह अपने पर्वर्दिगार के हुक्म से हर चीज़ को तहस तहस कर देगी। चुनांचे (वाक़े में) यह लोग ऐसे (तबाह) हो गये कि इनके घरों के सिवा और कोई चीज़ नज़र नहीं आती थी। नाफ़र्मान लोगों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं ० और हमने उनको ऐसे ऐसे कामों का मक़्दूर दिया था कि तुम (अह्ले-मक्का) को (उनका अश्र-अशीर भी) मक़्दूर नहीं दिया और हमने उनको कान और आंखें और दिल (सबही कुछ) दिये थे, लेकिन अज़–बस–कि वह लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार रखते थे, न तो उनके कान ही उनके कुछ काम आये और न उनकी आंखें और न उनके दिल। और जिस (अज़ाब) को हँसी उड़ाते थे–(आख़िरकार) उन हो पर उलट पड़ा ०—

(उन लोगों ने) कहा कि क्या तुम हमारे पास इस हेतु आये हो (और हमें यह उपदेश इस कारण दे रहे हो) कि हमको हमारे पूज
से फेर दो। अच्छा तो यदि तुम सच्चे हो, तो जिस (अज़ाब) से हमें भय दिला रहे हो, वह हम पर ले आओ। (हूद ने) कहा कि इस
ज्ञान तो केवल अल्लाह ही को है (कि अज़ाब कब आवेगा) और मेरा काम तो केवल इतना है कि वह (आज्ञायें) तुम्हें पहुंचा दूं, जि
साथ मुझे भेजा गया है—किन्तु मैं देखता हूं कि तुम लोग मूर्खता (तथा अज्ञानता) की बातें कर रहे हो। सो जब उन्होंने उस (अज़ाब)
देखा (कि एक मेघ है, जो) उनके जंगलों की ओर बढ़ा चला आ रहा है–(तो) बोले कि यह मेघ है–हम पर बरसने वाला। (हूद ने क
नहीं! नहीं!)–वरन् यह वही (अज़ाब) है, जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। (अर्थात) एक आँधी है, जिसमें दुखदाई आपत्ति (त
अज़ाब) है। यह पालनहारे की आज्ञा से प्रत्येक वस्तु को नष्ट (भ्रष्ट) कर देगी। सो (ऐसा ही हुआ। और यह लोग ऐसे नष्ट हुये
उनके घरों के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता था। इसी प्रकार हम पापी लोगों को (उनके कुकर्मों का) प्रतिफल देते हैं॥

और हमने (हे मक्का के निवासियो!) उन (लोगों) को ऐसी बातों की शक्ति दी थी कि तुमको उन बातों की शक्ति नहीं दी
और हमने उन्हें कान और आँखें और दिल (भी कुछ दिया था और वह उन शक्तियों से हर प्रकार के लाभ उठाते थे)–परन्तु चूंकि यह
अल्लाह की आयतों का अस्वीकार करते थे, इसलिये न कान उनके कुछ काम आये और न आँखें और न दिल। और उस (अज़ाब) ने उ
घेर लिया, जिसकी वह हंसी उड़ाते थे॥

और (ऐ अहले-मक्का!) हमने तुम्हारे आस-पास की (कितनी) बस्तियां हलाक कर मारीं और हमने बदल बदल कर (अपनी कुद्रत की) निशानियां (बहुतेरी कुछ) दिखाईं कि (किसी ढब से) वह (अपनी हरकात से) बाज़ आ जाएँ—(मगर उन्होंने एक न सुनी और आख़िर मुब्तलाए-अज़ाब हुये) ० तो ख़ुदा के सिवा जिन चीज़ों को उन्होंने तक़र्रु ब (ख़ुदा हासिल करने) के लिये अपना माबूद बना रक्खा था (अगर उनको कुद्रत थी, तो) उन्होंने (नुज़ूल-अज़ाब के वक़्त) इनकी क्यों न मदद की? (मदद करना तो दर-किनार) बल्कि—(वक़्त पर उलटे) इनकी नज़र से ग़ायब-गुल्ला हो गये और इनके झूट और इनकी बोहतान-बन्दियों की यह हक़ीक़त थी—(जो अब ज़ाहिर हुई) ० और (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से उस वाक़ए का भी ज़िक्र करो) जब हम चन्द जिन्नों को (घेर कर) तुम्हारी तरफ़ ले आये कि वह क़ुर्आन सुनें। फिर जब वह इस (मौक़े) पर आ हाज़िर हुये, तो (एक दूसरे से) बोले कि चुप (बैठे सुनते) रहो। फिर जब (क़ुर्आन का पढ़ना) तमाम हुआ, तो वह अपने लोगों की तरफ़ लौट गये कि उनको अज़ाब-ख़ुदा से डरायें ० (और उनसे जाकर) लगे कहने कि भाइयो! हम एक किताब सुन आये हैं, जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है। अगली (किताबें) जो इसके ज़माने में मौजूद हैं, उनकी तस्दीक़ करती है। (दीन) हक़ (बताती) और सीधा रस्ता दिखाती है ० भाइयो! (यह पैग़म्बर मुहम्मद) जो ख़ुदा की तरफ़ से मुनादी करते हैं, इनकी बात मानो और ख़ुदा पर ईमान लावो, ताकि ख़ुदा तुम्हारे गुनाह माफ़ करे और (आख़िरत के) अज़ाब-दर्दनाक से तुमको (अपनी) पनाह में रक्खे ० और (यह पैग़म्बर) जो ख़ुदा की तरफ़ से मुनादी करते हैं, जो कोई इनकी बात न मानेगा—

٤

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا
الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ
الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً
بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ۝ وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ
الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ
قَالُوا أَنصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِم
مُّنذِرِينَ ۝ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا
أُنزِلَ مِن بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ
يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝
يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ
يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ
عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَمَن لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ

---

और हमने (हे मक्का के निवासियो!) तुम्हारे आस पास की बस्तियां (भी तो) नष्ट की हैं। और हमने अपनी (शक्ति के) चिन्ह बदल २ कर (हर दशा में) उन्हें दिखाये, जिससे कि वह (शिक्षा ग्रहण करें और हमारी ओर) ध्यान दें—(परन्तु वह किसी प्रकार अवहित न हुये और अन्त में उन पर अज़ाब उतरा)। सो (जब उन लोगों पर अज़ाब उतरा, तो) उन पूज्यों ने क्यों उनकी सहायता न की, जिन्हें अल्लाह को छोड़कर उन्होंने (अल्लाह की) नज़्दीकी प्राप्त करने के निमित्त ग्रहण कर रक्खा था। (सहायता कैसी)—वरन (समय पर) यह उनसे खो गये॥

और (इन अस्वीकार करने वालों को आप हे पैग़म्बर! वह घटना याद दिलाइये) जब हमने जिन्नों के एक समूह को आपकी ओर अवहित किया, जिससे कि वह क़ुर्आन सुनें। अतः जब वह क़ुर्आन सुनने लगे, तो उन्होंने (परस्पर) कहा कि चुप रहो! (और मन लगा कर सुनो!)। सो (उन्होंने सुना और) जब (क़ुर्आन का) पाठ समाप्त हो चुका, तो वह अपनी जाति की ओर फिर गये, जिससे कि वह (उसे ख़ुदा के अज़ाब से) डरावें॥

(उन्होंने) कहा कि हे हमारी जाति (के लोगो!) हमने एक पुस्तक सुनी है, जो मूसा के पश्चात अवतीर्ण हुई है। उन (पुस्तकों) का, जो (इस समय) विद्यमान हैं, समर्थन करती है। सत्य (धर्म) और सीधे मार्ग की शिक्षा देती है। (अतः) हे लोगो! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मानो और उस पर ईमान लाओ, जिससे कि (अल्लाह) तुम्हारे पाप क्षमा करे और तुमको दुखदाई अज़ाब से (अपनी) शरण में रक्खे। और जो (मनुष्य) अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात न मानेगा—

بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ
الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ
بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ
وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ
فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا
تَسْتَعْجِل لَّهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ
لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ ۚ بَلَاغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ
إِلَّا الْقَوْمُ — سورة محمد مدنية ثمان وثلثون آية — الْفَاسِقُونَ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ

वह रूए-ज़मीन पर ( कहीं को भागकर ख़ुदा को तो ) आजिज़ कर सकता नहीं और न ख़ुदा के सिवा ( कोई ) इसके हिमायती हैं। यह लोग सरीह गुमराही में ( पड़े ) हैं ० ( जो लोग क़यामत के मुन्किर हैं ) क्या उन्होंने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की, कि जिस ख़ुदा ने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने में उसको ( ज़रा भी ) तकान न हुआ, वह मुर्दों के जिला उठाने पर ( भी ) क़ादिर है ( और ) क्यों (क़ादिर) न हो, वह तो हर चीज़ को कुद्रत रखता है ० और जिस दिन काफ़िर दोज़ख़ के सामने लाये जाएंगे—( उनसे पूछा जायगा कि ) क्या यह ( दोज़ख़ अब भी ) बरहक़ नहीं है ? वह कहेंगे हमको अपने पर्वर्दिगार की क़सम! ज़रूर बरहक़ है—तो ( ख़ुदा उनको ) हुक्म देगा (कि अच्छा ! तो ) अपने कुफ़्र ( व इन्कार ) के बदले में ( इसी के ) अज़ाब ( के मज़े ) चक्खो ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) जिस तरह ( और ) हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने ( काफ़िरों की ईज़ाओं पर ) सब्र किया, तुम भी सब्र करो और इनके लिये ( अज़ाब की ) जल्दी न मचाओ। जिस दिन ( क़यामत को ) देख लेंगे, जिसका वादा इनसे किया जाता है, तो ( इनको ऐसा मालूम होगा कि ) गोया ( दुनिया में ) बहुत रहे होंगे—तो ( सारे ) दिन में से एक घड़ी भर। (लोगों को हुक्म-ख़ुदा का पहुंचाना था, सो) पहुंचा दिया गया। सो ( अब इसके बाद ) जो लोग नाफ़र्मान होंगे, वही हलाक होंगे ०

## सूरत—मुहम्मद

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें ३८ आयतें और ४ रुकूअ हैं॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्मन वाला मेहर्बान ( है ) ० जिन लोगों ने ( दीन हक़ को ) न माना और अल्लाह के रस्ते से ( लोगों को ) रोका, ख़ुदा ने—

---

तो ( उसे स्मरण रखना चहिये कि ) वह संसार में ( कहीं छिपकर अथवा भाग कर अल्लाह को ) विवश नहीं कर सकता और न अल्लाह के अतिरिक्त कोई उसका मित्र तथा सहायक है। ऐसे लोग स्पष्ट पथ—भ्रष्टता में हैं। ( हे पैग़म्बर ! जो लोग ऐसी स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में हैं ) क्या उन्होंने विचार नहीं किया कि वह ( बलवान ) ख़ुदा, जिसने आकाशों तथा पृथ्वी को उत्पन्न किया और उनके उत्पन्न करने में उसे (कुछ भी) थकन न हुई, मुर्दों को जीवित करने की भी शक्ति रखता है। (हाँ ! शक्ति रखता है और) निस्सन्देह वह हर बात पर शक्ति रखता है। और जब काफ़िर लोग ( दुबारा जीवित करके हिसाब के उपरान्त ) दोज़ख़ की ओर लाये जावेंगे—(तो उनसे कहा जावेगा ) क्या तुम इसके अधिकारी नहीं ? वह कहेंगे हाँ ! हमें अपने पालनहारे की शपथ ! (हम इसीके अधिकारी हैं )। अतः ( ख़ुदा ) कहेगा कि अच्छा तो अपने कुफ़्र के कारण अज़ाब का स्वाद चक्खो॥

सो ( हे पैग़म्बर ! इनकी अवज्ञा तथा दुर्वचनों का ख़्याल न कीजिये ! और ) जिस प्रकार साहसी पैग़म्बरों ने सन्तोष किया है, आप ( भी ) सन्तोष कीजिये ! और इनके लिए ( अज़ाब को ) जल्दी न कीजिए। जब ( क़यामत में यह ) उस ( अज़ाब ) को देख लेंगे, जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, तो ( उनको यह विदित होगा कि ) मानो दिन भर में एक घड़ी ( संसार में ) रहे हैं। ( और यह अज़ाब सांसारिक जीवन हो में हो रहा है। अर्थात जिस प्रकार यह उपहास की रीति पर अज़ाब की जल्दी कर रहे हैं, उनको यही ज्ञात होगा कि ऐसा ही हुआ। और इनके कहने के साथ ही इन पर अज़ाब टूट पड़ । अल्लाह का जो आदेश ) पहुंचाना ( था, वह पहुंचा दिया गया ) है। अतः नष्ट ( भ्रष्ट ) वही लोग होंगे, जो पापी ( अपराधी तथा अवज्ञाकारी ) हैं॥

## सूरत—मुहम्मद

मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ३८ आयतें और ४ रुकूअ हैं॥

जिन लोगों ने ( सत्य धर्म को ) न माना और ( लोगों को ) अल्लाह के मार्ग से रोका, उनके कर्मों को ( अल्लाह ने ) निष्फल कर दिया—

أَعْمَالَهُمْ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَ
آمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ
كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ
بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِن رَّبِّهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ
يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ۝ فَإِذَا لَقِيتُمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ
إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا
بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَ
هَا ۚ ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن
لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝ سَيَهْدِيهِمْ
وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا

उनके अमल गये गुज़रे कर दिये ० और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये और ( क़ुर्आन ) जो मुहम्मद पर नाज़िल हुआ है, उस पर ( भी ) ईमान लाये और वह बरहक़ है ( और ) उनके पर्वर्दिगार ( ही ) की तरफ़ से ( नाज़िल हुआ ) है, ख़ुदा ने उनके गुनाह उन पर से उतार दिये और उनकी ( दीनी, दुनियावी ) हालत (भी) दुरुस्त करदी ० यह ( इख़्तिलाफ़–हालत ) इसलिये है कि जिन लोगों ने ( दीन हक़ से ) इन्कार किया, वह ग़लत ( रस्ते पर ) चले और जो ईमान लाये, वह अपने पर्वर्दिगार के ठीक रस्ते पर चले। यूँ अल्लाह लोगों के (समझने के ) लिये उनके हालात बयान फ़र्माता है ० तो मुसलमानो ! जब ( लड़ाई में ) काफ़िरों से तुम्हारी मुड-भेड़ हो, तो (बे-तअम्मुल उनकी) गर्दनें मार चलो। यहां तक कि जब ख़ूब अच्छी तरह उनका ज़ोर तोड़ लो, तो (उनकी ) मुशकें कस लो ( यानी क़ैद कर लो )–फिर ( क़ैद किये ) पीछे या तो एहसान रखकर ( छोड़ देना ) या मुआवज़ा लेकर। यहाँ तक कि (दुश्मन) लड़ाई के हथियार रख दें। यह (हमारा इर्शाद है और इसीकी तामील होनी चाहिये ) और ख़ुदा चाहता, तो ( लड़ने की नौबत न आती और यूं ही ) उनसे बदला ले लेता, मगर ( उसको तो यह ) मंज़ूर हुआ कि एक को एक से ( लड़वा कर तुम सबको ) आज़माये और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे गये, उनके अमलों को ख़ुदा हरगिज़ रायगाँ नहीं होने देगा ० ( बल्कि ) उन्हें ( मन्ज़िल ) मक़्सूद को पहुंचा देगा और उनको ख़ुश-हाल कर देगा ० यानी उनको जन्नत में लेजा दाख़िल करेगा, जिस का हाल उसने इनको ( पहिले से ) बता रक्खा है ०—

---

और जो लोग ( सत्य–धर्म पर ) ईमान लाये और उन्होंने शुभ कर्म किये और उस ( पुस्तक ) पर ( भी ) ईमान लाये, जो मुहम्मद पर उतरी और वह ( पुस्तक अर्थात क़ुर्आन) सत्य है ( और ) उनके पालनहारे की ओर से ( अवतीर्ण हुई है, अल्लाह ने ) उनकी बुराइयों को उनसे दूर कर दिया और उनकी दशा सुधार दी। यह ( विभेद ) इस कारण हुआ कि जिन लोगों ने ( सत्य-धर्म को ) न माना, वह असत्य मार्ग पर चले। और जो ईमान लाये, उन्होंने अपने पालनहारे का सत्य मार्ग ग्रहण किया। ( और ) इसी प्रकार अल्लाह लोगों के ( समझने तथा सोच विचार करने के ) लिये उनके दृष्टान्त वर्णन करता है ॥

अतः ( हे मुसल्मानो ! जब यह विभेद तथा पदवी का अन्तर ज्ञात हो गया, तो ) जब तुम्हारी और काफ़िरों की मुड-भेड़ हो जाय, तो ( उनकी ) गर्दनें काट डालो। यहाँ तक कि तुम उनको शक्ति हीन करदो। ( जब वह शक्ति-हीन तथा विवश हो जावें, तो ) पुनः उनको बांध ( कर क़ैद कर ) लो। अब इसके उपरान्त अथवा उपकार करके ( उन्हें छोड़ दो ) अथवा बदला लेकर। यहां तक कि लड़ने वाले अस्त्र रख दें। ( अर्थात जब तक युद्ध समाप्त न हो, बध करो और क़ैदी बनाओ ) ॥

यह ( आज्ञा ) है और ( यूं तो ) यदि अल्लाह चाहता, तो (युद्ध के बिना ) उनसे बदला ले लेता—परन्तु उसे तो एक से एक को लड़ाकर (अपने बन्दों की भक्ति की) परीक्षा करनी है। और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गये हैं, उनके कर्मों को (अल्लाह) कभी निष्फल नहीं करेगा। उनको शीघ्र लक्ष्य ( स्थान ) तक पहुंचावेगा और उनकी दशा को सुधारेगा। और उनको जन्नत में पहुंचावेगा, जिसका हाल ( इसने ) उन्हें ( पहिले से ) बता रक्खा है ॥

मुसल्मानो! अगर तुम अल्लाह (के दीन) की मदद करोगे, तो वह तुम्हारी मदद करेगा और (दुश्मनों के मुक़ाबले में) तुम्हारे पाँव जमाये रक्खेगा ० और जो लोग (दीन-हक़ से) मुन्किर हैं, उनके पांव उखड़ जायंगे और उनका सारा किया-धरा ख़ुदा गया-गुज़ारा कर देगा ० (और) यह इस सबब से कि ख़ुदा ने जो (दीन) उतारा, उसको उन्होंने पसन्द न किया। नतीजा यह हुआ कि ख़ुदा ने उनके अमल अकारत कर दिये ० क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं? (चलते फिरते) तो देखते कि जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उनका कैसा अंजाम हुआ कि ख़ुदा ने उनको तहस नहस कर दिया और ऐसा ही कुछ (इन) काफ़िरों को (भी पेश आना) है ० यह इस सबब से कि मुसल्मानों का हामी (व मददगार) तो अल्लाह है और इस सबब से कि काफ़िरों का कोई हामी (व मददगार) नहीं ० जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, बिला शुबहा उनको अल्लाह (बहिश्त के ऐसे) बाग़ों में लेजा दाख़िल करेगा, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी और जो लोग मुन्किर हैं—(दुनिया में बेफ़िक्री के साथ) रस्ते बस्ते और जिस तरह चारपाये खाते (पीते) हैं, यह भी (अनाप शनाप) खाते (पीते) हैं और इनका (आख़िरी) ठिकाना दोज़ख़ है ० और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारी (यह) बस्ती (मक्का) जिस (के लोगों) ने तुमको (घर से) निकाल छोड़ा, कितनी बस्तियाँ इससे भी बल-बूते में बढ़ी-चढ़ी थीं कि हमने उनको हलाक कर मारा और कोई भी उनकी मदद को न खड़ा हुआ ० तो क्या जो लोग—

لهم ۝ يايها الذين امنوا ان تنصروا الله ينصركم
ويثبت اقدامكم ۝ والذين كفروا فتعسا
لهم واضل اعمالهم ۝ ذلك بانهم كرهوا ما
انزل الله فاحبط اعمالهم ۝ افلم يسيروا في
الارض فينظروا كيف كان عاقبة الذين
من قبلهم دمر الله عليهم وللكفرين امثالها ۝
ذلك بان الله مولى الذين امنوا وان
الكفرين لا مولى لهم ۝ ان الله يدخل
الذين امنوا وعملوا الصلحت جنت تجري
من تحتها الانهر والذين كفروا يتمتعون
وياكلون كما تاكل الانعام والنار مثوى
لهم ۝ وكاين من قرية هي اشد قوة من قريتك
التي اخرجتك اهلكنهم فلا ناصر لهم ۝ افمن

हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह (के धर्म) की सहायता करोगे, तो (अल्लाह) तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पांव जमाये रक्खेगा। और जो लोग काफ़िर हैं, उनके पांव उखड़ जायँगे। और (अल्लाह) उनके कर्मों को अकार्थ कर देगा। यह इस कारण (होगा) कि अल्लाह ने जो (धर्म) उतारा, उससे उन्होंने घृणा की। अतः (इस उद्दण्डता के दंड-स्वरूप अल्लाह ने) उनके कर्मों को नष्ट कर दिया। क्या यह लोग दुनिया में चले फिरे नहीं कि उनको दीख पड़ता कि उन लोगों का परिणाम क्या हुआ, जो उनसे पहिले थे। अल्लाह ने उनको नष्ट (भ्रष्ट) कर दिया। और इन काफ़िरों को इसी प्रकार की दुर्दशा का सामना होना है। इसका (मूल) कारण यह है कि अल्लाह मुसल्मानों का कार्य कर्त्ता (तथा मित्र) है, और काफ़िरों का कोई भी कार्य कर्त्ता नहीं है॥

निस्सन्देह अल्लाह (अपने) ईमान वाले और शुभ कर्म करने वाले (बन्दों) को (जन्नत के उन) बाग़ों में पहुंचावेगा जिनमें नहरें बहती होंगी। और काफ़िर (इस पारलौकिक फल से वंचित हैं। वह संसार में) लाभ उठालें और पशुओं की तरह खा पी लें-(अन्त में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है॥

और (हे पैग़म्बर!) कितनी बस्तियाँ थीं, जो आपकी इस बस्ती से जिस (के निवासियों) ने आपको निकाला, शक्ति में बढ़ चढ़ कर थीं। हमने उन (के निवासियों) को नष्ट कर दिया और उनका कोई भी सहायक न हुआ (जो हमारे मुक़ाबले में उनकी सहायता करता। इन काफ़िरों का कौन सहायक हो सकता है। अल्लाह तो सत्य धर्म के मानने वालों का सहायक है)। क्या वह लोग, जो—

كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ كَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ
عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُم ● مَّثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي
وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ
وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ
خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ● وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ
مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ
وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ
وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ● وَمِنْهُم
مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ
قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ آنِفًا ۚ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ
وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ
تَقْوَاهُمْ ● فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم

अपने पर्वर्दिगार के ( सीधे ) खुले रस्ते पर हैं, उनकी तरह ( गये गुज़रे हो सकते ) हैं, जिनकी ( बद-किर्दारियाँ ) उनको भली कर दिखाई गई हैं ? और वह अपनी (नफ़्सानी) ख़्वाहिशों पर चलते हैं ० जिस बहिश्त का वादा पर्हेज़गारों से किया जाता है, उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें ( ऐसे ) पानी की नहरें हैं, जिसमें बू ( का नाम ) नहीं और ( ऐसे ) दूध की नहरें हैं, जिसका ज़ायक़ा ( मुतलक़ ) नहीं बदला और ( ऐसी ) शराब की नहरें, जो पीने वालों को बहुत ही खुश-ज़ायक़ा मालूम होंगी और ( नीज़ ) साफ़ ( व शफ़्फ़ाफ़ ) शहद की नहरें हैं और उनके लिये वहां हर तरह के मेवे ( मौजूद ) होंगे और उनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से ( गुनाहों की ) माफ़ी ( सो अलग । क्या ऐसे बहिश्त के रहने वाले ) उन जैसे ( हो सकते हैं ) जो हमेशा आग में ( पड़े जलते ) होंगे और (प्यास लगेगी, तो) उनको भुलस्ता हुआ पानी पिलाया जायगा और वह ( मार के ) उनकी अंतड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर डालेगा ० और ( ऐ पैग़म्बर ! बाज़ ) इनमें से ऐसे ( भी ) हैं, जो ( कुर्आन सुनने के लिये ) तुम्हारी तरफ़ ( बज़ाहिर) कान ( तो ) लगाते हैं, मगर जब तुम्हारे पास से ( उठ कर ) बाहर जाते हैं, तो जिन लोगों को ( दीनी ) मालूमात दी गई है, उनसे पूछते हैं ( क्यों जी ! ) इस ( शख़्स ) ने अभी ( अभी ) क्या कहा ? यही लोग हैं, जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर करदी है और अपनी ( नफ़्सानी ) ख़्वाहिशों पर चलते हैं ० और जो लोग रूबराह हैं—(जब जब कुर्आन सुनते हैं ) उन को खुदा ( इस कुर्आन की बरकत से और ) ज़ियादा हिदायत देता और ( नीज़ ) उनको परहेज़गारी ( की तौफ़ीक़ ) अता फ़र्माता है ० तो क्या यह लोग बस क़यामत ही के मुन्तज़िर हैं कि एक दम से इन पर आ नाज़िल हो—

---

अपने पालनहारे के ( सीधे और ) खुले हुये मार्ग पर हैं, उन लोगों के समान ( मित्र तथा सहायक रहित ) हो सकते हैं, जिनको उनके दुराचरण भले दिखाई देते हैं और जो अपनी ( मानसिक ) इच्छाओं के अनुगामी हैं। उस जन्नत का दृष्टान्त, जिसका वादा संयमियों से किया गया है—यह है कि उसमें ऐसी नहरें ( बहती ) हैं, जिनका जल बिगड़ा हुआ ( दुर्गन्ध-युक्त ) नहीं है। और ( उसमें ) ऐसे दूध की नहरें ( बहती ) हैं, जिसके स्वाद में कोई परिवर्तन नहीं होता । और ( उसमें ) ऐसी मदिरा की नहरें ( बहती ) हैं, जो पीने वालों के निमित्त स्वाद-युक्त हैं और ( उसमें ) स्वच्छ मधु की नहरें ( बहती ) हैं। और वहाँ उनके निमित्त हर प्रकार के फल ( तथा मेवे विद्यमान) हैं। और ( उन पर हर समय ) खुदा की कृपा तथा अनुकम्पा है। ( क्या ऐसी जन्नत के निवासी ) उन लोगों के सदृश ( हो सकते ) हैं, जो सर्वदा दोज़ख़ में पड़े रहेंगे। उनको वहां गर्म पानी पिलाया जावेगा और यह पानी उनकी आंतों को काट देगा ॥

और ( हे पैग़म्बर ! ) इन ( काफ़िरों ) में से ( कुछ लोग ) ऐसे भी हैं, जो ( देखने में कुर्आन सुनने के निमित्त ) आपकी ओर ध्यान देते हैं—परन्तु जब आपके पास से ( उठ कर ) जाते हैं, तो उन लोगों से जिनको ( धार्मिक ) ज्ञान प्रदान किया गया है—पूछते हैं कि ( उस मनुष्य ने ) अभी क्या कहा था। यही वह लोग हैं, जिनके हृदयों पर अल्लाह ने छाप लगादी है और अपनी ( मानसिक ) इच्छाओं के अनुगामी हैं॥

और ( इनके अतिरिक्त ) जो लोग सीधे मार्ग पर हैं—( जब वह कुर्आन सुनते हैं, तो अल्लाह ) उनको अधिक शिक्षा देता है और संयमता ( की योग्यता ) प्रदान करता है। अब यह ( काफ़िर ) तो बस क़यामत ही के प्रतीक्षक हैं कि वह अचानक उनको आ घेरे—

बَغْتَةً فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ
ذِكْرَاهُمْ ● فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ● وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا ع
لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ
فِيهَا الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ
فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ● طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ فَإِذَا
عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ●
فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ● أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ
فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ● أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ
الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ● إِنَّ الَّذِينَ

ارْتَدُّوا

सो उसकी निशानियां तो आ ही चुकी हैं। फिर जब क़यामत इनके। सामने आ मौजूद होगी, तो (उस वक़्) इनका समझना इनको क्या मुफ़ीद होगा ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! अच्छी तरह ) जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और ( हमसे ) अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते रहो और ( नीज़ ) ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों के लिये ( भी माफ़ी मांगते रहो ) और (काम काज में) तुम लोगों का चलना, फिरना और ( आराम के लिये घरों में आकर ) ठहरना अल्लाह को ( सब ) मालूम है ० और सच्चे मुसलमान तो यह तमन्ना ज़ाहिर करते हैं कि ( ऐ ) काश ! ( ज़िहाद के बारे में ) कोई सूरत नाज़िल हो—( ताकि सब उस हुकम की तामील करें )—फिर जब कोई सूरत नाज़िल हो और उसमें ( साफ़ तौर पर जिहाद का हुकम और ) लड़ाई का तज़्किरा हो, तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) जिन लोगों के दिलों में ( निफ़ाक़ का ) रोग है, तुम उनको देखोगे कि वह तुम्हारी तरफ़ ऐसे ( ख़ौफ़-ज़दा ) देख रहे हैं; जैसे किसी पर मौत की बेहाशी तारी हो ( और उसकी आंखें फटी की फटी रह जाएँ )—तो खुदा ही इनका खोजड़ा खोये ० ( रसूल की ) फ़र्मांबर्दारी ( चाहिये ) और (कुछ पूछें, तो ) सीधी तरह पर ( बेलाग लपेट ) जवाब ( देना चाहिये ) और जब लड़ाई ठन जाय और ( उस सूरत में ) यह लोग खुदा से सच्चे रहें, तो यह इनके हक़ में बेहतर है ० तो ( मुनाफ़िक़ो ! ) क्या तुमसे कुछ बईद है कि अगर ( जिहाद करने से ) फिर बैठो, तो ( इस सूरत में भी ) लगो मुल्क में फ़साद करने और अपने रिश्तों नातों को तोड़ने ० यही लोग हैं, जिन पर खुदा ने लानत की और इनको ( हक़ बात के सुनने से ) बहिरा और ( राह-रास्त के देखने से ) इनकी आंखों को अन्धा कर दिया है ० क्या यह लोग कुर्आन ( के मतालिब ) को नहीं सोचते या दिलों पर ताले ( लगे ) हैं ० बेशक—

---

तो क़यामत के चिन्ह तो आ ही चुके हैं—परन्तु जब क़यामत आ जावेगी, तो उनका समझना ( और शिक्षा ग्रहण करना ) क्या लाभ दायक होगा ( और उसका समय कहां रहेगा ) । सो ( हे पैग़म्बर ! ) आपको ( स्मरण रखना और ) जानना चाहिये कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। और अपने और मुसलमान पुरुषों तथा स्त्रियों ( की ग़लतियों ) के निमित्त ( खुदा से ) क्षमा माँगना चाहिये । और अल्लाह तुम्हारे चलने फिरने तथा रहने सहने ( समस्त बातों ) से अभिज्ञ है ॥

और ( हे पैग़म्बर ! ) जो लोग ईमान वाले हैं, उनकी तो यह अभिलाषा है कि ( जिहाद के विषय में ) कोई सूरत अवतीर्ण हो ( जिससे कि सब उसका पालन करें )—परन्तु जब कोई ऐसी सूरत उतरती है, जिसमें स्पष्ट रूप से ( जिहाद का आदेश ) और युद्ध का वर्णन होता है, तो आप देखते हैं कि जिन लोगों के हृदयों में ( कपट का ) रोग है, वह उस मनुष्य की तरह आपका मुंह तकते हैं, जिस पर मृत्यु की मूर्छा छाई हो। अतः उन ( की दशा ) पर शोक है । ( चाहिये कि खुदा के रसूल की ) आधीनता ( करें और जब उनसे कुछ पूछा जाय, तो ) ठीक बात कहें। सो जब लड़ाई ठन जाय, तो यदि यह अल्लाह के साथ सच्चे रहें, तो उनके लिये उत्तम है ॥

( हे मुनाफ़िक़ो ! ) यदि तुमने ( जिहाद से ) पीठ फेरी, तो तुमसे कुछ दूर नहीं कि संसार में उपद्रव करो और ( लूट मार के समय ) नातेदारियों को ( भी ) काट डालो ( अर्थात नाते तथा सम्बन्ध की भी पर्वाह न करो ) । जो लोग ऐसे हैं, उन पर खुदा की लानत है। ( अल्लाह ने ) उनको बहिरा और उनके नेत्रों को अन्धा कर दिया है । ( अर्थात हे मुनाफ़िक़ो ! यदि तुम जिहाद से इस कारण अलग रहो कि यह उपद्रव फैलाना है, तो यह बात तुमसे कुछ दूर नहीं है कि परस्पर लूट मार करो और लूट मार में नातेदारी की भी लाज न रक्खो। अतः तुम्हारा यह कथन धूर्तता के कारण है । यह लोग ऐसी बातें क्यों करते हैं ) क्या कुर्आन ( के विषय ) में सोच विचार नहीं करते ? अथवा हृदयों पर ताले लगे हुए हैं ( कि कोई अच्छी बात उनमें नहीं आ सकती) ॥

ارتدوا على أدبارهم من بعد ما تبين
لهم الهدى الشيطن سول لهم وأملى لهم
● ذلك بأنهم قالوا للذين كرهوا ما
نزل الله سنطيعكم في بعض الأمر والله
يعلم إسرارهم ● فكيف إذا توفتهم
الملئكة يضربون وجوههم وأدبارهم ●
ذلك بأنهم اتبعوا ما أسخط الله وكرهوا
رضوانه فأحبط أعملهم ● أم حسب الذين
في قلوبهم مرض أن لن يخرج الله أضغنهم
ولو نشاء لأرينكهم فلعرفتهم بسيمهم
ولتعرفنهم في لحن القول والله يعلم
أعملكم ● ولنبلونكم حتى نعلم المجهدين
منكم والصبرين ونبلوا أخباركم ● إن الذين

जिन लोगों को ( दीन का ) सीधा रस्ता साफ़ तौर पर मालूम (हु)आ ( और ) फिर भी वह अपने उलटे पाँव फिर गये, शैतान ने उनको (झां)से दिये और उनकी ( आरज़ूओं की ) रस्सियां दराज़ करदी हैं ० (और) (य)ह ( इन लोगों का फिर बैठना ) इस सबब से है कि जो लोग ( क़ुर्आन (क)ो ) जो ख़ुदा ने उतारा है, ना-पसन्द करते हैं—( मसलन यहूद )—यह (मुनाफ़िक़) उनसे कहा करते हैं कि बाज़ बातों में हम तुम्हारी ही सलाह पर चलेंगे और अल्लाह इनकी सरगोशियों को ( ख़ूब ) जानता है ० फिर उस वक़्त इनकी कैसी ( गत ) बनेगी, जब फ़रिश्ते इनकी रूहें क़ब्ज़ करते और इनके मुंहों पर और इनके चूतड़ों पर मारते जाते होंगे ० ( और इनकी ) यह नौबत इसलिये ( होगी ) कि जो चीज़ ख़ुदा को बुरी लगती है, यह उसी ( के रस्ते ) पर चले और उसकी ख़ुशी न चाही, तो ख़ुदा ने ( भी ) उनके अमल मलियामेट कर दिये ० क्या वह लोग जिनके दिलों में ( निफ़ाक़ का ) रोग है, इस ख़याल में हैं कि ख़ुदा उनकी दिली अदावतों को कभी ज़ाहिर नहीं करेगा ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) हम चाहते, तो तुम्हें उन लोगों को ( ऐसी अच्छी तरह ) दिखा देते कि तुम उनको उन की सूरत ही से पहिचान लेते और ( यूं भी ) तुम उनको ( उनके ) तर्ज़-कलाम से ज़रूर पहिचान लोगे और अल्लाह तुम सबके अमलों को ( ख़ूब ) जानता है ० और ( मुसलमानो ! ) तुम ( सब ) को हम ज़रूर आज़मा कर रहेंगे, ताकि तुममें जो जिहाद करने वाले और ( लड़ाई की तकलीफ़ों को बर्दाश्त करने वाले हैं, उनको हम अच्छी तरह ठोंक बजाकर ) मालूम कर लें और ( ताकि ) तुम्हारी असली हालत को जाँच लें ० बेशक—

---

जो लोग ( धर्म का ) सीधा मार्ग प्रगट हो जाने पर भी धर्म से फिर गये, तो शैतान ने उनकी बात बनाई है और उनको ढील दे रक्खी है। ( अर्थात वह शैतान के धोखे में आ गये हैं )। यह ( उनकी विमुखता ) इस कारण है कि उन्होंने उन लोगों से जो अल्लाह के उतारे हुये ( आदेशों ) से घृणा करते हैं—कह रक्खा है कि कुछ बातों में हम तुम्हारा कहा मानेंगे। ( यह लोग समझते हैं कि इन गुप्त सलाहों की किसी को ख़बर नहीं )—यद्यपि अल्लाह को उनकी ( समस्त ) गुप्त बातों का ज्ञान है ॥

सो क्या दशा होगी जब फ़रिश्ते उनके प्राण निकालते समय उनके मुंहों तथा उनकी पीठों को मारते होंगे। (प्राण निकालते समय उन पर ) यह ( अज़ाब ) इसलिये ( होगा ) कि यह उन बातों पर चले, जो अल्लाह की अप्रसन्नता का कारण हैं। और उन्होंने उसकी प्रसन्नता को बुरा समझा। अतः ( अल्लाह ने ) उनके कर्मों को मेट दिया। क्या वह लोग जिनके हृदयों में ( कुफ़्र तथा छल कपट का ) रोग है, यह विचार करते हैं कि अल्लाह उनके हार्दिक-विद्वेष को कभी प्रगट नहीं करेगा ? ( और उनके विरोध पर पर्दा पड़ा रहेगा ? )—इस दशा में कि (हमें यह शक्ति है कि) यदि हम चाहें, तो ( हे पैग़म्बर ! ) आपको उनके देखने की ऐसी शक्ति दें कि आप उन्हें उनके चेहरे ( हो ) से पहिचान लिया करें और उन ( के हृदय ) की दशा उनकी वार्त्तालाप के ढंग से जान लिया करें। और ( हे मुनाफ़िको ! तुम यह न समझो कि तुम्हारा भेद छिपा है )—अल्लाह तुम्हारे कर्मों से ( भली भांति ) अभिज्ञ है ॥

और हम ( हे मुसलमानो ! ) तुमको अवश्य परखेंगे। यहां तक कि यह (प्रगट रूप से) विदित हो जाय कि तुममें से धर्म-युद्ध करने वाला और ( धर्म-युद्ध के संकटों पर ) धीरज धरने वाला कौन कौन है। और तुम्हारी ( वास्तविक ) दशा की परीक्षा करेंगे ॥

كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ
مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ
شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا
أَعْمَالَكُمْ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ
لَهُمْ ۝ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنْتُمُ
الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ۝ إِنَّمَا
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا
يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ۝ إِنْ
يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ
هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخَلُ وَمَنْ يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ

जिन लोगों पर ( दीन का सीधा ) रस्ता साफ़ ज़ाहिर हो गया ( और ज़ाहिर हुये ) पीछे उन्होंने इन्कार किया और अल्लाह के रस्ते से ( लोगों को ) रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त की, ख़ुदा को तो यह लोग किसी तरह का नुक़सान पहुंचा सकेंगे नहीं, बल्कि (वह) उनही के अमलों को अकारत कर देगा ० मुसल्मानो ! अल्लाह के हुक्म पर चलो और रसूल के हुक्म पर चलो और ( रसूल की मुख़ालिफ़त करके ) अपने अमलों को ज़ाए न करो ० बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और ( लोगों को ) ख़ुदा के रस्ते से रोका, फिर कुफ़्र ही की हालत में मर गये, ख़ुदा उनको हरगिज़ नहीं बख़्शेगा ० तो ( मुसल्मानो ! ) बोदे न बनो और ( ख़ुद पयाम देकर दुश्मनों को) सुलह की तरफ़ न बुलावो और (जाने रहो कि आख़िरकार) तुमही ग़ालिब रहोगे और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे अमलों ( के सवाब ) में किसी तरह की कमी नहीं करेगा ० ( यह ) दुनिया की ज़िन्दगी ( जो है ) तो बस निरा खेल और तमाशा है और अगर ( ख़ुदा पर ) ईमान रक्खोगे और परहेज़गारी करते रहोगे, तो वह तुमको तुम्हारे अज्र इनायत करेगा और ( अपने लिये ) तुम्हारे माल तुमसे नहीं तलब करेगा ० और ( बिलफ़र्ज़ ) अगर वह तुमसे ( अपने लिये ) तुम्हारे माल तलब करे और तुमको चिमटे, तो तुम ( ज़रूर ) बुख़्ल करो और इससे तुम्हारी दिली अदावतें ज़ाहिर हों ० तुम लोग सुन रक्खो ! कि ( ख़ुदा को तो तुम क्या दोगे ) तुम ( तो ) ऐसे (दिल के तङ्ग) हो कि तुमको ख़ुदा के रस्ते में ( अपने क़ौमी फ़ायदे के लिये ) ख़र्च करने को बुलाया जाता है, इस पर भी तुममें ऐसे ( बहुतेरे ) हैं, जो बुख़्ल करते हैं और जो बुख़्ल करता है, तो हक़ीक़त में ख़ुद अपने से बुख़्ल करता है—

---

जिन लोगों ने ( धर्म का ) सीधा मार्ग प्रगट हो जाने पर भी ( उसको ग्रहण करने से ) अस्वीकार किया और लोगों क अल्लाह के मार्ग से रोका और ( अल्लाह के ) रसूल का विरोध किया—( उनको स्मरण रखना चाहिये कि वह अपनी इन बातों से अल्लाह को कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकते ( हाँ ! अल्लाह अवश्य ) उनके कर्मों को नष्ट कर देगा। हे मुसल्मानो ! ( तुम इन काफ़िरों क तरह उद्दण्ड तथा अवज्ञाकारी न बनो, वरन् ) अल्लाह की आज्ञा पालन करो और ( अल्लाह के ) रसूल की आज्ञा पालन क ( और अवज्ञाकारी बनकर ) अपने कर्मों को अकार्थ न करो। ( स्मरण रक्खो कि ) जिन लोगों ने ( अल्लाह और उसके रसूल पर ईमा लाने से ) अस्वीकार किया और ( लोगों को ) अल्लाह के मार्ग से रोका और ( इसी कुफ़्र की दशा में ) मर गये, तो अल्लाह उन ( पापों ) को कभी क्षमा नहीं करेगा ॥

सो ( हे मुसल्मानो ! ) तुम आलसी ( और निरुत्साह ) न बनो और ( काफ़िरों को अपनी ओर से ) सन्धि का बुलावा दो और ( निश्चय रक्खो कि अन्त में ) तुम्हारी ही विजय होगी। और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारे कर्मों में कदापि क नहीं करेगा-( वरन् पूर्ण बदला तथा पूर्ण प्रतिफल देगा ) ॥

( स्मरण रक्खो ! कि ) निस्सन्देह सांसारिक जीवन एक क्रीड़ा तथा एक खेल है। और यदि तुम ( सच्चे दिल से अल्लाह प ईमान रक्खोगे और ( उससे ) भय खाते रहोगे, तो वह तुम्हें तुम्हारे ( शुभ कर्मों का ) प्रतिफल प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारा नहीं मांगेगा। और यदि वह तुमसे तुम्हारा धन मांगे और तुमको ( अत्यन्त विवश और ) तंग करे, तो तुम कृपणता करने लगो तुम्हारी हार्दिक-अप्रसन्नता प्रगट हो जाय। तुम लोग तो ऐसे हो कि तुमसे अल्लाह के मार्ग में व्यय करने के निमित्त कहा जाता है, तुममें ( बहुतेरे ) ऐसे हैं, जो कृपणता करते हैं। सो जो मनुष्य कृपणता करता है, तो अपने निमित्त कृपणता करता है—

نَفْسِهٖ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ وَاِنْ
تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا
سورة الفتح مدنية اَمْثَالَكُمْ ثمان عشرة
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۙ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا
تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ
عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ
وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ
السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا
اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۭ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ لِّيُدْخِلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ

४

वर्ना अल्लाह तो बे-नियाज़ है और तुम ( उसके ) मोहताज हो और अगर तुम ( हुक्म-ख़ुदा से ) रूगर्दानी करोगे, तो ( ख़ुदा ) तुम्हारे सिवा दूसरे लोगों को ( तुम्हारी जगह ) ला बिठायेगा और वह तुम जैसे ( तंग-दिल भी ) नहीं होंगे ०

## सूरत–फ़तह

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें २९ आयतें और ४ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० (ऐ पैग़म्बर ! यह हुदैबिया की सुलह क्या हुई) हक़ीक़त में हमने खुल्लम खुल्ला तुम्हारी फ़तह करादी ० ताकि (तुम इस फ़तह के शुक्रिए में दीन-हक़ की तरक़्क़ी के लिये और कोशिश करो और) ख़ुदा (उसके सिले में) तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह माफ़ करे और तुम पर अपने एहसानात पूरे करे और तुमको (दीन के) सीधे रस्ते ले चले (और कोई तुम्हारा माने व मुज़ाहिम न हो ) ० और ख़ुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे ० वह ( ख़ुदा ) ही तो था, जिसने मुसलमानों के दिलों में तहम्मुल डाला, ताकि उनके ( पहिले ) ईमान के साथ और ईमान ज़ियादा हो और आसमानों और ज़मीन ( की मख़्लूक़ात ) के लश्कर ( सब ) अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ( हर वक़्त की मस्लहत का ) जानने वाला ( और ) हिक्मत वाला है ० ( और मुसलमानों के दिलों में तहम्मुल डालने की एक ग़रज़ यह भी थी ) कि ( मुसलमान इस्लाम पर साबित-क़दम रहें और आख़िरकार ) ख़ुदा ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को ( बहिश्त के ) बाग़ों में लेजा दाख़िल करे, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी ( और वह हमेशा ) हमेशा इन ( ही बाग़ों ) में रहेंगे और ( नीज़ यह कि ) उन पर से उनके गुनाहों को उतार दे—

---

अल्लाह तो ग़नी ( तथा बेपर्वाह ) है और तुम ( उसके ) मोहताज हो । और यदि तुम ( ख़ुदा की आज्ञाओं से ) मुंह फेरोगे, तो ( अल्लाह ) तुम्हारी जगह और जाति को ले आवेगा और वह तुम्हारे समान न होंगे ॥

## सूरत–फ़तह

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें २८ आयतें और ४ रुकूअ हैं ॥

( हे पैग़म्बर ! हुदैबिया की सन्धि के रूप में ) हमने आपको स्पष्ट विजय प्रदान की, जिससे कि ( आप उसकी कृतज्ञता में और इस्लाम-धर्म के प्रचार तथा उन्नति में अति उद्योग करें। और इसके बदले में ) अल्लाह आपकी अगली और पिछली ग़लतियों को क्षमा करे और आप पर अपनी कृपा तथा अनुकम्पा को पूर्ण करदे और आपको सीधा मार्ग दिखावे। और अल्लाह आपकी बड़ी सहायता करे। (अल्लाह की कृपा तथा दया का क्या ठिकाना) – वही तो है कि उसने मुसलमानों के हृदयों में (अदृष्टि से) शान्ति उत्पन्न की, जिससे कि उनके ( वर्तमान ) ईमान के साथ और ईमान ( तथा विश्वास ) बढ़ जावे। और आकाश तथा भूमि की सेनायें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह बड़ा जानने वाला तथा हिक्मत वाला है ॥

( उसने मुसलमानों को शान्ति तथा साहस प्रदान किया, तो उसकी इच्छा यह है कि उनके पांव सत्य मार्ग पर जमे रहें )–जिससे कि ( अल्लाह उसके बदले में ) मुसलमान पुरुषों तथा मुसलमान स्त्रियों को ( जन्नत के ) बाग़ों में प्रविष्ट करे, जिनमें नहरें बहती हैं। और ( उन्हें ) उन ( बाग़ों ) में सर्वदा रक्खे। और उनसे उनकी बुराइयां दूर करदे—

سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۙ
وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ
وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ
دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ
وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝
اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ لِّتُؤْمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ
بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا
يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ
فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ
عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ سَيَقُوْلُ
لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا

واهلونا

और अल्लाह के नज़्दीक यह बड़ी कामयाबी है ० और ( नीज़ यह कि ) मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को सज़ा दे, जो अल्लाह के हक़ में ( तरह तरह की ) बद गुमानियां रखते हैं। अब यही मुसीबत के चक्कर में आ गये और ख़ुदा का ग़ज़ब इन पर ( आ नाज़िल ) हुआ और उसने इनको फिटकार दिया और इसके अलावा उसने इनके लिये जहन्नम तय्यार कर रक्खी है और ( वह बहुत ही ) बुरी जगह है ० और आस्मानों ( के ) और ज़मीन ( की मख़्लूक़ात ) के लश्कर ( सब ) अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ( बड़ा ) ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमने तुमको ( अपनी ज़ात व सिफ़ात का ) गवाह और (ईमान वालों को) ख़ुश-ख़बरी और ( काफ़िरों को ) डर सुनाने वाला ( बनाकर ) भेजा है ० ( और मुसल्मानो ! हमने इनको इस ग़रज़ से पैग़म्बर बनाकर भेजा है ) कि तुम ( लोग ) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और (दीन-ख़ुदा की मदद करने से ) ख़ुदा की मदद करो और उसका अदब मलहूज़ रक्खो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगे रहो ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जो लोग (सुलह-हुदैबिया के वक़्त ) तुम्हारे हाथ पर ( लड़ने मरने की ) बैअत कर रहे हैं, वह ( तुमसे नहीं, बल्कि) ख़ुदा ही से बैअत कर रहे हैं (कि तुम्हारा नहीं, बल्कि ) ख़ुदा का हाथ उनके हाथों पर है--तो जो (ऐसा पक्का क़ौल व क़रार किये पीछे उसको) तोड़ देगा, तो तोड़ने का वबाल ख़ुद उसी पर पड़ेगा और जो उस (अहद) को पूरा कर उतारेगा, जो उसने ख़ुदा के साथ कर लिया है, तो अन्क़रीब ख़ुदा उसको बड़ा अज्र देगा ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) देहाती लोग जो पीछे रह गये ( और इस सफ़र-हुदैबिया में शरीक नहीं हुये ) अब वह तुम्हारे रूबरू यह उज़्र ( ग़लत पेश ) करेंगे कि हम अपने माल और अह्ल (व अयाल) की पर्दाख़्त में लगे रहे—

ع

---

और अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ी सफलता है। ( और उसकी इच्छा यह भी है कि कपटी लोगों का कपट प्रगट हो जाय जिससे कि वह कपटी पुरुषों तथा कपटी स्त्रियों और मुश्रिक पुरुषों तथा मुश्रिक स्त्रियों पर, जो अल्लाह के विषय में दुर्विचार करते हैं अज़ाब करे। उन (सब) पर आपत्ति-काल आने वाला है और उन पर अल्लाह का कोप है और लानत है। और उनके निमित्त दोज़ख़ तय्या है। और दोज़ख़ बहुत बुरा स्थान है। और आकाशों की तथा पृथ्वी की सेनायें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह बलवान ( है और हिकमत वाला है॥

हमने ( हे पैग़म्बर ! ) आपको ( अपना ) गवाह बनाकर ( ख़ुदा की प्रसन्नता का ) मंगल-समाचार सुनाने वाला और ( ख़ुदा अज़ाब से ) डराने वाला बनाकर भेजा है, जिससे कि ( हे मनुष्यो ! ) तुम अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और ( ध प्रचार में ) उसको सहायता दो और उसका आदर ( सत्कार ) करो। और सुबह-शाम अल्लाह की पवित्रता वर्णन करने में (तत्पर) रहो ( अल्लाह और रसूल का मामला एक है। अतः हे पैग़म्बर ! ) जो लोग आपसे बैत ( धार्मिक-प्रतिज्ञा ) करते हैं, वह अल्लाह ही से बैत क हैं। ( मानो ) अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है। सो ( इस प्रतिज्ञा के पश्चात ) जो मनुष्य प्रतिज्ञा भंग कर देगा, तो प्रतिज्ञा- का भार उसी पर पड़ेगा। और जो मनुष्य इस प्रतिज्ञा को, जो उसने अल्लाह से की है-पूर्ण करेगा, तो अल्लाह उसे बड़ा फल प्रदान करेग

( हे पैग़म्बर ! ) जो लोग हुदैबिया की यात्रा में आपके साथ नहीं आये और अपने स्थान पर रह गये, वह गंवार ( अपने को निर्दोषी सिद्ध करने के लिये ) अब आपसे कहेंगे कि हमें हमारे बाल बच्चों तथा घर बार (की देख भाल) ने (आने से) रोक रक्खा

وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِم
مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ
اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا
بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ بَلْ ظَنَنتُمْ
أَن لَّن يَنقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ
أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ
السَّوْءِ وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝ وَمَن لَّمْ يُؤْمِن بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝
وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَن
يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَّحِيمًا ۝ سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ
مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ يُرِيدُونَ
أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ

तो आप हमारा ( यह ) कुसूर ( ख़ुदा से ) माफ़ करा दीजिये। ( यह लोग ) अपनी ज़बान से ऐसी बातें कहते हैं, जो इनके दिलों में नहीं। ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इनसे ) कहो कि अगर ख़ुदा तुमको नुक़्सान पहुंचाना चाहे या तुमको फ़ायदा पहुंचाना चाहे, तो कौन है, जो ख़ुदा के मुक़ाबले में तुम्हारा ( नफ़ा या नुक़्सान ) कुछ भी कर सके ? ( माल और औलाद का तो हीला ही हीला है )—बल्कि ( बात यह है कि ) जो कुछ भी तुम लोग करते हो, ख़ुदा उससे वाक़िफ़ है ० ( और वह जानता है कि तुम माल और औलाद की वजह से पीछे नहीं रहे )—बल्कि ( मारे डर के पीछे रहे और ) तुमने ऐसा समझा कि पैग़म्बर और मुसलमान अपने बाल-बच्चों में कभी वापस आने ही के नहीं और यह (बात) तुम्हारे दिलों में खुब गई थी और तुम (तरह तरह की) बद-गुमानियाँ करने लगे थे और (ऐसे ख़यालात से) तुम लोग आप बर्बाद हुये ० और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाये, तो हमने ( ऐसे ) मुन्किरों के लिये ( जहन्नम की ) दहकती हुई आग तय्यार कर रक्खी है ० और आस्मानों ( की ) और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही की है। जिसको चाहे, माफ़ करे और जिसको चाहे, सज़ा दे और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहर्बान है ० ( मुसलमानो ! ) अब जो तुम (ख़ैबर की) ग़नीमतों के लेने के लिये जाने लगोगे, तो जो लोग (सफ़र-हुदैबिया से) पीछे रह गये थे-( तुमसे ) कहेंगे कि हमको भी अपने साथ चलने दो। (इससे) उनका मतलब यह है कि फ़र्मूदए-ख़ुदा को बदल दें-(यानी न होने दें। ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहदो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चलने पावोगे—

---

अतः आप हमारे निमित्त ( अल्लाह से ) क्षमा की प्रार्थना करें। ( हे पैग़म्बर ! यह लोग ) अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं, जो उनके हृदयों में नहीं है। ( हे पैग़म्बर ! इन ग़लत बातें बनाने वालों से ) आप कहिये कि यदि अल्लाह तुमको हानि पहुंचाना चाहे वा लाभ पहुंचाना चाहे, तो कौन है कि अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिये ( हानि लाभ का ) कुछ अधिकार रखता हो। ( जो तुम कहते हो, यह बात नहीं है )—बरन अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भांति अभिज्ञ है। (ऐसा नहीं हुआ कि तुमको घर बार की देख भाल ने रोका हो) बरन तुमने ( अपने छल, कपट तथा ख़ुदा पर भरोसा न रखने के कारण से ) यह विचार किया कि ( अल्लाह का ) रसूल तथा मुसलमान अपने घर वालों की ओर कभी फिर कर नहीं आवेंगे। यह ( बात ) तुम्हारे हृदयों में भली कर दिखाई गई और तुम कुविचार करने लगे। और ( इन कुविचारों के कारण ) तुम नष्ट ( भ्रष्ट ) हो गये॥

और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाये, तो हमने ( ऐसे ) काफ़िरों के निमित्त दोज़ख़ को तय्यार कर रक्खा है। और आकाशों तथा पृथ्वी का राज्य अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहे, क्षमा दे और जिसे चाहे, दण्ड दे। और अल्लाह (बड़ा) क्षमा करने वाला करुणाकारी है॥

और जब ( हे मुसलमानो ! ) तुम ( ख़ैबर की ) ग़नीमतों ( अर्थात धर्म-युद्ध से आये हुये धन को प्राप्त करने ) के लिये चले गये, तो यह ( हुदैबिया की यात्रा के समय ) घरों में रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी साथ चलने दो। उनका तात्पर्य यह है कि अल्लाह की आज्ञा को बदल दें। ( हे पैग़म्बर ! इन लोगों से ) आप कह दीजिये कि तुम हमारे साथ कदापि नहीं चलने पाओगे—

अल्लाह ने पहिले ही से ऐसा फ़र्मा दिया है । यह सुनकर ( यह लोग ) कहेंगे कि ( ख़ुदा ने तो क्या फ़र्माया होगा )—बल्कि ( बात यह है कि ) तुम हमसे हसद रखते हो । ( हसद नहीं )-बल्कि यह लोग ( अस्ल मतलब को ) बहुत ही कम समझते हैं ( कि यह इनके सफ़र-हुदैबिया से पीछे रह जाने की सज़ा है) ० (ऐ पैग़म्बर !) देहाती जो ( सफ़र-हुदैबिया से ) पीछे रहे, इनसे कहदो कि कोई दिन जाता है कि तुम बड़े लड़ने वालों ( यानी फ़ारिस व रूम ) के ( मुक़ाबले के ) लिये बुलाये जाओगे कि तुम उनसे लड़ते रहोगे या वह मुसल्मान ही हो जाएँगे । तो अगर ( उस वक़्त ) ख़ुदा का हुक्म मानोगे, तो ख़ुदा तुमको अच्छा अज्र देगा और अगर (कहीं) तुमने सर्ताबी की; जैसे तुम पहिले ( सफ़र-हुदैबिया में ) सर्ताबी कर चुके हो, तो वह तुमको अज़ाब-दर्दनाक की सज़ा देगा ० ( किसी ) अन्धे पर सख़्ती नहीं ( कि ख़्वाही न ख़्वाही शरीक-जिहाद हो ) और न (किसी) लँगड़े पर सख़्ती है और न ( किसी ) बीमार पर सख़्ती है और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानेगा-(अल्लाह) उसको (बहिश्त के ऐसे) बाग़ों में लेजा दाख़िल करेगा, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी और जो सर्ताबी करेगा, वह उसको अज़ाब-दर्दनाक की सज़ा देगा ० (ऐ पैग़म्बर !) जब मुसल्मान ( एक कीकर के ) दरख़्त के तले तुम्हारे हाथ पर ( लड़ने मरने की ) बैअत कर रहे थे, ख़ुदा ( यह हाल देखकर ज़रूर ) उन मुसल्मानों से ख़ुश हुआ और उसने उनकी दिली-अक़ीदत को जान लिया और उनको इतमीनान ( क़ल्ब ) इनायत किया और ( उसके ) बदले में उनको सरे-दस्त ( ख़ैबर की ) फ़तह दी ० और फ़तह के अलावा बहुत सी ग़नीमतें—

قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا
بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ قُلْ
لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى
قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ
فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا وَاِنْ تَتَوَلَّوْا
كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ
حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لَقَدْ　ع
رَضِىَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ
الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ
عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً

يأخذ

---

अल्लाह ने ( पहिले ही से ) ऐसा कह दिया है । ( यह सुनकर यह लोग ) कहेंगे कि ( अल्लाह ने तो क्या कहा होगा )-बरन् तुम हमसे ईर्षा करते हो । ( ईर्षा नहीं )-बरन् यह लोग ( बात को ) बहुत कम समझते हैं । ( अर्थात यह नहीं समझते कि यह उनके हुदैबिया की यात्रा में न जाने का दंड है । हे पैग़म्बर ! आप ) इन घरों में रह जाने वाले गँवारों से कहिये कि शीघ्र तुम लोग एक ( बड़ा ) युद्ध × कर नेवाली ( सूर्मा ) जाति के मुक़ाबले के लिये बुलाये जाओगे । ( उन लोगों से ) तुम संग्राम करते रहोगे अथवा वह मुसल्मान ही हो जावेंगे । सो यदि ( उस समय ) तुम ( ख़ुदा की आज्ञा) मानोगे ( और जिहाद करोगे) तो अल्लाह तुमको अच्छा फल देगा । और पीठ दिखाओगे, जैसा कि तुम ( इससे ) पहिले (हुदैबिया की यात्रा के समय) पीठ दिखा चुके हो, तो अल्लाह तुमको दुखदायी अज़ाब देगा ॥

(यदि जिहाद में साफ़ी न हो, तो) न अन्धे पर कोई दोष है, न लँगड़े पर कोई दोष है, न रोगी पर कोई दोष है। (यह लोग जिहाद के निमित्त विवश नहीं हैं, किन्तु जिनमें उल्लिखित बातें नहीं हैं, उनका धार्मिक कर्त्तव्य है कि अल्लाह और रसूलुल्लाह का आदेश मानें )। और जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानेगा-( अल्लाह ) उसे ( जन्नत के ) बाग़ों में प्रविष्ट करेगा, जिनमें नहरें बहती होंगी । और जो (उसकी आज्ञा से ) फिर जावेगा, उसे दुखदायी अज़ाब देगा ॥

× टीका—इससे तात्पर्य रूम और ईरान के धर्म-युद्ध हैं, जो हज़रत उमर के शासन-काल में हुयेः—हसन निज़ामी ॥

(हे पैग़म्बर ! ) अल्लाह मुसल्मानों ( की उस बात ) से प्रसन्न हुआ कि वह ( समरा वा बबूल के ) वृक्ष के नीचे ( शत्रुओं के साथ धर्म-युद्ध करने का) आपसे प्रण कर रहे थे और उसने उनके हार्दिक प्रेम को जान लिया । अतः (इस प्रेम के कारण) उसने उन (के हृदय) को शान्ति प्रदान की और उनको साथ के साथ (ख़ैबर की ) विजय दी । और ( विजय के अतिरिक्त ) बहुत सी ग़नीमतें प्रदान कीं—

يَأْخُذُونَهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ○ وَعَدَ
كُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ
لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُونَ
آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا
وَأُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللّٰهُ
بِهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ○ وَلَوْ
قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ
لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيرًا ○ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِي
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيلًا
وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ
عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ
وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ○ هُمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ

जिन पर इन लोगों ने जा क़ब्ज़ा किया और अल्लाह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है ० (मुसलमानो !) अल्लाह तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा फ़र्मा चुका है कि तुम उन पर क़ाबिज़ होगे। तो यह (ख़ैबर की ग़नीमत) तुमको सरे-दस्त दिलवा दी और (सुलह-हुदैबिया की वजह से अरब के) लोगों के (दस्त-तअद्दी) को तुमसे रोका (सो अलग) और एक मक़्सूद यह भी था कि यह (वाक़आत तुम) मुसल्मानों के लिये पैग़म्बर की सदाक़त की एक दलील हों और (नीज़) यह कि ख़ुदा तुमको (इस्लाम के) सीधे रस्ते पर ले चले (और कोई तुम्हारा माने व मुज़ाहिम न हो) ० और (इसके सिवा एक फ़तह) और भी (होनी) है, जिस पर (इस वक़्त तक) तुमने क़ाबू नहीं पाया—(मगर) वह ख़ुदा के इहाते (कुद्रत) में है और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है ० और अगर काफ़िर (इस वक़्त) तुम (मुसलमानों) से लड़ते, तो ज़रूर पीठ फेर फेर कर भागते। फिर उनको न कोई हामी ही मिलता और न कोई मददगार ० (यह) अल्लाह का दस्तूर (है)—जो पहिले से होता चला आया है और (ऐ पैग़म्बर !) तुम अल्लाह के दस्तूर में कभी (तग़य्युर व) तबद्दुल होता हुआ न पावोगे ० और (मुसल्मानो !) वह (ख़ुदा) ही (तो) था, जिस ने ऐन (शहर) मक्का में तुमको काफ़िरों पर फ़तह दिये पीछे उनके हाथों को तुमसे रोक दिया और तुम्हारे हाथों को उनसे, और उस वक़्त जो कुछ भी तुम (लोग) करते थे, अल्लाह (सब) देखता था ० (यह मक्के वाले) वही तो हैं, जिन्होंने कुफ़्र किया और तुमको मस्जिद-हराम (में जाने) से रोका और कुर्बानी के जानवरों को भी (न आने दिया)—

जिनको (उन्होंने) प्राप्त किया। और अल्लाह बड़ा बलवान और हिकमत वाला है। (हे मुसलमानो !) अल्लाह तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा कर चुका है, जिनको तुम प्राप्त करोगे। (जिन ग़नीमतों का वादा किया है, उनमें से) यह (ख़ैबर को ग़नीमत) शीघ्र प्रदान करदी। और (हुदैबिया की सन्धि के कारण अरब के) लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये-(अर्थात अरब के काफ़िर अब तुमको कष्ट नहीं पहुंचा सकते)। और (इससे यह तात्पर्य है) कि (यह घटनायें) तुम मुसलमानों के निमित्त (रसूलुल्लाह की सच्चाई का) एक प्रमाण हों। और (अल्लाह) तुमको सीधा मार्ग दिखावे। और (इसके अतिरिक्त एक विजय) और भी (होने वाली) है, जिस पर तुम्हारा (अब तक) बस नहीं चला-(परन्तु) वह अल्लाह के अधिकार में है। और अल्लाह हर वस्तु पर शक्तिमान-है (अर्थात मक्का की विजय)॥

और यदि (इस समय) काफ़िर लोग तुम (मुसलमानों) से युद्ध करते, तो अवश्य पीठ फेर कर (भाग) जाते और पुनः कोई मित्र तथा सहायक न पाते। (हे पैग़म्बर !) यह अल्लाह का नियम है, जो पहिले से चला आया है (कि वह ईमान को कुफ़्र पर विजय दिलावे)। और आप अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन नहीं पावेंगे॥

और वह अल्लाह ही तो है, जिसने तुम्हें विजय देकर मक्के के भीतर काफ़िरों के हाथों को तुमसे रोक दिया और तुम्हारे हाथों को काफ़िरों से रोक दिया। और (उस समय) वह तुम्हारे कर्मों को देख रहा था। यह (मक्का के निवासी) वही तो हैं, जिन्होंने कुफ़्र किया और तुमको मसजिद-हराम अर्थात काबे (में जाने) से रोक दिया। और कुर्बानी—

مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ
وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَئُوهُمْ
فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِيُدْخِلَ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ● إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ
كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ
فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا
أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا ● لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ۖ ع
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ
مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ
مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ●

कि वह ( जहां के तहां ) रुके रहे ( और ) अपनी ( मन्नत की ) जगह पहुंचने न पाये और अगर ( शहर मक्का में ) कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें न होतीं कि तुम उन ( के हाल ) से वाक़िफ़ न थे ( और लड़ाई की सूरत में ) तुम उनको पामाल कर डालते और नादानिस्ता उनकी तरफ़ से तुमको नुक़सान पहुंच जाता—( तो अभी मामला यक्सू करा दिया जाता, मगर ख़ुदा ने सुलह—हुदैबिया के वक़्त में इस मस्लहत से लड़ाई न होने दी ) कि ख़ुदा इस अर्से में जिस ( जिस ) को चाहे, अपनी रहमत ( यानी—दीन इस्लाम ) में दाख़िल करे। अगर ( मक्के के रहने वाले मुसलमान मक्के से कहीं को ) टल गये होते, तो इन ( अह्ल-मक्का ) में से जिस ( जिस ) ने कुफ़्र किया, सबही को तो हम अज़ाब-दर्दनाक की सज़ा देते ० ( यह उस वक़्त के वाक़आत हैं ) जब काफ़िरों ने अपने दिल में ज़िद ठान ली ( और ज़िद भी ज़माने ) जाहिलीयत की सी ज़िद, तो अल्लाह ने अपने रसूल और मुसलमानों को अपनी तरफ़ से ( तहम्मुल व ) इतमीनान ( क़ल्ब ) इनायत किया और उनको परहेज़गारी की बात पर जमाये रक्खा और वह उसके सज़ावार और लायक़ भी थे और अल्लाह तो हर चीज़ से वाक़िफ़ है ० बेशक अल्लाह ने अपने रसूल को वाक़ई सच्चा ही ख़्वाब दिखाया था कि इन्शाअल्लाह तुम ( मुसलमान ) मस्जिद-हराम में बेख़ौफ़ ( व ख़तर ) ब-इतमीनान (तमाम ) दाख़िल होगे—( वहां जाकर ) तुम ( कुछ तो ) अपना सर मुड़ावोगे और ( कुछ फ़क़त ) बाल ही कतर्वाओगे। ग़रज़ जिस बात की तुमको ख़बर न थी, ख़ुदा को ( पहिले से ) मालूम थी। फिर ( उस ख़्वाब की तावीर यह हुई कि ) फ़तह-मक्का से पहिले एक सरे-दस्त फ़तह करादी ०—

के पशुओं को अपने स्थान पर पहुंचने से रोक रक्खा। और यदि ( उस समय मक्के में ) कुछ मुसलमान पुरुष और कुछ मुसलमा स्त्रियां न होतीं, जिनका तुमको बोध न था ( और युद्ध की दशा में ) तुम उनको रौंद डालते और उनकी ओर से ( भी ) तुमको अनजा कुछ हानि पहुंच जाती, तो ( उसी समय निर्णय कर दिया जाता—परन्तु अल्लाह ने इस कारण युद्ध के बदले हुदैबिया की सन्धि होने कि वह इतने समय में ) जिस जिस को चाहे, अपनी कृपा ( अर्थात इस्लाम-धर्म ) में प्रविष्ट करे ॥

यदि ( यह मुसलमान जिनके नष्ट होने के सन्देह से संग्राम नहीं किया गया—मक्का से ) चले जाते, तो हम उन ( मक्का के निव सियों ) में से काफ़िरों पर दुखदायी अज़ाब ( अवतीर्ण ) करते। जब काफ़िरों ने अपने हृदयों में हठ पैदा कर लिया ( और ) हठ भी मूर्ख ( के समय ) का, तो ( उसके मुक़ाबले में ) अल्लाह ने अपने रसूल और मुसल्मानों पर शान्ति ( तथा सन्तुष्टता ) उतारी और उनको सं मता की आज्ञा पर स्थिर ( तथा दृढ़ ) रक्खा। और वह इस ( शान्ति तथा सान्त्वना ) के बहु अधिकारी तथा योग्य भी थे। और अल्ल हर वस्तु का जानने वाला है ॥

निस्सन्देह अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा स्वप्न दिखाया ( जो ) वास्तविकता के अनुसार ( था ) कि तुम लोग यदि अल्ल ने चाहा, मसजिद—हराम ( अर्थात मक्का ) में ( कुछ ) सिर मुंडाये हुये और ( कुछ ) बाल कतरवाये हुये निशङ्क ( तथा निर्भय होक अमन ( चैन ) के साथ अवश्य प्रवेश करोगे। संक्षिप्त यह कि अल्लाह को उन बातों का ज्ञान था, जिनसे तुम अज्ञान थे। अतः ( उस का फल यह हुआ कि ) मक्का की विजय से पहिले निकट ही एक और विजय प्रदान की। ( अर्थात हुदैबिया की सन्धि, जो विजय की श्रेणी में है, या ख़ैबर की विजय ) ॥

वह ( ख़ुदा ) ही ( तो ) है, जिसने अपने रसूल ( मुहम्मद ) को हिदायत और दीन-हक़ देकर भेजा है, ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब रक्खे और ( दीन-इस्लाम की सदाक़त के लिये ) ख़ुदा गवाह बस करता है ० मुहम्मद ख़ुदा के भेजे हुए ( पैग़म्बर ) हैं और जो लोग उनके साथ हैं, काफ़िरों के हक़ में ( तो उनकी ईज़ाओं से बचने के लिये ) बड़े सख़्त ( हैं, मगर ) आपस में रह्म-दिल। ( ऐ मुख़ातब ! ) तू उनको देखेगा कि ( कभी ) रुकूअ कर रहे हैं ( और कभी ) सज्दा कर रहे हैं। ( और ) ख़ुदा के फ़ज़्ल और ख़ुशनूदी की तलबगारी में लगे हैं। उनकी शिनाख़्त यह है कि सज्दे के गट्टे उनकी पेशानियों पर हैं। यही अवसाफ़ उनके तौरात में (भी मज़्कूर ) हैं और ( यही ) अवसाफ़ उनके इन्जील में भी हैं ( और वह रोज़ बरोज़ इस तरह तरक़्क़ी करते जाएँगे) जैसे खेती, कि उसने (पहिले ज़मीन से) अपनी सूई निकाली, फिर उसने ( ग़िज़ाए-नबाती को हवा और मिट्टी से जज़्ब करके अपनी ) उस (सूई) को क़वी किया। चुनांचे वह (रफ़्ता-रफ़्ता) मोटी हुई। ( यहाँ तक कि ) आख़िरकार ( खेती ) अपनी नाल पर सीधी खड़ी हो गई ( और अपनी सर-सब्ज़ी से ) लगी किसानों को ख़ुश करने ( और ख़ुदा ने इनको रोज़-अफ़ज़ूं-तरक़्क़ी ) इसलिये ( दी है ) कि इन ( की तरक़्क़ी ) से ( तरसा-तरसा-कर ) काफ़िरों को जलाये। इनमें से जो ( सच्चे दिल से ) ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये, उनसे ख़ुदा ने मग़फ़िरत और अज्र-अज़ीम का वादा फ़र्मा लिया है ०

هو الذى ارسل رسوله بالهدى ودين
الحق ليظهره على الدين كله وكفى
بالله شهيدا ○ محمد رسول الله والذين
معه اشداء على الكفار رحماء بينهم
ترىهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من
الله ورضوانا سيماهم فى وجوههم من
اثر السجود ذلك مثلهم فى التورىة
ومثلهم فى الانجيل كزرع اخرج
شطئه فازره فاستغلظ فاستوى على
سوقه يعجب الزراع ليغيظ بهم الكفار وعد
الله الذين امنوا وعملوا الصلحت منهم مغفرة
واجرا عظيما ○

سورة الحجرات ... ثمان عشرة آية

بسم الله الرحمن الرحيم ○

## सूरत—हुजुरात

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें १८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ०—

---

( अल्लाह की अनुकम्पा तथा कृपा का क्या ठिकाना ) वही तो है कि उसने अपने रसूल ( मुहम्मद ) को शिक्षा और सत्य-धर्म के साथ भेजा, जिससे कि उसे समस्त धर्मों पर विजय दे और ( सत्य-धर्म की सत्यता के निमित्त ) अल्लाह ( का ) गवाह ( होना ) पर्याप्त है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वह काफ़िरों के लिये कठोर ( और ) परस्पर ( एक दूसरे के लिये ) नर्म-दिल हैं। तू ( हे सम्बोधित! ) उनको देखता है कि ( कभी ) रुकूअ ( अर्थात शिर नवाना ) कर रहे हैं ( और कभी ) भूमि पर माथा टेक रहे हैं ( और इस प्रकार ) अल्लाह की अनुग्रह ( तथा कृपा ) और प्रसन्नता के अभिलाषी हैं। सज्दा अर्थात दण्डवत के प्रभाव से वह अपने मुंहों से पहिचाने जाते हैं। यही उनके गुण तौरेत में ( वर्णित ) हैं और यही उनके गुण इन्जील में ( भी कथित ) हैं। ( धार्मिक उन्नति में उनका दृष्टान्त ऐसा है ) जैसे खेती ( पहिले पृथ्वी से ) अपना अंकुर निकाले, पुनः उसे दृढ़ करे, पुनः वह मोटी हो जाय, पुनः अपनी जड़ पर ( भली भांति ) खड़ी हो जाय ( अपनी हरियाली से ) किसानों को प्रसन्न करे। ( अल्लाह मुसल्मानों को इसी प्रकार उन्नति देना चाहता है )-जिससे कि काफ़िर लोग उनको देख कर जलें ॥

( इस सांसारिक उन्नति के अतिरिक्त ) अल्लाह ने उन लोगों से, जो ईमान लाये हैं और शुभ-कर्म करते हैं-( परलोक की ) क्षमा और बड़े प्रतिफल का वादा किया है ॥

## सूरत—हुजुरात

मदनी, अर्थात् मदीने में उतरी। इसमें १८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ
اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ●
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ
صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ
كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ
وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ● إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ
أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ
وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ● إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ
وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ● وَلَوْ أَنَّهُمْ
صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ
جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَنْ تُصِيبُوا قَوْمًا

मुसल्मानो ! अल्लाह और उसके रसूल के आगे बढ़ बढ़कर बातें न बनाया करो और ( हमा--वक़्त ) अल्लाह से डरते रहो—(क्योंकि) अल्लाह ! ( सबकी ) सुनता ( सब कुछ ) जानता है ० मुसल्मानो ! अपनी आवाज़ों को पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँचा न होने दो और न उनके साथ बहुत ज़ोर से बात करो; जैसे तुम एक से एक ( आपस में ) ज़ोर ज़ोर से बोला करते हो—( कहीं ऐसा न हो ) कि तुम्हारा किया कराया सब अकारत हो जाय और तुमको ख़बर भी न हो ० जो लोग रसूल-ख़ुदा के रूबरू अपनी आवाज़ें पस्त कर लिया करते हैं, यही हैं–जिनके दिलों को ख़ुदा ने परहेज़गारी के लिये ( अच्छी तरह ) जांच लिया है। इनके लिये (आख़िरत में गुनाहों की) माफ़ी और बड़ा अज्र है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जो लोग तुमको ( तुम्हारे रहने के ) हुजरों के बाहर से पुकारते हैं, इनमें से अक्सर ( तो ऐसे हैं, जिन ) को ( मुतलक़ ) अक़्ल नहीं ० और अगर यह ( लोग ) इतना सब्र करते कि तुम ( अज़-ख़ुद ) हुजरों से निकल कर इनके पास आते, तो इनके हक़ में बहुत बेहतर होता और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० मुसल्मानो ! अगर कोई बद ( ज़ात ) तुम्हारे पास कोई ख़बर लाये, तो अच्छी तरह ( उसको ) तहक़ीक़ कर लिया करो । ( ऐसा न हो ) कि नादानी से तुम किसी क़ौम पर जा चढ़ो—

हे मुसल्मानो ! अल्लाह और उसके रसूल के सन्मुख आगे बढ़कर ( कोई ) बात न करो और अल्लाह से डरते रहो । निस्सन्दे अल्लाह ( सब कुछ) सुनने वाला ( और सब कुछ) जानने वाला है । हे मुसल्मानो ! अपनी आवाज़ों को पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँचा न हों दो और न उनसे चिल्लाकर बात करो और न उनसे ऊँची आवाज़ में बात करो, जैसा कि तुम परस्पर एक दूसरे से ( बे-धड़क ) बात ची करते हो । कहीं ऐसा न हो कि ( इस अनादर के कारण से ) तुम्हारे कर्म अकार्थ हो जायँ और तुम्हें ज्ञान भी न हो ॥

जो लोग रसूलुल्लाह के सन्मुख अपनी आवाज़ों को धीमी रखते हैं–यह वह लोग हैं, जिनके हृदयों को अल्लाह ने संयमता निमित्त परख लिया है । उनके निमित्त ( परलोक में ) क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है । ( हे पैग़म्बर ! ) जो लोग आपको हुजरों ( अर्थात घ की कोठरियों ) के बाहर से पुकारते हैं, उनमें से बहुतेरे अज्ञान हैं । और यदि वह इतना धीरज धरें कि आप (स्वयं कोठरी से ) निक कर उनके पास आ जावें, तो उनके निमित्त उत्तम हो । और ( जो लोग अपनी भूल पर सच्चे दिल से लज्जित होते हैं, तो उनको निश्च रखना चाहिये कि ) अल्लाह ( बड़ा ) क्षमा करने वाला कृपालु है । हे मुसल्मानो ! यदि तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ अर्थात खुल्लम खुल्ला प करने वाला कोई समाचार लेकर आवे, तो उसकी अच्छी तरह जांच ( परताल ) कर लिया करो । ( ऐसा न हो ) कि अज्ञानता से त किसी जाति पर चढ़ाई करदो—

بجهالة فتصبحوا على ما فعلتم ندمين ●
واعلموا ان فيكم رسول الله لو يطيعكم في
كثير من الامر لعنتم ولكن الله حبب
اليكم الايمان وزينه في قلوبكم وكره اليكم
الكفر والفسوق والعصيان اولئك
هم الرشدون ● فضلا من الله ونعمة والله
عليم حكيم ● وان طائفتان من المؤمنين
اقتتلوا فاصلحوا بينهما فان بغت احدهما
على الاخرى فقاتلوا التي تبغي حتى تفيء الى
امر الله فان فاءت فاصلحوا بينهما بالعدل
واقسطوا ان الله يحب المقسطين ● انما
المؤمنون اخوة فاصلحوا بين اخويكم واتقوا
الله لعلكم ترحمون ● يايها الذين امنوا لا يسخر

फिर अपने किये से पशेमान हो ० और जाने रहो कि तुममें रसूल खुदा ( मौजूद ) हैं (और) बहुतेरी बातें (इस क़िस्म की होती) हैं कि अगर वह उनमें तुम्हारा कहना मान लिया करें, तो ( उल्टी ) तुम ही पर मुश्किल पड़ जाय, मगर ( भले को ) खुदा ने तुम्हें ईमान की महब्बत देदी है और उसको तुम्हारे दिलों में उम्दा कर दिखाया है और कुफ़्र और खुद–सरी और नाफ़र्मानी से तुमको नफ़्रत दिलादी है। यही लोग हैं, जो खुदा के फ़ज़्ल व करम से नेक चलन हैं ० और अल्लाह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है ० और अगर ( तुम ) मुसल्मानों के दो फ़िर्क़े आपस में लड़ पड़ें, तो उनमें सुलह करा दो। फिर अगर उनमें का एक ( फ़िर्क़ा ) दूसरे पर ज़ियादती करे, तो जो ज़ियादती करता है—( तुम भी ) उससे लड़ो। यहां तक कि वह हुक्म–खुदा की तरफ़ रुजू लाये। फिर जब रुजू ले आये, तो फ़रीक़ैन में बराबरी के साथ सुलह करादो और इन्साफ़ को मलहूज़ रक्खो। बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है ० मुसल्मान तो बस ( आपस में भाई ) भाई हैं, तो अपने दो भाइयों में मेल–जोल करा दिया करो और खुदा ( के ग़ज़ब ) से डरते रहो, ताकि ( खुदा की तरफ़ से ) तुम पर रह्म किया जाय ० मुसल्मानो ! मर्द मरदों पर न हँसें—

---

( और ) फिर अपने किये पर पछताओ । और ( हे मुसल्मानो ! ) तुमको जानना चाहिये कि तुममें रसूलुल्लाह ( विद्यमान ) हैं। और ऐसी बहुतेरी बातें हैं कि यदि वह उनमें तुम्हारा कहा मान लें, तो तुम ही सङ्कट में पड़ जाओ—परन्तु अल्लाह ( की दया तथा कृपा है कि तुमको स्वयं ही इतनी समझ बूझ है। क्योंकि उस ) ने तुम्हें ईमान का प्रेम प्रदान किया है और उससे तुम्हारे हृदयों का सुसज्जित किया है। और कुफ़्, दुराचार और अवज्ञा की ओर से तुमको घृणा दिला दी है। ( जिस पर खुदा ने अपनी यह अनुग्रह की है )–वही अल्लाह के अनुग्रह तथा कृपा के कारण सीधे मार्ग पर हैं। और अल्लाह बड़ा जानने वाला और हिकमत वाला है ॥

और ( हे मुसल्मानो ! ) यदि मुसल्मानों के दो समूह परस्पर लड़ पड़ें, तो उनमें सन्धि करा दो। सो यदि उन दोनों में से एक दूसरे से उद्दण्डता करे, तो उद्दण्डता करने वाले समूह से ( तुम भी ) यहाँ तक लड़ो कि वह खुदा की आज्ञा की ओर आ जावे ( और उद्दण्डता तथा उपद्रव करना छोड़ दे )। पुनः जब वह खुदा की ओर आ जावे, तो नीति के साथ दोनों में सन्धि करा दो। ( न्याय–नीति बहुत आवश्यक है—क्योंकि ) अल्लाह न्याय करने वालों को प्रिय रखता है ॥

मुसल्मान तो (परस्पर भाई) भाई हैं। अतः अपने दो भाइयों में (यदि कुछ फूट पड़ जाय, तो) मेल करा दिया करो और अल्लाह से भय खाते रहो—कदाचित् ( इस मेल मिलाप कराने और खुदा से भय खाने के कारण तुम्हारी मुक्ति हो जाय और ) तुम पर दया की जाय। हे मुसल्मानो ! पुरुष पुरुषों से हंसी ठट्ठा न करें—

قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ
وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا
مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ
بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ
لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ
الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ
بَعْضًا ۭ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ
مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ
رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ
اُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ۭ اِنَّ
اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ
خَبِيْرٌ ۝ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ۭ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ

قُوْلُوْا

अजब नहीं कि ( जिन पर हँसते हैं ) वह ( ख़ुदा के नज़्दीक ) उनसे बेहतर हों और न औरतें औरतों पर ( हँसें )—अजब नहीं कि ( जिन पर हँसती हैं ) इनसे बेहतर हों। आपस में एक दूसरे को ताने न दो और न एक दूसरे को नाम धरो। ईमान लाये पीछे बद-तहज़ीबी का नाम ही बुरा है और जो ( इन हरकात से ) बाज़ न आयें, तो वही ( ख़ुदा के नज़्दीक ) ज़ालिम हैं ० मुसलमानो ! ( लोगों की निस्बत ) बहुत शक करने से बचते रहो, क्योंकि बाज़ शक ( दाख़िल ) गुनाह हैं और एक दूसरे की टटोल में न रहा करो और न तुममें से एक को एक पीठ पीछे बुरा कहे। भला तुम में से कोई ( इस बात को ) गवारा करेगा कि अपने मरे हुये भाई का गोश्त खाये ? यह तो (यक़ीनन) तुमको गवारा नहीं-( तो ग़ीबत क्यों गवारा हो कि यह भी एक क़िस्म का मुर्दार खाना है ) और अल्लाह ( के ग़ज़ब ) से डरते रहो। बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहर्बान है ० लोगो : हमने तुम (सब) को एक मर्द ( आदम ) और एक औरत ( हव्वा ) से पैदा किया और ( फिर ) तुम्हारी ज़ातें और बिरादरियां ठहराईं, ताकि एक दूसरे को शिनाख़्त कर सको-( वर्ना ) अल्लाह के नज़्दीक तुममें बड़ा शरीफ़ वही है, जो तुममें बड़ा पर्हेज़गार है। बेशक अल्लाह जानने वाला बा-ख़बर है ० अरब के देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाये। ( ऐ पैग़म्बर ! इनसे ) कहदो कि तुम ईमान नहीं लाये—

सम्भव है कि ( जिनकी हंसी उड़ाते हैं ) वह उनसे उत्तम हों। और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हंसी उड़ायें। सम्भव है कि ( जिनकी हंसी उड़ाती हैं )-वह उनसे उत्तम हों। ( हे मुसलमानो ! परस्पर ) एक दूसरे को मेहना अर्थात ताना न दो और न एक दूसरे को बुरे लक़ब (और बुरे नामों से पुकार कर) अपमानित करो। ईमान लाने के उपरान्त पाप का नाम लगना बुरा है। (इन बातों से तौबा करनी चाहिये) और जो तौबा न करें, वही ( ख़ुदा के निकट ) अत्याचारी ( तथा उद्दण्ड ) हैं ॥

हे मुसलमानो ! ( लोगों के सम्बन्ध में ) बहु शंका करने से बचो—( क्योंकि ) कतिपय शंका पाप ( की श्रेणी में पहुंच जाती ) हैं। और एक दूसरे की टटोल में न रहो और एक दूसरे को ग़ीबत (और निन्दा) न करो ( अर्थात पीठ पीछे बुरा न कहो )। बताओ तो सही ! क्या तुममें से कोई ( इससे ) घृणा न करेगा कि अपने मृतक भाई का मांस खावे। इससे तो तुम ( कभी ) प्रसन्न न होगे-( अतः ग़ीबत और निन्दा से भी घृणा करके बचना चाहिये, क्योंकि यह भी अपने भाई का मांस खाने के बराबर है)। और अल्लाह से डरते रहो। (सच्चे दिल से तौबा करोगे, तो ) अल्लाह बड़ा तौबा स्वीकार करने वाला कृपालु है। ( तुम्हारी तौबा स्वीकार करके तुम्हें क्षमा प्रदान करेगा ) ॥

हे मनुष्यो ! ( अहङ्कार तथा अभिमान से बचने के लिये इन बातों पर सोच विचार करना आवश्यक है कि ) हमने तुम ( सब ) को एक पुरुष ( आदम ) और एक स्त्री ( हव्वा ) से उत्पन्न किया। पुनः तुम्हारी भिन्न २ जातियां और भिन्न भिन्न कुटुम्ब बनाये, जिससे कि एक दूसरे को पहिचान सको। ( अतः यह भेद जानने पहिचानने के निमित्त हैं, आदर सम्मान के निमित्त नहीं )। अल्लाह के निकट सबसे अधिक मान वाला वह है, जो सबसे अधिक संयमी है। निस्सन्देह अल्लाह को हर बात का ज्ञान है ( और वह ) हर बात से अभिज्ञ है। (हे पैग़म्बर !) अरब ( देश ) के गंवार कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं। आप ( उनसे ) कहिये कि तुम ईमान नहीं लाये—

قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ
وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ
شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ
الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا
وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۝ قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ
بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ يَمُنُّونَ
عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُمْ
بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

سورة ق مكية وهي خمس واربعون آية

हाँ (यूं) कहो कि हम मुसल्मान हो गये और ईमान का तो हनोज़ तुम्हारे दिलों में गुज़र तक भी नहीं हुआ और अगर तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलो, तो अल्लाह तुम्हारे अमलों (के अज्र) में से किसी तरह की काट-छांट नहीं करेगा। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० बस ( सच्चे ) मुसलमान तो वह हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये। फिर ( किसी तरह का ) शक ( व शुबहा ) नहीं किया और अल्लाह के रस्ते में अपने जान व माल से कोशिश की—( हक़ीक़त में ) यही सच्चे ( मुसलमान हैं ) ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीन-दारी जताते हो ! हालांकि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, अल्लाह ( तो सबही कुछ ) जानता है और अल्लाह हर चीज़ ( के हाल ) से वाक़िफ़ है ० ( ऐ पैग़म्बर ! यह लोग ) तुम पर अपने इस्लाम लाने का एहसान रखते हैं, तुम ( इनसे ) कहो कि मुझ पर अपने इस्लाम ( लाने ) का एहसान न रक्खो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुमको ईमान का रस्ता दिखाया; बशर्ते कि तुम ( दावए-इस्लाम में ) सच्चे हो ० बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की ग़ैब ( की बातों ) को जानता है और तुम लोग जैसे जैसे अमल कर रहे हो, अल्लाह उनको देख रहा है ०

## सूरत—क़ाफ़

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ४५ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

---

बरन ( यूं ) कहो कि हम (विरोध छोड़ कर) आधीन हो गये। और अभी ईमान तो तुम्हारे हृदयों में प्रवेश ही नहीं हुआ। और यदि ( तुम सच्चे दिल से ईमान लाओ और ) अल्लाह और उसके रसूल की आधीनता करो, तो ( अल्लाह ) तुम्हारे कर्मों ( के प्रतिफल ) में से कुछ कमी नहीं करेगा। निस्सन्देह अल्लाह ( बड़ा )क्षमा करने वाला कृपालु है ॥

वह मुसल्मान, जो (सच्चे दिल से ) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये, पुनः ( किसी प्रकार का ) सन्देह नहीं किया और अल्लाह के मार्ग में अपने धन तथा प्राण के साथ लड़े (अर्थात जिहाद किया) वही सच्चे (मुसलमान) हैं। (हे पैग़म्बर ! ) आप (इन लोगों से) कहिये कि क्या तुम अल्लाह को अपने धर्म की सूचना देते हो-यद्यपि जो कुछ आकाशों तथा पृथ्वी में है, वह ( सब ) अल्लाह के ज्ञान में है। और अल्लाह हर वस्तु से अभिज्ञ है ॥

( हे पैग़म्बर ! यह लोग ) अपने मुसलमान होने का आप पर उपकार जताते हैं। ( इनसे ) कहिये ! कि अपने इस्लाम का उपकार मुझ पर न रक्खो, बरन् अल्लाह तुम पर उपकार करता है कि उसने तुमको ईमान की शिक्षा दी- यदि तुम ( अपने आपको मुसल्मान बताने में ) सच्चे हो। ( अल्लाह को तुम्हारे सच्चे होने न होने का ज्ञान है )। निस्सन्देह अल्लाह आकाशों की और पृथ्वी की ( समस्त ) गुप्त बातों से अभिज्ञ है। और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को देख रहा है ॥

## सूरत–क़ाफ़

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ४५ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۝ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ
مُنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝
ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ۝
قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا
كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ
فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ۝ اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ
فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا
مِنْ فُرُوْجٍ ۝ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝
تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝ وَنَزَّلْنَا
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّ
حَبَّ الْحَصِيْدِ ۝ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० क़ाफ़ ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क़ुर्आन—मजीद की क़सम ! ( कि तुम हमारे भेजे हुये पैग़म्बर हो ) ० मगर इन काफ़िरों को ( इससे ) तअज्जुब हुआ कि उनही में का एक डर सुनाने वाला इनके पास ( पैग़म्बर बनकर ) आया, तो ( यह ) काफ़िर लगे कहने कि यह तो ( एक ) अजीब बात है ० क्या जब हम मर जाएंगे और (गल सड़ कर ) मिट्टी हो जाएँगे-( तो हमको क़यामत में दुबारा जिला उठाया जायगा ? )। यह दुबारा ज़िन्दा होना तो बिल्कुल बईद (अज़-क़यास) है ० मुर्दों के जिन अजज़ा को मिट्टी ( खाती और ) कम करती है, हमको तो मालूम ही हैं—( फिर जब चाहेंगे उनको जमा कर लेंगे ) और हमारे पास किताब ( लौह ) महफ़ूज़ ( भी मौजूद ) है ( और उसमें ज़र्रा-ज़र्रा लिखा हुआ है ) ० मगर इन लोगों को एक हक़ बात पहुंची और ( पहुंचते के साथ ज़िद से बे सोचे समझे ) उसको झुट-ला दिया—तो वह ऐसी बात में ( उलझ रहे ) हैं, जिसको क़रार नहीं ० क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ ( नज़र भर कर ) नहीं देखा कि हमने उसको कैसा बनाया और ( सितारों से ) उसको सजाया और उसमें कहीं दर्ज़ ( का नाम ) नहीं ० और ज़मीन को हमने फैलाया और उसके अन्दर भारी बोझल पहाड़ पिला दिये और सब तरह की खुश-नुमा चीज़ें उसमें उगाईं ० ताकि जितने बन्दे ( हमारी तरफ़ ) रुजू लाने वाले हैं—( वह हमारी ) क़ुद्रत का तमाशा देखें और इब्रत पकड़ें ० और हमने आस्मान से बरकत का पानी उतारा और ( अपने ) बन्दों को रोज़ी देने के लिये उस ( पानी ) के ज़रिये से बाग़ उगाये और खेती का अनाज ० और लम्बी लम्बी खजूरें, जिनकी गेलें खूब गुथी होती हैं—

---

महिमा वाले क़ुर्आन की शपथ ! कि ( हे पैग़म्बर ! आप हमारे भेजे हुये पैग़म्बर हैं )—परन्तु काफ़िरों को आश्चर्य हुआ कि उन्हीं में से एक ( खुदा के अज़ाब से ) डराने वाला ( पैग़म्बर बनकर ) उनके पास आया। अतः काफ़िरों ने कहा कि यह तो अचम्भे की बात है। ( और पैग़म्बर से दुबारा जीवन पाने और हिसाब किताब देने का वृतान्त सुनकर उन्होंने कहा कि ) जब हम मर जायँगे और मिट्टी हो जायँगे ( तो क्या फिर ज़िन्दा होंगे ? )। यह पुनः जीवित होना ( बुद्धि से ) दूर है ॥

( यह उनका विचार है कि हम धूल में मिल कर छिन्न भिन्न हो जावेंगे—परन्तु ) हमको तो ( उन अंशों का ) ज्ञान है, जो पृथ्वी उनमें से ( खाती और ) कम करती है। और हमारे पास पुस्तक ( अर्थात लौह-महफ़ूज़ ) है , जिसमें सब कुछ है। ( उनको वास्तविकता का तो कुछ ज्ञान नहीं )-वरन् जब सत्य बात उनको पहुंची, तो उसे झुठलाने लगे । अतः यह लोग दुबिधा ( तथा सन्देह ) की दशा में (पड़े) हैं ॥

( यह लोग जो अपने दुबारा जीवित किये जाने पर आश्चर्य करते हैं )—क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश की ओर नहीं देखा हमने उसे किस प्रकार बनाया और सजाया है। और उसमें कोई दरार नहीं है। और पृथ्वी को हमने ( किस प्रकार ) फैलाया और उसमें ( बड़े २ अटल ) पर्वतों को जमाया और उसमें हर प्रकार की शोभायमान ( तथा मनोहर ) वस्तुवें उगाईं, जिससे कि जो बन्दे ( हमारी ओर) अवहित होने वाले हैं, वह ( हमारी शक्ति की लीला ) देखें और शिक्षा ग्रहण करें। और हमने (अपने) बन्दों को जीविका देने के लिये आकाश से बरकत का पानी उतारा। अतः ( उस पानी से ) बाग़ उगाये और खेती का अन्न और लम्बी २ खजूरें, जिनके गुच्छे पर्त ( जमे हुये ) हैं—

رِزْقًا لِّلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ
الْخُرُوجُ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ
وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ
وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ
تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝ أَفَعَيِينَا
بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ
بِهِ نَفْسُهُ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝
إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ
قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ
مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ
ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا

٥

और ( नीज़ ) हमने मेंह के ज़रिये से मरी हुई ( यानी पड़ती पड़ी हुई ) बस्ती को जिला उठाया। इसी तरह (क़यामत के दिन लोगों को क़ब्रों से ) निकलना होगा ० इन ( लोगों ) से पहिले नूह की क़ौम ने ( पैग़म्बरों को ) झुटलाया और ख़न्दक़ वालों ने और समूद ने ० और आद ने और फ़िऔन ने और क़ौम—लूत ने ० और बन के रहने वालों ने और तुब्बा के लोगों ने-( इन ) सबही ने तो ( अपने अपने ) पैग़म्बरों को झुटलाया, तो हमारा वादए ( अज़ाब इनके हक़ में ) पूरा हुआ ० क्या हम अव्वल ( बार ) पैदा करने में थक गये कि क़यामत में दुबारा नहीं पैदा कर सकेंगे ? नहीं, बल्कि ( अस्ल बात यह है कि ) यह लोग ख़िलाफ़-आदत अज़-सरे-नौ पैदा करने की तरफ़ से शक में ( पड़े ) हैं ० और बेशक हमही ने इन्सान को पैदा किया और हम उसके दिली-ख़यालात ( तक ) से वाक़िफ़ हैं और हम ( उसकी ) शहे-रग से भी ज़ियादा उससे क़रीब हैं—( मगर उसकी आंखों पर ग़फ़लत का पर्दा पड़ा है ) ० कि दो ज़ब्त करने वाले ( यानी किरामन-कातिबीन-फ़रिश्ते उसकी बातें ) ज़ब्त ( यानी क़लम-बन्द ) करते जाते हैं—( एक ) दाहिनी तरफ़ बैठा है और ( एक ) बाईं तरफ़ ० कोई बात मुंह से नहीं निकालने पाता, मगर एक चौकीदार उसके पास (लिखने को ) तय्यार ( रहता ) है ० और मौत की बेहोशी तो ज़रूर आकर रहेगी ( और हम उस वक़् आदमी को जता देंगे कि ) यही तो वह ( हालत ) है, जिससे तू गुरेज़ करता था ० और ( क़यामत के दिन ) सूर फूंका जायगा। यही वह दिन होगा, जिससे ( लोगों को ) डराया जाता है ० और हर शख़्स ( आमाल की जवाब-दिही के लिये ) हाज़िर होगा—

---

और इसी ( पानी ) से ( इस प्रकार ) हमने निर्जीव बस्तियों को सजीव किया। (जिस प्रकार खुदा की शक्ति से यह बातें हुईं ) इसी प्रकार ( मृत्यु के पश्चात क़ब्रों से ) निकलना भी (होगा । इन काफ़िरों का झुठलाना कोई नवीन बात नहीं )-इनसे पहिले नूह की जाति ने ( पैग़म्बरों को ) झुठलाया और कूप वालों और समूद और आद और फ़िऔन और लूत की जाति और बन ( के रहने ) वाले और तुब्बा की जाति—सभी ने पैग़म्बरों को झुठलाया। अतः ( हमारे अज़ाब का ) वादा ( इन लोगों पर ) पूर्ण हुआ ॥

क्या हम पहिली बार ( सृष्टि को ) उत्पन्न करके थक गये ? ( ऐसा नहीं है )—बरन् यह लोग नई उत्पत्ति के विषय में सन्देह में पड़े हैं। और ( हम इनके हृदयों की बात जानते हैं )। हमने मनुष्य को उत्पन्न किया है और उसके मन में जो शंका उत्पन्न होती है, हम उस को जानते हैं। और हम तो उससे प्राण की नाड़ी से भी अधिक निकट हैं ॥

जब दाहिने बायें बैठे हुये दो रक्षा ( तथा लेखना ) में लाने वाले ( फ़रिश्ते ) कर्मों तथा शब्दों को रक्षा ( तथा लेखना ) में लाते हैं ( उस समय ) कोई शब्द ( मनुष्य ने ) बोला नहीं कि उसके लिये एक ताक में रहने वाला ( रक्षक ) तय्यार है ( अर्थात दोनों कंधों के फ़रिश्ते उसे लिख लेते हैं )। और मृत्यु की मूर्च्छा का आना तो यथार्थ है। ( उस समय मनुष्य से कहा जावेगा ) कि यह वह ( समय ) है, जिससे तू भागता था। और ( इसके पश्चात जब क़यामत में ) सूर अर्थात नरसिंगा फूंका जावेगा—( तो उससे कहा जावेगा कि) यह है अज़ाब के वादे का दिन। और हर प्राणी ( क़यामत क्षेत्र में ) इस प्रकार आवेगा कि उनके साथ—

سَآئِقٌ وَّشَهِيدٌ ۝ لَقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ
هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ
الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝ وَقَالَ قَرِينُهُ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ
أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مَّنَّاعٍ
لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ۝ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا
آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝ قَالَ قَرِينُهُ
رَبَّنَا مَآ أَطْغَيْتُهُ وَلٰكِن كَانَ فِي ضَلٰلٍ
بَعِيدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ
إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ۝ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ أَنَا
بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝ يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ ع
وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ۝ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ
غَيْرَ بَعِيدٍ ۝ هٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ
حَفِيظٍ ۝ مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ

( एक फ़रिश्ता तो ) उसके साथ हाँकने वाला होगा और ( एक फ़रिश्ता उसका आमाल-नामा लिये हुये उसके अमलों का) गवाह ० (और हम उसको जता देंगे ) कि तू इस ( दिन ) से बे-ख़बर रहा, तो ( जो पर्दा तेरी आँखों पर पड़ा था, अब ) हमने तेरे ( उस ) परदे को तुझ पर से हटा दिया—तो आज तेरी निगाह बड़ी तेज़ ( मालूम होती ) है ० और उसका साथी ( जो गवाही देने आया है ) अर्ज़ करेगा कि ( इसका नामए-आमाल ) जो मेरे पास ( लिक्खा मौजूद ) है, वह तो यह ( हाज़िर ) है ० ( इस पर हम अपने दो चोबदारों यानी फ़रिश्तों को हुक्म देंगे कि ) जितने काफ़िर सर्कश ० नेकी से रोकने वाले हद्द ( उबूदियत ) से बढ़े हुये ( दीन में ) शुकूक पैदा करने वाले हैं ० जो अल्लाह के साथ दूसरे ( दूसरे ) माबूद ठहराया करते थे, अब ( सबको लेजाकर ) जहन्नम में झोंक दो ! और इस ( मुज्रिम ) को भी सख़्त-अज़ाब में ( लेजाकर ) डाल दो ० ( फिर ) उसका साथी ( शैतान ) अर्ज़ करेगा कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! मैंने तो इसको सर्कश नहीं बनाया, बल्कि यह ( अज़-ख़ुद ) परले दर्जे की गुमराही में ( पड़ा ) था ० ( इस पर ख़ुदा ) फ़र्मायेगा कि हमारे हुज़ूर में ( ऐसे रगड़े ) झगड़े ( की बातें ) न करो और हमतो तुमको पहिले ही ( से अपने अज़ाब का ) डर सुनवा चुके थे ० हमारे हाँ ( जो एक ) बात ( क़रार पा चुकती है, फिर ) नहीं बदली जाया करती और हमतो बन्दों पर ज़र्रा भर भी ज़ुल्म नहीं करते ० उस दिन हम दोज़ख़ से पूछेंगे कि तू ( दोज़ख़ियों से ) भर चुकी ( या नहीं ? ) वह अर्ज़ करेगी कि कुछ और भी है ० और बहिश्त ( इस क़दर ) परहेज़गारों से क़रीब लाई जायगी ( कि कुछ भी ) फ़ासला न होगा ० यही तो वह ( बहिश्त ) है, जिसका तुम ( में ) से हर एक ( ख़ुदा की तरफ़ ) रुजू लाने वाले ( हुक़ूक़ की ) हिफ़ाज़त करने वाले के लिये वादा किया जाता है ० जो शख़्स बे देखे ( ख़ुदाए ) रह्मान से डरता रहा और दिल-गिर्वीदा लेकर हाज़िर हुआ ०—

---

एक ले चलने वाला ( अथवा हांकने वाला फ़रिश्ता होगा ) और एक ( उसके कर्मों का) गवाह ( फ़रिश्ता। उससे अल्लाह कहेगा कि ) तू इस ( क़यामत के होने ) से अचेतना में था। अतः हमने तुझसे तेरा पट उठा दिया। अब आज तो तेरी दृष्टि तीव्र है। ( और अब आज तो तुझे यह सब कुछ दिखाई देता है, जिससे तू अचेत तथा बेपर्वाह था )॥

और उसका साथी ( कर्म लिखने वाला फ़रिश्ता ) कहेगा यह ( कर्म-पत्र जो मेरे पास है ) विद्यमान है। ( आज्ञा होगी कि ) प्रत्येक हठी, भलाई से रोकने वाले ( भक्ति की ) सीमा से बाहर निकल जाने वाले ( धार्मिक आदेशों में ) शंका करने वाले काफ़िर को, जिस ने अल्लाह के साथ एक और ( बनावटी ) पूज्य ठहरा दिया—दोज़ख़ में डाल दो। दोज़ख़ में डाल कर उसे कठिन अज़ाब दो। ( यह भयङ्कर आदेश सुनकर वह मनुष्य अपने सांसारिक संगती शैतान से लड़ेगा कि तेरे कारण आज मुझे यह बुरा दिन देखना पड़ा )—उसका संगती ( शैतान ख़ुदा से प्रार्थना करेगा कि ) हे हमारे पालनहारे ! मैंने इसे उद्दण्ड ( तथा पथ—भ्रष्ट ) नहीं बनाया, बरन यह ( आप ही ) दूर की पथ—भ्रष्टता में था। ( अल्लाह ) कहेगा कि मेरे समक्ष झगड़ा न करो और मैंने तो पहिले ही तुमको अज़ाब से सूचित कर दिया था। अब मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती और न मैं बन्दों पर अत्याचार करता हूं॥

उस दिन हम दोज़ख़ से पूछेंगे कि क्या तू भर चुकी ? और वह कहेगी कि क्या कुछ और भी है ? और जन्नत संयमियों के (इतनी) समीप लाई जायेगी कि कुछ अन्तर न होगा। यही वह जन्नत है, जिसका तुममें से प्रत्येक ( ख़ुदा की ओर ) अवहित होने वाले ( और ख़ुदा की आज्ञाओं की ) रक्षा करने वाले से वादा किया जा रहा है। जो कोई करुणा—निधान ( ख़ुदा ) से बिन देखे डरता रहा और अवहित होने वाला हृदय लेकर ( उसके समक्ष ) उपस्थित हुआ—

مُنِيبٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝
لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝ وَكَمْ
أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم
بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ۝
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ
أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا
يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ
وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ
السُّجُودِ ۝ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ
قَرِيبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ
يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا

(हम ऐसे लोगों से फ़र्मायेंगे) कि सलामती के साथ इस (बहिश्त) में जा दाख़िल हो! कि यही तो हमेशा रहने का दिन है-(जो जहां रहा, सो रहा) ० बहिश्त में इन लोगों को, जो चाहेंगे मिलेगा और हमारी सर्कार में (तो इससे भी कहीं) ज़ियादा (मौजूद) है ० और इन (कुफ़्फ़ार-मक्का) से पहिले हमने कितनी उम्मतें हलाक कर मारीं कि वह इनसे बल-बूते में कहीं बढ़ (चढ़) कर थे—तो (जब इन पर अज़ाब नाज़िल हुआ, तो) उन्होंने तमाम शहरों को छान मारा कि कहीं भागने का ठिकाना भी है ० जो साहब-दिल है, या कान लगाकर हुज़ूर-क़ल्ब से (बात को) सुनता है, उसके लिये तो इन बातों में (काफ़ी) नसीहत है ० और हमने आस्मानों (को) और ज़मीन को और जो चीज़ें आसमान व ज़मीन में हैं, उन (सब) को छः दिन में बना खड़ा किया और तकान ने हमको छुवा (तक भी तो) नहीं ० तो (ऐ पैग़म्बर!) जैसी जैसी बातें (यह मुन्किर) कहते हैं, उन पर सब्र करो और आफ़ताब के निकलने से पहिले और (उसके) गुरूब होने से पहिले अपने पर्वर्दिगार की हम्द (व सना) के साथ (उसकी) तस्बीह (व तक़्दीस) किया करो ० और रात में (भी थोड़ी देर) उसकी तस्बीह (व तक़्दीस) करो और नमाज़ों के बाद (भी) ० और (ऐ पैग़म्बर! इस बात को गोश-दिल से) सुन रक्खो कि जिस दिन (मुरदों का) पुकारने वाला फ़रिश्ता (इस्राफ़ील) पास के पास से (सबको) आवाज़ देगा (कि उठो!) ० जिस दिन (इस फ़रिश्ते के) चीख़ने को (सब लोग) बख़ूबी सुन लेंगे, वह दिन (लोगों के क़ब्रों से) निकलने का होगा ० बेशक हमही जिलाते और हमही मारते हैं और हमारी ही तरफ़—

---

(तो हम ऐसे लोगों से कहेंगे कि) कुशल के साथ जन्नत में प्रवेश करो। यह सर्वदा का दिन है। (अर्थात जो जहाँ रहा, वहाँ रहा। यह सर्वदा का रहना है। दुनिया की तरह अल्प-कालिक नहीं)। जन्नत में उन लोगों को जो चाहेंगे मिलेगा और हमारे समीप तो इससे भी अधिक (विद्यमान) है। और हमने उन (मक्का के काफ़िरों) से पहिले बहुतेरी (उद्दण्ड) जातियों को नष्ट (भ्रष्ट) कर डाला, जो शक्ति में इनसे बढ़ चढ़ कर थीं। (सो जब उन पर हमारा अज़ाब उतरा) तो उन्होंने शहरों को छान मारा कि कहीं भागने का ठिकाना मिले (परन्तु कहीं ठिकाना न मिला)। इन बातों में उस मनुष्य के निमित्त शिक्षा (का अवकाश) है, जो (शुद्ध) हृदय रखता है अथवा वह (दिल से) कान लगा देता है (और अल्लाह की आयतों को ध्यान पूर्वक सुनता है)॥

और (हमारी पूर्ण शक्ति पर विचार करना चाहिये कि) हमने आकाशों को और पृथ्वी को और उस (समस्त सृष्टि) को, जो इन दोनों के बीच में है-छः दिन में उत्पन्न कर दिया। और थकन ने हमको छुवा तक नहीं (अर्थात किंचित मात्र हमें थकन नहीं हुई)। सो (हे पैग़म्बर! इन शक्ति के चिन्हों पर दृष्टि रखिये और यह मुकरने वाले) जो कुछ कहते हैं, उस पर सन्तोष कीजिये। और सूर्य्य उदय होने से पहिले और (उसके) अस्त होने से पहिले अपने पालनहारे की (स्तुति) प्रशंसा के साथ पवित्रता वर्णन किया कीजिये। और रात्रि में (भी थोड़ी देर) उसकी पवित्रता वर्णन कीजिये। और नमाज़ों के पश्चात (भी उसके गुन गाया कीजिये)॥

और (हे रसूल! इस बात को) सुन रखिये कि जिस दिन पुकारने वाला (फ़रिश्ता) निकट स्थान से पुकारेगा (कि उठो! और) जिस दिन (उस फ़रिश्ते के) घोर-नाद को (सब लोग) भली भाँति सुन लेंगे, वह दिन (लोगों के क़ब्रों से) निकलने का होगा निस्सन्देह हम ही जिलाते हैं और हम ही मारते हैं। और हमारी ही ओर (सबको) लौटना है॥

( फिर ) फिर ( कर लोगों को ) आना है ० जिस दिन ( मिट्टी ) मुरदों ( की लाशों पर ) से ( हट कर ) ज़मीन फट जायगी ( और यह ज़िन्दा होकर हिसाब किताब के लिये ) लपकेंगे—यह जमा कर लेना हमारे लिये ( एक ) सहल ( सी बात ) है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) यह लोग [जो] ( जो बातें तुम्हारी निस्बत) कहते हैं, हम ख़ूब जानते हैं और तुम इन पर (हाकिम) जाबिर ( तो हो ) नहीं ( कि बज़ोर इनको मुसल्मान करो । तुम्हारा काम ) तो ( यह है कि ) जो शख़्स हमारे अज़ाब से डरता है, उसको कुर्आन सुना सुना कर समझाते रहो ०

## सूरत–ज़ारियात

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ६० आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( हवायें ) जो ( बादलों को ) उड़ाये उड़ाये लिये फिरती ० फिर (मेंह का) बोझ उठाती ० फिर आहिस्ता-आहिस्ता चलती ० फिर एक (बड़ी ज़रूरी) चीज़ ( यानी बारिश ) को (रूए-ज़मीन पर) तक़सीम करती हैं ० (हमको) इन ( ही हवाओं ) की क़सम है कि तुम लोगों से जो ( क़यामत का ) वादा किया जाता है, बिल्कुल सच है ० और ( आमाल की ) जज़ा ( सज़ा ) ज़रूर होनी है ० आस्मान की क़सम, जिसमें (सितारों की गर्दिश के) रस्ते पड़े हुए हैं ० कि तुम लोग ( एक ऐसी ) बे ठिकाने बात में ( पड़े ) हो ० जिसकी वजह से वही गुमराह होता है, जो गुमराह ( अज़ली ) है ० (इन) अटकल के तुक्के चलाने वालों का नास जाय ० जो ग़फ़लत में भूले हुये हैं ० ( और ) पूछते हैं कि रोज़-जज़ा कब होगा ० (इनसे कहना चाहिये कि) उस दिन (होगा)—जब यह लोग (कबाब की तरह) आग पर सेंके जाएँगे ० और इनसे कहा जायगा कि (अब) अपनी (इस) सेंक के मज़े चक्खो ! यही तो वह ( अज़ाब ) है, जिसके लिये तुम जल्दी मचाया करते थे ० बेशक परहेज़गार ( बहिश्त के ) बाग़ों में होंगे और चश्मों में ०—

الْمَصِيْرُ ۝ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ط
ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ
وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ قف فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ
مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ۝

سورة الذّٰريٰت ستّون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝ فَالْجٰرِيٰتِ
يُسْرًا ۝ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۝ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۝
وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۝ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝ اِنَّكُمْ
لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ۝ قُتِلَ
الْخَرّٰصُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۝
يَسْــَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ۝ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ
يُفْتَنُوْنَ ۝ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ط هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ
بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ ٤

اٰخِذِيْنَ

---

जिस दिन ( उनकी क़ब्रों की ) भूमि फटेगी ( तो ) यह ( हिसाब किताब देने के स्थान पर जाकर एकत्रित होने के निमित्त ) जल्दी करेंगे । इस प्रकार ( मृतक लोगों को जीवन प्रदान करके ) एकत्रित करना हमारे लिये ( अति ) सरल है । ( हे पैग़म्बर ! ) जो कुछ यह ( लोग ) कहते हैं, वह हम ख़ूब जानते हैं । और आप ज़बर्दस्ती करने वाले तो हैं नहीं ( कि ) उन पर ( ज़बर्दस्ती करें ) । अतः ( आप का काम यह है कि ) जो मनुष्य हमारे अज़ाब से डरता है, उसे कुर्आन-द्वारा समझायें ( और शिक्षा दें ) ॥

## सूरत–ज़ारियात

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ६० आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

शपथ है उन पवनों की, जो ( वाष्प ) उड़ाती हैं । पुनः उन पवनों की, जो ( मेघों का ) बोझ उठाये फिरती हैं । पुनः उन पवनों की, जो धीरे धीरे चलती हैं । पुनः एक ( आवश्यक ) वस्तु ( अर्थात वर्षा ) को ( भूतल पर ) बांटती हैं कि तुम ( लोगों ) से ( क़यामत का ) जो वादा किया जाता है, वह ( पूर्णतया ) सत्य है और ( कर्मों का ) पुरस्कार ( तथा दण्ड ) अवश्य मिलने वाला है ॥

आकाश की शपथ ! जिसमें (सितारों के परिभ्रमण के) मार्ग हैं कि तुम ( लोग ) बे ठिकाने बात में ( पड़े ) हो । उससे वही फिरता ( और पथ-भ्रष्ट होता) है, जो (प्राचीन) पथ-भ्रष्ट है । अटकल से बातें बनाने वाले नाश हों, जो अचेतना में भूले हुये हैं । ( यह ) पूछते हैं कि प्रतिफल का दिन कब होगा ? ( इनसे कहना चाहिये कि ) उस दिन ( होगा )—जब यह ( लोग ) अग्नि पर रक्खे जावेंगे ( और उनसे कहा जावेगा कि ) अपने दण्ड का स्वाद चक्खो । यह वही ( अज़ाब ) है, जिसकी तुम जल्दी करते थे । ( यह तो दोज़ख़ियों का हाल है और संयमी ( जन्नत के ) बाग़ों और सोतों ( का पर्यटन करने ) में (तत्पर) होंगे—

खुदा दे और बन्दा ले। यह लोग इससे पहिले नेकोकार थे ० (इबादत में मशगूल रहने के सबब से ) रात को बहुतही कम सोते थे ० और सुबह सवेरे (अपने गुनाहों की) मॉफ़ी मांगा करते थे ० और उनके मालों में हिस्सा था-उसका, जो (मुंह फोड़ कर) मांगे और जो सूरत-सवाल हो ० और ( लोगो ! ) यक़ीन लाने वालों के लिये ज़मीन में ( कुद्रत-खुदा की बहुतेरी ही ) निशानियां हैं ० और खुद तुममें ( भी )-तो क्या तुमको सूझ नहीं पड़ता ० और तुम्हारी रोज़ी और जो तुमसे वादा किया जाता है-( वह सब ) आस्मान में है ० तो आस्मान व ज़मीन के पर्वर्दिगार की क़सम ! कि यह ( कुर्आन ) बरहक़ (कलाम-इलाही) है, जिस तरह कि तुम कलाम करते हो ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) इब्राहीम के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों ( यानी फ़रिश्तों ) की हिकायत भी तुम तक पहुंची है ० कि जब ( यह लोग ) उनके पास आये, तो ( आते ही ) सलामु-अलैक की। इब्राहीम ने जवाब-सलाम दिया ( और दिल में कहा कि यह ) लोग ( तो कुछ ) अजनबी ( से मालूम होते ) हैं ० फिर जल्दी से अपने घर जा (एक) मोटा ताज़ा बछड़ा ( यानी उसका गोश्त भुनवा कर मेहमानों के लिये ) लाये ० और उनके सामने रक्खा, तो ( उन्होंने तअम्मुल किया। इब्राहीम ने ) पूछा, आप लोग खाते क्यों नहीं ० ( इस पर भी उन्होंने खाने से इन्कार किया, तब ) तो इब्राहीम उनसे जी ही जी में डरे। उन्होंने ( इनकी यह हालत देखकर ) कहा कि आप ( किसी तरह का ) अन्देशा न करें और उनको एक लायक़ फ़र्ज़न्द ( यानी इस्हाक़ के पैदा होने ) की खुश-खबरी ( भी ) दी ० यह सुनकर इब्राहीम की बीवी ( सारा ) बोलती हुई आगे आ खड़ी हुईं—

ع

آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ
مُحْسِنِينَ ۝ كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ۝
وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝ وَفِي أَمْوَالِهِمْ
حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝ وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ
لِّلْمُوقِنِينَ ۝ وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝
وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝ فَوَرَبِّ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ
تَنطِقُونَ ۝ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ
الْمُكْرَمِينَ ۝ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ
قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ۝ فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ
فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ۝ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا
تَأْكُلُونَ ۝ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا
لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ۝ فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ

---

उनके पालन कर्त्ता ने उन्हें जो कुछ दिया है, उसे ले रहे होंगे। निस्सन्देह इससे पहिले ( सांसारिक जीवन में ) वह सुकर्मी थे। वह रात्रि को थोड़ी देर सोते थे और प्रातःकाल ( शीघ्र उठकर ) क्षमा मांगते थे। और उनकी सम्पत्ति में अंश था, उसका जो ( मुंह से ) मांगे और जो न मांगे ॥

और ( हे मनुष्यो ! ) निश्चय करने वालों के निमित्त पृथ्वी में ( खुदा की शक्ति के ) बहुतेरे चिन्ह ( विद्यमान ) हैं और ( स्वयं ) तुममें ( भी )। अतः क्या तुम ( उन चिन्हों को ) नहीं देखते ! और आकाश में तुम्हारी जीविका और वह ( सब कुछ ) है, जिसका तुमसे वादा किया जाता है। अतः आकाश ( जिसमें तुम्हारी जीविका है ) और पृथ्वी ( जो खुदा के चिन्हों से परिपूर्ण है, उस ) के पालन कर्त्ता की सौगन्ध ! कि यह (कुर्आन) सत्य ( और ) उसी प्रकार ( ठीक ) है, जिस प्रकार तुम बोलते हो। ( अर्थात जिस प्रकार तुम्हारे बोलने में कुछ सन्देह नहीं, इसी प्रकार कुर्आन में कोई सन्देह नहीं ) ॥

( खुदा की शक्ति का एक और दृष्टान्त शिक्षाप्रद है )-क्या ( हे पैग़म्बर ! ) इब्राहीम के आदरणीय पाहुनों की ( जो वास्तव में फ़रिश्ते थे ) कथा ( भी ) आप तक पहुंची ? जब यह ( अतिथि फ़रिश्ते ) उनके निकट आये, तो उन्होंने सलाम किया। ( इब्राहीम ने उत्तर में ) सलाम कहा ( और हृदय में विचार करने लगे कि यह ) लोग अनजान (से प्रतीत होते ) हैं। अतः वह जल्दी से घर में गये और एक गाय का बच्चा घी में भुना हुआ पाहुनों के सन्मुख लाकर रक्खा। ( वह लोग खाने से रुके, तो इब्राहीम ने ) कहा ( आप लोग ) खाते क्यों नहीं ? ( इस पर भी उन्होंने न खाया )। अब ( इब्राहीम ) उनसे मन में डरे। ( फ़रिश्तों ने ) कहा आप डरें नहीं। और उन्हें एक बुद्धिमान बालक ( अर्थात इस्हाक़ ) का मंगल-समाचार सुनाया। ( यह सुना ) तो उनकी पत्नी ( सारा ) बोलती हुई सन्मुख आई—

فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ
قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ
قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ قَالُوا إِنَّا
أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِنْ طِينٍ مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ
فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ
وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ
الْأَلِيمَ وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ
أَوْ مَجْنُونٌ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي
الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ
الرِّيحَ الْعَقِيمَ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ

और अपना मुंह पीट लिया और लगीं कहने (अव्वल तो) बुढ़िया (दूसरे) बाँझ-(मुझसे बेटा हो चुका) ० (फ़रिश्ते) बोले, तुम्हारे पर्वर्दिगार ने ऐसा ही फ़र्माया है (और) कुछ शक नहीं कि वह हिक्मत वाल (और हर चीज़ से) वाक़िफ़ है ० (इसके बाद इब्राहीम ने फ़रिश्तों से) पूछा कि ऐ फ़रिस्ताद:गान (बार्गाह-ख़ुदावन्दी!) फिर (यहां आने से) तुम्हारा क्या मतलब है ० वह बोले कि हमको गुनहगार लोगों (यानी क़ौम-लूत) की तरफ़ भेजा गया है ० कि उन पर खङ्गरों का पथराव बसाएँ ० कि यह (खङ्गर) तुम्हारे पर्वर्दिगार के यहाँ उन लोगों के लिये नाम-ज़द हो चुके हैं, जो (हद्द-फ़ितरत से) बढ़ गये हैं ०ग़रज़ (अन्जाम यह हुआ कि) उस बस्ती में जितने ईमान वाले लोग थे, उनको तो हमने (चुपके से) निकाल दिया ० और हमने उस (बस्ती) में मुसल्मानों के एक घर के सिवा (कि वह ख़ानदान-लूत के लोग थे, मुसलमानों का कोई और घर) पाया भी नहीं ० और (पथराव किये पीछे) हमने उस (बस्ती) में उन लोगों के लिये, जो अज़ाब-दर्दनाक से डरते हैं (इब्रत की) निशानी बाक़ी रक्खी (यानी उनके खँडर) ० और मूसा (के हालात) में भी (ख़ुदा की कुद्रत की बहुत सी निशानियां हैं)-जब हमने उनको सरीह मोजिज़े देकर फ़िर्औन की तरफ़ भेजा ० तो उसने अपने बल-बूते (के ग़र्रे में आकर) सर्ताबी की—और (मूसा की निस्बत) कहा कि (यह तो) जादूगर या दीवाना है ० तो हमने उसको और उसके लश्करों को (अज़ाब में) धर पकड़ा और उनको दरिया में लेजा पटका और उसने कामही ऐसा किया था कि जो सुने, थुड़ी थुड़ी करे ० और क़ौम-आद (के हलाक होने) में भी (कुद्रत—ख़ुदा की बहुतेरी निशानियां हैं)-जब हमने उन पर एक मनहूस आंधी चलाई ० जिस चीज़ पर से (होकर) गुज़रती—

---

उन्होंने अपने मुंह पर हाथ मारा और कहने लगीं (मैं तो) बुढ़िया (और) बांझ हूं-(मुझसे बेटा होगा! फ़रिश्तों ने सारा की ओर सम्बोधन करके कहा) आपके पालन कर्त्ता ने ऐसा ही कहा है। निस्सन्देह वह बड़ा बुद्धिमान तथा जानने वाला है। (यह सुनकर) इब्राहीम बोले हे फ़रिश्तो! (इसके अतिरिक्त और) तुम्हारा क्या उद्देश है? (अर्थात मुझको पुत्र का मंगल-समाचार सुनाने के अतिरिक्त और तुम किस लिये आये हो?)। उन्होंने (उत्तर में) कहा कि हम एक पापी जाति (अर्थात लूत की जाति) की ओर (भी) भेजे गये हैं, जिससे कि हम उन पर (उनके कुकर्मों के कारण) तुम्हारे पालनहारे के यहाँ के चिन्ह किये हुये रोड़े वर्षावें, जो सीमा से निकल जाने वालों (को दण्ड देने) के लिये (तय्यार किये गये) हैं ॥

सो ईमान वालों में से जो (गिने चुने कुछ लोग) उस (बस्ती) में (बसते) थे, उन्हें हमने (उस बस्ती से बाहर) निकाल लिया-(जिससे कि वह हमारे अज़ाब से सुरक्षित रहें)। और हमने उस (समस्त बस्ती) में मुसल्मानों के एक घर के अतिरिक्त (और कोई घर मुसल्मानों का) नहीं पाया। (तो हमने उस घर के लोगों से तो कह दिया कि तुम रात्रि के समय यहां से कहीं और चले जाओ) और (प्रातःकाल उस बस्ती के समस्त काफ़िरों पर अपना अज़ाब उतारा और) जो लोग (हमारे) दुखदायी अज़ाब से डरते (और सत्य बात समझने की योग्यता रखते) हैं, उनके लिये हमने उस (बस्ती) में (शिक्षा प्राप्त करने का) एक (बहुत बड़ा) चिन्ह छोड़ दिया ॥

और (लूत की जाति की तरह) मूसा (की जाति) के वृतान्त में भी (हर बुद्धिमान मनुष्य के लिये नसीहत तथा) शिक्षा (विद्यमान) है। (लोगो! उस समय का स्मरण करो) जिस समय हमने मूसा को (रसूल बनाकर और उनके रसूल होने को सिद्ध करने के लिये) एक खुला मोजिज़ा देकर फ़िर्औन के पास भेजा था—तो उसने अपने (धन दौलत तथा) बल (शक्ति के घमंड) पर (उनको झुठलाया और उन पर ईमान लाने से) मुंह मोड़ा। और (अपने दरबारियों से) कहने लगा (कि यह) जादूगर है या दीवाना है। (अतः जब उसकी उद्दण्डता सीमा पार हो गई) तो हमने उसको और उसकी सेना को पकड़ लिया और उन (समस्त दुराचारियों) को दरिया में डाल दिया (और उसमें डुबो दिया) और (डूबते समय) फ़िर्औन (बहुत ही) बुरी दशा में था। और (इसी प्रकार) आद (की जाति) के वृतान्त में भी (नसीहत तथा) शिक्षा है। (लोगो! उस समय को याद करो) जिस समय हमने उन (लोगों) पर (उनके कुकर्मों के दंड में एक विषैली तथा) अशुभ वायु चलाई कि जिस वस्तु पर गुज़रती थी—

الَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ۝ وَفِىْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ
تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ۝ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ
الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ فَمَا اسْتَطَاعُوْا
مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ
مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ وَالسَّمَاۗءَ
بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ۝ وَالْاَرْضَ
فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ۝ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ
خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ فَفِرُّوْٓا
اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَلَا
تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ۝ كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝ اَتَوَاصَوْا
بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ

उसको बोसीदा हड्डी की तरह ( चूरा ) किये बिदून न छोड़ती० और ( क़ौम ) समूद ( के हलाक होने ) में भी ( कुद्रत-ख़ुदा की बहुतेरी निशानियाँ हैं ) कि जब उनसे कह दिया गया था कि एक वक़्त ख़ास तक ( दुनिया में ) रसो बसो ० मगर उन्होंने अपने पर्वर्दिगार के हुक्म से सर्ताबी की, तो उनको उनके देखते देखते एक ज़ोर की कड़क ने आ लिया० तो ( अज़ाब के मुक़ाबले में ) न ठहर सके—( बलिक मर कर रह गये ) और न ( हमसे ) बदला ही ले सके ० और ( इनसे ) पहिले ( हम ) क़ौम नूह को ( हलाक कर चुके थे )-इसमें शक नहीं कि वह ( भी बड़े ही ) ना फ़र्मान लोग थे ० और हमने आस्मान को अपने बांह—बल से बनाया और हम ( बड़ी ) वसीअ कुद्रत रखते हैं ० और हमही ने ज़मीन को बिछाया, तो ( हम कैसे ) अच्छे बिछाने वाले हैं ० और तमाम चीज़ें हमने दो क़िस्म की बनाई, ताकि तुम ( लोग इन्तिज़ाम-दुनिया में ) ग़ौर करो ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से कहदो कि ) अल्लाह ही की तरफ़ भागो—( यानी उसीकी पनाह लो ! ) मैं उसकी तरफ़ से तुमको (उसके अज़ाब से) साफ़ तौर पर डराता हूं ० और ख़ुदा के साथ कोई दूसरा माबूद न ठहराओ। मैं उसकी तरफ़ से तुमको ( उसके अज़ाब से ) साफ़ तौर पर डराता हूं ० इसी तरह जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, जब जब उनके पास कोई पैग़म्बर आया, उन्होंने ( उसको ) जादूगर या दीवाना ही बताया है ० क्या लोग एक दूसरे को इस बात की वसीयत करते चले आये हैं, बलिक ( अस्ल बात यह है कि ) यह ( ख़ुद ही ) सर्कश लोग हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इनकी ( मुतलक़ ) पर्वा न करो—

उसको सूखी हुई घास की तरह ( सूखी और छिन्न भिन्न ) किये बिना न छोड़ती थी। और समूद ( की जाति के वृतान्त ) में भी शिक्षा ( तथा नसीहत ) है। ( लोगो ! उस समय का स्मरण करो ) जिस समय ( उनकी उद्दण्डता तथा धूर्तता सीमा पार हो गई थी और) उनसे कह दिया गया था कि तुम एक (नियत) समय तक ( और सांसारिक ) लाभ उठालो ! (यदि तुम्हारे कर्म यही रहे,तो ख़ूब समझ लो कि तुम पर हमारा अज़ाब आ जावेगा )—परन्तु उन्होंने अपने पालनहारे की आज्ञा से ( सर्वदा विमुखता तथा ) उद्दण्डता ( ही ) की, अन्त में एक ( ज़बर्दस्त ) कड़क ने उनको उनके देखते देखते पकड़ लिया। और ( वह जिस दशा में बैठे थे, उसी दशा में बैठे के बैठे रह गये )-खड़े भी न हो सके और न ( हमसे कुछ ) बदला ही ले सके ॥

और ( इसी प्रकार हमने ) उस ( समूद की जाति ) से पहिले नूह की जाति को भी नष्ट ( भ्रष्ट ) कर दिया (और संसार के लोगों के लिये शिक्षा का चिन्ह बना दिया ) था। निस्सन्देह वह भी ( बड़े उद्दण्ड तथा ) अवज्ञाकारी ( और दुराचारी ) लोग थे। और ( क्या नूह की जाति और क्या समूद की जाति, किसी को इतना साहस न हुआ कि हमारे बल शक्ति का मुक़ाबला कर सके और अपने आप को हमारे अज़ाब से बचा सके। इस विस्तृत ) आकाश को ( भी ) हम ही ने ( अपनी शक्ति के ) हाथों से बनाया है और ( इसमें चाँद तथा तारों का का बाग़ हम ही ने लगाया है )। निस्सन्देह हम बड़ी शक्ति ( तथा बड़े अधिकार ) वाले हैं। और ( इस चौड़ी चकली ) भूमि को भी हम ही ने ( बिछौने की तरह ) बिछाया है ( और उसमें हम ही ने मनुष्यों के लिये अनगिनत तथा अपार लाभ गुप्त तथा प्रगट रक्खे हैं )। सो हम सर्वोत्तम बिछाने वाले ( और लोगों को लाभ पहुंचाने वाले ) हैं। और हमने हर वस्तु को जोड़े जोड़े (अर्थात् नर मादा) बनाया है, जिससे कि ( हे मनुष्यो ! ) तुम ( हमारी शक्ति को देखकर ) शिक्षा ग्रहण करो ॥

अतः ( हे सांसारिक लोगो ! ) तुम ( समस्त असत्य पूज्यों से मुंह फेर लो और एक ) अल्लाह की ओर दौड़ो। निस्सन्देह मैं तुम को उसके अज़ाब से खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूं। और ( तुम्हें समझाने वाला हूं कि ) तुम अल्लाह के साथ कदापि ( किसी ) दूसरे को पूज्य न ठहराओ। निस्सन्देह ( परिणाम की दृष्टि से यह तुम्हारे हक़ में बहुत बुरी बात है। देखो ! ) मैं तुम्हें उस ( सच्चे पूज्य के अज़ाब) से खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूं। उनसे पहिले जो लोग ( अर्थात मुश्रिक तथा काफ़िर लोग ) हो चुके हैं; उनके पास (भी) कोई ( हमारा ) रसूल ऐसा नहीं आया, जिसको उन्होंने इसी प्रकार ( उसके मोजिज़े देख कर ) जादूगर अथवा दीवाना न कहा हो। ( हे रसूल ! ) क्या यह लोग ( सर्वदा से ) एक दूसरे को ( इस प्रकार की ) नसीहत ( तथा शिक्षा ) करते चले आये हैं ( कि जब कोई रसूल तुम्हारे पास आवे, तो उसे जादूगर वा दीवाना कहना और उसको झुठलाना ? नहीं, नसीहत नहीं करते आये ) बरन् ( सत्य बात यह है कि ) यह ( सबके सब ) उद्दण्ड हैं। तो ( हे पैग़म्बर ! ) तुम ( अब ) इनकी ओर ध्यान न दो। इसलिये कि ( तुमने अपने कर्तव्य का पालन किया। अब यह मानें अथवा न मानें )। तुम पर कोई दोष नहीं है ॥

क्योंकि ( इनके कुफ़्र व इन्कार का ) तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं ० हां ! समझाते रहो कि समझाना ईमान वालों को फ़ायदा बख़्शता है० और हमने जिन्नों और आदमियों को इसी ग़रज़ से पैदा किया है कि हमारी इबादत करें ० हम उनसे कुछ रोज़ी के तो ख़्वाहां हैं नहीं और न इस के ख़्वाहाँ हैं कि हमको खिलायें ( पिलायें ) ० अल्लाह ख़ुद बड़ा रोज़ी देने वाला, क़ूवत वाला ज़बरदस्त है ० तो जिस तरह इन ( लोगों ) के हम मशरबों ( यानी पहिली उम्मतों ) के ( लिये ) पैमाने ( मुक़र्रर ) थे-( इन ) ज़ालिमों के ( भी ) पैमाने ( मुक़र्रर ) हैं ( और उनके भरने की देर है ) तो हमसे अज़ाब की जल्दी न करें ० ग़रज़ काफ़िरों ( के हाल ) पर उन के उस रोज़ ( बद ) के एतिबार से-जिसका इनसे वादा किया जाता है, बड़ा अफ़सोस है ०

## सूरत—तूर

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ४९ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! हमको ) तूर ( पहाड़ ) की क़सम ० और ( नीज़ ) किताब ( लौह-महफ़ूज़ ) की ० जो ( बड़े ) चौड़े-चकले काग़ज़ों पर लिखी हुई है ० और ( नीज़ फ़रिश्तों के आसमानी काबे ) बैतुल-मामूर की ० और ( नीज़ आसमान की ) ऊँची छत की ० और ( नीज़ ) जोश मारने वाले समन्दर की ० कि तुम्हारे पर्वर्दिगार का अज़ाब ( काफ़िरों पर ) ज़रूर नाज़िल होकर रहेगा ० किसी की मजाल नहीं, कि उसको टाल सके ० जिस दिन आसमान ( समन्दर के पानी की तरह ) लहरें मारने लगे ० और पहाड़ उड़े उड़े फिरें ० तो झुटलाने वाले—

أَنْتَ بِمَلُومٍ ● وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ
وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ●
مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعِمُونِ
إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ●
فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ
فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ● فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
يَوْمِهِمُ الَّذِي سورة الطور مكية يُوعَدُونَ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ●
وَالطُّورِ ● وَكِتَابٍ مَسْطُورٍ ● فِي رَقٍّ
مَنْشُورٍ ● وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ● وَالسَّقْفِ
الْمَرْفُوعِ ● وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ● إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ
لَوَاقِعٌ ● مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ● يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا
وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ● فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ

ع

الذين

और ( हां ! समझाने बुझाने से निश्चिन्त न हो जाओ । तुमसे जहाँ तक हो सके ) समझाते रहो ! कि समझाना ( यदि उनको नहीं, तो ) ईमान वालों को ( और सत्य बात के समझने की योग्यता रखने वालों को तो अवश्य ) लाभ देता है । और हमने तो जिन्नों तथा मनुष्यों को केवल इसी लिये उत्पन्न किया है कि वह हमारी ( पूजा तथा ) उपासना करें—( अन्यथा ) हम ( तो ) न ( अपनी सृष्टि को ) कुछ जीविका पहुंचाने की उनसे इच्छा करते हैं और न हमारी यह अभिलाषा है कि वह हमको ( कुछ ) खिलावें । निस्सन्देह अल्लाह ही है ( समस्त संसार को ) जीविका देने वाला ( और समस्त लोगों पर ) शक्ति ( तथा अधिकार रखने ) वाला ( और सबसे अधिक ) सुदृढ़ ( तथा बलवान् । उसको न अपने लिये किसी से सहायता लेने की आवश्यकता है और न अपनी सृष्टि के लिये ) ॥

अतः ( इन विद्यमान ) अत्याचार ( तथा उद्दण्डता ) करने वालों के लिये भी ( हमारे अज़ाब का ) एक अंश ( हमारे यहां नियत ) है, जैसे कि उनके ( पहिले ) सहमत लोगों का अंश ( नियत ) था । सो यह (उस अंश के मिलने की ) हमसे शीघ्रता न करें—( वह अपने नियत समय पर उन्हें अवश्य मिलेगा । निस्सन्देह इन ) कुफ़्र ( शिर्क तथा अत्याचार और अनीति ) करने वालों के लिये उस ( भयङ्कर ) दिन ( के उपस्थित होने ) से ( बहुत बड़ी ) ख़राबी ( प्रगट ) होगी, जिसका कि उनसे वादा किया जा रहा है ॥

## सूरत–तूर

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ४८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( हे पग़म्बर ! ) तूर पर्वत की सौगन्ध ! ( जिस पर चढ़कर मूसा ख़ुदा से सम्भाषण किया करते थे ) और लिखी हुई पुस्तक की शपथ ! जो खुले हुये पृष्ठों में लिखी हुई है और बैतुल-मामूर (अर्थात फ़रिश्तों के पूजा-भवन)-की सौगन्ध ! और ऊंची छत ( अर्थात आकाश ) की शपथ ! और उफनाने वाले समुद्र की शपथ ! निस्सन्देह तुम्हारे पालनहारे का अज़ाब ( काफ़िरों पर ) अवश्य होने वाला है । ( पृथ्वी आकाश में ) कोई ऐसा ( बल तथा शक्ति वाला ) नहीं, जो उसको टाल दे । ( और वह अज़ाब उस दिन आवेगा ) जिस दिन कि ( समस्त संसार छिन्न भिन्न हो जावेगा ) । आकाश कांपने लगेगा और पर्वत ( अपने स्थान से ) टल जायँगे । अतः उस दिन उन झुठलाने वालों के लिये ( बड़ी ) दुर्दशा है—

الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝ يَوْمَ يُدَعُّونَ
إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم
بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا
تُبْصِرُونَ ۝ اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا
سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ۝ فَاكِهِينَ بِمَا
آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ وَزَوَّجْنَاهُم
بِحُورٍ عِينٍ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم
بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ
عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۝
وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝

जो बकवास में पड़े खेल रहे हैं, उस दिन उनकी बड़ी ख़राबा है ० जबकि उन लोगों को आतिश-दोज़ख़ की तरफ़ ज़बरदस्ती धक्के दे देकर ले जाएँगे ० ( तो इनसे कहा जायगा कि ) यही वह दोज़ख़ है, जिसे तुम झुटलाया करते थे० तो क्या यह ( भी ) नज़र--बन्दी है ? या तुमको ( अब भी ) नहीं सूझ पडता ० इसमें घुसो ! फिर सब्र करो ! या बेसब्री करो, तुम्हारे हक़ में ( दोनों बातें ) बराबर। जैसे अमल तुम दुनिया में करते रहे, तुमको उनही का बदला दिया जायगा ० ( रहे ) पर्हेज़गार—( वह ) बिला शुबहा ( बहिश्त के ) बाग़ों और ख़ुश-हालियों में ० अपने पर्वर्दिगार की दी हुई ( नेअमतों ) के मज़े उड़ा रहे होंगे और उनका पर्वर्दिगार उन को अज़ाब-दोज़ख़ से ( भी बाल-बाल ) बचाये रक्खेगा ० ( और उनकी इजाज़त होगी कि दुनिया में ) जो तुम नेक अमल करते रहे, उसके सिले में ( आराम से ) तख़्तों पर-जो बराबर बिछाये गये हैं,तकिये लगा लगा कर (बैठो ! और) खाओ ! पिओ ! ( और तुमको ) रचे पचे० (इन बातों के अलावा ) हम बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों को उनकी ज़ौजियत में देंगे ० और जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद ईमान के साथ (नेक अमलों में ) उनकी पैरवी करती रही-( गो अमल में उनसे किसी क़दर कसूर भी हुआ हो, ताहम जन्नतियों के पास-ख़ातिर से ) उनकी औलाद को ( भी जन्नत में ) उनके साथ लेजा शामिल करेंगे और जन्नतियों के आमाल ( के सिले ) में से कुछ भी कम नहीं करेंगे (और) हर शख़्स अपने अमल के बदले में गिरवी है ० और जिस मेवे और गोश्त को जन्नतियों का जी चाहेगा, हम उनके लिये उसकी रेल-पेल कर देंगे ०—

जो ( सत्य की उपासना से भागते हैं और रात दिन असत्य उपासना की ) बक बक ( तथा व्यर्थ बातों ) में खेलते रहते हैं। (यही वह दिन होगा ) जिस दिन कि उनको दोज़ख़ की अग्नि की ओर ( अत्यन्त अपमान के साथ ) धक्के दे देकर ले जाया जायगा। (और कहा जावेगा कि देखो ! ) यही वह दोज़ख़ है, जिसे तुम ( दुनिया में ) झुठलाते थे (और) पुनः (उनसे पूछा जायगा कि बताओ ! ) यह जादू है ? ( वा वास्तव में दोज़ख़ ? ) अथवा तुमको ( अब भी ) दिखाई नहीं देता ॥

( और कहा जायगा कि ) इसमें प्रवेश करो ! ( और अब ) तुम सन्तोष करो वा असन्तोष ( करो—आज ) तुम्हारे लिये दोनों बातें बराबर हैं। निस्सन्देह जो कुछ तुम ( संसार में ) करते थे ( आज ) तुमको उसीका ( पूरा २ ) दंड दिया जावेगा ( उससे तुमको छुटकारा मिलना असम्भव है । हाँ ! ) निस्सन्देह जो संयमी ( तथा सदाचारी ) हैं, वह जन्नतों में ( सुख से रहेंगे ) और ( वहां बड़े ) आनन्द में होंगे। और जो कुछ उनके पालनहारे ने उन्हें प्रदान किया होगा, वह उससे ( अतिशय ) प्रसन्न ( तथा प्रफुल्लित ) होंगे। और ( इसमें तनिक सन्देह नहीं कि उनकी नेकियों के बदले ) उनका पालन कर्त्ता दोज़ख़ के अज़ाब से उनको बचा लेगा ॥

( और उनसे कहेगा कि ) तुम जो ( शुभ ) कर्म ( संसार में ) करते थे, उसके बदले ( यहां चैन करो। ख़ूब ) मज़े से खाओ और पियो। ( और ) वह बराबर ( बराबर ) बिछे हुये ( जड़ाऊ ) सिंहासनों पर तकिया लगाये ( बैठे ) होंगे। और हम ( उनके आनन्द मंगल को बढ़ाने के लिये बड़े ) बड़े ( सुन्दर ) नेत्रों वाली हूरों के साथ उनका विवाह कर देंगे। और जो लोग स्वयं भी ( अल्लाह रसूल पर ) ईमान लाये और उनकी सन्तान ने भी उनका अनुगमन किया-( तो ) हम ( जन्नत में ) उनकी सन्तान को भी उनसे मिला देंगे और उनके कर्मों ( के प्रतिफल ) में से किंचित मात्र भी कम न करेंगे। ( जितनी उनकी नेकी होगी,उतने उनके पद ऊँचे होंगे। निस्सन्देह ) प्रत्येक मनुष्य अपने किये हुये कर्म पर गिरवी है—( जैसा करता है, वैसा भरता है। इस लोक में भी और परलोक में भी )। और हम उन्हें ( भांति भांति के ) मेवे और ( ताज़ा ताज़ा ) मांस, जिस प्रकार का वह चाहेंगे, उन्हें बराबर देंगे ॥

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ۝
وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ
مَّكْنُونٌ ۝ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝
قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۝
فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ۝
إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۝
فَذَكِّرْ فَمَا أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا
مَجْنُونٍ ۝ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ
الْمَنُونِ ۝ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ۝
أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُم بِهَٰذَا ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۝
أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ۝ فَلْيَأْتُوا
بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ۝ أَمْ خُلِقُوا
مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۝ أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ

( मज़ाक़ के तौर पर ) वह आपस में वहां जाम ( शराब ) की छीना झपटी भी करेंगे । उस ( के नशे ) में न ( तो उनको ) बकवास लगेगी और न ( उनसे ) कोई नाशायस्ता हरकत ( सर्ज़द ) होगी ० और ( ऐसे ख़ूबसूरत ) लड़के ( उनकी ख़िदमत के लिये ) उनके पास आमद व शुद करेंगे कि गोया वह एहतियात से रक्खे हुये मोती हैं ० और एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर आपस में बातें करेंगे ० ( बाज़ ) कहेंगे कि ( भाई ! ) हम ( इससे ) पहिले अपने घर ( अन्जामकार से बहुत ही ) डरा करते थे ० तो ख़ुदा ने हम पर ( बड़ा हो ) फ़ज़्ल किया और हमको ( दोज़ख़ की ) लू के अज़ाब से बचा लिया ० ( इससे ) पहिले हम उससे दुआयें मांगा करते थे । बेशक वह ( बड़ा ) मुहसिन ( और ) मेहर्बान है० तो ( ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों को ) नसीहत किये जावो कि अपने पर्वर्दिगार के फ़ज़्ल से न तो तुम आमिल हो ( कि तुमने अपने मुवक्किल लगा रक्खे हैं और वह आस्मानी ख़बरें तुमको पहुंचा देते हैं ) और न मजनून हो ० क्या ( लोग तुम्हारी निस्बत ) कहते हैं कि ( यह ) शाइर है ( और ) हम इसके बारे में ज़माने की गर्दिश का इन्तिज़ार कर रहे हैं ० ( तुम इनसे ) कहो कि ( बहुत अच्छा ! ) तुम ( भी ) इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूं ० क्या इनकी अक़्लें इनको यह ( बातें ) सिखाती हैं या यह लोग ( अपनी ज़ात से ) शरीर हैं ० या कहते हैं कि इस ( शख़्स ) ने क़ुर्आन अज़-ख़ुद बना लिया है—( यह तो इनके अपने मुंह की कहन है )–बल्कि अस्ल बात यह है कि यह ईमान ही नहीं लाना चाहते ० सो अगर ( अपने दावे में ) सच्चे हैं, तो इसी तरह का कलाम ( यह भी बना कर ) ले आयें० क्या वे किसी के पैदा किये ( यह आप ) पैदा हो गये हैं ? या यही (मख़्लूक़ात को) पैदा किया करते हैं ० या इन्होंने आस्मानों को–

---

( और ) वह वहाँ ( हंसी की रीति पर ) मदिरा के प्याले एक दूसरे से छीनेंगे । ( और वहां उन्हें मदिरा ऐसी स्वच्छ तथा पवित्र पीने के लिये दी जावेगी कि ) न उसमें किसी प्रकार की बकवास होगी और न कोई पाप की बात । और उनके ( काम काज के लिये उनके ) पास ग़िलमान चक्कर लगावेंगे, जो विशेषतः इन्हीं के लिये होंगे । ( और वह ऐसे विदित होंगे कि ) मानो वह ( सुन्दर ) ग़िलाफ़ में लिपटे हुये ( चमकदार ) मोती हैं ( अर्थात मोतियों की तरह इन सेवकों का प्रगट-गुप्त पवित्र होगा ) । और ( जन्नती परस्पर ) एक दूसरे की ओर मुंह करके सवाल ( जवाब तथा वार्त्तालाप करेंगे और ) कहेंगे—हम इस ( जीवन ) से पहिले अपने ( साँसारिक ) घरों में ( हर समय ख़ुदा के अज़ाब से ) डरते रहते थे । तो अल्लाह ने हम पर उपकार किया । और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया । निस्सन्देह हम उसे पहिले ही से पुकारते ( अर्थात उससे अपनी मुक्ति की प्रार्थना किया करते ) थे । ( सो उसने हमारी प्रार्थना स्वीकार करली और हमें क्षमा दे दिया ) । निस्सन्देह वही है ( सबके साथ ) भलाई करने वाला ( और सबकी दशा पर ) कृपा करने वाला । अतः ( हे रसूल ! ) तुम ( भी हर दशा में अपने पालनहारे पर भरोसा रक्खो और अपने अनुगामियों को उनका भला बुरा बताते और अपने ख़ुदा के आदेश ) समझाते रहो, क्योंकि ( यह तो तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य है ) । तुम तो अपने ख़ुदा की कृपा ( तथा अनुग्रह ) से ( उसके रसूल हो ) । न जादूगर हो और न दीवाने हो ॥

क्या यह ( क़ाफ़िर तथा मुश्रिक लोग तुम्हारे विषय में यह ) कहते हैं कि यह कवि हैं–( रसूल नहीं हैं और यह भी कहते हैं कि ) हम उनके लिये मृत्यु-काल के प्रतीक्षक हैं—(तो हे पैग़म्बर! ) तुम ( उनसे ) कहदो कि तुम (अवश्य) प्रतीक्षा करो । निस्सन्देह तुम्हारे साथ में भी प्रतीक्षा कर रहा हूं । ( देखें समय की आपत्तियां तुम्हें नष्ट करती हैं वा मुझे । अन्त तुम्हारा बिगड़ता है वा मेरा । हे रसूल ! ) क्या उन्हें उनकी ( भोंडी ) बुद्धियां यह ( मूर्खता ) सिखाती हैं अथवा यह उद्दण्ड लोग हैं ( और उद्दण्डता के कारण तुम्हारा यह अपमान तथा अनादर करते हैं । हे पैग़म्बर ! ) क्या ( तुम्हारे बारे में यह लोग यह ) कहते हैं कि यह स्वयं क़ुर्आन बनाकर लाये हैं ( क़ुर्आन ख़ुदा की ओर से नहीं आया, तो यह बात कदापि सत्य नहीं है )–वरन यह लोग ( केवल इसलिये इसपर ) ईमान नहीं लाते ( कि यह असत्य पूजा पर मोहित हो गये हैं और प्रत्येक सत्य बात इन्हें बुरी लगती है ) ॥

( और ) यदि ( मान लो कि ) यह ( अपने दावे में ) सच्चे हैं, तो ( उनको भी ) इसी प्रकार की कोई वाणी ( बनाकर ) ले आनी चाहिये–( क्योंकि इनको अरबी भाषा जानने का बड़ा घमण्ड है । यह अपना जन्म दाता भी ख़ुदा को मानते हैं ) वा यह ( अपने आप ) बिना किसी सृष्टि कर्त्ता ही के उत्पन्न कर दिये गये हैं ? अथवा यही ( स्वयं अपने ) सृष्टि कर्त्ता हैं ? ( अच्छा ! यदि यह अपने सृष्टि कर्त्ता आप ही हैं, तो ) क्या पृथ्वी तथा आकाशों को भी इन्हीं ही ने बनाया है ? ( नहीं, यह क्या किसी वस्तु को बना सकते हैं )—

وَالْأَرْضَ بَلْ لَا يُوقِنُونَ ۝ أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ
رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ
فِيهِ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝ أَمْ لَهُ
الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ۝ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ
مِنْ مَغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ۝ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ
يَكْتُبُونَ ۝ أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا فَالَّذِينَ كَفَرُوا
هُمُ الْمَكِيدُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَإِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ
سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ۝ فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ
يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ۝ يَوْمَ لَا
يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ۝
وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ

और ज़मीन को पैदा किया है ? ( इनका तो क्या मक़दूर था ) मगर यूँ ( कहो कि यह लोग ख़ुदा पर ) यक़ीन ही नहीं लाना चाहते ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या तुम्हारे पर्वर्दिगार ( की रहमत ) के ख़ज़ाने इनही के क़ब्ज़े में हैं ? या यह (कहीं के) हाकिम हैं० या इनके पास कोई सीढ़ी है कि उस पर (चढ़ कर आस्मान की बातें) सुन आया करते हैं ? सो अगर इन में से कोई (आस्मान की बातें) सुन आया करता हो, तो वह कोई (साफ़ व) सरीह सनद पेश करे ० क्या ख़ुदा के लिये बेटियाँ और तुम लोगों के लिये बेटे ० या ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम इनसे (तब्लीग़—रिसालत को ) कुछ मज़दूरी तलब करते हो कि यह ( उस ) चट्टी ( के बोझ ) से दबे जाते हैं० या इनके पास (इल्म) ग़ैब है ( कि इनसे कहा जाय )–तो यह (उसको बे कम व कास्त) लिख दें ० या इनका इरादा कुछ धोका देने का है–तो ( यह ) काफ़िर आप ही धोके में हैं ० या ख़ुदा के सिवा इनका कोई ( और ) माबूद है–(तो) अल्लाह ( की ज़ात ) इनके शिर्क से पाक है ० और अगर कोई आस्मानी टुकड़ा गिरता हुआ देखें–( तब भी ख़ुदा के अज़ाब से न डरें, बल्कि ) कहने लगें ( क्या हुआ ! यह भी एक क़िस्म का ) बादल है। जम कर सख़्त हो गया है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इनको ( इनही की हालत पर ) रहने दो। यहाँ तक कि वह दिन इनके सामने आ मौजूद हो, जबकि ( मारे सदमे के ) इनको ग़श आ जाए ० ( और ) उस दिन इनके मक्र ( व फ़रेब ) इनके कुछ भी काम न आएँ और न ( कहीं से ) इनको मदद मिले ० और ( इन ) ज़ालिमों को अज़ाब-क़यामत के अलावा ( दुनिया में और भी ) अज़ाब ( होने वाला ) है,मगर इनमें से अक्सर को मालूम नहीं० और (ऐ पैग़म्बर !) अपने पर्वर्दिगार के हुक्म के इन्तिज़ार में सब्र से बैठे रहो कि तुम—

---

वरन् यह तो ( बड़े ही अज्ञान तथा दुराचारी हैं। केवल अपनी अज्ञानता के कारण हमारे सृष्टि कर्त्ता होने का ) विश्वास नहीं करते। ( अच्छा यदि यह अज्ञान तथा मूर्ख नहीं हैं, तो हे रसूल ! ) क्या इनके पास तुम्हारे पालनहारे के ( ज्ञान तथा कृपा के ) ख़ज़ाने हैं? अथवा यह ( लोक परलोक के ) दारोग़ा हैं--( जो इस प्रकार तुम्हारे सम्बन्ध में और हमारे पवित्र कलाम के सम्बन्ध में बातें बनाते हैं )। अथवा उनके पास ( आसमान पर चढ़ने की ) कोई सीढ़ी है ( जिसके द्वारा यह वहां की बातें ) सुन आते हैं । (यदि ऐसा है ) तो उनमें जो (वहाँ की बातें) सुनता है, उसे कोई खुला चिन्ह उपस्थित करना चाहिये (जिससे कि उसकी बातों का सबको निश्चय होजाय)॥

( मूर्खो ! ) क्या ( तुम्हारे निकट ) ख़ुदा के लिये पुत्रियां हैं और तुम्हारे लिये पुत्र हैं ? (यद्यपि तुम अपनी पुत्रियों को ऐसी बुरी समझते हो कि ज़िन्दा गाड़ देते हो । हे पैग़म्बर ! आख़िर इनके सत्य बात न मानने का कारण क्या है ) क्या तुम उनसे ( धर्म-प्रचार का ) कुछ बदला चाहते हो कि वह ( उसके ) दण्ड से दबे जाते हैं। ( हे पैग़म्बर ! यह लोग जो क़यामत का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि अव्वल तो क़यामत होगी नहीं और यदि हुई भी, तो हम वहां भी आनन्द करेंगे—तो ) क्या इनके पास गुप्त-विद्या है कि यह ( उसे ) लिख लेते हैं ( जिससे उन्हें क़यामत के आनन्द का हाल प्रगट हो गया )। क्या ( हे पैग़म्बर ! ) यह तुम्हारे साथ कुछ दांव करना चाहते हैं, तो ( समझ लेना चाहिये कि ) जो इन्कार करने वाले हैं, वह अपने दाव में आप फँसेंगे। ( हमारे रसूल का वह कुछ न बिगाड़ सकेंगे ) । क्या अल्लाह के अतिरिक्त उनका पूज्य ( कोई और ) है ? ( निस्सन्देह ) अल्लाह उनके शिर्क ( तथा कुफ़्र ) से पवित्र है। ( हे रसूल ! उनकी दुराग्रह तथा हठ धर्मी की नौबत यहां तक पहुंच चुकी है कि) यदि आस्मान के टुकड़े को भी ( यह अपने ऊपर ) गिरता हुआ देखें ( जिसके गिरने की यह इस समय इच्छा कर रहे हैं ) जब भी (अज़ाब का निश्चय न करें और ) कहें कि यह ( तो ) पर्त-पर्त बादल है॥

तो तुम उनको ( उनकी दशा पर ) छोड़ दो। यहां तक कि वह अपने उस दिन को ( अपनी आँखों से ) देख लें, जिस दिन ( रंज, शोक तथा बेचैनी और चिन्ता के कारण ) मूर्छित हो जावेंगे। उस दिन उनका छल ( कपट ) उनके कुछ काम न आवेगा और न उनको ( कहीं से कुछ ) सहायता मिलेगी। और उन अत्याचार ( तथा उद्दण्डता ) करने वालों के लिये इस ( पारलौकिक अज़ाब ) के अतिरिक्त ( उसको संसार ही में ) और अज़ाब भी है ( जैसे अकालादि )–परन्तु उनमें से अधिक लोग ( उसको हमारा अज़ाब ) नहीं समझते। और ( उसको कुसमय विचार करते हैं—तो हे रसूल ! ) तुम अपने पालनहारे ( के अज़ाब) की आज्ञा की प्रतीक्षा में सन्तोष ( तथा धैर्य ) से बैठे रहो और उनकी उद्दण्डताओं तथा अनीतियों से किंचित मात्र भय न खाओ ) कि तुम—

بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۙ
وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ۧ

سُوْرَةُ النَّجْمِ اِثْنَتَانِ وَسِتُّوْنَ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۙ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا
غَوٰى ۚ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا
وَحْيٌ يُّوْحٰى ۙ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۙ ذُوْ مِرَّةٍ ۭ
فَاسْتَوٰى ۙ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۭ ثُمَّ دَنَا
فَتَدَلّٰى ۙ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۚ
فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۭ مَا كَذَبَ
الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۚ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۚ
وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۙ عِنْدَ سِدْرَةِ
الْمُنْتَهٰى ۚ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۭ اِذْ يَغْشَى
السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۙ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ۚ

ع

हमारी निगरानी ( और हिफ़ाज़त ) में हो और जिस वक़्त ( सो कर ) उठा करो, अपने पर्वर्दिगार की हम्द ( व सना ) के साथ ( उसकी ) तस्बीह ( व तक़्दीस ) किया करो ० और रात के एक हिस्से में भी उसकी तस्बीह ( व तक़्दीस ) किया करो और सितारों के (ग़ुरूब हुये) पीछे (भी)०

## सूरत—नज्म

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ६२ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० ( लोगो ! हमको शिहाब ) सितारे की क़सम,जब वह ( आस्मान से ) टूटता है ० कि तुम्हारे रफ़ीक़ ( मुहम्मद ) न तो ( राह-रास्त से ) भटके और न बहके ० और न अपनी ख़्वाहिश-नफ़्सानी से बातें बनाते हैं ० ( बल्कि ) यह ( क़ुर्आन जो पढ़ कर सुनाते हैं )-वही ( आस्मानी ) है, जो इन पर नाज़िल होती है ० ( और ) इनको ( जिब्रील फ़रिश्ता ) तालीम करता है । जिसकी ( रूहानी ) ताक़तें ( बड़ी ) ज़बरदस्त हैं ० ( और ) उसकी ( जिस्मानी ) क़ूवत ( भी बड़ी ) ज़बरदस्त है कि जिस वक़्त वह ( आस्मान की ) एक तरफ़ अच्छी ऊँची जगह में था ० ( अपनी अस्ली सूरत में ) सारे-का-सारा ( पैग़म्बर के सामने ) आ खड़ा हुआ-( फिर उनसे ) नज़्दीक हुआ और ( इतना उनकी तरफ़ को ) झुका कि ( दोनों में ) दो कमान की क़द्र फ़ासला रह गया, बल्कि ( इससे भी ) कम ० उस वक़्त ख़ुदा ने अपने बन्दे ( मुहम्मद ) की तरफ़ ( जिब्रील के ज़रिये से ) जो वही करनी थी, सो की ० पैग़म्बर ने जो कुछ देखा था ( उनके ) दिल ने उसमें कुछ झूट नहीं मिलाया ० पैग़म्बर जो ( जिब्रील को ) देखा करते हैं, तो क्या तुम लोग उनसे इस बात पर झगड़ते हो ० हालाँकि ( झगड़ने की कोई बात नहीं, क्योंकि ) उन्होंने तो ( मेराज के वक़्त ) सिद्रतुल्मुन्तहा के पास ( जहां नेक बन्दों के रहने की जगह बहिश्त है )-जिब्रील को एक दफ़े और भी ( अस्ली सूरत पर अपने पास आया हुआ ) देखा था ० जबकि (उस) सिद्रह पर छा रहा था, जो छा रहा था-(यानी नूर) ० ( उस वक़्त भी पैग़म्बर की) नज़र न (किसी तरफ़ को) बहकी और न जगह से उचटी ०-

( सर्वदा ) हमारे नेत्रों के सन्मुख ( रहते ) हो ( किसी की मजाल नहीं कि तुमको कुछ हानि पहुंचा सके ) । और जिस समय ( पिछली रात्रि को) उठा करो, अपने पालन कर्त्ता की प्रशंसा ( स्तुति ) के साथ ( उसकी ) पवित्रता वर्णन किया करो । ( अर्थात तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो ) और रात्रि ( के दो समय ) में भी उसकी पवित्रता वर्णन किया करो ( अर्थात मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़ा करो ) और तारागणों के अस्त होने के उपरान्त भी ( अर्थात सुबह की नमाज़ भी पढ़ा करो ) ॥

## सूरत—नज्म

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ६२ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

( लोगो ! हमको ) शपथ है तारे की, जबकि वह अस्त होने लगे कि तुम्हारे मित्र ( मुहम्मद ) न ( कभी हमारे मार्ग से ) भटके और न असत्य मार्ग पर चले । और न ( कभी अपनी ) मानसिक इच्छा से वह ( कुछ ) बोलते हैं । उनकी (प्रत्येक) बात वही ( अर्थात् ईश्वर वाणी ) है, जो ( हमारी ओर से ) उनके पास भेजी जाती है । उन्हें ( वह ख़ुदा ) शिक्षा देता है, जो दृढ़ शक्तियों वाला शक्तिमान है । ( जब रसूल ने उसके दर्शन की इच्छा की ) तो वह ख़ुदा ( उनको ) पूरा नज़र आया । और वह ( ईश्वर ) उफ़ुक़-आला ( सबसे ऊँचे स्थान ) में ( अपनी ज्योति दिखा रहा ) था । फिर ( वह ख़ुदा अपने रसूल के ) निकट हुआ । फिर ( अपने ऊँचे स्थान से अपने बन्दे की ओर ) उतर आया ( कि बन्दे और ख़ुदा के बीच में ) दो कमानों का अन्तर रह गया या इससे भी ज़्यादा निकट । फिर ख़ुदा ने अपने बन्दे पर वही की, जो कुछ भी उसको वही करनी थी । रसूल ने ( उस समय ) जो देखा था ( उसमें उनके ) दिल ने ( बिलकुल ग़लती ) नहीं की । तो ( हे मुश्रिको ! ) क्या तुम उस ( बात ) पर झगड़ते हो, जिसको ( हमारे ) रसूल ने ( स्वयं अपने नेत्रों से ) देख लिया । और उन्होंने सिद्रतुल्मुन्तहा × के निकट, जिसके समीप ( ही ) जन्नतुलमावा है, उसे एक बार और भी देखा था ॥

× टीका—'सिद्रतुल्मुन्तहा' ख़ुदा की नज़्दीकी के एक ऊँचे स्थान का नाम है और 'जन्नतुलमावा' एक स्वर्ग का नाम है:-हसन निज़ामी ॥

( यह वह समय था ) जिस समय सिद्रा ( जिसका अभी वर्णन हो चुका है ) पर छाया हुआ था, जो कुछ भी छाया हुआ था । ( अर्थात ख़ुदा की ज्योति का प्रकाश हो रहा था । उस समय ) न ( उनकी ) दृष्टि बहकी और न ( उचित ) सीमा से ( आगे ) बढ़ी । ( अर्थात जो देखना था, उसे ख़ूब भली भांति देखा और अच्छी तरह समझा । और जो न देखना था, उसकी ओर दृष्टि भी नहीं की ) ॥

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ۝ أَفَرَأَيْتُمُ
اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ۝ وَمَنَاةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرَىٰ ۝
أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۝ تِلْكَ إِذًا
قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ۝ إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا
أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ
إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنفُسُ
وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ الْهُدَىٰ ۝ أَمْ
لِلْإِنسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ۝ فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۝
وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ
شَيْئًا إِلَّا مِن بَعْدِ أَن يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَن يَشَاءُ
وَيَرْضَىٰ ۝ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنثَىٰ ۝ وَمَا
لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ

٥

कुछ शक नहीं कि पैग़म्बर ने ( इस मौक़े पर ) अपने पर्वर्दिगार ( की कुद्रत ) के बड़े बड़े अजायबात देखे० ( मुश्रिको ! ) भला तुमने लात और उज़्ज़ा और वह जो ( एक) तीसरी ( देवी ) और है, मनात–इन ( बुतों के हाल ) पर भी नज़र की ( कि इनमें कुछ भी कुद्रत है ) ० ( क्योंजी ! ) क्या तुम लोगों के लिये बेटे ? और ख़ुदा के लिये बेटियां ० अगर ऐसा हो, तो यह बड़ी ही ना मुन्सिफ़ाना तक़सीम है ० यह ( बुत ) तो निरे नाम ही ( नाम ) हैं, जो तुमने और तुम्हारे बड़ों ने ( अपनी तरफ़ से ) रख लिये हैं। ख़ुदा ने तो इन ( के माबूद होने ) की कोई सनद उतारी नहीं। यह लोग तो बस अटकल और ( अपनी ) नफ़सानी ख़्वाहिशों पर चलते हैं और ( तुर्रा यह है कि ) इनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से इनके पास हिदायत भी आ चुकी है–( इस पर भी नहीं मानते ) ० कहीं इन्सान को मनमानी मुराद भी मिली है ० सो आख़िरत और दुनिया ( सब कुछ ) अल्लाह ही के इख़्तियार में है ० और कितने फ़रिश्ते आस्मानों में ( भरे पड़े ) हैं कि उन की सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आती, मगर जब ख़ुदा किसी की निस्बत ( सिफ़ारिश कराना ) चाहे ( और फ़रिश्तों को सिफ़ारिश करने की ) इजाज़त दे और फ़रिश्तों को सिफ़ारिश को पसन्द फ़र्माये ० जिन लोगों को आख़िरत का यक़ीन नहीं है, वही तो फ़रिश्तों का नाम धरते हैं कि औरतें ( यानी ख़ुदा की बेटियाँ ) हैं ० हालांकि उनको इसकी कुछ तहक़ीक़ तो है नहीं, वह तो निरी अटकल पर चलते हैं—

( और इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि ( उस समय पर ) उन्होंने अपने पालन कर्त्ता ( की शक्ति ) के ( बड़े ) बड़े ( अद्‌भुत ) चिन्ह देखे। भला तुमने ( कभी अपने इन असत्य पूज्यों ) लात और उज़्ज़ा और एक तीसरा ( अर्थात ) मनात के विषय में ( भी कुछ ) सोच विचार किया ? ( उनकी वास्तविकता को देखकर और उनके बल, शक्ति तथा अधिकार को जाँच कर कभी अनुमान किया कि यह पूज्य बनने के योग्य भी हैं वा नहीं ? और कभी तुम्हें अपनी इस अज्ञानता पर भी सोच विचार करने का अवसर मिला कि तुम फ़रिश्तों को ख़ुदा की पुत्रियां बताते हो ? )। क्या ( अज्ञानो ! ) तुम्हारे लिये तो पुत्र ( भी ) हों और उस ( महान श्रेष्ठ ख़ुदा ) के लिये (जिसने इतने बड़े संसार की रचना करके अपनी शक्ति लीला प्रगट की, केवल ) पुत्रियां हों ? ( जिन्हें तुम अपने लिये कलङ्क का टीका समझते हो ) ॥

यदि (वास्तव में तुम) ऐसा (ही विचार करते) हो, तो ( बहुत बड़ी ग़लती करते हो। तुम्हारा ) यह (बांटना बिलकुल) ग़लत बाँटना है। ( और कभी तुम इस विचार में हो कि लात, उज़्ज़ा आदि तुम्हारे कुछ काम आवेंगे, तो यह भी तुम्हारी पूर्णतया मूर्खता है )। यह तो (कोरे) नाम ही नाम हैं, जो तुमने और तुम्हारे बाप (दादा) ने ( अपने आप ) नियत कर लिये हैं। अल्लाह ने ( जो सच्चा पूज्य और संसार का पालनहारा है ) उनकी ( सचाई का ) कोई प्रमाण नहीं उतारा। ( हे रसूल ! ) यह लोग तो बस ( असत्य ) विचार के ( अनुगामी ) और मानसिक इच्छा के आधीन हैं–यद्यपि उनके पास उनके पालनहारे की ओर से ( एक ) शिक्षा ( की पुस्तक भी ) आ चुकी है। भला ( यह बात कहीं बुद्धि में आ सकती है कि ) मनुष्य के लिये जो कुछ वह चाहे ( पूर्ण ) होकर ही रहे ? ( जैसे यदि वह लात तथा उज़्ज़ा के समान झूठे पूज्यों को सच्चे पूज्य समझे, तो वह वास्तव में भी पूज्य ही हो जावें ) ॥

( ऐसा कभी नहीं हो सकता। यदि मनुष्य की हर आशा पूर्ण हो जाया करे और हर विचार सत्य होजाय ) तो ( फिर तो ख़ुदा और बन्दे में कुछ अन्तर ही न रहे। निस्सन्देह यह एक बिलकुल असत्य बात है। सत्य यह है कि ख़ुदा के अतिरिक्त कोई पूजा के योग्य नहीं। और ) परलोक तथा लोक ( सब कुछ ) अल्लाह ही ( की शक्ति ) के अधिकार में है। और ( लात, उज़्ज़ा इत्यादि तो कोरे पत्थर के टुकड़े हैं। किसी गिनती ही में नहीं। उनसे कल्याण तथा आनन्द मंगल की अभिलाषा अथवा शफ़ाअत की आशा रखना तो बिलकुल मूर्खता है )। आसमानों में बहुत से ( निकटवर्ती ) फ़रिश्ते ( ऐसे ) हैं कि उनकी शफ़ाअत भी ( किसी को ) कुछ लाभ नहीं दे सकती—परन्तु ( हां ! ) अल्लाह की आज्ञा के उपरान्त ( लाभ दे सकती है और वह भी उस मनुष्य को ) जिसके लिये वह ( शफ़ाअत करानी ) चाहे और ( उसके लिये शफ़ाअत को ) पसन्द ( भी ) करे। निस्सन्देह जो लोग परलोक का विश्वास नहीं रखते, वही लोग फ़रिश्तों का नाम स्त्रियों के नाम के समान रखते हैं ( अर्थात् ख़ुदा की पुत्रियां बताते हैं ) यद्यपि उनको इस ( बात ) का कुछ ज्ञान नहीं। यह तो केवल ( अपने असत्य ) विचार का अनुगम करते हैं—

الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ● فَأَعْرِضْ عَنْ
مَنْ تَوَلَّىٰ ● عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ط
ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ط إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ ●
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط لِيَجْزِيَ
الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا
بِالْحُسْنَى ● الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبٰٓئِرَ الْإِثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ط إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ
الْمَغْفِرَةِ ط هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ
الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهٰتِكُمْ ج
فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ ط هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ● أَفَرَأَيْتَ
الَّذِي تَوَلَّىٰ ● وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ●
أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ● أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا

और अटकल का हाल यह है कि वह तो ( हक़ बात ) के सामने कुछ बकार—आमद नहीं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) जो शख़्स हमारी याद से रूगर्दानी करे और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा उसको ( किसी और बात से ) ग़रज़ ( व मतलब ) न हो, तुम ऐसे शख़्स की ज़रा भी पर्वा न करो ० उनकी अक़्ल की रसाई यहीं तक है। तुम्हारा पर्वर्दिगार उन लोगों को ख़ूब जानता है, जो उसके रस्ते से भटके हुये हैं और उनको ( भी ) ख़ूब जानता है, जो राह-रास्त पर हैं ० और अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (यानी उसीने इनको बनाया और पैदा किया है। अज़ाँ-जुम्ला इन्सान को भी )-ताकि ( आख़िरकार ) उन लोगों को—जिन्होंने बुरे अमल किये, उनके किये का बदला दे और जिन्होंने अच्छे अमल किये हैं, उनको ( वैसाही ) अच्छा बदला दे ० ( नेक अमल करने वालों से वह लोग मुराद हैं )-जो बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते रहते हैं, मगर छोटे छोटे गुनाह ( कि उनसे कौन बशर बच सकता है ? ऐ पैग़म्बर !) बेशक तुम्हारे पर्वर्दिगार की मग़फ़िरत ( बड़ी ) वसीअ है ( और ) वह (उस वक़् से) तुम लोगों को ख़ूब जानता है, जब ( अव्वल बार ) तुम बनी-आदम को मिट्टी से बना खड़ा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे, तो ( बहुत ) अपनी पाकीज़ागी न ( जताया ) करो। परहेज़गारों को वही ख़ूब जानता है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) भला तुमने उस शख़्स ( के हाल ) पर ( भी ) नज़र की, जिसने ( तुम्हारी नसीहत से ) रूगर्दानी की ० और थोड़ा सा ( राह-ख़ुदा में ) देकर ( फिर पत्थर की तरह ) सख़्त हो गया ० क्या उसके पास इल्म-ग़ैब है कि उसको ( अपना अन्जाम ) दिखाई दे रहा है ० क्या उसको उन ( बातों ) की ख़बर नहीं पहुंची,जो—

( तो उनकी इस बकवास) और ( इस व्यर्थ विचार से होता क्या है,सत्य जो है, सो है )। सत्य के मुक़ाबले में तो (उनका असत्य) विचार कुछ भी लाभ दायक नहीं हो सकता। अतः ( हे रसूल ! यह लोग बात करने के योग्य नहीं )। तुम ( हर ) उस मनुष्य से मुंह फेर लो, जो हमारी शिक्षा ( पर चलने ) से मुंह मोड़े और सांसारिक जीवन के ( अल्प-कालिक सुख के ) अतिरिक्त उसका कोई प्रयोजन न हो ( और परलोक को भूला बैठा हो ) ॥

उनके ज्ञान की पहुंच तो बस यही है ( कि जो कुछ है, दुनिया है। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं )। निस्सन्देह ( हे रसूल!) तुम्हारा पालन कर्त्ता उसको भी ख़ूब जानता है, जो उसके मार्ग से भटक गया है और वही उससे भी भली भांति अभिज्ञ है, जो ( उसके बताये हुये ) सीधे मार्ग पर ( चल रहा ) है। और पृथ्वी तथा आकाशों में जो कुछ ( भी ) है ( सब ) उसी ( की शक्ति ) के अधिकार में है, जिससे कि वह कुकर्मियों को उनके (अशुभ) कर्मों के बदले दण्ड दे और नेक काम करने वालों को उनकी नेकी के बदले पुरस्कार प्रदान करे। ( और नेक काम करने वाले लोग वह हैं ) जो ( मानसिक प्रेरणा से ) छोटा पाप ( कर जायँ, तो कर जायँ-परन्तु छोटे पापों ) को छोड़ कर ( समस्त ) बड़े पापों और निर्लज्जा की बातों से बचते ( और रसूल की आज्ञानुसार अल्लाह की पूजा तथा आधीनता में तत्पर रहते ) हैं। निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता बहुत बड़ा क्षमा करने वाला ( और अपने बन्दों की दशा पर अतिशय कृपालु) है॥

( और हे सुकर्म करने वालो ! देखो ) तुमको ( और तुम्हारे कर्मों को ) भली भांति वह ( तुम्हारा पालन कर्त्ता ) ही (ख़ूब) जानता है। ( वह तुम्हारी उस समय की दशा से भी अभिज्ञ है )-जिस समय उसने तुमको ( अर्थात तुम्हारे प्रपितामह आदम को एक मुट्ठी ) पृथ्वी ( की धूलि ) से उत्पन्न किया था और ( उस समय की दशा से भी ) जिस समय तुम अपनी माताओं के पेट में बच्चे थे। अतः तुम ( कभी ) अपने को ( स्वच्छ तथा ) पवित्र न ख़्याल करो। जो लोग ( सच्चे ) संयमी हैं, उन्हें ( बस ) वह (ख़ुदा) ही ख़ूब जानता है। ( हे रसूल ! ) तुमने ( सुकर्मियों का हाल तो सुन लिया-परन्तु ) उस ( कुकर्मी मनुष्य वलीद-बिन-मुग़ीरा ) को ( भी ) देखा-( जिसने ख़ुदा के अज़ाब से डर कर ईमान लाने की इच्छा की और ) जो ( लोगों के बहकाये सिखाये में आकर पुनः उसी कुफ़्र, शिर्क की ओर ) फिर गया। और जिसने ( अपने ऊपर से अज़ाब का बोझ हटाने के लिये कुछ धन देने का वादा किया और उसमें से ) कुछ थोड़ासा दिया और बाक़ी रोक लिया। क्या उसे गुप्त ज्ञान है, जो उसको ( यह ) दिखाई दे रहा है ( कि उसका किसी मनुष्य को कुछ दे दिला कर यह वादा करा लेना कि "वह क़यामत के दिन उसका अज़ाब अपने सिर ले लेगा" उसकीमुक्ति के लिये पर्याप्त होगा ?) क्या उसे उन (ख़ुदा के आदेशों) की ख़बर नहीं हुई, जो—

فِىْ صُحُفِ مُوْسٰى ۝ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰٓى ۝ اَلَّا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۝ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ
اِلَّا مَا سَعٰى ۝ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ۝ ثُمَّ
يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۝ وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۝
وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ
وَاَحْيَا ۝ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى
مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝ وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ
الْاُخْرٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ
رَبُّ الشِّعْرٰى ۝ وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادًا ِۨ الْاُوْلٰى ۝
وَثَمُوْدَا فَمَآ اَبْقٰى ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ
كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۝ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۝
فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ۝
هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ۝ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۝

मूसा के सहीफ़ों में (लिक्खो हुई) हैं ० और (नीज़) इब्राहीम के (सहोफ़ों में ?) जिन्होंने (अपनी ज़िन्दगी में हक़-बन्दगी पूरा) पूरा अदा किया ० (उन सहीफ़ों में यह लिक्खा है) कि कोई (शख़्स) दूसरे (के गुनाह) का बोझ (अपनी गर्दन पर) नहीं लेगा ० और यह कि इन्सान को उतना ही मिलेगा, जितनी उसने कोशिश की ० और यह कि उसकी कोशिश आगे चलकर (क़यामत के दिन) देखी जाएगी ० फिर उसको उसका पूर पूरा बदला मिलेगा ० और यह कि (आख़िरकार सबको) ख़ुदा तक पहुंचना है ० और यह कि वही हँसाता और रुलाता है ० और यह कि वही मारता और जिलाता है ० और यह कि जब नुतफ़ा (रहम मादा में) पहुंचाया जाता है, तो वही (ख़ुदा) उससे नर व मादा दो क़िस्म (के जानदार) पैदा कर देता है ० और यह कि दुबारा (जिला) उठाना उसने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है ० और यह कि वही (लोगों को) मालदार और साहब-सर्माया करता है ० और यह कि वही शेरा (सितारे) का मालिक है ० और यह कि उसीने आद (को) पहिली (क़ौम) को हलाक किया था और (अला-हाज़लक़यास) समूद को, कि (उनमें से किसीको भी) बाक़ी न छोड़ा ० और उनसे पहिले क़ौम-नूह को। इसमें शक नहीं कि ख़ुद यही बड़े ज़ालिम और बड़े सर्कश थे ० और (क़ौम-लूत की) उलटी हुई बस्तियों को (भी) उसीने दे पटका था ० तो उन (बस्तियों) पर जो तबाही आई, सो आई ० तो (ऐ आदमी !) तू अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नेअमतों में शक किया करेगा ० अगले डर सुनाने वालों (यानी पैग़म्बरों) में से (एक) डर सुनाने वाले यह पैग़म्बर-आख़िरुज़्ज़मां भी हैं ० (क़यामत) जो आने वाली है, क़रीब आ पहुंची ०—

---

(हमारे नबी) मूसा के सहीफ़ों (अर्थात् ख़ुदा की उतारी हुई पुस्तक) में (लिखे) हैं और इब्राहीम के (सहीफ़ों में) भी, जिन्होंने (धर्म-प्रचार के कर्त्तव्य को) पूर्ण किया। (अर्थात) यह (आदेश) कि (क़यामत के दिन) कोई बोझ उठाने वाला (किसी) दूसरे (के पापों) का बोझ नहीं उठावेगा। और यह (आदेश) कि मनुष्य को केवल अपने उद्योग ही का फल मिलेगा। और यह (आदेश) कि मनुष्य का उद्योग अवश्य देखा जावेगा (और) फिर उसको (उसके उद्योग के अनुकूल पूरा) पूरा बदला दिया जावेगा। और यह (आदेश) कि (समस्त दुनिया वालों का) लौटना तुम्हारे पालनहारे ही की ओर है (अर्थात अन्त में सबको उसी के दर्बार में जाना है)। और यह (आदेश) कि (संसार में जो कुछ होता है, ख़ुदा ही की आज्ञा से होता है। यहां तक कि) वही हंसाता है और वही रुलाता है। और यह (आदेश) कि (दुनिया में सबको) वही मारता है और वही जिलाता है। और यह (आदेश) कि जब वीर्य्य (गर्भाशय में) डाला जाता है, तो वही उसके द्वारा जोड़े अर्थात नर-नारी उत्पन्न करता है॥

और यह (बात) कि (अपनी सृष्टि को एक बार नष्ट करने के उपरान्त) दुबारा उत्पन्न करना उसीका काम है। और यह (बात) कि उसीने (धनवानों को) धनवान और (जमा) पूंजी वाला बनाया है। और यह (बात) कि वही शेरा (नामक सितारे) का भी (सृष्टि कर्त्ता तथा) स्वामी है-(जिसको कतिपय काफ़िर पूजते हैं)। और यह (बात) कि उसीने आद-ऊला (अर्थात हूद की जाति) को (उनकी उद्दण्डता तथा पथ-भ्रष्टता के कारण) नष्ट (भ्रष्ट) कर दिया था और समूद को भी (और ऐसा नष्ट भ्रष्ट किया था) कि (संसार में नाम के अतिरिक्त उनकी किसी वस्तु को भी) शेष न छोड़ा और उन (नष्ट हुई जातियों) से पहिले नूह की जाति को भी। निस्सन्देह यह (लोग) स्वयं ही (हद से) ज़्यादा अत्याचारी और (हद से) ज़्यादा उद्दण्ड थे॥

और (इसी प्रकार लूत की) उलटी हुई बस्तियों को भी उसीने दे पटका था। (और जब उनकी उद्दण्डता तथा पथ-भ्रष्टता सीमा पार हो गई थी) तो (ख़ुदा की आज्ञा से) उन (बस्तियों) को ढाँक लिया था, जिस वस्तु ने भी ढाँक लिया था। (अर्थात उन पत्थरों ने जो ख़ुदा की आज्ञा से उन पर बर्षे थे)। अतः (हे मनुष्य! तू बता कि) तू अपने पालनहारे की किस किस शक्ति (का अस्वीकार करेगा? और कब तक उसकी महानता, श्रेष्ठता तथा उसके सृष्टि कर्त्ता होने) में शंका करता रहेगा। (यदि इतना समझाने बुझाने के पश्चात भी तेरे दिल से यह सन्देह दूर न हो, तो यह तेरी बहुत बड़ी अज्ञानता और तेरा दुर्भाग्य है। सुन! ध्यान देकर सुन!) यह (मुहम्मद कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं)। अगले डराने वालों (अर्थात पैग़म्बरों) की तरह (यह भी) एक डराने वाले (पैग़म्बर) हैं। (देख! तू इनको झूठा न बता। इनकी शिक्षा पर कान धर! संसार थोड़े दिन का है। क़यामत जो एक न एक दिन अवश्य) आने वाली (है, बिलकुल) निकट आ पहुंची—

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ○ أَفَمِنْ هَٰذَا
الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ○ وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ○
وَأَنْتُمْ سَامِدُونَ ○ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ○

سورة القمر مكية وهي خمس وخمسون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ○ وَإِنْ يَرَوْا
آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُسْتَمِرٌّ ○ وَكَذَّبُوا
وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقِرٌّ ○ وَلَقَدْ
جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ○ حِكْمَةٌ
بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ○ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ
الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُكُرٍ ○ خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ
يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ○
مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا

अल्लाह के सिवा किसी ( शख़्स ) की मजाल नहीं कि इस (मुसीबत) को टाल सके ० तो क्या तुम ( लोग ) इस बात से तअज्जुब करते हो ० और (क़यामत का ज़िक्र सुनकर ) हँसते हो और तुमको रोना नहीं आता ० और तुम ( इस दर्जे के ) ग़ाफ़िल हो ० तो ख़ुदा के आगे सज्दे करो और ( उसीकी ) इबादत करो ०

## सूरत–क़मर

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ५५ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० क़यामत पास आ लगी और ( पैग़म्बर के मोजिज़े से ) चाँद शक़ हो गया (कि क़ुर्ब-क़यामत की यह भी एक निशानी है ) ० और ( यह लोग ) अगर कोई सा मोजिज़ा (भी) देखें (ताहम हक़ से) रूगर्दानी करें और कहें कि (यह भी एक क़िस्म का ) जादू है, जो सदा से होता चला आया है ० और इन लोगों ने ( पैग़म्बर को ) झुटलाया और अपनी ( नफ़सानी ) ख़्वाहिशों की पैरवी की और हर एक काम का ( एक वक़्त ) ठहरा हुआ है ( अज़ाँ-जुम्ला इनकी सज़ा का भी ) ० और इनको तो ( अगली उम्मतों के ) इतने हालात पहुंच चुके हैं कि जिनमें (काफ़ी ) तम्बीह थी ० ( और काफ़ी तम्बीह के अलावा ) सरता-सर दानाई ( की बातें भी थीं )–मगर ( इन लोगों को ) डराना ( भी ) कुछ फ़ायदा नहीं देता ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम इन लोगों से कनारा-कश रहो । जिस दिन बुलाने वाला ( यानी इस्राफ़ील फ़रिश्ता इनको ) ऐसी चीज़ की तरफ़ बुलायेगा, जिससे ( इनके ज़ेहन भी ) आशना नहीं ० ( और पशेमानी की वजह से ) इनकी नज़रें झुकी हुई होंगी—( तो उस रोज़ ) क़ब्रों में से ( इस तरह पर ) निकल पड़ेंगे ( कि ) गोया यह टिड्डियां हैं ( कि चारों तरफ़ ) फैली पड़ी ( हैं ) ० ( और ) बुलाने वाले की तरफ़ भागे हुये चले जा रहे होंगे ( और ) काफ़िर कहते ( जा रहे ) होंगे कि यह ( तो बड़ा ही )—

---

( क़यामत एक आपत्ति का दिन है )। अल्लाह के अतिरिक्त किसी में ( यह ) शक्ति नहीं कि उस ( दिन की आपत्ति ) को दूर कर सके। ( मुश्रिको ! ) क्या तुमको इस बात से आश्चर्य होता है और तुम ( अपनी मूर्खता के कारण इस पर ) हंसते हो और ( अपनी अधम दशा पर ) रोते नहीं। और तुम ( शिक्षा तथा नसीहत प्राप्त करने के बदले ) अचेतना में पड़े हुए हो। (अज्ञानो ! यह बहुत बुरी बात है) अतः ( तुम इससे सावधान हो जाओ और ) अल्लाह के आगे सज्दे में झुक जाओ और ( उसकी अति प्रेम के साथ ) उपासना करो ॥

## सूरत–क़मर

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ५५ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

(लोगो ! ) क़यामत निकट आ गई और ( ख़ुदा रसूल की आज्ञा से ) चांद × फट गया ( और फट कर दो टुकड़े हो गया ) ॥

× टीका—अबू-जहल काफ़िर ने रसूलुल्लाह से मोजिज़ा दिखाने को कहा। रसूलुल्लाह ने चांद की ओर उँगली से सङ्केत किया, तुरन्त चांद के दो टुकड़े हो गये। एक पूरब की ओर हट गया, एक पच्छिम की ओरः—हसन निज़ामी ॥

और (इन काफ़िरों की मूर्खता तथा दुर्भाग्य का क्या ठिकाना )-यह (तो) यदि ( उस चांद फटने के मोजिज़े से भी ज़्यादा स्पष्ट) कोई मोजिज़ा देखें, तो ( ईमान अंगीकार करने से ) मुंह फेर लें और कहें ( यह भी एक प्रकार का ) जादू है, जो सर्वदा से होता आया है और ( उनकी इसी हठ-धर्मी ही का परिणाम यह है कि ) उन्होंने ( सत्य-धर्म को ) झुठलाया और अपनी (मानसिक) इच्छाओं का अनुगमन किया। और ( अपने आपको अज़ाब का अधिकारी ठहराया। निस्सन्देह हमारे यहाँ ) हर बात (का एक समय) नियत है। और उनके पास तो (पिछली जातियों की ऐसी) ऐसी ख़बरें पहुंच चुकी हैं कि जिनमें ( समझने वालों के लिये एक पर्याप्त ) डाँट (भी) थी (और बड़ी ) बड़ी ( अद्भुत ) हिकमत ( की बातें भी थीं। यदि यह बुद्धिमान होते,तो कब के समझ गये होते )। अतः ( इन जैसे लोगों के लिये ) डराने वाले ( अर्थात पैग़म्बर कुछ ) लाभ-प्रद नहीं होते। सो (हे रसूल ! ) तुम ( भी ) उन (लोगों) की ओर से (अपना) ध्यान हटालो। जिस दिन बुलाने वाला (अर्थात इस्राफ़ील सूर के द्वारा उन्हें एक) अज्ञात वस्तु ( अर्थात हिसाब किताब ) की ओर बुलावेगा, तो (उस दिन) यह ऐसी दशा में कि ( पापों की लज्जा इन पर छाई होगी और लज्जा के मारे ) उनकी दृष्टियां झुकी( जाती) होंगी। ( अपनी २ ) क़ब्रों में से ( इस प्रकार ) निकल पड़ेंगे ( और चारों ओर फैल जायँगे ) जैसे टिड्डियां फैली हुई ( होती ) हैं। ( और यह ) बुलाने वाले की ओर दौड़े जा रहे होंगे। ( और ) काफ़िर (उस दिन) कहते होंगे कि यह दिन बहुत कठिन है ॥

कठिन दिन है० इन लोगों से पहिले नूह की क़ौम ने (भी मुतलक़ रिसालत का इन्कार करके तमाम पैग़म्बरों को) झुटलाया (अज़ां-जुम्ला) हमारे बन्दे ( नूह ) को ( भी ) झुटलाया और ( उनकी निस्बत ) कहा कि ( यह ) दीवाना है और उनको झिड़कियां दी गई -( सो अलग ) ० तो उन्होंने अपने पर्वरदिगार से फ़रियाद की कि मैं ( इनके हाथ से ) आजिज़ हूं—तो अब तूही (इनसे मेरा ) बदला ले ० तो हमने मूसलाधार पानी से आस्मान के पट खोल दिये ० और ज़मीन को सोतें बहा दीं —तो अन्दाज़ए—मुक़र्रर पर ( ज़मीन और आस्मान का ) पानी मिल कर एक हो गया ० और नूह को हमने ( लकड़ी के ) तख़्तों और कीलों से बनाई हुई ( किश्ती ) पर सवार कर लिया ० ( और वह ) हमारी निगरानी में पड़ी तैरा की—(यह) उस शख़्स ( यानी नूह ) का बदला (था )-जिसकी क़द्र नहीं की गई थी० और हमने इस ( वाक़ए ) को एक नमूनए ( इब्रत ) बना छोड़ा—तो कोई है कि ( इससे ) नसीहत पकड़े ० पस हमारा अज़ाब और हमारा डराना ( देखा ? उसका अन्जाम ) कैसा हुआ ० और अलबत्ता हमने क़ुर्आन को ( लोगों के ) नसीहत पकड़ने के लिये आसान कर दिया है—तो कोई है ? कि नसीहत पकड़े ० ( क़ौम ) आद ने ( भी पैग़म्बरों को ) झुटलाया, तो हमारा अज़ाब और हमारा डराना ( देखा ? उसका अन्जाम ) कैसा हुआ ० कि हमने एक मनहूस दिन में जिसकी नहूसत ( किसी तरह टाले ) नहीं टलती थी, उन पर एक ज़न्नाटे की आंधी चलाई ० ( और ) वह लोगों को ( जगह से ऐसा ) उखाड़ फेंकती थी कि गोया वह उखड़ी हुई खजूरों के बोते हैं ० तो हमारा अज़ाब और हमारा डराना ( देखा ? उसका अन्जाम ) कैसा हुआ ०—

يَوْمٌ عَسِرٌ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا
عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝ فَدَعَا رَبَّهُ
أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۝ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ
السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ۝ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ
عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝ وَحَمَلْنَاهُ
عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ۝ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً
لِمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝ وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ
مِنْ مُدَّكِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَ
لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ
عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْ
صَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُسْتَمِرٍّ ۝ تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ
أَعْجَازُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝

(हे पैग़म्बर ! तुमको झुठलाना यह आज कोई नई बात नहीं है, बरन) उनसे पहिले नूह की जाति झुठला चुकी है। ( अर्थात जब नूह ने अपनी जाति से कहा कि अपनी इच्छाओं का अनुगमन छोड़ो और अल्लाह की आज्ञा पालन करो ) तो (उनकी जाति के लोगों ने) हमारे बन्दे ( नूह ) को झुठलाया और कहने लगे यह तो दीवाना है ( और नूह को शिक्षा देने से रोक दिया गया ) और उनको झिड़क दिया गया। इस पर ( नूह ने ) अपने पालनहारे को पुकारा ( और कहा ) कि ( हे पालन कर्त्ता ! इनके अत्याचारों से ) मैं विवश हो गया हूं, तो अब तूही ( मेरी सहायता कर ! और उनसे मेरा ) बदला ले ! अतः हमने मूसलाधार पानी से आकाश के द्वार खोल दिये ( अर्थात आकाश से मूसलाधार वर्षा की ) और पृथ्वी से सोते बहा दिये। पुनः ( आकाश से वर्षा हुआ और भूमि से निकला हुआ ) सब पानी उस काम ( के पूरा करने ) के लिये, जो पहिले से ठहर चुका था ( परस्पर ) मिल गया॥

और हमने नूह को (तो) तख़्तों और कीलों वाली नौका पर जो हमारी आँखों के सन्मुख (पानी पर) चलती थी, सवार करा दिया (जिससे कि वह डूबने से सुरक्षित रहें। और उनकी जाति के समस्त दुराचारियों को उस पानी में डुबो दिया। निस्सन्देह ) यह बदला था ( हमारे ) उस ( उच्च पद वाले नबी ) का, जिसको झुठलाया गया था। और हमने इस (वृतान्त ) को (संसार वालों के लिये शिक्षा का) एक चिन्ह बनाकर छोड़ दिया। तो कोई है, जो (इस घटना को सुने और इससे) शिक्षा ग्रहण करे। अतः (हे मनुष्य ! अब भी तुझे पता चला कि ) कैसा है, हमारा अज़ाब और हमारा डराना ( वा अब भी नहीं )। और हमने तो क़ुर्आन ( के विषय) को ( जो ऐसी शिक्षा-प्रद कथाओं से परिपूर्ण है, केवल ) शिक्षा के लिये सहज कर दिया, तो क्या कोई है ? ( ऐसा समझदार ) कि ( उसको पढ़े और उसके विषय को समझे। और उससे ) शिक्षा ग्रहण करे॥

नूह की जाति की तरह ) आद ( की जाति ) ने ( भी अपने पैग़म्बरों को) झुठलाया था। सो ( हे मनुष्य ! देख कि उनका परिणाम क्या हुआ और ) हमारा अजाब और हमारा डराना ( उनके हक़ में ) कैसा (सिद्ध ) हुआ। निस्सन्देह ( जब उनकी उद्दण्डता सीमा पार हो गई, तो ) हमने ( उनके विनाश के लिये ) एक ऐसे मनहूस (अर्थात अशुभ) दिन में, जिसकी नहूसत ( उनके नष्ट होने तक ) बराबर ( स्थिर ) रहे, उन पर एक बहुत बड़ी आँधी भेजी। जो उन लोगों ( के पांवों) को (उनके निवास स्थान से ) उखेड़ रही थी ( और उन को औंधे मुंह भूमि पर गिरा रही थी। और वह अपने डील डौल की लम्बाई के करण पृथ्वी पर गिरे हुये ऐसे त्रिदित होते थे,—जैसे कि) मानो वह जड़ से उखड़े हुये खजूर के ( वृक्ष के ) तने हैं। सो ( हे मनुष्य ! तूने देखा कि ) कैसा है हमारा अज़ाब और हमारा डराना॥

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝
كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝ فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا
وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝
أَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِن بَيْنِنَا بَلْ هُوَ
كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝ سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ
الْأَشِرُ ۝ إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ
فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ
بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ
فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي
وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً
فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ
لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا

٤

और अलबत्ता हमने क़ुर्आन को (लोगों के) नसीहत पकड़ने के लिये आसान कर दिया है, तो कोई है? कि नसीहत पकड़े ० (क़ौम) समूद ने (भी) डर सुनाने वालों (यानी पैग़म्बरों) को झुटलाया (अज़ाँ-जुम्ला अपने पैग़म्बर सालेह को भी) ० और (इनकी निस्बत) कहा कि क्या हम ऐसे शख़्स की पैरवी करें कि वह भी हमही में का एक बशर है! ऐसा करें, तो हम गुमराही (में पड़ें) और जहन्नम में (जाएँ) ० क्या हममें से इसी पर वही नाज़िल हुई है? हो न हो! यह (शख़्स) झूटा लपाटिया (और) डींगिया है ० (तो हमने सालेह से फ़र्माया कि) अन्क़रीब इनको कल (परसों ही में) मालूम हो जायगा कि कौन झूटा लपाटिया (और) डींगिया है ० हम इनके आज़माने के लिये एक ऊँटनी भेजने वाले हैं, तो तुम इनका इन्तिज़ार करो (कि यह उसकी कैसी मदारात करते हैं) और सब्र से बैठे रहो ० और इनको जतादो कि इनमें (और ऊँटनी में) पानी बांट दिया गया है—तो हर (एक फ़रीक़ अपनी अपनी) बारी पर (पानी पीने के लिये) हाज़िर (हुआ करे) ० तो उन्होंने अपने रफ़ीक़ (क़दार) को बुलाया, तो उसने (ऊँटनी पर) हाथ डाला और (उसकी) कूचें काट दीं ० तो हमारा अज़ाब और हमारा डराना (देखा? उसका अन्जाम) कैसा हुआ ० कि हमने उन पर एक ज़ोर की चीख़ का अज़ाब नाज़िल कर दिया—तो बाड़ वाले की रौंदी हुई बाड़ की तरह (पामाल) हो (कर रह) गये ० और अलबत्ता हमने क़ुर्आन को (लोगों के) नसीहत पकड़ने के लिये आसान कर दिया है, तो कोई है? कि नसीहत पकड़े ० लूत की क़ौम ने (भी) डर सुनाने वालों (यानी पैग़म्बरों) को झुटलाया ० तो हमने उन पर पथराव बर्सा दिया, मगर—

---

और (इसमें कुछ भी) सन्देह (तथा शंका की गुन्जाइश) नहीं कि हमने क़ुर्आन (के विषयों) को (जो ऐसे शिक्षा-प्रद वृतान्तों से परिपूर्ण है, केवल) शिक्षा के लिये सरल कर दिया, तो क्या कोई है? (ऐसा समझदार) कि (क़ुर्आन को पढ़े और उसके विषयों को समझे और) शिक्षा ग्रहण करे। (और आद की जाति की तरह) समूद (की जाति) ने भी डराने वालों (अर्थात पैग़म्बरों) को झुठलाया था। (और जब हमारे पैग़म्बर सालेह ने उनको सत्य-धर्म का मार्ग बताया) तो वह कहने लगे-क्या हम अपने ही में से एक मनुष्य के अनुगामी हो जायँ? (निस्सन्देह यदि हमने ऐसा किया) तो हम अवश्य एक स्पष्ट गलती और अज्ञानता में (लिप्त) हो जायेंगे। (सो) क्या हम (सब) में से (केवल यही सालेह इस योग्य था, जो केवल) इसी पर वही अवतीर्ण हुई (और कोई इस योग्य न था! नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता)-वरन यह बड़ा झूठा (तथा) इतराने वाला (मनुष्य) है (इसने झूठ बोला है। यह कुकर्मी जाते कहाँ हैं) इन्हें कल (क़यामत के दिन भली भांति) ज्ञात हो जायगा कि कौन झूठा (और) इतराने वाला है॥

निस्सन्देह हम (एक) ऊंटनी भेजने वाले हैं (और उसको हे सालेह! तुम्हारे लिये मोजिज़ा बनाने वाले हैं)। अतः तुम उनकी घात में रहो और धीरज (तथा साहस) से काम लो। (उनके दुर्व्यवहारों से किंचित न घबराओ)। और (जब ऊंटनी आजाय, तो तुम उनको यह बता देना कि पानी उनके बीच बांट दिया गया है। (अर्थात उनको समझा देना कि पानी के नियत सोते से एक दिन तुम्हारे पशु पानी पियेंगे और एक दिन यह ऊंटनी। अतः) हर बारी पर बारी वाला (ही पानी पीने) आया करे॥

(सो जब वह ऊँटनी आगई) तो (सालेह ने उनको पानी के बारे में उल्लिखित बात समझा दी। और उसके आदर सम्मान के सम्बन्ध में भी उन्हें समझा बुझा दिया-किन्तु) उन्होंने (उसका कुछ भी पालन न किया और) अपने (एक) मित्र (क़दार नामक मनुष्य) को बुलाया (और उससे कहा कि उस ऊंटनी का जान से मार दे)। सो उसने (उस पर) आक्रमण किया और (उसकी कूचें काट डालीं (जिससे वह मर गई और उसकी मृत्यु इन सब लोगों के विनाश का कारण सिद्ध हुई)। अतः (हे मनुष्य! तूने देखा कि हमारा अज़ाब और हमारा डराना (उनके हक़ में) कैसा (सिद्ध) हुआ। निस्सन्देह हमने एक (ज़बर्दस्त) कड़क (जो वास्तव में हमारा अज़ाब था) उनके (विनाश के) लिये भेजी कि (जिससे) वह काँटों की रौंदी हुई बाड़ (की तरह नष्ट भ्रष्ट) होकर रह गये। और (इसमें सन्देह नहीं कि हमने क़ुर्आन को (जो शिक्षा-प्रद विषयों से पुर है, लोगों को) शिक्षा देने के लिये सरल कर दिया-तो कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला है? (और आद तथा समूद की जाति की तरह) लूत की जाति ने भी डराने वालों (अर्थात हमारे पैग़म्बरों) को झुठलाया था। (और उनको दंड देने के लिये भी) हम ही ने पत्थर वर्षाने वाली हवा को उन (सब) पर चलाया था। (और उससे उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया था) परन्तु—

آلَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ۝ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ
كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ أَنذَرَ
هُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَ
دُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا
عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ
مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ
يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝
وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝
أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولَٰئِكُمْ أَمْ لَكُم بَرَاءَةٌ فِي
الزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝
سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ
مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ۝ إِنَّ

ख़ानदान-लूत के लोग कि हम उनको अपने फ़ज़्ल ( व करम ) से सुबह होते-होते (अज़ाब की जगह से) निकाल ले गये (और) जो (हमारा) शुक्र किया करता है, हम उसको ऐसा ही बदला दिया करते हैं ० और लूत ने उन लोगों को हमारी पकड़ से डरा भो दिया था, मगर वह ( उनके ) डराने में लगे हुज्जतें निकालने ० और उनके मेहमानों ( यानी फ़रिश्तों ) को भो उनके पास से उड़ा लेजाने के दरपै हुये-तो हमने उनकी आँखों हर झाड़ू फेर दी ( और कहा कि लो ! ) अब हमारे अज़ाब और हमारे डराने के मज़े चक्खो ० और हक़ीक़त में सुबह सवेरे उनको अज़ाब ने आ हो लिया, जो ( किसी के टाले ) टल नहीं सकता था ० ( और हमने फ़र्माया कि लो ! ) अब हमारे अज़ाब और हमारे डराने के मज़े चक्खो ० और अलबत्ता हमने कुर्आन को ( लोगों के ) नसीहत पकड़ने के लिये आसान कर दिया है--तो कोई है ? कि नसीहत पकड़े ० और तहक़ीक़ फ़िर्औन के लोगों के पास ( भी बहुतेरे हो ) डरावे आये ० सो उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुटलाया—तो हमने उनको ऐसा ( सख़्त ) पकड़ा ; जैसा ज़बरदस्त साहब-कुद्रत पकड़ा करता है ० ( ऐ अहले-मक्का ! ) क्या तुममें से जो मुन्किर हैं, वह इन लोगों से भी बढ़कर हैं ? या तुम्हारे पास तहरीरें हैं और ( उन ) तहरीरों में तुम्हारी माफ़ी ( लिखी हुई ) है ० या यह लोग कहते हैं कि हमारी बड़ी क़वी जमाअत है ० सो कोई दिन जाता है कि ( इनका ) गिरोह शिकस्त खायेगा और ( मुसलमानों के मुक़ाबले में ) पीठ फेर फेर कर भागेंगे ० बल्कि ( अस्ल ) वादा तो उन के साथ क़यामत का है और क़यामत बड़ी आफ़त और टेढ़ी खीर है ० बेशक—

( हाँ ) लूत के घर के लोग कि हमने उनको अपनी कृपा से पिछली रात ( ही ) से ( उस आने वाले अज़ाब से सूचित कर दिया था और यह कह कर कि " इस बस्ती से बाहर हो जाओ" उस अज़ाब से ) बचा लिया था। ( निस्सन्देह ) हम ऐसा ही प्रतिफल प्रदान करते हैं ( हर ) उस मनुष्य को, जो ( हमारी आधीनता करे और हर दशा में सन्तोष तथा ) कृतज्ञता ( प्रकाश ) करता रहे। और ( इस में कुछ ) सन्देह नहीं कि लूत ने उन ( लोगों ) को हमारी पकड़ ( की कठिनता ) से ( भली भांति ) डरा दिया था—परन्तु उन्होंने हमारे डराने वालों ( अर्थात पैग़म्बरों ) से झगड़ा किया। और उनसे उनके पाहुनों को छीनने लगे। अतः हमने उनको आँखों को मिटा डाला ( और अज़ाब उतरने के समय उनसे कहा ) हमारे अज़ाब और हमारे डराने ( को असत्य समझने ) का स्वाद चक्खो॥

और ( एक दिन ) प्रातःकाल हमारे अज़ाब ने जो ( उनके लिये ) नियत हो चुका था, उन्हें आ दबोचा। ( और हमने उनसे कहा ) हमारे अज़ाब ( को झूठ ) और हमारे डराने ( को असत्य समझने ) का स्वाद चक्खो। और ( इसमें ) सन्देह नहीं कि हमने कुर्आन को ( जो शिक्षा-प्रद विषयों से पुर है, लोगों की ) शिक्षा के लिये सरल कर दिया—तो कोई है ? ( हमारे इस शिक्षा-प्रद कुर्आन से ) शिक्षा ग्रहण करने वाला। और (लूत को जाति की तरह) फ़िर्औन के लोगों के पास भी डराने वाले (अर्थात हमारे पैग़म्बर उन्हें ख़ुदा के अज़ाब से डराने के लिये ) आये थे। (और अपने रसूल होने को सिद्ध करने के लिये हमारे दिये हुये बहुत से मोजिज़ेभी अपने साथ लाये थे-परन्तु ) उन्होंने हमारे सब मोजिज़ों को झूठा बताया ( और हमारे पैग़म्बरों की आज्ञाओं को पालन करने के अयोग्य ठहराया)। अतः ( जब उनकी उद्दण्डता सीमा पार हो गई, तो ) हमने उन्हें एक बलिष्ट ( और ) शक्तिमान की पकड़ को तरह ( अपने अज़ाब में ) धर पकड़ा-( जिससे वह किसी प्रकार भो छुटकारा न पा सके )॥

( हे काफ़िरो ! ) क्या तुम्हारे ( जैसे जो ) काफ़िर ( हैं, वह ) उन सब ( उल्लिखित जातियों के काफ़िरों ) से ( कुछ ) उत्तम हैं ? वा तुम्हारे लिये ( ख़ुदा की ) पुस्तकों में कोई क्षमा ( का वादा लिखा ) है ? अथवा ( हे रसूल ! ) यह इस भुलावे में हैं कि हम एक बड़े जथे वाले हैं। (यदि वास्तव में यह इसी भुलावे में हैं, तो उनका यह ) जथा अभो टूट जायगा और यह ( सबके सब ) पीठ दिखा (दिखा) कर भागेंगे। ( और न केवल उनके जथे को तोड़ा जायगा )-वरन् क़यामत उनके ( अज़ाब के ) वादे का स्थान है और क़यामत ( का अज़ाब कोई साधारण अज़ाब नहीं है, वरन् वह ) अति कठिन तथा अतिशय कड़ुवा है॥

गुनहगार ( लोग ) गुमराही में ( पड़े ) हैं और ( आख़िरकार ) जहन्नम में ( जाएँगे ) ० जिस दिन उनको उनके मुंह के बल ( दोज़ख़ की ) आग में घसीटा जायगा ( और उनसे कहा जायगा कि अब तन बदन में ) दोज़ख़ ( की आग ) के लगने का मज़ा चक्खो ० हमने तमाम चीज़ों को एक अन्दाज़े के साथ पैदा किया है-( अज़ां-जुम्ला क़यामत का भी एक वक़्त मुक़र्रर है ) ० और हमारा काम तो बस एक बात होती है; जैसे आँख का झपकाना ० और (ऐ कुफ़्फ़ार-मक्का !) हम तुम्हारे (कितने) हम मशरबों को हलाक कर ही चुके हैं, तो कोई है ? कि नसीहत पकड़े ० और यह लोग जो कुछ भी कर चुके हैं ( इनके ) आमाल-नामों में ( लिखा हुआ मौजूद ) है ० और ( कोई काम भी हो ) छोटा और बड़ा-सब लिखा हुआ है ० ( जो लोग ) परहेज़गार ( हैं, वह बहिश्त के ) बाग़ों और नहरों में ० सच्ची ( इज़्ज़त की ) जगह बादशाह ( दो जहाँ ) क़ादिर ( मुतलक़ ) के मुक़र्रब होंगे ०

## सूरत—रह्मान

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ७८ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० ( जिन्नों और आदमियों पर ख़ुदाए ) रह्मान ( के जहां और बेशुमार एह-सानात हैं, अज़ां-जुम्ला यह कि उसी ) ने क़ुर्आन पढ़ाया ० उसीने इन्सान को पैदा किया ० ( फिर ) उसको बोलना सिखाया ० सूरज और चांद एक हिसाब के साथ ( गर्दिश में ) हैं ० और ( झाड़ी ) बूटियां और दरख़्त ( बारगाह-ख़ुदावन्दी में ) सर-बसुजूद हैं ० और उसीने आस्मान को ऊँचा किया है और तराज़ू बना दी है ० ताकि तुम लोग तोलने में (हद्द-एति-दाल से ) तजावुज़ न करो ०—

الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي
النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ۝
إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۝ وَمَا أَمْرُنَا
إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا
أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ
فِي الزُّبُرِ ۝ وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُسْتَطَرٌ ۝
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۝ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ
عِنْدَ مَلِيكٍ مُقْتَدِرٍ ۝

سورة الرحمن مكية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الرَّحْمَٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝
عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝
وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۝ وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا
وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝

ع

---

निस्सन्देह ( यह कुफ़्र तथा शिर्क के ) पापी ( एक स्पष्ट ) पथ-भ्रष्टता तथा मूर्खता में ( पड़े ) हैं। इन्हें ( अपनी इस मूर्खता का ज्ञान उस दिन भली भांति हो जावेगा ) जिस दिन कि यह ( दोज़ख़ की दहकती हुई ) अग्नि में अपने मुंह के बल झोंके जावेंगे ( और इनसे कहा जायगा कि ) दोज़ख़ के छूने का स्वाद चक्खो। ( और हे रसूल ! यदि यह इस धोखे में हों कि चूंकि क़यामत इस समय तक नहीं आई, इसलिये आगे भी नहीं आवेगी, तो यह उनकी बड़ी मूर्खता है )। निस्सन्देह हमने हर वस्तु को एक अनुमान के साथ उत्पन्न किया है। और ( यदि हम चाहें, तो अभी क़यामत आ जाय—परन्तु नियत समय से पहिले हम किसी वस्तु को उपस्थित नहीं किया करते )। हमारी आज्ञा तो बस एक बार ही पलक झपकने की तरह ( क्षण भर में पूर्ण हो जाती ) है ॥

और ( हे काफ़िरो ! ) हम तो ( तुमसे पहिले ) तुम्हारे ( बहुत से ) सहमत लोगों को ( इसी कुफ़्र शिर्क के पापों तथा उद्दण्डता और धूर्तता के कारण ) नष्ट ( भ्रष्ट ) कर चुके हैं। ( उनके वृतान्त शिक्षा तथा नसीहत प्राप्त करने के लिये बहु यथेष्ट हैं)-तो कोई है ? जो ( सोच विचार से काम ले और ) शिक्षा ग्रहण करे। ( हे रसूल ! इतना समझाने पर भी यदि यह लोग न समझें ) और ( अपनी हठ धर्मी से न मानें, तो यह जानें )। जो कुछ इन्होंने ( अब तक ) किया है ( वह इनके ) कर्म-पत्र में ( विद्यमान ) है। और( उनका ) हर छोटा और बड़ा ( पाप हमारे यहां ) लिखा हुआ है ( क़यामत के दिन अपनी करतूतों के कारण उन्हें दोज़ख़ का ईंधन बनना पड़ेगा । हाँ ! अवश्य संयमी ( तथा परहेज़गार लोग जन्नत के हरे भरे ) बाग़ों और ( दूध तथा मधु आदि की ) नहरों में शक्तिमान ( तथा अमर अजर ) बादशाह के पास ( आनन्द करते ) होंगे ॥

## सूरत–रह्मान

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ७८ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

( वह सर्व शक्तिमान अमर बादशाह ) करुणा–निधान ( तथा कृपालु है। उसी ) ने ( अज्ञानता के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश में लाने के लिये ) क़ुर्आन को सिखाया। (और चूंकि क़ुर्आन की शिक्षा तथा आज्ञाओं के प्रचार के लिये एक स्वाधीन सृष्टि की आवश्यकता थी, जिससे कि वह सत्य २ आज्ञा पालन कर सके। इसलिये ) उसने मनुष्य को उत्पन्न किया ( और उसको ) बोलना सिखाया। सूर्य और चन्द्रमा ( की चालें उसने ) एक ( विशेष ) हिसाब से ( नियत की ) हैं और ( यह सूखे ) झाड़ झङ्खाड़ और ( हरे भरे ) वृक्ष ( उसी को ) सजदा ( अर्थात दंडवत ) करते हैं। और उसीने ( छत की तरह ) आकाश को ऊंचा किया। और ( क्रय विक्रय में सुगमता के लिये ) तराज़ू को बनाया, जिससे कि ( हे मनुष्यो ! ) तुम तोलने में सीमा से न बढ़ जाओ—

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا
الْمِيْزَانَ ۝ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝ فِيْهَا
فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ
ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝ وَ
خَلَقَ الْجَاۗنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ
لَّا يَبْغِيٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يَخْرُجُ
مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ
كَالْاَعْلَامِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا
فَانٍ ۝ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝

और इन्साफ़ के साथ सीधी तोल तोलो और कम न तोलो ० और उसीने ख़ल्क़त के ( फ़ायदे के ) लिये ज़मीन बना दी है ० कि उसमें मेवे हैं और खजूर के दरख़्त हैं, जिन ( की गेलों ) पर ( कुद्रती ) ग़िलाफ़ चढ़े होते हैं ० और ( तरह तरह के ) अनाज, जो ( भूसो के ) ख़ोल में होते हैं और खुशबूदार फूल हैं ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौन–सी नेअमतों से मुकरोगे ० उसीने इन्सान (के जद्द-अमजद आदम) को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया है ० और जिन्नों को आग की लौ से ० तो (ऐ जिन्नो और आदमियो !) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौन–सी नेअमतों से मुकरोगे ० (वही जाड़े और गरमी में ) आफ़ताब के निकलने के दो मुख़्तलिफ़ मक़ामों और (ऐसे ही) डूबने के दो ( मुख़्तलिफ़ ) मक़ामों का मालिक है ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो !) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौन–सी नेअमतों से मुकरोगे० उसीने ( इस तरह के खारी और मीठे ) दो समन्दर बना निकाले कि आपस में मिलते हैं ० ( और फिर भी ) दोनों में एक पर्दा ( रहता ) है कि ( उससे एक दूसरे की तरफ़ ) बढ़ नहीं सकते ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो !) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौन–सी नेअमतों से मुकरोगे ० दोनों ( ही क़िस्म के समन्दरों ) में से मोती ( भी ) निकलते हैं और मूंगे ( भी ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौन-सी नेअमतों से मुकरोगे ० और उसीके हैं जहाज़, जो समन्दर में पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े (दिखाई देते) हैं ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौन–सी नेअमतों से मुकरोगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जितनी मख़्लूक़ात ( रूए ) ज़मीन पर है, सब फ़ना हो जाने वाली है ० और ( सिर्फ़ ) तुम्हारे पर्वर्दिगार की ज़ात बाक़ी रह जाएगी, जो ( बड़ी ) अज़मत वाली और बुज़ुर्ग ( ज़ात ) है ०—

और ( ठीक ) ठीक न्याय ( तथा ईमानदारी ) के साथ तोलो और तोल में ( कभी ) कमी न करो। और उसीने ( अपनी ) सृष्टि ( के
आराम ) के लिये पृथ्वी को ( बिछौने की तरह ) बिछाया ( कि ) उसमें ( उत्तम उत्तम ) मेवे और ( बढ़िया बढ़िया ) गुच्छेदार खजूरें
( उत्पन्न होती ) हैं। और ( उसमें अन्न का ) दाना ( उत्पन्न होता ) है, जिसके साथ भुस और जीविका ( भी होती ) है–तो ( हे जिन्नो
तथा मनुष्यो ! ) तुम अपने पालनहारे की कौन-कौन-सी नेअमतों का इन्कार करोगे। उसीने ( हे ) मनुष्य ! (तुझ ) को ठीकरी जैसी सूखी
मिट्टी से उत्पन्न किया और ( हे ) जिन ! ( तुझ ) को एक लपट मारने वाली अग्नि से उत्पन्न किया। तो ( बोलो ! हे जिन्नो तथा
मनुष्यो ! ) तुम अपने पालनहारे की कौन-कौन-सी नेअमतों का इन्कार करोगे ॥

( और वही ) स्वामी है दो मश्रिक़ का और ( वही ) स्वामी है दो मग़रिब का—तो ( हे जिन्नो ! तथा मनुष्यो ! ) तुम अपने
पालनहारे की कौन-कौन-सी नेअमतों का इन्कार करोगे। ( देखो ! यह भी उसीकी शक्ति का एक चमत्कार है कि ) उसने दो ( विभिन्न
गुणों के ) समुद्रों को ( इस प्रकार ) मिला दिया ( कि देखने में ) वह ( एक और ) मिले हुये ( विदित होते ) हैं–( परन्तु वास्तव में वह
एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं और ) उन दोनों के बीच में एक ( ईश्वर–कृत ) आड़ है कि ( जिसके कारण ) दोनों (परस्पर) गड-मड नहीं
होते। अतः (हे जिन्नो तथा मनुष्यो !) तुम अपने पालनहारे की कौन-कौन-सी नेअमतों का इन्कार करोगे। (और) इन दोनों (तरह के दरियाओं)
में से मोती और मूंगे (इत्यादि रत्न) निकलते हैं–(जिनसे तुम जटित आभूषण और असंख्य मनोहर सजावट के पदार्थ तय्यार करते हो)।
तो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ कि ) तुम अपने पालनहारे की कौन-कौन-सी नेअमतों का इन्कार करोगे। और ( इन
समुद्रों से न केवल यह लाभ है कि उनमें से सजावट के पदार्थ निकलते हैं, वरन् जीविका तथा व्यापारादि का भी उनसे गहरा सम्बन्ध
है। और यह भी ख़ुदा की शक्ति का चमत्कार है। अतः ) समुद्र में पर्वतों के समान ( यह ) चलने वाले जहाज़ जो ( स्थिर ) हैं ( और
डूबते नहीं, यह भी ) उसी ( महान तथा श्रेष्ठ ख़ुदा ) की ( आज्ञा से स्थिर ) हैं—तो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम
अपने पालनहारे की कौन-कौन-सी नेअमतों का इन्कार करोगे। ( और हे रसूल ! ) पृथ्वी पर जो ( कुछ भी विद्यमान ) है ( एक न
एक दिन ) वह ( अवश्य ) नष्ट होने वाला है। और तुम्हारे पालनहारे की ज़ात ( अर्थात वक्तित्व ) जो महानता तथा श्रेष्ठता वाली है
( केवल वह ) शेष रहेगी—( उसके अतिरिक्त कुछ नहीं शेष रहेगा ) ॥

तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० जितनी मख़्लूक़ात आस्मानों ( में ) और ज़मीन में है ( जो उनको दर्कार है, सबही तो ) उससे माँगते हैं । वह ( मुअत्तल और बेकार नहीं है, बल्कि ) हर रोज़ ( एक न एक ) काम में ( रहता ) है ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ऐ जिन्नो और आदमियो ! हम अन्क़रीब ( क़यामत के दिन ) कुल्लियतन ( हिसाब–आमाल के लिये ) तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होने वाले हैं ० तो (ऐ जिन्नो और आदमियो !) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ऐ गरोहे जिन व इन्सान! अगर तुमसे हो सके कि आस्मानों और ज़मीन के किनारों से ( होकर कहीं को ) निकल भागो, तो निकल देखो—मगर कुछ ऐसा ही ज़ोर हो, तो निकलो ! (और वह तुममें न है और न हो ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ( अगर तुम आस्मान व ज़मीन से कहीं को निकल जाना चाहो, तो ) तुम पर आग की कच्ची–पक्की लव बर्सा दी जाय कि तुम (उसको) दफ़े न कर सकोगे ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० फिर जब ( क़यामत के दिन ) आस्मान फटे और तेल की तरह ( उसकी रङ्गत ) लाल हो जाय, वह आख़री फ़ैसले का दिन होगा ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन-कौन-सी नेअमतों से मुकरोगे ० तो उस दिन न तो आदमियों से उनके गुनाहों की बाबत पूछा जायगा और न जिन्नों से ( क्योंकि ख़ुदा को बे-बताये सब मालूम है ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ( उस दिन ) गुनहगारों को उनकी सूरत से पहिचान लिया जायगा—

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ۝ یَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ کُلَّ یَوْمٍ هُوَ فِیْ شَاْنٍ ۝ فَبِاَیِّ
اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ۝ سَنَفْرُغُ لَکُمْ اَیُّهَ الثَّقَلٰنِ ۝
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ۝ یٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ
اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ۝ یُرْسَلُ عَلَیْکُمَا
شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝ فَبِاَیِّ
اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ۝ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَکَانَتْ وَرْدَةً کَالدِّهَانِ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا
تُکَذِّبٰنِ ۝ فَیَوْمَئِذٍ لَّا یُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ
اِنْسٌ وَّ لَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا
تُکَذِّبٰنِ ۝ یُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِیْمٰهُمْ فَیُؤْخَذُ

بالنواصي

तो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालन कर्त्ता की कौन–कौन–सी नेअमतों ( और किस किस शक्ति चमत्कार ) का इन्कार करोगे । पृथ्वी तथा आकाशों में जो (कोई भी) है, उसीसे (वह) माँगता है (और उसीसे सहायता चाहता है) । वह हर दिन एक ( नई ) शान में ( प्रगट होता ) है ( और क्षण-प्रति-क्षण अपनी पूर्ण शक्ति के नवीन २ चमत्कार दिखाता है ) । अतः ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन–किन नेअमतों ( तथा किस २ शक्ति के चमत्कार ) का इन्कार करोगे ॥

( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! ) हम अभी ( इस सांसारिक कार बार को पूर्ण करके ) तुम्हारे ( हिसाब किताब के ) लिये ( बिलकुल ) फ़ारिग़ ( अर्थात निश्चिन्त ) हुये जाते हैं । पुनः ( उस समय हम देखेंगे कि ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन–किन नेअमतों ( तथा किस २ शक्ति के चमत्कार ) का इन्कार करोगे । हे जिन्नों तथा मनुष्यों के समूह ! यदि तुममें इतनी शक्ति है कि पृथ्वी तथा आकाशों से बाहर हो जाय, तो ( तत्काल ) बाहर हो जा–परन्तु ( स्मरण रख ! ) बिना ( ईश्वर की ) शक्ति के तू ( कदापि ) बाहर नहीं हो सकता । पुनः ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ! तुम अपनी इस अज्ञानता का ख़ुदा को क्या उत्तर दोगे और ) अपने पालनहारे की किन किन नेअमतों का तुम इन्कार करोगे । ( स्मरण रक्खो ! यदि तुम्हारी अज्ञानता तथा अचेतना की मृत्यु के समय तक यही दशा रही, तो क़यामत के दिन ) तुम पर अग्नि की लपटें और धुवाँ छोड़ा जायगा ( कि ) तुम (उसे) रोक न सकोगे । ( और ) पुनः ( हे मनुष्यो तथा जिन्नो ! ) तुम अपने पालनहारे की कौन–कौन–सी नेअमतों का इन्कार करोगे ॥

सो जब आस्मान फट जायगा और ( ख़ुदा की महानता तथा श्रेष्ठता प्रगट करने के लिये ) वह लाल नरी की तरह लाल हो जायगा, तो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! तुम्हारी समस्त अचेतना दूर हो जावेगी । तनिक बताओ तो सही ! कि उस समय ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन–किन नेअमतों का इन्कार करोगे । ( स्मरण रक्खो ! ) उस (भयङ्कर ) दिन ( में ) किसी मनुष्य तथा जिन्न से उसके पापों के सम्बन्ध में पूछा ( तक ) न जावेगा ( और उसको दोज़ख़ की दहकती हुई आग में उसके कुकर्मों के करण झोंक दिया जावेगा ) तो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बोलो उस दिन ) तुम अपने पालनहारे की किन–किन नेअमतों का इन्कार करोगे । ( उस दिन जितने ) पापी ( होंगे ) अपने चेहरे ( की स्याही ) से पहिचान लिये जावेंगे ( और ) फिर ( उनके ) माथे के बालों और पैरों को पकड़ा जावेगा और खींचते घसीटते हुये उन्हें दोज़ख़ की ओर ले जाया जायगा ) ॥

بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا
الْمُجْرِمُونَ ۝ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ
آنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ۝ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا عَيْنَانِ
تَجْرِيَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۝ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ
فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ
دَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ

फिर ( उनके ) पट्टे और पावँ पकड़े जाएँगे ( और इस तरह कशां कशां उनको जहन्नम में ले जाएँगे ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन-कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० यह है वह जहन्नम, जिसको गुनहगार लोग झुटलाते हैं ० ( और क़यामत के दिन ) उसमें और खौलते हुये पानी में ( बे-क़रार पड़े ) फिरेंगे ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन-कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० और जो शख़्स ( आमाल की जवाब-दिही के लिये ) अपने पर्वर्दिगार के हुज़ूर में खड़े होने से डरता रहा, उसको ( बहिश्त के ) दो बाग़ ( मिलेंगे ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन-कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ( वह दोनों बाग़ बहुत सी ) टहनियों वाले ( यानी ख़ूब हरे भरे होंगे ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० दोनों में दो चश्मे ( पड़े ) बह रहे होंगे ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन-कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० दोनों में हर मेवे की दो क़िस्में होंगी ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ( जन्नती उनमें ऐसे उम्दा ) फ़र्शों पर तकिये लगाये ( बैठे ) होंगे कि ताफ़्ते के उनके अस्तर होंगे और दोनों बाग़ों के फल ( इस क़द्र ) झुके होंगे ( कि चाहें, तो ताज़ा-बताज़ा दरख़्तों पर लगे ही लगे खा लें ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन-कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० उनमें (पाक-दामन हूरें ) होंगी, जो ( ग़ैर की तरफ़ ) आँख उठाकर भी नहीं देखेंगी और जन्नतियों से पहिले न तो किसी इन्सान ने—

---

अतः ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम ( उस दिन ) अपने पालनहारे की किन-किन नेअमतों का इन्कार करोगे। ( और उन्हें दोज़ख़ में डालकर बताया जायगा कि ) यही वह दोज़ख़ है कि जिसको यह पापी झुठलाते थे। ( उस दिन ) यह ( कुकर्मी ) दोज़ख़ ( की अग्नि ) और खौलते हुये गर्म पानी के बीच में फिरेंगे ( और मछली की तरह तड़पेंगे, किन्तु उससे बाहर न निकल सकेंगे )। फिर ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम ( उस समय ) अपने पालनहारे की किन-किन नेअमतों का इन्कार करोगे। और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) जो मनुष्य ( अपना हिसाब किताब देने के लिये ) अपने पालनहारे के सन्मुख खड़ा होने से ( हर समय ) डरता ( तथा भय खाता ) रहता हो, उसके ( आनन्द के ) लिये दो ( हरे भरे ) बाग़ ( तय्यार ) होंगे ( और उसपर खुदा की बहुत बड़ी कृपा होगी )॥

अतः ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! तनिक विचार तो करो कि ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन-किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसकी किन-किन कृपाओं की कृतघ्नता करोगे। और वह ) दोनों बाग़ अधिक टहनियों वाले ( तथा बहु फलों वाले वृक्षों से पटे पड़े ) होंगे। अतः ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! ) तुम अपने पालनहारे की किन किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसकी कृपाओं की कहां तक कृतघ्नता करोगे। और ) उन दोनों ( बाग़ों ) के बीच में दो ( अतिशय स्वच्छ ) सोते बह रहे होंगे। अतः ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन-किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहां तक न मानोगे। और ) उन दोनों ( बाग़ों ) में हर मेवे की दो ( दो ) क़िस्में होंगी। सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन-किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहाँ तक न मानोगे )॥

( और जन्नती लोग उनमें गाव ) तकिया लगाये ऐसे २ बिछौनों पर विराजमान होंगे, जो ( जन्नत के एक विशेष ) मोटे रेशम के ( बुने हुये ) होंगे। और ( उन ) दोनों बाग़ों के फल ( इतने ) झुके ( हुये ) होंगे ( कि जब वह चाहेंगे, बैठे २ उन्हें तोड़ लेंगे )। सो (हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ कि ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन-किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहाँ तक न मानोगे और ) उन ( बाग़ों ) में ( उनके विश्राम के लिये दिव्य २ भवन बने होंगे। और उनको सन्तुष्टि के लिये सुन्दर रूपवान तथा नेक ) नीची दृष्टि वाली ( शर्मीली ) स्त्रियां होंगी कि जिन्हें जन्नतियों से पहिले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा और न जिन्न ने॥

قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۞ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞
كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۞ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞ هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ
إِلَّا الْإِحْسَانُ ۞ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۞ وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ۞ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞ مُدْهَامَّتَانِ ۞ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞ فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ۞
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ
وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ۞ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞
فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ۞ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۞ حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۞ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ
قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۞ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞

उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ( उनकी रङ्गतें ऐसी लाल भभूका होंगी कि ) गोया वह याक़ूत और मूंगे ( की बनी हुई ) हैं ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० भला नेकी के सिवा नेकी का बदला कुछ और भी हो सकता है ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो !) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० और इन दो ( बाग़ों ) के अलावा ( जन्नतियों के लिये ) दो बाग़ और होंगे ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ( वह ) दोनों ( बाग़ ख़ूब ) गहिरे सब्ज़ होंगे ० तो (ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन कौनसी-नेअमतों से मुकरोगे ० उन ( दोनों बाग़ों ) में दो चश्मे ( पड़े ) उबल रहे होंगे ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० उन ( दोनों बाग़ों ) में मेवे ( होंगे ) और खजूरें ( होंगी ) और अनार ( होंगे ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० उनमें नेक ( सीरत ) ख़ूब-सूरत ( औरतें ) होंगी ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ( वह औरतें ) हूरें ( होंगी )–जो ( अपने रहने के ) ख़ेमों में बन्द ( बैठी हैं कि उनको बाहर की हवा भी नहीं लगने पाती ) ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० जन्नतियों से पहिले न तो किसी इन्सान ने उन (हूरों) पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार की कौन–कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ०—

सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ कि ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहां तक न मानोगे । और उन स्त्रियों की रङ्गत गुलाब के फूल की तरह सुर्ख़ होगी । देखने वाले को यह विदित होगा कि ) मानो याक़ूत और मूंगे ( की बनी हुई ) हैं । सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ कि ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहां तक न मानोगे ) । भला ( सच्चे ) सुकर्मों का प्रतिफल इस ( बहुमूल्य ) पुरस्कार के अतिरिक्त ( और कुछ भी ) हो सकता है । सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! ) तुम अपने पालनहारे की किन किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहां तक न मानोगे ) । और ( जिस प्रकार यह दो बाग़ विशेषतः जन्नतियों के लिये जन्नत में हैं, उसी प्रकार ) उनके अतिरिक्त दो बाग़ ( और ) हैं ( जो साधारण जन्नतियों के लिये तय्यार किये गये हैं ) ॥

अतः ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालनहारे की किन–किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहां तक न मानोगे । और यह ) दोनों ( बाग़ भी ) बहुत हरे ( भरे ) हैं । सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालन कर्त्ता की किन किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहाँ तक न मानोगे । और ) उन दोनों ( बाग़ों ) में ( भी ) दो सोते ( बहते ) हैं ( जो ) बहुत उफनाने वाले ( हैं ) । सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालनहारे की किन–किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहाँ तक न मानोगे । और ) उन दोनों ( बाग़ों ) में ( भी भाँति भाँति के ) मेवे हैं और ( विशेषतः उत्तम २ ) खजूरें और अनार । सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालनहारे की किन–किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहाँ तक न मानोगे ) ॥

( और उन जन्नतियों के लिये भी उन बाग़ों में दिव्य २ भवन बने हुए हैं । और उनकी सन्तुष्टि के लिये भी ) उनमें अत्यन्त रूपवती स्त्रियाँ ( विद्यमान ) हैं । सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालनहारे की किन–किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहां तक न मानोगे । और ) वह स्त्रियां गोरे रङ्ग की होंगी ( और कामदार तथा सुरक्षित ) ख़ेमों में ( निवास करेंगी ) । सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालनहारे की किन–किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहाँ तक न मानोगे । और वह स्त्रियां भी क्वारी होंगी )-उन्हें भी न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने । सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालनहारे की किन–किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहां तक न मानोगे ) ॥

مُتَّكِـِٔينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ تَبَارَكَ اسْمُ
رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

سورة الواقعة مكية وهي ست وتسعون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا
كَاذِبَةٌ ۝ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝ إِذَا رُجَّتِ
الْأَرْضُ رَجًّا ۝ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ
هَبَاءً مُّنبَثًّا ۝ وَكُنتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۝
فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَأَصْحَابُ
الْمَشْأَمَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝ وَالسَّابِقُونَ
السَّابِقُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝ فِي جَنَّاتِ
النَّعِيمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَلِيلٌ مِّنَ

जन्नती वहाँ सब्ज़ क़ालीनों और उम्दा उम्दा फ़र्शों पर तकिये लगाये ( बैठे ) होंगे ० तो ( ऐ जिन्नो और आदमियो ! ) तुम अपने पर्वदिगार की कौन-कौनसी नेअमतों से मुकरोगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारे पर्वर्दिगार का नाम बड़ा बा-बरकत ( नाम ) है ( और वह बड़ी ) अज़ामत वाला ( और लोगों पर ) एहसान करने वाला है ०

## सूरत—वाक़िअह

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ९६ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० जब ( क़यामत जो ज़रूर ) होने वाली ( है ) वाक़े होगी ० (और) उसके वाक़े होने में कुछ भी ख़िलाफ़ नहीं ० ( उस वक़्त लोगों का फ़र्क़ मरातिब ज़ाहिर होगा; बाज़ों को ) नीचा दिखायेगी ( और बाज़ों के दर्जे ) बुलन्द करेगी ० ( और वाक़े होगी उस वक़्त )—जबकि ज़मीन बड़े ज़ोर से हिलने लगेगी ० और पहाड़ ( टकरा कर ऐसे ) रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे ० कि ( जैसे ) ज़र्रे पड़े उड़ रहे हैं ० और ( उस वक़्त ) तुम लोगों की ( भी ) तीन क़िस्में होंगी ० ( एक ) तो दाहिने हाथ वाले-( सो ) दाहिने हाथ वालों का क्या कहना है ० और ( एक ) बायें हाथ वाले ( सो ) बायें हाथ वालों का क्याही बुरा हदड़ा है ० और ( तीसरे ) जो ( सबसे ) आगे ( सामने बिठाये गये ) हैं-( सो ) यह आगे ही ( बिठाने के क़ाबिल ) हैं ० ( कि ) यह बार्गाह-ख़ुदावन्दी के मुक़र्रब हैं ० ( इनको बहिश्त के ) आराम ( व आसाइश ) के बाग़ों में ( जगह दी जायगी ) ० (इस गिरोह में ) बहुत ( तो ) अगले लोगों में से ( होंगे ) ० और थोड़े—

( और ) यह ( जन्नती भी ) हरे क़ालीनों तथा सुन्दर ( सुन्दर ) बिछौनों पर ( गाव ) तकिया लगाये ( चैन से बैठे ) होंगे। सो ( हे जिन्नो तथा मनुष्यो ! बताओ ) तुम अपने पालनहारे की किन-किन नेअमतों का इन्कार करोगे ( और उसके उपकारों को कहाँ तक न मानोगे । हे रसूल ! इसमें कुछ भी सन्देह तथा शंका नहीं कि ) तुम्हारे पालन कर्त्ता का नाम बहुत बरकत वाला ( नाम ) है ( और वह ऐसा पालन कर्त्ता है ) जो महानता तथा श्रेष्ठता वाला है॥

## सूरत—वाक़िअह

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ९६ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥**

( लोगो ! ) जब वह होने वाली (अर्थात क़यामत की भयंकर घड़ी ) उपस्थित होगी । ( और यह प्रगट है कि वह अवश्य होगी ) उसके होने ( की ख़बर देने ) में झूठ ( की मिलावट ) तनिक ( भी ) नहीं । तो वह ( दुराचारियों के पदों को ) नीचा कर देगी ( और सदाचारियों के पदों को ) ऊँचा कर देगी । ( और यह उस समय स्थिर होगी ) जिस समय भूमि बिल्कुल ( हिंडोले की तरह ) हिलने लगेगी और पर्वत टुकड़े २ हो जावेंगे- [वरन] इतना बड़ा डील-डौल छोड़कर ) वह ( भूमि पर ) रेत-खेत हो जावेंगे । और तुम ( हे संसार वालो ! जितने विद्यमान हो [और] जितने गुज़र चुके और जितने आगे को होंगे, सबके सब ) तीन क़िस्मों में ( विभाजित ) हो जाओगे । ( एक ) तो ( अपना कर्म-पत्र अपने ) दाहिने हाथ ( में लेने ) वाले, तो दाहिने हाथ ( में कर्म-पत्र लेने ) वालों )के पदों का क्या ठिकाना ( है ) ॥

और ( दूसरे कर्म-पत्र अपने ) बाएं हाथ (में लेने) वाले, तो क्या ( ही अभागे ) हैं बाएं हाथ ( में कर्म-पत्र लेने ) वाले । और ( एक जो सौभाग्य तथा उच्च पदों की दृष्टि से सबसे ) आगे आगे ( हैं ) तो ( वह अपने सुकर्मों के कारण ) आगे २ हो (होने के योग्य) हैं । (निस्सन्देह) यही हैं ( ख़ुदा के ) निकटवर्ती ( और यही आनन्द ) मंगल के बाग़ों में ( रहने वाले होंगे । इन सौभाग्यवानों में ) बहुत से (तो) अगले ( समय के ) लोगों में से ( दाख़िल ) होंगे और थोड़े से पिछले ( समय के ) लोगों में से ( भी ) ॥

الْاٰخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ
عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ
مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۝ وَكَاْسٍ
مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا
يُنْزِفُوْنَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝ وَلَحْمِ
طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝ كَاَمْثَالِ
اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۝ اِلَّا
قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ مَآ
اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۝ وَّطَلْحٍ
مَّنْضُوْدٍ ۝ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝
وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا
مَمْنُوْعَةٍ ۝ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ

पिछलों में से ( भी ) ० एक दूसरे के आमने-सामने जड़ाऊ तख़्तों पर तकिये लगाये ( बैठे ) होंगे ० ग़िल्मान ( बहिश्त ) जो हमेशा ( लड़के ही बने ) रहेंगे, उनके पास ( शर्बत वग़ैरह पीने के लिये ) आबख़ोरे और सुतव्या और ( ऐसी ) शराब-साफ़ के जाम लाते और लेजाते होंगे ० जिस ( के पीने ) से न तो उनको दर्द-सर हो-( जो ख़ुमार में होता है ) और न बकवास लगे ० और ( नीज़ ) जिस क़िस्म का मेवा पसन्द करें ० और जिस क़िस्म के परन्दों के गोश्त को उनका जी चाहे—(वही गोश्त) ० और (इन नेअमतों के अलावा एहतियात से कई) तहों में रक्खे हुये मोतियों की तरह की ( ख़ुश-रङ्ग ) बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी ० (यह) बदला ( है ) उन ( नेक ) आमाल का, जो ( दुनिया में ) करते रहे ० वहां न तो कोई लग्व बात सुनेंगे और न ख़िलाफ़-तहज़ीब ० बस ( हर तरफ़ से ) सलाम ( ही ) सलाम की आवाज़ें ( चली आ रही होंगी ) ० और दाहिने हाथ वाले-( सो इन ) दाहिने हाथ वालों का क्या कहना है ० कि बे-कांटे की बेरियों ० और लदे हुये केलों ० और लम्बी लम्बी छावँ ० और पानी के झिरनों ० और इफ़रात के मेवों में ० जो ( बारह महीने ) बिला नाग़ा बे रोक टोक इनको मिला करेंगे ० ऊँचे ऊँचे फ़र्शों ( की आसाइश ) में ( मज़े कर रहे ) होंगे ० ( और इनको भी हूरें मिलेंगी और ) इन ( हूरों ) का हमने ( इनके लिये एक दम से )—

(जन्नत में यह लोग) जड़ाऊ सिंहासनों ( तथा कामदार बिछौनों ) पर ( गाव ) तकिया लगाये हुये (बड़े आनन्द मङ्गल के साथ) विराजमान होंगे। ग़िल्मान जो ( सदा बहार फूल की तरह ) सर्वदा लड़के ही ( बने ) रहेंगे, उनके पास ( उत्तम २ शरबतों के भरे हुये ) गिलास और कूज़े और ऐसी ( पवित्र तथा ) स्वच्छ मदिरा के प्याले ला रहे होंगे कि जिस( के पीने ) से न ( कुछ उन्माद होगा और न उन्माद उतरते समय जो शिर पीड़ा होती है, वह ) शिर पीड़ा होगी और न बुद्धि ख़राब होगी ॥

और ( पीने की वस्तुओं के अतिरिक्त ) जो मेवा वह ( खाना ) पसन्द करेंगे ( वह उनके लिये विद्यमान होगा )। और ( मेवों के अतिरिक्त ) जिन (जिन) पक्षियों का वह मांस (खाना) चाहेंगे (वह मांस भी)। और (इन शारीरिक सुखों के अतिरिक्त आत्मा को प्रसन्न तथा प्रफुल्लित करने के लिये उनके लिये ख़ज़ानों में ) सेंते हुये ( चमकदार ) मोतियों की तरह गोरी गोरी ( और मृगया नयनों के सदृश) बड़े बड़े नेत्रों वाली ( रूपवती ) स्त्रियां भी होंगी। ( वास्तव में यह सब कुछ उस मन मारने और ) उन ( शुभ ) कर्मों का प्रतिफल है, जो वह ( दुनिया में किया ) करते थे। जन्नत में यह ( नेक लोग ) न कोई बेहूदा ( तथा निरर्थक शब्द ) सुनेंगे और न कोई पाप की बात, परन्तु ( हां ! चारों ओर से ) शुभ-शब्द सलाम-सलाम ( अवश्य सुनेंगे ) ॥

और दाहिने हाथ ( में कर्म-पत्र लेने ) वाले, तो दाहिने हाथ (में कर्म- पत्र लेने) वालों (के पदों का भला) क्या ठिकाना। (उनके पद तो बहुत ऊँचे होंगे)। यह भी बिना कांटे की बेरियों में और लदे ( फँदे ) केलों में और लम्बे ( लम्बे ) छाहों में और ( स्वच्छ तथा निर्मल झिरनों के ) झिरते हुये पानी में और ( केलों तथा बेरों के अतिरिक्त ) बहुत मेवों में, जो न कभी व्यतीत होंगे और न जिन ( के खाने ) से कभी रोका जायगा। और उच्च (श्रेणी के) बिछौनों में (चैन की वंशी बजा रहे ) होंगे। (और उनकी सन्तुष्टि के लिये भी स्त्रियां होंगी )। उन्हें हम ही ने ( अपनी पूर्ण शक्ति से क्या ही मनोहर ) बनाया है—

اِنْشَآءً ۙ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۙ عُرُبًا اَتْرَابًا ۙ لِّاَصْحٰبِ
الْيَمِيْنِ ؕ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ وَثُلَّةٌ مِّنَ
الْاٰخِرِيْنَ ؕ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ
الشِّمَالِ ؕ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ۙ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۙ
لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ
مُتْرَفِيْنَ ۚ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ
الْعَظِيْمِ ۚ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا
تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ اَوَاٰبَآؤُنَا
الْاَوَّلُوْنَ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ۙ
لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ؕ ثُمَّ
اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ لَاٰكِلُوْنَ
مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ
فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۚ فَشٰرِبُوْنَ

बना खड़ा किया है ० और इनको ( ऐसा ) बनाया कि वह क्वारियां ( हैं ) ० प्यारी प्यारी ( और अलावा बरीं इन ) दाहिने हाथ वाले जन्नतियों की हम-उम्र ० (इस गिरोह में) कसरत से अगले लोग (होंगे) ० और कसरत ( ही ) से पिछले ( भी ) ० और बायें हाथ वाले-( सो इन ) बायें हाथ वालों का क्या ही बुरा हदड़ा है ० कि ( आतिश-दोज़ख़ की ) सेंक में हांगे और भुलस्ते पानी में ० और काले स्याह धुएँ के साये में ० कि न तो उसमें खुनकी ही है और न इज़्ज़त की जगह ० यह लोग इससे पहिले ( दुनिया में बड़े ) आसूदा थे ० और ( आसूदगी के ग़र्रे में ) बड़े गुनाह ( यानी शिर्क ) पर इसरार करते रहते थे ० और ( क़यामत की निस्बत ) कहा करते थे कि क्या जब हम मर जाएंगे और ( मरे पीछे ) मिट्टी हो जाएंगे और ( हमारी सिर्फ़ ) हड्डियां ( रह जाएँगी )–क्या ( ऐसी हालत में ) हम ( दुबारा ) उठा खड़े किये जाएँगे ० और क्या हमारे ( सब ) अगले बाप दादा ( भी ) ० ( ऐ पैग़म्बर ! तुम अपने ज़माने के मुन्किरीन क़यामत से ) कहो कि बेशक ! अगले और पिछले ( सब ) ० रोज़—मुक़र्रर के वक़्त पर ज़रूर इकट्ठे किये जाएँगे ० फिर ऐ गुमराहो ! ( और क़यामत के ) झुटलाने वालो ० तुमको (दोज़ख़ में) थूहर का दरख़्त खाना होगा ० और उसीसे पेट भरना पड़ेगा ० फिर ऊपर से भुलस्ता हुआ पानी पीना होगा० और पीना ( भी ) होगा—

अर्थात हमने उनको क्वारी रमणी ( तथा ) समान अवस्था वाली बनाया है। ( और ) दाहिने हाथ ( में कर्म-पत्र लेने ) वाले ( सौभाग्यवान ) लोगों के लिये ( उन्हें नियुक्त कर दिया है। उन सौभाग्यवानों में ) एक बड़ा समूह अगले ( समय के ) लोगों का होगा और एक बड़ा समूह पिछले लोगों का होगा। और ( रहे अपना कर्म-पत्र ) बाएं हाथ ( में लेने ) वाले, तो ( उनका ) क्या ( है, बड़े दुर्भाग्य ) हैं-( यह ) बाएं हाथ ( में कर्म-पत्र लेने ) वाले ॥

यह ( दोज़ख की ) जलन में ( झुलसते ) होंगे और खौलते पानी में ( भुलसते ) और काले ( भट ) धुवें की छाहों में ( घुटते होंगे ) जो न ( कुछ ) ठंढा हागा और न ( कुछ ) लाभ दायक—क्योंकि यह लोग इससे पहिले ( अर्थात दुनिया में ) बड़े ( निश्चिन्त तथा ) चैन से थे। और ( खुदा के कृतघ्न होने के बदले ) महान पाप ( अर्थात शिर्क ) पर अड़ते थे। और (क़यामत के विषय में शंका करते थे और) कहते थे कि क्या जब हम मर जायंगे और ( मर कर धूलि तथा ) मिट्टी और ( निरी खोखली ) हड्डियाँ बन जावेंगे, तो क्या ( ऐसी दशा में ) हम फिर ( कभी ज़िन्दा करके अपनी अपनी कब्रों से ) उठाए जावेंगे ? और क्या हमारे ( वह ) बाप ( दादा ) भी-( जिन्हें मरे हुये सैकड़ों वर्ष व्यतीत हो गये ) ॥

( हे रसूल ! ) तुम ( अपने समय के क़यामत न मानने वालों और कुफ्र शिर्क करने वालों से ) कहदो कि निस्सन्देह तुम अगले और पिछले ( सबके सब क़यामत के ) नियत दिन के ( एक निश्चित ) समय पर ( अवश्य दुबारा जीवित किये जाओगे। और अपने अपने कुकर्मों का हिसाब किताब देने के लिये क़यामत-क्षेत्र में ) एकत्रित किये जाओगे। ( और ) फिर ( अभियोग सिद्ध होने के पश्चात ) तुम हे पथ-भ्रष्टो ! ( सत्य के ) झुठलाने वालो ! ( दोज़ख की दहकती हुई अग्नि में ) अवश्य ( झोंके जाओगे और वहां ) थूहर ( जैसे कड़वे ) वृक्ष को खाओगे और उसीसे ( अपने ) पेटों को भरोगे। फिर उसपर खौलता हुआ पानी पियोगे। और ( कई दिन के ) प्यासे ऊंट के सामान पियोगे—

( तो डक-डका कर ) प्यासे ऊँटों का सा पीना ० क़यामत के दिन यह उनको ज़ियाफ़त होगी ० ( लोगो ! अब भी ) हमही ने तुमको पैदा किया है, तो तुम ( क़यामत में हमारे दुबारा पैदा करने को ) सच क्यों नहीं समझते ० भला देखो तो ( सही ! ) कि (यह) मनी, जो तुम ( औरतों के रह्म में ) पहुंचाते हो ० क्या इस ( मनी ) का आदमी तुम बनाते हो या हम बनाते हैं ० हमही ने तुम लोगों में मौत का क़रार-दादा कर दिया है और हम इससे आजिज़ नहीं ० कि तुम्हारी ( जिस्मानी ) शक्लें बदल दें और एक और हस्ती में जिसको तुम नहीं जानते, तुमको बना खड़ा करें ० और तुम तो ( हमारे ) पहिले बनाने को जानही चुके हो, तो ( अब ) क्यों नहीं सोचते (कि इसी तरह क़यामत में बनाये जा सकते हो) ० भला देखो तो (सही ! ) कि तुम लोग जो खेती करते हो ० क्या उसको तुम उगाते हो या हम उगाते हैं ० हम चाहें, तो ( कोई आफ़त भेज कर पकने से पहिले ) उसको चूरा-चूरा करदें और तुम बातें बनाते रह जावो ० ( कि ) हमतो तावान में आ गये ० बल्कि हमारे तो नसीब फूट गये ० भला देखो तो (यह) पानी जो तुम पीते हो ० क्या बादल से उसको तुमने बर्साया है या हम बर्साते हैं ० हम चाहें, तो उसको ( ऐसा ) खारी करदें ( कि ज़बान पर भी न रक्खा जाय )-तो तुम क्यों नहीं शुक्र करते ० भला देखो तो (सही ! यह) आग जो तुम सुलगाते हो ० इसके दरख़्त को ( जिसकी लकड़ियां इसमें जलाई जाती हैं ) तुमने पैदा किया है—

شرب الهيم ۝ هذا نزلهم يوم الدين ۝ نحن
خلقنكم فلولا تصدقون ۝ افرءيتم ما تمنون
ءانتم تخلقونه ام نحن الخلقون ۝ نحن قدرنا
بينكم الموت وما نحن بمسبوقين ۝ على ان
نبدل امثالكم وننشئكم في ما لا تعلمون ۝
ولقد علمتم النشاة الاولى فلولا تذكرون ۝
افرءيتم ما تحرثون ۝ ءانتم تزرعونه ام
نحن الزرعون ۝ لو نشاء لجعلنه حطاما
فظلتم تفكهون ۝ انا لمغرمون ۝ بل نحن
محرومون ۝ افرءيتم الماء الذي تشربون ۝
ءانتم انزلتموه من المزن ام نحن المنزلون ۝
لو نشاء جعلنه اجاجا فلولا تشكرون ۝
افرءيتم النار التي تورون ۝ ءانتم انشاتم

نحن

इन ( शिर्क करने वालों और बाएँ हाथ में कर्म-पत्र लेने वालों ) की क़यामत के दिन ( बस ) यह ( आदर सम्मान तथा) ज़ियाफ़त होगी। (नादानो ! अब भी) हमही ने तुमको उत्पन्न किया है, तो तुम (हमको अपना जन्म-दाता तथा स्वामी) क्यों नहीं ( समझते और क़यामत के विषय में जो कुछ हम कहते हैं, उसको सत्य क्यों नहीं ) मानते ? भला हमें बताओ तो ( सही ! ) कि यह वीर्य्य जो तुम ( स्त्रियों के गर्भाशय में ) डालते हो, क्या उसको (मनुष्य के रूप में ) तुम बनाते हो ! वा हम हैं ( उसके ) बनाने वाले। ( और जिस प्रकार हमने तुमको उत्पन्न किया है, इसी प्रकार ) हमही ने तुममें मृत्यु को (एक निश्चित समय पर ) नियत कर दिया है। और हम इस ( बात ) से भी विवश नहीं हैं कि तुम्हारे बदले तुम जैसे और ( मनुष्य ) उत्पन्न करदें। और तुमको ऐसी सूरत में ढाल दें, जिसकी तुमको ख़बर ( तक ) नहीं ( अर्थात किसी प्रकार का पशु बनादें ) ॥

और तुम ( अपनी उस ) पहिली उत्पत्ति से तो अभिज्ञ ही हो, तो फिर तुम क्यों नहीं विचार करते ( और इस पहिली उत्पत्ति से दूसरी उत्पत्ति को क्यों नहीं जान लेते। अर्थात यह मोटी सी बात भी तुम्हारी समझ में नहीं आती कि जिस प्रकार तुम प्रथम बार उत्पन्न हुए, उसी प्रकार दूसरी बार क़यामत में भी तुम उत्पन्न हो जाओगे )। भला हमें ( तनिक ) बताओ तो ( सही ! ) कि तुम जो खेती ( क्यारी ) करते हो, तो क्या उस ( खेती ) को उगाने तुम हो ? अथवा हम उगाते हैं। ( निस्सन्देह उसके उगाने की शक्ति हम ही में है और हम ही उसको अपनी कृपा से उगाते हैं)। और यदि हम चाहें, तो उसे (न उगाएँ और कांटों की तरह सुखा दें। और सूखी घास फूस की तरह ) चूरा चूरा बनादें। पुनः तुम आश्चर्य करने लगो (और भूखों मरने लगो और प्रत्येक से कहते फिरो कि) हम तो (बड़े) टोटे में आ गये, वरन ( बड़े ) दुर्भाग्य हो गये ( कि हमारी समस्त पूंजी नष्ट हो गई) ॥

भला हमें बताओ तो ( सही ! ) कि यह (मीठा) पानी जो तुम पीते हो, तो क्या उसका मेघ-द्वारा तुम वर्षाते हो ? अथवा (उसके वर्षाने वाले हम है। ( निस्सन्देह उसके वर्षाने की शक्ति हमही में है और हम ही उसको अपनी कृपा से वर्षाते हैं)। और यदि हम चाहें, तो उसको ( ऐसा ) कड़ुवा बनादें (कि तुम प्यासे मर जाओ और उसका एक घूंट भी न पी सको)। अतः ( हे अज्ञानो ! ) तुम (हमारी नेअमतों की ) कृतज्ञता क्यों नहीं करते। भला हमें बताओ तो ( सही ! ) कि जो अग्नि तुम सुलगाते हो, क्या उस ( की लकड़ियों ) के वृक्ष को तुम उत्पन्न करते हो अथवा हम हैं ( उसके ) उत्पन्न करने वाले ॥

شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا
تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِلْمُقْوِينَ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ
رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ۝
وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۝ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ
كَرِيمٌ ۝ فِي كِتَابٍ مَكْنُونٍ ۝ لَا يَمَسُّهُ إِلَّا
الْمُطَهَّرُونَ ۝ تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ۝ وَتَجْعَلُونَ
رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ۝ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ
الْحُلْقُومَ ۝ وَأَنْتُمْ حِينَئِذٍ تَنْظُرُونَ ۝ وَنَحْنُ
أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَٰكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۝
فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝ تَرْجِعُونَهَا
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝
فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝ وَأَمَّا إِنْ كَانَ

या हम पैदा करते हैं ० हमने आग को ( दोज़ख़ की आग ) याद दिलाने और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिये बनाया है ० तो (ऐ पैग़म्बर !) अपने पर्वर्दिगार-आलीशान के नाम की तस्बीह ( व तक़्दीस ) करते रहो ० सो हम (शिहाब) सितारों के टूटने की क़सम खाते हैं ० और समझो, तो यह ( बहुत ही ) बड़ी क़सम है ० कि यह ( कुर्आन ) बड़ी क़द्र व मन्ज़िलत का कुर्आन है ० ( और हमारे हाँ ) एहतियात से रक्खी हुई किताब ( यानी लौह-महफ़ूज़ ) में ( लिक्खा हुआ मौजूद ) है ० ( और ) पाक फ़रिश्तों के सिवा कोई उसको हाथ नहीं लगाने पाता ० ( और उसीकी नक़ल यह कुर्आन है, जो ) पर्वर्दिगार-आलम की तरफ़ से ( पैग़म्बर-आख़िरुज़्ज़मां पर) नाज़िल हुआ है ० क्या तुम (लोग) इस कलाम से मुन्किर हो ० और तुमने अपना रातिब बाँध लिया है कि ( इसको ) झुटलाते ही रहोगे ० तो क्या जब ( जान बदन से खिंचकर ) गले में आ पहुंचे ० और तुम उस वक़्त ( टुकर-टुकर पड़े ) देखा करो ( और कुछ न कर सको ) ० और हम तुम बीमारदारों की निस्बत कर, उस ( बीमार जां-बलब ) से ज़ियादा नज़्दीक हैं, मगर तुमको दिखाई नहीं देता ० ( हां ! ) तो अगर तुम (किसीके) दबैल नहीं बस्ते ० ( और ख़ुद इख़्तियारी के दावे में ) सच्चे हो, तो जान ( के गले में आये पीछे उस ) को ( बदन में ) लौटा क्यों नहीं लाते ० फिर ( मरने वाला ) अगर ( बार्गाह-ख़ुदावन्दी के ) मुक़र्रबों में से है ० तो ( उसके लिये ) आराम ( व आसाइश ) है और ( बा-फ़राग़त ) रोज़ी और मज़े की बहिश्त है ० और अगर ( वह )—

( तुम क्या उसको उत्पन्न कर सकते हो। हमही हैं उसके उत्पन्न करने वाले )। हमही ने उसको ( दोज़ख़ की अग्नि का ) स्मरण कराने और यात्रियों को आराम पहुंचाने के लिये बनाया है। अतः ( हे रसूल! ) तुम ( तो हर समय ) अपने श्रेष्ठ पालन कर्त्ता के नाम की पवित्रता वर्णन किया करो ( कि वास्तव में वही स्तुति प्रशंसा के योग्य है। उसके अतिरिक्त और कोई नहीं । लोगो ! यदि तुम कुर्आन को हमारा कलाम नहीं समझते ) तो हम तारों के टूटने की सौगन्ध खाते हैं। और ( इसमें कुछ भी ) सन्देह नहीं कि यदि तुम ( तारों की वास्तविकता से ) अभिज्ञ हो जाओ (और उनके टूटने की हिकमत को समझ लो) तो (यह बात बड़ी सुगमता से तुम्हारी बुद्धि में आ जायगी कि ) यह बहुत बड़ी शपथ है ( जो हमने खाई है और हम यह शपथ खाकर तुमको विश्वास दिलाते हैं कि हमारे रसूल, जो कलाम तुमको सुनाते हैं ) वह एक श्रेष्ठ कुर्आन है, जो लौह-महफ़ूज़ में ( लिखा हुआ ) है। जिसे पवित्रों ( अर्थात पवित्र और निकटवर्ती फ़रिश्तों ) के अतिरिक्त कोई नहीं छू सकता ॥

( और ) यह संसार के पालन कर्त्ता की ओर से (संसार के पालनहारे के रसूल मुहम्मद पर ) अवतीर्ण किया गया है। (नादानो !) क्या तुम इस कुर्आन ( की सच्चाई ) का इन्कार करते हो और अपनी जीविका ( के समान अपने ऊपर ) इस ( बात ) को ( आवश्यक तथा फ़र्ज़ नियत) करते हो कि तुम इसको (निष्प्रयोजन) झुठलाते ही रहोगे। (अच्छा यदि तुम्हारा यह व्यवहार सत्य है और तुम्हारा कुर्आन को झुठलाना ठीक है ) तो क्या जब ( किसी रोगी की आत्मा समस्त शरीर से निकल कर ) गले में आजावे ( अर्थात मृत्यु निकट हो ) और तुम ( दवा दारू करने वाले तथा उसके सगे और मित्र होकर ) उस समय ( उसकी इस दशा को अपने नेत्रों से ) देखो-( तो उसकी कुछ सहायता कर सकते हो ? ) और ( इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि ) हम तुम्हारी अपेक्षा उस ( रोगी ) से अधिक निकट ( अर्थात उसकी दशा के जानने वाले होते ) हैं-परन्तु तुम देखते नहीं हो ॥

( हाँ !) तो यदि तुम ( वास्तव में किसी के बन्दे तथा ) आधीन नहीं हो ( और कुर्आन तुमको ख़ुदा का आधीन ग़लत बताता है और वास्तव में तुम स्वतन्त्र और स्वाधीन हो और अपने इस दावे में ) सच्चे हो, तो ( इस मरने वाले रोगी की) आत्मा को उसके शरीर में वापिस क्यों नहीं ले आते। सो यदि कोई ( मरने वाला ख़ुदा के ) निकटवर्ती बन्दों में से हुआ, तो उसके लिये ( हमारे यहाँ ) सुख ( आनन्द ) तथा ( मान की ) जीविका और नेअमतों वाली जन्नत ( तय्यार ) है। और जो दाहिने हाथ ( में कर्म-पत्र लेने ) वालों में से हुआ—

مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحٰبِ
الْيَمِيْنِ ۝ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّالِّيْنَ ۝
فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ۝ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ۝ إِنَّ هٰذَا
لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝

سورة الحديد مدنية وهي تسع وعشرون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
هُوَ الْأَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ
وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا

दाहिने हाथ वालों में से है ० तो ( उससे कहा जायगा कि ऐ शख़्स ! ) जो दाहिने हाथ वालों में है, तुमपर सलाम ० और अगर झुटलाने वालों ( और ) गुमराहों में से है ० तो खुलस्ते पानी की ज़ियाफ़त है ० और ( आख़िरकार ) जहन्नम में धकेल देना ० बेशक ( आख़िरत का ) यह ( हाल जो बयान किया गया )-बिलकुल सच ( और ) यक़ीनी है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) अपने पर्वर्दिगार-आलीशान के नाम की तस्बीह ( व तक़्दीस ) करते रहो ०

## सूरत-हदीद

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें २९ आयतें और ४ रुकूअ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० जो ( मख़्लूक़ात ) आस्मानों ( में ) और ज़मीन में है-( सब ही तो ) अल्लाह की तस्बीह ( व तक़्दीस ) करते हैं और वह ग़ालिब ( और ) हिक्मत वाला है ० आस्मानों ( की ) और ज़मीन की सल्तनत उसीकी है, ( वही ) जिलाता और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ० वही शुरू से है और वही आख़िर तक रहेगा और वह ( क़ुद्रतों से ) ज़ाहिर और ( ज़ात व सिफ़ात से ) पोशीदा है और वह हर चीज़ से वाक़िफ़ है ० वही ( क़ादिर-मुतलक़ ) है, जिसने छः दिन में आस्मानों ( को ) और ज़मीन को पैदा किया। फिर अर्श ( बरीं ) पर जा बिराजा। जो चीज़ ज़मीन में दाख़िल होती ( जैसे पानी और बीज और मुर्दे वग़ैरह ) और जो चीज़—

तो ( उससे कहा जावेगा ) तेरे लिये सलामती है कि तू दाहिने हाथ ( में कर्म—पत्र लेने ) वालों में से है ( और संयमी तथा परहेज़गार है )। और जो झुठलाने वालों ( और ) पथ—भ्रष्टों में से हुआ, तो ( गर्म ) खौलते हुये पानी से ( उसकी ) मेहमानी होगी और ( उसको ) दोज़ख़ में प्रवेश करना पड़ेगा। निस्सन्देह यह ( मरना, जीना, हिसाब, किताब और पुरस्कार तथा दंड के विषय में जो कुछ बताया गया ) बिल्कुल सच ( और ) वास्तविक है ( इसमें सचाई के विरुद्ध कोई बात नहीं )-तो ( हे पैग़म्बर ! ) तुम अपने महान पालन कर्त्ता के नाम की पवित्रता का वर्णन करो। ( काफ़िरों की बकवास को कुछ भी पर्वाह न करो )॥

## सूरत-हदीद

मक्की, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें २८ आयतें और ४ रुकूअ हैं॥

( निस्सन्देह ) अल्लाह तआला की पवित्रता वर्णन करता है, जो (फ़रिश्ता) आस्मानों में ( रहता हैं, वह भी ) और ( जो मनुष्य ) पृथ्वी में ( बसता ) है (वह भी)। और वही ( अल्लाह ) बलवन्त ( तथा ) हिकमत वाला है। आकाशों तथा पृथ्वी का राज्य उसीके लिये है। वही ( सबको ) जीवित रखता है और वही ( सबको ) मृत्यु देता है। और वही हर वस्तु पर ( हर प्रकार की ) शक्ति रखता है। वही ( सबसे ) पहिले से है और वही ( सबके ) पीछे तक रहेगा। और वही प्रगट और वही गुप्त है। और वही हर वस्तु को ( भली भांति ) जानता है। वही है-जिसने आकाश तथा पृथ्वी छः दिन (के अन्तर-काल) में बना दिया ( और ) पुनः (अपनी आज्ञा तथा आदेश प्रचलित करने के लिये ) अर्श पर विराजमान हुआ। जो वस्तु पृथ्वी के भीतर जाती है ( जैसे वर्षा का जल, वृक्षों के बीजादि ) और जो वस्तु—

ज़मीन से बाहर आती-( जैसे दरख़्त वग़ैरह ) और जो चीज़ आस्मान से उतरती-( जैसे मेंह वग़ैरह ) और जो चीज़ आस्मान की तरफ़ चढ़ती-( जैसे बुख़ारात और आमाल-नेक वग़ैरह ) वह ( सब कुछ ) जानता है और तुम लोग कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम किया करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है ० आस्मानों ( की ) और ज़मीन की सल्तनत उसीकी है और अल्लाह ही पर सब कामों का मदार है ० ( वही मौसम-गर्मा में ) रात को ( घटाकर ) दिन में दाख़िल करता और ( वही मौसम सर्मा में ) दिन को ( घटा कर ) रात में दाख़िल करता है और वह ( लोगों के ) दिली-ख़यालात ( तक ) से वाक़िफ़ है ० ( लोगो ! ) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लावो और उस ( माल ) में से जिसका तुमको ( अगलों का ) जा-नशीन ( बनाकर मालिक ) कर दिया है ( राह-ख़ुदा में भी ) ख़र्च करो। तो जो लोग तुममें से ईमान लाये और उन्होंने ( राह-ख़ुदा में ) ख़र्च ( भी ) किया, उनको आख़िरत में बड़ा अज्र मिलेगा ० और तुमको क्या हो गया है कि ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते-हालांकि रसूल तुमको तुम्हारे ही पर्वर्दिगार पर ईमान लाने के लिये बुला रहे हैं और अगर तुमको यक़ीन आये, तो ख़ुदा ( ख़ुद ) तुमसे (ईमान का) अहद ले चुका है ० वही ( ख़ुदाए-मेहर्बान तो ) है, जो अपने बन्दे ( मुहम्मद ) पर ( क़ुर्आन की ) खुली-खुली आयतें नाज़िल फ़र्माता है, ताकि तुमको ( कुफ़्र की ) तारीकियों से निकाल कर ( ईमान की ) रोशनी में लाये और बेशक अल्लाह तुम ( लोगों के हाल ) पर बड़ी शफ़्क़त रखता ( और ) मेहर्बान है ० और तुमको क्या हो गया है कि ( अपना माल ) राह-ख़ुदा में ख़र्च नहीं करते, हालांकि—

يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيْهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ ۝ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ
وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَهُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَأَنْفِقُوْا
مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوْا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا
بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ ۝
هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ لِيُخْرِجَكُمْ
مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ وَإِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ

---

उसमें से निकलती है-( जैसे सोना चांदी और वृक्ष तथा घास इत्यादि ) और जो वस्तु आकाश से उतरती है-( जैसे वृष्टि तथा फ़रिश्ते, सुख दुख ) और जो वस्तु उसमें चढ़ती है-( जैसे बुरे भले काम ) वह अल्लाह उन सबका ज्ञान रखता है ( उससे कोई वस्तु गुप्त नहीं है )। और ( हे संसार वालो ! ) तुम कहीं भी हो, वह तुम्हारे ( दम के ) साथ ( रहता ) है। और जो कुछ तुम करते हो ( वह ) अल्लाह उसको देखता है। आस्मानों का और पृथ्वी का राज्य उसीके (शक्ति के) अधिकार में है और सब ( बुरे भले ) काम अल्लाह ही तक पहुंचते हैं (अर्थात उसके ज्ञान में होते हैं)। और वही रात्रि को दिन में और दिन को रात्रि में प्रविष्ट करता है। और उसीको हृदयों की (गुप्त) बातों की ख़बर ( रहती ) है। ( अतः हे मनुष्यो ! यदि तुम सच्ची सफलता तथा उन्नति के अभिलाषी हो, तो ऐसी शक्ति वाले ) अल्लाह पर और उसके रसूल पर ( सच्चे दिल से ) ईमान ले आओ। और उस ( धन दौलत ) में से जिसका तुम्हें ( तुमसे पहिले जो लोग हो चुके हैं, उनका ) स्थानापन्न ( तथा प्रतिनिधि बनाकर उत्तराधिकारी ) कर दिया है-( उसके नाम पर ग़रीबों तथा दरिद्रों के कामों में ) व्यय करो। तो तुममें से जो लोग ईमान लाये और (ईमान लाने के पश्चात) उन्होंने (अल्लाह के नाम पर अपना रुपया पैसा भी ) व्यय किया, उसको ( ख़ुदा के यहां) बड़ा फल मिलेगा ॥

और ( काफ़िरो ! आख़िर ) तुमको क्या हो गया है, जो तुम (सर्व शक्तिमान ) ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते ( और विवश तथा अपाहिज मूर्तियों को पूजते हो )—यद्यपि ( उसके ) रसूल ( मुहम्मद ) तुमको ( बराबर मूर्ति—पूजा की बुराई बता रहे हैं और सत्य-धर्म का) बुलावा दे रहे हैं (और कह रहे हैं, कि तुम ( कुफ़्र की पूजा छोड़ो और ) अपने पालनहारे पर ईमान लाओ। और यदि तुम ( कुछ भी अपने हृदय में ) ईमान (तथा न्याय की योग्यता और सत्य पूजा का भाव ) रखते हो, तो ( कभी भी अपनी बनाई हुई मूर्ति की पूजा न करो। इसलिये कि संसार में आने से पहिले ही) तुमसे ख़ुदा ने ( सत्य-पूजा की ) प्रतिज्ञा करा ली थी ॥

और वही ( ख़ुदा ) अपने बन्दे ( मुहम्मद ) पर (अपने पवित्र कलाम की) स्पष्ट ( तथा प्रकाशमय अर्थ वाली ) आयतें अवतीर्ण करता है, जिससे कि वह ( अर्थात हमारे रसूल ) तुमको ( वह आयतें सुनावें, उनके अर्थ बतावें और कुफ़्र शिर्क के ) अन्धकारों से निकाल कर (इस्लाम के) प्रकाश में ले आएँ। और ( इसमें ) सन्देह नहीं कि अल्लाह तुम पर ( अर्थात अपने बन्दों पर ) अत्यन्त दयालु ( तथा ) कृपालु है ; और ( मुसलमानो ! ) तुमको क्या हो गया, जो तुम ( मुसलमान होकर अपना रुपया पैसा ) अल्लाह के मार्ग में व्यय नहीं करते। यद्यपि ( मुसलमान होने के कारण तुम इस बात को ख़ूब समझते हो कि )—

مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ
مَنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ط اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوْا ط
وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ج قِيْلَ
ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ط فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ
بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ط بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ

آस्मानों और ज़मीन ( सब ) का वारिस ख़ुदा ही है। तुम ( मुसल्मानों ) में से जिन लोगों ने फ़तह ( मक्का ) से पहिले ( राह-ख़ुदा में माल ) ख़र्च किये और ( दुश्मनों से ) लड़े, वह ( दूसरे मुसल्मानों के ) बराबर नहीं हो सकते। यह लोग दर्जे में उन ( मुसल्मानों ) से बढ़ कर हैं, जिन्होंने ( फ़तह-मक्का के ) पीछे ( माल ) ख़र्च किये और लड़े और ( यूँ ) हुस्न-सुलूक का वादा ( तो ) अल्लाह ने सब ही से कर रक्खा है और जैसे जैसे अमल तुम लोग करते हो, अल्लाह को उन ( सब ) की ख़बर है ० ऐसा कौन है ? जो अल्लाह को ख़ुश-दिली से उधार दे और वह उसका दूना उसको अदा करे और उसको बड़ा उम्दा अज्र (दे-सो अलावा)० (ऐ पैग़म्बर !) तुम उस दिन मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों को देखोगे कि उनका ( ईमान-मशअल ) नूर ( बनकर ) उनके आगे आगे और उनके दाहिनी तरफ़ चल रहा होगा ( और फ़रिश्ते उनसे कहते जाते होंगे कि ) आज तुम लोगों के लिये ( बड़ी ) ख़ुशी ( की बात ) है ( कि बहिश्त के ) बाग़ हैं; जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही हैं ( और तुम ) इनही में सदा ( सदा ) रहोगे। यह है ( जिसको ) बड़ी कामयाबी ( कहना चाहिये ) ० उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसल्मानों से कहेंगे कि ( ज़रा तो ) हमारा इन्तिज़ार करो कि तुम्हारे ( इस ) नूर ( की रोशनी ) से हम ( भी फ़ायदा उठा ) लें-( तो उनसे ) कहा जायगा कि ( नहीं ) अपने पीछे की तरफ़ लौट जाओ और ( कोई और) रोशनी तलाश करलो। इसके बाद इन दोनों फ़रीक़ों के बीच में एक दीवार खड़ी करदी जायगी ( और ) उसमें एक दर्वाज़ा होगा—( फिर जो ) दर्वाज़े की अन्दरूनी तरफ़ ( है, जिधर मुसल्मान हैं ) उसमें ( तो ख़ुदा की ) रहमत होगी और उसकी ( जो ) बेरूनी तरफ़ ( है, जिधर मुनाफ़िक़ हैं )—

आस्मानों ( में ) और भूमि ( में जो कुछ है, अन्त में सब ) का वर्सा ( अर्थात् बपौती ) अल्लाह ही को पहुंचता है। ( अर्थात तुम्हें ज्ञात है कि यह धन दौलत सर्वदा तुम्हारे पास नहीं रहेगा और एक दिन वह आएगा कि संसार के समस्त पदार्थों का स्वामी ख़ुदा के अतिरिक्त कोई और न होगा )। तुममें से जिन लोगों ने ( मक्का की ) विजय ( होने ) से पहिले ( अल्लाह के मार्ग में अपना धन ) व्यय किया और ( ख़ुदा के शत्रुओं से ) लड़े, वह ( साधारण मुसल्मानों के ) बराबर नहीं हो सकते-( बरन ) वह पद में उन (मुसल्मानों) से ( भी ) बढ़ (चढ़ ) कर हैं, जिन्होंने ( मक्का की ) विजय (हो जाने) के पश्चात् (अल्लाह की राह में अपना धन) व्यय किया और (ख़ुदा के शत्रुओं से ) लड़े ॥

और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि प्रतिफल का ) अच्छा वादा अल्लाह ने ( सब मुसल्मानों से ) किया है। और (मुसल्मानो!) जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ख़बर रहती है। (बोलो ! ) ऐसा (भाग्यवान तुममें) कौन है, जो अल्लाह को क़र्ज़-हसना दे। (अर्थात अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अल्लाह के मार्ग में अपना धन व्यय करे)-जिससे कि वह उस (के धन) का दो गुणा (लाभ) उसको ( संसार में ) प्रदान करे और उसके लिए ( परलोक में जो ) सर्वोत्तम प्रतिफल ( नियत ) है ( अलग उसको मिले । हे रसूल! वह दिन भी अद्भुत होगा ) जिस दिन तुम ( सच्चे ) ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों को देखोगे कि उन (के सुकर्मों ) का प्रकाश उनके आगे ( आगे ) और उनके दाहिने ओर चलता होगा। ( और कृपा के फ़रिश्ते उनसे कह रहे होंगे कि ) तुम्हें आज के दिन ऐसी जन्नतों का मंगल-समाचार ( सुनाया जाता ) है, जिनके नीचे नहरें बहती हैं। तुम उनमें सर्वदा (सर्वदा) रहोगे। ( वास्तव में ) बड़ी सफलता (तो केवल ) यही है ( कि क़यामत के दिन ख़ुदा के समक्ष कोई कृतार्थ हो जाय ) ॥

( और ) जिस दिन मुनाफ़िक़ ( अर्थात छली कपटी ) पुरुष तथा मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ ईमान वालों के पीछे २ दौड़ती होंगी और उन ) से कहती होंगी ( कुछ देर ) हमारे लिये ठहर जाओ ! हम भी तुम्हारे प्रकाश से तनिक ज्योति प्राप्त करलें, तो ( उत्तर में ) उनसे कहा जायगा तुम पीछे जाओ ! और ( किसी और ) प्रकाश को ढूंढ लो। ( और ) फिर ( इतने में ) उन ( दोनों )के बीच एक दीवार आड़ करदी जावेगी, जिसमें द्वार ( भी ) होगा। उसके भीतर की ओर (कृपा ही) कृपा होगी और बाहर की ओर अज़ाब होगा। ( और भीतर की ओर ईमान वाले जन्नत में आनन्द मंगल कर रहे होंगे ) ॥

مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۞ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ
قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ
وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ
وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۞ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ
فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ
هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۞ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ
قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۞ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِي
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۞ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ
وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ

उधर अज़ाब ( इलाही ) होगा ० ( यह मुनाफ़िक़ ) मुसलमानों से पुकार पुकार कर कहेंगे कि क्या ( दुनिया में ) हम तुम्हारे साथ न थे ? वह कहेंगे थे तो सही–मगर तुमने आप अपने तईं बला में डाला और ( इस बात के ) मुन्तज़िर रहे ( कि मुसलमानों पर कोई आफ़त नाज़िल हो ) और ( इस्लाम की तरफ़ से ) शक में ( पड़े ) रहे और ( इनही मुहाल ) आरज़ूवों ने तुमको धोके में रक्खा। यहां तक कि हुक्म–ख़ुदा आ पहुंचा ( यानी मौत ) और शैतान दग़ाबाज़ अल्लाह के बारे में तुमको धोके देता रहा ० तो आज न तो तुम ( ही ) से कुछ मुवावज़ा क़बूल किया जायगा और न उन लोगों से, जो ( सरीह ) इन्कार करते रहे। तुम सब का ठिकाना है, दोज़ख़। वही तुम्हारी रफ़ीक़ है और ( वह क्या ही ) बुरा ठिकाना है ० क्या मुसलमानों के लिये अभी तक इसका वक़्त नहीं आया ? कि ज़िक्र–ख़ुदा और तिलावत–क़ुर्आन के लिये, जो ख़ुदाए–बरहक़ की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, उनके दिल गुदाज़ हों और उन लोगों की तरह ( पढ़ पत्थर ) न हो जाएँ, जिनको ( इनसे ) पहिले किताब दी गई थी–( यानी यहूद व नसारा ) फिर। ( इसी तरह ) इन पर एक मुद्दत–दराज़ गुज़र गई और ( रफ़्ता–रफ़्ता ) उनके दिल सख़्त हो गये और ( अब उनका हाल यह है कि ) उनमें से अक्सर नाफ़र्मान हैं ० ( लोगो ! ) जाने रहो कि अल्लाह ज़मीन को उसके मरे ( यानी उफ़तादा हुये ) पीछे ( पानी बर्सा कर ) जिला उठाता है। हमने अपनी ( क़ुद्रत की ) निशानियाँ तुम से खोल खोल कर बयान करदी हैं, ताकि तुम समझो ० बेशक ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियाँ और ( जो लोग ) ख़ुदा को ख़ुश—दिली से क़रज़ देते हैं–( क़यामत के दिन ) उनको ( उनके क़रज़े का ) दूना अदा कर दिया जायगा और उनको—

---

(और जिस दिन ) यह ( मुनाफ़िक़ लोग ) उन (ईमान वालों ) को पुकारते होंगे ( और कहते होंगे-भाइयो ! ) क्या हम ( संसार में ) तुम्हारे साथ न थे ? ( अर्थात हम ईमान वाले न थे ) वह ( उत्तर में ) कहेंगे थे तो सही, परन्तु ( जैसे थे हमही जानते हैं )। तुमने अपने प्राणों को ( कुफ़्र की ) आपत्ति में डाल रक्खा था और तुम (सर्वदा हमारी बुराई के) प्रतीक्षक रहते थे। और तुम (हमारे रसूल की सचाई में ) शंका करते थे और तुमको ( तुम्हारी मानसिक ) इच्छाओं ने भुलावे में रक्खा ( और सीधे मार्ग पर चलने की योग्यता न दी)। यहां तक कि ( तुम्हारे लिये ) ख़ुदा की ( निश्चित ) आज्ञा ( अर्थात मृत्यु ) आ पहुंची। और तुमको विश्वास—घातक ( शैतान ) ने (धोखे पर) धोखा दिया ( और मृत्यु–काल तक तुम उसके धोखे ही में रहे )॥

अतः आज तुमसे भी और काफ़िरो से ( कुफ़्र तथा छल कपट का ) कोई जुर्माना नहीं लिया जावेगा ( अब तो बस दंड ही दिया जावेगा। अर्थात अब ) तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है। ( और ) यही ( दोज़ख़) तुम्हारा साथी है। और ( निस्सन्देह यह दोज़ख़ एक ) बहुत बुरा स्थान है। क्या ( इन ) ईमान वालों के लिये ( जो कपट रूप से तो ईमानदार हैं, किन्तु अभी इनके हृदय में शंका तथा सन्देह वर्तमान है )–अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की शिक्षा की ओर और जो सत्य–धर्म ( अल्लाह की ओर से उनके पास ) आया है, उसके सामने झुक जायँ। और उन लोगों ( अर्थात यहूदियों ईसाइयों) की तरह न हों, जिनको उनसे पहिले ( ख़ुदा की ) पुस्तक मिली थी। ( और उन्होंने उसकी सत्यता में सन्देह किया था और उसको आज्ञाओं की ओर किंचित ध्यान न दिया था )। पुनः उसी ( शंका, सन्देह तथा अचेतना की दशा में ) उन पर ( एक ) बहु–काल व्यतीत हो गया था–(यहां तक कि) फिर उनके दिल ( बहुत ही ) कठोर हो गये। ( और वह ख़ुदा की ओर ध्यान देने के योग्य ही न रहे )। और उनमें से बहु–संख्या (उनकी सन्तान की आज भी वैसी की वैसी ) अवज्ञाकारी ( वर्तमान ) है॥

( हे संसार वालो ! भली भांति ) जान लो कि ( सर्व शक्तिमान ) अल्लाह पृथ्वी को मुर्दा ( तथा सूखी हो जाने ) के पश्चात ( फिर ) जीवित ( और हरी भरी ) कर देता है। निस्सन्देह हमने अपनी ( शक्ति के ) चिन्ह तुम्हारे लिये वर्णन कर दिये, जिससे कि ( यदि ) तुम (समझदार हो, तो ) समझो ( कि ख़ुदा के अतिरिक्त कोई पूज्य बनने के योग्य नहीं है )। निस्सन्देह दान ( पुण्य ) करने वाले और दान ( पुण्य ) करने वालियां और ( वह मनुष्य ) जिसने अल्लाह को क़र्ज़–हसना दिया, तो ( उनके दान पुण्य का पुरस्कार उनके लिये और ) उस ( के ऋण देने ) का पुरस्कार उसके लिये दो गुणा कर दिया जायगा। और ( इसमें सन्देह नहीं कि ) उन ( नेक और सच्चे लोगों ) के लिये ( परलोक में भी उनकी नेकियों का ) अत्युत्तम पुरस्कार ( नियुक्त ) है॥

اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَاۗءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ
اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ
بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ
كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ
مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۙ
اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ
اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

( बड़ा ) इज़्ज़त का अज्र मिलेगा-( सो अलावा ) ० और जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ( सच्चे दिल से ) ईमान लाये, यही लोग अपने पर्वर्दिगार के हां सिद्दीक़ों और शहीदों के दर्जे में होंगे। इनको उन ( ही ) के से अज्र ( मिलेंगे ) और उन ( ही ) का ( सा ) नूर ( ईमान उनके साथ होगा ) और जो लोग हमारी आयतों से इन्कार रखते और ( उनका ) झुटलाया करते हैं, यही लोग दोज़ख़ी हैं ० ( लोगो !) जाने रहो कि दुनिया की ज़िन्दगी खेल और तमाशा और ज़ाहिरी तुम्तराक़ और आपस में एक दूसरे पर फ़ख़र करना और एक दूसरे से बढ़ कर माल और औलाद का ख़्वास्तगार होना—( बस यही कुछ ) है। दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल मेंह की सी मिसाल है कि ( ज़मीन पर बरसता है और उससे खेती लहलहाने लगती है और ) काश्तकार खेती को देख कर ख़ुशियाँ करने लगते हैं। फिर ( पक कर ) ख़ुश्क हो जाती है, तो ( ऐ मुख़ातब ! उस वक़्त ) तू उसको देखता है कि पीली पड़ गई है। फिर ( आख़िरकार ) रौंदन में आ जाती है—( ग़रज़ दुनिया की ज़िन्दगी चन्द-रोज़ा रौनक़ है ) और आख़िरत में ( दुनिया की ज़िन्दगी के दो अन्जाम हैं; बाज़ को ) अज़ाब ( सख़्त ) और ( बाज़ को ) ख़ुदा की तरफ़ से ( गुनाहों की ) माफ़ी और ख़ुश-नूदी और दुनिया की ज़िन्दगी तो निरे धोके की टट्टी हैं ० ( लोगो ! ) अपने पर्वर्दिगार की मग़फ़िरत की तरफ़ लपको और ( नीज़ ) बहिश्त की ( तरफ़ लपको )—जिसका फैलाव ( इतना ) है; जैसे आस्मान व ज़मीन ( मिलाकर दोनों ) का फैलाव ( और वह ) उन लोगों के लिये तय्यार कराई गई है, जो ख़ुदा और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाते हैं। यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, जिसको चाहे, इनायत करे और अल्लाह का फ़ज़्ल बहुत बड़ा है ०—

---

और जो लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर (सच्चे दिल से ) ईमान ले आए ( अर्थात ईमान लाने के पश्चात जिन्होंने भी अच्छे किये ) तो यही लोग ( प्रतिफल तथा पुरस्कार की दृष्टि से ) अपने पालनहारे के निकट सिद्दीक़ और शहीद हैं। (अर्थात के यहाँ उन्हें सिद्दीक़ों तथा शहीदों का पद मिलेगा। और ) उनके लिये जन्नत में उनका प्रतिफल ( विशेष ) है। और ( क़ब्र में) उ प्रकाश ( विशेष ) है। और जिन लोगों ने ( हमारे रसूल पर ईमान लाने से ) इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, तो लोग दोज़ख़ी हैं॥

( लोगो ! ख़ूब ) समझ लो कि सांसारिक जीवन तो खेल क्रीड़ा और ( दिखावे की ) टीप-टाप और परस्पर एक दूसरे पर ब जताना ( और डींगें मारना ) और धन तथा सन्तान में ( अधिकता तथा ) बहुतात (के लालच तथा मोह करने का नाम ) है ( और ) ( और फिर वह भी दो दिन के लिये। इस जीवन का दृष्टान्त तो बिल्कुल उस ) वर्षा का सा है ( जो सूखी भूमि पर हुई और घास अन्नादि उसमें उत्पन्न हुआ और ) उसकी पैदावार ने ( निराश ) किसानों को प्रसन्न कर दिया—(परन्तु उनको प्रसन्न हुये अभी कुछ स व्यतीत न हुआ था कि) फिर वह सूखने लगी। और ( हे मनुष्य ! वह हरी भरी खेती बाड़ी ) तुझको पीली ( पोली ) दिखाई देने ( और ) फिर वह (रौंदन में आकर बिल्कुल ) चूरा चूरा हो गई॥

और ( जिस प्रकार वर्षा से बाग़ हरा भरा हो जाता है और बंजर भूमि में कांटे उगते हैं, उसी प्रकार यह सांसारिक जी परलोक में ( असत्य के उपासकों के लिये ) अति कठिन अज़ाब ( का कारण ) है। और ( सत्य के उपासकों के लिये ) क्षमा तथा अ की प्रसन्नता ( का कारण ) और ( इसमें सन्देह नहीं कि ) सांसारिक जीवन है धोखे की माया। ( जिसने सावधानी से काम लिया, उसकी हानि से सुरक्षित रहा। और जो अचेतना में पड़ गया, वह उसके हाथों मारा गया। अतः हे संसार वालो ! अचेतना की नि जाग उठो और सत्य-उपासना अपना सिद्धान्त नियत करके ) अपने पालनहारे की क्षमा और ( उस विस्तृत ) जन्नत की ओर जिसका विस्तार आकाश तथा भूमि का सा विस्तार है। ( और ) उन ( सौभाग्यवान ) लोगों के लिये तय्यार की गई है, जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ( सच्चे दिल से ) ईमान ले आये। ( निस्सन्देह ) यह ( जन्नत ) अल्लाह तआला का एक अनुग्रह है, जिसको चाहता है, उसे प्रदान कर देता है। और ( यह मानी हुई बात है कि) अल्लाह (अपने बन्दों के हक़ में) बड़े अनुग्रह (तथा करुणा) वाला

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ
اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ
اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۙ ● لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى
مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ ● الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ
النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ
الْحَمِيْدُ ● لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ
وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ
النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ
شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ
يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ●
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ
ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ

٤

(लोगो!) जितनी मुसीबतें (रूए) ज़मीन पर नाज़िल होती हैं और जो (खुद) तुम पर नाज़िल होती हैं-(वह सब) उनके पैदा करने से पहिले हमने किताब (लौह-महफ़ूज़) में लिख रक्खी हैं (और) बेशक यह अल्लाह के नज़्दीक (एक) सह्ल (सी बात) है ० (और यह हमने तुमको) इसलिये (जता दिया) है कि कोई चीज़ तुमसे जाती रहे, तो उसका रंज न करो और कोई नेअमत ख़ुदा तुमको अता करे, तो उस पर इतरावो मत और अल्लाह किसी इतराने वाले शेख़ी-बाज़ को पसन्द नहीं करता ० कि यह (एक तो आप) बुख़्ल करें और (दूसरे) लोगों को बुख़्ल की तर्ग़ीब दें और जो शख़्स (इन नसीहतों से) रूगर्दानी करेगा, तो कुछ शक नहीं कि अल्लाह बेनियाज़ (और हर हाल में) सज़ावार हम्द (व सना) है ० तहक़ीक़ हमने अपने पैग़म्बरों को खुले २ मोजिज़े दे कर भेजा और उनकी मार्फ़त किताबें उतारीं और (नीज़ हमने) तराज़ू (का रिवाज दिया) ताकि लोग (दोनों दुनियावी दोनों तरह के मामलात में) इन्साफ़ पर क़ायम रहें और लोहा पैदा किया कि (हथियारों के काम में लाया जाय, तो) उसमें बड़ा ख़तर है और (उसमें) लोगों के (बहुतेरे) फ़ायदे (भी) हैं और (इस ख़तर-नाक लोहे के पैदा करने से) एक ग़रज़ यह भी है कि अल्लाह (तुममें से) उन लोगों को मालूम करले, जिन्होंने (अल्लाह को) देखा नहीं (और) फिर भी अल्लाह और उसके रसूलों की मदद को खड़े हो जाते हैं। बेशक अल्लाह ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है ० और तहक़ीक़ हमही ने नूह और इब्राहीम को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा और उनकी नस्लों में पैग़म्बरी और किताब (यानी वही आस्मानी) को (जारी) रक्खा-(वईं-हमां बाज़) तो उनमें से रूबराह हैं और बहुतेरे—

---

(लोगो! तुम यदि यह चाहो कि कुकर्म करो और हमको उसका ज्ञान न हो, तो यह असम्भव है। हमारे ज्ञान का क्या ठिकाना। यह हमारे ज्ञान का छोटा सा चमत्कार है कि) कोई आपत्ति न (साधारण रीति से) पृथ्वी पर आती है और न (विशेषतः) तुम्हारी जानों में, परन्तु वह पुस्तक (लौह-महफ़ूज़) में (लिखी हुई विद्यमान) है-इससे पहिले कि हम उसको उत्पन्न करें। (और इसमें कुछ भी) सन्देह नहीं कि यह (कठिन) काम अल्लाह (की अपार शक्ति) के आगे बिल्कुल सरल है। (लोगो! यह बात हमने तुमको इस प्रयोजन से बता दी) जिससे कि जो वस्तु तुम्हारे पास से खोई जाय (धन हो तो और सन्तान हो तो) तुम उसका शोक न करो (और हमारी कृतघ्नता न करने लगो। और हमारी पूजा तथा आज्ञा-पालन में बे पर्वाही न करने लगो)। और जिससे कि जो वस्तु हमने तुमको (अपनी कृपा से) प्रदान की है (उसको अपने उद्योग तथा व्यवहार का परिणाम समझ कर) प्रसन्न (तथा प्रफुल्लित) न हो। (और इतराने न लगो, बरन हर आपत्ति तथा दुख सुख को अल्लाह की ओर से समझो)॥

और (स्मरण रक्खो! कि) अल्लाह तआला किसी इतराने वाले (तथा) डींगें मारने वाले को पसन्द नहीं करता। (और विशेषतः उन्हें) जो (अपनी आवश्यकताओं के पूर्ण करने में अपव्यय हैं। और ख़ुदा के मार्ग में पैसा व्यय करने में) कृपणता करते हैं और दूसरे लोगों को भी कृपणता (ही) की सलाह देते हैं। और (अपने जैसा बनाना चाहते हैं। निस्सन्देह) जो (अल्लाह के मार्ग में अपनी सम्पत्ति व्यय करने से) मुंह फेरे, तो (वह बड़ा ही अभागा है। अपना लोक भी बिगाड़ता है और परलोक भी। और) अल्लाह (का वह कुछ नहीं बिगाड़ता। अल्लाह) तो बे पर्वाह है (और इस बेपर्वाही की दशा में भी स्तुति) प्रशंसा के योग्य है॥

निस्सन्देह (हमें लोगों के सुधार का बड़ा ख़्याल है)। हमने (उनको समझाने बुझाने और सीधे मार्ग पर चलाने के लिये) अपने रसूलों को मोजिज़े देकर भेजा और उन पर अपनी पुस्तक अवतीर्ण की। और (हमने) तराज़ू को (बनाया)-जिससे कि लोग (अपने क्रय विक्रय में अनीति न करें और) नीति को स्थिर रक्खें। और हमने लोहे को बनाया, उसमें घोर-युद्ध (भी) है (अर्थात उससे शस्त्र बनते हैं) और लोगों के लिये (बहुत से) लाभ (भी)। और (उस लोहे को बनाने का एक कारण यह भी है)-जिससे कि अल्लाह उन लोगों को (प्रगट रूप से भी) जान ले, जो (लोहे के शस्त्रों-द्वारा) उसकी और उसके रसूलों की (उसको) बिना देखे (उस पर ईमान लाकर) सहायता करते हैं। निस्सन्देह अल्लाह बड़ी शक्ति वाला (और बड़े) बल वाला है। और निस्सन्देह हमने (लोगों के सुधार ही के विचार से) नूह तथा इब्राहीम को भी (अपना पैग़म्बर बनाकर) भेजा था-और उन दोनों की सन्तान में भी पैग़म्बरी तथा पुस्तक (की प्रथा) को प्रचलित कर दिया था-(किन्तु) फिर (भी) उनमें के कोई (कोई) सीधे मार्ग पर और उन्हीं में के बहुत से अवज्ञाकारी (तथा दुराचारी) हैं॥

مِنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا
وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ
وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ
وَرَهْبَانِيَّةَۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ
اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ
رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ
مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لِّئَلَّا يَعْلَمَ
اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰي شَيْءٍ مِّنْ
فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

उनमें से नाफ़र्मान हैं ० फिर (उनके) पीछे उनही के क़दम-बक़दम हम ने अपने (और) रसूल भेजे और (उनके) पीछे मर्यम के बेटे ईसा को भेजा और उनको इन्जील इनायत फ़रमाई और जो लोग उनके पैरव हुये, उनके दिलों में तरस और रहम डाल दिया और (लज़्ज़ात) दुनिया का छोड़ बैठना जिसको उन्होंने अज़ख़ुद ईजाद किया था, हमने वह (तरीक़) उनपर फ़र्ज़ नहीं किया था, मगर (हां! उन्होंने इसको) ख़ुदा (ही) की ख़ुश-नूदी हासिल करने के लिये (ईजाद किया था)–लेकिन जैसा उसको निबाहना चाहिये था, न निबाह सके। तो जो लोग उनमें से ईमान लाये, उनको हमने उनके अज्र इनायत फ़रमाये और उनमें से बहुतेरे तो नाफ़र्मान हैं ० मुसल्मानो! अल्लाह से डरते रहो और (सच्चे दिल से) उसके पैग़म्बर (मुहम्मद) पर ईमान लावो कि ख़ुदा अपनो रहमत में से तुमको दोहरा हिस्सा दे और तुमको ऐसा नूर इनायत करे, जिस (की रोशनी) में चलो और तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमाये और अल्लाह बख़्शने वाला मेह-र्बान है ० (और यह तुमसे इसलिये कहा जाता है) कि अह्ल-किताब यह न समझें कि मुसल्मानों को ख़ुदा के फ़ज़्ल पर कुछ भो दस्त-रस नहीं और (नीज़) इसलिये (कहा जाता है) कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ है, जिसको चाहे इनायत करे और अल्लाह का फ़ज़्ल (बहुत) बड़ा है ०—

ع٤

(और) फिर उन (नूह, इब्राहीम की सन्तान मूसा आदि) के पश्चात और (ऐसे २) रसूलों को हम लगातार भेजते रहे (जो अपने अनुगामियों से पहिली शरीअत जैसे तौरेत आदि का अनुगमन कराते थे)। और उनके उपरान्त मर्यम के पुत्र ईसा को भेजा और हमने उन्हें इन्जील (पुस्तक) प्रदान की। और (उनकी जाति में भी काफ़िर) और (मुसल्मान दोनों भांति के मनुष्य रहे। अतः) जिन लोगों ने उनका कहा मान लिया, हमने उनके दिलों में (परस्पर) प्रेम-भाव तथा दया उत्पन्न करदी। और (हमने तो उनको केवल इन्जील पर चलने को कहा था)–परन्तु उन्होंने (अवज्ञाकारियों से घृणा करके) रहबानीयत (अर्थात सन्यास के सिद्धान्त) को गढ़ लिया (यद्यपि) हमने उन पर उसे फ़र्ज़ (अर्थात धार्मिक-कर्त्तव्य) नहीं किया था, किन्तु उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता के लिये उसे ग्रहण कर लिया पर (उनमें से बहुत से सन्यासी ऐसे उत्पन्न हुये कि) उन्होंने उस (सन्यास के व्यवहार) को जैसा चाहिये, वैसा निबाह न सके। (और हमारे रसूल मुहम्मद का समय पाते हुये भी उनको रसूल न माना)॥

सो उनमें से जो लोग (हमारे रसूल मुहम्मद पर सच्चे दिल से) ईमान ले आए, हमने उन्हें (दुनिया में भी) उनका प्रतिफल प्रदान कर दिया (और परलोक में भी उनके पद ऊँचे करेंगे, परन्तु ऐसे सौभाग्यवानों की संख्या बहुत थोड़ी है)। और उनमें के अवज्ञाकारी (तथा उद्दण्ड लोग संख्या में) बहुत हैं। हे (ईसा पर) ईमान रखने वालो! तुम (अपने) अल्लाह से डरो और उसके रसूल (मुहम्मद) पर (सच्चे दिल से) ईमान ले आओ। यदि तुम इस आज्ञानुसार कर्म करोगे, तो ख़ुदा अपनी दया के दो (दो) भाग तुमको प्रदान करेगा। और (तुम्हारी आत्मा तथा अन्तःकरण को ज्योतिमय करने के) लिये (ईमान की) एक ऐसी ज्योति प्रदान करेगा कि तुम उसको (सर्वदा अपने दिल में लिये) लिये फिरोगे। और वह (उसकी बरकत से) तुमको क्षमा कर देगा। और (इसमें सन्देह नहीं कि) अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है॥

(और यह तुम्हारी दशा पर ख़ुदा इसलिये कृपा करेगा)–जिससे कि किताब वाले (यहूदी ईसाई, जो हमारे रसूल को झुठलाते हैं, उन) को ज्ञात हो जाय कि वह (अपनी इस उद्दण्डता के कारण) अल्लाह के अनुग्रह के किसी छोटे से (छोटे) भाग (के प्राप्त करने) पर भी शक्तिमान नहीं हैं। और यह (ज्ञात हो जाय) कि अनुग्रह (तथा दया बिल्कुल) अल्लाह के अधिकार में है, वह जिसको चाहता है, प्रदान कर देता है। और (इसमें कुछ सन्देह नहीं कि) अल्लाह (अपने बन्दों के हक़ में) बड़े अनुग्रह (तथा कृपा) वाला है–(अन्यथा हब चाहे, तो अपने अवज्ञाकारी बन्दों को एक दम नष्ट भ्रष्ट करदे)॥

## सूरत–मुजादिलह

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें २२ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० (ऐ पैग़म्बर!) अल्लाह ने उस औरत (सालिबा की बेटी ख़ौला) की बात सुनली, जो अपने शौहर (सामत के बेटे औस) के बारे में तुम से झगड़ती और ख़ुदा से फ़रियाद करती थी और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू को सुन रहा था। बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है० मुसल्मानो! जो लोग तुममें से अपनी बीबियों के साथ ज़िहार कर बैठें, वह (कुछ) उनकी मायें (तो हैं) नहीं। उनकी मायें तो वही हैं, जिन्होंने उनको जना है–(मगर) हां! (बीबी को मां कह बैठने से) उन्हों ने एक बेहूदा और झूटी बात कही और बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है ० और जो लोग अपनी बीबियों से ज़िहार करते हैं, फिर लौट कर वही (काम) करना चाहते हैं, जिसको कह चुके हैं (कि नहीं करेंगे) तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहिले (मर्द को) एक बर्दा आज़ाद करना (चाहिये। मुसल्मानो!) तुमको यह नसीहत की जाती है, (ताकि उस पर कारबन्द रहो) और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह को उसकी (सब) ख़बर है ० फिर जिसको (बर्दा) मुयस्सर न हो, तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहिले (मर्द) लगातार दो महीने के रोज़े (रक्खे) और जिससे न हो सकें—

سُورَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَعِشْرُونَ آيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِىْ تُجَادِلُكَ فِىْ زَوْجِهَا
وَتَشْتَكِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۗ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ
مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۗ اِنْ
اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـىِٔىْ وَلَدْنَهُمْ ۗ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ
مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ
غَفُوْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ
لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۗ
ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ
مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ

## सूरत–मुजादिलह

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें २२ आयतें और ३ रुकूअ हैं॥

निस्सन्देह (हे पैग़म्बर!) अल्लाह ने उस स्त्री की बात सुन ली, जो तुमसे अपने पति के सम्बन्ध में झगड़ा करती और अल्लाह (को अपने दुख को कहानी सुनाती और उस) से (अपने दुर्भाग्य की) शिकायत करती थी। और तुम दोनों के सवाल जवाब को अल्लाह सुन रहा था। निस्सन्देह अल्लाह (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है। (दुनिया वालो! अल्लाह तुम्हारी समस्त त्रुटियों और विवशताओं से भली भांति अभिज्ञ है। वह अपने उसी पूर्ण ज्ञान के कारण तुमको ज़िहार के मसले का उत्तर देता है। सुनो!) जो लोग तुममें से अपनी स्त्रियों को (क्रोध से वा किसी दूसरे कारण से अपनी) माता कहदें, तो वह (उनकी इस बकवास से) उनकी माताएं नहीं बन जातीं। उनकी माताएं तो (केवल) वही हैं, जिन्होंने उनको जना और (उनका पालन पोषण किया। हां! इतनी बात अवश्य है कि) वह एक अनुचित बात (कहते हैं) और झूठ बोलते हैं। (सो उन्हें ऐसे अनुचित शब्दों से बचना चाहिये) और (अपनी ग़लतियों से तौबा करनी चाहिये)। निस्सन्देह अल्लाह (अपने तौबा करने वाले बन्दों की ग़लतियों को) क्षमा करने वाला (और परलोक में उन्हें जन्नत—नईम) प्रदान करने वाला (और दुनिया में उन पर कृपा करने वाला) है॥

और (यह उसकी दया तथा कृपा ही का प्रकाश है कि उसने तुम्हारे लिये एक हलका सा कफ़्फ़ारा अर्थात प्रायश्चित नियत कर दिया। अर्थात यह कि) जो लोग अपनी स्त्रियों को (अपने ऊपर हराम करने के लिये क्रोध से अथवा किसी और कारण से अपनी) माता कह बैठें (और) पुनः (क्रोध दूर हो जाने के पश्चात वह अपने इस व्यर्थ–कथन को प्रतीत करें और उनसे) वही (सम्बन्ध स्थिर रखना) चाहें, जिस (को तोड़ने) के लिये (अभी) उन्होंने कहा था, तो उन्हें (अपनी इस मूर्खता के दंड में अपनी स्त्रियों को) हाथ लगाने (और उनसे सम्बन्ध जोड़ने) से पहिले एक ग़ुलाम (को, वा एक लौंडी को अवश्य) स्वतन्त्र करना चाहिये। (निस्सन्देह हे दुनिया वालो!) इस (प्रायश्चित के देने) से तुमको (कुछ) नसीहत हो (जावे) गी और (आगे को इस तरह ज़बान चलाने से तुम बचोगे। निस्सन्देह) जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह (सबकी) ख़बर रखता है॥

और जो कोई (लौंडी ग़ुलाम) न पावे (और निर्धन कंगाल हो) तो (वह) स्त्री को हाथ लगाने (और अपनी पत्नी को पत्नी समझने) से पहिले लगातार दो मास के व्रत (रक्खे। यह उपवास उस पर वाजिब) हैं। और जो कोई यह भी न कर सके—

فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا
اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيْدٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ
اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ
وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ
اَيْنَ مَا كَانُوْا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا

ع

तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलादे—यह ( हुक्म ) इसलिये ( दिया जाता है ) कि तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ( पूरा पूरा ) ईमान ले आवो और यह अल्लाह की बाँधी हुई हद्दें हैं और जो लोग मुन्किर हैं, उनको अज़ाब-दर्दनाक ( होना ) है ० जो लोग अल्लाह और उसके रसूल के ( हुक्म के ) बर-ख़िलाफ़ करतेहैं-( वह आख़िरकार ऐसे ही ) ज़लील होंगे; जैसे इनसे अगले ( नाफ़र्मान ) ज़लील हुये और हम तो अपने खुले-खुले अहकाम उतार ही चुके और मुन्किरों को ज़िल्लत का अज़ाब ( होना ) है ० ( और यह अज़ाब उस दिन होगा ) जब अल्लाह इन सबको ( जिला ) उठायेगा । फिर जैसे जैसे अमल यह लोग करते रहे हैं, इनको बता देगा। अल्लाह तो इनके अमलों को गिनता गया और यह ( खुद करके ) उनको भूल गये और अल्लाह सब चीज़ों का निगरान (हाल) है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या तुमने (इस बात पर ) नज़र नहीं की कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, अल्लाह सब ( के हाल ) से वाक़िफ़ है। जब तीन (आदमी ) का ( सलाह व ) मश्वरा होता है, तो ज़रूर उनका चौथा वह होता है और पांच का ( सलाह व मश्वरा ) होता है, तो ज़रूर उनका छटा वह होता है और इससे कम हों या ज़ियादा ( और ) कहीं भी हों, वह ज़रूर उनके साथ होता है। फिर जैसे जैसे अमल यह ( दुनिया में ) करते रहे हैं, क़यामत के दिन वह इनको जता देगा-( क्योंकि ) अल्लाह ज़रूर हर चीज़ से वाक़िफ़ है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या तुमने उन लोगों ( के हाल) पर नज़र नहीं की, जिनको काना-फूसी करने से मना कर दिया गया था—

तो उसे साठ मोहताजों को भोजन कराना चाहिये । ( लोगो ! तुमको ) यह ( आज्ञा ) इसलिये ( दी गई ) है—( जिससे ) कि तुम अल्लाह और रसूल के ( सच्चे ) आधीन हो जाओ। और ( तुम्हारी स्वाभाविक दशा सुधर जाय। निस्सन्देह यह आज्ञाएं तथा ) सीमाएं ( जो ) अल्लाह की ओर से ( नियत ) हैं ( सबकी सब आज्ञा-कारियों ) और ( आधीनता करने वालों के लिये लाभ-दायक हैं ) काफ़िरों ( को इनसे कुछ लाभ नहीं पहुंच सकता। उन ) के लिये तो ( उनके कुफ्र इन्कार तथा उद्दण्डता के कारण ) एक दुखदायी अज़ाब ( अल्लाह के यहां तय्यार ) है-( जिसमें वह क़यामत के दिन झोंके जावेंगे ) ॥

( और क़यामत के अज़ाब के अतिरिक्त ) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को ( अवज्ञा और ) विरुद्धता करते हैं, वह ( दुनिया में भी एक न एक दिन ऐसे ही अप्रतिष्ठित तथा ) अपमानित होंगे, जैसे ( कि ) उनसे पहिले ( अवज्ञाकारी तथा सत्य को विरुद्धता करने वाले ) लोग ( अप्रतिष्ठित तथा ) अपमानित हुये ( थे ) और ( क्यों अपमानित न हों ) हमने ( हर प्रकार उन्हें उनका भला बुरा समझाय और उन पर अपनी ईश्वरीयता और अपने रसूल की सचाई के ) खुले २ चिन्ह उतारे-( किन्तु वह अपनी अनुचित बातों से किसी प्रका न माने ) और ( उसी प्रकार अपने कुफ्र, इन्कार और उद्दण्डता पर अड़े रहे। निस्सन्देह हमने उन जैसे कट्टर ) काफ़िरों के लिये ए ज़लील तथा अपमानित करने वाला अज़ाब ( तय्यार कर रक्खा ) है। जिस दिन अल्लाह उन सबको ( उनकी क़ब्रों से ज़िन्दा करके उठावेगा, तो ( उन्हें अपनी अचेतना तथा अज्ञानता का हाल अच्छी तरह ज्ञात हो जायगा और ) अल्लाह उनको उनके कर्मों से (भली भांति सूचित कर देगा, जिन्हें उसने ( अपने यहाँ ) गिन रक्खा है और यह उन्हें ( बिलकुल ) भूले बैठे हैं। और अल्लाह ( को उनके कर्मों व सुरक्षित कर लेना कोई बड़ी बात नहीं। उस ) के सामने तो हर वस्तु ( हर समय खुली ) है ( चाहे वह उपस्थित हो गई हो अथ होने वाली हो ) ॥

( हे रसूल ! ) क्या तुमको ज्ञात नहीं कि आकाशों तथा पृथ्वी में जो कुछ ( अब तक हो चुका और जो कुछ अब हो रहा है औ जो कुछ आगे होगा ) उस ( सब ) की अल्लाह को ख़बर है। ( उनको ) कोई कानाफूसी तीन मनुष्यों की ऐसी नहीं होती, जिसमें चौथा ( अर्थात अदृष्ट-ज्ञानी ख़ुदा ) न हो और न ( कोई कानाफूसी उनमें के ) पांच (मनुष्यों) की ( ऐसी ) होती है, जिसमें छठा वह ( अदृष्ट ज्ञानी ख़ुदा ) उनके साथ न हो और न कोई कानाफूसी इस गिनती से कम और न इससे ज़्यादा मनुष्यों की ऐसी होती है, जिसमें ( अदृष्ट-ज्ञानी ख़ुदा ) उनके साथ न होता हो—( चाहे ) वह (कानाफूसी करने वाले) कहीं भी हों। फिर वह क़यामत के दिन उनको उ कर्मों से ( अच्छी तरह ) सूचित कर देगा। ( इसमें ) कुछ सन्देह नहीं कि अल्लाह ( लोक परलोक की ) हर वस्तु से भली भांति अ है। और ( हे पैग़म्बर ! ) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें ( परस्पर कानाफूसी और) सलाह करने से मना कर दिया था—

عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ
بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ
وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ
وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا
نَقُوْلُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا
بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ
وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ
لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي
الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ وَاِذَا قِيْلَ

फिर जिससे उनको मना कर दिया गया था, लौट कर वही (बात) करते हैं और कानाफूसी (भी) करते हैं—(तो) गुनाह की, और (लोगों पर बेजा) ज़ियादती करने की, और रसूल की नाफ़र्मानी की। और जब तुम्हारे पास आते हैं, तो जिन लफ़्ज़ों से ख़ुदा ने तुम पर सलाम नहीं भेजा, ऐसे लफ़्ज़ों से तुमको सलाम करते हैं और अपने जी में कहते हैं (कि अगर यह सच्चा पैग़म्बर है, तो) हमारी इस कहन पर ख़ुदा हमको सज़ा क्यों नहीं देता। (बस) इनके लिये जहन्नम (की सज़ा) काफ़ी है कि उसमें ठुसेंगे, तो (इन लोगों का भी क्या ही) बुरा ठिकाना है ० मुसल्मानो! जब तुम एक दूसरे के कान में बात करो, तो गुनाह की और (लोगों पर बेजा) ज़ियादती करने की और रसूल की नाफ़र्मानी की बातें एक दूसरे के कान में न किया करो। हाँ! (किसी मस्लहत से) नेकी और पर्हेज़गारी (की बातों) को एक दूसरे के कान में कहलो-(तो मुज़ायक़ा नहीं) और अल्लाह से डरते रहो, जिसके हुज़ूर में (तुम सब क़यामत के दिन हिसाब किताब के लिये) जमा किये जावोगे ० कानाफूसी तो बस एक शैतानी हर्कत है, ताकि मुसलमान उसकी वजह से आज़ुर्दा-ख़ातिर हों, हालाँकि बेइज़्न-ख़ुदा (किसी की कानाफूसी) उनको कुछ भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकती और मुसल्मानों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें ० मुसल्मानो! जब तुमसे कहा जाय कि मज्लिस में खुल खुल कर बैठो, तो खुल बैठा करो कि ख़ुदा (बहिश्त में) तुमको बा-फ़राग़त जगह देगा और जब (तुमसे) कहा जाय कि—

(किन्तु वह लोग) फिर (भी) वही (काम) करते हैं, जिसकी अल्लाह रसूल की ओर से मनाही करदी गई है और पाप की और अत्याचार की और (अल्लाह) रसूल की अवज्ञा (करने) की (आपस में) कानाफूसी (और सलाहें) करते हैं और जब तुम्हारे पास आते हैं, तो वह तुमको (ऐसे शब्दों से) सलाम करते हैं, जिनसे ख़ुदा ने तुमको सलाम नहीं किया (अर्थात अस्सलामु-अलैकुम् के बदले अस्सामु-अलैकुम् कहते हैं। अर्थात "तुम पर सलामती हो" इसके बदले "तुम पर मौत हो" कहते हैं और यह कह कर अपना दिल ठंढा करते हैं)॥

और (फिर) अपने दिल में (आक्षेप की रीति पर) कहते हैं कि (रसूल के विषय में) जो कुछ हम कहते हैं-(यह यदि ख़ुदा को पसन्द नहीं है और ख़ुदा को अपना रसूल प्रिय है, तो) ख़ुदा हमको अज़ाब (में लिप्त) क्यों नहीं करता? (सो हे रसूल! उनको सचेत करदो कि दुनिया का दंड उनके लिये अपर्याप्त है)। उनको तो जहन्नम पर्याप्त होगा। उसमें यह झोंके जावेंगे। अतः (उन्हें सर्वदा दुनिया में नहीं रहना, बरन् मरना और दोज़ख़ में जाना है। निस्सन्देह) दोज़ख़ एक बहुत बुरा स्थान है।(अतः) हे ईमान वालो! (इन दुष्टों की देखा देखी तुम आपस में कानाफूसी न किया करो और) जब तुम (किसी के) कान में (आवश्यकतानुसार) बात करो भी, तो पाप की और अत्याचार की और रसूल की अवज्ञा की बात न (किया) करो (बरन् जब बात करो, तो) नेकी और संयमता की बात करो और (सर्वदा) उस ख़ुदा से डरते रहो, जिसकी ओर (एक दिन) तुम सबको एकत्रित होना है॥

यह जो कानाफूसी है (यह) शैतान (के स्वभाव के मनुष्य) का काम है। (वह केवल इसलिये कानाफूसी करता है)-जिससे कि ईमान वालों को (यह जताकर कि उनके विरुद्ध कोई षड-यन्त्र रचा जा रहा है) शोकित करे और (उनका दिल दुखाए, किन्तु) वह उन का ख़ुदा की आज्ञा के बिना कुछ नहीं बिगाड़ सकता। और ईमान वालों को तो (अपने हर काम में) अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये हे ईमान वालो! (जहां तक तुमसे हो सके अपने ख़ुदा से लौ लगाओ। और आधीनता तथा आज्ञा-पालन करना अपना परम कर्तव्य जानो। और ख़ुदा रसूल के नाम की) सभाओं में (ठौर कुठौर और जगह घेर कर न बैठा करो और) जब तुमसे कहा जाय (कि दूसरे लोगों को बैठने के लिये) जगह दो, तो (तुरन्त) जगह दे दिया करो और जब (खड़े होने के समय तुमसे) कहा जाय कि—

انشزوا فانشزوا يرفع الله الذين امنوا منكم
والذين اوتوا العلم درجت والله بما تعملون
خبير ● يايها الذين امنوا اذا ناجيتم الرسول
فقدموا بين يدى نجوىكم صدقة ذلك
خير لكم واطهر فان لم تجدوا فان الله
غفور رحيم ● ءاشفقتم ان تقدموا بين يدى
نجوىكم صدقت فاذ لم تفعلوا وتاب الله
عليكم فاقيموا الصلوة واتوا الزكوة و
اطيعوا الله ورسوله والله خبير بما تعملون ●
الم تر الى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم ४
ما هم منكم ولا منهم ويحلفون على الكذب
وهم يعلمون ● اعد الله لهم عذابا شديدا انهم
ساء ما كانوا يعملون ● اتخذوا ايمانهم جنة

( अपनी जगह से ) उठ खड़े हो ( और दूसरी जगह जा बैठो ) तो उठ खड़े हुआ करो कि तुम लोगों में से जो ( पूरा पूरा ) ईमान लाये हैं और जिनको इल्म ( मज्लिस ) दिया गया है ( और वह दाबे मज्लिस मलहूज़ भी रखते हैं ) अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ( सब ) ख़बर है ० मुसलमानो ! जब तुमको पैग़म्बर के कान में कोई बात कहनी हो, तो कान में अर्ज़ मतलब करने से पहिले कुछ ख़ैरात लाकर आगे रख दिया करो। यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है और ( दिलों की ) सफ़ाई में ( इसको ) बड़ा ( दख़ल ) है। फिर अगर तुमको ( ख़ैरात का ) मक़दूर न हो, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है० ( मुसलमानो ! ) क्या तुम ( यह हुक्म सुनकर ) डर गये कि ( रसूल के ) कान में बात कहने से पहिले कुछ ख़ैरात लाकर आगे रख दिया करो—तो जिस सूरत में तुम ( इस हुक्म की ) तामील न कर सके और ख़ुदा ने तुम्हारा यह कुसूर माफ़ भी कर दिया, तो ( अब इस्लाम के ज़रूरी अहकाम की तामील में कोताही न होने पाए-यानी ) नमाज़ें पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ( सब ख़बर ) है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या तुमने उन ( मुनाफ़िक़ों के हाल ) पर नज़र नहीं की, जिन्होंने ऐसे लोगों से दोस्ती जा लगाई, जिन पर ख़ुदा का ग़ज़ब है। ( तो अब ) यह लोग न तुमही में हैं और न उनही में, और बावजूदे कि वह जानते ( बूझते ) हैं ( फिर भी ) झूटी ( झूटी ) बातों पर क़स्में खाते हैं ० इनके लिये ख़ुदा ने अज़ाब-सख़्त तय्यार कर रक्खा है । इसमें शक नहीं कि यह लोग ( बहुत ही ) बुरा करते हैं ० इन्होंने अपनी क़स्मों को ढाल बना रक्खा है—

खड़े हो जाओ, तो तुम ( अपने अल्लाह और अपने रसूल के प्रेम में तुरन्त ) खड़े हो जाया करो। ( निस्सन्देह ) अल्लाह उन लोगों का ( लोक परलोक में ) पद ऊँचा करेगा, जो तुममें ( सच्चे ) ईमान वाले ( और अल्लाह रसूल के प्रेमी ) हैं। और जिन्हें ( आदर सत्कार के अवसर को समझने की बुद्धि और सत्य को सत्य और असत्य को असत्य समझने का ) ज्ञान दिया गया है। (निस्सन्देह ख़ुदा रसूल का आदर सत्कार ) और ( उनकी आधीनता ) जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ( सब ) ख़बर है। ( वह क़यामत के दिन तुमको उसका बहुत बड़ा फल प्रदान करेगा ) ॥

( और ) हे ईमान वालो ! जब तुम ( अल्लाह के ) रसूल से ( कुछ ) सलाह करना चाहो, तो ( उससे ) पहिले ( कंगालों को ) कुछ दान दे दिया करो। ( निस्सन्देह ) यह ( दान देना ) तुम्हारे लिये ( पुण्य की दृष्टि से एक ) उत्तम ( बात ) और ( रसूल के आदर की दृष्टि से बहुत बड़ी) पवित्र ( रीति ) है। फिर यदि तुम ( अपने में दान देने की सामर्थ ) न पाओ, तो ( तुम्हें कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं कि ऋण लेकर दान पुण्य करो । निस्सन्देह ) अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। क्या तुम ( हमारे प्रिय रसूल से ) सलाह करने से पहिले दान देने ( के आदेश ) से डर गये ? ( अज्ञानो ! यह तो कोई ऐसी डरने की बात न थी )। अच्छा ( चलो जाने दो ) यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते और (तुमको उसका देना कुछ कठिन जान पडता है, तो तुम जानो) तुमको क्षमा कर दिया—पर (पांचों समय की जमाअत के साथ) नमाज़ ( अवश्य ) पढ़ो और ज़कात ( अवश्य ) दो और ( हर बात में ) अल्लाह की और उसके रसूल की आधीनता ( अवश्य ) करो। और जो तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ( पूरी २ ) ख़बर है ॥

और ( हे पैग़म्बर ! ) क्या तुमने उन ( मुनाफ़िक़ ) लोगों को नहीं देखा, जो उस (काफ़िरों की) जाति के मित्र बने हुये हैं, जिन पर अल्लाह ने कोप किया है और न वह (बिल्कुल) तुमही में से हैं और न (बिल्कुल) उनही में से—(वरन् अधर में लटके हुये हैं ) और वह झूठ (बात) पर शपथें खाते हैं ( और इधर मुसल्मानों से कहते हैं कि हम मुसल्मान हैं और उधर काफ़िरों से कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं )— यद्यपि वह जानते हैं ( कि क़यामत आएगी और उन्हें अपने इस असत्य-कथन और धोखे बाज़ी का हाल अच्छी तरह मालूम हो जायगा। निस्सन्देह ) अल्लाह तआला ने उनके लिये एक कठोर अज़ाब तय्यार कर रक्खा है। निस्सन्देह जो काम वह करते हैं ( परिणाम की दृष्टि से अत्यन्त ) बुरे हैं। उन्होंने अपनी सौगन्धों को ( अपने लिये ) ढाल बना रक्खा है—

فَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ
لَّن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ
شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا
يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ أَلَا
إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ
فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ
أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ إِنَّ الَّذِينَ
يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ
كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ
عَزِيزٌ لَّا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا
آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ

और (लोगों को) राह-ख़ुदा से रोकते रहते हैं, तो इनको ज़िल्लत का अज़ाब ( होना ) है ० अल्लाह के हाँ न ( तो ) इनके माल ( ही ) इनके कुछ काम आयेंगे और न इनकी औलाद ( हो इनके कुछ काम आएगी ) यह दोज़ख़ी लोग हैं कि हमेशा ( हमेशा ) दोज़ख़ ही में रहेंगे ० जिस दिन अल्लाह इन सबको ( जिला ) उठायेगा, तो यह उसके आगे ( भी ) क़स्में खायेंगे, जैसे तुम मुसल्मानों के आगे क़स्में खाया करते हैं और समझते हैं कि ख़ूब कर रहे हैं। सुनो जी ! यह लोग बड़े ही झूटे हैं ० शैतान इन पर ग़ालिब आ गया है और उसने इनको ख़ुदा की याद भुला दी है। यह ( एक ) शैतानी गिरोह है। सुनो जी ! शैतानी गिरोह ही ( आख़िरकार ) बर्बाद होगा ० जो लोग अल्लाह और उसके रसूल के ख़िलाफ़ करते हैं, ( आख़िरकार ) वही ज़लील-तरीन लोगों में होंगे ० ख़ुदा तो लिख चुका है कि हम और हमारे पैग़म्बर ज़रूर ( काफ़िरों पर ) ग़ालिब आकर रहेंगे । बेशक अल्लाह ज़ोरावर ( और ) ज़बरदस्त है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जो लोग अल्लाह और रोज़-आख़िरत का यक़ीन रखते हैं, उनको तो तुम न देखोगे कि ख़ुदा और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ों के साथ दोस्ती रक्खें, गो वह उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके कुन्बे ही के (क्यों न) हों—

---

सो वह ( इस धोखे तथा पथ-भ्रष्टता में ख़ुद भी पड़े हुए हैं और दूसरे ) लोगों को ( भी ) अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, तो उनके लिये ( उनके कुकर्मों के बदले) ख़ुदा के दरबार में ( बड़े ) अनादर का अज़ाब है। उनको ख़ुदा ( के कोप ) से न कुछ उनका धन ( दौलत ) बचा सकेगा, न उनकी सन्तान। (निस्सन्देह ) यह सब ( के सब अव्वल दर्जे के ) दोज़ख़ी हैं (और) सर्वदा यह उसी (दोज़ख़ ही) में ( पड़े जलते ) रहेंगे॥

( हे पैग़म्बर ! ) जिस दिन अल्लाह उन सबको ( उनकी क़ब्रों से ज़िन्दा करके ) उठावेगा ( और उनसे उनके कर्मों के सम्बन्ध में पूछ गछ करेगा ) तो जिस प्रकार यह तुम्हारे सन्मुख ( अपने आपको ईमानदार और सुकर्मी सिद्ध करने के लिये झूठी ) शपथें खाते हैं ( उसी प्रकार ) अल्लाह के समक्ष ( भी झूठी ) शपथें खाएँगे और ( अपने इस व्यवहार से ) ख़याल करेंगे कि यह ( भी ) कोई ( काम की ) बात है ( जो हमें ख़ुदा के अज़ाब से बचा लेगी। सो हे पैग़म्बर ! ) सुनो ! ( हम भली भांति जानते हैं कि लोक परलोक में झूठ बोलने वाले यही हैं। ( हम इनके धोखे में कभी नहीं आ सकते)। उन पर शैतान ने (पूर्ण) अधिकार जमा लिया है और उन (के दिल ) को अल्लाह के स्मरण से अचेत कर दिया है। यह (वास्तव में) शैतान का दल है। (हे पैग़म्बर ! अच्छी तरह ) सुनलो कि शैतान का जो दल है, वह ( निश्चित रूप से एक न एक दिन अप्रतिष्ठित तथा अपमानित और ) नष्ट (भ्रष्ट) होने वाला है (लोक में भी और परलोक में भी। और न केवल यह शैतान का गुप्त समूह, वरन् ) जो लोग अल्लाह के और उसके रसूल के (आदेश के) विरुद्ध करते हैं, वह नीच (श्रेणी के) लोगों में ( से ) हैं। ( इन सबके विषय में ) अल्लाह ( यह बात लौह-महफ़ूज़ में) लिख चुका कि ( यह कितना ही यत्न करें, परन्तु सर्वदा ) हम और हमारा रसूल (उन पर) प्रबल रहेंगे। निस्सन्देह अल्लाह तआला बड़ी शक्ति वाला है। ( उसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता )॥

(हां ! अवश्य हे पैग़म्बर !) जो लोग अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ( सच्चे दिल से ) विश्वास रखते हैं, तुम उनको ऐसे लोगों से मित्रता करते हुए (कभी) न पाओगे, जो अल्लाह के और उसके रसूल के विरोधी हैं-चाहे वह ( अल्लाह रसूल के विरोधी ) उनके बाप हों वा बेटे, वा उनके भाई हों वा उनके नातेदार—

أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ
بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ
حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

سورة الحشر اربع وعشرون

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِن دِيَارِهِمْ
لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنتُمْ أَن يَخْرُجُوا ۖ وَظَنُّوا
أَنَّهُم مَّانِعَتُهُمْ حُصُونُهُم مِّنَ اللَّهِ فَأَتَاهُمُ اللَّهُ
مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا ۖ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ
الرُّعْبَ ۚ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُم بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي

المؤمنين

यही ( वह पक्के मुसलमान ) हैं, जिनके दिलों के अन्दर ख़ुदा ने ईमान का नक़्श कर दिया है और अपने फ़ैज़ान-ग़ैबी से उनकी ताईद की है और वह उनको ( बहिश्त के ऐसे ) बाग़ों में लेजा दाख़िल करेगा, जिन के तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी ( और वह हमेशा ) हमेशा उनही में रहेंगे। ख़ुदा उनसे ख़ुश और वह ख़ुदा से ख़ुश-यह ख़ुदाई गिरोह है। सुनो जी ! ख़ुदाई गिरोह ही ( आख़िरकार ) फ़लाह पायेगा ०

## सूरत-हश्र

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें २४ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान ( है ) ० जितनी मख़्लूक़ात आस्मानों में है और जितनी मुख़्लूक़ात ज़मीन में है, ( सब ही तो ) ख़ुदा की तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगी है और वह ज़बरदस्त ( और ) हिकमत वाला है ० वह (ख़ुदा) ही तो था, जिसने कुफ़्फ़ार अह्ले-किताब को उनके घरों से निकाल बाहर किया ( और यह उनकी तक़्दीर का) पहिला हश्र (था ) जिसके लिये निकाले गये। ( मुसलमानो ! ) तुमको ( तो वहम व ) गुमान ( भी ) न था कि ( यह अपने घरों से ) निकलेंगे और वह इस ख़याल में ( मस्त ) थे कि उनके क़िले उनको ख़ुदा ( की पकड़ ) से बचा लेंगे—तो जिधर से उनको गुमान भी न था, ख़ुदा ( के लश्कर ) ने उनको आ लिया और उनके दिलों में (मुसलमानों की ) धाक डाल दी कि लगे अपने घरों को अपने हाथों और मुसलमानों के हाथों उजाड़ने—

( सत्य यह है कि ) उनके दिलों में अल्लाह तआला ने ईमान (को ) अङ्कित कर दिया है और (दुनिया में) अपनी ( विशेष ) कृपा के साथ उनकी सहायता की है ( और ईमान तथा कर्म-शक्ति प्रदान की है )। और (परलोक में ) वह उन्हें (ऐसी) जन्नतों में प्रविष्ट करेगा, जिनके नीचे नहरें बहती हैं। (और एक दो दिन के लिये नहीं,बरन) वह सर्वदा उन (ही) में रहेंगे। (और) अल्लाह उनसे प्रसन्न होगा और वह अल्लाह से प्रसन्न होंगे। ( निस्सन्देह ) यह अल्लाह का दल है। ( हे पैग़म्बर !) सुनलो कि जो अल्लाह का दल है, वही मनोरथ को प्राप्त होने वाला है ( उसके अतिरिक्त कोई और दल कभी कृतार्थ नहीं हो सकता ) ॥

## सूरत-हश्र

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें २४ आयतें और ३ रुकूअ हैं ॥

पृथ्वी और आकाशों में जो ( फ़रिश्ते मनुष्य और पशु पक्षी और बनस्पति तथा पाषाण विद्यमान ) हैं, वह ( सबके सब जिस प्रकार भी उनसे हो सकता है ) अल्लाह को ( स्तुति प्रशंसा के साथ उसको ) पवित्रता वर्णन करते हैं और ( इस बात का इक़रार करते हैं कि ) अल्लाह ( बड़ा ) प्रबल ( तथा ) हिकमत वाला है। ( और ) वह ( ख़ुदा ) वही है, जिसने किताब वालों में से उन लोगों को जो ( ईमान नहीं लाए और इस्लाम से ) इन्कारी हैं ( इस्लामी सेना के ) पहिले ही जमाव (और आक्रमण) पर उनके घरों से निकाल बाहर किया-( यद्यपि मुसल्मानो ! ) तुम ख़्याल करते थे कि वह ( अपने घर से कभी ) न निकलेंगे-( क्योंकि यहां वह पूर्ण दृढ़ता के साथ पांव जमाए बैठे हैं ) और ( स्वयं ) वह भी यही समझे हुये थे कि अल्लाह ( की पकड़ ) से उनको उनके ( धन दौलत तथा सन्तान की अधिकता और सुदृढ़ ) क़िले बचा लेंगे-( परन्तु उनका और तुम्हारा दोनों का विचार ग़लत निकला ) और उन पर अल्लाह का अज़ाब वहां से आ पहुंचा, जहां से ( आने का ) उनको ख़्याल भी न था। और उनके हृदयों में ( मुसल्मानों का ) भय डाल दिया (अर्थात यह अवज्ञाकारी यहूदी बनी-नुज़ैर अपने दिल में मुसल्मानों को उनकी निर्धनता के कारण इतना नीच तथा मान रहित समझते थे कि उनके हृदय में यह ख़्याल भी न था कि एक दिन उनका विनाश इन्हीं मुसल्मानों के हाथों होगा और उनकी जड़ बुनियाद उखेड़ फेंकेंगे ) ॥

( और उनकी यह दशा हो जायगी कि ) वह ( अपना काठ कबाड़ अर्थात गृहस्थी की सामग्री अपने साथ लेजाने के लिये अपने हाथों से और ( प्रतिवा भङ्ग करके ) मुसल्मानों के हाथों से ( अपने ) अपने घरों को ख़राब करेंगे—

الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِي الْأَبْصَارِ ۝ وَلَوْ
لَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي
الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ
يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ مَا
قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً
عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ۝
وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ
عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ
يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ
الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَيْ لَا يَكُونَ

तो ऐ लोगो ! जिनके (मुंह पर) आंखें हैं, इस (वाक़्य) से इब्रत पकड़ो ० और अगर .ख़ुदा ने जिला-वतन होना इनकी तक़दीर में न लिख दिया होता, तो .ख़ुदा इनको (दूसरी तरह) दुनिया में सज़ा देता और आख़िरत में (तो) इनको दोज़ख़ का अज़ाब (होना ही) है ० (और) यह इस सबब से कि उन्होंने .ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की और जो .ख़ुदा की मुख़ालिफ़त करे, तो .ख़ुदा की मार (बड़ी ही) सख़्त है ० (मुसल्मानो ! इनके) खजूरों के दरख़्त जो तुमने काट डाले या उनको (हाथ तक न लगाया और बदस्तूर) उनकी जड़ों समेत खड़ा रहने दिया, तो (यह सब कुछ) .ख़ुदा ही के हुक्म से था और .ख़ुदा को मन्ज़ूर था कि नाफ़र्मानों को रुस्वा करे ० और जो (माल) .ख़ुदा ने अपने रसूल को (बे लड़े) मुफ़्त में उनसे दिलवा दिया, तो (मुसल्मानो !) तुमने उसके लिये कुछ दौड़-धूप तो की नहीं—(न) घोड़ों से और न ऊँटों से, मगर अल्लाह अपने पैग़म्बरों को जिस पर चाहे, क़ाबिज़ करदे और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० जो (माल) अल्लाह अपने रसूल को (इन) बस्तियों के लोगों से मुफ़्त में दिलवा दे, तो (वह) अल्लाह का (हक़) है, और रसूल का, और (रसूल के) क़राबत-दारों का, और यतीमों का, और मोहताजों का, और (बे तोशा) मुसाफ़िरों का—(यह हुक्म) इसलिये (दिया गया) कि—

---

हे आंखों वालो ! (उनकी इस अधम दशा को देखो और) शिक्षा ग्रहण करो। और यदि अल्लाह ने उनके भाग्य में देश-त्यागन न लिखा होता, तो (अल्लाह) उनको दुनिया (ही) में कठोर अज़ाब देता (अर्थात बनू-क़ुरेज़ा की तरह उन्हें भी बध करा देता) और (अब यदि यह बध होने से बच गये हैं, तो क्या है)-परलोक में (तो) उनके लिये अग्नि का (कठिन) अज़ाब (तय्यार ही) है। (वहाँ उन्हें उनकी करतूतों का पूरा २ स्वाद चखा दिया जायगा)॥

(और उनका) यह (परिणाम केवल) इस कारण से है कि वह अल्लाह और उसके रसूल के विरुद्ध हो गये (और उन्होंने प्रतिज्ञा भङ्ग की) और जो कोई अल्लाह का विरोधी हो (ता है) तो (उसे लोक परलोक में ऐसे ही कष्टों का सामना होता है। निस्सन्देह) अल्लाह बहुत कठिन अज़ाब देने वाला है। और (मुसल्मानो !) खजूरों के वृक्ष जो तुमने काट डाले वा उनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया, तो (कुछ बुरा नहीं किया। इस समय तुमने जो कुछ किया) अल्लाह की आज्ञा से (किया) और (उसकी यह आज्ञा) इसलिये (हुई) जिससे कि (अल्लाह तआला अपने उन) अवज्ञा-कारियों को अपमानित करे (और उन्हें दुर्ग से निकाल बाहर करदे)॥

और जो कुछ (सामग्री तथा भूमि इत्यादि) अल्लाह ने अपने रसूल को उन (उद्दण्डों) से दिलवाई, तो (हे मुसल्मानो ! तुम उसको क्यों माँगते हो)-कोई तुमने उस पर घोड़े तो दौड़ाए नहीं (थे) और न (तुमने) ऊंट (लेकर उन पर चढ़ाई की थी। अर्थात् तुमको उसके प्राप्त करने में युद्ध करना नहीं पड़ा था)—बरन (यह माल तो अल्लाह ने अपने रसूल को बिना—परिश्रम और बिन-माँगे दिया है और) अल्लाह अपने रसूलों को (जिस माल का चाहता है, अधिकारी बना देता है और) जिस पर चाहता है (इसी प्रकार बिना लड़े भिड़े) विजय दे देता है और (इसमें कुछ सन्देह नहीं कि) अल्लाह हर वस्तु पर (पूर्ण) शक्ति रखता है। (और इसी प्रकार) जो कुछ अल्लाह तआला अपने रसूल को (उन दूसरे) बस्तियों वालों (अर्थात् फ़िदक तथा ख़ैबर के निवासियों) से दिला दे, तो (वह मिला हुआ धन दौलत) अल्लाह का और रसूल का और (रसूल के) नातेदारों का और अनाथों का और कंगालों का और यात्रियों का हक़ है (और यह हक़ इसलिये है) जिससे कि—

دُولَةً بَيْنَ الْاَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ
فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا وَاتَّقُوا
اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۞ لِلْفُقَرَاءِ
الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ
يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۞ وَالَّذِيْنَ
تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ
مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۞ وَالَّذِيْنَ
جَآءُوْ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا
وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا

जो लोग तुममें मालदार हैं, यह ( माल ) उन ( ही ) में चलता फिरता न रहे और ( मुसलमानो ! ) जो चीज़ पैग़म्बर तुमको ( हाथ उठा कर ) दे दिया करें, वह तो ले लिया करो और जिस चीज़ ( के लेने ) से तुमको मना करें—( उससे ) दस्त-कश रहो और ख़ुदा ( के ग़ज़ब ) से डरते रहो—( क्योंकि ) ख़ुदा की मार बड़ी सख़्त है ० ( वह माल जो बे लड़े मुफ़्त में हाथ लगा है, मिन्जुम्ला और हक़दारों के मोहताज) मुहाजिरीन का ( भी हक़ ) है, जो ( काफ़िरों के ज़ुल्म से ) अपने घर और माल से बे-दख़्ल कर दिये गये ( और अब वह ) ख़ुदा के फ़ज़्ल और ( उसकी ) ख़ुशनूदी की तलबगारी में लगे हैं और ख़ुदा और उसके रसूल की मदद को खड़े हो जाते हैं—यही तो सच्चे ( मुसलमान ) हैं ० और ( हां ! वह माल, जो बे लड़े हाथ आया है ) उनका ( भी हक़) है कि ( मुहाजिरीन ने अभी हिजरत नहीं की थी और वह ) उनसे पहिले मदीने में रहते और इस्लाम में दाख़िल हो चुके हैं। जो उनकी तरफ़ हिजरत करके आता है, उससे महब्बत करने लगते हैं और ( माल-ग़नीमत में से ) मुहाजिरीन को जो ( कुछ भी दे ) दिया जाय, उसकी वजह से यह अपने दिल में ( उसकी ) कोई तलब नहीं पाते और अपने ऊपर तंगी ही क्यों न हो ( मुहाजिरीन भाइयों को ) अपने से मुक़द्दम रखते हैं और ( बुख़्ल तो सबही की तबीअतों में होता है, मगर ) जो शख़्स अपनी तबीयत के बुख़्ल से महफ़ूज़ रक्खा जाय, तो ऐसे ही लोग फ़लाह पायेंगे ० और (हां ! जो माल बे लड़े हाथ आया है ) उनका ( भी हक़ ) है, जो मुहाजिरीन-अव्वलीन के बाद (हिजरत करके) आये ( कि यह भी अगले मुसलमानों के ख़ैर-ख़्वाह हैं और ) दुआयें माँगा करते हैं कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमारे और(नोज़) हमारे ( उन मुहाजिरीन व अन्सार ) भाइयों के गुनाह माफ़ कर ! जो हमसे पहिले ईमान ला चुके हैं और—

धनवानों के हाथ में न आए-( बरन् उनके हाथ से निकल कर निर्धनी तथा दरिद्रों पर विभाजित हो जाय । अतः मुसल्मानो ! तुम्हारी भलाई इसी में है कि हर बात में अपने अल्लाह की और उसके रसूल की आधीनता करो ) और ( उसके ) रसूल जो कुछ तुमको दें, तो तुम उसको ले लो । और जिस (वस्तु के लेने) से तुमको मना करें, तो (उसको) छोड़ दो (उसको ओर कुछ भी ध्यान न दो ) और ( सर्वदा ) अल्लाह से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह बहुत कठिन अज़ाब देने वाला है ॥

( और फ़य × का धन विशेषतः ) उन निर्धन मुहाजिरीन का हक़ है, जो अपने घरों से निकाले हुये हैं ( और रसूलुल्लाह की सेवा में उपस्थित हुये हैं ) और अपने धनों से अलग किये गये हैं । और ( हर बात में ) अल्लाह की कृपा और ( उसकी ) प्रसन्नता ढूंढते हैं और ख़ुदा की और उसके रसूल की सहायता करते हैं। ( निस्सन्देह ) यही लोग (बात के) सच्चे (और ईमान के पक्के ) हैं। (और लौकिक तथा पारलौकिक मुक्ति तथा सफलता के अधिकारी हैं )॥

× टीका—फ़य के धन और ग़नीमत के धन में भेद है। फ़य का धन वह है, जो बिना युद्ध हाथ लगे :—हसन निज़ामी ॥

और ( उस धन में ) उन लोगों का ( भी हक़ है) जिन्होंने इस्लाम और ईमान के घर ( मदीना ) में उन ( मुहाजिरीन के आने ) से पहिले ठिकाना पकड़ा है ( अर्थात अन्सार,और जो इतने नेक हैं कि ) जो उनके पास स्वदेश-त्यागन करके आये, वह उससे प्रेम करते हैं। और जो वस्तु मुहाजिरीन को दी जाय, उससे अपने हृदयों में कुछ तङ्गी नहीं पाते-(बरन् प्रसन्न होते हैं) और यद्यपि अपने ऊपर तंगी ही हो-( परन्तु ) उन्हें अपने प्राणों से ( अधिक ) प्रिय रखते हैं। और ( लोगो ! याद रक्खो कि ) जो अपने मन की कृपणता ( और बुराई) से बचा लिया गया ( है, वही अल्लाह का नेक बन्दा है। और ) ऐसे ही लोग ( लोक परलोक में ) सफल होने वाले हैं ( लोभी लालची तथा कृपण और स्वार्थी कभी सफल नहीं हो सकते )। और उन लोगों का ( भी फ़य के धन में हक़ है ) जो उन ( मुहाजिरीन ) के पश्चात ( ख़ुदा के दर्बार में ) यह कहते हुये आये कि हे हमारे पालनहारे ! हमको और हमारे भाइयों को जो हमसे पहिले ईमान लाए, क्षमा दे—

تجعل في قلوبنا غلا للذين امنوا ربنا
انك رءوف رحيم ● الم تر الى الذين نافقوا
يقولون لاخوانهم الذين كفروا من
اهل الكتب لئن اخرجتم لنخرجن معكم
ولا نطيع فيكم احدا ابدا وان قوتلتم
لننصرنكم والله يشهد انهم لكذبون ● لئن
اخرجوا لا يخرجون معهم ولئن قوتلوا
لا ينصرونهم ولئن نصروهم ليولن الادبار
ثم لا ينصرون ● لانتم اشد رهبة في
صدورهم من الله ذلك بانهم قوم لا
يفقهون ● لا يقاتلونكم جميعا الا في
قرى محصنة او من وراء جدر باسهم
بينهم شديد تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى

ऐसा कर कि जो लोग ईमान ला चुके हैं, उनकी तरफ़ से हमारे दिलों में किसी तरह का कीना न आने पाये ; ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! तू बड़ा शफ़क़त रखने वाला मेहर्बान है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या तुमने मुनाफ़िक़ों ( के हाल ) पर नज़र नहीं की, जो अपने ( हम-जिन्स ) भाइयों ( यानी ) कुफ़्फ़ार-अह्ले-किताब से कहा करते हैं कि अगर तुम ( घरों से ) निकाले जाओगे, तो हम भी तुम्हारे साथ निकल खड़े होंगे और तुम्हारे बारे में हम कभी किसी की मानने ही के नहीं और अगर तुमसे (और मुसल्मानों से) लड़ाई होगी, तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और ( मुसल्मानो ! ) अल्लाह ( तुमको ) बताये देता है कि यह बिल्कुल झूटे हैं ० अगर अह्ले-किताब निकाले जाएँगे, तो यह उनके साथ नहीं निकलेंगे और अगर अह्ले-किताब से ( और मुसल्मानों से ) लड़ाई हो पड़ेगी, तो यह ( मुनाफ़िक़ ) अह्ले किताब की मदद नहीं करेंगे और अगर उनकी मदद करेंगे ( भी ) तो ज़रूर दुम दबाकर भागते नज़र आयेंगे। फिर ( किसी तरफ़ से ) इनको कुमक भी तो नहीं पहुंचेगी ० (मुसल्मानो !) तुम्हारी हैबत तो इनके दिलों में अल्लाह से ( भी ) बढ़कर है ( और ) यह इस सबब से है कि यह ना समझ लोग हैं ० यह सब मिलकर ( भी ) तुमसे नहीं लड़ सकते, मगर हाँ ! महफ़ूज़ बस्तियों में या दीवारों की आड़ में इनकी बड़ी धाक ( बैठी हुई ) है ( और ऐ मुख़ातब ! ) तू ( इनके ज़ाहिर हाल को देखे, तो ) इनको समझे कि सब एक हैं, हालाँकि इनके दिल ( एक दूसरे से ) फटे हुए हैं—

---

और हमारे हृदयों में ईमान वालों का बैर न रख। हे पालनहारे ! ( तू हमारी सुनले ) तूही ( दीनों पर ) दयालु और ( लाचारों पर ) कृपालु है। ( हे पैग़म्बर ! ) क्या तुमने उन मुनाफ़िक़ों ( अर्थात अब्दुल्लाह—बिन—उबई इत्यादि ) की ( बातों की ) ओर नहीं देखा, जो किताब वालों में से अपने ( सहमत ) काफ़िर भाइयों से (अर्थात बनू-नुज़ैर आदि से ) कहते हैं कि यदि तुमको कोई ( यहां से ) निकाल देगा, तो हम भी तुम्हारे साथ निकलेंगे। और तुम्हारे मामले में ( तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध ) कभी किसी का कहा न मानेंगे। और यदि तुमसे ( किसी का ) युद्ध होगा, तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे-( सार यह कि ऐसी गपें हांकते हैं) और (व्यर्थ बातें बनाया करते हैं, किन्तु) अल्लाह गवाह है कि वह ( बिल्कुल ) झूठे हैं ॥

यदि वह निकाले जायँ–तो यह (कभी भी ) उनके साथ न निकलेंगे। और यदि उनसे युद्ध हुआ, तो ( कदापि ) उनकी सहायता न करेंगे और यदि सहायता (करने) की ( कुछ नीयत ) भी ( की ) तो ( अपनी उस नीयत पर स्थिर न रह सकेंगे, वरन् तुरन्त ) पीठ फेर कर ( युद्ध–क्षेत्र से ) भाग खड़े होंगे ( और ) यह ( किताब वाले काफ़िर ) फिर कहीं सहायता न पावेंगे ( और बड़े खेद पश्चाताप के साथ नष्ट हो जावेंगे। और मुसल्मानो ! उनके परस्पर सहायता न कर सकने का मूल कारण यह है कि ) उनके दिलों में अल्लाह ( के भय ) से तुम्हारा भय अधिक है—(यह तुमसे डरते हैं कि कहीं तुम उनकी गुप्त कार्यवाहियों से अभिज्ञ होकर उन्हें दंड न दे दो ) और यह ( ख़ुदा की ओर से निर्भयता उनके हृदयों में ) इस कारण है कि यह लोग ( बड़े ही मूर्ख हैं। अल्लाह की शक्ति तथा महानता को) समझ नहीं सकते। (निस्सन्देह यदि वह अल्लाह की शक्ति तथा महानता को समझते, तो अवश्य उससे डरते और इस प्रकार पथ-भ्रष्ट कभी न होते) ॥

( और यह यहूदियों के कायर कुटुम्ब अकेले २ तो क्या तुमसे युद्ध का साहस कर सकते हैं, सबके ) सब मिल कर भी ( खुले मैदान में ) तुमसे युद्ध न कर सकेंगे, परन्तु ( हां ! ) उन बस्तियों में (रह कर जिनमें खाइयाँ इत्यादि खुदी हुई हैं और ) जो ( बिल्कुल ) सुरक्षित हैं ( जैसे ख़ैबर इत्यादि ) अथवा ( किसी दुर्गादि की ) दीवार के पीछे से ( कुछ थोड़ा बहुत ) मुक़ाबला कर सकते हैं। ( और मुसल्मानो ! कभी तुम इस बात से सङ्कोच न करना कि ) उनमें परस्पर घोर युद्ध (होता) है ( अतः जो मुसल्मानों के मुक़ाबले में भी ऐसे ही बड़े सूर्मा सिद्धा होंगे। और न कभी यह ख़्याल करना कि यह परस्पर मिलकर कुछ प्रबल हो जावेंगे )। तुम उन्हें ( अपनी अज्ञानता से परस्पर एक तथा ) मिला हुआ ख़्याल करते हो–यद्यपि उनके दिल ( परस्पर एक दूसरे बिल्कुल ) फटे हुये हैं—

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۝ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ
لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ
مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَكَانَ
عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ
جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا
اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝
لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ
عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ

यह इस सबब से कि इन लोगों में ( मुतलक़ ) अक़्ल नहीं ० ( इन लोगों की मिसाल ) उन लोगों की सी मिसाल है, जो अभी इनसे ( थोड़े दिन ) पहिले (मुसल्मानों से जङ्ग-बद्र में लड़कर ) अपनी शामत-आमाल का मज़ा चख चुके हैं और ( आख़िरत में ) इनको अज़ाब-दर्दनाक ( होना ) है ( सो अलग ) ० ( नीज़ इन मुनाफ़िक़ों की मिसाल ) शैतान की सी मिसाल है कि वह आदमी को कुफ़् की तालीम व तल्क़ीन करता है । फिर जब वह कुफ़् कर बैठता है ( और कुफ़् का वबाल उसको पेश आता है और वह शैतान से मदद मांगता है ) तो ( शैतान ) कहता है, मुझे तुझ से कुछ सरोकार नहीं । मैं तो अल्लाह-रब्बुल-आलमीन (के ग़ज़ाब ) से डरता हूं ० फिर इन दोनों का अन्जाम यही होना है कि दोनों दोज़ख़ में ( धकेल दिये ) जाएंगे ( और ) उसीमें इनको हमेशा ( हमेशा ) रहना होगा और ( तमाम ) सर्कशों की यही सज़ा है ० मुसलमानो ! ख़ुदा ( के ग़ज़ाब ) से डरते रहो और हर शख़्स ( इस बात पर ) नज़र करता रहे कि कल ( क़यामत ) के लिये उसने क्या ( ज़ाद-आख़िरत ) भेजा है और ख़ुदा से डरते रहो—( क्योंकि ) जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ( सब ) ख़बर है ० और उन लोगों जैसे न बनो, जिन्होंने ख़ुदा को भुला दिया, तो ख़ुदा ने उनकी ऐसी मति मारी कि अपने आपको भी भूल गये । यही लोग (तो बड़े) नाफ़र्मान हैं ० दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं ( हो सकते कि ) जन्नती ( जो हैं, तो ) वह कामयाब लोग हैं ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) अगर हमने यह क़ुर्आन किसी पहाड़ पर उतारा होता ( और आदमी की तरह उसको शऊर भी होता ) तो तुम उसको देख लेते कि ख़ुदा के डर के मारे झुक गया ( होता और ) फट पड़ा होता—

( और यह फूट उनमें ) इसलिये है कि यह ( अज्ञान हैं । अपना भला बुरा) नहीं समझते-(इसलिये तुम उनसे तो हर प्रकार निश्चिन्त रहो । यह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते । यह लोग बिलकुल ) उन लोगों की तरह हैं, जो उनसे कुछ ( दिनों ) पहिले हुए हैं, जिन्होंने ( दुनिया में भी ) अपने ( बुरे २ ) कर्मों का दण्ड भोगा और ( परलोक में भी ) उनके लिये कष्ट-दायक अज़ाब तय्यार है ( और यहां भी उन्हें सुख न मिला और वहां भी उन्हें चैन न आएगी ) ॥

( नहीं, बरन् यह मुनाफ़िक़ लोग तो बिल्कुल ) शैतान के समान हैं कि ( पहिले ) मनुष्य से कहता है ( अल्लाह रसूल से ) फिर जा ( उसके बहकाए में आकर ) जब वह फिर जाता है ( और कुफ़्र तथा पथ-भ्रष्टता में पड़ जाता है ) तो कहता है—मैं तुझसे अलग हूं ( तेरे कामों से घृणा करता हूं ) । मैं तो अल्लाह से डरता हूं, जो सर्व जगों का पालनहारा है-परन्तु परिणाम उन दोनों का ( बुरा अर्थात शैतान का और शैतान के मानने वाले का परिणाम) यही है कि वह दोनों सर्वदा अग्नि में रहेंगे । और (इसमें कुछ सन्देह नहीं कि हमारे यहाँ) पापियों का दंड यही है-(चाहे वह बहकाने वाले हों या बहकाए में आने वाले । अतः) ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और ( तुमसे जहां तक होसके नेक काम करो) और (तुममें से) हर प्राणी को चाहिये कि इस बात पर विचार करे कि उसने कल (अर्थात क़यामत) के लिये (दुनिया से) क्या आगे भेजा है और (पाप करते समय) ख़ुदा से डरो (और उससे रुक जाओ)। निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारे ( शुभ अशुभ समस्त) कर्मों से भली भाँति अभिज्ञ है। ( क़यामत के दिन वह तुम्हारे शुभ कर्मों का तुमको पुरस्कार और अशुभ कर्मों का दण्ड अवश्य प्रदान करेगा)। और ( देखो !) तुम उन जैसे ( कभी ) न बनो, जिन्होंने (अपने दिल से) अल्लाह को भुला रक्खा है ( और ) फिर अल्लाह ने ( भी ) उनके प्राणों से उनको अचेत कर दिया ( कि उनको अपना बना बिगड़ा कुछ नहीं सूझता । निस्सन्देह ) पापी ( तथा अज़ाब के अधिकारी ) लोग यही हैं । (ईमान वालो ! इतना तो तुम सरलता-पूर्वक समझ सकते हो कि ) दोज़ख़ ( में जाने) वाले और जन्नत ( में जाने ) वाले बराबर नहीं ( हो सकते और ) जन्नत (में जाने) वाले जो हैं, वह मनोरथ को प्राप्त होने वाले लोग हैं ( और दोज़ख़ में जाने वाले बहुत बड़े घाटे में रहने वाले असफल लोग हैं ) ॥

( और जब तुम यह समझते हो, तो तुमको कृतार्थ लोगों में से होना चाहिये और तुम कृतार्थ जबही होगे, जबकि अमूल्य शिक्षा उपदेश वाली पुस्तक के आदेशों पर चलोगे और उसका सच्चा आदर सत्कार करोगे । निस्सन्देह यह क़ुर्आन तुम्हारे लिये अपूर्व पदार्थ है ) । यदि हम यह क़ुर्आन किसी पर्वत पर उतारते, तो ( हे रसूल ! ) तुम देखते कि अल्लाह के भय से दब जाता ( और ) टुकड़े २ हो जाता और ( [illegible] न उठा सकता )—

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ هُوَ اللَّهُ الَّذِي
لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ
الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ
عَمَّا يُشْرِكُونَ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

سُورَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّ
كُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا
بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ

और हम यह मिसालें लोगों के लिये बयान फ़र्माते हैं, ताकि वह सोचें ( समझें ) ० वह अल्लाह ऐसा ( पाक ज़ात ) है कि उसके सिवा कोई मबूद नहीं। पोशीदा और ज़ाहिर ( सब ) का जानने वाला, वही बड़ा मेहर्बान ( और ) रह्म वाला है ० वह अल्लाह ऐसा ( पाक ज़ात ) है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं-( तमाम जहान का ) बादशाह है, पाक ज़ात है-( तमाम ) ऐबों से बरी है, अम्न देने वाला है, निगहबान है, ज़बरदस्त है, बड़ा दबाव वाला है, बड़ी अज़ामत रखता है। यह लोग जैसे जैसे शिर्क करते हैं, अल्लाह ( की ज़ात ) उससे पाक है ० वही अल्लाह ( हर चीज़ का ) ख़ालिक़ ( हर चीज़ का ) मूजिद है। ( मख़्लूक़ात की तरह तरह की ) सूरतें बनाने वाला है। ( उसकी अच्छी अच्छी सिफ़तें हैं और इसी सबब से ) उसके अच्छे ही अच्छे नाम हैं। जो ( मख़्लूक़ात ) आसमानों ( में ) और ज़मीन में है—( सब ही तो ) उसकी तस्बीह ( व तक़्दीस ) करते हैं और वह ज़बरदस्त ( और ) हिक्मत वाला है ०

## सूरत—मुम्तहिनह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १३ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

४

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान ( है ) ० ( मुसलमानो ! ) अगर तुम हमारी राह में जिहाद करने और हमारी रज़ामन्दी ढूंडने की ग़रज़ से ( अपने वतन छोड़कर ) निकले हो, तो हमारे और अपने दुश्मनों को ( यानी क़ाफ़िरों को ) दोस्त न बनाओ कि लगो उनकी तरफ़ दोस्ती के ( नामा व पयाम ) दौड़ाने—हालाँकि तुम्हारे पास जो ( ख़ुदा की तरफ़ से दीन ) हक़ आया है, वह उससे इन्कार ही कर चुके हैं। वह तो सिर्फ़ इतनी बात पर कि तुम अपने पर्वर्दिगार अल्लाह ही को मानते हो, रसूल को और तुमको ( घरों में ) निकाल रहे हैं—

---

( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) हम यह ( शिक्षा प्रद ) दृष्टान्त लोगों ( को लाभ पहुंचाने ) के लिये वर्णन करते हैं ( अर्थात ) इस लिये कि वह ( उनमें ) सोच विचार करें ( और अपना अन्त सुधारने की अपने में योग्यता उत्पन्न करें । और उन्हें इस बात का विश्वास हो जाय कि उपासना के योग्य ) वह अल्लाह है—उसके अतिरिक्त कोई पूज्य ( बनने के योग्य ) नहीं, वह ( अदृष्ट-ज्ञानी है ) गुप्त तथा प्रगट ( सब ) बातों को ( भली भांति ) जानता है। वह ( अपने बन्दों पर अतिशय ) दयालु ( और अत्यन्त ) कृपालु है। ( और ) वह ( भूमि तथा आकाश रचने वाला ) अल्लाह है कि उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं (हो सकता)-वह (सच्चा) बादशाह है, पवित्र है, सलामती देने वाला है, शरण देने वाला है, रक्षा करने वाला है—( सब पर ) प्रबल है, दबाव वाला है, बड़ाई वाला है। ( निस्सन्देह ) ख़ुदा इन ( मुश्रिकों ) के शिर्क से पवित्र है ॥

( और ) वह अल्लाह ( सर्व सृष्टि का ) उत्पन्न करने वाला ( हर वस्तु का ) आविष्कार करने वाला ( नाना प्रकार की ) सूरतें बनाने वाला है। अच्छे २ नाम उसी के ( लिये ) हैं। अकाशों में और पृथ्वी में जो कोई ( फ़रिश्ता वा मनुष्यादि ) है, वह उसीकी पवित्रता वर्णन करता है ( और उसकी दशा इक़रार करती है कि ) वही प्रबल हिकमतों वाला है ( कोई उसकी हिकमतों को समझ नहीं सकता ) ॥

## सूरत—मुम्तहिनह

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें १३ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

हे ईमान वालो ! मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को (अपना) मित्र न समझो-(भला यह कितनी मूर्खता की बात है!) कि तुम उन्हें मित्रता के सन्देश भेजते हो-यद्यपि वह तुम्हारे पास जो सत्य-धर्म आया है, उससे इन्कार करते हैं ( और ) वह ( केवल ) इस बात पर कि तुम अपने पालनहारे अल्लाह को ( अपना पूज्य ) मानते हो ( तुम्हारे प्राण -घातक बने हुये हैं और ) तुम्हें ( और तुम्हारे ) रसूल को ( तुम्हारे घर से ) निकालते हैं ॥

أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا
فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ
بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ
وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ
إِنْ يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا
إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ
تَكْفُرُونَ لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا
أَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ
إِنَّا بُرَآءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ
كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ
وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَحْدَهُ إِلَّا

( और ) तुम चुपके चुपके उनकी तरफ़ दोस्ती ( के पैग़ाम ) दौड़ा रहे हो और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो ( वह ) और जो ज़ाहिर ज़हूर करते हो ( वह ) हम ( सबको ) ख़ूब जानते हैं और जो तुममें से ऐसा करेगा, तो ( समझ रक्खो कि ) वह सीधे रस्ते से भटक गया ० ( यह काफ़िर ) अगर ( कहीं ) तुम पर क़ाबू पा जाएँ, तो ( खुल्लम खुल्ला ) तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और हाथ और ज़बान ( दोनों ) से (तुम्हारे साथ) बुराई करने में कोताही न करें और उनकी ( असली ) तमन्ना यह है कि काश ! तुम ( भी उनही की तरह ) काफ़िर हो जावो ० क़यामत के दिन न तुम्हारी रिश्तेदारियां ही तुम्हारे कुछ काम आयेंगी और न तुम्हारी औलाद ही ( कुछ काम आयेगी )–उस दिन ख़ुदा ( ही ) तुममें ( हक़ व बातिल का ) फ़ैसला करेगा और जो ( कुछ भी ) तुम कर रहे हो, ख़ुदा उसको देख रहा है ० ( मुसलमानो ! ) इब्राहीम और जो लोग उनके साथ थे (यानी उस वक़ के मुसल्मान, पैरवी करने को ) तुम्हारे लिये उनका एक अच्छा नमूना हो गुज़रा है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम ( के लोगों ) से कहा कि हमको तुमसे और तुम्हारे उन ( माबूदों ) से, जिनकी तुम ख़ुदा के सिवा परस्तिश करते हो, कुछ (भी) सरोकार नहीं। हम तुम (लोगों के अक़ीदों) को (बिल्कुल) नहीं मानते और हममें और तुममें खुल्लम–खुल्ला अदावत और दुश्मनी ( क़ायम ) हो गई है (और यह दुश्मनी ) हमेशा के लिये ( रही ) जब तक तुम अकेले ख़ुदा पर ईमान न लावो। अलग़रज़ मुसलमानों ने कुफ़्फ़ार से बे तअल्लुक़ी ज़ाहिर करदी, मगर ( हाँ ! )—

---

( मुसलमानो ! भली भांति समझलो ! ) यदि तुम हमारे मार्ग में जिहाद करने और हमारी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ( अपने २ घरों से ) निकले हो ( तो तुमको बेईमानों से कभी कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये )–तुम उनको ( छिपा ) छिपाकर मित्रता के सन्देश भेजते हो और ( समझते हो कि हमें कुछ ज्ञान नहीं–यद्यपि ) तुमने जो कुछ खुल्लम खुल्ला किया और जो कुछ छिपाकर किया (वह सब) हमें अच्छी तरह ज्ञात है। (याद रक्खो ! तुम्हारा कोई काम हमसे गुप्त और तुम्हारी कोई बात हमसे छिपी हुई नहीं है) और तुममें से जो कोई यह ( अज्ञानता और इस प्रकार के अनुचित कर्म ) करता है, वह ( मानो ) सीधी राह से भटक गया ( और पथ–भ्रष्टों से मेल जोल करके पथ–भ्रष्टता के समीप होना चाहता है )॥

(मुसल्मानो ! तुम मुसल्मान होकर काफ़िरों से भलाई की आशा रखते हो ! बड़े आश्चर्य की बात है !! स्मरण रक्खो !) यदि तुम उन ( काफ़िरों) के हाथ आ जाओ, तो वह ( बिलकुल शील रहित होकर ) तुमसे शत्रुता प्रगट करें और ( अत्यन्त ) बुराई के साथ तुम पर अपने हाथ और अपनी ज़बानें चलाएँ। और ( यह ) इच्छा करें कि तुम भी किसी तरह से (उन्हीं की तरह) काफ़िर हो जाओ (अर्थात उनकी चेष्टा यह हो कि किसी प्रकार तुम्हारा लोक परलोक दोनों नष्ट भ्रष्ट हो जायँ)। क़यामत के दिन कदापि न तुम्हारे (नाते) कुनबे वाले ( तुम्हारे ) काम आवेंगे, न ( तुम्हारी ) सन्तान ( तुम्हारी सहायता करेगी)। ख़ुदा ही तुममें ( कुफ़्र इस्लाम का )निर्णय करेगा और ( ख़ुदा ही तुम्हारी भलाई बुराई का प्रतिफल देगा–क्योंकि ) जो कुछ तुम करते हो ( वह अच्छी तरह ) देखता है॥

तुम्हारे ( मनोरथ कल्याण और शिक्षा प्राप्त करने के ) लिये इब्राहीम ( पैग़म्बर के जीवन ) में और जो उनके साथ थे ( उनके व्यवहार में ) एक (उत्तम ) आदर्श विद्यमान है। ( वह समय याद करो ! ) कि जब ( उनकी जाति ने उनसे मूर्ति–पूजन के लिये कहा, तो उत्तर में ) उन्होंने अपनी जाति से कहा–हम तुमसे और अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पूजते हो, उनसे ( बिल्कुल ) अलग हैं। हम तुम से ( अलग हो गये। तुम्हारे रंग ढंग से ) फिर गये ( हम ख़ुदा को पूजते हैं और तुम मूर्तियों की पूजा करते हो ) हममें और तुममें सर्वदा के लिये शत्रुता तथा ईर्षा ( की ओर पड़ गई और हमारी तुम्हारी शत्रुता बिलकुल ) प्रगट हो गई। ( अब ) तुम जब तक एक ख़ुदा पर ईमान न लाओ ( हमारा तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता )॥

قول ابرهيم لابيه لاستغفرن لك وما
املك لك من الله من شيء ربنا عليك
توكلنا واليك انبنا واليك المصير
ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا واغفر لنا
ربنا انك انت العزيز الحكيم لقد كان
لكم فيهم اسوة حسنة لمن كان يرجوا الله
واليوم الاخر ومن يتول فان الله هو الغني
الحميد عسى الله ان يجعل بينكم وبين
الذين عاديتم منهم مودة والله قدير
والله غفور رحيم لا ينهىكم الله عن الذين
لم يقاتلوكم في الدين ولم يخرجوكم من ديار
كم ان تبروهم وتقسطوا اليهم ان الله يحب
المقسطين انما ينهىكم الله عن الذين قاتلوكم

इब्राहीम ने अपने बाप से इतनी बात (तो बेशक) कही कि मैं तुम्हारे लिये ज़रूर मग़फ़िरत को दुआ करूँगा और ( यूं ) तुम्हारे लिये ख़ुदा के आगे मेरा कुछ ज़ोर तो चलता नहीं ( कि ज़बरदस्ती तुमको बख़्शवा लूं और इसके साथ दुआ भी की थी कि ) ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम तुझ ही पर भरोसा रखते हैं और तेरे ही तरफ़ रुजू करते हैं और तेरे ही तरफ़ ( हमें ) लौटकर जाना है ० ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमको काफ़िरों ( के ज़ोर व ज़ुल्म ) का तख़्तए-मश्क़ न बना और ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमारे गुनाह माफ़ कर ! बेशक तू ज़बरदस्त ( और ) हिकमत वाला है ० ( मुसलमानो !) तुम्हारे लिये (यानी ) जो कोई ख़ुदा ( के अज़ाब ) और रोज़ आख़िरत ( की बाज़-पुर्स ) से डरता हो, उसके लिये ( पैरवी करने को ) इन लोगों का एक अच्छा नमूना हो गुज़रा है और जो ( इन लोगों की पैरवी से ) रूगर्दानी करेगा, तो अल्लाह बे-नियाज़ ( और हर हाल में ) सज़ावार हम्द ( व सना ) है ० अजब नहीं कि ( काफ़िर मुसलमान हो जायँ और यूं ) अल्लाह तुममें और काफ़िरों में से, जिनके साथ तुम्हारी (मज़हबी) दुश्मनी है, उनमें दोस्ती पैदा करदे और अल्लाह क़ादिर है और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० जो लोग तुमसे दीन के बारे में नहीं लड़े और उन्होंने तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला उनके साथ एहसान करने और मुन्सिफ़ाना बर्ताव करने से तो ख़ुदा तुमको मना करता नहीं-( क्योंकि ) अल्लाह मुन्सिफ़ाना बर्ताव करने वालों को दोस्त रखता है ० अल्लाह तो तुमको उनही लोगों से दोस्ती करने को मना फ़र्माता है, जो तुमसे दीन के बारे में लड़े—

( इसके उपरान्त इब्राहीम तथा उनके अनुयायी मूर्ति-पूजकों से बिल्कुल अलग हो गये। यहां तक कि इब्राहीम ने अपने मूर्ति-उपासक पिता से भी बात चीत नहीं की )-परन्तु हां ! एक बार इब्राहीम ने अपने पिता से ( केवल इतना ) कहा था कि ( पिता जी ! तुमने बहुत बड़ी ग़लती की और तुमने मूर्ति-पूजन करके अपना लोक परलोक बिगाड़ लिया । ख़ैर ! ) मैं तुम्हारे लिये क्षमा माँगूंगा ( कदाचित अल्लाह क्षमा करदे ) और मुझे ( क्षमा—याचना और तौबा के अतिरिक्त ) ख़ुदा के सामने किसी बात का ( भी ) अधिकार नहीं है। ( और अल्लाह की ओर चित्त लगाकर बोले कि ) हे हमारे पालनहारे ! तुझ पर ( और तेरे अनुग्रह पर ) भरोसा करते हैं और ( इधर उधर से अपना चित्त हटाकर ) तेरी ओर ध्यान देते हैं। और ( सबको तेरी ही ओर ध्यान देना भी चहिये—क्योंकि अन्त में तो ) सबको तेरी ही ओर लौटकर जाना है ॥

हे हमारे पालनहारे ! हमको काफ़िरों (की परीक्षा का साधन न बना ! और उन) का आधीन न कर ! और (उनको हम पर विजय न दे !) हे हमारे पालनहारे ! हम ( पर कृपा करदे और हमारे पापों ) को क्षमा करदे । निस्सन्देह तूही ( सब पर ) बलवान ( और सबसे ज़्यादा यत्न उपाय तथा ) हिकमत वाला है। ( तेरी यत्न—शक्ति के आगे किसी की कुछ नहीं चल सकती )। निस्सन्देह ( हे मुसलमानो ! ) तुम्हारे लिये ( और ) जो कोई अल्लाह का और अन्त दिन का विश्वास रखता हो ( उसके लिये ) उन लोगों ( के वृतान्त ) में ( शिक्षा तथा उपदेश का ) एक उत्तम आदर्श ( विद्यमान ) है। और जो कोई ( उस वृतान्त से शिक्षा न ग्रहण करे और अल्लाह रसूल से ) मुंह फेरे, तो ( वह जाने )-अल्लाह ( को कुछ उसकी पर्वाह नहीं । वह ) बे पर्वाह है। और ( हर दशा में ) प्रशंसनीय है—( उनके न मानने से उसके गुणों में कुछ अन्तर नहीं पड़ सकता ) ॥

( मुसल्मानो ! घबराओ नहीं। अति शीघ्र इस बात की पूर्ण ) आशा है कि जो ( काफ़िर ) तुम्हारे शत्रु हैं ( वह ईमान ले आवें ) और अल्लाह तुममें और उनमें जिनसे तुम शत्रुता करते हो ( पूरी ) मित्रता ( स्थिर ) करदे। और ( उनको ईमानदार बनाना अल्लाह के आगे कोई बड़ी बात नहीं— क्योंकि ) अल्लाह हर वस्तु पर शक्ति रखता है और अल्लाह ( ही ) क्षमा करने वाला कृपालु है-( वह जब चाहे, उन पर अनुग्रह करदे और उनको ईमान की पात्रता प्रदान करदे। और मुसल्मानो ! ) अल्लाह तआला तुम्हें ( इस बात से ) नहीं रोकता—कि तुम उन लोगों से जो तुमसे धर्म ( के सम्बन्ध ) में नहीं लड़े और तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, भलाई और न्याय युक्त व्यवहार करो। निस्सन्देह अल्लाह ( को न्याय बहुत प्रिय है और वह ) न्याय करने वालों को प्रिय रखता है । अल्लाह ( तो ) बस तुम्हें इस ( बात ) से रोकता है कि जो लोग तुमसे धर्म ( के विषय ) में लड़े—

فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ
إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ۞ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ
الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ
بِإِيمَانِهِنَّ ۖ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُو
هُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۖ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ
يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُم مَّا أَنفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ
وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا مَا أَنفَقْتُمْ
وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنفَقُوا ۚ ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۖ يَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۞ وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ
أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ
ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ

और जिन्होंने तुमको तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में ( तुम्हारे मुख़ालिफ़ों की ) मदद की और जो शख़्स ऐसे लोगों से दोस्ती रक्खेगा, तो (समझा जायगा कि) यही लोग ( मुसलमानों पर ) ज़ुल्म करते हैं ० मुसल्मानो ! जब तुम्हारे पास मुसल्मान औरतें हिजरत करके आया करें, तो तुम उन ( के ईमान ) की जाँच कर लिया करो। ( यूँ तो ) उनके ईमान का अल्लाह ( ही ) ख़ूब जानता है-( ताहम जाँच लेना ज़रूर है )। तो अग ( जांचने से ) तुम उनको समझो कि मुसलमान हैं, तो उनको काफ़िर की तरफ़ वापिस न करो-न ( तो ) यह ( औरतें ) काफ़िरों को हलाल, और न काफ़िर इन ( औरतों ) को हलाल, और जो कुछ काफ़िरों ने ( इन पर ) ख़र्च किया है, वह उन ( काफ़िरों ) को अदा करदो और ( इसमें भी ) तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन औरतों को उनके महर देकर तुम ( ख़ुद ) उनसे निकाह करलो और ( उन ) काफ़िर औरतों की नामूस पर क़ब्ज़ा न रक्खो ( जो तुम्हारे निकाह में हों ) और जो तुमने ( उन पर ) ख़र्च किया है, वह ( काफ़िरों से ) मांग लो और जो उन्होंने (अपनी औरतों पर) ख़र्च किया है,वह(अपना ख़र्च किया हुआ तुमसे) माँगलें। यह अल्लाह का हुक्म है, जो तुम लोगों ( के ऐसे झगड़ों के बारे ) में सादिर फ़र्माता है और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है ० और अगर तुम्हारी बीबियों में से कोई ( औरत ) तुमसे छूटकर काफ़िरों में जा मिले ( और वह तुमको तुम्हारा ख़र्चा न अदा करें और ) फिर ( काफ़िरों को देने की ) तुम्हारी नौबत आये, तो जिन ( मुसल्मानों ) की बीबियाँ ( काफ़िरों में ) चली गई हैं, जितना ख़र्चा उनका हुआ हो ( उस रक़म से, जो तुमको देनी पड़े ) उनको ( अदा कर ) दो और अल्लाह से—

الَّذِي

और ( जिन्होंने केवल धार्मिक-द्वेष के कारण ) तुमको तुम्हारे घरों से निकाला और जिन्होंने ( खुल्लम खुल्ला ) तुम्हारे निकालने में ( निकालने वालों की ) सहायता की, तुम उनसे मित्रता करो। और जो कोई उनसे मित्रता करे ( गा ) तो ( वह ख़ुदा रसूल का पापी कहलाएगा। निस्सन्देह ) ऐसे ही लोग ( अपने प्राणों पर बड़ा ) अत्याचार करते हैं ( कि अपने कुकर्मों के कारण अपने आपको अज़ाब का अधिकारी ठहराते हैं। और ) हे ईमान वालो ! जब तुम्हारे पास ईमान वाली स्त्रियां घर ( बार ) छोड़ कर आएं, तो ( पहिले ) तुम उनकी जांच करलो। अल्लाह ( तो ) उनके ईमानों को ख़ूब जानता है-( किन्तु तुम्हारा जानना भी आवश्यक है )। फिर यदि तुम्हें ज्ञात हो जाय कि वह ईमानदार हैं, तो तुम उन्हें काफ़िरों की ओर न फेरो-( क्योंकि ) न वह ( मुसल्मान ) स्त्रियां काफ़िरों के लिये हलाल हैं और न वह काफ़िर उन स्त्रियों के लिये हलाल हैं। ( अतः उन स्त्रियों को तुम अपनी शरण में लेलो) और जो कुछ (उन स्त्रियों पर) उन काफ़िरों का व्यय हुआ हो, तुम उनको ( अपने पास से ) दे दो। ( अर्थात जो कुछ महर इत्यादि काफ़िरों ने उन्हें दिया हो, वह तुम उन्हें लौटा दो और उन स्त्रियों से तुम विवाह करलो ) ॥

( निस्सन्देह ) जब तुम उन स्त्रियों के महर उनको दे दो, तो उनसे ब्याह करने में तुम पर कुछ दोष नहीं है। और ( जैसे मुहाजिर मुसल्मान स्त्रियां उन काफ़िरों के लिये हलाल नहीं हैं, उसी प्रकार तुम्हारे लिये भी काफ़िर स्त्रियां हलाल नहीं हैं ) तुम काफ़िर स्त्रियों के सम्बन्ध को अपने अधिकार में न रक्खो ! ( अर्थात जो स्त्रियां दारुल-हर्ब में काफ़िर बनकर रह गई, तुम उनको अपनी पत्नी न समझो ) और जो कुछ ( रुपया ) तुमने ( महर आदि में उन पर ) व्यय किया है, वह ( काफ़िरों से ) ले लो। और वह काफ़िर ( भी ) जो कुछ उन्होंने ( महर आदि में ) व्यय किया है-( तुमसे ) मांग लें। यह ( जो कुछ तुमने सुना यह ) ख़ुदा की आज्ञा है ( इस पर चलो। इसमें तुम्हारा लाभ है। निस्सन्देह ) अल्लाह तुममें ( अत्योचित ) निर्णय करता है। और अल्लाह ( का निर्णय क्यों न उचित हो, वह ) बड़ा ज्ञानी ( तथा ) हिकमत वाला है ( उसका निर्णय ज्ञान तथा हिकमत के अनुकूल होता है )॥

और ( हे मुसल्मानो ! ) यदि तुम्हारी ( स्त्रियों में से ) कुछ स्त्रियां तुमसे छूट कर काफ़िरों की ओर चली जायँ ( और वह फिर तुम्हारी ओर लौटकर न आएँ और जो कुछ तुमने उन पर व्यय किया है वह भी तुम्हें न मिले, तो तुम प्रतीक्षा करते रहो )-फिर जब तुम्हारी बारी आए ( और उनकी कुछ स्त्रियां तुम्हारे पास आ जायँ ) तो ( जो कुछ उसका व्यय हो, वह काफ़िरों को न दो—बरन् मुसल्मानों में से ) जिनकी स्त्रियां जाती रही हैं ( उनको दे दो—परन्तु उतना ही देना ) जितना उन्होंने ( उन भागने वाली स्त्रियों पर ) व्यय किया था और ( हर दशा में ) अल्लाह से डरते रहो, जिस पर तुम ईमान लाये हो ॥

الَّذِىٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ اِذَا جَآءَكَ
الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ
بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ
اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ
اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِىْ مَعْرُوْفٍ
فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ

سورة الصف القبور ۝ مكية اربع عشرة آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ
تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ

ع

जिस पर तुम ईमान ला चुके हो, डरते रहो ० ऐ पैग़म्बर ! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें आयें ( और ) तुमसे इस पर बैअत करनी चाहें कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक नहीं ठहरायेंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी करेंगी और न दुख़्तर-कुशी करेंगी और न अपने हाथ पांव के आगे कोई बोहतान बनाकर खड़ा करेंगी और न नेक कामों में ( जिनके करने का तुम हुक्म दो ) तुम्हारी हुक्म-उदूली करेंगी, तो (इन शर्तों पर ) तुम उनसे बैअत ले लिया करो और ख़ुदा की जनाब में उनकी मग़फ़िरत की दुआ करो। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० मुसलमानो ! उन लोगों से जिन पर ख़ुदा का ग़ज़ब है ( यानी यहूद से ) दोस्ती न लगावो—क्योंकि यह लोग ( सवाब ) आख़िरत की तरफ़ से ऐसे ना उम्मीद हैं, जैसे काफ़िर ( यानी मुश्रिकीन ) क़ब्र वालों ( यानी मुरदों ) की तरफ़ से ना उम्मीद हैं ०

## सूरत–सफ़्फ़

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें १४ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० जो ( मख़्लूक़ात ) आस्मानों में है और जो (मख़्लूक़ात) ज़मीन में है ( सब ही तो ) अल्लाह को तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगे हैं और वह ज़बरदस्त ( और ) हिक्मत वाला है ० मुसलमानो ! ऐसी बात क्यों कह बैठा करते हो, जो तुम करके नहीं दिखाते ० ( यह बात ) अल्लाह को सख़्त ना पसन्द है—

---

( हे पैग़म्बर ! ) जब तुम्हारे पास मुसलमान स्त्रियां (इस शर्त पर) बैत अर्थात धार्मिक-प्रतिज्ञा करने के लिये आएँ कि अल्लाह के साथ किसी को साझी न करेंगी, और चोरी न करेंगी, और व्यभिचार न करेंगी, और अपनी सन्तान को जान से न मारेंगी ( अर्थात अरब-देश की काफ़िर स्त्रियों की तरह गर्भ को न गिरावेंगी ) और झूठ तूफ़ान न उठावेंगी ( ऐसा झूठ तूफ़ान ) जिसे उन्होंने अपने हाथ और पैरों के बीच बांधा है ( अर्थात व्यभिचार से गर्भवती होकर पति से न कहेंगी कि यह तेरा बच्चा है वा यह अर्थ है कि ऐसे पाप न करेंगी, जिनका सम्बन्ध हाथों और पैरों से हो; जैसे हाथों से किसी को बध करना वा पैरों से चलकर झूठी साक्षी देना ) और शरीअत ( अर्थात धर्म-शास्त्र ) में तुम्हारी अवज्ञा न करेंगी, तो तुम उनको बैत करलो और अल्लाह से उनके लिये क्षमा मांगो। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। हे ईमान वालो ! ( तुम यदि उसकी अनुकम्पा तथा दया और क्षमा के अभिलाषी हो, तो अपने नब की आधीनता करो । और ) उन लोगों से मित्रता न करो, जिन पर अल्लाह का कोप ( अवतीर्ण हुआ ) है। वह क़यामत (के दिन) निराश हो चुके हैं, जैसे काफ़िर लोग क़ब्र वालों से निराश+हो चुके हैं॥

+टीका—क़ब्र वालों से निराश होने के यह अर्थ हैं कि जो लोग मृत्यु के पश्चात क़ब्रों में गड़े हैं, काफ़िर उन्हें बिल्कुल व्यर्थ तथा निरर्थक समझते हैं, जैसे मिट्टी को समझते हैं। अब दुबारा उनके जीवित होने और जीवित होकर हिसाब किताब देने को नहीं मानते और क़यामत के किसी अंश को नहीं मानतेः—हसन निज़ामी ॥

## सूरत–सफ़्फ़

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें १४ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( समस्त ) पृथ्वी तथा आकाशों में ( सजीव वा निर्जीव ) जो ( कोई भी ) है, वह अल्लाह की ( प्रशंसा तथा बड़ाई और ) पवित्रता वर्णन करता है। और ( उसकी दशा से विदित होता है कि वह इस बात का इक़रार करता है कि ) अल्लाह ( बड़ा ) प्रबल शक्तिशाली और यत्न उपाय तथा ) हिकमत वाला है। हे ईमान वालो ! ( तुम महान श्रेष्ठ ख़ुदा के बन्दे होकर ) क्यों ऐसी बात मुंह से निकालते हो, जो करते नहीं ( अर्थात् तुमने जो कहा था कि जो बात ख़ुदा को प्रिय होगी तुम उस पर चलोगे, तो अल्लाह ने तुमको बता दिया कि वह जिहाद अर्थात् धर्म-युद्ध है। अब तुम उस पर क्यों नहीं चलते। अब उसको करने से तुम क्यों जी चुराते हो । क्या तुमको अपना वचन याद नहीं ? निस्सन्देह यह ) ख़ुदा के निकट बड़ी अप्रसन्नता की बात है—

اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۞ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ
يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ
مَّرْصُوْصٌ ۞ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ
تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ
فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۞ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ
يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۞ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۞ يُرِيْدُوْنَ
لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ

कि कहो ( सब कुछ ) और करो ( कुछ ) नहीं ० बेशक खुदा (तो) उन लोगों को दोस्त रखता है, जो उसकी राह में सफ़ बांधकर लड़ते हैं ( और जगह से नहीं टलते और उस हालत में ) वह गोया एक दीवार हैं, जिसमें सीसा पिला दिया गया है ० और (ऐ पैग़म्बर ! लोगों को वह वक़्त याद दिलावो ) जब मूसा ने अपनी क़ौम ( के लोगों ) से कहा कि भाइयो ! मुझे क्यों सताते हो और ( दिल में तो ) तुमको ( भी ) यक़ीन हो गया है कि मैं तुम्हारी तरफ़ खुदा का भेजा हुआ ( आया ) हूं—तो जब यह लोग टेढ़ी चाल चले, खुदा ने उनकी समझ भी टेढ़ी करदी और अल्लाह नाफ़र्मान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० और ( ऐ पैग़म्बर ! लोगों को वह वक़्त भी याद दिलावो ) जब मर्यम के बेटे ईसा ने ( बनी इस्राईल से ) कहा कि ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारी तरफ़ खुदा का भेजा हुआ ( आया ) हूं । ( यह किताब ) तौरात, जो मुझसे पहिले ( नाज़िल हो चुकी ) है—( मैं ) उसकी तस्दीक़ करता और ( एक और ) पैग़म्बर की ( तुमको ) खुश-ख़बरी सुनाता ( हूं ) जो मेरे बाद आयेंगे ( और ) उनका नाम होगा अहमद । फिर जब वह ( अहमद जिनका दूसरा नाम मुहम्मद है ) बनी इस्राईल के पास खुले खुले मोजिज़े लेकर आये, वह लगे कहने कि यह तो सरीह जादू है ० और उससे बढ़कर ज़ालिम ( और ) कौन होगा ? कि उसको इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाय और वह ( उल्टा ) खुदा पर झूट बोहतान बांधे और अल्लाह बे इन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० ( यह लोग ) चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुंह से ( फूंक मार कर ) बुझा दें और अल्लाह तो अपने नूर को ( कामिल तौर पर ) फैलाकर रहेगा—

कि तुम जो ( बात अपनी ज़बान से ) कहो, उसको ( पूरा ) न करो । अल्लाह तो केवल उन लोगों को ( बहुत ) प्रिय रखता है, जो उसके मार्ग में पंक्ति बाँध कर ( ऐसी दृढ़ता और साहस उत्साह के साथ) लड़ते हैं ( कि जो उनकी पंक्तियों को देखता, वह यही कहता है कि ) मानो वह सीसा पिलाई हुई दीवारें हैं ( कि अपनी जगह से हिलने का नाम नहीं लेतीं । हे पैग़म्बर ! तुम उन लोगों को समझाने बुझाने के लिये अगले अवज्ञाकारियों का वृतान्त उनके आगे वर्णन करो ) और ( विशेषतः मूसा के उस समय का वृतान्त उन्हें सुनाओ ) जबकि मूसा ने अपनी जाति से कहा था कि हे लोगो ! तुम मुझे ( व्यर्थ ) क्यों सताते हो और ( मेरी बात क्यों नहीं मानते ) तुम्हें ज्ञात है कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह का रसूल होकर आया हूं ( मेरी अवज्ञा तुम्हारे विनाश का कारण होगी )-पर ( मूसा की उन पर एक न चली और ) वह ( अल्लाह के कलाम से ) फिर गये, तो अल्लाह ने उनके दिलों को ( और भी ) फेर दिया और ( उनको और भटका दिया, क्योंकि ) अल्लाह ( का यह नियम है कि वह ऐसे ) अवज्ञाकारी लोगों को ( कभी ) राह नहीं दिखाता ( और लोक परलोक में भलाई तथा कुशल मंगल से वंचित और अपनी अनुकम्पा से दूर कर देता है ) ॥

और ( मर्यम के पुत्र ईसा के उस समय का हाल उन्हें बताओ ) जबकि मर्यम के पुत्र ईसा ने ( अपनी जाति के लोगों से ) कहा कि हे बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल होकर आया हूं । यह तौरेत पुस्तक जो मुझसे पहिले ( उतर चुकी ) है, मैं ( उस को ) सत्य मानने वाला हूं और एक रसूल जो मेरे पश्चात आवेंगे, जिनका ( शुभ ) नाम ( आकाशों पर ) अहमद ( और पृथ्वी पर मुहम्मद ) है—मैं उन ( के आने ) का मंगल-समाचार सुनाने वाला हूं ( अतः तुम मेरी बात मानो ) पर ( उन पर इसका कुछ प्रभाव न पड़ा । यहां तक कि ) जब वह ( खुदा के दिये हुये ) स्पष्ट चमत्कार उनके सन्मुख लाए, तो ( उन्हें देखकर ) वह कहने लगे-यह ( तो ) खुला हुआ जादू है ॥

और ( इस प्रकार खुदा के नबी को झुठला करके अपना अन्त बिगाड़ने लगे । हे रसूल ! भला ) उस मनुष्य से अधिक अत्याचारी कौन है, जो खुदा पर झूठ तूफ़ान बांधे ( और खुदा के दिये हुये चमत्कारों को जादू बतायें )-यद्यपि ( उन चमत्कारों के द्वारा ) उसको इस्लाम ( अर्थात सत्य-धर्म ) की ओर बुलाया जाय और ( उसका लोक परलोक बनाने के लिये उसको शिक्षा दी जाय । निस्सन्देह ऐसे कट्टर ) अत्याचारी लोगों को अल्लाह कभी राह नहीं दिखाता । यह ( अत्याचारी लोग सर्वदा से ) अल्लाह के प्रकाश को अपने मुंह से ( फूंकें मार मार कर ) बुझाना चाहते हैं और अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण करना चाहता है—चाहे काफ़िर ( कितना ही ) बुरा मानें ॥

وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ
رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى
الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ
اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا
نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ

गो काफ़िरों को बुरा ( ही क्यों न ) लगे ० वह ( ख़ुदा ) ही तो है, जिसने अपने रसूल ( मुहम्मद ) को हिदायत और दीन-हक़ देकर भेजा, ताकि उस ( दीन ) को ( और ) तमाम दीनों पर ग़ालिब रक्खे—अगर्चे मुश्रिकीन को बुरा ( ही क्यों न ) लगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! मुसल्मानों से कहो कि ) मुसल्मानो ! ( कहो तो ) मैं तुमको ऐसी सौदागरी बताऊं, जो तुमको ( आख़िरत के ) अज़ाब—दर्दनाक से बचा ले ० ( वह यह है कि ) ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ और ख़ुदा की राह में अपने माल और अपनी जानें लड़ा दो—यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है, बशर्ते कि तुमको समझ हो ० ( ऐसा करोगे, तो ) ख़ुदा तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको ( बहिश्त के ऐसे ) बाग़ों में लेजा दाख़िल करेगा, जिनके तले नहरें ( पड़ी) बह रही होंगी और ( नीज़ उम्दा ) उम्दा मकानात में ( कि वह मकानात हमेशा ) हमेशा ( रहने ) के बाग़ों में ( होंगे )—यह ( बहुत ) बड़ी कामयाबी है ० और (इन नेअमतों के सिवा) एक और ( नेअमत भी ) है, जिसको तुम ( दिल से ) पसन्द करते हो ( कि ) ख़ुदा की तरफ़से ( तुमको ) मदद ( मिलेगी ) और ( तुम ) अन्क़रीब ( मुल्क ) फ़तह ( करोगे ) और ( ऐ पैग़म्बर ! ) मुसल्मानों को ( इसकी ) ख़ुश-ख़बरी सुनादो ० मुसल्मानो ! अल्लाह के ( दीन के ) मददगार बने रहो; जैसाकि मर्यम के बेटे ईसा ने ( अपने ) हवारियों ( यानी असहाब ) से कहा था कि ( ऐसे ) कौन हैं ? जो ख़ुदा की तरफ़ ( होकर ) मेरे मददगार बनें —

---

उसीने ( वर्तमान काल में भी ) अपने रसूल ( मुहम्मद ) को हिदायत अर्थात धर्म-मार्ग ( का उपदेशक ) और सत्य-मत ( का प्रचारक बनाकर ) भेजा ( है )—जिससे कि वह उस ( के मत ) को सर्व मतों पर प्रबल करदे-चाहे मुश्रिक (अर्थात असत्य के पुजारी कितना ही ) बुरा मानें। ( हे रसूल ! तुम अपनी उम्मत के ईमान वालों से कहो कि ) हे ईमान वालो ! क्या मैं तुम्हें ऐसा व्यौपार बताऊँ, जो तुम्हें एक दुखदायी अज़ाब से बचावे ? (और उन्हें बताओ कि वह व्यौपार यह है कि) अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने धनों और (अपने) प्राणों के साथ जिहाद करो (अर्थात ख़ुदा की राह में तन मन धन सब निछावर करदो)। यदि तुम ( कुछ भी ) समझ रखते हो, तो ( समझो कि ) यह बात तुम्हारे हक़ में ( बहुत ) अच्छी है ॥

( निस्सन्देह ) यदि ( तुम अपना तन मन धन अल्लाह के नाम पर निछावर करोगे, तो ) अल्लाह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुमको जन्नतों में प्रविष्ट करेगा ( ऐसी जन्नतें ) जिनके नीचे नहरें बहती हैं और दिव्य भवनों में ( स्थान देगा ) जो सर्वदा रहने वाले बाग़ों में (बने हुये) होंगे। ( ईमान वालो ! ) यह है ( वास्तव में ) बड़ी सफलता ( जिसके आगे दुनिया की सफलता तुच्छ है ) ॥

और ( उन पारलौकिक नेअमतों के अतिरिक्त ख़ुदा तुमको दुनिया को दुनिया ही में ) और नेअमतें भी देगा, जिन्हें तुम ( दिल से ) चाहते हो ( वह यह कि ) अल्लाह की ओर से तुम्हें सहायता पहुंचेगी और तुम शीघ्र ( प्रदेशों को ) विजय करोगे और ( हे पैग़म्बर ! ) ईमान वालों को तुम ( यह ) मंगल-समाचार सुना दो ( कि अल्लाह उन पर अवश्य कृपा करेगा। और उनसे कहो कि ) हे ईमान वालो ! तुम अल्लाह ( के धर्म ) के सहायक बन जाओ ( और मेरे कहने पर चलो )-जैसा कि मर्यम के पुत्र ईसा ने अपने हवारियों से जब कहा था कि कौन है, जो अल्लाह के मार्ग में मेरी सहायता करे—

إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ ۖ فَآمَنَت
طَّائِفَةٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَت
طَّائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ
فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ●

**سُورَةُ الْجُمُعَةِ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً**

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ● هُوَ الَّذِي
بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ
آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ● وَآخَرِينَ
مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ●
ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو
الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ● مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ

لَمْ يَحْمِلُوهَا

४

( इस पर ) हवारी बोले कि हम खुदा के ( रसूल के ) मददगार हैं। ( चुनांचे हवारियों ने दीन-ईसवी के रिवाज देने में कोशिश की )-तो बनी इस्राईल में से एक गिरोह तो ईमान लाया और एक गिरोह काफ़िर रहा। जो लोग ईमान लाये थे, हमने उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में उनकी ताईद की और ( आख़िरकार ) वही ग़ालिब रहे ०

## सूरत—जुमा

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें ११ आयतें और २ रुकूअ हैं ।।

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान ( है )० जो ( मख़्लूक़ात ) आस्मानों में है और जो ( मख़्लूक़ात ) ज़मीन में है-(सब ही तो ) अल्लाह की तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगे हैं और (जो दुनिया जहान का ) बादशाह-पाक-ज़ात-ग़ालिब ( और ) हिक्मत वाला है ० वह ( खुदा ) ही तो है, जिसने ( अरब के ) जाहिलों में उनही में से ( मुहम्मद को ) पैग़म्बर ( बनाकर ) भेजा ( कि वह ) इनको खुदा की आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते और इनको ( कुफ़्र व शिर्क की गन्दगी से ) पाक साफ़ करते और इनको किताब ( इलाही ) और अक़्ल ( की बातें ) सिखाते हैं; वर्ना ( इससे ) पहिले तो यह लोग सरीह गुमराही में ( मुब्तला ) थे ही ० और ( नीज़ खुदा ने इन पैग़म्बर को ) और लोगों की तरफ़ (भी भेजा है ) जो अभी तक इन ( अरब के मुसलमानों ) में शामिल नहीं हुये—( मगर आख़िरकार इनमें आ मिलेंगे ) और खुदा ज़बरदस्त ( और ) हिक्मत वाला है ० यह ( पैग़म्बरी ) अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसको चाहे इनायत करे और अल्लाह का फ़ज़्ल ( बहुत ) बड़ा है ० जिन लोगों ( के सर ) पर तौरात ( हुक्मन ) लादी गई, फिर—

---

तो ( उनके ) हवारियों ( अर्थात् मित्रों ) ने ( उनका कहा माना और ) कहा-अल्लाह ( के धर्म ) के सहायक हम हैं। फिर ( ईसा ने उनको अपने साथ लिया और खूब धर्म-प्रचार किया, जिसका फल यह हुआ कि ) बनी इस्राईल में ( दो दल विभिन्न मत के बन गये ) एक समूह ईमान ले आया और एक समूह काफ़िर रहा। सो हमने उन लोगों को जो ईमान लाये उनके शत्रुओं के विरुद्ध उनको सहायता दी, तो वह ( उन पर ) विजय पा गये। ( अतः यदि तुम लोग भी जिहाद की आज्ञा का प्रतिपालन करोगे और मेरी बात सुनोगे, तो अल्लाह तुम्हारी भी सहायता करेगा। और तुमको तुम्हारे शत्रुओं पर विजय प्रदान करेगा ) ॥

## सूरत—जुमा

**मदनो, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ११ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥**

( समस्त ) भूमि तथा आकाशों में ( सजीव वा निर्जीव ) जो ( कोई भी ) है, वह अल्लाह की (प्रशंसा तथा बड़ाई और) पवित्रता वर्णन करता है ( उस अल्लाह की ) जो बादशाह है, बहुत पवित्र है, प्रबल ( शक्तिशाली ) है ( बहुत बड़ी ) हिकमत वाला है ( और उस अल्लाह की ) जिसने ( अरब-देश के ) अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से ( अर्थात् उनही जैसे ) एक मनुष्य को ( अपना ) रसूल (बनाकर) भेजा, जो उनको अल्लाह का कलाम पढ़कर सुनाते और उन ( के अपवित्र स्वभाव ) को पवित्र बनाते और उनको ( आकाशीय ) पुस्तक की, और ( बुद्धि, ज्ञान तथा ) हिकमत की शिक्षा देते हैं और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) यह ( अरब निवासी उन रसूल के आने से ) पहिले स्पष्ट पथ-भ्रष्टता ( और मूर्खता ) में पड़े ( भटक रहे ) थे और (यह रसूल न केवल अरब वालों की शिक्षा के लिये भेजे गये हैं, वरन् ) उनही में के ( अर्थात उनही जैसे ) और लोगों ( अर्थात् पारसी इत्यादि ) के लिये भी, जो ( अभी तक ) उन ( अरब के मुसलमानों ) के साथ नहीं मिले और ( रसूल की कृपा से वंचित हैं। निस्सन्देह ) वह ( खुदा बड़ा ) प्रबल (शक्तिशाली तथा बहुत बड़ी) हिकमत वाला है ( वह शीघ्र उनको भी सीधी राह दिखा देगा ) ॥

निस्सन्देह यह ( सीधी राह तथा धर्म-मार्ग की योग्यता ) अल्लाह का अनुग्रह है-यह अनुग्रह जिसको वह चाहता है (और जिसको उसका पात्र समझता है ) प्रदान कर देता है और ( जिसको चाहता है, उससे वंचित कर देता है। निस्सन्देह ) अल्लाह ( अपने बन्दों पर ) बड़ा अनुग्रह ( तथा उपकार ) करने वाला है। जिन्हें तौरेत ( पुस्तक खुदा की ओर से दी गई और उस ) पर चलने की आज्ञा दी गई ( और ) फिर—

उन्होंने उसको अख़्ज़ न किया ( यानी उस पर कार-बन्द न हुये ) उनकी मिसाल गधे की मिसाल है, जिस पर किताबें लदी हैं । जो लोग ख़ुदा की आयतों को झुटलाया करते हैं, उनकी ( भी क्या ही ) बुरी कहावत है और अल्लाह बेइन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन यहूदियों से ) कहो कि ऐ यहूद ! अगर तुमको इस बात का घमंड है कि और तमाम आदमियों को छोड़कर तुमही ख़ुदा के चहीते हो ( और अपने इस दावे में ) सच्चे ( भी ) हो, तो मौत की तमन्ना करो ० मगर यह लोग उन ( अमाल-बद ) के डर से, जिनके मुर्तकिब हो चुके हैं, कभी मौत की तमन्ना करने वाले नहीं और अल्लाह बे इन्साफ़ लोगों को ख़ूब जानता है ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो तुमको ज़रूर आकर रहेगी। फिर तुम उस ( ख़ुदाए दाना व बीना ) की तरफ़ लौटाये जाओगे, जो पोशीदा और ज़ाहिर ( सब कुछ ) जानता है। फिर जैसे जैसे अमल ( तुम दुनिया में ) करते रहे हो, वह ( उस वक़्त ) तुमको बता देगा ० मुसलमानो ! जब जुमे के दिन नमाज़-जुमा के लिये अज़ान दी जाय, तो याद इलाही (यानी नमाज़) की तरफ़ लपको और (उस वक़्त) बेचना ( खोचना ) छोड़ दो। यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है, बशर्ते कि तुमको समझ हो ० फिर जब नमाज़ हो चुके, तो ( तुमको इख़्तियार है कि ) अपनी अपनी राह लो और ख़ुदा के फ़ज़्ल ( यानी मआश ) की जुस्तजू में लग जावो—

لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا بِئْسَ
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ● قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ
دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ
وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ ● قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ
مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ
فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ● فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ
فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ

---

वह उस पर न चले ( और ख़ुदा के उस अनुग्रह का कुछ सत्कार न जाना ) उन लोगों का दृष्टान्त ( अचेतना तथा अज्ञानता में ) उस गधे का सा है, जो ( अपनी पीठ पर ) बहुत सी पुस्तकें लाद लेता है ( और वह उनसे लाभ तो क्या उठाएगा-उसे यह भी ख़बर नहीं होती कि मुझ पर पुस्तकें लदी हुई हैं वा पत्थर । निस्सन्देह ) उन लोगों की बहुत बुरी दशा है, जिन्होंने अल्लाह के कलाम को झुठलाया और ( उसकी आज्ञाओं का पालन करना उचित न जाना और व्यर्थ कल्पना करते रहे कि हम अल्लाह के प्रिय हैं—ऐसे ) अत्याचारी लोगों को अल्लाह ( कभी ) राह नहीं दिखाता-( वरन् और ढील दे देता है, जिससे कि अपनी मूर्खता तथा अज्ञानता में और उन्नति करें और अपने आपको पूरी तरह से अज़ाब का अधिकारी ठहरा लें ) ॥

( हे पैग़म्बर ! ) तुम ( उनसे ) कहदो( कि ) हे यहूदियो ! यदि तुमको दावा है कि ( केवल ) तुम अल्लाह के प्रिय हो ( और ) और लोग नहीं हैं ( तो आओ ! हम तुम्हारी परीक्षा करें )—यदि तुम ( अपने दावे में ) सच्चे हो, तो ( अल्लाह से ) मृत्यु की ( और इस लोक से सम्बन्ध विच्छेद की ) तो अभिलाषा करो ( ज़रा हम भी तो देखें कि तुम्हें अपने ख़ुदा से कितना प्रेम है। हे रसूल ! यह अपने दावे में बिल्कुल झूठे हैं ) और अपने उन पापों ( के अज़ाब के भय ) से जिनको उनके हाथों ने ( परलोक के लिये ) भेजा है, कभी मृत्यु की अभिलाषा न करेंगे । और अल्लाह उन अत्याचारियों को ख़ूब जानता है ( जैसे २ यह झूठ बोल रहे और दावा कर रहे हैं ) ॥

( हे पैग़म्बर ! इन लोगों से ) तुम कहदो जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो तुम्हें अवश्य मिलेगी ( और ) फिर ( क़यामत के दिन ) तुम उस ( ख़ुदा ) की ओर लेजाए जाओगे, जो खुली ढकी (सब) बातों का जानने वाला है। और वह जो कुछ तुम करते थे ( सब ) तुमको बता देगा ( और तुम्हारे कुकर्मों का तुम्हें पूर्ण दंड देगा। और ) हे ईमान वालो ! ( तुम इन कुकर्मियों के अशुभ परिणाम का हाल सुनकर शिक्षा ग्रहण करो। और ख़ुदा की आज्ञाओं का पूर्ण रूप से पालन करो। और ) जब जुमा के दिन नमाज़ के लिये अज़ान दी जाय, तो अल्लाह के स्मरण की ओर ( अर्थात् नमाज़ पढ़ने और ख़ुतबा सुनने के लिये) दौड़ पड़ो और क्रय विक्रय छोड़ दो-यदि तुमको ( कुछ भी ) समझ है, तो ( तुम जान लो कि ) यह ( बात ) तुम्हारे लिये ( क्रय विक्रय से बहुत) उत्तम है। फिर जब नमाज़ पूर्ण हो जाय, तो ( तुमको अधिकार है-अपने २ कार बार के लिये अल्लाह की ) पृथ्वी में ( जहां चाहो ) फैल जाओ । और अल्लाह के अनुग्रह ( अर्थात् जीविका ) को ढूंढो—

और ( जहां रहो ) कसरत से ख़ुदा की याद करते रहो, ताकि तुम फ़लाह पावो ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) जब यह लोग सौदा ( बिकता ) या तमाशा ( होता ) देखें ( तुम्हारे पास से ) छिटक कर उसीकी तरफ़ को चल दौड़ें और तुम्हें ( ख़ुतबा पढ़ते ) खड़ा छोड़ जाएँ। ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि जो ( सवाब-इबादत ) अल्लाह के हाँ है-( वह ) तमाशे और सौदे से बहुत बेहतर है और अल्लाह ( सब ) रोज़ी देने वालों से बेहतर ( रोज़ी देने वाला ) है ०

## सूरत—मुनाफ़िक़ून

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें ११ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जब तुम्हारे पास मुनाफ़िक़ आते हैं, तो ( तुम्हें ख़ुश करने के लिये ) कह देते हैं कि हमतो पुकारे कहते हैं कि आप बेशक रसूल-ख़ुदा हैं और ( अगर्चे ) अल्लाह तो जानता ही है कि तुम बेशक उसके रसूल हो, मगर अल्लाह ( तुमको यह भी ) जताये देता है कि ( यह ) मुनाफ़िक़ झूट बोलते हैं-( क्योंकि सच्चे दिल से नहीं कहते ) ० इन लोगों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना रक्खा है, तो ( उसकी आड़ में लोगों को ) राह-ख़ुदा से रोकते हैं-( क्याही ) बुरे काम हैं, जो यह लोग कर रहे हैं ० किस लिये कि यह (लोग पहिले मुसल्मानों के दिखाने को) ईमान लाये, फिर (मुन्किरों में मिलकर ) इस्लाम से फिर गये, यहां तक कि इनके दिलों पर मुहर कर दी गई-तो ( अब ) यह ( हक़ बात को ) समझते ( ही ) नहीं ० और ( ऐ पैग़म्बर! ) तुम इन ( के ज़ाहिर हाल ) को देखो, तो इनके डील-डोल तुम्हारी नज़रों में खुब जाएँ और बात करें, तो तुम इनकी बात को ( तवज्जह से ) सुनो—( तुम्हारे सामने इस तरह पर टेक लगा लगाकर बैठते हैं कि ) गोया वह लकड़ियों के कुन्दे हैं, जो ( दीवारों के सहारे ) लगे रक्खे हैं—

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۞ وَاِذَا رَاَوْا
تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ
مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ
خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۞

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَحَدَ عَشَرَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞
اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ
لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ
يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۞ اِتَّخَذُوْٓا
اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ
سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۞ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ
كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۞
وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا
تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ

ع

ط

और ( जीविका प्राप्ति की कृतज्ञता में ) अधिकता के साथ ( अपने अन्नदाता ) अल्लाह को याद करो, जिससे कि ( लोक परलोक में ) तुम्हारा भला हो। ( बड़े आश्चर्य ) और ( खेद की बात है कि कुछ मुसल्मानों में ऐसे भी हैं कि ) जब वह ( कहीं ) कुछ सौदा ( बिकता ) वा तमाशा ( होता ) देखते हैं, तो उसकी ओर दौड़ जाते हैं और तुमको खड़ा छोड़ जाते हैं। सो ( हे रसूल ! ) तुम ( उन लोगों से ) कहदो कि जो ( पुरस्कार ) अल्लाह के यहाँ है, वह ( इस प्रकार के हज़ारों तरह के खेल ) तमाशे से और ( हज़ारों लाखों रुपये के ) व्यापार से ( कई गुणा ) उत्तम है। और अल्लाह सर्वोत्तम अन्नदाता है ( इन लोगों की बड़ी मूर्खता है, जो उस पर भरोसा नहीं करते ) ॥

## सूरत-मुनाफ़िक़ून

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ११ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( हे पैग़म्बर ! ) जब तुम्हारे पास मुनाफ़िक़ आते हैं, तो ( तुमको धोखा देने के लिये अर्थात अपने आपको ईमानदार सिद्ध करने के लिये ) कहते हैं कि हम ( सच्चे दिल से इस बात की ) साक्षी देते हैं कि तुम अल्लाह के ( सच्चे ) रसूल हो और अल्लाह जानता है कि वास्तव में तुम उसके रसूल हो और ( यह बात मुनाफ़िक़ बिल्कुल सत्य कह रहे हैं, परन्तु ) अल्लाह ( इस बात का ) गवाह है कि यह मुनाफ़िक़ झूठे हैं-( क्योंकि यह जो कुछ ज़बान से कहते हैं, इनके दिल में उसका विश्वास नहीं है। तुम हे रसूल ! इनके धोखे में कभी न आना। वास्तव में ) उन्होंने ( जब काफ़िरों को अपने सामने नष्ट होता देखा, तो अपनी झूठी ) शपथों को अपने ( बचाव ) के लिये ( एक ) ढाल बना लिया ( और झूठे ईमान को प्रगट करके अपने प्राण तथा धन को बचा लिया )—फिर ( यह स्वयं भी राह से भटक गये और ) उन्होंने ( और दूसरों को भी ) अल्लाह की राह से रोक लिया। निस्सन्देह यह (लोग) बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं ॥

( और ) यह ( सब बुराई केवल ) इस कारण है कि यह ( प्रगट रूप से ख़ुदा रसूल पर ) ईमान लाए ( और गुप्त रूप से ) फिर काफ़िर हो गये ( अर्थात समस्त बुराई की जड़ इनका छल कपट है )। अतः ( अब ) उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, तो (अब तो) वह ( ऐसे हो गये जैसे दीवाने-कि अपने भले बुरे को कुछ ) समझते ( ही ) नहीं। और ( हे रसूल ! उनका प्रगट ऐसा है कि ) जब तुम उनको ( दृष्टि उठाकर ) देखो, तो ( अपनी बाहर की प्रगट टीप टाप की दृष्टि से ) उनके शरीर तुम्हें अच्छे ज्ञात हों ( और ) यदि वह तुमसे बात करें, तो ( उनकी चिकनी चुपड़ी बातों के कारण ) तुम उनकी बात को ( ध्यान पूर्वक ) सुनो ( और यह तुम्हारे सामने भोली भाली सूरत बनाकर इस तरह चुप चाप कोने में बैठते हैं ) जैसे वह दीवार से लगी हुई लकड़ियाँ हैं-( जिनमें बोलने की शक्ति ही नहीं है )—

كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ قَاتَلَهُمُ
اللَّهُ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ
وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ۝
سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ
لَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنفِقُوا عَلَىٰ
مَنْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنفَضُّوا ۗ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا
يَفْقَهُونَ ۝ يَقُولُونَ لَئِن رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ
لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ
وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ ع
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُ

हर एक ज़ोर की आवाज़ को समझते हैं कि इनही को ललकारा, ( ऐ पैग़म्बर ! ) यही ( लोग तुम्हारे जानी ) दुश्मन हैं-तो इनसे बचते रहो। इनको ख़ुदा की मार ! किधर बहके चले जा रहे हैं ० और जब इन से कहा जाता है ( कि आवो ! रसूल-ख़ुदा की ख़िदमत में चलें कि वह ) तुम्हारे लिये मग़फ़िरत की दुआ करें, तो ( वह सुनते ही ) अपने सर फेर लेते हैं और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम ( इस वक़्त ) इनको देखो, तो ऐसे मग़रूर होते हैं कि ( तुम्हारी तरफ़ ) रुख़ भी नहीं करते ० इन लोगों के लिये तुम ( दुआए ) मग़फ़िरत करो या न करो, इनके हक़ में ( दोनों बातें यक्साँ हैं ) ख़ुदा तो इनके गुनाह माफ़ करने वाला है नहीं । बेशक ख़ुदा नाफ़र्मान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० यही तो हैं, जो ( लोगों को ) बहकाया करते हैं कि जो लोग रसूल-ख़ुदा के पास ( आ जमा हुये ) हैं, ( अपना पैसा ) उन पर न ख़र्च करो कि ( आजिज़ आकर ) आख़िर को ( आपही ) तित्तर-बित्तर हो जायें, हालांकि आस्मानों में और ज़मीन में जितने ख़ज़ाने हैं ( सब ) अल्लाह ही के हैं, मगर मुनाफ़िक़ों को ( इतनी ) समझ नहीं ० यह (मुनाफ़िक़) कहते हैं कि अगर हम मदीने लौटकर गये, तो इज़्ज़त वाला ज़लील को वहाँ से निकाल बाहर करे तो सही, हालाँकि (अस्ली) इज़्ज़त अल्लाह की और उसके रसूल की और मुसल्मानों की है, मगर मुनाफ़िक़ ( इस बात से ) वाक़िफ़ नहीं ० मुसल्मानो ! तुमको तुम्हारे माल याद-ख़ुदा से ग़ाफ़िल न करने पायें और न तुम्हारी औलाद—

( और उनके सामने ) जब कोई ललकार कर बोले, तो ( अपने दिल की चोरी और अन्तःकरण की क्षीणता के कारण ) समझते हैं कि हम पर आपत्ति आई ( हमारा कपट प्रगट हो गया। हे रसूल ! ) उनसे बचते रहो-यह ( तुम्हारे पक्के ) शत्रु हैं। ख़ुदा उन्हें नष्ट करे। कहां से ( कहां ) फिरे जाते हैं-( अर्थात कैसे अच्छे इस्लाम-धर्म को छोड़ जान बूझकर कुफ़्र तथा कुपन्थ के गढ़े में गिरे पड़ते हैं )। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ ! ( ख़ुदा के आगे झुक जाओ ) रसूलुल्लाह तुम्हारे लिये क्षमा मांगें, तो ( यह बात सुनकर ) वह (तुम्हारी ओर से ) अपने सिरों ( और अपने मुँहों ) को फेर लेते हैं। और ( उस समय ) तुम उनको देखो ( तो तुम्हें उनके चेहरे के देखने से स्पष्ट विदित हो जाय ) कि वह ( अल्लाह के आगे तौबा तथा क्षमा की प्रार्थना तक करने से ) रुकते हैं और ( तुम्हारे साथ अभिमान तथा ) अहंकार करते हैं। ( और तुम जो उनसे तौबा तथा क्षमा की प्रार्थना करने के लिये कहते हो, तो यह उनके समीप साधारण बात है ) ॥

(जब उनकी ऐसी निकृष्ट दशा है, तो) उनके लिये (हर बात) बराबर है—चाहे तुम उनके लिये ( ख़ुदा से) क्षमा चाहो वा क्षमा न चाहो, ख़ुदा उनको कभी क्षमा न करेगा। निस्सन्देह अल्लाह तआला अवज्ञाकारी लोगों को ( तौबा तथा क्षमा की प्रार्थना और नेकी करने की ) राह नहीं दिखाता। यही लोग तो हैं, जो (लोगों को बहकाते हैं और उनसे) कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह के पास (रहते) हैं, तुम उन पर ( एक पैसा ) व्यय न करो। यहां तक कि ( वह ख़र्च की तङ्गी से घबरा कर उनके पास से इधर उधर) भाग जायं। यद्यपि आकाशों के और पृथ्वी के कोष ( तथा ख़ज़ाने ) अल्लाह ही के अधिकार में हैं ( और वही समस्त संसार के लोगों को जीविका पहुंचाता है )-परन्तु मुनाफ़िक़ नहीं समझते ( वह अपने आप ही को धनवान् तथा अन्नदाता जानते हैं ) ॥

(और उन्हीं में के) कुछ लोग कहते हैं कि यदि हम अबके ( अपनी यात्रा से लौटकर ) मदीने में गये, तो ( हर ) प्रतिष्ठित (अर्थात मुनाफ़िक़ ) वहां से ( हर ) अप्रतिष्ठित ( अर्थात मुसल्मान ) को निकाल बाहर करेगा-यद्यपि ( प्रतिष्ठा का उन अप्रतिष्ठित लोगों से क्या सम्बन्ध )—प्रतिष्ठा तो बस अल्लाह के लिये और उसके रसूल के लिये और ईमानदारों के लिये है—परन्तु ( इस बात को ) मुनाफ़िक़ नहीं जानते। ( यह ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल और ख़ुदा के उपासकों की अपेक्षा अपने आपको प्रतिष्ठित समझे बैठे हैं )। हे ईमान वालो ! ( देखो ! कहीं मुनाफ़िक़ों की तरह ) धन ( दौलत) और तुम्हारी सन्तान ( और यह दुनिया की टीप टाप ) तुम्हें (भी) अल्लाह की याद से अचेत न करदे और ( तुम्हारा परलोक न बिगाड़ दे )—

كُمْ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ
مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ
رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ فَاَصَّدَّقَ
وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللهُ نَفْسًا
اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا وَاللهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

سورة التغابن مكية وهي ثمان عشرة آية

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ
وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ

४

और जो ऐसा करेगा, तो वही लोग ( आख़िरकार ) घाटे में रहेंगे ० और हमने तुमको जो कुछ दे रक्खा है, उसमें से ( राह-ख़ुदा में भी कुछ ) ख़र्च करते रहा करो– ( मगर ) इससे पहिले ( ही ख़र्च करलो और इसकी नौबत न आने दो ) कि तुममें से किसी की मौत आ मौजूद हो और वह ( उस वक़्त ) लगे कहने कि ऐ मेरे पर्वरदिगार ! काश !! तू मुझको थोड़े दिनों की और मोहलत देता, तो मैं ख़ैरात करता और ( दूसरे ) नेक बन्दों में से एक नेक बन्दा मैं ( भी ) होता ० और जब किसी की मौत आ मौजूद होती है, तो ख़ुदा कभी उसको मोहलत नहीं दिया करता और जो कुछ भी तुम ( लोग ) करते हो, अल्लाह को उसकी ( सब ) ख़बर है ०

## सूरत—तग़ाबुन

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई । इसमें १८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० जो ( मख़्लूक़ात ) आस्मानों में है, और जो ( मख़्लूक़ात ) ज़मीन में है, ( सबही तो ) अल्लाह की तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगे हैं। उसी की सल्तनत है और उसीकी तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ० ( लोगो ! ) वही तो है, जिसने तुमको पैदा किया । इस पर भी तुममें बाज़ काफ़िर हैं और बाज़ मोमिन, और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह देख रहा है ० उसीने किसी मस्लहत से आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया है और उसीने तुम्हारी सूरतें बनाईं और सूरतें ( भी बनाईं, तो ) अच्छी बनाईं—

---

( निस्सन्देह ) जो कोई यह काम करे ( कि ख़ुदा को भूल जाय और सांसारिक भोग विलास में पड़ जाय ) तो ( वह बड़ी हानि उठाएगा । वास्तव में ) ऐसे ही लोग ( बड़े ) घाटे में हैं ( लोक में भी और परलोक में भी । अतः हे मुसलमानो ! तुम मुनाफ़िक़ों की रीस न करो ) और मौत के आने से पहिले हमारे दिये हुये ( धन सम्पत्ति ) में से कुछ ( अल्लाह के नाम पर भी ) व्यय ( किया ) करो ( और जो कुछ करना हो, अपने जीवन ही में करलो और वह घड़ी न आने दो कि तुममें से जब कोई दुनिया से जाने लगे ) तो ( खेद के साथ ) कहे, हे पालनहारे ! तूने मुझे थोड़े दिनों की और ढील क्यों न दी कि मैं दान ( पुण्य ) करता और नेक लोगों में से हो जाता ( और इस समय इस प्रकार पछताना न होता ) ॥

और ( यह ख़ूब समझलो कि तुममें से ) जब किसी प्राणी की मृत्यु का समय आ पहुंचता है, तो अल्लाह ( उसके मारने में ) ढील नहीं करता । और जो कुछ तुम करते, अल्लाह को सब ( कुछ ) ख़बर है । ( तुम्हारा किया धरा अकार्थ नहीं जायगा, बरन उसका फल तुम्हें मिलेगा ) ॥

## सूरत—तग़ाबुन

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी । इसमें १८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( समस्त ) भूमि तथा आकाशों में ( सजीव वा निर्जीव ) जो ( कोई भी ) है, वह अल्लाह की ( प्रशंसा, स्तुति और ) पवित्रता वर्णन करता है ( और उसकी अवस्था से प्रगट होता है कि वह इस बात का इक़रार करता है कि समस्त संसार का ) राज्य उसी ( अल्लाह ) के लिये है ( और ) समस्त प्रशंसाएं उसी के लिये ( योग्य ) हैं ( और ) वही हर वस्तु पर शक्ति रखता है । उसीने तुमको उत्पन्न किया ( तुम्हारा कर्तव्य था कि तुम सबके सब अपने जन्म-दाता तथा स्वामी को पहिचानते और उसके उपासक होते )–पर कोई, तुममें काफ़िर है और कोई ईमानदार । और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह तआला देखता है । ( क़यामत के दिन तुम्हारा सब किया धरा तुम्हारे सामने आ जायगा ) । उसीने आकाशों को और भूमि को (अपनी शक्ति तथा) हिकमत से बनाया है और उसीने तुम्हारी सूरतें बनाईं। फिर ( बनाईं भी, तो ऐसी ) अच्छी सूरतें बनाईं ( कि दूसरे जीवधारियों की सूरतें उनके आगे तुच्छ हैं )—

وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا
مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا
وَتَوَلَّوْا وَاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝
زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلٰى
وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذٰلِكَ
عَلَى اللّٰهِ يَسِيرٌ ۝ فَآمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ
الَّذِي أَنْزَلْنَا ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ
يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ
يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ

और उसी को तरफ़ (सबको) लौटकर जाना है ० जो कुछ आसमानों (में) और ज़मीन में है, वह (सब कुछ) जानता है और जो कुछ तुम लोग छिपाकर करते हो और जो कुछ ज़ाहिर तौर पर करते हो, उसको (भी) जानता है और अल्लाह (तो लोगों के) दिली-ख़यालात (तक) से वाक़िफ़ है ० क्या तुमको उन लोगों का हाल नहीं पहुंचा, जिन्होंने (तुमसे) पहिले कुफ़्र किया। फिर उन्होंने (दुनिया में) अपने आमाल (की शामत) का मज़ा भी चक्खा और (आख़िरत में) उनको अज़ाब—दर्दनाक होना है (सो अलग) ० यह इसलिये कि उनके पास उनके रसूल खुले खुले मोजिज़े ले लेकर आते रहे और यह (लोग यही) कहते रहे कि क्या (हम जैसे) बशर हमको राह बताने आये हैं? ग़रज़ उन्होंने (रसूलों को) न माना और (उनसे) रूगर्दानी की और ख़ुदा ने (भी उनकी कुछ) पर्वाह न की और अल्लाह बे-नियाज़ (और हर हाल में) सज़ावार-हम्द (व सना) है ० काफ़िर (बड़े दावे से) करते हैं कि हर्गिज़ उनको (जिलाकर दुबारा) नहीं उठाया जायगा-(ऐ पैग़म्बर! तुम इन लोगों से) कहो कि हाँ! हाँ! मुझे अपने पर्वर्दिगार ही की क़सम है कि तुम ज़रूर उठाये जाओगे। फिर जो कुछ भी तुमने (दुनिया में) किया है, ज़रूर (उसका बुरा भला) तुमको बता दिया जायगा और यह अल्लाह के नज़दीक (एक) सहल (सी बात) है ० तो (लोगो!) अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लावो और (नीज़) नूर (हिदायत यानी कुर्आन) पर, जिसको हमने उतारा है और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह को उस की (सब) ख़बर है ० (और उसका नतीजा तुमको उस दिन मालूम होगा) जबकि हश्र के दिन तुम (सब) को जमा करेगा। यही हार जीत का दिन होगा और जो शख़्स (दुनिया में) ख़ुदा पर ईमान लाता और नेक अमल करता है-(क़यामत में) ख़ुदा उसके गुनाह उस (पर) से दूर कर देगा—

---

और (फिर वही बनाने वाला एक दिन सबकी सूरतें बिगाड़ भी देगा। निस्सन्देह तुम सबको एक दिन मरना और) उसीको ओर लौटकर जाना (और अपने भले बुरे का हिसाब देना) है। पृथ्वी तथा आकाशों में जो कुछ (हो रहा) है, उसे (सब) ख़बर है। और (हे संसार वालो!) जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ प्रगट करते हो, वह उसको भी (भली भाँति) जानता है। और अल्लाह तो (तुम्हारे) दिलों की बात (तक को) जानता है। (अतः हे संसार वालो! ऐसे शक्ति, बल, महानता तथा ज्ञान और हिकमत वाले ख़ुदा की अवज्ञा करके अपना लोक परलोक न बिगाड़ो)॥

क्या तुमको उन काफ़िरों को ख़बर नहीं पहुंची, जो तुमसे पहिले हो चुके हैं कि उन्होंने (दुनिया में भी) अपनी करतूत का दंड भोगा और (अन्त में भी) उनके लिये कष्ट-दायक अज़ाब (तय्यार) है। (लोक परलोक में) यह (दशा उनकी) इसलिये है कि उनके रसूल उनके पास चमत्कार लेकर आए, तो (उन्होंने उनको न माना और बराबर) यही कहते रहे कि क्या हमारे जैसे मनुष्य हमको (राह बताने आये हैं!! भला यह क्या हमको) राह बताएँगे। अतः उन्होंने कुफ़्र (ग्रहण) किया और (ख़ुदा रसूल से) मुंह मोड़ लिया (तो रसूल ने भी उनसे मुंह मोड़ लिया) और अल्लाह ने (भी) बेपर्वाही की, और अल्लाह बेपर्वाह है (हर दशा में) प्रशंसनीय है—(चाहे कोई उसकी प्रशंसा करने वाला हो वा न हो। हे रसूल! यह) काफ़िर (जो) दावा करते हैं कि (मरने के उपरान्त) उनको कोई न उठावेगा (अर्थात वह दुबारा जीवित न होंगे, तो) तुम कहदो! नहीं (तुम बिलकुल झूठ बोलते हो। मुझे) मेरे पालनहारे की शपथ! तुम अवश्य उठाये जाओगे। फिर जो कुछ तुमने (दुनिया में) किया है (वह) तुमको जताया जायगा-(जिससे कि तुमको तुम्हारे भले बुरे का दंड दिया जाय और तुमको विदित हो जाय कि झूठे तुम थे वा हमारे रसूल) और यह (बात) अल्लाह पर सरल है-(उसको इसमें कुछ कठिनता नहीं)॥

अतः (यदि समझदार हो, तो अपने कुकर्मों से रुक जाओ और अपने वचन तथा कर्मों को ठीक करलो और) अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस प्रकाश (अर्थात कुर्आन) पर जो हमने (तुम पर) उतारा है, ईमान ले आओ और (ख़ूब समझ लो कि) जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को (उसकी पूरी पूरी) ख़बर है (अतः उसका दंड तुम्हें भोगना पड़ेगा। और यह बात तुम पर उस दिन खुलेगी) जिस दिन तुमको (अल्लाह तआला प्राणियों के) इकट्ठा होने के दिन में एकत्रित करेगा। (अर्थात क़यामत के दिन जिसमें कि त्रिकाल के समस्त प्राणी एकत्रित होंगे)। यह वह दिन है, जिसमें परस्पर के ग़बन (धोखेबाज़ी और हानि पहुंचाने) का हाल (सब पर) प्रगट होगा। और जो (दुनिया में) अल्लाह पर ईमान लाएगा और नेक काम करेगा (उस दिन) अल्लाह तआला उस (के कर्म-पत्र) से उस की बुराइयाँ दूर कर देगा—

وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ مَآ اَصَابَ
مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ
بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ
فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ
فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ

और उसको ( बहिश्त के ऐसे ) बाग़ों में ( लेजा ) दाख़िल करेगा, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी ( और वह लोग ) उन (ही बाग़ों) में ( सदा ) सदा को ( और हमेशा ) हमेशा रहेंगे। बड़ी कामयाबी ( अस्ल में ) यही है ० और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाते रहे, यही लोग दोज़ख़ी होंगे कि हमेशा दोज़ख़ (ही) में रहेंगे और वह बहुत ही बुरी जगह है ० बेइज़्न-ख़ुदा कोई आफ़त ( भी ) नहीं आया करती और जो शख़्स ख़ुदा पर यक़ीन रक्खेगा ( मुसीबत में ) ख़ुदा उसके दिल को ठिकाने से लगाये रक्खेगा और ख़ुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है ० और (लोगो !) अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और अगर तुम रूगर्दानी करो, तो हमारे रसूल के ज़िम्मे साफ़ साफ़ तौर पर (हमारे हुक्मों का) पहुंचा देना है और बस ० अल्लाह (ही है कि) उसके सिवा कोई (और) माबूद नहीं और ईमान वालों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें मुसल्मानो ! तुम्हारी बीबियों और तुम्हारी औलाद में से ( बाज़ ) तुम्हारे ( दीन के ) दुश्मन हैं, तो इनसे एहतियात करते रहो और अगर तुम ( इनके कुसूरों को ) माफ़ करो और दर-गुज़र करो और बख़्श दो, तो अल्लाह भी बख़्शने वाला मेहर्बान है ० तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ( यह ) निरा जन्जाल है और अल्लाह के हां ( इन बखेड़ों में दीन पर साबित—क़दम रहने वालों के लिये ) बड़ा अज्र है ० तो ( मुसल्मानो ! ) जहां तक तुमसे हो सके, अल्लाह से डरते रहो—

واسمعوا

और उसको जन्नतों में प्रविष्ट करेगा ( ऐसी जन्नतें ) जिनके नीचे नहरें बहती हैं ( और ) उसमें ( वह ) सर्वदा रहा करेंगे ( और वास्तव में ) बड़ी सफलता यही है। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वह दोज़ख़ी हैं। वह उसमें ( अर्थात दोज़ख़ में ) सर्वदा ( पड़े जलते ) रहेंगे ( कभी उनको दोज़ख़ से मुक्ति न मिलेगी) और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) दोज़ख़ ( बहुत ) बुरा स्थान है। ( लोगो ! यदि तुम दोज़ख़ के अज़ाब से बचना चाहते हो, तो सच्चे दिल से अपने श्रेष्ठ तथा महान ख़ुदा पर ईमान ले आओ। और विश्वास करो कि ) अल्लाह की आज्ञा के बिना ( किसी को ) कोई कष्ट नहीं पहुंचता। और ( याद रक्खो कि ) जो कोई अल्लाह पर ईमान ले आये ( तो अल्लाह हर दशा में उसको सहायता करता है। और यदि उसको कोई आपत्ति पहुंच जाय, तो ) अल्लाह उसके हृदय को ( नेक ) हिदायत ( अर्थात धैर्य-शक्ति ) प्रदान कर देता है। और अल्लाह हर वस्तु से भली भाँति अभिज्ञ है। ( उसे काफ़िरों का कुफ़्र और ईमानदारों का ईमान भली भाँति ज्ञात है )॥

( अतः उस भयंकर दिन में दंड से बचने ) और ( पुरस्कार प्राप्त करने के लिये ) तुम ( दुनिया में ) अल्लाह की आज्ञा मानो और उसके रसूल की आधीनता करो। फिर यदि तुम ( अल्लाह रसूल से ) मुंह मोड़ो ( तो तुम जानो। उसके ज़िम्मेदार तुम स्वयं हो )। हमारे रसूल का काम तो केवल (हमारे आदेश का) स्पष्ट रूप से ( तुम तक ) पहुंचा देना है और बस ( मानना न मानना तुम्हारा काम है। ( यदि कोई ध्यान पूर्वक हमारे रसूल के उपदेश सुने, तो सुगमता के साथ जान ले कि दोनों लोकों का उत्पन्न करने वाला ) अल्लाह ( ही है ) उसके अतिरिक्त कोई (और) पूज्य ( बनने के योग्य) नहीं है। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर ( हर दशा में ) भरोसा करना चाहिये॥

हे ईमान वालो ! तुम्हारी कुछ पत्नियां और कुछ सन्तान तुम्हारे शत्रु हैं ( कि तुम उनके प्रेम के कारण ख़ुदा रसूल से अचेत हो जाते हो ) तो तुम ( को चाहिये के अपने कर्तव्य-पालन में कभी आलस्य न करो और ) उन ( की बुराइयों ) से बचते रहो और उनके साथ सद्व्यवहार करो )। यदि ( उनसे कोई ग़लती हो जाय, तो उसे ) क्षमा करो और ( जहां तक बने ) छोड़ दो। और ( उनको ग़लतियों को दिल से ) क्षमा करदो। (यदि तुम ऐसा करोगे) तो अल्लाह (तुम पर अपनी दया तथा कृपा करेगा। वह बड़ा) क्षमा करने वाला कृपालु है। ( मुसल्मानो ! ) तुम्हारा धन और तुम्हारी ( स्त्रियां तथा ) सन्तान तो ( तुम्हारे लिये ) परीक्षा ( का कारण ) हैं ( उनके द्वारा अल्लाह तुम्हारे अन्तःकरण की दशा को परखता है और यह देखता है कि तुममें से किसका दिल उन वस्तुओं के प्रेम में फंस कर ख़ुदा को भूल जाता है ) और ( किसका दिल ख़ुदा को याद रखता है। सो जिन लोगों का दिल ख़ुदा से अचेत हो जाता है, उनके लिये ) अल्लाह के यहां ( बहुत बड़ा अज़ाब है। और जो ख़ुदा को याद रखते हैं, उनके लिये ) बड़ा फल है। अतः जहां तक तुमसे हो सके, अल्लाह से डरो—

وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ
وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ
اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۙ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

सूरة الطلاق مدنية وهي اثنتا عشرة اية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ
لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ
لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ
اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۭ وَتِلْكَ
حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ
ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ

ع

और ( उसका हुक्म ) सुनो और मानो और ( उसकी राह में ) ख़र्च करते रहो कि ( यह ) तुम्हारे अपने ही हक़ में बेहतर है और जो शख़्स अपने बुख़्ल-तबई से महफ़ूज़ रक्खा जाय, तो ( आख़िरत में ) ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं ० ( मुसल्मानो ! ) अगर तुम अल्लाह को ख़ुश-दिली से क़रज़ दो, तो ( आख़िरत में ) वह तुमको उसका दूना ( अदा ) कर देगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ करेगा ( सो अलग ) और अल्लाह बड़ा क़द्रदान ( और ) बुर्दबार है ० पोशीदा और ज़ाहिर ( सब ) का जानने वाला ज़बरदस्त ( और ) हिकमत वाला ०

## सूरत—तलाक़

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई । इसमें १२ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान ( है) ० ऐ पैग़म्बर ! (मुसल्मानों से कहो कि ) जब तुम (अपनी) बीबियों को तलाक़ देनी चाहो, तो उनको उनकी इद्दत के शुरू में तलाक़ दो और (तलाक़ के बाद ही से ) इद्दत गिनने लगो और अल्लाह से जो तुम्हारा पर्वर्दिगार है, डरते रहो । (इद्दत में) उनको उनके घरों से न निकालो और वह (ख़ुद भी) न निकलें, मगर यह कि खुल्लम खुल्ला ( कोई ) बेहयाई ( का काम ) कर बैठें-( तो उनको निकाल देने का मुज़ायक़ा नहीं ) और यह अल्लाह की ( बांधी हुई ) हद्दें हैं और जिस शख़्स ने अल्लाह की ( बांधी हुई ) हद्दों से क़दम बाहर रक्खा, तो उसने ( आप ) ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया । ( ऐ शख़्स ! जो बीबी को तलाक़ देता है ) तू नहीं जानता शायद अल्लाह—

---

और ( उसके आदेश को ) सुनो और ( उसकी ) आधीनता करो और ( परलोक में ) अपने प्राणों की भलाई के लिये ( दुनिया में अल्लाह के नाम पर कुछ ) व्यय करो और ( धन दौलत के लालच में न पड़ो । निस्सन्देह ) जिसे ( अल्लाह ने ) अपने मन के लालच से बचा दिया ( वह बड़ा भग्यवान है ) । सो ऐसे ही लोग ( कल्याण तथा ) मनोरथ पाने वाले हैं ( लोभी, लालची तथा कंजूस और ख़ुदा से निडर लोग कभी मनोरथ नहीं पा सकते ) । यदि तुम अल्लाह को क़र्ज़ ( अर्थात ऋण ) दो ( और क़र्ज़ भी) क़र्ज़-हसना × तो अल्लाह तुम्हें दो गुणा फल देगा और तुमको क्षमा कर देगा । और अल्लाह ( बड़ा ) क़द्रदान और ( बड़ा ) सहनशील है ( कि वह अपने मानने वालों को पुरस्कार प्रदान करता है और न मानने वाले विरोधियों तथा अवज्ञाकारियों को उनके कुकर्मों को देखते हुये भी तुरन्त कुछ नहीं कहता । यद्यपि वह ) गुप्त तथा प्रगट ( सब बातों ) का जानने वाला ( और ) प्रबल ( शक्तिशाली और बहुत बड़ी ) हिकमत वाला है ॥

× टीका—किसी निर्धन कंगाल को इस वादे पर क़र्ज़ देना कि जब अल्लाह तुम्हें दे, तो तुम दे देना और न दे, तो तुम्हें क्षमा है-इसे क़र्ज़-हसना कहते हैं । और अल्लाह को क़र्ज़ देने का अर्थ यह है कि आपत्ति काल पर अल्लाह के बन्दों के काम आओ, अथवा जिहाद आदि के अवसर पर ख़ुदा की राह में अपना धन व्यय करोः—हसन निज़ामी ॥

## सूरत—तलाक़

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी । इसमें १२ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

हे पैग़म्बर ! ( अपनी उम्मत के लोगों से कहदो कि लोगो ! ) जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो, तो उनकी इद्दत ( के अवसर ) पर तलाक़ दो ( इद्दत के तीन मासिक-धर्म हैं । इसलिये रजस्वला से पहिले अर्थात पवित्रता काल में तलाक़ दो कि रजस्वला काल का पूर्ण समय गिनती में आये । रजस्वला काल के समय तलाक़ न दो ) और इद्दत ( के दिनों ) को गिनते रहो । और ( उन पर कोई अत्याचार न करो और ) अल्लाह से डरते रहो, जो तुम्हारा पालन कर्त्ता है ( और इद्दत-काल में ) उनको उनके घरों से न निकालो और वह ( भी जहां रहती हैं, वहीं रहें । उस घर से ) न निकलें—परन्तु वह ( उस घर में रहकर ) खुल्लम खुल्ला निर्लज्जा ( का काम ) करें ( और चोरी चकारी वा व्यभिचारादि करने लगें, तो फिर तुम्हें उनके निकालने का हक़ है ) ॥

और यह समस्त ( उपरोक्त ) सीमाएँ अल्लाह की ( नियत की हुई ) हैं ( हर ईमानदार को चाहिये कि इन पर चले ) और ( इस बात का विश्वास करे कि ) जो कोई अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़े, तो निस्सन्देह उसने अपने प्राण पर ( बड़ा ) अत्याचार किया ( कि अपना लोक परलोक दोनों बिगाड़ लिये । और हे तलाक़ देने वाले ! तेरे लिये अच्छा यह है कि तू तलाक़-रजई दे । इसलिये कि ) तुझको ख़बर नहीं ( सम्भव है ) अल्लाह इस ( तलाक़ ) के पश्चात कोई ( मेल मिलाप की ) बात ( तेरे दिल में ) डाल दे ( और तू उस स्त्री से वियोग करना न चाहे ) ॥

तलाक़ के बाद ( मिलाप की ) कोई सूरत पैदा करदे ० फिर जब औरतें अपनी इद्दत पूरी करने पर आयें, तो ( या तो रुजू करके ) सीधी तरह उनको (अपनी ज़ौजियत में) रक्खे रहो या सीधी तरह उनको रुख़सत करो और ( जो कुछ भी करो ) अपने ( लोगों ) में दो मोतबर (आदमियों) को गवाह करलो और ( गवाहो ! गवाही की ज़रूरत आ पड़े, तो) अल्लाह का पास करके ठीक-ठीक गवाही देना। यह नसीहत की बातें उन लोगों को समझाई जाती हैं, जिनको अल्लाह और रोज़-आख़िरत का यक़ीन है और जो शख़्स ख़ुदा से डरता रहेगा, ख़ुदा उसके लिये ( आपस के लड़ाई झगड़े से ) नजात की शक्ल निकाल देगा ० और उसको वहां से रिज़्क़ पहुंचायेगा, जिधर से उसको ( वह्म व ) गुमान भी न था और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा रक्खेगा, तो ख़ुदा उस (की मुश्किलात के हल करने) को काफ़ी है। बेशक जो ख़ुदा को मन्ज़ूर होता है, वह उसको पूरा करके रहता है ( और ) अल्लाह ने तो हर चीज़ का एक अन्दाज़ा ठहरा ही रक्खा है ० और ( मुसल्मानो ! ) तुम्हारी ( तलाक़ी ) बीबियों में से जिनको ( पीराना-साली की वजह से ) हैज़ के आने की उम्मीद नहीं रही, अगर तुमको शुबहा हो, तो उनकी इद्दत ( हैज़ से नहीं, बल्कि दिनों के हिसाब से ) तीन महीने और ( अला-हाज़ल्क़यास ) जिन औरतों को हैज़ आने की नौबत नहीं आई-( यही तीन महीने उनकी इद्दत ) और (रहीं) हामिला औरतें-(सो) उनकी इद्दत उनके बच्चे जनने तक, और जो अल्लाह से डरता रहेगा, ख़ुदा उसके काम को आसान करेगा ० ( मुसल्मानो ! ) यह ( अहकाम जो ऊपर मज़कूर हुए) फ़रमूदए-ख़ुदा हैं, जो उसने तुम्हारी तरफ़ भेजे हैं और जो ख़ुदा से डरता रहेगा—( आख़िरत में ) ख़ुदा उसके गुनाहों को उससे दूर कर देगा और उसको बड़े अज्र देगा, ( सो अलग ) ० तलाक़ी औरतों को ( इद्दत के लिये ) अपने मक़्दूर मुताबिक़ वहीं रक्खो, जहां तुम ख़ुद रहो—

بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ
بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ
وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ
كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ
وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝
وَالّٰٓـئِيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ
فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـئِيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ
الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ
يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ
اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ
وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ

مِّنْ

अतः(यदि तुम लोग अपनी पत्नियों को एक तलाक़ अर्थात तलाक़-रजई दो, तो ) जब वह अपनी इद्दत ( के पूर्ण होने के निकट ) तक पहुंच जायँ (अर्थात इद्दत काल ही में हों, तो) चाहे उनको नियमानुसार (अपने ही पास ) रोक लो ( अर्थात अपने निकाह में रहने दो)–चाहे उनको नियमानुसार अलग करदो। और ( अपने पास रक्खो तो, और अलग करो तो, हर दशा में ) अपने में से दो विश्वास-पात्र पुरुषों को गवाह बना लो। और ( हे लोगो ! जब तुम गवाही दो, तो ) केवल अल्लाह के लिये ठीक गवाही दो—( सत्य बात कहने में किसी का पक्ष न लो )। यह शिक्षा ( तुममें से ) उसको दी जाती है, जो अल्लाह ( की महानता ) का और क़यामत के ( भयङ्कर ) दिन का विश्वास रखता हो ( असत्य मार्ग पर चलने वाले और अपने परिणाम से अचेत मनुष्य पर उसका कुछ प्रभाव नहीं पड़ सकता ) ॥

और ( इसमें सन्देह नहीं कि ) जो अल्लाह से डरता है, तो वह ( अल्लाह भी ) उसके लिये ( विपत्ति से ) छुटकारे की ( कोई न ) कोई राह निकाल देता है और जहाँ से उसको ख़्याल भी नहीं होता, वहाँ से ( बे हिसाब ) जीविका प्रदान करता है। और जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है, तो ( अल्लाह उसके काम बना देता है। निस्सन्देह ) वह उसके ( उद्देश्य को पूर्ण करने के ) लिये ( बहुत ) पर्याप्त है। निस्सन्देह अल्लाह तआला ( जिस प्रकार चाहता है ) अपना काम पूरा कर लेता है। ( कोई उसके इरादे और इच्छा में बाधा नहीं डाल सकता )। निस्सन्देह अल्लाह तआला ने हर वस्तु का एक अनुमान ( नियत कर ) रक्खा है। ( अल्लाह की हिकमत तथा मस्लहत के विरुद्ध दुनिया में कोई काम नहीं होता ) ॥

और ( लोगो ! ) तुम्हारी स्त्रियों में से जो स्त्रियां ( बुढ़ापे के कारण ) हैज़ अर्थात मासिक-धर्म ( के आने ) से निराश हो गई हैं–यदि तुमको ( उनकी इद्दत के समय के विषय में ) शंका हो, तो ( सुन लो कि ) उनकी इद्दत ( का समय ) तीन मास हैं और इसी तरह जिन स्त्रियों को ( बाल्यावस्था के कारण अभी तक ) हैज़ आना आरम्भ नहीं हुआ ( उनकी इद्दत का समय भी तीन ही मास हैं। ऐसी स्त्रियों के लिये हैज़ का हिसाब न होगा ) और जिन स्त्रियों के पेट में बच्चा है, उनकी इद्दत ( का समय ) बच्चा के उत्पन्न होने तक है। और ( इसमें सन्देह नहीं कि ) जो कोई अल्लाह से डरता है, तो अल्लाह उसके काम में सुगमता कर देता है। ( निस्सन्देह ) यह अल्लाह का आदेश है, जो ( हे ईमान वालो ! वही-द्वारा ) उसने तुम्हारी ओर उतारा है। और जो कोई अल्लाह से डरता है ( और उसकी आज्ञा पर चले ) तो अल्लाह उसकी बुराइयां दूर कर देता है और उसे बहुत बड़ा फल देता है। ( हे ईमान वालो ! ) जहां तुम स्वयं रहते हो, अपनी तलाक़ दी हुई स्त्रियों को भी अपनी सामर्थ्यानुसार रहने के लिये वहीं ठिकाना दो—

مِّن وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ
وَإِن كُنَّ أُولَٰتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ
أُجُورَهُنَّ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ وَإِن
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ۝ لِيُنفِقْ
ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ
فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا
إِلَّا مَا آتَاهَا سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝
وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ
فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا
نُّكْرًا ۝ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ
أَمْرِهَا خُسْرًا ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا
فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا قَدْ

और उन पर सख़्ती करने के लिये उनको ईज़ा न दो और अगर हामिला हों, तो बच्चा जनने तक उनका ख़र्च उठाते रहो। फिर ( बच्चा जने पीछे ) अगर वह ( बच्चे को ) तुम्हारे लिये दूध पिलायें, तो उन को उनकी दूध-पिलाई दो और आपस की सलाह से दस्तूर के मुताबिक़ ( उजरत वग़ैरह का ) ठहराव करलो और आपस में कश-मकश करोगे, तो ( मर्द को कोई ) और ( औरत मुयस्सर आ जायगी और वह ) उसके लिये ( बच्चे को ) दूध पिला देगी ० जिसको गुन्जाइश हो, उस को चाहिये कि वह अपनी गुन्जाइश के क़द्र ख़र्च करे और जिसकी आमदनी नपी-तुली हो, वह जितना उसको ख़ुदा ने दिया है, उसीके मुवाफ़िक़ ख़र्च करे। ख़ुदा ने जिसको जितना दे रक्खा है, उससे बढ़ कर किसी को तकलीफ़ देनी नहीं चाहता। (घबराने की बात नहीं )-.ख़ुदा तंगी के बाद जल्द फ़राग़त ( भी ) देगा ० और बहुत सी बस्तियां हो गुज़री हैं, जिन ( के रहने वालों ) ने अपने पर्वर्दिगार और उसके रसूलों के हुक्म से सर्ताबी की, तो हमने बड़ी सख़्ती से उन ( के आमाल ) का हिसाब लिया और उनको ( बड़ी ) बुरी सज़ा दी ० तो उन्होंने अपने आमाल ( की सज़ा ) का मज़ा चक्खा और उनका अन्जामकार घाटा ( ही घाटा ) हुआ ० इन लोगों के लिये .ख़ुदा ने ( क़यामत का ) अज़ाब-सख़्त ( और भी ) तय्यार कर रक्खा है, तो ऐ अक़्ल वालो! जो ईमान ला चुके हो, अल्लाह ( के ग़ज़ब ) से डरते रहो—

---

और उन्हें ( व्यर्थ ) व्याकुल करने के लिये ( घर बार के विषय में ) दुख न दो। और यदि वह गर्भवती हों, तो बच्चा जनने तक उनका ख़र्च उठाओ। फिर ( यदि बच्चा उत्पन्न हो जाय और यदि ) वह ( बच्चों को ) तुम्हारे कहने से दूध पिलाएँ, तो तुम उनको उनकी ( ठहरी हुई ) मंजूरी दो ( और यदि वह दूध पिलाना न चाहें, तो फिर तुम कोई दूसरा प्रबन्ध करो ) और ( मंजूरी के विषय में ) ख़ूब अच्छी तरह परस्पर परामर्श कर लिया करो और यदि तुम परस्पर हठ करोगे, तो कोई दूसरी स्त्री दूध पिलाएगी। (अर्थात यदि परस्पर कोई समझौता न हो सके, तो चाहिये कि किसी दूसरी स्त्री को दूध के लिये नियत कर लिया जाय )॥

( और बच्चे के व्यय के विषय में यह आज्ञा है कि ) सामर्थ्य वाले मनुष्य को अपनी सामर्थ्यानुसार ( बच्चे पर ) व्यय करना चाहिये। और जिसकी आमदनी ज़्यादा न हो, तो जो कुछ अल्लाह ने उसको दिया है, उसमें से व्यय करे। अल्लाह किसी को उसकी सामर्थ्य से अधिक कष्ट नहीं देता-( यदि कोई कंगाल है, तो उसे घबराना नहीं चाहिये )। अल्लाह तआला ( उसकी इस ) तंगी के बाद ( उसके लिये ) शीघ्र सुगमता ( और निश्चिन्तता ) उत्पन्न कर देगा। और ( लोगो! देखो !! आपत्ति से व्याकुल होकर कभी ख़ुदा को न भुलाया करो। यह बड़ी मूर्खता की बात है। पिछली ) बहुतेरी बस्तियां ( ऐसी ) हैं, जिनके निवासियों ने अपने पालनहारे की और उसके रसूल की आज्ञा से मुंह मोड़ा ( और सांसारिक मायाजाल में फंस कर अपने ख़ुदा को भूल बैठे )। अतः हमने उनसे कठिन हिसाब लिया और उनको बड़े भारी अज़ाब में डाल दिया॥

सो उन्होंने अपने काम के दंड का स्वाद चक्खा और ( वह तो समझ रहे थे कि जो कुछ हम कर रहे हैं, वह लाभ दायक है, परन्तु वास्तव में ) उनके काम का परिणाम ( बिल्कुल ) घाटा ही हुआ। ( और यह तो उनको दुनिया में दंड मिला। क़यामत का दंड अभी शेष है। क़यामत में ) अल्लाह ने उनके लिये कठिन अज़ाब तय्यार कर रक्खा है। तो हे समझदार ईमान वालो! अल्लाह ( के अज़ाब ) से डरते रहो। निस्सन्देह—

أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝ رَّسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ
اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۝ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ
صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۝ اللَّهُ
الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ
يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

سورة التحريم مدنية وهي اثنتا عشرة آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي
مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ قَدْ
فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ

ع

ख़ुदा ने (तुमको) आगाह करने के लिये ० एक पैग़म्बर (मुहम्मद) को तुम्हारी तरफ़ भेज दिया है—जो तुमको ख़ुदा की खुली खुली आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं, ताकि जो लोग ईमान लायें और नेक अमल करें, उनको ( कुफ़्र की ) तारीकियों से निकाल कर ( ईमान की ) रोशनी में लायें और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लायेगा और नेक अमल करेगा, ख़ुदा उसको (बहिश्त के ऐसे) बाग़ों में (लेजा) दाख़िल करेगा, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी ( और वह ) उनमें सदा को (और हमेशा) हमेशा रहेंगे। अल्लाह ने (यह) उनको ख़ूब ही रोज़ी दी ० अल्लाह ही तो है, जिसने (तह पर तह) सात आस्मान पैदा किये और उनही की तरह की ज़मीन। आस्मान व ज़मीन में ( इन्तिज़ामी ) अहकाम ( वक़्तन-फ़वक़्तन ) नाज़िल होते रहते हैं, ताकि तुम लोगों को मालूम हो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और ( नीज ) यह कि अल्लाह का इल्म सब चीज़ों पर हावी है ०

## सूरत—तहरीम

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें १२ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान ( है )० ऐ पैग़म्बर ! जो चीज़ें ख़ुदा ने तुम्हारे लिये हलाल की हैं, तुम अपनी बीबियों की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये ( अपने ऊपर ) क्यों हराम करो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० तुम मुसल्मानों के लिये ख़ुदा ने तुम्हारी क़स्मों के तोड़ डालने का ( भी ) ठहराव कर दिया है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार है और वह—

---

अल्लाह ने तुम्हारे लिये शिक्षा—पत्र (अर्थात कुर्आन) उतारा है और तुम्हारी ओर रसूल भेजा है, जो तुम्हें अल्लाह (के कुर्आन) की खुली २ आयतें ( पढ़कर ) सुनाता है, जिससे कि उन लोगों को जो ईमान ले आये हैं और जिन्होंने शुभ-कर्म किये हैं (कुफ़्र के) अन्धकारों से ( बचावे और ईमान के ) प्रकाश में ले आवे। और जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और ( ईमान लाने के पश्चात ) उन्होंने शुभ कर्म किये, आल्लाह तआला उन्हें जन्नतों में प्रविष्ट करेगा, जिनके नीचे नहरें बहती हैं। ( वह बस ) सर्वदा उन्हीं में (सुख आनन्द के साथ) रहेंगे। निस्सन्देह अल्लाह ने उनके लिये उत्तम जीविका प्रदान की है (अर्थात पुरस्कार प्रदान किया है ) ॥

( अतः हे मनुष्यो ! इसी शक्तिशाली अल्लाह को धन्यवाद दो और उसके बल शक्ति को पहिचानो। याद रक्खो ! ) अल्लाह वह है, जिसने सात आस्मान बनाये और पृथ्वी भी उन्हीं ( सातों आकाशों ) की तरह बनाई। उसके आदेश उन सब में ( हर समय ) अवतीर्ण ( तथा प्रचलित ) होते ( रहते ) हैं, जिससे कि तुम ( उनके प्रभाव अर्थात सांसारिक सुप्रबन्ध को देख कर ) जान लो कि अल्लाह हर वस्तु पर शक्ति रखता है और अल्लाह का ज्ञान हर वस्तु को घेरे हुये है ॥

## सूरत—तहरीम

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें १२ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

हे पैग़म्बर ! जो पदार्थ अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल किये, तुम अपनी पत्नियों की प्रसन्नता के लिये अपने ऊपर ( उसे ) क्यों हराम करते हो। ( तुम भक्ष्य को अभक्ष्य न ठहराओ। और यदि तुमने शपथ खा ली है, तो शपथ का प्रायश्चित देदो, अल्लाह क्षमा करेगा। निस्सन्देह ) अल्लाह (बड़ा) क्षमा करने वाला कृपालु है। ( हे ईमान वालो ! ) अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये ( भी ) शपथों के खोलने का ढंग नियत कर दिया है ( अर्थात यह कि शपथ का कफ़्फ़ारा अर्थात प्रायश्चित्त दे दो, तो शपथ तोड़ना उचित है ) और अल्लाह तुम्हारा स्वामी है और वही है—

الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ
أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ
عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَن بَعْضٍ فَلَمَّا
نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنبَأَكَ هَٰذَا قَالَ نَبَّأَنِيَ
الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝ إِن تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوبُكُمَا وَإِن تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ
مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَالْمَلَائِكَةُ
بَعْدَ ذَٰلِكَ ظَهِيرٌ ۝ عَسَىٰ رَبُّهُ إِن طَلَّقَكُنَّ
أَن يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنكُنَّ مُسْلِمَاتٍ
مُّؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ
ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ
وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ

( सबके हाल से ) वाक़िफ़ ( और ) हिकमत वाला है ० और जब पैग़म्बर ने अपनी बीबियों में से किसी से एक बात चुपके से कही, तो ( इत्तिफ़ाक़ से बात का बतङ्गड़ बन गया कि उन बीबी ने दूसरी बीबी को उसकी ख़बर करदी और ) जब उन्होंने उसकी ख़बर करदी और ख़ुदा ने पैग़म्बर पर इसको ज़ाहिर कर दिया, तो पैग़म्बर ने कुछ ( तो उन बीबी को) जताया और कुछ टाल दिया। पस जब पैग़म्बर ने जिस क़द्र जताना मन्ज़ूर था, उन ( बीबी ) को जताया, तो उन बीबी ने ( हैरान होकर पैग़म्बर से) पूछा कि आप को यह (सब) ख़बर किसने दी? पैग़म्बर ने जवाब दिया कि मुझको ख़बर दी उस ( ख़ुदा ) ने, जो ( सब कुछ ) जानता ( और हर तरह की ) ख़बर रखता है ० सो ( पैग़म्बर की दोनों बीबियो ! इस हर्कत से) ख़ुदा की जनाब में तौबा करो,तो (तुम्हारे हक़ में) बेहतर है-( क्योंकि ) तुम दोनों ने कजराई इख़्तियार की है और अगर पैग़म्बर के ख़िलाफ़ में साज़िशें करोगी, तो उनका ( हामी व ) मददगार अल्लाह है और जिब्रील और ( अच्छे ) नेक मुसलमान और इनके अलावा दूसरे फ़रिश्ते ( भी ) पैग़म्बर के ( हामी व ) मददगार हैं ० अगर पैग़म्बर तुम ( औरतों ) को तलाक़ दे दें, तो अजब नहीं कि उनका पर्वर्दिगार उनके लिये तुम्हारे बदले तुमसे बेहतर बीबियां बहम पहुंचा दे, फ़र्मांबर्दार बाईमान, नमाज़ी ( ख़ुदा की जनाब में) तौबा करने वालियां,इबादत-गुज़ार, रोज़ेदार, दुहाजनें और क्वारियाँ ० मुसल्मानो ! अपने आप को और अपने अह्ल ( व अयाल ) को ( दोज़ख़ की ) आग से बचाओ, जिसका ईंधन होंगे आदमी और पत्थर। उस पर फ़रिश्ते (तईनात) हैं, तुन्द-ख़ू, सख़्त-मिज़ाज। ख़ुदा जो उनको हुक्म दे, उसकी नाफ़र्मानी नहीं करते—

---

( सब बातों का ) जानने वाला ( और बुद्धि तथा ) हिकमत वाला। ( उसने अपने ज्ञान तथा हिकमत ही के अनुसार शपथ का कफ़्फ़ारा नियत किया है। इसमें तुम्हें बड़ी सुगता होगी )। और ( हे नबी की स्त्रियो ! उस समय को याद करो ) जबकि (हमारे) पैग़म्बर ने अपनी पत्नी ( हफ़्सा ) से कोई भेद की बात कही, तो जब उन्होंने उस ( बात ) को (आइशा को) ख़बर करदी और यह बात अल्लाह ने ( अपने ) पैग़म्बर पर प्रगट करदी ( कि तुम्हारी स्त्री हफ़्सा ने तुम्हारे रहस्य की बात तुम्हारी दूसरी स्त्री से कह दी ) तो उन्होंने उसमें से एक बात उस ( पत्नी ) को जता दी और दूसरी टला दी ( उसको न बताया, जिससे कि वह ज़्यादा पश्चाताप न करें )। सो जब ( उस ) पत्नी को यह बात जताई, तो उन्होंने ( विस्मित होकर ) पूछा कि तुमसे यह बात किसने कहदी ? ( इस पर पैग़म्बर ने ) कहा कि मुझे जानने वाले तथा ख़बर रखने वाले ( ख़ुदा ) ने ख़बर दी है ॥

यदि तुम दोनों अल्लाह के आगे तौबा करो, तो ( यह तुम्हारे लिये उत्तम है। और तुम्हें तौबा करनी भी अवश्य चाहिये, इसलिये कि ) तुम्हारे दिल ( ख़ुदा रसूल की ओर से कुछ ) फिर गये हैं। और यदि तुम ( तौबा न करो-बरन दोनों की दोनों परस्पर एक होकर ) रसूल की विरुद्धता ( और गुप्त-भेद को प्रगट करो) तो ( ख़ूब समझ लो कि उनका ) अल्लाह उनका मित्र है और जिब्रील और नेक ईमान वाले भी और इसके अतिरिक्त ( दूसरे ) फ़रिश्ते भी ( उनके ) सहायक हैं। ( सो यदि तुम उनकी आज्ञा के विरुद्ध करोगी, तो इसमें उनकी कुछ भी हानि न होगी। तुम अपना ही कुछ खोओगी ) ॥

( और हे नबी की पत्नियो ! यह विचार तुम कभी भूल कर भी अपने दिल में न करना कि हमारे नबी का तुम बिन निर्वाह नहीं। ख़ूब समझ लो ! ) यदि (हमारे) नबी तुमको तलाक़ दे दें, तो उनका पालनहारा उनको तत्काल तुमसे अच्छी पत्नियां प्रदान करदे, जो ( पक्की ) मुसलमान ( सच्ची ) ईमानदार ( अत्यन्त ) आज्ञाकारिनी, तौबा करने वाली, उपासना करने वाली ( नमाज़ी, परहेज़गार ) रोज़ा अर्थात व्रत रखने वाली हों ( और उनमें से ) कुछ विधवा हों और ( कुछ ) क्वारियां। ( अतः ) हे ईमान वालो ! (जब नबी की स्त्रियों के लिये अल्लाह रसूल की आधीनता आवश्यक है, जिनका रसूल से इतना सम्बन्ध है, तो तुमको उनसे बहुत ज़्यादा इस बात का ख़्याल चाहिये कि ) तुम ( अल्लाह रसूल की अवज्ञा न करो। और अपने बाल बच्चों को भी यही समझाओ और सच्चे ईमानदार बनकर ) अपने प्राणों को और अपने बाल बच्चों को ( दोज़ख़ की ) अग्नि से बचाओ, जिसका ईंधन ( मूर्ति-पूजक ) मनुष्य और पत्थर ( अर्थात उनकी मूर्तियां ) हैं, जिस पर ( अत्यन्त ) तीक्ष्ण-स्वभाव ( और निर्दई तथा ) बलिष्ट फ़रिश्ते ( नियत ) हैं, जो अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते—

وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا
لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً
نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَ
يُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ
لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ
يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝
ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ نُوحٍ
وَامْرَأَتَ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا
صَالِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا

٤

और जो उनको हुक्म दिया जाता है ( वे कम व कास्त ) उसकी तामील करते हैं ० ( क़यामत के दिन जब दोज़ख़ सबके सामने ला हाज़िर की जायगी, हम काफ़िरों से फ़र्मायेंगे कि ) काफ़िरो ! आज (अपने बेहूदा) उज़्र मत ( पेश ) करो। जैसे अमल तुम ( दुनिया में ) करते रहे हो, ( आज ) उन्हीं का बदला पावोगे ० मुसलमानो ! अल्लाह की जनाब में ख़ालिस ( दिल से ) तौबा करो ! अजब नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार ( आख़िरत में ) तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर करदे और तुमको ( बहिश्त के ऐसे ) बाग़ों में ( लेजा ) दाख़िल करे, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी। ( यह वह दिन होगा ) जबकि अल्लाह पैग़म्बर को और उन लोगों को, जो उनके साथ ईमान लाये हैं, रुस्वा नहीं करेगा। उनके ईमान की रोशनी उनके आगे २ और उनके दाहिनी तरफ़ (उनके साथ साथ) चल रही होगी ( और यह ) दुआयें करते जाते होंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमारी ( इस ) रोशनी को हमारे लिये अख़ीर तक क़ायम रख ! और हमारे गुनाह माफ़ फ़र्मा ! बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है ० ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों के साथ ( हाथ से ) और मुनाफ़िक़ों के साथ ( ज़बान से ) जिहाद करते रहो और उन पर सख़्ती रक्खो और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह ( बहुत ही ) बुरी जगह है ० काफ़िरों ( के इब्रत पकड़ने ) के लिये ख़ुदा नूह की बीबी और लूत की बीबी की मिसाल देता है कि यह ( दोनों औरतें ) हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के निकाह में थीं। फिर इन दोनों ने उनको दग़ा दी ( कि अपने शौहरों के ख़िलाफ़ काफ़िरों से मिली रहीं ) तो दोनों के शौहर ( बावजूदे कि पैग़म्बर थे )—अल्लाह के मुक़ाबले में इनके कुछ भी काम न आये—

और जो उन्हें आज्ञा दी जाती है ( तन मन से ) उसका पालन करते हैं। ( क़यामत के दिन ) हे काफ़िरो ! ( वह तुमको पकड़ कर उस आग में डाल देंगे और जब तुम नाना प्रकार के बहाने करोगे, तो वह कहेंगे ) आज बहाना न बनाओ ! (आज तो) तुमको अवश्य तुम्हारी करतूतों का दंड दिया जायगा। ( अतः ) हे ईमान वालो ! ( अवज्ञाकारियों कुकर्मियों के अशुभ-परिणाम को देखो और शिक्षा ग्रहण करो। और अपने अगले पिछले पापों की ख़ुदा से क्षमा चाहो। और आगे के लिये अल्लाह के सामने ) सच्ची ( और पक्की ) तौबा करो-सम्भव है कि तुम्हारा पालनहारा ( तुम्हारे कर्म-पत्र से ) तुम्हारे पापों को मिटा दे और तुमको उन बाग़ों में प्रविष्ट करे, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। ( उस दिन ) जिस दिन कि अल्लाह ( दुराचारी काफ़िरों को तो हर प्रकार अप्रतिष्ठित तथा अपमानित करेगा और उनकी अपेक्षा अपने ) नबी को और जो ईमानदार उनके साथ हैं, उनको अपमानित न करेगा (और हर प्रकार उनका आदर सत्कार करेगा)। उन ( के शुभ कर्मों तथा तेज ) का प्रकाश उनके आगे ( पीछे ) और उनकी दाईं ( बाईं ) दौड़ता होगा ( और ) वह ( प्रफुल्लित तथा विकसित होकर अपने पालनहारे से ) निवेदन करेंगे कि हे हमारे पालनहारे ! तू हमारे प्रकाश को हमारे लिये पूर्ण कर ! और हमें क्षमा कर। निस्सन्देह तू सर्व शक्तिमान है (सब कुछ कर सकता है)॥

हे नबी ! ( यह यदि अपनी उद्दण्डता तथा दुराचार से न मानें, तो ) तुम इन काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के मुक़ाबले में जिहाद करो और उन पर कठोरता करो और ( दुनिया में तो जो दंड यह भोगेंगे, वह तो भोगेंगे ही—परलोक में भी ) उनका ठिकाना दोज़ख़ है और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) वह एक बुरा ठिकाना है॥

( सो यदि उन्हें अपना लोक परलोक बनाना है, तो उन्हें चाहिये कि यह तुम्हारी आज्ञा पालन करें। हम इन ) काफ़िरों ( तथा उद्दण्डों को समझाने बुझाने) के लिये (उनसे अपने पैग़म्बर) नूह की स्त्री और लूत की स्त्री का दृष्टान्त वर्णन करते हैं कि वह दोनों (यद्यपि) हमारे बन्दों में से दो नेक ( और प्रतिष्ठित ) बन्दों से ब्याही थीं, परन्तु ( जब ) उन्होंने उनसे ( अर्थात अपने पतियों से ) चोरी की ( और उनको नबी समझ कर भी माननीय न जाना ) तो ( हमारे ) वह दोनों नेक बन्दे अल्लाह के मुक़ाबले में उनको कुछ लाभ न पहुंचा सके। (अर्थात ख़ुदा के अज़ाब से न बचा सके—न लोक में न परलोक में )—

وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِينَ ● وَضَرَبَ اللّٰهُ
مَثَلًا لِّلَّذِينَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ
ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ
وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ●
وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِي اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ
رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِينَ ●

سُورَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُونَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
تَبٰرَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ● الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ
لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۘ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ● الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ

और ( इन दोनों औरतों को ) हुक्म दिया गया कि जहां और लोग ( जहन्नम में ) दाख़िल हुये हैं ( तुम भी ) उनही के साथ जहन्नम में जा दख़िल हो ० और ( सच्चे ) मुसलमानों ( की तसल्ली ) के लिये ख़ुदा ( एक तो ) फ़िऔन की बोबी ( आसिया ) की मिसाल देता है कि उन बीबी ने दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरे लिये बहिश्त में अपने पास एक घर बना ! और मुझको फ़िऔन और उसके किर्दार ( बद ) से नजात दे ! और ( नोज़ ) मुझको ( इन ) ज़ालिम लोगों से नजात दे ० और (दूसरी मिसाल ) इम्रान की बेटी मर्यम की, जिन्होंने अपनी इस्मत को महफ़ूज़ रक्खा, तो हमने उनके पेट में अपनी ( क़ुद्रत से एक ) रूह फूंक दी और वह अपने पर्वर्दिगार के कलाम और उसकी किताबों की तस्दीक़ करती रहीं और वह ( हमारे ) फ़र्मांबर्दार बन्दों में से थीं ०

## सूरत–मुल्क

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ३० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० ( बड़ा ) बा बरकत है, वह (ख़ुदा बा इख़्तियार) जिसके हाथ में (दुनिया जहान की ) सल्तनत है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ० जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया, ताकि तुम लोगों को आज़माये कि तुममें कौन अच्छे अमल करता है और वह ज़बरदस्त (और) बख़्शने वाला है ० जिसने तह पर तह सात आस्मान बना दिये—

---

और ( क़यामत के दिन ) उनसे ( खोल कर ) कह दिया जायगा कि ( दोज़ख़ में ) प्रवेश करने वालों के साथ तुम ( दोनों ) भी अग्नि में प्रवेश करो । और मुसल्मानों के (ईमान में बढ़ती करने के ) लिये अल्लाह फ़िऔन की स्त्री ( आसिया के उस समय ) का हाल वर्णन करता है, जबकि उसने ( फ़िऔन से तंग आकर अपने पालन कर्त्ता से ) प्रार्थना की, कि हे मेरे पालनहारे ! तू ( मेरा पर्दा ढांक ले और ) मेरे लिये अपने यहां कोई घर बना दे और फ़िऔन ( के अत्याचार ) से और उसके ( अशुभ ) कर्मों से मुझे छुटकारा दे । और इन समस्त (उद्दण्ड तथा) अत्याचारी लोगों से मुझे मुक्ति प्रदान कर । और (मुसलमानों की शिक्षा के लिये) इम्रान की पुत्री मर्यम का (हाल भी अल्लाह वर्णन करता हैं और बताता है ) कि उसने अपने लज्जा–स्थान को ( प्रत्येक बुराई से ) बचाया । अतः हमने उन ( के गरेबान) में ( जिब्रील के द्वारा एक ) रूह अर्थात आत्मा फूंक दी ( और जीता जागता बेटा प्रदान किया ) और वह अपने पालनहारे के वचनों को और उसकी पुस्तकों को मानती थी । और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) वह ( दोनों हमारे ) आज्ञाकारी बन्दों में से थीं ॥

## सूरत–मुल्क

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ३० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥**

वह ( ख़ुदा ) बड़ी बरकत वाला ( तथा पवित्र ) है, जिसके हाथ में ( समस्त संसार का ) राज्य है और ( जिसका राज्य तथा शासन दुनिया के अल्प–कालिक राजाओं तथा शासकों की तरह मिटने वाला तथा विनाश होने वाला नहीं हैं, वरन् ) वह ( वह बादशाहों का बादशाह और राजाओं का राजा है, जो ) हर वस्तु पर ( पूर्ण ) शक्ति रखता है ॥

उसीने मृत्यु तथा जीवन को बनाया है, जिससे कि ( हे संसार वालो ! ) तुमको वह परखे, कि कौन तुममें अच्छे काम करता है ( और कौन बुरे ) और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ) वह (श्रेष्ठ तथा महान ख़ुदा अपने अवज्ञाकारियों को उनकी अवज्ञा का दंड देने के लिये बड़ा ) प्रबल (तथा शक्तिशाली है और आज्ञाकारियों को उनके आज्ञा–पालन का प्रतिफल देने के लिये बड़ा ) क्षमा करने वाला ( करुणाकारी ) है । उसीने ( अपनी अपार शक्ति से इन ) सात आकाशों को पर्त–पर्त बनाया है—

طباقا ما ترى في خلق الرحمن من تفوت
فارجع البصر هل ترى من فطور ۝ ثم ارجع
البصر كرتين ينقلب اليك البصر خاسئا
وهو حسير ۝ ولقد زينا السماء الدنيا
بمصابيح وجعلنها رجوما للشيطين واعتدنا
لهم عذاب السعير ۝ وللذين كفروا بربهم
عذاب جهنم وبئس المصير ۝ اذا القوا فيها
سمعوا لها شهيقا وهي تفور ۝ تكاد تميز من
الغيظ كلما القي فيها فوج سالهم خزنتها
الم ياتكم نذير ۝ قالوا بلى قد جاءنا نذير فكذبنا
وقلنا ما نزل الله من شيء ان انتم الا في ضلل
كبير ۝ وقالوا لو كنا نسمع او نعقل ما كنا
في اصحب السعير ۝ فاعترفوا بذنبهم فسحقا

( ऐ देखने वाले ! ) भला तुझको ( खुदाए ) रहमान की ( इस ) सनअत में कोई कोर-कसर दिखाई देती है ? (और एक बार देखने से न दिखाई दे ) तो दुबारा नज़र कर ! ( और फिर देख ! ) कि तुझको ( किसी जगह ) कोई दराड़ दिखाई देती है ० फिर बार बार [नज़र] [कर!] ( नतीजा यही होगा कि ) तेरी नज़र खिस्यानी होकर थकी हारी तेरी तरफ़ उल्टी लौट आयेगी ( और तुझको आस्मान में कोई नुक़्स नहीं दिखाई देगा ) ० और हमने वरले आस्मान को ( सितारों के ) चिराग़ों से सजा रक्खा है और हमने इन ( चिराग़ों ) को शयातीन के लिये ( एक तरह की ) ज़द बनाया है और ( आख़िरत में ) हमने उनके लिये दोज़ख़ का अज़ाब तय्यार कर रक्खा है ( सो अलग ) ० और जो लोग अपने पर्वर्दिगार को नहीं मानते, उनके लिये ( भी ) दोज़ख़ का अज़ाब है और ( वह बहुत ही ) बुरी जगह है ० जब ( यह लोग ) उसमें डाले जायँगे, तो ( दूरही से ) उसकी बड़े ज़ोर की सायँ-सायँ इनको सुनाई देगी और वह ( ऐसी ) भड़क रही होगी कि ( गोया ) कोई दम में मारे जोश के फट पड़ेगी ० जब जब उसमें ( काफ़िरों का ) कोई गिरोह डाला जायगा, तो जो ( फ़रिश्ते ) उस पर तईनात हैं, उनसे पूछेंगे—क्या तुम्हारे पास ( अज़ाब-खुदा से ) डराने वाला ( कोई पैग़म्बर ) नहीं आया ० वह कहेंगे हाँ ! डराने वाला तो हमारे पास आया था, मगर हमने ( उसको ) झुटलाया और कहा कि खुदा ने तो ( किताब वग़ैरह ) कोई चीज़ उतारी नहीं। बिला शुबहा तुम और तुम्हारे पैरव ( सबके सब ) बड़ी ग़लती में हो ० और ( यह लोग दोज़ख़ के फ़रिश्तों से यह भी ) कहेंगे कि अगर हमने ( पैग़म्बरों के कहने को ) सुना या समझा होता, तो ( आज को ) दोज़ख़ियों में न होते ० ग़रज़ कि ( उस वक़्त दोज़ख़ी ) अपने गुनाहों का इक़रार करेंगे—

لاصحب

( हे मनुष्य ! बता ) क्या करुणा-निधान ( खुदा ) के बनाने में तू कुछ अन्तर ( और किसी प्रकार की कमी ) देखता है ? ( देख ! देख ! यदि एक बार के देखने में कुछ ज्ञात न हुआ हो, तो) फिर दुबारा दृष्टि कर ! ( बोल ! ) क्या तुझको ( कहीं ) कोई दरार दिखाई देता है। ( हाँ ! ) फिर दुबारा ( तिबारा आकाश की ओर ) दृष्टि कर ! ( और ख़ूब आंखें फाड़ २ कर देख ! किन्तु तेरा देखना व्यर्थ है। याद रख ! यदि तू सहस्र बार भी दृष्टि दौड़ाएगा, तो ) तेरी दृष्टि तुच्छ और धुंधली होकर तेरी ओर लौट आवेगी ( और तुझे आकाश की बनावट में कोई खोट तथा दोष न दिखाई देगा )॥

और ( उन सातों आकाशों में से उस ) समीपी आकाश को ( जो तेरी दृष्टि के सामने है ) हमही ने ( चांद तारों के ) दीपकों से सजाया और उन ( तारों ) को शैतानों के लिये ( जब वह आकाश पर चढ़ें और आकाशीय चर्चा लेनी चाहें, तो उन्हें ) मारने ( और आकाशों से भगा देने ) के लिये ( एक अग्नि की गदा ) नियत किया। और हमने ( क़यामत में ) उन ( शैतानों ) के लिये ( दोज़ख़ की ) भड़कती हुई अग्नि का अज़ाब ( अलग ) तय्यार कर रक्खा है। और जो लोग ( इन शैतानों के बहकाने में आकर ) अपने पालन कर्त्ता से फिर गये, उनके लिये ( भी क़यामत में ) दोज़ख़ का अज़ाब है और ( निस्सन्देह दोज़ख़ एक ) बुरा टिकाना है। जब दोज़ख़ में ( यह सब अवज्ञाकारी ) डाले जायंगे, तो उसके ( उबाल तथा ) उफान की आवाज़ सुनेंगे और ( सुनते ही व्याकुल हो जायँगे—क्योंकि उस समय ) दोज़ख़ ( बड़े ज़ोर से ) भड़क रही होगी। ( ऐसा प्रतीत होगा कि ) मानो वह उफान ( के कारण ) से अभी फट पड़ेगी। ( और ) जब जब दोज़ख़ में ( इन दुराचारियों का ) कोई समूह डाला जायगा, तो उनसे दोज़ख़ के द्वारपाल ( अर्थात नियुक्त फ़रिश्ते ) पूछेंगे कि ( तुम्हारे दोज़ख़ में आने का क्या कारण है ? ) क्या ( कभी ) तुम्हारे पास कोई ( खुदा के अज़ाब से ) डराने वाला ( पैग़म्बर ) नहीं आया ? ( जो तुम्हें यहां की बातों से सूचित करता )॥

( और उत्तर में उस समूह के ) लोग कहेंगे—नहीं, हमारे पास डराने वाला तो आया था, परन्तु हमने ( उसको ) झूठा बताया और हमने कहा अल्लाह ने ( तुम पर ) कुछ नहीं उतारा। ( हमारे विचार में तो ) तुम बस एक बहुत बड़ी ग़लती में ( पड़े ) हो ( जो अपने आपको अल्लाह का रसूल और इस पुस्तक को अल्लाह की पुस्तक समझते हो )। और कहेंगे—यदि हमने ( पैग़म्बर की बात को ) सुना होता वा ( उनके आज्ञा-पत्र को ) समझा होता, तो ( हम कदापि ) दोज़ख़ी लोगों में न होते। संक्षिप्त यह कि दोज़ख़ी ( उस समय ) अपने ( हर ) पाप का इक़रार करेंगे ( और दिल से इस बात के अभिलाषी होंगे कि किसी तरह दोज़ख़ के अज़ाब से छुटकारा पा जायँ ) सो दोज़ख़ियों (को छुटकारा कैसा, उन) पर (तो सर्वदा के लिये खुदा की) धिक्कार ( है। वह कभी अज़ाब से छुटकारा न पावेंगे )॥

लِأَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَاَسِرُّوْا
قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝
اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝
هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا
فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ
النُّشُوْرُ ۝ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ
بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ۝ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ
فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ
كَيْفَ نَذِيْرِ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ
فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا
الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ ۭ بَصِيْرٌ ۝ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ

सो दोज़खियों का काला मुंह ० जो लोग बे देखे अपने पर्वर्दिगार से डरते हैं, उनके लिये ( आख़िरत में ) बख़्शिश है और ( बख़्शिश के अलावा बड़े बड़े अज्र ) ० और ( लोगो! ) तुम अपनी बात चुपके से कहो या पुकार कर कहो, ख़ुदा तो ( तुम्हारे ) दिली-ख़यालात ( तक ) से वाक़िफ़ है ० भला ( हो सकता है कि ख़ुदा ) जो पैदा करे ( वही अपनी मख़्लूक़ात के हाल से ) ना वाक़िफ़ हो? हालाँकि वह ( बड़ा ) बारीक बीं ( और ) बा ख़बर है ० ( लोगो! ) वही ( ख़ुदा तो ) है, जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिये नर्म ( व हम्वार ) कर दिया है। तो उसके अतराफ़ व जवानिब में ( जिधर चाहो ) चलो फिरो और ( नीज़ ) ख़ुदा की ( दी हुई ) रोज़ी ( जो ज़मीन से पैदा होता है, मज़े से ) खावो ( पियो ) और ( आख़िरकार क़यामत के दिन दुबारा जी ) उठकर उसी की तरफ़ चलना है० ( ख़ुदा ) जो आस्मान में है, क्या तुम उस ( के ग़ज़ब ) से नहीं डरते कि ( कहीं ) ज़मीन ( को दलदल बनाकर उस) में तुमको धंसा दे और वह पड़ी झकोले मारा करे ० या ( ख़ुदा ) जो आस्मान में है, तुम उस (के ग़ज़ब) से नहीं डरते कि (कहीं) तुम पर पथराव बर्सादे। तो (ख़ैर! ज़रा सब्र करो) अन्क़रीब तुमको मालूम हो जायगा कि हमारा डराना ( तुम्हारे हक़ में) कैसा ( ज़बून ) हुआ ० और जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उन्होंने भी ( हमारे पैग़म्बरों को ) झुटलाया था, तो (ऐ पैग़म्बर! तुमने देखा कि) हमारी ना ख़ुशी ( उनके हक़ में ) कैसी ( तबाही का मूजिब ) हुई ( कि सब हलाक हो गये ) ० क्या इन लोगों ने परिन्दों पर नज़र नहीं की, जो इन ( के सरों ) पर उड़ते रहते हैं। वह कभी ( अपने पर ) फैला देते हैं और ( कभी ) सुकेड़ लेते हैं। ( दोनों हालतों में ख़ुदाए ) रह्मान ही उनको ( हवा पर ) थामे रहता है। कुछ शक नहीं कि वही हर चीज़ का निगरान (हाल) है ० (लोगो!) भला (ख़ुदाए) रह्मान के सिवा ऐसा कौन है—

( हां! ) अवश्य जो लोग ( दोज़ख के अज़ाब को ) देखे विना अपने पालनहारे से डरते ( और उसके रसूल पर ईमान लाते ) हैं ( वह निश्चित रूप से जन्नत के अधिकारी हैं। यदि भूल चूक से उनसे कोई अपराध भी हो जाय, तो ) उनके लिये क्षमा है। और ( उनकी नेकियों का ख़ुदा के यहां बहुत ) बड़ा फल ( तय्यार ) है। और ( लोगो! ) तुम अपनी बात छिपाकर कहो अथवा खुल्लम खुल्ला ( ख़ुदा से छिपी नहीं रह सकती )। वह (तो) तुम्हारे दिलों के भेदों ( तक ) को ख़ूब जानता है॥

भला ( यह सम्भव है कि तुम्हें ) जिसने उत्पन्न किया हो, वह ( तुम्हारी बातों को ) न जाने? ( बिल्कुल असम्भव है। वह तो तुम्हारी प्रत्येक बात से अभिज्ञ है ) और (निस्सन्देह) वही है (सबसे अधिक) सूक्ष्म-दर्शी ( और सबसे अधिक) ख़बर रखने वाला। उसीने तुम्हारे लिये भूमि को बिछौना बनाया, जिससे कि तुम उसके मार्गों में ( जिस जगह चाहो, चलो ) फिरो और (उसमें नाना प्रकार के अन्न उगाये, जिससे कि तुम ) उसकी ( दी हुई ) जीविका ( में ) से ( जो कुछ चाहो ) खाओ ( पीयो ) और ( उसकी शक्ति के चमत्कार देख कर इस बात का विश्वास करो कि जिस ख़ुदा की आज्ञा से बसन्त ऋतु में हरे भरे वृक्ष मुर्झा जाते और फिर हरे भरे हो जाते हैं, इसी तरह तुमको भी एक एक न दिन मरना और) उसी (ख़ुदा) की ओर जी उठना है। (अर्थात दुबारा ज़िन्दा होकर उसके समक्ष उपस्थित होना और अपने बुरे भले हिसाब देना है )॥

( काफ़िरो! ) क्या तुम उस ( ख़ुदा के कोप ) से जो आस्मान में ( विराजमान ) है ( इतने) निर्भय हो गये ( जो इस प्रकार कुफ़्र शिर्क में फंसे हुये हो। सो क्या तुम ) इस (बात) से ( भी भय नहीं खाते ) कि (कहीं वह) तुम्हें भूमि में (न) धंसा दे (इस प्रकार) कि पृथ्वी अचानक फट जाय (और तुम उसमें समा जाओ )। क्या तुम उस (सर्व शक्तिमान बलवान ) से जो आस्मान में ( विराजमान ) है ( इतने ) निडर हो गये ( जो इस तरह निसङ्कोच होकर कुफ़्र, इन्कार और दुराचार में फंसे हुये हो। सो क्या तुम ) इस ( बात ) से ( भी भय नहीं खाते ) कि ( कहीं ) वह तुम पर पत्थरों का मेंह ( न ) बर्षा दे ( ख़ैर! अभी तुम्हारी आँखों पर अज्ञानता का पर्दा पड़ा हुआ है, परन्तु ) शीघ्र ( वह समय आने वाला है कि तुम अज़ाब में पड़े होगे और ) जान लोगे (कि) हमारा डराना कैसा (शिक्षा प्रद ) था। और ( हे रसूल! ) उनसे पहिले जो लोग हो चुके हैं ( अर्थात काफ़िर लोग ) उन्होंने भी ( इन्हींकी तरह हमारे पैग़म्बरों को ) झुठलाया था। सो ( देख लो! ) हमारा अज़ाब (उनके हक़ में) कैसा (विनाशकारी सिद्ध) हुआ। ( हे रसूल) क्या यह अपने (सिरों के) ऊपर पक्षियों को (भी) उड़ते हुये नहीं देखते (कि वह कभी) पखनों को फैलाये हुये (आकाश में उड़ते फिरते हैं और कभी अपने) पंख समेट लेते हैं ( और फिर भी पृथ्वी पर नहीं गिरते। निस्सन्देह ) करुणा-निधान (ख़ुदा की शक्ति) के अतिरिक्त कोई इनको (भूमि पर गिरने से ) नहीं रोके हुये। निस्सन्देह ( हर बात उसके अधिकार में और ) हर वस्तु उसकी दृष्टि में है॥

جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ إِنِ الْكَافِرُونَ
إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ
أَمْسَكَ رِزْقَهُ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝ أَفَمَن
يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي
سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِي
أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ
وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِي
ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝
قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝
فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَقِيلَ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَدَّعُونَ ۝ قُلْ
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَن مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا

ع

जो तुम्हारा ( लाव ) लश्कर बनकर तुम्हारी मदद करे। ( बेशक ) काफ़िर तो बस निरे धोके ( ही धोके ) में हैं ० (और) अगर ख़ुदा अपना रिज़्क़ रोक ले, तो भला ऐसा कौन है, जो तुमको रोज़ी पहुंचा दे? मगर काफ़िर तो सर्कशी और (हक़ से) गुरेज़ करने पर अड़े बैठे हैं ० तो क्या जो शख़्स अपना मुंह औंधाये हुये चले, वह ज़ियादा रूबराह हो सकता है? या वह शख़्स जो सीधा ( तना हुआ ) राह-रास्त पर चला जा रहा है ० ( ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से ) कहो कि वह (ख़ुदा) ही तो है, जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिये ( सुनने को ) कान और ( देखने को ) आंखें और ( समझने को ) दिल बनाये—( लेकिन ) तुम लोग बहुत ही कम ( उसका ) शुक्र करते हो ० ( ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से ) कहो कि वह ( ख़ुदा ) ही तो है, जिसने तुमको ( रूए ) ज़मीन में ( हर तरफ़ ) फैला रक्खा है और ( क़यामत के दिन ) उसी के हुज़ूर में तुम ( सब ) जमा किये जाओगे ० और ( काफ़िर मुसल्मानों से ) कहते हैं कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो, तो यह वादए ( क़यामत ) कब ( पूरा ) होगा ० ( ऐ पैग़म्बर! इन लोगों को ) जवाब दो कि ( इसका ) इल्म तो ख़ुदा ही को है और मैं तो ( लोगों को ) साफ़ तौर पर ( अज़ाब-आख़िरत से ) डराने वाला हूं और बस ० फिर जब उस ( रोज़—क़यामत ) को देखेंगे कि पास के पास आ मौजूद हुआ, तो ( मारे रंज व हैबत के इन) काफ़िरों की शक्लें बिगड़ जाएंगी और ( इनसे ) कहा जायगा कि यही वह (अज़ाब) है, जिसका तुम तक़ाज़ा किया करते थे ० ( ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से ) कहो कि भला देखो तो ( सही! ) अगर अल्लाह मुझको और जो लोग मेरे साथ हैं-उनको हलाक कर मारे या हमारे हाल पर रहम फ़र्माये—

( काफ़िरो! तनिक इतना तो सोचो ) भला करुणा-निधान ( ख़ुदा ) के ( नियत किये हुये फ़रिश्तों के ) अतिरिक्त ( दुनिया में तुम्हारा ) वह कौन ( सा कुटुम्ब परिवार ) है, जो तुम्हारे लिये ( एक ऐसी ) सेना है, जो ( हर समय ) तुम्हारी रक्षा ( तथा सहायता ) करता ( रहता ) है? ( और भूमि पर गिरने और पानी में डूबने और अग्नि में जलने नहीं देता? कोई नहीं। हे रसूल! यह ) काफ़िर तो ( शैतान के ) धोखे ( तथा छल कपट ) ही में पड़े हैं ( जो ऐसी शक्ति वाले, ऐसी कृपा वाले ख़ुदा को छोड़कर मूर्ति पूजन करते हैं )॥

( मूर्ति पूजको! ) भला ( बताओ तो सही कि ) यदि ख़ुदा अपनी जीविका रोक ले ( और तुमको कुछ भी खाने को न दे) तो वह कौन है, जो तुम्हें जीविका दे? ( वास्तव में तो हे रसूल! भूमि आकाश में कोई भी ऐसा नहीं, जो किसी को जीविका दे सके )-परन्तु यह ( असत्य पूजक हैं कि व्यर्थ सत्य के मुक़ाबले में ) उद्दण्डता करने और ( सत्य से ) घृणा करने पर तत्पर हैं। भला जो कोई अपने मुंह के बल ( होकर अर्थात् ) औंधा चले, वह बहुत राह पाने वाला है वा वह जो सीधी राह पर चले ( यद्यपि बिल्कुल खुली बात है कि सीधे मार्ग पर चलने वाला लक्ष्य-स्थान पर पहुंच जायगा और औंधा होकर चलने वाला रेंगता फिरेगा और इधर उधर भटकेगा और मार्ग न पाएगा )॥

( अतः हे पैग़म्बर! उनको समझाओ और उनसे) कहो (कि अज्ञानो! अचेतना की नींद से जागो और सच्चे ख़ुदा को पहिचानो। याद रक्खो! तुम्हारा सच्चा पूज्य ) ख़ुदा वही है, जिसने पहिले पहल तुमको उत्पन्न किया। और तुम्हारे ( सुनने के लिये ) कान और ( देखने के लिये ) आंखें और ( समझने के लिये ) दिल बनाए। ( निस्सन्देह इन उपकारों का बदला तो यह है कि तुम हर समय उसी की कृतज्ञता प्रकाश करते रहो, किन्तु ) तुम ( इतने कृतघ्न हो कि ) बहुत कम ( उसकी ) कृतज्ञता ( प्रकाश ) करते हो (हे पैग़म्बर! उनसे ) कहो, कि ख़ुदा वही है, जिसने तुमको ( उत्पन्न करके चारों ओर ) पृथ्वी में फैला दिया ( जिससे कि ख़ुदा के चमत्कार देख करके तुम शिक्षा ग्रहण करो ) और ( ख़ुदा की उपासना में लगे रहो। निस्सन्देह मृत्यु के पश्चात् ) तुम उसी की ओर लौटकर एकत्रित होगे ( और अपने भले बुरे का हिसाब दोगे )। और ( यह जो क़यामत का इन्कार करने और ) कहते हैं यदि तुम सच्चे हो, तो ( बताओ ) तुम्हारा यह ( क़यामत का ) वादा कब पूरा होगा? (तो तुम इसके उत्तर में उनसे ) कहदो कि उसका ( सत्य ) ज्ञान तो बस अल्लाह ही को है ( परन्तु इतना प्रत्येक सत्य उपासक जानता है कि क़यामत अवश्य आएगी ) और मैं तो खुल्लम खुल्ला तुम्हें ( ख़ुदा के अज़ाब और क़यामत के भयंकर दिन से ) डराने वाला हूं और बस। ( हे रसूल! इस समय ) तो ( यह इतना बढ़ २ कर बोल रहे हैं, किन्तु ) जब देखेंगे कि वह ( क़यामत का दिन जिससे उनको डराया जाता है, बिल्कुल ) निकट आ गया, तो ( उस समय ) काफ़िरों के मुंह बिगड़ जायेंगे और ( उस समय उनसे ) कहा जायगा कि तुम जिस ( घड़ी के आने ) का बड़ी निर्भयता के साथ प्रश्न किया करते थे-यही ( तो ) वह है ( अब इतने व्याकुल तथा अधीर क्यों होते हो। हे पैग़म्बर! तुम उनसे ) कहो ( ज़रा ) मुझे बताओ तो यदि मुझको और मेरे साथियों को अल्लाह नष्ट करदे ( तो तुम्हारा इसमें क्या लाभ है? ) अथवा हम पर दया करदे—

فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ قُلْ هُوَ
الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُوْنَ
مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ
مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ۝

سورة القلم مكية وهى اثنان وخمسون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ
رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۝ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۝
وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۝
بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ
عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ فَلَا تُطِعِ
الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝ وَلَا
تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ ۝

ع

तहम कोई है, जो काफ़िरों को ( आख़िरत के ) अज़ाब-दर्दनाक से पनाह दे ( सके ) ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कह दो कि वही ( ख़ुदा ) रह्म करने वाला है। हम उसी पर ईमान लाये हैं और उसी पर हमारा भरोसा है—तो अन्क़रीब तुमको मालूम हो जायगा कि (हम दोनों फ़रीक़ों में ) कौन सरीह गुमराही में था ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि भला देखो तो (सही ! कि यह ) तुम्हारा पानी ( जो तुम पीते हो ) अगर (ज़मीन के) अन्दर उतर जाय, तो कौन तुम्हारे लिये पानी की सोतें ला बहायेगा ०

## सूरत—क़लम

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५२ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहरबान (है) ० नून ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क़लम की क़सम ! और लोगों के लिखने की ( क़सम ) ० कि तुम अपने पर्वर्दिगार के फ़ज़्ल से ( हरगिज़ ) दीवाने नहीं हो ( जैसा कि काफ़िर कहते हैं ) ० और बिला शुबहा ( तब्लीग़ रिसालत के सिले में ) तुमको ( ऐसा ) अज्र ( मिलने वाला ) है ( जिस का ) सिलसिला कभी टूटे ( ही ) गा नहीं ० और बेशक तुम्हारे अख़्लाक़ अलबत्ता बड़े ( आला दर्जे के ) हैं ० सो अन्क़रीब ( तुम भी ) देख लोगे और ( यह काफ़िर भी ) देख लेंगे ० कि तुममें किसको ख़ब्त है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार ही उन लोगों को ख़ूब जानता है, जो उसके रस्ते से भटके हुये हैं और वही उनको भी ख़ूब जानता है, जो राह रास्त पर हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! कहीं ) झुटलाने वालों के कहे में न आ जाना ० यह तो यही चाहते हैं कि तुम मुलायम पड़ो, तो यह भी मुलायम पड़ें ० और तुम किसी ( ऐसे नाबकार ) के कहे में ( भी ) न आ जाना जो बहुत क़समें खाता है (और) आबरू-बाख़्ता है ० ( लोगों पर ) आवाज़े कसा करता है ( इधर की उधर, उधर की इधर ) चुग़लियां लगाता फिरता है ०—

---

( तो तुम्हारी इसमें क्या हानि है ? ख़ूब याद रक्खो ! तुम्हारा लाभ केवल ईमान लाने पर निर्भर है। यदि तुम ईमान न लाए, तो बताओ ) फिर वह कौन है, जो ( तुम जैसे ) काफ़िरों को ( अल्लाह के ) दुख दायी अज़ाब से बचा ले ? ( कोई नहीं । तुम उनसे ) कहदो ! वही करुणा-निधान ( ख़ुदा ) है, हम उसी पर ईमान लाये हैं और उसी पर हमारा भरोसा है। तुम शीघ्र जान लोगे कि स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में कौन है ( तुम वा हम ) ॥

(हे पैग़म्बर !) तुम (उनसे) कहो कि (ज़रा) मुझे (भी तो) बताओ कि यदि (उसकी आज्ञा से कुओं आदि में से केवल) तुम्हारा पानी (ही) सूख जाय, तो कौन है,जो तुम्हारे पास निथरा हुआ (स्वच्छ) जल लाए ? (प्रगट है कि ख़ुदा के अतिरिक्त यह कोई नहीं कर सकता) ॥

## सूरत—क़लम

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ५२ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( हे मुहम्मद ! ) शपथ है हमको क़लम की ( जिसके द्वारा लौह-महफ़ूज़ में लोगों के भाग्य का हाल लिखा गया है ) और उन ( फ़रिश्तों) के लिखने की (जो लोगों के कर्म लिखते हैं) कि तुम अपने (जन्म दाता और) स्वामी ( ख़ुदा) की कृपा (दया) से दीवाने नहीं हो। और ( हमारे यहाँ ) तुम्हारे लिये ( तुम्हारी इस बड़ी सेवा का ऐसा ) फल ( तय्यार ) है, जो ( कभी ) व्यतीत न होगा। और निस्सन्देह तुम तो बहुत बड़े सुशील हो (अर्थात तुम बड़े गुणवान तथा सज्जन हो )। अतः शीघ्र ( ख़ुदा की कृपा दया को अपने ऊपर होते हुये ) तुम भी देख लोगे और ( अपने ऊपर ख़ुदा के क्रोध तथा कोप को उतरते हुये ) यह ( काफ़िर) भी देख लेंगे ( उस समय विदित हो जायगा ) कि तुममें कौन दीवाना है ( तुम अथवा यह काफ़िर )। निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता उन लोगों को भी अच्छी तरह जानता है, जो सीधी राह से भटके हुये हैं और वहो सीधी राह पर चलने वालों से भी भली भांति अभिज्ञ है। अतः तुम ( इन असत्य पूजकों और अल्लाह रसूल को ) झुठलाने वालों का ( किसी बात में भी ) कहा न मानना (अर्थात) यह ( इस बात के दिल से ) अभिलाषी हैं कि यदि तुम ( अपने कर्त्तव्य पालन अर्थात धर्म-प्रचार में कुछ ) ढील दो ( और इतने उत्साह के साथ एक ख़ुदा के गुण और मूर्ति-पूजन के अवगुण न वर्णन करो ) तो वह भी ढील दें ( और तुमको बुरा भला कहना और तुम्हारा अनादर करना छोड़ दें—तो तुम उनके डराने धमकाने में आकर धर्म-प्रचार में कुछ भी कमी न करना )। और ( विशेषतः ) तुम किसी ( झूठी ) शपथें खाने वाले ( और ऐसे ) अप्रतिष्ठित ( मनुष्य ) का, जो (लोगों पर व्यर्थ भांति भांति के) दोष लगाता ( और इधर उधर हर एक की ) चुग़लियां खाता फिरता हो—

مَنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ۝
أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا
قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ۝
إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا
لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ۝
فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۝
فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ۝ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ۝ أَنِ
اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ۝ فَانطَلَقُوا
وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ۝ أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم
مِّسْكِينٌ ۝ وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهَا
قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝ قَالَ
أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَ
رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ

يتلاومون

अच्छे कामों से ( लोगों को ) रोकता रहता है। हद्द ( बन्दगी ) से बढ़ गया है ० बद है, अक्खड़ है ( और ) इन ( उयूब ) के अलावा बद अस्ल भी है ० जब हमारी आयतें उसको पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो इस ( बिरते ) पर कि माल और ( बहुत से ) बेटे रखता है, बोल उठता है कि यह अगले लोगों के ढकोसले हैं ० ( ज़रा सब्र करे ) हम अन्क़रीब उस के नाकड़े पर दाग़ लगायेंगे ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जिस तरह हमने ( एक ) बाग़ वालों को आज़माया था, इसी तरह हमने इन ( काफ़िरों ) को ( भी ) आज़माया है कि उन बाग़ वालों ने क़स्में खा खाकर कहा कि सुबह होते ही हम उसके फल ज़रूर तोड़ लेंगे ० और (उनको ऐसा यक़ीन था कि ) इन्शाअल्लाह भी न कहा ० तो यह सोते के सोते ही रहे कि तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से एक बला ( नागहानी नाज़िल हुई और इस सिरे से उस सिरे तक ) बाग़ पर फिर गई ० और सुबह होते होते वह ऐसा ( ख़ाली ) रह गया; जैसे कोई सारे फल तोड़ के ले गया हो ० और ( इधर ) उन लोगों ने सुबह होते होते एक दूसरे को आवाज़ दी ० कि अगर तुमको फल तोड़ने हैं, तो सवेरे से अपने बाग़ में जा पहुंचो ० चुनांचे ( वह सब लोग ) रवाना हुये और आपस में चुपके चुपके कहते जाते थे ० कि ( देखना ! ) आज कोई मोहताज तुम तक बाग़ के अन्दर न आने पाये ० ( वर्ना उसको कुछ देना पड़ेगा। ग़रज़ अपने नज़्दीक ) यह समझ कर कि बस अब जाते ही फल तोड़ लेंगे, बड़े एहतिमाम के साथ बहुत सवेरे जा पहुंचे ० फिर जब बाग़ को देखा, तो ( ऐसा उजड़ा पड़ा था कि पहिचान न सके और ) लगे कहने कि हो न हो ! हम ( रस्ता ) भूल गये ० (फिर सोचे, तो बोले–नहीं ! रस्ता नहीं भूले ) बल्कि हमारी तक़्दीर फूट गई ० उनमें से जो बेहतर ( आदमी ) था, लगा कहने—क्या मैं तुम से नहीं कहा करता था कि ख़ुदा(का शुक्र और उस) की तस्बीह (व तक़्दीस) क्यों नहीं करते ० ( सो अब वह ) बोल उठे कि हमारा पर्वर्दिगार पाक (ज़ात) है। बेशक हमही कुसूरवार थे ० (और) अब लगे एक के मुंह पर एक—

( और लोगों को ) भलाई से रोकता ( और बुराई को कहता) हो (और कुफ़्र तथा उद्दण्डता में) सीमा से बढ़ जाने वाला (और क्षमा के अयोग्य) पापों का करने वाला ( और बड़ा क्रोधी और ) उद्दण्ड हो ( और ) इसके अतिरिक्त वर्णसंकर भी हो। (कभी) इस कारण से कहा न मानना कि ( वह ) धनवान और सन्तान वाला हो। जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहता है कि (यह तो बस) अगले लोगों की (पुरानी धुरानी) कहानियां हैं। ( यह दूसरों को तो नक्कू बताता है, और आप बड़ा नाक वाला बनता है, तो ) हम शीघ्र उसकी नाक ही पर (घाव का) चिन्ह लगा देंगे॥

निस्सन्देह हमने उन ( काफ़िरों को धन सम्पत्ति देकर उनकी बुद्धि तथा ज्ञान) की परीक्षा ली है, जैसा कि ( इससे बहुत पहिले सनआ के ) बाग़ वालों को परीक्षा ली थी, जबकि उन्होंने शपथ खाई कि ( हम भिक्षुकों के पहुंचने से पहिले ही बाग़ में पहुंचेंगे और ) सुबह होते ही उसका ( सब ) मेवा तोड़ लेंगे और ( उन्हें अपने इरादे पर इतना भरोसा था कि उन्होंने ) इन्शाअल्लाह ( भी ) न कहा। ( और अपनी बल शक्ति तथा जथे पर भरोसा करके ख़ुदा की शक्ति को भूल गये )। फिर ( परिणाम यह हुआ कि ) तुम्हारे पालनहारे की ओर से ( रात ही रात में एक कठिन ) आपत्ति ( अवतीर्ण हुई और समस्त ) बाग़ में फिर गई ( और बाग़ के समस्त फलों को नष्ट कर गई ) और वह ( अचेत पड़े ) सोते रहे॥

अतः सुबह तक ( वह बाग़ ) ऐसा हो गया, जैसे ( उसका एक २ फल) टूट चुका हो। वह लोग सुबह होते परस्पर कहने लगे कि यदि तुमको फल तोड़ने ( और भिखारियों से सुरक्षित रखने ) हैं, तो अपने बाग़ में सवेरे (सवेरे चले) चलो। सो वह (बाग़ को ओर) चले और परस्पर चुपके २ कहते थे—कि ( इसका ख़्याल रखना कि ) आज एक भिक्षुक ( भी ) तुम्हारे पास इस ( बाग़ ) के भीतर न आने पावे। और वह ( सबके सब घर से सुबह ) सवेरे ( अपने आपको ) कंजूसी पर शक्तिमान समझ कर ( बाग़ की ओर ) चले। तो जब ( बाग़ में पहुंचे और ) उसको ( उजड़ा हुआ ) देखा ( तो ) कहने लगे ( कदाचित ) हम मार्ग भूल गये हैं ( फिर इधर उधर फिर कर और उसकी चारों सीमाओं को देख कर बोले–नहीं, यह बाग़ तो हमारा ही है। हम मार्ग नहीं भूले )-वरन् हम ( अपने बाग़ से ) हाथ धो बैठे। ( आश्चर्य है कि जिस बाग़ को कल हम फलों से लदा हुआ छोड़ गये थे, वह आज इस प्रकार उजाड़ सुन्सान पड़ा है । इस पर बाग़ के मालिक के ) मंझले ( बेटे ) ने कहा—क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था, कि तुम क्यों अल्लाह को पवित्रता नहीं वर्णन करते (यह सुनकर सबके सब ख़ुदा की पवित्रता वर्णन करने लगे और ) बोले हमारा पालन कर्त्ता ( प्रत्येक दोष से) पवित्र है। निस्सन्देह हम ही अत्याचारी थे । फिर ( सबके सब ) एक दूसरे की ओर मुंह करके ( अपने सम्बोधित पर ) दोष लगाने लगे—

मलामत करने ० ( आख़िरकार सब ) बोल उठे कि हाय हमारी कमबख़्ती ! बेशक हमही हद्द ( उबूदियत ) से बढ़ गये थे ० अजब नहीं हमारा पर्वर्दिगार इस ( बाग़ ) के बदले हमको इससे बेहतर ( बाग़ ) इनायत फ़र्मायें ( अब ) हम अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ रुजू हुये ० ( ऐ पैग़म्बर ! जो नाशुक्री करते हैं, उन पर दुनिया में ) ऐसा ही अज़ाब ( नाज़िल हुआ करता ) है और आख़िरत का अज़ाब तो ( इससे ) कहीं बढ़कर है । ऐ काश ! ( इस ज़माने के काफ़िर ) समझते होते ० बेशक परहेज़गारों के लिये उनके पर्वर्दिगार के हाँ ( बहिश्त के मज़े मज़े ) के बाग़ हैं ० क्या हम ( अपने ) फ़र्मांबर्दार बन्दों को गुनहगारों के बराबर कर देंगे ० तुम लोगों को क्या ( हो गया ) है—कैसे ( बे तुके ) हुक्म लगाया करते हो ० क्या तुम्हारे पास कोई ( आस्मानी ) किताब है ? और उसमें पढ़ते हो ० कि जो तुम पसन्द करोगे, वही तुमको आख़िरत में मिलेगा ० या तुमने हमसे क़स्में ले रक्खी हैं, जो रोज़-क़यामत तक चली जाएँगी कि तुम जिस चीज़ की फ़र्माइश करोगे, वही तुम्हारे लिये ( आख़िरत में ) मौजूद कर दी जाएगी ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) इन लोगों से पूछो कि इन में से कौन इसका ज़िम्मा लेता है ० या इन्होंने ( ख़ुदा के ) शरीक ठहरा रक्खे हैं ( और वह ज़िम्मेदार बनते हैं ) । पस अगर (अपने दावे में) सच्चे हैं, तो अपने ( उन ) शरीकों को ला हाज़िर करें ० जिस दिन पर्दा उठा दिया जायगा और लोग सज्दे के लिये बुलाये जायँगे, तो ( सज्दा ) न कर सकेंगे ० ( शर्मिन्दगी के मारे ) इनकी आँखें झुकी होंगी ( और ) ज़िल्लत उन ( के चेहरों ) पर छा रही होगी और ( दुनिया में ) उनको सज्दे की तरफ़ बुलाया जाता था—

يتلاومون ● قالوا يويلنا انا كنا طغين ●
عسى ربنا ان يبدلنا خيرا منها انا الى ربنا
رغبون ● كذلك العذاب ولعذاب الاخرة
اكبر لو كانوا يعلمون ● ان للمتقين عند
ربهم جنت النعيم ● افنجعل المسلمين كالمجرمين
ما لكم كيف تحكمون ● ام لكم كتب فيه
تدرسون ● ان لكم فيه لما تخيرون ● ام
لكم ايمان علينا بالغة الى يوم القيمة ان
لكم لما تحكمون ● سلهم ايهم بذلك زعيم ●
ام لهم شركاء فلياتوا بشركائهم ان كانوا
صدقين ● يوم يكشف عن ساق ويدعون
الى السجود فلا يستطيعون ● خاشعة ابصارهم
ترهقهم ذلة وقد كانوا يدعون الى السجود

( फिर ) कहने लगे—हा शोक ! हम ( सब ) ही ( अवज्ञाकारी तथा ) उद्दण्ड ( हो गये ) थे । (अतः हम सब को ही दंड मिला कि हमारा लदा फंदा बाग़ नष्ट भ्रष्ट हो गया—परन्तु हम अपने पालनहारे के अनुग्रह से निराश नहीं ) सम्भव है कि हमारा पालन कर्त्ता हमें इससे भी अच्छा बदला दे दे ( और उस बाग़ से अच्छा बाग़ प्रदान करदे ) । निस्सन्देह हम ( सच्चे दिल से तौबा करते हैं और सचाई के साथ ) अपने पालनहारे की ओर चित्त लगाते हैं । ( निस्सन्देह अवज्ञा-कारियों और उद्दण्डता करने वालों को दुनिया में ) इसी प्रकार अज़ाब ( दिया जाता ) है और ( उनके लिये ) अन्त का अज़ाब तो ( इससे ) कहीं बढ़ चढ़ कर है । यदि ( दुष्ट काफ़िर इस बात को ) समझें ( और इस घटना को सुनकर शिक्षा ग्रहण करें ) ॥

( हां ! ) निस्सन्देह ( संयमी ) परहेज़गारों के लिये उनके पालनहारे के यहां ( भांति २ की ) नेअमतों वाली जन्नतें ( तय्यार ) हैं ( इन मुश्रिकों को उनकी हवा भी नहीं लगेगी । हे रसूल ! क्या मुश्रिकों को इसका विश्वास नहीं आता, तो ) क्या हम ईमान वालों को काफ़िरों के बराबर कर देंगे ? ( कदापि नहीं । यह अन्याय हमसे नहीं हो सकता । मुश्रिको ! ) तुमको क्या हो गया ! तुम किस तरह यह ( बुद्धि विरुद्ध ) न्याय करते हो । क्या तुम्हारे लिये ( अल्लाह की ओर से ) कोई ( मुख्य ) पुस्तक ( अवतीर्ण हुई ) है, जिसमें तुम ( इस प्रकार की बातें ) पढ़ते हो कि जो तुम चाहोगे, वही तुम्हारे लिये ( परलोक में तय्यार ) होगा ? वा तुमने हमसे ( इस बात के विषय में ) क़यामत तक शेष रहने वाली पक्की शपथें ली हैं कि ( परलोक के विषय में ) जो ( भी ) तुम कहोगे, वही तुम्हारे लिये होगा ? ( अर्थात हर तरह तुम्हारी मनमानी होगी ? कदापि नहीं । यह तुम्हारी भूल है ) ॥

( हे पैग़म्बर ! ज़रा ) उनसे पूछो कि उनमें से ( कौन ) कौन ( ऐसा योद्धा है, जो ) इस ( बात ) को अपने सिर लेता है ( कि क़यामत में यह पदों की दृष्टि से ईमान वालों के बराबर, बरन् उनसे भी बढ़े चढ़े होंगे ?) क्या उनके (बनाए हुये) कुछ (ख़ुदा के) साझी हैं(जो क़यामत के दिन इस बात के ज़िम्मेवार होंगे ?) यदि यह सच्चे हैं, तो इन्हें चाहिये कि यह अपने (उन) साझियों को (हमारे समक्ष) ले आवें ( तनिक हम भी उनके बल तथा शक्ति की परिक्षा करें । निस्सन्देह इन्हें अपनी अज्ञानता का हाल उस दिन अच्छी तरह ज्ञात हो जायगा) जिस दिन ( अर्श की ) पिंडली से पर्दा उठा दिया जावेगा ( और ख़ुदा की ज्योति स्पष्ट प्रगट होगी ) और यह ( काफ़िर ) सज्दा करने के लिये बुलाए जाएँगे, तो यह ( आएँगे, किन्तु दुखों के कारण इनकी कमरें तख़्ता हो रही होंगी और यह झुक कर सज्दा भी ) न कर सकेंगे ( और लज्जा के मारे ) उनकी आंखें झुकी जाती होंगी । और धिक्कार उन ( की सूरतों ) पर बरस रही होगी । और ( यह सब परिणाम उसका होगा कि ) पहिले उनको ( दुनिया में ) सज्दा करने के लिये बुलाया जाता था, जब वह भले चंगे भी थे—( किन्तु सज्दा करने से भागते फिरते थे ) ॥

وَهُمْ يَسْلَمُونَ • فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ بِهَٰذَا الْحَدِيثِ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ •
وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ • أَمْ تَسْأَلُهُمْ
أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ مُثْقَلُونَ • أَمْ عِنْدَ
هُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ • فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ
وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ
وَهُوَ مَكْظُومٌ • لَوْلَا أَنْ تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ
لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ • فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ
مِنَ الصَّالِحِينَ • وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ
إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ • وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ •

سورة الحاقة مكية [illegible]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

और उस वक़्त यह लोग अच्छे-बिच्छे भी थे-( मगर शरारत से मअ्ज़ा नहीं करते थे ) ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमको और उन लोगों को जो ( हमारे ) इस कलाम को झुठलाते हैं-( अपने अपने ) हाल ( पर ) रहने दो ( हम इनसे भुगत लेंगे ) कि हम ऐसी तरह पर कि इनको ख़बर भी न हो, आहिस्ता आहिस्ता इनको ( जहन्नम की तरफ़ ) घसीटते ० और उनको ढील देते चले जा रहे हैं। बेशक हमारा दाव ( बड़ा ) पक्का दाव है ( कि उसका तोड़ ही नहीं हो सकता ) ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) क्या तुम इनसे ( तब्लीग़-रिसालत पर ) कुछ मज़दूरी मांगते हो ? कि यह ( उस ) चट्टी ( के बोझ ) से दबे जाते हैं ० या इनके पास ग़ैब ( की ख़बरें आती ) हैं ? और यह ( उनको ) लिख लिया करते हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) अपने पर्वर्दिगार के हुक्म के इन्तिज़ार में सब्र किये ( बैठे ) रहो और ज़न्नून ( यानी यूनुस ) की तरह ( थुड़-दिले ) न बनो कि उन्होंने तङ्ग दिल होकर ( ख़ुदा को ) पुकारा ० अगर उनके पर्वर्दिगार का फ़ज़्ल उनकी दस्तगीरी न करता, तो बुरे हालों चटियल मैदान में फेंके पड़े रहते ० लेकिन उनके पर्वर्दिगार ने उनको नवाज़ा और उनको (अपने) नेक बन्दों में (फिर शामिल) किया ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) काफ़िर जब .क़ुर्आन सुनते हैं, तो ऐसा मालूम होता है कि ( तुमको ) घूर-घूर कर ( ख़ुदा के रस्ते से ) फिसला देंगे ० और कहते हैं कि यह ( शख़्स ) तो ( एक ) दीवाना है ० हालाँकि यह ( क़ुर्आन जो तुम इनको सुनाते हो ) दुनिया—जहान के ( लोगों के ) लिये नसीहत है और बस ०

## सूरत—हाक़्क़ह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५२ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ०

---

अतः ( हे पैग़म्बर ! तुम चिन्ता न करो ) हमें और उसे जो ( तुमको ) झुठलाता है ( अपनी २ दशा पर ) छोड़ दो ( और देखो कि क्या होता है )। हम शीघ्र इस तरह कि उन्हें पता भी न चले धीरे धीरे ( विनाश की ओर ) उन्हें ले जायंगे। और ( किसी मस्लहत से तनिक ) उनको ढील दे रहे हैं। निस्सन्देह हमारा दांव ( बहुत ) पक्का है ( यदि उन्होंने अपनी दशा को ठीक न किया, तो अन्त में उन्हें हम दोज़ख़ का ईंधन बना देंगे। और हे पैग़म्बर ! ) क्या तुम ( अपने कर्त्तव्य-पालन अर्थात धर्म-प्रचार पर ) उनसे कुछ मंजूरी मांगते हो—कि वह ( उसको एक दंड समझते हैं और उस ) दंड के बोझ से दबे जाते हैं ? अथवा उनको अदृष्ट ( का ज्ञान ) है ( जिसके कारण से यह अपनी बातों को सच्चा समझते हैं वा उनके पास आकाश से कुछ ख़बरें आती हैं ) कि ( यह ) उनको लिख लेते हैं ( और उनसे प्रमाण देते हैं कि क़यामत में हमारी दशा मुसलमानों से बहुत अच्छी होगी ) ॥

( हे पैग़म्बर ! उनको तो समस्त बातें प्रमाण रहित तथा बिल्कुल व्यर्थ हैं। न उनको अदृष्ट—ज्ञान है, न आकाश से उनके पास कुछ ख़बरें आती हैं )। अतः तुम अपने पालन कर्त्ता की आज्ञा से ( उनकी बातों पर ) सन्तोष करो और मछली ( के पेट में जाने ) वाले ( यूनुस पैग़म्बर ) की तरह ( अधीर तथा असन्तोषी ) न हो जाओ कि जब उन्होंने ( आपत्तिकाल में हमको ) पुकारा, तो वह ( रंज और ) शोक में भरे हुये थे। यदि तुम्हारे पालनहारे की कृपा उनको न संभालती, तो वह बुरी तरह चटियल मैदान में फेंक दिये जाते। सो उनके पालनहारे ने उन ( की पुकार ) को ( सुन लिया ) और ( उन्हें अपना मुख्य भक्त और ) उच्च पद वाला कर लिया और उन्हें नेक लोगों में ( सम्मिलित ) कर दिया ॥

( अतः हे पैग़म्बर ! तुम इस घटना से जिसकी ओर हमने संकेत किया, हमारी कृपा का अनुमान करो ) और ( हर बात में हमारी आज्ञानुसार चलो। देखो ! इन ) काफ़िरों ( से सचेत रहना। यह तुम्हारे प्राण-घातक शत्रु हैं )। जब क़ुर्आन सुनते हैं, तो ( ऐसा प्रतीत होता है कि ) मानो यह तुमको अपनी दृष्टियों से ( घूर २ कर ) गिरा देंगे और ( यही ) वह ( दुराचारी हैं, जो ) कहते हैं कि यह ( मुहम्मद ) तो दीवाने हैं ( और यह क़ुर्आन साधारण क़िस्सा कहानियों की एक पुस्तक है )-यद्यपि ( तुम हमारे रसूल हो और इन्हें बुद्धि ज्ञान की बातें बताते और हमारे आदेश सुनाते हो और ) यह ( क़ुर्आन ) सर्व जगत के निवासियों के लिये निरी शिक्षा ही ( शिक्षा ) है ॥

## सूरत—हाक़्क़ह

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ५२ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

الْحَاقَّةُ ۝ مَا الْحَاقَّةُ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝
كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا
بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ
سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ
فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝ فَهَلْ
تَرَىٰ لَهُم مِّن بَاقِيَةٍ ۝ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَن قَبْلَهُ
وَالْمُؤْتَفِكَاتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُولَ
رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ۝ إِنَّا لَمَّا
طَغَى الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝ لِنَجْعَلَهَا
لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ۝ فَإِذَا
نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝ وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ
وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝ فَيَوْمَئِذٍ
وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ

शुदनी ० ( और ) शुदनी है क्या चीज़ ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि शुदनी है क्या चीज़ ? ( वह एक हादसा है, जो सब को खड़-खड़ा डालेगा यानो क़यामत ) ० समूद और आद ( दोनों ) ने ( उस ) खड़-खड़ा डालने वाले ( हादसे ) को झुटलाया ० सो समूद तो ( एक बड़े ज़ोर की ) कड़क ( के सदमे ) से हलाक कर दिये गये ० और रहे आद-सो वह ( भी ) बड़े ज़न्नाटे की सख्त आंधी से हलाक कर दिये गये ० कि बराबर सात रात और आठ दिन वह ( हवा ) खुदा ने उन पर चलाये रक्खी—तो ( ऐ मुख़ातब ! ) तू ( उन ) लोगों को उस ( आँधी ) में इस तरह ढये पड़े देखता, जैसे खोखली खजूरों के बोते ० फिर अब तुझको उनमें से कोई ( मुतनफ़्फ़िस भी ) बचा हुआ दिखाई देता है ० और फ़िर्औन और जो उम्मतें उससे पहिले हो गुज़रीं और उल्टी हुई बस्तियों के रहने वाले ( यानी क़ौम लूत-यह सब लोग बड़े बड़े ) क़ुसूरों के मुर्तकिब हुये ० तो ( उनको तरफ़ रसूल भेजे गये और ) उन्होंने अपने पर्वर्दिगार के रसूल की ( जो उनकी तरफ़ भेजा गया था ) नाफ़र्मानी की, तो उसने भी इनको बड़ा सख्त पकड़ा ० ( लोगो ! नूह के वक़्त में ) जब पानी का तूफ़ान आया, तो हमहो ने तुमको ( यानी तुम्हारे बुज़ुर्गों को ) किश्ती में सवार कर लिया था ० ताकि इस ( वाक़ए ) को तुम्हारे लिये एक यादगार बना दें और जिन ( के ) कानों को खुदा ने याद रखने को सलाहियत दो है, वह इसको याद रक्खें ० फिर ( ऐ पैग़म्बर ! ) जब सूर में पहिली एक फूंक मार दी जायगी ० और ज़मोन और पहाड़ दोनों को उठाकर ( और टकरा कर ) एक ही बार उनको रेज़ा—रेज़ा कर दिया जायगा ० तो ( क़यामत जो चार व नाचार ) होने वाली ( है ) उस दिन हो जायगी ० और आस्मान फट जायगा और वह उस दिन—

---

( हे मुहम्मद ! ) सत्य होने वाली ( वह ) क्या है-सत्य होने वाली। और तुम्हें किसने बताया ( होगा कि ) वह है क्या सत्य होने वाली ? ( आओ ! हम तुम्हें बताएं-वह क़यामत है, जो एक न एक दिन अवश्य होने वाली और दिलों को कंपा देने वाली है। आज जिस प्रकार तुम्हारी जाति के मुश्रिक उसको झुठला रहे हैं, उसी प्रकार उस ) कंपा देने वाली ( और निश्चित रूप से होने वाली ) वस्तु को ( इनसे पहिले ) समूद और आद ( इत्यादि की जाति ) ने झुठलाया था। सो समूद ( की जाति के लोग एक भयानक ) कड़क से नष्ट किये गये। और रहे आद ( जाति के लोग ) सो वह भी एक बड़ी आंधी से ( बुरी तरह ) नष्ट कर दिये गये, जिसको खुदा ने लगातार सात रात और आठ दिन तक उन पर लगा दिया था ( हे सम्बोधित ! यदि तू वहां उपस्थित होता, तो ) तू उन लोगों को ( बड़े अनादर के साथ ) पछड़ा हुआ देखता ( और लंबे होने के कारण तुझको वह पछड़े हुये ऐसे दीख पड़ते कि ) मानो वह खजूर के ( वृक्षों के ) खोखले तने हैं ( जो निकम्मे होकर भूमि पर गिर पड़े हैं। यदि तुझको हे सम्बोधित ! उनके इस प्रकार नष्ट होने का विश्वास नहीं होता ) तो क्या तुझको उनमें से कोई ( बच्चा वा बड़ा बूढ़ा ) बाक़ी दिखाई देता है ? ( कोई नहीं ) ॥

और (एक समूद तथा आद की जाति क्या) फ़िर्औन ने और उससे पहिले जो ( नूह की जाति के ) लोग हुये हैं, उन्होंने और उलटी हुई बस्तियों (के लोगों) ने बड़ी बड़ी ग़लतियां कीं-अर्थात उन सबने भी (आद और समूद को जाति की तरह क़यामत को झुठलाया और) अपने पालनहारे के रसूल का कहा न माना। अतः ( संसार के ) पालन कर्त्ता ने उन्हें भी बहुत सख़्ती से ( अपने अज़ाब में ) पकड़ लिया। ( और हे रसूल ! वह घटना तो तुमको याद ही होगी ) जबकि ( नूह की जाति पर ) पानी की बाढ़ आई थी ( और ) फिर हमने तुमको ( अर्थात तुम्हारे पूर्वजों को उनको नेकी और ईमानदारी के कारण ) नौका में उठा लिया ( जिससे वह बिलकुल सुरक्षित रहे और शेष सब लोग डूब कर मर गये ) जिससे कि उस ( घटना ) को तुम्हारे लिये एक स्मारक बना दें। और ( जब तुम दुनिया में भेजे जाओ, तो तुमको अपनी यह पुरानी कृपा जतायें और ) याद रखने ( की योग्यता ) रखने वाले कान उसको याद रक्खें ( और तुम्हारी उम्मत के लोग तुम्हारे पद को जानें पहिचानें ) ॥

(हे मक्का के काफ़िरो ! उस समय को याद करो) जब सूर अर्थात नरसिंगा फूंका जायगा और पृथ्वी और पर्वत (अपने २ स्थान से) उठा दिये जायंगे (और) फिर (दोनों) एक ही बार में (ऐसे) चूर २ हो जायेंगे ( जैसे धुनी हुई रुई )। अतः उस दिन ( वह प्रगट) होने वाली ( अर्थात क़यामत प्रगट ) हो जायगी और आकाश फट जायगा और वह उस दिन ( बिल्कुल ) बोदा ( और निकम्मा ) हो जायगा ॥

وَاهِيَةٌ ۝ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ وَيَحْمِلُ عَرْشَ
رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ؕ ۝ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ
لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ
كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ
اِنِّىْ ظَنَنْتُ اَنِّىْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝ فَهُوَ فِىْ
عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ قُطُوْفُهَا
دَانِيَةٌ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ
فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ
بِشِمَالِهٖ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۝ وَلَمْ
اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۝ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝ مَآ
اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۝ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ۝ خُذُوْهُ
فَغُلُّوْهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۝ ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ
ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۝ اِنَّهٗ كَانَ

बहुत ही बोदा ( फुस्फुसा ) होगा ० और उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे और उस दिन तुम्हारे पर्वर्दिगार के तख़्त को आठ (फ़रिश्ते) अपने ऊपर उठाये होंगे ० ( लोगो ! ) उस दिन तुम ( ख़ुदा के रूबरू ) पेश किये जाओगे ( और ) तुम्हारा कोई राज़ ( ख़ुदा से ) मख़्फ़ी नहीं रहेगा ० तो जिसको उसका नामए ( आमाल ) उसके दाहिने हाथ में दिया जायगा, तो वह ( ख़ुशी-ख़ुशी लोगों से ) कहेगा-लो जी ! ( यह ) मेरा नामए ( आमाल तो ) पढ़ो ० मुझको तो ( दुनिया की ज़िन्दगी में ) यक़ीन था कि ( एक दिन ) मेरा हिसाब ( यानी नामए-आमाल ) मुझको मिलेगा ( सो मिला ) ० तो वह (शख़्स बड़े) ख़ातिर-ख़्वाह ऐश में होगा ० ( यानी ) बहिश्त-बरीं में ० जिस ( के बाग़ों ) के फल ( ऐसे ) झुके होंगे ( कि चाहें तो अपनी जगह बैठे बैठे तोड़ लें ) ० ( और इनको इजाज़त होगी ) कि अय्याम-गुज़श्ता ( यानी दुनिया ) में जो तुमने ( अमल किये और उनको पहिले से ज़ाद—आख़िरत बनाकर ) भेजा था, उनके बदले में खाओ पिओ ( और तुम्हारे ) नेग लगे ० और जिसका नामए ( आमाल ) उसके बायें हाथ में दिया जायगा, वह कहेगा ऐ काश ! मुझको मेरा नामए ( आमाल ) न मिला होता ० और मुझको अपने ( इस ) हिसाब की ख़बर ही न हुई होती कि क्या है ( और क्या नहीं ) ० ऐ काश ! मरने से ( मेरी हस्ती का ) ख़ातिमा हो गया होता ० मेरा माल मेरे ( कुछ भी ) काम न आया ० मुझसे मेरी बादशाहत लुट गई ० ( फिर हम उसकी निस्बत हुक्म देंगे कि ) इसको पकड़ो और इसके गले में तौक़ डालो ० फिर ( कशां-कशां लेजाकर ) इसको जहन्नम में ढकेल दो ० फिर ज़न्जीर से जिसकी नाप सत्तर गज़ होगी, इसको ख़ूब जकड़ दो ० (क्योंकि) यह—

---

और फ़रिश्ते उसके किनारों पर ( आ खड़े ) होंगे। और तुम्हारे पालन कर्त्ता के अर्श को आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठा लेंगे। उस दिन तुम ( सब अपने पालनहारे के ) सामने लाए जाओगे। और तुम्हारा कोई कर्म भी (उससे) छिपा हुआ न रहेगा। (और तुममें से हर एक को उसका कर्म-पत्र दिया जावेगा ) तो जिसको ( उस दिन ) उसका कर्म-पत्र ( उसके ) दाहिने हाथ में मिला ( उसकी ख़ुशी की कुछ न पूछो ) वह ( हर्षित तथा प्रफुल्लित चारों ओर फिरेगा। और एक एक से ) कहेगा—लेना ! (ज़रा ) मेरा कर्म-पत्र ( तो ) पढ़ना ( देखो ! मैंने दुनिया में कैसे अच्छे २ काम किये हैं। निस्सन्देह ) मुझे ( दुनिया में ) इस बात का ( बड़ा ) ख़्याल था कि मेरा हिसाब ( अर्थात कर्म-पत्र ) मुझको ( क़यामत में ) मिलेगा ( अर्थात मुझे हिसाब किताब देना होगा। सो ख़ुदा को लाख बार धन्यवाद ! कि आज मेरा श्रम ठिकाने लगा )॥

अतः ऐसा मनुष्य ( तो ) आनन्द के जीवन में होगा ( और ) ऊँचे ( ऊँचे वृक्षों वाले ) बाग़ में, जिसके मेवे ( भूमि पर ) झुके हुये होंगे ( और सुगमता पूर्वक उनको तोड़ा जा सकेगा—वह वहां निवास करेगा ) और ( उनको अधिकार दिया जायगा कि उन मेवों में से जो कुछ दिल चाहे ) इच्छा से खाओ पियो । जो कर्म तुमने भूतकाल ( के जीवन ) में किये थे—यह उसका बदला है और जिसको उसका कर्म-पत्र ( उसके ) बाएं हाथ में मिला ( तो ) वह ( पश्चाताप के साथ ) कहेगा ( हा शोक !! ) क्या अच्छा होता, जो मुझको मेरा कर्म-पत्र न मिलता और मुझको ख़बर न होती कि मेरा हिसाब ( किताब ) क्या है। क्या अच्छा होता ! कि वही मौत (जिसने पहिले मुझे मारा था, मेरे जीवन को सर्वदा के लिये ) समाप्त कर जाती ( और मुझे यह दिन न देखना पड़ता )॥

( हा शोक ! आज के दिन ) मेरा माल भी मेरे कुछ काम न आया ! मेरा राज्य भी मुझसे छिन गया !! (इतने में आवाज़ आएगी कि ) उसको पकड़ लो और ( उसकी गर्दन में ) तौक़ डालो। फिर उसको आग के ढेर में फेंको, फिर एक ( ऐसी ) ज़ंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ हो, उसको जकड़ दो-क्योंकि यह ( दुनिया में )—

लا يؤمن بالله العظيم ۝ ولا يحض على طعام
المسكين ۝ فليس له اليوم ههنا حميم ۝ ولا
طعام الا من غسلين ۝ لا ياكله الا
الخاطئون ۝ فلا اقسم بما تبصرون ۝ وما لا
تبصرون ۝ انه لقول رسول كريم ۝ وما هو بقول
شاعر قليلا ما تؤمنون ۝ ولا بقول كاهن
قليلا ما تذكرون ۝ تنزيل من رب
العلمين ۝ ولو تقول علينا بعض الاقاويل
لاخذنا منه باليمين ۝ ثم لقطعنا منه
الوتين ۝ فما منكم من احد عنه حجزين ۝
وانه لتذكرة للمتقين ۝ وانا لنعلم
ان منكم مكذبين ۝ وانه لحسرة على الكفرين
وانه لحق اليقين ۝ فسبح باسم ربك

खुदाए-बुजुर्ग पर ईमान नहीं लाया था ० और ( आप खिलाना तो दर किनार, औरों को भी ) मिस्कीनों के खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देता था ० तो आज यहां इसका कोई भी दोस्तदार नहीं ० और ज़ख़्मों के धोवन के सिवा ( इसके लिये कुछ और ) खाने को भी नहीं ० (और) यह खाना बस गुनहगार ही खायेंगे ० तो ( लोगो ! ) जो चीज़ तुमको दिखाई देती है ० और जो चीज़ तुमको नहीं दिखाई देती ( जैसे जिन्नात, फ़रिश्ते वग़ैरह ) हमतो सबही की क़सम खाते हैं ना ! ० कि यह ( कुर्आन ) बिला शुबहा कलाम ( इलाही ) है। एक मुअज़्ज़ज़ फ़रिश्ते का ( लाया हुआ ) ० और यह किसी शाइर की ( बनाई हुई ) बात नहीं है–( मगर ) तुम लोग बहुत ही कम यक़ीन करते हो ० और न ( यह किसी हाज़िराती ) आमिल के तुक्के हैं–(मगर) तुम लोग बहुत ही कम ग़ौर करते हो ० (यह) पर्वर्दिगार-आलम का उतारा हुआ (कलाम) है ० और अगर ( पैग़म्बर ज़बरदस्ती ) कोई बात हमारे सर चपेकना ० तो हमने ( खूनियों को तरह ) उसका दाहिना हाथ पकड़ कर ० उसकी गर्दन उड़ा दी होती ० और तुममें से कोई भी हमको उससे रोक न सकता ० और कुछ शक नहीं कि यह ( कुर्आन ) परहेज़गारों के लिये नसीहत है ० और हमको ख़ूब मालूम है कि तुममें से ( बाज़ ) इसके झुठलाने वाले ( भी ) हैं ० और इसमें कुछ शक नहीं कि यह काफ़िरों के लिये ( मूजिब ) हसरत है ० और इसमें भी शक नहीं कि यह यक़ीनन् बरहक़ है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम अपने पर्वर्दिगार आली-शान के नाम की तस्बीह ( व तक़्दीस ) में लगे रहो ०—

---

श्रेष्ठ खदा पर ईमान न लाता था और ( इतना बड़ा धनवान होने पर भी कभी किसी निर्धन ) कंगाल के खिलाने पर ध्यान न देता था,तो (जिस प्रकार उसने दुनिया में किसी को न पूछा) आज उसकी भी यहाँ कोई सहायता करने वाला कोई नहीं है। और (इसको उस दिन ) घावों के धोवन के अतिरिक्त कुछ खाना भी नहीं ( मिलेगा ) जिसे ( इस जैसे ) पापियों के अतिरिक्त कोई न खावेगा । अतः ( हे कुफ़्र, शिर्क करने वालो ! यदि तुम अपना अन्त सुधारना चाहते हो, तो बुद्धि तथा ज्ञान से काम लो। अल्प कालिक जीवन को दुर्लभ जानो) तुम जो वस्तुयें ( दुनिया में ) देखते हो और जो वस्तुयें ( आकाशादि पर उपस्थित हैं और उन्हें ) तुम नहीं देखते–हम उन (सब) की शपथ खाते हैं ( और कहते हैं ) कि यह कुर्आन एक प्रतिष्ठित फ़रिश्ता का लाया हुआ है और यह किसी कवि का कलाम नहीं है ( किन्तु ) तुम हो कि बहुत कम ( सच्ची बातों पर ) ईमान लाते हो। और न ( यह किसी ज्योतिषी तथा ) काहिन का वचन है ( किन्तु ) तुम ( सच्ची बातों को ) बहुत कम समझते हो। (अज्ञानो ! ख़ूब समझ लो न यह किसी कवि का वचन है, न किसी ज्योतिषी को ज्योतिष–विद्या, बरन) दोनों लोकों के पालनहारे की ओर से उतारा हुआ ( एक पवित्र तथा श्रेष्ठ कलाम ) है ॥

और यदि (मान लो) यह ( पैग़म्बर ) हम पर कोई बात बना लाते (अर्थात किसी पुस्तक को अपने आप गढ़ते और उसको खुदा की पुस्तक बताते ) तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ते ( और ) फिर उनकी गर्दन काट डालते। फिर तुममें कोई ऐसा नहीं ( निकलता ) जो ( हमारी ) इस ( पकड़ ) से ( उनको ) बचा देता। ( परन्तु हमारे पैग़म्बर पूर्ण रूप से सचाई का आदर्श हैं। वह कभी ऐसा नहीं कर सकते। जो सन्देश हम उनके पास भेजते हैं, वह ज्यों का त्यों तुम तक पहुंचा देते हैं। उसमें कुछ घटती बढ़ती नहीं होती ) और ( इसी लिये ) यह ( कुर्आन अक्षर २ सत्य है और इसमें ) डरने वालों के लिये ( बहुत बड़ी ) शिक्षा (तथा नसीहत) है। और हम ( ख़ूब ) जानते हैं कि तुममें से कुछ लोग (अपनी मूर्खता और दुर्भाग्य के कारण से उसको) झुठलाते हैं। और ( अपना लोक परलोक बिगाड़ लेते हैं। निस्सन्देह ) यह काफ़िरों के लिये तो पश्चाताप (तथा निराशा और विनाश का कारण ) है और (मुसलमानों के लिये एक) सत्य-निश्चय ( वाली पुस्तक है और दोनों लोकों की भलाई का कारण ) है। अतः ( हे पैग़म्बर ! ) अपने श्रेष्ठ ( तथा महान ) पालनहारे के नाम की पवित्रता वर्णन करो ॥

## सूरत-मआरिज

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ४४ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० अल्लाह जो (आस्मान की) सीढ़ियों का मालिक है—(जिनकी राह) फ़रिश्ते और जिब्रील उसकी तरफ़ चढ़ते हैं। उसके हुक्म से क़यामत के दिन जिसका अन्दाज़ पचास हज़ार बरस का होगा, काफ़िरों को अज़ाब होना है (और) कोई उसको टाल नहीं सकता। (एक ना आक़िबत-अन्देश) दर्ख़्वास्त करने वाले ने दर्ख़्वास्त की कि वह अज़ाब अभी आ नाज़िल हो ० तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम (इन लोगों की छेड़ख़ानी पर) अच्छी तरह सब्र किये (बैठे) रहो ० यह लोग तो रोज़-क़यामत को बईद (अज़-क़यास यानी मुहाल) समझते हैं ० और हमारे नज़्दीक (न सिर्फ़ मुम्किन, बल्कि) क़रीबु (ल्वक़ूअ) है ० उस दिन आस्मान (तो ऐसा लाल) हो जायगा, जैसा पिघला हुआ ताँबा ० और पहाड़ (ऐसे उड़ते) होंगे, जैसे रङ्ग बिरङ्ग की ऊन ० और बावजूदे कि लोग एक दूसरे को दिखाये भी जायँगे, ताहम कोई अपना किसी (दूसरे) अपने को पूछेगा भी तो नहीं। गुनहगार तमन्ना करेगा कि ऐ काश! अपने बेटों ० और अपनी जोरू और अपने भाई और अपने कुन्बे को, जो (वक़् पड़े पर) इसको पनाह दिया करता था ० और (रूए) ज़मीन के तमाम आदमियों को उस दिन के अज़ाब के बदले में दे दे और यह (मुआवज़ा) उसको बचा ले ० सो यह तो होना नहीं, दोज़ख़ की आग (तो इस बला की) लपट है कि सर तक की खलड़ी उधेड़ कर धर देगी ० (और) जो (दुनिया में हक़् से) रूगर्दानी और सर्ताबी करते रहे—

سُورَةُ المَعَارِجِ العَظِيمِ اَربَعٌ وَاربَعُونَ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٤
سَاَلَ سَآئِلٌ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۙ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ
لَهٗ دَافِعٌ ۙ مِّنَ اللهِ ذِى الْمَعَارِجِ ؕ تَعْرُجُ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ
خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا
اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۙ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ؕ يَوْمَ تَكُوْنُ
السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ
وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ
الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ ۢ بِبَنِيْهِ ۙ
وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۙ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ۙ
وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۙ كَلَّا ؕ اِنَّهَا
لَظٰى ۙ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۚ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۙ

---

## सूरत-मआरिज

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ४४ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥**

(उनकी मूर्खता तो यहां तक पहुंच चुकी है कि उन ही में का) एक (अज़ाब का) अभिलाषी (और अधिकारी—हंसी तथा उद्दण्डता की रीति से) उस अज़ाब (के अवतीर्ण होने) की इच्छा करता है, जो कि (उस जैसे कट्टर) काफ़िरों पर (अवश्य) होने वाला है (और भूमि आकाश में) जिसका कोई फेरने वाला नहीं (और) जो उस (सर्व शक्तिमान अमर अजर) अल्लाह की ओर से (उतरने वाला) है, जो (ऐसी) सीढ़ियों (अर्थात आकाशों) का स्वामी है (कि) जिस (के अर्श) की ओर (उन सीढ़ियों के द्वारा वह) फ़रिश्ते भी चढ़ते हैं (जो मनुष्य जाति के रक्षक हैं) और रूह (अर्थात वह फ़रिश्ते) भी (जो इन रक्षक फ़रिश्तों के रक्षक हैं, चढ़ते हैं और यह अज़ाब) ऐसे (बड़े) दिन में होगा, जिसका परिमाण (सांसारिक दिनों के हिसाब से) पचास हज़ार वर्ष (के बराबर) है ॥

अतः (हे पैग़म्बर! तुम उनकी शत्रुता और उद्दण्डता पर दुनिया में) अच्छा सन्तोष करो (और विश्वास करो कि क़यामत के दिन उनका पालन कर्त्ता उनको पूर्ण दंड देगा)। निस्सन्देह यह (परिणाम उनकी अचेतना तथा असत्य पूजा का है, जो यह क़यामत के) उस (निश्चित दिन) को दूर समझते हैं—यद्यपि हम तो उसको (बिल्कुल) निकट देख रहे हैं। (परन्तु उनकी यह सारी अचेतना उस दिन जाती रहेगी) जिस दिन कि (यह कठोर तथा ठोस और बहुत बड़ा) आकाश तलछट तेल के समान हो जायगा और (यह बड़े बड़े) पर्वत रंगीन धुनी हुई रुई के समान हो (कर उड़) जायंगे और (कोई किसी का पूछने वाला न होगा—यहां तक कि कोई) मित्र किसी मित्र की (बात तक) न पूछेगा—यद्यपि एक दूसरे (की दुर्दशा) को वह (स्वयं अपने नेत्रों से) देखेंगे ॥

(उस दिन हर) पापी (दिल से) चाहेगा (कि) क्या अच्छा होता! इस (भयङ्कर) दिन के अज़ाब से मुक्ति पाने के लिये (कोई उपाय निकल आवे। और वह इसके लिये भी तय्यार होगा कि) अपने बेटों को और अपनी पत्नी को और अपने भाई और उस (समस्त) परिवार को, जिसमें वह शरण लिये था और उन सब (मनुष्यों) को जो भूमि पर (बसते) हैं—बदले में देदे (और) फिर वह (बदला) उसको (उस अज़ाब से) मुक्ति दिला दे—(परन्तु वह चाहे कितना हाथ पैर मारे और कितना उद्योग करे, किन्तु ऐसा) कभी नहीं (हो सकता कि वह अज़ाब से छुटकारा पा जाय। हमारा अज़ाब क्या है) वह एक (कभी न बुझने वाली) प्रचण्ड अग्नि है, जो (प्रत्येक पापी के) मुंह की खाल उधेड़ डालेगी (और) जिसने (संसार में आधीनता से) मुंह मोड़ा और (ईमान लाने से) मुंह फेरा, और धन एकत्रित किया, फिर (उसे यूं ही) रख छोड़ा—(ख़ुदा की राह में व्यय न किया) उसे (जलाने और नष्ट भ्रष्ट करने के लिये अपने पास खींच) बुलाएगी ॥

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ۝ إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا
إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ
مَنُوعًا ۝ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ
دَائِمُونَ ۝ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ
لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ
الدِّينِ ۝ وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ
إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ
لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ
مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝
فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝
وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝
وَالَّذِينَ هُم بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ
صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ

और ( सारी उम्र ) माल जमा करके ( उसको राह-खुदा में ख़र्च न किया और ) सैंत-सैंत कर रखते रहे—इन ( सब ) को (अपनी तरफ़ खींच) बुलायेगी ० बेशक आदमी बड़ाही थुड़-जिया पैदा किया गया है ० कि जब उसको ( किसी तरह का ) नुक़सान पहुंचता है, तो घबरा उठता है ० और जब उसको ( किसी तरह का ) फ़ायदा पहुंचता है, तो बुख़्ल करने लगता है ० मगर ( उन लोगों का हरगिज़ ऐसा हाल नहीं ) जो नमाज़-गुज़ार हैं ० ( और ) वह अपनी नमाज़ को कभी नाग़ा नहीं होने देते ० और जिनके मालों में ( मुंह फोड़ कर ) मांगने वाले और न मांगने वाले ( दोनों ) का एक हिस्सा मुअय्यन ( मुक़र्रर ) है ० और जो रोज़-जज़ा का यक़ीन रखते हैं ० और वह जो अपने पर्वर्दिगार के अज़ाब से डरते रहते हैं ० बेशक उन के पर्वर्दिगार का अज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं ० और वह जो अपनी शर्मगाहों को बचाये रहते हैं ० मगर अपनी बीवियों और अपने हाथ के माल ( यानी लौंडियों ) से कि ( उनके साथ मसरूफ़ होने में ) उन पर कुछ इल्ज़ाम नहीं ० हाँ ! जो लोग इनके अलावा (और) के तलबगार हों,तो (उन को समझो कि ) वह हद्द ( फ़ितरत ) से बढ़ गये हैं ० और वह जो अपनी ( तहवील की ) अमानतों का और अपने अहद का पास करते ० और वह जो अपनी गवाहियों पर साबित ( क़दम ) रहते ० और वह जो अपनी नमाज़ की ख़बर रखते हैं ० यह लोग ( हैं, जो ) इज़्ज़त से ( बहिश्त के ) बाग़ों में होंगे ०—

---

निस्सन्देह मनुष्य अधीर उत्पन्न किया गया है। जब उसको कुछ बुराई लगती अर्थात कष्ट पहुंचता है, तो घबराता (फिरता) है। तरह तरह की शिकायतें करता है। और जब उसको भलाई लगती है, तो ऐंठता है ( और अपने आप के अतिरिक्त उसे कुछ सूझ नहीं पड़ता। अर्थात न खुदा का हक़ अदा करता है और न खुदा के बन्दों का, बरन पशु के समान जो चाहता, करता फिरता है )॥

परन्तु जो लोग अपनी नमाज़ सर्वदा पढ़ते हैं ( और किसी नमाज़ को नहीं छोड़ते ) और जिन लोगों के धनों में ( हर अंश-भागी का एक ) नियत अंश है ( कोई भी हो ) मांगने वालों के लिये भी और न मांगने वालों के लिये भी। और जो लोग बदला मिलने वाले दिन को सच्चा मानते हैं। और वह लोग जो अपने पालन कर्त्ता के अज़ाब से ( हर समय ) डरते ( और भय खाते रहते ) हैं ( और ) निस्सन्देह ( उससे डरना चाहिये ) उनके पालन कर्त्ता का अज़ाब ग़ैर-मामून है ( अर्थात ऐसी साधारण वस्तु नहीं है कि उससे कोई न डरे )॥

और जो अपने लज्जा-स्थानों की रक्षा करते हैं, किन्तु अपनी पत्नियों और अपने हाथ के माल ( अर्थात लौंडियों ) से (नहीं) तो ( इसमें ) उन पर दोष नहीं है। परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त ( कोई और स्थान विषय वासना के लिये ) चाहे, तो वह सीमा से बढ़ जाने वाले लोगों में से है ( और अपराधी है )। और जो लोग अपनी अमानतों ( में ख़यानत नहीं करते ) और अपनी प्रतिज्ञा का (पालन करते तथा ) ख़्याल रखते हैं। और जो लोग सचाई के साथ अपनी साक्षियां देते ( और झूठ नहीं बोलते ) और जो लोग अपनी (पांचों समय की ) नमाज़ की ( पूर्ण ) रक्षा ( तथा पाबन्दी ) करते हैं, यही सब ( वह भाग्यवान लोग ) हैं, जो ( बड़ी ) प्रतिष्ठा ( तथा सम्मान ) से ( जन्नत के ) बाग़ों में प्रवेश करेंगे॥

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۝ عَنِ
الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ۝ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ
مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ۝ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ
مِمَّا يَعْلَمُونَ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ
إِنَّا لَقَادِرُونَ ۝ عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا
نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا
حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ
يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ
نُصُبٍ يُوفِضُونَ ۝ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

سُورَةُ نُوحٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ مَكِّيَّةٌ ثَمَانٍ وَعِشْرُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ

तो ( ऐ पैग़म्बर ! इन ) काफ़िरों को क्या (हो गया) है कि टोलियाँ बन बन कर दाहिनी तरफ़ से और बाईं तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ को दौड़े चले आ रहे हैं ० क्या इनमें से हर शख़्स ( इस बात का ) आरज़ू-मन्द है कि मज़े की बहिश्त में दाख़िल कर लिया जायगा ० सो यह तो होना नहीं, हमने इनको उसी ( गन्दी ) चीज़ से पैदा किया है, जो इनको मालूम है ० तो हमको मश्रिक़ों और मग़्रिबों के मालिक ( यानी अपनी ज़ात पाक ) की क़सम है कि हम इस बात पर भी क़ादिर हैं ० कि ( दुनिया में ) इनसे बेहतर ( मख़्लूक़ ) इनके बदले ला बसायें और ( ऐसा करना चाहें, तो ) कोई हमारे हुक्म से बाहर नहीं हो सकता ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इनको बेहूदा बातें बनाने और खेल करने दो—यहां तक कि ( आख़िरकार ) वह दिन जिसका इनसे वादा किया जाता है, इनके सामने आ मौजूद हो ० ( यानी वह दिन ) जबकि यह क़ब्रों से निकल पड़ेंगे ( और मैदान-हश्र की तरफ़ ) इस तरह दौड़ते होंगे कि गोया किसी पाले की तरफ़ दौड़े चले जा रहे हैं ० ( रंज और नदामत के मारे ) इनकी नज़रें झुकी हुई होंगी। ज़िल्लत इन ( के चेहरों ) पर छा रही होगी। यही तो वह दिन होगा, जिसका इनसे वादा किया जाता था ०

## सूरत—नूह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें २८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ०

हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ ( पैग़म्बर बनाकर ) भेजा कि—

---

और ( हे पैग़म्बर ! इन ) काफ़िरों को क्या हुआ, जो इकट्ठे हो होकर तुम्हारी ओर दौड़ते हुये आते हैं ( और हमारी आयतों की हंसी उड़ाते हैं )। क्या उनमें से प्रत्येक मनुष्य ( अपनी इन करतूतों के होते हुये ) जन्नत-नईम में प्रवेश करने की अभिलाषा रखता है ? ( यह ) कदापि नहीं ( हो सकता। उनमें से कोई भी जन्नत में जाने के योग्य नहीं)। निस्सन्देह हमने जिस ( तुच्छ ) वस्तु से ( अर्थात वीर्य्य से ) उनको बनाया है—उसको यह ( स्वयं ) भी जानते हैं ( इसलिये उन्हें चाहिये कि यदि यह जन्नत में जाने के अभिलाषी हैं, तो अपनी इन व्यर्थ बातों को छोड़ें और सच्चे दिल से हमारी अपार शक्ति को मानें और क़यामत की घटना को असम्भव न जानें )॥

(यदि इतना समझाने बुझाने पर भी यह अपने कौतुकों से न मानें ) तो हम पूर्व-पच्छिम के पालन कर्त्ता की ( अर्थात अपनी ) शपथ खाते हैं कि ( हम उनको जन्नत में भेजना कैसा-एक कष्ट दायक अज़ाब में डालेंगे और ) हममें यह भी शक्ति है कि हम ( उनको दुनिया ही में नष्ट भ्रष्ट करदें और ) उनकी जगह उनसे अच्छे लोग ला ( बसा ) एँ। और हम (किसी से) असमर्थ नहीं हैं। अतः ( हे रसूल ! अब ) तुम ( उनके ज़्यादा मुंह न लगो और ) उनको उनकी दशा पर छोड़ दो, जिससे कि यह (उसी तरह सांसारिक कामों में) घुसे रहें और ( उसी तरह अपने कर्त्तव्य-पालन से अचेत होकर दुनिया के सुखों में ) खेलते ( कूदते ) रहें—यहां तक कि उन्हें वह दिन देखना पड़े, जिसका उनसे वादा किया जा रहा है ( अर्थात वह दिन ) जिस दिन कि यह अपनी ( अपनी ) क़ब्रों से (ज़िन्दा होकर) निकल ( खड़े होंगे और) इस प्रकार ( तेज़ी के साथ ) दौड़ेंगे, जैसे कि यह ( दुनिया में प्रेम के साथ ) मूर्तियों के स्थानों की ओर दौड़ते हैं (और लज्जा के मारे ) उनकी आंखें नीची होंगी ( और खुदा के अज़ाब के भय से ) अप्रतिष्ठा ( और फिटकार ) उन पर बरस रही होगी। ( बस ) वह दिन यही है, जिसका उनसे वादा किया जा रहा है ( और जिससे यह इस प्रकार निश्चिन्त बैठे हैं )॥

## सूरत—नूह

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें २८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( जिस प्रकार हे रसूल ! हमने तुमको तुम्हारी उम्मत की ओर भेजा है, उसी प्रकार ) हमने ( अपने पैग़म्बर ) नूह को उनकी जाति की ओर भेजा था—

क़ब्ल इसके कि तुम्हारी क़ौम के लोगों पर अज़ाब-दर्दनाक आ नाज़िल हो, इनको ( उससे ) डराओ ० ( चुनांचे उन्होंने इनसे ) कहा कि भाइयो ! मैं तुमको खुले तौर पर डर सुनाने आया हूं ० ( और तुमको समझाता हूं ) कि ख़ुदा की इबादत करो और उस ( के ग़ज़ब ) से डरते रहो और मेरा कहा मानो ० ( ऐसा करोगे ) तो वह तुम्हारे गुनाह माफ़ करेगा और ( मौत के ) वक़्त-मुक़र्रर तक तुमको ( दुनिया में इतमीनान से रसने बसने की ) मोहलत देगा। जब ख़ुदा का ठहराया हुआ ( वह ) वक़्त आ मौजूद होता है, तो वह ( किसी के टाले ज़रासी देर के लिये भी ) नहीं टल सकता। ऐ काश ! तुम ( इतनी बात ) समझते होते ० (जब नूह अपना फ़र्ज़-रिसालत अदा कर चुके और लोग उनको बराबर झुठलाते रहे, तो उन्होंने ख़ुदा से ) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मैंने अपनी क़ौम ( के लोगों ) को रात के वक़्त भी बुलाया और दिन के वक़्त भी (बुलाया) ० तो मेरे बुलाने का उन पर यही असर हुआ कि ( जितना ज़ियादा बुलाया, उतना ही ) ज़ियादा भागे ० और जब-जब मैंने इनको बुलाया कि ( यह तेरी तरफ़ रुजू हों और ) तू इनके गुनाह माफ़ फ़र्माये, इन्होंने अपने कानों में उँगलियां ठूंस-ठूंस लीं (कि इनके कानों में कहीं मेरे बुलाने की भनक न पड़े ) और ( ऊपर से ) अपने कपड़े ओढ़-ओढ़ लिये ( कि कहीं मेरी सूरत इनको न दिखाई दे ) और ज़िद की, और शेख़ी में आकर अकड़ बैठे ० फिर मैंने इनको पुकार कर बुलाया ० और इनको ज़ाहिर भी समझाया और इनको पोशिदा भी समझाया ० ( और बार बार इनसे) कहा कि अपने पर्वर्दिगार से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगो कि वह बड़ा बख़्शने वाला है ( तुम्हारे कुसूर भी माफ़ कर देगा ) ० ( और ) तुम पर ( आसमान से ) मूसलाधार मेंह बर्सायेगा ० और माल और औलाद से तुम्हारी मदद करेगा-

قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ○ قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى
لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ○ أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ
وَأَطِيعُونِ ○ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ
إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ
لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ○ قَالَ رَبِّ إِنِّى دَعَوْتُ
قَوْمِى لَيْلًا وَنَهَارًا ○ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا
فِرَارًا ○ وَإِنِّى كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ
جَعَلُوٓا۟ أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَٱسْتَغْشَوْا۟
ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا۟ وَٱسْتَكْبَرُوا۟ ٱسْتِكْبَارًا
ثُمَّ إِنِّى دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ○ ثُمَّ إِنِّىٓ أَعْلَنتُ لَهُمْ
وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ○ فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟
رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا ○ يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ
عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ○ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَٰلٍ وَبَنِينَ

---

( और उनसे कहा था ) कि तुम अपनी जाति ( के लोगों ) को इससे पहिले कि उन पर दुखदायी अज़ाब पहुंचे ( अज़ाब उतरने से ) डराओ ( और पथ-भ्रष्टता और कुमार्ग से बचाओ और सीधे मार्ग से उन्हें सूचित करो—तो नूह ने हमारी आज्ञा पालन की और अपनी जाति के लोगों से जाकर ) कहा—भाइयो ! मैं तुमको खुल्लम खुल्ला डर ( की बातें ) सुनाने आया हूं। (खुल्लम खुल्ला कहता हूं कि यदि तुमने पवित्र ख़ुदा के आगे अपना सिर न झुकाया, तो उसका कोप तुम्हें नष्ट न कर देगा। अतः उचित यह है ) कि तुम अल्लाह की पूजा करो और उस ( के कोप ) से डरो और मेरा कहना मानो, जिससे कि वह तुम्हारे पापों को क्षमा करे। और एक नियत समय तक तुमको ( कुशल पूर्वक संसार में जीवित ) रक्खे। निस्सन्देह ( यह समय है-इस बात का, कि तुम अपने भले बुरे पर सोच विचार करो। मृत्यु का वा अज़ाब उतरने का ) जब (नियत) समय आ जायगा, तो ( फिर तुमको ) ढील न दी जावेगी। क्या अच्छा होता ! कि तुम (मेरी बात को सुनो और) समझो ॥

(परन्तु उस उद्दण्ड जाति ने नूह की बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया, तो उन्होंने निराश होकर अपने ख़ुदा से ) कहा—हे पालहारे ! मैंने अपनी जाति को रात-दिन (तेरी ओर) बुलाया-परन्तु ( उसने मेरी एक न सुनी और उन पर मेरी बातों का उलटा प्रभाव हुआ कि वह ) मेरे बुलाने ( और समझाने बुझाने ) से और ज़्यादा ( असत्य पूजा करने और सत्य से ) भागने लगे। और जब कभी मैंने उनको ( नेकी की ओर ) बुलाया, जिससे कि तू उन ( के पापों ) को क्षमा करदे ( और उन पर अपनी कृपा करे ) तो वह अपने कानों में उँगलियाँ ठूंसने और अपने (मुंह के) ऊपर कपड़े लपेटने लगे (जिससे कि उनकी आँखें और कान बन्द हो जायँ और उन्हें मेरी सूरत न दीख पड़े) और (मेरी आवाज़ न सुनाई दे। सो ज्यों ज्यों मैंने उनको शिक्षा दी, त्यों त्यों अपने कुफ़्र पर ) उन्होंने हठ किया और उद्दण्डता (तथा अवज्ञा ही ) करते रहे ॥

( किन्तु इसके होते हुये ) फिर ( भी मैं अपने कर्त्तव्य-पालन अर्थात धर्म-प्रचार से न रुका और ) मैंने उनको खूब पुकार कर ( तेरे धर्म की ओर ) बुलाया और प्रगट रूप से ( सबके सामने ) भी समझाया और गुप्त रूप से ( अकेले में ) भी पढ़ाया और ( उनसे ) मैंने कहा कि ( भाइयो ! क्यों अपने विनाश के पीछे पड़े हो ! इन व्यर्थ बातों से मान जाओ और ) अपने पालन कर्त्ता से ( अपने कुकर्मों की ) क्षमा मांगो। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमा करने वाला (कृपालु) है। (यदि तुम अपने कुकर्मों से मान गये, तो ) वह तुम पर मूसलाधार मेंह वर्षावेगा और धन से और सन्तान से तुम्हारी सहायता करेगा—

وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۞ مَا لَكُمْ
لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۞ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ۞
اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ
طِبَاقًا ۞ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا ۞ وَّجَعَلَ
الشَّمْسَ سِرَاجًا ۞ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ
نَبَاتًا ۞ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ۞
وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۞ لِّتَسْلُكُوْا
مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۞ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ
وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ۞ ع
وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۞ وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ
اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۞ وَّلَا يَغُوْثَ
وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ۞ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۞ وَلَا
تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ۞ مِمَّا خَطِيْٓئٰتِهِمْ اُغْرِقُوْا

فَاُدْخِلُوْا نَارًا

और तुम्हारे लिये बाग़ उगायेगा और तुम्हारे लिये नहरें ( जारी ) करेगा ( सो अलग ) ० तुम्हें क्या ( बला मार गई ) है कि तुमने (बिल्कुल) ख़ुदा का वक़ ( दिल से ) उठा दिया ० हालांकि उसने तुमको तरह तरह का पैदा किया है (कोई कैसा, कोई कैसा ) ० क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने कैसे तह पर तह सात आस्मान बनाये हैं ० और उनमें चांद को ( भी ) बनाया है ( कि वह एक ) नूर ( है ) और सूरज को बनाया है ( कि वह एक रोशन ) मशअल ( है ) ० और अल्लाह ही ने तुम को (एक तरह पर ) ज़मीन से उगाया ० फिर ( दुबारा ) लौटाकर उसी मिट्टी में तुमको मिला देगा और ( क़यामत में ) तुमको ( उसी मिट्टी से फिर ) निकाल खड़ा करेगा ० और अल्लाह ही ने ज़मीन को तुम्हारा फ़र्श बनाया है ० कि उस के खुले खुले रस्तों में ( जिधर चाहो ) चलो ( फिरो ) ० ( जब इतना समझाने पर भी लोग राह पर न आये, तो ) नूह ने ( हमारी जनाब में ) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! इन लोगों ने मेरा कहा न माना और उन ( नाबकार लोगों ) के कहने पर चले, जिनको उनके माल और उनकी औलाद ने ( फ़ायदे की जगह उल्टा ) और नुक़्सान ही पहुंचाया ० और उन्होंने ( मेरे साथ ) बड़े बड़े फ़रेब किये ० और (एक दूसरे को) बहकाया कि अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और न वद्द ( बुत ) को छोड़ना और न सुआ को और न यग़ूस और यऊक़ और नस्र को ० और (यह लोग ऐसी ही बातें समझा समझा कर ) बहुतेरों को गुमराह कर चुके हैं और ऐसा कर कि इन ज़ालिमों की गुमराही ( रोज़ बरोज़) बढ़ती ही चली जाय ( कि आख़िरकार मुस्तौजिब-अज़ाब हों ) ० ( चुनाँचे ) अपनी ही शरारतों की वजह से ग़र्क़ कर दिये गये—

और ( तरह २ के ) तुम्हारे लिये बाग़ लगावेगा और नहरें बहा देगा । ( आख़िर) तुमको हो क्या गया है, जो तुम ( महान श्रेष्ठ ) अल्लाह की श्रेष्ठता ( और महानता ) का विश्वास नहीं करते—यद्यपि उसीने तुमको उत्पन्न किया है ( और ) तरह २ का ( उत्पन्न किया है । अर्थात कोई तुममें गोरा है, तो कोई काला—कोई लम्बा है, तो कोई छोटे डीलका) । क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने कैसे एक-पर-एक सात आकाश बनाए और चांद को उन ( आकाशों ) में एक प्रकाश बनाया और सूर्य्य को प्रज्वलित दीपक बनाया ( अर्थात यदि तुमको अपने भीतर ख़ुदा की शक्ति का चमत्कार नहीं दीख पड़ता, तो क्या इन ऊँचे २ आकाशों में भी तुम ईश्वर की लीला नहीं देखते) । और (यह भी तुमको दिखाई नहीं देता कि ) अल्लाह ही ने तुमको पृथ्वी से ( अर्थात एक मुट्ठी मिट्टी से ) विशेष रीति पर उगाया । फिर तुमको दुबारा उसी (मिट्टी) में वह लौटाएगा । और (उसी मिट्टी से) तुमको ( फिर ) बाहर निकालेगा । और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये पृथ्वी को बिछौना बनाया, जिससे कि उसकी खुली राहों में तुम ( प्रसन्नता पूर्वक ) चलो ( फिरो ) ॥

( और फिर उसके पश्चात ) नूह ने ( हमसे) कहा—हे मेरे पालन कर्ता ! ( तू भली भांति देख रहा है कि ) इन लोगों ने (बिल्कुल) मेरा कहा न माना और ( अपनी जाति के सर्दारों में से ) उन्होंने ( ऐसे ) ऐसों की आधीनता की, जिनकी ( धन ) सम्पत्ति और सन्तान ने ( उनको बिल्कुल हानि ही हानि पहुंचाई और यदि कुछ ) अधिकता ( भी ) की ( तो उनके ) घाटे में—और जिन्होंने ( असत्य को बढ़ाने के लिये ) बड़े बड़े ( आश्चर्य जनक ) उपाय किये और जिन्होंने ( अपने मानने वालों से सर्वदा यही ) कहा कि तुम अपने पूज्यों को कभी न छोड़ना । और ( विशेषतः ) 'वद्द' और 'सुवाअ' और 'यग़ूस' और 'यऊक़' और 'नस्र' ( जो तुम्हारे मुख्य पूज्य हैं, उनकी उपासना ) को तो कभी न छोड़ना और ( उनसे कभी अलग न होना । तात्पर्य यह कि ) उन ( सर्दारों ) ने बहुतों को पथ-भ्रष्ट कर दिया और ( सीधे मार्ग पर न आने दिया । अतः हे ख़ुदा ! ) तू भी इन अत्याचारियों (तथा उद्दण्डों) की पथ-भ्रष्टता ही में और अधिकता करदे ( और उन्हें अज़ाब का अधिकारी बनादे ) ॥

(सो जब उन पथ-भ्रष्टों की पथ-भ्रष्टता और उद्दण्डता अपनी सीमा पर पहुंच गई, तो) कुछ ( तो उनमें से) अपने पापों के कारण से ( पानी में ) डुबो दिये गये—

فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ۬ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَنْصَارًا ۝ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ
مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝ اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ
يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝
رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ
مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ
الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝

سورة الجن ثمان وعشرون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا
اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ
فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى
جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ
كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ

( और ) फिर दोज़ख़ में डाल दिये गये और ख़ुदा के सिवा कोई मददगार भी उनको बहम न पहुंचे ० और नूह ने ( उनके हक़ में यह भी बद ) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! ( इन ) काफ़िरों में से ( किसी मुत्नफ़्फ़िस को भी ज़िन्दा ) न छोड़ ( कि ) रूए-ज़मीन पर रस्ता--बस्ता ( नज़र आये ) ० क्योंकि अगर तू इनको रहने देगा, तो यह तेरे बन्दों को गुमराह ( ही ) करेंगे और इनसे जो नस्ल चलेगी, वह भी बदकार ( और ) कट्टे काफ़िर ही होंगे ० ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मुझको और मेरे माँ बाप को और जो शख़्स ईमान लाकर मेरे घर में ( पनाह लेने ) आया है, उसको और ( आम ) बाईमान मर्दों और बाईमान औरतों को बख़्श ! और ऐसा कर ! कि ( इन ) ज़ालिमों की तबाही ( रोज़-बरोज़ ) बढ़ती चली जाय ०

## सूरत—जिन्न

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें २८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥**

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! सब लोगों को ) जता दो कि मेरे पास ( ख़ुदा की तरफ़ से इस बात की ) वही आई है कि जिन्नात में से चन्द शख़्सों ने (मुझे क़ुर्आन पढ़ते ) सुना और (सुने पीछे अपने लोगों से जाकर ) कहा कि हमने अजीब ( तरह का ) क़ुर्आन सुना ० जो नेक राह दिखाता है । सो हम उस पर ईमान ले आये और हमतो किसी को अपने पर्वर्दिगार का शरीक ठहरायेंगे नहीं ० और हमारे पर्वर्दिगार की बड़ी ऊंची शान है । उसने न तो किसीको अपनी जोरू बनाया और न किसी को बेटा-बेटी ० और हममें ( कुछ ) अहमक़ ( ऐसे भी हो गुज़रे हैं, जो ) ख़ुदा की निस्बत बढ़—बढ़ कर बातें बनाया करते थे ० और हमतो ऐसा समझते थे—

---

और कुछ ( उनमें से ) अग्नि में डाले गये । अतः ( उस समय ) उन्होंने भी अपने लिये किसी को ख़ुदा के अतिरिक्त सहायक न पाया । और (उस समय) नूह ने (जिन्हें उन दुराचारियों पर अति क्रोध था-हमसे ) कहा, हे मेरे पालनहारे ! (इन दुराचारी भूमि पर रहने वालों में से ) किसी रहने वाले को भी भू (तल) पर (ज़िन्दा) न छोड़ ( सबको अपने अज़ाब में नष्ट भ्रष्ट करदे ) । यदि तू (इनमें से दो चार को भी बाक़ी ) छोड़ देगा, तो वह भी तेरे बन्दों को बहकाएंगे और ( तेरे अज़ाब को अपने नेत्रों से देखने के पश्चात भी ठीक न होंगे । इनके सिर से अज़ाब टलने की देर है-फिर यह उसी दुराचार में फंस जायँगे और इनके यहां) जो सन्तान होगी, तो वह भी दुराचारी (और) कुफ़्र ( शिर्क ) करने वाली ( और सीधे मार्ग से कोसों दूर होगी ) । अतः हे मेरे पालनहारे ! तू मुझको और मेरे माता पिता को और जो ईमानदार मेरे घर में आये-उसको, और ( इनके अतिरिक्त ) सब ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों को तो (अपनी कृपा तथा दया से ) क्षमा करदे । और ( इन ) अपराधियों के हक़ में ( नष्टता तथा ) विनाश के अतिरिक्त ( और कुछ ) ज़्यादा न कर ॥

## सूरत–जिन्न

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें २८ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥**

( हे मुहम्मद ! तुम इन शिक्षा—प्रद वृतान्तों को सुनाकर अपनी उम्मत के लोगों को उनके सुधार के लिये जिन्नों की बुद्धिमानी तथा ईमानदारी का हाल वर्णन करो और उनसे ) कहो कि मेरे पास इस बात की वही आई है कि जिन्नों के एक समूह ने ( जब ) क़ुर्आन शरीफ़ सुना, तो उन्होंने ( अपनी जाति के लोगों से जाकर ) कहा कि हमने एक अद्भुत क़ुर्आन सुना है, जो नेकी की ओर राह दिखाता है । अतः हम तो उस ( की सत्यता ) पर ईमान ले आये ( आज से उसके आदेशों पर चलेंगे ) और कदापि अपने पालन कर्त्ता का किसी को साझी न बनाएंगे । और ( हमारे विचार में ) यह ( बात बिल्कुल सच्ची है ) कि हमारे पालनहारे का पद बहुत ऊँचा है । उसने ( अपने लिये ) न पत्नी ग्रहण की, न पुत्र-( वह पत्नी तथा सन्तान से और इस प्रकार की समस्त त्रुटियों से पवित्र और आवश्यकताओं से बिल्कुल बे पर्वाह है ) ॥

और यह ( बात भी अब हमें भली भांति ज्ञात हो गई ) कि हमारे ( समूह के ) अज्ञान लोग अल्लाह पर ( उसको सन्तति वाला बताकर अनादर करते और कुफ़्र तथा उद्दण्डता में ) हद से ( ज़्यादा ) बढ़ी हुई बातें करते हैं—और हम ( अपनी अज्ञानता से अब तक ) यह समझे हुये थे—

أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝
وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝ وَأَنَّهُمْ
ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا
وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا
شَدِيدًا وَشُهُبًا ۝ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا
مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ
شِهَابًا رَّصَدًا ۝ وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن
فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَأَنَّا
مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ كُنَّا طَرَائِقَ
قِدَدًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نُّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ
وَلَن نُّعْجِزَهُ هَرَبًا ۝ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ
آمَنَّا بِهِ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا

कि ( क्या ) आदमी और ( क्या ) जिन ( कोई भी ) ख़ुदा पर झूट नहीं बोल सकता-( चुनांचे इसी ख़याल से हमभी उनके कहे पर चलते रहे ) ० और आदमियों में से कुछ लोग जिन्नात में से बाज़ लोगों की पनाह पकड़ा करते थे, तो ( इससे ) इन आदमियों ने जिन्नात को और भी ज़ियादा मग़रूर कर दिया ० और जिस तरह तुम ( जिन्नात ) को ख़याल था, बनी आदम को भी ख़याल हुआ कि ( गुज़श्ता ज़माने में ख़ुदा ने किसीको पैग़म्बर बनाकर नहीं भेजा और आइन्दा भी ) ख़ुदा कभी किसी को ( पैग़म्बर बनाकर ) नहीं भेजेगा ० और हमने आसमान को ( भी ) टटोला, तो पाया कि बड़ी बज़्बूत चौकियों और शिहाबों ( के अंगारों ) से भरा पड़ा है ० और पहिले तो आसमान में बहुत से ठिकाने थे, जहां हम सुनने के लिये ( जा ) बैठा करते थे-( लेकिन ) अब कोई सुनने का क़स्द करे, तो एक शिहाब ( का गोला ) अपने लिये ताक लगाये ( तय्यार ) पाये ० और हम नहीं जानते कि ( इस इन्तिज़ाम से ) ज़मीन के रहने वालों को कुछ नुक़सान पहुंचाना मन्ज़ूर है या उनके पर्वर्दिगार का इरादा उनके हक़ में बेहतरी करने का है ० और हममें से कुछ तो नेक हैं और कुछ और तरह के हैं—( ग़रज़ ) हमारे ( भी ) मुख़्तलिफ़ फ़िरक़े होते आये हैं ० और ( अब ) हमने समझ लिया कि हम न तो ज़मीन में ( रह कर ) ख़ुदा को हरा सकते हैं और न ( किसी तरफ़ ) भाग कर उसको हरा सकते हैं ० और हमने जब राह की बात सुनी, तो हम उसको मान गये। पस जो शख़्स अपने पर्वर्दिगार पर ईमान लायेगा, उस को न किसी नुक़सान का डर होगा और न—

कि मनुष्य तथा जिन्न ( सब कौतुक कर सकते हैं, परन्तु ) अल्लाह पर कदापि झूठ नहीं बोल सकते (और उसका किसी प्रकार का अनादर करने का साहस नहीं कर सकते और केवल मूर्खता के कारण ख़ुदा का साझी किसी को नहीं ठहरा सकते—परन्तु हमें अपनी अज्ञानता का हाल भली भांति विदित हो गया। अब हम कभी इस ग़लती में नहीं पड़ेंगे ) और जिन्नों ( के सर्दारों ) की उद्दण्डता का एक कारण यह भी है कि कुछ लोग मनुष्यों में ऐसे हैं, जो जिन्नों के कुछ लोगों से शरण मांगा करते थे ( और जब किसी स्थान पर जाते, तो कहते थे कि इस स्थान के सर्दार से उसकी जाति के अज्ञानों और मनुष्य को कष्ट पहुंचाने वालों से हम शरण चाहते हैं)। अतः उन मनुष्यों ने उन ( जिन्नों के सर्दारों ) के अहंकार ( और उद्दण्डता ) में और अधिकता करदी ( और वह समझने लगे कि जो कुछ हैं—हम ही हैं। ख़ुदा कोई नहीं ) ॥

और यह ( बात भी सत्य है ) कि जिस प्रकार तुमने ( हे जिन्नो ! ) ख़्याल किया था कि ख़ुदा तआला ( एक बार मारने के पश्चात ) किसी को दुबारा ज़िन्दा न करेगा। और यह ( भी उन्होंने अपनी जाति से कहा) कि हमने (नियमानुसार) आकाश को टटोल कर कर देखा, तो उसे कठोर चौकीदारों और अग्नि की लपटों से भरा हुआ पाया ( और आकाश की एक ख़बर भी हम अब न जान सके ) यद्यपि हम ( बराबर ख़बरें ) सुनने के लिये आकाश पर ( अपने २ ) ) ठिकानों में बैठा करते थे ( और ज्योतिषियों को उनसे सूचित कर दिया करते थे )—परन्तु ( अब ) जो कोई (आकाशीय ख़बरें ) सुनना चाहता है, तो वह अपने लिये ( एक आग की ) लपट को घात लगाये हुये पाता है। और ( अब ) हमें ( कभी ) यह नहीं विदित ( हो सकता ) कि पृथ्वी पर बसने वालों को ( ख़ुदा ) बुराई पहुंचानी चाहता है, वा उन्हें उनका पालन कर्त्ता कुछ भलाई पहुंचानी चाहता है। और (इसमें कुछ) सन्देह नहीं कि हममें ( क़ुर्आन उतरने और नबी आने से पहिले भी ) नेक भी होते थे और उनके अतिरिक्त ( अर्थात बुरे ) भी, हममें होते थे ( अर्थात बुरे भले ) विभिन्न मार्गों पर ( चलते ) थे ॥

और हम तो ( ख़ुदा की कृपा से इस बात को अब पूरी तरह ) समझ गये हैं कि ( यदि ) अल्लाह ( हम ) को ( हमारे दुराचार के कारण से अज़ाब देना चाहे, तो ) हम ( उसको ) पृथ्वी में ( कहीं छिप छिपा कर अज़ाब देने से ) विवश नहीं कर सकते और न हम उसको ( पृथ्वी के अतिरिक्त कहीं ) भाग कर ( उसके इस इरादे के पूरा करने से ) विवश कर सकते हैं-( अतः हमारे समीप तो अब उसको अवज्ञा करना बिल्कुल अज्ञानता ) और ( पूर्णतया मूर्खता है । अतः ) जब हमने हिदायत ( अर्थात धर्म-मार्ग बताने वाले क़ुर्आन) को सुना ( तुरन्त ) उस पर ईमान ले आये। अतः जो कोई अपने पालन कर्त्ता पर ईमान ले आया, तो उसको न कमी का भय होगा और न ज़्यादती का ( अर्थात न उसका कोई शुभ-कर्म कम लिखा जायगा, न कोई अशुभ-कर्म ज़्यादा ) ॥

رَهَقًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ
فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَاَمَّا
الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَّاَنْ
لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً
غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ
يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا
تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ
يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝
قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ۝ قُلْ
اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ۝ قُلْ اِنِّيْ
لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ
مُلْتَحَدًا ۝ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ
يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

ع ٤

(किसी तरह के ज़ोर व) ज़ुल्म का ० और हममें से बाज़ तो फ़र्मांबर्दार ( बन्दे ) हैं और बाज़ ( हुक्म से ) सर्ताबी करते हैं-तो जिन्होंने फ़र्मांबर्दारी ( इख़्तियार ) की, उन्होंने सोधा रस्ता ढूंढ निकाला ० और जिन्होंने सर्ताबी की, वह ( टेढ़े रस्ते चले और ) आख़िरकार दोज़ख़ के कुन्दे बन गये ० और ( ऐ पैग़म्बर ! लोगों से कहो कि ख़ुदा फ़र्माता है कि अह्ले-मक्का दीन के ) सीधे रस्ते पर क़ायम रहते, तो हम उनको पानी की रेल-पेल से सेराब करते ० ताकि समय की नेअमत में उन ( की शुक्र-गुज़ारी ) का इम्तिहान करें और जो शख़्स अपने पर्वर्दिगार की याद से रूगर्दानी करेगा, तो वह उसको अज़ाब-सख़्त में लेजा दाख़िल करेगा ० और मस्जिदें तो ख़ुदा ही ( की इबादत ) के लिये हैं—तो लोगो ! इनमें ख़ुदा के साथ किसी ( और ) को न पुकारो ० और जब बन्दए-ख़ुदा (यानी मुहम्मद ) ख़ुदा की इबादत करने खड़े होते हैं, तो ( लोग उनके गिर्दा गिर्द घिरे आते हैं और ) क़रीब है कि ( उनको ) चिमट जायँ ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि मैं तो सिर्फ़ अपने पर्वर्दिगार की इबादत करता हूं और किसी को उसका शरीक नहीं गर्दानता ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि तुम्हारा नुक़्सान या फ़ायदा ( कुछ भी ) मेरे इख़्तियार में नहीं ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि ख़ुदा ( के ग़ज़ब ) से कोई भी मुझ को पनाह नहीं दे सकता और न उसके सिवा कहीं मुझको ठिकाना मिल सक्ता है ० मेरा बचाव तो इसी में है कि ख़ुदा की तरफ़ से ( जो हुक्म आया है, लोगों को ) पहुंचा दूं और उसके पैग़ाम ( सबको सुना दूं ) और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़र्मानी करेगा, तो कुछ शक नहीं कि आख़िरकार उसके लिये दोज़ख़ की आग है—

---

और ( हम इस बात को ख़ूब समझ गये हैं कि ) हममें के कुछ लोग ( सच्चे ) मुसलमान हैं और कुछ लोग ( कट्टर ) अत्याचारी ( तथा उद्दण्ड ) । सो जो लोग मुसलमान हैं, वही सब ( वह भाग्यवान ) लोग हैं, जिन्होंने ( मनोरथ को पा लिया और बुराई से बच गये और ) भलाई को ढूंढ लिया । और रहे ( काफ़िर ) अत्याचारी, तो वह दोज़ख़ का ईंधन हैं ( वह सर्वदा उसीमें पड़े जला करेंगे ) । और ( हे मुहम्मद ! तुम उन लोगों से ) यह ( भी कहो कि मेरे पास इस बात की भी वही आई है ) कि यदि यह ( कुछ भी ) सीधे होते, तो हम उनको ( और उनके सूखे खेतों को ) अवश्य अधिकता से पानी पिलाते ( और अधिकता से अन्न उगाते ) जिससे कि हम उन्हें ( अपनी ) उस ( कृपा ) में परखते ( और देखते कि यह उसका अनादर करते हैं वा आदर ) और जो कोई अपने पालनहारे के स्मरण से (दुनिया में) मुंह मोड़ेगा ( अन्त में ) ख़ुदा उसको एक कठिन अज़ाब में झोंकेगा । और ( हे रसूल ! तुम उनसे ) यह ( भी कहो ) कि समस्त मसजिदें अल्लाह ( की सज्दा करने और उसकी उपासना करने ) के लिये ( नियत ) हैं ( किसी को यह अधिकार नहीं कि वहां अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की पूजा करे । और निस्सन्देह अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे को पूजना महा पाप है) । अतः (हे मनुष्यो !) तुम किसी को भी अल्लाह के साथ ( उसकी ईश्वरीयता में साझी न ठहराओ और कभी उसको) न पुकारो और यह (बहुत बड़ी मूर्खता है कि ) जब अल्लाह का ( मुख्य तथा प्रिय ) बन्दा ख़ुदा ( की अद्वैता का उपदेश देता और ) ख़ुदा को पुकारता हुआ ( कहीं ) खड़ा होता है, तो यह ( काफ़िर इतना बुरा मानते हैं कि) मानो यह हमारे बन्दे (अर्थात मुहम्मद) पर (कष्ट डालने के लिये) एकत्रित हो जावेंगे (और उन पर धावा बोल देंगे) ॥

( तो हे पैग़म्बर ! ) तुम (उनसे) कहदो कि (तुम मुझ पर क्यों इस प्रकार आक्रमण करते हो । मैं कोई ऐसे काम में तत्पर नहीं हूं जो, आक्षेप योग्य हो)। मैं तो बस अपने पालन कर्ता को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराता । (और) तुम (उनसे) कहदो कि (इसके अतिरिक्त) न तुम्हें हानि पहुंचाना मेरे अधिकार में है और न राह पर लाना (अर्थात मेरा काम तो केवल धर्म-प्रचार है ) ॥

( हे मुहम्मद ! तुम उनसे ) कहदो कि ( न मुझे यह अधिकार है कि मैं तुम्हारा सहमत हो जाऊँ-क्योंकि मुझे निश्चय है कि यदि मैं ऐसा करूं, तो ) मुझे ख़ुदा ( के अज़ाब ) से कोई शरण नहीं देगा । और उसके (दर्बार के) अतिरिक्त मुझे कहीं शरण न मिलेगी । मैं तो ख़ुदा की ओर से केवल प्रचार करता और सन्देश पहुंचाता हूं और ( तुमको बताता हूं कि ) जो कोई अल्लाह का और उसके रसूल का कहा न मानेगा, तो उसके लिये दोज़ख़ की आग ( तय्यार ) है । ( ऐसे लोग ) सर्वदा उसमें ( पड़े जलते ) रहेंगे ॥

फ़ीहा अबदा ● हत्ता इज़ा रऔ मा यूअदूना फ़सयअलमूना

فِيهَا أَبَدًا ● حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ
مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ● قُلْ إِنْ أَدْرِي
أَقَرِيبٌ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ●
عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ● إِلَّا
مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ
يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ● لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا
رِسَالَاتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ
عَدَدًا ●

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ عِشْرُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ●
يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ● قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ● نِصْفَهُ أَوِ انْقُصْ
مِنْهُ قَلِيلًا ● أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ●
إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ● إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ
هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَأَقْوَمُ قِيلًا ● إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ

जिसमें वह लोग सदा को ( और हमेशा ) हमेशा रहेंगे ० ( मगर काफ़िर तो उस वक़्त तक इन बातों को मानने वाले नहीं ) जब तक उस ( अज़ाब ) को न देखलें, जिसका इनसे वादा किया जाता है–तो उस वक़्त इनको मालूम हो जायगा कि किसके मददगार बोदे हैं और ( किसका ) जथा ( शुमार में ) कम ( है ) ० ( ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से ) कहो कि जिस ( अज़ाब ) का तुमसे वादा किया जाता है, मैं नहीं जानता कि वह नज़दीक है या मेरा पर्वर्दिगार एक ख़ास वक़्त तक उसको मुल्तवी रक्खेगा० उसी को ग़ैब की ख़बर है—तो वह अपनी ग़ैब की बातें किसी पर ज़ाहिर नहीं किया करता ० मगर ( हां ! अपने ) बर्गुज़ीदा पैग़म्बरों पर (मस्लहतन् कोई बात ज़ाहिर करनी चाहता है ) तो वह ( भी इस एहतियात से कि ) उनके आगे और उनके पीछे ( फ़रिश्तों का ) पहरा ( उनके साथ ) रखता है ० ताकि देख ले कि पैग़म्बरों ने अपने पर्वर्दिगार के पैग़ाम ( लोगों को ठीक ठीक ) पहुंचा दिये और उनके सारे मामलात उसीके इहाते ( इल्म ) में हैं और उसने तमाम चीज़ों की गिन्ती ( तक अपनी नज़र में कर ) रक्खी है ०

## सूरत—मुज़म्मिल

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें २० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ऐ ( पैग़म्बर ! तुम ) जो ( वही की हैबत से ) चादर लपेटे पड़े हो ० रात ( के वक़्त नमाज़ ) में खड़े रहा करो—( सो भी सारी रात नहीं, बल्कि ) सारी रात से कम ( यानी ) आधी रात या उसमें से ( भी ) थोड़ा सा कम कर लिया करो ० या आधो से ( कुछ ) बढ़ा दिया करो और क़ुर्आन को ख़ूब ठहरा-ठहरा कर पढ़ा करो ० हम अन्क़रीब तुम पर एक बड़े भारी हुक्म ( यानी तब्लीग़-रिसालत ) का बोझ डालने को हैं—( तो अपने तईं रियाज़त का ख़ूगर करो ) ० बेशक रात का उठना ( नफ़्स को ) ख़ूब ज़ेर करता है और उस वक़्त दुआ भी ठीक ( दिल से ) निकलती है ० और दिन के वक़्त तो तुमको—

---

( हे पैग़म्बर ! यह तुम्हारी बातों को सत्य नहीं मानेंगे ) जब तक कि ( उन पर ख़ुदा का अज़ाब न अवतीर्ण हो और ) जब (तक) यह ( न ) देख लें ( कि ) जो कुछ कि ( दुनिया में ) उनसे वादा हुआ ( था, वह अब परलोक में पूरा हो रहा है ) । अतः ( उस समय ) यह ( ख़ूब ) जान लेंगे कि किसके सहायक निर्बल और संख्या में कम हैं (मूर्ति-उपासकों के वा सत्य-उपासकों के । हे पैग़म्बर ! यह निर्लज्ज और ढीठ लोग जो तुमसे प्रतिदिन क़यामत के विषय में हंसी तथा इन्कार की रीति पर पूछ रहे हैं, तो तुम उनसे अत्यन्त सहनशीलता तथा धीरज के साथ ) कहदो कि मैं नहीं जानता कि जिस दिन का तुमसे वादा किया गया है, वह ( बिल्कुल ) निकट है—वा मेरा पालन कर्त्ता उसे कुछ समय के पश्चात ( उपस्थित ) करेगा ॥

गुप्त का जानने वाला ( तथा सर्वज्ञ ) तो वही है । अतः वह गुप्त ( की बात जिसका प्रगट करना अनुचित हो ) किसी पर प्रगट नहीं करता–किन्तु (हाँ ! अपने) रसूलों में से जिसको पसन्द करता है ( उसे उतना गुप्त-ज्ञान प्रदान कर देता है, जिसका सम्बन्ध पैग़म्बरी से हो और ) फिर वह ( इस तरह बताता है कि ) उस रसूल ( के पास किसी शैतान को फटकने नहीं देता, जिससे कि शैतान उसके ज्ञान में भूल न डाल दे ) । अतः वह उसके आगे पीछे ( अपने चार ) रक्षक फ़रिश्ते ( चलते फिरते में ) चलाता है । ( और जो कुछ बताता है, फ़रिश्तों के द्वारा बताता है) जिससे कि वह जान ले कि ( उन फ़रिश्तों ने ) अपने पालन कर्त्ता के सन्देशों को ( उसके रसूलों तक ज्यों का त्यों) पहुंचा दिया और (सब) फ़रिश्तों की दशा अल्लाह के (ज्ञान के) घेरे में है और उसको (दुनिया की) प्रत्येक वस्तु की गिनती मालूम है ॥

## सूरत—मुज़म्मिल

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें २० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

हे कमली ओढ़ने वाले ! ( पैग़म्बर ) रात को जागा करो–किन्तु थोड़ी रात । ( और इससे प्रयोजन यह है कि ) आधी रात (जागा करो ) वा उससे भी कुछ कम वा ( थोड़ा बहुत ) उससे कुछ अधिक-( परन्तु सारी २ रात न जागो, तो बहुत अच्छा है ) और क़ुर्आन को (ख़ूब) धीरे धीरे ( ठहरा ठहरा कर ) पढ़ा करो । निस्सन्देह हम शीघ्र तुम पर एक भारी कलाम ( अर्थात पवित्र कलाम ) अवतीर्ण करने वाले हैं । ( परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम रात को बिल्कुल न उठो । रात को उठो और अवश्य उठो ) । निस्सन्देह रात का उठना मानसिक इच्छा के कुचलने ( के विषय ) में बहुत ( उत्तम और ) कठिन ( उपाय ) है और ( प्रार्थना करने और क़ुर्आन ) पढ़ने की दृष्टि से भी ( रात का उठना ) बहुत अच्छा है ( और चूंकि ) तुमको दिन में—

سَبْحًا طَوِيلًا ۝ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ
تَبْتِيلًا ۝ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا
هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝ وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا
يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝ وَذَرْنِي
وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا
إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ۝ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ
وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ
وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا
إِلَيْكُمْ رَسُولًا ۝ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ
فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ۝ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن
كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝ السَّمَاءُ
مُنفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۝ إِنَّ هَٰذِهِ

( वाज़ व नसीहत में ) बड़ा मशग़ला रहा करेगा ० और अपने पर्वदिगार का नाम लेते रहो और ( सबसे ) टूट कर उसीके हो रहो ० ( और चूंकि वह ) मश्रिक़ और मग़्रिब ( यानी तमाम जहान का) मालिक है (और) उसके सिवा कोई माबूद नहीं----तो उसीको ( अपना ) कार--साज़ समझो ० और ( काफ़िर ) जैसी जैसी बातें ( तुम्हारी निस्बत ) कहते हैं, उन पर सब्र करो और वज़ेदारी के साथ उनसे अलग-थलग रहो ० और ( यह ) जो झुटलाने वाले खुश-हाल लोग हैं, हमको और इनको ( अपने अपने हाल पर ) रहने दो-( हम इनसे भुगत लेंगे ) और इनको थोड़ी सी मोहलत दो ० बेशक हमारे हां ( इनके जकड़ने को ) बेड़ियां और ( इनके झोंक देने को ) दोज़ख़ ० और ( इनके खाने को ऐसा ) खाना, जो गले से न उतरे और ( और बहुत क़िस्मों के ) अज़ाब-दर्दनाक ( मौजूद ) हैं ० (और यह अज़ाब इनको उस दिन होंगे ) जबकि ज़मीन और पहाड़ हिलने लगें और पहाड़ ( एक दूसरे से टकरा कर रेत के ) भुर-भुरे टीले हो जाएं ० ( लोगो ! ) जिस तरह हमने फ़िर्औन की तरफ़ ( मूसा को ) पैग़म्बर ( बनाकर ) भेजा था, तुम्हारी तरफ़ भी (मुहम्मद को ) रसूल (बनाकर) भेजा है, जो ( क़यामत के दिन ) तुम्हारे मुक़ाबले में गवाही देंगे ० सो फ़िर्औन ने ( उन ) पैग़म्बर की नाफ़र्मानी की, तो हमने उसको बड़े वबाल में धर पकड़ा ० पस अगर तुम ( भी ) नहीं मानोगे, तो उस दिन ( की मुसीबतों ) से कैसे बच सकोगे, जो ( मारे सख़्ती के ) बच्चों को ( वक़्त से पहिले ) बूढ़ा करदे ० ( और ) उस दिन आस्मान फट जायगा-( यह ) ख़ुदा का वादा ( है, जो ) होकर रहेगा ० यह—

---

बहुत ज़्यादा काम रहना है ( दीन का भी और दुनिया का भी। और नफ़्ल नमाज़ पढ़ने का अधिक अवसर नहीं मिलता। इस लिये भी रात का जागना आवश्यक है ) और ( अल्लाह की उपासना के लिये केवल रात ही को कुछ विशेषता नहीं। दिन हो वा रात-जब अवसर मिले ) तुम अपने पालन कर्त्ता का नाम पढ़े जाओ। और तुम तो ( समस्त सांसारिक सम्बन्ध ) तोड़ करके ( अपने ) ख़ुदा ही की ओर चित्त लगाओ। वह पूर्व और पच्छिम का पालनहारा है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य ( बननें के योग्य ) नहीं है। तो तुम ( अपने हर काम में ) उसी को ( अपना ) वकील ( तथा कार्य कर्त्ता ) बना लो। और जो कुछ ( यह काफ़िर ) कहते (और तुम्हारा अनादर करते) हैं ( उस पर ) तुम सन्तोष करो और भलाई के साथ उनको छोड़ दो। और इन (अहंकारी तथा उद्दण्ड) धनवानों झुठलाने वालों को और हमको छोड़ दो और कुछ उनको ढील दो ( फिर देखो कि हम उनका क्या बनाते हैं )। निस्सन्देह हमारे पास ( उन काफ़िरो के लिये ) बेड़ियां हैं और आग का ढेर है। और गले में फंसने वाला खाना है और ( उसके अतिरिक्त एक ) कष्ट दायक अज़ाब है॥

जिस दिन पृथ्वी और पर्वत कांपेंगे, और पर्वत ( टुकड़े २ होकर ) भुरभुरी रेत हो जावेंगे ( उस दिन उन पर अपने कुकर्मों तथा कुफ़्र की पूरी २ दशा प्रगट हो जावेगी )। निस्सन्देह ( हे मनुष्यो ! आज हमने कोई मुहम्मद को नवीन रसूल बनाकर नहीं भेजा ) जैसे हमने फ़िर्औन( की जाति ) के पास ( मूसा ) रसूल भेजा था, इसी तरह हमने तुम्हारी ओर ( भी ) रसूल भेजा, जो तुम पर गवाह है ( अर्थात ख़ुदा के समक्ष तुम्हारे सुकर्मों कुकर्मों का एक सर्कारी गवाह है )॥

तो ( जिस प्रकार ) फ़िर्औन ने ( हमारे ) रसूल का कहा न माना ( और ) फिर हमने उसकी कठिन पकड़ की ( ठीक उसी प्रकार हम तुमसे भी तुम्हारे झुठलाने तथा कुकर्मों के विषय में अवश्य पूछ गछ करेंगे। सो हमें भी तो बताओ कि तुमने सोचा क्या है ? ) यदि तुम ( इसी ) कुफ़्र ( शिर्क ) ही पर ( अड़े ) रहे, तो उस दिन के अज़ाब से क्योंकर बचोगे, जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा। उस दिन ( यह चौड़ा चकला ) आकाश ( बिल्कुल ) फट जायगा ( और फिर ) उस ( के अज़ाब ) का वादा तो पूरा ही होने वाला है॥

تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۞ إِنَّ رَبَّكَ
يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ
وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ
يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصُوهُ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ عَلِمَ
أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَرْضَىٰ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ
فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَآخَرُونَ
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا
اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ
خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ
أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۞

سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَخَمْسُونَ آيَةً

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ

नसीहत ( की बातें ) हैं, तो जो चाहे अपने पर्वर्दिगार तक ( पहुंचने का ) रस्ता इख़्तियार करे ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम्हारा पर्वर्दिगार जानता है कि तुम और चन्द लोग, जो तुम्हारे साथ हैं ( कभी ) दो-तिहाई रात के क़रीब और ( कभी ) आधी रात और ( कभी ) तिहाई रात ( नमाज़ में ) खड़े रहते हो और रात और दिन का ( ठीक ) अन्दाज़ा अल्लाह ही कर सकता है। उसको मालूम है कि तुम वक़्त का हिफ़्ज़ नहीं कर सकते, तो उसने तुम्हारे हाल पर रह्म किया ( और वक़्त की क़ैद उठा दी )-तो ( अब तहज्जुद में ) जितना कुर्आन आसानी से पढ़ा जाय, पढ़ लिया करो। उसको मालूम है कि तुममें से बाज़ ( आदमी ) बीमार पड़ेंगे और बाज़ ख़ुदा के फ़ज़्ल ( यानी मुआश ) की तलाश में ( इधर उधर ) मुल्क में सफ़र कर रहे होंगे और बाज़ ख़ुदा की राह में ( दुश्मनों से ) लड़ते होंगे-तो ( बहर-कैफ़ ) जितना कुर्आन ( तहज्जुद में ) आसानी से पढ़ा जाय, पढ़ लिया करो और नमाज़ ( पंजगाना ) पढ़ते रहो और ज़कात देते रहो और ( ज़कात के अलावा ) अल्लाह को ख़ुश-दिली से क़रज़ (भी) दिया करो और जो नेकी ( भी ) अपने लिये पहिले से ( ज़ाद-आख़िरत बनाकर ) भेज दोगे, उसको अल्लाह के हां ( चल कर ) पाओगे कि वह ( तुम्हारे हक़ में दुनियावी फ़ायदों से ) बहुत बेहतर है और उस का अज्र भी बहुत बड़ा है और अल्लाह से ( अपने गुनाहों की ) माफ़ी मांगते रहा करो। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहर्बान है ०

## सूरत—मुद्दस्सिर

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५६ आयतें और २ रुकूअ हैं॥

---

निस्सन्देह यह ( कुर्आन जिसकी आयतें पढ़ी जा रही हैं ) शिक्षा ( से परिपूर्ण एक पवित्र पुस्तक ) है। सो जो कोई चाहे ( इससे शिक्षा प्राप्त करे और ) अपने पालन कर्त्ता की ओर राह पकड़ ले। ( हे पैग़म्बर ! ) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहारा ( इन पथ-भ्रष्टों को भी ख़ूब ) जानता है ( और इस बात को भी ) कि तुम और तुम्हारे साथियों में से एक समूह ( समय का ठीक अनुमान न होने के कारण से कभी ) दो तिहाई रात और ( कभी ) आधी रात और ( कभी ) तिहाई रात के निकट खड़ा होता है ( और उसकी उपासना आराधना में लगा रहता है )। और रात और दिन ( के समय ) का ( ठीक ) अनुमान तो ( केवल ) अल्लाह ( ही ) को है। उसीको ( यह भी ) ज्ञान है कि तुम ( समय का ठीक ) अनुमान न कर सकोगे, इसलिये उसने तुमको क्षमा देदी, तो अब ( जितनी पूजा पाठ सरलता पूर्वक तुमसे हो सके—करो। अपने ऊपर कष्ट न डालो और ) जितना कुर्आन पढ़ना तुमको सहज हो ( उतना ही ) पढ़ो॥

अल्लाह को ज्ञान है-कि तुममें से कितने ही ( मनुष्य ) बीमार होंगे और कितने ही और लोग पृथ्वी में ( पर्यटन करेंगे और देश विदेश ) अल्लाह की कृपा को ढूंढते हुये फिरेंगे। और कितने ही लोग अल्लाह के मार्ग में ( काफ़िरों से ) लड़ते होंगे, तो ( ऐसी दशा में सारी रात जागने की आज्ञा देना बड़े संकट में डालना है। अतः जिस प्रकार सरलता पूर्वक उपासना सम्भव हो, करो और ) जितना ( कुर्आन पढ़ना ) सहज हो, उसमें से पढ़ लिया करो॥

और ( पाबन्दी के साथ समय पर ) नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात देते रहो और अल्लाह ( के नाम कंगालों तथा अधिकारियों ) को क़र्ज़-हसना दिया करो। और जो नेकी अपने लिये ( अल्लाह के दर्बार में अपने जीते जी मरने से ) पहिले भेजोगे, उसी को ( क़यामत में ) अल्लाह के समीप उत्तम ( दशा में ) और फल में बढ़ा हुआ पाओगे। और अल्लाह से तौबा ( तथा क्षमा-याचना ) करते रहो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला ( तथा ) कृपालु है ( वह तुम पर अवश्य कृपा तथा दया करेगा )॥

## सूरत—मुद्दस्सिर

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ५६ आयतें और २ रुकूअ हैं॥

بسم الله الرحمن الرحيم

يٰأيها المدثر ۝ قم فأنذر ۝ وربك فكبر ۝ وثيابك

فطهر ۝ والرجز فاهجر ۝ ولا تمنن تستكثر ۝

ولربك فاصبر ۝ فإذا نقر في الناقور ۝

فذٰلك يومئذ يوم عسير ۝ على الكٰفرين

غير يسير ۝ ذرني ومن خلقت وحيدا ۝

وجعلت له مالا ممدودا ۝ وبنين شهودا ۝

ومهدت له تمهيدا ۝ ثم يطمع أن أزيد ۝ كلا

إنه كان لأٰيٰتنا عنيدا ۝ سأرهقه صعودا ۝

إنه فكر وقدر ۝ فقتل كيف قدر ۝ ثم قتل

كيف قدر ۝ ثم نظر ۝ ثم عبس وبسر ۝ ثم

أدبر واستكبر ۝ فقال إن هٰذا إلا سحر يؤثر ۝

إن هٰذا إلا قول البشر ۝ سأصليه سقر ۝ وما

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान ( है ) ० ऐ (पैग़म्बर ! तुम) जो ( वही की हैबत से ) चादर लपेटे पड़े हो ० उठो ! और ( लोगों को अज़ाब-ख़ुदा से ) डरावो ० और अपने पर्वर्दिगार की बड़ाइयां बयान करो ० और अपने कपड़ों को ( ख़ूब अच्छी तरह ) पाक ( व साफ़ ) और नजासत से अलग रक्खो ० और ( तब्लीग़-रिसालत को ) बड़ा कार ( नुमायां ) समझ कर ( लोगों पर ) एहसान न रक्खो ० और ( तब्लीग़-रिसालत में जो मुशकिलात पेश आयें, उन पर ) अपने पर्वर्दिगार (की रज़ाजोई) के लिये सब्र करो ० फिर जब सूर फूंका जायगा ० तो वह दिन काफ़िरों के हक़ में ऐसा मुश्किल दिन होगा कि उसमें ( मुत्लक़ ) आसानी नहीं होगी ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) हमको और उस ( नाबकार ) को ( अपने अपने हाल पर ) रहने दो ( कि हम उससे भुगत लेंगे )-जिसे हमने अकेला ( यानी बेसामान---महज़ ) पैदा किया ० और ( फिर ) उसको बहुत माल इनायत किया ० और ( माल के अलावा ) बेटे ( जो उसके साथ लड़ने मरने को ) मौजूद हैं ० और हर तरह का सामान ( दुनिया ) उसके लिये मुहय्या कर दिया ० इस पर भी वह ( यह बेजा ) तवक़्क़ो लगाये बैठा है कि हम ( आख़िरत में उसको कुछ ) और ( भी ) देंगे ० सो यह तो होना नहीं----( क्योंकि ) वह हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ था ० हम अन्क़रीब उसको अज़ाब-सख़्त में मुब्तला करेंगे ० ( क्यों कि जब उससे क़ुर्आन की निस्बत पूछा गया, तो ) उसने सोचा और अटकल दौड़ाई ० तो उसको ( ख़ुदा की ) मार ! ( देखो तो ) कैसी अटकल दौड़ाई ० फिर ( दुबारा ) ग़ौर किया ० फिर त्यूरी चढ़ाई और बुरासा मुंह बनाया ० फिर पीठ फेर कर चलता बना और शेख़ी में आ गया ० और लगा कहने कि यह ( क़ुर्आन ) तो बस ( एक क़िस्म का ) जादू है, जो ( अगलों से ) चला आता है ० यह (क़ुर्आन) तो (बस किसी) बशर का कहा हुआ है ० ( सो ) अन्क़रीब हम उसको ( लेजा ) दोज़ख़ में झोंक देंगे ० और ( ऐ पैग़म्बर ! )—

---

हे चादर ओढ़ने वाले ! उठो !! (अल्लाह की उपासना करो और पापियों को ख़ुदा के अज़ाब से) डराओ। और अपने पालन कर्त्ता की बड़ाई ( वर्णन) करो और अपने कपड़ों को पवित्र (तथा स्वच्छ) रक्खो। और अपवित्रता से दूर रहो और किसी पर इस प्रकार उपकार न करो, कि (एक समय तो उपकार करो और दूसरे समय) अधिक बदला चाहो। और अपने पालन कर्त्ता (की प्रसन्नता) के लिये धीरज धरो। ( और इन दुष्ट काफ़िरों से बदला लेने के ख़्याल को भी दिल में न आने दो। निस्सन्देह ) जब सूर ( नरसिंगा ) फूंका जावेगा, तो ( उन्हें अपनी मूर्खता का पूरा पता चल जायगा। निस्सन्देह ) वह दिन काफ़िरों पर एक कठिन दिन है, कुछ सरल नहीं है॥

( हे पैग़म्बर ! बस ) तुम हमें और उसे छोड़ दो, जिसे हमने अकेला उत्पन्न किया ( अर्थात वलीद को ) और (फिर) हमने (ही) उसे बहुत सा धन और उपस्थित रहने वाले (और आज्ञाकारी) पुत्र दिये और हर प्रकार का सामान उसके लिये इकट्ठा किया -( परन्तु) फिर ( भी उसका पेट नहीं भरा और अभी तक ) उसको इस बात का लोभ है कि अभी और भी हम ( उसको धन दौलत ) दें ( किन्तु अब ऐसा ) कदापि नहीं ( हो सकता। उसे अब कुछ नहीं दिया जायगा – क्योंकि ) वह हमारी आयतों का विरोधी है ( और दोज़ख़ के अज़ाब का अधिकारी है )। हम शीघ्र ( क़यामत के दिन ) उसको ( ज्वालामुखी ) सऊद पर्वत पर चढ़ावेंगे ( जो एक दीवार की तरह सीधा पर्वत है। जिस पर चढ़ना उतरना बहुत कठिन है )॥

( इसलिये कि उसको यात्री तथा बुद्धिमान समझ कर जब काफ़िरों ने उससे पूछा कि तुम्हारे ख़्याल में मुहम्मद जिस पुस्तक को पढ़ते हैं, वह कैसी पुस्तक है ? तो ) उसने सोचा और एक ( असत्य ) विचार स्थिर किया ( और उसको दिल में रक्खा )। सो वह (एक परदेसी की मौत ) मारा जाय कि उसने ( हमारे पवित्र क़ुर्आन के विषय में अशुद्ध) विचार (स्थिर किया और न जाने) कैसे स्थिर किया !! ( और विचार प्रगट करने से पहिले उसने कुछ सोचा और ) फिर ( पूछने वालों की ओर ) देखा, फिर त्योरी चढ़ाई और ( अपनी घृणा की अधिकता प्रगट करने के लिये ) मुंह बनाया। फिर ( क़ुर्आन से ) पीठ फेरी और अहंकार किया। फिर ( मुंह फोड़कर ) बोला कि यह ( क़ुर्आन ) तो बस ( एक खुला ) जादू है, जो ( पहिले से ) चला आता है ( और यह कदापि ईश्वरीय वाक्य नहीं है, बरन ) यह तो बस ( किसी ) मनुष्य का वचन है। ( तो यह दुष्ट जाता कहाँ है ! ) हम अभी उसको दोज़ख़ ( की आग ) में झोंक देंगे ( बस एक ज़रा उसके मरने की देर है )—

أَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ۝ لَا تُبْقِىْ وَلَا تَذَرُ ۝ لَوَّاحَةٌ
لِّلْبَشَرِ ۝ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝ وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحٰبَ
النَّارِ إِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ
وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ إِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا
الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۝
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ
وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِىَ إِلَّا ذِكْرٰى
لِلْبَشَرِ ۝ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝ وَالَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ۝ وَالصُّبْحِ
إِذَآ أَسْفَرَ ۝ إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ۝ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۝
لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ أَنْ يَّتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝ كُلُّ نَفْسٍۭ
بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝ إِلَّآ أَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝ فِىْ

جنّٰت

तुम क्या समझे कि दोज़ख़ है क्या चीज़ ० वह ( तस्मा ) न लगा रक्खे और ( भसम किये बिदून ) न छोड़े ० ( और आदमी के तन ) बदन को ( मार के ) झुलस दे ० उस पर उन्नीस ( पासबान ताईनात ) हैं ० और हमने दोज़ख़ के पासबान ( आदमी नहीं, बल्कि ) फ़रिश्ते ही बनाये हैं और उनकी ( उन्नीस की ) गिन्ती ( भी ) इस ग़रज़ से ठहराई है कि जो लोग ( क़यामत के ) मुन्किर हैं, उनको ( इन बातों से ) और ज़ियादा परेशानी हो ( और ) ताकि अह्ले-किताब ( सुनते के साथ) यक़ीन करलें और जो मुसल्मान हैं ( इन बातों से ) उनका ईमान और ज़ियादा हो और अह्ले-किताब और (मुसल्मान इन बातों में किसी तरह का) शुबहा न लायें और जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का ) मरज़ है और जो ( खुल्लम खुल्ला ) काफ़िर हैं ( सुनकर ) बोल उठें कि ऐसी बातों के कहने से ख़ुदा की क्या ग़रज़ है ? ( ऐ पैग़म्बर ! ) यूं ही (तो) ख़ुदा जिसको चाहता है, गुमराह करता है और जिसको चाहता है, राह-रास्त दिखाता है और तुम्हारे पर्वर्दिगार ( की मख़्लूक़ात ) के लश्करों का हाल उसके सिवा कोई नहीं जानता और इन बातों से लोगों को नसीहत करनी मक़्सूद है और बस ० सच तो यह है कि ( हमको ) चाँद की क़सम ० और रात की, जब जाने लगे ० और सुबह की, जब रोशन हो जाय ० कि (क़यामत की बड़ी) बड़ी मुसीबतों में से यह ( दोज़ख़ भी बजाए-ख़ुद) एक ही ( मुसीबत ) है ( यानी सबसे बड़ी है ) ० (यह) आदमी के डराने को (बस करती है) ० (मगर) उसीको, जो तुममें से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना ( चाहे ) ० हर शख़्स अपने आमाल के बदले में गिर्वी है ० मगर जिनके नामए आमाल उनके दहिने हाथों में दिये गये होंगे०—

और ( हे पैग़म्बर ! ) तुम्हें क्या ख़बर कि वह आग कैसी होती है ? वह न (दोज़ख़ में जाने वालों के किसी अंग को) सम्पूर्ण रहने देगी और न किसी ( अज़ाब पाने वाले ) को ( अपना अज़ाब चखाए बिना ) छोड़ देगी-( बरन वह हर काफ़िर दुष्टात्मा की ) खाल को झुलस देगी। उस पर उन्नीस ( फ़रिश्ते नियत ) हैं ( जो दुराचारियों को तरह २ का अज़ाब देंगे )। और हमने दोज़ख़ के दारोग़ा ( तथा द्वारपाल ) केवल फ़रिश्ते ही बनाये हैं ( किसी मनुष्य पर यह काम नहीं डाला। और फ़रिश्ते भी ऐसे २ हैं कि उनमें का एक फ़रिश्ता यदि दुनिया में आ जाय, तो सारी दुनिया के जिन्नात तथा मनुष्य के लिये अकेला काफ़ी हो ) और उनकी ( यह ) संख्या हमने केवल काफ़िरों की ( समझ बूझ की ) परीक्षा के लिये वर्णन की ( और इस प्रयोजन से ) जिससे कि जिन लोगों को ( तौरेत ) पुस्तक दी गई है, वह ( इस बात को अपनी पुस्तक के अनुसार समझ कर क़ुर्आन की सचाई का ) विश्वास करें और ( उनके विश्वास को देखकर ) ईमान वालों के ईमान में और अधिकता हो। और किताब वाले (यहूदी ईसाई) और ईमान वाले (मुहम्मद के रसूल होने और क़ुर्आन की सत्यता में किसी प्रकार की ) शंका न करें। और जिनके दिलों में ( कपट का ) रोग है, वह और काफ़िर ( आश्चर्य तथा इन्कार ही करते रहें और यही ) कहते रहें कि अल्लाह का इस बात ( के वर्णन करने ) से क्या प्रयोजन है ॥

(हे पैग़म्बर !) इन्हीं बातों से ख़ुदा जिसे चाहता है, पथ – भ्रष्ट करता है – जिसे चाहता है, राह दिखा देता है। और (हे पैग़म्बर !) तुम्हारे पालन कर्त्ता की सेना को उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता और यह ( क़ुर्आन का उतारना केवल ) लोगों की शिक्षा के लिए है ( उसे सच्चा मानेंगे उनके लिये उत्तम है। न मानेंगे भड़कती हुई अग्नि का ईंधन बनेंगे । और दोज़ख़ के विषय में काफ़िर जैसा विचार करते हैं, वैसा ) कदापि नहीं है। ( हमको ) चाँद की शपथ ! ( जब वह चाँदनी फैलाने लगे ) और रात की शपथ ! जब वह विदा होने लगे और सुबह की शपथ ! जब वह प्रकाशित होने लगे – वह ( दोज़ख़ ) एक बड़ी ( भयानक ) वस्तु है ( और ) मनुष्य ( के हृदय ) को कंपा देने वाली है। ( लोगो ! ) तुममें से उस ( मनुष्य के हृदय ) को भी जो (नेकी की ओर) बढ़ना चाहे और जो ( नेकी से ) पीछे हटना चाहे ( उसके हृदय को भी। सार यह कि प्रत्येक के लिये वह एक भयंकर वस्तु है । सबको उससे डरना चाहिये ) ॥

( जिन्हें वह इस समय भयंकर नहीं प्रतीत होती, उन्हें क़यामत में उसके भय का हाल भली भांति विदित हो जायगा। क़यामत में ) प्रत्येक प्राणी अपने किये हुये कामों में रहन ( अर्थात पकड़ा हुआ ) होगा ( अर्थात जिन लोगों के बाएँ हाथ में कर्म-पत्र होगा, वह दोज़ख़ में जायंगे ) परन्तु दाहिना ओर वाले ( अर्थात जिनके दाहिने हाथ में कर्म-पत्र होगा, वह आनन्द मंगल के साथ ) जन्नतों में होंगे (और दोनों समूह अपने २ कर्मानुसार ही दंड तथा पुरस्कार पायेंगे ) ॥

جَنّٰتٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ مَا سَلَكَكُمْ
فِيْ سَقَرَ ۝ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝ وَلَمْ نَكُ
نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۝
وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ حَتّٰى اَتٰىنَا
الْيَقِيْنُ ۝ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝
فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ
مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ
امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝ كَلَّا بَلْ لَّا
يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ
شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ
هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

( वह गिर्वी से छूट कर बहिश्त के ) बाग़ों में ( होंगे ) ० ( और ) गुनहगारों से पूछ रहे होंगे ० कि कौन चीज़ तुमको दोज़ख़ में ले आई ० वह कहेंगे, हम न तो नमाज़ पढ़ा करते थे ० और न हम ( किसी ) मोहताज को खाना खिलाया करते थे ० और ( दीन की बातों के बारे में ) जो लोग ( बेहूदा ) बकवास किया करते थे, उनके साथ हमभी बकवास किया करते थे ० और ( इसके अलावा ) हम ( सिरे से ) रोज़-जज़ा ही को नहीं मानते थे ० यहाँ तक कि ( मरे पोछे आंख से देखा, तो) हमको यक़ीन आया ० तो (उस वक़्त) किसी सिफ़ारशी की सिफ़ारिश इनके काम नहीं आयेगी ० ( मगर ) अब उन लोगों को क्या ( बला मार गई ) है कि नसीहत से ( इस तरह ) रूगर्दानी करते हैं ० कि गोया वह (जंगली) गधे हैं ० ( और ) शेर ( की सूरत ) से बिदक कर भागते हैं ० बल्कि इनके तो यह हौसिले हैं कि इनमें से हर शख़्स को खुले हुये ( आस्मानी ) सहीफ़े दिये जाएँ ० सो यह तो होना नहीं, बल्कि ( बात यह है कि यह लोग ) आख़िरत ही से नहीं डरते ० ( और इसी सबब से क़ुर्आन नहीं सुनना चाहते )-सो यह झक मारने की बात है, क्योंकि क़ुर्आन ( तो सर्ता-सर ) नसीहत है ० तो जो चाहे, इसको सोचे ( समझे ) ० और बे मशीयत इलाही तो ( यह लोग ) सोचने ( समझने ) वाले हैं नहीं । उसकी शान ( क़ह्हारी तो ) यह है कि ( बन्दों को ) उससे डरना चाहिये और ( उस की) शान ( रहीमी ) यह है कि ( वह बन्दों के गुनाह ) माफ़ फ़र्माता है ०

## सूरत—क़ियामह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ४० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान ( है ) ०

---

( और जन्नती ) पापियों ( अर्थात काफ़िरों ) से पूछते होंगे ( कि ) तुम किस कारण से दोज़ख़ ( की आग ) में जा पड़े ( और तुम्हारे किन २ कामों ने तुम्हें दोज़ख़ की अग्नि में पहुंचाया ? )-वह (पश्चाताप तथा खेद के साथ) कहेंगे-हम दुनिया में नमाज़ न पढ़ते थे और हम कंगालों को खाना न खिलाते थे । और ( इस्लाम—धर्म के विषय में ) वाद-विवाद करने वालों के साथ ( होकर ) हम भी ( सत्य उपासकों से ) वाद-विवाद करते थे । और हम बदले के दिन को झुठलाते थे । यहाँ तक कि हमको निश्चय हुआ ( अर्थात मृत्यु आई, तब विदित हुआ कि हम कुमार्ग पर चल रहे थे, जिसका दंड हमें अवश्य भोगना पड़ेगा ) । सो ( उस समय ) किसी सिफ़ारिश करने वाले की सिफ़ारिश भी उनके ( कुछ ) काम न आवेगी ॥

( ख़ुदा जाने ) उनको क्या हुआ ! कि शिक्षा ( की बातों ) से मुंह मोड़ते हैं (और इस्लाम-धर्म के नाम से भागते हैं ) यह बिदकने वाले गधे की तरह ( निर्बुद्धि ) हैं ( कि किसी तरह अपनी भलाई को समझते ही नहीं । भलाई की बातों से इस तरह भागते हैं, जैसे निर्बल गीदड़ ) शेर से भागते हैं ( कि कहीं फाड़ न डाले । वास्तव में न यह गधे हैं, न गीदड़ )-बरन् उनमें से हर एक की इच्छा यह है कि ( नबी बन जाय और ) खुले ( तथा स्पष्ट ) सहीफ़े ( अर्थात गुटके ख़ुदा की ओर से ) उसे दिये जायँ ( नहीं-यह ) कदापि नहीं ( हो सकता कि इन अज्ञानों को हम अपना नबी बना लें । और यह इच्छा भी केवल उनके दुराचार के कारण नहीं है )-बरन् ( उनके दुराचार का कारण वास्तव में) यह ( है ) कि यह परलोक का भय नहीं करते । ( यदि आज इन्हें अपने अशुभ—परिणाम का निश्चय हो जाय, तो उनकी समस्त अचेतना दूर हो जाय ) ॥

( और यदि मान लो ! हम इन्हें अलग २ भी शिक्षा की पुस्तकें दे दें, जब भी यह ) कदापि ( ईमान ) नहीं ( ला सकते) । निस्सन्देह यह ( क़ुर्आन ) ही (एक ऐसी पुस्तक है, जो समस्त संसार की ) शिक्षा ( के लिये बिलकुल यथेष्ट ) है-तो जो कोई (शिक्षा प्राप्त करना) चाहे, इसे याद करले ( और इसके आदेशों पर चले ) और बिना अल्लाह के चाहे लोग ( उसकी आज्ञाओं पर चल नहीं सकते और उसकी पुस्तक से कुछ भी ) शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते । ( लोगों को चाहिये कि पहिले ख़ुदा का भय अपने दिल में उत्पन्न करें और क़यामत के भयङ्कर दिन से डरें और ख़ुदा से अपने पापों की क्षमा चाहें । निस्सन्देह ) वही डरने के योग्य भी है और ( पापों को ) क्षमा करने के योग्य भी । ( उसके अतिरिक्त किसी में यह बल शक्ति नहीं कि किसी का कुछ बना बिगाड़ सके ) ॥

## सूरत—क़ियामह

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ४० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

हम रोज़-क़यामत की क़सम खाते हैं ना! ० और (नोज़ आदमी के) दिल की क़सम खाते हैं ना! जो (उसको बुरे काम पर) मलामत किया करता है (कि क़यामत के दिन सब लोग ज़िन्दा किये जायँगे) ० क्या इन्सान ऐसा ख़याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को (उसके मरे पीछे फिर) जमा न करेंगे? ज़रूर जमा करेंगे ० (और हम) इस बात पर क़ादिर हैं कि उसकी पोर-पोर (उसके असली) ठिकाने से बिठादें ० बल्कि (बात यह है कि) इन्सान (इस वजह से क़यामत को नहीं मानता कि वह) चाहता है कि आगे को भी (बे ख़ौफ़ व ख़तर) ख़ुदा की नाफ़र्मानी करता रहे ० और (एतिराज़ के तौर पर) पूछता है कि भला रोज़-क़यामत कब होगा ० तो जब (मारे हैबत के) आँखें पथरा जाएँ ० और चांद गहना जाय ० और सूरज और चाँद (दोनों) यकजा कर दिये जायँ ० उस दिन आदमी बोल उठेगा कि अब किधर को भाग कर जायँ ० सो (ऐ आदमी!) भागना तो हो नहीं सकेगा-(उस दिन) कहीं पनाह नहीं ० (और) उस दिन ठिकाना (होगा, तो) तेरे पर्वर्दिगार (ही) के पास होगा ० उस दिन इन्सान को जता दिया जायगा कि कैसे आमाल उसने (पहिले से ज़ाद-आख़िरत बनाकर) भेजे हैं और कैसे आसार (वह दुनिया में) पीछे छोड़ आया है ० बल्कि (ख़ुद) इन्सान अपने मुक़ाबले में हुज्जत है ० गो वह (अपने तईं बे क़ुसूर साबित करने के लिये कितने ही) बहाने पेश लाया करे ० (ऐ पैग़म्बर!) वही के (याद करने के) लिये अपनी ज़बान न चलाने लगा करो, ताकि तुमको वही जल्दी से याद हो जाय ० (तुमको) कुर्आन का याद करा देना और उसका पढ़ा देना हमारा काम है ० तो जब हम (जिब्रील फ़रिश्ते के ज़रिये से) कुर्आन पढ़ चुका करें, तो (उसके बाद तुम भी) उस (फ़रिश्ते) के पढ़ने की पैरवी किया करो ० फिर उस का समझा देना (भी) हमारा ही काम है ० (ग़रज़ तुमको जल्दी करनी नहीं चाहिये)-मगर तुम (बनी-आदम कुछ हो ही जल्द बाज़ और इसी लिये) दुनिया को (जो सरे-दस्त मौजूद है) दोस्त रखते हो ० और आख़िरत को छोड़ बैठे हो ० उस दिन बहुत (लोगों के) मुंह तरो-ताज़ा ० (टिकटिकी लगाये) अपने पर्वर्दिगार को देख रहे होंगे ०—

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝
اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝ بَلٰى
قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۝ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ
لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝ يَسْئَلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝ فَاِذَا
بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ ۝ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝
كَلَّا لَا وَزَرَ ۝ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنَبَّؤُا
الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۝ بَلِ الْاِنْسَانُ
عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝ لَا
تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ
وَقُرْاٰنَهٗ ۝ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا
بَيَانَهٗ ۝ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝ وَتَذَرُوْنَ
الْاٰخِرَةَ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝

ووجوه

हम क़यामत के (भयंकर) दिन की शपथ खाते हैं और ऐसे दिल की शपथ खाते हैं, जो अपने ऊपर मलामत (धिक्कार) करता हो (और कहते हैं) कि (काफ़िर) मनुष्य (बड़ा हो मूर्ख है)—क्या (वह) यह समझे बैठा है कि हम (क़यामत के दिन) उसकी हड्डियों को इकट्ठा न करेंगे? नहीं (ऐसा कभी नहीं हो सकता) हम तो उसकी उँगलियों के पोरों तक के संवारने पर भी शक्ति रखते हैं। (और इन काफ़िरों में सभी केवल क़यामत के आने हो का इन्कार नहीं करते)—बरन (कोई २ दुष्ट) मनुष्य (उनमें ऐसा भी है, जो क़यामत के इन्कार के साथ यह भी) चाहता है कि (यदि मान लो क़यामत आ जाय और उसे दुबारा ज़िन्दा भी किया जाय, तब भी अर्थात) वह अपनी (उस) आने वाले जीवन में भो (अपने उसी कुफ़्र, शिर्क और) दुराचार (दुष्कर्मों) ही में (लिप्त) रहे ॥

(अतः इसो कारण) वह पूछता है कि क़यामत का दिन कब आवेगा। सो जिस समय (इसकी) आंखों के नीचे अंधेरा आ जायगा और (यह प्रकाशवान) चन्द्रमा में ग्रहण आ जायगा और चांद सूर्य्य (दोनों की) एक समान दशा हो जावेगी, उस दिन (इस कुफ़्र-उपासक) मनुष्य (को पता चलेगा कि क़यामत क्या वस्तु है। उस समय घबरा २ कर हाय! कहाँ जाऊं) किधर भागूं कहता फिरेगा (और आकाश से घोषणा होगी कि आज तू) कदापि नहीं (भाग सकता। आज तेरे लिये) कहीं शरण का ठिकाना नहीं। (हे रसूल!) उस दिन तो तुम्हारे पालन कर्त्ता ही के पास (हर एक का) ठिकाना होगा। (अर्थात) हर मनुष्य को अगले पिछले कर्म बताए जायँगे—बरन मनुष्य (स्वयं) अपने लिये एक प्रमाण (और गवाह) होगा, चाहे वह अपने (आपको निर्दोषी सिद्ध करने के लिये कितने ही) बहाने बनाये—(उसका एक एक पाप सिद्ध होकर रहेगा और उनका उसे दंड भोगना पड़ेगा) ॥

(हे रसूल! जब तुम पर वही उतरे और जिब्रील हमारे पवित्र कलाम की कोई आयत पढ़कर तुमको सुनायें, तो जिब्रील के साथ) कुर्आन (की उस आयत के पढ़ने) में तुम भी अपनी ज़बान न हिलाने लगा करो कि तुम उस (आयत) को तुरन्त याद करलो। निस्सन्देह कुर्आन का (तुम्हारे हृदय में) इकट्ठा कर देना और (तुम्हारी ज़बान से तुम्हारे अनुगामियों के सन्मुख ज्यों का त्यों) पढ़वा देना—यह हमारा काम है। अतः जब हम (जिब्रोल के द्वारा) उसको पढ़ा करें, तो तुम उसका अनुगमन किया करो (अर्थात पूर्ण रूप से उधर ही ध्यान लगाया करो)। फिर उसका पढ़वा देना हमारा (ही) काम है (भला कहीं ऐसा हो सकता है कि तुम उसको भूल जाओ) कदापि नहीं। तुम लोग दुनिया को (जो तुम्हारे सामने है) पसन्द करते हो और परलोक को (जो तुम्हारे सामने अभी नहीं है) छोड़ देते हो (याद रक्खो! वह दिन कुछ दूर नहीं है)—जिस दिन कि (तुममें से बहुत से सौभाग्यवान लोगों के) चेहरे हरे-भरे (होंगे और) अपने पालन कर्त्ता की ओर देख रहे होंगे—

और बहुतेरे मुंह उस दिन बुरे बन रहे होंगे ० ( क्योंकि वह ) समझ रहे हैं कि उनके साथ ऐसी सख़्ती को जाने को है, जो ( उनकी ) कमर तोड़ देगी ० सुनो जी ! जब ( जान बदन से खिंच कर गले की ) हँस्ली तक आ पहुंचेगी ० और ( मरने वाले के बीमारदार ) चिल्ला उठेंगे कि ( अरे ! ) कोई झाड़ने वाला है ? ( तो इसको आकर झाड़े ) ० और उस ( बीमार ) को यक़ीन हो जायगा कि ( अब ) यह (दुनिया से) मुफ़ारिक़त ( का वक़्त ) है ० और ( जां-कनी की तकलीफ़ से एक पांव की ) पिंडली (दूसरे पांव की) पिंडली से लिपट ( लिपट ) जायगी ० ( ऐ शख़्स ! जब यह हालतें पेश आयेंगी ) उस दिन ( तुझको ) अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ चलना होगा ० तो ( ग़फ़्लत-शआर आदमी ने जीते जी ) न तो (ख़ुदा के कलाम की) तस्दीक़ की और न नमाज़ ही पढ़ी ० बल्कि (उल्टा) झुटलाया और ( हुक्म-ख़ुदा से ) मुंह मोड़ा ० फिर ( मज्लिस-वाज़ से उठकर ) अकड़ता हुआ अपने घर की तरफ़ चलता बना ० तो ( क़यामत के दिन उससे कहा जायगा कि ) ऐ शख़्स ! तुझ पर तुफ़ है, फिर ( तुफ़ पर ) तुफ़ है ० फिर ( ऐ शख़्स ! ) तुझ पर तुफ़ है, फिर ( तुफ़ पर ) तुफ़ है ० क्या इन्सान ( ऐसा ) ख़याल करता है कि उसको (बिला बाज़-पुर्स ) यूंही छोड़ दिया जायगा ० क्या ( इब्तिदा में ) वह मनी का एक क़तरा नहीं रहा, जो ( औरत के रहम में ) टपकाई गई थी ० फिर लोथड़ा हुआ, फिर ( ख़ुदा ने उसको दूसरी सूरत का ) बनाया, फिर उसके जोड़ बन्द दुरुस्त किये ० (यहां तक कि) आख़िरकार उसकी दो क़िस्में कीं ( यानी ) मर्द और औरत ० क्या वह ( ख़ुदा जिसने यह कुछ किया, क़यामत में ) मुरदों के जिला उठाने पर क़ादिर नहीं है ०

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ تَظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا
فَاقِرَةٌ ۝ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝ وَقِيلَ مَنْ
رَاقٍ ۝ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ
بِالسَّاقِ ۝ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝ فَلَا صَدَّقَ
وَلَا صَلَّىٰ ۝ وَلَٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ ثُمَّ ذَهَبَ
إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ۝ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝ ثُمَّ أَوْلَىٰ
لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ
سُدًى ۝ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُمْنَىٰ ۝ ثُمَّ كَانَ
عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ۝ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ
وَالْأُنْثَىٰ ۝ أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ

سُورَةُ الْإِنْسَانِ مَكِّيَّةٌ إِحْدَىٰ وَثَلٰثُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ

## सूरत-दहर

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ३१ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० बिला शुबहा ( नौए ) इन्सान पर ( इतने बड़े वसीअ ) ज़माने में एक ऐसा वक़्त ( भी ) आ चुका है कि—

और ( बहुत से अभागे लोगों के ) चेहरे बिगड़े होंगे ( और उन पर हवाइयां उड़ रही होंगी । इस लिये ) कि उन्हें इस ( बात ) का ( पूर्ण ) विश्वास होगा कि उनके साथ वह कार्यवाही की जावेगी, जो ( उनका ) धड़ तोड़ देगी । ( लोगो ! उस भयङ्कर दिन से अचेत रहना ) कदापि (उचित) नहीं । ( देखो ! वह समय याद करो ) जबकि ( आत्मा इस मिट्टी के पिंजरे से निकल रही होगी और ) हंसली तक आ पहुंचेगी और ( प्रिय जन भाई बन्धु दवा दारू से निराश होकर जादू का मारा हुआ ख़्याल करेंगे और घबरा २ कर प्रत्येक से ) कहेंगे ( तुम्हारे विचार में ) कोई झाड़-फूंक करने वाला है ? और ( मरने वाला ख़ूब ) समझ रहा होगा कि ( अब संसार से ) वियोग है और (कष्ट की अधिकता से) पिंडलियां (अकड़ कर परस्पर) जुड़ जावेंगी । ( हे अज्ञान मनुष्य ! ) उस दिन (दुनिया छोड़ कर तुझे अवश्य अपने ( जन्म दाता ) स्वामी ही के पास जाना होगा ॥

( और क़यामत के दिन अपने भले बुरे का हिसाब देना होगा ) फिर ( यदि काफ़िर है, तो दंड पाएगा कि ) न उसने ( ख़ुदा के कलाम को ) सच्चा माना और न नमाज़ पढ़ी-परन्तु ( हां ! ) उसने (ख़ुदा के कलाम को ) झुठलाया था और (ख़ुदा की आज्ञाओं के मानने से) मुंह फेरा था और (यदि उसको किसी ने समझाया बुझाया, तो वहां से उठकर ) ऐंठता हुआ अपने घर चल दिया । (सुन हे काफ़िर !) ) तुझ पर धिक्कार —फिर तुझ पर धिक्कार । फिर तुझ पर धिक्कार, फिर तुझ पर धिक्कार ! क्या ( यह मूर्ख ) मनुष्य यह समझे बैठा है कि उसे ( मरने के उपरान्त ) यूं ही छुट्टा छोड़ दिया जावेगा ? क्या मनुष्य ( सबसे पहिले ) वीर्य्य की एक बूंद न था, जो ( माता के गर्भाशय में ) टपकाई गई थी । फिर ( क्या ख़ुदा की आज्ञा से ) वह एक लोथड़ा ( सा नहीं ) हुआ । फिर ( क्या ) ख़ुदा ने ( उसको मनुष्य के रूप में नहीं ) बनाया । फिर ( क्या ) उस ( के शरीर ) को ( सुडौल तथा) ठीक ( नहीं ) किया ? ( और ) फिर ( क्या ) उसको जोड़े जोड़े ( नहीं ) बनाया ? अर्थात नर और मादा, स्त्री और पुरुष । क्या ( जिस ख़ुदा में ) यह ( शक्ति है कि वह वीर्य्य की एक बूंद से एक सुघड़ तथा सुडौल मनुष्य बनाए, वह ) इस बात पर शक्तिमान नहीं है कि मुर्दों को ज़िन्दा करदे ( और क़यामत उपस्थित करदे ? और हिसाब किताब लेकर दोज़ख़ जन्नत को भर दे ? क्यों नहीं-वह सब कुछ कर सकता है ) ॥

## सूरत-दहर

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ३१ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( इसमें कुछ ) सन्देह नहीं कि ( एक ) समय में ( हर ) मनुष्य पर ऐसा अवसर भी आ चुका है कि वह ( उस समय ) कोई वस्तु वर्णन ( ही ) के योग्य न था ( अर्थात अपनी सत्ता से कोसों दूर केवल गंदे पानी की एक बूंद था ) ॥

شَيْئًا مَّذْكُورًا ۝ إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ
أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝ إِنَّا
هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۝ إِنَّا
أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَا وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ۝
إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا
كَافُورًا ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا
تَفْجِيرًا ۝ يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ
شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ
حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ
لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝
إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝
فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً
وَسُرُورًا ۝ وَجَزَاهُم بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ۝

वह कोई चीज़ क़ाबिल-तज़किरा न था ० हमने आदमी को मुरक्कब नुत्फ़े से पैदा किया ( और ग़रज़ यह थी ) कि उस ( की नेकी बदी ) को आज़मायें। फिर इसी लिये हमने उसको सुनता देखता (मख़्लूक़) बनाया ० फिर हमने उसको ( दीन का ) रस्ता (भी) दिखाया-( फिर अब दो क़िस्म के आदमी हैं ) या तो शुक्र-गुज़ार हैं ( यानी मुसलमान ) या नाशुक्र ( यानी काफ़िर) ० हमने काफ़िरों के लिये ज़न्जीरें और तौक़ और (दोज़ख़ की) दहकती हुई आग—(यह चीज़ें) तय्यार कर रक्खी हैं ० बेशक (जो लोग) नेकोकार ( हैं, आख़िरत में ऐसी शराब के ) जाम पियेंगे, जिसमें काफ़ूर ( के पानी ) की आमेज़िश होगी ० और काफ़ूर के पानी का एक चश्मा ( होगा ) जिसका पानी अल्लाह के ( ख़ास ) बन्दे पियेंगे ( और जहां चाहेंगे ) उस ( चश्मे ) को बहा ले जाएँगे ० यह (वह लोग हैं, जो अपनी) मन्नतें पूरी करते हैं और उस रोज़ ( क़यामत ) से डरते हैं, जिसकी मुसीबत ( आम सब तरफ़ ) फैली हुई होगी ० और ख़ुदा का हुब्ब करके मोहताज और यतीम और क़ैदी को खाना खिला देते हैं ० ( और इनको जता भी देते हैं कि ) हमतो तुमको सिर्फ़ ख़ुदा का मुंह करके खिलाते हैं। हम को तुमसे ( न कुछ ) बदला दरकार है और न शुक्रगुज़ारी ० हमको अपने पर्वर्दिगार से उस दिन का डर लग रहा है, जब लोग ( मारे रंज के ) मुंह बनाये त्यूरी चढ़ाये होंगे ० तो ख़ुदा ने ( भी ) उस दिन की मुसीबत से उनको बचा लिया और उनको ताज़ा-रूई और ख़ुश-वक़्ती से ला मिलाया ० और जैसा उन्होंने (दुनिया में) सब्र किया था, उसके बदले में ( रहने को ) बहिश्त और ( पहिनने को ) रेशमी पोशाक इनायत की ०—

---

निस्सन्देह हम ही ने ( हर ) मनुष्य को ( स्त्री पुरुष के ) मिले हुये वीर्य्य से उत्पन्न किया, जिससे कि हम ( उस पर शरीअत का बार डालें और ) उसकी ( समझ बूझ की ) परीक्षा करें । अतः हमने उसको ( हर बात का ) सुनने वाला- देखने वाला ( समझने वाला ) बनाया ( अर्थात् उसको ज्ञान—इन्द्रिय तथा कर्म-इन्द्रिय दोनों प्रकार की शक्ति प्रदान की । और जब वह युवावस्था को पहुंच गया, तो ) हमने उसको ( उसका ) मार्ग बता दिया ( और आज्ञा करदी कि इस पर चल । अब दोही बातें हैं )—यातो ( वह हमारी शिक्षा उपदेश का ) कृतज्ञ हो ( और उसके अनुसार चले ) वा कृतघ्न ( और कुफ़्र, शिर्क में फंसे । सो ) हमने काफ़िरों ( तथा उद्दण्डों ) के लिये तो ज़ंजीरें और तौक़ और प्रचण्ड अग्नि तय्यार कर रक्खी है ( और रहे ईमानदार और ) नेक लोग, तो वह ( ऐसे शरबत का ) प्याला पीवेंगे, जिसमें ( ठंढे बर्फ़ प्रफुल्लित करने वाले स्वादिष्ट तथा सुन्दर ) काफ़ूर की मिलौनी होगी। ( जन्नत में ) सोता होगा, जिसमें ( यह ) अल्लाह के ( मुख्य ) बन्दे ( अर्थात् जन्नती ) पीवेंगे ( और वह सोते उनके संकेत पर चलेंगे, जहाँ उनका जी चाहेगा ) वह उन्हें बहा ले जावेंगे ॥

( और अल्लाह की यह कृपा दया इस कारण से होगी कि उनका विचार भी ठीक है, कर्म भी ठीक ) । वह ( अपनी ) मन्नतों ( अर्थात् मानी हुई भेंटों ) को पूरा करते हैं ( और वचन तथा प्रतिज्ञा के सच्चे ) हैं और ( क़यामत के ) उस ( भयङ्कर ) दिन से डरते हैं, जिसकी बुराई ( हर जगह ) फैलेगी और वह कंगालों को और अनाथों को और क़ैदियों को अल्लाह के प्रेम में खाना खिलाते हैं। ( और जब वह खाना खाने वाले उनको धन्यावाद देते हैं, तो वह कहते हैं कि ) हम तो ( भाइयो ! ) तुमको बस ( केवल ) अल्लाह की प्रसन्नता के लिये खाना खिलाते हैं। हम तुमसे ( तुम्हारे किसी ) धन्यवाद तथा बदले के अभिलाषी नहीं हैं । निस्सन्देह हमें अपने पालन कर्ता से उस दिन ( पूर्ण ) भय है, जो ( लोगों के ) मुंह बिगाड़ देने वाला ( और ) त्योरियां चढ़ा देने वाला है ( अर्थात् क़यामत के दिन का हमें डर है । हम जो कुछ करते हैं, उस दिन कृतार्थ होने के लिये करते हैं ) ॥

अतः ( हे रसूल ! उनको मंगल-समाचार सुना दो कि ) अल्लाह ने उस ( भयङ्कर ) दिन की बुराई से ( अपने ) उन ( नेक बन्दों ) को बचा लिया । और ( सर्वदा के लिये ) उनको हँसी ख़ुशी और आनन्द प्रदान किया । और ( सत्य मार्ग पर ) उनके धीरज धरने के कारण से वह उनको जन्नत ( की नेअमतें प्रदान करेगा। खाने के लिये अच्छे २ मेवे ) और ( पहिनने के लिये ) रेशमी वस्त्र देगा—

مُتَّكِـِٔينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا
شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا
وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ۝ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ
بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا۠ ۝
قَوَارِيرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ
فِيهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ۝ عَيْنًا فِيهَا
تُسَمّٰى سَلْسَبِيلًا ۝ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ
مُّخَلَّدُونَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُورًا
وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيمًا وَّمُلْكًا كَبِيرًا ۝
عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۘ وَّحُلُّوْا
اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۝
اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُورًا ۝
اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيلًا ۝ فَاصْبِرْ

बहिश्त में तख़्तों पर तकिये लगाये ( बैठे ) होंगे— ( मौसिम ऐसे मोतदिल होंगे कि ) वहाँ उनको न ( आफ़ताब की ) तपिश मालूम होगी और न ( जाड़े की ) ठिर ० और दरख़्तों के साये ( हैं कि ) उन पर झुके पड़ते हैं और फल ( हैं कि हमा-वक़्त ) उनके इख़्तियार में हैं ( कि जिस तरह चाहें और जब चाहें, तोड़ें और खायें ) ० और उन पर चांदी के बासनों और आबख़ोरों का दौर चल रहा होगा (और वह ऐसे शफ़्फ़ाफ़ ) होंगे ( जैसे ) शीशे ० ( मगर ) शीशे ( भी ) कांच के नहीं, बल्कि चांदी के, कि कार-कुनान क़ज़ा व क़द्र ने उनको ठीक (जन्नतियों की ज़रूरत के ) अन्दाज़े के मुताबिक़ बनाया है ० और ( इसके अलावा ) वहां उनको ( ऐसी शराब के ) जाम ( भी ) पिलाये जायेंगे, जिसमें सोंठ ( के पानी ) की आमेज़िश होगी ० ( और ) बहिश्त में ( सोंठ के पानी का एक ) चश्मा होगा, जिसका नाम होगा सल्सबील ० और बहिश्तियों के पास लड़के ( ख़िदमत के लिये ) आते जाते होंगे कि वह हमेशा ( लड़के ही ) रहेंगे ( और ऐसे ख़ूबसूरत होंगे कि ऐ मुख़ातब ! ) तू उनको ( चलते फिरते ) देखे, तो ( ऐसा ) ख़याल करे ( जैसे ) मोती बिखरे हुये ( हैं ) ० और बहिश्त ( की मजमूई हालत ) को देखे, तो ( वहां ) तुझको (हर तरह की) नेअमत और बड़ी सल्तनत ( का साज़ व सामान ) दिखाई दे ० जन्नतियों पर कपड़े होंगे, सब्ज़ रेशमी बारीक और दबीज़ और उनको चांदी के कड़े पहनाये जायेंगे और उनका पर्वर्दिगार उनको पाकीज़ा शराब पिलवायेगा ० ( जन्नतियो ! ) यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारी ( दुनियावी ) कोशिश ( आज ) मक़बूल हुई ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) बेशक हमही ने तुम पर क़ुर्आन वक़्तन-फ़वक़्तन उतारा है ० पस अपने पर्वर्दिगार के हुक्म के इन्तिज़ार में सब्र किये ( बैठे ) रहो—

---

( और यह आनन्द से ) जन्नत के ( उत्तम २ ) सिंहासनों पर तकिया लगाये ( बैठे ) होंगे-न वहां ( गर्मी को ) धूप देखेंगे और न ( सर्दी की ) ठिर-( आनन्द दायक ऋतु होगी और बड़े आनन्द मंगल के साथ जीवन व्यतीत करेंगे ) और ( जन्नत के ) वृक्षों ( का दृष्य ! क्या ही मनोहर !! उन ) की ( ठंडी २ ) छाया जन्नतियों पर पड़ रही होगी और उनके ( सुन्दर रंग बिरंग के) मेवे उनके निकट ( अर्थात इतने झुके पड़ते ) होंगे ( कि बैठे २ जितने चाहो तोड़ लो ) और उन ( जन्नतियों ) के पास ( उनके खाने के पदार्थ रखने के लिये सोने ) चाँदी के बरतन और (पीने के पदार्थों के लिये) शीशे के गिलास लाये जावेंगे-जो चांदी के शीशे के (बने हुये) होंगे, जिनको (जन्नत के) नौकरों ने (प्यास के) अनुमान से भरा होगा (न ज़्यदा न कम) और वहां (अर्थात जन्नत में) जन्नतियों को (ऐसे शरबत के) प्याले पिलाये जावेंगे, जिनमें मिलोनी सोंठ ( के पानी ) की भी होगी। (सोंठ का ) जन्नत में एक सोता है, जिसका नाम सल्सबील है॥

और उन ( जन्नतियों ) के पास ( सुन्दर रूपवान ) लड़के ( उनके काम काज के लिये ) आएँ-जाएँगे ( और वह लड़के ) सर्वदा ( लड़के ही ) रहेंगे-( कभी बूढ़े तथा कुरूप न होंगे। हे पैग़म्बर ! ) यदि तुम उनको ( चलते फिरते ) देखो, तो ख़्याल करो कि ( मानो ) मोती बिखरे हुये हैं। और जब तुम ( जन्नत में ) वहां ( के किसी महल को ) देखो, तो देखो कि ( उसमें किसी वस्तु की कमी नहीं है। नाना प्रकार की अपार ) नेअमतें ( उपस्थित ) हैं। और ( एक बहुत ) बड़ी ( संगठित ) बादशाही है ( जहाँ हर प्रकार की सामग्री तथा सामान इकट्ठा हैं )॥

और उन ( के अर्थात जन्नतियों के शरीर ) पर महीन हरे रेशम के भी वस्त्र होंगे और मोटे रेशम के भी। और उन्हें ( विशेष प्रकार की ) चांदी ( सोने ) ) के कङ्गन भी पहिनाए जावेंगे और उनका पालन कर्त्ता उन्हें ( अत्योत्तम तथा ) पवित्र स्वच्छ शरबत भी पिलाएगा ( और ख़ुदा उनसे कहेगा कि ) यह ( इतना पुरस्कार तथा प्रतिफल ) तुम्हारे ( आज्ञा पालन का ) बदला है और ( इसमें कुछ सन्देह नहीं कि आज ) तुम्हारा परिश्रम ठिकाने लगा ( अर्थात तुम्हारे सत्कर्मों का फल तुमको मिला । अतः हे पैग़म्बर ! ) हमने तुम पर ( समय २ पर ) थोड़ा थोड़ा करके कुर्आन उतारा—

لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ۝ وَاذْكُرِ
اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ
وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ
وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ۝ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ
وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ
تَبْدِيْلًا ۝ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ
اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ
رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝ وَّالنّٰشِرٰتِ
نَشْرًا ۝ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝ عُذْرًا اَوْ

نُذْرًا

और लोगों में से किसी बद-या ना-एहसान-शिनास के कहे में न आ जाना ० और सुबह व शाम अपने पर्वर्दिगार का नाम लेते रहो ० और रात के ( बड़े ) हिस्से में ख़ुदा के आगे सज्दा करो और उसकी तस्बीह ( व तक़्दीस ) करो ० यह ( बेदीन लोग ) तो ( बस दुनिया ही ) चाहते हैं, जो सरे-दस्त मौजूद है और ( क़यामत के ) रोज़-सख़्त को अपने पसे-पुश्त डाल रक्खा है ( कि उसके लिये कुछ भी तय्यारी नहीं करते ) ० हमही ने इनको पैदा किया और हमही ने इनके जोड़ बन्द मज़्बूत किये और हम जब चाहें, इनके बदले इनही जैसे ( आदमी और ) ला बसाएँ ० यह (बातें) नसीहत ( की ) हैं, तो जो चाहे अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ ( पहुंचने का ) रस्ता इख़्तियार करे ० और बे मशीयत-इलाही तुम लोग ( कोई बात ) चाह नहीं सकते। बेशक अल्लाह जानने वाला ( और ) हिक्मत वाला है ० जिसको चाहता है, अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और सर्कश लोगों के लिये उसने अज़ाब-दर्दनाक तैयार कर रक्खा है ०

## सूरत—मुर्सलात

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० उन ( हवाओं ) की क़सम, जो ( इब्तिदा में ) मामूली रफ़्तार से चलाई जाती हैं ० फिर ज़ोर पकड़ कर तेज़ हो जाती हैं ० और ( बादलों को उभार कर चारों तरफ़ ) फैला देती हैं ० फिर ( उनको फाड़ कर एक दूसरे से ) जुदा कर देती हैं ० फिर (सबसे बढ़कर यह है कि लोगों के दिलों में ख़ुदा का ) ख़याल डालती हैं ० ताकि हुज्जत तमाम हो और—

तो तुम अपने पालनहारे की आज्ञा से ( उसी के आदेश पर ) दृढ़ रहो और उनमें से किसी अपराधी वा ( किसी ) काफ़िर का कहा ( कभी ) न मानो। और सुबह शाम अपने पालनहारे का नाम लिया करो (अर्थात फ़ज्र, ज़ुहर और अस्र की नमाज़ पढ़ा करो ) और रात को भी उसके लिये सज्दा ( में झुका ) करो ( अर्थात मग़रिब और इशा की नमाज़ भी पढ़ा करो) और बड़ी रात तक उस ( के नाम) की पवित्रता वर्णन किया करो ( अर्थात फ़र्ज़ नमाज़ों के अतिरिक्त नफ़ल नमाज़ें भी जैसे नमाज़ तहज्जुद आदि हैं, पढ़ा करो)। निस्सन्देह ( सर्वदा की मुक्ति और जन्नत-नईम प्राप्त करने का साधन यही है। यह काफ़िर कदापि इस योग्य नहीं हैं कि उनका कहा माना जाय ) यह सब तो जल्दी को ( अर्थात दुनिया को ) प्रिय रखते हैं और एक बड़े भारी ( अज़ाब वाले ) दिन को उन्होंने पीठ पीछे डाल रक्खा है (यह तो इतना भी नहीं सोचते कि ) हमही ने उनको ( और इस दुनिया को ) बनाया है। और हमही ने उनके जोड़ जोड़ को दृढ़ किया है और जब हम चाहें, तो (उन्हें नष्ट भ्रष्ट करके ) उनही जैसे लोग उनकी जगह बदल दें ( अर्थात ला बसाएँ, जो तन मन से हमारी और हमारे रसूल की आधीनता करें ) ॥

निस्सन्देह यह ( क़ुर्आन ) तो (पूणतया शिक्षा ही) शिक्षा है-तो जो चाहे अपने पालन कर्त्ता की ओर राह पकड़े और ( हे दुनिया के लोगो! तुम ) ख़ुदा के चाहे बिना तो कुछ भी नहीं चाह सकते। ( अतः यदि तुम अपना अन्त सुधारना चाहते हो, तो पहिले उसकी अद्वैता महानता तथा शक्ति का इक़रार करो और उससे नेकी की योग्यता चाहो )। निस्सन्देह अल्लाह (बड़ा) जानने वाला ( तथा ) हिकमत वाला है। वह जिसको चाहे अपनी कृपा ( के घेरे ) में ले ले ( और जिसको चाहे, अपनी कृपा से वंचित करदे। निस्सन्देह जो अल्लाह रसूल से प्रेम करते हैं, उनके लिये नेअमतों वाली जन्नत है) और जो पापी हैं, उनके लिये उसने एक कष्ट-दायक अज़ाब तय्यार कर रक्खा है ॥

## सूरत—मुर्सलात

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ५० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

( लोगो! हमें ) शपथ है ( उन ) चलने वाली, दिल को प्रसन्न करने वाली पवनों की ( जो वर्षा का मंगल-समाचार सुनाती हैं )। फिर शपथ है ( उन ) ज़ोर से चलने वाली प्रचण्ड पवनों की (जो सारी बस्ती को धूलि से भर देती हैं ) और शपथ है उन उभारने वाली पवनों की ( जो बादलों को उभारती हैं और ख़ुदा की आज्ञानुसार देश-देश उनको बांटती फिरती हैं)। फिर शपथ है ( उन ) फ़रिश्तों की, जो शिक्षा ( की पुस्तक अर्थात् क़ुर्आन ) को ( काफ़िरों के मुक़ाबले में ) पाप सिद्ध करने के लिये वा ( उन लोगों को ) डराने के लिये ( हमारे नबी तक ) पहुंचाते हैं—

نُذْرًا • إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ • فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ
وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ • وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ • وَإِذَا
الرُّسُلُ أُقِّتَتْ • لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ • لِيَوْمِ الْفَصْلِ •
وَمَا أَدْرٰكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ • وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ
أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ • ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ •
كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ • وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ
أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ • فَجَعَلْنٰهُ فِي قَرَارٍ
مَكِينٍ • إِلٰى قَدَرٍ مَعْلُومٍ • فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ
الْقٰدِرُونَ • وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ • أَلَمْ
نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا • أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا •
وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَأَسْقَيْنٰكُمْ مَاءً فُرَاتًا •
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ • اِنْطَلِقُوا إِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهِ
تُكَذِّبُونَ • اِنْطَلِقُوا إِلٰى ظِلٍّ ذِي ثَلٰثِ شُعَبٍ •

डराया जाय ० (ग़रज़ हमको हवाओं को क़सम है) कि तुम ( लोगों ) से जो ( क़यामत का ) वादा किया जाता है, ज़रूर होकर रहेगा ० यानी जब सितारे मांद पड़ जायं ० और जब आस्मान फट जाय ० और जब पहाड़ उड़ाये जायँ ० और जब पैग़म्बर ( अपनी अपनी उम्मत के हिसाब के लिये ) वक़्त-मुक़र्रर पर हाज़िर किये जायँ- ( उस वक़्त समझो कि क़यामत हुई ) ० ( लेकिन यह वाक़आत ) किस दिन के लिये मुल्तवी हैं ० ( सो मुल्तवी हैं ) फ़ैसले के दिन के लिये ० और (ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि फ़ैसले का दिन है क्या ० उस दिन ( क़यामत के ) झुटलाने वालों की तबाही है ० क्या हमने अगली ( नाफ़र्मान ) उम्मतों को हलाक नहीं किया ० फिर ( इसी तरह ) हम इन पिछली ( नाफ़र्मान ) उम्मतों को भी उनही के पीछे पीछे चलता करेंगे ० गुनहगारों के साथ हम ऐसा ही किया करते हैं ० ( रही क़यामत, सो ) उस दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० ( लोगो ! ) क्या हमने तुमको हक़ीर पानी ( यानी मनी ) से नहीं पैदा किया ( कि इब्तिदा में तुम नुत्फ़ा थे ) ० फिर हमने उसको एक वक़्त-मुक़र्रर तक एक महफ़ूज़ जगह ( यानी औरत के पेट ) में रक्खा ० फिर हमने (उसका एक) अन्दाज़ा ठहराया, तो (हम कैसे) अच्छे अन्दाज़ा ठहराने वाले हैं ० ( तो ) क़यामत के दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० क्या हमने ज़मीन को जीतों और मुरदों की समेटने वाली नहीं बनाया ? ( बनाया ) ० और ( इसके अलावा ) उसमें ऊँचे ऊँचे अटल पहाड़ पिला दिये और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया ० ( सो ) क़यामत के दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० ( मुन्किरों को उस दिन हुक्म दिया जायगा कि ) जिस ( दोज़ख़ ) को तुम झुटलाया करते थे-(अब) उसकी तरफ़ चलो ० ( यानी धुयें के ) सायबान की तरफ़ चलो, जिसके तीन हिस्से हैं ०—

( और यह सब शपथें खाकर हम कहते हैं) कि निस्सन्देह तुमसे जिस (दिन) का वादा किया जा रहा है, वह अवश्य होगा ( वह वादा बिल्कुल सच्चा है। यदि इस समय किसी को उस वादे की सचाई का विश्वास नहीं आता, तो ) फिर जब तारे मिटा दिये जायंगे और जब आकाश में झरोखे पड़ जायंगे और जब पर्वत (रुई के गालों की तरह) उड़ते फिरेंगे। और जब ( अपने २) नियत समय पर ( उम्मत की नेकी बदी की गवाही देने के लिये ) पैग़म्बरों को ( क़यामत के मैदान में ) एकत्रित किया जायगा ( तो उस समय प्रत्येक को क़यामत का विश्वास हो जायगा। हे पैग़म्बर! ) यह ( तारों का मिटना, आकाश का फटना, पैग़म्बरों का गवाही देना ) किस ( भयंकर ) दिन के लिये उठा रक्खा है ? ( निस्सन्देह यह सब परिवर्तन हमने ) निर्णय के दिन के लिये ( उठा रक्खे हैं ) और ( हे रसूल ! ) तुम्हें क्या ख़बर कि निर्णय का दिन ( अर्थात क़यामत का दिन ) कैसा ( भयानक ) है। उस दिन ( अल्लाह रसूल को ) झुठलाने वालों की ( बड़ी ) दुर्दशा है । क्या हमने ( उनसे ) पहले ( के उद्दण्ड ) लोगों को ( उनकी उद्दण्डता के कारण ) नष्ट ( भ्रष्ट ) नहीं कर दिया ? ( निस्सन्देह यदि यह कुछ दिन और न माने, तो ) फिर हम ( इन ) पिछलों को भी उन ( ही ) के साथ कर देंगे । हम ( ऐसे कट्टर ) पापियों के साथ ऐसा ही बर्ताव करते हैं। उस दिन तो झुठलाने वालों के लिये ( बड़ी ) दुर्दशा है ॥

( अज्ञानो ! ) क्या हमने तुमको एक तुच्छ पानी से नहीं उत्पन्न किया ? कि जिसको हमही ने एक सुरक्षित स्थान ( अर्थात माता के गर्भाशय ) में ( कुछ महीनों के ) एक नियत समय तक ठहराया ( और) फिर ( उस स्थान से बाहर लाकर तुमको संसार दिखाया। और तुम्हारी आयु का ) एक अनुमान किया। ( निस्सन्देह) हम (प्रत्येक वस्तु का) उत्तम ( तथा उचित ) अनुमान करने वाले हैं ॥

उस ( भयानक ) दिन ( में ) झुठलाने वालों के लिये ( बड़ी ) दुर्दशा है। क्या पृथ्वी को हमने ( तुम्हारे ) मुर्दों और ज़िन्दों का ( बोझ उठाने वाला और ) समेटने वाला नहीं बनाया ? और ऊँचे पर्वत उसमें स्थिर ( नहीं ) कर दिये और ( उनके सोतों से ) हमने तुमको ( ठंडा ) मीठा प्यास बुझाने वाला पानी (नहीं) पिलाया ? ( आश्चर्य है कि तुम हमारी शक्ति की इन लीलाओं को देखते हो और हमारी शक्ति तथा ईश्वरीयता का इन्कार करते हो। ख़ूब याद रक्खो ! ) उस दिन झुठलाने वालों के लिये ( बड़ी ) दुर्दशा है ( उस समय तुमसे कहा जायगा ) उस ( अज़ाब ) की ओर चलो, जिसको तुम ( दुनिया में ) झुठलाया करते थे। ( और कहा जायगा कि दोज़ख़ के ) उस बिना छाया के ( अग्नि-मय ) सायबान की ओर चलो जिसके तीन भाग होंगे—

لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۝ إِنَّهَا تَرْمِي
بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝ كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ۝ وَيْلٌ
يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ۝ وَلَا
يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ
هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۝ فَإِنْ كَانَ
لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ۝ وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّا
كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ
كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُجْرِمُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ
لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ
سُورَةُ النَّبَإِ ۝ يُؤْمِنُونَ ۝ مَكِّيَّةٌ

( मगर ) उस ( के साये ) में ठंडक नहीं और न उसमें ( आग की ) गर्मी से बचाव है ० उस सायबान में से अङ्गारे पड़े बरस रहे हैं; ऐसे बड़े जैसे महल ० वह ( अङ्गारे दूर से ऐसे दिखाई देंगे ) जैसे ज़र्द रंग के ऊंट ० ( ग़रज़ ) क़यामत के दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० यही वह दिन होगा कि ( गुनहगार मारे हैबत के ) बात न कर सकेंगे ० और न उनको इजाज़त दी जायगी कि (किसी तरह का ) उज़्र ( पेश ) करें ० ( ग़रज़ ) क़यामत के दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० ( उस दिन हम उनसे कहेंगे कि ) यही फ़ैसले का दिन है ( कि ) हमने तुमको और अगले लोगों को ( हिसाब-आमाल के लिये ) जमा किया है ० तो अगर तुमको कोई दाव आता हो, तो हम पर ( अपना ) दाव कर चलो ० ( ग़रज़ ) क़यामत के दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० बेशक परहेज़गार ( बहिश्त के बाग़ों की ) छावँ और चश्मों ० और मेवों में, जो उनको भाते हों ( पेश करते ) होंगे ० ( और हम उनको इजाज़त देंगे ) कि ( दुनिया में ) तुम जैसे जैसे ( नेक ) अमल करते रहे हो, उनके बदले में ( अब ) खाओ पियो ( और ) तुम्हारे नेग लगे ० नेक बन्दों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं ० ( मगर ) उस दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० ( दीन-हक़ से इन्कार करने वालो ! तुम भी दुनिया में ) चन्द रोज़ खा ( पी ) लो और रस बस लो-( मगर ) तुम बेशक गुनहगार ( और झुटलाने वाले ) हो ० ( और ) क़यामत के दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० और जब इन लोगों से कहा जाता है कि ( नमाज़ में ख़ुदा के आगे ) झुको, तो नहीं झुकते ० ( ग़रज़ ) उस दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० अब इस ( क़द्र वाज़ व नसीहत ) के बाद ( ऐसी और ) कौन सी बात ( है, जिस ) से यह लोग ईमान लायेंगे ०

## सूरत–नबा

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ४० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

और जो तुमको ( दोज़ख़ की ) आग की लपट से न बचा सकेगा ( और आग की लपट से बचाना कैसा )-वह ( स्वयं बड़े २ ) महलों के बराबर आग की चिंगारियां वर्षाएगा (उसकी चिंगारियां देखने वाले को ऐसी प्रतीत होंगी) कि मानो कि वह पीले ऊँटों की पंक्तियां हैं ( सार यह कि) उस दिन झुठलाने वालों ( कुकर्मियों ) की ( बड़ी ) दुर्दशा है । यही वह दिन है, जिस दिन ( पापी ) बात तक न कर सकेंगे और न उन्हें ( इस बात की ) आज्ञा दी जावेगी कि वह ( अपनी ग़लतियों की कुछ ) माज़िरत करें ( अर्थात कह सुन कर क्षमा चाहें ) उस दिन ( सत्य बात के ) झुठलाने वालों के लिये ( बड़ी ) दुर्दशा है । ( उनसे ख़ुदा कहेगा कि ) यही (वह दिन है, जिसका नाम) निर्णय का दिन है ( और जिसको तुम झुठलाया करते थे । आज ) हमने तुमको भी और ( तुमसे) पहिले ( उद्दण्ड ) लोगों को ( उनकी उद्दण्डता का स्वाद चखाने के लिये अपने समक्ष ) इकट्ठा किया है । अतः यदि ( हमारी पकड़ से बचने के लिये ) तुम्हारे पास कोई दाव हो, तो ( उसे ) हमारे मुक़ाबले में चलाओ । ( हम भी तुम्हारे बल बुद्धि को देखें । अज्ञानो ! ख़ूब याद रक्खो ) उस दिन झुठलाने वालों की ( बड़ी ) दुर्दशा है ॥

( हाँ ! ) अवश्य ( आज्ञाकारी तथा ) संयमी ( परहेज़गार ) लोग ( हरे भरे वृक्षों की ठंढी २ ) छाहों में और ( ठंढे मीठे ) सोतों में और अपने इच्छित मेवों में होंगे ( और फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि ) अपने ( नेक ) कामों के बदले में ( आज आनन्द करो और उनको ख़ूब ) मज़े से खाओ पियो । निस्सन्देह हम नेक काम करने वालों को (तो) इसी तरह बदला देते हैं-(परन्तु काफ़िरो ! ) उस दिन ( तुम जैसे दुष्टों तथा ) झुठलाने वालों की ( बड़ी ) दुर्दशा है । तुम ( तो बस दुनिया ही में जो खाना पीना है ) खा (पी ) लो और (अल्पकाल के जीवन ही में जो लाभ उठाने हैं, वह ) लाभ उठालो-( क्योंकि ) तुम ( बहुत बड़े ) पापी हो ( तुम ख़ुदा रसूल को झूठा बताते हो । सो) उस दिन ( अर्थात क़यामत के दिन तुम जैसे ) झुठलाने वालों के लिये ( कुछ आराम नहीं, बरन बड़ी ) दुर्दशा है ॥

( बड़े आश्चर्य की बात है कि इतना समझाने पर भी यह लोग सीधी राह पर नहीं आते ) और जब उनसे कहा जाता है कि ( अल्लाह रसूल पर ईमान ले आओ और ) नमाज़ पढ़ो, तो ( अल्लाह रसूल पर ईमान नहीं लाते और ) नमाज़ नहीं पढ़ते ( और उलटा रसूल को झूठा बताते हैं । सो यहाँ यह जो कुछ चाहें करलें-परन्तु इन जैसे उद्दण्डों तथा ) झुठलाने वालों की उस दिन ( बड़ी ) दुर्दशा है ( हे रसूल ! जब यह क़ुर्आन जैसी सर्वोत्तम पुस्तक पर ईमान न लाये ) तो इसके उपरान्त यह किस बात ईमान लावेंगे, ( तुमको अब उनके ईमान लाने की आशा न करनी चाहिये । वह कदापि ईमान न लावेंगे ) ॥

## सूरत–नबा

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ४० आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

بسم الله الرحمن الرحيم
عم يتساءلون ۝ عن النبإ العظيم ۝ الذي
هم فيه مختلفون ۝ كلا سيعلمون ۝ ثم
كلا سيعلمون ۝ ألم نجعل الأرض مهادا ۝
والجبال أوتادا ۝ وخلقناكم أزواجا ۝ وجعلنا
نومكم سباتا ۝ وجعلنا الليل لباسا ۝ وجعلنا النهار
معاشا ۝ وبنينا فوقكم سبعا شدادا ۝ وجعلنا
سراجا وهاجا ۝ وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا
لنخرج به حبا ونباتا ۝ وجنات ألفافا ۝ إن يوم
الفصل كان ميقاتا ۝ يوم ينفخ في الصور
فتأتون أفواجا ۝ وفتحت السماء فكانت أبوابا ۝
وسيرت الجبال فكانت سرابا ۝ إن جهنم
كانت مرصادا ۝ للطاغين مآبا ۝ لابثين فيها

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० यह लोग एक दूसरे से किस चीज़ का हाल दर्याफ़्त कर रहे हैं ० ( क्या क़यामत के ) उस बड़े हादसे का ० जिस ( के बारे ) में यह मुख़्तलिफ़ ( राएं रखते ) हैं ० ( तो ) ख़ैर ! अन्क़रीब इनको मालूम हो जायगा ० फिर ( हम मुकर्रर फ़र्माते हैं ) ख़ैर ! अन्क़रीब इनको मालूम हो जायगा ० ( लोगो ! ) क्या हमने ज़मीन को ( तुम्हारा ) फ़र्श ० और पहाड़ों को (ज़मीन की) मेख़ें नहीं बनाया ० और ( इसके अलावा ) हमही ने तुम को जोड़ा जोड़ा ( यानी मर्द व औरत ) पैदा किया ० और हम ही ने तुम्हारी नींद को ( मूजिब ) राहत बनाया ० और हम ही ने रात को पर्दा ( पोश ) बनाया ० और हम ही ने दिन को रोज़ी ( के धन्दों का वक़्त ) बनाया ० और हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत ( आस्मान ) बना खड़े किये ० और हम ही ने ( आफ़ताब की ) ख़ूब रोशन मशअल बनाई ० और हमही ने बादलों से ज़ोर का पानी बर्साया ० ताकि हम उसके ज़रिये से ग़ल्ला और ( हर तरह की ) रोईदगी ० और घने घने बाग़ (ज़मीन से) निकालें ० बेशक फ़ैसले के दिन का एक वक़्त मुक़र्रर है ० कि उस दिन सूर फूंका जायगा और तुम लोग गिरोह के गिरोह आ हाज़िर होगे ० और आस्मान फटकर ( उसमें ) दर्वाज़े दर्वाज़े हो जाएँगे ० और पहाड़ ( अपनी जगह से ) चलाये जाएँगे और वह गुबार होकर रह जाएँगे ० बेशक दोज़ख़ घात में लगी है ० ( और वहो ) सर्कशों का ठिकाना ( है ) कि उसी में—

---

( यह काफ़िर लोग ) किस वस्तु के सम्बन्ध में ( परस्पर ) पूछ गछ कर रहे हैं ? उसी ( होने वाली ) बड़ी घटना के सम्बन्ध में, जिसमें यह मत-भेद कर रहे हैं ( कोई कुछ कहता है, कोई कुछ )। क्यों व्यर्थ बातों में पड़े हैं। शीघ्र उन्हें ज्ञात हो जायगा और पुनः ( कान खोलकर सुन लें कि ) अति-शीघ्र उन्हें पता चल जायगा। ( आज समझाने बुझाने से नहीं समझते, परन्तु कल आंखों से देख लेंगे। उस समय किसी प्रकार का सन्देह न रहेगा ) ॥

क्या हमने पृथ्वी को बिछौना और पर्वतों को मेख़ें नहीं बना दिया ? ( भूमि का बिछौने के समान फैला होना और पर्वतों का मेख़ों के समान गड़ा और अटल होना-क्या हमारी सत्ता प्रगट करने के लिये पर्याप्त नहीं है ? )। और हमने तुमको जोड़ा जोड़ा पैदा किया ( जिसे चाहा नर बना दिया, जिसे चाहा मादा )। और हमने तुम्हारी नींद को ( तुम्हारे ) सुख का कारण बना दिया। और हमने ( ऐसे कामों के करने के लिये जिन्हें तुम गुप्त रखना चाहते हो) रात्रि को पर्दा बनाया। और दिन को जीविका प्राप्त करने के लिये बनाया। और हमने तुम्हारे ऊपर सात ( मज़बूत और ) दृढ़ आस्मान बना दिये और ( उनमें सूर्य्य जैसा एक ) प्रकाशवान दीपक उत्पन्न कर दिया। और हमने भरे मेघों से मूसलाधार वर्षा की, जिससे कि उससे ( नाना प्रकार के ) अन्न और ( भांति २ की ) जड़ी बूटी घास पात और घने बाग़ उगाएँ । ( क्या इनमें से किसी वस्तु से भी हमारी महिमा नहीं दीख पड़ती । जिस ख़ुदा ने इन समस्त वस्तुओं की प्रथमबार रचना की है-क्या यह सम्भव है कि द्वितीयबार उनकी रचना न कर सके ? कदापि नहीं। वह सर्व शक्तिमान है )। निर्णय का दिन अवश्य नियत है ( जिसमें अल्लाह सबसे हिसाब किताब लेगा और उनके साथ न्याय करेगा और सब खोटा खरा पृथक हो जायगा ) ॥

यह वह दिन होगा कि उस दिन सूर फूंका जायगा और तुम समूह-समूह ( दुबारा जीवित हो होकर क़यामत क्षेत्र में ) आओगे। और ( उस दिन ) आकाश खोल दिया जायगा और ( उसमें ) अनेक द्वार हो जायँगे । और पर्वत नष्ट भ्रष्ट कर दिये जायंगे (और) अन्त में सराब * ( जैसा रेत) होकर रह जायंगे। स्मरण रक्खो ! दोज़ख़ घात में लगी हुई है। और उद्दण्ड लोगों का (वही) ठिकाना है कि उसी में वह दीर्घ काल तक पड़े रहेंगे—

* टीका—सराब उस चमकती हुई रेत को कहते हैं, जो दूर से देखने वालों को सूर्य की किरणें पड़ने के कारण जल मालूम होती है:—हसन निज़ामी ॥

أَحْقَابًا ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝
إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝ جَزَاءً وِفَاقًا ۝ إِنَّهُمْ
كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
كِذَّابًا ۝ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۝ فَذُوقُوا
فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝
حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝ وَكَأْسًا
دِهَاقًا ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ۝
جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ۝ رَّبِّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ
خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَا
يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ
صَوَابًا ۝ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ
رَبِّهِ مَآبًا ۝ إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ

ع

مَا قَدَّمَتْ

क़र्नों ( पड़े ) रहेंगे ० वहां न ( तो किसी तरह की ) ठंडक ( का मज़ा ) चक्खेंगे ० और गर्म पानी और पीप के सिवा उनको कुछ पीने को भी नहीं मिलेगा० ( यह उनके आमाल का ) पूरा बदला ( है ) ० कि यह लोग हिसाब ( आख़िरत ) से ( मुतलक़ ) नहीं डरते थे ० और हमारी आयतों को बड़ी बेबाकी से झुटलाया करते थे ० और हमने हर चीज़ को क़लम-बन्द कर रक्खा है ० ( अज़ां जुम्ला इनके आमाल को भी ) तो ( हम इन लोगों से कहेंगे कि अब अपने किये का ) मज़ा चक्खो और हम तो ( रोज़-बरोज़ ) तुम्हारे लिये अज़ाब ही बढ़ाते जाएँगे ० बेशक जो लोग परहेज़गार हैं, उनको ( आख़िरत में बड़ी ) कामयाबी होगी ० ( यानी रहने को ) बाग़ और ( खाने को ) अंगूर ० और ( दिल बहलाने को ) नौजवान औरतें हम उम्र ० और ( पीने को शराब-तहूर के ) छलकते हुए जाम ० वहां यह लोग न तो ( किसी के मुँह से किसी तरह की ) बेहूदा बात सुनेंगे और न रद्द व कद ० ( ऐ पैग़म्बर ! यह उनके आमाल का ) काफ़ी इनआम (है, जो उनके आमाल के) बदले में तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से ( उनको ) मिलेगा ० ( कि वह ) आस्मानों का और ज़मीन का और जितनी मख़्लूक़ात इन दोनों में है, सबका मालिक ( है )-बड़ा मेहरबान, क़यामत के दिन ( लोग मारे हैबत के ) उससे बात ( तक ) नहीं कर सकेंगे ० जबकि जिब्रील और ( और ) फ़रिश्ते (उसके हुज़ूर में) सफ़-बस्ता खड़े होंगे, किसी के मुँह से बात तो निकलने ही की नहीं, मगर जिसको (ख़ुदाए) रह्मान इजाज़त दे और वह बात भी माक़ूल कहे ० यह ( वह ) दिन ( है, जिसका होना ) बर्हक़ है। तो जो चाहे अपने पर्वर्दिगार के पास ( अपना ) ठिकाना बना रक्खे ० ( लोगो ! ) हमने तुमको ( क़यामत के ) अज़ाब से डरा दिया है, जो अन्क़रीब ( आने वाला ) है कि उस दिन आदमी उन ( आमाल ) को देखेगा—

---

उसमें उन्हें खौलते हुए जल और बहती हुई पीब के अतिरिक्त न ठंढक का स्वाद प्राप्त होगा-न जल का। ( कुछ पीने को न मिलेगा और यह उनके कर्मों का ) न्याय-युक्त बदला होगा। उनको ( परलोक के ) हिसाब का डर ( ही ) न था और हमारे चिन्हों को बड़ी ढिठाई से झुठलाते थे। और हमने ( तो ) हर एक बात की गणना कर रक्खी है। ( उनका कोई कर्म हमारे ज्ञान से बाहर नहीं । हम काफ़िरों को उनके कर्मानुसार दण्ड देंगे और कहेंगे अभागो ! ) चक्खो ( दोज़ख़ का अज़ाब चक्खो)। अज़ाब के अतिरिक्त ( अब ) तुम्हें कुछ नहीं दिया जायगा ( अज़ाब पर अज़ाब भुगतो ) ॥

निस्सन्देह संयमियों ( परहेज़गारों तथा हमसे भय खाने वालों ) के लिये ( वहां ) सफलता है-( रहने को ) बाग़ ( खाने को ) अंगूर ( दिल बहलाने को ) समान आयु वाली युवती स्त्रियां ( पीने को शराब तहूर के ) भरे हुए प्याले। वहां न ( बेहूदा और ) व्यर्थ बातें उनको सुननी पड़ेंगी और न झुठलाने की ( आवाज़ें उनके कानों में आएँगी। उनके मुसल्मान होने पर कोई उन्हें बुरा भला वा झूठा न कह सकेगा। हे ईमान लाने वालो ! और सुकर्म करने वालो ! ) यह बदला ( जो तुम्हें मिलेगा-यह ) तुम्हारे पालनहारे की पूर्ण कृपा का परिणाम होगा ॥

(तुम्हारा पालन कर्त्ता कौन है ? वही) आकाशों और पृथवी और जो कुछ इन (दोनों ) के बीच में है (सबका) उत्पन्न करने वाला (जो) करुणा-निधान ( है। निस्सन्देह ) क़यामत के दिन ( भय के मारे ) उससे कोई बात न कर सकेगा। ( और ) उस दिन रूह और फ़रिश्ते ( उसके समक्ष ) पंक्ति बांध कर खड़े होंगे। ( और उस समय तक ) किसी को बोलने का साहस न होगा, जब तक करुणा-निधान (अल्लाह) ही किसी को आज्ञा न दे दे और ( जो बोले, तो ) ठीक ( ठीक ) बोले। यह दिन अवश्य होगा। अतः जिसका जी चाहे, अपने पालन कर्त्ता के पास ( अपना ) ठिकाना बनाले। हमने ( तो ) तुम्हें उस अज़ाब से जो शीघ्र आने वाला है ( बहुत ) डरा दिया है। और उस दिन हर मनुष्य अपने कर्मों को ( अपने आगे ) देख लेवेगा—

जो उसने अपने हाथों ( गोया ज़ाद-आख़िरत बनाकर ) भेजे हैं और ( उस दिन ) काफ़िर चिल्ला उठेगा कि ऐ काश ! मैं मिट्टी होता ०

## सूरत—नाज़िआत

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ४६ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० उन ( फ़रिश्तों ) की क़सम, जो ( काफ़िरों के बदन में कोने कोने घुस ) घुस कर ( उनकी जान सख़्ती से ) निकालते हैं ० और उन (फ़रिश्तों) की, जो ( ईमान वालों की जान ऐसी आसानी से निकालते हैं, जैसे बन्द ) खोल देते हैं ० और उन ( फ़रिश्तों ) की, जो ( आस्मान व ज़मीन के दर्मियान ) तैरते फिरते हैं ० फिर ( जो कुछ ऊपर से इर्शाद होता है, उस के सुनने को) लपकते हैं ० फिर जैसा हुक्म होता है ( उसके मुताबिक़ दुनिया का ) इन्तिज़ाम करते हैं ० ( ग़रज़ हमको इन फ़रिश्तों की क़सम कि रोज़-क़यामत ज़रूर आने वाला है )–जबकि ज़मीन लरज़ जाए० और ( एक ) ज़लज़ाले के बाद ( दूसरा) ज़लज़ला आए ० उस दिन (बहुत से लोगों के ) दिल धड़क रहे होंगे ० ( और मारे रन्ज व हैबत के ) उन की नज़रें झुकी हुई होंगी ० ( मुन्किरीन-क़यामत ) कहते हैं कि क्या हम ( मरे पीछे फिर ) उल्टे पावँ (ज़िन्दगी को तरफ़) लौटाए जाएँगे ० (और) क्या ( वह भी ऐसी हालत में कि ) जब ( गल सड़ कर ) हम खोखली हड्डियाँ हो जाएँगे ० कहते ( क्या ) हैं कि ऐसा हुआ, तो यह लौटना (बड़े) नुक़्सान की बात है ० सो क़यामत ( इन लोगों के नज़्दीक कुछ मुश्किल काम होगा–हमारे नज़दीक ) तो ( उसकी ) बस (इतनी हक़ीक़त) है ( कि ) एक डांट ( बताई ) ० और एक दम से ( सब ) लोग मैदान ( हश्र ) में आ मौजूद हुए ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) मूसा का क़िस्सा भी तुमको पहुंचा है० जबकि उनको तुवा के मैदान-पाक में ( जिसमें कोह-तूर वाक़े है ) उनके पर्वर्दिगार ने पुकार कर फ़र्माया ० कि ( मूसा ! ) फ़िऔन के पास (चले) जाओ कि उसने बहुत सर उठा रक्खा है ० और (उससे जाकर) कहो कि भला तुझको इसका भी कुछ फ़िक्र है कि तू (कुफ़्र की गन्दिगी से) पाक साफ़ हो जाए ० और मैं तुझको तेरे पर्वर्दिगार की तरफ़ (का) रस्ता दिखाऊँ—

مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِي كُنتُ
سُورَةُ النّٰزِعٰتِ تُرٰبًا ● مكية وهي ست وأربعون
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ● وَالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ● وَالسّٰبِحٰتِ
سَبْحًا ● فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ● فَالْمُدَبِّرٰتِ أَمْرًا ●
يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ● تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ● قُلُوبٌ
يَوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ● أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ● يَقُولُونَ
ءَإِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ● ءَإِذَا كُنَّا عِظَامًا
نَّخِرَةً ● قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ● فَإِنَّمَا
هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ● فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ● هَلْ
أَتٰكَ حَدِيثُ مُوسٰى ● إِذْ نَادٰهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ
الْمُقَدَّسِ طُوًى ● اِذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ
طَغٰى ● فَقُلْ هَلْ لَّكَ إِلٰى أَنْ تَزَكّٰى ● وَأَهْدِيَكَ

---

और ( उस दिन ) काफ़िर कहेगा कि हा शोक ! मैं मिट्टी होता॥

## सूरत—नाज़िआत

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ४६ आयतें और २ रुकूअ हैं ॥**

सौगन्ध है उन ( फ़रिश्तों ) की, जो ( काफ़िरों की जान ) बड़ी कठिनता से खींचते हैं ( अर्थात काफ़िरों को जान निकलने में बड़ा कष्ट होता है )। और शपथ है उन ( फ़रिश्तों ) की, जो ( मुसल्मानों की जान ) सहज से निकालते हैं और शपथ है उन ( फ़रिश्तों ) को, जो ( आज्ञा पालन करने को इस प्रकार इधर उधर फिरते रहते हैं, जैसे नदी में ) हलके २ तैरते हैं। पुनः सौगन्ध है उन (फ़रिश्तों) की, जो ( आज्ञा पालन करने में ) एक दूसरे से आगे निकल जाते हैं। पुनः शपथ है उन ( फ़रिश्तों ) की, जो ( आज्ञानुसार संसार के ) कामों का प्रबन्ध करते हैं। ( जाने रहो कि क़यामत अवश्य होने वाली है )। जिस दिन पृथ्वी ( इस्राफ़ील फ़रिश्ते के सूर से ) काँप उठेगी ( और प्रत्येक जीवधारी निर्जीव हो जायगा )। इसके पश्चात ( दूसरा सूर फूंका जायगा और ) दूसरी ( आवाज़ ) आएगी-( इससे अगले-पिछले समस्त मुरदे दुबारा उठ खड़े होंगे)। अब बहुत से दिल धड़क रहे होंगे और बहुत से लोगों की दृष्टियां नीची होंगी (उन ही की जो आश्चर्य से ) कहते हैं–क्या हम ( मर कर पुनः ) इसी वर्तमान दशा में आ जायँगे ?( और ) क्या जब हम हड्डियां ( ही हड्डियां ) रह जायँगे ( और वह भी ) घुन लगी ( तब भी हमारा दुबारा जी उठना सम्भव होगा ? )॥

( और ) हँसी उड़ाते हैं कि यह ( क़ब्रों से ) लौटना यदि सत्य है, तो ( भाई ! बड़ी ) हानि की बात है। सो ( क़यामत इनके विचार में असम्भव, हो तो हो। वास्तव में क़यामत का होना असम्भव नहीं )। वह ( तो हमारे ) एक बार का डांटना है ( हम डांट कर कहेंगे उठो ! और हिसाब के लिये एकत्रित हो ) और तुरन्त समस्त मुर्दे ( क़ब्रों से निकल २ कर क़यामत के ) मैदान में आ मौजूद होंगे ( यह बात काफ़िरों का कठिन प्रतीत होती हो, तो हो–हमारे लिये सरल है। हे मुहम्मद ! तुम इन लोगों की बातों से शोकातुर न हो और अपना काम किये जाओ )। तुम्हें मूसा की ( भी ) ख़बर है, जब उनके पालन कर्त्ता ने उन्हें तुवा ( नामक ) पवित्र मैदान में पुकारा था कि ( जाओ ! ) फ़िऔन के पास जाओ, जो अवज्ञा में सीमा से बाहर हो रहा है। और (उससे ) कहो कि ( हे फ़िऔन ! ) क्या तू ( कुफ़्र से ) पवित्र होना चाहता है ? और ( क्या तेरी इच्छा है कि ) मैं तुझे--

إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ۝ فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝ فَكَذَّبَ
وَعَصَىٰ ۝ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝ فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝ فَقَالَ
أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ
وَالْأُولَىٰ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِمَنْ يَخْشَىٰ ۝
أَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ۝ رَفَعَ
سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ۝ وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ
ضُحَاهَا ۝ وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ۝ أَخْرَجَ
مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۝ وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۝
مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝ فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ
الْكُبْرَىٰ ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَىٰ ۝
وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَىٰ ۝ فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ ۝ وَآثَرَ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۝ وَأَمَّا
مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ۝

और तू ( उससे ) डरे ० चुनाँचे मूसा ने ( जाकर ) उसको ( असा का ) बड़ा मोजिज़ा दिखाया ० तो उसने झुटलाया और नाफ़र्मानी की ० फिर ( अपनी जगह को ) लौट गया और लगा ( मूसा के ख़िलाफ़ ) तदबीरें करने ० यानी ( लोगों को ) जमा किया और ( उनमें यूं ) मुनादी करा दी ० और (बआवाज़-बुलन्द) कह दिया कि मैं तुम्हारा (सबसे) बड़ा पर्वर्दिगार हूं ० तो उसको ख़ुदा ने आख़िरत और दुनिया ( दोनों के अज़ाब ) में धर पकड़ा ० बेशक जो शख़्स ( ख़ुदा से ) डरता है, उसके लिये इस ( वाक़ए ) में ( बड़ी ) इब्रत है ० ( लोगो ! ) भला तुम्हारा ( क़यामत में दुबारा ) पैदा करना मुश्किल है या आस्मान का ( बनाना ) कि उसको ख़ुदा ने बनाया ० उसका तलैंचा ख़ूब ऊँचा रक्खा, फिर उसको हमवार किया ० और उसकी रात को तारीक बनाया और उसकी धूप निकाली ० और इसके अलावा ज़मीन को बिछाया ० उसीमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला ० और पहाड़ों को ( उसमें ) गाड़ ( कर जमा दिया ) ० ( यह सब ) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के फ़ायदे के लिये ० तो जब ( क़यामत का ) बड़ा हंगामा आ मौजूद होगा ० (और) जो कुछ आदमी ने (दुनिया में) किया है, उस दिन उसको याद आएगा ० और दोज़ख़ सब देखने वालों के सामने बाहर निकाल कर रखदी जाएगी ० तो जिसने ( दुनिया में )सर्कशी की ० और दुनिया की ज़िन्दगी को (आख़िरत पर) मुक़द्दम रक्खा ० तो ( उसका ) ठिकाना बस दोज़ख़ ० और जो अपने पर्वर्दिगार के हुज़ूर में ( जवाब-दिही के लिये ) ० खड़े होने से डरा और ( अपने ) नफ़्स को ख़्वाहिशों से रोकता रहा ०—

---

तेरे पालनहारे को राह दिखाऊं, जिससे कि तू ( उसके अज़ाब से ) डरे ( और उद्दण्डता तथा घमंड करना छोड़ दे )। पुनः मूसा ने उसको बड़ा चमत्कार दिखाया ( अर्थात मूसा का डंडा सर्प बन गया और आपकी हथेली सूर्य से अधिक चमकने लगी, परन्तु ) इस पर ( भी ) फ़िर्औन ने ( आपको ) झुठलाया ( और जादूगर बताया ) और ( अल्लाह और अल्लाह के रसूल की ) अवज्ञा की। इसके उपरान्त फ़िर्औन ( मूसा से ) विमुख होकर ( मूसा के विरुद्ध ) प्रयत्न करने लगा। ( लोगों को ) एकत्रित किया और ( उनके सामने ) पुकार कर कहा, तुम्हारा ( सबसे ) बड़ा पालन कर्त्ता मैं हूं। इस पर अल्लाह ने उसको लौकिक तथा पारलौकिक अज़ाब में पकड़ लिया ॥

( और उसके साथ जो २ बातें की गईं ) उनमें डरने वालों के लिये निश्चित रूप से बहुत बड़ी शिक्षा है। (संक्षिप्त यह कि नबियों को ऐसे उद्दण्डों से सर्वदा पाला पड़ा है। तुम उनसे निर्भय होकर अपना कार्य किये जाओ। जो अल्लाह लकड़ी जैसे निर्जीव पदार्थ को जिसमें जीवन की योग्यता ही नहीं है, सजीव सर्प बना सकता है, तो क्या उसके लिये जीवन की योग्यता रखने वालों को क़यामत के दिन दुबारा ज़िन्दा कर देना असम्भव है ? इनसे पूछो ) तुम्हारा ( क़यामत के दिन दुबारा ) पैदा करना कठिन है वा आकाश का (बनाना) उसको (तो) अल्लाह ने बना दिया ( और कैसा बना दिया कि ) उसका तलैंचा बहुत ऊंचा रक्खा (और ) पुनः ( निर्दोष ) बराबर ( और समतल ) कर दिया। ( अर्थात आकाश में कहीं ऊंच नीच नहीं रक्खी और आकाश की छत ऐसी बनाई कि संसार की सब छतों से उसका तलैंचा ऊंचा है, क्योंकि पृथ्वी से आकाश तक बहुत ऊँचान है )। और उसकी रात्रि को उसने अंधेरी बनाया और दिन को प्रकाशवान किया। इसके बाद पृथ्वी को ( फैला कर ) बिछा दिया। ( और ) उसमें से उसका पानी और उसका ( दाना ) चारा ( घास फूस ) निकाला और पर्वतों को उस पर गाड़ दिया। ( और यह सब दिन तथा रात्रि, आकाश तथा पृथ्वी, पर्वत तथा सूर्य, दाना और पानी ) तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के लाभ के लिये पैदा किये गये हैं। ( इन सब पर सोच विचार करो और इन सबका उपकार मानो) ॥

( और स्मरण रक्खो कि ) जब ( वह ) कठिन विपत्ति ( की घड़ी अर्थात क़यामत ) आ जायगी। ( वह वह दिन है कि ) उस दिन मनुष्य जो कुछ उसने ( संसार में ) किया होगा, उसे स्मरण करेगा। और ( उस दिन ) दोज़ख़ हर देखने वाले की आंखों के समक्ष करदी जायगी। तो जो ( संसार में ) उद्दण्ड रहा ( होगा ) और जिसने सांसारिक जीवन को ( पारलौकिक जीवन के मुक़ाबले में ) अच्छा समझा ( होगा ) निस्सन्देह दोज़ख़ उसका ठिकाना ( बन जायगा ) । और जो कोई अपने पालन कर्त्ता के समक्ष ( जवाब देने के लिये ) खड़े होने से डरा ( अर्थात जिसने क़यामत का भय रक्खा ) और ( अपने ) मन को दुर्वासना से रोका—

فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِىَ الْمَاْوٰى ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ
اَيَّانَ مُرْسٰهَا ۝ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ۝ اِلٰى
رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ۝ اِنَّمَا اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ۝
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْا اِلَّا عَشِيَّةً
سورة الاعمى اَوْ ضُحٰىهَا ۝ اثنتان واربعون اية
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ۝ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝ وَمَا
يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى ۝ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ
الذِّكْرٰى ۝ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝ فَاَنْتَ لَهٗ
تَصَدّٰى ۝ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝ وَاَمَّا مَنْ
جَآءَكَ يَسْعٰى ۝ وَهُوَ يَخْشٰى ۝ فَاَنْتَ عَنْهُ
تَلَهّٰى ۝ كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝
فِىْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝ بِاَيْدِىْ

तो ( उसका ) ठिकाना बस बहिश्त ० ( ऐ पैग़म्बर ! यह लोग ) तुमसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि उसका कहीं थल बेड़ा भी है ० ( सो ऐ पैग़म्बर ! ) तुम उसका वक़्त बताने की तरफ़ से कहाँ के बखेड़े में पड़े ० ( उसके वक़्त की ताईन ) आख़िरकार तुम्हारे पर्वर्दिगार ही पर जाकर ठहरती है ० ( रहे तुम, सो ) जो शख़्स क़यामत से डरना चाहता है, तुम उसको आगाह कर देने वाले हो और बस ० लोग जिस दिन क़यामत को देखेंगे, तो ( उनको ऐसा मालूम होगा कि ) गोया वह ( दुनिया में ) बस दिन के आख़िर पहर ठहरे या अव्वल पहर ०

## सूरत—अबस

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ४२ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० (मुहम्मद!) इतनी बात पर चीं-बजबीं हुए और मुंह मोड़ बैठे ० कि (एक) नाबीना उनके पास आया ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या जानो, अजब नहीं ( कि तुम्हारी तालीम से ) वह संवर जाए ० या नसीहत ( की बातें ) सुने और उसको नसीहत सूदमन्द हो ० तो जो शख़्स (दीन की तरफ़ से) बे पर्वाई करता है ० उसकी तरफ़ तो तुम ख़ूब तवज्जुह करते हो ० हालांकि ( अगर ) वह ठीक न हो, तो तुम पर कुछ ( इल्ज़ाम ) नहीं ० और जो ( ख़ुदा से ) डर कर तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आए ० तो तुम उससे बे-एतिनाई करते हो ० सुनो जी! क़ुर्आन तो ( सर्तासर ) नसीहत है ० पस जो चाहे, इसको सोचे ( समझे ) ० ( और हमारे हां वह लौह-महफ़ूज़ के ) औराक़ में ( लिक्खा हुआ ) है, जिनको ताज़ीम की जाती है ० (और वह) ऊँची जगह रक्खे हुए हैं ( और ) पाक ( हैं ) ०—

---

तो निस्सन्देह उसका ठिकाना जन्नत होगा । ( हे रसूल ! ) यह लोग तुमसे प्रश्न करते हैं कि ( वह आपत्ति की घड़ी कब आयेगी ? ) क़यामत कब तक होगी, तो तुम उसके बताने के सम्बन्ध में किस चिन्ता में पड़े हो । उसके उपस्थित होने के समय का ज्ञान तो केवल तुम्हारे पालनहारे ही को है । तुम तो लोगों को ( क़यामत से ) डराने वाले हो और वह भी उन्हें, जो क़यामत से डरते हैं ( जिनमें भय खाने की योग्यता है ) । जिस दिन यह ( प्रश्न करने वाले ) क़यामत को देखेंगे-( तो उन्हें ऐसा ज्ञात होगा ) मानो ( संसार में ) वह ( केवल ) एक सायंकाल रहे हैं, वा एक सुबह । ( और क़यामत जो उनको इतनी दूर मालूम होती है, ऐसा ज्ञात होगा कि कल ही होने वाली थी ) ॥

## सूरत—अबस

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ४२ आयतें और १ रुकूअ है ॥

त्योरी चढ़ाई और मुंह फेर लिया—क्योंकि उनके पास ( एक ) अन्धा आया था ( और वह उस समय आँखों वालों और उच्च पदवी के लोगों से बातें कर रहे थे ) । और तुम क्या जानो ! कदाचित वह ( तुम्हारी कृपा दृष्टि से पूर्णता ) सुधर जाता, वा उपदेश सुनता, तो उपदेश उसको लाभ पहुंचाता—परन्तु तुम जो मनुष्य ( इस्लाम से ) बे पर्वाही करता है, उसके तो पीछे पड़े रहते हो—इस दशा में कि ( यदि ) वह धर्म-मार्ग न पाये, तो ( इसमें ) तुम पर कोई दोष नहीं आता ॥

( इसके अतिरिक्त ) एक मनुष्य तुम्हारे पास दौड़कर आता है और उसके हृदय में ( ख़ुदा का ) भय है, तो तुम उससे विमुखता का बर्ताव करते हो । ऐसा कदापि न करना चाहिये । यह तो एक शिक्षा है । सो जिसका जी चाहे, इसे ( सोचे समझे और ) स्वीकार करे । ( यह शिक्षा ) आदरणीय पृष्ठों ( अर्थात लौह—महफ़ूज़ ) में ( लिखी हुई ) है, जो उच्च स्थान पर रक्खे हैं और पवित्र हैं—

سَفَرَةٍ ۝ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝ قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُ
مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ
ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝ ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝ ثُمَّ إِذَا
شَاءَ أَنشَرَهُ ۝ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ۝ فَلْيَنظُرِ
الْإِنسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ۝ أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا
ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝ فَأَنبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝
وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝ وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝ وَحَدَائِقَ
غُلْبًا ۝ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۝ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ
فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ۝ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ
أَخِيهِ ۝ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝
لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝ وُجُوهٌ
يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝ وَوُجُوهٌ
يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝ أُولَٰئِكَ

(और ऐसे) लिखने वालों ( यानी फ़रिश्तों ) के हाथों में ( रहते हैं ) ० जो बुज़ुर्ग ( और ) नेकोकार हैं ० आदमी पर ( ख़ुदा की ) मार, वह किस क़दर नाशुक्र है ० ( ख़ुदा ने ) उसको किस चीज़ से पैदा किया ० ( सो पैदा किया ) नुत्फ़े से ( कि पहिले) उसको बनाया, फिर उस ( की हर एक चीज़) का एक अन्दाज़ा बांध दिया ० फिर ( नेकी और बदी का) रस्ता (उस पर) आसान कर दिया ० फिर ( एक वक़्त-ख़ास तक ज़िन्दा रख कर ) उसको मार दिया, फिर उसको क़ब्र में ( लेजा ) दाख़िल किया ० फिर जब चाहेगा, उसको ( दुबारा ) उठा खड़ा करेगा ० हक़ तो यह है कि ख़ुदा ने जो कुछ आदमी को हुक्म दिया, उसने उसकी तामील ही नहीं की ० तो आदमी को चाहिये कि ( और नहीं, तो ) अपने खाने ( ही ) की तरफ़ नज़र करे ० कि हम ( ही ) ने ऊपर से पानी बर्साया ० फिर हम ( ही ) ने ( बीज को ऐसी ताक़त दी कि उसने ) ज़मीन को फाड़ा ० फिर हम ( ही ) ने ( एक ) ज़मीन में ( यह सब कुछ ) उगाया ( यानी ) ग़ल्ला ० और अंगूर और तर्कारियां ० और ज़ैतून और खजूरें ० और घने घने बाग़ ० और मेवे और चारा ० ( यह सब ) इस लिये कि तुम लोगों को और तुम्हारे चारपायों को फ़ायदा पहुंचे ० तो जिस वक़्त शोर ( क़यामत बर्पा ) होगा, जिसके सुनने से कान बहिरे हो जाएँ ० जिस दिन ( ऐसी नफ़्सी नफ़्सी पड़ेगी कि ) आदमी अपने भाई ० और अपनी मां और अपने बाप ० और अपनी जोरू और अपने बेटों से भागेगा ० इन ( रिश्तेदारों ) में से हर शख़्स को उस दिन ( अपनी अपनी नजात का ) फ़िक्र लगा होगा कि वह उसको बस करता है ० कितने ( लोगों के ) मुंह उस दिन चमकते होंगे ० हश्शाश-बश्शाश ० और कितने ( लोगों के ) मुंह उस दिन ( ऐसे ) होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी ० (और गर्द के अलावा ) उन पर कलौंस भी छा रही होगी ० यही—

---

( और उन ) लिखने वालों (अर्थात फ़रिश्तों) के हाथों में ( रहते हैं ) जो बुज़ुर्ग (और) सुकर्मी हैं। मनुष्य पर अल्लाह की मार ! वह कैसा कृतघ्न है ( कि अल्लाह को इतनी बड़ी नेअमत का मान नहीं करता और अल्लाह तआला की आज्ञाओं से लाभ नहीं उठाता। वह तनिक यह तो देखे कि ) उसे ( अल्लाह ने ) किस वस्तु से उत्पन्न किया है ? वीर्य्य से ( पहिले उसको एक लोथड़ा जैसा ) बनाया । पुनः उसके शारीरिक अंशों को सुडौल किया। इसके पश्चात उसके लिये ( जीवन का ) मार्ग सरल किया। ( अर्थात उसके उत्पन्न होने और संसार में जीवन व्यतीत करने के लिये हर प्रकार सुगमता रक्खी)। पुनः (नियत समय तक जीवित रख कर) उसे मृत्यु दी और क़ब्र में पहुंचाया। पुनः जब चाहेगा, उसे जीवित करके उठायेगा। ( जिसने तुच्छ और अपवित्र वीर्य्य की एक बूंद से मनुष्य को उत्पन्न किया, तो उसे इसका दुबारा जिला उठाना क्या कठिन है )॥

सत्य बात तो यह है कि मनुष्य ने अल्लाह की आज्ञा पालन नहीं की। ( और नहीं तो मनुष्य को चाहिये कि कम से कम ) अपने खाने( पीने ही की वस्तुओं ) की ओर देखे। हमने ( आकाश से ) बड़े ज़ोर की वर्षा की। पुनः हमने पृथ्वी को ( अनोखे ढंग पर ) फाड़ा। पुनः ( एक ही ) भूमि में से हमने अन्न पैदा किया और अंगूर और तरकारियाँ ( पैदा कीं )। और ज़ैतून और खजूर ( के वृक्ष खड़े किये ) घने बाग़ ( लगाये ) और मेवे और चारा ( पैदा किया। संक्षिप्त यह कि अनगिनत वस्तुवें पैदा कीं, जिनमें कुछ ) तुम्हारे स्वार्थ की (हैं ) और ( कुछ ) तुम्हारे जानवरों के ( स्वार्थ की )॥

( इन पदार्थों पर सोच विचार करो और जाने रहो कि ) जब ( वह ) कान फोड़ने वाली आवाज़ आवेगी ( अर्थात इस्राफ़ील दूसरा सूर फूंकेंगे। और ) जिस दिन मनुष्य निज-भ्रात, निज-मात, निज-पिता, निज-पत्नी तथा निज-पुत्रों से ( दूर ) भागेगा। उनमें से प्रत्येक मनुष्य को उस दिन (अपनी २ ) ऐसी चिन्ता होगी, कि वही उसके लिये बहुत होगी। (अन्य लोगों की ओर ध्यान देने का उसे अवकाश ही न मिलेगा)। उस दिन कितने ही मुख (तो) चमकते ( दमकते ) होंगे। हँसते ( और विकशित ) प्रसन्न ( और प्रफुल्लित )। और कितने ही मुख उस दिन (ऐसे) होंगे कि उनके ऊपर धूरि पड़ी होगी और उन पर स्याही छा रही होगी। यह (धूरि भरे और स्याह)—

هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝

سورة التكوير مكية وهي تسع وعشرون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝
وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝
وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝
وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝ وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝
بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝
وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝
وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا أَحْضَرَتْ ۝
فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝ وَاللَّيْلِ
إِذَا عَسْعَسَ ۝ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلُ
رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝

( वह लोग ) हैं, जो ( दुनिया में ) काफ़िर और बदकार थे ०

## सूरत—तकवीर

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें २९ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० जिस वक़्त आफ़ताब ( के नूर की चादर को ) लपेट लिया जाए ० और जिस वक़्त तारे झड़ पड़ें ० और जिस वक़्त पहाड़ ( अपनी जगह से ) चलाए जाएँ ० और जिस वक़्त दस महीने की गियाभन ऊँटनियाँ छुटी छुटी फिरें ( और कोई उनका रोक थाम करने वाला न हो ) और जिस वक़्त वहशी जानवर ( मारे डर के बस्तियों में ) आ भरें ० और जिस वक़्त दरिया पाट दिये जाएँ ० और जिस वक़्त रूहों को ( उनके जिस्मों से ) मिलाया जाय ० और जिस वक़्त लड़की से जो ज़िन्दा दर गोर करदी गई थी, पूछा जाय ० कि किस कुसूर के बदले में मारी गई ० और जिस वक़्त ( लोगों के ) नामए-आमाल खोले जाएँ ० और जिस वक़्त आस्मान की खाल खेंची जाए ० और जिस वक़्त दोज़ख़ दहकाई जाए ० और जिस वक़्त बहिश्त क़रीब लाई जाए ० ( उस वक़्त ) हर शख़्स जान लेगा कि वह क्या ( ज़ाद-आख़िरत ) हाज़िर लाया है ० तो हमको उन ( सितारों ) की क़सम है, जो ( एक तरफ़ को ) चलते चलते उल्टे पीछे को हटने लगते ० ( और दिखाई देते देते ) छुप जाते हैं ० और ( हमको ) रात की ( क़सम ) जिस वक़्त ( उसकी स्याही ) चढ़ती चली आती है ० और ( हमको ) सुबह की (क़सम है ) जिस वक़्त उसकी पौ फटती है ० ( ग़रज़ हमको इन सब चीज़ों की क़सम है ) कि यह ( क़ुर्आन ) बेशक मुअज़्ज़ज़ फ़रिश्ते ( यानी जिब्रील ) का (पहुंचाया हुआ) पयाम है ० (और वह वही के बार-गरां के उठाने की ) ताक़त रखता है ( और ) मालिक अर्श ( बरीं यानी ख़ुदा ) की जनाब में उसका बड़ा दर्जा है ०—

---

वही होंगे ( जो दुनिया में ) काफ़िर तथा दुराचारी थे ॥

## सूरत—तकवीर

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें २८ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

जब सूर्य्य (के प्रकाश) को समेट लिया जायगा (अर्थात जब सूर्य्य प्रकाश रहति हो जायगा) और जब तारे (प्रकाश रहित होकर) गिर पड़ेंगे और जब पर्वत चलाये जायँगे । और जब दश मास की गाभिन ऊँटनियाँ ( जो बिल्कुल बियाने के निकट होती हैं और जिन्हें अरब-निवासी अति प्रिय रखते हैं और उनकी सेवा तथा रक्षा करते हैं ) व्यर्थ छुटी फिरेंगी ( और किसी को उनकी देख भाल का ख़्याल न होगा ) । और जब जंगली जानवर ( भय के मारे बस्तियों में ) इकट्ठे होंगे और जब नदी ( तन्नूर की तरह ) भड़काई जायँगी । और जब आत्माओं को ( उनके शरीरों से ) मिलाया जायगा । और जब ज़िन्दा+ क़ब्र में गाड़ी हुई लड़की से प्रश्न किया जायगा कि ( हे निर्दोषिनी ! ) तू किस दोष ( के दंड ) में वध की गई ॥

+टीका—इस्लाम से पूर्व अरब में चलन था कि बालकों को तो जीवित रहने देते थे और कन्याओं को प्रायः उस कन्या के पिता हो अपने हाथ से जीवित पृथ्वी में गाड़ दिया करते थे । और इसमें अपनी नामवरी समझते थे और कन्याओं के ज़िन्दा रखने को अपने मान तथा गौरव के विरुद्ध जानते थेः—हसन निज़ामी ॥

और जब कर्म-पत्र ( सब लोगों के उनके सन्मुख ) खोल (कर रख) दिये जावेंगे । और जब आकाश का पर्दा खींच लिया जायगा और जब दोज़ख़ दहकाई जायगी । और जब (वह समय आ जायगा कि ) जन्नत ( जन्नत वासियों के ) समीप लाई जाय ( उस समय ) हर मनुष्य जान जायगा कि वह ( संसार से ) क्या ( शुभ अशुभ ) लेकर आया है ( और क्या उसका फल मिल रहा है ) । अतः मैं उन सितारों की शपथ खात हूं, जो ( एक ओर चलते २ ) उलटे पीछे को हटने लगते हैं ( और फिर पीछे ही ) चलते रहते हैं ( और अन्त में ) गुप्त हो जाते हैं । और ( सौगन्ध खाता हूं मैं ) रात्रि ( के उस समय ) की, जब वह विदा हो रही होती है और प्राःकाल ( के उस समय ) को, जब उसकी पौ फटती है, कि यह ( जो कुछ कहा जा रहा है, यह मुहम्मद की मन घड़न्त वाणी नहीं, वरन् ) श्रेष्ठ पैग़म्बर ( जिब्रील ) का ( पहुंचाया हुआ ) सन्देश है, जिनमें बड़ी शक्ति है ( वही का बोझ सहन कर सकते हैं ) और अर्श के स्वामी ( अल्लाह तआला ) के यहां उनकी बड़ी प्रतिष्ठा है ॥

مُطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ۝ وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ۝ وَلَقَدْ
رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ۝ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ
بِضَنِيْنٍ ۝ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝ فَاَيْنَ
تَذْهَبُوْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝
لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ۝ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ
اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۝ وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝
وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝ وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۝
عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ۝ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ
مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝ الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ
فَعَدَلَكَ ۝ فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝

ع ٤

( और ) वहां ( फ़रिश्तों का ) अफ़सर ( है ) और अमानतदार है ० और ( ऐ अह्ल-मक्का ! ) तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद) कुछ बावले नहीं ० और बेशक उन्होंने जिब्रील को (आसमान के) मतलए-साफ़ में देखा ( भी ) है ० और यह ग़ैब ( की बातों ) पर बुख़ल करने वाले भी नहीं ० और यह ( क़ुर्आन ) शैतान मर्दूद की ( बनाई हुई ) बातें ( भी ) नहीं ० फिर तुम ( लोग ) किधर ( को बहके ) चले जा रहे हो ० यह क़ुर्आन तो दुनिया जहान के लोगों के लिये नसीहत ही ( नसीहत ) है ० ( मगर ) उसीको ( मुफ़ीद है ) जो तुममें से सीधे रस्ते पर चलना चाहे ० और तुम ( कुछ भी ) नहीं चाह सकते, मगर यह कि अल्लाह चाहे ( जो ) तमाम जहान का पर्वर्दिगार ( है ) ०

## सूरत—इनफ़ितार

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें १९ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है) ० जबकि आसमान फट जाय ० और जब सितारे झड़ पड़ें ० और जब दरियाओं को ( उनकी असली जगह से उछाल कर दूसरी तरफ़ को ) बहा दिया जाए ० और जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएँ ० ( उस वक़्त ) हर शख़्स जान लेगा कि उसने कैसे अमल पहिले से ( ज़ाद—आख़िरत बनाकर ) भेजे हैं और ( कैसे आसार दुनिया में ) पीछे छोड़ आया है ० ऐ आदम ज़ाद ! तुझको किस चीज़ ने अपने पर्वर्दिगार-करीम की जनाब में गुस्ताख़ कर दिया है ० जिसने तुझको बनाया और ( बनाया भी, तो ) बहुत दुरुस्त बनाया और तेरे जोड़ बन्द मुनासिब रक्खे ० ( फिर ) जिस क़ता से चाहा, तेरा ( यानी तेरे आज़ा का ) पैवन्द मिला दिया ०—

( वह ) वहां ( फ़रिश्तों के ) अफ़सर हैं और अमानतदार हैं ( अल्लाह के दिये हुये सन्देश में कतर ब्योंत नहीं करते ) । और ( हे मक्का निवासियो ! ) तुम्हारे ( प्रति दिन के ) संगती ( मुहम्मद ) दीवाने नहीं हैं और वह ( निश्चय रूप से ) खुदा को ( आकाश की ) साफ़ क्षितिज पर देख चुके हैं । और वह ( जो कुछ ) ग़ैब ( अर्थात् अदृष्टि की बातें जानते हैं, उन ) के वर्णन करने में कृपणता नहीं करते और न यह ( क़ुर्आन ) तिरस्कृत शैतान की वाणी है ( यह सर्व शंकायें तुम्हारी निराधार हैं ) ॥

सो तुम किधर ( भटके ) चले जा रहे हो । यह ( क़ुर्आन ) तो समस्त प्राणियों के निमित्त शिक्षा ही शिक्षा है । ( किन्तु ) उसके निमित्त जो तुममें से सीधा मार्ग ग्रहण करना चाहे । और ( तुम्हारा चाहना न चाहना क्या है )-तुम ( कुछ ) नहीं चाह सकते, जब तक अल्लाह सृष्टि का पालन कर्ता ( हो ) न चाहे ( और तुम्हें शक्ति न प्रदान करे ) ॥

## सूरत—इनफ़ितार

मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें १८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

जब आकाश फट जायगा और जब नक्षत्र झड़ पड़ेंगे और जब नदी (ऐसी) उबल पड़ेंगी ( कि अपना २ स्थान छोड़कर एक दूसरे से मिल जायँगी और समस्त भूमि पर बहती फिरेंगी ) । और जब क़ब्रों के मुर्दे जिन्दा किये जायँगे-( तब ) प्रत्येक जीवधारी को ज्ञात होगा कि क्या था, जो उसने आगे भेज दिया था और ( क्या था, जो ) उसने पीछे छोड़ा था । ( संसार के समस्त शुभ अशुभ कर्मों का उस समय फल तथा दण्ड मिलेगा और धन दौलत को जिसने सेंत २ कर रक्खा था, उसकी वास्तविकता प्रगट हो जावेगी ) । हे मनुष्य ! तू अपने पालनहारे-करुणाकारी के मुक़ाबले में किस बिरते पर उद्दण्डता करता है । ( तू उस अल्लाह की आज्ञा पालन नहीं करता और उसका अनादर करता है )-जिसने तुझे पैदा किया और आरोग्य, स्वस्थ तथा सुडौल बनाया और तेरी सूरत जैसी चाही बना दी ॥

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ
لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ
إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي
جَحِيمٍ ۝ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا
بِغَائِبِينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ ثُمَّ
مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ
لِنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

سورة المطففين مكية ست وثلثون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَيْلٌ لِلْمُطَفِّفِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى
النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ
يُخْسِرُونَ ۝ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ
لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

मगर बात यह है कि तुम (बनी-आदम रोज़) जज़ा को नहीं मानते ० हालांकि तुम पर (हमारे) चौकीदार (तईनात) हैं ० (यानी) किरामन कातिबीन (फ़रिश्ते) ० कि जो कुछ भी तुम करते हो, उनको मालूम रहता है ० बेशक नेकोकार (लोग) अलबत्ता मज़े (की बहिश्त) में होंगे ० और बेशक बदकार (लोग) अलबत्ता दोज़ख़ में होंगे ० और जज़ा के दिन (यानी क़यामत को) उस (दोज़ख़) में (चार व नाचार) दाख़िल होंगे ० और वह उससे ग़ायब नहीं होने पायेंगे ० और (ऐ पैग़म्बर!) तुम क्या समझे रोज़-जज़ा है क्या चीज़ ० फिर (हम तुमसे दुबारा पूछते हैं कि) तुम क्या समझे कि रोज़-जज़ा है क्या चीज़ ० (यह वह दिन होगा) जबकि कोई शख़्स किसी शख़्स को कुछ भी फ़ायदा नहीं पहुंचा सकेगा और हुकूमत उस दिन अल्लाह ही की होगी ०

## सूरत—ततफ़ीफ़

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ३६ आयतें और १ रुकूअ है॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है) ० कम देने वालों की (बड़ी ही) तबाही है ० कि लोगों से माप कर लें, तो पूरा पूरा लें ० और जब उनको माप कर या उनको तोल कर दें, तो कम दें ० क्या इनको इस बात का ख़याल नहीं कि बड़े (सख़्त) दिन (यानी क़यामत को) यह उठा खड़े किये जाएँगे ० (और) उस दिन लोग पर्वर्दिगार आलम के रूबरू (आमाल का जवाब-दिही के लिये) खड़े होंगे ०—

(ख़ुदा की शक्ति के इन चमत्कारों को देख कर) तुम्हें चाहिये तो यह था कि (निज स्वामी से) उद्दण्डता न करते, उसकी बजाय तुम क़यामत (ही) का अस्वीकार कर रहे हो—इस दशा में कि तुम पर (हमारी ओर से) देख भाल करने वाले नियत हैं, जो किरामन्-कातिबीन (अर्थात उच्च पद वाले हैं और तुम्हारे कर्मों को लिखते) हैं (और) जो कुछ तुम करते हो, उसका ज्ञान उन्हें रहता है। (और स्मरण रक्खो! क़यामत के दिन) सुकर्मी अवश्य नेअमतों (से परिपूर्ण जन्नत) में होंगे और कुकर्मी अवश्य दोज़ख़ में (होंगे)। क़यामत के दिन (काफ़िर लोग) दोज़ख़ में डाले जायँगे और (पुनः) वह उससे (कभी) न निकाले जायँगे॥

और तुम जानते भी हो क़यामत का दिन है क्या? और तुम समझे भी क़यामत का दिन कहते किसे हैं? (वह वह दिन है कि) उस दिन किसी जीवधारी का लाभ हानि किसी के इख़्तियार में न होगा। और उस दिन अल्लाह का (और केवल अल्लाह का) शासन होगा॥

## सूरत—ततफ़ीफ़

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ३६ आयतें और १ रुकूअ है॥**

नाप तोल में कमी करने वालों के लिये बड़ी ख़राबी (और दुर्दशा होनी) है, जो लोगों से स्वयं नाप (व तोल) कर लेते हैं, तो पूर्ण लेते हैं। और जब लोगों को नाप कर अथवा तोल कर देते हैं, तो (बेईमानी से) कम देते हैं। क्या इन्हें इसका ख़्याल नहीं है कि वह (क़यामत के) बड़े (भयानक) दिन में दुबारा ज़िन्दा कर दिये जायँगे। जिस दिन सब लोगों को सर्व संसार के पालनहारे के समक्ष (हिसाब देने के निमित्त) खड़ा होना होगा—

كَلَّآ إِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝ وَمَآ أَدْرٰىكَ
مَا سِجِّينٌ ۝ كِتٰبٌ مَّرْقُومٌ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ
الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ
بِهِۦٓ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ إِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ ءَايٰتُنَا
قَالَ أَسٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ
عَلٰى قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن
رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ
ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ۝ كَلَّآ
إِنَّ كِتٰبَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝ وَمَآ أَدْرٰىكَ
مَا عِلِّيُّونَ ۝ كِتٰبٌ مَّرْقُومٌ ۝ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ
إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنظُرُونَ
تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝ يُسْقَوْنَ
مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ۝ خِتٰمُهُۥ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذٰلِكَ

فليتنا

सुनो जी ! बदकार लोगों के नामए-आमाल क़ैदियों के रजिस्टर में ( दर्ज होते रहते ) हैं ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम क्या समझे कि क़ैदियों का रजिस्टर है क्या चीज़ ० (वह एक) किताब है कि ( वक़्तन-फ़वक़्तन ) उसकी ख़ाना-पुरी होती रहती है ० उस दिन झुटलाने वालों की तबाही है ० जो रोज़-जज़ा को झूट जानते हैं और उसको वही झूट जानता है, जो हद्द ( बन्दिगी ) से बढ़ चला हो ( और ) बद हो ० कि जब उसको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाएँ, तो कहे कि अगले लोगों के ढकोसले हैं ० ( ढकोसले ) नहीं, बल्कि ( बात यह है कि ) इनके दिलों पर इन ( ही ) के आमाल ( बद ) के ज़ङ्ग बैठ गये हैं ० सुनो जी ! यही ( लोग हैं, जो ) उस दिन अपने पर्वरदिगार के सामने नहीं आने पाएँगे ० फिर यह लोग ज़रूर जहन्नम में दाख़िल होंगे ० फिर ( इनसे ) कहा जायगा कि यही तो वह ( चीज़ ) है, जिसको तुम ( दुनिया में ) झूट जानते थे ० सुनो जी ! नेक लोगों के नामए-आमाल आली ( मर्तबा ) लोगों के रजिस्टर में ( दर्ज होते रहते ) हैं ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि आली-मर्तबा लोगों का रजिस्टर है क्या चीज़ ० ( वह एक ) किताब है कि ( वक़्तन फ़वक़्तन ) उसको ख़ाना-पुरी होती रहती है ० ( और ) मुक़र्रब (फ़रिश्ते) उस पर तईनात हैं ० बेशक नेक ( लोग क़यामत के दिन बड़े ) आराम में होंगे ० तख़्तों पर ( बैठे बहिश्त की सैर ) देख रहे होंगे ० ( ऐ मुख़ातब ! ) तू ( उनको देखे, तो ) ख़ुश-हाली की ताज़गी उनके चेहरों से ( साफ़ ) पहिचान ले ० उनको शराब-ख़ालिस सर्बन्द पिलाई जायगी ० जिसकी ( बोतल की ) मुहर मुश्क की होगी—

---

( यह लोग बड़ी मूर्खता करते हैं ) इनको कदापि ऐसा नहीं करना चाहिये। निश्चित रूप से ( समस्त ) कुकर्मी पापियों के कर्म-पत्र सिज्जीन में ( विद्यमान ) हैं। और तुम कुछ समझे भी कि सिज्जीन क्या है ? एक लिखा हुआ रजिस्टर है। उस दिन इन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्दशा होगी, जो क़यामत के दिन को झुठलाते हैं। और हर वह मनुष्य जो सीमा से बढ़ने वाला पापी है, केवल वही क़यामत को झुठलाता है। जब ऐसे मनुष्य के सन्मुख हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहता है ( यह तो ) पूर्व जनों की कहानियां हैं, (इनमें क्या रक्खा है ! )। यह बात नहीं, बरन उनके (अशुभ) कर्मों का उनके दिलों पर मोरचा (ज़ङ्ग) चढ़ गया है (जिसके कारण क़ुर्आन की शिक्षा उनके हृदयों तक पहुंचती ही नहीं ) ॥

स्मरण रक्खो ! यही हैं वह लोग, जो अवश्य उस दिन अपने पालन कर्त्ता (के दर्शन और उसकी कृपा ) से ओट में (तथा वञ्चित) होंगे। पुनः ( इस दशा में होते हुये भी ) यह लोग दोज़ख़ में ( भी ) अवश्य प्रवेश करेंगे। (और उनसे) कहा जायगा कि ( देखो ! ) यह है वह ( दोज़ख़ ) जिसे तुम ( दुनिया में ) झुठलाया करते थे ॥

( दुराचारियों के कुकर्मों के दंड की दशा तो तुमको ज्ञात हो चुकी। अब ) यह भी सुन लो ! कि नेक ( तथा आज्ञाकारी) मनुष्यों के कर्म—पत्र इल्लीयीन में ( विद्यमान ) हैं। और तुम कुछ समझे भी कि इल्लीयीन क्या है। ( यह भी ) एक लिखा हुआ रजिस्टर है, जिसकी रक्षा के लिये ( अल्लाह के ) समीप-वर्ती फ़रिश्ते मौजूद रहते हैं। ( क़यामत के दिन ) सदाचारी लोग बड़े सुख चैन में होंगे ( बादशाहों की तरह ) सिंहासनों पर ( विराजमान होकर जन्नत का मनोहर दृश्य ) देखेंगे। तुम्हें उनके मुंहों पर आनन्द मङ्गल के चिन्ह स्पष्ट दीख पड़ेंगे। उन्हें अति पवित्र बिना मिलावट की मुहर की हुई मदिरा पीने को मिलेगी कि जिसके ( हर घूंट के ) गले से उतरते ही कस्तूरी की सुगन्ध आएगी। इस नेअमत के—

فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ۝ وَمِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ۝
عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝ وَإِذَا
مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝ وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ
أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝ وَإِذَا رَأَوْهُمْ
قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝ وَمَا أُرْسِلُوا
عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ۝ فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ
الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۝
هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

سورة الانشقاق مكية خمس وعشرون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝
وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝

और रीस करने वालों को चाहिये कि उसी की रीस करें ० और ( शराब में ) तस्नीम ( के पानी ) की मिलौनी होगी ० (तस्नीम बहिश्त का एक ) चश्मा है, जिसमें से ( ख़ास कर ) मुक़र्रब ( लोग ) पियेंगे ० बेशक मुज्रिम ( दुनिया में ) ईमान वालों के साथ हँसी किया करते थे ० और जब उनके पास से होकर गुज़रते ( उन पर ) सैनें चलाते ० और जब ( मुसल्मानों के पास से ) लौट कर अपने घर जाते, तो लौट कर ( इनही के तज़किरे का ) मशग़ला बनाते ० और जब इनको देखते, तो ( बेतअम्मुल ) बोल उठते कि यही तो (वह लोग हैं, जो) गुमराह (हो गए) हैं ० हालाँकि इनको मुसल्मानों पर दारोग़ा बनाकर तो भेजा नहीं गया ० तो आज (आख़िरत में ) मुसल्मान काफ़िरों पर हँसेंगे ० ( और ) तख़्तों पर ( बैठे बहिश्त की सैरें ) देख रहे होंगे ० अबतो काफ़िरों ने अपने किये का बदला पाया ०

## सूरत—इन्शिक़ाक़

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें २५ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहरबान (है) ० जब आस्मान ( ख़ुदा के हुक्म से ) फट जाय ० और अपने पर्वर्दिगार के ( इस ) हुक्म की तामील करे और ( क्यों न करे कि यह ) उसका फ़र्ज़ है ० और जब ( ख़ुदा के हुक्म से ) ज़मीन ( ऊँच नीच बराबर करके फ़र्श की तरह ) तान दी जाए ० और ( मुर्दे और दफ़ीने ) जो ( कुछ भी ) उस में है-( सब ) बाहर डाल दे और ख़ाली हो ( कर रह ) जाए ०—

---

प्राप्त करने की अभिलाषा रखने वालों को चाहिये कि वह उसके उपलब्ध करने में पूर्ण उद्योग करें । उस ( ख़ालिस मदिरा ) में तसनीम ( का स्वच्छ जल भी ) मिला होगा । ( तसनीम जन्नत का एक ) सोता है कि ( केवल संयमियों तथा ) समीप वर्ती ही उसका जल पीते हैं । ( संसार में ) काफ़िर लोग मुसलमानों की हँसी उड़ाया करते थे । और जब उनके पास से होकर गुज़रते थे, तो ( अनादर स्वरूप ) परस्पर नेत्रों से संकेत करते थे । और जब अपने घरों को लौटते थे, तो इतराते और मुसल्मानों को हँसी उड़ाते हुये लौटते थे । और ( मुसलमानों का नाम उन्होंने पथ-भ्रष्ट रक्खा था )। जब उन्हें देखते कहते कि यही हैं वह, जो पथ-भ्रष्ट हो गये हैं । यद्यपि वह उन पर चौकीदार बनाकर नहीं भेजे गये थे । ( इनको मुसलमानों पर आक्षेप करने और उनको पथ-भ्रष्ट कहने का क्या अधिकार था ) ॥

सो आज ( क़यामत ) के दिन ( सब बदला उतर जायगा । आज ) ईमान वाले काफ़िरों पर हँसेंगे ( और ) सिंहासनों पर विराजमान होकर ( उनका तमाशा ) देखेंगे । ( और परस्पर एक दूसरे से कहते होंगे क्यों जी ! ) अब तो इन काफ़िरों को उनके किये का ( पूरा २ ) बदला मिल गया ॥

## सूरत—इन्शिक़ाक़

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें २५ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

जब ( दूसरा सूर फूंकने पर ) आकाश फटे और अपने पालनहारे का आदेश सुने ( और उसकी आज्ञा पालन करे ) कि ( आज्ञा पालन करना ) उसका कर्त्तव्य है । और ( जब ऊँचाई नीचाई बराबर करके ) भूमि समतल करदी जाय और जो कुछ उसमें है, उसे वह बाहर उगल दे और भीतर से ( बिलकुल ) ख़ाली हो जाय—

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ
اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝ فَاَمَّا مَنْ
اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۝ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ
حِسَابًا يَّسِيْرًا ۝ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝
وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۝
فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۝ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ۝ اِنَّهٗ
كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ
يَّحُوْرَ ۝ بَلٰۤى اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ۝ فَلَاۤ اُقْسِمُ
بِالشَّفَقِ ۝ وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۝
لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝ فَمَا لَهُمْ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ۝
بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
يُوْعُوْنَ ۝ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ

اٰمَنُوْا

और अपने पर्वर्दिगार के ( इन ) अहकाम की तामील करे ( और क्यों न करे कि यह ) उसका फ़र्ज़ है । ( जब यह वाक़आत पेश आएँ, तो जानो कि क़यामत आई ) ० ऐ आदम ज़ाद ! तू ( इसी तरह ) घिसट घिसट कर अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ चला जा रहा है ० फिर ( एक न एक दिन ) तू उससे जा मिलेगा, तो ( उस दिन ) जिसको उसका नामए ( आमाल ) उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा ० तो उससे आसानी के साथ हिसाब लिया जायगा ० और ( वह हिसाब से फ़ारिग़ होकर ) ख़ुश ख़ुश अपने अह्ल ( व अयाल ) में वापिस आएगा ० और जिसको उसका नामए ( आमाल ) उसको पीठ के पीछे ( से ) दिया जाएगा ० तो वह मौत की दुआ मांगेगा ० और जहन्नम में जा दाख़िल होगा ० यह ( वह शख़्स है, जो ) अपने अह्ल ( व अयाल के साथ दुनिया ) में मगन ( रहा करता ) था ० ( और ) इस ज़ोम में था कि उसकी हालत ( मौजूदा ) में किसी तरह का तनज़्ज़ुल नहीं होगा ० ( मगर तनज़्ज़ुल तो ) होना था ( और हुआ ) उसका पर्वर्दिगार उसको ( बद किर्दारियां करते हुए ) देख रहा था ० तो हमको शफ़क़ की क़सम है ० और रात की और जिन चीज़ों पर रात छा जाती है, उनकी ० और चांद की, जब पूरा हो ० कि तुम लोग ( इसी तरह ) दर्जा-बदर्जा मन्ज़िल—हस्ती को तै करोगे ० तो इन ( काफ़िरों ) को क्या ( मार ) है कि ईमान नहीं लाते ० और जब इनके रूबरू क़ुर्आन पढ़ा जाए, तो ( ख़ुदा के आगे ) सज्दा नहीं करते ० बलिक ( यह ) काफ़िर ( उल्टे ) झुठलाते हैं ० और जैसे जैसे ख़यालात ( फ़ासिद यह लोग अपने ) दिलों में रखते हैं, ख़ुदा को ख़ूब मालूम है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! ) इनका अज़ाब-दर्दनाक की ख़ुश-ख़बरी सुना दो ० मगर ( हां ! ) जो लोग—

और अपने पालन कर्त्ता की आज्ञा पर कान धरे ( और उसका पालन करे ) कि ( आज्ञा पालन ही ) उसे उचित है-( तब समझ लो कि क़यामत आ गई ) । हे मनुष्य ! तुझे अपने पालन कर्त्ता से मिलने तक ( सुकर्मों के करने में ) बहुत परिश्रम करना है और पुनः ( अन्त में अपने इन शुभ अशुभ ) कर्मों ( के फल तथा दण्ड ) को भोगना है । सो ( उस दिन ) जिसे उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, उससे बहुत सरल हिसाब लिया जायगा और वह ( हिसाब देकर ) प्रफुल्लित तथा हर्षित अपने संगतियों के पास पहुंचेगा ॥

और जिसको उसका कर्म-पत्र पीठ पीछे से मिला, वह मृत्यु को पुकारेगा और दोज़ख़ में प्रवेश करेगा । यह ( वह मनुष्य होगा, जो संसार में ) निज सम्बन्धियों ( तथा मित्रों ) में ( ख़ुदा से निर्भय और परलोक से निश्चिन्त होकर ) मज़े उड़ाता रहा । वह इस विचार में था कि उसको ( बस अब ) अल्लाह के पास जाना है ही नहीं-( परन्तु उसका विचार अशुद्ध था ) । निश्चित रूप से उसे जाना था । ( और ) उसका पालनहारा उसको ( और उसके प्रत्येक कर्म को ) देख रहा था ॥

सौगन्ध खाता हूं मैं शफ़क़ की-( जो सूर्य्य अस्त होने के उपरान्त आकाश पर लाल २ दीख पड़ती है ) और ( शपथ खाता हूं मैं ) रात्रि की और उन वस्तुओं की, जिन पर रात्रि का अधिकार है और ( सौगन्ध खाता हूं मैं ) चन्द्रमा की, जबकि वह पूर्ण हो ( चौदहवी रात्रि का ) कि तुमको एक दशा से दूसरी दशा की ओर अवश्य जाना है । ( अभी ज़िन्दा हो, पुनः मृत्यु पाओगे और पुनः जीवन पाओगे ) । इन ( लोगों ) को क्या हो गया है, जो ईमान नहीं लाते । और जब इनके आगे क़ुर्आन पढ़ा जाता है, तो दंडवत नहीं करते-वरन् ( यह ) काफ़िर ( उलटा उसे ) झुठलाते हैं । और अल्लाह भली भाँति जानता है कि जो जो विचार ( उन्होंने अपने ) हृदयों में ( गुप्त ) कर रक्खे हैं । सो ( हे रसूल ! ) तुम उन्हें दुखदायी अज़ाब का मंगल-समाचार सुनादो, किन्तु उनके लिये—

ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, उनके लिये अज्र है बे इन्तहा ०

## सूरत—बुरूज

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें २२ आयतें और १ रुकूअ है॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० आस्मान की क़सम, जिसमें बुर्ज हैं ० और उस दिन की (क़सम) जिसका वादा है (यानी रोज़-क़यामत) ० और गवाह को (क़सम) और जिसके मुक़ाबले में गवाही देता है, उसकी (क़सम) ० कि (काफ़िर अन्जामकार हलाक होंगे, जिस तरह वह) ख़न्दक़ों वाले हलाक हुए ० (और वह ख़न्दक़ें) आग (की थीं) जिसमें (उस वक़्त के मुसल्मानों के जलाने के लिये उन्होंने बहुत सा) ईंधन (झोंक रक्खा) था० जबकि वह ख़ुद ख़न्दक़ों पर बैठे हुए थे ० और जो (ज़ुल्म व सितम) मुसल्मानों पर कर रहे थे, वह (उसका तमाशा) देख रहे थे ० और वह मुसल्मानों की इसी बात से चिड़े कि वह अल्लाह पर ईमान लाए, जो ज़बर्दस्त (और) सज़ावार हम्द (व सना) है ० (और वह) ऐसा (क़ादिर मुत्लक़ है) कि आस्मानों (को) और ज़मीन को सल्तनत उसी की है और (उसके अलावा) अल्लाह हर चीज़ (के हाल) से वाक़िफ़ (भी) है ० बेशक जिन लोगों ने मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों को ईज़ाएँ दीं (और) फिर तौबा न की, तो उनको जहन्नम के (तरह तरह के) अज़ाब होंगे और (उनके अलावा) उनको (ख़ास कर) जलने का अज़ाब (भी) होगा ० अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, उनके लिये (बहिश्त के) बाग़ हैं—

امنوا وعملوا الصلحت لهم اجر غير ممنون ۝

سورة البروج مكية وهي اثنان وعشرون اية

بسم الله الرحمن الرحيم

والسماء ذات البروج ۝ واليوم الموعود ۝
وشاهد ومشهود ۝ قتل اصحب الاخدود ۝
النار ذات الوقود ۝ اذ هم عليها قعود ۝ وهم
على ما يفعلون بالمؤمنين شهود ۝ وما
نقموا منهم الا ان يؤمنوا بالله العزيز
الحميد ۝ الذى له ملك السموت والارض
والله على كل شىء شهيد ۝ ان الذين
فتنوا المؤمنين والمؤمنت ثم لم يتوبوا
فلهم عذاب جهنم ولهم عذاب الحريق ۝
ان الذين امنوا وعملوا الصلحت لهم جنت تجرى

---

जो ईमान लाये और सुकर्मी बने रहे-(अन्त में) वह फल हैं, जिसकी कोई सीमा नहीं॥

## सूरत—बुरूज

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें २२ आयतें और १ रुकूअ है॥**

शपथ है बुर्जों वाले आकाश की और उस दिन की, जिसका वादा है (अर्थात क़यामत के दिन की) और (शपथ है) हाज़िर होने वाले की और उस (दिन) की, जिसमें हाज़िरी होती है (अर्थात हज के दिन की) कि (काफ़िर लोग अन्त में नष्ट भ्रष्ट कर दिये जायँगे। जिस प्रकार) खाइयों वाले नष्ट कर दिये गये-(जिनकी खाइयों में) अग्नि (प्रचण्ड थी और) उसमें (मुसलमानों के जलाने के लिये बहुत सा) ईंधन भरा हुआ था। जिस समय वह लोग (अर्थात खाइयों वाले) खाइयों (के किनारों) पर बैठे हुये थे और जो (दुर्व्यवहार) ईमान वालों के साथ कर रहे थे, उसे देखते जाते थे। और उन काफ़िरों ने उन ईमान वालों में कोई दोष नहीं पाया था, इसके अतिरिक्त कि वह बलवान और प्रशंसनीय अल्लाह पर ईमान ले आये थे। उस (अल्लाह) पर कि आकाशों और पृथ्वी का शासन (सब) उसी का है और (अत्याचारियों का अत्याचार और अत्याचार-पीड़ित मनुष्यों की दीनता) प्रत्येक वस्तु अल्लाह की दृष्टि में है॥

जिन्होंने ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों को (सताया और) कष्ट पहुंचाये (उन्हें अग्नि में डाला और) पुनः (अपने किये पर न पश्चाताप किया और) न तौबा की, निश्चित रूप से उनके लिये (परलोक में) दोज़ख़ का अज़ाब है और (दुनिया में) उनके लिये जलने का अज़ाब × निस्सन्देह जो ईमान लाये और जिन्होंने शुभ-कर्म किये, उनके लिये जन्नत के बाग़ हैं—

× टीका—लोग कहते हैं कि जब ज़ू-नवास उन अग्नि-पूर्ण खाइयों को ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों से भरवा चुका, तो वह अग्नि प्रचण्ड हुई और कई गज़ ऊँची हो गई। यहां तक कि ज़ू-नवास और उसके साथी भी उसमें घिर गये और उसी अग्नि में भस्म हो गयेः—हसन निज़ामी॥

مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝ إِنَّ بَطْشَ
رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝ وَهُوَ
الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝ فَعَّالٌ
لِّمَا يُرِيدُ ۝ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝ فِرْعَوْنَ
وَثَمُودَ ۝ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝ وَاللَّهُ
مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ۝ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ۝ فِي
لَوْحٍ — سورة الطارق سبع عشرة آية — مَّحْفُوظٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ
النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝ إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا
حَافِظٌ ۝ فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ
مِن مَّاءٍ دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ
وَالتَّرَائِبِ ۝ إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ

जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी—यह है बड़ी कामयाबी ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) बेशक तुम्हारे पर्वदिगार की पकड़ बड़ी सख़्त (पकड़) है ० वही अव्वल बार ( पैदा ) करता और ( वही क़यामत में ) दुबारा भी करेगा ० और वह बख़्शने वाला ( और ) महब्बत करने वाला ० ( और ) अर्श का मालिक ( और ) आलीशान है ० ( और ) जो चाहता है, कर गुज़रता है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) भला ( दुश्मनान-ख़ुदा के ) लश्करों ० यानी फ़िरऔन और समूद के हालात ( भी ) तुम तक पहुंचे हैं ? ( ज़रूर पहुंचे हैं और लोगों को तुम सुनाते भी हो ) ० मगर काफ़िर (क़ुर्आन के) झुटलाने में ( लगे ) हैं ० और अल्लाह इनको सब तरफ़ से घेरे हुए है—( इनके झुटलाने से होता ही क्या है, यह कुछ ऐसी वैसी बातें तो हैं नहीं ) ० बल्कि यह ( क़ुर्आन ) बड़े रुतबे का क़ुर्आन है ० ( और हमारे हाँ ) लौह महफ़ूज़ में ( लिक्खा हुआ मौजूद ) है, उससे एक हर्फ़ ख़िलाफ़ नहीं ०

## सूरत—तारिक़

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें १७ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान ( है ) ० आस्मान की क़सम और रात के आने वाले की ( क़सम ) ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि रात का आने वाला क्या है ० ( वह ) चमकता हुआ तारा ( है ) ० ( ग़रज़ हमको आस्मान और तारे की क़सम है ) कि कोई शख़्स नहीं, जिस पर ( हमारी तरफ़ से ) चौकीदार ( यानी किरामन-कातिबीन फ़रिश्ते तईनात ) न हों ० तो इन्सान को चाहिये कि (और नहीं, इतनी ही बात को) देखे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है ० वह पैदा किया गया है, पानी ( यानी क़तरए-मनी) से, जो ( इन्ज़ाल के वक़्त ) उछल कर निकलता है ० पीठ और सीने की हड्डियों के बीच में से ० बेशक ख़ुदा ( आदमी के मरे पीछे ) उसके लौटाने (यानी दुबारा पैदा करने ) पर ( भी ) क़ादिर है ० जिस दिन—

---

जिनके नीचे नहरें बहती हैं । ( और ) यह ( जन्नत का मिलना ) बहुत बड़ी सफलता है । कुछ सन्देह नहीं कि तुम्हारे पालनहारे की पकड़ बहुत कड़ी है । ( उसके अज़ाब से मर कर भी छुटकारा नहीं मिल सकता । जिस प्रकार ) वह पहिली बार उत्पन्न करता है, उसी प्रकार वह मृत्यु के पश्चात पुनः जीवन दान देने की भी शक्ति रखता है (और अज़ाब को सर्वदा के लिये नियत कर सकता है ) । और ( काफ़िरों पर यदि इतना कोप है, तो ईमान वालों पर कृपा दया की भी सीमा नहीं ) । वह ( पापों को ) क्षमा करने वाला ( और अपने भक्तों से ) प्रेम करने वाला है । ( उसके गुणों का बखान कहां तक कोई करे ) वह अर्श का स्वामी और अति उच्च पद वाला है । और उसे यह शक्ति है कि जो कुछ चाहता है, करता है ॥

( हे रसूल ! ) क्या फ़िरऔन वालों और समूद वालों का समाचार तुमने सुना है ( कि वह कैसे शक्तिशाली और धनवान थे । परन्तु अन्त उनका क्या बना और किस प्रकार वह नष्ट भ्रष्ट हो गये ) । परन्तु काफ़िर ( तो क़ुर्आन सम्बन्धी उपदेशों को ) झुठलाने में ( तत्पर ) हैं ( वह किसी की शिक्षा-प्रद दशा पर क्या विचार करेंगे ) । और अल्लाह ( भी ) उन्हें चारों ओर से घेरे हुये है ( और उनकी एक २ बात उसे ज्ञात है । उनके झुठलाने से होता ही क्या है ) । यह क़ुर्आन तो उच्च पद वाली पुस्तक है, जो लौह-महफ़ूज़ में ( सुरक्षित ) है ॥

## सूरत—तारिक़

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें १७ आयतें और १ रुकूअ है ॥

शपथ है आकाशों की और उस ( तारे की ) जो रात्रि में उदय होता है । और तुम क्या जानो कि वह रात्रि में उदय होने वाला तारा क्या है । वह बहुत चमकदार तारा है ( जो प्रातःकाल होने के निकट उदय होता है ) । निस्सन्देह ( प्रत्येक ) प्राणी पर ( एक ) रक्षक ( नियुक्त ) है ( जो ख़ुदा की आज्ञानुसार उसके प्राण को हर आपत्ति तथा संकट से सुरक्षित रखता है । दुबारा जीवन का विश्वास करने के लिये ) मनुष्य को सोचना चाहिये कि वह किस वस्तु से उत्पन्न किया गया है ( जिससे कि वह ख़ुदा की शक्ति का अनुभव करे और दुबारा जीवन को असम्भव न जाने । उसको जानना चाहिये कि ) वह ( उस ) उछलने वाले पानी से उत्पन्न किया गया है, जो ( पुरुष की ) पीठ और ( स्त्री की ) छाती की हड्डियों के बीच से निकलता है । ( जब यह दशा है और अल्लाह मनुष्य को एक बूंद वीर्य्य से बनाने की शक्ति रखता है, तो उसे इसका दुबारा जो उठाना क्यों कठिन समझा जाता है ) । निस्सन्देह वह ( क़यामत के दिन ) उसके ( दुबारा उत्पन्न करने और ) लौटाने की शक्ति रखता है ॥

( लोगों के दिलों के ) भेद जाँचे जाएँगे ० (उस दिन) न तो आदमी का (अपना) कुछ ज़ोर ( चलेगा ) और न कोई (उसका) मददगार होगा ० पानी ( बरसाने ) वाले आस्मान की क़सम ० और ज़मीन की ( क़सम ) जो ( बीज के फूटते वक़्त ) फट जाती है ० कि बेशक कुर्आन एक बात क़तई है ० और वह कुछ सर्सरी ( सी बे बुनियाद बात ) नहीं ० बेशक यह ( काफ़िर तो अपने) दाव कर रहे हैं ० और हम (अपने) दाव कर रहे हैं ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! इन ) काफ़िरों को मोहलत दो ( और ज़ियादा नहीं, बल्कि ) इनको थोड़ी ही सी मोहलत दो ०

## सूरत—अअला

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें १९ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० (ऐ पैग़म्बर !) अपने पर्वर्दिगार-आलीशान के नामकी तस्बीह (व तक़्दीस) किया करो ० जिसने ( तमाम मख़्लूक़ात को ) बनाया और ( बहुत ) दुरुस्त बनाया ० और जिसने ( हर एक चीज़ की ग़रज़ व ग़ायत का ) अन्दाज़ा किया और ( उसको उसी ) रस्ते लगा दिया ० और जिसने ( हरा खुशनुमा) चारा ( ज़मीन से) निकाला ० फिर उसको (आख़िरकार) काला-काला ( बदनुमा ) कूड़ा कर दिया ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) हम तुमको ( कुर्आन ऐसी अच्छी तरह ) पढ़ा देंगे कि तुम (उसको) भूलने न पाओगे ० मगर किसी आयत को ख़ुदा ( ही ) भुला देना चाहे-( तो वह दूसरी बात है )। बेशक ख़ुदा पुकार कर पढ़ने को भी जानता है और आहिस्ता पढ़ने को भी ( जानता है ) ० और ( दीन ) आसान ( यानी इस्लाम पर साबित क़दम रहना भी) तुम्हारे लिये आसान कर देंगे ० पस जहां तक ( समझो कि ) समझाना मुफ़ीद है-( लोगों को ) समझाते रहो ० और जो ( ख़ुदा से ) डरता है, वह तो जल्द समझ लेगा ० मगर बद-बख़्त ( अज़ली ) तो उससे गुरेज़ ही करता रहेगा ० जो ( आख़िरकार )—

عَلَى السَّرَآئِرُ ۙ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝
وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۙ وَالْاَرْضِ ذَاتِ
الصَّدْعِ ۙ اِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۙ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝
اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۙ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۝
فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۝
وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۝
فَجَعَلَهُ غُثَآءً اَحْوٰى ؕ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۝
اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۝
وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ؕ
سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ الَّذِيْ

---

( क़यामत का दिन वह दिन होगा ) जिस दिन ( समस्त ) गुप्त भेदों को खोल कर रख दिया जायगा ( और सबकी वास्तविकता प्रगट हो जायगी ) । उस दिन मनुष्य में न स्वयं ( बचाव की ) शक्ति रहेगी, न उसे कोई सहायक मिलेगा । पानी ( की वर्षा करने ) वाले आकाश की सौगन्ध और पृथ्वी की ( शपथ ) जो ( बीज का अंकुर फूटते समय ) फट जाती है कि यह वाणी ( सत्य असत्य में ) निर्णय करने वाली वाणी है और यह निष्फल ( और व्यर्थ ) वाणी नहीं है । काफ़िर लोग ( इस वाणी को झुठलाने के लिये नाना प्रकार की ) चालें चल रहे हैं और हम भी ( उनको उनकी चालों का फल चखाने के ) सामान कर रहे हैं । सो ( हे रसूल ! इन ) काफ़िरों को ढील दो ( और जो कुछ यह करते हैं, उन्हें करने दो । अधिक नहीं ) थोड़े दिन ( की बात है । सो ) ढील दो । ( फिर तो उनको उनके किये का प्रतिफल शीघ्र मिल जायगा ) ॥

## सूरत-अअला

### मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें १८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

अपने उच्च पद वाले पालनहारे के नाम की पवित्रता वर्णन करो, जिसने ( यह सब कुछ ) उत्पन्न किया । पुनः ( उन सबको ) सुडौल तथा दुरुस्त किया और जिसने ( हर जीवधारी की दशा के अनुकूल एक ) बात ठहराई ( और ) पुनः ( उसे उसकी ) राह दिखाई ( अर्थात् उस बात की ओर ध्यान देने की योग्यता प्रदान की ) । और जिसने ( पृथ्वी में हरी २ ) घास उगाई ( और ) पुनः उस ( हरी घास को मुर्झा दिया और ) काला काला ( कुरङ्ग ) कूड़ा कर्कट कर दिया । ( और हे रसूल ! तुम कुर्आन को याद करने में शीघ्रता और जल्दी क्यों करते हो । धीरज रक्खो ! कुर्आन ) हम शीघ्र तुम्हें ( इस प्रकार ) पढ़ावेंगे कि ( तुम उसमें से कुछ ) नहीं भूलोगे-उसके अतिरिक्त जिसे अल्लाह ( स्वयं ) भुला देना चाहे ( अर्थात् वह स्वयं मन्सूख़ करदे ) ॥

अल्लाह ( तुम्हारी ) प्रगट ( योग्यता ) को भी जानता है और ( उस ) गुप्त ( योग्यता ) को भी ( जो उसने अपनी दया से तुम्हारे भीतर रक्खी है )। और हम इस सरल शरीअत ( का समझना और स्मरण रखना और उस पर चलना ) तुम्हारे लिये सुगम कर देंगे । सो ( तुम लोगों को ) शिक्षा देते रहो-जहाँ तक लाभ दायक हो । जो ( अल्लाह से ) भय खाता है, वह ( तो ) शिक्षा से लाभ उठावेहीगा और जो दुर्भाग्य है, वह उससे पृथक रहेगा-दूर भागेगा ( और यह वही अभागा होगा ) जो—

يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝
قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝ بَلْ
تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى ۝
إِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْأُوْلٰى ۝ صُحُفِ إِبْرٰهِيْمَ

وَمُوْسٰى ۝

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

٤

هَلْ أَتٰكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ
خَاشِعَةٌ ۝ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝
تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا
مِنْ ضَرِيْعٍ ۝ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝ وُجُوْهٌ
يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝ فِيْ جَنَّةٍ
عَالِيَةٍ ۝ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝
فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۝ وَّأَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۝ وَّنَمَارِقُ

مصفوفة

बड़ी ( सख़्त ) आग ( यानी दोज़ख़ ) में पड़ेगा ० फिर वहां उस को न तो मौत ही आएगी और न ( चैन से ) जीना ही मिलेगा ० तहक़ीक़ जो ( कुफ़्र व शिर्क की गन्दिगी से ) पाक साफ़ रहा और अपने पर्वर्दिगार का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा. वह ( मनमानी ) मुराद को पहुंच गया ० मगर तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी को मुक़द्दम रखते हो ० हालांकि आख़िरत ( दुनिया से ) कहीं बेहतर और ज़ियादा पायदार है ० यही बात तो अगले सहीफ़ों ( यानी ) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में ( भी ) है ०

## सूरत—ग़ाशियह

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें २६ आयतें और १ रुकूअ है॥**

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुमको उस ( आफ़त यानी क़यामत ) का हाल ( भी ) पहुंचा है, जो ( सारे जहान पर छा जाएगी ) ० कितने ( लोगों के ) मुंह उस रोज़ उतरे हुए होंगे ० ( वह लोग तरह तरह की ) मशक़्क़तें कर रहे होंगे ( और मारे मशक़्क़तों के ) थक ( कर चूर हो ) रहे होंगे ० यह लोग दोज़ख़ की दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे ० ( और ) इनको एक खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायगा ० कांटों के सिवा और कोई खाना इनको नसीब नहीं ० जिन ( के खाने ) से न तो बदन ही मोटा हो और न भूक ही बन्द हो ० ( और ) कितने ( लोगों के ) मुंह उस रोज़ हश्शाश बश्शाश होंगे ० ( दुनिया में जो नेक कोशिश कर आए हैं ) अपनी ( उस ) कोशिश ( के नतीजे ) से ( बड़े ) ख़ुश ० बहिश्त-बरीं में होंगे ० कि वहाँ कोई बेहूदा बात उनके कान में नहीं पड़ेगी ० उसमें चश्मे बह रहे होंगे० उसमें ऊंचे ऊँचे तख़्त ( बिछे ) ० और आबख़ोरे रक्खे ० और गाव तकिये—

---

( अन्त में क़यामत के दिन ) बड़ी ( प्रचण्ड ) अग्नि ( अर्थात् दोज़ख़ ) में प्रवेश करेगा ( कि ) उसमें उसे न तो मृत्यु आवेगी और न ( चैन से ) जीवित रहेगा । हाँ! जिसने अपने आपको ( कुफ़्र, शिर्क की अपवित्रता से ) पवित्र किया, अपने पालनहारे का नाम लिया और नमाज़ पढ़ता रहा, वह अवश्य कृतार्थ हुआ—( परन्तु हे काफ़िरो ! तुम अल्लाह के आदेश पर ध्यान नहीं देते। उस पर ईमान नहीं लाते। उसका स्मरण नहीं करते। उसकी उपासना नहीं करते )—बरन् ( इसके अतिरिक्त ) दुनिया के जीवन पर रीझे हुये हो ( और उसे अति उत्तम समझते हो ) यद्यपि परलोक ( का जीवन ) इससे बहुत उत्तम और शेष रहने वाली वस्तु है। ( और लौकिक जीवन का पारलौकिक जीवन के मुक़ाबले में बहु तुच्छ होना ऐसी जगत-प्रसिद्ध और मानी हुई बात है, जिसका वर्णन क़ुर्आन ही में नहीं, बरन ) यह बात पहिली आकाशीय पुस्तकों में भी ( विद्यमान ) है ( अर्थात् उन पुस्तकों में, जो इब्राहीम और मूसा पर अवतीर्ण हुई थीं ) ॥

## सूरत—ग़ाशियह

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें २६ आयतें और १ रुकूअ है॥**

( हे मुहम्मद ! ) तुम्हें इस ( समस्त संसार पर ) छा जाने वाली घटना ( अर्थात क़यामत ) का हाल तो ज्ञात ही है। कितने ही ( लोगों के ) मुखों पर उस दिन हवाइयां उड़ रही होंगी । ( यह लोग भांति २ के ) कष्ट उठा रहे होंगे ( और कष्ट सहते २ ) थक गये होंगे । ( यह लोग ) दहकती अग्नि में प्रवेश करेंगे और खौलते सोत का पानी उन्हें पिलाया जायगा। और उनको उन कांटों के अतिरिक्त जिनको ज़रीअ कहते हैं, और कोई खाना न मिलेगा-जिसके खाने से न तो ( शरीर में ) मोटापा आता है—न भूख जाती है ॥

और कितने ही ( लोगों के ) मुख उस दिन हर्षित होंगे । अपने ( शुभ ) कर्मों ( का फल मिलने ) से प्रसन्न । ( यह लोग ) उत्तम जन्नत में रहेंगे, जहाँ यह व्यर्थ ( और निष्फल ) बकवासें न सुनेंगे। उसमें ( ठौर ठौर ) नहरें बह रही होंगी । उसमें ऊँचे (ऊँचे ) सिंहासन ( बिछे ) होंगे और ( ढंग से ) रक्खे हुये गिलास और बराबर २ लगे हुये गाव तकिये—

مَصْفُوْفَةٌ ۝ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ۝ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ
اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝ وَاِلَى السَّمَاۤءِ كَيْفَ
رُفِعَتْ ۝ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝ وَاِلَى الْاَرْضِ
كَيْفَ سُطِحَتْ ۝ فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝ لَسْتَ
عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۝ اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۝ فَيُعَذِّبُهُ
اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ۝ اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ۝
ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ
والفجر مكية ثلثون آية
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
وَالْفَجْرِ ۝ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝
وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۝ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ۝
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝ اِرَمَ ذَاتِ
الْعِمَادِ ۝ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِى الْبِلَادِ ۝ وَثَمُوْدَ
الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝ وَفِرْعَوْنَ ذِى

एक क़तार में लगे होंगे ० और उम्दा चाँदनियां तनी होंगी ० तो क्या लोग ऊँटों की तरफ़ नहीं देखते कि कैसे ( अजीब ) पैदा किये गये हैं ० और आस्मान की तरफ़ कि कैसा ऊँचा बनाया गया है ० और पहाड़ों की तरफ़ कि कैसे खड़े किये गए हैं ० और ज़मीन की तरफ़ कि कैसो बिछाई गई है ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! तुम लोगों को ) समझाओ ( और ) तुमतो ( ख़ाली ) समझा देने वाले हो और बस ० तुम उन पर कुछ दारोग़ा ( की तरह तो तईनात हो ) नहीं ० हां, जो रूगर्दानी और इन्कार करे ० तो ख़ुदा उसको ( आख़िरत में ) बड़ा अज़ाब देगा ० बेशक इन ( सब ) को हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है ० फिर इनसे हिसाब लेना हमारा काम है ०

## सूरत—फ़ज्र

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ३० आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है) ० सुबह की क़सम ० और दस रातों की ( क़सम ) ० और जुफ़्त और ताक़ की ( क़सम ) ० और रात की ( क़सम ) जब गुज़रने लगे ० अक़्लमन्द के नज़्दीक तो इन चीज़ों में बड़ी भारी क़स्में हैं ० ( बहर कैफ़–हमको सुबह वग़ैरा की क़सम है कि हिसाब-आमाल तो ज़रूर होना है। ऐ पैग़म्बर ! ) क्या तुमने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने आद-इरम के ( लोगों के ) साथ कैसा ( बर्ताव ) किया, जो ऐसे क़द्दावर थे कि ( क़ूवत-जिस्मानी के एतिबार से दुनिया के ) शहरों में कोई ( मख़्लूक़ भी ) उन जैसी पैदा नहीं हुई ० और ( नीज़ क़ौम ) समूद ( के साथ ख़ुदा ने कैसा बर्ताव किया )—जिन्होंने ( अपने रहने की जगह ) वादिए ( अलक़ुरा ) में ( घर बनाने के लिये ) पहाड़ों को (अन्दर ही अन्दर) तराश डाला था ० और ( नीज़ ) फ़िरऔन ( के साथ कैसा सलूक किया ) जो—

और स्वच्छता से बिछा हुआ बिछौना ( मौजूद मिलेगा। आश्चर्य है कि यह बातें अज्ञान काफ़िरों की समझ में नहीं आतीं और वह इन्हें बुद्धि विरुद्ध जानते हैं ) क्या वह ऊँटों को नहीं देखते !! कैसा अनोखा उन्हें उत्पन्न किया गया है। और ( क्या ) आकाश की ओर ( नहीं देखते ! ) कितना ( उसे ) ऊँचा बनाया गया है और ( क्या ) पर्वतों की ओर ( नहीं देखते ) किस प्रकार ( उन्हें भूमि में ) गाड़ दिया गया है। और (स्वयं) पृथ्वी की ओर ( ख़्याल नहीं दौड़ाते ! ) कैसी फैलाई गई है। ( और क्या इन बातों से यह सिद्ध नहीं होता कि ख़ुदा में हर प्रकार की शक्ति है । जो भी हो-हे रसूल ! ) तुम ( इनको ) समझाये जाओ ! तुम्हारा काम तो केवल समझा देना है। तुम इन पर चौकीदार तो नियत नहीं हुए हो ( कि ईमान लाने पर इन्हें विवश करो। कोई ईमान लाये वा न लाए तुम समझाने के पश्चात निर्दोष हो। जो ईमान लावेगा, अपने हित के लिये लावेगा )–परन्तु जो ईमान न लावेगा और (ईमान की ओर से) मुंह फेर लेगा और कुफ़्र किये जायगा, उसे अल्लाह बड़ा ( कठोर ) अज़ाब देगा। उन ( सब ) का हमारे पास लौट कर आना आवश्यक है। पुनः हमें उनसे हिसाब लेना भी ( आवश्यक ) है ॥

## सूरत–फ़ज्र

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ३० आयतें और १ रुकूअ है ॥

शपथ है फ़ज्र ( के समय ) की और ( ज़िल–हिज की ) दश × रात्रियों की और ( शपथ है ) जुट और फुट ( वस्तुओं ) की (अर्थात उन वस्तुओं की भी शपथ है, जो जोड़ा २ करके पैदा की गई हैं और उनकी भी सौगन्ध, जिनके जोड़े नहीं हैं ) और रात्रि (के उस समय ) की ( सौगन्ध ) जब ( वह ) व्यतीत होने लगती है। ( और ) इन ( सब ) में बुद्धिमानों के लिये बड़ी दृढ़ शपथें ( अर्थात प्रत्यक्ष प्रमाण ) हैं ( ख़ुदा की सत्ता और क़यामत पर ) ॥

× टीका—ज़िलहिज्ज की तरह कुछ विद्वानों ने इन्हें मुहर्रम की पहिली दश रात्रियां कहा है; और कुछ ने रमज़ान की अन्तिम दश रात्रियां:—हसन निज़ामी ॥

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने ( इस नगर में ) बसने वाली आद की जाति के साथ क्या किया था, जिसमें ( बड़े २ ऊँचे ) थंभों ( वाले भवन ) थे और जिसकी समता का ( भूमण्डल के ) शहरों में कोई उत्पन्न नहीं हुआ और ( तुम जानते हो कि ) समूद (की जाति) के साथ ( क्या किया था ? ) जिन्होंने (कुरा की) घाटी में पर्वत के पत्थरों को काटा था ( और उन पर्वतों के पत्थरों को काट २ कर अपने घर बनाये थे )। और ( बड़ी सेना वाले ) फ़िरऔन के साथ ( क्या किया था )—

الاوتاد ۝ الذين طغوا في البلاد ۝ فاكثروا
فيها الفساد ۝ فصب عليهم ربك سوط عذا
ان ربك لبالمرصاد ۝ فاما الانسان اذا ما
ابتلىه ربه فاكرمه ونعمه ۝ فيقول ربي
اكرمن ۝ واما اذا ما ابتلىه فقدر عليه
رزقه ۝ فيقول ربي اهانن ۝ كلا بل لا
تكرمون اليتيم ۝ ولا تحضون على طعام
المسكين ۝ وتاكلون التراث اكلا لما
وتحبون المال حبا جما ۝ كلا اذا دكت الارض
دكا دكا ۝ وجاء ربك والملك صفا صفا ۝ و
جايء يومئذ بجهنم يومئذ يتذكر الانسان
وانى له الذكرى ۝ يقول يليتني قدمت
لحياتي ۝ فيومئذ لا يعذب عذابه احد

ولا

मेख़ें रखता था ० यह लोग थे, जिन्होंने शहरों में बड़ा सर उठाया था ० और उनमें बहुत फ़साद फैला रक्खा था ० तो ( ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारे पर्वर्दिगार ने इन ( सब ) पर अज़ाब का कोड़ा फटकारा ० बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार नाफ़र्मानों की ताक में ( लगा रहता ) है ० लेकिन इन्सान ( का हाल यह है कि ) जब उसका पर्वर्दिगार ( इस तरह पर ) उस ( के ईमान ) को आज़माता है कि उसको इज़्ज़त और नेअमत देता है, तो ( वह खुश होकर ) कहता है कि मेरा पर्वर्दिगार मेरी ( ताज़ीम व ) तक्रीम करता है ० और जब वह उस ( के ईमान ) को ( इस तरह पर ) आज़माता है कि उसको रोज़ी उस पर तङ्ग कर देता है, तो ( वह तङ्ग दिल होकर ) बुड़बुड़ाता ( फिरता ) है कि मेरा पर्वर्दिगार मुझे ज़लील समझता है ० मगर तुम लोगों का यह ख़याल ग़लत है, बल्कि तुम ( खुद ऐसे बख़ील हो कि ) यतीम की ख़ातिरदारी नहीं करते ० और एक दूसरे को मोहताज के खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देते ० और ( माल के ऐसे हरीस हो कि ) मुर्दों तक का तर्का समेट समेट कर खाते हो ( और तुम को सब्र नहीं होता ) ० और माल को बहुत ही अज़ीज़ रखते हो ० मगर जिस दिन ज़मीन मारे धक्कों के चकनाचूर हो जाए ० और ( ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा पर्वर्दिगार रौनक़ अफ़रोज़ होगा और फ़रिश्ते सफ़-बस्ता ( उस के जिलू में होंगे ) ० और उस दिन जहन्नम ( सबके रूबरू ) ला हाज़िर की जायगी। उस दिन इन्सान चेतेगा, मगर ( उस वक़्त ) उसके चेतने से क्या फ़ायदा ० ( यानी इन्सान ) कहेगा कि ऐ काश! मैं अपनी ( इस आख़िरत की ) ज़िन्दगी के लिये पहिले से ( आमाल-नेक का ) कुछ ( ज़ाद बनाकर ) भेजता ० तो उस दिन ( ख़ुदा गुनहगारों को ऐसी सज़ा देगा कि ) उस जैसी किसी ने सज़ा न दी होगी ०—

जो अपनी सेना के डेरों के लिये अनगिनत खूंटे रखता था। इन सबने समस्त नगरों ( और संसार भर ) में उद्दण्डता की थी और उनमें उद्रव मचा रक्खा था। सो तुम्हारे पालनकर्त्ता ने उन पर अज़ाब का कोड़ा वर्षाया ( और उनकी खूब दुरस्ती की )। निस्सन्देह तुम्हारा पालनहारा ( अवज्ञाकारियों की ) घात में है, किन्तु मनुष्य ( इस बात को भूल गया। उसकी दशा यह है कि ) जब उसका पालन कर्त्ता उसे ( इस प्रकार ) परखता है कि उसे सम्मान देता और नेअमत प्रदान करता है, तो ( आपे से बाहर होकर ) कहने लगता है कि मेरे अल्लाह ने मुझे उच्च पद वाला किया है और जब वह उसे ( दूसरी तरह ) परखता है ( अर्थात) उसकी जीविका उस पर तङ्ग करता है, तो ( शोकित होकर ) कहता है कि मेरे पालनहारे ने मेरा मान घटा दिया॥

( मूर्खो! ) तुम्हारा यह विचार असत्य है, बरन ( तुम भांति २ के कुकर्मों में लिप्त हो गये हो। जैसे ) तुम अनाथों पर कृपा नहीं करते और ( लोगों को ) दरिद्रों के भोजन कराने की रग़बत नहीं दिलाते और मीरास ( अर्थात मृतक के सम्बन्धियों का धन चाहे जायज़ हो, चाहे नाजायज़ ) खूब ( समेट २ कर ) खाते हो और धन दौलत को अत्यन्त प्रिय रखते हो॥

( परन्तु स्मरण रहे! जो तुम लोगों के मस्तिष्क में भरा हुआ है, वह सम्पूर्ण) असत्य है। जिस दिन पृथ्वी तोड़ फोड़ कर चूरा २ करदी जायगी और तुम्हारा पालन कर्त्ता ( शान-शौकत के साथ ) विराजमान होगा और फ़रिश्तों की सेनायें आवेंगी और जिस दिन दोज़ख़ ( सबके ) सन्मुख करदी जावेगी, उस दिन मनुष्य की आंखें खुलेंगी ( अर्थात उसको नसीहत हासिल होगी )—परन्तु उस समय नसीहत हासिल करने से उसे क्या लाभ होगा? ( कुछ भी नहीं। उस दिन मनुष्य ) कहेगा हा शोक! मैंने अपने ( इस पारलौकिक ) जीवन के लिये ( संसार में ) कुछ ( शुभ ) कर्म किये होते। उस दिन ( अल्लाह काफ़िरों को ऐसा कठोर दंड देगा कि ) उसके जैसा दंड किसी ने न दिया होगा—

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ
ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَّةً ۝ فَادْخُلِي
فِي عِبَادِي ۝ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝

سورة البلد مكية وهي عشرون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ
وَوَالِدٍ وَمَا وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي
كَبَدٍ ۝ أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۝
يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُبَدًا ۝ أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ
أَحَدٌ ۝ أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۝ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝
وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۝ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝ فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ أَوْ إِطْعَامٌ
فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ أَوْ مِسْكِينًا

और ( उनको इस तरह जकड़ेगा कि ) उस जैसा किसी ने न जकड़ा होगा ० ( और जिस रूह को ख़ुदा की तरफ़ से इत्मिनान व तसल्ली है, उससे कहा जायगा कि ) ऐ रूह ! मुत्मइन ० अपने पर्वरदिगार की तरफ़ चल ! तू उससे राज़ी ( और ) वह तुझसे राज़ी ० फिर ( ख़ुदा उस को हुक्म देगा कि ) हमारे ( ख़ास ) बन्दों में जा मिल ० और हमारी बहिश्त में जा दाख़िल हो ०

## सूरत—बलद

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें २० आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहबान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) हम इस शहर ( मक्का ) की क़सम खाते हैं ० और ( इस शहर को यह खुसूसियत हासिल है कि ) तुम इस शहर में ठैरे हुए हो ० और ( नीज़ ) बाप और उसकी औलाद ( यानी आदम और बनी-आदम ) की ( क़सम खाते हैं ) ० कि हमने आदमी को ( ऐसा मख़्लूक़ ) बनाया है ( कि सारी उम्र ) मुसीबत में (रहे, तो उसको गुरूर क्या करना चाहिये)० क्या वह इस ख़याल में हैं कि उस पर किसी का बस न चलेगा ० ( शेख़ी में आकर ) कहता है कि मैंने ढेरों माल उड़ा दिया ० क्या वह यह समझता है कि उसको ( फुज़ूल दौलत उड़ाते हुए ) किसी ने नहीं देखा ० क्या हम ने उसको ( एक छोड़ दो ) दो आंखें ० और ज़बान और दो होंट नहीं दिये ? ( बेशक दिये ) ० और उसको ( नेकी और बदी के ) दोनों रस्ते ( भी ) दिखा दिये ० फिर ( भी वह उन नेअमतों के शुक्र में ) घाटी में से होकर न निकला ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि घाटी ( से हमारी ) क्या ( मुराद ) है ० ( घाटी से मुराद है, किसी की ) गर्दन का ( गुलामी या क़र्ज़ के फन्दे से ) छुड़ा देना ० या भूक के दिन यतीम ( को ख़ास कर जबकि वह अपना ) रिश्तेदार ( भी हो ) या मोहताज—

---

( और उन्हें इस प्रकार जकड़ेगा ) कि उसकी तरह किसी ने न जकड़ा होगा । ( और ख़ुदा पवित्रात्मा से कहेगा ) हे ( वह ) आत्मा ! कि जिसने ( मेरे स्मरण तथा मेरी आधीनता में ) शान्ति पाई है ( आ ! ) तू अपने पालनहारे ( की कृपा की छाया ) की ओर चली आ !! इस दशा में कि तू उससे प्रसन्न-वह तुझसे प्रसन्न ( और ) पुनः मेरे (!मुख्य) बन्दों में प्रवेश कर ! और मेरी जन्नत में प्रवेश कर ॥

## सूरत—बलद

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें २० आयतें और १ रुकूअ है ॥**

मैं इस शहर ( मक्का ) की सौगन्ध खाता हूं । और ( इस नगर की विशेषता यह है कि ) तुम ( हे मुहम्मद ! ) इस नगर में रहते हो । और ( शपथ खाता हूं ) पिता ( आदम ) और ( उनकी ) सन्तान की । हमने मनुष्य को संकट में ( लिप्त रहने वाला ) बनाया है ( पग पग पर उसे ठोकरें लगती हैं। कष्ट पहुंचते हैं, परन्तु फिर भी ख़ुदा और उसके रसूल से लड़ना चाहता है ) । क्या वह यह समझे हुये है कि उस पर कोई क़ाबू नहीं पाएगा ? वह कहता ( फिरता ) है-मैंने ( मुहम्मद के विरोध में ) बहु धन व्यय कर डाला । क्या उसका यह ख़्याल है कि उसको ( धन नष्ट करते हुये ) किसी ने नहीं देखा ( और कोई उससे इस अपव्यय का हिसाब नहीं लेगा ? ) ॥

क्या यह ( सत्य ) नहीं है कि हमने उसे ( देखने को ) दो आँखें ( दीं ) और ( बोलने को ) ज़बान और दो होंठ दिये ( और साथ ही ) उसको ( अच्छे और बुरे ) दोनों मार्ग भी बता दिये ( कि जिसे वह चाहे ग्रहण करले )—परन्तु ( उसने वह राह पकड़ी, जो उसको सरल और संकट रहित दिखाई दी और ) वह घाटी में होकर नहीं गुज़रा । और तुम समझे भी घाटी ( का अर्थ ) क्या है । ( घाटी का अर्थ है ) गर्दन का स्वतन्त्र कराना ( दरिद्रता, ग़रीबी, ऋण, गुलामी के बन्धनों से लोगों को छुटकारा दिलाना )—अथवा अकाल के दिनों में ( किसी ) अपने नातेदार अनाथ को वा ( किसी ) धूलि पर लोटने वाले भिखारी को भोजन कराना । ( डींगें मारने वाले इन घाटियों को पार नहीं कर सकते । वह अपना धन अशुभ कामों ही में लगा सकते हैं ) ॥

ذَا مَتْرَبَةٍ ۝ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْمَيْمَنَةِ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ
الْمَشْئَمَةِ ۝ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝

سُوْرَةُ وَالشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ۝ وَالنَّهَارِ
اِذَا جَلّٰهَا ۝ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ۝ وَالسَّمَآءِ وَمَا
بَنٰهَا ۝ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا
فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ۝ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ
زَكّٰهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ۝ كَذَّبَتْ
ثَمُوْدُ بِطَغْوٰهَآ ۝ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا

ख़ाक-नशीन को (खाना) खिलाना—(तो जो नाहक़ की शेख़ी मारता है, चाहिये था कि इस घाटी में होकर गुज़रता) ० इसके अलावा उन लोगों (के ज़ुमरे) में होता जो ईमान लाए और एक दूसरे को सब्र की हिदायत करते रहे और (नीज़) एक दूसरे को (ख़ल्क़ ख़ुदा पर) रहम करने की हिदायत करते रहे ० यही लोग (आख़िरत में) मुबारक (ख़ुश-नसीब) होंगे ० और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया, वही मनहूस (बद-नसीब) होंगे ० कि उनको (दोज़ख़ की) आग में डाल कर (सब तरफ़ से) किवाड़ भेड़ दिये जाएँगे ०

## सूरत—शम्स

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १५ आयतें और १ रुकूअ है॥**

**(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है) ०** आफ़ताब की और उसकी धूप की क़सम ० और आफ़ताब के (ग़ुरूब हुए) पीछे जब चाँद निकलता है, उसकी (क़सम) ० और दिन की (क़सम) जबकि वह आफ़ताब को नुमायाँ करे ० और रात की (क़सम) जबकि वह आफ़ताब को छुपाले ० और आस्मान की और (उस ज़ात की क़सम) जिसने उसको बनाया है ० और ज़मीन की और (उस ज़ात की क़सम) जिसने उसको बिछाया है ० और इन्सान की और (उस ज़ात की क़सम) जिसने उसको (ऐसा) दुरुस्त बनाया ० फिर उसकी बदकारी और पर्हेज़गारी (दोनों बातें) उसको सुझादीं ० (ग़रज़ हमको इन चीज़ों की क़सम) कि जिसने अपनी रूह को (शिर्क और अख़लाक़-बद की गन्दिगी से) पाक किया (वह) ज़रूर (अपनी) मुराद को पहुंचा ० और जिसने उसको दबा दिया (वह) ज़रूर घाटे में रहा ० (क़ौम) समूद ने अपनी सर्कशी की वजह से (अपने पैग़म्बर सालेह को) झुटलाया ० जबकि उनमें से जो ज़ियादा बद-ज़ात था, आमादा हो गया ० इस पर पैग़म्बर-ख़ुदा (सालेह) ने उनसे कहा कि (देखो!) ख़ुदा की ऊँटनी (को हाथ न लगाना) और (न) उसका पानी (बन्द करना) ० इस पर भी उन लोगों ने सालेह को झुटलाया और ऊँटनी को मार डाला—

(डींग मारने वाले को उचित था कि ख़ुदा की आज्ञा पालन करता और) पुनः उन लोगों में आ जाता, जो (अल्लाह पर) ईमान लाये हैं और एक दूसरे को सन्तोष करना सिखाते हैं और एक दूसरे को (लोगों पर) दया करने की शिक्षा देते हैं। यही लोग सौभाग्यवान हैं। और जिन्होंने हमारी आयतों को न माना (और हमारे उन आदेशों का पालन नहीं किया, जो उनको कठिन जान पड़ते हैं)—वही लोग दुर्भाग्य हैं। उनके लिये (दोज़ख़ की ऐसी प्रचण्ड) अग्नि है—(जो चारों ओर से) बन्द (होगी। जिसमें हवा का प्रवेश न होगा और उसका धुवाँ भीतर का भीतर ही रहेगा)॥

## सूरत—शम्स

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें १५ आयतें और १ रुकूअ है॥**

शपथ है सूर्य्य की और उसके प्रकाश की। और शपथ है चन्द्रमा की, जबकि वह सूर्य्य अस्त हो जाने के उपरान्त उदय होता है (अर्थात चन्द्रमा के उदय होने की सौगन्ध है)। और शपथ है दिन की, जिस समय वह संसार को प्रकाश युक्त करदे (अर्थात प्रकाश मय दिन की सौगन्ध है) और शपथ है रात्रि की, जिस समय वह संसार को अन्धकार युक्त करदे (अर्थात अन्धेरी रात्रि की सौगन्ध है)। और शपथ है आकाश की और जिसने उसे बनाया। और शपथ है भूमि की और उसकी, जिसने उसे बिछाया। और शपथ है (मनुष्य के) प्राण की और उसकी जिसने उसे ठीक किया (और) पुनः उसे उसकी नेकी बदी (बुराई भलाई के जानने) का ज्ञान दिया॥

वह अवश्य सफल हुआ, जिसने अपने नफ़्स अर्थात मन को (पापों के मल से) शुद्ध किया। और वह निश्चित रूप से असफल रहा, जिसने अपने मन को (पापों में) गाड़ दिया। समूद (की जाति का हाल तुम्हें ज्ञात ही है कि उस) ने अपनी उद्दण्डता के कारण (अपने समय के पैग़म्बर सालेह को) झुठलाया। जब उनमें का सबसे बड़ा अभागा उठा (जिससे कि उस ऊँटनी को सताये, जो चमत्कार दिखाने के लिये पर्वत से निकाली गई थी)—तो अल्लाह के पैग़म्बर ने उन लोगों से कहा कि (देखना!) अल्लाह की ऊँटनी को (न सताना) और उसका पानी (न रोकना—परन्तु समूद की जाति ने पैग़म्बर की बात न मानी) और उनको झुठलाया और उस (ऊँटनी) की कूचें काट (ही) डालीं—

तो उनके पर्वर्दिगार ने उनके गुनाह के बदले उन पर हलाकत ला नाज़िल की और सबको ( मार के ) पटरा कर दिया ० और उसने इनके ( इस ) अन्जाम की ( ज़रा भी तो ) परवा न की ०

## सूरत—लैल

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें २१ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० रात की क़सम, जबकि वह ( सब चीज़ों को ) ढांक ले ० और दिन की ( क़सम ) जब वह ख़ूब रोशन हो ० और उस ( ज़ात ) की ( क़सम ) जिसने नर व मादा को पैदा किया ० कि बेशक तुम लोगों की कोशिश अलबत्ता मुख़्तलिफ़ ( तौर को ) है ० तो जिसने ( राह–ख़ुदा में ) दिया और पर्हेज़गारी का शेवा इख़्तियार किया ० और अच्छी बात ( यानी दीन–इस्लाम ) को सच समझा ० तो हम आसानी की जगह ( यानी बहिश्त में पहुंचने का रस्ता ) उसके लिये आसान कर देंगे ० और जिसने ( राह–ख़ुदा में ) देने से मुज़ाएक़ा किया और (आख़िरत की) पर्वा न की ० और उम्दा बात (यानी दीन–इस्लाम) को झूट जाना ० तो हम मुश्किल की जगह ( यानी दोज़ख़ में पहुंचने का रस्ता ) उसके लिये आसान कर देंगे ० और जब ( वह जहन्नम में ) गिरेगा, तो उसका माल उसके कुछ भी काम न आयेगा ० हमारा काम तो राह दिखा देना है ० और आख़िरत और दुनिया ( दोनों ) हमारे ही इख़्तियार में हैं ० तो ( लोगो ! ) हमने तुमको ( दोज़ख़ की ) भड़कती हुई आग से डरा दिया है ० कि उसमें वही बद बख़्त दाख़िल होगा ० जो ( दुनिया में दीन–हक़ को ) झुटलाता और ( उससे ) रूगर्दानी करता रहा ० और जो बड़ा पर्हेज़गार है, वह उस ( आग ) से दूर ही दूर रक्खा जाएगा ० वह ऐसा ( दिल का सख़ी ) है कि अपना माल ( राह–ख़ुदा में ) देता है, ताकि ( उसका नफ़्स बुख़्ल के ऐब से ) पाक हो ० और किसी का उस पर कोई एहसान नहीं कि ( इस देने से उसको ) उसका बदला उतारना ( मक़्सूद ) है०—

٤

فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝ وَلَا
يَخَافُ | سُوْرَةُ الَّيْلِ اِحْدٰى وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً | عُقْبٰهَا ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝ وَمَا خَلَقَ
الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝ فَاَمَّا
مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهٗ
لِلْيُسْرٰى ۝ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝ وَكَذَّبَ
بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ۝ وَمَا يُغْنِيْ
عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ۝ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝
وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا
تَلَظّٰى ۝ لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ۝ الَّذِيْ كَذَّبَ
وَتَوَلّٰى ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ
يَتَزَكّٰى ۝ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ۝

---

इन पापों के बदले में उनके पालन कर्त्ता ने उनको नष्ट ( भ्रष्ट ) करने का अज़ाब उतारा । और ( छोटों, बड़ों, धनी, निर्धनी, स्त्री पुरुष ) समस्त जाति का ( एक दम ) सफ़ाया कर दिया और अल्लाह ( ऐसा सर्व शक्तिमान है, जिस ) को ऐसे अज़ाब के परिणाम के विषय में ( किसी प्रकार की ) आशंका नहीं है ॥

## सूरत—लैल

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें २१ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

शपथ है रात्रि की, जबकि वह (दिन और दिन की चमक दमक पूरी होने के उपरान्त समस्त संसार को अपने अन्धकार में) छिपा लेती है। और शपथ है दिन की, जब वह अतिशय प्रकाशमान होता है ( और अन्धकार का कहीं पता नहीं रहता ) और शपथ है उसकी, जिसने नर और मादा बनाये कि तुम लोगों के प्रयत्न ( और कर्म ) अवश्य २ भिन्न २ ( और भांति २ के ) हैं ( और उन्हों के अनुकूल तुम्हें बदला मिलेगा ) । सो जिसने ( अल्लाह तआला के हक़ को ) अदा किया ( और उसके मार्ग में दान पुण्य किया । अल्लाह का ) भय माना और अच्छी बात अर्थात इस्लाम—धर्म का समर्थन किया, तो उसके लिये हम आनन्द–भवन ( अर्थात जन्नत प्राप्त करना ) अवश्य सुगम कर देंगे । (अर्थात उसको नेक कामों के करने में कुछ कठिनता नहीं मालूम होगी) । और जिसने ( अल्लाह का हक़ अदा करने और उसके नाम पर दान पुण्य करने में) कृपणता की और (अल्लाह से) बेपर्वाही की और सत्य बात अर्थात इस्लाम–धर्म को झुठलाया, तो उसके लिये हम कष्ट–भवन ( अर्थात दोज़ख़ में जाना ) सरल कर देंगे । ( अर्थात उसे कुकर्म करने में सुविधा और सुगमता जान पड़ेगी ) ॥

और जब वह ( दोज़ख़ में ) गिरेगा, तो ( उस समय) उसका रुपया पैसा उसके ( कुछ भी ) काम न आवेगा । राह दिखा देना हमारा काम अवश्य है और ( फिर जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा ) । लोक और परलोक ( सब ) हमारे अधिकार में है । हम तुम्हें ( दोज़ख़ की ) दहकती हुई अग्नि से डरा चुके हैं । उसमें वही दुर्भाग्य जावेगा, जो ( इस्लाम–धर्म को ) झुठलाता और ( उससे) मुंह फेरे रहा । और उससे वह ( भाग्यवान ) परहेज़गार दूर रक्खा जायगा, जो ( मन को ) पवित्रता प्राप्त करने के लिये अपना धन ( केवल अल्लाह के लिये नेक कामों में ) ख़र्च करता है । उस पर किसी के उपकार का बोझ नहीं, जिसका उसे बदला उतारना हो—

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ

سورة الضحى مكية وهي احدى عشرة آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالضُّحَىٰ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا
قَلَىٰ ۝ وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ
يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ
۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ عَائِلًا
فَأَغْنَىٰ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَأَمَّا السَّائِلَ
فَلَا تَنْهَرْ ۝ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

سورة الانشراح مكية وهي ثمان آيات

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ
الَّذِي أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝

उसको तो सिर्फ़ अपने पर्वर्दिगार-आलीशान की रज़ाजोई मन्ज़ूर है और बस ० और ( ख़ुदा उससे ) ज़रूर राज़ी भी होगा ०

## सूरत—ज़ुहा

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! हमको ) चाश्त ( के वक़् ) को क़सम ० और रात की ( क़सम ) जब ( सब चीज़ों को ढांक ) ले ० कि तुम्हारा पर्वर्दिगार न तो तुमसे दस्तबर्दार हुआ और न ( किसी तरह ) नाख़ुश हुआ ० और अल्बत्ता आख़िरत तुम्हारे लिये ( इस ) दुनिया से कहीं बेहतर है ० और तुम्हारा पर्वर्दिगार आगे चल कर तुमको इतना कुछ देगा कि तुम ( भी ) ख़ुश हो जाओगे ० क्या तुमको उसने यतीम नहीं पाया ( यानी पाया ) फिर जगह दी ० और तुमको देखा कि ( राह-हक़ की तलाश में भटके ) भटके ( फिर रहे ) हो, तो ( तुमको दीन-इस्लाम का ) सीधा रस्ता दिखा दिया ० और तुमको मुफ़्लिस पाया, तो उसने ग़नी कर दिया ० तो ( इन नेअमतों के शुक्रिये में ) यतीम पर ( किसी तरह का) ज़ुल्म न करना ० और न साइल को झिड़कना ० और ( लोगों से ) अपने पर्वर्दिगार के एहसानात का तज़्किरा करते रहना ( कि यह भी शुक्र-गुज़ारी का एक तरीक़ा है ) ०

## सूरत—इन्शिराह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या हमने तुम्हारा हौसला फ़राख़ नहीं किया? (यानी किया)० और (इसके अलावा) बोझ—जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रक्खी थी, तुम पर से उतार दिया ० और तुम्हारे ज़िक्र (ख़ैर) का आवाज़ा बुलन्द किया०—

---

वह तो जो कुछ भी ख़ुदा के मार्ग में व्यय करता है, केवल अपने पालनहारे को प्रसन्न करने के लिये ( करता ) है। और शीघ्र (तुम देख लोगे कि ) ख़ुदा भी उससे प्रसन्न हो जायगा ॥

## सूरत—ज़ुहा

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥

दिन चढ़े की शपथ ( जबकि धूप चारों ओर फैल जाती है ) और रात्रि की ( शपथ ) जबकि प्रत्येक वस्तु पर ( अँधियारी ) छाई हुई होती है। ( हे पैग़म्बर ! ) न तो तुम्हारे पालन कर्त्ता ने तुम्हें छोड़ा और न वह तुमसे अप्रसन्न+ हुआ ॥

+टीका—कई दिन से वही नहीं आई थी। काफ़िरों ने कहना शुरू किया कि अल्लाह मुहम्मद से अप्रसन्न हो गया, मुहम्मद को छोड़ बैठा। रसूलुल्लाह इससे कुछ शोकातुर होने लगे, तो आपको धीरज देने और सन्तुष्ट करने लिये यह आयतें अवतीर्ण हुई:—हसन निज़ामी ॥

और ( तुम जानते हो कि ) तुम्हारी पिछली दशा पाहली दशा से अवश्य उत्तम हुआ करती है। और शीघ्र तुमको तुम्हारा पालन कर्त्ता वह कुछ देगा, कि तुम प्रसन्न हो जाओगे। क्या तुम्हें उसने अनाथ नहीं पाया। पुनः ( उसने ) तुम्हारा ठिकाना कर दिया ( दादा के दिल में पिता का सा प्रेम डाल दिया और इस प्रकार पालन पोषण कराया—मानो, रसूलुल्लाह अनाथ थे ही नहीं )। और तुम्हें ( सीधे मार्ग की खोज में ) भटकता हुआ देखा, तो तुमको ( इस्लाम का ) सीधा मार्ग बता दिया। और तुम्हें निर्धन पाया, तो धनवान कर दिया। सो ( इन सब बातों का स्मरण करो और समझो कि तुम्हारा पालन कर्त्ता तो तुम पर निरन्तर कृपालु रहता है। वह तुम्हें छोड़ने और तुमसे अप्रसन्न क्यों होने लगा )। तुम भी ( इसका ख़्याल रखना कि किसी ) अनाथ पर क्रोध न करना और ( किसी ) भिखारी को न झिड़कना और ( सर्वदा ) अपने पालन कर्त्ता के उपकारों का वर्णन करते रहना ॥

## सूरत—इन्शिराह

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( हे रसूल ! हमने तुम पर एक से एक बढ़ कर उपकार किये हैं )। क्या हमने तुम्हारे लिये तुम्हारा सीना नहीं खोल दिया ( और उसको ज्ञान-प्रकाश तथा बुद्धि से परिपूर्ण नहीं किया)। और हमने तुम पर से तुम्हारा (वह) बोझ हलका कर दिया, जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रक्खी थी। ( अर्थात वास्तविकता से अभिज्ञ करके तुम्हें इतना साहसी पराक्रमी बना दिया कि दुनिया की किसी आपत्ति से नहीं घबराते )। और तुम्हारे लिये हमने ( यह किया कि ) तुम्हारा चर्चा ( क़यामत तक के लिये ) ऊँचा कर दिया। ( इसी प्रकार दृढ़ता तथा धैर्य, सन्तोष से काम किये जाओ )—

फَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا
فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

سورة والتين مكية وهي ثمان آيات

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝ وَطُورِ سِينِينَ ۝ وَهَٰذَا
الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي
أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ
غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝
أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ۝

سورة العلق مكية وهي تسع عشرة آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ

सो बेशक मुश्किल के साथ आसानी है ० बेशक मुश्किल के साथ आसानी है० तो अब कि तुम (इन तरद्दुदात से किसी क़दर) फ़ारिग़ हुए, तो (इबादत की) रियाज़त करो ० और अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ (पूरे पूरे) मुतवज्जह हो जाओ ०

## सूरत—तीन

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है)० अंजीर (मेवे) और ज़ैतून (दरख़्त) ० और तूर-सीनीन (पहाड़) ० और इस शहर (मक्का) की क़सम, जिसमें (हर तरह का) अम्न है ० कि हमने इन्सान को बेहतर से बेहतर साख़्त का पैदा किया ० फिर हम उसको (बूढ़ा करके) कमतर से कमतर मख़्लूक़ के दर्जे में लौटा लाए० मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल (भी) किये (उनको तनज़्ज़ुल-पीरी से तङ्ग दिल न होना चाहिये, क्योंकि) उनके लिये (आख़िरत में) अज्र है-बे इन्तिहा ० तो (ऐ पैग़म्बर! अब) कौन है, तो (इन सब बातों के मालूम किये) पीछे (रोज़) जज़ा के बारे में तुमको झूटा समझे ० क्या ख़ुदा सब हाकिमों से बड़ा हाकिम (और क़ुदरत वाला) नहीं है? (तो मुन्किरीन-क़यामत उससे क्यों नहीं डरते) ०

## सूरत—अलक़

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १९ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० (ऐ पैग़म्बर! क़ुआन जो वक़्तन-फ़वक़्तन तुम पर नाज़िल होगा, उस को) अपने पर्वर्दिगार का नाम लेकर पढ़ चलो, जिसने (मख़्लूक़ात को) पैदा किया ० (जिसने) आदमी को

---

निस्सन्देह कठिनता के साथ सुगमता और हर दुख के साथ सुख (लगा हुआ) है। सो (साहस सन्तोष तथा सहन शीलता कभी न छोड़ो। और) जब (धर्म प्रचार तथा जिहाद आदि से) अवकाश पाओ, तो (उपासना तथा) परिश्रम में पूर्णतया लग जाओ और अपने पालन कर्त्ता की ओर (पूर्ण) ध्यान दो ॥

## सूरत–तीन

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है॥

शपथ है अन्जीर और ज़ैतून की। और (शपथ है) तूरसीना (पर्वत) की, और (शपथ है) इस अमन (चैन) वाले शहर (अर्थात मक्का) की, कि हमने मनुष्य को अत्योत्तम दशा पर उत्पन्न किया (और उसमें सुकर्मों के द्वारा उच्च पदवी प्राप्त करने की योग्यता रक्खी)। और फिर उसे (दोज़ख़ के) नीचे से नीचे दर्जे में पहुंचा दिया। (किन्तु) इससे वह लोग बाहर हैं, जो ईमान ले आये हैं और जिनके कर्म अच्छे हैं, उनके लिये (उनके सुकर्मों का) ऐसा फल है, जिसकी कोई सीमा नहीं। (उन पर कृपा तथा क्षमा की वर्षा होगी, जो कभी ख़त्म न होगी। फिर हे मनुष्य! जब तुझे यह ज्ञात है कि ईमान और शुभ कर्मों के द्वारा तू उच्च पद पर पहुंच सकता है, तो) फिर तुझे क्या हो गया है, जो तू (प्रत्यक्ष प्रमाण सुन लेने के पश्चात भी) क़यामत के इन्कार पर अड़ा हुआ है। क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा (और शक्ति वाला) हाकिम नहीं है? (अवश्य है) ॥

## सूरत—अलक़

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें १८ आयतें और १ रुकूअ है॥

(हे मुहम्मद! जो कुछ तुम्हें पढ़ाया जाता है) अपने पालनहारे का नाम लेकर पढ़ो, जिसने (समस्त जीवधारियों को) उत्पन्न किया है। (और) जिसने मनुष्य (जैसे उच्च प्राणी) को रक्त के लोथड़े (जैसी तुच्छ वस्तु) से बनाया है—

गोश्त के लोथड़े से बनाया ० ( कुर्आन ) पढ़ चलो और ( ख़ुदा पर भरोसा रक्खो कि ) तुम्हारा पर्वर्दिगार बड़ा करीम है ० जिसने (आदमी को ) क़लम के ज़रिये से इल्म सिखाया ० उसने वही के ज़रिये से (भी) इन्सान का वह बातें सिखाईं, जो उसको मालूम न थीं ० मगर इन्सान ( का हाल यह है कि वह ) अपने तईं बेनियाज़ समझ कर ( शुक्र के बदले ख़ुदा से उल्टी ) सर्कशी करता है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) बेशक ( इन सबको ) तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ लौट कर जाना है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुमने उस शख़्स के हाल पर ( भी ) नज़र की कि जब ( हमारा एक ) बन्दा नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है, तो वह उसे मना करता है ० भला देखो तो ( सही ! ) अगर ( यह शख़्स ख़ुद ) राह-रास्त पर है ० या ( लोगों को ) पर्हेज़गारी सिखाता है ( जैसा कि वह समझता है ) ० भला देखो तो ( सही ! ) अगर यह ( शख़्स कलाम इलाही को ) झुटलाता और (दीन हक़ से ) रूगर्दानी करता है ० ( बहर—हाल ) क्या इसको ( इतनी बात की ) ख़बर नहीं कि ( दोनों सूरतों में ) ख़ुदा ( उसके हाल को ) देख रहा है ० वह सुन रक्खे कि अगर ( अपनी करतूत से ) बाज़ नहीं आएगा, तो हम ( उसके ) पट्टे ( यानी ) उस झूटे ख़ताकार के पट्टे पकड़ कर घसीटेंगे ० तो उसको चाहिये कि अपने हम नशीनों को ( जिनके बिर्ते पर कूदा करता है, अपनी मदद के लिये ) बुलाए ० साथ के साथ हम ( भी अपने ) जल्लाद फ़रिश्तों को ( उसकी सज़ा-दिही के लिये ) बुला लेंगे ० सुनो जी ! ( हरगिज़ ) उसका कहा न मानो और (बेतअम्मुल ख़ुदा की जनाब में ) सज्दे करो ( यानी नमाज़ पढ़ो ) और क़ुर्ब ( ख़ुदा ) हासिल करो ०

مِنْ عَلَقٍ ۚ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ
عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ؕ كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَیَطْغٰۤی ۙ
اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰی ؕ اِنَّ اِلٰی رَبِّكَ الرُّجْعٰی ؕ اَرَءَیْتَ الَّذِیْ
یَنْهٰی ۙ عَبْدًا اِذَا صَلّٰی ؕ اَرَءَیْتَ اِنْ كَانَ عَلَی الْهُدٰۤی ۙ
اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰی ؕ اَرَءَیْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰی ؕ اَلَمْ
یَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ یَرٰی ؕ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ یَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًۢا
بِالنَّاصِیَةِ ۙ نَاصِیَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ فَلْیَدْعُ
نَادِیَهٗ ۙ سَنَدْعُ الزَّبَانِیَةَ ۙ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ

سورة القدر مكية خمس آيات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا
لَیْلَةُ الْقَدْرِ ؕ لَیْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ
شَهْرٍ ؕ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ

من

## सूरत—क़द्र

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० हमने क़ुर्आन ( की पहिली वही ) को शबे-क़द्र में उतरा० और (ऐ पैग़म्बर!) तुम क्या समझे कि शबे-क़द्र है क्या चीज़ ० शबे-क़द्र ( ख़ैर व बरकत में ) हज़ार महीने से बेहतर है ० उस रात ( आइन्दा साल के ) हर एक इन्तिज़ाम के लिये फ़रिश्ते और जिब्रील अपने पर्वर्दिगार के हुक्म से ( ज़मीन पर ) उतरते हैं ०—

पढ़ो ! और ( स्मरण रक्खो ! ) तुम्हारा पालन कर्त्ता अति कृपालु है, जिसने क़लम से ( लिखना और विद्याओं का सुरक्षित रखना ) सिखाया । और ( वही द्वारा ) मनुष्य को वह बातें बताईं, जिन्हें वह ( पहिले ) नहीं जानता था । परन्तु ( शोक है कि ) मनुष्य अपनी धनवानता के घमंड में ( हमारे उन उपकारों पर कृतज्ञ होने के बदले उलटा ) उद्दण्डता करता है । ( हे मुहम्मद ! इन सब उद्दण्डों को एक दिन ) तुम्हारे पालन कर्त्ता के पास अवश्य लौट कर जाना है । क्या तुमने उसको देखा, जो हमारे एक मुख्य बन्दे को जबकि वह नमाज़ पढ़ता है ( नमाज़ पढ़ने से ) रोकता है । क्या तुम्हें ज्ञात है कि यह मनुष्य यदि सीधे मार्ग पर होता, वा लोगों को संयमता का उपदेश देता—( तो उसको इसका क्या पुरस्कार मिलता ) । और क्या तुम जानते हो कि ( अब ) उस मनुष्य ने ( मुहम्मद रसूलुल्लाह को ) झुठलाया है, और इस्लाम-धर्म से मुंह मोड़ा है ( तो उसे उसकी उद्दण्डता का क्या दंड मिलेगा ) । क्या उसे ज्ञात नहीं कि अल्लाह ( उसके कर्मों को ) देख रहा है ॥

( कहता है कि मेरे साथी भलेमानस तथा धनवान हैं ) । यह कुछ नहीं है—यदि वह ( अपनी उद्दण्डता से ) न मानेगा, तो हम उसको उसके माथे के बाल पकड़ कर घसीटेंगे, झूठे अपराधी के पट्टे ( पकड़ कर खींचेंगे । यदि उसके पक्षपाती उसको इस अपमान तथा विपत्ति संकट से बचा सकते हैं ) तो वह अपने सहायकों को बुलावे । निकट है कि हम भी ( उसके लिये ) दोज़ख़ के भयंकर फ़रिश्तों को बुलावेंगे । इस उद्दण्ड की डींगें सब व्यर्थ हैं, बकता है । तुम इसकी पर्वाह न करो । तुम नमाज़ पढ़ते रहो । और ख़ुदा की नज़दीकी प्राप्त करो ॥

## सूरत—क़द्र

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

हमने क़ुर्आन को क़द्र की रात्रि में उतारा है । और तुम क्या समझे क़द्र की रात्रि क्या वस्तु है । ( उपासना, आराधना तथा योग साधन और बरकत प्राप्त करने के लिये ) क़द्र की रात्रि हज़ार महीनों से बढ़ कर है । इसमें समस्त बातों के प्रबन्ध के लिये जिब्रील और अन्य फ़रिश्ते अपने पालनहारे की आज्ञा से ( भूमि पर ) उतरते हैं—

مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

سورة لم يكن مدنية وهي ثمان آيات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝
رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝ فِيْهَا كُتُبٌ
قَيِّمَةٌ ۝ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا
لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۝ حُنَفَآءَ
وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ
الْقَيِّمَةِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اُولٰٓئِكَ
هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

वह ( रात अम्न और ) सलामती ( की रात ) है ( और ) वह ( यानी उसकी ख़ैर व बरकत ) तुलूअ-फ़ज्र तक ( रहती ) है ०

## सूरत—बय्यिनह

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० जो लोग अह्ल-किताब और मुश्रिकों में से ( दीन हक़ यानी इस्लाम को ) नहीं मानते, वह ( अपने दीन-ग़लत से ) बे इसके तो टलने वाले थे नहीं कि उनको कोई खुली हुई दलील पहुंचे ० ( और वह दलील यही थी कि ) ख़ुदा की तरफ़ से कोई पैग़म्बर ( आए और कलाम-इलाही के ) मुक़द्दस औराक़ ( उनको ) पढ़ कर सुनाए ० ( और ) उनमें पक्की ( और माक़ूल ) बातें लिक्खी हों ० और ( यह जो ) अह्ल-किताब ( मुतफ़र्रिक़ हुए; बाज़ इस्लाम लाए और अक्सर अपनी ज़िद पर अड़े रहे ) तो ( उस ) दलील ( यानी रसूल ) के आए पीछे ही मुतफ़र्रिक़ हुए ० हालांकि ( जो लोग मुख़ालिफ़ रहे ) उनको ( इस रसूल के ज़रिये से ) यही हुक्म दिया गया कि ख़ालिस अल्लाह ही की बन्दिगी की नीयत से यक-रुख़े होकर उसकी इबादत करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और यही ( वह ) ठीक दीन है-( जो पैग़म्बर ने उनको तालीम किया, मगर नाहक़ की ज़िद का क्या इलाज !) ० बेशक अह्ल-किताब और मुश्रिकीन में से जो लोग ( दीन-हक़ से ) इन्कार करते रहे-( वह आख़िरकार ) दोज़ख़ की आग में होंगे (और) उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। यही लोग बदतरीन-ख़लायक़ हैं ० बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक-अमल ( भी ) किये—

---

वह ( रात्रि सम्पूर्ण अमन चैन और ) सलामती ( की रात्रि ) है। ( और वह अपने समस्त गुणों तथा बरकतों के साथ ) प्रातः काल होने तक रहती है॥

## सूरत—बय्यिनह

मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

किताब वाले और मुश्रिक (हों, चाहे कोई और हो ) जो ( भी सीधी राह से हट गये थे और ) कुफ़्र में लिप्त थे, वह इसके अतिरिक्त कि उनके पास प्रत्यक्ष ( तथा प्रकाश युक्त ) प्रमाण आये ( अपने कुफ़्र से ) रुकने वाले न थे ( अर्थात ) अल्लाह के ( एक ) रसूल ( की उन्हें आवश्यकता थी ) जो ( ऐसी )पवित्र सूरतें ( उन्हें ) पढ़कर सुनाये, जिनमें ( यथार्थ ज्ञान और बिलकुल ) सत्य सत्य बातें (लिखी) हों। ( अतः मुहम्मद रसूलुल्लाह को अल्लाह ने भेजा, जिन्होंने कुर्आन का प्रचार किया )। और किताब वालों में ( मुहम्मद रसूलुल्लाह को रसूल मानने न मानने के बारे में ) जो विभेद ( अब ) पैदा हो गया है, वह ( भी ) प्रत्यक्ष प्रमाण के आने ( अर्थात रसूलुल्लाह के नबी होकर आने के ) पश्चात पैदा हुआ है। यद्यपि उन्हें ( कोई नवीन ) आज्ञा नहीं दी गई, वरन वही ( कहा, जो पूर्व कालिक नबी कहते चले आये थे ) कि ( सब ओर से ध्यान हटाकर ) एक ओर होकर अल्लाह की इस प्रकार पूजा करें कि वह केवल उसी की नीयत से हो। ( अर्थात किसी को उसका साझी न ठहरायें ) और नमाज़ पढ़ते रहें और ज़कात देते रहें और यही ( वह असली और ) पक्का धर्म है—( जिसका उपदेश इब्राहीम, मूसा तथा ईसा ने दिया था )॥

( इन ) किताब वालों और मुश्रिकों में से जो लोग ( सत्य-धर्म का ) अस्वीकार किये जाते हैं, वह ( एक दिन ) दोज़ख़ की अग्नि में होंगे और सर्वदा उसी में ( पड़े ) रहेंगे। यही लोग हैं, जो सब प्राणियों से निकृष्ट हैं और सर्व प्राणियों से श्रेष्ठ वह हैं, जो ईमान ले आये हैं और शुभ कर्म ( भी ) करते हैं—

أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝ جَزَاؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ
عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ
سُورَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ رَبَّهُ ۝ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ
أَثْقَالَهَا ۝ وَقَالَ الْإِنسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ
أَخْبَارَهَا ۝ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ
النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝ فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ
ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا
سُورَةُ الْعَادِيَاتِ مَكِّيَّةٌ يَرَهُ ۝ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشَرَ آيَةً
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا ۝ فَالْمُورِيَاتِ قَدْحًا ۝ فَالْمُغِيرَاتِ

यही लोग बेहतरीन-खलायक़ हैं ० (कि) इनका बदला इनके पर्वरदिगार के हां रहने के बाग़ (बहिश्त) हैं, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी (और) वह उनमें सदा को हमेशा (हमेशा) रहेंगे। अल्लाह उनसे खुश और यह उससे खुश, यह (अज्र) उसके लिये है, जो अपने पर्वरदिगार से डरता रहे ०

## सूरत–ज़िल्ज़ाल

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० जब ज़मीन बड़े ज़ोर से हिलादी जाए ० और (यही) ज़मीन अपने दफ़ीने (मादनियात और मुर्दे वग़ैरा सब) निकाल (कर फेंक) दे ० और इन्सान (उसकी यह हालत देखकर) बोल उट्ठे कि इसे क्या हो गया ० उसी दिन यह अपनी (तमाम) ख़बरें (यानी लोगों के अच्छे बुरे अमल सुदा से) बयान कर देगी ० (और ऐ पैग़म्बर! उसको बयान करनी पड़ेंगी) इसलिये कि तुम्हारा पर्वरदिगार उसको हुक्म देगा ० उस दिन लोग (मैदान-हश्र में जमा होकर वहाँ से) मुख़्तलिफ़ हालतों में (हिसाब किताब के लिये) लौटेंगे, ताकि उनके अमल उनको दिखाए जायँ ० तो जिसने ज़र्रा भर नेकी की (होगी) वह उस (नेकी) को (बचश्म-खुद) देख लेगा ० और जिसने ज़र्रा भर बुराई की (होगी) वह उस (बुराई) को (बचश्म-खुद) देख लेगा ०

## सूरत—आदियात

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० (ग़ाज़ियों के) उन (घोड़ों) की क़सम, जो दौड़ते दौड़ते हांप उठते हैं ० फिर (पत्थरों पर अपनी टापों के) मारने से चिङ्गारियां निकालते हैं ० फिर सुबह के वक़्त (दुश्मनों पर) छापा जा मारते हैं ०—

---

उनका पुरस्कार उनके पालनहारे के यहाँ सर्वदा रहने वाले बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और जिनमें वह सर्वदा २ रहेंगे। अल्लाह उनसे प्रसन्न और वह अल्लाह से प्रसन्न। यह (पुरस्कार) उसके लिये है, जो अपने पालन कर्त्ता से भय खाता है ॥

## सूरत–जिलज़ाल

मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

जब भूमि अत्यन्त हिलादी जावेगी और (जब लौट पौट होकर) पृथ्वी अपने (भीतर) का (सब) बोझ बाहर निकाल फेंकेगी और (जब) मनुष्य (यह दशा देखकर) कहेगा कि इस (पृथ्वी) को क्या हो गया (कि गड़ा हुआ धन, कानें, मुर्दे एक एक वस्तु उगले देती है)। उस दिन (पृथ्वी) अपने (ऊपर बसने वालों की भली बुरी समस्त) बातें वर्णन करेगी। इस लिये कि तुम्हारा पालन कर्त्ता (उसे) इनके वर्णन करने की आज्ञा देगा। उस दिन (हिसाब दे देकर) लोग अलग २ समूह समूह होकर लौटेंगे। (नर्क वासियों के समूह अलग होंगे और स्वर्ग वासियों के अलग। कोई समूह किसी ओर जायगा कोई किसी ओर)–जिससे कि उन्हें उनके कर्मों (का फल) दिखा दिया जाय। फिर जिसने ज़र्रा भर (भी) भलाई की होगी, वह उसको देख लेगा और जिसने ज़र्रा भर (भी) बुराई की होगी, वह उसको देख लेगा ॥

## सूरत–आदियात

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥

शपथ है उन घोड़ों की, जो इतना तेज़ दौड़ते हैं कि हांफने लगते हैं और (जिनकी टापें ज़ोर से भागने में पत्थरों पर इसज़ोर से पड़ती हैं, कि उनके सुमों से आग की चिङ्गारियां निकलती हैं) और सवेरे ही सवेरे (शत्रुओं पर) छापा मारते हैं—

صُبْحًا ۝ فَأَثَرْنَ بِهِ نَقْعًا ۝ فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ۝
إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝ وَإِنَّهُ عَلَىٰ
ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝
أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝ وَحُصِّلَ
مَا فِي الصُّدُورِ ۝ إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ

سورة القارعة مكية لَخَبِيرٌ ۝ احدى عشر آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْقَارِعَةُ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ
يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝
وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝ فَأَمَّا
مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝
وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

फिर ( बावजूदेकि सुबह का वक़्त होता है, ताहम ) वह उस वक़्त ( अपनी दौड़ धूप से ) गुबार बुलन्द करते हैं ० फिर उसी वक़्त (दुश्मनों की ) जमाअत में जा घुसते हैं ० ( ग़रज़ हमको इन घोड़ों की क़सम कि) बेशक इन्सान अपने पर्वर्दिगार का बड़ा ही नाशुक्र है ० और वह इस ( बात ) को ( ख़ुद भी ) ख़ूब जानता है ० और वह माल की महब्बत में बड़ा सख़्त है ० तो क्या इसको ( इतनी बात ) मालूम नहीं कि वह लोग जो क़ब्रों में ( मदफ़ून ) हैं, जब ( जिला ) उठाए जायंगे ० और ( लोगों के ) दिलों में जो बातें ( मख़्फ़ी ) हैं ( वह सब ) ज़ाहिर करदी जाएँगी ० उस दिन उनका पर्वर्दिगार ही उन ( के हाल ) से बख़ूबी वाक़िफ़ होगा ( कि कौन नेक है और कौन बद ) ०

## सूरत—क़ारिअह

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० ( सबको ) खड़-खड़ा डालने वाला (हादसा, सो ) ० वह खड़-खड़ा डालने वाला ( हादसा ) है क्या चीज़ ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि वह खड़-खड़ा डालने वाला ( हादसा ) है क्या चीज़ ० ( उस हादसे से मुराद है, वह दिन ) जबकि लोग ( मैदान-हश्र में ऐसे पटे पड़े ) होंगे, जैसे परदार च्यूंटियां पटी पड़ी होती हैं ० और पहाड़ (ऐसे उड़े उड़े फिर रहे ) होंगे, जैसे धुनकी हुई ऊन ० तो जिसके आमाल ( नेक ) तोल में ज़ियादा ठैरेंगे ० तो वह ख़ातिर-ख़्वाह ऐश में होगा ० और जिसके आमाल ( नेक ) तोल में कम ठैरेंगे ० तो उसका ठिकाना ( होगा ) हावियह ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि वह ( हावियह ) है क्या चीज़ ० वह (दोज़ख़ की ) दहकती हुई आग है ०—

---

और उस समय ( भी कि धूलि उड़ने का समय नहीं है-अपनी दौड़ से भूमि की ) धूलि उड़ा देते हैं। और उसी समय ( शत्रुओं की ) सेना में जा घुसते हैं। निस्सन्देह कि मनुष्य अपने पालन कर्त्ता का बड़ा कृतघ्न है, और इस पर स्वयं ( उसका मन ) गवाही देता है। और वास्तविकता यह है कि उसे धन का प्रेम बहुत अधिक है। परन्तु क्या उसे उस समय का ज्ञान नहीं, जब क़ब्रों के मुर्दे ज़िन्दा कर दिये जायँगे और ( लोगों के ) दिलों का भेद प्रगट हो जायगा। उस दिन उनका पालन कर्त्ता उन ( की एक २ बात ) से अभिज्ञ होगा ( और एक २ बात का बदला देगा ) ॥

## सूरत-क़ारिअह

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

दहला देने वाली घटना ! कैसी ( कठिन ) दहला देने वाली घटना ! और तुम्हें ज्ञात भी है कि वह दहला देने वाली घटना कौन सी है ? ( वह उस दिन की घटना है ) जिस दिन लोग तित्तर बित्तर भुनगों की तरह ( फैले हुये और घबराहट में ) होंगे। और पर्वत ऐसे हो जायँगे, जैसी धुनी हुई ऊन ॥

( उस दिन सबके कर्मों का फल मिल जायगा )। अतः जिनके कर्मों के पलड़े भारी होंगे, उनको इच्छानुसार सुख मिलेगा और जिनके कर्मों के पलड़े हलके होंगे, उनका ठिकाना हाविया होगा। और जानते भी हो ! हाविया क्या है ? दहकती हुई आग है ॥

الْاَوْتَادِ ۝ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝ فَاَكْثَرُوْا
فِيْهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَا
اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا
ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ
اَكْرَمَنِ ۝ وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ
رِزْقَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَلْ لَّا
تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ
الْمِسْكِيْنِ ۝ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا
وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ
دَكًّا دَكًّا ۝ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَ
جِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ
وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۝ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ
لِحَيَاتِيْ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ

مेख़ें रखता था ० यह लोग थे, जिन्होंने शहरों में बड़ा सर उठाया था ० और उनमें बहुत फ़साद फैला रक्खा था ० तो ( ऐ पैग़म्बर! ) तुम्हारे पर्वदिगार ने इन ( सब ) पर अज़ाब का कोड़ा फटकारा ० बेशक तुम्हारा पर्वदिगार नाफ़र्मानों की ताक में ( लगा रहता ) है ० लेकिन इन्सान ( का हाल यह है कि ) जब उसका पर्वदिगार ( इस तरह पर ) उस ( के ईमान ) को आज़माता है कि उसको इज़्ज़त और नेअमत देता है, तो ( वह ख़ुश होकर ) कहता है कि मेरा पर्वदिगार मेरी ( ताज़ीम व ) तकरीम करता है ० और जब वह उस ( के ईमान ) को ( इस तरह पर ) आज़माता है कि उसकी रोज़ी उस पर तङ्ग कर देता है, तो ( वह तङ्ग दिल होकर ) बुड़बुड़ाता ( फिरता ) है कि मेरा पर्वदिगार मुझे ज़लील समझता है ० मगर तुम लोगों का यह ख़याल ग़लत है, बल्कि तुम ( ख़ुद ऐसे बख़ील हो कि ) यतीम की ख़ातिरदारी नहीं करते ० और एक दूसरे को मोहताज के खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देते ० और ( माल के ऐसे हरीस हो कि ) मुर्दों तक का तर्का समेट समेट कर खाते हो ( और तुम को सब्र नहीं होता ) ० और माल को बहुत ही अज़ीज़ रखते हो ० मगर जिस दिन ज़मीन मारे धक्कों के चकनाचूर हो जाए ० और ( ऐ पैग़म्बर! ) तुम्हारा पर्वदिगार रौनक़ अफ़रोज़ होगा और फ़रिश्ते सफ़-बस्ता ( उस के ज़िल्लू में होंगे ) ० और उस दिन जहन्नम ( सबके रूबरू ) ला हाज़िर की जायगी। उस दिन इन्सान चेतेगा, मगर ( उस वक़्त ) उसके चेतने से क्या फ़ायदा ० ( यानी इन्सान ) कहेगा कि ऐ काश! मैं अपनी ( इस आख़िरत की ) ज़िन्दगी के लिये पहिले से ( आमाल-नेक का ) कुछ ( ज़ाद बनाकर ) भेजता ० तो उस दिन ( ख़ुदा गुनहगारों को ऐसी सज़ा देगा कि ) उस जैसी किसी ने सज़ा न दी होगी ०—

जो अपनी सेना के डेरों के लिये अनगिनत खूंटे रखता था। इन सबने समस्त नगरों ( और संसार भर ) में उद्दण्डता की थी और उनमें उद्रव मचा रक्खा था। सो तुम्हारे पालन कर्त्ता ने उन पर अज़ाब का कोड़ा वर्षाया ( और उनकी खूब दुरुस्ती की )। निस्सन्देह तुम्हारा पालनहारा ( अवज्ञाकारियों की ) घात में है, किन्तु मनुष्य ( इस बात को भूल गया। उसकी दशा यह है कि ) जब उसका पालन कर्त्ता उसे ( इस प्रकार ) परखता है कि उसे सम्मान देता और नेअमत प्रदान करता है, तो ( आपे से बाहर होकर ) कहने लगता है कि मेरे अल्लाह ने मुझे उच्च पद वाला किया है और जब वह उसे ( दूसरी तरह ) परखता है ( अर्थात) उसकी जीविका उस पर तङ्ग करता है, तो ( शोकित होकर ) कहता है कि मेरे पालनहारे ने मेरा मान घटा दिया ॥

( मूर्खों! ) तुम्हारा यह विचार असत्य है, बरन ( तुम भांति २ के कुकर्मों में लिप्त हो गये हो। जैसे ) तुम अनाथों पर कृपा नहीं करते और ( लोगों को ) दरिद्रों के भोजन कराने की रग़बत नहीं दिलाते और मीरास ( अर्थात मृतक के सम्बन्धियों का धन चाहे जायज़ हो, चाहे नाजायज़ ) खूब ( समेट २ कर ) खाते हो और धन दौलत को अत्यन्त प्रिय रखते हो ॥

( परन्तु स्मरण रहे! जो तुम लोगों के मस्तिष्क में भरा हुआ है, वह सम्पूर्ण) असत्य है। जिस दिन पृथ्वी तोड़ फोड़ कर चूरा २ करदी जायगी और तुम्हारा पालन कर्त्ता ( शान-शौकत के साथ ) विराजमान होगा और फ़रिश्तों की सेनायें आवेंगी और जिस दिन दोज़ख़ ( सबके ) सन्मुख करदी जावेगी, उस दिन मनुष्य की आंखें खुलेंगी ( अर्थात उसको नसीहत हासिल होगी )-परन्तु उस समय नसीहत हासिल करने से उसे क्या लाभ होगा? ( कुछ भी नहीं। उस दिन मनुष्य ) कहेगा हा शोक! मैंने अपने ( इस पारलौकिक ) जीवन के लिये ( संसार में ) कुछ ( शुभ ) कर्म किये होते। उस दिन ( अल्लाह काफ़िरों को ऐसा कठोर दंड देगा कि ) उसके जैसा दंड किसी ने न दिया होगा—

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝
ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَّةً ۝ فَادْخُلِي
فِي عِبَادِي ۝ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝

سورة البلد مكية وهي عشرون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ۝
وَوَالِدٍ وَمَا وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي
كَبَدٍ ۝ أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۝
يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُبَدًا ۝ أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ
أَحَدٌ ۝ أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۝ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝
وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۝ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝ فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ أَوْ إِطْعَامٌ
فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ أَوْ مِسْكِينًا

ع

और ( उनको इस तरह जकड़ेगा कि ) उस जैसा किसी ने न जकड़ा होगा ० ( और जिस रूह को ख़ुदा की तरफ़ से इत्मिनान व तसल्ली है, उससे कहा जायगा कि ) ऐ रूह ! मुत्मइन ० अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ चल ! तू उससे राज़ी ( और ) वह तुझसे राज़ी ० फिर ( ख़ुदा उस को हुक्म देगा कि ) हमारे ( ख़ास ) बन्दों में जा मिल ० और हमारी बहिश्त में जा दाख़िल हो ०

## सूरत—बलद

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें २० आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) हम इस शहर ( मक्का ) की क़सम खाते हैं ० और ( इस शहर को यह ख़ुसूसियत हासिल है कि ) तुम इस शहर में ठैरे हुए हो ० और ( नीज़ ) बाप और उसकी औलाद ( यानी आदम और बनी-आदम ) की ( क़सम खाते हैं ) ० कि हमने आदमी को ( ऐसा मख़्लूक़ ) बनाया है ( कि सारी उम्र ) मुसीबत में (रहे, तो उसको गुरूर क्या करना चाहिये)० क्या वह इस ख़याल में है कि उस पर किसी का बस न चलेगा ० ( शेख़ी में आकर ) कहता है कि मैंने ढेरों माल उड़ा दिया ० क्या वह यह समझता है कि उसको ( फ़ुज़ूल दौलत उड़ाते हुए ) किसी ने नहीं देखा ० क्या हम ने उसको ( एक छोड़ दो ) दो आंखें ० और ज़बान और दो होंट नहीं दिये ? ( बेशक दिये ) ० और उसको ( नेकी और बदी के ) दोनों रस्ते ( भी ) दिखा दिये ० फिर ( भी वह उन नेअमतों के शुक्र में ) घाटी में से होकर न निकला ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि घाटी ( से हमारी ) क्या ( मुराद ) है ० ( घाटी से मुराद है, किसी की ) गर्दन का ( गुलामी या क़र्ज़ के फन्दे से ) छुड़ा देना ० या भूक के दिन यतीम ( को ख़ास कर जबकि वह अपना ) रिश्तेदार ( भी हो ) या मोहताज—

---

( और उन्हें इस प्रकार जकड़ेगा ) कि उसकी तरह किसी ने न जकड़ा होगा । ( और ख़ुदा पवित्रात्मा से कहेगा ) हे ( वह ) आत्मा ! कि जिसने ( मेरे स्मरण,तथा मेरी आधीनता में ) शान्ति पाई है ( आ ! ) तू अपने पालनहारे ( की कृपा की छाया ) की ओर चली आ !! इस दशा में कि तू उससे प्रसन्न—वह तुझसे प्रसन्न ( और ) पुनः मेरे (!मुख्य) बन्दों में प्रवेश कर ! और मेरी जन्नत में प्रवेश कर ॥

## सूरत—बलद

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें २० आयतें और १ रुकूअ है ॥**

मैं इस शहर ( मक्का ) की सौगन्ध खाता हूं । और ( इस नगर की विशेषता यह है कि ) तुम ( हे मुहम्मद ! ) इस नगर में रहते हो । और ( शपथ खाता हूं ) पिता ( आदम ) और ( उनकी ) सन्तान की । हमने मनुष्य को संकट में ( लिप्त रहने वाला ) बनाया है ( पग पग पर उसे ठोकरें लगती हैं । कष्ट पहुंचते हैं, परन्तु फिर भी ख़ुदा और उसके रसूल से लड़ना चाहता है ) । क्या वह यह समझे हुये है कि उस पर कोई क़ाबू नहीं पाएगा ? वह कहता ( फिरता ) है-मैंने ( मुहम्मद के विरोध में ) बहु धन व्यय कर डाला । क्या उसका यह ख़्याल है कि उसको ( धन नष्ट करते हुये ) किसी ने नहीं देखा ( और कोई उससे इस अपव्यय का हिसाब नहीं लेगा ? ) ॥

क्या यह ( सत्य ) नहीं है कि हमने! उसे ( देखने को ) दो आँखें ( दीं ) और ( बोलने को ) ज़बान और दो होंठ दिये ( और साथ ही ) उसको ( अच्छे और बुरे ) दोनों मार्ग भी बता दिये ( कि जिसे वह चाहे ग्रहण करले )—परन्तु ( उसने वह राह पकड़ी, जो उसको सरल और संकट रहित दिखाई दी और ) वह घाटी में होकर नहीं गुज़रा । और तुम समझे भी घाटी ( का अर्थ ) क्या है । ( घाटी का अर्थ है ) गर्दन का स्वतन्त्र कराना ( दरिद्रता, ग़रीबी, ऋण, गुलामी के बन्धनों से लोगों को छुटकारा दिलाना )—अथवा अकाल के दिनों में ( किसी ) अपने नातेदार अनाथ को वा ( किसी ) धूलि पर लोटने वाले भिखारी को भोजन कराना । ( डींगें मारने वाले इन घाटियों को पार नहीं कर सकते । वह अपना धन अशुभ कामों ही में लगा सकते हैं ) ॥

ذَا مَتْرَبَةٍ ● ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ● أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْمَيْمَنَةِ ● وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ
الْمَشْأَمَةِ ● عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ ●

سورة والشمس مكية وهى خمس عشرة آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ● وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا ● وَالنَّهَارِ
إِذَا جَلَّاهَا ● وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ● وَالسَّمَاءِ وَمَا
بَنَاهَا ● وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ● وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا
فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ● قَدْ أَفْلَحَ مَنْ
زَكَّاهَا ● وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ● كَذَّبَتْ
ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ● إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ● فَقَالَ لَهُمْ
رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ● فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا

४

ख़ाक-नशीन को ( खाना ) खिलाना —( तो जो नाहक़ की शेख़ी मारता है, चाहिये था कि इस घाटी में होकर गुज़रता ) ० इसके अलावा उन लोगों ( के ज़ुमरे ) में होता जो ईमान लाए और एक दूसरे को सब्र की हिदायत करते रहे और ( नीज़ ) एक दूसरे को ( ख़ल्क़ ख़ुदा पर ) रहम करने की हिदायत करते रहे ० यही लोग ( आख़िरत में ) मुबारक ( ख़ुश-नसीब ) होंगे ० और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया, वही मनहूस ( बद-नसीब ) होंगे ० कि उनको ( दोज़ख़ की ) आग में डाल कर ( सब तरफ़ से ) किवाड़ भेड़ दिये जाएँगे ०

## सूरत—शम्स

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १५ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

**(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ०**
आफ़ताब की और उसकी धूप की क़सम ० और आफ़ताब के ( ग़ुरूब हुए ) पीछे जब चाँद निकलता है, उसकी ( क़सम ) ० और दिन की ( क़सम ) जबकि वह आफ़ताब को नुमायाँ करे ० और रात की ( क़सम) जबकि वह आफ़ताब को छुपाले ० और आस्मान की और ( उस ज़ात की क़सम ) जिसने उसको बनाया है ० और ज़मीन की और ( उस ज़ात की क़सम ) जिसने उसको बिछाया है ० और इन्सान को और ( उस ज़ात की क़सम ) जिसने उसको ( ऐसा ) दुरुस्त बनाया ० फिर उसकी बदकारी और पर्हेज़गारी ( दोनों बातें ) उसको सुझादीं ० ( ग़रज़ हमको इन चीज़ों की क़सम ) कि जिसने अपनी रूह को ( शिर्क और अख़्लाक़-बद की गन्दिगी से ) पाक किया ( वह ) ज़रूर ( अपनी ) मुराद को पहुंचा ० और जिसने उसको दबा दिया ( वह ) ज़रूर घाटे में रहा ० ( क़ौम ) समूद ने अपनी सर्कशी की वजह से ( अपने पैग़म्बर सालेह को ) झुटलाया ० जबकि उनमें से जो ज़ियादा बद-ज़ात था, आमादा हो गया ० इस पर पैग़म्बर-ख़ुदा ( सालेह ) ने उनसे कहा कि ( देखो ! ) ख़ुदा की ऊँटनी ( को हाथ न लगाना ) और ( न ) उसका पानी ( बन्द करना ) ० इस पर भी उन लोगों ने सालेह को झुटलाया और ऊँटनी को मार डाला—

( डींग मारने वाले को उचित था कि ख़ुदा की आज्ञा पालन करता और ) पुनः उन लोगों में आ जाता, जो ( अल्लाह पर ) ईमान लाये हैं और एक दूसरे को सन्तोष करना सिखाते हैं और एक दूसरे को ( लोगों पर ) दया करने की शिक्षा देते हैं। यही लोग सौभाग्यवान हैं। और जिन्होंने हमारी आयतों को न माना ( और हमारे उन आदेशों का पालन नहीं किया, जो उनको कठिन जान पड़ते हैं )—वही लोग दुर्भाग्य हैं। उनके लिये ( दोज़ख़ की ऐसी प्रचण्ड ) अग्नि है—( जो चारों ओर से ) बन्द ( होगी। जिसमें हवा का प्रवेश न होगा और उसका धुवाँ भीतर का भीतर ही रहेगा ) ॥

## सूरत—शम्स

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें १५ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

शपथ है सूर्य्य को और उसके प्रकाश की। और शपथ है चन्द्रमा की, जबकि वह सूर्य्य अस्त हो जाने के उपरान्त उदय होता है ( अर्थात चन्द्रमा के उदय होने की सौगन्ध है )। और शपथ है दिन को, जिस समय वह संसार को प्रकाश युक्त करदे ( अर्थात प्रकाश मय दिन की सौगन्ध है ) और शपथ है रात्रि की, जिस समय वह संसार को अन्धकार युक्त करदे ( अर्थात अन्धेरी रात्रि की सौगन्ध है )। और शपथ है आकाश की और जिसने उसे बनाया। [और शपथ है भूमि की और उसकी, जिसने उसे बिछाया। और शपथ है ( मनुष्य के ) प्राण को और उसकी जिसने उसे ठीक किया ( और ) पुनः उसे उसकी नेकी बदी ( बुराई भलाई के जानने ) का ज्ञान दिया ॥

वह अवश्य सफल हुआ, जिसने अपने नफ़्स, अर्थात मन को ( पापों के मल से ) शुद्ध किया। और वह निश्चित रूप से असफल रहा, जिसने अपने मन को ( पापों में ) गाड़ दिया। समूद ( की जाति का हाल तुम्हें ज्ञात ही है कि उस ) ने अपनी उद्दण्डता के कारण ( अपने समय के पैग़म्बर सालेह को ) झुठलाया। जब उनमें का सबसे बड़ा अभागा उठा ( जिससे कि उस ऊँटनी को सताये, जो चमत्कार दिखाने के लिये पर्वत से निकाली गई थी )—तो अल्लाह के पैग़म्बर ने उन लोगों से कहा कि ( देखना ! ) अल्लाह की ऊँटनी को ( न सताना ) और उसका पानी ( न रोकना—परन्तु समूद की जाति ने पैग़म्बर की बात न मानी ) और उनको झुठलाया और उस ( ऊँटनी ) की कूचें काट ( ही ) डालीं—

तो उनके पर्वर्दिगार ने उनके गुनाह के बदले उन पर हलाकत ला नाज़िल की और सबको ( मार के ) पटरा कर दिया ० और उसने इनके ( इस ) अन्जाम की ( ज़रा भी तो ) परवा न की ०

## सूरत—लैल

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें २१ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० रात की क़सम, जबकि वह ( सब चीज़ों को ) ढांक ले ० और दिन की ( क़सम ) जब वह ख़ूब रोशन हो ० और उस ( ज़ात ) की ( क़सम ) जिसने नर व मादा को पैदा किया ० कि बेशक तुम लोगों की कोशिश अलबत्ता मुख़्तलिफ़ ( तौर की ) है ० तो जिसने ( राह-ख़ुदा में ) दिया और पर्हेज़गारी का शेवा इख़्तियार किया ० और अच्छी बात ( यानी दीन-इस्लाम ) को सच समझा ० तो हम आसानी की जगह ( यानी बहिश्त में पहुंचने का रस्ता ) उसके लिये आसान कर देंगे ० और जिसने ( राह-ख़ुदा में ) देने से मुज़ाएक़ा किया और (आख़िरत की) पर्वा न की ० और उम्दा बात (यानी दीन-इस्लाम) को झूट जाना ० तो हम मुश्किल की जगह ( यानी दोज़ख़ में पहुंचने का रस्ता ) उसके लिये आसान कर देंगे ० और जब ( वह जहन्नम में ) गिरेगा, तो उसका माल उसके कुछ भी काम न आयेगा ० हमारा काम तो राह दिखा देना है ० और आख़िरत और दुनिया ( दोनों ) हमारे ही इख़्तियार में हैं ० तो ( लोगो ! ) हमने तुमको ( दोज़ख़ की ) भड़कती हुई आग से डरा दिया है ० कि उसमें वही बद बख़्त दाख़िल होगा ० जो ( दुनिया में दीन-हक़ को ) झुटलाता और ( उससे ) रूगर्दानी करता रहा ० और जो बड़ा पर्हेज़गार है, वह उस ( आग ) से दूर ही दूर रक्खा जाएगा ० वह ऐसा ( दिल का सख़ी ) है कि अपना माल ( राह-ख़ुदा में ) देता है, ताकि ( उसका नफ़्स बुख़्ल के ऐब से ) पाक हो ० और किसी का उस पर कोई एहसान नहीं कि ( इस देने से उसको ) उसका बदला उतारना ( मक़्सूद ) है०—

فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝ وَلَا
يَخَافُ | سورة الليل احدى وعشرون آية | عُقْبٰهَا

ع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَاللَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝ وَمَا خَلَقَ
الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝ فَاَمَّا
مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهٗ
لِلْيُسْرٰى ۝ وَاَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝ وَكَذَّبَ
بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ۝ وَمَا يُغْنِيْ
عَنْهُ مَالُهٗ اِذَا تَرَدّٰى ۝ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝
وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا
تَلَظّٰى ۝ لَا يَصْلٰىهَا اِلَّا الْاَشْقَى ۝ الَّذِيْ كَذَّبَ
وَتَوَلّٰى ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ
يَتَزَكّٰى ۝ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰى

---

इन पापों के बदले में उनके पालन कर्त्ता ने उनको नष्ट ( भ्रष्ट ) करने का अज़ाब उतारा । और ( छोटों, बड़ों, धनी, निर्धनी, स्त्री पुरुष ) समस्त जाति का ( एक दम ) सफ़ाया कर दिया और अल्लाह ( ऐसा सर्व शक्तिमान है, जिस ) को ऐसे अज़ाब के परिणाम के विषय में ( किसी प्रकार की ) आशंका नहीं है ॥

## सूरत—लैल

### मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें २१ आयतें और १ रुकूअ है ॥

शपथ है रात्रि की, जबकि वह (दिन और दिन की चमक दमक पूरी होने के उपरान्त समस्त संसार को अपने अन्धकार में) छिपा लेती है। और शपथ है दिन की, जब वह अतिशय प्रकाशमान होता है ( और अन्धकार का कहीं पता नहीं रहता ) और शपथ है उसकी, जिसने नर और मादा बनाये कि तुम लोगों के प्रयत्न ( और कर्म ) अवश्य २ भिन्न २ ( और भांति २ के ) हैं ( और उन्हों के अनुकूल तुम्हें बदला मिलेगा )। सो जिसने ( अल्लाह तआला के हक़ को ) अदा किया ( और उसके मार्ग में दान पुण्य किया । अल्लाह का ) भय माना और अच्छी बात अर्थात इस्लाम—धर्म का समर्थन किया, तो उसके लिये हम आनन्द-भवन ( अर्थात जन्नत प्राप्त करना ) अवश्य सुगम कर देंगे । (अर्थात उसको नेक कामों के करने में कुछ कठिनता नहीं मालूम होगी) । और जिसने ( अल्लाह का हक़ अदा करने और उसके नाम पर दान पुण्य करने में) कृपणता की और ( अल्लाह से ) बेपर्वाही की और सत्य बात अर्थात इस्लाम-धर्म को झुठलाया, तो उसके लिये हम कष्ट-भवन ( अर्थात दोज़ख़ में जाना ) सरल कर देंगे । ( अर्थात उसे कुकर्म करने में सुविधा और सुगमता जान पड़ेगी ) ॥

और जब वह ( दोज़ख़ में ) गिरेगा, तो ( उस समय) उसका रुपया पैसा उसके ( कुछ भी ) काम न आवेगा । राह दिखा देना हमारा काम अवश्य है और ( फिर जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा ) । लोक और परलोक ( सब ) हमारे अधिकार में है । हम तुम्हें ( दोज़ख़ की ) दहकती हुई अग्नि से डरा चुके हैं । उसमें वही दुर्भाग्य जावेगा, जो ( इस्लाम-धर्म को ) झुठलाता और ( उससे) मुंह फेरे रहा । और उससे वह ( भाग्यवान ) परहेज़गार दूर रक्खा जायगा, जो ( मन को ) पवित्रता प्राप्त करने के लिये अपना धन ( केवल अल्लाह के लिये नेक कामों में ) ख़र्च करता है । उस पर किसी के उपकार का बोझ नहीं, जिसका उसे बदला उतारना हो—

उसको तो सिर्फ़ अपने पर्वर्दिगार-आलीशान की रज़ाजोई मन्ज़ूर है और बस ० और ( ख़ुदा उससे ) ज़रूर राज़ो भी होगा ०

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ

سورة والضحى مكية وهي احدى عشرة آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالضُّحَىٰ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا
قَلَىٰ ۝ وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ
يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ
وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ عَائِلًا
فَأَغْنَىٰ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَأَمَّا السَّائِلَ
فَلَا تَنْهَرْ ۝ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ

سورة الم نشرح مكية وهي ثمان آيات

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ
الَّذِي أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ

## सूरत—.ज़ुहा

मक्की, यानी मक्क में नाज़िल हुई । इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! हमको ) चाश्त ( के वक़् ) की क़सम ० और रात की ( क़सम ) जब ( सब चीज़ों को ढांक ) ले ० कि तुम्हारा पर्वर्दिगार न तो तुमसे दस्तबर्दार हुआ और न ( किसी तरह ) नाख़ुश हुआ ० और अलबत्ता आख़िरत तुम्हारे लिये ( इस ) दुनिया से कहीं बेहतर है ० और तुम्हारा पर्वर्दिगार आगे चल कर तुमको इतना कुछ देगा कि तुम ( भी ) ख़ुश हो जाओगे ० क्या तुमको उसने यतीम नहीं पाया ( यानी पाया ) फिर जगह दी ० और तुमको देखा कि ( राह-हक़ की तलाश में भटके ) भटके ( फिर रहे ) हो, तो ( तुमको दीन-इस्लाम का ) सीधा रस्ता दिखा दिया ० और तुमको मुफ़लिस पाया, तो उसने ग़नी कर दिया ० तो ( इन नेअमतों के शुक्रिये में ) यतीम पर ( किसी तरह का) ज़ुल्म न करना ० और न साइल को झिड़कना ० और ( लोगों से ) अपने पर्वर्दिगार के एहसानात का तज़्करा करते रहना ( कि यह भी शुक्र-गुज़ारी का एक तरीक़ा है ) ०

## सूरत—इन्शिराह

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या हमने तुम्हारा हौसला फ़राख़ नहीं किया? (यानी किया)० और (इसके अलावा) बोझ-जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रक्खी थी, तुम पर से उतार दिया ० और तुम्हारे ज़िक्र (ख़ैर) का आवाज़ा बुलन्द किया०—

---

वह तो जो कुछ भी ख़ुदा के मार्ग में व्यय करता है, केवल अपने पालनहारे को प्रसन्न करने के लिये ( करता ) है। और शीघ्र (तुम देख लोगे कि ) ख़ुदा भी उससे प्रसन्न हो जायगा ॥

## सूरत–ज़ुहा

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥

दिन चढ़े की शपथ ( जबकि धूप चारों ओर फैल जाती है ) और रात्रि की ( शपथ ) जबकि प्रत्येक वस्तु पर ( अँधियारी ) छाई हुई होती है। ( हे पैग़म्बर ! ) न तो तुम्हारे पालन कर्त्ता ने तुम्हें छोड़ा और न वह तुमसे अप्रसन्न+ हुआ ॥

+टीका–कई दिन से वही नहीं आई थी । काफ़िरों ने कहना शुरू किया कि अल्लाह मुहम्मद से अप्रसन्न हो गया, मुहम्मद को छोड़ बैठा। रसूलुल्लाह इससे कुछ शोकातुर होने लगे, तो आपको धीरज देने और सन्तुष्ट करने लिये यह आयतें अवतीर्ण हुईं:–हसन निज़ामी ॥

और ( तुम जानते हो कि ) तुम्हारी पिछली दशा पहिली दशा से अवश्य उत्तम हुआ करती है। और शीघ्र तुमको तुम्हारा पालन कर्त्ता वह कुछ देगा, कि तुम प्रसन्न हो जाओगे। क्या तुम्हें उसने अनाथ नहीं पाया। पुनः ( उसने ) तुम्हारा ठिकाना कर दिया ( दादा के दिल में पिता का सा प्रेम डाल दिया और इस प्रकार पालन पोषण कराया–मानो, रसूलुल्लाह अनाथ थे ही नहीं )। और तुम्हें ( सीधे मार्ग की खोज में ) भटकता हुआ देखा, तो तुमको ( इस्लाम का ) सीधा मार्ग बता दिया। और तुम्हें निर्धन पाया, तो धनवान कर दिया। सो ( इन सब बातों का स्मरण करो और समझो कि तुम्हारा पालन कर्त्ता तो तुम पर निरन्तर कृपालु रहता है। वह तुम्हें छोड़ने और तुमसे अप्रसन्न क्यों होने लगा )। तुम भी ( इसका ख़्याल रखना कि किसी ) अनाथ पर क्रोध न करना और ( किसी ) भिखारी को न झिड़कना और ( सर्वदा ) अपने पालन कर्त्ता के उपकारों का वर्णन करते रहना ॥

## सूरत–इन्शिराह

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( हे रसूल ! हमने तुम पर एक से एक बढ़ कर उपकार किये हैं )। क्या हमने तुम्हारे लिये तुम्हारा सीना नहीं खोल दिया ( और उसको ज्ञान-प्रकाश तथा बुद्धि से परिपूर्ण नहीं किया)। और हमने तुम पर से तुम्हारा (वह) बोझ हलका कर दिया, जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रक्खी थी। ( अर्थात वास्तविकता से अभिज्ञ करके तुम्हें इतना साहसी पराक्रमी बना दिया कि दुनिया की किसी आपत्ति से नहीं घबराते )। और तुम्हारे लिये हमने ( यह किया कि ) तुम्हारा चर्चा ( क़यामत तक के लिये ) ऊँचा कर दिया। ( इसी प्रकार दृढ़ता तथा धैर्य, सन्तोष से काम किये जाओ )—

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

سورة والتين مكية وهي ثمان آيات

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝ وَطُورِ سِينِينَ ۝ وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ۝

سورة العلق مكية وهي تسع عشرة آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ

सो बेशक मुश्किल के साथ आसानी है ० बेशक मुश्किल के साथ आसानी है० तो अब कि तुम (इन तरद्दुदात से किसी क़द्र ) फ़ारिग़ हुए, तो ( इबादत की ) रियाज़त करो ० और अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ ( पूरे पूरे ) मुतवज्जह हो जाओ ०

## सूरत—तीन

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहबान (है)० अंजीर ( मेवे ) और ज़ैतून ( दरख़्त ) ० और तूर-सीनीन ( पहाड़ ) ० और इस शहर ( मक्का ) की क़सम, जिसमें ( हर तरह का ) अम्न है ० कि हमने इन्सान को बेहतर से बेहतर साख़्त का पैदा किया ० फिर हम उसको (बूढ़ा करके ) कमतर से कमतर मख़्लूक़ के दर्जे में लौटा लाए० मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल ( भी ) किये ( उनको तनज़्ज़ुल-पीरी से तङ्ग दिल न होना चाहिये, क्योंकि ) उनके लिये ( आख़िरत में ) अज्र है-बे इन्तिहा ० तो ( ऐ पैग़म्बर ! अब ) कौन है, जो ( इन सब बातों के मालूम किये ) पीछे ( रोज़ ) जज़ा के बारे में तुमको झूटा समझे ० क्या ख़ुदा सब हाकिमों से बड़ा हाकिम ( और क़ुदरत वाला ) नहीं है ? ( तो मुन्किरीन-क़यामत उससे क्यों नहीं डरते ) ०

## सूरत—अलक़

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें १९ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० ( ऐ पैग़म्बर ! क़ुर्आन जो वक़्तन-फ़वक़्तन तुम पर नाज़िल होगा, उस को) अपने पर्वर्दिगार का नाम लेकर पढ़ चलो, जिसने ( मख़्लूक़ात को ) पैदा किया ० ( जिसने ) आदमी को

---

निस्सन्देह कठिनता के साथ सुगमता और हर दुख के साथ सुख ( लगा हुआ ) है। सो ( साहस सन्तोष तथा सहन शीलता कभी न छोड़ो। और ) जब ( धर्म प्रचार तथा जिहाद आदि से ) अवकाश पाओ, तो ( उपासना तथा ) परिश्रम में पूर्णतया लग जाओ और अपने पालन कर्त्ता की ओर ( पूर्ण ) ध्यान दो ॥

## सूरत–तीन

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है॥

शपथ है अन्जीर और ज़ैतून की । और ( शपथ है ) तूरसीना ( पर्वत ) की, और ( शपथ है ) इस अमन ( चैन ) वाले शहर ( अर्थात मक्का ) की, कि हमने मनुष्य को अत्योत्तम दशा पर उत्पन्न किया ( और उसमें सुकर्मों के द्वारा उच्च पदवी प्राप्त करने की योग्यता रक्खी )। और फिर उसे ( दोज़ख़ के ) नीचे से नीचे दर्जे में पहुंचा दिया । ( किन्तु ) इससे वह लोग बाहर हैं, जो ईमान ले आये हैं और जिनके कर्म अच्छे हैं, उनके लिये (उनके सुकर्मों का) ऐसा फल है, जिसकी कोई सीमा नहीं। (उन पर कृपा तथा क्षमा की वर्षा होगी, जो कभी ख़त्म न होगी । फिर हे मनुष्य ! जब तुझे यह ज्ञात है कि ईमान और शुभ कर्मों के द्वारा तू उच्च पद पर पहुंच सकता है, तो) फिर तुझे क्या हो गया है, जो तू ( प्रत्यक्ष प्रमाण सुन लेने के पश्चात भी) क़यामत के इन्कार पर अड़ा हुआ है। क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा ( और शक्ति वाला ) हाकिम नहीं है ? ( अवश्य है ) ॥

## सूरत—अलक़

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें १९ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( हे मुहम्मद ! जो कुछ तुम्हें पढ़ाया जाता है ) अपने पालनहारे का नाम लेकर पढ़ो, जिसने ( समस्त जीवधारियों को ) उत्पन्न किया है। ( और ) जिसने मनुष्य ( जैसे उच्च प्राणी ) को रक्त के लोथड़े (जैसी तुच्छ वस्तु ) से बनाया है—

مِنْ عَلَقٍ ۚ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ
عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۗ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ۙ
اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۗ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۗ اَرَءَيْتَ الَّذِىْ
يَنْهٰى ۙ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۗ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰىٓ ۙ
اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۗ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۗ اَلَمْ
يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۗ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًا
بِالنَّاصِيَةِ ۙ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ فَلْيَدْعُ
نَادِيَهٗ ۙ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ كَلَّا ۗ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ

سورة القدر وَاقْتَرِبْ ۩ مكية خمس آيات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا
لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۗ لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ
شَهْرٍ ۗ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ

مِنْ

٤

गोश्त के लोथड़े से बनाया ० ( क़ुर्आन ) पढ़ चलो और ( ख़ुदा पर भरोसा रक्खो कि ) तुम्हारा पर्वर्दिगार बड़ा करीम है ० जिसने (आदमी को ) क़लम के ज़रिये से इल्म सिखाया ० उसने वही के ज़रिये से (भी) इन्सान को वह बातें सिखाईं, जो उसको मालूम न थीं ० मगर इन्सान ( का हाल यह है कि वह ) अपने तईं बेनियाज़ समझ कर ( शुक्र के बदले ख़ुदा से उल्टी ) सर्कशी करता है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) बेशक ( इन सबको ) तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ लौट कर जाना है ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुमने उस शख़्स के हाल पर ( भी ) नज़र की कि जब ( हमारा एक ) बन्दा नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है, तो वह उसे मना करता है ० भला देखो तो ( सही ! ) अगर ( यह शख़्स ख़ुद ) राह-रास्त पर है ० या ( लोगों को ) पर्हेज़गारी सिखाता है ( जैसा कि वह समझता है ) ० भला देखो तो ( सही ! ) अगर यह ( शख़्स कलाम इलाही को ) झुटलाता और (दीन हक़ से ) रूगर्दानी करता है ० ( बहर—हाल ) क्या इसको ( इतनी बात की ) ख़बर नहीं कि ( दोनों सूरतों में ) ख़ुदा ( उसके हाल को ) देख रहा है ० वह सुन रक्खे कि अगर ( अपनी करतूत से ) बाज़ नहीं आएगा, तो हम ( उसके ) पट्टे ( यानी ) उस झूटे ख़ताकार के पट्टे पकड़ कर घसीटेंगे ० तो उसको चाहिये कि अपने हम नशीनों को ( जिनके बिर्ते पर कूदा करता है, अपनी मदद के लिये ) बुलाए ० साथ के साथ हम ( भी अपने ) जल्लाद फ़रिश्तों को ( उसकी सज़ा-दिही के लिये ) बुला लेंगे ० सुनो जी ! ( हरगिज़ ) उसका कहा न मानो और (बेतअम्मुल ख़ुदा की जनाब में ) सज्दे करो ( यानी नमाज़ पढ़ो ) और क़ुर्ब ( ख़ुदा ) हासिल करो ०

## सूरत—क़द्र

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)०

हमने क़ुर्आन ( की पहिली वही ) को शबे-क़द्र में उतरा० और (ऐ पैग़म्बर!) तुम क्या समझे कि शबे-क़द्र है क्या चीज़ ० शबे-क़द्र ( ख़ैर व बरकत में ) हज़ार महीने से बेहतर है ० उस रात ( आइन्दा साल के ) हर एक इन्तिज़ाम के लिये फ़रिश्ते और जिब्रील अपने पर्वर्दिगार के हुक्म से ( ज़मीन पर ) उतरते हैं ०—

पढ़ो ! और ( स्मरण रक्खो ! ) तुम्हारा पालन कर्त्ता अति कृपालु है, जिसने क़लम से ( लिखना और विद्याओं का सुरक्षित रखना ) सिखाया। और ( वही द्वारा ) मनुष्य को वह बातें बताईं, जिन्हें वह ( पहिले ) नहीं जानता था। परन्तु ( शोक है कि ) मनुष्य अपनी धनवानता के घमंड में ( हमारे उन उपकारों पर कृतज्ञ होने के बदले उलटा ) उद्दण्डता करता है। ( हे मुहम्मद ! इन सब उद्दण्डों को एक दिन ) तुम्हारे पालन कर्त्ता के पास अवश्य लौट कर जाना है । क्या तुमने उसको देखा, जो हमारे एक मुख्य बन्दे को जबकि वह नमाज़ पढ़ता है ( नमाज़ पढ़ने से ) रोकता है । क्या तुम्हें ज्ञात है कि यह मनुष्य यदि सीधे मार्ग पर होता, वा लोगों को संयमता का उपदेश देता—( तो उसको इसका क्या पुरस्कार मिलता )। और क्या तुम जानते हो कि ( अब ) उस मनुष्य ने ( मुहम्मद रसूलुल्लाह को ) झुठलाया है, और इस्लाम-धर्म से मुंह मोड़ा है ( तो उसे उसकी उद्दण्डता का क्या दंड मिलेगा )। क्या उसे ज्ञात नहीं कि अल्लाह ( उसके कर्मों को ) देख रहा है ॥

( कहता है कि मेरे साथी भलेमानस तथा धनवान हैं )। यह कुछ नहीं है—यदि वह ( अपनी उद्दण्डता से ) न मानेगा, तो हम उसको उसके माथे के बाल पकड़ कर घसीटेंगे, झूठे अपराधी के पट्टे ( पकड़ कर खींचेंगे । यदि उसके पक्षपाती उसको इस अपमान तथा विपत्ति संकट से बचा सकते हैं ) तो वह अपने सहायकों को बुलावे। निकट है कि हम भी ( उसके लिये ) दोज़ख़ के भयंकर फ़रिश्तों को बुलावेंगे। इस उद्दण्ड की डींगें सब व्यर्थ हैं, बकता है। तुम इसकी पर्वाह न करो। तुम नमाज़ पढ़ते रहो। और ख़ुदा की नज़दीकी प्राप्त करो ॥

## सूरत—क़द्र

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

हमने क़ुर्आन को क़द्र की रात्रि में उतारा है। और तुम क्या समझे क़द्र की रात्रि क्या वस्तु है। ( उपासना, आराधना तथा योग साधन और बरकत प्राप्त करने के लिये ) क़द्र की रात्रि हज़ार महीनों से बढ़ कर है । इसमें समस्त बातों के प्रबन्ध के लिये जिब्रील और अन्य फ़रिश्ते अपने पालनहारे की आज्ञा से ( भूमि पर ) उतरते हैं—

वह ( रात अम्न और ) सलामती ( की रात ) है ( और ) वह ( यानी उसकी ख़ैर व बरकत ) तुलूअ-फ़ज्र तक ( रहती ) है ०

## सूरत—बय्यिनह

**मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

( शुरू ) अल्लाह के नाम से ( जो ) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० जो लोग अह्ल-किताब और मुश्रिकों में से ( दीन हक़ यानी इस्लाम को ) नहीं मानते, वह ( अपने दीन-ग़लत से ) बे इसके तो टलने वाले थे नहीं कि उनको कोई खुली हुई दलील पहुंचे ० ( और वह दलील यही थी कि ) ख़ुदा की तरफ़ से कोई पैग़म्बर ( आए और कलाम-इलाही के ) मुक़द्दस औराक़ ( उनको ) पढ़ कर सुनाए ० ( और ) उनमें पक्की ( और माक़ूल ) बातें लिखी हों ० और ( यह जो ) अह्ल-किताब ( मुतफ़र्रिक़ हुए; बाज़ इस्लाम लाए और अक्सर अपनी ज़िद पर अड़े रहे ) तो ( उस ) दलील ( यानी रसूल ) के आए पीछे ही मुतफ़र्रिक़ हुए ० हालांकि ( जो लोग मुख़ालिफ़ रहे ) उनको ( इस रसूल के ज़रिये से ) यही हुक्म दिया गया कि ख़ालिस अल्लाह ही की बन्दिगी की नीयत से यक-रुख़े होकर उसकी इबादत करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और यही ( वह ) ठीक दीन है-( जो पैग़म्बर ने उनको तालीम किया, मगर नाहक़ की ज़िद का क्या इलाज !) ० बेशक अह्ल-किताब और मुश्रिकीन में से जो लोग ( दीन-हक़ से ) इन्कार करते रहे-( वह आख़िरकार ) दोज़ख़ की आग में होंगे (और) उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। यही लोग बदतरीन-ख़लायक़ हैं ० बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक-अमल ( भी ) किये—

مِن كُلِّ أَمْرٍ ۝ سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ۝
سورة لم يكن مدنية وهى ثمان آيات
بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
لَمْ يَكُنِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ
وَٱلْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ ٱلْبَيِّنَةُ ۝
رَسُولٌ مِّنَ ٱللَّهِ يَتْلُوا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝ فِيهَا كُتُبٌ
قَيِّمَةٌ ۝ وَمَا تَفَرَّقَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا ٱلْكِتَٰبَ إِلَّا
مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ ٱلْبَيِّنَةُ ۝ وَمَآ أُمِرُوٓا إِلَّا
لِيَعْبُدُوا ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ
وَيُقِيمُوا ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُوا ٱلزَّكَوٰةَ وَذَٰلِكَ دِينُ
ٱلْقَيِّمَةِ ۝ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ
وَٱلْمُشْرِكِينَ فِى نَارِ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أُولَٰٓئِكَ
هُمْ شَرُّ ٱلْبَرِيَّةِ ۝ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا ٱلصَّٰلِحَٰتِ

---

वह ( रात्रि सम्पूर्ण अमन चैन और ) सलामती ( की रात्रि ) है। ( और वह अपने समस्त गुणों तथा बरकतों के साथ ) प्रातः काल होने तक रहती है ॥

## सूरत—बय्यिनह

**मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

किताब वाले और मुश्रिक (हों, चाहे कोई और हो ) जो ( भी सीधी राह से हट गये थे और ) कुफ़्र में लिप्त थे, वह इसके अतिरिक्त कि उनके पास प्रत्यक्ष ( तथा प्रकाश युक्त ) प्रमाण आये ( अपने कुफ़्र से ) रुकने वाले न थे ( अर्थात ) अल्लाह के ( एक ) रसूल ( की उन्हें आवश्यकता थी ) जो ( ऐसी )पवित्र सूरतें ( उन्हें ) पढ़कर सुनाये, जिनमें ( यथार्थ ज्ञान और बिल्कुल ) सत्य सत्य बातें (लिखी) हों। ( अतः मुहम्मद रसूलुल्लाह को अल्लाह ने भेजा, जिन्होंने क़ुर्आन का प्रचार किया )। और किताब वालों में ( मुहम्मद रसूलुल्लाह को रसूल मानने न मानने के बारे में ) जो विभेद ( अब ) पैदा हो गया है, वह ( भी ) प्रत्यक्ष प्रमाण के आने ( अर्थात रसूलुल्लाह के नबी होकर आने के ) पश्चात पैदा हुआ है। यद्यपि उन्हें ( कोई नवीन ) आज्ञा नहीं दी गई, बरन वही ( कहा, जो पूर्व कालिक नबी कहते चले आये थे ) कि ( सब ओर से ध्यान हटाकर ) एक ओर होकर अल्लाह की इस प्रकार पूजा करें कि वह केवल उसी की नीयत से हो। ( अर्थात किसी को उसका साझी न ठहरायें ) और नमाज़ पढ़ते रहें और ज़कात देते रहें और यही ( वह असली और ) पक्का धर्म है—( जिसका उपदेश इब्राहीम, मूसा तथा ईसा ने दिया था ) ॥

( इन ) किताब वालों और मुश्रिकों में से जो लोग ( सत्य-धर्म का ) अस्वीकार किये जाते हैं, वह ( एक दिन ) दोज़ख़ की अग्नि में होंगे और सर्वदा उसी में ( पड़े ) रहेंगे। यही लोग हैं, जो सब प्राणियों से निकृष्ट हैं और सर्व प्राणियों से श्रेष्ठ वह हैं, जो ईमान ले आये हैं और शुभ कर्म ( भी ) करते हैं—

أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝ جَزَاؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ
عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ
رَبَّهُ ۝

سورة الزلزال مكية وهي ثمان آيات بخلاف

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ
أَثْقَالَهَا ۝ وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ
أَخْبَارَهَا ۝ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ
النَّاسُ أَشْتَاتًا لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ
ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا
يَرَهُ ۝

سورة العاديات مكية وهي احدى عشر آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا ۝ فَالْمُورِيَاتِ قَدْحًا ۝ فَالْمُغِيرَاتِ

यही लोग बेहतरीन-ख़लायक़ हैं ० ( कि ) इनका बदला इनके पर्वर्दिगार के हां रहने के बाग़ ( बहिश्त ) हैं, जिनके तले नहरें ( पड़ी ) बह रही होंगी ( और ) वह उनमें सदा को हमेशा ( हमेशा ) रहेंगे। अल्लाह उनसे खुश और यह उससे खुश, यह ( अज्र ) उसके लिये है, जो अपने पर्वर्दिगार से डरता रहे ०

## सूरत—ज़िल्ज़ाल

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई । इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० जब ज़मीन बड़े ज़ोर से हिलादी जाए ० और ( यही ) ज़मीन अपने दफ़ीने ( मादनियात और मुर्दे वग़ैरा सब ) निकाल ( कर फेंक ) दे ० और इन्सान ( उसकी यह हालत देखकर ) बोल उठे कि इसे क्या हो गया ० उसी दिन यह अपनी ( तमाम ) ख़बरें ( यानी लोगों के अच्छे बुरे अमल खुदा से ) बयान कर देगी ० ( और ऐ पैग़म्बर ! उसको बयान करनी पड़ेंगी ) इसलिये कि तुम्हारा पर्वर्दिगार उसको हुक्म देगा ० उस दिन लोग ( मैदान-हश्र में जमा होकर वहाँ से ) मुख़्तलिफ़ हालतों में ( हिसाब किताब के लिये ) लौटेंगे, ताकि उनके अमल उनको दिखाए जायँ ० तो जिसने ज़र्रा भर नेकी की ( होगी ) वह उस ( नेकी ) को ( बचश्म-ख़ुद ) देख लेगा ० और जिसने ज़र्रा भर बुराई की ( होगी ) वह उस ( बुराई ) को ( बचश्म-ख़ुद ) देख लेगा ०

## सूरत—आदियात

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० ( ग़ाज़ियों के ) उन ( घोड़ों ) की क़सम, जो दौड़ते दौड़ते हांप उठते हैं ० फिर ( पत्थरों पर अपनी टापों के ) मारने से चिङ्गारियां निकालते हैं ० फिर सुबह के वक़्त ( दुश्मनों पर ) छापा जा मारते हैं ०—

---

उनका पुरस्कार उनके पालनहारे के यहाँ सर्वदा रहने वाले बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और जिनमें वह सर्वदा २ रहेंगे । अल्लाह उनसे प्रसन्न और वह अल्लाह से प्रसन्न । यह ( पुरस्कार ) उसके लिये है, जो अपने पालन कर्त्ता से भय खाता है ॥

## सूरत—जिलज़ाल

### मदनी, अर्थात मदीने में उतरी । इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥

जब भूमि अत्यन्त हिलादी जावेगी और ( जब लौट पौट होकर ) पृथ्वी अपने ( भीतर ) का ( सब ) बोझ बाहर निकाल फेंकेगी और ( जब ) मनुष्य ( यह दशा देखकर ) कहेगा कि इस ( पृथ्वी ) को क्या हो गया ( कि गड़ा हुआ धन, कानें, मुर्दे एक एक वस्तु उगले देती है )। उस दिन ( पृथ्वी ) अपने ( ऊपर बसने वालों की भली बुरी समस्त ) बातें वर्णन करेगी । इस लिये कि तुम्हारा पालन कर्त्ता ( उसे ) इनके वर्णन करने की आज्ञा देगा । उस दिन ( हिसाब दे देकर ) लोग अलग २ समूह समूह होकर लौटेंगे । ( नर्क वासियों के समूह अलग होंगे और स्वर्ग वासियों के अलग । कोई समूह किसी ओर जायगा कोई किसी ओर )-जिससे कि उन्हें उनके कर्मों ( का फल ) दिखा दिया जाय। फिर जिसने ज़र्रा भर ( भी ) भलाई की होगी, वह उसको देख लेगा और जिसने ज़र्रा भर ( भी ) बुराई की होगी, वह उसको देख लेगा ॥

## सूरत—आदियात

### मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥

शपथ है उन घोड़ों की, जो इतना तेज़ दौड़ते हैं कि हांफने लगते हैं और ( जिनकी टापें ज़ोर से भागने में पत्थरों पर इसज़ोर से पड़ती हैं, कि उनके सुमों से आग की चिङ्गारियां निकलती हैं ) और सवेरे ही सवेरे ( शत्रुओं पर ) छापा मारते हैं—

صُبْحًا ۝ فَأَثَرْنَ بِهِ نَقْعًا ۝ فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ۝
إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝ وَإِنَّهُ عَلَىٰ
ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝
أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝ وَحُصِّلَ
مَا فِي الصُّدُورِ ۝ إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ
سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ لَّخَبِيرٌ ۝ وَهِيَ إِحْدَى عَشْرَةَ آيَةً
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الْقَارِعَةُ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ
يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝
وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ ۝ فَأَمَّا
مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝
وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

फिर ( बावजूदेकि सुबह का वक़् होता है, ताहम ) वह उस वक़् ( अपनी दौड़ धूप से ) ग़ुबार बुलन्द करते हैं ० फिर उसी वक़् (दुश्मनों की ) जमाअत में जा घुसते हैं ० ( ग़रज़ हमको इन घोड़ों की क़सम कि) बेशक इन्सान अपने पर्वर्दिगार का बड़ा ही नाशुक्र है ० और वह इस ( बात ) को ( ख़ुद भी ) ख़ूब जानता है ० और वह माल की महब्बत में बड़ा सख़्त है ० तो क्या इसको ( इतनी बात ) मालूम नहीं कि वह लोग जो क़ब्रों में ( मदफ़ून ) हैं, जब ( जिला ) उठाए जायंगे ० और ( लोगों के ) दिलों में जो बातें ( मख़्फ़ी ) हैं ( वह सब ) ज़ाहिर करदी जाएँगी ० उस दिन उनका पर्वर्दिगार ही उन ( के हाल ) से बख़ूबी वाक़िफ़ होगा ( कि कौन नेक है और कौन बद ) ०

## सूरत—क़ारिअह

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( सबको ) खड़-खड़ा डालने वाला ( हादसा, सो ) ० वह खड़-खड़ा डालने वाला ( हादसा ) है क्या चीज़ ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि वह खड़-खड़ा डालने वाला ( हादसा ) है क्या चीज़ ० ( उस हादसे से मुराद है, वह दिन ) जबकि लोग ( मैदान-हश्र में ऐसे पटे पड़े ) होंगे, जैसे परदार च्यूंटियां पटी पड़ी होती हैं ० और पहाड़ (ऐसे उड़े उड़े फिर रहे ) होंगे, जैसे धुनकी हुई ऊन ० तो जिसके आमाल ( नेक ) तोल में ज़ियादा ठैरेंगे ० तो वह ख़ातिर-ख़्वाह ऐश में होगा ० और जिसके आमाल ( नेक ) तोल में कम ठैरेंगे ० तो उसका ठिकाना ( होगा ) हावियह ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि वह ( हावियह ) है क्या चीज़ ० वह (दोज़ख़ की ) दहकती हुई आग है ०—

---

और उस समय ( भी कि धूलि उड़ने का समय नहीं है-अपनी दौड़ से भूमि की ) धूलि उड़ा देते हैं। और उसी समय ( शत्रुओं की ) सेना में जा घुसते हैं। निस्सन्देह कि मनुष्य अपने पालन कर्त्ता का बड़ा कृतघ्न है, और इस पर स्वयं ( उसका मन ) गवाही देता है। और वास्तविकता यह है कि उसे धन का प्रेम बहुत अधिक है। परन्तु क्या उसे उस समय का ज्ञान नहीं, जब क़ब्रों के मुर्दे ज़िन्दा कर दिये जायँगे और ( लोगों के ) दिलों का भेद प्रगट हो जायगा। उस दिन उनका पालन कर्त्ता उन ( की एक २ बात ) से अभिज्ञ होगा ( और एक २ बात का बदला देगा ) ॥

## सूरत—क़ारिअह

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ११ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

दहला देने वाली घटना ! कैसी ( कठिन ) दहला देने वाली घटना ! और तुम्हें ज्ञात भी है कि वह दहला देने वाली घटना कौन सी है ? ( वह उस दिन की घटना है ) जिस दिन लोग तित्तर बित्तर भुनगों की तरह ( फैले हुये और घबराहट में ) होंगे। और पर्वत ऐसे हो जायँगे, जैसी धुनी हुई ऊन ॥

( उस दिन सबके कर्मों का फल मिल जायगा )। अत: जिनके कर्मों के पलड़े भारी होंगे, उनको इच्छानुसार सुख मिलेगा और जिनके कर्मों के पलड़े हलके होंगे, उनका ठिकाना हाविया होगा। और जानते भी हो ! हाविया क्या है ? दहकती हुई आग है ॥

## सूरत—तकासुर

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

( शुरू ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( लोगो ! ) कसरत ( माल और औलाद ) की हिर्स तुम पर ( सारी उम्र पर्यन्त ) ग़फ़लत डाले रहती है ० यहां तक कि ( जब ) तुम क़ब्र में आते हो ( तब तुम्हारी आंखें खुलती हैं ) ० ( सो अच्छी तरह ) सुन रक्खो ! आगे चलकर तुमको ( इस ग़फ़लत का अन्जाम ) मालूम हो जायगा ० फिर ( अच्छी तरह ) सुन रक्खो ! आगे चलकर तुमको ( इस ग़फ़लत का अन्जाम ) मालूम हो जायगा ० बात यह है कि अगर तुम (अपना) अन्जाम यक़ीनी तौर पर जानते होते ( तो तुम कभी भी ग़फ़लत न करते )० ( एक दिन ) तुम ज़रूर दोज़ख़ को ( आंखों से ) देख लोगे ० फिर उसको ( देखोगे भी, तो ग़ैर-मुश्तबा और ) यक़ीनी देखना देखोगे ० फिर उस दिन ( दुनिया की ) नेअमतों के बारे में तुमसे बाज़-पुर्स (भी) ज़रूर होगी ( कि कहां तक तुमने उन नेअमतों का शुक्र किया ) ०

## सूरत—अस्र

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ३ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० अस्र ( के वक़्त ) की क़सम ० कि ( सारे ही ) आदमी घाटे में हैं ० मगर जो ईमान लाए और उन्होंने नेक-अमल ( भी ) किये और एक दूसरे को ( दीन ) हक़ की ( पैरवी की ) हिदायत करते रहे और ( नीज़ ) एक दूसरे को ( मुसीबत में ) सब्र करने की हिदायत करते रहे-( वह अलबत्ता घाटे में नहीं हैं ) ०

## सूरत—हुमज़ह

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ९ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० हर शख़्स जो ( लोगों की ) ऐब-चीनी करता ( और उन पर ) आवाज़े कसता है, उसको ( भी बड़ी ) तबाही है ० कि वह इस ख़याल से माल जमा करता और उसको गिन-गिन कर रखता रहा कि—

سُورَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ
تَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ كَلَّا لَوْ
تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝ ثُمَّ
لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ
عَنِ النَّعِيمِ ۝

سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۝ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝

---

## सूरत—तकासुर

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें ८ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

( हे मनुष्यो ! धन दौलत और सांसारिक वस्तुओं की ) बहु अभिलाषा ( और उन वस्तुओं की बढ़ती की डींग ) तुम्हें ( सचाई से ) अचेत किये रहती है । यहां तक कि तुम ( अपनी बहु संख्या दिखाने के लिये क़ब्रों के मुर्दे भी गिन डालते हो । और अन्त में स्वयं ) क़ब्रों में जा पहुंचते हो । यह बातें व्यर्थ हैं । शीघ्र तुम्हें इसका ज्ञान हो जायगा, फिर ( हम तुमसे कहे देते हैं कि ) यह बातें व्यर्थ हैं । शीघ्र तुम्हें इसका ज्ञान हो जायगा । सत्य यह है कि यदि तुम्हें अपने परिणाम का सत्य-ज्ञान हो जाता ( तो कभी ऐसा न करते )। निस्सन्देह ( एक दिन ) अवश्य तुम दोज़ख़ को देख लोगे । फिर हम कहते हैं कि तुम उसको बिल्कुल निश्चित रूप से ( निज नेत्रों से ) देख लोगे । पुनः उस दिन तुमसे इन नेअमतों के ( अनुचित और नाजायज़ सेवन के ) विषय में उत्तर माँग लिया जावेगा ॥

## सूरत—अस्र

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें ३ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

समय की शपथ ! मनुष्य बड़े घाटे में है-परन्तु ( वह घाटे में नहीं हैं )—जो ईमान ले आये और शुभ कर्म किये और एक दूसरे को सच्चाई ( और नेकी ग्रहण करने ) की शिक्षा देते हैं और एक दूसरे को सन्तोष ( तथा सहन शक्ति से काम लेने का उपदेश देते हैं )॥

## सूरत—हुमज़ह

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ९ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

हर दोष लगाने वाले और पीठ पीछे बुरा कहने वाले के लिये ख़राबी है, जो ( मोह वश होकर ) धन दौलत एकत्रित करता है और उसको गिन गिन कर रखता है—

يحسب ان ماله اخلده ۝ كلا لينبذن في
الحطمة ۝ وما ادرىك ما الحطمة ۝ نار الله
الموقدة ۝ التي تطلع على الافئدة ۝ انها عليهم
موصدة ۝ سورة الفيل مكية خمس آيات في عمد ممددة ۝
بسم الله الرحمن الرحيم
الم تر كيف فعل ربك باصحب الفيل ۝ الم
يجعل كيدهم في تضليل ۝ وارسل عليهم طيرا
ابابيل ۝ ترميهم بحجارة من سجيل ۝ فجعلهم
كعصف سورة قريش مكية اربع آيات ماكول ۝
بسم الله الرحمن الرحيم
لايلف قريش ۝ ايلفهم رحلة الشتاء والصيف ۝
فليعبدوا رب هذا البيت ۝ الذي اطعمهم
من جوع سورة الماعون مكية سبع آيات وامنهم من خوف ۝

वह माल को बदौलत हमेशा ज़िन्दा रहेगा ० सो यह तो होना नहीं, ( बल्कि वह एक न एक दिन ज़रूर मरेगा और कुफ्र की वजह से ) ज़रूर हुतमह में फेंका जायगा ० और ( ऐ पैग़म्बर ! ) तुम क्या समझे कि हुतमह है क्या चीज़ ० ( हुतमह से मुराद है ) अल्लाह की भड़काई हुई आग ० जो ( तलवों से लग कर ) दिलों तक की जा ख़बर लेगी ० ( और ) वह ( डोक के बड़े ) बड़े सितूनों ( की शक्ल ) में दोज़खियों को चारों तरफ़ से घेरे होगी ०

## सूरत—फ़ील

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने ( इस बात पर ) नज़र नहीं की कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने हाथी वालों के साथ कैसा ( बर्ताव ) किया ० क्या उसने उनके ( तमाम ) दाव ग़लत नहीं कर दिये ? ( कर दिये ) ० और उन पर झुन्ड के झुन्ड परन्दे भेजे ० जो उन पर कंकर की पथरियाँ ( ऊपर से ) फेंकते थे ० यहां तक कि उनको खाई हुई ख़बीद को तरह ( तबाह ) कर दिया ०

## सूरत—क़ुरैश

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ४ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० चूंकि ( ख़ुदा ने ) क़ुरैश को जाड़े और गर्मी के सफ़रों की चाट लगा दी है ० तो उनको चाहिये कि इसी चाट के लगा देने को वजह से इस ख़ानए ( काबा ) के मालिक की इबादत करें ० जिसने उनको भूक में ( बे जोते बोए ) खाने को दिया और ( लूट खसोट के ) ख़ौफ़ से उनको अम्न में रक्खा ०

## सूरत—माऊन

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ७ आयतें और १ रुकूअ है ॥

---

( और ) समझे हुये है कि धन सर्वदा उसका साथ देगा । यह विचार असत्य है ( मृत्यु के पश्चात धन दौलत ऐसे कृपण के किञ्चित काम न आयेगा, बरन् ) वह निश्चित रूप से हुतमा में डाला जायगा । और जानते हो ! हुतमा क्या है ? ( हुतमा ) अल्लाह की प्रचण्ड की हुई अग्नि है । वह जो ( काफ़िरों के ) दिलों पर तक छा जायगी । वह ( अपनी लपटों के लम्बे २ ) खम्भों में इन (काफ़िरों) को चारों ओर से घेरे हुए होगी ॥

## सूरत—फ़ील

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( हे पैग़म्बर ! ) तुम्हें क्या ज्ञात नहीं है कि तुम्हारे पालनहारे ने अस्हाब-फ़ील ( हाथी वालों ) के साथ क्या किया था ? क्या उसने उनके ( समस्त ) प्रयत्नों को मलिया मेट नहीं कर दिया और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे, जो उन पर पथरीली कंकरियाँ फेंकते थे । सो ( इस प्रकार अल्लाह ने ) उन्हें ऐसा कर दिया, जैसे खाया हुआ भुस ( होता है ) ॥

## सूरत—क़ुरैश

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ४ आयतें और १ रुकूअ है ॥

क़ुरैश के हृदय में जाड़े और गर्मी के दिनों में यात्रा ( करके बनिज व्योपार से लाभ प्राप्त ) करने का जो चाव हमने पैदा कर दिया है-( वह भी हमारा एक बहुत बड़ा उपकार है ) । अतः तुम ( कमसे कम हमारे ही उपकार का ख़्याल करके ) इस काबे के स्थान के पालन कर्त्ता की उपासना करो, जिसने ( मक्का जैसे पथरीले और निर्जल शहर में बसने पर भी बनिज व्यापार की बरकत से तुम्हें दरिद्रता से बचा लिया और ) भूख के समय भोजन दिया और ( जब कभी शत्रु ने तुम पर आक्रमण किया, तो हमने तुम्हारी अदृष्टि से सहायता करके उसके ) भय से तुम्हें सुरक्षित कर दिया ॥

## सूरत—माऊन

मक्की अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ७ आयतें और १ रुकूअ है ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَرَاَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۞ فَذٰلِكَ ع
الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۞ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ
الْمِسْكِيْنِ ۞ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۞ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ
صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۞ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۞
وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۞ سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ ثَلٰثُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۞ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۞ ع
اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۞ سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ سِتُّ آيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۞ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۞ ع
وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۞ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ
مَّا عَبَدْتُّمْ ۞ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۞ لَكُمْ

دِيْنُكُمْ

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० (ऐ पैग़म्बर !) भला तुमने उस शख़्स (के हाल) पर (भी) नज़र की, जो (रोज़) जज़ा को झूट समझता है ० और (इसी सबब से) यह शख़्स ऐसा (सख़्त दिल हो गया) है कि यतीम को धक्के दे देता है ० और मिस्कीन (का आप खाना खिलाना तो दर किनार–लोगों को भी उस) के खिलाने का तर्ग़ीब नहीं देता ० तो (इन मुनाफ़िक़) नमाज़ियों की (बड़ी) तबाही है, जो अपनी नमाज़ की तरफ़ से ग़फ़लत करते हैं ० (और) वह जो (कोई नेक अमल करते भी हैं, तो) रिया करते हैं ० और (दिल के ऐसे तङ्ग हैं कि) रोज़–मर्रा के बरतने की (छोटी छोटी) चीज़ों का भी दरेग़ करते हैं ०

## सूरत—कौसर

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ३ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुमको बड़ी ख़ैर व बरकत दी है ० तो (इसके शुक्रिये में) अपने पर्वर्दिगार की नमाज़ पढ़ो और (उसी के नाम की) कुर्बानी करो ० जो तुम्हारा बुरा चाहे, उसी का कोई नाम लेवा न रहेगा ०

## सूरत—काफ़िरून

**मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ६ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० (ऐ पैग़म्बर ! इन काफ़िरों से) कहो कि ऐ काफ़िरों ! ० न (तो इस वक़्त) मैं (तुम्हारे) उन (माबूदों) की परस्तिश करता हूं, जिनकी तुम परस्तिश करते हो ० और जिस (ख़ुदा) की मैं परस्तिश करता हूं, तुम भी (इस वक़्त) उसकी परस्तिश नहीं करते ० और (आइन्दा भी) न (तो) मैं (तुम्हारे) उन (माबूदों) की परस्तिश करूंगा, जिनकी तुम परस्तिश करते हो ० और न तुम (ही से तवक़्क़ो है कि) उस (ख़ुदा) की परस्तिश करोगे, जिसको मैं परस्तिश करता हूं ० (तो मेरा तुम्हारा मेल क्या) तमको—

---

तुमने उसको देखा ? जो प्रति दिन फल मिलने को झुठलाता है। अतः वह अनाथ (को सहाय पहुंचाने के बदले उस) को धक्के देता है और (अपने चलन से दूसरों को) भिखारी के पेट भरने को तरग़ीब नहीं देता । (अतः) उन (मुनाफ़िक़) नमाज़ियों की (भी बड़ी) दुर्दशा होनी है, जो अपनी नमाज़ की ओर से अचेत रहते हैं । और जो (यदि कोई शुभ–कर्म करते भी हैं, तो) दिखावे के लिये करते हैं और ज़कात बिल्कुल नहीं देते ॥

## सूरत—कौसर

**मक्की, अर्थात् मक्के में उतरी । इसमें ३ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(हे पैग़म्बर ! तुम पुत्रों के न जीने और इस पर लोगों के ताने कटाक्ष करने से शोक युक्त होते हो) । हमने तुम्हें कौसर (अर्थात् हौज़–कौसर जो क़यामत के दिन रसूलुल्लाह को मिलेगा–अथवा उनके अनुगामियों का अधिकता से होना, जो सब पैग़म्बरों के अनुगामियों से ज़्यादा थे) प्रदान की है-(उसको कृतज्ञता में) अपने पालन कर्त्ता की नमाज़ पढ़ो और (उसके लिये) कुर्बानी करो (तुम्हारा नाम लेने वाले तो क़यामत तक रहेंगे) । किन्तु जो तुम्हारा बुरा चीतता है (तुम्हें ताने देता है) उसका कोई नाम लेने वाला न रहेगा × ॥

× टीका—किसीने रसूलुल्लाह के प्रति "अब्तर" शब्द कहा था । जिसके पुत्र ज़िन्दा नहीं रहते, उसे अरबी भाषा में "अब्तर" कहते हैं। उस पर यह सूरत उतरी। और रसूलुल्लाह को धीरज बँधाया गया :—हसन निज़ामी ॥

## सूरत—काफ़िरून

**मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ६ आयतें और १ रुकूअ है ॥**

(हे मुहम्मद ! अबू–जहल और उसके साथी काफ़िरों से) कहदो कि हे काफ़िरो ! मैं उन्हें नहीं पूजता जिन्हें, तुम पूजते हो और तुम भी उसकी उपासना नहीं करते, जिसकी उपासना मैं करता हूं । (और आगे को भी) तुम्हारे पूज्यों का न मैं (कभी) पुजारी बनूंगा और न मेरे पूज्य की आराधना तुम करोगे । (मैं अन्तकाल तक मुसल्मान रहूंगा और तुम अन्तकाल तक काफ़िर रहोगे)—

तुम्हारा दीन और मुझको मेरा दीन ०

## सूरत—नस्र

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें ३ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! ) जबकि ख़ुदा की मदद आ पहुंची और ( मक्का ) फ़तह ( हो गया ) ० और तुमने लोगों को ( बचश्म-ख़ुद ) देख लिया कि दीन ख़ुदा ( यानी इस्लाम ) में झुक्-झुक् दाख़िल हो रहे हैं ० तो अपने पर्वर्दिगार की हम्द ( व सना ) के साथ ( उसकी ) तस्बीह ( व तक़्दीस ) में मशग़ूल हो जाओ और उससे गुनाहों की माफ़ी मांगो। बेशक वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है ०

## सूरत—लहब

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० (जैसे अबू-लहब ने पैग़म्बर को कोसा था, उल्टे ) अबू-लहब ( ही ) के दोनों हाथ टूट गए और वह ( आपही ) हलाक हुआ ० न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न उसकी कमाई ( ने उसको कुछ फ़ायदा पहुंचाया ) ० वह अन्क़रीब ( दोज़ख़ की ) डींक मारती हुई आग में जा दाख़िल होगा ० और ( उसके साथ ) उसकी जोरू ( भी ) जो लगाई बुझाई करता फिरती है ० कि उसकी गर्दन में भाँजवाँ रस्सी होगी०

## सूरत—इख़्लास

मक्की, यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ४ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! यह लोग जो तुमसे ख़ुदा का हाल पूछते हैं, तो तुम इनसे ) कहो कि वह अल्लाह एक है ० अल्लाह बे-नियाज़ है ० न उससे कोई पैदा हुआ० और न वह किसी से पैदा हुआ० और न कोई उसके बराबर का है ०

## सूरत—फ़लक़

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई । इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

دِينُكُمْ | سورة النصر مدنية ثلث آيات | وَلِيَ دِينِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَأَيْتَ النَّاسَ
يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
وَاسْتَغْفِرْهُ | سورة تبت مكية خمس آيات | إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ
وَمَا كَسَبَ ۝ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَامْرَأَتُهُ
حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِنْ مَسَدٍ ۝
سورة الإخلاص مكية وهي أربع آيات
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ | سورة الفلق مدنية خمس آيات | كُفُوًا أَحَدٌ

---

तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये है और मेरा धर्म मेरे लिये। (धर्म में हमारी तुम्हारी एकता असम्भव है +) ॥

+ टीका—अबू-जहल और उसी जैसे कई क़ुरैश वंशज सर्दारों ने यह कहला कर भेजा था कि साल भर मुहम्मद हमारी मूर्तियों की पूजा करें। पुनः साल भर हम भी उनके ख़ुदा का पूजन करेंगे। इस पर यह सूरत अवतीर्ण हुई और रसूलुल्लाह को बताया गया कि यह उत्तर दे दोः—हसन निज़ामी ॥

## सूरत—नस्र

मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ३ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( हे पैग़म्बर ! ) जब अल्लाह की सहायता आ गई और ( मक्का ) विजय ( हो गया ) और तुमने देख लिया कि अल्लाह के धर्म ( इस्लाम ) में लोग समूह २ प्रवेश कर रहे हैं, तो ( तुम्हें उचित है कि ) तुम अपने पालन कर्त्ता की प्रशंसा ( तथा स्तुति ) के साथ पवित्रता वर्णन करो और उससे क्षमा माँगो। निश्चित रूप से वह बड़ा क्षमा करने वाला है ॥

## सूरत—लहब

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

अबू-लहब के दोनों हाथ टूट गये और वह नष्ट हो गया। उसको दौलत और उसकी कमाई उसे (ख़ुदा के अज़ाब से) न बचा सकी। शीघ्र वह भड़कती हुई अग्नि में डाला जावेगा। और ( उसके साथ ) उसकी कांटे लाद कर लाने वाली पत्नी ( भी जो जङ्गल से कांटे ला ला कर रसूलुलाह के मार्ग में रात्रि के समय बिछा दिया करती थी और ) उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी ॥

## सूरत—इख़्लास

मक्की, अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ४ आयतें और १ रुकूअ है ॥

( हे पैग़म्बर ! ) कहदो कि वह ( हमारा पूज्य ऐसा पवित्र है, जिसे हम ) अल्लाह ( के नाम से पुकारते हैं )। एक (और केवल एक ) है। ( और हमारा ) अल्लाह बेपर्वाह है। उसकी कोई सन्तान नहीं है और न वह किसी की सन्तान है। और कोई उसके समान नहीं है ॥

## सूरत—फ़लक़

मदनी, अर्थात मदीने में उतरी। इसमें ५ आयतें और १ रुकूअ है ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ
وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ
النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا

سُورَةُ النَّاسِ حَسَدَ مَدَنِيَّةٌ سِتُّ آيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ
النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ
الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ

كتبه محي الدين اورنگ زيب عالمگير
سنه ١٠٨٣



(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० (ऐ पैग़म्बर ! अपनी हिफ़ाज़त के लिये यूं ) दुआ माँगा करो कि मैं तमाम मख़्लूक़ात के शर से सुबह के मालिक ( यानी खुदा ) की पनाह मांगता हूं ० और अंधेरी रात के शर से, जब ( उसका अँधेरा तमाम चीज़ों पर ) छा जाए ० और गंडों पर ( पढ़ पढ़ कर ) फूंकने वालियों ( यानी जादूगरनियों ) की शर से ० और हसद करने वाले के शर से, जब वह हसद करने लगे ०

## सूरत—अन्नास

मदनी, यानी मदीने में नाज़िल हुई । इसमें ६ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० ( ऐ पैग़म्बर ! अपनी हिफ़ाज़त के लिये यूं ) दुआ माँगा करो कि (शैतान) जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता ( और खुद ) नज़र नहीं आता ( और ) जिन्नात और आदमी ( दोनों ही इस क़िस्म के ) वसवसा अन्दाज़ (होते हैं ) उनके शर से मैं लोगों के पर्वर्दिगार, लोगों के (हक़ीक़ी) बादशाह, लोगों के माबूद ( बर-हक़ यानी खुदा ) की पनाह मांगता हूं ०

---

( सुरक्षित रहने के लिये ) कहा करो कि मैं प्रातःकाल के पालन कर्त्ता ( अर्थात अल्लाह ) की शरण मांगता हूं ( कि वह मुझे ) सृष्टि की बुराई से ( बचावे ) और अंधेरी रात्रि की बुराई से ( बचावे )–जिस समय कि ( उसका अन्धकार प्रत्येक वस्तु पर ) छा जाता है और गंडों पर ( पढ़ २ कर ) फूंकने वालियों की बुराई से ( बचावे ) अर्थात जादूगरनियों की बुराई से और ईर्षा करने ( वालों के उस समय ) की बुराई से, जबकि वह ईर्षा करते हों ( अर्थात जिस समय ईर्षाग्नि उनके भीतर भड़के ) ॥

## सूरत–अन्नास

मदनी, अर्थात मदीने में उतरी । इसमें ६ आयतें और १ रुकूअ है ॥

(और) कहा करो कि मैं शरण चाहता हूं मनुष्यों के पालन कर्त्ता, मनुष्यों के बादशाह ( और ) मनुष्यों के पूज्य को ( कि वह मुझे ) छिपे रहने वाले शैतान की बुराई से (बचावे) जो (चुपके २) लोगों के दिलों में कुविचार डाला करता है । चाहे वह जिन्नात में से हों और चाहे मनुष्यों में से ॥

**حج اکبر** :- بڑا حج، یعنی عمرہ کے علاوہ جو پورا حج ہوتا ہے۔

**ہدایت** :- سیدھی راہ جو خدا تک پہنچا دے۔

**امام** :- اگوا، پیشوا، نیتا اور بادشاہ کو کہتے ہیں۔

**خلیفہ** :- نائب اور ستھاناپن کو کہتے ہیں۔

**رسالت** :- پیغمبری اور نبی ہونے کو کہتے ہیں۔

**حلال** :- جس کے استعمال کرنے کا حکم آ گیا ہو۔

**حرام** :- جس کے استعمال کی مناہی کی گئی ہو۔

**ثواب** :- نیک کام کا اچھا بدلہ

**عذاب** :- بُرے کام کا بُرا بدلہ۔

**عرش** :- تمام آسمانوں کے اوپر ایک چیز جو زمین آسمان سب کو گھیرے ہوئے ہے۔

**کراماً کاتبین** :- دو فرشتے جو ہر منشیہ کے دائیں بائیں اور رہتے ہیں۔ دائیں اور والا منشیہ کی نیکیاں لکھتا رہتا ہے اور بائیں اور والا بدیاں۔

**برج** :- راشِ چکر۔

**رحمت** :- مہربانی کرنا۔ کرپا، دیا کرنا۔

**مسجد حرام** :- خانۂ کعبہ۔

**مسجد اقصےٰ** :- بیت المقدس۔

**مومن** :- ایماندار، محمد رسول اللہؐ کی لائی ہوئی ہر بات کو ماننے والا۔

**قصاص** :- خون اور زخموں کا بدلا۔

**حکمت** :- جس میں کوئی خرابی کبھی نہ نکل سکے۔ ہر طرح اچھائی ہی اچھائی ہو۔

**قاب قوسین** :- قرآن مجید میں معراج کا جہاں ذکر آیا ہے وہاں ایک جگہ قاب قوسین کا لفظ بھی ہے جس کا مطلب محمد رسول اللہؐ کا خدا سے نزدیک ہونا ہے۔ معراج محمد رسول اللہؐ کا ایک بہت بڑا معجزہ ہے۔ آپ حضرت جبرئیل کے ساتھ مکہ سے بیت المقدس گئے۔ پھر وہاں سے تمام آسمانوں کی سیر کی، اس اوسر پر بڑے بڑے رہسیہ آپ پر پرگٹ ہوئے۔ دوزخ جنت اتیادی بہت سی چیزوں کو دیکھا۔ خدا سے بات چیت ہوئی۔ پانچ وقت نماز معراج ہی میں نیت ہوئی۔ ویاکھیا تفسیروں میں دیکھو۔

**نماز**:- مسلمانوں کی ایک طرح کی پوجا کا نام جو پانچ سمے پڑھی جاتی ہے۔

**زکوٰۃ**:- مسلمانوں کے ایک دان کا نام جو امیروں سے دھن کا چالیسواں بھاگ لیکر غریبوں پر خرچ کیا جاتا ہے۔

**ابراہیم**:- ایک پیغمبر کا نام جنہوں نے خدا کی آگیا انسار خانہ کعبہ کی عمارت اسکی اُپاسنا کے لیے بنائی ان کے بعد سے تمام پیغمبر انہی کی اولاد میں سے ہوئے۔

**اسمٰعیل**:- حضرت ابراہیم پیغمبر کے بیٹے کا نام جو خدا کے سچے بھگت اور اس کے پیغمبر تھے۔ خانہ کعبہ کی عمارت بنانے میں یہ بھی اپنے پتا حضرت ابراہیم کے ساتھ تھے۔ انہی کے بنش میں حضرت محمد رسول اللہ آنحضرت نبی پیدا ہوئے۔

**اسحاق**:- حضرت ابراہیم کے دوسرے بیٹے کا نام۔ یہ بھی خدا کے پیغمبر تھے۔ انہی کے بنش سے عیسائی اور یہودی ہیں۔

**یعقوب**:- ایک پیغمبر کا نام۔ یہ حضرت ابراہیم کے پوتے اور حضرت اسحاق کے بیٹے تھے۔

**قبلہ**:- جس طرف مسلمان منہ کرکے نماز پڑھتے ہیں اسے قبلہ کہتے ہیں۔

**حج**:- ایک طرح کی عبادت کا نام۔ جو مکہ جاکر ادا ہوتا ہے۔

**عمرہ**:- ایک طرح کا چھوٹا حج۔ یہ بھی مکہ میں ادا ہوتا ہے۔

**صفا**- مکہ کی ایک پہاڑی کا نام
**مروہ**- مکہ کی ایک پہاڑی کا نام } ان دونوں پہاڑیوں کے بیچ حج کی ایک رسم ادا کیجاتی ہے۔

**فدیہ**:- جو دھن قیدیوں کے چھڑانے میں دیا جاتا ہے اُسے فدیہ کہتے ہیں۔

**صبح کاذب**:- صبح ہونے سے پہلے پورب دشا میں آسمان پر کھڑی کھڑی ایک سفیدی دکھائی دیتی ہے اسے صبح کاذب کہتے ہیں۔

**صبح صادق**:- صبح کاذب کے بعد پورب دشا میں ایک سفیدی آڑی آڑی پھیلتی ہوئی نظر آتی ہے اسے صبح صادق کہتے ہیں۔

**اعتکاف**:- ایک خاص عبادت کا نام جتنے دن کا اعتکاف ہوتا ہے اُتنے دن برابر مسجد میں رہنا پڑتا ہے۔ صرف انسانی ضرورتوں کے لیے باہر نکلنے کی آگیا ہے۔ جیسے پیشاب، پاخانہ، اتیادی انیتھا سانسارک کام کاج کے لیے باہر نکلنے کی آگیا نہیں ہے۔

**احرام**:- حج ادا کرنے کے لیے ایک خاص لباس کا نام جو سوئی سے سلا ہوا نہ ہو۔

**قربانی**:- اللہ کے نام پر جس جانور کی بھینٹ دی جاتی ہے اُسے قربانی کہتے ہیں۔ اس کا کرنا دھنوانوں اور بعض حاجیوں پر ضروری ہوتا ہے۔

**عرفات**:- عرب میں ایک جگہ کا نام۔ حج کے دنوں میں تمام حاجی یہاں جاکر ٹھہرتے اور خدا کی اُپاسنا کرتے ہیں۔ بغیر یہاں پہنچے کسی کا حج نہیں ہوتا۔

**مشعر الحرام**:- عرب میں ایک جگہ کا نام۔ یہاں پر بھی حاجی لوگ جاکر حج کی ایک رسم ادا کرتے ہیں۔

**طلاق**:- بواہ وچھید کو طلاق کہتے ہیں۔ استری پرش کا جب نباہ نہیں ہوتا تو پرش طلاق کے شبد استری سے کہکر وواہ سمبندھ توڑ دیتا ہے۔ ودھیا فقہ کی کتابوں میں ملیگی۔ اسی طرح جب استری خود کسی وجہ سے اپنے پتی سے بواہ وچھید یعنی طلاق لینے کی اچھا کرتی ہے تو اسے خلع کہتے ہیں۔

**عدت**:- جب مرد عورت کو طلاق دے دیتا ہے یا مرد مرجاتا ہے ایسا سمے ہے جس میں وہ استری دوسرا وواہ نہیں کر سکتی اسے عدت کہتے ہیں، شبدوں میں اسے سوگ کے دن کہہ لیجئے۔

**وحی**:- جو آدیش خدا اپنے نبیوں کو بھیجتا ہے اسے وحی کہتے ہیں۔

**حواری**:- حضرت عیسےٰ کے سب سے پہلے ساتھیوں کو حواری کہتے [illegible]

**عذاب**:- اللہ کی طرف سے گناہ اور اوگیا کے بدلے جو دُکھ دی جاتی ہے اُسے عذاب کہتے ہیں۔

**ایمان**:- محمد رسول اللہ کی لائی ہوئی تمام باتوں کے دل [illegible] کا نام ایمان ہے۔

**جنابۃ**:- استری پرسنگ یا ویریہ پات کے بعد سے لیکر سنان تک کی حالت کا نام جنابۃ ہے۔ جب تک منشیہ سنان نہ کرلے جنبی۔ اس دشا میں منشیہ کا شریر اشدھ گنا جاتا ہے۔

**تیمم**:- پانی کے نہ ملنے، یا اس کے نقصان پہنچنے کی حالت [illegible] دوارا پوتر ہونے کا نام تیمم ہے۔ منہ، ہاتھ، پیر دھونے اور سر پر بھیگے [illegible] کا نام وضو ہے۔ ودھیا فقہ میں دیکھو۔

**اصحاب سبت**:- یہودیوں کے ہاں سنیچر کے دن مچھلی کا [illegible] دنیا کا ویوہار کرنا منع تھا۔ اس دھارا کا اُلنگھن کرنے پر جن لوگوں کو خدا [illegible] کو اصحاب سبت کہتے ہیں۔

**جہاد**:- خدا کی بات اونچی کرنے اور مسلمان جاتی اور اسلام دھرم [illegible] خدا کی راہ میں تن من دھن نچھاور کرنے کا نام جہاد ہے۔

**ہجرت**:- جب اپنے دھرم پر قائم رہنا بےبس ہو جائے تو سودیش [illegible] چلے جانے کا نام ہجرت ہے۔

**شعائر**:- اس کا ایک بچن شعار ہے۔ خاص دھارمک چہنہ کو شعار کہتے جیسے اذان قربانی اتیادی۔

**صور**:- ایک ینتر کا نام ہے جس کی پہلی آواز سے قیامت میں سب مر جائینگے۔ اس کے بعد دوسری آواز سے سب مُردے زندہ ہو جائیں گے۔

**جن**:- ایک جاتی کا نام جس کو خدا نے آگ سے بنایا۔

**اُمت**:- جماعت اور سموہ کو اُمت کہتے ہیں۔

**اعراف**:- جنت اور دوزخ کے بیچ ایک جگہ کا نام۔

**غنیمت**:- دھارمک یدھ میں جو دھن ہاتھ لگے اسے غنیمت کا مال۔

**لوح محفوظ**:- خدا کے ہاں ایک بہت بڑی تختی ہے جس پر ہونیوالی سب چیزیں پہلے وہاں لکھی جاتی ہیں۔

**مہاجرین**:- جو مسلمان مکہ کے کافروں سے تنگ آکر او[illegible] سے مجبور ہوکر مکہ چھوڑ کر مدینہ چلے گئے تھے۔ [illegible] قائم رہنے

**انصار**:- مدینہ کے وہ مسلمان جنہوں نے مکہ سے آئے [illegible] کا ہر طرح ساتھ دیا۔

# قرآنِ مجید کے ضروری الفاظ

کا

## مطلب ہندی زبان میں

...عبارت ہندی حروف میں بھی اس جلد کے ساتھ درج کی گئی ہے اور اُردو حروف میں بھی یہاں درج کی جاتی ہے۔ حسن نظامی

**انبیا**۔ بہو بچن نبی کا۔ نبی کے معنی خبر دینے والا۔ ارتھات خدا کا سندیش لوگوں کو سُنانے والا جس انسان کے دوارا خدا نے اپنے آدیش بھیجے ہوں۔

**صدیقین**۔ صدیق کا بہو بچن ہے۔ اس کے معنی بہت سچ بولنے والا۔ بہت بڑا ستیہ وادی۔

**شہدا**۔ شہید کا بہو بچن۔ دھرم مارگ میں جو مارا جائے اسے شہید کہتے ہیں۔

**صالحین**۔ صالح کا بہو بچن۔ نیک اور دھرماتما منشیہ کو صالح کہتے ہیں۔

**جنت**۔ جس جگہ اس دنیا کے شبھ کرموں کا بدلا ملیگا اور ہر طرح کا سُکھ اور آرام ہوگا اُسے جنت کہتے ہیں۔ اس کو بہشت بھی کہتے ہیں۔

**دوزخ**۔ جس جگہ اس دنیا کے اشبھ کرموں کا دُکھ بھوگنا ہوگا اُسے دوزخ اور جہنم کہتے ہیں۔

**فرشتہ**:۔ ایک جاتِ جو نور ارتھات پرکاش سے بنائی گئی ہے۔ کھانے پینے کی ان کو کچھ ضرورت نہیں۔ خدا کی آگیا پالن کے لیے ہر سمے تیار رہتے ہیں۔ ان کو فرشتہ اور ملائک کہتے ہیں۔

**قیامت**:۔ جس دن یہ برتمان سنسار خدا کی آگیا سے مٹ جائیگا۔ اور سب لوگوں کے اچھے بُرے کاموں کا حساب کتاب ہوگا اس کو قیامت کہتے ہیں۔ قیامت کی جگہ کہیں کہیں بڑے سنکٹ کا پریوگ ہوا ہے اس سے مُراد یہی قیامت ہے۔

**منافق**۔ اُن لوگوں کو کہا جاتا ہے جو دل سے خدا کے رسولؐ اور اسلام کو نہ مانتے ہوں مگر پرگٹ روپ سے مسلمانوں کے ساتھ ہوں اور اس طرح اسلام کو مٹانا چاہتے ہوں۔ شروع اسلام میں ایک سمو ایسے لوگوں کا تھا۔

**مُسلِم**۔ خدا کا آگیا کاری اور خدا کی آدھینتا کرنے والا۔ خدا کو ایک ماننے والا اور قرآنِ شریف اور قرآن سے پہلے کی تمام آسمانی کتابوں پر وشواس رکھنے والا اور خدا کے سب پیغمبروں کو ماننے والا۔

**کافر**:۔ خدا کو ایک اور محمدؐ کو رسول اور قرآن کو خدا کی کتاب اور تمام پیغمبروں اور آسمانی کتابوں کے نہ ماننے والے کو کافر کہتے ہیں۔

**کُفر**۔ اسلام دھرم کے انکار کرنے اور جھٹلانے کو کُفر کہتے ہیں۔

**آدم**۔ سب سے پہلے جس منشیہ کو خدا نے بنایا اُسے آدم کہتے ہیں۔ اسی وجہ سے انکی سنتان کو آدمی کہا جاتا ہے۔

**ابلیس**:۔ ایک جِنّ کا نام۔ پہلے خدا کا بڑا بھگت تھا۔ اوگیا اور اُدّنڈتا کے کارن خدا نے اسے دھتکار دیا۔ اس کا دوسرا نام شیطان ہے۔

**توبہ**۔ بُرا کام کرنے کے بعد جب منشیہ پچھتاتا اور لجّت ہوتا ہے اور پھر خدا سے ڈر کر دل سے یہہ درڑھ پرتگیا کرتا ہے کہ اب میں بُرا کام نہ کرونگا اس کو توبہ کہتے ہیں۔

**نبی**:۔ خدا کا بھیجا ہوا یعنی پیغمبر۔

**بنی اسرائیل**:۔ بنی کا ارتھ سنتان ہے اور اسرائیل یعقوبؑ پیغمبر کا نام۔ یعقوبؑ پیغمبر کی سنتان کو بنی اسرائیل کہتے ہیں۔

**فرعون**:۔ مصر کے بادشاہ کی اپادھ۔ حضرت موسٰیؑ پیغمبر اس کو سمجھانے کے لیے گئے تھے۔ اس نے حضرت موسٰیؑ کی شکشا پر کان نہ دھرا۔ اس لیئے خدا نے اس کو دریا میں ڈبو دیا۔ قرآن کے کتھنانسار اس کا مرتک شریر ابتک قاہرہ کے عجائب گھر میں موجود ہے۔

**موسٰے**:۔ ایک پیغمبر کا نام جنکو توریت پُستک خدا نے پردان کی تھی۔

**من وسلوٰے**:۔ ایک طرح کا کھانا جو بنی اسرائیل کو بنا محنت اور پرشرم کیئے خدا دیتا تھا۔

**یہودی**:۔ حضرت موسٰیؑ اور توریت پُستک کو ماننے والے اور حضرت یعقوبؑ کے بیٹے یہودہ کی سنتان کو یہودی کہتے ہیں۔

**سابی**:۔ آگ کے پوجنے والوں کو سابی کہتے ہیں۔

**نصرانی**:۔ حضرت عیسٰےؑ اور انجیل پُستک کے ماننے والوں کو نصرانی یا عیسائی کہتے ہیں۔

**توراۃ**:۔ خدا کی کتاب کا نام جو حضرت موسٰیؑ پیغمبر کو ملی تھی۔

**داوُدؑ**۔ ایک پیغمبر کا نام جو فلسطین کے بادشاہ تھے۔

**رسول**:۔ خدا کے جس نبی کو نئی کتاب لوگوں کی شکشا کے لیئے دی گئی ہو اُسے رسول کہتے ہیں۔

**معجزہ**:۔ اس کا ایک بچن معجزہ ہے۔ جو چمتکار خدا اپنے پیغمبر کی سچائی سدھ کرنے کیلئے اپنے پیغمبر کے دوارا پرگٹ کرتا ہے اور سب لوگ اسے دیکھکر چکت ہو جاتے ہیں اسے معجزہ کہتے ہیں اور اس کے شبدارتھ بھی "تھکا دینے والا" اور "عاجز کر دینے والا" ہے کہ جس کو دیکھکر لوگوں کی عقلیں عاجز ہو جائیں اور اس نبی کی سچائی میں کوئی سندیہہ باقی نہ رہے۔

**انجیل**:۔ ایشوریہ پُستک کا نام جو حضرت عیسٰےؑ پر اُتری تھی۔

**قرآن**:۔ ایشوریہ پُستک کا نام جو حضرت محمدؐ رسول اللہؐ پر اُتری۔

**مشرکون**:۔ اس کا ایک بچن مُشرک ہے۔ خدا کا ساجھی ٹھہرانے والا مشرک کہلاتا ہے۔

**جبریلؑ**:۔ اُچ کوٹِ کے ایک فرشتہ کا نام جو محمدؐ رسول اللہؐ کے پاس خدا کا کلام لیکر آتے تھے۔

**میکائیل**:۔ اُچ کوٹ کا ایک فرشتے کا نام۔

**سلیمانؑ**:۔ ایک پیغمبر کا نام جو فلسطین کے بادشاہ تھے۔

**شیاطین**:۔ اس کا ایک بچن شیطان ہے۔ ابلیس شبد میں اس کی پوری ویاکھیا دیکھو۔

ہندی ترجمہ قرآن مجید
از خواجہ حسن نظامی
جلد دوم